स्थापित वि. संवत् १९३२ (१८७५ ई.)

ॐ गणेशाय नमः

शिमला व दिल्ली की दैनिक लग्न सारणी सहित

गणितकर्त्ता पं. विवेक शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र पं. पन्ना लाल ज्योतिषी की असली व प्रामाणिक पंचाँग 2019-20 ई.

इस पंचांग का कापी राइट नं. A 27587/80 तथा Trade Mark No. 472584 भारत सरकार द्वारा रजिस्टर्ड है।

षड्वर्ग फल विचार विशेषांक

गौरवशाली 144 वाँ प्रकाशन वर्ष

स्थापित संवत् १९३२

मशहूरे आलम

पण्डित देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज़

माई हीरां गेट (अड्डा होशियारपुर), जालन्धर शहर — 144008 (पं.)

एकमात्र वितरक :

जनरल बुक डिपो

चौंक अड्डा होशियारपुर, जालन्धर

फोन : 0181-2457959

मूल्य : ₹ 100/-

卐 श्रीगणेशाय नमः 卐

'पंचाँगदिवाकर' सम्बन्धी आवश्यक निर्देशन

यस्मिन् काले यतः खेटा यान्ति दृग्गणितैक्यताम्।
तत् एव स्फुटाः कार्याः दिक्कालौ स्फुटौ विदा॥ (बृहत् पाराशर)

अर्थात्–जिस पद्धति या सिद्धान्त से दृक्-गणितैक्य युक्त वेध-सिद्ध ग्रह स्पष्ट प्राप्त हों, उसी पद्धति का अनुसरण करना चाहिए। उसी के द्वारा स्पष्ट दिशा एवं ग्रह-स्पष्ट, कालादि साधन करने चाहिएं।

(1) इस पंचाँग का निर्माण ग्रीनविच से पूर्व रेखांश (Longitude) 75°/34'E तथा अक्षांश (Latitude) 31°/19'N, उत्तर के आधार पर किया गया है। पंचाँग में दिए गए तिथि, नक्षत्र, योगादि के मान एवं सूर्य, चन्द्रादि ग्रहों का राशि-परिवर्तन (घड़ी-पलादि) में जालन्धर नगर के सूर्योदय अस्तादि का प्रयोग किया गया है।

(2) इस पंचाँग की गणित प्रक्रिया में सूक्ष्म दृक्-गणित एवं चित्रा-पक्षीय निरयण पद्धति का आश्रय लिया गया है। जोकि महर्षि पाराशर, केतकर, वसिष्ठ, भास्कराचार्य, पं. बापूदेव शास्त्री आदि प्राचीन एवं अर्वाचीन मनीषियों/ज्योतिष आचार्यों द्वारा अनुमोदित है। पंचाँग में दिए गए व्रत, पर्व एवं मुहूर्त्तों में प्रयुक्त तिथि, नक्षत्रादि की गणित शास्त्र सम्मत है तथा यह भारत सरकार द्वारा भी प्रमाणित एवं अनुमोदित है।

(3) पक्ष वाले पृष्ठों पर दैनिक सूर्योदय, सूर्यास्त भारतीय समयानुसार जालन्धर के हैं। सूर्योदयास्त में किरण वक्री भवन-संस्कार सहित होने से सूर्योदयादिष्टादि बनाने में यही ग्राह्य होते हैं। प्रत्यक्ष देखने के लिए सूर्योदय में 3 मिनट घटावें और सूर्यास्त में जमा कर लेवें।

(4) तिथि, नक्षत्र, योग एवं करणों के सामने दिए गए घड़ी पल उनका सूर्योदय से समाप्तिकाल बतलाते हैं। उनके घड़ी पलों के घण्टे-मिनट बनाकर उसमें स्थानीय (अपने नगर) का सूर्योदय जमा कर देने तिथि-नक्षत्रों आदि का समाप्तिकाल भा. स्टैं. टाईम में निकल आएगा। पाठकों की सुविधा हेतु तिथि-नक्षत्रों एवं ग्रहों आदि के समाप्तिकाल भा. स्टै. टा. घंटा मिंटों में अलग से दिए गए हैं। जहाँ पर 24, 25, 26 आदि अंक लिखे हैं। वहाँ 24 की रात्रि 12 बजे, 25 को रात्रि के 1 बजे, 26 को रात्रि के 2 बजे जानें। इसी प्रकार आगे के अंकों में भी 24 घटा करके अर्ध रात्रि के बाद का समय जानें। जब तक आगामी दिवसीय सूर्योदय न हो, तब तक भारतीय ज्योतिष शास्त्रानुसार पिछली तारीख का दिन ही माना जाता है।

(5) दिनमान घड़ी पलों में है तथा दाएँ अंग्रेज़ी तारीख एवं देशीय प्रविष्टों के पश्चात् लस्टर में चन्द्र राशि-संचार भद्रा, पंचक आदि व सूर्यादि ग्रहों के नक्षत्र राशि प्रवेश, उदयास्तादि घड़ी पलों में दिए गए हैं। निर्दिष्ट घड़ी पलों को घण्टे मिनट बनाकर उन में स्थानीय सूर्योदय जमा करके उनको घं. मिं. भा. स्टै. टा. में परिवर्तित किया जा सकता है। **ध्यान रखें**, चंद्र संचार व सूर्यादि ग्रहों के राशि, नक्षत्र प्रवेश सूर्योदयात् प्रवेश काल है, न कि समाप्ति काल हैं। पक्ष वाले पृष्ठों में तिथि, नक्षत्रादि के घंटा मिनट एवं **दैनिक ग्रह स्पष्ट भू-केन्द्रीय होने से भा. स्टैं. टा. में सर्वत्र भारतोपयोगी होंगे।** अन्तिम पृष्ठों पर भारत के मुख्य शहरों के भी सूर्योदयास्त दिए गए हैं। प्रतिवर्ष नए-नए विषयों का समावेश किया जाता है।

(6) पक्ष वाले पृष्ठों में तिथि के नीचे 15 तिथि को पूर्णिमा तथा अमा. तिथि को 30 के अंकों से संकेत किया गया है। तिथि क्षय के आगे शून्य (०) के चिन्ह लगाए गए हैं तथा जहाँ कहीं, नक्षत्र या योग का क्षय हुआ है, उसे क्षय सहित दोनों नक्षत्रों (या योगों) को बारीक करके लिख दिया है। जहाँ तिथि, नक्षत्र या योग के आगे ६०।०० घड़ी लिखा है, उससे तिथि, नक्षत्रादि की वृद्धि समझें। वह तिथि, नक्षत्रादि अगले दिन तक व्याप्त रहेगा।

पंचांगदिवाकर के तिथि, नक्षत्र, योग, ग्रह-नक्षत्र प्रवेश आदि की गणित **पं. पंकज शर्मा द्वारा विकसित Computer Programme** से की जाती है।

सरस्वति नमस्तुभ्यं वरदे कामरूपिणि। विद्यारम्भं करिष्यामि सिद्धिर्भवतु मे सर्वदा॥

स्वर्गीय : पं. श्री पन्ना लाल ज्योतिषी

श्री गणेशाय नमः
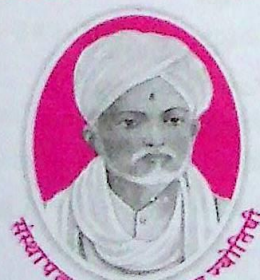
संस्थापक : पं. देवी दयालु ज्योतिषी

श्री सरस्वत्यै नमः

स्वर्गीय : पं. चूनी लाल ज्योतिषी

अखिल भारतोपयोगी चित्रापक्षीय दृक् गणिताधारित

पंचाँग दिवाकर

नया "परिधावी" नामक वि. संवत् पंचाँग दिवाकर के पाठकों के लिए शुभ एवं मंगलमय हो

वि. संवत् २०७६ (सन् 2019-20 ई.)

असली, शुद्ध एवं प्रामाणिक पंचाँग

राजा शनि

मन्त्री सूर्य

मशहूरे आलम

पं. देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज़ (लाहौर वाले)

लेखक एवं गणितकर्त्ता : पं. विवेक शर्मा (एम. ए. एल. एल. बी.) सह-संपादक : पं. पंकज शर्मा (एम. कॉम)

सुपुत्रः स्वर्गीय पं. पन्ना लाल ज्योतिषी प्रपौत्र पं. देवी दयालु ज्योतिषी

(ज्योतिष, कर्मकाण्ड सम्बन्धी अनेक ग्रन्थों के यशस्वी लेखक)

अड्डा होशियारपुर, जालन्धर-144 008 (भारत) फोन नं. 0181-2457959

गौरवशाली प्रकाशन वर्ष १४४ वां

स्थापित वि. संवत् १९३२

प्रकाशक : जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर (पं.)। मोबाईल 094172-91325, 097799-13583

Printed at : Choice Books & Printers (P) Ltd., Focal Point, Extension, Jalandhar.

विषय-सूची-पंचांगदिवाकर-संवत् २०७६ (सन् 2019-20 ई.)

इस वर्ष के कुछ नवीन, उपयोगी एवं आकर्षक विषय

आगामी वर्ष के आकर्षक विषय

- षड्वर्ग में त्रिशांश, सप्तमांश एवं नवमांश कुण्डली विचार व फल
- सोनीपत, कैथल, फरीदाबाद (हरि.) के दैनिक सूर्योदयास्त-2020 ई.
- अधिक (पुरुषोत्तम) मास फल आदि अनेक सारगर्भित लेख दिए जाएंगे।

पंचाँग दिवाकर के १४४वें गौरवमयी वर्ष प्रवेश पर

अनन्त श्री विभूषित

श्री श्री १००८ काशी धर्म पीठाधीश्वर
जगद् गुरु शंकराचार्य
स्वामी नारायणानन्द तीर्थ
महाराज जी का
शुभाशीर्वाद

भारतीय पञ्चाङ्ग पद्धतिरस्माकं हिन्दु-सभ्यतायाः गौरवान्वितायाः समृद्धयाश्च संस्कृतेर-भिव्यंजनां करोति।

शताधिकवर्षेभ्यः प्राक् गणिताचार्येण सु-प्रसिद्धेन ज्योतिर्विद पण्डित देवीदयाल महाभागेन लवपुरे संस्थापितं प्रकाशितं च प्रसिद्धं लोकप्रियं च पञ्चाङ्गदिवाकरम् आगामिवर्षे निज १२५तमे वर्षे प्रवेशं लभमानमस्ति। सम्प्रति तस्यैव पण्डितप्रवरस्य प्रपौत्रः गणिताचार्यः पण्डित पन्नालाल शर्मा ज्योतिर्विद् निज सुयोग्य पुत्र द्वयमाध्ययेन पञ्चाङ्ग कार्ये शुद्धस्फुटसूक्ष्म-गणितागत चित्रापक्षीय निरयणपद्धतिमनुसरन् पञ्चाङ्गदिवाकरस्य लेखनं सम्पादनं च कुर्वन्नस्ति। नवीने पञ्चाङ्गदिवाकरे ज्योतिषः व्रतपर्वादि धर्मशास्त्र विषयकानामु-पयोगिविषयानां च समावेशनात् पञ्चाङ्ग दिवाकरं सम्प्रति सर्वविधिधर्मपरायण जनसामान्यस्य कृते सुतरामु-पेयोगी प्रतीयते।

आशस्यते यद् लोकहितं सम्मुखीनं कृत्वा निज कुल परम्परा परिपालने पण्डित पन्ना लाल ज्योतिर्विद् निज सुपुत्रयोः सहयोगेन पञ्चाङ्गमिदमतोऽप्यधिकं उपयोगिनं कर्तुं प्रयासरतो भविष्यति। अस्य प्रचुरः प्रचारः प्रसारश्च भवेत् अस्योन्नतिं सुतरां कामय-मानः शुभाशीरपि कामये।

तिथौ
वैशाख पूर्णिमा, भृगुवासरः
प्रविष्टे १७ वैशाख, सं. २०५६ विक्रमी
श्री हस्त-मुद्रा-
१००८ स्वामी नारायणान्द तीर्थ रामेश्वर मठः
श्री काशी धर्म पीठाधीश्वर काशीक्षेत्रम्(वाराणसी)

ॐ शान्ति

तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम्।
ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते।। (श्रीमद्भगवद्गीता १०/१०)

अर्थात् जो निरन्तर मेरे ध्यान में लगे हुए प्रेमपूर्वक मेरा भजन करते हैं, उन्हें मैं वह तत्त्वज्ञानरूप योग देता हूँ, जिससे वे मेरे को ही प्राप्त होते हैं।

चतुर्थ पुण्य तिथि पर श्रद्धांजलि
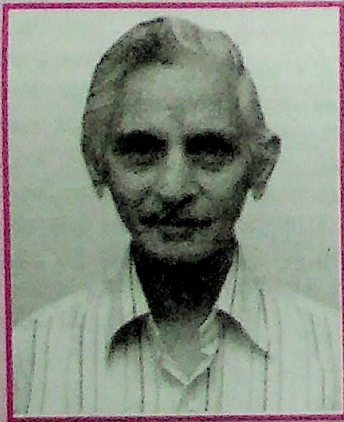
पं. देवीदयालु परिवार के सूर्य

पं. पन्ना लाल ज्योतिषी

(सुपुत्र पं. चूनी लाल ज्योतिषी)

जन्म :	देहावसान :
23 नवम्बर, 1940 ई.	15 मई, 2014 ई.

आपके जीवन की सादगी, उत्कृष्टता, कार्य के प्रति समर्पण, वात्सल्यपूर्ण एवं सहृदय व्यक्तित्व हम सभी के लिए प्रेरणा का अनन्य स्रोत बना रहेगा। आपकी समरस एवं ज्ञानवर्धक बातें, बुद्धि एवं उर्जावान उपस्थिति हमारे भीतर सदैव विद्यमान है और रहेगी। हम आपके पदचिन्हों के आलोक में सतत् अग्रसर रहने का संकल्प दोहराते हैं।

श्रीमती सुमन शर्मा (धर्मपत्नी) एवं
समस्त पं. देवीदयालु परिवार

सर्वकल्याणकारी शास्त्र-वचन

(1) ऋत्विक् पुरोहित: पुत्रो भार्या भृत्य: सरना तथा।
एतद् द्वारा कृतं यच्च तत्कृतं स्वयमेव हि।

अर्थात् याज्ञिक, पुरोहित, पुत्र, पत्नी, सेवक एवं शरणागत्–इनके द्वारा किया या करवाया गया कर्म स्वयं किया हुआ माना जाता है।

(2) सुकृतेन कुले जन्म, सुकृतेन सुभाषितम्।
सुकृतेन सती भार्या, सुकृतेन कृती सुत:।।

अर्थात् शुभ कर्मों के फलस्वरूप उच्च कुल में जन्म होता है। पुण्य कर्मों से वाणी में मधुरता आती है। पुण्यकर्मों के प्रभावस्वरूप ही सती-सावित्री पत्नी मिलती है। तथा पुण्य कर्मों के प्रभाव से ही श्रेष्ठ पुत्र का जन्म होता है।

(3) व्रतोपवासै: विष्णुर्नान्यजन्मनि तोषित:।
ते नरा: धनापत्यसुखहीना ग्रहरोगादि नादिन:।।(विष्णुधर्मोत्तर पु.)

अर्थात् जिन्होंने पूर्वजन्म में व्रतोपवासों एवं पूजनादि द्वारा भगवान् विष्णु को प्रसन्न नहीं किया, वे मनुष्य ही इस जन्म में ग्रह, रोग, व्याधि, धन, सन्तान अभाव आदि कष्टों से पीड़ित रहते हैं।

पं. विवेक शर्मा एवं पं. पंकज शर्मा (पंचांगदिवाकर, जालन्धर)
श्रीसनातन धर्म पथ परिषद्, पठानकोट (पंजाब) द्वारा सम्मानित
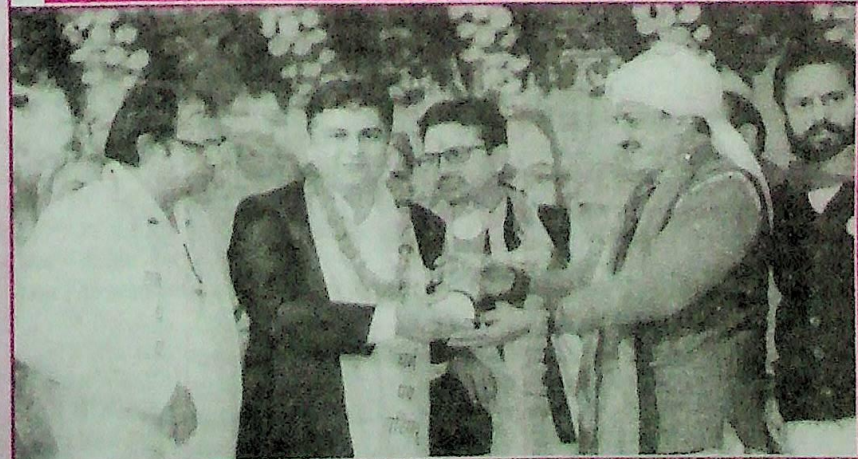
पण्डित विवेक शर्मा (एम.ए.एल.एल.बी.) तथा पं. पंकज शर्मा (एम. कॉम)–सम्पादक पंचांगदिवाकर (पं. देवी दयालु संस्थान, जालन्धर) को गीता-जयन्ती महोत्सव के उपलक्ष्य पर सनातन धर्म पथ परिषद्, पठानकोट (रजि.) (पं.) द्वारा दिनांक 30 नवम्बर, 2017 ई., बृहस्पतिवार को रामलीला ग्राऊंड, पठानकोट में '**विशिष्ट विद्वान**' अलंकरण से सम्मानित किया गया। इस संस्थान के अध्यक्ष '**पं. आचार्य सतीश शास्त्री**', संयोजक पं. राकेश शास्त्री जी तथा पं. विश्वामित्र जी की अध्यक्षता में पण्डित जी को प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह तथा भव्य पुष्प-माल्यालकंरण के साथ सम्मानित किया गया।

प्रमुख पर्व-त्यौहार, व्रत एवं छुट्टियाँ (सन् 2019-20 ई.)

◆जनवरी-(सन् 2019 ई.)◆

इंग्लिश नववर्ष प्रारम्भ 1 जन. मंग.
लोहड़ी पर्व 13 जन. रवि
गु. गोबिन्द सिंह प्रकाशोत्सव 13 जन. रवि
मकर (माघ) संक्रान्ति 14 जन. चंद्र
पुत्रदा एकादशी व्रत 17 जन. गुरु
पौष पूर्णिमा 21 जन. चंद्र
माघस्नान प्रारम्भ 21 जन. चंद्र
श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी 24 जन. गुरु
गणतन्त्र दिवस(70वाँ) 26 जन. शनि

◆फरवरी◆

अर्द्धकुम्भी (प्रयागराज) 4 फर. चंद्र
माघ (मौनी) अमावस 4 फर. चंद्र
सोमवती अमावस 4 फर. चंद्र
महोदय योग 4 फर. चंद्र
गौरी तृतीया (गोंतरी) 8 फर. शुक्र
श्रीगणेश तिल चतुर्थी 8 फर. शुक्र
वसन्त-पंचमी, श्रीपञ्चमी 9 फर. शनि
सरस्वती पूजन 9 फर. शनि
रथ-आरोग्य सप्तमी 12 फर. मंग
भीष्माष्टमी 13 फर. बुध
भीष्मद्वादशी, तिल १२ 16 फर. शनि
माघ पूर्णिमा 19 फर. मंग
माघस्नान समाप्त 19 फर. मंग
श्रीगुरु रविदास जयन्ती 19 फर. मंग

◆मार्च◆

श्रीमहाशिवरात्रि व्रत 4 मार्च चंद्र
होलाष्टक प्रारम्भ 14 मार्च गुरु
अन्नपूर्णा-अष्टमी 14 मार्च गुरु
गोविन्द द्वादशी 18 मार्च चंद्र
महाविषुव दिन 20 मार्च बुध
होलिकादहन(भद्रा-बाद) 20 मार्च बुध
होलाष्टक समाप्त 21 मार्च गुरु
होली पर्व (सर्वत्र) 21 मार्च गुरु
वसन्तोत्सव 21 मार्च गुरु
होला मेला (श्रीआनन्दपुर-पांओटा साहिब) 21 मार्च गुरु
शीतलाष्टमी 28 मार्च गुरु

◆अप्रैल◆

वारुणी पर्व 2 अप्रै. मंग.
मे. पिहोवातीर्थ-हरि-2 दिन 3 अप्रै. बुध
वि. संवत् 2075 पूर्ण 5 अप्रै. शुक्र
वि. संवत् 2076 शुरु 6 अप्रै. शनि
चैत्र (वासन्त) नवरात्रे शुरु 6 अप्रै. शनि
तैलाभ्यंग/ध्वजारोहण 6 अप्रै. शनि
गौरी तृतीया (गणगौर) 8 अप्रै. चंद्र
श्री (लक्ष्मी) पंचमी 10 अप्रै. बुध
स्कन्द षष्ठी व्रत 11 अप्रै. गुरु
अशोकाष्टमी 13 अप्रै. शनि
श्रीदुर्गाष्टमी, भवान्युत्पत्ति 13 अप्रै. शनि
श्रीरामनवमी 13 अप्रै. शनि
वासन्त नवरात्र समाप्त 14 अप्रै. रवि
वैशाखसंक्रांति (वैशाखी) 14 अप्रै. रवि
लक्ष्मीकान्त दोलोत्सव 16 अप्रै. मंग.
विष्णु दमनोत्सव 17 अप्रै. बुध
अनङ्ग त्रयोदशी व्रत 17 अप्रै. बुध
श्रीमहावीर जयन्ती 17 अप्रै. बुध
शिवदमनोत्सव 18 अप्रै. गुरु
वैशाख स्नान प्रारम्भ 19 अप्रै. शुक्र
गुड फ्राइडे (क्रिश्चि.) 19 अप्रै. शुक्र

◆मई◆

भगवान् परशुराम जयन्ती 7 मई मंग
अक्षय-तृतीया 7 मई मंग
आद्यगुरु शंकराचार्य जयं. 9 मई गुरु
श्रीगङ्गा जयन्ती 11 मई शनि
श्रीबगुलामुखी जयंती 12 मई रवि
जानकी जयन्ती 13 मई चन्द्र
श्रीनृसिंह जयन्ती 17 मई शुक्र
श्रीकूर्म-जयन्ती 18 मई शनि
वैशाख-बुद्ध पूर्णिमा 18 मई शनि
वैशाख स्नान समाप्त 18 मई शनि
अपरा-भद्रकाली एकादशी 30 मई गुरु

◆जून◆

वटसावित्री व्रत (अमा. पक्ष) 3 जून चंद्र
ज्येष्ठ (भावुका) अमा. 3 जून चंद्र
सोमवती अमावस 3 जून चंद्र
शनैश्चर जयन्ती 3 जून चंद्र
रम्भा तृतीया व्रत 5 जून बुध
अरण्य षष्ठी 8 जून शनि
विन्ध्यवासिनी पूजा 8 जून शनि
मेला क्षीर-भवानी (काश्मीर) 10 जून चंद्र
श्रीदुर्गाष्टमी, धूमावती जयं. 10 जून चंद्र
श्रीगङ्गा-दशहरा (हरिद्वार) 12 जून बुध
निर्जला एकादशी व्रत 13 जून गुरु
वटसावित्री व्रत (पूर्णिमापक्ष) 16 जून रवि
सन्त कबीर जयन्ती 17 जून चंद्र
सायन दक्षिणायन प्रा. 21 जून शुक्र

◆जुलाई◆

श्रीजगन्नाथ रथयात्रा (पुरी) 4 जुला. गुरु
कुमार-षष्ठी 7 जुला. रवि
विवस्वत सप्तमी 8 जुला. चंद्र
हरिशयनी एकादशी 12 जुला. शुक्र
चातुर्मास्य व्रत नियम प्रा. 12 जुला. शुक्र
श्रीविष्णु शयनोत्सव 12 जुला. शुक्र
कोकिला व्रत 16 जुला. मंग.
शिवशयनोत्सव 16 जुला. मंग
खण्डग्रास चन्द्रग्रहण 16 जुला. मंग
गुरु पूर्णिमा, व्यासपूजा 16 जुला. मंग
श्रावण शिवरात्रि व्रत 30 जुला. मंग

◆अगस्त◆

हरियाली अमावस 1 अग. गुरु
मेला चिन्तपूर्णी (हि.प्र.) प्रा. 1 अग. गुरु
मधुस्रवा-हरियाली तीज 3 अग. शनि
नाग-पञ्चमी 5 अग. चंद्र
श्रीदुर्गाष्टमी (मेला-चिन्तपूर्णी हि.प्र. समा.) 8 अग. गुरु
ऋग्वेदि उपाकर्म 14 अग. बुध
रक्षाबन्धन (राखी) 15 अग. गुरु
भारत स्वतन्त्रता दिवस 15 अग. गुरु
श्रावण पूर्णिमा 15 अग. गुरु
यजु-अथर्ववेदि उपाकर्म 15 अग. गुरु
कजली तृतीया 18 अग. रवि
श्रीगणेश (बहुला) चतुर्थी 19 अग. चंद्र
चन्दन षष्ठी व्रत 21 अग. बुध
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स्मा.) 23 अग. शुक्र
दूर्वाष्टमी व्रत 23 अग. शुक्र
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वैष्णव) 24 अग. शनि
श्रीगुग्गा नवमी 25 अग. रवि
गोकुलाष्टमी, नन्दोत्सव 25 अग. रवि
वत्स द्वादशी (पूजा) 27 अग. मंग.
कुशाग्रहणी अमावस 30 अग. शुक्र
पिठोरी अमावस 30 अग. शुक्र

◆सितम्बर◆

हरितालिका तृतीया 1 सितं. रवि
साम-उपाकर्म 1 सितं. रवि
सिद्धि विनायक व्रत 2 सितं. चंद्र
कलंक-चतुर्थी 2 सितं. चंद्र
ऋषि-पंचमी व्रत 3 सितं. मंग
सूर्य षष्ठी व्रत 4 सितं. बुध
सन्तान सप्तमी व्रत 5 सितं. गुरु
श्रीराधाष्टमी 6 सितं. शुक्र
श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रा. 6 सितं. शुक्र
श्रीचन्द्र-नवमी(उदासीन) 7 सितं. शनि
श्रीवामन-जयन्ती 10 सितं. मंग
श्रवण-द्वादशी 10 सितं. मंग
अनन्त चतुर्दशी व्रत 12 सितं. गुरु
मेला बाबा सोढल (जालं.) 12 सितं. गुरु
प्रोष्ठपदी, पूर्णिमा श्राद्ध 13 सितं. शुक्र
पितृपक्ष (श्राद्ध) शुरु 14 सितं. शनि
श्रीमहालक्ष्मी व्रत समा. 21 सितं. शनि
जीवित्पुत्रिका व्रत 22 सितं. रवि
सर्वपितृ श्राद्ध 28 सितं. शनि
महालय श्राद्ध समाप्त 28 सितं. शनि
गजच्छाया योग 28 सितं. शनि
शरद् नवरात्रे प्रारम्भ 29 सितं. रवि

◆अक्तूबर◆

महात्मा गाँधी जयं. 2 अक्तू. बुध
उपाङ्ग ललिता व्रत 2 अक्तू. बुध
सरस्वती आवाहन 4 अक्तू. शुक्र
सरस्वती पूजन 5 अक्तू. शनि
श्रीदुर्गाष्टमी 6 अक्तू. रवि
सरस्वती बलिदान 6 अक्तू. रवि
सरस्वती विसर्जन 7 अक्तू. चंद्र
महानवमी, बलिदान दिवस 7 अक्तू. चंद्र
नवरात्र-समाप्त 7 अक्तू. चंद्र
विजयादशमी (दशहरा) 8 अक्तू. मंग.
भरत-मिलाप 9 अक्तू. बुध
कोजागर व्रत 13 अक्तू. रवि
शरद् पूर्णिमा व्रत 13 अक्तू. रवि
महर्षि वाल्मीकि जयं. 13 अक्तू. रवि
कार्तिक स्नान प्रारम्भ 13 अक्तू. रवि
व्रत करवा-चौथ 17 अक्तू. गुरु
अहोई अष्टमी व्रत 21 अक्तू. चंद्र
गोवत्स द्वादशी 25 अक्तू. शुक्र
धन-त्रयोदशी 25 अक्तू. शुक्र
श्रीहनुमान जयंती(उ.भा.) 26 अक्तू. शनि
नरक-चतुर्दशी 27 अक्तू. रवि
दीपावली 27 अक्तू. रवि
श्रीमहालक्ष्मी पूजन 27 अक्तू. रवि
सोमवती अमावस 28 अक्तू. चंद्र
विश्वकर्मा दिवस 28 अक्तू. चंद्र
अन्नकूट-गोवर्धन पूजा 28 अक्तू. चंद्र
यमद्वितीया, भाई-दूज 29 अक्तू. मंग
श्रीविश्वकर्मा पूजन 29 अक्तू. मंग

◆नवम्बर◆

सूर्य षष्ठी पर्व (बिहार) 2 नवं. शनि
गोपाष्टमी 4 नवं. चंद्र
अक्षय-नवमी 5 नवं. मंग
हरिप्रबोधिनी एकादशी 8 नवं. शुक्र
भीष्मपंचक प्रारम्भ 8 नवं. शुक्र
चातुर्मास्य व्रतादि समा. 8 नवं. शुक्र
तुलसी विवाह 8 नवं. शुक्र
हरिप्रबोधोत्सव 9 नवं. शनि

वैकुण्ठ चतुर्दशी	10 नवं. रवि
त्रिपुरोत्सव	12 नवं. मंग
कार्तिक पूर्णिमा	12 नवं. मंग
श्रीगुरु नानक जयंती	12 नवं. मंग
कार्तिक स्नान समाप्त	12 नवं. मंग
भीष्मपंचक समाप्त	12 नवं. मंग
श्रीकालभैरवाष्टमी	19 नवं. मंग

◆दिसम्बर◆

स्कन्द (गुह) षष्ठी	2 दिसं. चंद्र
मित्र (विष्णु) सप्तमी	3 दिसं. मंग
श्रीगीता जयन्ती	8 दिसं. रवि
मोक्षदा एकादशी व्रत	8 दिसं. रवि
श्रीदत्तात्रेय जयन्ती	11 दिसं. बुध
क्रिसमिस डे (क्रिश्चि.)	25 दिसं. बुध
कंकण सूर्यग्रहण	26 दिसं. गुरु

» जनवरी–2020 ई० »

इंग्लिश नववर्ष प्रारम्भ	1 जन. बुध
पुत्रदा एकादशी व्रत	6 जन. चंद्र
माघस्नान प्रारम्भ	10 जन. शुक्र
लोहड़ी पर्व	13 जन. चंद्र
श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी	13 जन. चंद्र
मकर (माघ) संक्रान्ति	14 जन. मंग
माघ (मौनी) अमावस	24 जन. शुक्र
गणतन्त्र दिवस(71वाँ)	26 जन. रवि
गौरी तृतीया (गौंतरी)	28 जन. मंग
श्रीगणेश तिल चतुर्थी	28 जन. मंग
वसन्त-पंचमी	30 जन. गुरु
श्री पंचमी	30 जन. गुरु
सरस्वती पूजन	30 जन. गुरु

» फरवरी–2020 ई० »

रथ-आरोग्य सप्तमी	1 फर. शनि
भीष्माष्टमी	2 फर. रवि
भीष्मद्वादशी, तिल१२	6 फर. गुरु
माघ पूर्णिमा	9 फर. रवि
माघस्नान समाप्त	9 फर. रवि
श्रीगुरु रविदास जयं.	9 फर. रवि
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	21 फर. शुक्र

» मार्च –2020 ई० »

होलाष्टक प्रारम्भ	3 मार्च मंग
अन्नपूर्णा-अष्टमी	3 मार्च मंग
गोविन्द द्वादशी	6 मार्च शुक्र
होलिका दहन (प्रदोषकाले)	9 मार्च चंद्र
होलाष्टक समाप्त	9 मार्च चंद्र
होली पर्व	10 मार्च मंग
वसन्तोत्सव	10 मार्च मंग
होला मेला (श्रीआनन्दपुर-व पांओटा साहिब)	10 मार्च मंग
शीतलाष्टमी व्रत	16 मार्च चंद्र
महाविषुव दिन	20 मार्च शुक्र
महावारुणी योग (19/40 से)	21 मार्च शनि
वारुणी पर्व	22 मार्च रवि
मे. पिहोवातीर्थ-हरि. 2 दिन	22 मार्च रवि
वि. संवत् २०७६ पूर्ण	24 मार्च मंग

एकादशी व्रत–2019–20 ई.

'धर्मसिंधु' अनुसार एकादशी दो प्रकार की होती है। विद्धा और शुद्धा॥

1. दशमी तिथि से युक्त एकादशी विद्धा एकादशी कहलाती है।

2. सूर्योदयकालिक एकादशी तिथि द्वादशी तिथि युक्त हो तो वह शुद्धा एकादशी कहलाती है।

सर्वसाधारण गृहस्थों एवं साधकों को शुद्धा एकादशी का व्रत रखना प्रशस्त एवं पुण्यप्रदायक माना गया है।

सफला (पौष) कृष्ण)	1 जन. मंग
पुत्रदा (पौष शुक्ल)	17 जन. गुरु
षट्तिला (माघ कृष्ण)	31 जन. गुरु
जया (माघ शुक्ल)	16 फर. शनि
विजया (फाल्गुन कृष्ण)	2 मार्च शनि
आमलकी (फाल्गु. शु.)	17 मार्च रवि
पापमोचनी (चैत्र कृष्ण) वैष्णा*	1 अप्रै. चंद्र
कामदा (चैत्र शुक्ल) वैष्णा*	16 अप्रै. मंग
वरूथिनी (वैशाख कृष्ण)	30 अप्रै. मंग
मोहिनी (वैशाख शुक्ल)	15 मई बुध
अपरा (ज्येष्ठ कृष्ण)	30 मई गुरु
निर्जला (ज्येष्ठ शुक्ल)	13 जून गुरु
योगिनी (आषाढ़ कृष्ण)	29 जून शनि
हरिशयनी (आषाढ़ शुक्ल)	12 जुला. शुक्र
कामिका (श्रावण कृष्ण)	28 जुला. रवि
पवित्रा (श्रावण शुक्ल)	11 अग. रवि
अजा (भाद्रपद कृष्ण) वैष्णा*	27 अग. मंग
पद्मा (भाद्रपद शुक्ल)	9 सितं. चंद्र
इन्दिरा (आश्विन कृष्ण)	25 सितं. बुध
पापांकुशा (आश्विन शुक्ल)	9 अक्तू. बुध
रमा (कार्तिक कृष्ण)	24 अक्तू. गुरु
हरिप्रबोधिनी (कार्तिक शु.)	8 नवं. शुक्र
उत्पन्ना (मार्ग. कृष्ण) वैष्णा*	23 नवं. शनि
मोक्षदा (मार्ग. शुक्ल)	8 दिसं. रवि
सफला (पौष कृष्ण)	22 दिसं. रवि
(सन् 2020 ई.)	
पुत्रदा (पौष शुक्ल)	6 जन. चंद्र
षट्तिला (माघ कृष्ण)	20 जन. चंद्र
जया (माघ शुक्ल)	5 फर. बुध
विजया (फाल्गुन कृष्ण)	19 फर. बुध
आमलकी (फाल्गु. शुक्ल)	6 मार्च शुक्र
पापमोचनी (चैत्र कृष्ण) वैष्णा*	20 मार्च शुक्र

नोट–स्मार्तों का व्रत वैष्णवों के व्रत के दिन से एक दिन पहले होता है। जिस तिथि के आगे कुछ नहीं लिखा, उसका अभिप्राय: यह है कि यह तिथि स्मार्तों और वैष्णवों–दोनों के लिए ग्राह्य है।

श्रीसत्यनारायण व्रत
(सन् 2019–20 ई.)

श्रीसत्यनारायण व्रत का उदयकालिक पूर्णमाशी की तिथि से कभी-कभी एक तारीख का अन्तर पड़ सकता है। क्योंकि चन्द्रोदय कालिक एवं प्रदोषव्यापिनी पूर्णिमा ही व्रत हेतु ग्रहण करनी चाहिए।

पौष	20 जन. रवि
माघ	19 फर. मंग
फाल्गुन	20 मार्च बुध
चैत्र	18 अप्रै. गुरु
वैशाख	18 मई शनि
ज्येष्ठ	16 जून रवि
आषाढ़	16 जुला. मंग
श्रावण	14 अग. बुध
भाद्रपद	13 सितं. शुक्र
आश्विन	13 अक्तू. रवि
कार्तिक	12 नवं. मंग
मार्गशीर्ष	11 दिसं. बुध
—(सन् 2020 ई.)—	
पौष	10 जन. शुक्र
माघ	8 फर. शनि
फाल्गुन	9 मार्च चंद्र

निरयण संक्रान्ति प्रवेश एव पुण्यकाल (सन 2019–20 ई.)

नाम संक्रान्ति	ता. मास वार	प्रवेशकाल (घं. मिं.)	पुण्यकाल विवरण (भा. स्टै. टा.)
माघ संक्रान्ति	14 जन., चंद्र	19-50	दोप. 13/26 से अगले दिन 11/50 तक
फाल्गुन संक्रान्ति	13 फर., बुध	8-47	दोपहर 15/11 तक
चैत्र संक्रान्ति	14 मार्च, गुरु	29-39	अगले दिन दोपहर 12/03 तक
वैशाख संक्रान्ति	14 अप्रै., रवि	14-08	प्रात: 7/44 बाद सारा दिन
ज्येष्ठ संक्रान्ति	15 मई, बुध	11-00	सूर्योदय बाद सारा दिन
आषाढ़ संक्रान्ति	15 जून, शनि	17-37	प्रात: 11/11 बाद
श्रावण संक्रान्ति	16 जुला., मंग	28-32	अगले दिन प्रात: 10/56 तक
भाद्र. संक्रान्ति	17 अग., शनि	13-01	प्रात: 6/37 बाद सारा दिन
आश्विन संक्रान्ति	17 सितं., मंग	13-02	प्रात: 6/38 बाद सारा दिन
कार्तिक संक्रान्ति	17 अक्तू., गुरु	25-02	अगले दिन प्रात: 7/26 तक
मार्ग. संक्रान्ति	16 नवं., शनि	24-50	अगले दिन प्रात: 7/14 तक
पौष संक्रान्ति	16 दिसं., चंद्र	15-27	प्रात: 9/03 बाद सारा दिन
माघ संक्रान्ति (20)	14 जन., मंग	26-07	अगले दिन प्रात: 8/31 तक
फाल्गुन संक्रान्ति	13 फर., गुरु	15-03	प्रात: 8/39 बाद सारा दिन
चैत्र संक्रान्ति	14 मार्च, शनि	11-53	सूर्योदय बाद सारा दिन

अमावस्याएँ (स्नान-दानार्थ)

पौष (शनैश्चरी)	5 जन. शनि
माघ (मौनी) (सोमवती)	4 फर. चंद्र
फाल्गुन	6 मार्च बुध
चैत्र	5 अप्रै. शुक्र
वैशाख (शनैश्चरी)	4 मई शनि
ज्येष्ठ (सोमवती)	3 जून चंद्र
आषाढ़ (भौमवती)	2 जुला. मंग
श्रावण	1 अग. गुरु
भाद्रपद	30 अग. शुक्र
आश्विन (शनैश्चरी)	28 सितं. शनि
कार्तिक (सोमवती)	28 अक्तू. चंद्र
मार्गशीर्ष (भौमवती)	26 नवं. मंग
पौष	26 दिसं. गुरु
—(सन् 2020 ई.)—	
माघ	24 जन. शुक्र
फाल्गुन	23 फर. रवि
चैत्र (भौमवती)	24 मार्च मंग

–श्रीगणेश चतुर्थी व्रत–

माघ (संकष्ट चतुर्थी)	24 जन. गुरु
फाल्गुन	22 फर. शुक्र
चैत्र	24 मार्च रवि
वैशाख	22 अप्रै. चंद्र
ज्येष्ठ	22 मई बुध
आषाढ़	20 जून गुरु
श्रावण	20 जुला. शनि
भाद्रपद (बहुला चतुर्थी)	19 अग. चंद्र
आश्विन (अङ्गारकी)	17 सितं. मंग
कार्तिक (करवाचौथ)	17 अक्तू. गुरु
मार्गशीर्ष (देखें पृ. 23)	15 नवं. शुक्र
पौष	15 दिसं. रवि
(सन् 2020 ई.)	
माघ (संकष्ट चतुर्थी)	13 जन. चंद्र
फाल्गुन	12 फर. बुध
चैत्र	12 मार्च गुरु

पितृपक्ष में श्राद्ध-2019 ई.

(आश्विन कृष्ण पक्ष में श्राद्ध तिथियाँ)

अपने पूर्वज पितरों के प्रति श्रद्धा भावना रखते हुए पितृ-तर्पण एवं श्राद्ध कर्म करना नितान्त आवश्यक है। इससे स्वास्थ्य, समृद्धि, आयु, सुख-शान्ति तथा वंशवृद्धि एवं उत्तम सन्तान प्राप्त होती है।

श्राद्ध	तिथि
प्रोष्ठपदी/पूर्णिमा श्राद्ध	13 सितं. शुक्र
प्रतिपदा का श्राद्ध	14 सितं. शनि
द्वितीया का श्राद्ध	15 सितं. रवि
तृतीया का श्राद्ध	17 सितं. मंग.
चतुर्थी का श्राद्ध	18 सितं. बुध
पंचमी का श्राद्ध	19 सितं. गुरु
षष्ठी का श्राद्ध	20 सितं. शुक्र
सप्तमी का श्राद्ध	21 सितं. शनि
अष्टमी का श्राद्ध	22 सितं. रवि
नवमी/सौभाग्यवतीनां श्राद्ध	23 सितं. चंद्र
दशमी का श्राद्ध	24 सितं. मंग
एकादशी का श्राद्ध	25 सितं. बुध
द्वादशी/संन्यासियों का श्राद्ध	25 सितं. बुध
त्रयोदशी का श्राद्ध	26 सितं. गुरु
✚चतुर्दशी का श्राद्ध	27 सितं. शुक्र
अमावस/अज्ञात तिथि वालों का श्राद्ध/सर्वपितृ श्राद्ध	28 सितं. शनि
नाना/नानी का श्राद्ध	29 सितं. रवि

✚ = चतुर्दशी तिथि को केवल शस्त्र, विष, दुर्घटनादि (अपमृत्यु) से मृतों का श्राद्ध होता है। उनकी मृत्यु चाहे किसी अन्य तिथि में हुई हो। चतुर्दशी तिथि में सामान्य मृत्यु वालों का श्राद्ध अमावस्या तिथि में करने का शास्त्र विधान है।

पर्व श्रीपिण्डोरीधाम (गुरदासपुर)

पर्व	तिथि
श्रीरामानन्दाचार्य जयन्ती	12 फर. मंग
श्रीहोलिका दहन	20 मार्च बुध
श्रीभगवत्नारायण जयं.	24 मार्च रवि
रामनवमी पर्व	13 अप्रै. शनि
वैशाखी पर्व	14 अप्रै. रवि
जानकी जयन्ती	13 मई चंद्र
गंगा दशहरा पर्व	12 जून बुध
गुरु पूर्णिमा	16 जुला. मंग
तुलसी जयन्ती पर्व	7 अग. बुध
कृष्ण जयन्ती पर्व	23-25 अग.
महंत गु. गोबिन्ददास जयं.	27 अक्तू. रवि

प्रदोष व्रत (2019-20 ई.)

मास	तिथि
पौष कृष्ण	3 जन. गुरु
पौष शुक्ल (शनि)	19 जन. शनि
माघ कृष्ण (शनि)	2 फर. शनि
माघ शुक्ल	17 फर. रवि
फाल्गुण कृष्ण	3 मार्च रवि
फाल्गुन शुक्ल(सोम)	18 मार्च चंद्र
चैत्र कृष्ण (भौम)	2 अप्रै. मंग.
चैत्र शुक्ल	17 अप्रै. बुध
वैशाख कृष्ण	2 मई गुरु
वैशाख शुक्ल	16 मई गुरु
ज्येष्ठ कृष्ण	31 मई शुक्र
ज्येष्ठ शुक्ल	14 जून शुक्र
आषाढ़ कृष्ण	30 जून रवि
आषाढ़ शुक्ल	14 जुला. रवि
श्रावण कृष्ण(सोम)	29 जुला. चंद्र
श्रावण शुक्ल(सोम)	12 अग. चंद्र
भाद्रपद कृष्ण	28 अग. बुध
भाद्रपद शुक्ल	11 सितं. बुध
आश्विन कृष्ण	26 सितं. गुरु
आश्विन शुक्ल	11 अक्तू. शुक्र
कार्तिक कृष्ण	25 अक्तू. शुक्र
कार्तिक शुक्ल(शनि)	9 नवं. शनि
मार्गशीर्ष कृष्ण	24 नवं. रवि
मार्गशीर्ष शुक्ल(सोम)	9 दिसं. चंद्र
पौष कृष्ण (सोम)	23 दिसं. चंद्र
(सन् 2020 ई.)	
पौष शुक्ल	8 जन. बुध
माघ कृष्ण	22 जन. बुध
माघ शुक्ल	7 फर. शुक्र
फाल्गुन कृष्ण	20 फर. गुरु
फाल्गुन शुक्ल (शनि)	7 मार्च शनि
चैत्र कृष्ण	21 मार्च शनि

सिद्ध महापुरुषों के जन्मदिन/स्मरणोत्सव

नाम	तिथि
स्वामी विवेकानन्द जी	12 जन. शनि
नेताजी सुभाषचन्द्र बोस	23 जन. बुध
स्वामी रामानन्दाचार्य जी	27 जन. रवि
लाला लाजपतराय जी	28 जन. चंद्र
सिद्ध बाबा लालदयाल जी	6 फर. बुध
श्रीगुरु रविदास जी	19 फर. मंग
छत्रपति शिवाजी	19 फर. मंग
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद स्मरण	28 फर. गुरु
महर्षि दयानन्द सरस्वती	28 फर. गुरु
श्रीरामकृष्ण परमहंस	8 मार्च शुक्र
श्रीचैतन्य महाप्रभु	21 मार्च गुरु
सन्त तुकाराम जी	22 मार्च शुक्र
शहीदी स: भगत सिंह	23 मार्च शनि
डॉ. बी.आर. अम्बेदकर	14 अप्रै. रवि
श्रीमहावीर जयन्ती	17 अप्रै. बुध
श्रीवल्लभाचार्य जयं.	30 अप्रै. मंग
श्रीछत्रपति शिवाजी	6 मई चंद्र
भगवान् परशुराम	7 मई मंग
श्रीरवीन्द्रनाथ टैगोर	7 मई मंग
आद्यगुरु श्रीशंकराचार्य	9 मई गुरु
स्वामी रामानुजाचार्य	10 मई शुक्र
महात्मा बुद्ध	18 मई शनि
श्रीनारद जयन्ती	20 मई चंद्र
श्रीमहाराणा प्रताप	6 जून गुरु
सन्त कबीर जयन्ती	17 जून चंद्र
श्रीध्यानू भगत	24 जून चंद्र
ऋषि वेदव्यास	16 जुला. मंग
लोकमान्य गंगाधर तिलक	23 जुला. मंग
लोकमान्य तिलक स्मरण	1 अग. गुरु
गोस्वामी तुलसीदास जी	7 अग. बुध
सन्त ज्ञानेश्वर	24 अग. शनि
भक्त नवल (जोधपुर)	24 अग. शनि
श्रीचन्द्र महाराज (उदासीन)	7 सितं. शनि
स्वामी शिवानन्द जी	8 सितं. रवि
महाराणा अग्रसेन	29 सितं. रवि
महात्मा गाँधी, शास्त्री जी	2 अक्तू. बुध
श्रीमाधवाचार्य जी	8 अक्तू. मंग
स्वामी रामतीर्थ	22 अक्तू. मंग
श्रीधनवन्तरी जयं.	26 अक्तू. शनि
श्रीहनुमान जयन्ती	26 अक्तू. शनि
श्रीविश्वकर्मा जयन्ती	29 अक्तू. मंग
श्रीवीर-वैरागी	10 नवं. रवि
महाराजा रणजीत सिंह	13 नवं. बुध
श्रीजवाहरलाल नेहरू(बालदिवस)	14 नवं. गुरु
शहीदी लाला लाजपतराय	17 नवं. रवि
श्रीसत्यसाईं बाबा जयं.	23 नवं. शनि
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद	3 दिसं. मंग
श्रीदत्तात्रेय	11 दिसं. बुध
शहीदी स: ऊधम सिंह	26 दिसं. गुरु
(सन् 2020 ई.)	
स्वामी विवेकानन्द जी	12 जन. रवि
स्वामी रामानन्दाचार्य जी	16 जन. गुरु
नेताजी सुभाषचन्द्र बोस	23 जन. बुध
सिद्ध बाबा लालदयाल जी	26 जन. रवि
लाला लाजपतराय जी	28 जन. मंग
श्रीगुरु रविदास जी	9 फर. रवि
महर्षि दयानन्द सरस्वती	18 फर. मंग
छत्रपति शिवाजी	19 फर. बुध
श्रीरामकृष्ण परमहंस	25 फर. मंग
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद स्मरण	28 फर. शुक्र
श्रीचैतन्य महाप्रभु	9 मार्च चंद्र
सन्त तुकाराम जी	11 मार्च बुध
शहीदी स: भगत सिंह	23 मार्च चंद्र

पूर्णिमा व्रत (2019-20 ई.)

(उदय-व्यापिनी, स्नानदानार्थ)

मास	तिथि
पौष	21 जन. चंद्र
माघ	19 फर. मंग
फाल्गुन	21 मार्च गुरु
चैत्र	19 अप्रै. शुक्र
वैशाख	18 मई शनि
ज्येष्ठ	17 जून चंद्र
आषाढ़	16 जुला. मंग
श्रावण	15 अग. गुरु
भाद्रपद	14 सितं. शनि
आश्विन	13 अक्तू. रवि
कार्तिक	12 नवं. मंग
मार्गशीर्ष	12 दिसं. गुरु
पौष (2020 ई.)	10 जन. शुक्र
माघ	9 फर. रवि
फाल्गुन	9 मार्च चंद्र

दशमहाविद्या जयन्ती

जयन्ती	तिथि
श्रीमहातारा जयन्ती	13 अप्रै. शनि
श्रीमातङ्गी जयन्ती	7 मई मंग
श्रीबगुलामुखी जयन्ती	12 मई रवि
श्रीछिन्नमस्तिका जयन्ती	18 मई शनि
श्रीधूमावती जयन्ती	10 जून चंद्र
श्रीमहाकाली जयन्ती	23 अग. शुक्र
श्रीभुवनेश्वरी जयन्ती	10 सितं. मंग
श्रीकमला जयन्ती	16 अक्तू. बुध
श्रीत्रिपुरभैरवी जयन्ती	11 दिसं. बुध
श्रीललिता जयन्ती (20 ई.)	9 फर. रवि

दशावतार जयन्तियां-2019 ई.

जयन्ती	तिथि
श्रीमत्स्यावतार जयन्ती	8 अप्रै. चंद्र
श्रीरामावतार जयन्ती	13 अप्रै. शनि
श्रीपरशुराम जयन्ती	7 मई मंग
श्रीनृसिंहावतार जयन्ती	17 मई शुक्र
श्रीकूर्मावतार जयंती	18 मई शनि
श्रीबुद्धावतार जयन्ती	18 मई शनि
श्रीकल्कि जयन्ती	5 अग. चंद्र
श्रीकृष्णावतार जयं.	23 अग. शुक्र
श्रीवाराहावतार जयं.	1 सितं. रवि
श्रीवामनावतार जयं.	10 सितं. मंग

मासशिवरात्रि व्रत

मास	तिथि
पौष	4 जन. शुक्र
माघ	2 फर. शनि
फाल्गुन (श्रीमहाशिवरात्रि)	4 मार्च चंद्र
चैत्र	3 अप्रै. बुध
वैशाख	3 मई शुक्र
ज्येष्ठ	1 जून शनि
आषाढ़	1 जुला. चंद्र
श्रावण	30 जुला. मंग
भाद्रपद	28 अग. बुध
आश्विन	27 सितं. शुक्र
कार्तिक	26 अक्तू. शनि
मार्गशीर्ष	25 नवं. चंद्र
पौष	24 दिसं. मंग
—(सन् 2020 ई.)—	
माघ	23 जन. गुरु
फाल्गुन(श्रीमहाशिवरात्रि)	21 फर. शुक्र
चैत्र	22 मार्च रवि

पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, उ.खण्ड और उ.प्र. के मुख्य मेले—सन् 2019 ई.

मेला	तिथि
मरोज पर्व (जौनसार) उत्त.खंड	12 जन.
मेला लोहड़ी (पं., हरि. जम्मू आदि)	13 जन.
मे. दाऊँ (चण्डीगढ़-मोहाली)	13-14 जन.
बिन्दरख (रोपड़) (पं.)	14 जन.
मे. माघी (मुक्तसर) पं.	14 जन.
मे. मस्तुआणा (पं.) (बरसी सन्त अतर सिंह जी)	1 फर.
मेला बसन्त-पंचमी	9 फर.
मे. पशु-नागौर (राजस्थान)	10-13 फर.
मे. जैसलमेर (राजस्थान)	17-19 फर.
जयन्ती देवी (चण्डीगढ़)	18-19 फर.
माघी पूर्णिमा (हरि.-इलाहाबाद)	19 फर.
मे. श्रीमहाशिवरात्रि	4 मार्च
नीलकण्ठ महादेव (गढ़वाल)	4 मार्च
होलियां-होलाष्टक (यू.पी.)	14-21 मार्च
मे. सावातिल्ला	19 मार्च
होला मेला (श्रीआनन्दपुर सा.) पं.	21 मार्च
श्रीगुरुरामराय (देहरादून) उत्तरां.	25 मार्च
नवचण्डी (मेरठ) यू.पी.	25 मार्च
श्रीवीरमदास, बधौछी (पटि.)	26 मार्च
मे. शीतलामाता (कुराली) पं.	28 मार्च
पिहोवातीर्थ (हरियाणा)	3-4 अप्रै.
वैशाखी मेला-श्रीलक्ष्मण चौंतरा-हाँसी (हरियाणा)	4-14 अप्रै.
मे. हथीरा (थानेसर) कुरुक्षेत्र	4-14 अप्रै.
मेला चीमा (नानकसर) पं.	6 अप्रै.
मेला नवरात्रे-मनसादेवी (हरिद्वार व पंचकूला) हरि.	6-14 अप्रै.
माईसरखाना (बठिण्डा) पं.	11 अप्रै.
मे. नरीसैंभरी (मथुरा) उ.प्र.	13 अप्रै.
मे. वैशाखी-गंगभेवा (बावड़ी) ढकरानी, देहरादून (उ. खण्ड)	13-18 अप्रै.
मेला रामथनदास (फाज़िल्का) पं.	14 अप्रै.
मे. ठाणा डांडा, नागी-बागीधार (जौनसार)	17 अप्रै.
कॉंसादेवी (चण्डीगढ़-मोहाली)	18-19 अप्रै.
देवी मेला हथीहरा (कुरुक्षेत्र)	18 अप्रै.
चकराता (देहरादून)	3 मई
पिंजौर (कालका)	**4 मई**
गंगा सप्तमी (हरिद्वार)	**11 मई**
जोड़ मेला-संत खुशीराम जी गाँव-भरोमज़ारा, नवांशहर पं.	23-24 मई
भद्रकाली-कपूरथला (पं.)	30 मई
जखोली (उत्तराखण्ड)	3 जून
नन्दाचौरधाम, होशियारपुर	6-8 जून
साईं टेऊँराम पुण्यतिथि, हरिद्वार	8 जून
गङ्गा दशहरा (हरिद्वार)	**12 जून**
माता शीलावन्ती जी, गांव-भवानी (पठानकोट)	16 जून
रथयात्रा उत्सव (पुरी)	4 जुला.
साईं टेऊँराम जयंती, सप्तसरोवर भूपतवाला रोड, हरिद्वार	8 जुला.
गुरु पूर्णिमा उत्सव	16 जुला.
मे. काहनूवाल (गुरदासपुर) पं.	16 जुला.
मेला नाग-पंचमी (राज.)	22 जुला.
पं. जोगराज (जंडियाला) पं.	31 जुला.
मेला सिंघारा तीज (पं.)	3 अग.
गौरी-तीज (जयपुर) राज.	3 अग.
नुणाई (जौनसार बावर) उत्तरां.	4 अग.
मे. जयन्ती-देवी (मुल्लापुर-गरीबदास), चण्डीगढ़	14-15 अग.
मे. बग्गी-देहरी, गाँव-कण्डे लालोवाल, गुरदासपुर	15 अग.
भद्रराज (जौनसार)	17 अग.
कृष्ण जन्माष्टमी पर्व (मथुरा)	24 अग.
गुग्गा जाहिरपीर (नकोदर)	25 अग.
मे. गोगामेडी, गंगानगर, राज.	25 अग.
गुग्गा-नवमी (अम्बाला)	25 अग.
मेला संत मेलाराम जी भरोमज़ारा, नवांशहर	28-29 अग.
मे. बाबा सुथरेशाह (दिल्ली)	30 अग.
रानी सती मेला (झुंझुनूं) राज.	30 अग.
श्रीगोसाईंआणा, कुराली (पं.)	1 सितं.
महासू (हुंगरा) जौनसार, उत्तरां.	2 सितं.
रामदेव रोणेचा (जोधपुर) राज.	8 सितं.
वामन-द्वादशी (अम्बाला)	10 सितं.
मे. छपार-मलेरकोटला, पं.	11-14 सितं.
मे. बाबा सोढल (जालन्धर)	12 सितं.
मे. गोईंदवाल सा, तरनतारन पं.	14 सितं.
मे. गुग्गापीर (लुधियाना) पं.	14 सितं.
तपा बा. गोपीचंद, राहों, नवांशहर	22-24 सितं.
मे. हथीरा (थानेसर) कुरुक्षेत्र	27 सितं. से
मे. आशापूर्णी (पठानकोट) पं.	29 सितं.-7 अ
अचलेश्वर (बटाला) (पं.)	7-8 नवं.
वीर-वैरागी, नकोदर पं.	10 नवं.
मे. बग्गी देहरी, कण्डे-लालोवाल (गुरदासपुर) पं.	11-12 नवं.
मे. रामतीर्थ (अमृतसर) पं.	12 नवं.
मे. कपालमोचन, जगाधरी (हरि.)	12 नवं.
पुरानी दीपावली-जौनसार, जौनपुर (उत्तरां.)	27 नवं.
नन्दाचौर धाम, होशियारपुर	2-4 दिसं.
कुरुक्षेत्र महोत्सव (हरि.)	6-8 दिसं.
सिद्ध बा. कैलाशनाथ जयं. बस्ती शेख, जालन्धर	14 दिसं.
मे. जोड़-फतेहगढ़ साहिब प्रा.	26 दिसं.

जम्मू-कश्मीर के मेले

मेला	तिथि
लोहड़ी पर्व	13 जन.
मार्तण्ड तीर्थयात्रा	12 फर.
शिवरात्रि (पंचवटी-दवलैहड़) जम्मू	4 मार्च
मे. पुरमण्डल (जम्मू)	3-4 अप्रै.
गुप्तगंगा, कफी-अखनूर	4 अप्रै.
नवरात्रे पर्व (वैष्णोदेवी)	6-14 अप्रै.
मे. बाहूफोर्ट (जम्मू)	**13 अप्रै.**
देविका स्नान (ऊधमपुर)	13-15 अप्रै.
सतगुरु बाबा कांशीगिरी सुन्दरबनी	13-14 अप्रै.
मेला रामबन	13 अप्रै.
नृसिंह चौदश (ऊधमपुर)	17 मई
मे. मानसर	8-9 जून
मे. क्षीर (खीर) भवानी, तलमुल	10 जून
सपोरयात्रा-धारलदा (ऊधमपुर)	12 जून
शुद्ध महादेव (ऊधमपुर)	17 जून
वानसुल देवता, चब्बा, रामबन	21-28 जून
मेला चमलियाल	27 जून
सरथलदेवी यात्रा, किश्तवाड़	9 जुला.
शरीक भवानी	10 जुला.
हरिप्रयाग (बनी)	12 जुला.
मेला ज्वालामुखी	15 जुला.
रुद्रगंगा, चंद्रेणीदेसा, डोडा	16 जुला.
श्रावण शिवरात्रि, शिवपुरी, चलाई, राजगढ़ (रामबन)	30 जुला.
मे. नागपंचमी, कास्तीगढ़, डोडा	5 अग.
शोपियान यात्रा शुरु	12 अग.
यात्रा श्रीअमरनाथ गुफा समा.	15 अग.
स्वामी शंकराचार्य (श्रीनगर)	15 अग.
कृष्ण-जन्माष्टमी (रामबन)	23-24 अग.
कैलाश यात्रा प्रारम्भ	28-29 अग.
मेला पात (भद्रवाह)	3-5 सितं.
मे. आशापति (मार्तण्ड)	27-28 सितं.
मे. झिड़ी बाबा	12 नवं.
मे. पुरमण्डल (जम्मू)	25 नवं.

(सन् 2020 ई.)

मेला	तिथि
लोहड़ी पर्व	13 जन.
मार्तण्ड तीर्थयात्रा	1 फर.
मे. शिवरात्रि, पंचवटी-दवलैहड़, जम्मू	21 फर.
मेला पुरमण्डल (जम्मू)	22-23 मार्च

दरबार श्रीध्यानपुर (गुरदासपुर) के मुख्य पर्व-सन् 2019 ई.

पर्व	तिथि
श्रीबाबा लालदयाल जयंती	6 फर. बु.
वसन्त-पंचमी (पं. द्वारकादास जयं.)	9 फर. श.
होलिका दहन	20 मार्च बु.
श्रीरामनवमी पर्व	13 अप्रै. श.
महंत नारायणदास जयं.	30 मई गु.
व्यास पूजा	16 जुला. मं.
श्रीकृष्णजन्माष्टमी (वैष्ण.)	24 अग. श.
विजयादशमी (दशहरा)	8 अक्तू. मं.
दीपावली पर्व	27 अक्तू. र.
गद्दी स्वा. रामसुन्दरदास जी	1 नवं. शु.

(सन् 2020 ई.)

पर्व	तिथि
श्रीबाबा लालदयाल जयंती	26 जन. र.
वसन्त पंचमी (पं. द्वारकादास जयं.)	30 जन. गु.
होलिका दहन	9 मार्च चं.

श्री बदरीनाथ धाम के मुख्य उत्सव

(श्रीबदरीनाथ-केदारनाथ मन्दिर समिति द्वारा प्रेषित (2019-20 ई.)

उत्सव	तिथि
श्रीबदरीनाथ-कपाट खुलने की तिथि	10 फर. र.
श्रीबदरी यात्रा प्रारंभ	7 मई मं.
श्रीगङ्गा-दशहरा	12 जून बु.
घण्टाकर्ण उत्सव	15/16 जून
गुरु पूर्णिमा	16 जुला. मं.
नर-नारायण जयं.	5 अग. चं.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	23 अग. शु.
नन्दा-अष्टमी	6 सितं. शु.
माता-मूर्त्ति उत्सव	10 सितं. मं.
नारद-उत्सव	11 सितं. बु.
पितृ-श्राद्ध	14-28 सितं.
श्रीबदरीनाथ के कपाट बन्द तिथि	8 अक्तू. मं.
श्रीबदरीनाथ के कपाट खुलने की तिथि का निर्धारण राजमहल में	30 जन. गु.

हिमाचल प्रदेश के मेले/उत्सव—सन् 2019-20 ई.

मेला/उत्सव	तिथि
श्रीदेवता खुड्डी-जल, देहूरी, आनी, कुल्लू	14 जन.
श्रीब्रह्मा (न्यूल, कुल्लू)	20 जन.
वसन्त पंचमी (बिलासपुर)	9 फर.
श्रीमहाशिवरात्रि (मण्डी)	4-13 मार्च
मे. काठगढ़	4 मार्च
मे. रिवालसर (मण्डी)	4 मार्च
मे. स्वर्गाश्रम (नूरपुर)	5 मार्च
मे. बैजनाथ (कांगड़ा)	6 मार्च
मे. बाबा बालकनाथ शुरु	14 मार्च
बड़भाग सिंह (ऊना)	14-21 मार्च
मे. नलवाड़ (बिलासपुर)	17-22 मार्च
सुजानपुर टिहरा (हमीरपुर)	21-24 मार्च
होला मेला (पांओटा सा.)	21 मार्च
मे. नलवाड़ (सुन्दरनगर)	22-29 मार्च
नलवाड़ (बरच्छवाड़) सरकाघाट	28 मा.-3 अप्रै.
मेला नलवाड़ (घुमारवीं)	5-9 अप्रै.
नयनादेवी (बिलासपुर)	6-14 अप्रै.
बालासुन्दरी (सिरमौर)	6-14 अप्रै.
ललवाड़ (सुन्दरनगर)	8-13 अप्रै.
मेला लाहौल (मण्डी)	12 अप्रै.
मेला मारकण्डा (बिलासपुर)	12-16 अप्रै.
मे. श्रीदुर्गाष्टमी (कांगड़ादेवी)	13 अप्रै.
मे. नैनादेवी-धर्मपुर, बनवार	13 अप्रै.
मेला बिशू प्रारम्भ	14 अप्रै.
मेला राजगढ़ (सिरमौर)	14-16 अप्रै.
कालेश्वर महादेव (देहरा, कांगड़ा)	14 अप्रै.
मेला रिवालसर (मण्डी)	14 अप्रै.
मे. रोहरू (महासू)	15-16 अप्रै.
मेला हुरला (कुल्लू)	16-17 अप्रै.
मेला त्राम्बली (कुल्लू)	17-18 अप्रै.
मेला खनाणी (शिम.-कुल्लू)	20-21 अप्रै.
मे. चचौहली (जगतसुख) कुल्लू	24-26 अप्रै.
मेला पीपल-जातर (कुल्लू)	28-30 अप्रै.
मेला स्वींटी	30 अप्रै.
मेला आनी (कुल्लू)	7-9 मई
मे. माहूनाग (करसोग)	8-9 मई
मेला बंजार (कुल्लू)	14-18 मई
हरिहरघाट-मनीकरण (कुल्लू)	14-18 मई
मे. घाघरस (बिलासपुर)	15 मई
मे. ढुंगरी जातर (मनाली)	15-16 मई
मे. शाढ़ी जातर, नगर	18-23 मई
मे. कमलाहिया धर्मपुर)	19 मई
पशु मेला (हमीरपुर)	20 मई
मे. हरिदेवी (घुमारवीं)	22 मई
मे. शीतलादेवी (सुन्दरनगर)	23-25 मई
मेला लगदेवी (हमीरपुर)	23 मई
मे. मिरपरी (मण्डी)	25-26 मई
मुरारीदेवी (सरकाघाट)	26-28 मई
मे. श्यामाकाली (सरकाघाट)	27 मई
मे. ग्राम-पंजगाई (बिलासपुर)	30-31 मई
मेला स्थूल-मढोल	1-4 जून
भुन्तर मेला (कुल्लू)	15-17 जून
मेला बाड़ी-सरयांझ (सोलन)	15 जून
मेला उहल (हमीरपुर)	15 जून
मे. नौवाहीदेवी (सरकाघाट)	15 जून
मे. टाणी देवी (हमीरपुर)	24 जून
मे. माँ शूलिनी (सोलन)	28-30 जून
मे. त्रिमौणी (सिरमौर)	7 जुला.
वन महोत्सव प्रारम्भ	10 जुला.
मेला नागनी (नूरपुर)	16 जुला.
सिद्ध बाबा शिव्वो (ज्वाली)	21 जुला.
मे. मिंजर (चम्बा)	28 जुला.
मे. छिन्नमस्तिका (चिन्तपूर्णी)	1-8 अग.
मे. नयनादेवी (बिलासपुर)	1-8 अग.
श्रीदेवता खुड्डी जल, गाँव-देहूरी तह-आनी, ज़िला-कुल्लू)	15-24 अग.
मे. सन्तोषी माता (लदरौर)	17 अग.
मे. बंद्राल (कुल्लू)	25 अग.
मे. गुग्गा-नवमी (बिलासपुर)	25 अग.
अम्बिकादेवी, सदर (मण्डी)	29 अग.
मे. महासू (शिलाई) सिरमौर	2-3 सितं.
गणपति उत्सव (मण्डी)	2-12 सितं.
हिमाचल गणेशोत्सव अम्बिकानगर-अम्ब (ऊना)	2-12 सितं.
मे. गुग्गा-माड़ी, सुबाथु(सोलन)	6-8 सितं.
यात्रा मणीमहेश (चम्बा) प्रा.	8 सितं.
रूद्र घड़ीकूपड़ (रोहडू) शिमला	10 सितं.
मे. वामन द्वादशी (नाहन)	10 सितं.
मेला नलवाड़ (चिच्चोट)	17-24 सितं.
मे. लदरौर (हमीरपुर)	17 सितं.
मेला सायर (अर्की)	17-18 सितं.
मे. बगुलामुखी (वनखण्डी)	29 सितं.-7 अ
मेला चामुण्डा (कांगड़ा)	29 सितं.-7 अ.
मेला रामलीला	29 सितं.-7 अक्तू.
मेला ज्वालामुखी	6-7 अक्तू.
तारादेवी (शिमला)	6-8 अक्तू.
मेला दशहरा (अर्की)	8 अक्तू.
मेला दशहरा (कुल्लू)	8-13 अक्तू.
मे. काली-बाड़ी (शिमला)	27-28 अक्तू.
मे. हरिप्रयाग (शिमला)	8 नवं.
मे. रेणुका-नाहन (सिरमौर)	8-9 नवं.
बाबा रुद्रीनन्दनारी(ऊना)	8-12 नवं.
मेला जोगी-पांगा (ऊना)	12 नवं.
बुढ़ी दीपावली-शिलाई (सिरमौर)	26-29 नवं.

(सन् 2020 ई.)

मेला/उत्सव	तिथि
श्रीदेवता खुड्डी-जल, देहूरी, आनी, कुल्लू	14 जन.
श्री ब्रह्म (न्यूल, कुल्लू)	20 जन.
वसन्त-पंचमी (बिलासपुर)	30 जन.
श्रीमहाशिवरात्रि (मण्डी)	21 फर.-2 मा.
मेला काठगढ़	21 फर.
मेला रिवालसर (मण्डी)	21 फर.
मेला स्वर्गाश्रम	22 फर.
मेला बैजनाथ (काँगड़ा)	23 फर.
बड़भाग सिंह (ऊना)	3-9 मार्च
सुजानपुर टिहरा (हमीरपुर)	9-13 मार्च
होला मेला (पांओटा साहिब)	10 मार्च
मेला बाबा बालकनाथ शुरु	14 मार्च
मेला कनिहारा (धर्मशाला)	14 मार्च
मेला नलवाड़ (बिलासपुर)	17-22 मार्च
मेला नलवाड़ (सुन्दरनगर)	22-29 मार्च

श्रीसिद्धिविनायक चतुर्थी व्रत

(सन् 2019 ई.)

मास	तिथि
पौष	10 जन. गुरु
माघ	8 फर. शुक्र
फाल्गुन	10 मार्च रवि
चैत्र	9 अप्रै. मंग.
वैशाख	8 मई बुध
ज्येष्ठ	6 जून गुरु
आषाढ़	6 जुला. शनि
श्रावण	4 अग. रवि
भाद्रपद	2 सितं. चंद्र
आश्विन	2 अक्तू. बुध
कार्तिक	31 अक्तू. गुरु
मार्गशीर्ष	30 नवं. शनि
पौष	30 दिसं. चंद्र

(सन् 2020 ई.)

मास	तिथि
माघ	28 जन. मंग.
फाल्गुन	27 फर. गुरु

मासिक दुर्गाष्टमी व्रत

(सन् 2019 ई.)

मास	तिथि
पौष	14 जन. चंद्र
माघ	13 फर. बुध
फाल्गुन	14 मार्च गुरु
चैत्र	13 अप्रै. शनि
वैशाख	12 मई रवि
ज्येष्ठ	10 जून चंद्र
आषाढ़	9 जुला. मंग.
श्रावण	8 अग. गुरु
भाद्रपद	6 सितं. शुक्र
आश्विन	6 अक्तू. रवि
कार्तिक	4 नवं. चंद्र
मार्गशीर्ष	4 दिसं. बुध

(सन् 2020 ई.)

मास	तिथि
पौष	3 जन. शुक्र
माघ	2 फर. रवि
फाल्गुन	3 मार्च मंग.

जैन व्रत-पर्व व उत्सव (2019-20 ई.)

पर्व	तिथि
मेरू त्रयोदशी	2 फर. शनि
मर्यादा महोत्सव	12 फर. मंग
जैन महोत्सव (कांगड़ा)	19-21 मार्च
ऋषभदेव जयन्ती	27 मार्च बुध
वरसी तप प्रारम्भ	28 मार्च गुरु
ओली तप प्रारम्भ	12 अप्रै. शुक्र
श्रीमहावीर जयन्ती	17 अप्रै. बुध
ओली तप समाप्त	19 अप्रै. शुक्र
वरसी तप समाप्त	7 मई मंग
केवलज्ञान दिवस	14 मई मंग
मे. चक्रेश्वरीदेवी(सरहिंद)	5-7 जून
चातुर्मास्य नियम प्रा.	16 जुला. मंग
तेरापन्थ स्थापना दिवस	16 जुला. मंग
जैन महोत्सव	30 जुला.-1 अग.
पर्युषण पर्व प्रारम्भ	27 अग. मंग
सम्वत्सरी महापर्व (पंचमीपक्ष)	3 सितं. मंग
श्रीकालू निर्वाण दिवस	4 सितं. बुध
आचार्य श्रीतुलसी पट्टारोहण	7 सितं. शनि
आचार्य भिक्षुनिर्वाण दिवस	11 सितं. बुध
श्रीमहावीर निर्वाण	28 अक्तू. चंद्र
श्रीवीर संवत् 2545 प्रा.	29 अक्तू. मंग
आचार्य श्रीतुलसी जन्म	29 अक्तू. मंग
ज्ञान पंचमी	1 नवं. शुक्र
चातुर्मास्य व्रत समाप्त	12 नवं. मंग
श्रीमहावीर दीक्षा दिवस	22 नवं. शुक्र
मौनी एकादशी	8 दिसं. रवि
आचार्य श्रीतुलसी दीक्षा	16 दिसं. चंद्र
श्रीपार्श्वनाथ जयन्ती	21 दिसं. शनि

—(सन् 2020 ई.)—

पर्व	तिथि
मेरू त्रयोदशी	22 जन. बुध
मर्यादा महोत्सव	1 फर. शनि
जैन महोत्सव (कांगड़ा)	7-9 मार्च
ऋषभदेव जयन्ती	15 मार्च रवि
वरसी तप प्रारम्भ	16 मार्च चंद्र

मुस्लिम त्यौहार-2019-20 ई.

त्यौहार	तिथि
उर्स मोईनुद्दीन चिश्ती (अजमेर)	9-14 मार्च
जन्म श्रीहजरत अली	21 मार्च गुरु
शबे-मिराज	4 अप्रै. गुरु
शबे-बारात	21 अप्रै. रवि
रमज़ान (रोज़े शुरु)	7 मई मंग
शहादत-ए-हजरत अली	27 मई चंद्र
जमातुलविदा	31 मई शुक्र
शबे-कदर	2 जून रवि
ईद-उल-फितर	5 जून बुध
ईदुलजुहा (बकरीद)	12 अग. चंद्र
मुहर्रम (हिजरी 1441 प्रा.)	1 सितं. रवि
मुहर्रम (ताजिया)	10 सितं. मंग
चेहलुम	19 अक्तू. शनि
आखिरी-चहार	23 अक्तू. बुध
शहादत-ए-इमामहसन	28 अक्तू. चंद्र
ईद-ए-मिलाद	10 नवं. रवि
ईद-ए-मौलाद	15 नवं. शुक्र
ग्यारहवीं शरीफ़ (फतिहायज़दहुम)	9 दिसं. चंद्र

—(सन् 2020 ई.)—

त्यौहार	तिथि
उर्स मोईनुद्दीन चिश्ती (अजमेर)	26 फ.-2 मा.
जन्म श्रीहजरत अली	9 मार्च
शबे-मिराज	23 मार्च

क्रिश्चियन त्यौहार

त्यौहार	तिथि
नववर्ष प्रारम्भ	1 जन. मंग.
गुड फ्राइडे	19 अप्रै. शुक्र
ईस्टर सण्डे	21 अप्रै. रवि
रोगेशन सण्डे	26 मई रवि
क्रिसमिस डे	25 दिसं. बुध

—(सन् 2020 ई.)—

त्यौहार	तिथि
नववर्ष प्रारम्भ	1 जन. बुध
गुड फ्राइडे	10 अप्रै. शुक्र
ईस्टर सण्डे	12 अप्रै. रवि

भारत सरकार एवं प्रादेशिक सरकारों की छुट्टियां (सन् 2019-20 ई.)

(इस अवकाश सूची को भारत सरकार के गज़ट की सूची से अवश्य मिला लें।)

अवकाश	तिथि
श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जयं.	13 जन. र.
मकर संक्रान्ति (माघी)	14 जन. चं.
भारत गणतन्त्र दिवस	26 जन. श.
श्रीगुरु रविदास जयन्ती	19 फर. मं.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	4 मार्च चं.
होला (पं.), होली पर्व	21 मार्च गु.
श्रीरामनवमी	13 अप्रै. श.
वैशाखी (पं.)	14 अप्रै. र.
डॉ. बी.आर. अम्बेदकर जयं.	14 अप्रै. र.
गुड फ्राईडे	19 अप्रै. शु.
श्रीबुद्ध जयन्ती	18 मई श.
जमातुलविदा	31 मई शु.
ईदुलफितर	5 जून बुध
रथयात्रा (पुरी) उड़ीसा	4 जुला. गु.
शही. स: ऊधमसिंह (पं.)	31 जुला. बु.
ईदुलजुहा (बकरीद)	12 अग. चं.
भारत स्वतन्त्रता दिवस	15 अग. गु.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वै.)	24 अग. श.
सिद्धि विनायक चतुर्थी (महा.)	2 सितं. चं.
मुहर्रम (ताजिया)	10 सितं. मं.
महात्मा गाँधी जयन्ती	2 अक्तू. बु.
विजयादशमी (दशहरा)	8 अक्तू. मं.
महर्षि वाल्मीकि जयन्ती	13 अक्तू. र.
दीपावली	27 अक्तू. र.
ईद-ए-मिलाद	10 नवं. र.
श्रीगुरु नानक जयन्ती	12 नवं. मं.
क्रिसमिस डे	25 दिसं. बु.

(सन् 2020 ई.)

अवकाश	तिथि
श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जयं.	2 जन. गु.
मकर संक्रान्ति (माघी)	14 जन. मं.
गणतन्त्र दिवस (71वाँ)	26 जन. र.
श्रीगुरु रविदास जयन्ती	9 फर. र.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	21 फर. शु.
होला (पं.), होली पर्व	10 मार्च चं.

सिक्ख पर्व एवं गुरुपर्व आदि (2019-20 ई.)

नाम गुरु साहिबान	(प्राचीन परम्परा अनुसार)			(नानकशाही कैलेण्डर अनुसार)		
	जन्मदिन	गुरयाई	ज्योति ज्योत	जन्मदिन	गुरयाई	ज्योति ज्योत
1. श्रीगुरु नानक देव जी	12 नवंबर	जन्म से	24 सितंबर	12 नवंबर*	जन्म से	22 सितंबर
2. श्रीगुरु अंगददेव जी	5 मई	19 सितंबर	9 अप्रैल	18 अप्रैल	18 सितंबर	16 अप्रैल
3. श्रीगुरु अमरदास जी	17 मई	6 अप्रैल	14 सितंबर	23 मई	16 अप्रैल	16 सितंबर
4. श्रीगुरु रामदास जी	15 अक्तूबर	11 सितंबर	1 सितंबर	9 अक्तू.	16 सितंबर	16 सितंबर
5. श्रीगुरु अर्जुनदेव जी	26 अप्रैल	1 सितंबर	7 जून	2 मई	16 सितंबर	16 जून
6. श्रीगुरु हरगोबिन्द जी	18 जून	27 मई	10 अप्रैल	5 जुलाई	11 जून	19 मार्च
7. श्रीगुरु हरिराय जी	17 फर., 19 ई. 7 फर., 20 ई.	3 अप्रै., 19 ई. 22 मार्च 20 ई.	22 अक्तू.	31 जनवरी	14 मार्च	20 अक्तूबर
8. श्रीगुरु हरकिशन जी	26 जुलाई	22 अक्तू.	18 अप्रैल	23 जुलाई	20 अक्तूबर	16 अप्रैल
9. श्रीगुरु तेगबहादुर जी	24 अप्रैल	17 अप्रैल	1 दिसंबर	18 अप्रैल	16 अप्रैल	24 नवंबर
10. श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जी	13 जन., 19 ई. 2 जन., 20 ई.	29 नवम्बर	1 नवंबर	5 जनवरी	24 नवंबर	21 अक्तूबर
श्रीगुरु ग्रन्थ साहिब जी का प्रथम प्रकाश	भाद्र. शुक्ल प्रतिपदा तदनुसार		31 अगस्त	16 भादों (ना.शा.)	1 सितं., 2019 ई.	
श्रीगुरु ग्रन्थ साहिब जी को गुरयाई मिली (नन्देड़)	कार्तिक शुक्ल द्वितीया तदनुसार		29 अक्तू.	4 कार्तिक प्रवि.	20 अक्तू., 2019 ई.	
खालसा पंथ साजना दिवस	1 वैशाख प्रविष्टे अनुसार		14 अप्रैल	1 वैशाख (ना. शा.)	14 अप्रैल, 2019 ई.	

*नानकशाही गुरुपर्व शिरोमणी गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी द्वारा मार्च, सन् 2003 ई. में संशोधित नानकशाही कैलेण्डर पर आधारित हैं।

वि. संवत् २०७६ में विभिन्न सम्वतों का प्रारम्भ

वर्ष का राजा—शनि | **वर्ष का मन्त्री—सूर्य (रवि)**

- वि. संवत् (परिधावी) २०७६ का शुभारम्भ = 6 अप्रैल, शनिवार, 2019 ई.
- कल्पादि से गत वर्ष = 1,97,29,49,119 वर्ष
- सृष्टि से आरम्भ संवत् = 1,95,58,85,120 वर्ष
- इनमें सतयुग की कुल समयावधि = 17,28,000 वर्ष
- त्रेतायुग की कुल समय अवधि = 12,96,000 वर्ष
- द्वापर युग की कुल समय अवधि = 8,64,000 वर्ष
- कलियुग की कुल समय अवधि = 4,32,000 वर्ष
- भोग्य कलि वर्ष (Balance) = 4,26,880 वर्ष
- २०७६ में कलि वर्ष = 5120वां वर्ष (5 अगस्त, सोमवार, 2019 ई.)
- श्रीकृष्ण जन्म संवत् = 5255 प्रा. (23 अगस्त, शुक्रवार, 2019 ई.)
- सप्तर्षि संवत् 5095 प्रारम्भ = 6 अप्रैल, शनिवार, 2019 ई.
- महात्मा बुद्ध सम्वत् 2643 प्रा. = 18 मई, शनिवार, 2019 ई.
- महावीर निर्वाण संवत् 2545 प्रा. = 28 अक्तू., सोमवार, 2019 ई.
- सन् ईस्वी (क्रिश्चियन) 2020 प्रारम्भ = 1 जनवरी, बुधवार, 2020 ई.
- शाका संवत् 1942 प्रारम्भ = 21 मार्च, शनिवार, 2020 ई.
- हिजरी सन् 1441 (मुस्लिम) प्रा. = 1 सितं., रविवार, 2019 ई.
- बंगाली सन् 1426 प्रारम्भ = 14 अप्रैल, रविवार, 2019 ई.
- नानकशाही संवत् 552 प्रारम्भ = 14 मार्च, शनिवार, 2020 ई.
- खालसा संवत् 321 प्रारम्भ = 14 अप्रैल, रविवार, 2019 ई.
- जय हिन्द संवत् 73वाँ प्रारम्भ = 15 अगस्त, गुरुवार, 2019 ई.
- 'पंचांगदिवाकर' का प्रवेश वर्ष 144वाँ = 6 अप्रैल, शनिवार, 2019 ई.

सन् 2019-20 ई. में संक्रान्ति, पूर्णिमा, अमावसादि—एक दृष्टि में

(मास) 2019-20↓	संक्रान्ति	एकादशी व्रत	प्रदोष व्रत	सत्य-नारायण व्रत	पूर्णिमा (उदय व्या.)	श्रीगणेश चतुर्थी	अमावस (स्नानदानार्थ)
जनवरी	14 (माघ)	1, 17 31	3, 19	20	21	24	5
फरवरी	13 (फाल्गु.)	16	2, 17	19	19	22	4
मार्च	14 (चैत्र)	2, 17, 31	3, 18	20	21	24	6
अप्रैल	14 (वैशा.)	1(वै.),16,30	2,17	18	19	22	5
मई	15 (ज्ये.)	15, 30	2, 16 31	18	18	22	4
जून	15 (आषा.)	13, 29	14, 30	16	17	20	3
जुलाई	16 (श्राव.)	12, 28	14, 29	16	16	20	2
अगस्त	17 (भाद्र.)	11,27(वै.)	12, 28	14	15	19	1, 30
सितम्बर	17 (आश्वि.)	9, 25	11, 26	13	14	17	28
अक्तूबर	17 (कार्ति.)	9, 24	11, 25	13	13	17	28
नवम्बर	16 (मार्ग.)	8, 23(वै.)	9, 24	12	12	15*	26
दिसम्बर	16 (पौष)	8, 22	9, 23	11	12	15	26
जनवरी(20)	14 (माघ)	6, 20	8, 22	10	10	13	24
फरवरी	13 (फाल्गु.)	5, 19	7, 20	8	9	12	23
मार्च	14 (चैत्र)	6,20(वै.)	7, 21	9	9	12	24

नोट—मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष में श्रीगणेश चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय के आधार पर स्थानभेद से कुछ क्षेत्रों में 15 नवं. तथा कुछ क्षेत्रों में 16 नवं. को करणीय होगा। इसके लिए पृष्ठ 23 का अवलोकन करें।

आगामी वि. संवत् २०७७ के सम्भावित व्रत-पर्व

(सन् 2020-21 ई.)

वासन्त नवरात्रे प्रा.	25 मार्च बु.
श्रीदुर्गाष्टमी	1 अप्रै. बु.
श्रीरामनवमी	2 अप्रै. गु.
श्रीमहावीर जयंती	6 अप्रै. चं.
वैशाख संक्रान्ति	13 अप्रै. चं.
अक्षय तृतीया	26 अप्रै. र.
श्रीबुद्ध जयन्ती	7 मई गु.
श्रीगंङ्गा दशहरा पर्व	1 जून चं.
गुरु पूर्णिमा	5 जुला. र.
दुर्गाष्टमी (मे. चिंतपूर्णी)	27 जुला. चं.
रक्षा-बन्धन	3 अग. चं.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स्मा.)	11 अग. मं.
सिद्धि विनायक व्रत	22 अग. श.
श्राद्ध प्रारंभ	2 सितं. बु.
श्राद्ध समाप्त	17 सितं. गु.
अधिक मास प्रारम्भ	18 सितं. शु.
अधिक मास समाप्त	16 अक्तू. शु.
शरद् नवरात्रे प्रारंभ	17 अक्तू. श.
श्रीदुर्गाष्टमी	23 अक्तू. शु.
दशहरा	25 अक्तू. र.
शरद् पूर्णिमा व्रत	30 अक्तू. शु.
करवा-चौथ व्रत	4 नवं. बु.
दीपावली	14 नवं. श.
भाई दूज	16 नवं. चं.
श्रीगुरु नानक जयं.	30 नवं. चं.
श्रीगीता जयन्ती	25 दिसं. शु.

(सन् 2021 ई.)

लोहड़ी पर्व	13 जन. बु.
मकर संक्रान्ति	14 जन. गु.
श्रीवसन्त पंचमी	16 फर. मं.
श्रीगुरु रविदास जयं.	27 फर. श.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	11 मार्च गु.
होलिका दहन	28 मार्च र.

अर्धकुम्भी पर्व-प्रयागराज (त्रिवेणी)

प्रमुख स्नान-माघ अमावस (4 फरवरी, 2019 ई.)

माघ मास की अमावस के समय यदि सूर्य एवं चन्द्र मकर राशि में तथा बृहस्पति (गुरु) वृश्चिक राशि में संचार करते हों, तो इन तीनों ग्रहों के योग में प्रयागराज (त्रिवेणी) में अर्धकुम्भ का भव्य मेला (पर्व) आयोजित किया जाता है-

वृश्चिक राशि स्थिते जीवे, मकरे च चन्द्र-भास्करौ।
अमावस्या तदा योग: कुम्भी, अर्धकुम्भवाख्या तीर्थनायके।।

सन् 2019 ई. में माघ अमावस के दिन सूर्य एवं चंद्रमा मकर राशि में तथा बृहस्पति वृश्चिक राशि में है। अतएव इस दिन 4 फरवरी, 2019 ई., सोमवार को प्रयागराज में अर्धकुम्भ का योग बन रहा है। त्रिवेणी(प्रयाग) में स्नान, दान, जप आदि का विशेष पुण्यकाल यद्यपि 4 फरवरी, सोमवार को सारा दिन रहेगा परन्तु अरुणोदय काल से लेकर $7^{घं.}$-$58^{मिं.}$ तक विशेष रुपेण रहेगा। ध्यान दें, इस दिन **'सोमवती अमावस'** भी होने से प्रयाग में अर्धकुम्भी स्नानदान माहात्म्य के साथ-साथ प्रयाग, हरिद्वार आदि अन्य तीर्थस्नान का भी विशेष माहात्म्य रहेगा। इस दिन स्नानोपरान्त देव-पितृ-तर्पण, अन्न, तिल, चावल, खीर, गर्मवस्त्र, फल, मिष्ठान्नादि का दान करना प्रशस्त होता है।

जिस प्रकार हरिद्वार, प्रयागराज, उज्जैन और नासिक-इन प्रमुख चार तीर्थों पर प्रति बारह वर्षों के पश्चात् विशिष्ट ग्रह योग घटित होने पर कुम्भ महापर्व मनाया जाता है। उसी प्रकार, केवल प्रयागराज एवं हरिद्वार में कुम्भ पर्व के लगभग छ: वर्षों के पश्चात् विशिष्ट ग्रह-योग में अर्धकुम्भी का पर्व मनाया जाता है। यह अर्धकुम्भ पर्व उज्जैन और नासिक में मनाने की परम्परा नहीं है। इस अर्धकुम्भी पर्व पर कुम्भ-पर्व की भान्ति कुछ दिन पूर्व ही साधु-सन्यासी, मुनी-तपस्वी एवं अन्य श्रद्धालु लोग पुण्य-तीर्थ पर एकत्रित होना प्रारम्भ कर देते हैं। इस अवसर पर भारतीय सनातन धर्म-परम्परा, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय एकता का अभूतपूर्व सम्मिलन परिलक्षित होता है।

कुम्भ एवं अर्धकुम्भी के शुभ पर्व पर गङ्गा-यमुना तथा सरस्वती के जलों में दिव्य व्योम से अमृत तत्त्व का समावेश हुआ माना जाता है। साधक आनन्द रूप अमृत-तत्त्व की प्राप्ति के लिए प्रार्थना करते हैं। कुम्भ एवं अर्धकुम्भ में स्नान करके साधक प्राण-अपान की एकता का सम्पादन कर परम व्योम (सहस्रार) में स्थित अमृत की प्राप्ति करते हैं। अमृत-प्राप्ति ही कुम्भी-साधक का परम लक्ष्य है।

-अर्धकुम्भी स्नान का माहात्म्य-

अर्धकुम्भी पर्व पर विधिवत् स्नान, दान, जप-पाठ एवं यज्ञादि शुभ कर्मों को करने का विशेष पुण्य होता है। श्रीविष्णु-पुराण अनुसार, हजारों अश्वमेघ यज्ञ करने, सैंकड़ों वाजपेय यज्ञ करने से और लाख बार पृथ्वी की परिक्रमा करने से जो पुण्य प्राप्त होते हैं, वह केवल कुम्भ/अर्धकुम्भ स्नान करने से प्राप्त होते हैं।

वाङ्ग मन: कायजं पापं नरस्य सुदृढ़ं महत्। प्रयागे माघमासे तु त्र्यहस्नान नश्यति।।

-अर्थात् मन, वचन एवं कामजनित जो पाप होते हैं, वह माघ मास में त्रिवेणी (प्रयाग) में मात्र स्नान करने से नष्ट हो जाते हैं।

अर्ध-कुम्भी एवं माघ स्नान करने के उपरान्त भगवान् विष्णु, भगवान् शिव एवं सूर्यादि देवों का ध्यान करते हुए मन्त्रपूर्वक तिल, पुष्पाक्षत, तीर्थजल से अर्घ्य देना चाहिए। श्रीविष्णु, शिवजी के स्तोत्रों का भी पाठ करना चाहिए। अपने दिवंगत पितरों को तीर्थजल, तिल, पुष्पादि सहित तर्पण करके यथाशक्ति अनाज से भरा घड़ा, तिलादि सहित मिष्ठान्न, द्रव्य, वस्त्र, फलादि तथा तिल-निर्मित वस्तुओं का दान करना शुभ होता है।

अर्धकुम्भ पर्व की मुख्य स्नानतिथियां इस प्रकार से रहेंगी। इनमें स्नान करके अर्धकुम्भी स्नान जैसा ही पुण्यार्जित कर सकते हैं-

(1) मकर संक्रान्ति (14 जनवरी, 2019 ई. सोमवार)-इस दिन प्रथम शाही स्नान भी आयोजित होगा।

(2) पौष शुक्ल एकादशी (17 जनवरी, 2019 ई., बृहस्पतिवार)-(पुत्रदा एकादशी)

(3) पौष पूर्णिमा (21 जनवरी, 2019 ई., सोमवार)

(4) माघ कृष्ण एकादशी (31 जनवरी, 2019 ई., बृहस्पतिवार)

(5) माघ अमावस (4 फरवरी, 2019 ई., सोमवार)

अर्धकुम्भ प्रयागराज का प्रमुख पुण्यप्रद स्नान इसी दिन होगा। इस अर्धकुम्भ का प्रमुख शाही स्नान माघ अमावस को ही माना जाएगा। विशेष पुण्यकाल अरुणोदय से प्रात: 7 बजकर 58 मिनट तक रहेगा। यद्यपि स्नान, दानादि का पुण्यकाल सारा दिन रहेगा। पितृ-तर्पण, पिण्डदान हेतु मध्याह्नकाल $11^{घं.}$-$10^{मिं.}$ से $13^{घं.}$-$22^{मिं.}$ तक तथा अपराह्नकाल $13^{घं.}$-$22^{मिं.}$ से $15^{घं.}$-$23^{मिं.}$ तक होगा।

(6) माघ शुक्ल पंचमी (10 फरवरी, 2019 ई., रविवार)-**वसन्त पंचमी** शाही स्नान की अन्तिम तिथि होगी।

(7) माघ शुक्ल सप्तमी (12 फरवरी, 2019 ई., मंगलवार)-इस दिन रथ सप्तमी है। इस दिन अरुणोदय काल में त्रिवेणी में स्नान-दान का विशेष माहात्म्य होगा।

(8) कुम्भसंक्रान्ति (13 फरवरी, 2019 ई., बुधवार)- कुम्भ संक्रान्ति के स्नानदान का माहात्म्य मध्याह्नकाल तक रहेगा।

(9) माघी पूर्णिमा (19 फरवरी, 2019 ई.) - यह अर्धकुम्भी स्नान की अन्तिम तिथि होगी। गत एक मास से चल रहा अर्धकुम्भी पर्व का इस दिन समापन होगा।

-शुभचिन्तक : पं. विवेक शर्मा।

गण्डमूलक नक्षत्रों का प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.) संवत् २०७६ वि.

(1 जनवरी, सन 2019 ई. से 24 मार्च, 2020 ई. तक)

रेवती, अश्विनी, आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा एवं मूल–ये गण्डमूल नक्षत्र कहलाते हैं। इन नक्षत्रों में उत्पन्न जातक स्वयं अपने या माता-पिता के स्वास्थ्य, व्यवसाय एवं उन्नति आदि के सम्बन्ध में अशुभ होते हैं। गण्डमूल नक्षत्र में उत्पन्न जातक के नक्षत्र की लगभग 27 दिन पश्चात् उसी नक्षत्रकाल में विद्वान् एवं योग्य ब्राह्मण द्वारा शान्ति करवानी चाहिए। यदि जन्मकाल के समय शान्ति न करवाई गई हो तो, जातक के जन्मदिन के निकट उसी नक्षत्र में दान-पूजन करवा लेना शुभकारक रहता है।

नोट–हमारे कार्यालय से छपी '**सम्पूर्ण गण्डमूल नक्षत्र शान्ति प्रयोग**' पुस्तक पूजनादि कार्यों के लिए मंगवा सकते हैं। **मूल्य 75/- रु.**

पता–जनरल बुक डिपो, चौंक अड्डा होशियारपुर, जालन्धर (पं.)

प्रारम्भ काल					समाप्ति काल				
ता.	मास	नक्षत्र	घं.	मिं.	ता.	मास	नक्षत्र	घं.	मिं.
3	जन.	ज्येष्ठा	11	03	5	जन.	मूल	15	08
13	जन.	रेवती	11	06	15	जन.	अश्विनी	13	56
21	जन.	आश्लेषा	26	27	23	जन.	मघा	20	47
30	जन.	ज्येष्ठा	16	40	1	फर.	मूल	21	07
9	फर.	रेवती	17	30	11	फर.	अश्विनी	21	13
18	फर.	आश्लेषा	14	02	20	फर.	मघा	8	00
26	फर.	ज्येष्ठा	23	04	28	फर.	मूल	27	06
8	मार्च	रेवती	23	17	10	मार्च	अश्विनी	26	57
17	मार्च	आश्लेषा	24	11	19	मार्च	मघा	19	05
26	मार्च	ज्येष्ठा	7	15	28	मार्च	मूल	10	10
5	अप्रै.	रेवती	5	36	7	अप्रै.	अश्विनी	8	44
14	अप्रै.	आश्लेषा	7	40	16	अप्रै.	मघा	4	01
22	अप्रै.	ज्येष्ठा	16	45	24	अप्रै.	मूल	18	35
2	मई	रेवती	13	02	4	मई	अश्विनी	15	47
11	मई	आश्लेषा	13	13	13	मई	मघा	10	27
19	मई	ज्येष्ठा	26	07	21	मई	मूल	27	31
29	मई	रेवती	21	18	31	मई	अश्विनी	24	12
7	जून	आश्लेषा	18	56	9	जून	मघा	15	49
16	जून	ज्येष्ठा	10	07	18	जून	मूल	11	50
26	जून	रेवती	5	38	28	जून	अश्विनी	9	12
4	जुला.	आश्लेषा	26	30	6	जुला.	मघा	22	10
13	जुला.	ज्येष्ठा	16	27	15	जुला.	मूल	18	52
23	जुला.	रेवती	13	14	25	जुला.	अश्विनी	17	39
1	अग.	आश्लेषा	12	12	3	अग.	मघा	6	44
9	अग.	ज्येष्ठा	21	58	11	अग.	मूल	24	45
19	अग.	रेवती	19	48	21	अग.	अश्विनी	24	47
28	अग.	आश्लेषा	22	55	30	अग.	मघा	17	11

प्रारम्भ काल					समाप्ति काल				
ता.	मास	नक्षत्र	घं.	मिं.	ता.	मास	नक्षत्र	घं.	मिं.
6	सितं.	ज्येष्ठा	4	09	8	सितं.	मूल	6	29
15	सितं.	रेवती	25	45	18	सितं.	अश्विनी	6	44
25	सितं.	आश्लेषा	8	53	27	सितं.	मघा	4	01
3	अक्तू.	ज्येष्ठा	12	10	5	अक्तू.	मूल	13	19
13	अक्तू.	रेवती	7	53	15	अक्तू.	अश्विनी	12	30
22	अक्तू.	आश्लेषा	16	39	24	अक्तू.	मघा	13	18
30	अक्तू.	ज्येष्ठा	21	59	1	नवं.	मूल	21	52
9	नवं.	रेवती	14	56	11	नवं.	अश्विनी	19	17
18	नवं.	आश्लेषा	22	21	20	नवं.	मघा	20	05
27	नवं.	ज्येष्ठा	8	12	29	नवं.	मूल	7	34
6	दिसं.	रेवती	22	57	9	दिसं.	अश्विनी	3	30
16	दिसं.	आश्लेषा	4	01	17	दिसं.	मघा	25	26
24	दिसं.	ज्येष्ठा	16	59	26	दिसं.	मूल	16	50
(सन् 2020 ई.)									
3	जन.	रेवती	7	20	5	जन.	अश्विनी	12	27
12	जन.	आश्लेषा	11	50	14	जन.	मघा	7	55
20	जन.	ज्येष्ठा	23	30	22	जन.	मूल	24	20
30	जन.	रेवती	15	12	1	फर.	अश्विनी	20	54
8	फर.	आश्लेषा	22	05	10	फर.	मघा	17	06
17	फर.	ज्येष्ठा	4	54	19	फर.	मूल	6	06
26	फर.	रेवती	22	08	29	फर.	अश्विनी	4	03
7	मार्च	आश्लेषा	9	05	9	मार्च	मघा	4	10
15	मार्च	ज्येष्ठा	11	23	17	मार्च	मूल	11	46
25	मार्च	रेवती	4	19	–	–	–	–	–

पंचक–आरम्भ एवं समाप्तिकाल

(सन् 2019-20 ई.)

पंचक नक्षत्र (धनिष्ठा नक्षत्र के तृतीय चरण से रेवती नक्षत्र तक) कालीन दक्षिण दिशा की ओर यात्रा करना, मकान, दुकानादि की छत डालना, चारपाई-पलंगादि बुनना, शव का दाह (मुर्दा जलाना), बाँस की चटाई, दीवार प्रारम्भ करना आदि स्तम्भारोपण, ताँबा, पीतल, तृण-काष्ठादि का संचय करना आदि कृत्यों का निषेध माना जाता है। समुचित उपाय एवं पंचक-शान्ति करवाकर ही उक्त कार्यों का सम्पादन करना कल्याणकारी होगा। **ध्यान रहे,** पंचक नक्षत्रों का विचार मात्र उपरोक्त विशेष कृत्यों के लिए ही किया जाता है। विवाह, मुण्डन, गृहारम्भ, गृह प्रवेश, वधू-प्रवेश, उपनयन, विपणि आदि मुहूर्त्तों में तो पंचक नक्षत्रों का प्रयोग शुभ माना गया है।

प्रारम्भ काल				समाप्ति काल			
ता.	मास	घं.	मिं.	ता.	मास	घं.	मिं.
9	जन.	13	15	14	जन	12	53
5	फर.	19	35	10	फर.	19	37
4	मार्च	25	44	9	मार्च	25	18
1	अप्रै.	8	21	6	अप्रै.	7	22
28	अप्रै.	15	45	3	मई	14	40
25	मई	23	43	30	मई	23	03
22	जून	7	39	27	जून	7	44
19	जुला	14	58	24	जुला	15	42
15	अग.	21	28	20	अग.	22	29
12	सितं.	3	28	17	सितं.	4	22
9	अक्तू.	9	41	14	अक्तू.	10	20
5	नवं.	16	47	10	नवं.	17	19
2	दिसं.	24	57	7	दिसं.	25	28
30	दिसं.	9	35	4	जन.	10	05
(सन् 2020 ई.)							
26	जन.	17	39	31	जन.	18	10
22	फर.	24	29	27	फर.	25	08
21	मार्च	6	20	26	मार्च	7	16

श्रीगणेश-चतुर्थी एवं श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी व्रत

भारत के प्रसिद्ध नगरों में चन्द्रोदय का समय (वि. संवत् 2076) (भा.स्टैं.टा.)

श्री गणेश चतुर्थी चन्द्रोदय का समय (* = देखें पृष्ठ 23)

श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी

नगर	22 अप्रैल 2019		22 मई 2019		20 जून 2019		20 जुला. 2019		19 अग. 2019		17 सितं. 2019		17 अक्तू. 2019 करवाचौथ		15 नवं.* 2019		15 दिसं. 2019		13 जन. 2020 संकटचौथ		12 फर. 2020		12 मार्च 2020		स्मार्त 23 अग.		वैष्णव 24 अग.	
	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
अमृतसर	22	13	22	47	22	12	22	01	21	34	20	36	20	23	19	51	20	42	20	42	21	50	21	46	23	45	24	26
अजमेर	22	03	22	36	22	03	21	56	21	35	20	41	20	34	20	03	20	54	20	51	21	51	21	43	23	54	24	38
अम्बाला	22	02	22	36	22	02	21	53	21	26	20	29	20	18	19	46	20	36	20	36	21	42	21	37	23	40	24	22
अहमदाबाद(गु.)	22	06	22	38	22	05	22	01	21	43	20	52	20	48	20	19	21	09	21	04	21	59	21	48	24	08	24	54
अलवर (राज.)	21	58	22	31	21	57	21	49	21	27	20	32	20	24	19	53	20	43	20	41	21	43	21	35	23	44	24	29
आगरा	21	50	22	23	21	50	21	43	21	21	20	27	20	19	19	48	20	38	20	36	21	37	21	29	23	39	24	24
ईलाहाबाद	21	31	22	03	21	30	21	25	21	04	20	11	20	06	19	36	20	26	20	22	21	21	21	12	23	26	24	11
इन्दौर	21	52	22	24	21	51	21	47	21	30	20	39	20	35	20	06	20	56	20	50	21	46	21	35	23	55	24	41
ऊना	22	07	22	41	22	06	21	55	21	28	20	31	20	18	19	45	20	36	20	37	21	44	21	40	23	39	24	22
उदयपुर (राज.)	22	05	22	36	22	03	21	58	21	38	20	46	20	41	20	11	21	01	20	58	21	55	21	45	24	01	24	46
ऊधमपुर (का.)	22	15	22	49	22	14	22	02	21	32	20	34	20	20	19	46	20	38	20	39	21	48	21	46	23	41	24	24
उज्जैन	21	53	22	24	21	52	21	48	21	29	20	39	20	35	20	05	20	55	20	51	21	46	21	36	23	55	24	40
कठुआ (ज.का.)	22	12	22	46	22	12	21	59	21	31	20	33	20	19	19	45	20	37	20	38	21	47	21	44	23	41	24	24
कपूरथला	22	11	22	44	22	10	21	59	21	32	20	33	20	22	19	48	20	40	20	41	21	47	21	44	23	43	24	26
करनाल	22	00	22	34	22	00	21	50	21	24	20	29	20	18	19	45	20	36	20	36	21	41	21	36	23	39	24	23
काँगड़ा(हि.प्र.)	22	08	22	43	22	08	21	56	21	27	20	30	20	17	19	43	20	35	20	36	21	44	21	41	23	38	24	21
कानपुर	21	40	22	13	21	39	21	33	21	10	20	18	20	10	19	39	20	30	20	27	21	27	21	19	23	31	24	15
कैथल	22	03	22	37	22	02	21	53	21	26	20	31	20	21	19	48	20	39	20	39	21	43	21	38	23	42	24	25
कुल्लू (हि.प्र.)	22	05	22	39	22	04	21	52	21	24	20	27	20	14	19	40	20	32	20	32	21	40	21	37	23	35	24	18
कुराली (पं.)	22	05	22	38	22	04	21	53	21	26	20	30	20	18	19	45	20	36	20	36	21	43	21	38	23	39	24	22
कुरुक्षेत्र	22	02	22	35	22	00	21	51	21	25	20	30	20	18	19	46	20	37	20	37	21	41	21	37	23	40	24	23
कालका (हरि.)	22	03	22	37	22	02	21	52	21	24	20	29	20	16	19	43	20	35	20	35	21	41	21	37	23	38	24	21
करसोग (हि.प्र.)	22	03	22	37	22	02	21	51	21	23	20	27	20	14	19	41	20	32	20	33	21	40	21	36	23	36	24	19
कोलकाता	20	58	21	29	20	57	20	54	20	36	19	45	19	42	19	14	20	02	19	57	20	52	20	41	23	03	23	48
खरड़ (पं.)	22	04	22	38	22	03	21	53	21	26	20	30	20	18	19	45	20	36	20	36	21	42	21	38	23	39	24	22
खन्ना (पं.)	22	06	22	40	22	04	21	55	21	28	20	32	20	20	19	46	20	38	20	38	21	44	21	40	23	41	24	24
गाजियाबाद	21	57	22	30	21	56	21	47	21	23	20	28	20	18	19	46	20	37	20	36	21	39	21	33	23	39	24	23
ग्वालियर	21	49	22	20	21	48	21	42	21	19	20	27	20	20	19	49	20	39	20	37	21	36	21	28	23	40	24	25
गुरदासपुर	22	12	22	46	22	11	21	59	21	31	20	34	20	20	19	46	20	38	20	39	21	47	21	44	23	42	24	25
गुरुग्राम	21	58	22	31	21	57	21	49	21	24	20	30	20	20	10	48	20	39	20	38	21	41	21	34	23	41	24	25
चण्डीगढ़	22	03	22	37	22	03	21	52	21	25	20	29	20	17	19	44	20	36	20	36	21	42	21	37	23	38	24	22
चम्बा	22	10	22	44	22	09	21	57	21	28	20	30	20	16	19	42	20	34	20	36	21	44	21	42	23	38	24	21

श्रीगणेश-चतुर्थी एवं श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी व्रत

भारत के प्रसिद्ध नगरों में चन्द्रोदय का समय (वि. संवत् 2076) (भा.स्टै.टा.)

श्री गणेश चतुर्थी चन्द्रोदय का समय (* = देखें पृष्ठ 23) — श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी

नगर	22 अप्रैल 2019		22 मई 2019		20 जून 2019		20 जुला. 2019		19 अग. 2019		17 सित. 2019		17 अक्तू. 2019		15 नवं.* 2019		15 दिसं. 2019		13 जन. 2020		12 फर. 2020		12 मार्च 2020		श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी स्मार्त 23 अग.		श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी वैष्णव 24 अग.	
	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	करवाचौथ		घं.	मिं.	घं.	मिं.	संकटचौथ		घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
चेन्नई	21	18	21	47	21	16	21	20	21	10	20	26	20	32	20	06	20	55	20	45	21	28	21	10	23	50	24	39
जयपुर (राज.)	22	00	22	32	21	59	21	52	21	29	20	36	20	28	19	57	20	48	20	45	21	46	21	38	23	49	24	33
जम्मू	22	16	22	50	22	15	22	02	21	34	20	35	20	21	19	47	20	39	20	41	21	50	21	47	23	45	24	25
जलालाबाद(पं.)	22	14	22	46	22	12	22	02	21	35	20	40	20	28	19	56	20	47	20	46	21	52	21	48	23	49	24	32
जलगांव(महा.)	21	51	22	21	21	49	21	47	21	30	20	41	20	39	20	10	21	00	20	54	21	47	21	35	23	59	24	44
ज्वाली (हि.प्र.)	22	10	22	44	22	09	21	57	21	28	20	31	20	18	19	44	20	36	20	37	21	45	21	42	23	39	24	22
जालन्धर	22	10	22	44	22	09	21	58	21	30	20	34	20	21	19	48	20	39	20	40	21	47	21	43	23	42	24	25
जाखल	22	06	22	39	22	05	21	55	21	29	20	34	20	23	19	50	20	42	20	41	21	46	21	41	23	44	24	28
जीन्द (हरि.)	22	03	22	36	22	02	21	53	21	27	20	32	20	22	19	49	20	41	20	40	21	44	21	38	23	43	24	27
जोधपुर	22	10	22	43	22	09	22	03	21	40	20	47	20	41	20	10	21	01	20	58	21	56	21	49	24	01	24	46
तलवाड़ा (पं.)	22	10	22	44	22	09	21	57	21	30	20	32	20	19	19	45	20	37	20	38	21	44	21	42	23	40	24	23
टोहाना (हरि.)	22	05	22	38	22	04	21	55	21	29	20	34	20	23	19	50	20	42	20	41	21	45	21	40	23	44	24	27
दिल्ली	21	58	22	31	21	57	21	48	21	24	20	29	20	19	19	47	20	39	20	37	21	40	21	34	23	40	24	24
दीनानगर (पं.)	22	12	22	46	22	11	21	59	21	31	20	34	20	20	19	46	20	38	20	39	21	47	21	44	23	41	24	24
देहरादून	21	57	22	31	21	57	21	47	21	21	20	24	20	13	19	40	20	31	20	31	21	36	21	32	23	34	24	17
धर्मशाला	22	08	22	43	22	08	21	56	21	27	20	30	20	16	19	42	20	34	20	35	21	43	21	41	23	38	24	20
धारीवाल (पं.)	22	12	22	46	22	11	22	00	21	31	20	34	20	21	19	47	20	39	20	40	21	48	21	45	23	42	24	25
नंगल (पं.)	22	07	22	40	22	06	21	55	21	27	20	30	20	18	19	44	20	36	20	36	21	43	21	40	23	39	24	22
नादौन (हि.प्र.)	22	08	22	42	22	07	21	55	21	27	20	30	20	17	19	43	20	35	20	36	21	43	21	40	23	39	24	21
नाहन	22	01	22	34	22	00	21	50	21	24	20	27	20	16	19	42	20	34	20	34	21	40	21	35	23	37	24	20
नवांशहर (पं.)	22	07	22	41	22	06	21	55	21	28	20	32	20	19	19	46	20	38	20	38	21	44	21	41	23	41	24	24
नालागढ़	22	04	22	38	22	04	21	53	21	25	20	29	20	17	19	44	20	35	20	36	21	42	21	38	23	38	24	21
नूरपुर (हि.प्र.)	22	10	22	45	22	10	21	58	21	29	20	32	20	18	19	44	20	36	20	37	21	45	21	43	23	39	24	22
पठानकोट	22	11	22	45	22	11	21	59	21	31	20	32	20	19	19	44	20	37	20	38	21	46	21	44	23	40	24	23
पटियाला	22	04	22	38	22	03	21	53	21	27	20	31	20	20	19	47	20	38	20	38	21	43	21	39	23	41	24	24
पंचकूला	22	02	22	36	22	02	21	52	21	25	20	29	20	17	19	44	20	35	20	35	21	41	21	37	23	38	24	21
पटना	21	19	21	51	21	18	21	12	20	52	19	59	19	52	19	21	20	11	20	08	21	07	20	58	23	12	23	57
पालमपुर(हि.प्र.)	22	07	22	41	22	07	21	55	21	26	20	29	20	16	19	42	20	34	20	34	21	43	21	40	23	37	24	20
पानीपत	22	00	22	33	21	59	21	50	21	24	20	29	20	19	19	46	20	38	20	37	21	41	21	35	23	40	24	24
पूना (महा.)	21	53	22	24	21	52	21	51	21	37	20	49	20	50	20	22	21	12	21	05	21	54	21	40	24	09	24	56
पिहोवा (हरि.)	22	03	22	36	22	02	21	52	21	26	20	31	20	20	19	47	20	38	20	38	21	43	21	38	23	41	24	24

पिहोवा (हरि.)	22	03	22	36	22	02	21	52	21	26	20	31	20	20	19	47	20	38	20	38	21	43	21	38	23	41	24	24

श्रीगणेश-चतुर्थी एवं श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी व्रत

भारत के प्रसिद्ध नगरों में चन्द्रोदय का समय (वि. संवत् 2076) (भा.स्टै.टा.)

श्री गणेश चतुर्थी चन्द्रोदय का समय (* = देखें पृष्ठ 23) — श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी

नगर	22 अप्रैल 2019		22 मई 2019		20 जून 2019		20 जुला. 2019		19 अग. 2019		17 सित. 2019		17 अक्तू. 2019 करवाचौथ		15 नवं.* 2019		15 दिसं. 2019		13 जन. 2020 संकटचौथ		12 फर. 2020		12 मार्च 2020		स्मार्त 23 अग.		वैष्णव 24 अग.	
	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
पांओटा साहिब	21	59	22	33	21	59	21	49	21	52	20	26	20	14	19	41	20	33	20	33	21	38	21	34	23	36	24	19
परवाणू(हि.प्र.)	22	03	22	37	22	02	21	52	21	24	20	28	20	16	19	43	20	35	20	35	21	41	21	37	23	38	24	21
फगवाड़ा	22	09	22	43	22	08	21	57	21	29	20	33	20	20	19	47	20	39	20	39	21	46	21	42	23	42	24	25
फरीदकोट	22	12	22	46	22	11	22	00	21	33	20	38	20	26	19	53	20	44	20	44	21	50	21	46	23	47	24	30
फरीदाबाद	21	57	22	30	21	56	21	47	21	24	20	29	20	19	19	47	20	38	20	37	21	40	21	33	23	40	24	24
फाज़िल्का	22	14	22	48	22	13	22	03	21	37	20	41	20	29	19	56	20	48	20	48	21	53	21	49	23	50	24	34
फिरोज़पुर	22	13	22	47	22	12	22	01	21	34	20	38	20	26	19	53	20	44	20	44	21	51	21	47	23	47	24	30
फतेहाबाद(हरि.)	22	07	22	40	22	06	21	56	21	31	20	36	20	25	19	52	20	44	20	43	21	47	21	42	23	46	24	30
बरनाला(पं.)	22	08	22	42	22	07	21	56	21	30	20	35	20	23	19	50	20	42	20	41	21	47	21	42	23	44	24	28
बीकानेर	22	12	22	45	22	11	22	03	21	40	20	45	20	37	20	05	20	56	20	54	21	56	21	50	23	57	24	41
बनीखेत(हि.प्र.)	22	11	22	45	22	10	21	58	21	29	20	31	20	17	19	43	20	35	20	36	21	45	21	43	23	39	24	21
बरेली (उ.प्र.)	21	48	22	21	21	47	21	39	21	15	20	20	20	11	19	39	20	30	20	28	21	31	21	24	23	32	24	16
बैजनाथ(हि.प्र.)	22	07	22	41	22	06	21	54	21	27	20	29	20	15	19	41	20	33	20	34	21	42	21	39	23	38	24	21
बिलासपुर(हि.प्र.)	22	05	22	39	22	04	21	53	21	25	20	29	20	16	19	43	20	34	20	35	21	42	21	38	23	38	24	21
बैंगलूरु	21	29	21	58	21	27	21	31	21	22	20	38	20	43	20	17	21	06	20	56	21	39	21	21	24	00	24	50
भटिण्डा	22	10	22	43	22	09	21	59	21	32	20	37	20	26	19	53	20	44	20	44	21	49	21	45	23	47	24	30
मथुरा	21	53	22	26	21	53	21	45	21	21	20	28	20	20	19	48	20	39	20	37	21	38	21	31	23	40	24	24
मण्डी (हि.प्र.)	22	05	22	39	22	04	21	53	21	24	20	28	20	15	19	41	20	33	20	34	21	41	21	38	23	36	24	19
मुकेरियां (पं.)	22	11	22	45	22	10	21	59	21	30	20	33	20	20	19	46	20	38	20	39	21	46	21	44	23	41	24	24
मोहाली (पं.)	22	04	22	37	22	03	21	53	21	25	20	29	20	18	19	44	20	36	20	36	21	42	21	38	23	39	24	22
मेरठ	21	56	22	29	21	55	21	47	21	21	20	27	20	17	19	44	20	36	20	35	21	38	21	32	23	38	24	22
मुम्बई	21	58	22	29	21	57	21	56	21	42	20	53	20	54	20	26	21	16	21	08	21	59	21	45	24	11	25	00
मनाली(हि.प्र.)	22	05	22	39	22	04	21	53	21	23	20	26	20	13	19	40	20	31	20	32	21	40	21	37	23	34	24	17
मुक्तसर (पं.)	22	12	22	46	22	12	22	00	21	34	20	39	20	27	19	54	20	46	20	46	21	51	21	47	23	48	24	32
मोगा(पं.)	22	10	22	44	22	09	21	59	21	33	20	36	20	24	19	52	20	42	20	42	21	48	21	44	23	45	24	28
मलेरकोटला	22	07	22	40	22	06	21	56	21	30	20	33	20	21	19	48	20	40	20	40	21	45	21	41	23	43	24	26
महेन्द्रगढ़(हरि.)	22	01	22	34	22	00	21	52	21	28	20	34	20	24	19	52	20	44	20	42	21	44	21	38	23	45	24	29
यमुनानगर	22	00	22	34	22	00	21	50	21	23	20	28	20	16	19	44	20	35	20	35	21	40	21	35	23	38	24	21
रिवाड़ी (हरि.)	21	59	22	32	21	57	21	49	21	27	20	32	20	23	19	51	20	42	20	40	21	42	21	36	23	43	24	28
रोहतक(हरि.)	22	01	22	34	22	00	21	51	21	26	20	31	20	21	19	49	20	40	20	39	21	42	21	37	23	42	24	26
रोहडू (हि.प्र.)	22	00	22	34	22	00	21	49	21	21	20	25	20	12	19	39	20	31	20	31	21	38	21	34	23	34	24	17

श्रीगणेश-चतुर्थी एवं श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी व्रत

भारत के प्रसिद्ध नगरों में चन्द्रोदय का समय (वि. संवत् 2076) (भा.स्टैं.टा.)

श्री गणेश चतुर्थी चन्द्रोदय का समय (* = देखें पृष्ठ 23) | श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी

नगर	22 अप्रैल 2019		22 मई 2019		20 जून 2019		20 जुला. 2019		19 अग. 2019		17 सितं. 2019		17 अक्तू. 2019		15 नवं.* 2019		15 दिसं. 2019		13 जन. 2020		12 फर. 2020		12 मार्च 2020		स्मार्त 23 अग.		वैष्णव 24 अग.	
	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	करवाचौथ		घं.	मिं.	घं.	मिं.	संकटचौथ		घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
रोपड़ (पं.)	22	05	22	39	22	04	21	54	21	26	20	30	20	18	19	45	20	36	20	36	21	43	21	39	23	39	24	22
राजपुरा (पं.)	22	04	22	37	22	03	21	53	21	26	20	30	20	19	19	45	20	37	20	37	21	42	21	38	23	40	24	23
रायपुर(३६गढ़)	21	26	21	57	21	25	21	22	21	05	20	16	20	14	19	45	20	35	20	29	21	22	21	10	23	34	24	20
रामपुर बुशैहर	22	01	22	35	22	01	21	50	21	22	20	25	20	12	19	39	20	31	20	31	21	38	21	35	23	34	24	17
रूडकी (उ.खण्ड)	21	57	22	31	21	56	21	47	21	21	20	25	20	14	19	42	20	33	20	32	21	37	21	32	23	35	24	19
राजौरी	22	19	22	54	22	19	22	06	21	35	20	37	20	22	19	48	20	40	20	42	21	52	21	50	23	44	24	26
लुधियाना	22	08	22	41	22	07	21	56	21	30	20	33	20	21	19	47	20	39	20	39	21	45	21	41	23	42	24	25
लखनऊ	21	39	22	11	21	38	21	31	21	08	20	15	20	07	19	36	20	27	20	24	21	25	21	17	23	28	24	12
वाराणसी	21	27	21	59	21	26	21	21	21	00	20	08	20	01	19	30	20	21	20	18	21	16	21	07	23	22	24	07
शिमला	22	03	22	36	22	02	21	51	21	23	20	27	20	15	19	42	20	33	20	33	21	40	21	36	23	36	24	19
श्रीनगर (का.)	22	19	22	54	22	18	22	04	21	33	20	35	20	19	19	44	20	36	20	38	21	50	21	49	23	41	24	23
श्रीगंगानगर	22	14	22	47	22	13	22	03	21	37	20	42	20	31	19	58	20	50	20	49	21	54	21	49	23	52	24	36
संगरूर	22	06	22	40	22	06	21	55	21	30	20	33	20	22	19	49	20	41	20	40	21	46	21	41	23	43	24	27
सरकाघाट(हि.प्र.)	22	06	22	40	22	05	21	54	21	25	20	29	20	16	19	42	20	34	20	34	21	42	21	39	23	37	24	20
सहारनपुर	21	59	22	32	21	58	21	48	21	22	20	27	20	16	19	43	20	34	20	34	21	39	21	34	23	37	24	20
सागर (म.प्र.)	21	42	22	14	21	41	21	37	21	17	20	26	20	22	19	51	20	42	20	38	21	34	21	24	23	42	24	27
सोनीपत	21	59	22	32	21	58	21	49	21	24	20	30	20	20	19	47	20	39	20	37	21	41	21	35	23	41	24	24
सिरसा	22	08	22	42	22	08	21	58	21	32	20	37	20	27	19	54	20	46	20	45	21	49	21	44	23	48	24	31
सोलन (हि.प्र.)	22	02	22	36	22	02	21	51	21	24	20	28	20	16	19	42	20	34	20	34	21	40	21	36	23	37	24	20
सुन्दरनगर	22	05	22	39	22	04	21	53	21	25	20	28	20	15	19	42	20	34	20	34	21	41	21	38	23	37	24	20
सुजानपुर टिहरा	22	07	22	41	22	06	21	55	21	26	20	30	20	16	19	43	20	34	20	35	21	43	21	40	23	38	24	21
सुन्दरबनी (का.)	22	18	22	52	22	17	22	04	21	34	20	37	20	22	19	48	20	40	20	42	21	51	21	49	23	44	24	26
सुनाम (पं.)	22	05	22	39	22	05	21	55	21	29	20	34	20	22	19	50	20	41	20	41	21	46	21	41	23	44	24	27
हमीरपुर(हि.प्र.)	22	07	22	41	22	06	21	54	21	26	20	30	20	17	19	43	20	35	20	35	21	43	21	39	23	38	24	21
हरिद्वार	21	56	22	30	21	55	21	46	21	19	20	24	20	13	19	40	20	32	20	31	21	36	21	31	23	34	24	18
हिसार (हरि.)	22	05	22	38	22	04	21	55	21	29	20	35	20	24	19	52	20	43	20	42	21	46	21	40	23	45	24	29
होशियारपुर	22	09	22	43	22	08	21	57	21	29	20	32	20	19	19	46	20	37	20	38	21	45	21	42	23	41	24	24
हाँसी (हरि.)	22	04	22	37	22	03	21	54	21	28	20	34	20	24	19	51	20	43	20	42	21	45	21	39	23	45	24	28

नोट— *15 नवम्बर, 2019 ई. को जिन नगरों का चन्द्रोदय 19घं.-46मिं. के बाद होगा, वहीं यह व्रत 15 नवम्बर को होगा। 19घं.-46मिं. से पहिले जिन नगरों का चन्द्रोदय होगा, वहाँ यह व्रत 16 नवम्बर को होगा। (देखें पृष्ठ 23)।
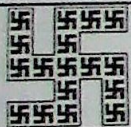
संदिग्ध व्रत-पर्वों का शास्त्रीय निर्णय-वि.सं.२०७६

लेखक :-पं. विवेक शर्मा

(1) चैत्र नवरात्रारम्भ (घटस्थापन मुहूर्त्त) (6 अप्रैल, शनिवार)

शास्त्रानुसार सूर्योदय के बाद 10 घड़ी तक (लगभग 4 घण्टे) या मध्याह्न में अभिजित मुहूर्त्त (दिन के अष्टम मुहूर्त्त) के समय चैत्र शुक्ल प्रतिपदा में नवरात्रारम्भ व कलशस्थापन किया जाता है। यदि प्रतिपदा तिथि सम्पूर्ण रूप (पूरी तरह) से चित्रा नक्षत्र या वैधृति योग से दूषित हो, तो इनके (चित्रा या वैधृति) पूर्वार्द्ध भाग को छोड़कर घटस्थापन करना चाहिए। जहाँ तक सम्भव हो, इस निषेध-काल का त्याग करना चाहिए-

'प्रतिपदाद्य-षोडश-नाडी-निषेधः, चित्रा, वैधृतियोग-निषेधश्च उक्तकालानुरोधेन सति सम्भवे पालनीयः।।'

निषेध के अनुरोध से पूर्वाह्न-काल तथा प्रतिपदा तिथि की समाप्ति का अतिक्रमण नहीं करना चाहिए।

इस वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा 6 अप्रैल, 2019 ई. के दिन वैधृति योग का पूर्वार्द्ध 9घं.-57मिं. (भा. स्टैं. टा.) तक है। यहाँ अभिजित मुहूर्त्त 12घं.-06मिं. से 12घं.-54मिं. तक है। **इस स्थिति में उपरोक्त शास्त्र-वाक्यानुसार प्रातः 9घं.-57मिं. बाद वैधृति योग का पूर्वार्द्ध काल त्यागकर अभिजित् मुहूर्त्त में ही घटस्थापन, नवरात्रारम्भ आदि शुभ कार्य करने चाहिए।**

[**नोट**-यद्यपि शास्त्रों में उपरोक्त निषेध वाक्य आश्विन नवरात्रे प्रारम्भ के सन्दर्भ में लिखे हैं, परन्तु परम्परया इनका अनुपालन चैत्र (वासन्त) नवरात्रों में भी किया जाता है।]

(2) श्रीरामनवमी व्रत (13 अप्रैल, शनिवार)

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का जन्म पुनर्वसु नक्षत्र, मध्याह्न-व्यापिनी चैत्र शुक्ल नवमी तिथि में हुआ था। अतः जिस दिन चैत्र शुक्ल नवमी मध्याह्न-व्यापिनी होती है, उसी दिन श्रीरामनवमी व्रत किया जाता है। यथा-

'चैत्र शुक्ल नवमी रामनवमी। अस्यां मध्याह्नव्यापिन्यामुपोषण कार्यम्। पूर्वेद्युरेव मध्याह्ने सत्त्वे सैव ग्राह्या।। ......शुद्धाया नवम्या अलाभे मुहूर्त्त त्रय न्यूनत्वे वा सर्वैरप्यष्टमी विद्धैवोपोष्येत्याहुः।।' (धर्मसिन्धु)

अर्थात् चैत्र शुक्ल नवमी रामनवमी है। इसमें मध्याह्न-व्यापिनी में उपवास करें। नवमी तिथि पहले दिन मध्याह्न-व्यापिनी हो, तो वही ग्रहण करे। **अपरं** च-दूसरे दिन सूर्योदय-व्यापिनी नवमी न मिलने पर अथवा तीन मुहूर्त्त से कम होने पर सभी अष्टमी से युक्त नवमी को उपवास करें।

यद्यपि कुछ विद्वानों के मतानुसार यदि नवमी दूसरे दिन तीन मुहूर्त्ता मिले (जैसा कि इस वर्ष 14 अप्रैल, 2019ई. को प्राप्त हो रही है-८ घड़ी ४८ पल), तो पहिले दिन अष्टमी विद्धा मध्याह्न-व्यापिनी नवमी को छोड़कर दूसरे दिन दशमीयुता नवमी में यह व्रत करना चाहिए। परन्तु इस मत को अधिक मान्यता प्राप्त नहीं है, क्योंकि परविद्धा का विचार तभी करना चाहिए जब व्रत-तिथि मुख्य कर्मकाल को दोनों दिन व्याप्त या अव्याप्त करें। श्रीरामनवमी व्रत का मुख्य कर्मकाल मध्याह्न-व्यापिनी नवमी-13 अप्रैल, शनिवार को ही व्याप्त हो रही है। **अतएवं रामनवमी व्रत 13 अप्रैल, शनिवार को ही शास्त्रसम्मत एवं ग्राह्य होगा।**

इसदिन पंजाब, हि.प्र. दिल्ली, हरियाणा, जम्मू आदि में **'मध्याह्नकाल'** लगभग 11घं.-12मिं. से 13घं.-45मिं. (I.S.T.) तक रहेगा। वामन-पुराण में भी मध्याह्न-व्यापिनी नवमी को श्रीरामनवमी व्रत करने का निर्देश है।

(3) रम्भा-तृतीया व्रत (5 जून, बुधवार)

ज्येष्ठ शुक्ल पूर्व (द्वितीया) विद्धा तृतीया तिथि के दिन रम्भा-तृतीया व्रत किया जाता है-**'ज्येष्ठ शुक्ल तृतीयायां रम्भाव्रतम्। सा पूर्वविद्धा ग्राह्या।।'**-(धर्मसिन्धुः)

इस वर्ष 5 जून, बुधवार, 2019 ई. को तृतीया द्वितीयाविद्धा है, **अतः यह व्रत 5 जून, बुधवार को ही शास्त्रसम्मत है।**

(4) वटसावित्री व्रत (ज्येष्ठ-पूर्णिमा, 16 जून, रविवार)

वटसावित्री व्रत के पालन में दो प्रकार की परम्पराएं (मत) प्रचलित हैं। स्कन्द और भविष्योत्तर पुराण के अनुसार यह व्रत ज्येष्ठ पूर्णिमा को तथा निर्णयामृतादि के अनुसार ज्येष्ठ अमावस्या को किया जाता है। राजस्थान आदि कुछ उत्तरी राज्यों में परम्परया इसे ज्येष्ठ अमावस्या के दिन किया जाता है। दोनों परम्पराओं में यह व्रत पूर्व (चतुर्दशी) विद्धा अमावस या पूर्णिमा के दिन ही ग्रहण करने योग्य कहा गया है। (शास्त्र-प्रमाण के लिए देखें पंचांगदिवाकर-वि. संवत् २०७५-पृष्ठ 93)

अतः इस वर्ष ज्येष्ठ पूर्णिमा वाला वटसावित्री व्रत चतुर्दशी-विद्धा सायंकालिक पूर्णिमा वाले दिन 16 जून, रविवार को होगा।

(5) कुमार-षष्ठी (7 जुलाई, रविवार)

कुमार (स्कन्द) षष्ठी व्रत पूर्व (पंचमी) विद्धा षष्ठी के दिन किया जाता है।– **'षष्ठी स्कन्दव्रते पूर्वविद्धा।।'**–(धर्मसिन्धु)।। वसिष्ठ जी अनुसार भी–

'कृष्णाष्टमी स्कन्दषष्ठी शिवरात्रिश्चतुर्दशी।।

एताः पूर्वयुताः कार्याः तिथ्यन्ते पारणं भवेत्।।

इस वर्ष आषाढ़ शुक्ल षष्ठी 7 जुलाई, रविवार, सन् 2019 ई. को पंचमीविद्धा है, अतः यह व्रत इसी दिन शास्त्र-सम्मत है।

(6) श्रीसत्यनारायण व्रत (आषाढ़ शुक्ल)

(16 जुलाई, मंगलवार)

आषाढ़ पूर्णिमा (16 जुलाई, मंगलवार, 2019 ई.) की रात्रि को भारत में **खण्डग्रास चन्द्रग्रहण** है। इस चन्द्रग्रहण का वेध (सूतककाल) जोकि सायं 16घं.-31मिं. से प्रारम्भ हो रहा है, सत्यनारायण व्रत के दिन प्रदोषकाल को दूषित कर रहा है। अतएव इस व्रत का पालन करने वाले श्रद्धालु व धार्मिकजनों को ग्रहण-वेध (सूतक) से पूर्व ही दूध तथा अन्य भोग चढ़ाने वाली वस्तुओं आदि में कुशा का सेवन तथा अन्य पथ्य-अपथ्य का ध्यान रखना चाहिए। प्रदोषकाल से पूर्व ही स्नान करके भगवान् सत्यनारायण की पूजार्चना करनी चाहिए। पूजा में अपक्व अन्न (आटा, चावल, दालें, घी, फल, वस्त्रादि) का ही प्रयोग करें क्योंकि ग्रहण एवं ग्रहण के सूतककाल में पका हुआ अन्न त्याज्य माना गया है–

वेधकाले ग्रहणे पक्वमन्नं त्याज्यम्।। (हेमाद्रि)

अगले दिन 17 जुलाई, 2019 ई. को प्रातः स्नान के पश्चात् सूर्योदय को अर्घ्य देने के पश्चात् व्रत की पारणा करनी चाहिए।

(7) ऋग्वेदि उपाकर्म (14 अगस्त, बुधवार)

ऋग्वेदियों के उपाकर्म का मुख्यकाल श्रावण शुक्ल में **'श्रवण नक्षत्र'** है। इस वर्ष श्रवण नक्षत्र 14 और 15 अगस्त को दो दिन वर्तमान है।

शास्त्र निर्देशानुसार यदि श्रवण नक्षत्र दो दिन प्रवृत्त हो और वह पहले दिन सूर्योदय से शुरु होकर दूसरे दिन सूर्योदय के बाद तीन मुहूर्त्त तक विद्यमान् हो, तो दूसरे ही दिन उपाकर्म किया जाता है, क्योंकि यहाँ धनिष्ठा नक्षत्र का योग प्रशस्त (श्रेष्ठ) है, यदि दूसरे दिन श्रवण-नक्षत्र तीन मुहूर्त्त से कम हो और पहले दिन श्रवण पूरा दिन व्याप्त हो, तो पहले दिन ही उपाकर्म किया जाता है।

'दिनद्वये श्रवणसत्त्वे यदि पूर्वदिने सूर्योदयमारभ्य प्रवृतं श्रवणं द्वितीयदिने सूर्योदयोत्तरं त्रिमुहूर्त्ते वर्तते तदा परदिन एवोपाकर्म धनिष्ठायोगप्राशस्त्याद्यदि त्रिमुहूर्त्ते न्यूनं तदा पूर्वदिन एव संपूर्णव्याप्ते।।'

15 अगस्त को श्रवण नक्षत्र त्रिमुहूर्त्त-न्यून है, **अतः उपरोक्त शास्त्रप्रमाण अनुसार ऋक्-उपाकर्म 14 अगस्त, बुधवार को किया जाएगा।** (वेदपरायण स्वाध्यायादि शुभ कृत्यारम्भ को ही **'उपाकर्म'** कहते हैं।)

(8) दूर्वाष्टमी व्रत (23 अगस्त शुक्रवार)

पूर्व (सप्तमी) विद्धा भाद्रपद शुक्ल अष्टमी को सन्तान सुख एवं वंशवृद्धि की कामना से यह व्रत किया जाता है। शास्त्रानुसार जिस किसी वर्ष में भाद्र. शुक्ल अष्टमी के समय कन्या का सूर्य (आश्विन मास) आ जाए अथवा अगस्त्य तारा का उदय हो जाए, तो उस स्थिति में इस व्रत का पालन पूर्ववर्त्ती किसी अन्य मास की अष्टमी में (भाद्रपद कृष्ण या श्रावण शुक्लाष्टमी) करना चाहिए, जब अगस्त्य तारा अदृश्य (अस्त) हुआ हो (यह व्रत रौहिण या ब्राह्म (दिन के नवम मुहूर्त्त) में व्याप्त अष्टमी में किया जाता है–

इदं दूर्वा–पूजनं व्रतं कन्याऽर्केऽगस्त्योदये च वर्ज्यम्।। *(धर्मसिन्धु)*

भाद्रशुक्लाष्टम्यां अगस्त्योदये भाविनी सति पूर्व कृष्णाष्टम्यामेव कुर्यात्।। (हेमाद्रि)

इस वर्ष भाद्र. शुक्लाष्टमी 6 सितम्बर (सिंहऽर्के) को है, परन्तु भारत के अधिकतर क्षेत्रों में 4 सितम्बर या इससे पहिले ही अगस्त्योदय हो चुका होगा। **अतएव शास्त्र-निर्देशानुसार दूर्वाष्टमी का व्रत पूर्ववर्त्ती भाद्र. कृष्ण की रौहिण-व्याप्त अष्टमी 23 अगस्त, शुक्रवार को करना शुभ एवं शास्त्र-सम्मत होगा।**

परन्तु भारत के जिन नगरों का अक्षांश 32°-20′ से अधिक है, वहाँ अगस्त्य-तारा 7 सितम्बर या इसके आगे के दिनों में होगा। अतएव वहाँ (32°-20° से अधिक अक्षांशीय नगरों में) यह व्रत 6 सितम्बर, शुक्रवार को रौहिणवर्त्ती अष्टमी में किया जा सकता था। परन्तु 6 सितम्बर को ज्येष्ठा नक्षत्र विद्यमान होने से वहाँ भी यह व्रत 23 अगस्त, शुक्रवार को ही किया जाएगा क्योंकि शास्त्रों में ज्येष्ठा या मूल नक्षत्र का होना इस व्रत में वर्जित है। **(इयं ज्येष्ठा मूलर्क्षयुता त्याज्या।।)**

(9) श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी व्रत

(I) 23 अगस्त, शुक्रवार=अर्धरात्रि–व्यापिनी अष्टमी (स्मार्त अर्थात् गृहस्थियों के लिए)

(II) 24 अगस्त, शनिवार=उदयकालिक अष्टमी (वैष्णव, संन्यासियों के लिए)

श्रीमद्भागवत् पुराण के अनुसार भगवान् श्रीकृष्ण का अवतार भाद्रपद कृष्ण अष्टमी तिथि, बुधवार, रोहिणी नक्षत्र एवं वृष के चन्द्रमाकालीन अर्द्धरात्रि के समय हुआ था–

'मासि भाद्रपदे अष्टम्यां कृष्ण पक्षेऽर्धरात्रके,
वृषराशि स्थिते चन्द्रे, नक्षत्रे रोहिणी युते।।' *(भविष्यपुराण उत्तरपर्व)*

पंचांग गणित के कारण अनेक वर्षों तक उपरोक्त तिथि, नक्षत्र, चन्द्रादि सभी तत्त्वों की विद्यमानता किसी एक वर्ष में नहीं हो पाती अर्थात् यदि अर्द्धरात्रि में अष्टमी तिथि प्राप्त हो जाती है, तो उस दिन बुधवार अथवा रोहिणी नक्षत्र का अभाव रहता है। यदि किसी अर्द्धरात्रि को रोहिणी नक्षत्र आ जाए, तो कृष्ण अष्टमी अर्द्धरात्रि-व्यापिनी नहीं होती। परन्तु अधिकांश शास्त्रकारों ने व्रत-पूजन, जपादि हेतु अर्द्धरात्रि में रहने वाली तिथि को ही अधिक मान्यता दी है। विशेषकर स्मार्त (गृहस्थी) लोग अर्द्धरात्रिव्यापिनी अष्टमी को यह व्रत ग्रहण करते हैं–

कृष्ण जन्माष्टमी निशीथ व्यापिनी ग्राह्या।
पूर्व दिन एव निशीथ योगे पूर्वा।। *(धर्मसिन्धु)*

पंजाब, हिमाचल, जम्मू-काश्मीर, हरियाणा, दिल्ली आदि के स्मार्त धर्मावलम्बी अर्थात् गृहस्थी लोग गत सहस्रों वर्षों से इसी परम्परा का अनुसरण करते हुए सप्तमी युक्ता अर्द्धरात्रिकालीन वाली अष्टमी को व्रत, जपोपासना आदि कृत्य करते आ रहे हैं, जबकि मथुरा, वृन्दावन सहित उत्तरप्रदेश, बिहार, महाराष्ट्र आदि प्रदेशों में उदयकालिक अष्टमी के दिन ही श्रीकृष्ण जन्मोत्सव मनाते आ रहे हैं। श्रीकृष्ण-जन्मस्थली मथुरा को आधार मानकर मनाई जाने वाली श्रीकृष्ण अष्टमी के दिन ही अधिकांशत: केन्द्रीय सरकार अवकाश की घोषणा कर देती है। वैष्णव सम्प्रदाय के अधिकांश लोग उदयकालिक अष्टमी जो नवमी युता हो, श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी व्रत हेतु ग्रहण करते हैं–

वर्जनीया प्रयत्नेन सप्तमी सहिताष्टमी।
सा सर्क्षापि न कर्त्तव्या सप्तमी संयुताष्टमी।। *(निर्णयामृत)*

इस प्रकार, साधारण गृहस्थी लोग भी इस अवकाश एवं उत्सव वाले दिन ही व्रत रख लेते हैं, जोकि शास्त्र-विरुद्ध हो जाता है, क्योंकि सभी डायरियां व मीडिया आदि भी सरकार द्वारा उद्घोषित अवकाश को प्रमाण मान लेते हैं तथा उसी दिन व्रत कर लेते हैं। जबकि उनमें से 98 प्रतिशत से भी अधिक लोग स्मार्त्त सम्प्रदाय से सम्बद्ध होते हैं।

परन्तु सत्य तो यह है कि अधिकांश शास्त्रकारों ने स्मार्त सम्प्रदाय वाली जन्माष्टमी अर्थात् अर्द्धरात्रिकालिक अष्टमी को ही मान्यता प्रदान की है। तिथि-निर्णय अनुसार भी जन्माष्टमी में अर्धरात्रि को ही मुख्य निर्णायक तत्त्व माना है–रोहिणी नक्षत्र मुख्य निर्णायक नहीं है। केवल अष्टमी तिथि चाहे शुद्धा (सूर्योदय से अर्धरात्रि तक) हो अथवा सप्तमी विद्धा,-पूर्व (पहिले) दिन को ही व्रत करना युक्ति संगत है–

'केचित् अर्द्धरात्रि एव मुख्य निर्णायक:। रोहिणी योगस्तु तने निर्णयासम्भवे निर्णायक:। तन्मते तादृश शुद्धा–विद्धा विषये पूर्वदिने एव व्रतम्।'

भट्टोजिदीक्षित के इस प्रमाण से तो सारी स्थिति स्पष्ट हो जाएगी–

रोहिणयोगाऽभावे अपि अर्द्धरात्रिव्यापिनी अष्टमी ग्राह्या।
परदिने नक्षत्र योग: अकिंचित्कर:।।

अर्थात् रोहिणी नक्षत्र का योग न होने पर भी अर्द्धरात्रि-व्यापिनी अष्टमी में ही यह व्रत (कृष्ण-जन्माष्टमी) करना चाहिए। दूसरे दिन रोहिणी नक्षत्र का योग विचार करना व्यर्थ है।

सिद्धान्त ग्रन्थों में भी अधिकांशत: व्रत, पर्व, त्यौहारों के कर्मकाल (व्रत, पर्व से सम्बद्ध विशेष पूजन आदि कार्य किए जाते हैं, उस व्रत-पर्व का कर्मकाल कहलाता है।) विद्यमान तिथि के दिन ही करने के निर्देश दिए गए हैं। यथा–'विष्णुधर्मोत्तर' अनुसार–

कर्मणो यस्य य: काल: तत्कालव्यापिनी तिथि:। तस्य कर्माणि कुर्वीत।।
(विष्णुधर्मोत्तर)

अर्थात् जो तिथि कर्म के समय तक जिस दिन रहे, वही ग्रहण करनी चाहिए।

श्रीकृष्ण का जन्म अर्धरात्रि व्यापिनी अष्टमी में हुआ था, अत: जन्माष्टमी व्रत का कर्मकाल (श्रीकृष्ण की पूजा,श्रीकृष्ण के निमित्त व्रत, बालरूप पूजा, झुला-झुलाना, चन्द्र को अर्घ्यदान, जागरण आदि) **अर्धरात्रि ही है, अतएव जन्माष्टमी व्रत रखने के लिए अर्धरात्रि में अष्टमी का होना अनिवार्य है।** अर्धरात्रि के समय नवमी तिथि का कोई औचित्य नहीं है। पहले दिन अर्धरात्रि-व्याप्त अष्टमी को छोड़कर व्रत उस दिन करना,

जिस दिन अर्धरात्रि के समय अष्टमी व्याप्त नहीं कर रही अपितु वहाँ नवमी तिथि है, किसी भी दृष्टि से शास्त्रसम्मत एवं तर्क-संगत नहीं है।

वास्तव में श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी का व्रत तथा जन्मोत्सव दो अलग-अलग स्थितियां हैं।

गतवर्षों की भान्ति आगामी वर्ष भी श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी व्रतादि का पर्व स्मार्त और वैष्णव भेद से दो दिन आ रहा है। स्मार्त लोग (सामान्य गृहस्थी) अपनी कुल परम्परानुसार 23 अगस्त, शुक्रवार को सप्तमी युता (प्रात: 8घं.-09मिं. बाद) अष्टमी तिथ्यारम्भ, अर्द्धरात्रि युक्ता, कृतिका नक्षत्र, वृष राशिस्थ योग में व्रत का आरम्भ, जप, पाठादि करके आगामी दिवस (24 अगस्त, शनिवार) को व्रत का पारण एवं जन्मोत्सव मनाएंगे। जोकि श्रेष्ठ एवं उत्तम रहेगा।

वैष्णव (संन्यासी आदि) मतावलम्बी 24 अगस्त, शनिवार के दिन ही (उदय-कालिक अष्टमी में) व्रत का संकल्प, व्रत, जपानुष्ठान करके अर्द्धरात्रि कालीन नवमी तिथि, में रोहिणी नक्षत्र, वृषस्थ चन्द्रमा में व्रत, जपानुष्ठान एवं जन्मोत्सव मनाएंगे।

हमारे मतानुसार तो 23 अगस्त, शुक्रवार के दिन ही श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी का व्रत, चन्द्रमा को अर्घ्य दान तथा कृष्ण-जन्म से सम्बद्ध अन्य सभी पूजन कार्य करने शास्त्र-सम्मत होंगे। अगले दिन 24 अगस्त, शनिवार को अष्टमी तिथि के अन्त में व्रत का पारण करना चाहिए। ता. 24 अगस्त को भी श्रीकृष्ण स्तोत्र पाठ, ध्यान, कीर्तनादि करके इन दोनों दिनों को मिले पुण्य सुअवसरों का लाभ लेना चाहिए। क्योंकि जिस मनुष्य को श्रीकृष्णाष्टमी के उपवास, पूजनादि का सौभाग्य मिलता है, उसके कोटि जन्मकृत पाप नष्ट हो जाते हैं तथा वह जन्म बन्धन से मुक्त होकर दिव्य वैकुण्ठादि भगवत्-धाम में निवास करता है।

(10) साम-उपाकर्म (1 सितम्बर, रविवार)

सामवेदियों का भाद्रपद शुक्ल पक्ष में अपराह्ण-व्यापिनी हस्त नक्षत्र में उपाकर्म का मुख्यकाल है।

इस वर्ष भाद्रपद शुक्ल पक्ष में **1 सितम्बर, रविवार को हस्त नक्षत्र अपराह्ण-व्यापिनी है।** अत: सामवेदि इसी दिन उपाकर्म, आदि कृत्य करेंगे।

(11) द्वितीया का महालय श्राद्ध (15 सितम्बर, शनिवार)

आश्विन कृष्ण पक्ष (पितृ-पक्ष) में मृत व्यक्ति की जो तिथि आए, उस तिथि में पार्वण श्राद्ध करने का विधान है। पार्वण श्राद्ध में पिता, पितामह, प्रपितामह, सपत्नीक अर्थात् माता, दादा और परदादी सहित छ: जनों का श्राद्ध होता है। इन्हें अपराह्ण-व्यापिनी मृत्युतिथि के दिन करने का निर्देश है। यथा-

पूर्वाह्णे मातृकं श्राद्धमपराह्णे तु पैतृकम्।
एकोद्दिष्टं तु मध्याह्णे प्रातर्वृद्धि निमित्तकम्॥

शास्त्रानुसार, यदि मृत्यु तिथि अपराह्ण-काल को दो दिन असमान रूप से व्याप्त हो अर्थात् एक दिन अधिक और दूसरे दिन कम व्याप्त करें तो वहाँ अधिक अपराह्ण काल-व्याप्ति वाले दिन श्राद्ध किया जाता है-

अपराह्ण-द्वये चामा यदि स्यात् तत्रयाऽधिका।
सा ग्राह्या यदि तुल्या स्यादग्रे वृद्धौ परा स्मृता॥ *(ज्योर्निबन्ध)*

इस वर्ष आश्विन कृष्ण द्वितीया तिथि दो दिन (15 और 16 सितम्बर, 2019 ई. को) अपराह्णव्यापिनी है, अत: उपरोक्त नियमानुसार **द्वितीया तिथि का श्राद्ध 15 सितम्बर, 2019 ई. को** किया जाएगा, क्योंकि द्वितीया इस दिन अपराह्णकाल को सम्पूर्णतया व्याप्त कर रही है।

15 व 16 सितम्बर, 2019 ई. को उत्तरी-भारत में अपराह्णकाल लगभग 13घं.-35मिं. से 16घं.-02मिं. तक होगा।

ध्यान दें-इस वर्ष (वि. संवत् २०७६ में) श्राद्धपक्ष में 16 सितम्बर, 2019 ई. को कोई तिथिश्राद्ध नहीं होगा। परन्तु जो लोग किसी कारणवश 15 सितम्बर को द्वितीया का श्राद्ध न कर सकें, वे 16 सितम्बर को भी 13घं.-35मिं. से 14घं.-36मिं. तक श्राद्ध-कार्य कर सकते हैं।

(12) श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्ति (21 सितम्बर, शनिवार)

चन्द्रोदयव्यापिनी आश्विन कृष्ण अष्टमी के दिन इस व्रत का समापन होता है। इस वर्ष यह अष्टमी 21 और 22 सितम्बर, 2019 ई. को-दो दिन व्याप्त है। इस स्थिति में व्रतसमाप्ति पहिले दिन ही होगी क्योंकि इस व्रत की समाप्ति चन्द्रोदय-व्यापिनी में ही होती है-ऐसा शास्त्रनिर्णय है-'इयं चन्द्रोदयव्यापिनी ग्राह्या। तत्रैव पूजाद्युक्तेः॥ ....पूर्वा वा परविद्धा वा ग्राह्या चन्द्रोदये सदा॥'

इस प्रमाणानुसार इस वर्ष इस व्रत की समाप्ति 21 सितम्बर को ही होगी।

(13) एकादशी/द्वादशी के महालय श्राद्ध

जैसा कि ऊपर '**द्वितीया-महालयश्राद्ध**' के दिन निर्णय में भी लिखा गया है कि महालय (आश्विन कृष्णपक्ष के) श्राद्ध पार्वण श्राद्ध होते हैं। ये श्राद्ध (पार्वण-श्राद्ध) अपराह्णव्यापिनी मृत्युतिथि के दिन किए जाते हैं।

द्वादशी का श्राद्ध 25 सितम्बर, 2019 ई. को होगा, क्योंकि द्वादशी तिथि इसी दिन अपराह्णव्यापिनी है।

एकादशी श्राद्ध भी द्वादशी श्राद्ध वाले दिन (25 सितम्बर को) ही होगा, क्योंकि एकादशी भी इसी दिन अपराह्णव्यापिनी है।

25-26 सितम्बर को अपराह्णकाल 13घं.-30मिं. से 15घं.-53मिं. तक रहेगा।

एकादशी श्राद्ध [अपराह्णकाल व्यापिनी]-13घं-30मिं. से 14घं-09मिं. तक
द्वादशी श्राद्ध [अपराह्णकाल व्यापिनी]-14घं-09मिं. से 15घं-53मिं. तक

(14) उपाङ्ग ललिता व्रत (2 अक्तूबर, बुधवार)

यह व्रत अपराह्ण-व्यापिनी आश्विन शुक्ल पंचमी के दिन किया जाता है-

'अत्र पंचमी अपराह्णव्यापिनी ग्राह्या, अपराह्णस्यैव तत्पूजाकालत्वोपपत्तेः।' *(धर्मसिन्धुः)*

इस वर्ष पंचमी 2 अक्तूबर, 2019 ई. को अपराह्णव्यापिनी है, अतः यह व्रत इसी दिन होगा। इस दिन अपराह्णकाल लगभग 13घं.-27मिं. से 15घं.-47मिं. तक होगा।

(15) सरस्वती आवाहन-पूजन-बलिदान-विसर्जन

आश्विन शुक्ल पक्ष में मूल नक्षत्र से श्रवण नक्षत्र पर्यन्त सरस्वती देवी का शयन-व्रत किया जाता है। पुस्तकों में सरस्वती देवी का आवाहन, पूजन, बलिदान और विसर्जन आश्विन शुक्ल पक्ष में ही क्रम रूप से मूल, पू.षा., उ.षा. और श्रवण नक्षत्रों के प्रथम पाद (चरण) में किया जाता है। यहाँ पूजनादि में आवाहन, पूजन व बलिदान दिन के समय में ही किए जाने चाहिएं, रात्रि में नहीं। यदि मूल, पू.षा. और उ.षा. नक्षत्र सूर्यास्त से पूर्व त्रिमुहूर्त्त-व्यापिनी हो, तो इनके प्रथम पाद (चरण) में ही आवाहन, पूजनादि कार्य करें। यदि ये नक्षत्र सूर्यास्त से पूर्व तीन मुहूर्त्त से कम हो और रात्रि (सूर्यास्त के बाद) में प्रथम पाद विद्यमान् हो, तो दूसरे दिन इन मूलादि नक्षत्रों के द्वितीय आदि किसी भी पाद (चरण) में **दिन के समय** ही पूजनादि कार्य करने चाहिए-

'तत्र मूलस्य प्रथमे पादे सूर्यास्तात् प्राक् त्रिमुहूर्त्तव्यापिनी सरस्वतिः आवाहनम्।। त्रिमुहूर्त्तन्यूनत्वे रात्रौ वा प्रथमपादसत्त्वे तस्य विशेषवचनं विना ग्राह्यत्वाभावाद् द्वितीयादिपादे परदिने एवावाहनम् एवं पूर्वाषाढ़ादिनक्षत्रं पूजादौ दिनव्याप्येव ग्राह्यम।।' *(धर्मसिन्धुः)*

यहाँ एक बात ध्यात्वय है कि सरस्वती विसर्जन श्रवण नक्षत्र के प्रथम पाद (चरण) में ही करना चाहिए, द्वितीयादि चरण में नहीं। चाहे श्रवण का प्रथमपाद रात्रिभाग (सूर्यास्त) में भी चला जाए। इसलिए विसर्जन रात्रि के प्रथम प्रहर पर्यन्त जिसमें श्रवण का प्रथम पाद (चरण) हो, उसमें करना चाहिए-**'विसर्जनं तु श्रवणप्रथमपादे रात्रिभागगतेपि कार्यं विशेषवचनात्।। तच्च रात्रेः प्रथमप्रहर-पर्यन्तमेवेति भाति।।'** *(धर्मसिन्धुः)*

इस वर्ष (वि. संवत् २०७६ में) आश्विन शुक्ल पक्ष में मूल, पू.षा. तथा उ.षा. नक्षत्र क्रमशः **4, 5 व 6 अक्तूबर** को सूर्यास्त पूर्व त्रिमुहूर्त्त व्यापिनी हैं। अतः यह तीनों कृत्य इन्हीं तारीखों में किए जाएंगे। श्रवण नक्षत्र का प्रथमपाद 7 अक्तूबर, 2019 ई. को रात्रि के प्रथम प्रहर में पड़ रहा है। अतः उपरोक्त शास्त्र-विवेचनानुसार इस वर्ष **'सरस्वती विसर्जन' 7 अक्तूबर, 2019 ई. को रात्रि के प्रथमपाद (प्रदोषकाल) में ही किया जाएगा।**

(16) विजयादशमी (दशहरा) (8 अक्तूबर, मंगलवार)

गतवर्ष की भान्ति इस वर्ष (वि. संवत् 2076 में) भी विजयादशमी की तिथि के बारे में कुछ मतभेद रहेगा। अतः इस विषय में धर्मशास्त्र आधारित स्पष्टीकरण करना ठीक रहेगा। अपराह्ण-व्यापिनी आश्विन शुक्ल दशमी के दिन विजयादशमी (अपराजिता-पूजन) होती है। अतएव दशमी तिथि की अपराह्ण-काल व्याप्ति ही विजयादशमी का मुख्य निर्णायक तत्त्व है। **'ज्योतिर्निबन्ध'** में लिखा है कि-

'आश्विनस्य सिते पक्षे दशम्यां तारकोदये।
स कालो विजयो ज्ञेयः सनकार्यार्थसिद्धये।।

अर्थात् आश्विन शुक्ल दशमी के सायंकाल में तारा उदय होने के समय **'विजयकाल'** रहता है। वह सब कार्यों को सिद्ध करता है।

अपराह्ण-व्या. दशमी तिथि एवं श्रवण नक्षत्र का योग (संयोग) विजयादशमी की तिथि के निर्णय में विशेष निर्णायक-तत्त्व हो जाता है। दशमी तिथि व श्रवण-नक्षत्र की भिन्न-भिन्न स्थितियों के अनुसार इस पर्व की तिथि (दिन) का निर्णय धर्णसिन्धुकार अनुसार इस प्रकार से है-

(1) यदि दशमी केवल दूसरे दिन ही अपराह्ण-व्यापिनी हो, तो विजयादशमी परली अर्थात् दूसरे दिन ग्रहण करें।

(2) यदि दशमी दोनों दिन अपराह्ण-व्यापिनी हो और दोनों दिन श्रवणनक्षत्र का अपराह्ण-काल में योग हो या न हो, तो विजयादशमी पहले दिन।

(3) यदि दशमी दोनों दिन अपराह्ण-व्यापिनी न हो अर्थात् अपराह्ण-काल में अविद्यमान हो और दोनों दिन अपराह्ण में श्रवण का योग हो या न हो तो भी विजयादशमी पहिले दिन।

(4) यदि दशमी दोनों दिन अपराह्णव्यापिनी हो अथवा न हो, तो जिस दिन श्रवण नक्षत्र का सम्पर्क अपराह्ण-काल में हो, तो विजयादशमी उस दिन।

(5) इसी प्रकार, यदि दशमी दोनों दिन अपराह्न-व्यापिनी हो अथवा दोनों दिन न हो, और श्रवण नक्षत्र दूसरे ही दिन अपराह्न-व्याप्त हो, तो विजयादशमी दूसरे दिन।

'यदा तु पूर्वदिने एव अपराह्नव्यापिनी दशमी परदिने च मुहूर्त्तत्रयादिव्यापिनी अपराह्णात् पूर्वमेव समाप्ता, परत्रैव च श्रवणयोगवती तदा परैव। अपराह्णै दशम्यभावेऽपि। यां तिथिं समनुप्राप्य उदयं याति भास्करः।' 'इत्यादि साकल्यवचनैः श्रवण-युक्तायाः ग्राह्याया औदयिक-स्वल्पदशम्याः कर्मकाले सत्त्वापादानात्।।' *(धर्मसिन्धु)*

कश्यप ऋषि का यह वाक्य भी देखें-

'उदये दशमी किञ्चित् सम्पूर्णैकादशी यदि।
श्रवणर्क्षं यदा काले सा तिथिः विजयाभिधा।।'

इस वर्ष (वि. संवत् 2076 में) ठीक यही स्थिति है। ता. 7 अक्तूबर व 8 अक्तूबर, 2019 ई. को दोनों दिन दशमी तिथि अपराह्ण-व्यापिनी है। यद्यपि 8 अक्तूबर को दशमी तिथि ता. 7 की उपेक्षा कम समय के लिए अपराह्ण-व्याप्त है। परन्तु उपरोक्त नियम (5) एवं शास्त्र निर्देशानुसार **8 अक्तूबर को** ही अपराह्ण-व्यापिनी दशमी तथा श्रवण नक्षत्र विद्यमान होने से **विजयादशमी पर्व** शास्त्र-सम्मत होगा। कश्यप ऋषि के उपरोक्त वाक्यानुसार भी **विजयादशणी का पर्व 8 अक्तूबर, 2019 ई. को ही शास्त्रानुमोदित है।**

[नोट-ता. 7/8 अक्तूबर को अपराह्ण-काल लगभग 13घं.-24मिं. से 15घं.-42मिं. पर्यन्त रहेगा।]

(17) प्रदोष व्रत (कार्तिक कृष्ण पक्ष)

प्रत्येक पक्ष (कृष्ण-शुक्ल) की प्रदोषव्यापिनी त्रयोदशी में यह व्रत किया जाता है। यह नक्त व्रत है। जिस दिन त्रयोदशी प्रदोषकाल को व्याप्त करे, उस दिन यह व्रत करना चाहिए-

वैषम्येण एकदेश स्पर्शे तदाधिक्यवती पूर्वाऽपि ग्राह्या।। *(धर्मसिन्धु)*

इस वर्ष कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी 26 अक्तूबर, 2019 ई. को सूर्यास्त से पहिले ही 15घं.-47मिं. पर समाप्त हो रही है। त्रयोदशी 25 अक्तूबर, 2019 ई. को ही प्रदोष-व्यापिनी है। अतः यह व्रत 25 अक्तूबर, शुक्रवार को ही होगा।

इस दिन (25 अक्तू. को) प्रदोषकाल सायं 17घं.-42मिं. से 20घं.-18मिं. तक रहेगा।)

(18) धन त्रयोदशी (25 अक्तूबर, शुक्रवार)

धन-त्रयोदश (धन-तेरस) प्रदोषव्यापिनी कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी को मनाई जाती है। इस दिन चाँदी, पीतल आदि का बर्तन खरीदना शुभ माना गया है। इस दिन सायंकाल के समय घर के मुख्य दरवाज़े पर यमराज के निमित्त दक्षिणाभिमुख होकर एक दीपक तेल से भरकर प्रज्वलित करे तथा गन्धाक्षतादि से पूजनकर एक पात्र में अनाज रखकर उस पर प्रज्वलित दीप रख देवें।

कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी तिथि **25 अक्तूबर, 2019 ई. को** प्रदोष-व्यापिनी है। (सायं 19घं.-08मिं. से 20घं.-18मिं. तक)। अतः यह पर्व इसी दिन मनाया जाएगा।

(19) श्रीहनुमान जयन्ती (उत्तर-भारत) (26 अक्तूबर)

व्रत-रत्नाकर अनुसार आश्विन (कार्तिक) कृष्ण चतुर्दशी, भौमवार की महानिशा (अर्धरात्रि) में अञ्जनादेवी के उदर से श्रीहनुमान जी का जन्म हुआ था।

आश्विनस्यासिते पक्षे भूतायां च महानिशि।
भौमवारेऽञ्जनादेवी हनूमन्तमजीजनत्।।

प्रस्तुत वर्ष 26 अक्तूबर, 2019 ई. को कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी निशीथव्यापिनी है, अतएव श्रीहनुमान-जयन्ती पर्व इसी दिन प्रशस्त होगा। यह हनुमान-जयन्ती अधिकांश उपासक उत्तर-भारत में परम्परा अनुसार मनाते हैं और व्रत करते हैं, परन्तु शास्त्रान्तर में चैत्र शुक्ल पूर्णिमा को हनुमान जन्म का उल्लेख किया है, जोकि दक्षिण भारत में मनाई जाती है।

(20) वैकुण्ठ चतुर्दशी (10 नवम्बर, रविवार)

कार्तिक शुक्ल चतुर्दशी, जो अरुणोदय-व्यापिनी हो, उस दिन यह व्रत भगवान् विष्णु एवं शिव की पूजा करके किया जाता है। जिस अहोरात्र में चतुर्दशी अरुणोदयव्यापिनी हो, उस अहोरात्र में उपवास रखकर अगले दिन अरुणोदय में पूजा, पारणा करने का विधान है-**'चतुर्दशी युक्तारुणोदयवति अहोरात्रे उपवासः फलितः।'** *(धर्मसिन्धुः)*

इस वर्ष चतुर्दशी 10 नवम्बर, 2019 ई. को प्रदोष एवं निशीथ को व्याप्त कर रही है। अतः विष्णु भक्तों के लिए इसी दिन यह व्रत होगा और वे इसी दिन निशीथकाल में विष्णु-पूजन करेंगे। जो लोग शिव-भक्त हैं, उन्हें भी **10 नवम्बर** को अरुणोदय-व्यापिनी चतुर्दशी के दिन व्रत रखकर अरुणोदय में शिव-पूजन करके 11 नवम्बर, 2019 ई. को प्रातः व्रत की पारणा करनी चाहिए। विष्णु-भक्तों की पारणा भी इसी दिन होगी।

(21) पद्मक योग (12/13 नवम्बर)

सूर्य के विशाखा नक्षत्र संचार के समय चन्द्रमा कृतिका नक्षत्र में हो, तब **'पद्मक योग'** होता है। इस योग में तीर्थस्नान विशेषकर तीर्थराज पुष्करतीर्थ (राजस्थान) में स्नान, दान का विशेष माहात्म्य होता है। यथा-

विशाखासु यदा भानुः कृतिकासु च चन्द्रमा।
स योगः पद्मको नाम पुष्करे स्वाति दुर्लभः।। *(पद्मपुराण)*

इस दिन सूर्य स्तोत्र एवं गुरु स्तोत्र का पाठ तथा सूर्य गायत्री व गुरु-गायत्री मन्त्रों का पाठ तथा दोनों ग्रहों के सम्बन्ध में यथाशक्ति दान, जप तथा कृतिका स्वामी (विश्वस्वामी सूर्य) के दर्शन किए जाएँ, तो ब्राह्मण सात जन्म तक वेद परायण और धनाढ्य होता है–

कार्तिक्यां कृतिका योगे च कुर्यात् स्वामिदर्शनम।
सातजन्म भवेद् विप्रो धनाढयो वेदपारगः।। *(काशीखण्ड)*

वि. संवत् २०७६ अर्थात् सन् 2019 ई. में यह कार्तिक पूर्णिमा, मंगलवार, 12 नवम्बर को कृतिका, वरीयान योग, सूर्य के विशाखा नक्षत्र रहते–रात्रि 20घं.-51मिं. से अगले दिन 13 नवम्बर, 2019 ई. की रात्रि 22घं.-01मिं. तक यह प्रशस्त **'पद्मक योग'** बना है।

(22) श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (मार्गशीर्ष कृष्ण)

यह व्रत प्रत्येक मास के कृष्णपक्ष की चन्द्रोदय-व्यापिनी चतुर्थी में किया जाता है।

15 नवम्बर, 2019 ई. को चतुर्थी तिथि 19घं.-46मिं. पर प्रारम्भ हो रही है और इस दिन चन्द्रोदय 19घं.-48मिं. पर होगा। अतएव जालन्धर तथा जिन नगरों में चन्द्रोदय 19घं.-46मिं. बाद होगा। अर्थात् चन्द्रोदय चतुर्थी तिथि में होगा वहाँ **श्रीगणेश चतुर्थी 15 नवम्बर, 2019 ई. को ही ग्राह्य होगी।**

परन्तु जिन नगरों में 15 नवम्बर को चन्द्रदोय 15घं.-46मिं. से पहिले होगा अर्थात् वहाँ चन्द्रोदय तृतीया तिथि में हो जाएगा। किन्च 16 नवम्बर, को चन्द्रोदय चतुर्थी समाप्ति (19घं.-15मिं.) के अनन्तर 20घं.-42मिं. के आसपास या कुछ पहिले होगा। इस प्रकार यहाँ दोनों दिन चतुर्थी चन्द्रोदय स्पर्श से वर्जित है। अतः इन नगरों में श्रीगणेश चतुर्थी व्रत दूसरे दिन (16 नवम्बर) को ही होगा। **'दिनद्वये चन्द्रोदयव्याप्त्यभावे परैव।'** *–(धर्मसिन्धु)*

[नोट–पंजाब, हरियाणा, जम्मू, राजस्थान के कुछ क्षेत्रों को छोड़कर सभी राज्यों-हरियाणा, दिल्ली, उ.प्र. उत्तराखण्ड, हि.प्र., म.प्र. आदि सभी राज्यों में श्रीगणेश चतुर्थी व्रत 16 नवम्बर, 2019 ई. को ही होगा।] (चन्द्रोदय हेतु देखें पृष्ठ–13)।

(23) कालभैरवाष्टमी (19 नवम्बर, मंगलवार)

मार्गशीर्ष कृष्ण अष्टमी तिथि को श्रीभैरव-जयन्ती (कालाष्टमी/कालभैरवाष्टमी) मनाई जाती है। इस तिथि के निर्णय के सम्बन्ध में दो मत प्रचलित हैं। प्रथम मतानुसार इसे मध्याह्न-व्यापिनी और दूसरे मतानुसार प्रदोषव्यापिनी मार्ग. कृष्ण अष्टमी को मनाना चाहिए। धर्मसिन्धु अनुसार–

यदि अष्टमी पहिले दिन केवल प्रदोषव्यापिनी और दूसरे दिन केवल मध्याह्न-व्यापिनी हो, तो अधिकांश ग्रन्थों के अनुसार पहिले दिन प्रदोष-व्यापिनी अष्टमी वाले दिन यह पर्व मनाना चाहिए। यथा–

'पूर्वत्र प्रदोषव्याप्तिरेव परत्र मध्याह्न एव तदा बहुशिष्टाचार-अनुरोधात्प्रदोषगा पूर्वैव।।' *(धर्मसिन्धुः)*

इस वर्ष 19 नवम्बर, 2019 ई. के दिन अष्टमी तिथि केवल प्रदोषकाल को और 20 नवम्बर, 2019 ई. के दिन केवल मध्याह्नकाल को व्याप्त कर रही है। **अतएव धर्मसिन्धु के उपरोक्त वाक्यानुसार कालाष्टमी प्रदोषव्यापिनी अष्टमी के दिन 19 नवम्बर, 2019 ई. को ही मनाई जाएगी।**

[इस दिन प्रदोषकाल लगभग 17घं.–24मिं. से 20घं.–08मिं. तक रहेगा।]

(24) श्रीदत्तात्रेय जयन्ती (11 दिसम्बर, बुधवार)

मार्गशीर्ष पूर्णिमा को श्रीदत्तात्रेय जी का जन्म हुआ था। इसमें प्रदोषव्यापिनी पूर्णिमा ग्रहण की जाती है–

'मार्गशीर्षपौर्णमास्यां दत्तात्रेयोत्पत्तिः। इयं प्रदोषव्यापिनी ग्राह्या।।' *(धर्मसिन्धु)*

इस वर्ष 11 दिसम्बर, 2019 ई. को सायं प्रदोषव्यापिनी पूर्णिमा को दत्तात्रेय जयन्ती होगी। 12 दिसम्बर को पूर्णिमा प्रदोषकाल से अव्याप्त है।

(25) गौरी तृतीया (गोंतरी) व्रत (28 जन., 2020 ई.)

चैत्र, भाद्रपद और माघ मासों की शुक्ल तृतीयाएं **'गौरी-तृतीया'** कहलाती हैं। गौरी तृतीया का व्रत/पर्व चतुर्थी-विद्धा (परविद्धा) में करना चाहिए–ऐसा शास्त्रनिर्देश है। धर्मसिन्धुकार अनुसार पहिले दिन त्रि-मुहूर्त्त द्वितीया के वेध में, पर (अगले) दिन में तीन मुहूर्त्त से न्यून भी ग्रहण करनी चाहिए। गौरी के व्रत में तो कला (घटि) से परिमित अल्प भी द्वितीया से युक्त ग्रहण नहीं करनी चाहिए।

'पूर्वदिने त्रिमुहूर्त्तद्वितीया वेधे परदिने त्रिमुहूर्त्त न्यूनापि ग्राह्या।।
··परिदिने कलाकाष्ठादिपरिमिता स्वल्पापि तृतीया परिग्राह्या।।' *(धर्मसिन्धु)*

कालमाधवकार अनुसार भी तृतीया की वृद्धि होने पर यदि दूसरे दिन तृतीया एक मुहूर्त्त भी हो, तब पहिली षष्ठि-घटिकात्मक (६० घड़ी) शुद्धा तृतीया को भी छोड़कर दूसरे दिन ही यह व्रत करना चाहिए, क्योंकि गौरी तृतीया का श्रीगणेश की तिथि (अर्थात् चतुर्थी-तिथि) से सम्पर्क का माहात्म्य है–

'मुहूर्त मात्र सत्त्वेऽपि दिने गौरीव्रत परे।
शुद्धाधिकायामप्येवं गणयोगप्रशंसनात्।। *(निर्णयसिन्धुः)*

वि. संवत् 2076 में माघ शुक्ल तृतीया 27 जनवरी, 2020 ई. को षष्ठि-घटिकात्मक (६० घड़ी) है तथा 28 जनवरी को केवल प्रातः 8घं.-22मिं. (२ घड़ी १८ पल) तक चतुर्थी-युक्ता है। **अतः उपरोक्त शास्त्रवचनानुसार तृतीया तिथि 28 जनवरी, 2020 ई. को त्रि-मुहूर्त्त-व्यापिनी से कम होने पर भी चतुर्थी-युता ही ग्रहण की जाएगी।**

(26) वारुणी/महावारुणी योग

चैत्र कृष्ण त्रयोदशी को शतभिषा नक्षत्र से सम्पर्क होने पर **'वारुणी योग'** बनता है। इसी प्रकार त्रयोदशी, शतभिषा और शनिवार का संयोग होने पर **'महावारुणी'** तथा शुभ योग, शतभिषा नक्षत्र एवं शनिवार का संयोग होने पर **'महामहावारुणी'** योग बनता है। शास्त्रों में इस योग का विशेष माहात्म्य माना गया है। इस दिन हरिद्वार, काशी आदि तीर्थों पर गंगास्नान एवं दानादि का फल सौ-सूर्यग्रहणों के तुल्य माना गया है-

'वारुणेन समायुक्ता मधौ कृष्ण-त्रयोदशी।
गंगायां यदि लभ्येत सूर्यग्रहशतैः समा।।
शनिवार-समायुक्ता सा महावारुणी स्मृता।
गंगायां यदि लभ्येत कोटिसूर्यग्रहैः समा।।
शुभयोग-समायुक्ता शनौ शतभिषा यदि।
महामहेति विख्याता त्रिकोटि-कुलमुद्धरेत्।।' *-स्कन्दपुराण*

ब्रह्माण्ड-पुराण में भी इस योग को महाशुभदायक तथा गंगास्नान (काशी, प्रयाग, हरिद्वार आदि तीर्थों में स्नान-दानादि) को सूर्यग्रहण के समान माना है-

चैत्रासिते वारुणऋक्षयुक्ता त्रयोदशी सूर्यसुतस्य वारे।
योगे शुभे सा महती महत्या गङ्गाजलेऽर्कग्रहकोटितुल्या।।

इस वर्ष (वि. संवत् 2076 में) चैत्र कृष्ण पक्ष (**21 मार्च, 2020 ई.**) में त्रयोदशी, **शनिवार** तथा शतभिषा नक्षत्र का सम्पर्क (योग) रात्रि 19घं.-40मिं. बाद होने से **'महावारुणी योग'** बना है। यद्यपि यह योग दिन के समय (सूर्यास्त से पूर्व) ही विशेष पुण्यदायक होता है, परन्तु गंगाजल मिश्रित जल से स्नान तथा दानादि का माहात्म्य सूर्यग्रहण के समान ही रहेगा। श्रद्धालु एवं धार्मिक जन इस पुण्य-समय का लाभ उठाएं।

इसी प्रकार, आगामी दिन **22 मार्च, 2020 ई., रविवार** को त्रयोदशी तिथि एवं शतभिषा का योग प्रातः 10घं.-08मिं. तक रहेगा। अतः श्रद्धालु जनों को इस योग में हरिद्वार, काशी अथवा किसी अन्य तीर्थ में स्नान, दान कर इस महाशुभदायक योग में पुण्य अर्जित करना चाहिए।

● सोमवती, भौमवासरी आदि अमावस्या का माहात्म्य ●

सोमवार से युक्त अमावस्या का शास्त्रों में विशेष माहात्म्य कहा गया है। स्कन्द पुराण के अनुसार सोमवार और अमावस्या का योग कभी-कभी होता है। इस दिन भगवान शिव के दर्शन करके पूजन आदि करने का विशेष महत्त्व होता है। विशेषकर सोमेश्वर महादेव की पूजार्चना करने से कोटि (करोड़ों) यज्ञों का फल प्राप्त होता है-

अमासोमेन संयुक्ता कदाचिद् यदि लभ्यते। तस्यां सोमेश्वरं दृष्ट्वा कोटियज्ञफलं लभेत्।।

सोमवती अमावस्या को तीर्थ स्थान, जप, पाठ एवं ब्राह्मणों को भोजन, वस्त्र, दक्षिणादि सहित दान करना विशेष पुण्यप्रद माना गया है।

पुरुषार्थ चिन्तामणि के अनुसार, यदि अमावस्या सोमवार या मंगलवार अथवा गुरुवार को हो तो उस योग के पर्व को **पुष्कर योग** कहते हैं। इन योगों का फल सूर्यग्रहणों में किए हुए दान-पुण्य से सौ गुणा अधिक होता है-

अमा सोमे तथा भौमे गुरुवारे यदा भवेत्। तत्पर्व पुष्करं नाम सूर्यपर्वशताधिकम्।।

स्नानदान आदि पुण्य कर्मों में मंगलवारी अमावस्या भी सोमवती अमावस्या के समान मनानी चाहिए। यदि मंगलवारी अमावस्या हो तो गंगा के स्नानमात्र से सहस्र गौओं के दान का फल प्राप्त होता है-

स्नानदानादौ भौमवती अपि सोमवती समा ज्ञेया। अमावस्या भवेद्वारे यदा भूमिसुतस्य वै।
जाह्नवी स्नान-मात्रेण गोसहस्रफलं लभेत्। -हेमाद्रौ शातातप

सोमवार से युक्त अमावस्या हो तो वहाँ अनन्त फल देने वाली और पितृगणों को दिया हुआ श्राद्ध अक्षय होता है-

सोमवारेण संयुक्ता अमावस्या यदा भवेत्। तत्रानन्तफलं श्राद्धं पितृणां दत्तभक्षयम्।।

सोमवती एवं मंगलवारी अमावस्या के विशिष्ट योग में पितृदोष शान्ति, सम्पदा सम्बन्धी परेशानियां, लड़के/लड़की के विवाह में विलम्ब, सन्तान एवं क्लिष्ट रोगों की शान्ति तथा आध्यात्मिक क्षेत्र में आत्म शुद्धि, स्नानदान, जप-पाठ आदि का विशेष माहात्म्य होता है। इस दिन व्रत धारण करके भगवान श्री विष्णु एवं शिवपूजन, चन्द्रपूजन तथा पीपल वृक्ष की गंगाजल युक्त दुग्ध, पुष्पाक्षत, एवं पुष्प-फल-मिष्ठान से धूप-दीप आदि से पूजन करके 108 प्रदक्षिणा के उपरान्त ब्राह्मणों को दक्षिणा सहित भोजन, वस्त्र, फलों का दान करने का विशेष माहात्म्य होता है।

वर्ष 2019-20 ई. में प्रमुख अमावस्याएँ

पौष (शनैश्चरी)	**5 जन. शनि**	**आश्विन (भौमवती)**	**2 जुला. मंग.**
माघ (मौनी) सोमवती	**4 फर. चंद्र**	**आश्विन (शनैश्चरी)**	**28 सितं. शनि**
वैशाख (शनैश्चरी)	**4 मई शनि**	**कार्तिक (सोमवती)**	**28 अक्तू. चंद्र**
ज्येष्ठ (सोमवती)	**3 जून चंद्र**	**मार्गशीर्ष (भौमवती)**	**26 नवं. मंग.**
आषाढ़ (भौमवती)	**2 जुला. मंग.**	**चैत्र (भौमवती)**	**24 मार्च (2020 ई.)**

परिलेख-

विस्तृत 'ग्रहण-विवरण' (वि. संवत् २०७६)

परिलेख–
–पं. विवेक शर्मा

वि. संवत् २०७६ (सन् 2019–20 ई.) में पृथ्वी (भूलोक) पर तीन ग्रहण घटित होंगे–

(1) खग्रास सूर्यग्रहण (2/3 जुलाई, 2019 ई., मंग./बुध)

(2) खण्डग्रास चन्द्रग्रहण (16/17 जुलाई, 2019 ई., मंग./बुध)

(3) कंकण सूर्यग्रहण (26 दिसम्बर, 2019 ई., बृहस्पतिवार)

भारत में (2) नं. वाला खण्डग्रास चन्द्रग्रहण (16/17 जुलाई, 2019 ई.) तथा (3) नं. वाला कंकण सूर्यग्रहण (26 दिसम्बर, 2019 ई.) दिखाई देंगे। (1) नं. वाला खग्रास सूर्यग्रहण भारत में दिखाई नहीं देगा।

इसके अतिरिक्त, (*i*) 11 नवम्बर, 2019 ई. को भूलोक पर अद्‌भुत आकाशीय दृश्य 'सूर्य-बुध संक्रमण' भी दिखाई देगा। (देखें पृष्ठ 134) परन्तु भारत में यह दिखाई नहीं देगा तथा (*ii*) 10/11 जनवरी, 2020 ई. को चन्द्रमा का 'उपच्छाया ग्रहण' भी दृश्य होगा। यह भारत में दिखाई देगा। इन दोनों आकाशीय घटनाक्रमों का विवरण अलग से आगे दिया गया है।

❐ भारत में अदृश्य (दिखाई न देने वाले) ग्रहणों का संक्षिप्त विवरण ❐

(1) खग्रास सूर्यग्रहण (2/3 जुलाई, 2019 ई., मंग./बुधवार)–

यह ग्रहण आषाढ़ अमावस, मंगलवार को 2 जुलाई, 2019 ई. के दिन भा.स्टैं.टा. अनुसार रात्रि 22घं.-25मिं. से 27घं.-21मिं. के मध्य भूगोल पर दिखाई देगा। यह खग्रास सूर्यग्रहण उत्तरी अमरीका के सुदूर दक्षिणी भागों, समस्त दक्षिणी अमरीका (ब्राज़ील, अर्जन्टीना, चिली, कोलम्बिया, पेरू आदि) तथा प्रशान्त महासागर में दिखाई देगा। **भारत में यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा।**

	घं. मिं.	
ग्रहण प्रारम्भ	22/25	(भा.स्टैं.टा.) 2/3 जुलाई, 2019 ई.
खग्रास प्रारम्भ	23/32	
ग्रहण मध्य (परमग्रास)	24/53	
खग्रास समाप्त	26/14	
ग्रहण समाप्त	27/21	

❐ भारत में दृश्य ग्रहणों का विस्तृत विवरण ❐

(1) खण्डग्रास चन्द्रग्रहण (16/17 जुलाई, आषाढ़ पूर्णिमा, मंग./बुधवार)–

यह ग्रहण आषाढ़ी पूर्णिमा, मंगलवार को 16 एवं 17 जुलाई, 2019 ई. की मध्यगत रात्रि को लगभग समस्त भारत में आरम्भ से समाप्ति तक खण्डग्रास के रूप में दिखाई देगा। इस ग्रहण का स्पर्श-मोक्ष आदि काल (भा.स्टैं.टा.) इस प्रकार होगा–
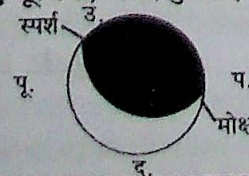
	घं. मिं.	
ग्रहण स्पर्श	25/31	(भा.स्टैं.टा.) (16/17 जुलाई, 2019 ई.)
ग्रहण मध्य	03/01	
ग्रहण समाप्त	04/30	

ग्रहण की अवधि = 2घं.-59मिं. (**पर्वकाल**) ; परमग्रासमान = 0.658 (65%)

(चन्द्र मालिन्य शुरु = 24घं.-12मिं.) (चन्द्र क्रान्ति निर्मल = 05घं.-49मिं.)

इस ग्रहण में चन्द्रबिम्ब दक्षिण-पश्चिम की ओर से ग्रस्त दिखाई देगा।

भारत में जब 16 जुलाई, 2019 ई. की रात्रि 1 बजकर 31 मिनट पर (25/31) यह चन्द्रग्रहण शुरु होगा, उस समय तक सम्पूर्ण भारतवर्ष में चन्द्र-उदय हो चुका होगा। भारत के सभी नगरों/क्षेत्रों में 16 जुलाई को सायं 6-00 (घं./मिं.) से सायं 7/45 बजे तक चन्द्र-उदय हो जाएगा तथा यह खण्डग्रास चन्द्रग्रहण 16 जुलाई की रात्रि 25घं.-31मिं. से प्रारम्भ होकर 17 जुलाई की प्रात: 4 बजकर, 30 मिनट पर समाप्त (मोक्ष) होगा। भारत के सभी नगरों में इसका प्रारम्भ, मध्य तथा मोक्ष रूप देखा जा सकेगा।

भारत के सुदूर पूर्वी क्षेत्रों (अरुणांचल प्रदेश, आसाम, मेघालय, नागालैण्ड, मिज़ोरम, त्रिपुरा) में इस खण्डग्रास चन्द्रग्रहण की चन्द्र क्रान्ति निर्मल होने से पूर्व ही अर्थात् 4-30 से 5-49 (घं./मिं.) के मध्य चन्द्र अस्त हो जाएगा। अरुणांचल प्रदेश, आसाम के सुदूर पूर्वी सीमावर्ती नगरों में 17 जुलाई की प्रात: 04-30 से 3-4 मिनट पहिले ही चन्द्रास्त होगा। अतएव वहाँ यह ग्रहण ग्रस्तास्त हो जाएगा।

भारत के अतिरिक्त दिखाई देने वाले क्षेत्र

भारत के अतिरिक्त यह ग्रहण अधिकतर यूरोप (नार्वे, स्वीडन, फिनलैण्ड के उत्तरी क्षेत्रों को छोड़कर), उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों (जापान) को छोड़कर सम्पूर्ण एशिया, दक्षिणी अमरीका के अधिकतर क्षेत्रों में दिखाई देगा। यहाँ इस ग्रहण के सभी घटनाक्रम (आरम्भ-मध्य-समाप्ति) दिखाई देंगे।

पूर्वी आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैण्ड के कुछ पूर्वी क्षेत्रों, दक्षिणी कोरिया, उत्तरी कोरिया, उत्तर-पूर्वी चीन तथा रुस के कुछ क्षेत्रों में इस ग्रहण का आरम्भ चन्द्रास्त के समय दिखाई देगा।

जबकि दक्षिणी अमरीका (अर्जण्टीना, चिल्ली, पश्चिमी ब्राज़ील, पेरू तथा बोल्वीया) में चन्द्रोदय के समय ही इस ग्रहण की समाप्ति का दृश्य देखा जा सकेगा। देखें विश्व परिदृश्य पृष्ठ–

ग्रहण का पर्वकाल–ग्रहण प्रारम्भ से ग्रहण-समाप्ति का समय पर्वकाल माना जाएगा। अर्थात् 25घं.-31मिं. से 28घं.-30मिं. तक।

ग्रहण का सूतक—इस ग्रहण का सूतक 16 जुलाई, 2019 ई. की सायं 4 बजकर 31 मिनट (16/31) (भा.स्टैं.टा.) पर प्रारम्भ हो जाएगा।

ग्रहण—काल तथा बाद में क्या करें ?

ग्रहण के सूतक एवं ग्रहणकाल में स्नान, दान, जप-पाठ, मन्त्र-स्तोत्र पाठ, मन्त्र सिद्धि, तीर्थस्थान, ध्यान, हवनादि शुभ कृत्यों का सम्पादन करना कल्याणकारी होता है। धार्मिक लोगों को ग्रहणकाल अथवा 16 जुलाई से सूर्यास्त से पहिले (अथवा सूतक से पहिले) ही अपनी राश्यानुसार अन्न, जल, चावल, सफेद वस्त्र, फलों आदि अथवा ब्राह्मण परामर्शानुसार दान योग्य वस्तुओं का संग्रह करके संकल्प कर लेना चाहिए तथा अगले दिन 17 जुलाई, 2019 ई. को प्रातः सूर्योदय के समय पुनः स्नान करके संकल्पपूर्वक योग्य ब्राह्मण को दान देना चाहिए।

पुत्रजन्मनि यज्ञे च तथा सङ्क्रमणे रवेः।
राहोश्च दर्शने कार्य प्रशस्तं नान्यथा निशि।। (वसिष्ठ)

अर्थात् पुत्र की उत्पत्ति, यज्ञ, सूर्य संक्रान्ति और सूर्य-चन्द्र ग्रहण में रात में भी स्नान करना चाहिए।

सूतक एवं ग्रहण-काल में मूर्त्ति स्पर्श करना, अनावश्यक खाना-पीना, मैथुन, निद्रा, तैलाभ्यंग वर्जित है। झूट, कपटादि, वृथा अलाप, मूत्र-पुरीषोत्सर्ग, नाखुन काटने आदि से परहेज करना चाहिए। वृद्ध, रोगी, बालक एवं गर्भवती स्त्रियों को यथानुकूल भोजन या दवाई आदि लेने में कोई दोष नहीं। गर्भवती महिलाओं को ग्रहणकाल में सब्ज़ी काटना, शयन करना, पापड़ सेंकना आदि उत्तेजित कार्यों से परहेज करना चाहिए तथा धार्मिक ग्रन्थ का पाठ करते हुए प्रसन्नचित रहे। इससे भावी सन्तति स्वस्थ एवं सद्गुणी होती है। हरिद्वार, प्रयाग, वाराणसी आदि तीर्थों पर स्नानादि का विशेष माहात्म्य होगा।

ग्रहण/सूतक से पहिले ही दूध/दही, आचार, चटनी, मुरब्बा आदि में कुशातृण रख देना श्रेयस्कर होता है। इससे ये दूषित नहीं होते। सूखे खाद्य-पदार्थों में कुशा डालने की आवश्यकता नहीं।

रोग-शान्ति के लिए ग्रहणकाल में '**श्रीमहामृत्युञ्जय मन्त्र**' का जप करना शुभ होता है।

विशेष प्रयोग—चाँदी/कांसे की कटोरी में घी भरकर उसमें चाँदी का सिक्का (मन्त्रपूर्वक) डालकर अपना मुँह देखकर छायापात्र मन्त्र पढ़ें तथा ग्रहण समाप्ति पर वस्त्र, फल व दक्षिणा सहित ब्राह्मण को दान करने से क्लिष्ट रोग से निवृत्ति होती है।

ग्रहण का लोकभविष्य एवं प्रभाव

***(i)* ग्रहण का मासफल**—ग्रहण आषाढ़ मास में होने से नदियों, तालाबों में जल का प्रवाह कम रहे तथा वर्षा की कमी अनुभव हो। अफगानिस्तान (कन्धार), काश्मीर, चीन आदि क्षेत्रों में राजनीतिक उथल-पुथल तथा प्राकृतिक प्रकोपों से व्यापक जन-धन हानि तथा सर्वत्र खण्डवर्षा के योग बनेंगे।

***(ii)* वार एवं नक्षत्रफलम्**—ग्रहण मंगलवार तथा उ.षा. नक्षत्रकालीन घटित होने से दुर्भिक्ष (अकाल) का भय रहे। सत्य का आचरण करने वालों, सुशील, धनाढ्य, बिल्डर्ज़, किसानों को पीड़ा रहे।

***(iii)* ग्रहण राशिस्थ फल**—यह खण्ड ग्रहण धनु एवं मकर राशिस्थ घटित होने से पंजाब राज्य में उथल-पुथल, व्यापारियों, वैद्यों, मन्त्रियों, दक्षिण प्रदेशों के लोगों को पीड़ा हो।

ग्रहण का राशियों पर प्रभाव—यह ग्रहण उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के प्रथम चरण में स्पर्श करके उ.षा. नक्षत्र के द्वितीय चरण में समाप्त होगा। इसलिए धनु एवं मकर राशि में उत्पन्न जातकों को विशेष रूप से चन्द्र-राहु तथा राशिस्वामी गुरु व शनि का जप, दान करना कल्याणकारी रहेगा। जन्म या नाम राशि आधारित बारह राशि वालों के लिए इस ग्रहण का फल इस प्रकार होगा—

जन्म/नाम राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
फल	रोग शरीर कष्ट	चिन्ता सन्तान कष्ट	शत्रुभय, साधारण लाभ, खर्च	स्त्री/पति सम्बन्धी परेशानी	रोग, गुप्त चिन्ता, संघर्ष	खर्च अधिक, कार्यों में विलम्ब	कार्य सिद्धि, लाभ	धन लाभ, खर्च अधिक	धन हानि, चोट व्यर्थ यात्रा	चोट, शरीर कष्ट	धन हानि	धन लाभ, उन्नति

खण्डग्रास चन्द्रग्रहण (16/17 जुलाई, 2019 ई.)

विश्व परिदृश्य

(अर्थात् यह चन्द्रग्रहण भूगोल पर कहाँ-कहाँ ग्रस्तोदय, कहाँ ग्रस्तास्त, कहाँ सर्वथा अदृश्य और सम्पूर्ण काल के लिए दृश्य होगा।)
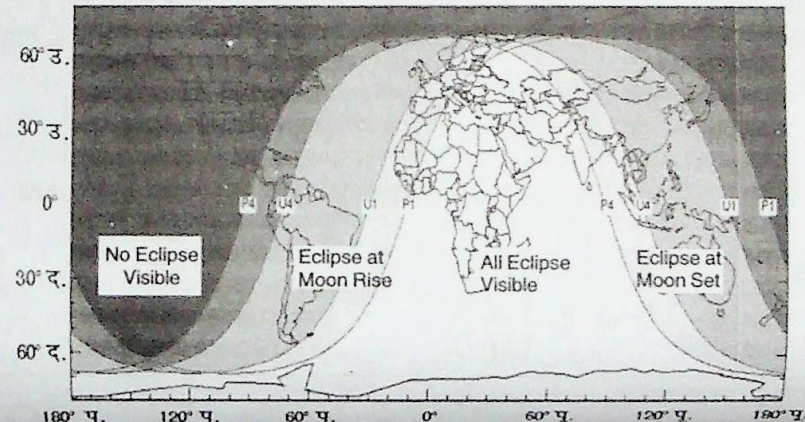
(2) कंकण सूर्यग्रहण (26 दिसम्बर, पौष अमावस, बृहस्पतिवार)–

यह सूर्यग्रहण 26 दिसम्बर, 2019 ई. की **प्रातः 8 बजे से लगभग 1½ बजे (13-30) दोपहर बाद तक भारत में** सर्वत्र दिखाई देगा। इस ग्रहण की कंकण-आकृति केरल तथा तामिलनाडू व कर्नाटक के दक्षिण-भागों में ही दिखाई देगी। **शेष सारे भारत में यह खण्डग्रास रूप में ही दिखाई देगा।**

पृथ्वी पर इस कंकण ग्रहण का समय इस प्रकार रहेगा–

	भा.स्टैं.टा.	
ग्रहण प्रारम्भ	8–00	26 दिसंबर, 2019 ई.
कंकण प्रारम्भ	9–06	
परमग्रास	10–48	
कंकण समाप्त	12–29	
ग्रहण समाप्त	13–36	

ग्रहण का ग्रासमान =0.96, ग्रहण की अवधि = 5घं.-36मिं.

कंकण की कुल अवधि = 3मिं.-34सें.

भारत के प्रत्येक नगर/ग्राम में इसे खण्डग्रास रूप में देखा जा सकेगा। **ग्रहण चित्र (1)** में भारत के विभिन्न स्थलों पर इस ग्रहण का परमग्राससमान (प्रतिशत) दर्शाने वाली रेखाएं दी गई हैं। इससे आप अपने नगर के अक्षांश-रेखांश द्वारा इस चित्र में नगर का स्थान अंकित कर उस नगर में इस ग्रहण का मध्यकालीन परमग्राससमान जान सकते हैं। इसी चित्र नं. 1 में **'क-ख'** और **'च-छ'** रेखाओं के मध्य एक धुंधला क्षेत्र (पट्टी) दिखाया गया है। इस पट्टी के मध्य स्थित केरल, तामिलनाडू तथा कर्नाटक के दक्षिणी भाग, श्रीलंका के उत्तरी भागों में इस ग्रहण की कंकण आकृति दिखाई देगी। **ग्रहण चित्र (4)** में कंकण ग्रहण के इस मार्ग को अधिक स्पष्टता के लिए बड़ा बनाकर दिखाया गया है। इस पट्टी के मध्य से गुजरने वाली **'A-B'** रेखा रेखा पर स्थित नगरों में ग्रहण की कंकण आकृति अधिक देर तक रहेगी और वहाँ ग्रहणमध्य (परमग्रास) के समय चन्द्रबिम्ब का केन्द्र सूर्यबिम्ब के बिल्कुल लगभग केन्द्र पर होगा। जिससे उस समय सूर्य बिम्ब का चमकदार भाग चारों ओर से समान रूप से दृश्यमान होगा।

ग्रहण चित्र (2) में इस ग्रहण की **स्पर्श रेखाएं** तथा **ग्रहण चित्र (3)** में **मोक्ष रेखाएं** दी गई हैं। इन दोनों चित्रों से आप अपनें अभीष्ट नगर के अक्षांश-रेखांश अनुसार उस नगर में इस ग्रहण का स्पर्श एवं मोक्षकाल जान सकते हैं। आगे पृष्ठ 30 पर भारत के प्रसिद्ध लगभग **200** से भी अधिक नगरों में इस ग्रहण का स्पर्श, मोक्षकाल तथा ग्रहणमध्य (अर्थात् परमग्रास) दिया गया है। इस परमग्रास के समय ग्रसित हुए सूर्य का प्रतिशत (परमग्रास) भी दिया गया है। केरल तथा तामिलनाडू-कर्नाटक के दक्षिणी भागों से गुज़रने वाली कंकणमार्ग-पट्टी के आसपास स्थित प्रसिद्ध नगरों में कंकण-ग्रहण का प्रारम्भ व समाप्तिकाल भी दिया गया है।

ग्रहण का ग्रासमान–क्योंकि भारत में यह कंकण सूर्यग्रहण खण्डग्रास रूप में दिखाई देगा। ग्रहण चित्र (1) व (4) के अनुसार दक्षिणी भारत में ही इस ग्रहण की सम्पूर्ण कंकणकृति दिखाई देगी। ज्यों-ज्यों हम उत्तर-भारत की ओर बढ़ते जाएंगे, ग्रहण का ग्रासमान अर्थात् परमग्रास उतना ही कम होता जाएगा। डिब्रूगढ़ (आसाम) में सबसे कम ग्रासमान लगभग 28% रहेगा। पट्टी के निकटस्थ स्थल मदुराई में सबसे अधिक लगभग 93.1% प्रतिशत रहेगा।

ग्रहण का सूतक–इस ग्रहण का सूतक 25 दिसम्बर, 2019 ई. की रात्रि 8 बजे (भा.स्टैं.टा.) से प्रारम्भ हो जाएगा।

ग्रहण के समय क्या करें–क्या न करें ?

जब ग्रहण का प्रारम्भ हो, तो स्नान-जप, मध्यकाल में होम, देवपूजा और ग्रहण का मोक्ष समीप होने पर दान तथा पूर्ण मोक्ष होने पर स्नान करना चाहिए।

स्पर्शे स्नानं जपं कुर्यान्मध्ये होमं सुराचर्नम्।
मुच्यमाने सदा दानं विमुक्तौ स्नानमाचरेत्।। (ज्ये. नि.)

सूर्य ग्रहणकाल में भगवान् सूर्य की पूजा, आदित्य हृदय स्तोत्र, सूर्याष्टक स्तोत्र आदि सूर्य-स्तोत्रों का पाठ करना चाहिए। पका हुआ अन्न, कटी हुई सब्जी ग्रहणकाल में दूषित हो जाते हैं, उन्हें नहीं रखना चाहिए। परन्तु तेल, घी, दूध, दही, लस्सी, मक्खन, पनीर, आचार, चटनी, मुरब्बा आदि में तिल या कुशातृण रख देने से ये ग्रहणकाल में दूषित नहीं होते। सूखे खाद्य पदार्थों में तिल या कुशा डालने की आवश्यकता नहीं। (मन्वर्थ मुक्तावली)

यथा–**अन्नं पक्वमिह त्याज्यं स्नानं सवसनं ग्रहे।**
वारितक्रारनालादि तिलैदंभौर्न दुष्यते।।

ध्यान रहे, ग्रस्त सूर्य बिम्ब को नंगी आँखों से कदापि न देखें। वैल्डिंग वाले काले ग्लास में से इसे देख सकते हैं। ग्रहण के समय तथा ग्रहण की समाप्ति पर गर्म पानी से स्नान करना निषिद्ध है।–**न स्नायादुष्णतोयेन नास्पृशं स्पर्शयेत्तथा।।** रोगी, वृद्ध गर्भवती

स्त्रियों, बालकों के लिए निषेध नहीं है। ग्रहणकाल में सोना, खाना-पीना, तैलमर्दन, मैथुन, मूत्र-पुरीषोत्सर्ग निषिद्ध है। नाखुन भी नहीं काटने चाहिए।

ग्रहण का राशिफल—यह ग्रहण मूल नक्षत्र तथा धनु राशि में होगा। अतएव इस राशि/नक्षत्र में उत्पन्न लोगों के लिए यह विशेष अशुभ है। अतः इस राशि वालों को ग्रहण-दान, पाठ, आदित्यहृदय स्तोत्र, सूर्याष्टक स्तोत्रों का पाठ विशेष रूप से करना चाहिए। स्मृतिनिर्णय में कहा है कि सूर्यग्रहण में सूर्य का जप व दान और चन्द्रग्रहण में चन्द्र तथा राहु का जप व दान करना चाहिए। विभिन्न राशि वाले जातकों के लिए इस ग्रहण का फल इस प्रकार होगा-

जन्म/नाम राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
फल	चिन्ता सन्तान को कष्ट	शत्रु भय, साधारण लाभ	स्त्री/पति कष्ट	रोग, गुप्त चिन्ता	खर्च अधिक, कार्य विलम्ब	कार्य सिद्धि	धन लाभ	धन हानि	दुर्घटना, चोटभय चिन्ता	धन हानि	लाभ उन्नति	रोग, कष्ट भय

सूर्यग्रहण एवं लोकभविष्य—यह सूर्यग्रहण पौष अमावस्या, बृहस्पतिवार को मूल नक्षत्र, धनु राशि तथा वृद्धि योगकालीन घटित हो रहा है। ब्राह्मणों तथा क्षत्रियों के लिए शुभ नहीं है। पाकिस्तान के सिन्ध आदि प्रदेशों में उपद्रव आतंकी घटनाओं में विशेष वृद्धि होगी। काश्मीर, चीन, पाकिस्तान, अफगानिस्तान तथा मुस्लिम राष्ट्रों में विशेष राजनीतिक उथल-पुथल के संकेत हैं। विश्व में वर्षा की कमी तथा दुर्भिक्ष, अर्थात् अकालजन्य परिस्थितियां बनेंगी। रुई, घी, हल्दी के भावों में शीघ्र ही विशेष वृद्धि होगी। फलों के व्यापारियों, डॉक्टरों, वैद्यों तथा दवा से सम्बन्धित कार्य करने वालों को कष्ट, पीड़ा पहुँचे।

कंकण सूर्यग्रहण (26 दिसम्बर, 2019 ई.)

[कुछ प्रसिद्ध नगरों में कंकणग्रहण की प्रारम्भ/समाप्ति जहाँ कंकण पूर्ण रूपेण दिखाई देगा।]

नगर	ग्रहण प्रारम्भ			कंकण आरम्भ			कंकण समाप्त			ग्रहण समाप्त			कंकण अवधि		परम ग्रास
	घं.	मिं.	सैं.	घं.	मिं.	सैं.	घं.	मिं.	सैं.	घं.	मिं.	सैं.	मिं.	सैं.	%
Cannanore	8	05	00	9	24	48	9	27	47	11	05	15	2	59	98
Kozikode	8	05	23	9	26	30	9	27	58	11	06	54	1	28	97
Madurai	8	07	28	9	31	29	9	32	07	11	14	40	0	38	97
Mangalore	8	04	22	9	24	17	9	26	18	11	03	30	2	01	97
Trichur	8	06	00	9	28	18	9	28	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कंकण सूर्यग्रहण–26 दिसम्बर, 2019 ई.

(कंकण ग्रहणमार्ग एवं परमग्रास रेखाएं)
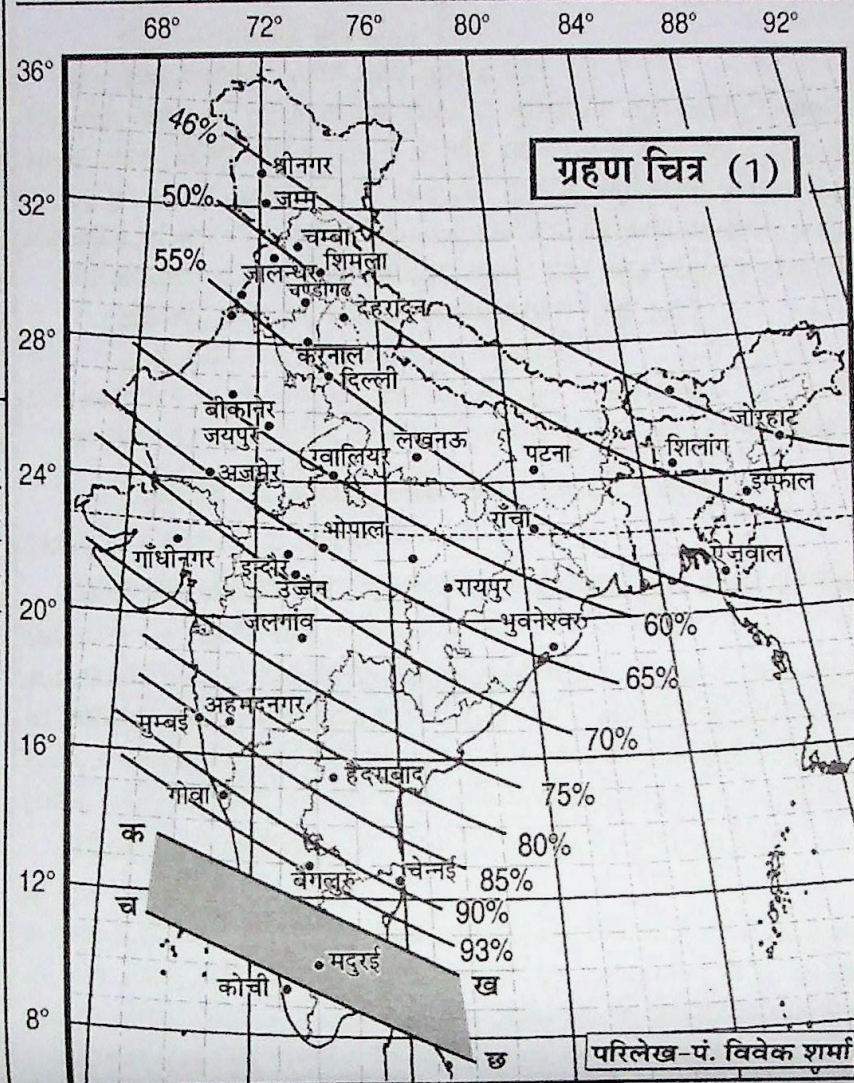
कंकण सूर्यग्रहण–26 दिसंबर, 2019 ई.
[स्पर्श रेखाएं (भा. स्टैं.टा.)]
ग्रहण चित्र (2)
68° 72° 76° 80° 84° 88° 92°
36° 32° 28° 24° 20° 16° 12° 8°
श्रीनगर
जम्मू
चम्बा
शिमला
जालन्धर
चण्डीगढ़
देहरादून
करनाल
दिल्ली
बीकानेर
जयपुर
अजमेर
ग्वालियर
लखनऊ
पटना
कोडरमा
जोरहाट
शिलांग
इटानगर
इम्फाल
भुज
राजकोट
इन्दौर
उज्जैन
भोपाल
राँची
आइजोल
रायपुर
जलगांव
भुवनेश्वर
मुम्बई
अहमदनगर
हैदराबाद
सोलापुर
गोवा
बीजापुर
विजयवाड़ा
मंगलोर
बैंगलूरु
चेन्नई
कोझीकोड
मदुरई
कोची
स्पर्श रेखा 8/05
स्पर्श रेखा 8/10
स्पर्श रेखा 8/15
स्पर्श रेखा 8/20
स्पर्श रेखा 8/25
स्पर्श रेखा 8/30
स्पर्श रेखा 8/35
स्पर्श रेखा 8/40
स्पर्श रेखा 8/45
परिलेख-पं. विवेक शर्मा
कंकण सूर्यग्रहण–26 दिसम्बर, 2019 ई.
[मोक्ष–रेखाएँ (भा.स्टैं.टा.) (समाप्ति)]
ग्रहण चित्र (3)
68° 72° 76° 80° 84° 88° 92°
36° 32° 28° 24° 20° 16° 12° 8°
श्रीनगर
जम्मू
चम्बा
शिमला
जालन्धर
चण्डीगढ़
देहरादून
करनाल
दिल्ली
बीकानेर
जयपुर
अजमेर
ग्वालियर
लखनऊ
पटना
शिलांग
जोरहाट
इम्फाल
भुज
राजकोट
इन्दौर
उज्जैन
भोपाल
राँची
आइजोल
रायपुर
जलगांव
भुवनेश्वर
मुम्बई
हैदराबाद
गोवा
बीजापुर
मंगलोर
बैंगलूरु
चेन्नई
कोझीकोड
मदुरई
कोची
मोक्ष रेखा 10/45
मोक्ष रेखा 10/50
मोक्ष रेखा 10/55
मोक्ष रेखा 11/00
मोक्ष रेखा 11/05
मोक्ष रेखा 11/10
मोक्ष रेखा 11/15
मोक्ष रेखा 11/20
मोक्ष रेखा 11/25
मोक्ष रेखा 11/30
मोक्ष रेखा 11/35
मोक्ष रेखा 11/40
मोक्ष रेखा 11/45
परिलेख-पं. विवेक शर्मा

कंकण सूर्यग्रहण (26 दिसम्बर, 2019 ई.)

[भारत के विभिन्न नगरों में ग्रहण का स्पर्श (प्रारम्भ), मध्य (परमग्रास) एवं मोक्ष (समाप्ति) काल (भा.स्टैं.टा.)] *सूर्यबिम्ब = 100

नगर	स्पर्श			मध्य			मोक्ष			परमग्रास*
	घं.	मिं.	सैं.	घं.	मिं.	सैं.	घं.	मिं.	सैं.	(प्रतिशत)
अगरतला	8	35	12	10	00	54	10	38	48	49.9
अजमेर	8	11	24	9	25	54	10	53	42	63.6
अनन्तनाग(का.)	8	22	34	9	30	53	10	49	00	46.8
अमरोहा(उ.प्र.)	8	18	59	9	33	02	10	59	17	53.3
अमृतसर	8	18	48	9	29	01	10	50	11	51.6
अमेठी(उ.प्र.)	8	19	56	9	38	07	11	09	52	55.4
अम्बाला	8	19	03	9	31	11	10	54	47	52.1
अयोध्या	8	21	29	9	39	09	11	09	58	53.4
अर्की(हि.प्र.)	8	20	29	9	31	50	10	54	15	50.2
अलवर	8	14	47	9	29	24	10	56	54	58.5
अलीगढ़	8	17	00	9	31	54	10	59	33	56.0
अल्मोड़ा	8	21	46	9	35	29	11	00	57	50.3
अहमदाबाद	8	06	23	9	22	05	10	51	59	74.3
अबोहर	8	15	34	9	27	05	10	50	10	55.7
आगरा	8	15	58	9	31	29	11	00	06	57.7
आजमगढ़	8	22	00	9	40	53	11	13	14	53.9
आबू(राज.)	8	07	41	9	22	38	10	51	22	70.3
आनन्दपुर सा.	8	20	03	9	31	12	10	53	21	50.5
इटावा(उ.प्र.)	8	16	45	9	33	05	11	02	43	57.4
इन्दौर	8	08	44	9	26	32	10	59	21	70.9
इम्फाल	8	43	00	10	09	06	11	45	24	45.8
ईटानगर	8	46	24	10	08	23	11	39	35	41.0
इलाहाबाद	8	19	06	9	37	48	11	10	18	57.0
उज्जैन	8	09	18	9	26	36	10	58	40	69.9
उदयपुर(राज.)	8	08	48	9	23	54	10	53	12	69.2
उन्नाव	8	18	32	9	35	42	11	06	17	56.1
ऊधमपुर(का.)	8	21	06	9	30	14	10	49	32	48.5
ऊना(हि.प्र.)	8	20	13	9	31	01	10	52	41	50.2
कटक	8	20	18	9	46	24	11	28	26	63.4
कटनी(म.प्र.)	8	15	06	9	34	41	11	09	05	62.4
कठुआ(का.)	8	20	37	9	30	23	10	50	38	49.3
कन्नौज(उ.प्र.)	8	18	25	9	34	52	11	04	28	55.6
कन्याकुमारी	8	07	47	9	31	29	11	13	41	91.0

नगर	स्पर्श			मध्य			मोक्ष			परमग्रास*
	घं.	मिं.	सैं.	घं.	मिं.	सैं.	घं.	मिं.	सैं.	(प्रतिशत)
कपूरथला	8	18	52	9	29	36	10	51	18	51.5
करनाल	8	18	16	9	31	05	10	55	42	53.3
करतारपुर	8	19	05	9	29	46	10	51	23	51.3
काँगड़ा	8	21	08	9	31	22	10	52	12	49.0
कांचीपुरम्	8	08	17	9	33	45	11	18	00	90.2
कानपुर	8	18	12	9	35	24	11	06	22	56.4
कालका	8	19	54	9	31	34	10	54	27	50.9
किश्तवाड़(का.)	8	22	38	9	31	28	10	50	17	47.0
कावारत्ती	8	04	05	9	23	05	10	59	11	91.9
कुराली(पं.)	8	19	27	9	31	01	10	53	49	51.3
कुरुक्षेत्र	8	18	28	9	30	57	10	55	06	52.9
कुल्लू	8	22	00	9	32	32	10	53	41	48.3
कुर्नूल(आ.प्र.)	8	07	18	9	30	06	11	10	30	85.0
कैथल	8	17	40	9	30	12	10	54	29	53.8
कोटखाई(हि.प्र.)	8	21	17	9	32	49	10	55	23	49.5
कोटा	8	11	05	9	27	16	10	57	24	65.0
कोलकाता	8	27	00	9	52	38	11	32	24	55.9
कोहिमा	8	45	17	10	10	00	11	44	17	43.5
कोचीन	8	06	06	9	28	31	11	09	00	94.1
खन्ना	8	18	46	9	30	23	10	53	17	52.1
खरड़	8	19	23	9	31	03	10	53	59	51.5
खुर्जा(हि.प्र.)	8	17	11	9	31	39	10	58	40	55.5
गंगटोक	8	34	36	9	54	11	11	25	05	45.2
गया	8	23	29	9	44	28	11	19	23	54.8
गाज़ियाबाद	8	17	16	9	31	12	10	57	28	55.1
गुड़गांव	8	16	31	9	30	30	10	56	56	56.0
गुरदासपुर	8	19	58	9	30	04	10	50	48	50.1
गुवाहाटी	8	39	29	10	02	05	11	35	34	44.8
गोईंदवाल (पं.)	8	18	30	9	29	11	10	50	50	51.9
गोरखपुर	8	23	20	9	41	34	11	12	50	52.2
गोराया	8	18	52	9	29	58	10	52	10	51.7
गाँधीनगर (गु.)	8	06	35	9	22	11	10	52	05	73.8
ग्वालियर	8	14	56	9	31	22	11	01	23	59.7

नगर	स्पर्श			मध्य			मोक्ष			परमग्रास*
	घं.	मिं.	सैं.	घं.	मिं.	सैं.	घं.	मिं.	सैं.	(प्रतिशत)
चण्डीगढ़	8	21	30	9	32	48	10	55	02	49.4
चम्बा(हि.प्र.)	8	21	45	9	31	27	10	51	29	48.2
चन्दौसी(उ.प्र.)	8	18	47	9	33	24	11	00	26	53.9
चमौली(उत्तरां)	8	22	34	9	35	20	10	59	27	49.0
चित्तौड़गढ़	8	09	38	9	25	26	10	55	10	67.2
चूरू (रा.)	8	13	55	9	27	17	10	53	06	58.8
चेन्नई	8	08	54	9	34	37	11	19	07	89.2
छतरपुर(उ.प्र.)	8	15	17	9	33	32	11	06	03	60.8
छपरा	8	24	18	9	44	15	11	17	35	52.7
छिन्दवाड़ा	8	11	30	9	31	37	11	07	21	68.4
जबलपुर(म.प्र.)	8	13	47	9	33	41	11	08	44	64.5
जम्मू	8	20	28	9	29	44	10	49	05	49.3
जयपुर	8	13	06	9	27	47	10	55	41	61.3
जलगांव(म.)	8	07	12	9	25	50	11	00	04	75.4
जामनगर(गु.)	8	04	03	9	18	38	10	47	17	79.2
जालन्धर	8	20	47	9	30	53	10	51	37	49.4
जोरहाट	8	47	09	10	10	14	11	42	16	41.2
जींद	8	16	48	9	29	45	10	54	42	55.0
जैसलमेर	8	08	26	9	21	09	10	46	33	67.3
जोधपुर	8	09	35	9	23	39	10	50	54	66.0
जोगिन्दरनगर	8	21	35	9	32	01	10	53	05	48.7
जैतों	8	16	49	9	28	16	10	51	08	54.2
झांसी	8	14	34	9	31	53	11	03	10	60.9
झुंझुनू	8	14	05	9	27	47	10	54	02	58.8
टोंक	8	12	10	9	27	35	10	56	29	62.7
टोहाना	8	16	52	9	29	20	10	53	35	54.6
डलहौज़ी	8	21	29	9	31	12	10	51	18	48.4
डूंगरपुर(रा.)	8	07	45	9	23	41	10	53	54	71.0
डोडा (का.)	8	22	05	9	31	03	10	50	04	47.5
डिब्रूगढ़	8	51	00	10	12	55	11	42	53	39.1
तिरुवन्तपुरम्	8	07	12	9	30	18	11	11	47	91.2
त्रिवेन्द्रम्	8	07	01	9	30	14	11	11	54	91.1
दरभंगा	8	27	04	9	47	08	11	20	07	50.6

नगर	स्पर्श	मध्य	मोक्ष	परमग्रास*	नगर	स्पर्श	मध्य	मोक्ष	परमग्रास*	नगर	स्पर्श	मध्य	मोक्ष	परमग्रास*

नगर	स्पर्श			मध्य			मोक्ष			परमग्रास*
	घं.	मिं.	सैं.	घं.	मिं.	सैं.	घं.	मिं.	सैं.	(प्रतिशत)
कन्याकुमारी	8	07	47	9	31	29	11	13	41	91.0
दार्जिलिंग	8	33	25	9	53	13	11	24	35	46.1
दिल्ली	8	16	59	9	30	49	10	56	57	55.5
देवबन्द	8	19	07	9	32	08	10	56	57	52.5
देवरिया	8	23	37	9	42	15	11	13	59	52.3
देवप्रयाग	8	21	06	9	33	56	10	58	17	50.4
देहरादून	8	20	49	9	33	05	10	56	49	50.7
द्वारिका	8	03	34	9	17	31	10	45	17	80.8
दुर्ग (छत्ती.)	8	13	41	9	35	59	11	14	23	67.5
धनबाद	8	24	49	9	47	58	11	25	17	55.2
धर्मशाला(हि.प्र.)	8	21	34	9	31	37	10	52	10	48.5
धूरी (पं.)	8	17	49	9	29	39	10	52	57	53.2
नवलगढ़(रा.)	8	13	38	9	27	29	10	54	01	59.5
नकोदर	8	18	31	9	29	32	10	51	38	52.0
नरवाना(ह.)	8	17	00	9	29	37	10	54	06	54.6
नवांशहर	8	19	20	9	30	30	10	52	46	51.3
नंगल (पं.)	8	20	05	9	31	03	10	52	58	50.4
नागपुर	8	11	11	9	31	52	11	08	35	70.4
नागौर(रा.)	8	11	08	9	24	51	10	51	26	63.1
नाभा (पं.)	8	18	15	9	30	07	10	53	25	52.8
नारनौल(ह.)	8	14	55	9	28	59	10	55	41	58.0
नालागढ़(हि.प्र.)	8	19	57	9	31	20	10	53	50	50.7
नाहन	8	19	56	9	31	59	10	55	24	51.1
नासिक	8	05	17	9	23	04	10	56	29	80.4
नीमच(म.प्र.)	8	09	22	9	25	32	10	55	51	68.0
नौशैहरा(जं.का.)	8	20	30	9	29	12	10	48	00	49.0
नैनीताल	8	21	05	9	34	59	11	00	46	51.1
पंचकूला	8	19	36	9	31	23	10	54	27	51.3
पटना	8	24	53	9	45	05	11	18	35	52.7
पटियाला	8	18	27	9	30	28	10	53	58	52.6
पठानकोट	8	20	42	9	30	36	10	51	01	49.3
पपराला(हि.प्र.)	8	21	28	9	31	46	10	52	40	48.7
पंजिम(गोआ)	8	04	17	9	24	00	11	00	23	90.2
पाण्डिचेरी	8	08	34	9	34	17	11	18	52	92.5
पानीपत	8	17	44	9	30	50	10	55	54	54.0
पालमपुर(हि.प्र.)	8	21	31	9	31	46	10	52	36	48.6
पिथौरागढ़	8	22	33	9	36	28	11	02	07	49.8
पुँछ(ज.का.)	8	21	29	9	29	30	10	47	16	47.7

नगर	स्पर्श			मध्य			मोक्ष			परमग्रास*
	घं.	मिं.	सैं.	घं.	मिं.	सैं.	घं.	मिं.	सैं.	(प्रतिशत)
ग्वालियर	8	14	56	9	31	22	11	01	22	59.7
पूना	8	04	40	9	23	06	10	57	35	84.0
पुरी	8	19	29	9	46	05	11	29	00	65.1
पोर्टब्लेअर	8	27	47	10	07	47	12	03	31	77.1
प्रतापगढ़(उ.प्र.)	8	19	46	9	38	20	11	10	36	55.9
फरीदकोट	8	16	58	9	28	12	10	50	44	53.9
फगवाड़ा	8	19	03	9	30	01	10	52	01	51.4
फर्रूखाबाद	8	18	20	9	34	17	11	03	12	55.3
फरीदाबाद	8	16	47	9	30	53	10	57	27	55.7
फतेहाबाद(ह.)	8	16	04	9	28	33	10	52	55	55.6
फाज़िल्का	8	15	48	9	27	04	10	49	46	55.3
फिरोज़पुर	8	17	15	9	28	14	10	50	24	53.4
बटाला	8	19	17	9	29	33	10	50	35	50.9
बंगा (पं.)	8	19	15	9	30	19	10	52	27	51.3
बलाचौर(पं.)	8	19	27	9	30	45	10	53	09	51.2
बरनाला(पं.)	8	17	28	9	29	11	10	50	22	53.6
बदायूं	8	18	36	9	33	45	11	01	33	54.4
बरेली(उ.प्र.)	8	19	29	9	34	25	11	01	50	53.4
बल्लभगढ़(ह.)	8	16	40	9	30	51	10	57	32	55.9
बासवाड़ा	8	08	03	9	24	34	10	55	35	70.9
बिजनौर	8	19	13	9	32	42	10	58	09	52.7
बिलासपुर (हि.प्र.)	8	20	30	9	31	36	10	53	40	50.1
बीकानेर	8	11	49	9	24	47	10	50	13	61.6
बैजनाथ(हि.प्र.)	8	21	31	9	31	52	10	52	48	48.7
बारामूला(का.)	8	22	17	9	30	00	10	47	20	46.9
बनिहाल(का.)	8	22	23	9	30	55	10	49	20	47.1
बुलन्दशहर	8	17	25	9	31	45	10	58	33	55.2
बैंगलूरू	8	06	30	9	29	48	11	11	12	93.0
भद्रवाह(का.)	8	21	56	9	31	07	10	50	26	47.8
भरतपुर	8	15	12	9	30	35	10	59	07	58.6
भिवानी	8	15	50	9	29	12	10	54	50	56.4
भागलपुर(बि.)	8	27	58	9	49	25	11	24	06	51.4
भुज (गुज.)	8	04	21	9	18	23	10	46	08	77.7
भुवनेश्वर	8	20	00	9	46	06	11	28	26	64.0
भोपाल	8	11	00	9	29	13	11	02	12	67.6
मथुरा	8	15	58	9	31	04	10	59	06	57.4
मण्डी(हि.प्र.)	8	21	25	9	32	10	10	53	40	49.0
मदुरै (ता.)	8	07	19	9	31	47	11	15	01	96.6

नगर	स्पर्श			मध्य			मोक्ष			परमग्रास*
	घं.	मिं.	सैं.	घं.	मिं.	सैं.	घं.	मिं.	सैं.	(प्रतिशत)
[illegible]	8	27	04	9	47	08	11	20	07	50.6
मन्दसौर	8	09	11	9	25	43	10	56	35	68.7
मंसूरी	8	20	50	9	33	12	10	56	58	50.4
महेन्द्रगढ़	8	15	10	9	28	59	10	55	18	57.5
मालेरकोटला	8	18	04	9	29	46	10	52	51	52.9
मुक्तसर	8	16	25	9	27	45	10	50	29	54.6
मुज़फ्फरनगर	8	26	11	9	45	53	11	18	35	51.2
मुम्बई	8	04	05	9	21	40	10	54	55	84.5
मुरादाबाद	8	19	22	9	33	36	11	00	03	53.0
मोहाली	8	19	23	9	31	07	10	54	09	51.5
मेरठ	8	18	04	9	31	47	10	57	41	54.1
मैसूर	8	05	52	9	28	23	11	09	00	95.9
मोगा	8	17	39	9	28	52	10	51	20	53.1
यमुनानगर	8	19	15	9	31	44	10	55	49	52.0
रतनगढ़(रा.)	8	13	14	9	26	39	10	52	36	59.8
रतलाम	8	08	36	9	25	35	10	57	15	70.5
राजकोट	8	04	24	9	19	29	10	48	49	78.6
रांची	8	22	17	9	45	06	11	22	29	57.6
रामपुरबुशैहर	8	21	52	9	33	04	10	55	08	48.8
रामेश्वरम्	8	08	32	9	34	21	11	19	16	96.6
रायपुर(छत्ती.)	8	14	24	9	36	47	11	15	12	66.9
रामबन(का.)	8	21	46	9	30	36	10	49	29	47.8
राजौरी(का.)	8	20	52	9	29	23	10	47	53	48.5
रामनगर(का.)	8	21	13	9	30	30	10	50	00	48.5
राजामुन्दरी(आंध्रा.)	8	12	23	9	38	12	11	21	47	76.3
रिवाड़ी(ह.)	8	15	42	9	29	46	10	56	23	57.0
रियासी(का.)	8	21	01	9	29	58	10	49	02	48.5
रोपड़	8	19	34	9	31	01	10	53	38	51.1
रोहतक	8	16	36	9	30	02	10	55	41	55.5
रूड़की	8	19	38	9	32	33	10	57	10	51.9
रोहड़ू (हि.प्र.)	8	21	36	9	33	06	10	55	35	49.2
लखनऊ	8	19	47	9	36	41	11	06	40	54.8
लाडवा(ह.)	8	18	46	9	31	19	10	55	32	52.6
लुधियाना	8	18	43	9	30	02	10	52	30	52.0
वाराणसी	8	20	54	9	40	22	11	13	40	55.8
वड़ोदरा	8	06	24	9	22	40	10	53	46	75.3
विजयवाड़ा	8	10	06	9	34	47	11	17	17	79.8
विशाखापट्नम्	8	13	55	9	40	15	11	24	12	73.3

नगर	स्पर्श			मध्य			मोक्ष			परमग्रास*
	घं.	मिं.	सैं.	घं.	मिं.	सैं.	घं.	मिं.	सैं.	(प्रतिशत)
शिमला	8	20	53	9	32	11	10	54	29	50.0
शाहाबाद(ह.)	8	18	50	9	31	09	10	55	03	52.4
शिलांग(मेघा)	8	39	17	10	03	00	11	37	49	45.7
शाहजहांपुर	8	19	31	9	35	07	11	03	25	53.8
श्रीनगर(का.)	8	23	00	9	30	42	10	48	00	46.4
श्रीगंगानगर	8	14	42	9	26	25	10	49	48	56.9
संगरूर	8	17	35	9	29	35	10	53	06	53.6
सरहिन्द	8	18	53	9	30	36	10	53	39	52.0
सपाटू(हि.प्र.)	8	20	13	9	31	44	10	54	24	50.5
सहारनपुर	8	19	21	9	32	04	10	56	26	52.1
सरकाघाट	8	21	07	9	31	50	10	53	18	49.2
सम्बलपुर	8	18	06	9	41	47	11	21	17	63.5
सागर	8	12	55	9	31	35	11	05	02	64.5
सिरसा	8	15	36	9	27	55	10	52	07	56.1
सिलचर(आसा.)	8	40	18	10	05	41	11	41	52	46.6
सिलवासा(गु.)	8	05	00	9	22	06	10	54	22	80.3
सीकर	8	13	09	9	27	09	10	53	56	60.3
सुनाम	8	17	23	9	29	25	10	53	02	53.8
सूरतगढ़(रा.)	8	14	08	9	26	18	10	50	23	57.9
सुन्दरनगर	8	20	59	9	31	55	10	53	43	49.5
सोलन	8	20	20	9	31	59	10	54	48	50.5
सोनीपत	8	17	12	9	30	40	10	56	20	54.9
हमीरपुर(हि.प्र.)	8	20	45	9	31	27	10	52	56	49.6
हरिद्वार	8	20	14	9	33	12	10	57	40	51.2
हज़ारीबाग	8	23	12	9	45	17	11	21	42	56.0
हनुमानगढ़	8	14	56	9	27	00	10	50	54	56.8
हाथरस	8	16	34	9	31	43	10	59	48	56.7
हापुड़	8	17	48	9	31	50	10	58	08	54.5
हांसी	8	16	09	9	29	10	10	54	20	55.9
हाटकोटी(हि.प्र.)	8	21	30	9	33	04	10	55	40	49.3
हिसार	8	15	58	9	28	50	10	53	48	56.0
हुबली(कर्ना.)	8	04	40	9	25	19	11	03	11	90.1
हैदराबाद	8	08	12	9	30	35	11	10	16	80.3
होशंगाबाद	8	10	44	9	29	38	11	03	46	68.3
होशियारपुर	8	19	46	9	30	30	10	52	05	50.6

चन्द्रमा का उपच्छाया ग्रहण

10/11 जनवरी, 2020 ई.

उपच्छाया ग्रहण वास्तव में चन्द्रग्रहण नहीं होता। प्रत्येक चन्द्रग्रहण के घटित होने से पूर्व चन्द्रमा पृथ्वी की उपच्छाया में अवश्य प्रवेश करता है, जिसे चन्द्र मालिन्य अथवा इंग्लिश में Penumbra भी कहा जाता है। उसके बाद ही वह पृथ्वी की वास्तविक छाया [दूसरे शब्दों में भूभा (Umbra)] में प्रवेश करता है। तभी उसे वास्तविक ग्रहण कहा जाता है। भूभा में चन्द्रमा के संक्रमणकाल को चन्द्रग्रहण कहा जाता है।

ध्यान रहे, कई बार पूर्णिमा को चन्द्रमा उपच्छाया में प्रवेश कर, उपच्छाया शंकु (Penumbra) से ही बाहर निकल जाता है। इस उपच्छाया के समय चन्द्रमा का बिम्ब केवल धुन्धला पड़ता है, काला नहीं होता धर्मशास्त्रकारों ने इस प्रकार के उप-ग्रहणों (उपच्छाया) में चन्द्र बिम्ब पर मालिन्य मात्र छाया आने के कारण उन्हें ग्रहण की कोटि में नहीं रखा। प्रस्तुत संवत् २०७६ में चन्द्रमा इसी प्रकार **10/11 जनवरी, 2020 ई.** को चन्द्रमा उपच्छाया में प्रवेश कर उपच्छाया शंकु से ही बाहर निकल जाएगा। इसके स्पर्शादिकाल (भा.स्टैं.टा.) इस प्रकार है–

Enters Penumbra (स्पर्श)	22-38	(भा. स्टैं.टा.)
(परमग्रास) मध्य	24-50	10/11 जन., 2020 ई.
Leaves Fenumbra (मोक्ष)	26-42	

इस बात का ध्यान रहे कि यह उपच्छाया ग्रहण वास्तव में चन्द्रग्रहण नहीं होता। इस उपच्छाया ग्रहण की समयावधि में चन्द्रमा की चांदनी में केवल कुछ धुन्धलापन आ जाता है। इस उपच्छाया ग्रहण के सूतक, स्नानदानादि माहात्म्य का विचार भी नहीं होगा। भारत में इसे दूरबीन द्वारा देखा जा सकेगा।

कंकण सूर्यग्रहण–26 दिसम्बर, 2019 ई.

(कंकण ग्रहण मार्ग)
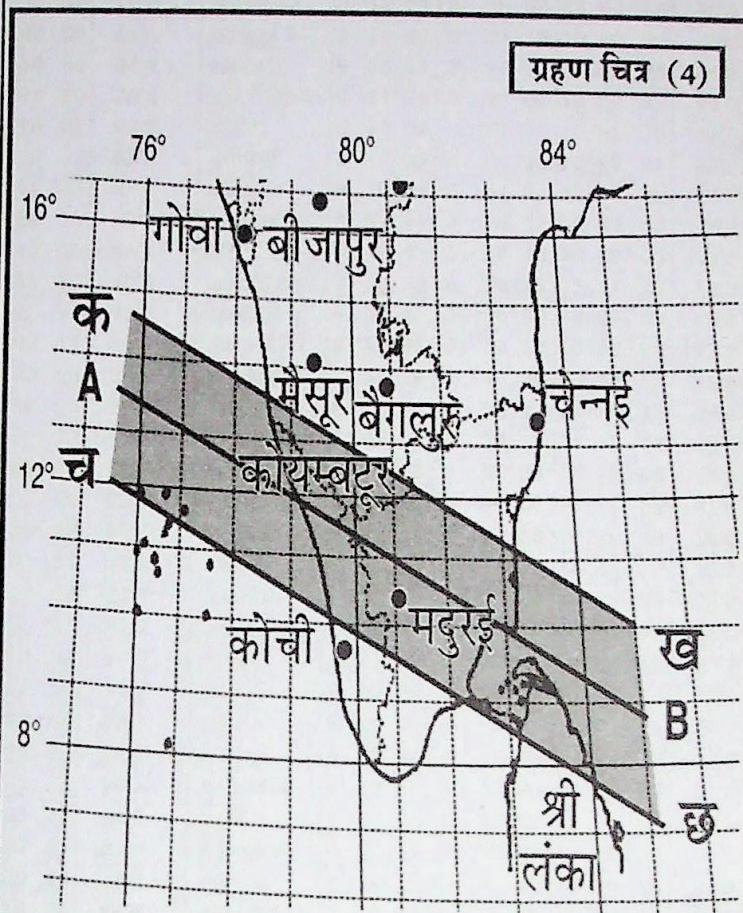
जन्मपत्री में षोडश वर्ग एवं षड्वर्ग फल विचार
[होरा, द्रेष्काण, सप्तमांश द्वारा फलित]

गणितीय दृष्टि से सम्पूर्ण आकाश मण्डल को 360 अंशों में विभाजित कर समान बारह भागों एवं 12 राशियों की कल्पना की जाती है, जिससे प्रत्येक राशि 30 अंशों की होती है। इसी भान्ति आकाश मण्डल (भचक्र) के समान सत्ताईस भाग करने पर 27 नक्षत्रों (दैदीप्यमान तारा पिण्डों) की गणना की गई है, जिसके अनुसार प्रत्येक नक्षत्र 13 अंश 20 कला का होता है। फलित दृष्टि से नक्षत्रों के चरण (पाद) निकालने की भी परिपाटी रही है। प्रत्येक नक्षत्र के **चार चरण** (पाद) माने जाते हैं। तद्नुसार एक नक्षत्र के मान 13°.20° अंशादि को चार से भाग देने पर प्रत्येक नक्षत्र का एक-चरण (पाद) 3 अंश, 20 कला का होता है।

वास्तव में भारतीय ज्योतिष में चन्द्रमा की (अंश कलादि में) संचार गति को नक्षत्र के नाम से जाना जाता है। जब चन्द्रमा 00 अंश से 13 अंश, 20 कला तक होता है, तो अश्विनी नक्षत्र कहलाता है, जब चन्द्रमा 13-20 अंशों से 26-40 अंशादि मध्य रहता है, तो भरणी नक्षत्रस्थ कहलाता है। देखें ज्योतिष तत्त्व गणितखण्ड पृष्ठ (49 से 50)। ज्ञातव्य रहे, चन्द्रमा की भान्ति ही सूर्यादि सभी ग्रह इसी क्रम से 27 नक्षत्रों एवं 12 राशियों के भचक्र का क्रमानुसार परिभ्रमण करते रहते हैं।

आगे दिए गए चक्र से यह बात स्पष्ट हो जाएगी।
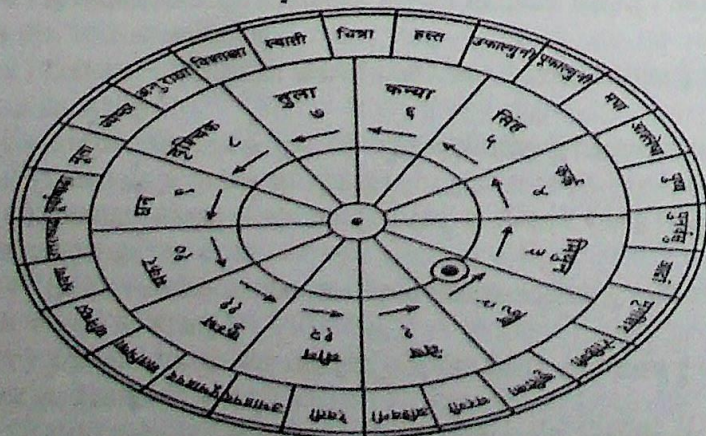
षोडश वर्ग एवं षड्वर्ग द्वारा फलादेश विचार

सम्पूर्ण राशि चक्र को 360 अंशों एवं 12 राशियों में विभाजित किया गया है तथा प्रत्येक राशि के अन्तर्गत 30 अंश समाहित होते हैं।

हमारे पूर्वाचार्यों ने ग्रहों के बलाबल एवं फलादेश में और अधिक सूक्ष्मता लाने की दृष्टि से राश्यंशों में और अधिक सूक्ष्म विभाजन एवं उप विभाजन करके उन्हें विभिन्न वर्गों का नाम दिया है। फलित में विभिन्न पक्षों की अभिव्यक्ति के लिए होराशास्त्र में **षोडश वर्गों** का उल्लेख मिलता है। उनके नाम इस प्रकार से वर्णित हैं-

(1) स्वक्षेत्र वर्ग (2) होरा (3) द्रेष्काण (4) चतुर्थांश (5) सप्तमांश (6) नवमांश (7) दशमांश (8) द्वादशांश (9) षोडशांश (10) विशांश वर्ग (11) चतुर्विंशांश (12) सप्तविंशांश (13) त्रिशांश वर्ग (14) खवेदांश (15) अक्षवेदांश और (16) षष्ट्यंश।

कालान्तर से षोडश वर्णों में से जब दस वर्गों का विचार किया जाता है, तो उसे दशवर्गी तथा सात वर्गों पर विचार किया जाए तो सप्तवर्गी अथवा जब छः वर्गों पर विमर्श किया जाए, तो उसे षड्वर्ग विचार कहते हैं।

आधुनिक काल में अधिकांशतः ज्योतिषी षड्वर्ग या सप्तवर्ग तक गणित करके संतोष कर लेते हैं, क्योंकि सभी षोडश वर्गों की गणित प्रक्रिया का विस्तार बहुत अधिक समय एवं श्रम साध्य होने से बहुधा ज्योतिषी समय नहीं दे पाते। इसी कारण हम यहाँ **सप्तवर्ग** से सम्बन्धित फलादेश का विशेष रूप से विचार करेंगे।

1. गृह (लग्न राशि), 2. होरा, 3. द्रेष्काण, 4. नवांश, 5. द्वादशांश और 6. त्रिशांश- यह षड्वर्ग हैं।

षड्वर्ग में सप्तमांश का समावेश करने से सप्तवर्ग होता है-

सप्तमांशयुक्तः षड्वर्गः सप्त वर्गोऽभिधीयते।।

सप्तवर्ग में दशमांश, षोडशांश एवं षष्ट्यंश मिलाने से **दशवर्ग** होता है। अंशात्मक रूप से प्रत्येक राशि के दशवर्ग को निम्न प्रकार से विभाजित किया जाता है।

(1) गृह राशि–प्रत्येक राशि का एक पूर्ण भाग यह 30 अंश का होता है। जिस राशि का जो ग्रह स्वामी है, वह उस ग्रह का गृह होता है।

(2) होरा—सम्पूर्ण राशि के दो भाग किए जाएँ, तो होरा चक्र बनता है। प्रत्येक होरा 15 अंश का होता है।

(3) द्रेष्काण—राशि के तीन भाग किए जाएं, तो द्रेष्काण चक्र बनता है। प्रत्येक द्रेष्काण 10 अंश का होता है।

(4) त्रिशांश—राश्यांश के **पाँच भाग** हों तो **त्रिशांश** कहलाता है। यह 5, 7 एवं 8 अंश का होता है।

(5) सप्तमांश—राश्यंशों के सात भाग किए जाएँ, तो सप्तमांश होता है। प्रत्येक भाग 4 अंश, 17 कला एवं 8 विकला का होता है।

(6) नवमांश—एक राशि के नौवें भाग को नवमांश कहते हैं। प्रत्येक भाग 3 अंश, 20 कला का होता है।

(7) द्वादशांश—एक राशि का द्वादश (12वां) भाग द्वादशांश कहलाता है। प्रत्येक भाग 2 अंश 30 कला का होता है।

(9) षोडशांश—एक राशि के सोलहवें भाग को **षोडशांश** कहते हैं। प्रत्येक भाग 1 अंश, 52 कला, 30 विकला का होता है।

(10) षष्ट्यंश—राशि के 60वें भाग को षष्ट्यंश कहते हैं। प्रत्येक भाग 30 कला का होता है।

विशेष—एक मान्यता अनुसार फलादेश में महत्त्व की दृष्टि से जातक को जन्म लग्न के 5, होरा के 2, द्रेष्काण के 3, सप्तमांश के 2.5 (अढ़ाई), नवमांश के साढ़े चार (4.5), द्वादशांश के 2 एवं त्रिशांश कुण्डली चक्र का एक (1) विंशोपक बल होता है।

होराशास्त्रानुसार लग्न, होरा, नवांश आदि वर्गों से निम्नलिखित विषयों का मुख्यत: विचार करना चाहिए। जैसे जन्म लग्न से **देह** का विचार करना चाहिए। **'होरा लग्न'** से भूमि, जायदाद, धन आदि सम्पदा का। **'द्रेष्काण'** से भाई बन्धु के सुख-दुख का, **चतुर्थांश** से भाग्य का, **सप्तमांश** से पुत्र, पौत्र आदि परिवार का **'नवमांश'** से पति-पत्नी सम्बन्धी विषयों का विचार करना चाहिए। **'दशमांश'** से अपने जीवन से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण घटनाओं के बारे, **'द्वादशांश'** से माता-पिता से सुख-दुख के बारे, **'षोडशांश'** से अपने सुख-दुख तथा आवास, वाहन आदि सुख साधनों का, **'विशांश'** से जपादि अनुष्ठान द्वारा सिद्धि-असिद्धि का विचार, **'चतुर्विशांश'** से उच्च विद्या के बारे, **'त्रिशांश'** से शारीरिक कष्ट, रोग, शत्रु आदि का विचार, अक्षवेदांश तथा **'षष्ठयंश'** के द्वारा जीवन से विशेषत: सम्बन्धित सम्पूर्ण समस्याओं का विचार करना चाहिए। यथा—

लग्नं देहस्य विज्ञानं होरायां सम्पदादिकम्। द्रेष्काणे भ्रातृजं सौख्यं तुर्यांशे भाग्य चिन्तनम्।। पुत्रपौत्रादिकानां वै चिन्तनं सप्तमांशके। नवमांशे कलत्राणां दशमांशे महत्फलम्। द्वादशांशे तथा पित्रोश्चिन्तनं षोडशांशके सुखाऽसुखस्थ विज्ञानं वाहनानां तथैव च। त्रिशांशके अरिष्टफलम्।

षड्वर्गी—सप्तवर्गी चक्र तथा फलादेश

षड्वर्गी या सप्तवर्गी कुण्डलियों में प्रत्येक वर्ग कुण्डली का विषय की दृष्टि से अपना महत्त्व होता है, परन्तु ध्यान रहे सभी वर्गीय कुण्डलियां लग्न कुण्डली का ही विस्तार होती है। अतएव प्रत्येक वर्ग कुण्डली पर विचार करते समय मूलभूत लग्न कुण्डली को अवश्य ध्यान में रखना चाहिए। ज्ञातव्य हो कि वर्ग कुण्डली में ग्रहों की भावों एवं राशियों में स्थिति का ही विशेष रूप से महत्त्व दिया जाता है। ग्रहों की दृष्टियों को गौण। यदि षड्वर्गों में शुभ ग्रह बलान्वित हो तो मनुष्य धनवान, ऐश्वर्यवान एवं दीर्घायु होता है। यदि अधिकांश ग्रह हीनबली हों तो आर्थिक दृष्टि से दुखी व अल्पायु होता है।

षड्वर्गेषु शुभ ग्रहाधिक गुणै श्रीमांश्चिरं जीवति।
क्रूरांशे बहुले विलग्न भवने दीनोऽल्पजीव: शंठ:।।

षडवर्गी कुण्डलियों के निर्माण सम्बन्धी प्रक्रिया उदाहरण सहित **ज्योतिष तत्त्व गणितखण्ड** में विस्तारपूर्वक लिखा गया है। तथापि आगे संक्षेप से होरा, द्रेष्काण आदि कुण्डलियों एवं चक्रों को बनाने तथा उनके द्वारा फलादेश देखने की प्रक्रिया को उदाहरणों सहित समझाया गया है। प्रत्येक वर्ग की लग्न राशि ज्ञात करने के लिए जातक का जन्म लग्न स्पष्ट अवश्य मालूम होना चाहिए।

होरा लग्न जैसा कि पहले बतलाया गया है कि प्रत्येक राशि के दो भागों को होरा कहते हैं। 15 अंश का एक होरा होता है। **विषम राशियों** (मेष, मिथुन आदि) में 15 अंश तक **सूर्य का होरा** लग्न तथा 16 अंश से 30 अंश तक चन्द्रमा की होरा लग्न होती है।

सम राशियों (वृष, कर्क आदि) में प्रथम 1 से 15 अंश तक चन्द्रमा की होरा लग्न तथा 16° से 30° अंश तक सूर्य की होरा होती है। सूर्य की होरा के लिए 5 का अंक तथा चन्द्रमा की होरा को 4 के अंक से अभिव्यक्त किया जाता है। शेष सभी ग्रहों की स्थापना उनके राश्यांशों के अनुसार की जाती है। मेषादि राश्यांशों के आधार पर होरा लग्न चक्र निम्नानुसार बनता है—

होरा चक्रम्

अंश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
1 से 15 अंश	5	4	5	4	5	4	5	4	5	4	5	4
16 से 30 अंश	4	5	4	5	4	5	4	5	4	5	4	5

होरा-उदाहरण कुण्डली—मान लो 23 नवम्बर, 1940 ई० रात्रि 47/17 घट्यादि इष्ट बटाला में किसी जातक का जन्म निम्नलिखित ग्रह विवरण अनुसार कन्या लग्न में हुआ।

	ल. स्पष्ट	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	५	७	४	६	६	०	६	०	५	११
अंश	२	८	२३	९	१९	१४	३	१६	१५	१५
कला	५८	२३	२३	२	३८	५४	४२	४२	९	९
विकला	१३	२५	०९	१७	०७	५०	२८	४५	३०	३०
०	०	–	मार्गी	मार्गी	मार्गी	वक्री	मार्गी	वक्री	वक्री	वक्री

उदाहरण जन्म कुण्डली
23-11-1940, रात्रि 26:00
स्थान बटाला, गृहलग्न राशि
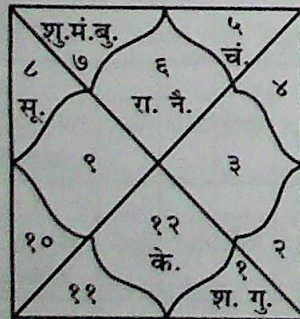
होरा कुण्डली 04
(लग्न स्पष्टानुसार)
ज.ल. स्प. 5/2/58/13
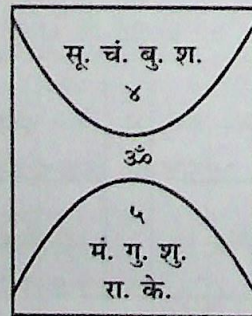
(1) लग्न राशिफल विचार–जातक के जीवन सम्बन्धी प्रारम्भिक सुख-दुख, लाभ-हानि, उन्नति-अवनति, शारीरिक गठन, रूप-रंग, स्वास्थ्य, रोग एवं स्वभावगत प्रवृतियों, क्रिया कलाप एवं कर्मों के फल लग्न कुण्डली द्वारा ही ज्ञात किए जाते हैं। लग्न कुण्डली को इसी कारण बीज और फल के रूप में जाना जाता है–

लग्नं पुष्पसमं ज्ञेयमंशः फलस्मस्तस्था। नष्टे पुष्पे फलं नास्ति तस्मात् लग्ने प्रधानता।।

प्रत्येक राशि के लग्न के सम्बन्ध में ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड) (प्रथम एवं द्वितीय भाग) में विस्तारपूर्वक विवरण दिया गया है।

(2) होरा लग्न फल विचार–होरा लग्न कुण्डली से जातक के पूर्व जन्म एवं ऐहिक जीवन की प्रारम्भिक प्रवृत्तियों, रूप, वर्ण, स्वभाव, गुण, सुख-सुविधाएं, धन-सम्पदा एवं आर्थिक परिस्थितियों का ज्ञान होता है। इसके अतिरिक्त भूमि, जायदाद, मकान आदि अचल सम्पत्ति तथा सोना, चाँदी, वाहन, धन आदि चल सम्पत्ति का विचार भी होरा लग्न से होता है।

यदि किसी जातक का जन्म सूर्य की होरा (5) में हुआ हो तथा सूर्य शुभ ग्रहों के साथ राशि (सिंह) की होरा में ही स्थित हो, तो जातक पराक्रमी, उद्यमी, आत्मिक शक्ति युक्त, स्वाभिमानी, धनी, उच्चाभिलाषी, रजोगुणी तथा कुछ तीक्ष्ण बुद्धि वाला होता है।

स्वाहोरायां रविः कुर्याद् विद्वांसं दृष्ट पौरषम्। जितेन्द्रियं च शूरं तमुद्यमे धृतमानसम्।

अर्थात् सूर्य अपनी होरा में होने से जातक विद्वान्, पुरुषार्थी, शूरवीर एवं उद्यमी होता है। यदि सूर्य के साथ मंगल, चन्द्र, गुरु, बुधादि शुभ मित्र ग्रह भी होरा लग्न में हों, तो जातक उच्च विद्यावान्, आकर्षक व्यक्तित्त्व वाला, प्रतिभाशाली, पैतृक एवं स्वार्जित धन सम्पदा से युक्त, धैर्यवान्, उच्चप्रतिष्ठित, धर्म-परायण एवं माननीय व्यक्ति होता है। ऐसा जातक भाग्यवान, भूमि, जायदाद, मकान, वाहन आदि सुखों से सम्पन्न तथा उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क होते हैं।

यदि **सूर्य के होरा लग्न में** सूर्य के साथ (गु., मं., शनि, राहु आदि) शुभाशुभ दोनों प्रकार के ग्रह हों तो जातक को प्रारम्भिक जीवन में अत्यन्त कठिन एवं विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। कार्य व्यवसाय में अत्यन्त संघर्ष के बाद ही कुछ सफलताएँ मिलती हैं। जातक उत्साह एवं पराक्रम के साथ कठिनाइयों का सामना करता हुआ येन-केन प्रकारेण आय के साधन बना ही लेता है।

यदि सूर्य की होरा में शनि, राहु, केतु, क्षीण चन्द्र आदि पाप ग्रह हो, तो जातक को भूमि, जायदाद, मकान, आदि के सम्बन्ध में सुख में कमी, आर्थिक एवं परिवारिक उलझनों के कारण परेशानियां तथा भाई-बन्धुओं के सहयोग में कमी रहती है। अधिकांश जीवन में कठिन हालात का सामना रहता है।

यदि होरा लग्न में चन्द्र राशि (4) हो तथा उसमें चन्द्र, गुरु, शुक्र आदि शुभ ग्रह हों, तो जातक सौम्य एवं शान्त प्रकृति, कल्पनाशील, धन, सम्पदा, वाहन, स्त्री आदि सुखों से युक्त होता है। जातक स्त्रियों में आसक्त एवं कामुक प्रवृत्ति का होता है।

शुभा यदीन्दु होरायां कामिनी स्नेहवान्नरः। शीघ्रं मैथुनगामी च चिरं सेवेत कामिनीम्।।

चन्द्र की होरा में चन्द्र-शुक्र हों, तो जातक अच्छी, सुन्दर एवं सुशील स्त्री का पति, विवाह के बाद वाहन आदि-सुख साधनों से सम्पन्न होता है।

कर्क राशि–अर्थात् चन्द्र की होरा में मंगल, शनि, राहु, सूर्य आदि क्रूर ग्रह हों, तो जातक को आर्थिक परेशानियां, स्त्री सम्बन्धी कष्ट या स्त्री से कष्ट, धन हानि, गुप्त रोग का भय, अपव्यय, मानसिक तनाव एवं अनावश्यक खर्च अधिक होते हैं।

चन्द्र की होरा में शुभाशुभ दोनों प्रकार के ग्रह हों, तो मिश्रित फल होते हैं।

* **एक मान्यतानुसार** सभी पुरुष ग्रह सूर्य होरा में तथा सभी स्त्री ग्रह चन्द्र की होरा में हो तो शुभ होते हैं। सूर्य की होरा में चन्द्र तथा चन्द्र की होरा में सूर्य हो तथा अधिक शुभ ग्रह सूर्य की होरा में ही जातक धनवान् होता है।

* **अपरं च,** सूर्य की होरा में उत्पन्न जातक तीक्ष्ण, उग्र प्रकृति एवं आक्रमक स्वभाव के होते हैं जबकि चन्द्र की होरा में उत्पन्न मनुष्य विनम्र, सौम्य एवं कोमल स्वभाव के होते हैं।

द्रेष्काण कुण्डली विचार

जैसा कि पहले लिखा जा चुका है कि राशि के तृतीय अंश को द्रेष्काण कहते हैं। अर्थात् प्रत्येक राशि में 3 द्रेष्काण होते हैं। प्रत्येक द्रेष्काण 10-10 अंश का होता है। अर्थात् 1 से 10 अंश तक प्रथम द्रेष्काण, 11 से 20 अंश तक द्वितीय द्रेष्काण, 21 से 30 अंश तक तृतीय द्रेष्काण होता है।

तीनों द्रेष्काण एक से पंचम राशि में रहते हैं। अर्थात् प्रथम द्रेष्काण उसी राशि का, दूसरा उससे पंचम राशि का तथा तीसरा द्रेष्काण पंचम से पंचम अर्थात् नवम राशि का होता है। अधिक स्पष्टता के लिए निम्न चक्र देखें-

द्रेष्काण चक्रम्

द्रेष्काण	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
प्रथम द्रेष्काण ० से 10 अंश (नारद)	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
द्वितीय द्रेष्काण 10 से 20 अंश (अगस्त्य)	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
तृतीय द्रेष्काण 20 से 30 अंश (दुर्वासा)	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.

होरा, द्रेष्काण, नवांश आदि कुण्डलियों के चक्र बनाने की प्रक्रिया हम **'ज्योतिष तत्त्व'** के (गणित खण्ड) में कर चुके हैं। देखें पृष्ठ संख्या नं. 146

उदाहरण–होरा कुण्डली में दिए गए उदाहरण लग्न-अनुसार लग्न स्पष्ट 5/02°/58′/13″ होने से कन्या लग्न का प्रथम द्रेष्काण कन्या लग्न का ही होगा। सूर्य वृश्चिक राशि में १० अंश से कम अर्थात् ७/८/२३/२५ होने से सूर्य तृतीय भाव में वृश्चिक राशि का होगा। जन्म में मंगल-शुक्र तुला के क्रमशः 9 अंश एवं 3°-42′ अंश होने से तुला राशि में ही लगेंगे। चन्द्रमा लग्न में सिंह के 23° अंश होने से तीसरा द्रेष्कोण अर्थात् मेष राशि में होगा। इसी भान्ति सभी ग्रहों की स्थापना होगी।

द्रेष्काण कुण्डली

फल–उपरोक्त द्रेष्काण कुण्डली कन्या का प्रथम द्रेष्काण है तथा द्रेष्काणेश बुध स्त्री ग्रह शनि द्वारा होने से जातक छोटी बहन से युक्त, परन्तु भ्रातृ सुख से वंचित है। द्रेष्काणेश बुध मित्र (कुम्भ) राशि युक्त होने से जातक बुद्धिमान, विनयशील, धार्मिक, अध्ययन शील एवं धन सम्पदा आदि साधनों से युक्त हैं।

द्रेष्काण लग्न फल विचार

द्रेष्काण कुण्डली से भाई-बहन के सुख का विशेष विचार किया जाता है। यदि द्रेष्काण लग्न का स्वामी पुरुष ग्रह (सूर्य, गुरु, मंगल आदि) हों, तो जातक को छोटे भाई का सुख होता है तथा द्रेष्काण लग्न स्वामी यदि स्त्री ग्रह (चन्द्र, शुक्र) हों, तो पहिले बहिन होती है।

* इसके साथ ही इस बात की भी पुष्टि कर लेनी चाहिए कि यदि जन्म लग्नेश पुरुष ग्रह हो और मित्र ग्रह से युक्त हो, तो जातक भाई का सुख एवं सहयोग पाता है। जन्म लग्नेश स्त्री ग्रह होकर मित्र क्षेत्री या मित्र ग्रह से युक्त हो, तो जातक अपनी बहिनों से सुख, स्नेह एवं सहयोग प्राप्त करता है।

* द्रेष्काण लग्न शुभ ग्रहों से युक्त हो तथा द्रेष्काणेश लग्नादि केन्द्र या त्रिकोण में हो तथा शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, तो भाई दीर्घायु, उच्चप्रतिष्ठित एवं सुखी होता है।

* द्रेष्काण स्वामी की लग्नेश से मित्रता हो तो भाई से सुखद सम्बन्ध हों, शत्रुता हो तो भाई से कटु सम्बन्ध तथा ग्रहों में परस्पर समता हो तो भाई-बहिन से समभाव रहता है।

* यदि द्रेष्काण लग्न में पापी या शत्रु ग्रह हों, एवं द्रेष्काण स्वामी लग्न से 6, 8 या 12वें भाव में स्थित हो तथा पापी ग्रहों से युत या दृष्ट हो, तो भाई शरीर कष्टी, रोगी, दुखी एवं अल्पायु होता है।

* द्रेष्काण लग्न में जितने पुरुष ग्रह हो, उतने भाई तथा जितने स्त्री ग्रह हों, उतनी बहनें होती हैं अथवा द्रेष्काण लग्नेश जिस राशि क्रमांक में हों, जातक के उतने ही भाई-बहिन होते हैं।

* द्रेष्काणेश एवं जन्म लग्नेश ग्रहों का परस्पर जैसा सम्बन्ध होता है, जातक का वैसा ही सम्बन्ध अपने भाई बहिनों के साथ होता है।

* द्रेष्काणेश शत्रु या नीच राशि में हो, तो उस राशि के तुल्य शरीर पर चोट, घाव इत्यादि का चिन्ह होता है।

नोट–द्रेष्काण कुण्डली फल, सप्तमांश कुण्डली तथा नवांश कुण्डली विचार आगामी वर्ष की पंचांग दिवाकर (वि. संवत् २०७७) में देखें।

शनि की साढ़ेसाती, ढैय्या एवं पाया फल विचार—सं. २०७६ (सन् 2019-20 ई.)

26 अक्तूबर, सन् 2017 ई. से धनु राशि में संचरणशील शनि देव आगामी वि. संवत् २०७६ के आरम्भ (6 अप्रैल, 2019 ई.) से **23 जनवरी, सन् 2020 ई.** तक **धनु राशि** में ही संचार करेंगे।

तदनन्तर **24 जनवरी, सन् 2020 ई.**, शुक्रवार को प्रात: 9घं.-53मि. पर **मकर** (स्वराशि) **राशि** में प्रवेश करेंगे तथा फिर संवत् २०७६ के अन्त (24 मार्च, सं. 2020 ई.) तक **मकर राशि** में ही संचार करेंगे।

शनि वक्री-मार्गी—शनिदेव ता. 30 अप्रैल, 2019 ई. को धनु राशि संचारकालीन ही **वक्री** होकर 18 सितम्बर, 2019 ई. से धनु राशिस्थ ही **मार्गी** होकर संचार करेंगे।

ध्यान रहे, शनि जब किसी राशि में अशुभ होकर वक्री हो, तो जातक को मानसिक व शारीरिक कष्ट, आर्थिक परेशानियाँ, रोग आदि प्रकट होने लगते हैं। समाज में भी कहीं राजनीतिक टकराव, अव्यवस्था, अत्यधिक महँगाई, क्लिष्ट रोगों का फैलाव व भय, उपद्रव, हिंसक घटनाएँ, अस्थिरता, असन्तोष, बाढ़, दुर्भिक्ष, भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोपों का भय एवं असुरक्षा का वातावरण बनता है।

क्या है शनि-साढ़ेसाती एवं ढैय्या ?

गोचरवश जब शनि किसी जातक की जन्म राशि (अथवा नाम-राशि) से द्वादश, प्रथम या द्वितीय स्थान में हो, तो शनि की प्रस्तुत गोचर-स्थिति **शनि-साढ़ेसाती** कहलाती है। इसके प्रभावस्वरूप जातक/जातिका को मानसिक संताप, शारीरिक कष्ट, कलह-क्लेश, आर्थिक-परेशानियां, आय कम व खर्च की अधिकता, रोग व शत्रु-भय, बनते कामों में विघ्न-बाधाएँ, सन्तान एवं परिवार सम्बन्धी परेशानियां उत्पन्न होती हैं। यथा–

राशौ द्वादशमूर्ध्नि जन्म हृदये पादौ, द्वितीये शनिः।
नाना-क्लेश करोति दुर्जन भयं पुत्रान् पशून् पीडयेत्।।

शनि प्रत्येक राशि में लगभग अढाई वर्ष तक संचार करता है। शनि की वक्री-मार्गी गति के कारण अढ़ाई वर्षों के काल में न्यून-अधिकता भी होती रहती है। शनि जिस राशि पर संचरित होता है, उससे पहले (प्रथम), बाहरवें और दूसरे (द्वितीय) भावों में स्थित राशियों को विशेषत: प्रभावित करता है। इसी को शनि की साढ़ेसाती (साढ़ेसात वर्षीय) कहा जाता है।

शनि की ढैय्या—गोचरवश शनि जब चन्द्रराशि (या नामराशि) से चौथे या आठवें स्थान पर संचार करता है, तब **शनि की ढैय्या** कहलाती है। यह लगभग अढ़ाई वर्ष के लिए होती है। इसका प्रभाव भी अशुभ माना गया है–

''लघु कल्याणी (ढैय्या) प्रददाति वै रविसुतोः राशे चतुर्थाष्टमे,
व्याधिं बन्धु विरोधं विदेशगमनं, क्लेशं च चिन्ताधिकम्।।''

अर्थात् शनि की ढैय्या के प्रभावस्वरूप जातक/जातिका को वृथा-दौड़धूप, अनावश्यक खर्च, गुप्त चिन्ताएं, रोग, शोक, कलह-क्लेश, धन-हानि, बन्धु-विरोध, कार्यों में विघ्न-बाधाओं एवं आर्थिक-उलझनों का सामना रहता है।

✪ धनु राशिस्थ शनि-साढ़ेसाती एवं ढैय्या विचार ✪

(1 जनवरी, 2019 ई. से 23 जनवरी, 2020 ई. तक)

✤ **साढ़ेसाती—वृश्चिक, धनु** व **मकर राशि** वाले जातक/जातिकाओं को **शनि-साढ़ेसाती** का प्रभाव अभी बना रहेगा।

✤ **शनि की ढैय्या—वृष** व **कन्या** राशि के जातकों को शनि की **ढैय्या** (अढ़ैय्या) का अशुभ प्रभाव अभी रहेगा।

शनि-साढ़ेसाती या ढैय्या का फल सभी कुण्डलियों में एक जैसा नहीं होता। यदि किसी कुण्डली में शनि त्रिकोणेश (1, 5, या 9वें) भावों का स्वामी होकर उच्चस्थ या मित्रक्षेत्री होकर शुभग्रह की दृष्टि में हो, तो शनि साढ़ेसाती या ढैय्या का अशुभ प्रभाव अपेक्षाकृत कम होगा। इसके अतिरिक्त ग्रहों की दशा-अन्तर्दशा शुभ एवं योगकारक ग्रहों से सम्बन्धित हो, तो भी शनि साढ़ेसाती या ढैय्या का अशुभ प्रभाव कम होगा।

➞किसी विशेष राशि पर शनि की साढ़ेसाती/ढैय्या का शुभाशुभ विचार करते समय, उस राशि पर अन्य ग्रहों की स्थिति एवं दृष्टियों आदि का प्रभाव तथा सुवर्णादि पाया का विचार कर लेना चाहिए।

✤ **शनि का सामान्य गोचरफल**–

धनूराशौस्थितः सौरिर्गर्जत्यपि न वर्षति।
तोयहीना धरा तत्र दुर्भिक्षं च विनिर्दिशेत्।

अर्थात् धनु राशिस्थ शनि होने पर गर्जते हुए मेघ भी बरसे नहीं तथा पृथ्वी जल से विहीन हो जाए अर्थात् वर्षा बहुत कम हो। अकाल, दुर्भिक्ष-जन्य परिस्थितियां बनें। पृथ्वी पर धान्य आदि फसलों के उत्पादन में कमी आए।

✴ धनु राशिस्थ शनि में सुवर्णादि पाया विचार ✴

(1) मेष, सिंह तथा **वृश्चिक** राशि पर **चाँदी (रजत) का पाया** होने से नौकरी में पदोन्नति, विदेश-गमन, व्यवसाय में आकस्मिक धन लाभ, भूमि-वाहनादि सुख, स्त्री-सन्तानादि पारिवारिक सुखों की प्राप्ति आदि शुभ फल होंगे।

(2) वृष, कन्या तथा **मकर** राशियों पर **लौह का पाया** होगा। पारिवारिक कलह-क्लेश, घरेलु एवं व्यवसायिक उलझनें, बनते कामों में विघ्न-बाधाएं, आय में कमी व खर्चों की अधिकता तथा दुर्घटना से चोटादि का भय होता है।

(3) मिथुन, तुला तथा **मीन** राशियों पर **ताम्र** का पाया शुभ फल प्रदान करेगा। उच्च-विद्या में रूचि या सफलता वाहन प्राप्ति, धन सम्पदा का लाभ एवं विवाह, सन्तान, आरोग्यादि सुख, पदोन्नति आदि लाभ प्राप्त होंगे।

(4) **कर्क, धनु** तथा **कुम्भ** राशियों पर **सुवर्ण (सोना)** का पाया होगा, जिससे जातकों को संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना करना पड़े। आय में कमी तथा खर्च अधिक रहे। शरीर कष्ट, रोग-भय, तनाव तथा बन्धुओं के साथ मतान्तर रहे।

✪ धनु राशिस्थ शनि का द्वादश राशियों पर गोचरफल-सं.२०७६ ✪

(1 जनवरी, 2019 ई. से 23 जनवरी, 2020 ई. तक)

यद्यपि धनु राशिस्थ शनि का द्वादश राशियों पर प्रभाव का फल हम गतवर्षीय पंचांग में लिख चुके हैं, परन्तु शनि के अतिरिक्त मंगल, गुरु, राहु-केतु आदि ग्रहों के राशि-संचार में अन्तर पड़ जाने से विभिन्न राशियों पर शनि के गोचरफल में अन्तर पड़ने की सम्भावनाएं होंगी। सुविधा के लिए पुनः अवलोकन करें-

✤ **मेष**-राशि से शनि **नवमस्थ (भाग्यस्थ)** होने से कार्य-व्यवसाय में कमी तथा बनते हुए कार्यों में अड़चनें रहेंगी। ता. 29 मार्च से 22 अप्रैल के मध्य तथा पुनः 5 नवं. से 23 जन., 2020 ई. तक गुरु-शनि योग तथा गुरु की दृष्टि रहने से इस अवधि में विपरीत परिस्थितियों के बावजूद गुज़ारेलायक आय होगी। शेष समयावधि में संघर्ष अधिक रहे। **पाया चाँदी** भी सुख-समृद्धि-दायक रहेगी।

✤ **वृष**-राशि से शनि **अष्टमस्थ (ढैय्या)** तथा पाया भी **लौह** होने से वृथा दौड़-धूप एवं खर्च अधिक रहेंगे। घरेलु, व्यवसायिक तथा भूमि-जायदाद सम्बन्धी उलझनें बढ़ेंगी। ता. 22 अप्रै. से 4 नवं. तक गुरु की दृष्टि रहने से भी तनाव, अनावश्यक लड़ाई-झगड़ा रहे। शनि सम्बन्धी उपाय करने से शुभ फल प्राप्त हो सकते हैं।

✤ **मिथुन**-राशि पर वर्षारम्भ से 23 जन., 2020 ई. तक शनि की दृष्टि तथा 7 मार्च से राहु का संचार भी रहने से व्यवसाय में लाभ कम तथा खर्च अधिक, प्रत्येक कार्य में विघ्न-बाधाएं व विलम्ब उत्पन्न होंगे। परन्तु **ताम्र पाया** तथा 5 नवं. से गुरु की दृष्टि रहने से स्वास्थ्य लाभ, धर्म में प्रवृत्ति एवं लाभ/उन्नति के अवसर भी मिलेंगे।

✤ **कर्क**-राशि से शनि **षष्ठस्थ** व **सोने** का पाया होने से स्वास्थ्य सम्बन्धी कष्ट, निकटस्थ भाई-बन्धु से तनाव, धन-हानि व अनावश्यक खर्च तथा बनते कार्यों में अड़चनें रहेंगी। वर्षारम्भ से 28 मार्च तक, पुनः 22 अप्रैल से 4 नवम्बर, 2019 ई. तक गुरु की शुभ उच्च दृष्टि रहने तथा 7 मार्च से राहु का संचार हट जाने से निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे तथा धार्मिक कार्यों की ओर प्रवृत्ति रहे।

✤ **सिंह**-राशि से शनि **पंचमस्थ** होने तथा 29 मार्च से 22 अप्रैल तक, पुनः 5 नवं. से संवतान्त तक गुरु की विशेष दृष्टि रहने से निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। धर्म-कर्म की रुचि बढ़ेगी। शनि का पाया चाँदी होने से भी बीच-बीच में धन लाभ, गत किए कार्यों में सफलता, भूमि-वाहन एवं पारिवारिक सुखों की प्राप्ति होगी।

✤ **कन्या**-राशि को शनि **चतुर्थस्थ** होने से शनि की ढैय्या का अशुभ प्रभाव अभी रहेगा तथा 7 मई से 21 जून के मध्य मंगल की भी दृष्टि रहने से क्रोध अधिक, धन हानि, वृथा कलह-क्लेश तथा अनावश्यक खर्च रहेंगे। **पाया भी लोहा** होने से घरेलू तथा व्यवसायिक उलझनें व परेशानियां बढ़ेंगी।

✤ **तुला**-राशि से शनि **तृतीयस्थ** तथा ताम्र पाया रहने से संघर्ष एवं परेशानियों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। सन्तान सम्बन्धी सुख, पदोन्नति तथा सोची हुई योजनाओं में सफलता मिलेगी।

✤ **वृश्चिक**-राशि को **शनि-साढ़ेसाती** के प्रभाव से कार्य-व्यवसाय में अड़चनें तथा आय कम व खर्च अधिक रहेंगे। परन्तु शनि का पाया चाँदी होने तथा 22 अप्रैल से 4 नवं. तक गुरु संचार के प्रभाव से अकस्मात् धन लाभ, पदोन्नति व विदेश भ्रमण के चाँस बनेंगे।

✤ **धनु-शनि साढ़ेसाती** चढ़ती हुई अवस्था (हृदय) में होगी। कार्य-व्यवसाय में आर्थिक उलझनें एवं घरेलू परेशानियों का सामना रहेगा। शनि का पाया भी **सुवर्ण** होने से निकट बन्धुओं से मतभेद पैदा हों। ता. 5 नवम्बर, 2019 के बाद कुछ रुके हुए कार्यों में सफलता मिलेगी।

✤ **मकर**-को शनि द्वादशस्थ अर्थात् **शनि-साढ़ेसाती** सिर पर चढ़ती हुई अर्थात् प्रारम्भिक अवस्था में होगी। ता. 6 मार्च, 2019 ई. तक केतु का संचार होने से भी आय कम व खर्च अधिक, घरेलू व कार्य सम्बन्धी उलझनें रहेंगी। स्त्री/पति से भी तनावपूर्ण सम्बन्ध रहेंगे। शनि का पाया भी **लौह** होने से शरीर कष्ट व मानसिक तनाव रहे।

✤ **कुम्भ**-शनि की **स्वगृही दृष्टि** से नई-नई कार्य योजनाएं बनेंगी। गत किए गए कार्यों में सफलता व लाभ प्राप्त होगा। यद्यपि **पाया सुवर्ण** होने तथा 22 जून से 24 सितम्बर तक मंगल की शत्रु दृष्टि रहने से क्रोध व उत्तेजना से गलत निर्णय हो, धन लाभ के लिए विशेष संघर्ष करना पड़े, आय कम व खर्च अधिक रहे।

✤ **मीन**-शनि **दशमस्थ** होने से संघर्ष एवं परेशानियों के पश्चात् ही निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। वर्षारम्भ से 28 मार्च तक पुनः 22 अप्रैल से 4 नवं., 2019 ई. तक गुरु की स्वगृही दृष्टि रहने तथा **पाया ताम्र** होने से परिस्थितियों में कुछ सुधार, आकस्मिक धन लाभ तथा भूमि-वाहनादि सुखों में वृद्धि होगी।

✤ मकर राशिस्थ शनि संचारकालीन साढ़ेसाती एवं ढैय्या ✤

(24 जनवरी, 2020 ई. से संवतान्त 24 मार्च, 2020 ई. तक)

✤ **साढ़ेसाती**-*(i)* धनु राशि वाले जातक/जातिकाओं को साढ़ेसाती **पाँव पर** उतरती हुई अर्थात् अन्तिम चरण में होगी।

(ii) **मकर राशि** वालों को शनि साढ़ेसाती हृदय पर चढ़ती हुई अर्थात् मध्य अवस्था में होगी।

(iii) **कुम्भ राशि** वालों को शनि साढ़ेसाती **सिर** पर चढ़ती हुई अर्थात् प्रारम्भिक अवस्था में होगी।

धनु एवं मकर राशि वालों को प्रारम्भ के अढ़ाई वर्ष तथा **कुम्भ राशि** वालों को अन्त के अढ़ाई वर्ष विशेषत: अशुभकारक रहते हैं।

ढैय्या विचार-मिथुन व तुला राशि के जातकों को शनि की ढैय्या का अशुभ प्रभाव रहेगा। परन्तु इस राशि को शनि-पाद ताम्र होने से बीच-बीच में लाभ के अवसर प्राप्त होते रहेंगे।

ढैय्या विचार–मिथुन व तुला राशि के जातकों को **शनि की ढैय्या** का अशुभ प्रभाव रहेगा।

सुवर्णादि पाद (पाया) निर्णय—शनिदेव 24 जनवरी, सन् 2020 ई. को मकर राशिस्थ चन्द्रमा, उत्तराषाढ़ा नक्षत्रकालीन मकर राशि में प्रवेश करेंगे। तदनुसार मेषादि राशियों पर ताम्रादि पाया इस प्रकार से होगा–

( ) मेष, कर्क तथा **वृश्चिक** राशियों पर **ताम्र-पाद (पाया)** होने से कार्य-व्यवसाय में लाभ व उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। उच्च-प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क बनेंगे। उच्च विद्या में सफलता, विवाह एवं पारिवारिक सुखों की प्राप्ति, सवारी आदि सुख-सुविधाओं की प्राप्ति होगी। देश-विदेश की यात्राओं के भी अवसर प्राप्त होंगे।

(2) वृष, कन्या तथा **धनु राशि** पर **चाँदी (रजत)**-पाद (पाया) होने से गत किए गए प्रयासों में सफलता मिलती है। आकस्मिक धन-लाभ, उच्च-प्रतिष्ठा, स्त्री-सन्तान तथा भूमि-वाहनादि सम्बन्धी सुखों की प्राप्ति होती है।

(3) मिथुन, तुला तथा **कुम्भ राशि** पर **लौह-पाद (पाया)** होने से जातक को आर्थिक व पारिवारिक परेशानियां अधिक होंगी। स्वास्थ्य में गड़बड़ तथा तनाव एवं उलझनें बढ़ेंगी। दुर्घटना से चोटादि का भय, व्यवसाय में विघ्न-बाधाएँ होंगी। प्रयत्न करने पर भी लाभ कम व खर्च अधिक रहेगा।

(4) सिंह, मकर तथा **मीन** राशियों पर **सुवर्ण-पाद (पाया)** होगा, जिससे जातकों को इस अवधि में संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहे। पारिवारिक एवं व्यवसायिक उलझनें अधिक होंगी। शत्रु एवं रोग भय, मानसिक तनाव अधिक रहे। वृथा खर्च एवं कलह-क्लेश भी अधिक रहे।

✤ मकर राशिगत शनि का द्वादश राशियों पर प्रभाव ✤

(24 जनवरी, 2020 ई. से संवतान्त तक)

मेष–राशि से **शनि दशमस्थ** होने से व्यवसाय एवं गृह सम्बन्धी कठिन आर्थिक परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा। परन्तु **पाया ताम्र** होने तथा गुरु की विशेष पंचम शुभ दृष्टि रहने से विविध अड़चनों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। शुभ एवं मङ्गल कार्यों पर खर्च भी होंगे।

वृष–राशि को शनि **नवमस्थ** होने से भाग्योन्नति में विघ्न एवं विलम्ब पैदा होंगे। खर्च अधिक, व्यापार में लाभ कम, निकटस्थ भाई-बन्धुओं से मतान्तर हों। परन्तु **पाया रजत** होने तथा ता. 2 से 28 फर. तक शुक्र उच्चस्थ रहने से आत्म एवं संकल्प-शक्ति प्रबल रहे तथा निज पुरुषार्थ के बल पर कुछ कार्यों में सफलता मिलेगी।

मिथुन–राशि को शनि **अष्टमस्थ** (ढैय्या के कारण) होने से अशुभफली होगा। राहु का संचार भी इस राशि पर रहने से प्रत्येक कार्य में विघ्न-बाधाएं व विलम्ब रहेंगे। रोग एवं शत्रु भय, पारिवारिक कलह, तनाव तथा वृथा खर्च भी रहेंगे।

कर्क–राशि को शनि **सप्तमस्थ** होने से परिवार एवं व्यवसाय सम्बन्धी परेशानियां अधिक होंगी। ता. 7 फर. से संवतान्त तक मंगल की नीच दृष्टि रहने से भी क्रोध व तनाव अधिक रहे। परन्तु इस राशि को शनि-पाद ताम्र होने से बीच-बीच में लाभ के अवसर प्राप्त होते रहेंगे।

सिंह–शनि **षष्ठ स्थान** में संचार करने तथा सुवर्ण पाद होने से कठिन एवं विपरीत परिस्थितियों का सामना रहेगा। परन्तु गुरु की दृष्टि रहने से बिगड़े हुए कार्यों में कुछ सुधार होगा तथा निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे।

कन्या–शनि **पंचमस्थ** होने से पूज्य होगा। उच्च विद्या प्राप्ति में बाधाएँ उत्पन्न हों। स्त्री को कष्ट एवं सन्तान सम्बन्धी गुप्त चिन्ता हो। कार्यों में संघर्ष के बाद सफलता मिले। परन्तु शनि का रजत-पाया होने से बीच-बीच में धन-लाभ, विदेश गमन, भूमि-वाहनादि सुखों की भी प्राप्ति होगी।

तुला–शनि **चतुर्थ** होने (ढैय्या के कारण) से संघर्ष धन-हानि, तनाव आदि अशुभ फल घटित होंगे। शनि का पाया भी लौह होने से व्ययकारी एवं घरेलू व व्यवसाय में उलझनें व तनाव देगा।

वृश्चिक–राशि को शनि **तृतीयस्थ** होने से धन-लाभ, मकान, वाहनादि सुख-सुविधाओं एवं पुरुषार्थ में वृद्धि होगी। पाया भी ताम्र होने से लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। कुछ सोची हुई योजनाओं में कामयाबी, धर्म-कर्म में रुझान एवं गृह में कोई शुभ मंगल-कार्य सम्पादित होने के योग हैं।

धनु–राशि को शनि **द्वितीयस्थ** रहने से शनि साढ़ेसाती का प्रभाव अभी रहेगा। केतु के संचार से भी घरेलू एवं आर्थिक उलझनें, आय कम व खर्च अधिक रहेंगे। परन्तु इस राशि पर शनि-पाद रजत होने से उलझनों के बावजूद धन लाभ एवं भूमि, वाहन आदि सुखों की प्राप्ति होती रहेगी।

मकर–राशि को लग्न भाव पर ही **शनि-साढ़ेसाती** होने से अत्यन्त संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहे, बनते कार्यों में विघ्न, मानसिक तनाव, भाई-बन्धुओं से विरोध रहेगा। शनि-पाद भी सुवर्ण होने से संघर्ष व तनाव अधिक रहे। स्वास्थ्य सम्बन्धी सावधानी बरतें।

कुम्भ–राशि से शनि **द्वादशस्थ** (शनि-साढ़ेसाती) होने से परिवार एवं व्यवसाय सम्बन्धी दौड़-धूप, वृथा परिश्रम एवं खर्च भी बहुत अधिक रहें। शनि का पाया भी लौह होने से मानसिक परेशानी एवं दुर्घटना से चोटादि का भय होने के योग हैं।

मीन–राशि से शनि **एकादशस्थ** (लाभ) स्थान में होने से परिश्रम के बाद धन लाभ व उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। तृतीय दृष्टि के कारण स्त्री, सन्तान एवं सवारी आदि की भी चिन्ता रहेगी। शनि-पाद भी सुवर्ण होने से धन लाभ मध्यम तथा खर्च अधिक होंगे।

✡ शनि साढ़ेसाती एवं ढैय्या सम्बन्धी विशेष उपाय ✡

शनि साढ़ेसाती अथवा शनि ढैय्या का फल सदा अनिष्टकारी ही होगा–ऐसा आवश्यक नहीं। **ध्यान रहे,** शनि सभी राशियों पर एक जैसा प्रभाव नहीं करता है, बल्कि स्वराशि, उच्च-मित्रादि स्थिति से एवं शुभाशुभ दृष्टियों के प्रभावस्वरूप इसके फल में न्यूनाधिक अन्तर पड़ना भी सम्भव है। जन्मकुण्डली एवं नवांश में शनि की स्थिति अच्छी हो एवं जातक की ग्रह-दशा भी शुभ हो, तो शनि की साढ़ेसति या ढैय्या का अशुभ प्रभाव भी अपेक्षाकृत कुछ कम होगा।

इसके अतिरिक्त वृष, मिथुन, कन्या, तुला, मकर या कुम्भ राशि पर शनि की स्थिति या दृष्टि शुभ, लाभदायक एवं योगकारक भी हो सकती है। किसी विशेष राशि पर शनि साढ़ेसाती का विचार करते समय उस राशि पर अन्य ग्रहों की स्थिति, दृष्टि आदि का प्रभाव, सुवर्णादि पाया का अवश्य विचार करना चाहिए।

उपाय—शास्त्रों में प्रतिपादित उपायों को विधिपूर्वक करने से अवश्य लाभ पहुँचेगा।

(1) प्रत्येक शनिवार को शनि के बीज मन्त्र का संकल्पपूर्वक पाठ करें। कम-से-कम 3 माला अवश्य करें। पाठ उपरान्त निम्न शनि स्तोत्र का पाठ करना शुभ होगा-

नमः कृष्णाय नीलाय शितिकण्ठनिभाय च।
नमः कालाग्निरूपाय कृतान्ताय च वै नमः॥ (पद्मपुराणोक्त)

—सम्पूर्ण स्तोत्र के लिए देखें हमारी पुस्तक अनिष्ट ग्रह

(2) शनिवार से शुरु करके लगातार 43 दिन तक श्रीहनुमान मन्दिर में सिंदूर, चमेली का तेल, लड्डू और 1 नारियल चढ़ाना। श्रीसुन्दरकाण्ड का पाठ करने के पश्चात् श्रीहनुमान चालीसा तथा श्रीहनुमानष्टक का पाठ करने से शनि शुभ फल प्रदान करने लगेगा तथा अरिष्ट की शान्ति होगी।

(3) शनिवासरी अमावस्या हो, तो उस दिन सायं सूर्यास्त के बाद शनि पूजन, मन्त्र जाप एवं स्तोत्र पाठ करना विशेष कल्याणप्रद होगा।

(4) श्रवण नक्षत्र में शनिवार के दिन काले रंग के धागे में शमी की अभिमंत्रित जड़ धारण करने से, शनि से सम्बन्धित वस्तुएं तथा तेल, लोहा, काले-तिल, कुलथी या काली मसूर की दाल, काला जूता, कस्तूरी आदि दान करने से भी शनि के अशुभ फल में कमी आती है।

(5) पक्षियों को दाना चुगाना, अपनी छाया (परछाई) देखकर शनिवार के दिन तेल का दान, महामृत्युञ्जय मंत्र का शुद्ध उच्चारण के साथ निष्ठापूर्वक जाप, निम्न शनि लघु स्तोत्र का पाठ तथा '**शनि वज्र-पञ्जर कवच**' का पाठ सर्वाधिक उपयुक्त माना गया है।

शनि साढ़ेसाती, ढैय्या एवं शनि पाया के अशुभ फल की शान्ति के लिए शनि के बीज मन्त्र या वैदिक मन्त्र की 23 हज़ार की संख्या में विधिपूर्वक जप करना, तदुपरान्त दशमांश संख्या में हवन करना या करवाना कल्याणकारी रहता है। शनिवार का व्रत रखना, उड़द, सप्तधान्यादि दान, कृष्ण वस्त्र, शिव उपासना, शनि स्तोत्र तथा शनि से सम्बन्धित अन्य वस्तुओं का दान करने से लाभ होता है। इसके अतिरिक्त शुभ मुहूर्त में नीलम एवं विधिपूर्वक निर्मित **शनि यन्त्र** धारण करना भी लाभप्रद रहता है।

शनि का बीज मन्त्र—"*ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः।।*"

शनि का वैदिक मन्त्र—

"*ॐ शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये, शं योरभिस्रवन्तु नः॥ शं नमः॥*"

शनि लघु स्तोत्र—

"ॐ नमस्ते कोणसंस्थाय पिङ्गलाय नमोऽस्तु ते। नमस्ते बभ्रुरूपाय कृष्णाय च नमोऽस्तुते॥ नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चान्तकाय च। नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते शौरये विभो॥ नमस्ते मन्दसंज्ञाय शनैश्चर नमोऽस्तु ते। प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च॥"

(धर्मसिन्धु)

प्रतिदिन प्रातःकाल भगवान शिव की पूजनोपरान्त पीपल वृक्ष के समीप इस स्तोत्र का पाठ करके कच्ची लस्सी में काले तिल डालकर वृक्ष के मूल में लस्सी चढ़ाना तथा सायंकाल को तैल का दीपक जलाकर प्रार्थना करने से शनि-जनित अरिष्टों की शान्ति होती है।

शनि सम्बन्धित अधिक उपायों एवं जानकारी के लिए पं. पन्ना लाल ज्योतिषी कृत '**अनिष्ट ग्रहों के चमत्कारी उपाय**' पुस्तक मंगवाकर पढ़ें। मूल्य-200 रु.

गुरु का वृश्चिक एवं धनु राशिस्थ गोचरफल-संवत् २०७६

गत वि. संवत् २०७५ के अन्तिम दिनों में अर्थात् ता. 29 मार्च, 2019 ई. को गुरु देव (वृहस्पति) ने धनु राशि में प्रवेश किया था। नव वि. संवत् २०७६ में 10 अप्रैल, 2019 ई. को गुरु वक्री होकर **ता. 22 अप्रैल** की रात्रि 25घं.-02मि. पर पुनः **वृश्चिक राशि** में प्रवेश करेंगे।

तदुपरान्त वृश्चिक राशिगत ही 11 अगस्त को मार्गी होकर 5 नवम्बर, 2019 ई. को प्रातः 5 बजकर 16 मिनट पर पुनः धनु राशि में प्रवेश करेंगे तथा संवतान्त तक **धनु राशि** में ही संचार करेंगे।

वक्री मार्गी—10 अप्रैल, 2019 ई. को धनु राशिगत वक्री होकर 11 अगस्त, 2019 ई. को वृश्चिक राशिगत मार्गी होंगे।

ध्यान रहे, 10 अप्रैल से 10 अगस्त के मध्य गुरु वक्री रहने तथा दिसम्बर, 2019 ई. से जनवरी, 2020 ई. तक अतिचार गति से धनु राशिगत संचार करने एवं च शनि भी अप्रैल से 17 सितं. तक वक्री होकर धनुराशिगत संचार करेगा। शास्त्रकारों के अनुसार शनि आदि क्रूर ग्रह वक्री हो और बृहस्पति आदि सौम्य ग्रह अतिचार गति को प्राप्त हों, तो उस काल में अशुभ फल घटित होते हैं-

यदा क्रूर ग्रहो वक्री हि अतिचारी तु सौम्यकः।
पीडा-व्याधि भयं तत्र दुर्भिक्षं राज्य विग्रहम्॥

अर्थात् जब कोई शनि आदि क्रूर ग्रह वक्री हो तथा गुरु आदि सौम्य ग्रह अतिचारी होकर संचार करे, तो उस अवधि में देश में कहीं दुर्भिक्ष अर्थात् उपभोग्य वस्तुओं की कमी हो, आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में अत्यधिक तेजी, लोगों में क्लिष्ट रोगों का भय, अशान्ति एवं दुःखों का बाहुल्य रहे। किसी राज्य में छत्रभंग (सत्ता-परिवर्तन), उपद्रव, लूटमार एवं हिंसक घटनाएँ घटित होने का भय रहे। लोगों में विक्षोभ, भय एवं क्रोध की भावना रहे।

गतवर्षीय संवत् २०७५ की पंचांग में हम गुरु का वृश्चिक राशि में गोचरफल लिख चुके हैं, परन्तु नवीन पाठकों की सुविधा हेतु पुनः मुद्रित कर रहे हैं-

✤ वृश्चिक राशिस्थ गुरु का शुभाशुभ फल-सं. २०७६ ✤

(22 अप्रैल से 4 नवम्बर, 2019 ई. तक)

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
अष्टमस्थ गुरु होने से आय कम, खर्च अधिक, ऋण-रोग एवं घरेलु उलझनें बढ़ेंगी।	सप्तम गुरु से विशेष परिश्रम व विघ्नों के बाद कार्य-सिद्धि, धन-लाभ, भाग्य उन्नति, तीर्थ यात्रा हो।	षष्टस्थ गुरु से रोग व शत्रु-भय, निज बन्धु से विरोध रहे। आय कम खर्च अधिक रहे।	पंचमस्थ गुरु होने से भूमि-वाहनादि सुख हो, उच्च विद्या में सफलता, विवाहादि सुखों की प्राप्ति, श्रेष्ठजनों से सम्पर्क धर्म-कर्म में रुचि रहे।	चतुर्थस्थ गुरु होने से वृथा दौड़-धूप व खर्च अधिक रहे। धन वाहन सम्बन्धी परेशानी, चोटादि का भय है।	तृतीस्थ गुरु होने से आय कम व आकस्मिक खर्च, शरीर कष्ट व घरेलू उलझनों के कारण तनाव बढ़े। स्त्री सुख यथेष्ठ।	अचानक धन लाभ के चाँस हों। भाग्य वृद्धि, प्रिय व श्रेष्ठजन से सम्पर्क दीर्घ यात्रा के योग, धार्मिक कार्यों की ओर रुचि रहे।	लग्नस्थ गुरु पूज्य है, संघर्ष व उलझनों के बाद निर्वाह योग्य धन लाभ खर्चे की अधिकता, परिवार वैमनस्य।	द्वादशस्थ गुरु होने से आय कम व खर्च अधिक रहें, बनते कार्यों में विलम्ब, धर्म-कर्म में रुझान, शुभ कार्यों पर खर्च हो.	धन-सम्पदा का लाभ, भाग्य-उन्नति, प्रिय मिलन, व्यय अधिक, किसी नवीन कार्य की योजना बनेगी।	गुरु दशमस्थ होने से धोखा मिलने के संकेत हैं, आय कम व खर्च अधिक, परिवार में कलह, तनाव व चिन्ता हो।	गुरु भाग्यस्थ होने से बिगड़े कार्यों में कुछ सुधार, भूमि-वाहनादि का सुख मिले, प्रियबन्धु से मिलाप, सन्तान सम्बन्धी सुख।

विशेष ध्यातव्य—वृश्चिक राशि पर संचार के समय गुरु की इस राशि (वृश्चिक) पर मित्र स्थिति, **मीन राशि** पर स्वगृही तथा कर्क राशि पर स्वोच्च दृष्टि एवं च **धनु राशि** पर संचार के समय धनु राशि पर स्वगृही स्थिति, **मेष** तथा सिंह राशि पर मित्र दृष्टियां रहेंगी। फलस्वरूप इन राशियों से सम्बन्धित जातकों को उच्च-विद्या में सफलता, विवाह-सन्तान सुख, विदेश योग व धन-सम्पदा की प्राप्ति भाग्योन्नति, उच्च प्रतिष्ठित लोगों से सम्पर्क, धार्मिक कार्यों में रूचि आदि शुभ फल भी घटित होने की सम्भावनाएँ होंगी।

गुरु का कारकत्व—गुरु पति-सुख, धर्म-आध्यात्म, सन्तान, पुत्र, विद्या, विवेक-बुद्धि, बड़ा भाई, सुवर्ण, ज्योतिष आदि विद्याओं का कारक माना जाता है। शरीर में लिवर, हृदयकोश, पाचन प्रक्रिया, कान आदि का भी कारक माना जाता है। कुण्डली में गुरु अशुभ हो अथवा अशुभ ग्रह द्वारा दृष्ट या युक्त हो, तो गुरु सम्बन्धित सुख में कमी करता है।

हमारे कार्यालय से छपी '**ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड) भाग-1**' में गोचर विचार पढ़ना चाहिए।

गुरु के अशुभ फल की शान्ति के लिए दान—गुरु की शुभता बढ़ाने के लिए वृद्ध ब्राह्मण को भोजन कराना, गुरुवासरी अमावस्या तथा गुरुवार का व्रत रखना, पुखराज धारण करना, पीले वस्त्र, चने की दाल, कांस्य पात्र, सुवर्ण, शक्कर, केले, लड्डुओं,

✤ धनु राशिस्थ गुरु का शुभाशुभ फल-सं. २०७६ ✤

(संवतारम्भ से 22 अप्रैल, 2019 ई. तक, पुनः 5 नवं., 2019 से संवातन्त तक)

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
गुरु भाग्यस्थ होने से गत किए गए कार्यों में सफलता हो, भूमि-वाहन आदि सुखों की प्राप्ति हो, धन लाभ के साथ खर्च भी बढ़ेंगे।	गुरु अष्टम में होने से बनते कार्यों में विघ्न रहेंगे। आय कम व खर्च अधिक होंगे। घरेलू उलझनों के कारण रोग भय व अशान्ति हो।	गुरु सप्तम में होने से अत्यन्त संघर्ष के बाद आय के साधन बनेंगे। खर्च अधिक तथा कार्यक्षेत्र में दौड़-धूप रहे।	गुरु छटे होने से आय कम व खर्च अधिक होंगे, रोग व शत्रु से भय हो। घरेलू उलझनों के कारण मन परेशान रहे।	गुरु पंचम में होने से विद्या एवं कार्यों में सफलता, वाहनादि सुखों में वृद्धि, धन लाभ के अवसर मिलेंगे।	गुरु चतुर्थस्थ होने से विशेष संघर्ष के बाद किंचित् धन लाभ हो, गृह-कलह व खर्च के कारण मन अशान्त हो।	गुरु तृतीय होने से कठिनता से धन प्राप्ति हो। आय कम व खर्च अधिक रहे। शरीर कष्ट, रोग भय।	धन लाभ व उन्नति के अवसर, धर्म कार्यों पर खर्च अधिक हो, गत किए कार्यों में सफलता हो।	लग्नस्थ गुरु पूज्य होता है, परन्तु यहाँ स्वराशि-गत है। संघर्ष के बावजूद निर्वाह योग्य धन लाभ, परन्तु खर्चों में अधिकता, धर्म-कर्म में रूचि रहे।	द्वादश गुरु होने से वृथा दौड़-धूप रहे, आय कम-खर्च अधिक हों, कार्यों में बाधाएँ, रोग व कष्ट भय, गुप्त चिन्ताएँ	गुरु लाभ स्थान न होने से किसी श्रेष्ठ जन की मदद से धन लाभ के अवसर, विद्या या कार्यक्षेत्र में सफलता मिले।	गुरु दशमस्थ होने से विशेष कठिना-ईयों के बाद ही गुज़ारे योग्य आय, खर्च अधिक रहें। तनाव व रोग-भय।

धार्मिक ग्रन्थ आदि का दान यथाशक्ति करने तथा गुरु के बीज मन्त्र अथवा गुरु गायत्री मंत्र का जाप 19,000 की संख्या में विधिपूर्वक करना शुभ एवं फलदायक रहेगा। गुरु धनु और मीन राशि का स्वामी है। पति सौख्य की प्राप्ति के लिए स्त्रियों को गुरु के बीज मंत्र, बृहस्पति अष्टोत्तर शतनाम, व्रत, पुखराज धारण तथा यथाशक्ति दान करना लाभदायक रहता है। प्रत्येक गुरुवार केसर का तिलक भी लगाना चाहिए।

गुरु गायत्री मन्त्र—

''ॐ अंगिरो जाताय विद्महे वाचस्पतये धीमहि तन्नो गुरुः प्रचोदयात्।।''

गुरु बीज मन्त्र—''ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः।।''

गुरु का वैदिक मन्त्र—**ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।।** (जप संख्या १९०००)

राहु-केतु का शुभाशुभ गोचरफल—संवत् २०७६

गत वि. संवत् २०७५ में ही 7 मार्च, 2019 ई. को मकरस्थ चंद्रमा के समय राहु मिथुन राशि में तथा केतु धनु राशि में प्रातः ९घं.-20मिं. पर प्रविष्ट हुए थे तथा वि. संवत् २०७६ के अन्त तक (24 मार्च, 2020 ई. तक) राहु मिथुन एवं केतु धनु में ही रहेंगे।

✤ मिथुन राशिस्थ राहु का गोचरफल-सं. २०७६ ✤

(7 मार्च, 2019 ई. से वि. संवत् 2076 के अन्त तक के लिए)

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
अचानक धन लाभ, बिगड़ा, काम बनें, विद्या में सफलता, प्रिय से मुलाकात, विदेश गमन की योजना बने।	आय अल्प व खर्च अधिक रहे, घरेलु उलझनों से तनाव, रोग भय।	किसी निकट बन्धु से कलह आर्थिक परेशानी हो। वृथा दौड़-धूप अधिक रहे। खर्चों की भी अधिकता रहे।	अपव्यय रहे, व्यर्थ की दौड़-धूप अधिक रहे, बनते कार्यों में अड़चनें, मन अशान्त एवं अस्थिर रहे।	भूमि-सवारी आदि, सुखों की प्राप्ति, बिगड़े काम बनें, प्रयासों में किंचित सफलता, विदेश यात्रा का विचार बने।	आय अल्प किन्तु खर्च बहुत हों, कार्य-व्यवसाय एवं घरेलू उलझनों के कारण तनाव बढ़े। कार्यों में विघ्न।	घरेलू उलझनों के बावजूद गुजारे योग्य आय के साधन बनें। बिगड़े कार्यों में कुछ सुधार, वाहनादि प्राप्ति हो।	आय कम व संघर्ष अधिक रहे। शरीर कष्ट व शत्रु भय रहे। अचानक धन-लाभ के अवसर भी मिलेंगे।	आय के बारे में परेशानी हो, शरीर कष्ट व तनाव बढ़े। परिवार या पति/पत्नी में मन-मुटाव हो।	विगत किए गए प्रयासों में सफलता मिले, भाग्य में उन्नति व लाभ, शुभ यात्रा एवं परिवार में मेल-मिलाप हो।	आर्थिक उलझनों के कारण घरेलू परेशानियाँ गुप्त चिन्ताएं, रोगभय, संतान व विद्या सम्बन्धी कार्यों में विघ्न-बाधाएं।	आय कम व खर्च अधिक रहे, कार्य-व्यवसाय में विघ्नों के बाद सफलता मिले, घरेलू उलझनें बढ़ेंगी।

✤ धनु राशिस्थ केतु का गोचरफल-सं. २०७६ ✤

[7 मार्च, 2019 ई. से वि. संवत् 2076 के अन्त (24 मार्च, 2020 ई.) तक]

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
भाग्य-उन्नति में विघ्न, शरीर कष्ट, दुर्घटना में चोट भय, आय में कमी वृथा खर्च बढ़े।	धन-हानि, रोग एवं शत्रु भय, परिवार व सेहत सम्बन्धी चिन्ता, खर्च अधिक रहे।	स्त्री व पारिवारिक चिन्ता, किसी से वैमनस्य, निकट-स्थ से धोखा होने का भय है।	पराक्रम से धन लाभ हो, बिगड़े कार्यों में कुछ सुधार, खुश-खबरी मिले, कार्य-सफलता मिले।	लाभ कम व खर्च अधिक रहे। घरेलू कलह-क्लेश के कारण मन अशान्त, विदेश गमन के योग बनेंगे।	संघर्ष के बाद गुजारे योग्य आय के साधन बनेंगे, सवारी आदि सुखों की प्राप्ति परन्तु गृह-कलह व आर्थिक परेशानियों से मन अशान्त रहे।	बिगड़े कार्यों में सुधार, परिश्रम से धन लाभ अच्छा, वाहन सुख मिले।	वृथा दौड़-धूप अधिक हो, प्रयत्न करने पर भी लाभ कम व खर्च अधिक रहे, घरेलू उलझनें बढ़ें।	शरीर कष्ट व तनाव रहे, बनते कार्यों में विघ्न, खर्च अधिक हो। पति/पत्नी में तनाव।	रोग व शत्रु भय, अपने भी परायों जैसा व्यवहार रखें। खर्च अधिक रहे, गुप्त चिन्ताएं रहें।	सुख-साधनों की प्राप्ति व वृद्धि, परन्तु धन लाभ साधारण, तनाव व संघर्ष अधिक रहे।	पुरुषार्थ में वृद्धि, कोई मंगल कार्य हो, लाभ की अपेक्षा खर्च अधिक रहे, अपने भी परायों जैसा व्यवहार करें, परेशा-नियां बढ़ें।

अनिष्ट राहु की शान्ति हेतु तिल, तेल, भूरे रंग का वस्त्र, कम्बल, नारियल, सप्तधान्य, सतनाजा, कृष्ण पुष्प आदि का दक्षिणा सहित दान करना कल्याणकारी रहता है। जन्मपत्री अनुशीलन के बाद गोमेध भी धारण किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त राहु के बीज मन्त्र '**ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः**' का 18 हजार की संख्या में जाप करें। गजेन्द्र मोक्ष स्तोत्र का पाठ भी शुभ है। राहु का गायत्री मन्त्र–**ॐ शिरोरूपाय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो राहुः प्रचोदयात्॥**

केतु के अरिष्ट की शान्ति हेतु लोहा, सप्तधान्य, लाल-काला वस्त्र, नारियल, कम्बल, कस्तूरी, बेल, कुष्ठाश्रम आदि में भोजन, क्षीर का दान तथा जन्मपत्री विश्लेषण के पश्चात् लहसनिया नग धारण करना कल्याणकारी रहता है। केतु के बीज मन्त्र '**ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः**' की 17 हजार की संख्या में जाप करना तथा संकटनाशक श्रीगणेश स्तोत्र एवं अपराजिता स्तोत्र का पाठ करना शुभ है। केतु की शान्ति के लिए गायत्री मन्त्र–

ॐ पद्म पुत्राय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो केतुः प्रचोदयात्॥

अनिष्ट ग्रहों की शान्ति के सम्बन्ध में और अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारी प्रकाशित पुस्तक **अनिष्ट ग्रहों के चमत्कारी उपाय/टोटके** मँगवाकर पढ़ें। **मूल्य–200/-**

नक्षत्रानुसार पाया फल जानना

* आर्द्रा, पुर्न., पुष्य, अश्ले., मघा, पू.फा., उ.फा., हस्त, चित्रा, स्वाती–इन दश नक्षत्रों के मध्य किसी जातक का जन्म हो, तो चान्दी का पाया।
* विशा., अनु., ज्ये., मूल, पू.षा., उ.षा., श्रवण, धनि., शतभिषा के मध्य जन्म हो, तो ताम्बे का पाया।
* रेवती, अश्वि, भर., कृति, रोह, मृग = सोना (सुवर्ण)
* पू.भा., उ.भा. = लौह पाया

आर्द्रा दश रूपाणां, विशाखा नवताम्रका। रेवती षट् हेमश्च, शेषा द्वौ लौह-प्रकीर्तिता।।

चान्दी एवं ताम्र के पाया शुभ एवं लाभदायक तथा सुवर्ण एवं लौह के पाया धन हानि एवं कष्टकारी फल देते हैं।

कुछ विद्वानों एवं मुहूर्त ग्रन्थों अनुसार जन्म-राशि से चन्द्रस्थिति तक गणना करने पर विभिन्न स्थानों के अनुसार चन्द्रमा के सुवर्णादि पाद का विचार किया जाता है। यथा–

स्थान	१,६,११	२,५,९	३,७,१०	४,८,१२
चन्द्रपाद	स्वर्ण	रजत	ताम्र	लौह
फल	सौभाग्य	शुभत्व	दारिद्रय	मृत्यु

जन्मराशि से इन्हीं स्थानों पर अन्य ग्रहों के भी चरणों का विचार किया जाता है परन्तु फल भिन्न-भिन्न रहता है–"**सौरी लोहे शुभः प्रोक्तो हेमपादे च वै गुरुः। रजते चंद्रशुक्रौ च, ग्रहाश्चान्ये च ताम्रके।।**"

अर्थात् शनि का लौह पाद, बृहस्पति का सुवर्णपाद, चंद्र-शुक्र का रजत पाद तथा अन्य ग्रहों (सु.मं.बु.श.के.) के ताम्र पाद श्रेष्ठ होते हैं।

दिनमान व रात्रिमान से मध्याह्न, अपराह्न, प्रदोष काल आदि जानना

भारतीय भूखण्ड में दिनमान का विस्तार लगभग 9/30 घं. मिंट से लेकर 14-30 घं. मि. के मध्य में पड़ता है। इसीलिए 9/30 घं. मिं. दिनमान से लेकर 14/30 घं. मिं. के दिनमान के मध्यान्तर में आने वाले मध्याह्न, अपराह्न आदि के आरम्भ व समाप्ति काल जानने की प्रक्रिया लिख रहे हैं। मध्याह्न तथा अपराह्न काल के प्रारम्भ एवं समाप्ति काल के घण्टा मिनट को अपने नगर के सूर्योदय में अलग-अलग जमा कर देने से क्रमशः मध्याह्न एवं अपराह्न काल का प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल पता चल जाएगा।

उदाहरण–मान लीजिए हमें जम्मू नगर में 31 अग. 2018 को मध्याह्न का आरम्भ, समाप्ति व मध्यम काल जानना है, तो 31 अग. के सूर्योदय (6/08) को उस दिन के सूर्यास्त (18-53 घं. मिं.) में से घटा देने पर हमें 12 घं. 45 मिनट का दिनमान प्राप्त हुआ। आगे दी गई तालिका में दिनमान घं. 12/45 मि. के आगे दाईं ओर देखने से हमें मध्याह्न का आरम्भ 5 घं. 6 मिं. मिला। इसको उस दिन के सूर्योदय (6-08) में जमा कर देने से हमें मध्याह्न का प्रारम्भ 11 घं. 14 मिं. तथा उसी दिनमान के सामने समाप्ति काल (7-39) में सू.उ. जमा करने से हमें 31 अग. के मध्याह्न का समा. काल (13-47) प्राप्त हुआ। आरम्भ व समाप्ति के समयान्तर के अर्ध भाग (10/17) को मध्याह्नारम्भ (11-14) में जमा कर देने से हमें मध्याह्न का मध्य काल प्राप्त होगा।

इसी भान्ति अभीष्ट दिनमान की दाईं तरफ चौथे कालम में अपराह्न के आरम्भ तथा समाप्ति के घं.मिं. उस दिन के स्थानीय सूर्योदय में अलग-अलग जोड़ देने पर अपराह्न का आरम्भ व समाप्ति काल (भा. स्टैं. टा.) मालूम हो जाएगा।

सायाह्नकाल का प्रारम्भ और समाप्ति जानने के लिए भी दी गई तालिकानुसार दिनमान देखकर उसके सामने लिखे अनुसार प्रारम्भ और समाप्ति (घं. मिं.) काल में अभीष्ट दिन को सूर्योदय जोड़ देने से सायाह्न-काल का प्रा. व समाप्ति निकल आएगी।

दिनमान	मध्याह्न		अपराह्न		सायाह्न	
	प्रारम्भ	समाप्ति	प्रारम्भ	समाप्ति	प्रारम्भ	समाप्ति
घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
9 30	3 48	5 42	5 42	7 36	7 36	9 30
9 45	3 54	5 51	5 51	7 48	7 48	9 45
10 00	4 00	6 00	6 00	8 00	8 00	10 00
10 15	4 06	6 9	6 9	8 12	8 12	10 15
10 30	4 12	6 18	6 18	8 24	8 24	10 30
10 45	4 18	6 27	6 27	8 36	8 36	10 45
11 00	4 24	6 36	6 36	8 48	8 48	11 99
11 15	4 30	6 45	6 45	9 00	9 00	11 15
11 30	4 36	6 54	6 54	9 12	9 12	11 30
11 45	4 42	7 03	7 03	9 24	9 24	11 45
12 00	4 48	7 12	7 12	9 36	9 36	12 00

दिनमान	मध्याह्न		अपराह्न		सायाह्न	
	प्रारम्भ	समाप्ति	प्रारम्भ	समाप्ति	प्रारम्भ	समाप्ति
घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
12 15	4 54	7 21	7 21	9 48	9 48	12 15
12 30	5 00	7 30	7 30	10 00	10 00	12 30
12 45	5 06	7 39	7 39	10 12	10 12	12 45
13 00	5 12	7 48	7 48	10 24	10 24	13 00
13 15	5 18	7 57	7 57	10 36	10 36	13 15
13 30	5 24	8 06	8 06	10 48	10 48	13 30
13 45	5 30	8 15	8 15	11 00	11 00	13 45
14 00	5 36	8 24	8 24	11 12	11 12	14 00
14 15	5 42	8 33	8 33	11 24	11 24	14 15
14 30	5 48	8 42	8 42	11 36	11 36	14 30
15 00	6 00	9 00	9 00	12 00	12 00	15 00

–प्रदोषकाल ज्ञात करना–

स्थानीय सूर्यास्त के बाद मध्यमान से तीन मुहूर्त्त (6 घड़ी), अर्थात् 2 घण्टे 24 मिनट तक प्रदोष काल होता है–"**त्रिमुहूर्त्त प्रदोषःस्यात् भानौऽस्तं गते सति।**"

प्रदोषकाल में सूर्यास्त के बाद शिवपूजनार्चनादि तथा ब्राह्मण भोजन का विधान है। कुछ विद्वान् सूर्यास्त के बाद **2 घड़ी** (1 घण्टा, 12 मिनट) तक के काल को प्रदोष मानते हैं। सम्भवतः यह काल प्रदोष काल में शिवपूजन में ही विशेष प्रशस्त होने से ग्राह्य माना गया है। **रात्रिमान** में 15 मुहूर्त्तों में से प्रथम मुहूर्त्त का स्वामी भी भगवान् शिव ही हैं।

सामान्य रूप में सूर्योदय से 4 से 5 घड़ी पूर्व **उषाःकाल** होता है। इसे **ब्राह्म मुहूर्त्त** भी कहते हैं। इस मुहूर्त में श्री भगवान् का चिन्तन, पूजा, ध्यान पाठ आदि करने का विशेष फल होता है।

अरूणोदय–सूर्योदय से 4 घड़ी पूर्व **अरूणोदय** काल होता है, इसमें भी स्नान, जप, पुण्य श्लोकों व स्तोत्रों का पाठ आदि करने का विशेष फल होता है।

रात्रिमान	प्रदोषकाल		निशीथकाल		महानिशीथकाल		अरूणोदयकाल	
	प्रारम्भ	समाप्ति	प्रारम्भ	समाप्ति	प्रारम्भ	समाप्ति	प्रारम्भ	समाप्ति
घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
9 30	सूर्यास्त	1 54	1 54	3 48	3 48	5 42	8 14	9 30
9 45	सूर्यास्त	1 57	1 57	3 54	3 54	5 51	8 27	9 45
10 00	सूर्यास्त	2 00	2 00	4 00	4 48	6 00	8 40	10 00
10 15	सूर्यास्त	2 03	2 03	4 06	4 06	6 09	8 53	10 15
10 30	सूर्यास्त	2 06	2 06	4 12	4 12	6 18	9 06	10 30
10 45	सूर्यास्त	2 09	2 09	4 18	4 18	6 27	9 19	10 45
11 00	सूर्यास्त	2 12	2 12	4 24	4 24	6 36	9 32	11 00
11 15	सूर्यास्त	2 15	2 15	4 30	4 30	6 45	9 45	11 15
11 30	सूर्यास्त	2 18	2 18	4 36	4 36	6 54	9 58	11 30
11 45	सूर्यास्त	2 21	2 21	4 42	4 42	7 03	10 11	11 45
12 00	सूर्यास्त	2 24	2 24	4 48	4 48	7 12	10 24	12 00
12 15	सूर्यास्त	2 27	2 27	4 54	4 54	7 21	10 37	12 15
12 30	सूर्यास्त	2 30	2 30	5 00	5 00	7 30	10 50	12 30
12 45	सूर्यास्त	2 33	2 33	5 06	5 06	7 39	11 03	12 45
13 00	सूर्यास्त	2 36	2 36	5 12	5 12	7 48	11 16	13 00
13 15	सूर्यास्त	2 39	2 39	5 18	5 18	7 57	11 29	13 15
13 30	सूर्यास्त	2 42	2 42	5 24	5 24	8 06	11 42	13 30
13 45	सूर्यास्त	2 45	2 45	5 30	5 30	8 15	11 55	13 45
14 00	सूर्यास्त	2 48	2 48	5 36	5 36	8 24	11 58	14 00
14 15	सूर्यास्त	2 51	2 51	5 42	5 42	8 33	12 11	14 15
14 30	सूर्यास्त	2 54	2 54	5 48	5 48	8 42	12 24	14 30
15 00	सूर्यास्त	3 00	3 00	6 00	6 00	9 00	12 50	15 00

होमादि में अग्निवास एवं फल जानना

जिस दिन को हवन करना हो, उस दिन तात्कालिक तिथि और वार सँख्या में 1 जोड़कर 4 द्वारा भाग देवें। भाग देने पर यदि **शेष 3 या शून्य (0) बचे**, तो उस दिन अग्नि का वास **पृथिवी पर** जानें, शेष 1 बचे तो अग्नि का वास **आकाश** में तथा तिथि, यदि शेष **2** बचें तो अग्नि का वास **पाताल** में जानना चाहिए। **पृथिवी** पर **अग्नि** का वास शुभ एवं कल्याणकारक होता है। **आकाश** में वास हो तो आयु का क्षय तथा पाताल में वास हो तो धन की हानि होती है। वार की गणना रविवार से तथा तिथि की गणना शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से करनी चाहिए। अग्निवास चक्र के पश्चात् गत पृष्ठों में दिए गए ग्रह मुख में आहुति चक्र का विचार करना चाहिए। **–पं. पन्ना लाल ज्यो.**

अग्निवास एवं फल जानने का चक्र (शुक्ल-पक्ष)

शुक्ल पक्ष तिथि	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
१	3 पृथ्वी (लाभ)	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय
२	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि
३	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी क्षय	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ
४	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ
५	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय
६	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि
७	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ
८	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ
९	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय
१०	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि
११	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ
१२	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ
१३	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय
१४	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि
१५	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ

अग्निवास एवं फल जानने का चक्र (कृष्ण-पक्ष)

कृष्ण पक्ष तिथि	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
१	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ
२	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय
३	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि
४	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ
५	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ
६	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय
७	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि
८	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ
९	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ
१०	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय
११	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि
१२	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ
१३	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ
१४	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय
१५	0 पृथ्वी	1 आकाश	2 पाताल	3 पृथ्वी	0 पृथ्वी	1 आकाश	2 पाताल

सूर्यादि ग्रहों के अनिष्टफल की शान्ति हेतु दान एवं जपादि मन्त्र														जप संख्या	जपकाल	जपनीय बीजमन्त्राः	हवन समिधा
सूर्य	कनक	माणिक्य	तांबा	सोना	लाल गाय	गुड़	घी	कमलादि	रक्तवस्त्र	लालचंदन	मूंगा	केशर	७०००	सूर्योदय	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	आक् काष्ठ
चन्द्र	चावल	मोती	चांदी	सोना	श्वेत बैल	मिश्री	दही	श्वेत पुष्प	श्वेतवस्त्र	श्वेतचंदन	शंख	कपूर	११०००	संध्याकाले	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः	पलाश
मंगल	मसूर	मूंगा	तांबा	सोना	लाल बैल	गुड़	घी	लाल कनेर	लालवस्त्र	लाल चंदन	केशर	कस्तूरी	१००००	सू.उ. २।१५	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	खैर
बुध	मूंग	पन्ना	कांस्य	सोना	शस्त्र	शक्कर	घी	सर्व रंग पु.	हरावस्त्र	अनेक फल	हाथीदांत	कपूर	९०००	सू.उ. ५ घड़ी	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	अपामार्ग
गुरू	पीतधान्य	पुखराज	कांस्यपात्र	सोना	अश्व	लवण श	घी	पीले पुष्प	पीतवस्त्र	पीला फल	धर्मग्रंथ	लवणशहद	१९०००	संध्याकाले	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	पीपल
शुक्र	चावल	हीरा	चांदी	सोना	श्वेत घोड़ा	मिसरी	दूध	श्वेत पुष्प	सफेदवस्त्र	सफेद चंदन	दही	सुगन्धित द्रव्य	१६०००	सू. उ. काल	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	गूलर
शनि	उड़द	नीलम	लोहा	सोना	काली गाय	कुलथी	तैल	काले पुष्प	कालावस्त्र	काले जूते	भैंस	कस्तूरी	२३०००	संध्याकाल	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	शमी
राहु	सप्तधान्य	गोमेद	सीसा	सोना	काला घोड़ा	ताम्र पात्र	तैल	कृष्ण पुष्प	नीलवस्त्र	नारियल	कंबल	खड्ग	१८०००	रात्रि	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	दूर्वा
केतु	सप्तधान्य	लसनिया	लोहा	सोना	बकरा	नारियल	तेल	धूम्र पुष्प	कालावस्त्र	शस्त्र ध्वज	कंबल	कस्तूरी	१७०००	रात्रि	ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः	कुशा
मुंथा	चावल	मोती	कांस्यपात्र	सोना	श्वेतचंदन	ऋतुपुष्प	घृत	श्वेतपुष्प	श्वेतवस्त्र	हाथीदांत	मुंथेश ग्रह.	ग्रह अनुसार	मुंथेश ग्रहानुसार	प्रातः	मुन्था स्वामी मन्त्र	

विशेष—ध्यान रहे, प्रत्येक ग्रह के दान के साथ यथाशक्ति दक्षिणा भी अवश्य देनी चाहिए। **सप्तधान्य**—गेहूँ, उड़द, मूंगी, चने, जौं, कंगनी और धान्य, चावल।

सूर्यादि ग्रहों के अरिष्ट निवारण हेतु औषधि स्नान

सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मन:शिला	पंचगव्य	बिल्व छाल	गोबर	चमेलीपुष्प	पिपरामूल	कालेतिल	लोबान	लोबान
इलायची	गोदूध	लाल पुष्प	अक्षत	पुष्प	जायफल	सूरमा	तारपीन	तारपीन
देवदारू	गोबर	हींग	मोती	श्वेत सरसों	केशर	लोबान	मोथा	तिलपत्र
केशर	गजमद	गोदनी	शहद	शहद	मूली बीज	सौंफ	गजदंत	गजदंत
खस	शंख सीप	जटामांसी	सुवर्ण	गुलर	मन:शिल	खस	कस्तूरी	छागमूत्र
रक्तपुष्प	गंगाजल	मौलसिरी	जायफल	दमयंती	इलायची	खिल्ला	बिल्वपत्र	लाल चंदन
रक्तचंदन	श्वेत चंदन	सिगरफ	पिपरामूल	मुलट्ठी	श्वेतचंदन	शतकुसुम	गंगाजल	गंगाजल
कनेर पुष्प	स्फटिक	मालकंगनी	नागकेशर	नवीनपत्ते	गंगाजल	गाँदमिश्रित	लालचंदन	कस्तूरी
मि. गंगाजल	गोमूत्र	गंगाजल	गंगाजल	गंगाजल	श्वेतकमल			

होमादि में अग्नि वास जानना

जिस दिन को होम/हवन करना हो, उस दिन की तिथि और वार की संख्या को जोड़कर १ जमा करें फिर कुल जोड़ को ४ द्वारा भाग देवें। यदि शेष शून्य (०) अथवा ३ बचें, तो **अग्नि का वास पृथ्वी** पर होगा। इस दिन होम करना कल्याणकारक होता है। यदि शेष २ बचें तो अग्नि का वास **पाताल** में होता है। इसी दिन होम करने से धन का नुकसान होता है। यदि ४ का भाग देने से १ शेष बचे तो आकाश में अग्नि का वास होगा, इसमें होम करने से आयु का क्षय होता है। **वार** की गणना **रविवार** से तथा तिथि की गणना **शुक्ल प्रतिपदा** से करनी चाहिए। तदुपरान्त ग्रह के मुख आहुति चक्र का विचार करना चाहिए।

ग्रहों के मुख में आहुति चक्र

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिनने से यदि ३ या ३ से कम की संख्या आए तो होमाहुति सूर्य के मुख में जाने, तीन से आगे की संख्या से ६ तक की संख्या में मिले, तो बुध के मुख में आहुति जानें। इसी प्रकार, निम्न क्रमानुसार सब ग्रहों में होमाहुति जानें।

ग्रह	सूर्य	बुध	शुक्र	शनि	चंद्र	मंग.	गुरु	राहु	केतु
नक्षत्र	३	३	३	३	३	३	३	३	३
फल	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ

नवग्रहों के जपनीय होमार्थ (हवन) मन्त्र

सूर्य मन्त्र—अर्क (आक) समिधा द्वारा "ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च हिरण्येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥ ॐ सूर्याय स्वाहा। इदं सूर्याय न मम॥१॥

चन्द्रमा मन्त्र—(पलाश या ढाक समिधा के साथ)—"ॐ इमं देवाऽसपत्न Ω सुवध्वम् महते क्षत्राय महते ज्येष्ठयाय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय इममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां Ω राजा। ॐ सोमाय स्वाहा॥ इदं चन्द्रमसे न मम॥२॥

भौम मन्त्र—(खैर की लकड़ी से) "ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा Ω रेता Ω सि जिन्वति स्वाहा। ॐ भौमाय स्वाहा॥ इदं भौमाय इदं न मम॥"

बुध मंत्र—(अपामार्ग की समिधा से) ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहित्वमिष्टापूर्ते स Ω सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत॥ ॐ बुधाय स्वाहा। इदं बुधाय इदं न मम॥

गुरू मन्त्र—(पीपल) ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ ॐ बृहस्पतये स्वाहा॥ इदं बृहस्पतये, इदं न मम।

शुक्र मन्त्र—(गूलर) ॐ अन्नात् परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत् क्षत्रं पयः। सोमं प्रजापतिः ऋतेन सत्यमिन्द्रियं पिवानं Ω शुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु॥ ॐ शुक्राय स्वाहा॥ इदं शुक्राय, न मम।

शनि मन्त्र—(शमी की समिधा) ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभिस्त्रवन्तु नः। ॐ शनैश्चराय स्वाहा। इदं शनैश्चराय, इदं न मम्॥

राहु मन्त्र—(दूर्वा) ॐ कयानश्चित्र आ भुवदूती सदा वृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥ ॐ राहवे स्वाहा॥ इदं राहवे इदं न मम॥

केतु मन्त्र—(कुशा से) ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजा यथाः। ॐ केतवे स्वाहा॥ इदं केतवे, इदं न मम॥

ग्रहों के गुण, वर्ण, स्वभाव, उच्च–नीच, स्व–गृही राशि आदि चक्र

नाम ग्रह	स्व-ग्रही राशि	मूल त्रिकोण	गुण	चरादि	वर्ण जाति	रंग	उच्च राशि	नीच राशि	पुरुष स्त्री	तत्त्व	कारक	संबंध	स्व-भाव	प्रकृति	धातु	रस	शरीरांग	दिशा	दृष्टि विशेष	भाग्योदय काल
सूर्य Sun	सिंह	सिंह	सत्त्व	स्थिर	क्षत्रिय	रक्त वर्ण	मेष	तुला	पुरुष	अग्नि	आत्मा	पिता	क्रूर	पित्त	सोना	तिक्त	शिर, नेत्र	पूर्व	७	२२ से २४
चन्द्र Moon	कर्क	वृष	सत्त्व	चंचल	वैश्य	श्वेत	वृष	बृश्चि.	स्त्री	जल	मन	माता	सौम्य	वातश्ले	चांदी	क्षार	बुद्धि, रक्त	पशि. उत्तर	७	२४ से २५
मंगल Mars	मेष, वृश्चिक	मेष	तम	चर	क्षत्रिय	लाल	मकर	कर्क	पुरूष	अग्नि	बल	भाई	क्रूर	पित्त	ताम्र	कटु	मज्जा	दक्षिण	७,४,८	२८ से ३२
बुध Merc	मिथुन, कन्या	कन्या	रज	द्विस्वभा	वैश्य	हरा	कन्या	मीन	नपुंसक	पृथ्वी	वाणी	बंधु/मित्र	मिश्र	त्रिधातु	कांस्य	मिश्र	त्वचा, मुख	उत्तर	७	३२ से ३६
गुरू Jup.	धनु, मीन	धनु	सत्त्व	स्थिर	ब्राह्मण	पीला	कर्क	मकर	पुरूष	आकाश	विद्या	संतान	शुभ	कफ	सोना	मधुर	चर्बी	ईशान	५७९	१६ से २४
शुक्र Ven.	वृष, तुला	तुला	रज	चर	वैश्य	सफेद	मीन	कन्या	स्त्री	जल	काम	स्त्री	शुभ	वात, कफ	चांदी	अम्ल	वीर्य	दक्षि., पूर्व	७	२६ से २८
शनि Sat.	मकर, कुम्भ	कुम्भ	तम	स्थिर	शुद्र	नीला काला	तुला	मेष	नपुंसक	वायु	संघर्ष	भृत्य	क्रूर	वात, श्ले	लोहा	कषाय	स्नायु	पश्चि.	३,७,१०	३६ से ४२
राहु Rahu	कन्या	कर्क	तम	चर	अत्यज	धूम्र	वृष	बृश्चि.	पुरुष	छाया	दु:ख	शत्रु	क्रूर	वायु	लोहा	कषाय	हड्डी	दक्षिण	७	४४ से ५०
केतु Ketu	मीन	मकर	तम	चर	शूद्र	धूम्र	बृश्चि.	वृष	पुरुष	छाया	कष्ट	बाधा	क्रूर	वायु	लोहा	कषाय	चर्म	उत्तर	७	४८ से ५०

राशियों के गुण–स्वभाव तत्त्व, शुभ रत्नादि चक्र

राशि	स्वा. ग्रह	अंग्रेज़ी नाम	वर्ण	जाति	क्रूरादि	चरादि	तत्त्व	गुण	जीवादि	समादि	दिशा	शुभ रत्न	बल समय	शरीरांग	दीर्घादि	नरादि	प्रकृति	गुण	पृष्ठोदय आदि
मेष	मंगल	Aries	लाल	क्षत्रिय	क्रूर	चर	अग्नि	रज	धातु	विषम	पूर्व	मूंगा	रात्रि	शिर	ह्रस्व	पशु	पित्त	उष्ण	पृष्ठोदय
वृष	शुक्र	Taurus	श्वेत	वैश्य	सौम्य	स्थिर	पृथ्वी	तम	मूल	सम	दक्षिण	हीरा	रात्रि	नेत्र	ह्रस्व	पशु	वात	शांत	पृष्ठोदय
मिथुन	बुध	Gemini	हरा	शूद्र	क्रूर	द्वि. स्व.	वायु	सत	जीव	विषम	पश्चि.	पन्ना	रात्रि	भुजाएँ, गला	सम	नर	वात	चंचल	शीर्षोदय
कर्क	चंद्र	Cancer	श्वेत	विप्र	सौम्य	चर	जल	रज	धातु	सम	उत्तर	मोती	रात्रि	वक्ष, फेफड़े	सम	जल चर	कफ	शांत	पृष्ठोदय
सिंह	सूर्य	Leo	लाल	क्षत्रिय	क्रूर	स्थिर	अग्नि	तम	मूल	विषम	पूर्व	माणक	दिन	मेरू, रक्त, हृदय	दीर्घ	पशु	पित्त	उष्ण	शीर्षोदय
कन्या	बुध	Virgo	मिश्रित	वैश्य	सौम्य	द्वि. स्व.	पृथ्वी	सत	जीव	सम	दक्षिण	पन्ना	दिन	पेट, नाभि	दीर्घ	नर	त्रिदोष	शीत	शीर्षोदय
तुला	शुक्र	Libra	नीला	शूद्र	क्रूर	चर	वायु	रज	धातु	विषम	पश्चि.	हीरा	दिन	गुर्दे, कमर	दीर्घ	नर	वात	उष्ण	शीर्षोदय
बृश्चिक	मंगल	Scorpio	ताम्र	विप्र	सौम्य	स्थिर	जल	तम	मूल	सम	उत्तर	मूंगा	दिन	गुप्तांग	दीर्घ	कीट	कफ	शीत	शीर्षोदय
धनु	गुरु	Sagittarius	पीला	क्षत्रिय	क्रूर	द्वि. स्व.	अग्नि	सत	जीव	विषम	पूर्व	पुखराज	रात्रि	जंघा	सम	नर पशु	पित्त	उष्ण	पृष्ठोदय
मकर	शनि	Capricor	भूरा	वैश्य	सौम्य	चर	पृथ्वी	रज	धातु	सम	दक्षिण	नीलम	रात्रि	घुटने	सम	जल पशु	वात	शीत	पृष्ठोदय
कुम्भ	शनि	Aquarius	काला	शूद्र	क्रूर	स्थिर	वायु	तम	मूल	विषम	पश्चि.	नीलम	दिन	पिंडली	लघु	जल चर	त्रिदोष	उष्ण	शीर्षोदय
मीन	गुरु	Pisces	पीला	विप्र	सौम्य	द्वि. स्वा.	जल	सतो	जीव	सम	उत्तर	पुखराज	दिन	पाँव दोनों	लघु	जल चर	कफ	शीत	उभयोदय

चर, शीर्षोदयादि राशियों का महत्त्व–उपरोक्त राशियों के **गुण, स्वभाव, तत्वादि** का फलित ज्योतिष में विशेष महत्त्व होता है। संक्षेप में, **चर** का अर्थ है चलित अर्थात् जिसमें कार्य जल्दी हो। यात्रा करें, तो शीघ्र वापिस आ जावे। स्थिर लग्न राशि में कार्य करने से स्थायी प्रभाव होता है। मकान, दुकान, व्यवसायादि में प्रवेश करे, तो बहुत वर्षों तक रहे। द्वि-स्वभाव राशि में मिला-जुला प्रभाव होता है। अर्थात् पहिला आधा भाग स्थिर प्रभाव दिखाता है, अन्तिम आधा भाग 'चर' का प्रभाव दिखाता है। इसी भान्ति धातु का अर्थ है, सोना, चाँदी, लोहा, भूमि, सवारी धनादि पदार्थ। **'मूल'** का अर्थ है, फल, वृक्ष, अनाजादि भोग्य पदार्थ। **'जीव'** का अर्थ प्राणी–स्त्री, पुत्र, पौत्र, भाई आदि। **उदाहरणार्थ**–मान लीजिए, सौम्य राशि **मीन** में यदि कोई सौम्य ग्रह (शुक्र) बैठा है, तो प्रश्नकर्त्ता को स्त्री, संतानादि का सुख लाभ होगा (क्योंकि मीन राशि जीव सम्बन्धी राशि है) और यदि कोई अशुभ या क्रूर ग्रह स्थित हो, तो स्त्री, संतानादि सुख सम्बन्धी हानि होगी। ऐसा कहना चाहिए। इसी भान्ति, राशियों की दिशा बताने का तात्पर्य यह है कि जिस राशि में कारक ग्रह बैठे हो, उस राशि की दिशा में भाग्योदय होता है। **उदाहरण** के लिए किसी की जन्म कुण्डली में लग्नेश एवं नवमेश ग्रह वृष राशि में हो, तो जातक का भाग्योदय जन्म से दक्षिण दिशा में होगा–ऐसा कहना चाहिए। जैसे–यदि **कन्या लग्न** हो, तो बुध लग्नेश, दशमेश होगा। द्वितीयेश व नवमेश शुक्र, बुध (लग्नेश) सहित नवम् (भाग्य) स्थान पर इकट्ठे हों, तो वृष राशि (दक्षिण) में भाग्योदय होगा।

...सहित नवम (भाग्य) स्थान पर इकट्ठे हों, तो वृष राशि (दक्षिण) में भाग्योदय होगा।

सर्वार्थ सिद्धि, अमृत सिद्धि, गुरु पुष्यादि योग-वि. संवत् २०७६ (सन् 2019-2020 ई.)

किसी विशेष कार्य हेतु आवश्यक परिस्थितिवश अथवा शीघ्रता में कोई सुनियोजित एवं निर्धारित मुहूर्त्त न मिलता हो, तो आगे लिखे गए सर्वार्थ सिद्धि, अमृत सिद्धि, रवि योग, गुरु पुष्य आदि योगों में अभीष्ट कार्यों का शुभारम्भ करके मनोवांछित कार्यों में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

सर्वार्थ सिद्धि योगों में—अनुबन्ध करना, परीक्षा, नौकरी अथवा चुनाव आदि के लिए आवेदन करना, क्रय-विक्रय करना, यात्रा या मुकद्दमा करना, भूमि, सवारी, वस्त्र-आभूषणादि का क्रय करना इत्यादि कृत्य किए जा सकते हैं। **अमृत सिद्धि योगों में** स. सि. योगों वाले कृत्यों के अतिरिक्त प्रेम विवाह करना, विदेश यात्रा, किसी कार्य सिद्धि हेतु सकाम अनुष्ठान करना आदि। रवि योग स. सि. योगों की भान्ति शुभ कार्यों के लिए प्रशस्त माने जाते हैं। **रवि योग की** उपलब्धता में यदि कोई कुयोग भी हो, तो '**रवि योग**' अन्य कुयोगों का नाश करके शुभ फल प्रदान करता है।

रविपुष्य योग—में जड़ी-बूटी तोड़ना तथा तोड़कर औषध तैयार करना, किसी विशेष रोग में रोगी को औषधि देना शुभ होता है। यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रादि प्रयोगों में यह योग शुभ होते हैं।

गुरुपुष्य योग— गुरू अथवा पिता, दादा या श्रेष्ठ व्यक्ति से मन्त्र, तन्त्र या किसी विशिष्ट विषय के सम्बन्ध में उच्च विद्या ग्रहण करना, धन, भूमि-विद्या एवं आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करना, कोई धार्मिक अनुष्ठान प्रारम्भ करना, गुरु धारण करना, विदेश-यात्रा आरम्भ करना शुभ होता है।

उपरोक्त सभी योगों में से कोई योग विशेष ग्रहण करने से पूर्व तिथि एवं चन्द्रमा का बल भी ध्यान में रख लेवें, तो अत्यन्त लाभदायक होगा। (अर्थात् कृष्ण पक्ष की त्र्योदशी से शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा पर्यन्त चन्द्र निर्बल माना जाता है।) इनके अतिरिक्त गुरु-शुक्र ग्रहों के अस्त काल, अधिक मास, ग्रहण काल, श्राद्ध पक्ष आदि का भी ध्यान कर लेना शुभ होगा। **विवाह, मुण्डन, गृहनिर्माण, गृहप्रवेश आदि कार्य निर्धारित मुहूर्त्तों में ही करने शुभ होंगे।** ध्यान रहे, 19 जुलाई से 29 सितं., 2019 ई. तक शुक्र अस्त तथा 15 दिसम्बर, 2019 ई. से 10 जनवरी, 2020 ई. तक गुरु अस्त रहेगा।

--पण्डित विवेक शर्मा, गणितकर्ता

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2019 ई.	घं. मिं.	2019 ई.	घं. मिं.
7 अप्रै.	सू. उ.	7 अप्रै.	8 44
9 अप्रै.	सू. उ.	9 अप्रै.	10 19
10 अप्रै.	सू. उ.	11 अप्रै.	सू. उ.
12 अप्रै.	9 54	13 अप्रै.	सू. उ.
14 अप्रै.	सू. उ.	14 अप्रै.	7 40
17 अप्रै.	23 36	18 अप्रै.	सू. उ.
20 अप्रै.	सू. उ.	20 अप्रै.	17 58
22 अप्रै.	सू. उ.	22 अप्रै.	16 45
26 अप्रै.	23 14	27 अप्रै.	26 12
2 मई	13 02	4 मई	सू. उ.
6 मई	16 37	7 मई	सू. उ.
8 मई	सू. उ.	8 मई	16 00
9 मई	15 17	10 मई	14 21
15 मई	7 16	16 मई	सू. उ.
24 मई	7 31	25 मई	10 15
28 मई	18 58	29 मई	सू. उ.
30 मई	सू. उ.	31 मई	24 12
3 जून	सू. उ.	4 जून	सू. उ.
6 जून	सू. उ.	7 जून	सू. उ.
12 जून	सू. उ.	12 जून	11 51
21 जून	सू. उ.	21 जून	18 14

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2019 ई.	घं. मिं.	2019 ई.	घं. मिं.
25 जून	सू. उ.	26 जून	सू. उ.
27 जून	सू. उ.	28 जून	9 12
1 जुला	सू. उ.	2 जुला	सू. उ.
4 जुला	सू. उ.	4 जुला	26 30
7 जुला	20 14	8 जुला	सू. उ.
12 जुला	15 57	13 जुला	सू. उ.
14 जुला	17 26	15 जुला	सू. उ.
23 जुला	सू. उ.	23 जुला	13 14
25 जुला	सू. उ.	25 जुला	17 39
29 जुला	सू. उ.	29 जुला	18 22
1 अग.	सू. उ.	1 अग.	12 12
4 अग.	सू. उ.	5 अग.	सू. उ.
8 अग.	21 28	9 अग.	21 58
11 अग.	सू. उ.	11 अग.	24 45
18 अग.	16 55	19 अग.	सू. उ.
20 अग.	22 29	21 अग.	सू. उ.
24 अग.	सू. उ.	24 अग.	28 16
1 सितं.	सू. उ.	2 सितं.	सू. उ.
5 सितं.	4 07	6 सितं.	4 09
8 सितं.	सू. उ.	8 सितं.	6 29

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2019 ई.	घं. मिं.	2019 ई.	घं. मिं.
15 सितं.	सू. उ.	15 सितं.	25 45
17 सितं.	सू. उ.	18 सितं.	सू. उ.
21 सितं.	सू. उ.	21 सितं.	11 22
27 सितं.	सू. उ.	27 सितं.	25 05
29 सितं.	सू. उ.	29 सितं.	19 07
2 अक्तू	12 52	3 अक्तू	12 10
6 अक्तू	15 04	7 अक्तू	सू. उ.
7 अक्तू	17 25	8 अक्तू	सू. उ.
13 अक्तू	सू. उ.	13 अक्तू	7 53
15 अक्तू	सू. उ.	15 अक्तू	12 30
16 अक्तू	14 21	17 अक्तू	सू. उ.
21 अक्तू	17 32	22 अक्तू	सू. उ.
22 अक्तू	16 39	23 अक्तू	सू. उ.
25 अक्तू	सू. उ.	25 अक्तू	11 00
30 अक्तू	सू. उ.	30 अक्तू	21 59
3 नवं.	सू. उ.	3 नवं.	24 55
4 नवं.	सू. उ.	4 नवं.	27 23
10 नवं.	17 19	11 नवं.	सू. उ.
12 नवं.	20 51	14 नवं.	सू. उ.

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2019 ई.	घं. मिं.	2019 ई.	घं. मिं.
17 नवं.	22 59	18 नवं.	22 21
19 नवं.	सू. उ.	19 नवं.	21 23
27 नवं.	सू. उ.	27 नवं.	8 12
1 दिसं.	सू. उ.	1 दिसं.	9 40
2 दिसं.	सू. उ.	2 दिसं.	11 43
6 दिसं.	22 57	7 दिसं.	सू. उ.
8 दिसं.	सू. उ.	8 दिसं.	27 30
10 दिसं.	सू. उ.	11 दिसं.	5 57
11 दिसं.	सू. उ.	12 दिसं.	सू. उ.
14 दिसं.	5 51	14 दिसं.	सू. उ.
15 दिसं.	सू. उ.	16 दिसं.	4 01
21 दिसं.	19 49	22 दिसं.	सू. उ.
23 दिसं.	17 40	24 दिसं.	सू. उ.
28 दिसं.	18 43	29 दिसं.	सू. उ.
(सन् 2020 ईसवी में)			
3 जन.	सू. उ.	4 जन.	सू. उ.
5 जन.	सू. उ.	5 जन.	12 27
7 जन.	सू. उ.	7 जन.	15 24
8 जन.	सू. उ.	9 जन.	सू. उ.

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2020 ई.	घं. मिं.	2020 ई.	घं. मिं.
10 जन.	14 49	11 जन.	सू. उ.
12 जन.	सू. उ.	12 जन.	11 50
16 जन.	4 07	16 जन.	सू. उ.
18 जन.	सू. उ.	18 जन.	24 16
20 जन.	सू. उ.	20 जन.	23 30
24 जन.	26 46	26 जन.	4 36
30 जन.	15 12	1 फर.	सू. उ.
3 फर.	24 52	4 फर.	सू. उ.
5 फर.	सू. उ.	5 फर.	25 59
6 फर.	25 21	7 फर.	24 01
12 फर.	11 46	13 फर.	सू. उ.
21 फर.	9 13	22 फर.	11 19
25 फर.	19 10	26 फर.	सू. उ.
27 फर.	सू. उ.	29 फर.	4 03
2 मार्च	8 55	3 मार्च	सू. उ.
4 मार्च	सू. उ.	4 मार्च	11 23
5 मार्च	11 26	6 मार्च	10 38
11 मार्च	सू. उ.	11 मार्च	19 00
20 मार्च	सू. उ.	20 मार्च	17 05
24 मार्च	सू. उ.	25 मार्च	4 19

अमृत सिद्धि योग

विशेष—कुछ विद्वान स.सि.यो. में अमृत-सिद्ध योग का संयोग अशुभ मानते हैं, जबकि नवीन मतानुसार कुछ विशेष तिथियां एवं घटिकाएं ही त्याज्य मानी गई हैं। यथा-रविवार से शनिवार तक क्रमशः 5, 6, 7, 8, 9, 10, 11 तिथियां एवं प्रारम्भ की 6 घड़ियां ही विषाक्त एवं त्याज्य मानी गई हैं।

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
2019 ई.	घं.	मिं.	2019 ई.	घं.	मिं.
3 मई, शु.	सू.	उ.	3 मई	14	40
3 जून, चं.	24	05	4 जून	सू.	उ.
6 जून, गु.	20	29	7 जून	सू.	उ.
1 जुला, चं.	9	25	2 जुला.	सू.	उ.
4 जुला, गु.	सू.	उ.	4 जुला.	26	30
27 जुला, श.	19	30	28 जुला.	सू.	उ.
29 जुला, चं.	सू.	उ.	29 जुला.	18	22
1 अग., गु.	सू.	उ.	1 अग.	12	12
4 अग., र.	25	44	5 अग.	सू.	उ.
20 अग., मं.	22	29	21 अग.	सू.	उ.
24 अग., श.	सू.	उ.	25 अग.	04	16
1 सितं., र.	11	11	2 सितं.	सू.	उ.
4 सितं., बु.	28	07	5 सितं.	सू.	उ.
17 सितं., मं.	सू.	उ.	18 सितं.	सू.	उ.
21 सितं., श.	सू.	उ.	21 सितं.	11	22
29 सितं., र.	सू.	उ.	29 सितं.	19	07
2 अक्तू., बु.	12	52	3 अक्तू.	सू.	उ.
15 अक्तू., मं.	सू.	उ.	15 अक्तू.	12	30
30 अक्तू., बु.	सू.	उ.	30 अक्तू.	21	59
27 नवं., बु.	सू.	उ.	27 नवं.	8	12
6 दिसं., शु.	22	57	7 दिसं.	सू.	उ.
(सन् 2020 ई. में)					
3 जन., शु.	सू.	उ.	4 जन.	सू.	उ.
31 जन., शु.	सू.	उ.	31 जन.	18	10

रवि योग—संवत् २०७६ वि.

रवि योग तिथि, वार, नक्षत्रादि से सम्बन्धित कुयोगों के दोषों को दूर कर देता है। सामान्यत: अन्नदान, गोदान, भूदान एवं सरकारी क्षेत्रों में सेवाओं (जैसे- प्रतिष्ठित पद ग्रहण आदि) के लिए इनका उपयोग किया जाता है।

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
2019 ई.	घं.	मिं.	2019 ई.	घं.	मिं.
8 अप्रै.	9	43	9 अप्रै.	10	19
10 अप्रै.	10	33	11 अप्रै.	10	25
13 अप्रै.	8	59	16 अप्रै.	4	01
17 अप्रै.	23	36	18 अप्रै.	21	25
24 अप्रै.	18	35	25 अप्रै.	20	37
7 मई	16	27	8 मई	16	00
9 मई	15	17	10 मई	14	21
13 मई	10	27	15 मई	7	16
17 मई	4	16	18 मई	3	07
24 मई	7	31	25 मई	10	15
25 मई	20	25	26 मई	13	14
5 जून	21	54	6 जून	20	29
7 जून	18	56	8 जून	17	22
8 जून	18	12	9 जून	15	49
11 जून	13	01	13 जून	10	55
15 जून	9	59	16 जून	10	07
23 जून	24	08	25 जून	3	02
5 जुला	2	30	5 जुला	24	18
7 जुला	20	14	8 जुला	18	34
10 जुला	16	22	12 जुला	15	57
14 जुला	17	26	15 जुला	18	52
23 जुला	13	14	24 जुला	15	42
3 अग.	3	44	3 अग.	15	17
4 अग.	4	06	5 अग.	1	44
5 अग.	23	48	6 अग.	22	23
8 अग.	21	28	10 अग.	23	06
13 अग.	2	51	14 अग.	5	19
21 अग.	24	47	23 अग.	2	36
2 सितं.	8	33	3 सितं.	6	24
4 सितं.	4	53	5 सितं.	4	07
7 सितं.	4	58	9 सितं.	8	36
11 सितं.	13	59	12 सितं.	16	58
20 सितं.	10	20	21 सितं.	11	22
1 अक्तू.	14	21	2 अक्तू.	12	52
3 अक्तू.	12	10	4 अक्तू.	12	19
6 अक्तू.	15	04	8 अक्तू.	20	12
11 अक्तू.	2	14	11 अक्तू.	7	25
12 अक्तू.	5	10	13 अक्तू.	7	53
19 अक्तू.	17	40	20 अक्तू.	17	52
30 अक्तू.	21	59	31 अक्तू.	21	31
1 नवं.	21	52	2 नवं.	23	01
5 नवं.	3	23	8 नवं.	12	12
10 नवं.	17	19	11 नवं.	19	17
17 नवं.	22	59	18 नवं.	22	21
29 नवं.	7	34	30 नवं.	8	16
1 दिसं.	9	40	2 दिसं.	11	43
3 दिसं.	12	22	3 दिसं.	14	17
5 दिसं.	20	07	7 दिसं.	25	28
10 दिसं.	5	01	11 दिसं.	5	57
17 दिसं.	25	26	18 दिसं.	24	01
28 दिसं.	18	43	29 दिसं.	17	35
29 दिसं.	20	30	30 दिसं.	22	47
(सन् 2020 ईसवी में)					
1 जन.	1	28	2 जन.	4	23
4 जन.	10	05	6 जन.	14	15
8 जन.	15	51	9 जन.	15	38
16 जन.	4	07	17 जन.	2	31
28 जन.	9	23	29 जन.	12	13
30 जन.	15	12	31 जन.	18	10
2 फर.	23	11	4 फर.	25	49
7 फर.	24	01	8 फर.	22	05
14 फर.	7	28	15 फर.	6	01
26 फर.	22	08	27 फर.	25	08
29 फर.	4	03	1 मार्च	6	42
3 मार्च	10	32	6 मार्च	10	38
8 मार्च	6	52	9 मार्च	4	10
14 मार्च	12	20	15 मार्च	11	23

द्विपुष्कर एवं त्रिपुष्कर योग (2019–20 ई.)

(गाड़ी, आभूषणादि बहुमूल्य वस्तुएँ खरीदने हेतु विशेष मुहूर्त्त)

द्विपुष्कर एवं त्रिपुष्कर योगों में बहुमूल्य एवं उपयोगी पदार्थ, वस्तुएँ जैसे—ज़मीन-जायदाद, हीरे-जवाहरात, स्वर्ण-चाँदी के आभूषण, कार, ट्रक, स्कूटर, गाय-भैंस क्रय करना, नवीन उद्योग की स्थापना आदि करना लाभदायक रहता है। इन योगों में यदि कोई अनिष्ट हो जाए, तो भी दुगुनी अथवा तीन गुणा हानि होने की सम्भावना हो जाती है। त्रिपुष्कर दोष की शान्ति के लिए तीन गौओं के मूल्य का धन तथा द्विपुष्कर में दो गौओं के मूल्य और तिलों द्वारा निर्मित पीठी का दान करना शुभ होगा। (वसिष्ठ.)

द्विपुष्कर योग

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
2019-20	घं.	मिं.	2019-20	घं.	मिं.
26 जन.	16	20	27 जन.	14	25
6 फर.	5	16	6 फर.	सू.	उ.
1 अप्रै.	6	05	1 अप्रै.	सू.	उ.
25 मई	10	15	26 मई	8	50
4 जून	13	58	4 जून	23	09
28 जुला	19	18	29 जुला	सू.	उ.
6 अग.	13	31	6 अग.	22	23
21 सितं.	11	22	21 सितं.	20	21
29 सितं.	20	14	30 सितं.	सू.	उ.
23 नवं.	14	45	24 नव.	3	43
3 दिसं.	सू.	उ.	3 दिसं.	14	17
(सन् 2020 ईसवी में)					
26 जन.	4	36	27 जन.	6	16
21 मार्च	सू.	उ.	21 मार्च	7	56

गुरुपुष्य योग

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
6 जून	20	29	7 जून	सू.	उ.
4 जुला	सू.	उ.	4 जुला	26	30
1 अग.	सू.	उ.	1 अग.	12	12

रविपुष्य योग

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
14 अप्रै.	सू.	उ.	14 अप्रै.	7	40
17 नवं.	22	59	18 नवं.	सू.	उ.
15 दिसं.	सू.	उ.	16 दिसं.	4	01
12 जन.,20	सू.	उ.	12 जन.	11	50

त्रिपुष्कर योग

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
2019-20	घं.	मिं.	2019-20	घं.	मिं.
20 अप्रै.	17	58	21 अप्रै.	12	33
30 अप्रै.	24	18	1 मई	सू.	उ.
6 मई	3	59	6 मई	सू.	उ.
23 जून	24	08	24 जून	सू.	उ.
29 जून	9	58	30 जून	6	12
17 अग.	13	55	17 अग.	22	49
27 अग.	सू.	उ.	27 अग.	25	13
31 अग.	14	07	1 सितं.	8	27
10 सितं.	सू.	उ.	10 सितं.	11	09
20 अक्तू.	17	52	21 अक्तू.	सू.	उ.
29 अक्तू.	सू.	उ.	29 अक्तू.	23	11
3 नवं.	1	31	3 नवं.	24	55
14 दिसं.	सू.	उ.	14 दिसं.	8	47
22 दिसं.	18	38	23 दिसं.	सू.	उ.
28 दिसं.	सू.	उ.	28 दिसं.	11	10
(सन् 2020 ईसवी में)					
7 जन.	सू.	उ.	7 जन.	15	24
15 फर.	सू.	उ.	15 फर.	16	30
25 फर.	सू.	उ.	25 फर.	19	10
1 मार्च	11	16	2 मार्च	सू.	उ.
10 मार्च	19	24	10 मार्च	22	02

▲ वि. संवत् 2076 में लाभ-हानि चक्र ▲

(विंशोत्तरी मतानुसारेण)

आगामी वर्ष में आपको जिस राशि का लाभ-हानि का विवरण ज्ञात करना हो, तो आप निम्नलिखित चक्र में अपनी राशि के नीचे लिखे लाभ-हानि के अंकों को जमा कर दें, फिर कुल जमा जोड़ में से 1 कम करके जोड़ को 8 से भाग दे देवें। भाग करने के पश्चात् यदि 1 बचे तो आगामी वर्ष में धन लाभ अच्छा रहेगा। मनोवांछित योजनाएं सफल होंगी। मनोरंजक कार्यों की ओर रूचि बढ़ेगी। यदि शेष 2 बचे तो, धन लाभ मध्यम परन्तु विभिन्न कार्यों पर खर्च अधिक होगा। यदि शेष 3 बचें तो लाभ कम, खर्च (अपव्यय) अधिक रहेगा। व्यर्थ भाग-दौड़ अधिक रहेगी और घरेलू उलझनें बढ़ेंगी। यदि शेष 4 बचें तो, मानसिक तनाव, शरीर कष्ट और रोगादि पर खर्च हो, घरेलू एवं आर्थिक समस्याएं उत्पन्न होंगी। यदि शेष 5 बचें तो लाभ कम तथा फिजूलखर्ची अधिक रहेगी। बनते कार्यों में विघ्न पड़ेगा। यदि शेष 6 बचें तो, भाग्योन्नति और धन लाभ के मार्ग प्रशस्त होंगे। रुके हुए कार्यों में सफलता मिलेगी। यदि शेष 7 बचें तो, व्यापार, लॉटरी, सट्टे आदि द्वारा अकस्मात् धन लाभ होगा। ज़मीन-जायदाद आदि कार्यों पर खर्च भी रहेंगे। आय के साधनों में भी वृद्धि होगी। यदि 8 अर्थात् 0 बचे, तो उस वर्ष लाभ कम व खर्च अधिक रहेगा, मानसिक परेशानियाँ भी बढ़ने के संकेत हैं।

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
लाभ	८	२	८	२	५	८	२	८	५	१४	१४	५
हानि	५	१४	११	८	५	११	१४	५	११	११	११	११

राहु कालम्

शुभ कार्यों में विशेषतया त्याज्य

दक्षिण भारत में राहु-कालम का विशेष प्रचलन है। विशेष वार प्रतिदिन डेढ़ घण्टे के लिए यह अनिष्ट समय होता है। जिसे शुभ कार्यारम्भ में यथासम्भव टाल देना चाहिए। दक्षिणी भारत में राहु कालम का विशेष विचार किया जाता है।

सोमवार–प्रातः 7/30 से प्रातः 9 बजे तक
मंगलवार–अपराह्न 3/00 से 4/30 बजे तक
बुधवार–दोपहर 12/00 से 1/30 बजे तक
बृहस्पतिवार–दोपहर 1/30 से 3/00 बजे तक
शुक्रवार–प्रातः 10/30 से दुपै. 12 बजे तक
शनिवार–प्रातः 9/00 से प्रातः 10/30 बजे तक
रविवार–सायं 4/30 से सायं 6/00 बजे तक

नोट–यह समयावधि दिनमान के अनुसार परिवर्तित होती रहती है।

ज्वालामुखी आदि अशुभ योग–(वि. संवत् २०७६)

ज्वालामुखी योग का फल अशुभ माना गया है। इस योग में आरम्भ किया हुआ कार्य पूर्णतया सिद्ध नहीं हो पाता अथवा बार-बार विघ्न-बाधाएं होती हैं। इस योग में शुभ कार्य आरम्भ नहीं करने चाहिए। दुष्ट शत्रुओं पर प्रयोग करने के लिए यह मुहूर्त्त अच्छा समझा जाता है।

जब प्रतिपदा को मूल नक्षत्र, पंचमी को भरणी, अष्टमी को कृतिका, नवमी को रोहिणी अथवा दशमी को आश्लेषा नक्षत्र आता है, तो ज्वालामुखी योग बनता है। इस प्रकार 5 नक्षत्रों एवं 5 तिथियों के संयोग से ज्वालामुखी योग बनता है। इस योग के अशुभ फल को प्रकट करने के लिए निम्नलिखित लोकोक्ति प्रचलित है–

जन्मे तो जीवे नहीं, बसे तो उजड़े गाँव,
नारी पहने चूड़ियां, पुरुष विहीनी होय।
बोवे तो काटे नहीं, कुएँ उपजे न नीर॥

यद्यपि यह लोकोक्ति अतिशयोक्तपूर्ण हो सकती है, परन्तु इसके अशुभ प्रभाव के सम्बन्ध का उल्लेख कई ग्रन्थों में मिलता है। ज्वालामुखी योगानुसार यदि बालक इस योग में पैदा हो तो उसे अरिष्ट योग होता है। यदि इस योग में विवाह किया जाए तो वैधव्य का भय होता है। यदि बीजवपन किया जाए तो फसल अच्छी नहीं होती तथा जल आदि हेतु कूआँ खोदा जावे तो जलाशय (कूआँ) शीघ्र सूख जाए-यदि कोई रोगग्रस्त हो तो जल्दी ठीक न हो–इत्यादि अशुभ फल घटित होते हैं।

ज्वालामुखी योग (2019-20 ई.)

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
तारीख	घं. मिं.	तारीख	घं. मिं.
14 अप्रै.	9 36	15 अप्रै.	5 59
17 जून	14 01	18 जून	11 50
23 अग.	8 09	23 अग.	27 47
24 अग.	8 32	25 अग.	4 16
18 सितं.	18 12	19 सितं.	8 45
23 अक्तू.	3 33	23 अक्तू.	15 13
26 दिसं.	10 43	26 दिसं.	16 50
सन् 2020 ई०			
29 फर.	04 03	29 फर.	9 10

● ● ● यमघण्टक योग (सन् 2019-20 ई.) ● ● ●

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
तारीख	घं. मिं.	तारीख	घं. मिं.
15 अप्रै.	5 59	15 अप्रै.	सू. उ.
24 अप्रै.	सू. उ.	24 अप्रै.	18 35
12 मई	11 55	13 मई	सू. उ.
4 जून	23 09	5 जून	सू. उ.
9 जून	सू. उ.	9 जून	15 49
2 जुला.	8 14	3 जुला.	सू. उ.
30 जुला.	सू. उ.	30 जुला.	16 47
22 अग.	26 36	23 अग.	सू. उ.
23 अग.	27 47	24 अग.	सू. उ.
19 सितं.	8 45	20 सितं.	सू. उ.
20 सितं.	10 20	21 सितं.	सू. उ.

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
तारीख	घं. मिं.	तारीख	घं. मिं.
28 सितं.	22 03	29 सितं.	सू. उ.
17 अक्तू.	सू. उ.	17 अक्तू.	15 52
18 अक्तू.	सू. उ.	18 अक्तू.	16 59
26 अक्तू.	8 27	27 अक्तू.	5 49
28 अक्तू.	25 00	29 अक्तू.	सू. उ.
23 नवं.	सू. उ.	23 नवं.	14 45
25 नवं.	10 57	26 नवं.	सू. उ.
23 दिसं.	सू. उ.	23 दिसं.	17 40
25 दिसं.	16 41	26 दिसं.	सू. उ.
(सन् 2020 ई.)			
22 जन.	सू. उ.	22 जन.	24 20
9 फर.	19 43	10 फर.	सू. उ.
8 मार्च	6 52	9 मार्च	4 10

व्यापारिक वस्तुओं तथा शेयर-बाज़ार में मन्दा-तेजी विचार-सन् 2019 ई.

वायदा व्यापारियों के लिए आवश्यक सुझाव—व्यापारिक वस्तुओं अथवा जिन्सों के दैनिक उतार-चढ़ाव के अध्ययन के बाद ही वस्तुओं का क्रय-विक्रय करना सफल व्यापार की कुंजी है। संसार के सभी पदार्थों पर प्रभाव रखने वाले ग्रह होते हैं तथा अपने में सभी पदार्थों का समावेश करने वाली राशियां होती हैं। जब ग्रह भ्रमण करता हुआ राशि-भोग करता है, तो उसकी हर गति का प्रभाव प्रत्येक वस्तु पर पड़ता है, क्योंकि उस समय वे पदार्थ उस ग्रह के प्रभाव में रहते हैं और वस्तु के मूल्यों में जो परिवर्तन (घटाबढ़ी) होता है, उसे हम तेजी-मन्दी कहते हैं।

ज्योतिष शास्त्र का वायदा-व्यापार से गहरा सम्बन्ध है। ध्यान रहे, हाजिर एवं वायदा बाज़ार पर राजनीतिक, सामाजिक, प्राकृतिक एवं आजकल अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं का प्रभाव भी अवश्य रहता है। इसके अतिरिक्त कुशल व्यापारी को अपनी वर्तमान विशोंतरी ग्रहदशा तथा आर्थिक सामर्थ्य को ध्यान में रखते हुए ही व्यापार करना चाहिए। जन्म/वर्ष कुण्डली में हानिप्रद या अनिष्ट ग्रह से सम्बन्धित वस्तु का व्यापार न करें। अनुकूल ग्रह-दशा जातक को व्यवसाय में विपुल धन लाभ तथा प्रतिकूल ग्रहदशा अकस्मात् धन-हानि करवा सकती है। सदैव उतने ही लाभ की आशा करके व्यापार करें, जितनी की हानि साधारणतया उठा सकने का सामर्थ्य हो।

गतवर्षों सन् 2010 से 2018 ई० में हमारे द्वारा निर्दिष्ट ग्रहस्थिति एवं तेजी-मन्दी के चान्सों से सोना, चाँदी, गुड़, सोयाबीन, कॉपर, तेल, लोहे, स्टील, चने तथा शेयरों से सम्बन्धित अनेक व्यापारी लाभान्वित हुए। (विशेषकर जून-जुलाई में सोने-चांदी में हुई तेजी-मन्दी से विशेष लाभ उठाया।)

आगे गोचर ग्रहों, नक्षत्रों के आधार पर व्यापारिक वस्तुओं (जिन्सों) के दैनिक मन्दा-तेजी की विशेष लाइनों एवं तूफानी तेजी आदि का विवरण लिख रहे हैं। **यदि आप प्रतिमास किसी विशेष एक जिन्स (वस्तु) की दैनिक तेजी-मन्दी रिपोर्ट या वायदा हाजिर का चांस चाहते हैं तो प्रति जिन्स की एक मास की फीस 751 रु., 2 मास की फीस 1500 रु. होगी। पूरी फीस अग्रिम ड्राफ्ट द्वारा भेजें।** रिपोर्ट लिखित रूप में रजिस्ट्री या कोरियर के माध्यम से भेज दी जाएगी। D.D. (ड्राफ्ट) या चैक या मनीआर्डर इस पते पर भेजें। **—पं. विवेक शर्मा ज्योतिषी S/o स्व. पं. पन्ना लाल ज्योतिषी, अड्डा होशियारपुर चौंक, जालन्धर—144008 (पंजाब), फोन 0181-2457959**

☞ जनवरी—**मासारम्भ ता. 1 जनवरी, 2019 ई. को ही बुध मूल नक्षत्र तथा धनु राशि में प्रविष्ट होकर सूर्य एवं शनि के साथ मेल करेगा। इसी दिन शुक्र वृश्चिक राशि में आकर गुरु के साथ एकराशि सम्बन्ध बनाएगा। यह ग्रहयोग वायदा व हाजिर बाज़ारों में विशेष उथल-पुथल लेकर आएगा।** शेयर-बाज़ार में भी बैंकिंग, साफ्टवेयर, I.T. शेयर्ज़ विशेष रूप से तेज रहेंगे। रूई, सरसों, उड़द, जौं, मूँग, मूँगफली, अलसी में अच्छी तेजी बनेगी। घी, कपास, सूत, गेहूँ, बाजरा, सोना, चाँदी, कॉपर में भी अच्छी तेजी का चाँस है। **तुरन्त मुनाफा लें।**

3 जन. को राहु पुन. 4, केतु उ.षा. 2 में आने से रूई, कपास, घी, तिल, सरसों, चाँदी में तेजी बनेगी।

4 जन. को शुक्र अनुराधा में आएगा। गु.-शु. का सम्बन्ध पहिले ही चल रहा है। गुड़, खण्ड, चावल, नमक, घी, हल्दी, रूई, चने तथा अन्य वस्तुओं में मन्दी का चाँस होने के बावजूद तेजी बन जाएगी। पहले थोड़ी मन्दी बनकर तुरन्त तेजी का रुख बन जाएगा।

5 जनवरी को शनिवार अमावस भी सरसों, सोयाबीन, तिल आदि करियाना वस्तुओं में तेजीकारक रहेगी।

7 जनवरी को सोमवार के दिन चन्द्रदर्शन तथा 8 जन. को बुध पूर्व में अस्त होने से रूई, चाँदी, घी में घटाबढ़ी रहने के बाद मामूली मन्दी बन सकती है। सोना, कपास, रेडीमेड कपड़ों, हल्दी, मूँग में तेजी बनेगी।

10 जनवरी को बुध पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में आकर शनि के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। सोना, चाँदी, लोहा, ताँबा आदि धातुओं, गेहूँ, बिनौले में पहले अच्छी मन्दी बनकर बाद में तेजी बनेगी।

11 जनवरी सूर्य उ.षा. नक्षत्र में आएगा। सूर्य-बुध-शनि का योग पहिले ही चल रहा है। शीघ्र ही उड़द, मूँग, चावल, चना, गेहूँ, गुड़, खाण्ड, शक्कर, कपास, पिप्पलामूल, चमड़ा, सरसों, सोने, चाँदी में तेजी का रुख बन जाएगा।

14 जनवरी को सूर्य मकर राशि में आकर केतु के साथ मेल करेगा। घी, तेल, अलसी, गुड़, शक्कर, खाण्ड, रूई, सोने, चाँदी में तेजी बनेगी। गेहूँ, चना आदि अनाजों, दालों में मन्दी का **चाँस होने के बावजूद तेजी का रुख रहने की उम्मीद है।**

16 जनवरी को मंगल रेवती नक्षत्र में आने से गेहूँ, जौं, चना, मूँग, मोठ, ज्वर, बाजरा आदि में कुछ मन्दी रहे। रूई, चाँदी में अच्छी तेजी बनेगी। सोना कुछ मन्दा रहे।

17 जनवरी को शुक्र ज्येष्ठा नक्षत्र में प्रविष्ट कर गुरु के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। सोने, चाँदी, चावल, सरसों, तिल, तेल, हींग, गेहूँ, चना, दालों आदि में मन्दी का चाँस होने के बावजूद तेजी का रुख रहेगा।

18 जनवरी को बुध उ.षा. नक्षत्र में आकर सूर्य के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। सभी प्रकार के अनाजों, दालों में घटाबढ़ी रहेगी।

19 जनवरी को शनि पूर्व में उदय होने से रूई, **शेयर-बाज़ार, सोना, चाँदी,** अलसी, सरसों, ग्वार, बिनौला, मूँगफली में मन्दी का झटका लग सकता है। परन्तु लोहा, जिस्त,

सीसा, काले पदार्थ, लकड़ी, घास, लहसुन, चावल, गुड़, खाण्ड में तेजी बनेगी।

20 जनवरी को बुध मकर राशि में आकर सूर्य एवं केतु के साथ मेल करेगा। रूई, सोना, चाँदी, चना, गेहूँ आदि अनाजों, धान्यों में तेजी का रुख रहेगा।

24 जनवरी को सूर्य श्रवण नक्षत्र में तथा शनि पू.षा. (3) में आएगा। गेहूँ, जौं, चावल, रूई, सूत, सन, सोना, चाँदी, गुड़, खाण्ड, अलसी, सुपारी, लौंग में तेजी बनेगी। कपास, जीरा, सरसों, जौं, ज्वार में तेजी से उत्तम लाभ प्राप्त हो सकता है। **इन वस्तुओं का पहले से स्टॉक आपके पास होना चाहिए।**

26 जनवरी को बुध भी श्रवण नक्षत्र में आकर चल रही तेजी को और बढ़ावा (बल) देगा। गुड़, खाण्ड, अलसी, चना, चावल, मूँग, सरसों में तेजी बनेगी।

29 जनवरी को शुक्र मूल नक्षत्र तथा धनु राशि में आकर शनि के साथ एकराशि सम्बन्ध बनाएगा। सोना, चाँदी, ताँबा आदि धातुओं में तेजी का अच्छा रुख बन सकता है। रूई, कपास, घी, चीनी में पहले थोड़ी मन्दी बनकर तेजी बने। क्रूड आयल, सरसों, तिलों, काली मिर्च में भी तेजी बने। **शेयर बाज़ार भी तेज रहे। विशेषकर साफ्टवेयर, I.T. सेक्टर से सम्बन्धित शेयर्ज़।**

30 जनवरी को गुरु ज्येष्ठा (3) में आने से चाँदी, घी, रूई में अचानक मन्दी का झटका लग सकता है। **सावधान रहें।**

☞फरवरी—मासारम्भ में ता. 3 फर. को बुध धनिष्ठा नक्षत्र में आएगा। **ध्यान दें**–सूर्य-बुध-केतु का योग पहले ही मकर राशि में चल रहा है। चावल, रूई, मूँग, सरसों, गुड़, शक्कर, सोयाबीन में तेजी बने। सोना, चाँदी में पहले मन्दी बनकर बाद में कुछ सुधरेंगे।

5 फरवरी को मंगल अश्विनी नक्षत्र तथा मेष (स्व.) राशि में आएगा। रूई, कपास, सरसों, सोयाबीन, ऊन, मसूर, गुड़, शक्कर, बाजरा तथा सोना-चाँदी आदि धातुओं में अच्छी तेजी का झटका लगेगा।

6 फरवरी को सूर्य धनिष्ठा नक्षत्र में आएगा। सोना, चाँदी आदि धातुएं तथा सभी प्रकार के रत्न, मूँग, मसूर, गेहूँ आदि अनाजों, अलसी, रूई, गुड़ में तेजी बनेगी।

7 फरवरी को बुध कुम्भ राशि में आएगा। इस पर शनि की विशेष दृष्टि रहेगी। यद्यपि अकेला बुध यहाँ बाज़ार में घटा-बढ़ी कर मन्दी का वातावरण करता है, परन्तु शनि की दृष्टि के कारण यहाँ तेजी का वातावरण बने। घी, तेल, रस, गुड़, खाण्ड, रूई, चाँदी, इलायची, मूँग, सोना, चाँदी में अच्छी घटाबढ़ी के बाद अच्छी तेजी बनेगी।

10 फरवरी को बुध शतभिषा तथा शुक्र पू.षा. नक्षत्र में आएगा। शुक्र शनि के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। मूँग, मोठ, उड़द, तिल, तेल, सरसों, नमक, चना, गेहूँ आदि सभी अनाजों, सोना-चाँदी में तेजी का वातावरण बनेगा।

13 फरवरी को सूर्य कुम्भ राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा। इन पर शनि की दृष्टि भी रहने से बाज़ार में ज़ोरदार तेज़ी की लाईन बन सकती है। घी, तैल, लवण, सरसों, मूँगफली, राई, रूई, अलसी, एरण्ड, गेहूँ, चना आदि अनाज, गुड़, शक्कर, खाण्ड में तेजी का वातावरण बनेगा।

16 फरवरी को बुध पश्चिम में उदय होने से सोना, चाँदी, रूई, कपास, घी, बैंकिंग शेयर्ज़ में पहले थोड़ी मन्दी बनकर पुनः तेजी का रुख बनेगा।

19 फरवरी को सूर्य शतभिषा नक्षत्र में आने से सोने, चाँदी, सूत, सन, कपड़े, तिल, तेल, एरण्ड, सरसों, हींग, जायफल, छुहारा, सोंठ, हल्दी, गेहूँ, गुड़ में तेजी का रुख बनेगा।

21 फरवरी को शुक्र उ.षा. नक्षत्र में आएगा। शुक्र-शनि का योग धनु राशि में चल रहा है। गुड़, खाण्ड, सोना, चाँदी, अलसी, एरण्ड, रूई, क्रूड में पहले मन्दी बनकर बाद में तेजी बन जाएगी।

24 फरवरी को शुक्र मकर राशि में आकर केतु के साथ मेल करेगा। गेहूँ, जौं, चना आदि अनाजों, सोना, चाँदी आदि धातुओं, रूई, कपास, क्रूड-आयल में तेजी से लाभ मिलेगा। **शेयर बाज़ार में भी तेजी का रुख बनेगा।**

25 फरवरी को बुध मीन राशि में आएगा। बुध पर गुरु की विशेष दृष्टि रहेगी। इसी दिन मंगल भरणी में दाखिल होगा। अतएव रूई, गुड़, खाण्ड, शक्कर में मन्दी बने। सोना, चाँदी, घी में पहले तेजी बनकर बाद में थोड़ी मन्दी का झटका लग सकता है। बिनौला, क्रूड में तेजी रहेगी। परन्तु अन्त में सभी जिन्सों एवं खाद्य-पदार्थों में तेजी का रुख बन जाएगा।

28 फरवरी को बुध उ.भा. नक्षत्र में आएगा। सोना, चाँदी, लोहा, गुड़, खाण्ड, रूई, चावल, गेहूँ, चने आदि अनाजों में घटाबढ़ी के बाद थोड़ी मन्दी बनेगी।

☞मार्च–मासारम्भ 4 मार्च को सूर्य पू.भा. नक्षत्र में आएगा। सूर्य पर शनि की विशेष दृष्टि भी है। रेशम, सोना, चाँदी, गेहूँ, चना, उड़द, चावल, ज्वार, बाजरा, घी, सरसों, तिल, तैल, गुड़, खाण्ड, गुग्गुल, रूई में तेजी बनेगी।

5 मार्च को बुध वक्री होने तथा शुक्र श्रवण में आने से सोना, चाँदी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, मूँग, मोठ, उड़द, तिल, तैल में पहले मन्दी का रुख बनकर अचानक तेजी का रुख बनेगा। **बैंकिंग शेयर्ज़ में भी पहले मन्दी बनकर तुरन्त तेजी का झटका लगेगा।** यदि पहले ही तेजी बने तो बीच में मन्दी का झटका भी लग सकता है।

7 मार्च को राहु मिथुन में तथा केतु धनु राशि में आकर शनि के साथ मेल करेगा। शनि-राहु का समसप्तक योग भी बन रहा है। रूई, सूत, गेहूँ, मक्की, हल्दी, घी आदि कुछ करियाना एवं खाद्य-वस्तुओं में ज़ोरदार तेजी का झटका लगेगा, जबकि सोना, चाँदी आदि धातुओं, अरहर, उड़द, चना आदि कुछ वस्तुओं में अच्छी मन्दी का झटका लगकर 1-2 दिन में तेजी बन जाएगी।

8 मार्च को वक्री बुध पश्चिम में अस्त होने से भी चाँदी, घी, रूई, सोने में पहले मन्दी का झटका लगकर बाद में ज़ोरदार तेजी का रुख बन सकता है।

8 से 13 मार्च तक शेयर बाज़ार भी घटाबढ़ी के मध्य मध्यम रुपेण स्थिर अथवा मन्दी की ओर ही रहेगा।

14 मार्च को सूर्य मीन राशि में आएगा। सूर्य पर गुरु की दृष्टि रहेगी। फलस्वरूप सोना, चाँदी, तिल, तेल, अलसी, सरसों, खाण्ड, गुड़, शक्कर, रूई, चने आदि अनाजों में पहले तेजी बनकर शीघ्र ही मन्दी का रुख बन जाएगा।

15 मार्च को वक्री बुध कुम्भ राशि में आकर पुनः शनि की दृष्टि में आ जाएगा। घी, तेल, रस, गुड़, खाण्ड, सोना, चाँदी, मूँग, अरहर, क्रूड-आयल, पेट्रोलियम पदार्थों में घटाबढ़ी के बाद तेजी का रुख बनेगा।

16 मार्च को शुक्र धनिष्ठा नक्षत्र में आकर चावल, मूँग, मोठ, उड़द, ज्वार, बाजरा, सोना, चाँदी, रूई, कपास में तेजी बनेगी।

17 मार्च को मंगल कृतिका नक्षत्र में आने से गेहूँ, मूँग, मोठ, चावल, राई, मसूर, तिल, तेल, सरसों, घी, चाँदी, सूत, वस्त्रों में तेजी बनेगी। रूई में पहले तेजी फिर मन्दी बनेगी।

18 मार्च को सूर्य उ.भा. नक्षत्र में आने से चावल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूँ, तेल, तिलहन, सोयाबीन में साधारण तेजी बनेगी।

21 मार्च को शुक्र कुम्भ राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा। इन पर शनि की विशेष दृष्टि भी रहेगी। ग्रहस्थिति विशेष तेजी की ओर संकेत कर रही है। तिलहन, सरसों, अलसी, एरण्ड, रूई, चाँदी, खाण्ड, चना, जौं, मूँग, गुड़, गेहूँ, सोने में ज़बरदस्त तेजी बन सकती है। **अकेला शुक्र कुम्भ राश में यद्यपि मन्दी करता है, परन्तु यहाँ शनि की दृष्टि के फलस्वरूप तेजी हावी रहेगी। शेयर-बाज़ार भी तेज रहे।**

22 मार्च को मंगल वृष राशि में आकर शनि के साथ षडाष्टक योग तथा गुरु के साथ समसप्तक योग बनाएगा। बाज़ार में चल रही तेजी को और अधिक मज़बूती मिलेगी। लालमिर्च, अनाज, गेहूँ, रूई, कपास, सूत, चन्दन, कपूर, केसर, तेल, सोना, चाँदी, ताँबा आदि धातुओं तथा शेयरों में तेजी से लाभ प्राप्त करने का चाँस है।

ता. 21 से 26 तक तेजी का वातावरण ही रहेगा। राजनीतिक घटनाक्रम का भी प्रभाव रहेगा।

27 मार्च को शुक्र शतभिषा नक्षत्र में आकर गेहूँ, गुड़, खाण्ड, चावल, घी, सरसों, रूई, सोना, चाँदी में तेजी बनेगी।

28 मार्च को बुध मार्गी होने से वायदा बाज़ार में विशेष उथल-पुथल होगी। रूई, चाँदी, घी, सोने में पहले मन्दी, फिर तेजी बनेगी। रेशम, तेल, सोयाबीन, अलसी, एरण्ड, गुड़, बिनौला, मूँगफली, कपूर, चन्दन आदि सुगन्धित वस्तुओं में मन्दी बनेगी।

29 मार्च को गुरु मूल नक्षत्र तथा धनु राशि में आकर शनि एवं केतु के साथ मेल करेगा। इन पर मंगल की विशेष अष्टम दृष्टि पड़ रही है। यद्यपि अकेला गुरु यहाँ कुछ वस्तुओं (घी, चाँदी, खाण्ड, रुई) में मन्दी करता है, **परन्तु ग्रहयोग के प्रभाव से हमारे विचारानुसार मन्दी न बनकर जबरदस्त तेजी की लाईन बनेगी।** गुड़, खाण्ड, सोयाबीन, सरसों, हल्दी, शक्कर, ग्वार, सोना, चाँदी, ताँबा, कॉपर, निक्कल आदि धातुओं में अच्छी तेजी बनेगी।

31 मार्च को सूर्य रेवती नक्षत्र में आकर सरसों, तेल, एरण्ड, अलसी, मूँगफली, लहसुन, मोती, लाख, रुई, गेहूँ, जौं, चना, चावल में तेजी बनाएगा।

☞ **अप्रैल**-मार्च मास के अन्तिम सप्ताह से चला आ रहा तेजी का वातावरण घटाबढ़ी के मध्य अप्रैल के प्रथम सप्ताह तक चलता रहेगा। **इस तेजी के रुख में पुराना स्टॉक तथा हाजिर में तुरन्त मुनाफा काटते जाएं।**

ता. 6 अप्रैल को मंगल रोहिणी नक्षत्र में आएगा। रूई, कपास, सूत, वस्त्र, रेशम, सरसों, तिल, तेल, लाल-मिर्च, हींग में तेजी बनेगी। इस दिन शेयर बाज़ार भी तेज रहेगा।

7 अप्रैल को शुक्र पू.भा. में आने से रूई, चाँदी में तेजी बनेगी। चना, जौं, मक्की, गेहूँ आदि अनाजों व दालों में कुछ मन्दी बने।

10 अप्रैल धनुराशिगत गुरु वक्री होगा। **इस समय गुरु-शनि-केतु योग तथा इन पर मंगल की विशेष दृष्टि चल रही है। बाज़ार के रुख में अचानक परिवर्तन हो सकता है।** गेहूँ, चना आदि अनाजों, तिल, तेल, घी, गुड़, नमक, हल्दी, ग्वार, उड़द, सोना, चाँदी मन्दी की जगह तेज होंगे। यदि किसी कारण मन्दी बन जाए तो स्टॉक करने से शीघ्र ही भविष्य में लाभ होगा। सावधानीपूर्वक कार्य करें। शेयर-बाज़ार भी तेज होगा।

11 अप्रैल को बुध मीन राशि में आकर 2-3 दिन के लिए सूर्य के साथ मेल करेगा। सोना, चाँदी, ताँबा आदि धातुओं, मूँग, जौं, इलायची में घटा-बढ़ी के मध्य पहले तेजी होकर बाद में थोड़ी मन्दी बन जाएगी। रूई, गुड़, खाण्ड, शक्कर में मन्दी बने। बिनौला अलसी तेज रहे।

14 अप्रैल को सूर्य अश्विनी नक्षत्र तथा मेष राशि में आएगा। बृहस्पति की इस पर विशेष दृष्टि रहेगी। अतः रूई, कपास, सूत, घी, तेल, तिल, सरसों, नारियल, सुपारी, बादाम, गुड़, खाण्ड, शक्कर, सोना, चाँदी में तेजी बनकर शीघ्र ही थोड़ी मन्दी बन जाएगी। गेहूँ, चावल, उड़द, मूँग, अरहर, चना, जौं, मटर में भी मन्दी बनेगी।

15 अप्रैल को शुक्र मीन राशि में आकर अपनी उच्च-स्थिति में आ जाएगा तथा नीचस्थ बुध के साथ मेल करेगा। दो ग्रहों के मध्य उच्च-नीच का यह मेल सोने, चाँदी, दालवाना, चावल, तिलहन तथा शेयर-बाज़ारों में ज़बरदस्त उथल-पुथल की लाईन बनाएगा। इस समय गुड़, खाण्ड, रूई, कपास, बारदाना, तिलहन एवं चाँदी के व्यापारी बहुत समझदारी से कार्य करें। हमारे विचारानुसार उपरोक्त सभी चीज़ों में पहले अच्छी मन्दी का झटका लगकर तेजी बनेगी। इसी दिन बुध उ.भा. नक्षत्र में आकर वायदा बाज़ार में घटाबढ़ी का माहौल बनाएगा।

18 अप्रैल को शुक्र उ.भा. नक्षत्र में आकर बुध के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बना लेगा। पुनः ज़बरदस्त घटाबढ़ी के मध्य पहले मन्दी, फिर तेज़ी का वातावरण बनेगा। सोना, गेहूँ, चना, उड़द, चावल, ज्वार, बाजरा, घी, सरसों, तिल, तेल एवं तिलहन, गुड़, खाण्ड, गुग्गुल, रेशम में तेजी बनेगी। घी, रूई, चाँदी में अच्छी घटाबढ़ी रहेगी।

22 अप्रैल को वक्री गुरु वृश्चिक राशि में आकर मंगल के साथ समसप्तक योग बनाएगा। मंगल की राशि में स्थित गुरु पर मंगल की दृष्टि रहेगी। सोना, चाँदी, कपास, ताँबा, घी, तेल, सुपारी, सरसों, गुड़, खाण्ड, चीनी, नमक, नारियल तथा उड़द आदि दालों में अच्छी तेजी बनेगी। जिन अनाजों एवं वस्तुओं में यहाँ मन्दी बने, वो भी आगे भाद्रपद से कार्तिक तक तेज हो जाएंगे। **राजनैतिक वातावरण के कारण भी शेयर-बाज़ार में काफी उथल-पुथल रहेगी।**

25 अप्रैल को बुध रेवती नक्षत्र में आएगा। मीनस्थ बुध एवं शुक्र पर गुरु की विशेष

सोने, ताँबे, ग्वार में तेजी बनेगी। गुड़, खाण्ड, तिल, सरसों, घी, चाँदी में मन्दी बने।

26 अप्रैल को मंगल मृगशिर में आएगा। तिल, चाँदी, सोने, ग्वार में तेजी बनेगी। रूई में पहले मन्दी बनकर फिर तेजी बनेगी। अन्य व्यापारिक वस्तुओं में कुछ मन्दी बनेगी।

28 अप्रैल को सूर्य भरणी नक्षत्र में आने से रूई, अलसी में मन्दी बने। सोना, चाँदी, ताँबा, मूँगा, पीतल, लोहा तथा गेहूँ, जौं, चना, चावल, मोठ, अलसी, रूई, सरसों, गुड़, खाण्ड, घी में तेजी बने।

29 अप्रैल को शुक्र भी रेवती नक्षत्र में आकर बुध के बुध के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। बुध-शुक्र पर गुरु की विशेष दृष्टि भी है। रूई, कपास, चाँदी, चावल, चन्दन, कपूर, गुड़, खाण्ड, शक्कर, सोना, चाँदी आदि जवाहरात में अचानक पहले तेजी का झटका लगकर ज़ोरदार मन्दी बन सकती है। **सावधानीपूर्वक सौदे करें।**

ता. 25 व 29 अप्रैल को शेयर बाज़ार में भी विशेष उठा-पटक रहेगी। एकदम तेजी तथा एकदम मन्दी की लाईन बने। तुरन्त छोटे सौदे करें।

30 अप्रैल को धनु राशिगत शनि वक्री होगा। मंगल-शनि के मध्य षडाष्टक योग पहले से चल रहा है। कुछ जिन्सों में भारी तेजी तथा कुछ में भारी मन्दी का रुख बनेगा। गुड़, खाण्ड, चने में अच्छी तेजी बनेगी, जबकि सरसों, तेल, सोयाबीन में विशेष मन्दी बनेगी।

☞ मई—मासारम्भ ता. 3 मई को बुध अश्विनी नक्षत्र तथा मेष राशि में आकर सूर्य के साथ एकराशि सम्बन्ध बनाएगा। सोना, चाँदी, मूँग, मोती, जवाहरात आदि धातुएं, गेहूँ, चना, जौं आदि अन्न और तिल, सरसों, रूई, कपास, घी, गुड़, खाण्ड में पहले मन्दी बनकर शीघ्र तेजी का रुख बनेगा।

4 मई को शनिवारी अमावस भी वायदा-बाज़ार में तेजीकारक रहेगी।

7 मई को मंगल मिथुन राशि में आकर राहु के साथ मेल करेगा तथा शनि के साथ समसप्तक योग बनाएगा। ध्यान रखें—यह भयंकर तेजी की ग्रहस्थिति है। राजनैतिक घटनाक्रम पर इस तेजी की मात्रा भी निर्भर करेगी। मज़बूत राजनैतिक सरकार का परिदृश्य उपस्थित होने पर तेजी का बोलबाला रहेगा तथा गठबन्धन व कमज़ोर सरकार का आभास होने पर तेजी की मात्रा कम होगी। रूई, गुड़, खाण्ड, शक्कर, अलसी, ताँबा, मजीठ, सोना, सरसों, सोयाबीन, लाल-मिर्च तथा अन्य लाल वर्ण की वस्तुओं तथा समस्त करियाना बाज़ार में तेजी का वातावरण बने।

शेयर-बाज़ार में भी विशेष तेज़ी का बोलबाला रहेगा। झटके की मन्दी भी सम्भव है। सावधानी से काम करें।

9 मई को राहु पुनर्वसु 2 तथा केतु पू.षा. 4 में आएगा। वायदा एवं हाज़िर बाज़ार में काफी उथल-पुथल रहेगी। कुछ जिन्सों, खाण्ड, सोने में तेजी तथा कुछ में मन्दी बनेगी। **शेयर-बाज़ार में मन्दी का झटका लग सकता है।**

10 मई को शुक्र मेष राशि में आकर सूर्य एवं बुध के साथ मेल करेगा। गेहूँ, जौं, चना आदि सभी प्रकार के अनाजों, घी, हल्दी, सोयाबीन में तेजी बनेगी। सोना-चाँदी में विशेष तेजी बनेगी। गुड़, शक्कर, बारदाना, अरहर, दालों में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी। ऊन, तिल, तेल, सरसों, अलसी, अरण्डी में कुछ मन्दी बने। इसी दिन बुध पूर्व में अस्त भी होगा तथा भरणी नक्षत्र में भी आएगा। रूई, चाँदी में विशेष घटाबढ़ी तथा घी में अचानक मन्दी का झटका भी लग सकता है।

11 मई को सूर्य कृतिका नक्षत्र में आने से घी, रूई, सोना, चाँदी, अलसी, एरण्ड, गेहूँ, जौं, चना, मूँग, मोठ, चावल, राई, सरसों में तेजी बनेगी।

15 मई को सूर्य वृष राशि में आकर गुरु के साथ समसप्तक योग बनाएगा। सोना, चाँदी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, कपास, रूई, सूत, बादाम, सुपारी, नारियल, तिल, तेल, सरसों आदि में तेजी बनकर शीघ्र भाव सामान्य हो जाएंगे। इसलिए तुरन्त मुनाफा काट लें। जौं, चना, गेहूँ, मटर, अरहर, मूँग, चावल में कुछ मन्दी बने।

17 मई को मंगल आर्द्रा तथा बुध कृतिका नक्षत्र में आएगा। रूई, सूत, कपास, अलसी, एरण्ड, गुड़, खाण्ड, तिल, तेल, नमक में तेजी बनेगी। चाँदी में विशेष घटाबढ़ी के बाद मन्दी बनेगी।

18 मई को बुध वृष राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। सूर्य-बुध का गुरु के साथ समसप्तक योग भी बना हुआ है। बुध यहाँ बाज़ारों में साधारण मन्दी कर सकता है। लेकिन सूर्य-बुध योग यहाँ तेजी ही करेगा। चाँदी, गेहूँ, चना आदि अनाजों, रूई, तिल, तेल, सोयाबीन, चावल में तेजी बनेगी।

21 मई को शुक्र भरणी में आकर सोना, चाँदी, अफीम, लाल रंग की वस्तुओं, सरसों, तिल, तेल, अलसी, घी, उड़द, नारियल में कुछ मन्दी, परन्तु चना, मूँग, मोठ, ज्वार तथा रूई में तेजी बनेगी।

23 मई को बुध रोहिणी नक्षत्र में आने से रूई, कपास, सूत, सोना, ताँदी, तिल, तेल, सरसों, चावल, गुड़, खाण्ड में तेजी बने।

25 मई को सूर्य भी रोहिणी नक्षत्र में आकर बुध के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। तिल, तेल, एरण्ड, अलसी, सरसों, गुड़, खाण्ड, घी, गेहूँ, जौं, चना, ज्वार, बाजरा, ऊन, सूत, वस्त्र, सन, सुपारी, मिर्च, राई में तेजी बनेगी, परन्तु शीघ्र ही इस तेजी में कमी आ सकती है। चाँदी तथा शेयर बाज़ार में भी मामूली मन्दी का झटका लग सकता है।

ता. 25 से 28 मई तक शेयर बाज़ार में काफी घटाबढ़ी रहे। बाजार अस्थिर रहेंगे।

29 मई को बुध मृगशिर में आकर सरसों, गेहूँ, तिल, उड़द, राजमा, चने में मन्दी करेगा। रूई, चाँदी में घटाबढ़ी होकर मन्दी बने।

31 मई को वक्री गुरु ज्येष्ठा 3 में आकर चाँदी, घी, हल्दी में कुछ मन्दी करेगा।

☞ जून—मासारम्भ ता. 1 जून को ही बुध मिथुन राशि में आकर मंगल एवं राहु के साथ मेल करेगा। इनका शनि-केतु के साथ समसप्तक योग रहेगा। जिन वस्तुओं/जिन्सों में पहले तेजी चल रही होगी, बुध उनमें और अधिक तेजी बनाएगा। सोना, चाँदी, सरसों, रूई, गुड़, शक्कर, ग्वार, मूँग, खाण्ड, बेसन, क्रूड-आयल, लाल-वस्तुओं में झटके की तेजी बनेगी।

प्रथम सप्ताह शेयर-बाज़ार में भी मन्दी-तेजी के विशेष झटके लगेंगे।

ता. 1 को ही बुध पश्चिम में उदय होगा तथा शुक्र कृतिका नक्षत्र में आएगा। सोना, चाँदी, जौं, चावल, हींग, तिल, सरसों में मन्दी का चाँस है। **परन्तु हमारे विचारानुसार तेजी का ही वातावरण बनेगा।**

ता. 4 जून को शुक्र अपनी राशि (वृष) में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। सूर्य-शुक्र का गुरु के साथ समसप्तक योग भी रहेगा। वायदा-बाज़ार में अच्छी घटाबढ़ी चलेगी। सोना, चाँदी, रूई, कपास, खाण्ड, नमक, शेयर-बाज़ार के I.T. सेक्टर में घटाबढ़ी के मध्य पहले मन्दी, फिर तेजी बनेगी। तुरन्त मुनाफा लेकर निकल जाएं।

5 जून को मिथुन राशिगत बुध आर्द्रा में आएगा। जोकि कुछ मन्दा करता है, परन्तु यहाँ मं.-बु.-रा. का श.-के. के साथ समसप्तक योग होने से गेहूँ, तिल, उड़द, जौं, चना, मूँग, मोठ में मन्दी की जगह तेजी बनेगी।

7 जून को मंगल पुनर्वसु नक्षत्र में आकर राहु के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। रूई, चाँदी, नमक, खाण्ड, तिल, तेल, सरसों में झटके की तेजी के बाद शीघ्र भाव वापिस भी आ सकते हैं। **तुरन्त मुनाफा काटें।**

8 जून को सूर्य मृगशिर नक्षत्र में आने से रूई, सूत, रेशम, सन्, कपूर, कस्तूरी, चन्दन, सोना, चाँदी, उड़द, मूँग, मोठ, चने, बाजरा, अलसी, नारियल में तेजी से लाभ मिलेगा।

ता. 8 से 11 जून घटाबढ़ी के मध्य तेजी हावी रहेगी।

13 जून को बुध पुनर्वसु में आकर मंगल एवं राहु के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। मंगल-बुध-राहु का पहले ही शनि-केतु के साथ समसप्तक सम्बन्ध बना हुआ है। अतः चाँदी, रूई, कपास, सूत, सन, मस्टर्ड आयल, सोयाबीन आदि में मन्दी बनकर शीघ्र ही तेजी का रुख बनेगा।

15 जून को सूर्य भी मिथुन राशि में आकर मंगल-बुध एवं राहु के साथ मेल कर चतुर्ग्रही योग बनाएगा। सूर्य-मंगल-बुध-राहु का शनि-केतु के साथ समसप्तक योग भी रहेगा। वर्तमान ग्रहस्थिति राजनीतिक अस्थिरता, उठापटक तथा प्राकृतिक प्रकोपों से फसलों की हानि का संकेत कर रही है। अतः बाज़ार में अफवाहों के कारण अप्रत्याशित तेजी बन सकती है। तुरन्त मुनाफा लेकर निकल जाएं। कंद-मूल, फलों, पाट, बारदाना, रेशम, सूत, कपास, रूई, सरसों, लोहा, तिल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी, घी, मूँग, उड़द, गेहूँ, चना, चावल, सोना, चाँदी में ज़ोरदार तेजी बनेगी।

शेयर-बाज़ार में तेजी बनकर अचानक मन्दी का अच्छा झटके लगेगा।

20 जून को बुध कर्क राशि में आएगा। इस पर गुरु की विशेष दृष्टि रहेगी। रूई, चाँदी, गुड़, दूध, तेल, मूँगफली, सरसों, सोने में पहले कुछ तेजी बनकर बाद में मन्दी बन जाएगी।

22 जून को मंगल भी कर्क (अपनी नीच) राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा। इन पर गुरु की विशेष दृष्टि रहेगी। इसीदिन सूर्य भी आर्द्रा नक्षत्र में आएगा। रूई, सूत, कपास, खल, अलसी, एरण्ड, मोती, गेहूँ, चावल, चना, जौं, चाँदी में तेजी बनकर भाव कुछ

23 जून को शुक्र मृगशिर नक्षत्र में आएगा। गेहूँ, चना, ज्वार में मन्दी का रुख बने तथा गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी बनेगी।

24 जून को बुध पुष्य नक्षत्र में आने से सोने, चाँदी, रूई, मूंग, चना, सरसों तेल में घटाबढ़ी के बाद मन्दी बने।

27 जून को मंगल पुष्य नक्षत्र में आकर बुध के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। रूई, चाँदी, सोने, गुड़ में घटाबढ़ी के बाद विशेष तेजी बनेगी।

28 जून को शुक्र मिथुन राशि में आकर सूर्य एवं राहु के साथ मेल करेगा। इनका शनि-केतु के साथ समसप्तक सम्बन्ध रहेगा। यद्यपि अकेला शुक्र यहाँ मन्दीकारक होता है, परन्तु हमारे विचार अनुसार यहाँ तेजी का वातावरण बनेगा। गेहूँ, जौं, चना, चावलों में ज़बरदस्त तेजी बनेगी। गुड़, रूई, कपास, सूत, वस्त्र, अरण्डी, तिल, तेल, सरसों, अरहर, ग्वार, घी, अलसी में भी घटाबढ़ी के बाद तेजी बने।

शेयर बाज़ार (विशेषकर साफ्टवेयर, I.T. सेक्टर) भी तेज रहे।

☞ जुलाई—ता. 28 जून से चल रही तेजी मासारम्भ ता. 3 तक न्यूनाधिक रूपेण चलेगा। ता. 4 जुलाई को शुक्र आर्द्रा नक्षत्र में दाखिल होगा। इस समय शुक्र पर शनि की दृष्टि भी है। अतः वर्षा आदि से बाज़ारों का रुख अचानक पलट सकता है। **1-2 दिन तक अनाजों में अचानक मन्दे का वातावरण बन सकता है। सावधान रहें।**

6 जुलाई को सूर्य पुनर्वसु नक्षत्र तथा शनि पू.षा. (3) में आने से रूई, सोना, चाँदी, गुड़, कपास, बिनौला, एरण्ड, अलसी, सरसों, लाख, देवदारू, तिल, ज्वार, मोठ, बाजरा, उड़द, चावल, नमक, सब्जी, हरड़, सुपारी, नारियल, केसर, नील, सोंठ, गुग्गुल आदि सुगन्धित पदार्थों एवं अन्य करियाने में अच्छी तेजी बनेगी।

7 जुलाई को कर्क राशिगत बुध वक्री होने से खाण्ड, रूई, चावल, घी, चाँदी, कपास में तेजी बनेगी। (शेयर बाज़ार में (विशेषकर बैंकिंग सेक्टर) विशेष तेजी बनेगी।)

11 जुलाई को मंगल पश्चिम में अस्त होगा। कर्कस्थ मंगल-बुध पर गुरु की विशेष दृष्टि है। रूई, घी, सोने, चाँदी में तेजी बनकर मन्दी का झटका लग सकता है–सावधान रहे। गेहूँ, चना आदि अनाजों, अलसी, जौं, चना, गुड़, मस्टर्ड आयल, सोयाबीन तेल में विशेष तेजी बनेगी।

15 जुलाई को शुक्र, पनर्वसु नक्षत्र में आने से धान्य, बिनौला, खाण्ड, अरहर में तेजी बनेगी। सोना, चाँदी, रूई, कपास, सूत में पहले मन्दा आ सकता है, अतः यहाँ स्टॉक करना आगे जाकर शीघ्र लाभ देगा।

16 जुलाई को सूर्य कर्क राशि में आकर मंगल एवं बुध के साथ मेल करेगा। इन पर गुरु की विशेष उच्च दृष्टि रहेगी। वायदा/हाजिर बाज़ार में शीघ्र तेजी बनकर पुनः कुछ मन्दी बन जाएगी–तुरन्त मुनाफा काट लें। रूई, सूत, बादाम, सुपारी, फल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, नारियल, सरसों, सोना-चाँदी आदि में तेजी बनकर कुछ दिन बाद भाव कम होंगे। गेहूँ, चना, जौं, मटर, उड़द, अरहर, मूंग, चावल में थोड़ी मन्दी बनेगी।

18 जुलाई को मंगल आश्लेषा नक्षत्र में आकर रूई, चाँदी, घी में मन्दी करेगा।

चना, खाण्ड में तेजी बने। रूई, चाँदी मे भी घटाबढ़ी होकर तेजी बने।

20 जुलाई को सूर्य पुष्य नक्षत्र में आएगा। तिल, तेल, सरसों, सोयाबीन, मस्टर्ड आयल, खाण्ड, चावल, गेहूँ, जौं, ज्वार, बाजरा, सुपारी, सोंठ, गुग्गुल, हींग, हल्दी, लाख, सोना, चाँदी तेज रहेंगे। परन्तु रूई मे तेजी के बाद मन्दी बन सकती है।

23 जुलाई को शुक्र भी कर्क राशि मे आकर सूर्य, बुध एवं मंगल के साथ चतुर्ग्रही योग बनाएगा। इन पर गुरु की विशेष दृष्टि रहेगी। अलसी, एरण्ड, तेल, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चने, जौं, रूई में अच्छी तेजी बनेगी। तुरन्त मुनाफा ले लेवें। क्योंकि गुरु की दृष्टि से शीघ्र मन्दी का रुझान बन सकता है।

26 जुलाई को शुक्र पुष्य नक्षत्र में आकर सूर्य के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। रूई, सूत, सन, रेशम, चावल, ऊन व धान्य में अच्छी तेजी बने एवं शिंगरफ, अफीम, हींग, गुड़, खाण्ड, शक्कर में मामूली तेजी बन मन्दी बनेगी।

29 जुलाई को वक्री बुध पूर्व में उदय होने से घी, अनाज, शेयरों, चाँदी, चना, कपास, खल-बिनौले, रूई में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

30 जुलाई को वक्री बुध मिथुन राशि में राहु के साथ मेल करेगा तथा इनका शनि-केतु के साथ समसप्तक दृष्टि सम्बन्ध भी रहेगा। सोना, चाँदी, बैंकिंग शेयर्ज़, सोयाबीन, तेल, रिफाईंड ऑयल में अच्छी तेजी का झटका लगे। मुनाफा लेकर सौदे सैटल करें।

☞ अगस्त—मासारम्भ में ही 1 अगस्त को मिथुन राशिगत बुध मार्गी होने से बाज़ार में एकदम परिवर्तन होंगे। चना, मूँग, मोठ, तेल में मन्दी बनेगी। शेयर-बाज़ार में प्रारम्भ में अच्छी तेजी बन मन्दी रहेगी।

3 अगस्त को सूर्य आश्लेषा नक्षत्र में आएगा। इसी दिन बुध पुनः कर्क राशि में आकर सूर्य-शुक्र-मंगल के साथ मेल कर चतुर्ग्रही योग बनाएगा। राजनैतिक एवं प्राकृतिक (वर्षा आदि से) वातावरण के कारण वायदा बाज़ारों में विशेष उथल-पुथल रहेगी। सोना, चाँदी, रूई, बिनौला, सभी प्रकार के तेल (आयल), उड़द, चना, गुड़, शक्कर, घी, सरसों, अलसी, सोयाबीन, ज्वार में तेजी बनेगी। शीघ्र लाभ ले लेवें।

5 अगस्त को शुक्र आश्लेषा नक्षत्र में आकर सूर्य के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। रूई, चावल, घी, चाँदी, खाण्ड में अचानक तेजी बनकर शीघ्र मन्दी बनेगी।

8 अगस्त को मंगल सिंह राशि में आकर वृश्चिक राशिगत गुरु पर विशेष स्वगृही दृष्टि रखेगा। सोना, चाँदी, ताँबा, लोहा आदि धातुओं, गुड़, शक्कर, खाण्ड, गेहूं, अलसी, रूई, लाल-मिर्च तथा अन्य लाल वस्तुओं में तेजी बनेगी।

11 अग. को वृश्चिक राशिगत गुरु मार्गी होगा। गुरु पर मंगल की विशेष नज़र है। रूई, चाँदी, घी, हल्दी में पहले मन्दी बनकर बाद में तेजी बनेगी। चावल, अलसी, सरसों, गुड़, सोयाबीन, सभी आयल तेज रहें।

12 से 15 अग. तक वायदा बाज़ार में घटाबढ़ी के मध्य साधारण तेजी रहे। सोना/चांदी थोड़ा सुस्त रहें। शेयर बाज़ार में घटाबढ़ी के बावजूद मज़बूती रहेगी।

परन्तु 16 अग. को शेयर-बाज़ार विशेष तेज होगा।

16 अग. को शुक्र सिंह राशि में आकर मंगल के साथ मेल करेगा। सोना, ताँबा, जौं, चना, गेहूँ, लाल-चन्दन, मजीठ, शेयर्ज़, लाल-मिर्च, लाल रंग की वस्तुएं, घी, रसादि पदार्थों में तेजी बनेगी।

17 अगस्त को सूर्य भी सिंह राशि में आकर मंगल एवं शुक्र के साथ मेल करेगा। यह चल रही तेजी को बढ़ावा देगा। फिर भी बाज़ार के रुख को देखकर आगे बढ़ें। सोना, चाँदी, रूई, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, तैल, एरण्ड, सरसों, सोयाबीन तथा अन्य लाल रंग की वस्तुएं तेज होंगी। शेयर-बाज़ार में पहले तेजी बनकर बाद में मन्दी का झटका लगे।

19 अगस्त को बुध आश्लेषा नक्षत्र में आकर तिल, तेल, सरसों, गुड़, खाण्ड, उड़द, मूँग, मूँगफली में तेजी करेगा।

22 अगस्त को बुध पूर्व में अस्त होगा। अनाज, घी, रूई, सोने में घटाबढ़ी के बीच पहले मन्दी, बाद में तेजी बनेगी।

26 अगस्त को बुध मघा नक्षत्र तथा सिंह राशि में आकर सूर्य, मंगल, शुक्र के साथ मेल करके चतुर्ग्रही योग बनाएगा। इस योग को विशेष ध्यान में रखें क्योंकि कई बार बुध चल रही तेजी या मन्दी दोनों को बढ़ावा देता है। हमारे विचारानुसार वर्तमान ग्रहस्थिति वायदा या हाजर बाज़ार में भयंकर तेजी का इशारा (संकेत) कर रही है। चाहे अल्पकाल के लिए ही क्यों न हो। सोना, चाँदी, सूत, रूई व ऊनी वस्त्र, खट्टे पदार्थों, तेल, सोयाबीन, मस्टर्ड आयल, सरसों में अच्छी तेजी बने। गुड़, खाण्ड, शक्कर में भी साधारण तेजी बने।

29 अगस्त को मंगल भी पू.फा. नक्षत्र में आकर शुक्र के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। तिल, तेल, सरसों, मूँगफली, घी, गुड़, खाण्ड, नमक, सोयाबीन, हल्दी, लालमिर्च में अच्छी तेजी बनेगी।

31 अगस्त को शनिवारी चन्द्रदर्शन तथा सूर्य भी पू.फा. नक्षत्र में आकर मंगल एवं शुक्र के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। **ध्यान रखें**, सूर्य-मंगल-बुध-शुक्र का **चतुर्ग्रही योग** बना हुआ है। सोने, चाँदी, गुड़, जीरा, खाण्ड, सरसों, सोया, तिल, तेल, घी, गेहूँ, ज्वार, चावल, ऊनी कपड़े, रूई में तेजी का वातावरण बनेगा। लाभ उठाकर निकल जाएं।

☞ सितम्बर—मासारम्भ 1 सितम्बर को वक्री शनि पू.षा. (2) में आने से सरसों, कपास, जीरे, जौं में आने वाली तेजी से शीघ्र लाभ ले लेवें।

2 सितं. को बुध पू.फा. नक्षत्र में आकर सूर्य, मंगल, शुक्र के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बना लेगा। गुड़, खाण्ड, गेहूँ, चने, दुग्ध, उड़द में मन्दी की जगह तेजी का रुख बनेगा।

वायदा एवं हाजिर बाज़ार में घटाबढ़ी के मध्य तेजी का रुख 6 सितं. तक चलेगा।

7 सितंबर को शुक्र उ.फा. नक्षत्र में आकर सोना-चाँदी में घटाबढ़ी करेगा। रूई, चना, गेहूँ आदि अनाजों में तेजी बनेगी।

9 सितंबर को बुध उ.फा. नक्षत्र में आकर शुक्र के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा तथा शुक्र कन्या (अपनी नीच) राशि में आएगा। शुक्र पर शनि की विशेष दशम दृष्टि भी रहेगी। उड़द, मूँग, मोठ, अरहर, सभी प्रकार की दालों, चने आदि अनाजों,

गुड़, चावलों, खाण्ड, घास, ऊनी व रेशमी वस्त्रों में तेजी बनेगी। चाँदी में भी घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

10 सितंबर को बुध भी कन्या (स्व.) राशि में आकर शुक्र के साथ मेल करेगा। इन पर शनि की विशेष दृष्टि भी रहेगी। रूई, गेहूँ, जौं, चना, गुड़, शक्कर, खाण्ड, हल्दी में अच्छी तेजी बनेगी। रूई, चाँदी में विशेष घटाबढ़ी रहे। यह तेजी उत्तम-मध्यम तौर पर 14 सितंबर तक चलेगी। **(शेयर-बाज़ार भी तेज रहे।)**

11 सितं. को राहु आर्द्रा नक्षत्र में आकर तेल, सोयाबीन, तिलहन में भारी तेजी करेगा।

13 सितं. को सूर्य भी उ.फा. नक्षत्र में आकर बुध-शुक्र के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। शीघ्र ही रूई, कपास, रेशम, सूत, सोना, चाँदी, लोहा, घी, तेल, अलसी, सरसों, एरण्डी, चावल, उड़द, ज्वार, सुपारी, नारियल, नील में तेजी बनेगी।

परन्तु 17 सितं. को सूर्य कन्या राशि में आकर बुध एवं शुक्र के साथ एकराशि सम्बन्ध बनाएगा तथा इन पर शनि की विशेष नज़र रहेगी। रूई, नारियल, सुपारी, तिल, तेल, मजीठ, लाल-मिर्च तथा अन्य लाल वस्तुओं, सोने, ताँबे, गुड़, सरसों, सोयाबीन तेल में अच्छी तेजी बनेगी। रूई, चाँदी में पहले मन्दी बनकर तेजी बनेगी। **यहाँ हस्त नक्षत्र का शुक्र यदि कुछ जिन्सों में मन्दी करे, तो स्टॉक कर लेना चाहिए। आगे जाकर लाभ मिलेगा।**

18 सितं. को धनु राशिगत शनि मार्गी होगा। बाज़ार के रुख में परिवर्तन हो सकता है–सावधान रहें। रूई, चाँदी, घी में पहले मन्दी बनकर बाद में तेजी बने। तिल, तेल, सरसों, हींग, काली मिर्च में भी शीघ्र ही आगे जाकर तेजी बनेगी। **(शेयर-बाज़ार कुछ मन्दा रहे।)**

19 सितंबर को मंगल भी उ.फा. नक्षत्र में आकर सूर्य के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। **श्राद्ध-पक्ष होने के बावजूद करियाना बाज़ार अधिक मन्दी की तरफ नहीं जाएंगे।** गुड़, खाण्ड, शक्कर, ताँबा, सोने, पीतल, लालमिर्च, मसर, अरहर, राजमां तेज भाव होंगे।

20 सितंबर को बुध पश्चिम में उदय होने से रूई, चाँदी, घी, मूँग में घटाबढ़ी के मध्य पहले मन्दी, फिर मामूली तेजी बने।

24 सितंबर को बुध चित्रा नक्षत्र में आएगा। रूई, चाँदी, क्रूड-आयल में घटाबढ़ी होकर तेजी बनेगी।

25 सितंबर को मंगल कन्या राशि में आकर सूर्य, बुध, शुक्र के साथ एकराशि सम्बन्ध बनाएगा। इन पर शनि की विशेष दृष्टि भी रहेगी। मंगल भी चतुर्थ दृष्टि से शनि को देखेगा। वायदा व हाजिर बाज़ार में विशेष तेजी का वातावरण बनेगा–नोट कर लें। आपके पास स्टॉक होना चाहिए। रूई, चाँदी, सोना, ऊनी, सूती व लाल रंग के सभी वस्त्र, अलसी, गेहूँ तथा लाल रंग की सभी वस्तुओं में तेजी का बोलबाला रहेगा। काली मिर्च, लालमिर्च, क्रूड-आयल भी तेज होंगे।

27 सितं. को सूर्य हस्त नक्षत्र में आएगा। गेहूँ, जौं, ज्वार, गुड़, खाण्ड, कपास, रूई, सूत, जूट, नमक, हरड़, हींग, धनिया, हल्दी में तेजी बनेगी।

28 सितंबर को शुक्र चित्रा नक्षत्र में आकर बुध के साथ एकनक्षत्र सम्बनध बनाएगा। रूई, चाँदी में पहले मन्दी बनकर घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी। गुड़, तेल, सोयाबीन, खाण्ड, शक्कर, ग्वार में भी घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

29 सितंबर को बुध तुला राशि में आएगा। शुक्र की राशि में बुध वस्तुतः मन्दीकारक माना जाता है। परन्तु यहाँ अन्य ग्रहस्थिति अनुसार (सूर्य-मंगल का शनि के साथ दृष्टि सम्बन्ध) मन्दी की अफवाह फैलकर शीघ्र ही तेजी का वातावरण बनेगा। रूई, गुड़, खाण्ड, सोना, ताँबा, चना, ग्वार, बेसन, मक्की में अच्छी तेजी बनेगी। चाँदी, अलसी, सरसों, एरण्ड, बिनौला, मूंगफली में मामूली मन्दी का झटका लगकर शीघ्र तेजी बनेगी। इसी दिन शुक्र का पश्चिम में उदय होना भी सोना, चाँदी, चावल, रूई में तेजीकारक रहेगा।

☞ अक्तूबर—**मासारम्भ 3 अक्तू. को शुक्र (स्वराशि) तुला राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा। बुध-शुक्र परस्पर मित्र ग्रह है। अतः शुक्र बाज़ार में चल रही मन्दी या तेजी को ही बढ़ावा देगा।** रूई, चाँदी में पहले अच्छी तेजी बनकर बाद में मन्दी बनेगी। जबकि गुड़, खाण्ड, घी, सोयाबीन, मस्टर्ड आयल, बादाम में तेजी का वातावरण बनेगा। **(शेयर बाज़ार तेज रहेगा।)**

4 अक्तूबर को शनि पू.षा. (3) में आने से काली मिर्च, सरसों, तेल, अरण्डी, क्रूड-आयल तथा सभी प्रकार के तेलों में तेजी बनेगी।

ता. 5 से 8 तक वायदा-बाज़ारों में घटाबढ़ी अधिक रहेगी।

9 अक्तूबर को शुक्र स्वाती नक्षत्र में आकर बुध के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। गुड़, खाण्ड, चाँदी, शक्कर, घी में तेजी बनेगी।

10 अक्तूबर को मंगल हस्त नक्षत्र में आकर धान्य, घी, गुड़, खाण्ड, नमक, लालमिर्च, राजमां, लाल रंग की अन्य वस्तुओं में तेजी बने।

11 अक्तूबर को सूर्य चित्रा नक्षत्र में आकर रूई, सूत, सोना, चाँदी तथा मोती आदि रत्नों, गुड़, खाण्ड, अरहर, गेहूँ, चना, तिल, नारियल, केसर, कपूर, लाल रंग के वस्त्रों में विशेष तेजी बने।

17 अक्तूबर को सूर्य तुला राशि में आकर बुध एवं शुक्र के साथ मेल करेगा। रूई, चाँदी में कुछ मन्दी बनकर साधारण तेजी बनेगी। गेहूँ, जौं, चना, अलसी, सोना, ताँबे में अच्छी तेजी बनेगी। चन्दन, मजीठ, सुपारी, तेल, मस्टर्ड आयल में भी साधारण तेजी बने।

20 अक्तूबर को विशाखा नक्षत्र का शुक्र वायदा-बाज़ार में कुछ मन्दी बनाएगा।

23 अक्तूबर को बुध वृश्चिक राशि मे आकर गुरु के साथ मेल करेगा। सरसों, सोयाबीन, तेल, घी, एरण्ड आदि तिलहन एवं दालवाना में तेजी का वातावरण बनेगा। **वायदा-व्यापारी इस समय सावधानी से काम करें, क्योंकि बुध-गुरु का यह सम्बन्ध कुछ वायदा बाज़ारों में झटके की मन्दी भी ला सकता है।** इसीदिन मंगल का पूर्व में उदय होना भी बाज़ार की लाईन बदल सकता है।

24 अक्तूबर को सूर्य स्वाती नक्षत्र में आने से रूई, सूत, रेशम, कपड़ा, सोना, चाँदी, गुड़, शक्कर, बिनौला, सुपारी, मिर्च, अलसी, सरसों, राई, हींग, गुग्गुल में तेजी बनेगी।

वायदा-बाज़ार में यह तेजी दीपावली (27 अक्तू.) तक यथावत रहेगी। 27 अक्तू. की रविवारी दीपावली भी तेजीकारक रहेगी।

28 अक्तूबर को शुक्र वृश्चिक राशि में आकर बुध एवं गुरु के साथ एकराशि सम्बन्ध बनाएगा। शुक्र-बुध परस्पर मित्र, जबकि गुरु-शुक्र परस्पर शत्रु ग्रह हैं। शुक्र विशेषतः रूई, कपास, गुड़, खाण्ड एवं चाँदी, चावलों, दालों, तेल, तिलहन के बाज़ारों को प्रभावित करता है। जब गुरु के साथ शुक्र का मेल होता है तो बाज़ारों में ज़ोरदार मन्दी का वातावरण बनता है, परन्तु यहाँ बुध भी साथ होने से अधिक मन्दी नहीं आएगी। **फिर भी बाज़ार के रुख को देखकर ही कार्य करें।**

हमारे विचारानुसार इस समय शेयर-बाज़ार, रूई, चाँदी में पहले मन्दी बनकर बाद में तेजी बने। गुड़, जौं, उड़द, मूँग, मोठ, बाजरा आदि अनाजों में तेजी बनेगी। सोना, ताँबा, हल्दी, घी में मामूली तेजी बने।

30 अक्तू. को पहले बुध फिर शुक्र अनुराधा में आकर एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएंगे। यद्यपि दोनों मित्र ग्रहों का एकनक्षत्र में आना घटाबढ़ी का संकेत दे रहा है। फिर भी रूई, सूत, गुड़, खाण्ड, चावल, नमक, सोना, चाँदी में पहले मन्दी का अच्छा झटका लगेगा। बाद में भाव कुछ सुधारेंगे।

31 अक्तू. को वृश्चिक राशिगत बुध वक्री होने से बैंकिंग शेयरों में उछाल आएगा। गुड़, शक्कर, हल्दी, ताँबा में भी तेजी बनेगी। जबकि अलसी, सरसों, सोया में कुछ मन्दी बने।

☞ नवम्बर—मासारम्भ ता. 2 को वक्री बुध विशाखा नक्षत्र में आकर सभी प्रकार के अनाजों, चना, दालों, मैटल्ज़ में विशेष उथल-पुथल करेगा। रूई, घी में कुछ अच्छी मन्दी भी करेगा।

4 नवंबर को गुरु मूल नक्षत्र तथा धनु राशि मे आकर शनि-केतु के साथ एकराशि सम्बन्ध बनाएगा। इन पर मंगल की दृष्टि भी रहेगी। यह योग तूफानी तेजी का संकेत दे रहा है।

रूई, खाण्ड, गुड़, शक्कर, तिल, तेल, सोया-तेल, मस्टर्ड आयल, घी, सोना, चाँदी, पीतल, लोहा, ताँबा, कांसा, सिक्का, मूंग, उड़द आदि दालों, हल्दी में ज़ोरदार तेज़ी की सम्भावना है। फिर भी बाज़ार के रुख को देखकर आगे बढ़ें।

⇒यद्यपि अकेला बृहस्पति धनु राशि में कई वस्तुओं में विशेष मन्दी लेकर आता है, परन्तु गुरु का शनि-केतु के साथ मेल तथा इन पर मंगल की दृष्टि उपरोक्त वस्तुओं/जिन्सों में तेजी का संकेत दे रहे हैं।

नोट—यदि इस समय घी में मन्दी बन जाए, तो स्टॉक कर उसे फाल्गुन-चैत्र में बेचने से अच्छा लाभ मिलेगा।

6 नवंबर को सूर्य विशाखा नक्षत्र में आकर बुध के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। जौं, चावल, गेहूँ, मसूर, गुड़, खाण्ड, रूई, सूत, सरसों, तिल, एरण्ड में तेजी रहेगी। अलसी, रिफाईंड, चाँदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बने।

7 नवंबर को वक्री बुध तुला राशि मे आकर सूर्य के साथ एकराशि सम्बन्ध बनाएगा। रूई, गुड़, खाण्ड, सोना, ताँबा, गुड़, राजमां, अरहर, मूंग में तो तेजी करेगा ही, सरसों, एरण्ड, तेल, बिनौला, रिफाईंड आयल, चाँदी में पहले मन्दी करके फिर तेजी बनाएगा।

10 नवंबर को मंगल तुला राशि में आकर सूर्य एवं बुध के साथ मेल करेगा। इसी दिन शुक्र ज्येष्ठा नक्षत्र में आएगा। रूई, कपास, सूत, पाट, बारदाना, मूँगफली, गुड़, खाण्ड, गेहूँ तथा उड़द, मूँग आदि अनाजों में तेजी बने। सोना, चाँदी, चावल, सरसों, तिल, तेल, हींग में मन्दी बनेगी।

15 नवंबर को वक्री बुध स्वाती में आकर बाज़ार में कुछ मन्दी का माहौल बनाएगा। रूई, चाँदी में मन्दी बने।

16 नवंबर को सूर्य वृश्चिक राशि मे आकर शुक्र के साथ मेल करेगा। रूई, ताँबा, चाँदी, सोना व ऊनी वस्त्रों, चना, मूँगफली, गुड़, गेहूँ में तेजी बनेगी।

17 नवंबर को वक्री बुध पूर्व में उदय होने से घी, अनाज, शेयरों, चाँदी, चना, कपास, खल-बिनौला, सोने, रूई में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

20 नवंबर को सूर्य अनुराधा तथा मंगल स्वाती नक्षत्र में आएगा। जौं, चना आदि धान्यों, ऊन, रूई, गेहूँ, तिल, तेल, सोयाबीन में तेजी बनेगी। सोना-चाँदी में घटाबढ़ी के बाद पहले तेजी, फिर मन्दी बनेगी। इसी दिन बुध मार्गी होने से मूंगफली, चंदन, कपूर, अगर आदि सुगन्धित वस्तुओं में मन्दी बनेगी।

21 नवंबर को शुक्र मूल नक्षत्र तथा धनु राशि में आकर गुरु, शनि व केतु के साथ मेल करेगा तथा राहु के साथ समसप्तक योग बनाएगा। **ध्यान रखें, यह चतुर्ग्रही योग वायदा व हाजिर बाज़ारों में विशेष उथल-पुथल करेगा। हमारे विचार-अनुसार तो ग्रहस्थिति सभी बाज़ारों में भयंकर तेजी का संकेत दे रही है। यह तेजी चाहे थोड़े समय के लिए ही हो।**

गेहूँ, जौं, चना आदि अन्न तथा चाँदी, सोना, ताँबा आदि धातुएं, वस्त्रों, क्रूड-आयल, हल्दी, घी, ग्वार, काली व लाल-मिर्च, सोयाबीन, सभी प्रकार के तेल-तिलहनों में तूफानी तेजी बने। क्योंकि इसी दिन गुरु मूल (2) में आ रहा है। इसलिए सम्भव है यह तेजी अधिक न टिके। बाज़ार के रुख को देखते हुए निकल जाएं।

26 नवंबर को विशाखा नक्षत्र का बुध रूई, अनाजों में मन्दा करेगा। यद्यपि इसीदिन भौमवती अमावस कुछ वस्तुओं/जिन्सों में तेजी भी करेगी।

मासान्त तक वायदा बाज़ार में घटाबढ़ी रहेगी। छोटे-छोटे सौदे कर साथ-साथ काटते भी जाएं।

☞ दिसम्बर—मासारम्भ ता. 1 को शुक्र पू.षा. नक्षत्र में आकर शनि एवं केतु के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। मूँग, मोठ, उड़द, तिल, तेल, सरसों, चने में पहले कुछ तेजी का वातावरण या झटका लगकर अचानक मन्दी का रुख बन जाएगा।

3 दिसंबर को सूर्य ज्येष्ठा नक्षत्र में आएगा। ऊनी वस्त्रों, सोना, चाँदी, चावल, गेहूँ, जौं, चना, अलसी, सरसों, एरण्ड, हींग, गुग्गुल, गुड़, खाण्ड में तेजी बने। रूई में पहले मन्दी बनकर बाद में तेजी बने।

5 दिसंबर को बुध वृश्चिक राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। घी, तेल, सरसों, रूई, चाँदी में तेजी का रुख बनेगा। सोने में घटाबढ़ी के बाद कुछ मन्दी बने।

7 दिसंबर को अनुराधा नक्षत्र का बुध भी उपरोक्त वस्तुओं/जिन्सों में मन्दी करेगा।

10 दिसंबर को मंगल विशाखा नक्षत्र में आने से रूई, कपास, गेहूँ, चना, ग्वार, सोना, चाँदी, कॉपर में अच्छी तेजी का झटका लगेगा।

[ता. 6 से 13 दिसंबर तक न्यूनाधिक मन्दी का वातावरण लेकर चले। केवल ता. 10-11 को भाव कुछ सुधरेंगे।]

15 दिसं. को गुरु पश्चिम में अस्त होगा। इसीदिन शुक्र मकर राशि में आएगा। शुक्र पर मंगल की विशेष उच्च दृष्टि रहेगी। शेयर-बाज़ार में विशेष तेजी बन सकती है। गुड़, खाण्ड, घी, गेहूँ, चना आदि सभी अनाजों में तेजी बनेगी। सोना-चाँदी में घटाबढ़ी के मध्य पहले मामूली तेजी, फिर मन्दी बन सकती है।

16 दिसं. को सूर्य मूल नक्षत्र तथा धनु राशि में आकर गुरु, शनि, केतु ग्रहों के साथ एकराशि सम्बन्ध बनाकर चतुर्ग्रही योग बनाएगा। कृपया ध्यान दें, यह ग्रहस्थिति विश्व व भारत की राजनीति में विशेष घटनाप्रद वाली रहेगी। जिसका प्रभाव वायदा व हाजिर व्यापार पर भी पड़ेगा। **बहुत ही सावधानीपूर्वक काम करें।**

क्रूड-आयल, सोना, चाँदी, तेल, तिलहन, तिल, रूई, गेहूँ, धान्य (चावल) आदि सभी अनाजों तथा खाद्य-वस्तुओं में भयंकर तेजी की सम्भावना है। बाज़ार के रुख को देखते हुए धीरे-धीरे आगे बढ़े।

23 दिसंबर को शुक्र श्रवण नक्षत्र में आएगा। सोना, चाँदी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, मूँग, उड़द, मोठ, अनाजों में कुछ मन्दी बनेगी।

25 दिसंबर को मंगल स्वराशि वृश्चिक में आएगा तथा बुध मूल नक्षत्र एवं धनु राशि में प्रविष्ट होकर सूर्य, गुरु, शनि, केतु के साथ एक राशिस्थ सम्बन्ध बनाएगा। यह ग्रहस्थिति भी तूफानी तेजी का संकेत दे रही है। अकेला बुध धनु राशि में मन्दीकारक होता है। परन्तु यहाँ पंचग्रही योग वायदा/हाजिर बाज़ार में तूफानी तेजी का वातावरण बनाएगा।

सोना, चाँदी, कॉपर आदि धातुएं, गुड़, रूई, ऊनी वस्त्र, ग्वार, क्रूड-आयल में ज़बरदस्त तेजी बने। **(शेयर बाज़ार पहले तेज होकर अचानक बुरी तरह नीचे आ सकते हैं।)**

26 दिसंबर को **कंकण सूर्यग्रहण** तथा शनि का उ.षा. नक्षत्र में प्रवेश भी अनाजों, रूई, कपास, लोहा, चन्दन, मजीठ, तिलहन, तेल के बाज़ारों में तेजी का वातावरण बनाएगा।

27 दिसंबर को शनि पश्चिम में अस्त होकर शेयर-बाज़ार, सोने, ताँबे में मन्दी लेकर आएगा। अनाज तेज रहें।

29 दिसं. को सूर्य पू.षा. नक्षत्र में आकर केतु के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। तिल, तेल, सरसों, बिनौला, गुड़, खाण्ड, हल्दी, गुग्गुल, कपूर, चाँदी, ऊनी-वस्त्रों में तेजी बने।

30 दिसं. को मंगल अनुराधा नक्षत्र में आने से रूई, कपास, गेहूँ, लालमिर्च, गुड़ तथा लाल रंग की वस्तुओं में तेजी का रुख रहेगा।

नोट—गोचर ग्रहस्थिति अनुसार ऊपर दिए गए व्यापारिक रुख, लाईन तथा चांसों के विपरीत बाज़ार का रुख चले या वायदा व्यापार की लाईन न चले, तो तुरन्त सौदा काटकर हानि से बचें। व्यापार में किसी प्रकार की हानि होने पर हम जिम्मेवार न होंगे।—सम्पादक

आज का दिन कैसा गुजरेगा ?

जिस दिन को मालूम करना हो कि **आज का दिन आपका कैसा गुजरेगा ?** तो उस दिन आप पंचांग में देखें कि चन्द्रमा किस नक्षत्र पर है। आप उस नक्षत्र को नं. १ पर से गिन कर ऊपर लिखे चक्र के क्रमानुसार 28 नक्षत्र लगा लें। फिर देखें कि आपके नाम का नक्षत्र किस स्थान पर आता है। वैसा फल जानें। यदि आपके नाम का नक्षत्र वृत्त (गोलाकार) के अन्दर पड़ेगा तो उस दिन शुभ समाचार, प्रिय बन्धु से मिलाप व धन लाभ होगा। यदि गोल वृत्त के बाहर पड़े तो दिन का आधा भाग खुशी में, आधा भाग फिकर और चिन्ता में व्यतीत होगा। यदि त्रिशूल के ऊपर पड़े तो पूरा दिन परेशानी, झगड़े, धन हानि व चिन्ता में व्यतीत होगा। **उदाहरणार्थ आज यदि मघा नक्षत्र हो तो, उसे नं. १ लें।** इसी क्रम में पू.फा. आदि 28 नक्षत्र क्रम से लिख लें। नक्षत्रों की तालिका इसी पंचाँग के अन्तिम पृष्ठों में देखें।
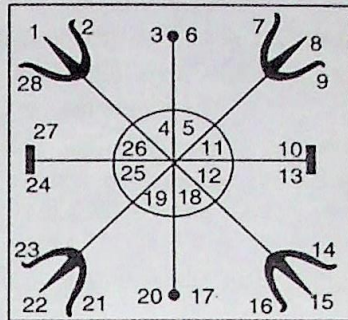
खोई हुई वस्तु मिलेगी या नहीं ?

विनष्टार्थस्य लाभोऽन्धे शीघ्रं मन्दे प्रयत्नतः। स्यात् दूरेश्रवणं मध्ये श्रुत्याप्ती न सुलोचने॥

१. **अन्धाक्ष नक्षत्रों** में गुम हुई अथवा चोरी हुई वस्तु पूर्व दिशा की ओर जाती है और उसकी पुनः प्राप्ति की शीघ्र सम्भावना रहती है।

२. **सुलोचन नक्षत्रों** में गुम हुई वस्तु उत्तर दिशा में जाती है परन्तु उसका न तो पता चलता है और न ही प्राप्त होती है।

३. **मध्याक्ष नक्षत्र** में खोई वस्तु पश्चिम दिशा की ओर अति दूर चली जाती है। पता चलने पर भी प्राप्त (हस्तंगत) नहीं होती।

४. **मन्दाक्ष नक्षत्र** में गुम अथवा चोरी हुई वस्तु दक्षिण की ओर चली जाती है तथा अत्यधिक प्रयत्न करने पर अन्ततोगत्वा वह प्राप्त हो जाती है। अन्धाक्षादि नक्षत्र निम्नलिखित हैं–

नक्षत्र संज्ञा	नाम नक्षत्र							मिलेगी या नहीं
(१) अन्धाक्ष	रोहणी	पुष्य.	उ.फा.	विशा.	पू.षा.	धनि.	रेव.	शीघ्र मिलेगी।
(२) सुलोचन	कृतिका	पुन.	पू.फा.	स्वा.	मूल.	श्रव.	उभा.	नहीं मिलेगी।
(३) मध्याक्ष	भर.	आर्द्रा.	मघा.	चित्रा.	ज्येष्ठा	अभि.	पू.भा.	पता लगाने पर भी नहीं मिलेगी।
(४) मन्दाक्ष	अश्विनी	मृग.	आश्ले.	हस्त.	अनु.	उ.षा.	शत.	बहुत प्रयत्न करने पर मिलेगी।

चमत्कारिक मन्त्र-तन्त्र एवं यन्त्र

संसार में निरन्तर बढ़ती दुःख शृंखलाओं से मुक्ति हेतु मन्त्र ही सर्वोत्तम सुलभ साधन हैं। अनेक दुःखों से परितप्त प्राणियों के कल्याण हेतु ही हमारे प्रातः स्मरणीय ऋषियों ने मन्त्र विद्या को अपने दिव्य ज्ञान द्वारा प्रकाशित किया है। लौकिक एवं पारलौकिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मन्त्र/उपासना, ध्यान आदि पद्धतियों द्वारा लोगों की जीवन-शैली को प्रभावित किया है। सूक्ष्म मनन चिन्तन के द्वारा विशेष सारगर्भित वर्णों के व्यष्टि रूप को मन्त्र की संज्ञा प्रदान की गई लगती है। पिंगला मतानुसार समस्त ब्रह्माण्ड के विज्ञान के मनन एवं मंथन और संसार रूपी बन्धनों से मुक्ति (त्राण)-इन दोनों प्रकार के कार्यों में उत्तम प्रकार से सिद्धि प्रदान कराने वाला वर्ण समुदाय मन्त्र कहलाता है।

मननं विश्वविज्ञानं त्रणं संसार बन्धनात्। यतः करोति सं सिद्धिं मन्त्र इत्युच्यते ततः।।

जो कार्य मानसिक, शारीरिक एवं आध्यात्मिक उद्देश्य अन्य साधनों से सिद्ध नहीं हो सकते थे, हमारे मनीषि उन्हें मन्त्र जाप साधना से शीघ्र सिद्ध कर लेते थे। मन्त्र सिद्धि के सम्बन्ध में यह आख्यान प्रसिद्ध ही है कि मन्त्र, तीर्थ, ब्राह्मण, देवता, दैवज्ञ (ज्योतिषी), वैद्य एवं गुरु के सम्बन्ध में व्यक्ति की जैसी भावना होगी, वैसे ही उसे फल की प्राप्ति होगी।

मन्त्र तीर्थे द्विजे दैवज्ञे भैषजे गुरौ। यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी।।

मन्त्र-तन्त्र साधना में अभीष्ट सिद्धि एवं सफलता हेतु कुछ विशेष व्रत-नियमों आदि के पालन करने का निर्देश किया है। इनमें श्रद्धा, धैर्य, भक्ति, आसान, धन, शरीर एवं आचरण शुद्धि आदि के आवश्यक नियम बतलाए गए हैं।

मन्त्रों एवं यन्त्रों के अनुष्ठान के लिए सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण, श्रीमहाशिवरात्रि काल, दीपावली, अक्षया तृतीया, सायन-निरयण संक्रान्तिकाल, होलाष्टक, रविपुष्य, गुरुपुष्य, नवरात्रों में, अमृत सिद्ध, भौमवासरी अमावस, पूर्णिमा आदि पर्वों पर मन्त्र-यन्त्रों के अनुष्ठान का विशेष प्रभाव होता है। विविध मन्त्रों के अनुष्ठान एवं उनमें संसिद्धि सम्बन्धी विस्तृत व्याख्या हेतु आप हमारी पुस्तक '**शिव-मन्त्रावली**' पढ़ें।

मन्त्र-तन्त्र साधना के लिए महत्त्वपूर्ण काल

सायन संक्रान्ति प्रवेश एवं पुण्यकाल-(सन् 2019-20 ई.)

भारतीय मुहूर्त्त शास्त्रों ने निरयण संक्रान्ति के पुण्यकाल की भान्ति सायन संक्रान्ति के पुण्यकाल को भी यन्त्र-मन्त्र साधना हेतु विशेष सिद्धिदायक बताया है।

2019-20 ई.	राशि	प्रवेशकाल	पुण्यकाल विवरण (भा. स्टैं. टा.)
20 जनवरी	कुम्भ	14-30	प्रातः 8/06 से रात्रि 20/54 तक
18 फरवरी	मीन	28-34	रात्रि 22/10 से 19 की प्रातः 10/58 तक
20 मार्च	मेष	27-29	रात्रि 21/05 से 21 मार्च की प्रातः 9/53
20 अप्रैल	वृष	14-26	प्रातः 8/02 से रात्रि 20-50 तक
21 मई	मिथुन	13-29	प्रातः 7/05 से रात्रि 19/53 तक
21 जून	कर्क	21-24	दोपहर 15/00 से 27/48 तक
23 जुलाई	सिंह	8-21	22 जुला की रात्रि 1/57 से 23 की दोप. 14/45
23 अगस्त	कन्या	15-32	प्रातः 9/08 से रात्रि 21/56 तक
23 सितम्बर	तुला	13-21	प्रातः: 6/57 से रात्रि 19/45 तक
23 अक्तूबर	वृश्चिक	22-50	सायं 16/26 से 29/14 तक
22 नवम्बर	धनु	20-29	दोपहर 14/05 से 26/53 तक
22 दिसम्बर	मकर	9-50	प्रातः 03/26 से सायं 16/14 तक
20 जन. (2020)	कुम्भ	20-25	दोपहर 14/01 से रात्रि 26/49 तक
19 फरवरी	मीन	10-27	प्रातः 4/03 से सायं 16/51 तक
20 मार्च	मेष	9-20	19 की रात्रि 2/56 से 20 दोप. 15/44 तक

क्रान्तिसाम्य काल (सन् 2019-20 ई.)

यहाँ सूर्य-चन्द्रमा का महापात-गणित द्वारा प्रणीत सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य काल दिया जा रहा है। विवाहादि मुहूर्त्तों में इसी सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य काल को वर्जित किया गया है। यह समयावधि विवाहादि शुभ मुहूर्तों के लिए अशुभ एवं निषिद्ध है, परन्तु मन्त्र-यन्त्रादि तांत्रिक अनुष्ठान के लिए श्रेष्ठ व शुभ होती है।

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
तारीख	घं.	मिं.	तारीख	घं.	मिं.
16 अप्रैल	11	49	16 अप्रैल	16	30
28 अप्रैल	25	36	29 अप्रैल	8	09
11 मई	20	34	11 मई	27	37
23 मई	23	35	24 मई	12	07
14 जुलाई	16	58	15 जुला.	10	50
27 जुला.	28	37	28 जुला.	12	50
8 अग.	20	47	8 अग.	27	10
22 अग.	11	42	22 अग.	17	19
3 सितं.	6	44	3 सितं.	11	12
16 सितं.	14	53	16 सितं.	19	52
28 सितं.	23	08	28 सितं.	27	07
11 अक्तू.	17	47	11 अक्तू.	22	59
24 अक्तू.	15	25	24 अक्तू.	20	04
5 नवं.	20	58	5 नवं.	27	31
19 नवं.	25	05	20 नवं.	8	30
30 नवं.	23	00	1 दिसं.	11	40

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
तारीख	घं.	मिं.	तारीख	घं.	मिं.
सन् 2020 ई०					
8 जन.	24	13	9 जन.	14	25
20 जन.	23	08	21 जन.	7	31
3 फर.	11	06	3 फर.	17	33
15 फर.	7	14	15 फर.	12	10
28 फर.	15	17	28 फर.	20	25
11 मार्च	21	04	11 मार्च	24	58
24 मार्च	18	20	24 मार्च	23	11
वारुणी पर्व					
2 अप्रै.	8	39	2 अप्रै.	24	49
22मार्च,20	सूर्योदय		22 मार्च	10	08
-महावारुणी योग (सन् 2020 ई.)					
21 मार्च	19	40	22 मार्च	सूर्योदय	
-चन्द्रग्रहण					
16 जुला.	25	31	17 जुला.	04	30
सूर्यग्रहण					

-एतदर्थ पृष्ठ 27 से 32 देखिए

(1) कारागार (जेल) से छुड़ाने हेतु एवं मानसिक/शारीरिक रोग निवारण हेतु ''श्रीमयूरेश–स्तोत्रम्''

ब्रह्मोवाच

पुराणपुरुषं देवं नानाक्रीडाकरं मुदा। मायाविनं दुर्विभाव्यं मयूरेशं नमाम्यहम्।। १।।
परात्परं चिदानन्दं निर्विकारं हृदि स्थितम्। गुणातीतं गुणमयं मयूरेशं नमाम्यहम्।। २।।
सृजन्तं पालयन्तं च संहरन्तं निजेच्छया। सर्वविघ्नहरं देवं मयूरेशं नमाम्यहम्।। ३।।
नानादैत्यनिहन्तारं नानारूपाणि बिभ्रतम्। नानायुधधरं भक्त्या मयूरेशं नमाम्यहम्।। ४।।
इन्द्रादिदेवतावृन्दैरभिष्टुतमहर्निशम्। सदसद्व्यक्तमव्यक्तं मयूरेशं नमाम्यहम्।। ५।।
सर्वशक्तिमयं देवं सर्वरूपधरं विभुम्। सर्वविद्याप्रवक्तारं मयूरेशं नमाम्यहम्।। ६।।
पार्वतीनदनं शम्भोरानन्दपरिवर्धनम्। भक्तानन्दकरं नित्यं मयूरेशं नमाम्यहम्।। ७।।
मुनिध्येयं मुनिनुतं मुनिकामप्रपूरकम्। समष्टिव्यष्टिरूपं त्वां मयूरेशं नमाम्यहम्।। ८।।
सर्वाज्ञाननिहान्तारं सर्वज्ञानकरं शुचिम्। सत्यज्ञानमयं सत्यं मयूरेशं नमाम्यहम्।। ९।।
अनेककोटिब्रह्माण्डनायकं जगदीश्वरम्। अनन्तविभवं विष्णुं मयूरेशं नमाम्यहम्।। १०।।
इदं ब्रह्मकरं स्तोत्रं सर्वपापप्रणाशनम्। सर्वकामप्रदं नृणां सर्वोपद्रवनाशनम्।। ११।।
कारागृहगतानां च मोचनं दिनसप्तकात्। आधिव्याधिहरं चैव भुक्तिमुक्तिप्रदं शुभम्।। १२।।

।।इति श्रीमयूरेशस्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

ब्रह्माजी बोले–जो पुराणपुरुष हैं और प्रसन्नतापूर्वक नाना प्रकार की क्रीडाएँ करते हैं ; जो माया के स्वामी हैं तथा जिनका स्वरूप दुर्विभाव्य (अचिन्त्य) है, उन मयूरेश गणेश को मैं प्रणाम करता हूँ।।१।।

जो परात्पर, चिदानन्दमय, निर्विकार, सबके हृदय में अन्तर्यामी-रूप से स्थित, गुणातीत एवं गुणमय हैं, उन मयूरेशको मैं नमस्कार करता हूँ।। २।।

जो स्वेच्छा से ही संसार की सृष्टि, पालन और संहार करते हैं, उन सर्वविघ्नहारी देवता मयूरेश को मैं प्रणाम करता हूँ।। ३।।

जो अनेकानेक दैत्यों के प्राणनाशक हैं और नाना प्रकार के रूप धारण करते हैं, उन नाना अस्त्र-शस्त्रधारी मयूरेशको मैं भक्तिभाव से नमस्कार करता हूँ।। ४।।

इन्द्र आदि देवताओं का समुदाय दिन-रात जिनका स्तवन करता है तथा जो सत्, असत्, व्यक्त और अव्यक्त रूप हैं, उन मयूरेश को मैं प्रणाम करता हूँ।।५।।

जो सर्वशक्तिमय, सर्वरूपधारी, सर्वव्यापक और सम्पूर्ण विद्याओं के प्रवक्ता हैं, उन भगवान् मयूरेशको मैं प्रणाम करता हूँ।। ६।।

मयूरेश उवाच

जो पार्वती जी को पुत्र रूप से आनन्द प्रदान करते और भगवान् शंकर का भी आनन्द बढ़ाते हैं, उन भक्तानन्दवर्धन मयूरेश को मैं नित्य नमस्कार करता हूँ।।७।।

मुनि जिनका ध्यान करते हैं, मुनि जिनके गुण गाते हैं तथा जो मुनियों की कामना पूर्ण करते हैं, उन आप समष्टि-व्यष्टि रूप मयूरेश को मैं प्रणाम करता हूँ।।८।।

जो समस्त वस्तुविषयक अज्ञान के निवारक, सम्पूर्ण ज्ञान के उद्भावक, पवित्र, सत्य-ज्ञान स्वरूप तथा सत्यनामधारी हैं, उन मयूरेश को मैं नमस्कार करता हूँ।।९।।

जो अनेक कोटि ब्रह्माण्ड के नायक, जगदीश्वर, अनन्त वैभवसम्पन्न तथा सर्वव्यापी विष्णु रूप हैं, उन मयूरेशको मैं प्रणाम करता हूँ।।१०।।

मयूरेश बोले–यह स्तोत्र ब्रह्मभाव की प्राप्ति कराने वाला और समस्त पापों का नाशक है, मनुष्यों को सम्पूर्ण मनोवांछित वस्तु देने वाला तथा सारे उपद्रवों का शमन करने वाला है।।११।।

सात दिन इसका पाठ किया जाए तो कारागार में पड़े हुए मनुष्यों को भी छुड़ा लाता है। यह शुभ स्तोत्र आधि (मानसिक चिन्ता) तथा व्याधि (शरीरगत रोग) को भी हर लेता है और भोग एवं मोक्ष प्रदान करता है।।१२।।

।। इस प्रकार श्रीमयूरेशास्तोत्र सम्पूर्ण हुआ।।

(2) ''सर्व कल्याणकारी गायत्री मन्त्र''

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥

अर्थ–परमात्मा (ॐ) के सत् (भूः) चित् (भुवः) व आनन्द (स्वः) स्वरूप, सृष्टिकर्त्ता दिव्य-प्रकाशमान ईश्वर के उस श्रेष्ठ वरणीय तेज का ध्यान करते हैं, जो (वह) परमात्मा हमारी बुद्धि रूपी वृत्तियों एवं कर्मों को (सत् की ओर) प्रेरित करें।

गायत्री मन्त्र से बढ़कर पवित्र एवं परमकल्याणकारी कोई मन्त्र नहीं है। स्कन्दपुराणानुसार समस्त मन्त्रों में प्रणव (ॐ) से युक्त गायत्री दुर्लभ है। तीनों वेदों में गायत्री से बढ़कर और कोई मन्त्र नहीं है। रुद्रगायत्री में लिखा है कि वह गायत्री महेशानी (शिव की शक्ति) और परब्रह्मस्वरूपा कही गई है। ऋषि विश्वामित्र के अनुसार समस्त वेद, यज्ञ, दान, तप आदि गायत्री मन्त्र के सोलहवें हिस्से के बराबर भी नहीं कहे गए। गायत्री मन्त्र जप से पहले षडङ्गन्यास करने का विधान है।

षडङ्गन्यास = ॐ हृदयाय नमः (हृदय का स्पर्श करें), ॐ भू-शिरसे स्वाहा (मस्तक), ॐ भुवः शिखाये वषट् (शिखा-प्रदेश), ॐ स्वः कवचाय हुम् (दाएं कंधे का), ॐ भूर्भुवः स्वः नेत्रभ्यां वौषट् (नेत्रों का) ॐ भूर्भुवः स्वः अस्त्राय फट् (बाएं हाथ की हथेली पर दाएं हाथ को सिर से घुमाकर मध्यमा और तर्जनी से ताली बजाएं)

ध्यान–

ॐ श्वेतवर्णा समुद्दिष्टा कौशेयवसना तथा। श्वेतैः विलेपनैः पुष्पैः अलंकारैश्च भूषिता॥
आदित्य मण्डलस्था च ब्रह्मलोकगताऽथवा। अक्षसूत्रधरा देवी पद्मासनगता शुभा॥

अर्थात् जो श्वेतवर्ण कही गयी हैं, सफेद रेशम का वस्त्र धारण किए हुए हैं, सफेद पुष्प, चन्दन आदि अनुलेपन से युक्त तथा श्वेत आभूषणों से सुशोभित हैं, हाथ में रुद्राक्ष की माला लिए पद्मासन से बैठी हुई है और जो सूर्यमण्डल में अथवा ब्रह्मलोक में स्थित हैं, ऐसी देवी का मैं ध्यान करता हूँ।

विनियोग– ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋषि, गायत्री छन्दः, परमात्मा देवता, शुक्लो वर्णः, गायत्री जपे विनियोगः। ॐ भूर्भुवः स्वरिति महाव्याहृतीनां परमेष्ठी प्रजापतिः ऋषिः गायत्र्युष्णिक् अनुष्टुभश्छन्दांसि अग्नि वायु सूर्या देवताः, ॐ तत्सवितुरित्यस्य विश्वामित्र ऋषिः गायत्री छन्दः सविता देवता जपे विनियोगः।' (अधिक जानकारी के लिए पुस्तक 'शिव-मन्त्रावली' अथवा 'गायत्री मन्त्र शक्ति एवं उपासना' पढ़ें।

(3) सर्वव्याधि/शारीरिक कष्ट निवारणार्थ 'श्रीमहामृत्युञ्जय मन्त्र' (मृतसंजीवनी मंत्र)

'ॐ ह्रौं जूँ सः, ॐ भूर्भुवः स्वः। ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। स्वः भुवः भूः ॐ। सः जूँ ह्रौं ॐ।'

अर्थ– हम परमपिता त्र्यम्बक (भगवान् शिव) की आराधना करते हैं। वह परमसुखदायक एवं पुष्टिवर्धक हैं। जैसे तरबूज आदि फल (पक जाने पर स्वयं ही) बेल से छूट जाता है, वैसे ही (पूर्ण आयु भोगकर) मैं मृत्युमय जीवन से (बिना कष्ट भोगे) छूट जाऊँ, परन्तु अमृतमय जीवन से मत छूटूँ।

संक्षिप्त विधि– यह सम्पुटयुक्त मन्त्र है। ॐकार का प्रतीक शिवलिङ्ग है; उसी के ऊपर अविच्छिन्न-अनवरत जलधारा के प्रवाहवत अपनी दृष्टि स्थिर करते हुए विश्वासपूर्वक मृत्युंजय महामन्त्र का जाप करता रहे तो ध्यानावस्था प्रत्यक्ष खड़ी हो जाती है और एक विलक्षण आनन्द की अनुभूति होती है।

किसी शुभ मुहूर्त में शुद्ध शान्तचित्त, संयमपूर्वक देवालय (विशेषकर शिव मन्दिर), गंगादि तीर्थ स्थान, जलाशय, पीपल वृक्ष के पास अथवा अपने निवास स्थान में स्वच्छ एकान्त स्थान पर संकल्पपूर्वक निश्चित विषम संख्या (एक, तीनादि) में नियमित रूप में श्रद्धापूर्वक पाठ करने से अवश्य लाभ मिलता है। जप संख्या में उलट-फेर या कमी बेशी करने से विक्षिप्तता का भय रहता है। जपसंख्या पूर्ण हो जाने पर जपसंख्या का दशमांश हवन, हवन का दशांश तर्पण तथा एवं तर्पण का दशांश मार्जन एवं यथेष्ट दानादि सहित ब्राह्मण भोजन करवाना चाहिए तथा पाठोपरान्त शिव कवच पढ़ना चाहिए। जप के बाद इस प्रकार प्रार्थना करनी चाहिए।

गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादन्महेश्वर॥
मृत्युंजय महारुद्र त्राहि मां शरणागतम्। जन्ममत्युजरारोगैः पीडितं कर्मबन्धनैः॥

श्रीमहामृत्युञ्जय मंत्र के जप से अकालमृत्यु का निवारण, दीर्घायु व आरोग्य की प्राप्ति होती है। इसके अतिरिक्त जन्मकुण्डली में ग्रह-नक्षत्र दोष, नाड़ी दोष, मंगलीक दोष, शत्रुषडाष्टक, विधुर एवं वैधव्यादि दोषों के निवारण हेतु तथा अतिशय क्लिष्ट एवं असाध्य रोगों और मृत्युतुल्य शारीरिक एवं मानसिक रोगों में उपायस्वरूप अचूक एवं सिद्ध मन्त्र माना गया है।

"श्रीमहामृत्युंजय कवच यन्त्रम्"

भोजपत्र पर अष्टगन्ध से यन्त्र लिखकर गुग्गुल का धूप देकर पुरुष के दाहिने और स्त्री के बायें हाथ में बाँध देना चाहिए। गोत्र, पिता का नाम, पुत्र या पुत्री (रोगी) का नाम यथास्थान लिख देना चाहिए। साथ में रुद्राक्ष माला से महामृत्युञ्जय जप करते रहें।
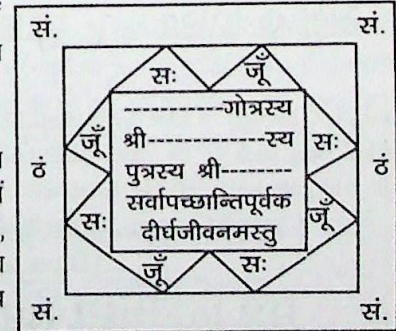
(4) अभीष्ट वर प्राप्ति के लिए

जिस कन्या के विवाह-कार्य में बार-बार विघ्न-बाधाएँ पड़ती हों। उसको गुरु-पुष्य, रवि पुष्य, अक्षया तीज, श्रावण मास में, दीपावली, बसन्त अथवा नवरात्रों में निम्नलिखित मन्त्र का जप आरम्भ करके यथेष्ठ संख्या में 51 हज़ार अथवा सवा लाख की संख्या में नियमित रूप में, शिव-पार्वती अथवा माता के मन्दिर में धूप, दीप जलाकर पीले एवं लाल पुष्प चढ़ाकर सुनिश्चित समय में नियमित रूप से संकल्पपूर्वक एवं विधिवत् जप करना चाहिए। इससे देवी की कृपा से अवश्य कामना सिद्धि होती है–

(१) **ॐ ह्रीं गौर्ये नमः**
हे गौरि शंकरार्धांगि यथा त्वं शंकर प्रिया।
तथा मां कुरू कल्याणि कान्तकान्तां सुदुर्लभाम्॥

(हे गौरी, शङ्कर की अर्द्धाङ्गिनी ! जिस प्रकार तुम शङ्कर की प्रिया हो, उसी प्रकार हे कल्याणी ! मुझ कन्या को दुर्लभ वर प्रदान करो।)

एक अन्य उपयोगी मन्त्र–

(२) **ॐ कात्यायनि महामाये महायोगिनी अधीश्वरी।**
नन्दगोपसुते देवि ! पतिं मे कुरू ते नमः॥

(हे कात्यायनि, महामाया, महायोगिनियों की अधीश्वरि ! मुझे भगवान् कृष्ण सदृश पति प्रदान करो ! तुम्हें नमस्कार है।)

(३) **ॐ देवेन्द्राणि नमस्तुभ्यं देवेन्द्रप्रियभामिनी।**
विवाहं भाग्यमारोग्यं शीघ्रं लाभं च देहि मे॥

(ॐ देवेन्द्राणि ! देव इन्द्र की प्रिय पत्नी ! तुम्हें नमस्कार है। मुझे विवाह, भाग्य, आरोग्य और शीघ्र लाभ प्रदान करें।)

इस मन्त्र का जप भी प्रतिदिन कम से कम 108 बार लगातार अभीष्ट सिद्धि तक करते रहें। जप करने से पहले प्रतिष्ठित तुलसी-पादप की पूजा करके 12 परिक्रमाएँ करें, तदनन्तर दाएँ हाथ से दुग्ध और बाएँ हाथ से जल द्वारा श्रीसूर्यनारायण को 12 बार समन्त्र अर्घ्य दें। तदनन्तर जप करें। इस प्रकार प्रतिदिन अर्घ्यदान और जप करने से तथा प्रयास करते रहने से शीघ्र कार्य सिद्धि होगी।

(5) मनोवांछित पत्नी प्राप्ति के लिए

(१) पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्।
तारिणीं दुर्गसंसार सागरस्य कुलोद्भवाम्॥ (दुर्गा. सप्त., २४)

प्रातःकाल शुद्ध होकर श्रीदुर्गाजी के चित्रपट या मूर्ति पर लाल पुष्प समर्पित करें। दीप प्रज्वलित करके षोडशोपचार पूजन करें, तथा उपर्युक्त मन्त्र की कम से कम 5 माला प्रतिदिन जप करें। किसी ब्राह्मण से जप कराना हो तो भी एक माला जप स्वयं विवाह सम्पन्न होने तक करना चाहिए। साथ ही दुर्गासप्तशती का इसी मन्त्र से सम्पुट करके 18 पाठ करना या कराना चाहिए।

सम्पूर्ण जानकारी के लिए हमारी पुस्तक 'दुर्गा सप्तशती' (भाषा-टीका) पढ़ें।

(२) 'ॐ क्लीं विश्वावसुर्नाम गन्धर्वः कन्यानामधिपतिं लभामि
देवदत्तां कन्यां सुरूपां सालंकारां तस्मै विश्वावसवे स्वाहा।'

सवा लाख जप करने या कराने के बाद दशांश हवन, तर्पण, मार्जन और ब्राह्मण भोजन अवश्य कराना चाहिए।

(6) धन प्राप्ति एवं व्यापार वृद्धि हेतु

''श्रीमहालक्ष्मी मन्त्र एवं यन्त्र''

नीचे श्री महालक्ष्मी जी के कुछ प्रसिद्ध मन्त्र लिख रहे हैं। प्रतिदिन स्नान पूजा के पश्चात् श्रीलक्ष्मी जी की मूर्ति, चित्र (या यन्त्र जो भी हो) के सामने धूप-दीप जलाकर लक्ष्मी जी का ध्यान करते हुए नीचे लिखे किसी भी मन्त्र का जप (एक या अधिक माला) नियमित रूप से संयमपूर्वक निर्धारित संख्या (२७ हज़ार या ५१००० अथवा सवा लाख) में करें अथवा किसी सुयोग्य ब्राह्मण द्वारा करवाएँ। कमलगट्टे की माला हो तो अच्छा है। पाठ से पूर्व एवं पाठ के बाद निम्न श्री लक्ष्मी स्तोत्र पढ़ लेवें तो अत्यन्त शुभकारी होगा–

श्रीमहालक्ष्मी प्रीत्यर्थं प्रसिद्ध मन्त्रः–

(1) ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः

(2) ॐ महालक्ष्म्यै विद्महे महाश्रियं च धीमहि तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात्।

(3) या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मी रूपेण.....................।

उपरोक्त मन्त्रों में से कोई एक मन्त्र संकल्प एवं श्रद्धापूर्वक किसी शुभ मुहूर्त जैसे नवरात्र, अक्षया तीज, गुरु पुष्य, रविपुष्य, दीवाली, ग्रहणादि काल में यथेष्ट संख्या में करने से शीघ्र लाभ होता है। पाठ के उपरान्त श्री सूक्त, अथवा लक्ष्मी स्तोत्र का पाठ करना प्रशस्त रहता है।

ध्यान रहे, पाठोपरान्त निष्ठापूर्वक अभीष्ट कार्य करते हुए पुरुषार्थ एवं उद्यम करना भी अनिवार्य है।

संक्षिप्त लक्ष्मी स्तोत्र

त्रैलोक्यपूजिते देवि कमले विष्णु वल्लभे। यथा त्वमचला कृष्णे तथा भव मयि स्थिरा।।
ईश्वरी कमला लक्ष्मीश्चला भूतिर्हरि प्रिया। पद्मा पद्मालया सम्पदुच्चैः श्री पद्मा धारिणी।।
द्वादशैतानि नमानि लक्ष्मीं सम्पूज्य यः पठेत्। स्थिरा लक्ष्मीर्भवेत्तस्य पुत्रदारादिभिः सह।।

दीपावली के दिन भोजपत्र या चान्दी के पतरे पर साथ लिखे यन्त्र को खुदवाकर 41 दिन के भीतर 21 हज़ार श्रीलक्ष्मी मंत्र का पाठ करके केशर/या सिन्दूर छिड़कते हुए प्रतिदिन नियमपूर्वक एक निश्चित समय पर धूप, पुष्प, अक्षत से पूजन करके ज्योति प्रजवलित करके पाठ करें। एक माला पूर्ण होने पर गंगाजल एवं केशर के छींटे देते रहें।
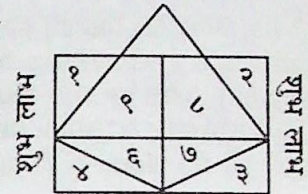
(7) सर्वरोग एवं व्याधि निवारण हेतु

मन्त्र– ''मां भयात् सर्वतो रक्षा श्रियं वर्धय सर्वदा।
शरीरारोग्यं मे देहि देवि देवि नमोऽस्तुते।।''

विधि–एक छोटी कटोरी में शुद्ध जल में गंगाजल मिला लें। उसे अपने बाएँ हाथ की हथेली पर रखकर दाएँ हाथ की हथेली से ढक लें। अपने श्वास को खींचकर स्थिर करके उपर्युक्त मन्त्र को सात बार पढ़कर उस जल को अभिमन्त्रित करके स्वयं या रोगी को जल पिला दें। लगातार 21 दिन तक प्रयोग करना शुभ होगा।

(8) परीक्षा एवं कम्पीटीशन आदि में सफलता के लिए

मन्त्र– ''ॐ नमो गणेशाय ॐ वक्रतुण्डाय महाकाय।
सूर्यकोटि समप्रभः, निर्विध्न कुरू मे देवा, सर्वकार्येषु सर्वदा।।
एकदन्तो महाबुद्धिये, सर्वज्ञो गणनायकः।
सर्वसिद्धि करो देवा गौरीपुत्र विनायकः।।''

विधि–परीक्षा से 40 दिन पहले आने वाले शुक्ल पक्ष के प्रथम बुधवार को प्रातः स्नान करके घर के पूजा-स्थल अथवा किसी भी मन्दिर में श्री गणेश जी की मूर्त्ति के समक्ष।। बेसन के लड्डुओं का भोग लगाकर धूप दीप सहित पूजन करें। हरे हकीक की माला से उपरोक्त मन्त्र का 11 माला जाप करके अपनी परीक्षा में सफलता के लिए निवेदन करने से लाभ एवं कामयाबी के संयोग प्रबल होंगे। पश्चात् प्रतिदिन इस मन्त्र की कम से कम 3 या एक माला का जाप करना एवं श्री गणेश चतुर्थी को विशेष पूजन करके लड्डुओं का भोग लगाना शुभ रहेगा। यह अनुभूत प्रयोग है।

(9) परीक्षा में कामयाबी के लिए अनुभूत प्रयोग

मन्त्र– **''ॐ बुद्धिहीन तनु जानिके सुमिरौ पवन कुमार।**
बल, बुद्धि विद्या देहु मोहिं, हरहु क्लेश विकार।।''

विधि–यह परीक्षा से कम-से-कम 11 मंगलवार पहले आने वाले शुक्ल पक्ष के मंगलवार से शुरू करें। मंगलवार को श्री हनुमान मन्दिर में प्रभु की मूर्त्ति के समक्ष गुड़, भुने हुए चने का भोग अर्पित करके परीक्षा में सफलता के लिए निवेदन करके उपरोक्त मन्त्र की एक माला का जप (तुलसी की माला से) करना शुभ होगा। 11वें मंगलवार को जप के उपरान्त श्री हनुमान जी के बाएं पैर का सिन्दूर लेकर अपने मस्तक पर तिलक करें। परीक्षा में भी प्रश्न-पत्र आने पर इसी मन्त्र का 5 बार स्मरण करने से अपेक्षित परिणाम आएगा। सफलता मिलने पर आप प्रभु को धन्यवाद के साथ चोला अर्पित करना शुभ होगा।

विशेष–यदि किसी विद्यार्थी की कुण्डली में अष्टम गुरू की स्थिति हो, तो विशेष रूप से जन्म-पत्रिका का अवलोकन करवाकर, उपाय सुनिश्चित करें। साथ में गुरूवार को 300 ग्राम गुड़, 300 ग्राम चने की दाल पीले वस्त्र में बांधकर श्री हनुमान मन्दिर में लगातार 8 वीरवार को अर्पित करना शुभ होगा।

(10) दुःख दारिद्रय निवारणार्थः एवं आर्थिक उन्नति के लिए

''ॐ दुर्गे स्मृतां हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थै स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
दारिद्रय–दुःख भयहारिणी का त्वदन्या सर्वोपकार–करणाय सदाऽऽर्द्रचित्ता।।''

उपरोक्त मन्त्र का सम्पुट लगाकर प्रतिदिन श्रीसूक्त के 16 पाठ करने का विधान है। विशेष रूप से भाद्रपद शुक्ल पक्ष की अष्टमी से शुरू करके आश्विन कृष्ण पक्ष की अष्टमी के मध्य श्री महालक्ष्मी का विशेष पूजन एवं 16 दिनों के व्रत तथा हल्दी से रंगे सूत को 16 गांठें श्री महालक्ष्मी मन्त्र के उच्चारण के साथ बांधकर 16 दिन पर्यन्त किया जाता है। विधिपूर्वक पाठ एवं दशांश हवन करवाने से धन-पुत्रादि की प्राप्ति होने के शुभ संयोग बनते हैं।

(11) धन पुत्रादि की वृद्धि एवं बाधाओं के निवारणार्थ

मन्त्र– **सर्वाबाधा विनिर्मुक्तो धन–धान्य–सुतान्वितः।**
मनुष्यो मत्प्रसोदन भविष्यति न संशयः।।

नवरात्रों में विधिपूर्वक घटस्थापन आदि करके प्रतिदिन नियमपूर्वक उपरोक्त मन्त्र का श्री दुर्गासप्तशती के पाठ के साथ सम्पुट लगाकर (अर्थात् सम्पुटित पाठ) पाठ करने का विधान है। पाठाध्याय के साथ-साथ श्री अर्गला स्तोत्र एवं सिद्ध कुंजिका स्तोत्र का पाठ करना भी प्रशस्त होगा। सप्तशती के ग्यारह पाठ पूर्ण होने पर अन्तिम दिन दशमांश संख्या में हवनादि करवाकर ब्राह्मणों को भोजन, दक्षिणा और कन्याओं को भोजन एवं भेंट प्रदान करना शुभ होगा। यदि स्वयं किसी कारणवश पाठ न कर सके तो किसी विद्वान ब्राह्मण से विधिपूर्वक पाठ करवाना चाहिए।

(12) क्लिष्ट रोग (शरीरिक एवं मानसिक) एवं प्रेत पीड़ा निवारण हेतु अचूक यन्त्र

विधि–इस यन्त्र को मंगलवार के दिन भोजपत्र पर लाल चन्दन से लिखकर और यन्त्र के नीचे निम्नलिखित गीता का श्लोक लिखकर रोगी के (पुरुष के दाहिने और स्त्री के बायें) हाथ में तांबे के ताबीज में डालकर, धूप देकर बांध दें और प्रतिदिन गायत्री मन्त्र से अभिमन्त्रित जल उस पर छिड़कते और रोगी को पिलाते रहे।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

ॐ					ॐ
ॐ	२४	३१	२	७	ॐ
ॐ	६	३	२८	२७	ॐ
ॐ	३०	२५	८	१	ॐ
ॐ	४	५	२६	२९	ॐ

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च।
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसंघाः।। (श्रीमद्भगवद्गीता ११।३६)

उस श्लोक का अगर रोगी स्वयं पाठ कर सकता हो तो ऊँचे स्वर में उच्चारण करें। यदि नहीं तो लोहे या गत्ते की प्लेटों पर लिखकर दीवार पर लगावें।

जल अभिमन्त्रित करने की विधि–शुद्ध बर्तन में श्री गंगाजल या शुद्ध जल डालकर उसमें तुलसी पत्ता डाल दें और ११ बार या १०८ बार गायत्री मन्त्र बोलते हुए उसमें दाहिने हाथ की तर्जनी अँगुली (फिराकर) उस मकान में या कमरे में सर्वत्र छिड़क दें। थोड़ा-थोड़ा प्रातः-संध्या दोनों समय उस व्यक्ति को पिला दें और बिछौनों पर छिड़क दें। उसके कान में गायत्री मन्त्र सुनावें। इस अभिमन्त्रित गंगाजल को नहाते समय उसके मस्तक पर थोड़ा-सा डाल दें। इस यन्त्र और मन्त्र के संयोग से प्रेत-पीड़ा से निवारण होता है और रोगी को शान्ति मिलती है। यह प्रयोग करते समय **विशेष रूप से तामसिक भोजन को सर्वथा त्याग दें।**

श्री मद्भागवत के सप्ताह-पारायण—में विधिपूर्वक निम्न सम्पुट युक्त पाठ करने से भी प्रेतयोनि से छुटकारा और प्रेतपीड़ा से निवारण होता है—

यत्कीर्तनं यत्स्मरणं यदीक्षणं यद वन्दनं यच्छ्रवणं यदर्हणम्।
लोकस्य सद्यो विधुनोति कल्मषं तस्मै सुभद्रश्रवसे नमो नमः।।

श्री रामचरित-मानस का मासिक, अखण्ड नवाह्न-पारायण या सुन्दरकाण्ड के पाठ सहित निम्न चौपाइयों का सम्पुट करना भी शुभ रहेगा।

(1) **''दैहिक दैविक भौतिक तापा। रामराज नहिं काहुहि ब्यापा।।''**
(2) **भूतपिसाच निकट नहिं आवै। महावीर जब नाम सुनावै।।**
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरन्तर हनुमत वीरा।।
(3) **सर्वाबाधा प्रशमनं त्रैलोकस्याखिलेश्वरी।**
एवमेव त्वया कार्यं अस्मद् वैरि विनाशनम्।।

इसके अतिरिक्त **श्री हनुमान चालीसा का १०८ पाठ** हवन सहित विधि पूर्वक करना, **बजरंगबाण और संकटमोचन** का पाठ विशेष शुभ रहेगा।

रोगनिवारक महामन्त्र—

''ॐ अच्युताय नमः, ॐ अनन्ताय नमः, ॐ गोविन्दाय नमः''

इस मन्त्र का जप करते समय एकाग्रचित से अपने हृदय में सर्वदुखहारी भगवान् सत्यनारायण या श्री राधाकृष्ण के विग्रह रूप का या भगवान् विष्णु के रूप का ध्यान करना चाहिए।

(13) जड़ी-बूटियों से अनिष्ट ग्रहों की शान्ति

हमारे परम दयालु महार्षियों ने (जो लोग बहुमूल्य रत्नों को धारण करने में असमर्थ हैं—उनके) ग्रह दोषों की शान्ति के लिए जड़ी-बूटी को धारण करना भी बतलाया है। वह इस प्रकार समझें—

सूर्य पीड़ाकारक हो तो बेलपत्र की जड़ गुलाबी डोरे में रविवार को धारण करें। **चन्द्र पीड़ाकारक** हो तो क्षीरणी (खिरनी) की जड़ सफेद डोरे में सोमवार को, **मंगल पीड़कारक** हो तो अनन्तमूल की जड़ लाल डोरे में मंगलवार को, **बुध पीड़ाकारक** हो तो विधारा की जड़ हरे डोरे में बुधवार को। **गुरु पीड़ाकारक** हो तो नारंगी या **केले की जड़** पीले डोरे से गुरुवार को, **शुक्र पीड़ाकारक** हो तो सरपंखा या सरकंडे की जड़ सफेद डोरे में शुक्रवार को धारण करें। **शनि पीड़ाकारक** हो तो बिच्छू की जड़ काले डोरे में शनिवार को धारण करें। **राहु पीड़ाकारक** हो तो सफेद चन्दन नीले डोरे में बुधवार को धारण करें। **केतु पीड़ाकारक** हो तो असगन्ध की जड़ आसमानी डोरे में गुरुवार को धारण करें।

नवग्रङ पीड़ा निवारक यन्त्र

८ ॐ ह्रीं राहवे नमः	१ ॐ ह्रीं सूर्याय नमः	६ ॐ ह्रीं शुक्राय नमः
३ ॐ ह्रीं भौमाय नमः	५ ॐ ह्रीं गुरवे नमः	७ ॐ ह्रीं शनये नमः
४ ॐ ह्रीं बुधाय नमः	९ ॐ ह्रीं केतवे नमः	२ ॐ सो सोमाय नमः

उपर्युक्त यन्त्र को नवग्रह स्तोत्र के पाठ उपरान्त अष्टगन्ध से एवं भोजपत्र पर सप्त या अष्टधातु की प्लेट पर खुदवा कर शुभ मुहूर्त्त कालीन दानपूर्वक अपने पास रखने से नवग्रह जनित नेष्टफल दूर हो जाता है।

चैत्र प्रतिपदा, अक्षय तृतीया, दशहरा, दीपावली की रात, अयनकाल, ग्रहणकाल, सायनसंक्रांतिकाल, पूर्णिमा, गुरुपुष्ययोग, त्रिपुष्कर आदि योग भी शुभ मुहूर्त्त काल माने जाते हैं।

(14) कन्या के विवाह हेतु यन्त्र प्रयोग

—यन्त्र—

'ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः''

जिस कन्या का विवाह नहीं हो पा रहा हो, उसे दीपावली की अर्द्धरात्रि में लाल वस्त्र धारण करके भोजपत्र पर केसर व हल्दी में गंगाजल मिलाकर स्याही तैयार करें और चाँदी की लेखनी से भोजपत्र पर यन्त्र लिखें। फिर माँ दुर्गा के चित्र के समक्ष पीले वस्त्र पर यन्त्र को स्थापित करके माँ दुर्गा से अपने विवाह में आने वाली बाधाओं को दूर करने का निवेदन करें। श्री दुर्गाचालीसा का पाठ करके पश्चात् 11 बार श्री सिद्ध कुंजिका स्तोत्र का पाठ करें। फिर स्फटिक की माला से '' **ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः** '' मन्त्र का जप करे। इसके पश्चात् यन्त्र को माँ दुर्गा के चरणों से स्पर्श करवाकर, धूप दीप देकर चाँदी के कवच में भरकर गले में या बाजू में धारण कर लें। जब विवाह समय विदाई का हो तो माता या पिता उस कवच को जल में प्रवाहित कर दें।
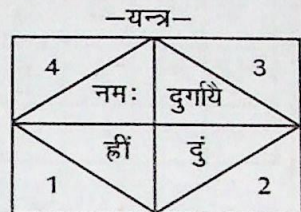
(15) सुयोग्य एवं सुशील पत्नी प्राप्ति के लिए —यन्त्र—

इस यन्त्र का निर्माण दीपावली पूजन के बाद करना चाहिए। लड़के को पीले वस्त्र धारण करके केसर व हल्दी को गंगाजल में डालकर स्याही बना कर अनार की कलम से भोजपत्र पर इस यन्त्र को बनाना चाहिए। पूजा स्थल पर गेहूँ की ढेरी पर यन्त्र को स्थापित कर दें। यन्त्र पर हल्दी की 3 गाँठें रखकर धूप-दीप दें। हल्दी की माला से '**ॐ गुरवे नमः**' मन्त्र की ग्यारह माला जप करें। इसके बाद यन्त्र को तांबे के या चांदी के कवच में भरकर गले में धारण कर लें। यन्त्र के प्रभाव से मनोनुकूल पत्नी प्राप्ति के संयोग प्रबल होंगे।
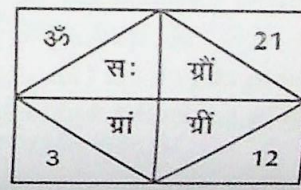
बारह राशियों का मासगत फलादेश-सन् 2019 ई.

आगे बारह राशियों का मासिक एवं वार्षिक फल ग्रहों की गोचर स्थित्यनुसार लिखा गया है। अपने जीवन सम्बन्धी और अधिक जानकारी एवं महत्त्वपूर्ण पक्ष जैसे-विद्या, व्यवसाय, नौकरी, विवाह, सन्तान, विदेश गमनादि प्रश्नों सम्बन्धी विशेष फलादेश तथा तत्सम्बन्धी समस्याओं के विशेष उपाय जानने के लिए शुद्ध एवं बड़ी जन्मपत्री का होना आवश्यक है। हमारे कार्यालय से शुद्ध एवं विस्तृत हस्तलिखित जन्मपत्री बनवाने के लिए जातक/जातिका का नाम, जन्म-समय, जन्म स्थान (Place & Time of Birth), माता-पिता का नाम एवं व्यवसाय आदि का विवरण तथा अग्रिम रूप में पूरी फीस भेजें। मध्यम विस्तृत जन्मपत्री हस्तलिखित फलादेश सहित की फीस 1500, अधिक वृहद् विस्तृत की 2300 रुपए। सामान्य मध्यम जन्मपत्री की 801 रु., वार्षिक वर्षफल, उपायों आदि सहित की फीस 751 रु.। विदेश में उत्पन्न जातक की फीस 31 पौंड अथवा 51 डालर होगी। डाक व्यय 50 रु. जोड़कर भेजें, फीस M.O. या ड्राफ्ट द्वारा अग्रिम इस पते पर भेजें- **–पं. विवेक शर्मा सुपुत्र पं. पन्ना लाल शर्मा, अड्डा होशियारपुर चौंक, जालन्धर-8 (पंजाब), फोन-0181-2457959**

मेष राशि (Aries)—(चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ)

वर्ष प्रवेश कुंडली

1; 2; 3; 4 रा.; 5; 6; 7 चं.शु.; 8 बु.गु.; 9 सू.श.; 10 के.; 11; 12 मं.

वर्षफल (संक्षिप्त)—*वर्षारम्भ से 4 फर. तक राशिस्वामी मंगल द्वादशस्थ रहने से मानसिक तनाव, अनावश्यक खर्च व घरेलु उलझनें अधिक रहेंगी। ता. 23 जून से 7 अग. के मध्य मंगल नीच राशिगत रहने से बनते कामों में उलझनें, धन-हानि व परेशानियों का सामना होगा। सेहत भी खराब रहे। परन्तु ता. 29 मार्च से 21 अप्रैल के मध्य, पुन: 3 नवं. से वर्षान्त तक गुरु की शुभ दृष्टि रहने से बिगड़े कार्यों में सुधार, मांगलिक कार्यों पर खर्च तथा धर्म एवं विद्या के क्षेत्र में सफलता मिलेगी।*
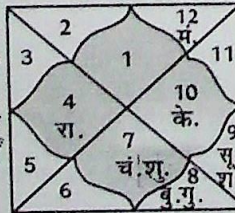
जनवरी—राशिस्वामी मंगल द्वादशस्थ रहने से वृथा भागदौड़, पारिवारिक एवं आर्थिक हालात अनिश्चित बने रहेंगे। भूमि-जायदाद सम्बन्धी समस्याएँ परेशान करेंगी। दूरस्थ यात्रा अथवा स्थान परिवर्तन का योग है। **उपाय**—मकर संक्रान्ति के दिन मध्याह्न बाद गुड़ एवं तिल से निर्मित मिठाई, लाल रंग के फल, गर्मवस्त्र तथा नवीन पंचांग (जन्त्री) का दान करना शुभ रहेगा।

फरवरी—ता. 5 से मंगल स्वगृही होने से गत परिस्थितियों में सुधार एवं कुछ बिगड़े कार्य बनेंगे। परन्तु स्वभाव में तेजी एवं क्रोध की अधिकता रहे। गृह-क्लह एवं सरकारी क्षेत्रों में परेशानी के योग हैं। **उपाय**—ता. 4 फर. को सोमवती अमावस के दिन तीर्थजल से स्नान, दान, जप-पाठ करने से अक्षय-पुण्य तथा पितृादि दोषों की शान्ति होगी।

मार्च—ता. 21 तक मंगल स्वराशिगत ही रहने से उत्साह एवं उद्यम में वृद्धि होगी। कुछ रुके हुए महत्त्वपूर्ण कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। ता. 22 से मंगल द्वितीयस्थ होने से उच्च विद्या प्राप्ति एवं व्यवसाय के क्षेत्र में विशेष उतार-चढ़ाव रहे। परिवार में तनाव रहे। **उपाय**—हमारे कार्यालय से प्रकाशित '**श्रीसूक्तम्**' का पाठ करना शुभ रहेगा।

अप्रैल—भाग्यस्थान पर गुरु-शनि-केतु योग एवं इन पर मंगल की अष्टम दृष्टि होने से परिवार में तनावपूर्ण माहौल रहेगा। ता. 14 से सूर्य इस राशि पर होने से मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि और उच्च-प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्बन्ध बनेंगे। वैशाख मास में '**पाप-प्रशमन**' स्तोत्र का पाठ करना कल्याणकारी रहेगा।

मई—भाग्येश गुरु अष्टमस्थ होने से व्यवसाय के क्षेत्र में अनेक उतार-चढ़ाव के रहते अपने पुरुषार्थ द्वारा लाभ व उन्नति के योग बनेंगे। ता. 7 से मंगल तृतीय भाव में राहु युक्त होने से पराक्रम एवं आत्मविश्वास से उन्नति के विशेष अवसर मिलेंगे। परन्तु बनते कामों में विघ्न एवं क्रोध की अधिकता से स्वास्थ्य परेशानी होगी।

जून—मंगल-शनि के मध्य समसप्तक योग होने से व्यवसाय में दौड़-धूप और आर्थिक उलझनें पैदा होंगी। मानसिक तनाव एवं मन अशान्त रहेगा। व्यवसाय में परिवर्तन का भी विचार बने। दूरस्थ यात्राएँ, वृथा भागदौड़ एवं परिवार के सहयोग से स्थिति में परिवर्तन के योग हैं।

जुलाई—मंगल नीच राशिस्थ संचार करने से व्यवसाय के क्षेत्र में संघर्ष अधिक रहेगा। परन्तु मंगल पर गुरु की उच्च दृष्टि होने से पिता एवं पारिवारिक सहयोग से कुछ बिगड़े कार्यों में सुधार और उन्नति के योग बनेंगे।

अगस्त—कठिन एवं विपरीत परिस्थितियों में भी निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। सुख-सुविधाओं पर खर्च की अधिकता से परेशानी, मन अशान्त एवं असन्तुष्ट रहेगा।

सितम्बर—पंचम भाव में सूर्य-मंगल-बुध-शुक्र आदि ग्रहों का योग बनने से यद्यपि परिश्रम एवं पराक्रम से उन्नति के विशेष अवसर मिलेंगे। परिवार में शुभ मंगल कार्य भी होंगे, परन्तु सन्तान सम्बन्धी चिन्ता बनेगी। किसी गुप्त शत्रु के कारण परेशानी हो।

अक्तूबर—क्रोध एवं उत्तेजना से कोई बना हुआ कार्य बिगड़ने के योग हैं। आर्थिक उलझनें पैदा होंगी। संयमशील व्यवहार से गत किए गए प्रयासों में सफलता मिलेगी। स्वास्थ्य सम्बन्धी एवं वृथा वाद-विवाद में परेशानी होगी।

नवम्बर—विभिन्न आर्थिक योजनाओं को क्रियान्वित करने के संकेत हैं, परन्तु कुछ भ्रामक धारणाओं के कारण विघ्न एवं विलम्ब की सम्भावना बनी रहेगी। लग्न राशि पर सूर्य-मंगल की दृष्टियां रहने से कठिन परिस्थितियों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे।

दिसम्बर—सूर्य अष्टम होने से कार्यक्षेत्र में व्यस्तताएं बढ़ेंगी। मंगल सप्तमस्थ होने से क्रोध एवं उत्तेजना से बचें। धन सम्बन्धी कार्यों में अनुकूल परिस्थितियां बनेंगी। गुरु शनि-केतु युक्त होने से अनावश्यक खर्च में वृद्धि एवं पिता-पुत्र में मतभेद रहेंगे।

वृष राशि (Taurus)—(ई, उ, ए, ओ, वा, वि, वू, वे, वो)

वर्षफल—*वृष राशि पर वर्षभर शनि की ढैय्या का प्रभाव रहने से वृथा दौड़धूप, गुप्त चिन्ताएं, बन्धु-विरोध तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी कष्ट रहें। ता. 29 जन. से 23 फर. के मध्य राशिस्वामी शुक्र अष्टमस्थ रहने से बनते कार्यों में विलम्ब अड़चनें, धन-हानि, शत्रु-प्रबलता तथा खर्चों की अधिकता रहेगी। ता. 9 सितं. से 3 अक्तू. के मध्य शुक्र नीच (कन्या) राशिस्थ होने से सन्तान, परिवारिक एवं सेहत सम्बन्धी उलझनें बढ़ेंगी।* **उपाय**—*वर्षभर तेल की कटोरी में छायापात्र करके शनि मन्दिर में तेल चढ़ाना शुभ रहेगा।*

जनवरी—शनि की ढैय्या एवं गुरु की दृष्टि होने से मिश्रित प्रभाव रहेंगे। मान-सम्मान में वृद्धि एवं धार्मिक कार्यों की ओर अभिरूचि बढ़ेगी। शुक्र की भी दृष्टि रहने से कुछ रुके हुए कार्यों में सफलता मिलेगी। निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। परिवार में मनमुटाव एवं व्यवसायिक उलझनों के कारण मन अशान्त, असन्तुष्ट एवं उचाटता रहेगी।

वर्ष प्रवेश कुंडली

फरवरी—राशिस्वामी शुक्र शनि युक्त अष्टम भावस्थ होने से बनते कामों में विघ्न, निकट बन्धुओं से मतभेद एवं चोटादि का भय रहेगा। गुप्त चिन्ता एवं अनावश्यक खर्च में वृद्धि होगी। स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी, धन का अपव्यय, मानसिक तनाव एवं गुप्तरोग के कारण कष्ट हो।

मार्च—शुक्र भाग्यस्थ होने से पराक्रम एवं पुरुषार्थ से कार्य करने पर कार्यसिद्धि के योग बनेंगे। आय के साधनों में वृद्धि और परिवार में शुभ मंगल कार्य भी सम्पन्न होंगे। परन्तु शनि-ढैय्या के कारण वृथा भागदौड़, धन का अपव्यय एवं वाहनादि चलाते समय सावधानी बरतें।

अप्रैल—कार्य-व्यवसाय सम्बन्धी कुछ नवीन योजनाएँ बनेंगी। यद्यपि निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। परन्तु धन का खर्च अधिक, वृथा भागदौड़ एवं सरकारी क्षेत्रों में विभिन्न परेशानियों का सामना रहेगा। **उपाय**—वैशाख मास में वैशाख माहात्म्य तथा **'पापप्रशमन स्तोत्र'** का पाठ करना शुभ रहेगा।

मई—लाभस्थ शुक्र पर गुरु की दृष्टि रहने से मिश्रित प्रभाव रहें। पराक्रम एवं उत्साह से किए कार्यों में सफलता मिलेगी। ता. 10 से शुक्र व्यय भाव में आने से स्वास्थ्य हानि, शरीर कष्ट, आय कम तथा वृथा खर्च अधिक रहेंगे।

जून—ता. 4 से राशिस्वामी शुक्र इस राशि में सूर्य युक्त संचार करने से मान-सम्मान में वृद्धि, धन लाभ एवं पदोन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। यात्रा का भी प्रोग्राम बने। किसी नवीन कार्य की योजना भी बनेगी। स्त्री सुख एवं परिवार में खुशी के अवसर भी मिलेंगे।

जुलाई—शुक्र द्वितीयस्थ होने से व्यवसाय में उन्नति और कुछ रुके हुए कार्यों में प्रगति होगी। संयम और गम्भीरता से कार्य करने पर ही कार्यसिद्धि के योग बनेंगे। किसी उच्चाधिकारी के सहयोग से सरकारी समस्या का हल मिलेगा।

अगस्त—धन का अपव्यय विलासादि कार्यों पर अधिक होगा। वाहनादि का क्रय-विक्रय भी होगा। परन्तु शनि की ढैय्या के प्रभाव से रक्तविकार, शरीर कष्टादि अशुभ फल होंगे। निकट बन्धुओं से मतभेद एवं विरोध पैदा होने के संकेत हैं। अत्याधिक परिश्रम करने पर भी मनोऽनुकूल लाभ प्राप्त नहीं होगा।

सितम्बर—चतुर्थ भाव में चतुर्ग्रही योग होने से आय कम व खर्च अधिक रहेंगे। व्यर्थ की भागदौड़, धन का अपव्यय, स्वास्थ्य नर्म एवं सन्तान सम्बन्धी कष्ट व चिन्ता बढ़ेगी। मन में अशान्ति व क्रोध की अधिकता से कोई बना हुआ कार्य बिगड़ सकता है। ता. 28 को (अमावस के दिन) पितृस्तोत्र का पाठ करना कल्याणकारी रहेगा। (देखें पंचांग वि. संवत् २०७३)

अक्तूबर—पूर्वार्द्ध भाग में संघर्षपूर्ण परिस्थितियों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। उत्तरार्द्ध भाग में विशेष उत्साह एवं पारिवारिक सहयोग से कोई बिगड़ा कार्य अचानक बन सकता है। आय से खर्च अधिक, स्वास्थ्य परेशानी, भाई-बन्धु से मतभेद, सन्तान सम्बन्धी चिन्ता एवं सरकारी क्षेत्रों में परेशानी बनेगी।

नवम्बर—धन लाभ साधारण रूप से हो। कार्यक्षेत्र में दौड़धूप अधिक रहे। खर्चों की अधिकता से मन परेशान होगा। विशेष परिश्रम और संघर्ष के उपरान्त ही कार्यसिद्धि होगी। ता. 4 से गुरु अष्टम शनि-केतु युक्त होने से स्वास्थ्य सम्बन्धी विभिन्न परेशानियों का सामना रहे।
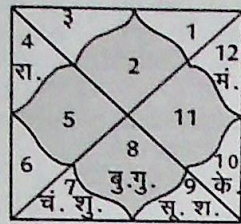
दिसम्बर—कुछ सोची हुई योजनाओं में आंशिक सफलता मिलेगी। शुक्र ता. 15 तक अष्टमस्थ रहने से शरीर कष्ट, गुप्त चिन्ता, पेट व लीवर में खराबी के योग हैं। ता. 15 से कुछ रूके हुए कार्य बनेंगे। परन्तु क्रोध व उत्तेजना बढ़ेगी। स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें।

मिथुन राशि (Gemini)—(क, की, कु, घ, ङ, छ, के, को, ह)

वर्ष प्रवेश कुंडली

वर्षफल (2019 ई.)—*मिथुन राशि पर वर्षभर शनि की सप्तम दृष्टि रहने से उत्तेजना, पेट, वायु सम्बन्धी रोगों की सम्भावना है। ता. 29 मार्च से 22 अप्रै. तक, पुनः 4 नवं. से वर्षान्त तक गुरु की सप्तम दृष्टि रहने से कठिनाईयों एवं संघर्ष के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। ता. 20 जन. से 6 फर. तक राशिस्वामी बुध अष्टमस्थ होने से शरीर कष्ट, वृथा खर्च एवं गुप्त चिन्ताएं बढ़ेंगी। ता. 25 फर. से 14 मार्च तक तथा पुनः 12 अप्रैल से 2 मई तक बुध मीनस्थ (नीचस्थ) होने से स्वास्थ्य हानि, मानसिक तनाव, बनते कार्यों में विघ्न तथा निकट बन्धुओं से तनाव रहे। ता. 7 मार्च से वर्षान्त तक राहु का संचार रहेगा।*
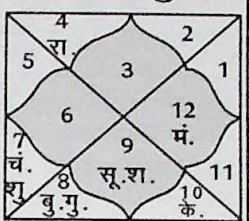
जनवरी—सूर्य-बुध-शनि-मंगल आदि ग्रहों की संयुक्त दृष्टियां रहने से मिश्रित प्रभाव घटित होंगे। संघर्ष, मानसिक उचाटता एवं निकट बन्धुओं से मनमुटाव रहेगा। **उपाय**—मकर संक्रान्ति के दिन तिल/गुड़ युक्त मिठाई, गर्म वस्त्र, नवीन पंचांगदिवाकर का दान शुभ रहेगा।

फरवरी—स्वभाव में तेजी एवं उत्तेजना बनी रहेगी। कोई बना हुआ कार्य बिगड़ सकता है। सावधानी बरतें। विघ्न-बाधाओं के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। परिवार में शुभ मंगल कार्य भी होगा। **उपाय**—ता. 4 को श्रीनारायण कवच, पितृ स्तोत्र का पाठ करना शुभ रहेगा।

मार्च—बुध नीचस्थ एवं वक्री होने से बनते कामों में विघ्न-बाधाएं तथा आर्थिक परेशानियां बढ़ेंगी। मानसिक तनाव एवं गुप्त चिन्ताएं भी होंगी। माता-पिता से अनबन, व्यर्थ की यात्रा एवं क्रोध की अधिकता से पारिवारिक उलझनों में बढ़ौत्तरी एवं दिमागी तनाव भी रहेगा।

अप्रैल—कारोबार में व्यस्तताएं बढ़ेंगी। व्यवसाय में लाभ व उन्नति के विशेष अवसर मिलेंगे। भाई-बन्धुओं के सहयोग से कुछ बिगड़े कामों में सुधार होगा। सवारी आदि का क्रय-विक्रय एवं परिवार में धर्म-कर्म के कार्यों पर खर्च अधिक होगा। सांझेदारी के कार्यों में हानि एवं किसी नए व्यवसाय में धन का निवेश न करें।

मई—राहु का संचार रहने से व्यवसाय एवं नौकरी में विघ्न-बाधाओं का सामना रहेगा। शत्रु हानि पहुँचाने की चेष्टा करेंगे। ता. 18 से बुध द्वादशस्थ होने से व्यर्थ की भागदौड़, स्वास्थ्य ढीला, धन का अपव्यय, क्रोध की अधिकता से बना हुआ कार्य बिगड़ सकता है। सावधानी बरतें।

जून—लग्न राशि पर बुध-राहु योग होने से प्रत्येक कार्य में विघ्न एवं सोची योजनाओं को कार्यरूप देने में विलम्ब के योग बनेंगे। वृथा भागदौड़, स्वास्थ्य ढीला एवं क्रय-विक्रय के कार्यों में परेशानी होगी।

जुलाई—व्यवसाय के क्षेत्र में अनिश्चितता के हालात बनेंगे। बुध वक्री रहने से स्वास्थ्य सम्बन्धी कुछ-न-कुछ परेशानी बनी रहेगी। आय के साधन साधारण रूप से हो। कार्यक्षेत्र में वृथा दौड़धूप अधिक रहेगी। खर्चों की अधिकता से मन परेशान होगा।

अगस्त—सर्विस अथवा व्यवसाय में संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना करना पड़े। अत्यधिक भागदौड़ करने पर भी आय की अपेक्षा खर्च भी अधिक होगा। एक समय में एक से अधिक कार्य शुरु करने से परेशानी होगी।

सितम्बर—मान-सम्मान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। नए कार्यक्षेत्र की तलाश व व्यवसाय में संघर्ष अधिक रहेगा। ता. 10 के बाद अकस्मात् लाभ परन्तु लेन-देन करते समय सावधानी बरतें। आशानुरूप लाभ के लिए परिवारिक सहयोग आवश्यक होगा।

अक्तूबर—परिस्थितियों में धीरे-धीरे सुधार एवं कुछ परिवर्तनों के उपरान्त धन लाभ के मार्ग प्रशस्त होंगे। पारिवारिक मैत्री सम्बन्धों का विस्तार होगा। दीर्घ यात्रा की योजना भी बनेगी। व्यवसाय सम्बन्धी भी कुछ-न-कुछ परेशानी बनी रहेगी।

नवम्बर—धार्मिक कार्यों में रूचि रहेगी। किसी श्रेष्ठ पदाधिकारी से सम्पर्क स्थापित होंगे। गुप्त चिन्ता एवं घरेलू उलझनों के कारण मन चिन्तित रहेगा। व्यवसाय में यथोचित लाभ में कुछ कमी रहेगी।

दिसम्बर—महत्त्वपूर्ण कार्य शुरु करने के लिए विशेष प्रयत्नशील रहेंगे। विशिष्ट व्यक्तियों और समृद्ध मित्रों के सहयोग से ही अप्रत्याशित लाभ प्राप्ति के योग बनेंगे। सन्तान सम्बन्धी चिन्ता परन्तु धर्म-कर्म में भी रूचि रहेगी।

कर्क (Cancer)—(हि, हु, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो)

वर्ष प्रवेश कुंडली

5, 3, 6, 4 रा., 2, 7 चं.शु., 1, 8 बु., 10 के., 12 मं., 9 सू.श., 11

वर्षफल—*वर्षारम्भ से 6 मार्च तक इस राशि पर राहु का संचार रहने से बनते कार्यों में विघ्न-बाधाएँ, घरेलु परेशानियों तथा आर्थिक उलझनों के कारण असमंजसपूर्ण परिस्थितियां रहेंगी। परन्तु वर्षारम्भ से 28 मार्च तक तथा पुनः 22 अप्रैल से 4 नवं. तक गुरु की शुभ एवं उच्च दृष्टि रहने से विघ्न-बाधाओं के बावजूद परिस्थितियां स्वतः अनुकूल बनती जाएंगी। वृथा दौड़धूप, यात्रा तथा धन हानि के बावजूद परिवार/गृह में आध्यात्मिक प्रकाश होगा।*

जनवरी—कार्य-व्यवसाय में भाग्यवश ही उन्नति व प्रगति के मार्ग प्रशस्त होंगे। परन्तु परिवार में विभिन्न परेशानियां भी रहें। सरकारी क्षेत्रों में विघ्नों का सामना रहेगा। ता. 14 के बाद परिवार में कलह एवं घरेलू परिस्थितियां कुछ चिन्ताजनक बनेंगी। **उपाय**—ता. 17 को सन्तान की वृद्धि एवं उन्नति के लिए **'पुत्रदा एकादशी'** का व्रत-पालन करना श्रेयस्कर रहेगा।

फरवरी—राहु का संचार एवं मंगल की नीच दृष्टि होने से बनते कामों में विघ्न, पारिवारिक चिन्ता, वृथा भागदौड़ एवं मानसिक तनाव बना रहेगा। व्यवसाय के क्षेत्र में विभिन्न चुनौतियों का सामना रहेगा। **उपाय**—ता. 4 (मौनी अमावस्या) को तीर्थस्नान करके यथाशक्ति दान करना अत्यन्त शुभ होगा।

मार्च—ग्रहस्थिति अनुसार कुछ बिगड़े कार्यों में सुधार एवं कार्यों में सिद्धि के योग भाग्यवश ही बनेंगे। पारिवारिक माहौल में कुछ सुखद परिवर्तन होंगे। परन्तु प्रत्येक कार्य में विघ्न एवं माता को स्वास्थ्य परेशानी के योग हैं। भागदौड़ तथा व्यर्थ की परेशानी, वृथा यात्रा के योग हैं।

अप्रैल—निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। स्वास्थ्य नर्म, माता-पिता को कष्ट एव पैतृक सम्पत्ति सम्बन्धी विवाद के योग हैं। भाई-बन्धुओं से अकारण ही विरोध एवं तनाव उत्पन्न हो।

मई—व्यर्थ की भागदौड़, फिजूल खर्च एवं मानसिक तनाव भी अधिक रहेगा। घरेलू उलझनों के कारण मन अशान्त रहेगा। परन्तु गुरु की विशेष उच्चदृष्टि होने से विशेष परिश्रम एवं संघर्ष के बावजूद आय के साधन बनते रहेंगे।

जून—विद्या एवं व्यवसाय के क्षेत्र में विघ्न-बाधाएं एवं संघर्ष करना पड़ेगा। भाई-बन्धुओं से मतान्तर एवं क्रोध की अधिकता से परेशानी के योग हैं। आय सीमित एवं वृथा खर्च अधिक रहेंगे। यात्रा यद्यपि सुखद रहे, परन्तु पेट-विकार का भय है।

जुलाई—मंगल-बुध की सप्तम दृष्टि रहने से शरीर कष्ट, मानसिक तनाव, घरेलू उलझनें, माता का स्वास्थ्य ढीला रहे। क्रोध एवं उत्तेजना से भाई-बन्धु के साथ मतभेद बढ़ेंगे। कार्य-व्यवसाय में विघ्न व उलझनें रहें।

अगस्त—उच्च-प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क स्थापित होंगे। मान-सम्मान में वृद्धि, धर्म-कर्म में अभिरूचि, सवारी आदि सुख-साधनों में वृद्धि होगी। यदा-कदा यात्राओं के भी अवसर प्राप्त होंगे। उत्साह में वृद्धि और सम्बन्धियों का सहयोग प्राप्त होगा।

सितम्बर—धनागमन के साधनों में वृद्धि होगी। कोई रुका हुआ कार्य पारिवारिक सहयोग से बनेगा। धर्म-कर्म के शुभ मंगल कार्य भी सम्पन्न होंगे। परन्तु स्वास्थ्य कुछ ढीला, वृथा भागदौड़, मानसिक तनाव, मन अशान्त एवं असन्तुष्ट रहेगा।

अक्तूबर—विभिन्न साधनों द्वारा धन लाभ तो होगा परन्तु शनि-मंगल का दृष्टि सम्बन्ध होने से अनावश्यक खर्च भी बढ़ेंगे। भाई-बन्धु से मतभेद, स्वास्थ्य परेशानी तथा दूरस्थ यात्राएं होंगी।

नवम्बर—कारोबार में उतार-चढ़ाव और संघर्ष अधिक रहेगा। माता-पिता से मतभेद एवं पैतृक सम्पत्ति सम्बन्धी विवाद तथा कानूनी परेशानी के योग हैं। सरकारी विभाग में काम पैंडिंग रहेंगे।

दिसम्बर—परिवार में माहौल पहले से बेहतर एवं सुखद होगा। शुभ मंगल कार्य भी सम्पन्न होंगे। किसी नवीन कार्य की योजना भी बनेगी, परन्तु सरकारी क्षेत्रों में विघ्न एवं चोटादि का भय रहेगा।

सिंह राशि (Leo)—(म, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे)

वर्ष प्रवेश कुंडली

वर्षफल—*वर्षारम्भ से 13 जन. तक सूर्य-शनि योग होने से निकट बन्धुओं से तनाव व मतभेद रहे। ता. 14 जन. से 12 फर. तक सूर्य षष्ठस्थ होने से कार्यों में विलम्ब रहे, क्रोध से बचें। ता. 14 मार्च से 13 अप्रै. तक सूर्य अष्टमस्थ होने से पिता एवं स्वयं के स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। ता. 29 मार्च से 22 अप्रैल तक, पुनः 5 नवं. से वर्षान्ति तक गुरु की शुभ दृष्टि इस राशि पर रहने से धार्मिक कार्यों में व्यस्तता तथा आध्यात्म की ओर प्रवृत्ति रहेगी।*

जनवरी—राशिस्वामी सूर्य पंचम भाव में शनि युक्त होने से सोची हुई योजनाओं में विघ्न एवं सन्तान के कैरियर सम्बन्धी चिन्ता बनी रहेगी। दूरस्थ यात्राएं, परिवार सहित भ्रमण परन्तु मन अशान्त एवं असन्तुष्ट रहेगा। ***उपाय***—मकर संक्रान्ति को तिलयुक्त वस्तुओं का, वस्त्र एवं धार्मिक ग्रन्थ सहित दान करना शुभ रहेगा।

फरवरी—बनते कामों में विघ्न, घरेलू परेशानियां एवं खर्च की अधिकता से तनाव की स्थिति बने। गुरु के प्रभाव से परिवार में शुभ कार्य भी होंगे। सरकारी क्षेत्रों में कानूनी परेशानी एवं किसी विशेष से धोखे की सम्भावना भी बनी रहेगी।

मार्च—भूमि-वाहनादि का क्रय-विक्रय करने की योजना भी बनेगी। धर्म-कर्म में रुझान रहे। कार्यक्षेत्र में व्यस्तताएं के स्वास्थ्य सम्बन्धी कुछ-न-कुछ परेशानी रहेगी।

अप्रैल—मंगल की दृष्टि रहने से निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। भूमि-वाहनादि सुखों पर धन का खर्च अधिक होगा। कार्यक्षेत्र में व्यस्तताएँ बनी रहेंगी। कोई रुका हुआ कार्य उच्चप्रतिष्ठित व्यक्तियों के सम्पर्क व सहयोग से पूर्ण होगा।

मई—किसी नवीन कार्य योजना को कार्यरूप देने के अवसर प्राप्त होंगे। मान-सम्मान में वृद्धि और यशस्वी कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। अवांछित स्थान परिवर्तन से परिवार में मतभेद एवं कलह-क्लेश रहेगा।

जून—परिश्रम करने पर कोई रूका हुआ विशेष कार्य बनेगा। पारिवारिक सहयोग से उन्नति व धन लाभ के योग बनेंगे। विदेश-गमन की योजना बनेगी। परन्तु शनि-केतु के प्रभाव से सन्तान सम्बन्धी चिन्ता रहे।

जुलाई—संयम एवं गम्भीरता से कार्य करने पर ही लाभ के मार्ग प्रशस्त होंगे। विभिन्न आर्थिक योजनाओं को क्रियान्वित करने से विघ्न एवं विलम्ब होगा। सांझेदारी के कार्यों में हानि, सिर-दर्द, मानसिक तनाव एवं वृथा भागदौड़ रहे।

अगस्त—भाग्येश मंगल नीचराशिगत सूर्य युक्त द्वादश भाव में होने से आशा के विपरीत खर्च भी अधिक होंगे। स्वास्थ्य में गड़बड़, मानसिक तनाव एवं घरेलू उलझनें बढ़ेंगी। नौकरी में अफसरों से मतभेद एवं तनाव की स्थिति रहेगी।

सितम्बर—आशानुरूप कुछ कार्यों में सफलता के लिए संघर्ष एवं परिश्रम आवश्यक रहेगा। धन का निवेश करने की नई-नई योजनाएं भी बनेंगी। यात्रादि पर धन का खर्च अधिक होगा। स्वास्थ्य सम्बन्धी विशेष सावधानी बरतें।

अक्तूबर—मान-सम्मान में वृद्धि, धार्मिक कार्यों में रूचि परन्तु विशेष संघर्ष के पश्चात् निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। वृथा भागदौड़, मानसिक तनाव, घरेलू उलझनें एवं परिवार में मतभेद भी रहेंगे। वाहनादि का क्रय-विक्रय की योजना भी बनेगी।

नवम्बर—सूर्य पूर्वार्द्ध में नीच राशिगत संचार करने से अत्यधिक संघर्ष के पश्चात् निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। व्यवसाय में उलझनपूर्ण परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा। ता. 16 के बाद सुख-सुविधाओं, भूमि-सवारी आदि पर धन का खर्च अधिक होगा।

दिसम्बर—विशेष परिश्रम और भागदौड़ के उपरान्त सफलता मिले। भाग्योन्नति व लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। ता. 16 से पंचम भाव में चतुर्ग्रही योग (सू. गु. श. के.) होने से सन्तान के कैरियर सम्बन्धी चिन्ता बनी रहेगी। अनावश्यक खर्च एवं भ्रमण रहे। '**श्रीआदित्य हृदय स्तोत्र**' का पाठ करना शुभ रहे।

कन्या राशि (Virgo)—(टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो)

वर्षफल—*शनि की ढैय्या का प्रभाव वर्षभर रहेगा। वर्षारम्भ से 4 फर. तक मंगल की दृष्टि रहने से स्वभाव में क्रोध, उत्तेजना एवं चिड़चिड़ापन रहे। ता. 20 जन. से 6 फर. तक राशिस्वामी बुध केतु युक्त, तदुपरान्त षष्ठस्थ रहेगा। ता. 25 फर. से 14 मार्च तक बुध नीचस्थ, तदुपरान्त वक्री होकर कुम्भस्थ, पुनः 12 अप्रै. से 2 मई तक नीचस्थ होने से स्वास्थ्य हानि, मानसिक तनाव तथा आय में कमी होगी। ता. 3 मई से 18 मई तक बुध अष्टमस्थ होने से बनते कार्यों में अड़चनें तथा धन हानि के संकेत हैं। (विस्तार के लिए देखें हमारा प्रकाशित वृहद् '**राशिफल**')*

वर्ष प्रवेश कुंडली

6 — 7 चं. शु — 5 — 8 बु. गु — 4 रा. — 9 सू.श. — 3 — 10 के. — 12 — 2 — 11 — 1

जनवरी—राशिस्वामी बुध धनुराशिगत सूर्य शनि युक्त है। परिवार में मनमुटाव, वृथा कलह-क्लेश, धन खर्च अधिक एवं पैतृक सम्पत्ति सम्बन्धी विवाद की सम्भावना बनी रहेगी। निकटस्थ सम्बन्धियों द्वारा परायों जैसा व्यवहार करने से मन विक्षुब्ध होगा।

फरवरी—मंगल की 4 फर. तक दृष्टि रहने से स्वभाव में तेजी, घरेलू एवं आर्थिक उलझनें रहेंगी। ता. 7 से भी बुध षष्ठस्थ होने से संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा। ता. 24 से बुध नीचराशिगत रहने से स्वास्थ्य कष्ट, वृथा भागदौड़, मन अशान्त एवं असन्तुष्ट रहेगा।

मार्च—शनि की ढैय्या तथा ता. 5 से 28 तक बुध वक्री रहने से परिश्रम अधिक मानसिक तनाव, उचाटता तथा उद्विग्नता अधिक रहे। आय साधारण रहे। नए लोगों के सम्पर्क से लाभ कम और खर्च अधिक होगा। उदर रोग, प्रतिकूलता तथा अनावश्यक खर्च सम्भव हैं।

अप्रैल—परिवार में कलह-क्लेश और बनते कामों में विघ्न उत्पन्न होंगे। वृथा वाद-विवाद में खर्च भी अधिक होगा। ता. 14 के पश्चात् वृथा यात्रा, स्थान-परिवर्तन, मानसिक तनाव और शत्रुभय होगा। दूरस्थ यात्रा और विदेशी कार्यों में प्रगति के योग हैं।

मई—ता. 3 से बुध भी सूर्य के साथ अष्टमस्थ होने से आशा के विपरीत खर्च अधिक होंगे। स्वास्थ्य में गड़बड़, तनाव एवं घरेलू उलझनें बढ़ेंगी। व्यवसायिक क्षेत्र में उथल-पुथल के हालात बनेंगे। ता. 18 के बाद विघ्न-बाधाओं के बावजूद आय के साधनों में वृद्धि होगी।

जून—व्यवसाय की स्थिति मध्यम रहेगी। घरेलू परेशानियों के कारण मन परेशान रहेगा। परिश्रम एवं प्रयास करने से हालात में कुछ सुधार होगा। परन्तु धन संचय करने में कठिनाई होगी। मासान्त में परिवार में कलह-क्लेश और तनाव उत्पन्न होने के योग। स्वास्थ्य में खराबी रहे।

जुलाई—बुध लाभ स्थान में नीचस्थ मंगल युक्त है, परन्तु गुरु की उच्च दृष्टि रहने से यद्यपि व्यवसाय के क्षेत्र में स्थिति मध्यम रहेगी। भाग्यवश ही कुछ कार्यों में प्रगति एवं आय के निर्वाह योग्य साधन बनते रहेंगे।

अगस्त—ता. 3 से 25 के मध्य बुध लाभस्थान में ही होने से धनागमन के साधनों में वृद्धि होगी। किसी नवीन कार्यक्षेत्र से लाभ के योग हैं। गत किए गए प्रयास फलीभूत होंगे। परन्तु वृथा यात्रा, भागदौड़, धन का खर्च अधिक एवं संतान से मतभेद रहे।

सितम्बर—धन लाभ एवं उन्नति के पर्याप्त अवसर मिलेंगे। परन्तु शनि की ढैय्या के कारण समुचित लाभ में कमी रहेगी। सरकारी कर्मचारियों को स्थान-परिवर्तन अथवा प्रमोशन के योग हैं।

अक्तूबर—शनि की ढैय्या के कारण व्यर्थ की भागदौड़ और परिवर्तनों के उपरान्त ही व्यवसायिक क्षेत्र में सफलता मिलेगी। ता. 17 के बाद सूर्य-बुध-शुक्र का संचार द्वितीय भाव में होने से नवीन चिन्तन पैदा होंगे। क्रोध एवं उत्तेजना बढ़ेगी। **उपाय**—ता. 17 से '**कार्तिक माहात्म्य**' का नित्य पाठ करना शुभ रहेगा।

नवम्बर—द्वितीयस्थ वक्री बुध सूर्य युक्त तथा मंगल-शनि मध्य दृष्टि सम्बन्ध रहने से स्वास्थ्य परेशानी, आर्थिक तंगी, बनते कामों में विघ्न उत्पन्न होंगे। परिवार में सन्तान सम्बन्धी चिन्ता रहेगी। धन का खर्च अधिक होगा। दौड़धूप अधिक करने पर भी निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। वाहनादि व घर की साज-सज्जा पर खर्च अधिक होगा।

दिसम्बर—शनि की ढैय्या रहने से लाभ कम और परिश्रम अधिक रहेगा। किसी विशेष व्यक्ति के सहयोग से भूमि सम्बन्धी कार्यों में कुछ प्रगति होगी। चतुर्थ भाव में गुरु शनि, शुक्र, केतु युक्त होने से गृहस्थ जीवन में तनाव की स्थिति रहेगी।

तुला राशि (Libra)—रा, री, रू, रे, रो, ता, ति, तु, ते

वर्ष प्रवेश कुंडली

9 बु.8 गु. | 7 चं.शु. | 6 | 5 | सू. श. | 10 के. | 4 रा. | 3 | 11 | 1 | 12 मं. | 2

वर्षफल—*वर्षारम्भ से 21 मार्च तक इस राशि पर मंगल की अष्टम व सप्तम दृष्टियां रहने से परिश्रम, उत्साह से कार्य करने से यथेष्ट लाभ होगा। ता. 10 मई से 3 जून तक राशिस्वामी शुक्र की स्वगृही दृष्टि तथा 4 जून से 28 जून तक शुक्र अष्टमस्थ (स्वराशि) होने से बीच-बीच में लाभ, शुभ यात्रा भी होगी। ता. 9 सितं. से 3 अक्तू. तक शुक्र कन्या (नीच) राशि में संचार करने से आय कम, खर्च अधिक रहेंगे। स्वास्थ्य भी ठीक न रहे।*

जनवरी—राशिस्वामी शुक्र गुरु युक्त द्वितीय भाव में होने से आय में वृद्धि के साथ-साथ खर्च अधिक रहेगा। परिवार में धर्म-कर्म के शुभ मंगल कार्य भी सम्पन्न होंगे। मंगल की अष्टम दृष्टि होने से मानसिक तनाव, उतेजना तथा दौड़धूप अधिक रहे।

फरवरी—शुक्र तृतीय भाव में शनि युक्त होने से व्यर्थ की भागदौड़, आराम कम व संघर्ष अधिक रहेगा। दूरस्थ यात्राएं, स्थानान्तरण एवं पैतृक सम्पत्ति सम्बन्धी मतभेद, परिवार में अनेक उतार-चढ़ाव का सामना रहेगा।

मार्च—शुक्र केतु युक्त चतुर्थ भावस्थ होने से पारिवारिक एवं व्यवसायिक उलझनों के कारण मन परेशान रहेगा। किसी स्त्री विशेष से धोखे की सम्भावना बनी रहेगी। उत्तरार्द्ध में संघर्ष करने पर भी पर्याप्त धन लाभ नहीं हो पाएगा। अनावश्यक कार्यों पर खर्च अधिक होंगे।

अप्रैल—मासारम्भ में आय कम और खर्च अधिक रहेगा। व्यर्थ की भागदौड़, मानसिक तनाव व घरेलू उलझनें बढ़ेंगी। अपने भी परायों जैसा व्यवहार करेंगे। ता. 14 से वैशाख माहात्म्य का पाठ करना शुभ होगा।

मई—ता. 9 तक शुक्र षष्ठस्थ परन्तु उच्चस्थ होने से गुप्त युक्तियों से धन प्राप्ति के अवसर मिलेंगे। रोग एवं शत्रुभय भी रहेगा। ता. 10 के बाद व्यापार में विशेष उतार-चढ़ाव और पारिवारिक परेशानियों का सामना रहेगा।

जून—ता. 4 से राशिस्वामी शुक्र अष्टमस्थ होने से धन लाभ के अवसर मिलने पर भी आप उनका पूरा लाभ नहीं उठा पाएंगे। आय कम व खर्च अधिक रहेंगे। कार्य-व्यवसाय में संघर्ष के पश्चात् धन लाभ होगा। मासान्त में कुछ बिगड़े काम बनेंगे।

जुलाई—राशिस्वामी शुक्र भाग्यस्थान होने से आशानुकूल एवं निर्वाह योग्य आय के साधनों की प्राप्ति होगी। वाहनादि सुख-साधनों पर व्यय अधिक होंगे। धर्म-कर्म की ओर अभिरूचि बढ़ेगी। मासान्त में किसी श्रेष्ठ व्यक्ति से मुलाकात होगी।

अगस्त—मासारम्भ में शुक्र यद्यपि दशम भावस्थ है, परन्तु अस्तगत होने से धन लाभ के अवसर मिलने पर समुचित लाभ नहीं उठा पाएंगे। ता. 16 के बाद शुक्र एकादशस्थ होने से लाभ में वृद्धि, कार्यक्षेत्र में महत्त्वपूर्ण लोगों के साथ सम्पर्क बढ़ेंगे।

सितम्बर—व्यवसायिक व्यस्तताएं बढ़ेंगी। धार्मिक कार्य करने में प्रवृत्ति होगी। ता. 9 सितं. से शुक्र नीच राशिगत संचरित होने से वृथा मानसिक तनाव एवं धन का अपव्यय भी होगा। शरीर कष्ट, सिर व नेत्र कष्ट एवं गुप्तरोग से परेशानी हो। **उपाय**—ता. 28 को शनिवारी अमावस के दिन ब्राह्मण भोजन करवाना कल्याणकारी हो।

अक्तूबर—मासारम्भ ता. 4 से शुक्र इसी राशि में स्वगृही होकर संचार करेगा। बिगड़े कामों में सुधार होगा। आय के साधनों में वृद्धि होगी। किसी प्रिय व्यक्ति से मुलाकात होगी। मनोरंजक कार्यों पर खर्च अधिक रहेंगे।

नवम्बर—मासारम्भ से शुक्र द्वितीयस्थ गुरु युक्त होने तथा सूर्य का इस राशि पर संचार होने से स्वभाव में तेजी एवं क्रोध की अधिकता से परेशानी रहेगी। किसी निकट सम्बन्धी से मतभेद एवं वृथा भागदौड़ बनी रहेगी। मासान्त में निर्वाह योग्य आय होती रहेगी।

दिसम्बर—तृतीय भाग्यस्थ शुक्र सहित चतुर्ग्रही योग तथा इस राशि पर मंगल का संचार होने से पारिवारिक एवं व्यवसायिक उलझनों के कारण मन परेशान रहेगा। ता. 15 से शुक्र चतुर्थस्थ होने से आय के साधन पर्याप्त होंगे। विलासादि कार्यों पर खर्च अधिक होगा।

वृश्चिक राशि (Scorpio)-(तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू)

वर्ष प्रवेश कुंडली

सू. 9 | 10 श. के. | 8 बु.गु. | शु. 7 चं. | 6 | 11 | 5 | 12 मं. | 2 | 4 रा. | 1 | 3

वर्षफल—*वर्षभर इस राशि पर शनि साढ़ेसति का प्रभाव होने से संघर्षमयी तथा पुन: 22 अप्रैल से 4 नवं. तक गुरु का संचार इस राशि पर रहने से विपरीत परिस्थितियों के बावजूद पराक्रम में वृद्धि तथा उच्च-प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क बढ़ेंगे। ता. 7 मई से 22 जून तक मंगल अष्टमस्थ राहु युक्त तथा 22 जून से 8 अग. तक कर्क (नीच) राशिगत संचार करने से स्वास्थ्य सम्बन्धी विशेष सावधानी बरतें।*

जनवरी—मासारम्भ से इस राशि पर गुरु-शुक्र का संचार तथा राशिस्वामी मंगल पंचमस्थ होने से मिश्रित फल घटित होंगे। मान-प्रतिष्ठा, उत्साह और सौभाग्य में वृद्धि होगी। धर्म-कर्म में रूचि एवं परिवार में शुभ कार्य भी सम्पन्न होंगे। आर्थिक क्षेत्र में उतार-चढ़ाव तथा कौटुम्बिक समस्याएं बनेंगी।

फरवरी—गुरु का संचार तथा मंगल की स्वगृही दृष्टि रहने से शुभ फल घटित भी होंगे। कुछ बिगड़े कार्यों में सुधार, पराक्रम एवं उत्साह में वृद्धि होगी। उच्च-प्रतिष्ठित लोगों से सम्पर्क भी लाभकारी रहेंगे।

मार्च—मंगल की स्वगृही दृष्टि होने से आकस्मिक लाभ एवं कुछ बिगड़े कार्य बनेंगे। धन लाभ एवं पदोन्नति के योग हैं। धर्म-कर्म के कार्यों में रूचि बढ़ेगी। परन्तु शनि-साढ़ेसति के कारण पारिवारिक चिन्ता बनी रहेगी।

अप्रैल—द्वितीय भाव में शनि गुरु-केतु युक्त एवं शनि-साढ़ेसति के कारण परिवार में विभिन्न परेशानियों एवं समस्याओं का सामना रहेगा। धन का अपव्यय व किसी विशेष उच्चाधिकारी से विरोध पैदा हों। उत्तरार्द्ध में किसी नवीन कार्य की योजना बने।

उपाय—ता. 14 से पापप्रशमन स्तोत्र का नित्य पाठारम्भ करें।

मई—ता. 7 से राशिस्वामी मंगल अष्टमस्थ राहु युक्त होने से स्वास्थ्य परेशानी, बनते कामों में विघ्न, मन अशान्त एवं असन्तुष्ट रहेगा। साढ़ेसति के प्रभाव से धन सम्बन्धी कुछ समस्याएं भी उभरेंगी। यात्रा में परेशानी व चोटादि का भय है।

जून—गुरु का संचार एवं सूर्य की दृष्टि रहने से लेखन और स्वाध्याय में रूचि रहेगी। ता. 22 तक मंगल अष्टमस्थ रहने से बनते कामों में विघ्न एवं विलम्ब की सम्भावनाएं बढ़ेंगी। घरेलू उलझनों के कारण मन अशान्त व असन्तुष्ट रहे। स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें।

जुलाई—मंगल नीचराशिगत एवं सूर्य-राहु अष्टमस्थ होने से पुरुषार्थ में कमी तथा बनते कार्यों में विघ्न उत्पन्न होंगे। किसी व्यक्ति विशेष से अनबन के योग हैं। व्यवसाय सम्बन्धी नवीन योजनाएं विचाराधीन रहेंगी, परन्तु स्वास्थ्य ढीला, क्रोध की अधिकता से परेशानी हो।

अगस्त—भाग्यस्थ मंगल-राहु योग एवं साढ़ेसति के कारण अनावश्यक खर्च अधिक होंगे। ता. 9 से मंगल दशमस्थ होने से विघ्न-बाधाओं के बावजूद गुज़ारे योग्य धन प्राप्ति होगी। धर्म-कर्म में रूचि रहे, सन्तान सम्बन्धी शुभ समाचार तथा उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क बनेंगे।

सितम्बर—दशमस्थ चतुर्ग्रही योग (सू.मं.बु.शु.) होने से व्यवसायिक क्षेत्रों में व्यस्तताएं बनी रहेंगी। व्यवसायिक हालात धीरे-धीरे अनुकूल होने से पराक्रम और पुरुषार्थ के कुछ बिगड़े कार्यों में सुधार होगा। भूमि, वाहनादि सुख-साधनों पर विशेष खर्च होंगे।

अक्तूबर—किसी विशेष कार्य में उच्च-प्रतिष्ठित व्यक्तियों के सहयोग से ही सफलता मिलेगी। अपने कार्य सम्बन्धी योजनाओं में परिवर्तन करने पर लाभ प्राप्त होगा। कोई नवीन कार्य की योजना भी सम्भव है। गृह में किसी मंगल कार्य के भी योग हैं।

नवम्बर—इस मास उत्साहवर्द्धक स्थितियां बनेंगी। शनि-साढ़ेसाती के कारण परिवार में किसी गलतफहमी के कारण तनाव रहेगा। स्वास्थ्य सम्बन्धी कुछ परेशानी रहे। ता. 16 से सूर्य इस राशि पर होने से विघ्न-बाधाओं के बावजूद धन-लाभ के अवसर मिलेंगे।

दिसम्बर—मंगल द्वादशस्थ एवं शनि-साढ़ेसाती के प्रभाव से क्रोध एवं उत्तेजना बढ़ेगी। बनते कामों में विघ्न, संघर्ष अधिक एवं परिवार में मतभेद रहेंगे। परन्तु अपने उद्यम एवं पराक्रम से आय के साधन बनेंगे। दूरस्थ स्थल की यात्रा और भ्रमण के योग हैं।

धनु राशि (Sagittarius)-(ये, यो, भा, भी, भू, धा, फ, ढ, भे)

वर्ष प्रवेश कुंडली

10 के. | 9 सू.श. | बु.8 गु. | 7 चं. शु | 11 | 12 मं. | 6 | 1 | 3 | 5 | 2 | 4 रा.

वर्षफल (2019 ई.)—*वर्षभर शनि-साढ़ेसाती का प्रभाव तथा ता. 7 मार्च से वर्षान्त तक केतु का संचार इस राशि पर होने से स्त्री, सन्तान एवं व्यवसायादि की चिन्ता वर्षभर लगी रहेगी। सोची हुई योजनाओं को क्रियान्वित करने से विलम्ब तथा विघ्न-बाधाएं रहेंगी। राशि-स्वामी गुरु वर्षारम्भ 28 मार्च तक पुनः 22 अप्रै. से 4 नवं. तक द्वादश (व्यय) भाव में संचरित रहने से अप्रत्याशित खर्चे तथा वृथा यात्राएँ भी रहेंगी।*

जनवरी—शनि-साढ़ेसाती के प्रभावस्वरूप वृथा भागदौड़, मानसिक तनाव, अत्यधिक खर्च एवं घरेलू उलझनें भी रहेंगी। क्रोध की अधिकता से कोई बना हुआ कार्य बिगड़ सकता है। द्वादशस्थ गुरु-शुक्र का योग होने से परिवार में कुछ निजी समस्याएँ एवं व्यवसायिक क्षेत्रों में कठिन चुनौती का सामना करना पड़ेगा।

फरवरी—ता. 4 से पंचमस्थ मंगल (स्वगृही) के प्रभाव से उत्साह एवं पुरुषार्थ में वृद्धि होगी। निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। ता. 13 से तृतीयस्थ सूर्य पर शनि की दृष्टि होने से पारिवारिक एवं आर्थिक समस्याएं बनी रहेंगी।

मार्च—ता. 7 के बाद इस राशि पर शनि-केतु का संचार होने से व्यवसाय के क्षेत्र में अनिश्चित एवं अस्थिर हालात का सामना रहेगा। निकटस्थ सम्बन्धियों से तनाव, वृथा भागदौड़ लगी रहेगी। स्वास्थ्य हानि, रक्त-विकार तथा चोटादि का भय है।

अप्रैल—इस राशि पर गुरु-शनि-केतु का योग तथा इन पर मंगल की दृष्टि के कारण अधिकांश समय व्यर्थ के कार्यों में व्यतीत होगा। सन्तान से सहयोग मिलेगा, परन्तु भाई-बन्धुओं से मनमुटाव एवं परिवार में आर्थिक तंगी से परेशानी होगी। ता. 10 से गुरु वक्री होने से शरीर कष्ट, उदर-विकार रहे।

मई—गुरु पुनः द्वादशस्थ तथा मंगल-शनि मध्ये दृष्टि सम्बन्ध होने से क्रोध अधिक, बनते कार्यों में विघ्न, मानसिक तनाव, सिरदर्द एवं परिवार में उलझनें व समस्याएं उभरती सिमटती रहेंगी। वृथा वाद-विवाद में परेशानी तथा धन का अपव्य भी होगा। ता. 7 के बाद मंगल-राहु तथा शनि-केतु मध्य समसप्तक योग के कारण व्यवसायिक उलझनों के कारण भी मन संतप्त रहे।

जून—व्यर्थ की दौड़धूप, आराम कम व संघर्ष अधिक रहेगा। परिवार में मनमुटाव एवं अनावश्यक खर्च भी अधिक होंगे। अकस्मात् मन से उचाटता एवं उदासीनता रहेगी। यात्रा में अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें।

जुलाई—घरेलू एवं व्यवसाय सम्बन्धी चिन्ता रहेगी। परिवार में कुछ तनाव होगा। कठिन परिश्रम के पश्चात् निर्वाह योग्य धन प्राप्ति होगी। उत्तरार्द्ध में परिवार में मंगल कार्य और खुशी के अवसर मिलेंगे। परन्तु स्वास्थ्य में खराबी और रक्त विकार का भय रहे।

अगस्त—शनि-साढ़ेसति एवं सूर्य-मंगल अष्टमस्थ होने से परिवार में कुछ आन्तरिक समस्याएं अभी बनी रहेंगी। स्वास्थ्य में विकार, क्रोध अधिक, स्वभाव में तेजी एवं वृथा झगडे में परेशानी होगी। चोटादि से सावधानी बरतें।

सितम्बर—शनि-साढ़ेसाती के प्रभाव से व्यवसायिक क्षेत्रों में यथोचित लाभ में कुछ कमी रहेगी। परन्तु व्यवसायिक क्षेत्रों में नए गठजोड़ और नए समीकरण भाग्यवृद्धिकारक [illegible]
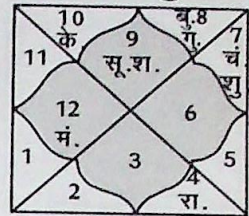
अक्तूबर—पंचम भाव पर मंगल की स्वगृही दृष्टि होने से सन्तान सम्बन्धी विभिन्न कार्यों में विघ्नों के बावजूद सफलता मिलेगी। धर्म-कर्म में रूचि बढ़ेगी। उत्तरार्द्ध में बाधाओं के बावजूद धन प्राप्ति के मार्ग प्रशस्त होंगे। वाहनादि का क्रय-विक्रय भी होगा।

नवम्बर—ता. 5 से राशिस्वामी गुरु शनि-केतु युक्त इसी राशि पर संचार करने से कार्यक्षेत्र में व्यस्तताएं बढ़ेंगी। धन लाभ में वृद्धि के साथ-साथ खर्च भी अधिक बढ़ेंगे। कुछ अप्रत्याशित सफलताएं भी प्राप्त होने की सम्भावना बढ़ेगी।

दिसम्बर—नौकरी में उन्नति व व्यवसाय में प्रगति के अवसर मिलेंग। धर्म-कर्म में रूचि रहेगी। कुछ बिगड़े काम बनेंगे। सुख-साधनों में वृद्धि होगी। कुछ उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्बन्ध बनेंगे। मासान्त में घरेलु कलह के कारण मन चिन्तित रहेगा।

मकर राशि (Capricorn)—(भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी)

वर्ष प्रवेश कुंडली

वर्षफल—*वर्षभर इस राशि पर सनि साढ़ेसाती का प्रभाव रहने तथा वर्षारम्भ से 7 मार्च तक मकर राशि पर केतु का संचार होने से अचानक फिजूलखर्ची, अपव्यय के कारण मानसिक तनाव भी रहेगा। स्त्री/पति के स्वास्थ्य सम्बन्धी चिन्ता भी रहेगी। ता. 30 अप्रै. से 17 सितं. तक शनि वक्री अवस्था में द्वादश (व्यय) भाव में केतु युक्त रहने से खर्चों पर अंकुश रखें, आय में कमी तथा ऋणादि में वृद्धि हो सकती है।*

जनवरी—इस राशि पर केतु का संचार एवं द्वादश भाव में सूर्य-बुध-शनि योग होने से व्यर्थ की भागदौड़, मानसिक तनाव, संघर्ष परन्तु विपरीत परिस्थितियों में भी निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। विदेशी सम्बन्धियों से लाभ एवं दूरस्थ यात्राएं भी होंगी। ***उपाय***—ता. 14 को मकर संक्रान्ति के दिन, तिल निर्मित मिठाई, गर्मवस्त्र, पंचांग का दान करना चाहिए।

फरवरी—संघर्षपूर्ण परिस्थितियों के बावजूद कार्यक्षेत्र में व्यस्तताएं बनेंगी। सप्तमस्थ राहु पर मंगल की नीच दृष्टि होने से शरीर कष्ट, चोटादि का भय, निकटस्थ बन्धु अथवा स्त्री/पति से तनावपूर्ण सम्बन्ध रहेंगे। दूरस्थ यात्राएं एवं धन का अपव्यय भी होगा।

मार्च—पराक्रम में वृद्धि एवं आय के साधनों में बढ़ौत्तरी होगी। व्यवसायिक व्यस्तताएँ बढ़ेंगी। आँखों में कष्ट और त्वचा रोग होने का भय है। उत्तरार्द्ध भाग में मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि और लाभ के अवसर बढ़ेंगे। शनि-साढ़ेसाती के कारण मानसिक तनाव होगा।

अप्रैल—घरेलु हालात अनिश्चित एवं असमंजसपूर्ण रहेंगे। धन संचय करने में कठिनाई होगी। मन अशान्त एवं असन्तुष्ट रहेगा। उत्तरार्द्ध भाग में किसी शुभ कार्य पर खर्च होगा। किसी श्रेष्ठ व्यक्ति की सहायता से कोई बिगड़ा काम बनेगा।

मई—शनि वक्री एवं केतु युक्त होने से धन का खर्च अधिक एवं आय में कमी के योग हैं। शनि-साढ़ेसाती के कारण क्रोध की अधिकता, मानसिक तनाव एवं गुप्त परेशानियों का सामना रहेगा। कुछ नवीन योजनाएँ व्यवसाय के क्षेत्र में आशा की किरण बनेगी।

जून—सन्तान सम्बन्धी चिन्ता, सिर-दर्द एवं आलस्य में वृद्धि होगी। शनि वक्री द्वादशस्थ होने से अनावश्यक भागदौड़, अत्यधिक खर्च एवं परिवार में कुछ असुखद माहौल रहेगा। स्वास्थ्य चिन्ता और निकट सम्बन्धियों से मतभेद भी रहेंगे।
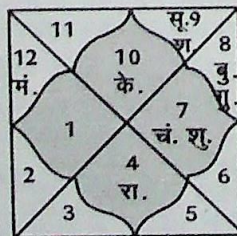
जुलाई—मासारम्भ से मगंल की स्वोच्च सप्तम दृष्टि रहने से अत्यधिक संघर्ष के बावजूद आय के साधन बनते रहेंगे। निकट बन्धुओं एवं पारिवारिक सदस्यों के साथ मतभेद एवं तकरार के हालात बनेंगे। व्यवसाय में भी आशाऽनुकूल लाभ नहीं हो पाएगा।

अगस्त—पूर्वार्द्ध भाग में सोची योजनाओं में कुछ सफलता मिलेगी। धन-लाभ व सवारी आदि सुखों पर खर्च होगा। उत्तरार्द्ध भाग में विघ्न-बाधाओं के बावजूद धन लाभ के अवसर मिलेंगे। दूरस्थ स्थल की यात्रा और भ्रमण के योग हैं। परन्तु सन्तान सम्बन्धी गुप्त चिन्ता रहेगी।

सितम्बर—अष्टम भाव में सूर्य-मंगल-बुध-शुक्रादि ग्रहों का योग स्वास्थ्य की दृष्टि से विशेष परेशानीकारक ही रहेगा। व्यवसाय के क्षेत्र में विभिन्न उलझनों का सामना रहे। पारिवारिक सहयोग में भी कुछ कमी रहेगी।

अक्तूबर—पूर्वार्द्ध भाग में प्रतिष्ठा में वृद्धि तथा धन-लाभ एव पदोन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। कुछ उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्बन्ध बनेंगे। निर्वाह योग्य धन लाभ के बावजूद विलास कार्यों पर धन का व्यय अधिक होगा।

नवम्बर—संघर्ष के बावजूद धन लाभ के अवसर प्राप्त होते रहेंगे। कुछ रुके हुए कार्य बनेंगे। परिवार की ओर से शुभ समाचार प्राप्त होगा। उत्तरार्द्ध भाग में अधिक समय व धन मनोरंजक कार्यों पर खर्च होगा।

दिसम्बर—द्वादश भाव में शनि-गुरु-केतु आदि का योग होने से अचानक धन का खर्च, अपव्यय के कारण मानसिक तनाव भी रहेगा। विदेशी सम्बन्धियों से लाभ एवं विदेश गमन की योजना भी बनेगी। पिता-पुत्र के सम्बन्धों में तनाव रहे।

कुम्भ राशि (Aquarius)—(गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा)

वर्ष प्रवेश कुंडली

वर्षफल—*राशिस्वामी शनि की वर्षभर विशेष तृतीय स्वगृही दृष्टि रहने से भाग्योनति व लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। ता. 13 फर. से 14 मार्च के मध्य इस राशि पर सूर्य के संचार पर शनि की दृष्टि रहने से निकटस्थ भाई-बन्धुओं से मनमुटाव, वैचारिक मतभेद रहेंगे। ता. 22 जून से 7 अग. तक कार्येश मंगल नीच राशिगत (कर्क) होकर कुम्भ राशि पर शत्रु अष्टम दृष्टि रखेगा। फलस्वरूप कार्य-व्यवसाय में उलझनें, आय कम तथा शत्रु प्रबल रहेंगे। ता. 17 अग. से 16 सितं. के मध्य सूर्य की भी दृष्टि रहने से क्रोधाधिक्य तथा खर्च अधिक रहें।*
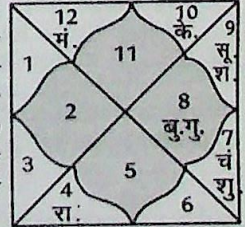
जनवरी—आय के साधनों में मामूली वृद्धि होगी, परन्तु अत्यन्त संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहेगा। उत्तरार्द्ध में द्वादशस्थ सूर्य-केतु के प्रभाव से स्वास्थ्य कष्ट, मानसिक तनाव, बनते कामों में विघ्न, सिरदर्द व चोटादि का भय बना रहेगा।

फरवरी—विभिन्न आर्थिक योजनाओं को क्रियान्वित करने में परेशानी व विलम्ब होने से मानसिक तनाव बना रहेगा। परिवार में कुछ भ्रामक धारणाओं से व्यर्थ की उलझनें उत्पन्न होंगी। मन अशान्त एवं असन्तुष्ट रहेगा।

मार्च—मासारम्भ में मंगल की कर्म भाव पर स्वगृही दृष्टि होने से पर्याप्त परिश्रम के बाद निर्वाह योग्य धन लाभ के अवसर मिलेंगे, परन्तु ता. 22 से मंगल की शनि पर दृष्टि रहने से अचानक खर्च बढ़ जाएंगे। चोटादि का भय रहेगा।

अप्रैल—लाभ स्थान पर शनि गुरु-केतु युक्त एवं इस राशि पर बुध-शुक्र का संचार होने

से यद्यपि निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। धन का अपव्यय, वृथा यात्रा रहे। मंगल की सप्तम भाव एवं शनि पर विशेष (4-8) दृष्टि होने से परिवार में कलह एवं स्वभाव में तेजी रहे।

मई—सर्विस अथवा व्यवसाय में संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा। अत्यधिक भागदौड़ करने पर भी आय से व्यय अधिक रहेगा। कुछ आन्तरिक समस्याएं अभी बनी रहेंगी। स्त्रियों को घरेलू वातावरण को सुखद बनाए रखना शुभ होगा।

जून—पंचम भावस्थ मंगल-राहु योग तथा लाभ स्थान पर शनि-केतु के प्रभाव से सन्तान सम्बन्धी चिन्ता, बनते कामों में विघ्न, घरेलू उलझनें, अत्यधिक भागदौड़, धन का अपव्यय रहेगा। ता. 22 से मंगल की अष्टम दृष्टि इस राशि पर होने से कार्य-व्यवसाय में उलझनें, आय कम तथा शत्रु प्रबल होंगे।

जुलाई—इस राशि पर शनि की तृतीय एवं मंगल की शत्रु दृष्टि होने से संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा। बनते कामों में विघ्न एवं आर्थिक उलझनों के कारण मन परेशान रहेगा। परन्तु अपने बुद्धिकौशल, क्षमता और सूझबूझ से पारिवारिक स्थिति को सुलझाने में प्रयत्नशील रहेंगे।

अगस्त—इस मास सूर्य-मंगल एवं शनि की शुभाशुभ दृष्टियां रहने से परिवार में मतभेद एवं निकट बन्धुओं से तनाव की स्थिति रहेगी। सन्तान सम्बन्धी चिन्ता रहे। मासान्त में उच्च प्रतिष्ठित लोगों से सम्पर्क एवं धनागमन के साधनों में वृद्धि होगी।

सितम्बर—विघ्न-बाधाओं के बावजूद धन लाभ व कार्यों में सफलता प्राप्त हो। कारोबार में व्यस्तताएं बढ़ेंगी। व्यवसाय में कुछ परिवर्तन का विचार बने। यात्रा का प्रोग्राम बनेगा। प्रिय-बन्धु से मुलाकात होगी। मासान्त में स्त्री सुख व शुभ समाचार मिले। विद्यार्थी वर्ग के लिए समय संघर्षपूर्ण रहेगा।

अक्तूबर—विशेष परिश्रम से किए गए प्रयास सार्थक सिद्ध होंगे। समाज में मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। परिवार में शुभ मंगल कार्य भी सम्पन्न होंगे। कोई विशेष रुका हुआ कार्य भी बनेगा। **उपाय**—ता. 17 से कार्तिक माहात्म्य का पाठ तथा सूर्य भगवान को अर्घ्य दें।

नवम्बर—मासारम्भ में सूर्य भाग्यस्थ नीचराशिगत संचार करने परन्तु शनि स्वगृही दृष्टि रहने से कार्यक्षेत्र में व्यस्तताएं बनी रहेंगी। ता. 21 से सुखेश शुक्र भी गुरु के साथ लाभ स्थान में होने से धन लाभ के चाँस मिलेंगे।

दिसम्बर—ग्रहस्थिति अनुसार निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। परिवार में धर्म-कर्म के कार्य भी सम्पन्न होंगे। कुछ असमंजस के कारण लाभ मार्ग में व्यवधान एवं विलम्ब उत्पन्न होगा। वृथा खर्च बढ़ेंगे।

मीन राशि (Pisces)—(दि, दु, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, चि)

वर्ष प्रवेश कुंडली

भाव	ग्रह
1	
2	
3	
4	रा.
5	
6	
7	चं.शु.
8	बु. गु.
9	सू. श.
10	के.
11	
12	मं.

***वर्षफल (2019 ई.)**—वर्षरम्भ से 28 मार्च तक तथा पुनः 22 अप्रैल से 4 नवं. तक राशिस्वामी गुरु की स्वगृही दृष्टि रहने से विद्या/कम्पीटीशन/विशेष कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। ता. 29 मार्च से 22 अप्रै. के मध्य तथा 5 नवं. से वर्षान्त तक गुरु स्वराशि (धनु) पर संचार करेगा। वर्षारम्भ से 4 फर. तक मंगल का तथा 14 मार्च से 13 अप्रै. के मध्य सूर्य का संचार स्वभाव में उग्रता लाएगा। ता. 8 अग. में 9 नवं. तक मंगल की तथा 17 सितं. से 17 अक्तू. तक सूर्य की दृष्टि भी उलझनें, तनाव तथा चिन्ता पैदा करेगी।*

जनवरी—पंचमस्थ राहु पर गुरु की विशेष शुभ दृष्टि होने से कोई शुभ समाचार मिलेगा। उच्च प्रतिष्ठित लोगों से सम्पर्क होंगे। धर्म-कर्म की ओर रूचि बनेगी। परन्तु मंगल का इस राशि पर संचार तथा 14 से लाभस्थ सूर्य-केतु योग परेशानियां भी उत्पन्न करेंगे।

फरवरी—विघ्न-बाधाओं के बावजूद धन लाभ के चाँस मिलते रहेंगे। अच्छे लोगों के साथ सम्पर्क बनेंगे। धार्मिक कार्यों की ओर रूझान बढ़ेगा। व्यय भाव पर शनि की दृष्टि रहने से खर्च अधिक बढ़ेंगे।

मार्च—गुरु की स्थिति के कारण धार्मिक एवं शुभ कार्यों पर खर्च अधिक रहेगा। दूसरे सप्ताह नए-नए श्रेष्ठ लोगों के साथ सम्पर्क बनेंगे। तीसरे व चौथे सप्ताह (ता. 14 से 29 तक) स्वभाव में तेजी एवं व्यर्थ की दौड़-धूप अधिक रहेगी। मासान्त में कोई बिगड़ा कार्य बनेगा।

अप्रैल—संघर्ष के बावजूद धन लाभ के अवसर प्राप्त होते रहेंगे। कुछ रुके हुए कार्य बनेंगे। परिवार की ओर से शुभ समाचार प्राप्त होगा। उत्तरार्द्ध भाग में आलस्य में वृद्धि, अधिकांश समय व धन मनोरंजन कार्यों पर खर्च होगा।

***उपाय**—वैशाख माहात्म्य का पाठ करना शुभ होगा।*

मई—गुरु वक्री होने से व्यर्थ की भागदौड़/दौड़धूप अधिक रहेगी। परन्तु निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। खर्च भी बहुत अधिक रहेंगे। उत्तरार्द्ध में किसी शुभ कार्य पर खर्च होगा। किसी श्रेष्ठ व्यक्ति की सहायता से कोई बिगड़ा काम बनेगा।

जून—अत्यधिक परिश्रम करने पर भी धन लाभ के अवसरों का समुचित लाभ नहीं उठा पाएंगे। सन्तान के सम्बन्ध में चिन्ता और घरेलू उलझनों के कारण मन उदासीन रहेगा। ता. 15 के बाद आय कम और खर्च अधिक, पारिवारिक मतभेद और कार्य-स्थिति सामान्य ही रहेगी।

जुलाई—भाग्येश मंगल नीचराशिगत संचार करने से विद्या एवं कैरियर सम्बन्धी विघ्न-बाधाएं एवं कुछ असमंजस के हालात बनेंगे। परन्तु पंचम भाव पर गुरु की दृष्टि होने से भाग्यवश ही हालात में सुधार एवं शुभ कार्यों पर धन का खर्च अधिक होगा।

अगस्त—गुरु वक्री होने से व्यर्थ की भागदौड़ अधिक रहेगी। परन्तु निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। ता. 11 से गुरु मार्गी होने से किसी शुभ कार्य पर खर्च होगा। किसी श्रेष्ठ व्यक्ति की सहायता से कोई बिगड़ा कार्य बनेगा।

सितम्बर—गृह में मंगल कार्य सम्पन्न होंगे। धार्मिक कार्यों की ओर रुझान रहेगा। किसी के सहयोग से नया कार्य आरम्भ होगा। विद्या में सफलता एवं घरेलू सुखों में वृद्धि होगी। ता. 17 से सूर्य की दृष्टि रहने से सरकार की ओर से लाभ, भागदौड़ अधिक एवं क्रोध व उत्तेजना भी अधिक रहेगी।

अक्तूबर—अकस्मात् धन प्राप्ति एवं आशाओं में सफलता के योग बनेंगे। परिवार में शुभ मंगल कार्य भी सम्पन्न होंगे। ता. 17 से सूर्य, बुध, शुक्रादि ग्रह अष्टमस्थ रहने से स्वास्थ्य कष्ट, वृथा भागदौड़ तथा बनते कार्यों में विलम्ब होंगे।

नवम्बर—गत किए गए प्रयासों से भाग्योन्नति तथा श्रेष्ठ व्यक्ति से सम्पर्क लाभकारी होगा। भूमि-वाहनादि सुख मिलेगा। क्रय-विक्रय के कार्यों से भी लाभ परन्तु नौकरी में अफसरों से तनाव हो सकता है।

दिसम्बर—पारिवारिक आय के साधन बनते रहेंगे। व्यवसायिक क्षेत्रों में व्यस्तताएं बढ़ेंगी। किसी विशेष निकट सम्बन्धी द्वारा धोखे की भी सम्भावना है। उत्तरार्द्ध में व्यवसाय/नौकरी में हालात कुछ अस्थिर एवं अनिश्चित रहेंगे।

वि. संवत 2076 में ...

वि. संवत् २०७६ में संवत्सर एवं राजा-मन्त्रादि फल

ॐ स्वस्ति नः श्रीगणेशाय नमः। अचिन्तयाव्यक्तरूपाय निर्गुणाय गुणात्मने। समस्त जगदाधार मूर्तये ब्रह्मणे नमः। आदौ गणपतिं नमस्कृत्य प्रणम्य च पूर्वजानहम्। चन्द्रमिश्रं तत्पुत्रं रामजी दत्तस्य सूनं विश्वविख्यातं पण्डित देवीदयालु ज्यो. स्व वृद्धप्रपितामहम् स्मरन् भक्त्या लोकहितार्थाय सुखसम्पत्ति हेतवे **'परिधावी' नामक** नवविक्रमी सम्वत्सरे शुभे चतु-र्चत्वारिंशत्योत्तर शत वर्षाणि (१४४) वर्ष प्रवेशे **पं. विवेक शर्मा ज्योतिषी** अहं प्रप्रपौत्र एवं अधिपतिः पं. देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज़, पुत्र दैवज्ञरत्न **पं. श्रीपन्ना लाल ज्योतिषी**, कनिष्ठ भ्रातृ पं. **पंकज शर्मा** सहितोऽहं कुर्वे **पंचाँग दिवाकरम्**।।

सृष्टि सम्वत् १९५,५८,८५,१२० के अन्तर्गत, **श्रीविक्रमी संवत् २०७६**, शक संवत् १९४१-४२, कलि (कल्कि) संवत् ५१२०, श्रीकृष्ण सम्वत् ५२५५, सप्तर्षि संवत् ५०९५, श्रीबुद्ध संवत् २६४२-४३, श्रीमहावीर निर्वाण (जैन) संवत् २५४४-४५, हिजरी सन् १४४०-४१, इंग्लिश सन् २०१९-२० ईस्वी, फसली सन् १४२६-२७, खालसा संवत् ३२०-२१, नानकशाही सम्वत् ५५०-५१, सृष्टि संवत् के अन्तर्गत सतयुग प्रमाण १७२८०००, त्रेतायुग १२९६०००, द्वापर युग प्रमाण ८६४००० एवं कलियुग का प्रमाण ४३,२००० वर्षों का होता है।

'परिधावी' नामक नव-सम्वत्सर का फल-(वि. सं. २०७६)

नव विक्रमी संवत् २०७६ के आरम्भ में बार्हस्पत्यमान (गुरुमान) से शिव (रुद्र) विंशति के अन्तर्गत **'दशम युग'** का प्रथम (पहिला) **'परिधावी'** नामक (संवत्सरों में 46वाँ) नया संवत्सर रहेगा। नया विक्रमी संवत् २०७६ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा अर्थात् 6 अप्रैल, 2019 ई., तद्नुसार २४ चैत्र, शनिवार से प्रारम्भ होगा।

नववर्ष प्रवेश लग्न

५	४	३ रा.
६		२ मं.
७		१
८		१२ सू.
९ गु.श.के.	१०	११ चं. बु. शु.

शास्त्र-नियमानुसार नवसंवत् का प्रारम्भ तथा राजा का निर्णय चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के वार अनुसार ही किया जाता है। शनिवार से नवसंवत् प्रारम्भ होने से आगामी वर्ष (संवत्) का राजा भी **'शनि'** होगा। यद्यपि **'परिधावी'** नामक संवत्सर का आरम्भ 14 अप्रैल, 2018 ई. से हो चुका है तथा आगामी **'प्रमादी'** नामक संवत्सर भी 10 अप्रैल, 2019 ई. को आरम्भ हो जाएगा। **परन्तु प्रचलित परम्परा अनुसार संवत्-आरम्भ में विद्यमान संवत्सर को विक्रमी संवताराम्भ काल से वि. संवत् समाप्ति तक धार्मिक अनुष्ठान, जप-पाठ, दानादि, संकल्प-कार्यों के आरम्भ में प्रयोग किया जाएगा अर्थात् 'परिधावी'** नामक संवत्सर का प्रयोग होगा। धार्मिक, कर्मकाण्डी विद्वान् 10 अप्रैल, 2019 ई. के बाद परिधावी नामक संवत्सर का उच्चारण करने के बाद **'परं वर्तमाने प्रमादी नाम संवत्सरे'** का प्रयोग कर सकते हैं।
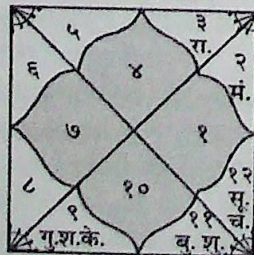
'परिधावी' नामक नया वि. संवत् २०७६, गत चैत्र अमावस की समाप्ति (5 अप्रैल), प्रविष्टे २३ चैत्र, शुक्रवार को दोपहर 2 बजकर 21 मिनट पर (14/21) कर्क लग्न में प्रवेश करेगा। परन्तु शास्त्र-नियमानुसार नव वि. सं. २०७६ तथा चैत्र (वासन्त) नवरात्रों का प्रारम्भ 6 अप्रैल, शनिवार (प्रविष्टे २४ चैत्र) रेवती नक्षत्र में होगा। वर्ष का राजा **शनि** तथा मन्त्री **सूर्य** होगा। **'परिधावी'** सम्वत्सर का पल शास्त्रों में इस प्रकार वर्णित है-

भूपाहवो महारोगोमध्य सस्यार्घ वृष्टयः।
दुःखिनो जन्तवः सर्वेवत्सरे परिधाविने।।

अर्थात् **'परिधावी'** नामक सम्वत्सर में विभिन्न देशों के मध्य युद्धजन्य परिस्थितियाँ बनें। श्रावण, भाद्रपद में कम वर्षा होगी। खण्डित अर्थात् कहीं कम व कहीं अधिक वर्षा होने से अन्न का उत्पादन मध्यम हो तथा अनाज, धान्यादि के मूल्यों में विशेष वृद्धि होगी। देश में धनधान्य की वृद्धि होने के बावजूद भी भय व आशंकाओं से भरा माहौल रहेगा। चौपाये-गाय, भैंस, घोड़ा, हाथी आदि इनको पीड़ा व कष्ट रहे। फल, रसादि पदार्थ भी महंगे हों परन्तु चाँदी, पीतल आदि धातुओं के मूल्यों में गिरावट हो।

संवतारम्भ में यद्यपि परिधावी नाम सम्वत्सर ही प्रचलित रहेगा, परन्तु 10 अप्रैल, 2019 ई. के बाद **'प्रमादी'** नामक सम्वत्सर प्रभावी रहने से इसका फल भी संवत् काल में परिलक्षित होगा। शास्त्रों में **'प्रमादी'** सम्वत्सर का फल इस प्रकार वर्णित है-

निष्पत्तिः सर्वसस्यानां रसानां च महर्घता।
मरकस्य भयं विद्यात् प्रमादीति हि वत्सरे।।

अर्थात् प्रमादी संवत्सर में सभी प्रकार के धान्य, फसलों, अनाज का यथेष्ठ उत्पादन होगा। सब रसादि पदार्थ, गुड़, चीनी आदि के मूल्यों में वृद्धि होगी। सुभिक्ष एवं सुख हो। आषाढ़ मास में वर्षा कम हो, भाद्रपद में वर्षा अधिक होगी। धान्य में तीन गुना तक लाभ प्राप्त होगा।

रोहिणी का वास-वि. संवत् २०७६ में मेष संक्रान्ति का प्रवेश आश्लेषा नक्षत्रकालीन है। अतएव रोहिणी का वास ***'तट'*** पर होगा। यथा-

यदि विधिधिष्ण्यपतति तटस्थम्। शुभजल वृष्टिः धन-कण वृद्धि।।

अर्थात् ***'तट'*** पर रोहिणी का वास होने से आगामी वर्ष उपयोगी एवं अनुकूल वर्षा होने के योग बनेंगे। फलस्वरूप धान्य (चावल), चने, गन्ने, वृक्ष, घास, पौधों व अन्य जड़ी-बूटियों की पैदावार भी अच्छी होगी। प्रजा में भी अन्न, धन एवं अन्य सुख-साधनों व प्रसाधनों की वृद्धि होगी।

♦ समय (सम्वत्सर) का वास–[धोबी (रजक) के घर] ♦

रोहिणी का वास '**तट**' पर होने से सम्वत् का वास '**धोबी**' (रजक) के घर रहेगा। फलस्वरूप वर्षा विपुल एवं उत्तम मात्रा में होगी–'**रजके वष्टिरूत्तमा**'।। धान्य, चावल, गेहूँ, चने, गन्ना, ईख, मक्की, हरी सब्जियों, वृक्षों व फलों का उत्पादन अच्छा होगा। लोगों में सुख एवं ऐश्वर्य के साधन बढ़ेंगे। कुएँ, तालाब, नदी-नाले, बावड़ियां, दरिया आदि जलापूरित रहेंगे। यथा–

वापी कूपतडागानि नदी नद वनानि च, जलपूर्णानि दृश्यन्ते वासो रजके।।

✤ **संवत् (समय) का वाहन**–वि. संवत् २०७६ का **राजा शनि** होने से सम्वत् का वाहन भैंसा (महिष) होगा। वर्षभर विषम वर्षा अर्थात् असमान वर्षा होगा। कहीं उपयोगी वर्षा की कमी रहे तो कहीं अति वर्षा से बाढ़, भूस्खलन, फसलों की हानि एवं अन्य प्राकृतिक प्रकोपों से धन, जन, सम्पदा आदि की हानि होने का भय होगा। काले रंग की वस्तुएं अधिक प्रिय अर्थात् महंगी होंगी। लोगों की प्रवृत्ति तामसिक बनेगी। पूर्व-दक्षिण के देशों एवं राज्यों में प्राकृतिक प्रकोप अधिक होंगे।

कुछ विद्वान् राजा शनि होने पर संवत् का वाहन '**घोड़ा**' भी मानते हैं। संवत् का वाहन घोड़ा होने से राजनैतिक मतभेद तथा राजनीतिक षडयन्त्र, उपद्रव दृष्टिगोचर होंगे। सत्ता परिवर्तन एवं राजसत्ता के लिए अनेक राजनैतिक गठजोड़ होंगे। कुछ क्षेत्रों में कम वर्षा, असामयिक वर्षा से दुर्भिक्ष की स्थिति रहे। अग्निकाण्ड, भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोपों का भय तथा बाज़ारों में महँगाई का रुख रहेगा।

♦ वि. संवत् २०७६ के दश-पदाधिकारियों का फल ♦

(1) वर्ष (वि. संवत् २०७६) के राजा 'शनि' का फल–

शनैश्चरे भूमिपतौ सकृज्जलं प्रभूतरोगैः परिपीड्यते जनः।
युद्धं नृपाणां गद–तस्कराद्यैः भ्रमन्ति लोकाः क्षुधिताश्च देशान्।।

अर्थात् वर्ष का राजा शनि हो तो बेमौसमी एवं बेमौका (प्रतिकूल) वर्षा होने से दुर्भिक्ष (अकालजन्य) की स्थिति बने। लोग विभिन्न प्रकार के पेचीदा रोगों के कारण परेशान व पीड़ित रहें। राजनेताओं में परस्पर वैमनस्य, विरोध व टकराव की स्थिति चरम पर रहे। कहीं भूमण्डल पर विरोधी देशों के मध्य टकराव व युद्धजन्य परिस्थितियां बनेंगी। चोरी, ठगी,डकैती एवं लूटमार आदि की घटनाएँ अधिक हों, जिस कारण लोग परेशान एवं दुःखी हों। किसी प्रदेश विशेष में अथवा देश में लोग दुर्भिक्ष, बाढ़ादि प्राकृतिक प्रकोपों के कारण अथवा आतंकी घटनाओं आदि से परेशान (पीड़ित) होकर

(2) सम्वत् के मन्त्री 'सूर्य' का फल–

नृपभयं गदतोऽपि हि तस्करात् प्रचुर धान्यधनादि महीतले।
रसचयं हि समर्घतमं तदा रवि रमात्यपदं हि समागतः।।

जिस वर्ष सूर्यदेव को मन्त्री पद प्राप्त हो, उस वर्ष राजाओं को भय अर्थात् प्रशासकों में परस्पर विरोध एवं टकराव बढ़े (केन्द्र व राज्य सरकारों में मतभेद रहेंगे)। पृथ्वी पर धन-धान्य आदि सुख-साधनों का प्रसार अधिक बढ़े, परन्तु साथ ही साथ कठोर सरकारी नीतियों व गतिविधियों, चोर-लुटेरों के कारण प्रजा में भय, विक्षोभ व असन्तोष भी रहे। क्लिष्ट एवं पेचीदा रोगों का आधिक्य रहे। पेयजल, गुड़, दूध, तैल, ईख, फल, सब्जियाँ, चीनी इत्यादि रसदार वस्तुओं की कमी एवं उनमें समर्घता (तेजी) हो। अन्य जनोपयोगी वस्तुओं के भावों में भी तेजी हो।

(3) सस्येश 'मंगल' का फल–

अथ च सस्यपतौ धरणीसुते गजतुरंगखरोष्ट्रगवामपि।
भवति रोगहतिश्च घना जलं ददति नैव तुषान्नविनाशनम्।।

सस्येश (चौमासा फसलों का स्वामी) मंगल होने से हाथी, घोड़े, गधे आदि चौपायों तथा गाय, बैल, भैंस, ऊँट आदि दुधारु पशुओं में भी विचित्र प्रकार के रोग फैलने की आशंका रहेगी। कहीं उपयुक्त वर्षा की कमी के कारण खड़ी फसलों (जैसे-धान्य, जौं, चना, गेहूँ, सोयाबीन), सब्जियों आदि को नुकसान पहुँचेगा। फलस्वरूप इनके भावों में विशेष तेजी बनेगी।

(4) धान्येश 'चन्द्र' का फल–

चन्द्रे धान्याधिपे जाते प्रजावृद्धिः प्रजायते।
गोधूमाः सर्षपाश्चैव गोषुक्षीरं तदाबहु।।

अर्थात् धान्य का स्वामी चन्द्रमा हो, तो उस वर्ष जनसंख्या में विशेष वृद्धि होती है। शीतकालीन फसलों जैसे-धान्य, चावल, ईख (गन्ना), कपास, चना, सोयाबीन, सरसों आदि तथा गोदुग्ध/गोघृत के उत्पादन में विशेष वृद्धि होगी। श्रेष्ठ एवं उपयोगी वर्षा, धरती पर नदियों, तालाबों में जल-स्तर ठीक रहे तथा लोगों में उत्साह बना रहेगा।

(5) मेघेश 'शनि' का फल–

रविसुते जलदाधिपतौ भवेद् विरलवृष्टिवती वसुधा तदा।
मनसि तापकरो नृपतिः सदा विविधरोगयुता जनता तदा।।

मेघों अर्थात् वर्षा का स्वामी शनि हो, तो पृथ्वी पर विरल वर्षा (वृष्टि) हो अर्थात् कहीं कम वर्षा हो, और कहीं अतिवृष्टि के कारण बाढ़ादि से जन, धन व कृषि की हानि हो। राजकीय एवं प्रशासकीय नीतियों व नियमों के कारण लोगों के मन में क्षोभ एवं सन्ताप रहे।

(6) रसेश 'गुरु का फल–

(6) रसेश 'गुरु का फल–

यदि गुरौ रसपे सुखिनो जनाः समधिकेन फलादि युता द्रुमाः।
जनपदा जननायक–सैनिका हव–हयायुध वाह विगाहिताः।।

अर्थात् यदि गुरु रसाधिपति हो, तो वर्ष में विशिष्ट साधन-सम्पन्न लोगों में भौतिक सुखों की विशेष वृद्धि होगी। घास, तृण, फल-फूलदार आदि वृक्षों की पैदावार अच्छी होगी। जनसाधारण विद्वान् ब्राह्मणों की सेवा-सत्कार में तत्पर हों। परन्तु किसी जनपद अथवा सीमावर्ती प्रान्तों में शासक-प्रशासक, पुलिस सैन्याधिकारी अपने वाहनों एवं शस्त्रबलों की परेड व परीक्षण करें।

(7) नीरसेश (धातुओं के स्वामी) 'मंगल' का फल–

नीरसेशो–यदा–भौमः प्रवाल–रक्त–वाससाम्।
रक्त–चन्दन–ताम्राणां–अर्घ–वृद्धिर्दिने–दिने।।

नीरसेश अर्थात् धातुओं का स्वामी मंगल होने से मणिक्य, मूँगा, पुखराज, हीरे आदि रत्न, लाल-वस्त्र, गर्म वस्त्र, लाल-चन्दन, सोना, पीतल, ताम्बा, लाख, खल-बिनौले आदि तथा अन्य लाल वर्ण के पदार्थ व धातुएँ दिन प्रतिदिन महँगे होंगे।

(8) फलेश (फलों का स्वामी) 'शनि' का फल–

यदि शनिः फलपः फलहा भवेत् जनित पुष्पगणस्य दमः सदा।
हिमभयं वर तस्कर जन्तुभीः जनपदो गदराशि महाकुलः।।

फलों का स्वामी शनि हो, तो विभिन्न प्रकार के फलों की कृषि को हानि हो, पुष्पादि के वृक्षों/पौधों पर भी फूलादि कम लगें। पर्वतीय प्रदेशों में कहीं असमय हिमपात (बर्फबारी) से हानि हो। चोरी, ठगी, लूटमार, बेईमानी की घटनाएं अधिक घटित हों। पेचीदा रोगों के कारण अधिकांश लोग व्याकुल रहें। शहरों में जनसंख्या का भारी दबाव रहे।

(9) धनेश (कोश) के स्वामी 'मंगल' का फल–

धरणिजे धननायकतां गते शरदि ताम्रकरास्तुष धान्यहा।
सकल–देश–जनाश्चलितास्तदा नरपतिर्नर–शोकविधायकः।।

जिस वर्ष धनपति (कोशपति) मंगल हो, तो उस वर्ष व्यापारिक वस्तुओं के मूल्यों में विशेष उतार-चढ़ाव हों अर्थात् व्यापार में अस्थिरता रहे। माघ मास में वर्षा न होने अथवा असमय (बेमौसमी) वर्षा होने से गेहूँ आदि भूसे से प्राप्त होने वाले अनाजों का कम उत्पादन होता है। सारे देश में अस्थिरता एवं अनिश्चितता का माहौल रहता है। शासन एवं प्रशासन भी जनविरोधी नीतियां एवं नियमों का अनुपालन करता है।

(10) दुर्गेश (सेना के स्वामी) 'शनि' का फल–

रविसुते गढपालिनी विग्रहे सकलदेशगताश्चलिता जनाः।
विविधवैरि–विशेषित–नागरा कृषिधनं शलभैर्मुषितं भुवि।।

दुर्गेश अर्थात् सेनापति शनि हो, तो अनेक देशों में आन्तरिक दंगों, फिसाद एवं युद्धमय वातावरण से आतंकित लोग अपना स्थान छोड़कर अन्यत्र पलायन करने के लिए विवश होंगे। प्रान्तों में विभिन्न समुदाय के लोगों में जातीय एवं साम्प्रदायिक झगड़े-फिसाद एवं टकराव की घटनाएं अधिक होंगी तथा वातावरण अशान्त रहे। कहीं चूहों, विषाक्त कीटाणुओं, टिड्डियों, अनावृष्टि, अतिवृष्टि आदि प्राकृतिक आपदाओं से कृषि, खड़ी फसलों को भारी हानि हो। (विशेषकर भाद्रपद-आश्विन मासों में)

नवमेघों में 'पुष्कर' नामक मेघ का फल–

नैव कंदफलमूल–विवृद्धिः जायते विविध–पातक वृद्धिः।
रोगतोजन कृशत्वमनल्पं पुष्करे जलधरे जलमल्पम्।।

अर्थात् जिस वर्ष 'पुष्कर' नामक मेघ हो, तो वृक्षों पर कंद, मूल, फलों आदि का उत्पादन (पैदावार) कम होगा अर्थात् इनके मूल्यों में और वृद्धि होगी। पाप कर्मों की वृद्धि होगी, लोग विचित्र व पेचीदा रोगों से ग्रस्त रहेंगे। कहीं बाढ़ तथा कहीं अकाल जन्य स्थिति बने। वर्षा की कमी ही रहेगी।

चतुर्मेघ फल विचार–आवर्तकादि चतुर्मेघों में 'द्रोण' नामक मेघ है।

फल–'द्रोणो वर्षति सर्वदा'–द्रोण नामक मेघ होने से देश में समयानुसार समुचित एवं उपयोगी वर्षा होगी। अनेक क्षेत्रों में वर्षा पर्याप्त एवं अधिक होगी तथा कुछ क्षेत्र बाढ़ ग्रस्त भी रहेंगे।

नोट–'नवमेघ-विचार' एवं **'चतुर्मेघ विचार'** में से **चतुर्मेघों** को अधिक महत्त्व देना चाहिए।

सुबुध्नादि द्वादश नागों में 'वज्रदंष्ट्र' नामक नाग का फल–

यत्र संवत्सरे–नागो–वज्रदंष्ट्र–अभिधानकः।
तदा–अम्बुवर्षणं नैव सर्वसस्य–विनाशनम्।।

अर्थात् **'वज्रदंष्ट्र'** नामक नाग होने से संवत्काल में उपयोगी वर्षा की कमी रहती है। सभी प्रकार की फसलों के उत्पादन में कमी एवं इनकी हानि होती है। अनाज, धान्य आदि सभी फसलों के मूल्यों में तेजी होने के संकेत हैं।

सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेशफल-वि. संवत् २०७६
(वर्षा, कृषि एवं वायुमण्डल विचार)

सूर्य आर्द्रा प्रवेश कुंडली
22 जून, 2019 ई., 17घं. 18मि.

वि. संवत् २०७६ में सूर्यदेव आर्द्रा नक्षत्र में आषाढ़ कृष्ण पक्ष, पंचमी तिथि, तदनुसार 22 जून, 2019 ई., शनिवार को धनिष्ठा नक्षत्र, विष्कम्भ योग एवं कुम्भ राशिस्थ चन्द्रमा कालीन वृश्चिक लग्न में प्रवेश करेंगे। स्थिर लग्न एवं जलतत्त्व राशि (वृश्चिक) में आकाशतत्त्व कारक एवं स्थिर संज्ञक ग्रह गुरु संचार कर रहा है। वृश्चिक राशि उत्तर दिशा की सांकेतिक राशि है। लग्नेश एवं अग्नितत्त्व ग्रह मंगल अष्टम भाव में सूर्यदेव एवं राहु के साथ वायु तत्त्व एवं पश्चिम दिशा की सांकेतिक राशि मिथुन में संचरित है। जलतत्त्व कारक एवं चरसंज्ञक शुक्र का गुरु के साथ **समसप्तक योग** बना हुआ है। ग्रहस्थिति अनुसार भारत के उत्तर एवं पश्चिमी राज्यों (वृश्चिक लग्न एवं लग्नेश मं. की स्थिति के कारण) में (जैसे-पंजाब, जम्मू, राजस्थान, हरियाणा, हि.प्र., पश्चिमी, उ.प्र., उत्तराखण्डादि) वायु प्रकोप के साथ-साथ गर्म हवाएँ तथा गर्मी बढ़ने के संकेत हैं। राजा-शनि तथा मन्त्री सूर्य का परम्पर शत्रु दृष्टि सम्बन्ध भी 16 जुलाई तक रहेगा। जलीय ग्रह शुक्र पृथ्वी तत्त्व राशि में है। फलस्वरूप विपरीत जलवायु, विषम वर्षा तथा कुछ क्षेत्रों में अत्यधिक वर्षा से बाढ़ जैसे हालात तथा कुछ क्षेत्रों में अल्प वर्षा से अकाल जैसी परिस्थितियां बनेंगी। राजा शनि की अग्नि तत्त्व राशि में स्थिति के कारण भी धीमे वायु-वेग के कारण उपयोगी वर्षा की कमी रहे। शुक्र स्वराशि वृष में संचार कर रहा है, जोकि दक्षिण दिशा की स्वामी है। फलस्वरूप विपरीत परिस्थितियों के बावजूद दक्षिणी-पश्चिमी राज्यों (महाराष्ट्र, गुजरात, केरल, ता.ना., कर्नाटक आदि) में व्यापक वर्षा होगी। उत्तर-पश्चिमी राज्यों (जैसे-उ.प्र., हि.प्र., पंजाब, हरियाणा, राज., ज.का.) में भी कुछ विशेष क्षेत्रों में अच्छी वर्षा व अन्न उत्पादन यथेष्ट रहेगा तथा कुछ विशेष क्षेत्रों/खण्डों में वर्षा की कमी से अकाल की स्थिति बने। खण्ड वर्षा के योग हैं।

आर्द्रा प्रवेश **पंचमी तिथि कालीन** तथा **शनिवार** वाले दिन होने से आगामी वर्ष सब प्राणियों को उत्तम परिस्थितियां प्राप्त होंगी। परन्तु लोग क्लिष्ट रोगों के कारण कमज़ोर हो जाएंगे। **धनिष्ठा नक्षत्र** में होने के कारण फलों, धान्यादि का उत्पादन यथेष्ट होगा। **विष्कम्भ योग** में आर्द्रा प्रवेश होने से अनाज, गेहूँ, चने आदि सभी प्रकार की खाद्य-फसलों का यथेष्ट उत्पादन होगा-**प्रथमजयोगे त्रिनयनधिष्ण्ये। यदिरविवेशोबहुवसुसस्यम्।।**

आर्द्रा प्रवेश सायंकालीन होने से आगे सुभिक्ष अर्थात् कुछ क्षेत्रों में पर्याप्त वर्षा के योग बनेंगे। कृषि उत्पादन में भी लाभदायक वृद्धि होने के योग हैं।-संध्यास्थितार्द्रांकृते सुभिक्षं।।

वि. संवत् २०७६ में शनि की दृष्टि का फल

वि. संवत् २०७६ में ता. 23 जनवरी, 2020 ई. तक शनि धनु राशि में संचार करेगा। फलस्वरूप संवतारम्भ (6 अप्रैल) से इस अवधि तक शनि की दृष्टि पश्चिम दिशा अर्थात् पश्चिम गोलार्द्ध की तरफ रहेगी। धनु राशिस्थ संचारकालीन शनि की कुम्भ, मिथुन तथा कन्या राशियों पर दृष्टि तथा वृश्चिक, धनु व मकर राशि वाले राष्ट्रों पर शनि-साढ़ेसति का प्रभाव रहेगा। शनि को संवत् का राजा का पद भी प्राप्त है। फलस्वरूप पश्चिमी प्रान्तों तथा पश्चिमी यवन, मुस्लिम देशों में कहीं राजनैतिक अस्थिरता, छत्रभंग, प्राकृतिक प्रकोप जैसे-दुर्भिक्ष, भूकम्प, अकाल या बाढ़ आदि की प्रबल सम्भावनाएं हैं। कुछ मुस्लिम राष्ट्रों जैसे-अफगानिस्तान, पाकिस्तान, तुर्की, ईराक में सत्तारूढ़ शासनतन्त्र के विरुद्ध सत्ता-परिवर्तन के लिए जनांदोलन, जातीय हिंसा तथा आतंकी विस्फोट, आगज़नी आदि उग्र घटनाएं घटित होने से जन-धन की भारी हानि होगी। कुम्भ, मिथुन तथा कन्या राशि से प्रभावित राष्ट्रों/प्रान्तों में भी (जैसे-महाराष्ट्र, राजस्थान, भोपाल, ईराक, पाकिस्तान, सीरिया) हत्याकाण्ड, भयंकर रोगों, प्राकृतिक आपदाओं से अचानक व्यापक जन-धन हानि के संकेत हैं। शास्त्रों में भी धनु राशिस्थ शनि का फल अशुभ लिखा है-

धनूराशौस्थितः सौरिर्गर्जत्यपि न वर्षति।
तोयहीना धरा तत्र दुर्भिक्षं च विनिर्दिशेत्।।

गुर्राफल विचार (सन् 2019-20 ई.)

इस्लामी नववर्ष कुण्डली (1)
हिजरी सन् 1440

11 सितम्बर, 2018 ई.
सूर्यास्त 18घं.-35मि. (भा.स्टैं.)

ईस्लामी मतानुसार एक (यकम्) मुहर्रम से ही नया हिजरी सन् शुरु होता है। वि. संवत् 2075 में 12 सितं., 2018 ई. को 1 मुहर्रम (यकम्) के दिन हिजरी सन् 1440 शुरु हो जाएगा। बुधवार को हिजरी सन् का प्रारम्भ होने से ईस्लामी वर्ष 1440 (2018-19 ई.) का राजा (बादशाह **'बुध'** ही होगा।

इस्लामी नववर्ष का उदय **'कालसर्प योग'** के प्रभाव में कुम्भ लग्न में उदय हुआ है। लग्नेश शनि लाभ स्थान में स्थित होकर लग्न-भाव (नेतृत्व आदि), योजना-भाव (पंचम) तथा पाकिस्तान आदि मुख्य मुस्लिम देशों की प्रभावराशि कन्या व चन्द्रमा को विशेष दृष्टि से देख रहा है। ग्रहस्थिति अनुसार पाकिस्तान, साऊदी अरब, मिस्र, बांग्ला-देश, ईराक आदि मुस्लिम देशों के कट्टरवादी ग्रुप इस्लाम के नाम पर नया ध्रुवीकरण बनाने
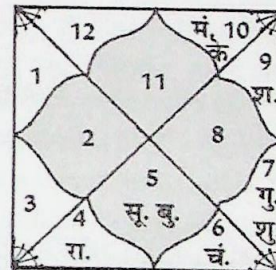
के मध्य हुनरमन्द व व्यापारिक क्षेत्रों में व्यापारियों के लिए मुनाफे के आसार बनेंगे। चीन

के मध्य हुनरमन्द व व्यापारिक क्षेत्रों में व्यापारियों के लिए मुनाफे के आसार बनेंगे। चीन, साऊदी-अरब आदि साधन-सम्पन्न राष्ट्रों द्वारा आर्थिक व सैनिक सहायता के बावजूद आई.एस.आई.एस. तथा तालिबान ग्रुप अपनी जड़ें धीरे-धीरे मज़बूत बनाते जाएंगे। इन विरोधी गुटों द्वारा अफगानिस्तान, ईराक, पाकिस्तान में सत्तारूढ़ सरकारों के विरुद्ध ज़बरदस्त विस्फोटक घटनाएं अंजाम दी जा सकती है। टर्की, मिस्र, सूडान, ईरान आदि मुस्लिम राष्ट्रों के आन्तरिक एवं राजनीतिक हालात अत्यन्त असमंजसपूर्ण, अस्थिर तथा पेचीदापूर्ण रहेंगे। अमरीका, यूनाइटिड नैशन्स द्वारा प्रस्ताव पारित करवा इन देशों में भी फौजी कार्रवाई कर सकता है। हालात भयंकर युद्धमय वातावरण का संकेत देंगे।

गतवर्ष पृष्ठ 66 कालम-I में ही मुस्लिम राष्ट्रों की कुण्डली (1) के विवेचन में पाकिस्तान (मुस्लि.) से सम्बन्धित भविष्यवाणी अक्षरशः सत्य हुई-पढ़ें- ''*किसी प्रमुख मुस्लिम राष्ट्र (पाकिस्तान, सीरिया, दक्षिण सूडान) में सत्तारूढ़ पार्टी/नेता के अपदस्थ हो जाने से राजनैतिक हालात अस्थिर एवं असमंजसपूर्ण रहें।*''-जैसा कि *पाकिस्तान में चुनाव पूर्व नवाज़-शरीफ़ की सरकार के साथ हुआ।*

ईस्लामी नववर्ष कुण्डली (2)
हिजरी सन् 1441 (2019-20)

31 अगस्त, 2019 ई.
सूर्यास्त 18घं.-49मिं. (भा.स्टै.टा.)

वि. संवत् 2076 में 1 सितम्बर, 2019 ई. को 1 मुहर्रम (यकम) के दिन हिजरी सन् 1441 शुरु होगा। रविवार को हिजरी सन् का प्रारम्भ होने से इस्लामी वर्ष 1441 (2019-20 ई.) का **बादशाह सूरज (सूर्य)** होगा।

इस वर्ष भी इस्लामी नववर्ष का उदय कालसर्प योग के प्रभाव में कुम्भ लग्न में ही उदय हुआ है। लग्नेश शनि लाभ स्थान में केतु युक्त संचार करके लग्न, योजना भाव (पंचम) तथा पाकिस्तान, ईराक, टर्की आदि मुस्लिम राष्ट्रों की प्रभाव राशि कन्या पर दृष्टिपात कर रहा है। अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों, विदेशी व्यापार व सम्बन्ध, महिला विकास योजनाओं के भाव में **'पंचग्रही योग'** (सू. चं. मं. बु. शु.) बना हुआ है। फलस्वरूप ईराक, टर्की, सीरिया, पाकिस्तान, इज़रायल-गाजा (फिलीस्तीन) में पुनः युद्धमय वातावरण बनेगा। विभिन्न मुस्लिम देशों में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विशेष सैनिक एवं व्यापारिक समझौते होंगे। प्रजातांत्रिक गतिविधियों के बावजूद इमरान खान की पक्षपातपूर्ण नीतियों के विरुद्ध कुछ विरोधी गुट/पार्टियां उग्र प्रदर्शन, हिंसक एवं विस्फोटक कार्यवाहियां करेंगे। पाक, टर्की आदि मुस्लिम राष्ट्रों में वर्तमान सत्तारूढ़ सरकारों में जबरदस्त सामाजिक तथा आर्थिक चुनौतियों का सामना रहेगा। अनावश्यक बियानबाजी से कुछ मुस्लिम देशों का अमरीका एवं यूरोपीय देशों के साथ वैमनस्य बढ़ेगा तथा युद्धोन्मुख परिस्थितियां बनेंगी।

—वर्षादि के विश्वामान—

वर्षादि विश्वा का कुल मान 20 विश्वे होते हैं। जिस पदार्थ (विषय) के विश्वा 1 से 20 अंकों के मध्य जितने अधिक (20 अथवा उसके समीपस्थ) होंगे, उस वस्तु के उत्पादन की मात्रा उतनी अधिक होगी। जैसे-आगे वि. संवत् २०७६ में धान्य के विश्वा 7 लिखे हैं, इसका तात्पर्य यह हुआ कि आगामी वर्ष धान्य का उत्पादन औसत से कम होगा।

वर्षा १७, धान्य ७, तृण १३, शीत ७, तेज १७, वायु १३, वृद्धि १५, क्षय १५, विग्रह ११, क्षुधा ५, तृषा १३, निद्रा १३, आलस्य ७, उद्यम १३, शान्ति १५, क्रोध १३, दम्भ ५, लोभ ३, मैथुन १५, रस ९, फल १३, फलनिष्पत्ति ११, उत्साह ३, उग्रता ७, पाप ७, पुण्य १३, व्याधि १३, व्याधिनाश ११, आचार ११, अनाचार १७, मृत्यु १५, जन्म ७, देशोपद्रव १३, देशस्वास्थ्य १, चोरभय ७, चोरनाश १७, अग्नि १५, अग्निशान्त १, उद्भिज ९, जरायुज ३, अंडज ११, स्वेदज ५, टिड्डी १५, तोता १५, मूषक ९, सोना ९, ताम्र ११, स्वचक्र १३, परचक्र १९, वृष्टि ७, वृष्टिनाश १५ तथा संवत् विश्वा १३ हैं।

जल आदि चार स्तम्भ-वि. संवत् २०७६

(1) जल स्तम्भ-चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र का सम्पर्क 67.9 प्रतिशत है। फलस्वरूप आगामी वर्ष कुछ राज्यों में मध्यम से कुछ अधिक स्तर पर वर्षा होगी। बंगाल, बिहार, महाराष्ट्र, उ.प्र., उत्तराखण्ड, हि.प्र., जम्मू-का., पंजाब, हरियाणा में समुचित वर्षा होगी। परन्तु इन्हीं राज्यों के कुछ विशेष खण्डों/क्षेत्रों में प्रतिकूल एवं खण्ड वर्षा होगी। अनियमित वर्षा के कारण व्यापक जन-धन हानि अर्थात् कहीं बाढ़ तो कहीं वर्षा की कमी से दुर्भिक्ष की परिस्थितियां बनेंगी। ग्रीष्म-ऋतु में जल-बोर्ड आदि सरकारी विभागों में समन्वय का अभाव रहने से पेयजल का संकट रहे। चावल, गन्ना, रूई का उत्पादन अच्छा रहेगा। भूमिगत जलस्तर में प्रारम्भ में कुछ उत्साहवर्धक परिणाम आने के बावजूद पुनः कुछ गिरावट आ जाएगी। कृषि सिंचाई हेतु नदियों में पर्याप्त जल भण्डार की कुछ कमी का अनुभव होगा।

(2) तृण स्तम्भ-वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को भरणी नक्षत्र का सम्पर्क 53 प्रतिशत है। फलस्वरूप घास, तृण, बांस, जड़ी-बूटियों, पौधों, पशुचारा तथा वनस्पतियों की फसल गतवर्ष की अपेक्षा अच्छी होगी। पशुचारा, घास तथा धान्यादि की फसल भी जल-स्तम्भ की सहायता से मध्यम-स्तरीय होगी। आयुर्वेदिक दवाईयों के दाम विशेष नहीं बढ़ेंगे। सरकार की नीति एवं घोषणाएँ भी तृण स्तम्भ के प्रतिनिधि कृषकवर्ग के लिए सुविधाजनक और लाभप्रद रहेंगी। दूध, पनीर, मक्खनादि पदार्थ महंगे होंगे।

(3) वायु स्तम्भ-ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मृगशिर नक्षत्र का सम्पर्क 61.9 प्रतिशत है। वायुस्तम्भ मध्यबली होने से कुछ प्रदेशों में अनुकूल वायु-वेग एवं अनुकूल मेघ संचार से वर्षा का क्रम अच्छा रहेगा। ग्रीष्म ऋतु (वैशाख-ज्येष्ठ मास) में स्वाभाविक रूप से होने वाली लू और तेज़ गर्म हवाएं चलेंगी अर्थात् ऋतु-अनुसार वायु वेग रहे। परन्तु वायु वेग की दृढ़ता से तटीय प्रदेशों में विशेष रूप से तथा उत्तरी भारत में भी भीषण वायु-वेग, चक्रवात एवं तेज़ आँधियों से खड़ी फसलों, धन-सम्पदा को हानि पहुँचेगी। परन्तु वायु स्तम्भ मध्यबली होने से कुछ क्षेत्रों में मेघों के संचालन की व्यवस्था ठीक न होने से गर्मी, आर्द्रता

बढ़ने से खड़ी फसलों को हानि भी पहुँचेगी। कम वर्षा के कारण कुछ क्षेत्र सूखाग्रस्त भी रहेंगे।

(4) अन्न स्तम्भ—आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा को पुनर्वसु नक्षत्र का सम्पर्क 72.65 प्रतिशत है। जल एवं तृण स्तम्भ भी मध्यम बली रहने से गेहूँ, चना, मक्की, ईख, धान्यादि का उत्पादन गुज़ारेलायक हो जाएगा। कुछ फसलों की पैदावार में बढ़ौत्तरी तथा कुछ की पैदावार में अचानक कमी भी आ जाएगी। मानसून अनियमित रहने के बावजूद खाद्यान्न का उत्पादन व उपलब्धता समुचित रहेगी। यद्यपि शासन-तन्त्र को अन्न-भण्डारण व अनाज-वितरण सम्बन्धी समस्याओं का सामना करना पड़ेगा।

ऊपर वर्णित चारों स्तम्भ वर्ष (संवत्) में किसी भी देश की आर्थिक सम्पन्नता को समझने एवं जानने (आकलन) के लिए विशेष महत्त्व रखते हैं, क्योंकि देश की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से वर्षा, मानसून तथा अन्न-उत्पादन पर निर्भर करती है। आगामी वर्ष (वि. संवत् २०७६) में चारों स्तम्भ मध्यम-बली से कुछ अधिक ही होने के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था प्रगति-पथ पर रहेगी। शासनतन्त्र द्वारा अनेक सुधारात्मक पग एवं भविष्य निर्माण की घोषणाएं की जाएंगी।

●आर्षमान द्वारा रक्षा फल-विचार (वि. सं. २०७६)●

निम्नलिखिथ ये चार आर्षमान वर्ष में जनता व देश की सुरक्षा, कानून-व्यवस्था, सामाजिक शान्ति एवं सौहार्द, नैतिक मूल्यों, समृद्धि एवं सौभाग्य का निर्धारण करते हैं। आर्षमान भी स्तम्भों की भान्ति विशेष तिथियों एवं नक्षत्रों के संयोग से निर्धारित किए जाते हैं। इनकी निर्बलता देश में उपद्रव, दुर्घटनाओं, आपदाओं, विस्फोट, अशान्ति व लोगों के चारित्रिक पतन को निमन्त्रित करती हैं। आर्ष शब्द का अर्थ है ऋषियों से सम्बन्धित, ऋषियों का। आर्षमान का मूलतः अर्थ हुआ—नापतोल का ऋषि प्रोक्त पैमाना। तिथि व नक्षत्र का संयोग जितना अधिक होगा, आर्षमान उतना ही अधिक बलवान समझा जाएगा।

(1) प्रथम आर्ष—गतवर्ष की पौष-अमावस्या को मूल नक्षत्र के स्पर्श से माना जाता है। मूल नक्षत्र का सम्पर्क 39.1% है।

(2) द्वितीय आर्ष—वैशाख शुक्ल तृतीया को रोहिणी नक्षत्र का सम्पर्क 57.3% है।

(3) तृतीय आर्ष—श्रावण पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र का सम्पर्क 62.1% है।

(4) चतुर्थ आर्ष—कार्तिक पूर्णिमा को कृतिका नक्षत्र का अभाव है।

फल—इस वर्ष रक्षा के संकेतक प्रथम तीन आर्ष (दुर्ग) बली, परन्तु चतुर्थ दुर्ग का अभाव है। फलस्वरूप अन्तर्राष्ट्रीय रक्षा-सन्धियों, परमाणु ऊर्जा एवं सुरक्षा-तन्त्र के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रयास किए जाएंगे। सीमा सुरक्षा तथा घुसपैठ रोकने के लिए विशेष सुरक्षा उपाए किए जाएंगे। अन्तर्राष्ट्रीय एवं आर्थिक, रक्षाक्षेत्र में भारत की स्थिति सुदृढ़ होगी। परन्तु एक दुर्ग नगण्य होने से सीमावर्ती प्रान्तों में सीमाओं पर घुसपैठ, सीज़फायर उल्लंघन, विस्फोटक घटनाओं का क्रम निरन्तर चलता रहेगा। उपद्रव, आतंकी घटनाओं के कारण [illegible]

को बेमौसमी वर्षा, ओलों के कारण हानि होगी। इस सम्बन्ध में भड्डरी की कहावत भी प्रचलित है—

> **अखै तीज रोहिणी न होई। पौष अमावस मूल न जोई।।**
> **राखी श्रवणो हीन विचारो। कार्तिक पूनो कृत्तिका टारो।।**
> **महि माहीं खल बलहिं प्रकासै। कहत भड्डरी सालि विनाशै।।**

अर्थात् वैशाख अक्षय-तृतीया को यदि रोहिणी न हो, पौष की अमावस्या को मूल न हो, रक्षाबन्धन के दिन श्रवण और कार्तिक पूर्णिमा को कृतिका न हो, तो पृथ्वी पर दुष्टों का बल बढ़ेगा और उस वर्ष धान की उपज न होगी।

❊ वृश्चिक एवं धनु राशिस्थ गुरु का प्रवेशफल-सं. २०७६ ❊

संवतारम्भ में गुरु धनु राशि में संचरित है, जो 10 अप्रैल, 2019 ई. को वक्री होकर 22 अप्रैल से 4 नवम्बर, 2019 ई. तक वृश्चिक राशि में संचार करेगा। तदुपरान्त 5 नवम्बर को पुनः धनु राशि में आकर संवतान्त तक इसी राशि में संचार करेगा। शास्त्रों में वृश्चिक व धनु राशि के गुरु का फल इस प्रकार वर्णित है—

वृश्चिक राशि में गुरु संचार-फल (22 अप्रैल से 4 नवम्बर, 2019 ई.)

> **गृहे परस्परं वैरमष्टौ मासानसंशयः।**
> **भाद्राश्विन-कार्तिक-आख्यास्त्रयोमासामहर्घता।।**

अर्थात् जब गुरु वृश्चिक राशि में आए तो वह कार्तिक वर्ष होता है। उसमें '**सोम**' नामक मेघ वर्षता है। खण्ड वर्षा अर्थात् कहीं अधिक एवं कहीं कम या रुक-रुक प्रतिकूल होती है। कृषि-उत्पादन में भी कमी आएगी तथा लोगों में भय का वातावरण रहता है। जनता के मध्य घरेलू लड़ाई-झगड़े व तनाव अधिक बढ़ेंगे। भाद्रपद से आश्विन मास तक महँगाई अधिक होगी। सोना, चाँदी, ताँबा, काँसा, तिल, घी, श्रीफल, गुड़, हल्दी, कपास, लवण तथा सफेद वस्त्र—ये सब महँगे हो जाएंगे। कहीं राज्य या देश की सीमाओं में परिवर्तन, छत्रभंग, अल्प वृष्टि (वर्षा) तथा स्त्रियों के प्रति अपराधों में वृद्धि होगी। यवन व मुस्लिम देशों तथा महाराष्ट्र राज्य में प्रजा विभिन्न कष्टों, क्लेशों से आकुल रहती है।

धनु राशि में गुरु संचार-फल

(संवतारम्भ से 22 अप्रैल तक तथा 5 नवम्बर, 2019 ई. से संवतान्त तक)

> **पूर्वकाले भवेत्-धान्यं-गोधूप-शालिर्शकराः।**
> **कार्पासश्च प्रवालानिकांस्य लोहं घृतंत्रपु।।**

अर्थात् गुरु धनु राशि में आए तो मार्गशीर्ष संवत्सर होता है और उसमें '**हेममाली**' नामक मेघ वर्षता है। स्त्रियों पर हिंसा की घटनाओं में वृद्धि होती है। पहिले से बोई हुई फसलें जैसे—धान्य, गेहूँ, चावल, शक्कर की पैदावार अधिक होगी। परन्तु कपास, रूई, काँसा, लोहा, घी, सीसा, सोना-चाँदी—ये सब वस्तुएं महंगी होंगी। जबकि तिल, गुड़, सुपारी, सफेद वस्त्रों में मन्दी का रुख रहेगा। मार्गशीर्ष से ज्येष्ठ मास तक घी महँगा होगा [illegible]

ग्रहों के आधार पर आगामी वर्ष की प्रमुख भविष्यवाणियां—वि. सं. २०७६

✿ नया 'परिधावी' नामक संवत्सर होने से विभिन्न देशों के मध्य युद्धजन्य परिस्थितियाँ बनें। राष्ट्राध्यक्षों के मध्य परस्पर वाद-विवाद मध्ये उग्र बयानों द्वारा 'मनोवैज्ञानिक युद्ध' खेला जाएगा। कम वर्षा होने से अनाज, धान्यादि के मूल्यों में विशेष वृद्धि होगी।

✿ *राजा शनि* तथा *मन्त्री सूर्य* होगा अर्थात् गतवर्ष की भान्ति इस वर्ष भी आकाशी कौंसिल के मुख्य पद दो परस्पर शत्रु ग्रहों के पास होने से विश्व के अनेक विकसित एवं विकासशील देशों के मध्य विरोध एवं युद्ध उत्प्रेरित माहौल रहेगा। राजनेताओं में परस्पर वैमनस्य, विरोध व टकराव की स्थिति चरम सीमा पर रहे। चोरी, ठगी, डकैती तथा लूटमार आदि की घटनाएं अधिक होंगी।

✿ वर्ष का मन्त्री *'सूर्य'* होने से भारत के राजनैतिक पटल पर विशेष उतार-चढ़ाव होंगे। विभिन्न राजनेताओं और राजनीतिक पार्टियों में परस्पर टकराव, विरोध तथा कहीं नए गठबन्धन बनेंगे। कठोर सरकारी गतिविधियों एवं नीतियों, चोरों-लुटेरों के कारण प्रजा में भय, असन्तोष व विक्षोभ की भावनाएं रहेंगी।

✿ ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन से ठण्डे यूरोपीय देश भी विशेष प्रभावित होंगे।

✿ समाज में क्रोध एवं आवेश के कारण हिंसक, साम्प्रदायिक घटनाएं अधिक होंगी। आकाशी कौंसिल के आठ पद क्रूर ग्रहों को प्राप्त होने से सरकारी तन्त्र में अस्थिरता के कारण लोगों में असन्तोष एवं संशय के भाव रहेंगे।

✿ जगत् लग्न कुं. में ग्रहयोगानुसार ईरान, यमन, पाकिस्तान, कतर, सीरिया, अफगानिस्तान आदि मुस्लिम बाहुल्य देश विश्व राजनीति का ध्रुवीकरण बने रहेंगे। रूस, चीन व यूरोपियन यूनियन द्वारा अमरीका के विरुद्ध आर्थिक प्रतिबन्धों के कारण अमरीका को नए समीकरण बनाने के लिए बाध्य होना पड़ेगा।

✿ *भारत में भावी लोकसभा चुनावों में किसी एक पार्टी को स्पष्ट बहुमत प्राप्त नहीं होगा।* राजनैतिक अस्थिरता एवं गतिरोध का माहौल रहेगा। यूपीए और एन.डी.ए. दोनों द्वारा नए गठजोड़ एवं समीकरण बनाए जाएंगे। केन्द्र में अप्रत्याशित रूप से नया मन्त्रीमण्डल वजूद में आएगा।

✿ महँगाई, नए-नए कर प्रावधानों, कानून व अर्थव्यवस्था की गिरती एवं शोचनीय स्थितियों के कारण भाजपा प्रणीत एनडीए सरकार की प्रतिष्ठा को गहरा आघात पहुँचेगा। परन्तु श्रीनरेन्द्र मोदी जी की साख मज़बूत रहेगी।

✿ येन-केन प्रकारेण विभिन्न क्षेत्रीय दलों की सहायता व सहयोग से पुनः भाजपा प्रणीत एनडीए के ही केन्द्रीय सत्ता में आने के योग बनेंगे।

✿ इस वर्ष (2018 ई. में) नवम्बर-दिसम्बर में होने वाले विधानसभा चुनावों में कुछ राज्यों में कांग्रेस तथा कुछ में भाजपा का प्रभावक्षेत्र बढ़ेगा। राजस्थान, ३६गढ़ में कांग्रेस का परन्तु म.प्र. में दोनों मुख्य पार्टियों के मध्य कांटे की टक्कर रहे। अप्रत्याशित परिणाम दृष्टिगोचर होंगे।

✿ विधानसभा चुनावों में कांग्रेस को आपेक्षित सफलता न मिलने से लोकसभा चुनावों में राजनीतिक चुनावी पटल पर श्रीमती प्रियंका गाँधी भी प्रवेश कर सकती है।

✿ आगामी लोकसभा चुनावों में कुछ नेताओं के विभाजनकारी एवं राष्ट्र-विरोधी बयानों से राजनैतिक एवं सामाजिक वातावरण पूरी तरह विषाक्त हो जाएगा। परन्तु अपने राजनैतिक चातुर्य के बल पर कोई भी केन्द्रीय सत्ता के द्वार तक पहुँच सकता है।

✿ लोकसभा चुनावों पश्चात् आषाढ़ (18 जून से 16 जुला. तक) मास में पाँच मंगलवार, मंगलवारी संक्रान्ति, सूर्य-शनि मध्य समसप्तक आदि ग्रहयोग से कुछ राज्यों में छत्रभंग (सत्ता-परिवर्तन), हिंसक घटनाएं, अग्निकाण्ड, पड़ोसी देशों के साथ युद्धमयी स्थिति आदि होंगी। नई केन्द्रीय सरकार के लिए भी अग्नि परीक्षा का समय होगा।

शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष-ये वेद के छः अंग माने जाते हैं। भारतीय ज्योतिष को वैदिक साहित्य का अभिन्न अंग माना गया है। वेदांग ज्योतिष के प्रारम्भ में इस शास्त्र के महत्त्व को बतलाते हुए कहा गया है-

यथा शिखा मयूराणां नागानां मणयो यथा।
तद्वद्वेदाङ्गशास्त्राणां ज्योतिषं मूर्धनि स्थितम्।।

ज्योतिष को ज्ञानरूपी शरीर का नेत्र कहा गया है, अर्थात् नेत्रों के अभाव में जैसे शरीर अपूर्ण और व्यर्थ है, उसी प्रकार ज्योतिष ज्ञान के बिना अन्य विषयों का ज्ञान अपूर्ण और अनुपयोगी है। वैदिक काल में ज्योतिष शास्त्र के ज्ञान को व्यवहार-उपयोगी होने के साथ-साथ आत्मकल्याणकारी भी माना जाता रहा है। महर्षि पाणिनी ने ज्योतिष को वेदपुरुष का नेत्र कहा है-'**ज्योतिषामयनं चक्षुः**'। आचार्य गर्गाचार्य के अनुसार-

ज्योतिश्चक्रे तु लोकस्य सर्वस्योक्तं शुभाशुभम्।
ज्योतिर्ज्ञानं तु वेद स याति परमां गतिम्।।

अर्थात् ज्योतिष्चक्र सम्पूर्ण लोक के शुभाशुभ को व्यक्त करने वाला है, अतः जो ज्योतिष शास्त्र का ज्ञाता है, वह परम कल्याण को प्राप्त होता है। नारद् संहिता, गर्ग संहिता आदि ग्रन्थों में ज्योतिष शास्त्र का विशद् वर्णन मिलता है।

ईसा पूर्व लगभग 180 वर्ष पूर्व में रचित व उपलब्ध सूर्य-सिद्धान्त ग्रन्थ सैद्धान्तिक ग्रन्थों में अधिक प्राचीन है, जिसमें ग्रहस्पष्ट विधि, विभिन्न ग्रहों की गति, कालगणना आदि का स्पष्ट वर्णन मिलता है। प्राचीन भारत में धर्मपरायण समाज के सभी वर्गों-श्रौत, स्मार्त और गृहस्थों के कार्य इस शास्त्र के बिना सफल नहीं माने जाते थे-

'वेदस्य निर्मलं चक्षु ज्योतिः शस्त्रमकल्पषम्।
विनैतदखिलं श्रौतं स्मार्तं कर्माणि न सिद्धयन्ति।।

भारतीय ज्योतिष का मुख्य प्रयोजन आत्म-कल्याण के साथ लोक-व्यवहार को सम्पन्न करना है। लोक-व्यवहार के निर्वाह के लिए ज्योतिष के क्रियात्मक दो सिद्धान्त हैं-गणित और फलित। फलित ज्योतिष में जातक की जन्म-कुण्डली मनुष्य के पूर्वजन्मों के संचित एवं प्रारब्ध कर्मों की प्रतिमूर्त्ति है। अनेक जन्मों के पाप-पुण्य, शुभाशुभ कर्मों का फल कब प्रकट होगा ? और भविष्य में जातक को कैसी परिस्थितियों की सम्भावना है ? ऐसे महत्त्वपूर्ण प्रश्नों का उत्तर ज्योतिष शास्त्र अन्धेरे में दीप की भान्ति देता है-

'यदुपचितमन्यजन्मनि शुभाशुभं तस्य कर्मणः पक्तिम्।
व्यंजति शास्त्रमेतत् तमसि द्रव्याणि दीप इव।।

प्रकृति के त्रिगुणात्मक गुणों की भान्ति ग्रहों में भी सत्त्व, रज एवं तमादि गुणों की न्यूनाधिकता होती है। गुरु, चन्द्रादि सत्त्वगुणी ग्रहों के प्रभाव से जातक के हृदय में करुणा, दया, परोपकारिता, उदारता, सत्यनिष्ठता आदि धार्मिक रूचियों की बहुलता होती है, जबकि शनि, मंगल, राहु, केतु आदि क्रूर ग्रहों के प्रभाव से प्राणी में तामसिक प्रवृत्तियों अनुसार भी ग्रह अपना शुभाशुभ फल प्रदान करते हैं। जो व्यक्ति मन, वचन व कर्म से किसी की हिंसा नहीं करता है, धर्म-मर्यादानुसार धन का अर्जन करता है। दानपूर्वक शास्त्र नियमों का पालन करता है-ऐसे व्यक्ति पर ग्रह कुछ अनिष्ट नहीं करते। अर्थात् अपना अनुग्रह बनाए रखते हैं-

'अहिंसकस्य दान्तस्य धर्मार्जित धनस्य च। सदा नियमस्थस्य, सदा सानुग्रहाः।।'

सभी ग्रह मनुष्य को अपने शुभ-अशुभ कर्मों के अनुसार अच्छा या बुरा फल प्रदान करते हैं। इस प्रकार ज्योतिष ग्रह-नक्षत्रों सम्बन्धी कुछ विशेष शास्त्रीय सिद्धान्त देता है जिनके द्वारा हम अपने पूर्व एवं इस लोक के कर्मों के प्रतिफल को जानकर अपने जीवन को उच्चतर स्थिति की ओर ले जा सकते हैं।

ईश्वर की अपार कृपा से उत्तरी भारत के सर्वाधिक प्रतिष्ठित एवं सर्वप्राचीन प्रकाशन '**पंचांगदिवाकर**', '**मुफीद आलम जन्त्री**' (**उर्दू-हिन्दी-पंजाबी**) एवं '**तिथ-पत्रिका**' (**पंजाबी**) को प्रकाशित होते हुए प्रस्तुत संवत् २०७६ (2019-20 ई.) में गौरवशाली 144 वर्ष हो जाएंगे। इस पंचांग समूह के प्रवर्त्तक एवं संस्थापक हमारे परम पूज्य वृद्धप्रपितामह (पितृ-पुरुष) विश्वविख्यात मशहूर आलम पण्डित देवीदयालु जी (लाहौर वाले) से लेकर आज तक की दीर्घावधि में हमारे प्रकाशनों को जो राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की ख्याति एवं प्रशंसा प्राप्त हो चुकी है, वह सुविज्ञ पाठकगणों से छिपी हुई नहीं है। उत्तरी भारत में शताब्दि से अधिक वर्षों पर्यन्त ज्योतिष जगत् के क्षेत्र में हमारी पंचांग, जन्त्री एवं अन्य प्रकाशनों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। सुविज्ञ पाठकों से अनुरोध है कि वह असली व प्रामाणिक पंचांगदिवाकर, तिथ पत्रिका-गुरुमुखी, मुफीद आलम जन्त्री तथा हमारे पूज्य-पिता स्वर्गीय पं. पन्ना लाल ज्योतिषी जी का नाम व फोटो, गणितकर्त्ता पं. विवेक शर्मा एवं पं. पंकज शर्मा तथा मुख्य वितरक '**जनरल बुक डिपो**' जालन्धर का नाम अवश्य पढ़ लिया करें, जिससे कि आप असली, शुद्ध एवं प्रामाणिक जन्त्री/पंचांग ही प्राप्त कर सकें।

गतवर्षीय दिवाकर पंचांगों की भविष्यवाणियाँ जो अक्षरशः सत्य सिद्ध हुईं

आगे हम संक्षिप्त रूप से हमारे पूर्वजों पं. देवीदयालु जी, पं. मोहन लाल जी, पं. चून्नी लाल जी, पिता जी पं. पन्ना लाल जी तथा वर्तमान गणिकर्त्ता पं. विवेक शर्मा की उन भविष्यवाणियों का उल्लेख कर रहे हैं, जो ईश्वर कृपावश अक्षरशः सत्य सिद्ध हुईं। इन सटीक एवं सफल भविष्यवाणियों के कारण ही '**पंचांगदिवाकर**' को विद्वत समाज में अग्रणी एवं शीर्षस्थ स्थान प्राप्त है।

[भारत-पाक का ब्रिटिश शासन से स्वतन्त्र होना सं. २००४ (1947-48 ई.), भारत-चीन युद्ध (सं. २०१९), भारत-पाक युद्ध (सं. २०२२), बांग्लादेश का उदय होना-सं. २०२७, कांग्रेस

२०३९, पूर्व प्रधानमन्त्री इन्दिरा गाँधी की आकस्मिक मृत्यु-सं. २०४१, पूर्व प्रधानमन्त्री राजीव गाँधी की आकस्मिक मृत्यु (संवत् २०४७), मोर्चा सरकार का पतन तथा भाजपा का सशक्त पार्टी के रूप में सत्तारूढ़ होना-वि. संवत् २०५५, भाजपा सरकार का आकस्मिक गिरना तथा ***कारगिल (जम्मू-कश्मीर) में घुसपैठ एवं युद्ध की स्पष्ट भविष्यवाणी-वि. संवत् २०५६, सं. २०५७ के पंचांग में भाजपा का केन्द्र में गिरकर पुनः सत्ता ग्रहण की भविष्यवाणी स्पष्टतः की गई थी।]***

पुनः वि. संवत् २०५८ के पंचांग में अमरीका 9/11 सम्बन्धित त्रासदी के बारे में, वि. संवत् २०५९ में पंजाब में कांग्रेस पार्टी की विजय सम्बन्धी भविष्यवाणी, वि. सं. २०६० में 'अमरीका-ईराक' युद्ध, वि. सं. २०६१ में लोकसभा, चुनावों में कांग्रेस की विजय तथा भाजपा (वाजपेयी) सरकार का पतन, वि. संवत् २०६३ में पंजाब, बिहार में नेतृत्व-परिवर्तन के योग (बादल तथा नितीश कुमार का सत्तासीन होना) तथा मुम्बई में 11 जुलाई, 2006 ई. को बम-विस्फोट सम्बन्धित भविष्यवाणी, वि. संवत् २०६४ (2007-08 ई.) में उ.प्र., उत्तराखण्ड में नेतृत्व परिवर्तन के योग, वि. संवत् २०६५ में गुजरात में भाजपा एवं मोदी सरकार के विजयी सम्बन्धी भविष्यवाणी, वि. संवत् २०६६ में अमरीकी राष्ट्रपति बराक ओबामा को सफलता प्राप्ति एवं जम्मू-कश्मीर में नैशनल-कांफ्रेंस गठबन्धन का विजयी होना तथा राजस्थान में भाजपा की हार, वि. संवत् २०६७ में कांग्रेस का पुनः जीत प्राप्त करना, वि. संवत् २०६८ में विश्व में आर्थिक मन्दी, लीबिया, सूडान, मिस्र, सीरिया आदि देशों में आन्तरिक क्रान्ति तथा सत्ता-परिवर्तन, वि. संवत् २०६९ में इस्लामी देशों में आन्तरिक गृह-युद्ध, पंजाब में अकाली भाजपा गठबंधन का पुनर्विजयी होना, ***वि. संवत् २०७० (2013-14 ई.) में ही 'श्रीनरेन्द्र-मोदी' के प्रधानमन्त्री बनने सम्बन्धी भविष्यवाणी तथा पाँच राज्यों के विधानसभा चुनावों में भाजपा की सफलता प्राप्ति की भविष्यवाणी एवं उत्तराखण्ड में महावृष्टि सम्बन्धी हानि की भविष्यवाणी,*** *वि. संवत् २०७१ (2014-15 ई.) तथा वि. संवत् २०७२ (2015-16 ई.) में अप्रैल, 2015 ई. में* ***नेपाल में भूकम्प, जम्मू-कश्मीर में किसी पार्टी को स्पष्ट बहुमत प्राप्त न होना तथा चुनाव पश्चात् गठबन्धन सरकार अस्तित्व में आएगी' भविष्यवाणी,*** *सं. २०७३ (2016-17 ई.) में 'एक सक्षम और सामर्थ्यवान राष्ट्र के रूप में भारत का उदय होगा', 'धरती ही नहीं अंतरिक्ष में भी भारत की प्रतिष्ठा बढ़ेगी अर्थात् नए-नए प्रक्षेपास्त्र एवं अन्तरिक्ष-अनुसन्धान किए जाएंगे।' आदि अनेक भविष्यवाणियों का उल्लेख हम गतवर्षीय पंचांग में कर आए हैं।* ***वि. संवत् २०७३ के पृष्ठ 78 कालम-II में स्पष्टतः पढ़ें-'अनेक सामरिक, आर्थिक निर्णयों के कारण यद्यपि मोदी जी को आलोचना का सामना करना पड़े, परन्तु देश के दीर्घकालीन स्वास्थ्य एवं प्रगति के लिए विशेष प्रबुद्ध वर्ग द्वारा प्रशंसा भी की जाएगी।' पृष्ठ 74 कालम-I में स्पष्टतः पढ़ें-'ऐसे फैसले एवं निर्णय लिए जाएगें, जिनमें राष्ट्रीय हित समाहित होंगे।'*** *संवत् २०७२ (2015-16) में पृष्ठ 77 कालम-II में पढ़ें-'देश की अर्थव्यवस्था एवं व्यवस्था में गुणात्मक सुधार लाए जाएंगे।'* ***वि. संवत् २०७४ में पृष्ठ 83 मुख्य कालम में पढ़ें-विधानसभा चुनावों में कुछ राज्यों में कांग्रेस तथा कुछ में भाजपा का प्रभावक्षेत्र बढ़ेगा। पंजाब, गोवादि में कांग्रेस का, परन्तु उ.प्र., उत्तराखण्ड, मणिपुर में भाजपा का प्रभावक्षेत्र बढ़ेगा।*** *पुनः पृष्ठ 91, कालम-I में पढ़ें* ***'सर्वसाधारण लोग एवं व्यापारी सरकार के कठोर व पेचीदा नियमों से परेशान व पीड़ित रहेंगे।'-जैसा कि लोग/व्यापारी जी.एस.टी. व नोटबन्दी के दौरान परेशान रहे।***

गतवर्ष वि. संवत् २०७५ के पंचांगदिवाकर में भी अनेक भविष्यवाणियां ईश्वर कृपावश सत्य सिद्ध हुई हैं, जिनका उल्लेख कर रहे हैं-

(1) पृष्ठ 68-मुख्य कॉलम में ही स्पष्टतः पढ़ें-"**आगामी विधानसभा चुनावों में राजनीतिक वातावरण साम्प्रदायिकता के कारण पूरी तरह विषाक्त हो जाएगा। हि.प्र., कर्नाटका में भाजपा की विजय-पताका निश्चित रूप से लहराएगी। गुजरात, झारखण्ड, त्रिपुरा में भी भाजपा सशक्त रूप से अग्रणी रहेगी। इन राज्यों के कुछ क्षेत्रों में भाजपा को हानि भी होगी। बहुत कुछ चुनाव पूर्व एवं बाद में गठबन्धन राजनीति पर निर्भर करेगा। कुछ क्षेत्रों में कांग्रेस भी मज़बूत होगी।**"-परिणाम आपके सामने हैं। इन पंक्तियों का एक-एक शब्द सत्य प्रमाणित हुआ। सर्वप्रथम ईश्वर विशेषकर सरस्वती माँ, गायत्री माँ तथा पितृ-पुरुषों का भी आभार प्रकट करता हूँ तथा जिन पाठकों के प्रशंसा-पत्र प्राप्त हुए हैं, उनका भी आभार हृदय से प्रकट करते हैं।

(2) पृष्ठ 68 मुख्य कॉलम में पढ़ें-"**2 मई से 5 नवं. तक 'मंगल-केतु' का योग किसी प्रमुख नेता के जीवन के लिए अरिष्टकर होगा'**-पूर्व प्रधानमन्त्री 'श्री अटल बिहारी वाजपेयी' जी का निधन एवं अन्य मुख्य नेताओं (करुणानिधि) का निधन इस ओर संकेत मात्र था।

(3) पृष्ठ 68-मुख्य कॉलम में ही पढ़ें-"समाज में क्रोध एवं आवेश के कारण हिंसक घटनाएँ अधिक होंगी। देश में कहीं उपद्रव, अग्निकाण्ड की घटनाएँ, साम्प्रदायिक हिंसा तथा झगड़े-फ़िसाद अधिक होंगे। **देश में गृहयुद्ध-जन्य हालात बनेंगे।**"-जैसा कि महाराष्ट्र के औरंगाबाद, यू.पी. के कुछ नगरों, पं. बंगाल में पंचायत चुनावों तथा एन.आर.सी. के मुद्दे पर देश में वाद-विवाद का एक नया रूप ही देखने को मिल रहा है।

(4) पृष्ठ 71, कॉलम-II में पढ़ें-"**मन्त्री शनि के कारण लोहा, तैल, पैट्रोलियम आदि पदार्थों से सम्बन्धित व्यापारी लोग विशेषतया लाभान्वित होंगे।**" एवं च "कई स्थलों पर निरन्तर एवं मूसलाधार वर्षा होगी और बाढ़ की स्थिति बनेगी तथा कहीं कम वर्षा के कारण अनाज के उत्पादन में कमी होगी।"

(5) पृष्ठ 74, कॉलम-I की प्रथम दो पंक्तियों में स्पष्टतः पढ़ें-"विश्व में प्रमुख देशों के राज्याध्यक्ष अपने देशों के हितों के लिए विशेष रूप से कार्य करेंगे तथा कई **अन्तर्राष्ट्रीय सन्धियों की तिलाञ्जली देकर युद्धोन्मुखी नीतियों पर चलेंगे।**" जैसा **कि अमरीका, चीन** आदि देशों ने नई आयात नीति के अन्तर्गत 25% तक आयात शुल्क बढ़ा दिया है। (जून-जुलाई, 2018 ई. में)

(6) पृष्ठ 75, कॉलम-I में पढ़ें-"**विश्व में कहीं भूकम्प---। 20 अग. को इण्डोनेशिया में भूकम्प आने से कई लोगों की मृत्यु हुई।**"

(7) पृष्ठ 75, कॉलम-I में '**पाकिस्तान**' शीर्षक के अन्तर्गत स्पष्ट पढ़ें-"**सत्तारूढ़ नवाज़ शरीफ़ सरकार** को आंतरिक विरोध एवं आलोचनाओं के कारण **अपने पद से इस्तीफा भी देना पड़ सकता है।**"-परिणाम आपके सामने है।

(8) पृष्ठ 75, कॉलम-I में स्पष्टत: पढ़ें–''नई कर प्रणाली (**जी.एस.टी.**) के कारण कुछ समय के लिए व्यापारिक गतिविधियां अवरुद्ध रहेंगी तथा सरकार को विरोध आन्दोलनों का सामना करना पड़ेगा। परन्तु धीरे-धीरे व्यापारिक गतिविधि पहले की तुलना में कहीं अधिक सहज-सरल होने से इसकी स्वीकार्यता बढ़ती जाएगी। **भारत में सैद्धान्तिक रूप से बड़ परिवर्तन आकार लेगा।**''–परिस्थितियां आपके सामने हैं।

(9) पृष्ठ 75, कॉलम-II में पुन: स्पष्ट पढ़ें–''**सरकार के समक्ष पाकिस्तान,, चीन, बांग्लादेश के साथ भौगोलिक विवाद, आतंकवाद, घुसपैठ से सम्बन्धित जटिल और परस्पर विरोधाभासी परिस्थितियां उत्पन्न होती रहेंगी।**''–जैसा कि एन.आर.सी. के मुद्दे पर, काश्मीर में तथा डोकलाम में हालात उत्पन्न हो रहे हैं।

(10) पृष्ठ 79, कॉलम-I में पढ़ें–''**आगामी विधानसभा चुनावों में कर्नाटक, गुजरात राज्यों में विपक्षी दलों की अपेक्षा सुदृढ़ तथा कामयाबी देने वाली होगी।** कुछ राज्यों में (राजस्थान, गुजरात, त्रिपुरा) आशानुकूल कामयाबी संदिग्ध रहेगी। यद्यपि इन राज्यों में भी भाजपा एक मजबूत शक्तिशाली पार्टी ही रहेगी। **भाजपा को पराजित करने के लिए विपक्षी पार्टियां नया गठजोड़ बनाने हेतु प्रयासरत रहेंगी।**''–परिस्थितियां आपके समक्ष हैं।

(11) पृष्ठ 79 पर ही '**हिमाचल-प्रदेश**' शीर्षक के अन्तर्गत भी स्पष्टत: पढ़ें–''**भाजपा पार्टी के ही सशस्त रूप से विजयी होने के योग बनेंगे।**''–ये सभी घटनाएं '**पंचांगदिवाकर**' में दी गई भविष्यवाणियों की सार्थकता एवं सत्यता प्रमाणित कर रही हैं।

[वि. संवत् २०७६ में ग्रहों की आकाशी कौंसिल और भविष्यफल]

वि. संवत् २०७६ में ग्रहों की आकाशी कौंसिल (ग्रह-परिषद्) के दस पदाधिकारों में से आठ (8) पदाधिकार उग्र (क्रूर) ग्रहों को तथा केवल दो (2) अधिकार सौम्य (शुभ) ग्रहों को प्राप्त हुए हैं। राजा, वर्षा (मेघेश), फलों तथा सेना (दुर्गेश) जैसे महत्त्वपूर्ण अधिकार तमोगुणी ग्रह '**शनि**' को प्राप्त हुए हैं तथा फसलों (सस्येश), धातुओं तथा धनेश (कोश) के अधिकार पराक्रमी परन्तु क्रूर ग्रह '**मंगल**' को मिले हैं। मन्त्री का महत्त्वपूर्ण पद तेजस्वी किन्तु क्रूर ग्रह सूर्य को ही प्राप्त हुआ है।

आकाशी कौंसिल में क्रूर ग्रहों का बाहुल्य होने से आगामी वर्ष विश्व में परन्तु विशेषकर भारत, पाकिस्तान व अन्य एशियाई देशों का राजनीतिक एवं सामाजिक वातावरण विक्षुब्ध, अनिश्चित, तनावपूर्ण एवं अशान्त रहेगा। विश्व के अनेक देशों में परस्पर टकराव, आर्थिक, राजनीतिक एवं आयात निर्यात प्रतिबन्धों के कारण तनाव व प्रतिद्वद्विता का माहौल रहेगा। विभिन्न देशों में विद्रोह, आर्थिक एवं मुद्रा संकट तथा तेल, पैट्रोल के मूल्यों में विशेष उथल-पुथल होगी।

राजा एवं मन्त्री पद–दोनों परस्पर विरोधी ग्रहों **शनि-सूर्य** को प्राप्त होने तथा वर्षा, फलों तथा सेना के अधिकार शनि के पास होने से राजनीतिक एवं आर्थिक क्षेत्रों में अस्थिरता भरा माहौल रहेगा। समाज में क्रोध एवं आवेश के कारण

अधिक होंगी। विपक्षी पार्टियों द्वारा सत्ता-लोलुपता की भावना से बनाए गए तथाकथित '**महागठबन्धन**' एक असफल प्रयास सिद्ध होगा। हाँ, सत्तारूढ़ भाजपा एवं एन.डी.ए. गठबन्धन को बहुमत प्राप्त होना संदिग्ध हो जाएगा। अधिकांश लोग, नेता एवं सरकारी तन्त्र के लोगों में अधिकाधिक धन-संग्रह की होड़ में नैतिक एवं चारित्रिक मूल्यों में गिरावट दिखाई देगी। सरकारी खर्चों में अत्यधिक वृद्धि होगी। दिशाहीन आर्थिक प्रगति होने से समाज का एक विशेष वर्ग ही लाभान्वित होगा। सामान्य वर्ग के लोग तथाकथित विकास कार्यों के अवसरों से लाभान्वित नहीं हो पाएंगे। फसलों, धातुओं और कोष (धन) का स्वामी उग्र ग्रह मंगल होने से आर्थिक क्षेत्रों में भी विशेष अस्थिरता रहे। अधिक गरीब एवं अधिक अमीर लोग लाभ में रहेंगे, परन्तु मध्यम वर्ग सरकारी तन्त्र से भयग्रस्त एवं निराश रहे। राजनेताओं का मनमाना आचरण प्रजा के अधिकांश दु:खों का कारण बने। सोना, चाँदी, पीतल आदि धातुओं के मूल्यों में और वृद्धि हो। राजा होने के साथ-साथ '**शनि**' वर्षा, फलों तथा सेना का भी स्वामी होने से विषम एवं अनुपयोगी वर्षा होने से कहीं अत्यधिक वर्षा से बाढ़ादि का प्रकोप एवं कहीं अल्प वर्षा के कारण कृषि, धान्य आदि की कमी रहे। फलों की पैदावार में भी कमी रहे। प्राकृतिक प्रकोपों या आतंकवादी घटनाओं के कारण किसी विशेष स्थल से लोग दूसरी जगह (देश या प्रदेश में) पलायन करने के लिए विवश हो जाएंगे। सेना का पद भी शनि के पास होने से शनि से प्रभावित देशों में आन्तरिक दंगे एवं लोगों में साम्प्रदायिक झगड़े-फिसाद, तोड़-फोड़ व टकराव अधिक हों। धान्य स्वामी चन्द्रमा होने से गेहूँ, चना, चावल, ईख, कपास आदि वस्तुओं का उत्पादन पर्याप्त रहे। जनसंख्या में भी विशेष वृद्धि होगी। रसेश गुरु के कारण धार्मिक उत्सवों के प्रचार अधिक हों। मन्त्री-पद सूर्य के पास रहने से केन्द्र व राज्य सरकारों में केन्द्रीय कर आवन्टन मामलों में मतभेद रहेंगे। सरकार की कठोर नीतियों/गतिविधियों के कारण प्रजा में भय एवं असन्तोष का वातावरण बनेगा। '**परिधावी**' नामक संवत्सर के प्रभावस्वरूप में विभिन्न देशों के मध्य युद्ध-जन्य परिस्थितियां रहेंगी। भारत में विभिन्न पार्टियों के मध्य आरोप-प्रत्यारोप के मध्य विषाक्त राजनीतिक माहौल रहे।

[नववर्ष प्रवेश एवं जगत्-लग्न कुण्डली अनुसार भविष्यफल]

'**परिधावी**' नामक संवत्सर में वि. संवत् २०७६ का प्रवेश चैत्र अमावस्या की समाप्ति 5 अप्रैल, 2019 ई. की दोपहर 14घं.-21मिं. पर रेवती नक्षत्रकालीन चर लग्न '**कर्क**' में हुआ है। वर्ष-लग्नपति चन्द्रमा भाग्य (नवम) भाव (विकास और योजना) में सूर्य के साथ स्थित है तथा राजा शनि की इन पर गुप्त शत्रु दृष्टि पड़ रही है। शनि जोकि अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का स्वामी (सप्तमधिपति) भी बन गया है, उस पर मंगल की शत्रु दृष्टि भी रहेगी। (मंगल-शनि के मध्य षडाष्टक योग बना हुआ है।) सभी ग्रह राहु-केतु मध्य होने से '**कालसर्प योग**' भी बना हुआ है। फलस्वरूप अन्तर्राष्ट्रीय एवं भारत के घरेलू हालात अत्यन्त असमंजसपूर्ण एवं तनावमय होंगे। सामाजिक, राजनीतिक व आर्थिक वातावरण

दौरान घटित होंगे। इन चुनावों में किसी एक पार्टी को स्पष्ट बहुमत प्राप्त न होने के कारण राजनीतिक अस्थिरता एवं गतिरोध पैदा होंगे। एन.डी.ए. तथा विपक्षी महागठबन्धन में विभिन्न पार्टियों के मध्य नए-नए समीकरण बनेंगे। चुनावों के निर्णय के पश्चात् भी अत्यन्त गहमा-गहमी भरा माहौल रहेगा। येन-केन प्रकारेण एन.डी.ए. गठबन्धन अन्य समानान्तर एवं क्षेत्रीय पार्टियों की सहायता से ही केन्द्रीय सरकार बनाने में सक्षम होगी। कांग्रेस प्रणीत महागठबन्धन को अपेक्षाकृत कम सीटें प्राप्त होंगी। 22 मार्च से 6 मई तक मंगल-शनि मध्ये षडाष्टक योग, तदुपरान्त 7 मई से 21 जून तक समसप्तक योग होने से इस अवधि में भारत का राजनैतिक वातावरण आरोप-प्रत्यारोप भरा रहेगा। वर्ष प्रवेश कुण्डली में कर्क लग्न के उदय का फल शास्त्रों में इस प्रकार से वर्णित है–

नववर्ष प्रवेश कुण्डली
5 अप्रैल, सन् 2019 ई.
14घं. 21मिं. (भा.स्टैं.टा.)

जगत् लग्न कुण्डली,
14 अप्रैल, सन् 2019 ई.
14घं. 08मिं. (भा.स्टैं.टा.)

कर्के सुखं तु पूर्वस्याम् उत्तरस्यां तु विग्रहः।
स्याच्चासनबलं यावद् दुर्भिक्षं पश्चिमेदिशि।।

वर्षप्रवेश कुण्डली में कर्क लग्न उदित होने से पूर्वी देशों एवं पूर्वी प्रान्तों में सुख-समृद्धिदायक वातावरण रहेगा। ऐशो-आराम तथा वैभव के साधनों में वृद्धि होगी एवं पूर्वी प्रदेश/देश प्रगति-पथ पर रहेंगे। परन्तु उत्तरी दिशा के देशों एवं प्रदेशों (उत्तरी यूरोप, काश्मीर आदि) में अशान्ति, प्राकृतिक प्रकोपों (भूकम्पादि) से व्यापक जन-धन हानि के संकेत हैं। जबकि पश्चिमी देशों/क्षेत्रों (मुस्लिम देशों, पंजाब, राजस्थानादि) में दुर्भिक्ष (अकाल), फसलों की हानि तथा लोगों में क्लिष्ट एवं पेचीदा रोगों की उत्पत्ति एवं भय रहे।

जगत् लग्न एवं विश्व घटनाक्रम

जगत् लग्न कुण्डली में भी वर्ष प्रवेश कुं. की भान्ति कर्क (चर) लग्न उदित हुआ है। लग्नेश चंद्रमा लग्न भाव में स्वराशिगत है। सप्तम-भाव (अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का भाव) में मकर राशि उदित है, जोकि भारत की प्रभाव लग्न राशि भी है। इस राशि का स्वामी शनि षष्ठ भाव में धनुराशिगत होकर गुरु व केतु के साथ है तथा 6 मई तक मंगल-शनि मध्ये षडाष्टक योग, तदुपरान्त 21 जून तक समसप्तक योग, 16 जून से 15 जुला. तक सूर्य-शनि मध्य समसप्तक योग रहेगा। ग्रहस्थिति एवं योगानुसार यही संकेत मिल रहे हैं कि भारत विश्व राजनीति में प्रमुख केन्द्र-बिन्दु रहेगा। अमरीका आदि विकसित तथा भारत, इण्डोनेशिया, ईरान तुल्य विकासशील देशों के मध्य कुछ नए राजनीतिक समीकरण बनेंगे। वृष राशि ईरान की प्रभाव राशि है, जिस पर मंगल स्थित होकर शनि के साथ 6-8 सम्बन्ध बना रहा है। ग्रहयोग अनुसार ईरान, यमन, तुर्क आदि मुस्लिम बाहुल्य देश विश्व राजनीति का ध्रुवीकरण बने रहेंगे। जगत्-लग्न कुं. में मिथुन (अमरीका की प्रभाव राशि) पर राहु की स्थिति तथा 7 मई से 21 जून तक इस राशि पर **'मंगल-राहु'** योग रहने से राष्ट्रपति ट्रम्प की स्वार्थपूर्ण कूटनीतियों एवं ईरान, तुर्क, यमनादि देशों पर प्रतिबन्धों के कारण विश्व राजनीति में शीत-युद्ध तुल्य परिस्थितियां रहेंगी। अमरीका द्वारा लिए गए कुछ एकतरफा निर्णयों के विरुद्ध यूरोप तथा अनेक एशियाई देश नया गुट निर्माण कर लेंगे तथा अमरीका के प्रभावक्षेत्र से मुक्त होने के प्रयास में रहेंगे। नवम भाव में (योजना और विकास) मीन राशि उदित है, जिस पर अमरीका का राशिस्वामी बुध नीचस्थ होकर स्थित है। फलस्वरूप अमरीकी कूटनीतिक एवं भेदभावपूर्ण नीतियों के विरुद्ध कुछ पश्चिमी एशियाई देश प्रखर रूप में विरोध एवं प्रत्याकार करेंगे। जगत् लग्न कुं. में प्रवेश के आसपास ही (अप्रैल, 2019 ई. में) भारत में राजनीतिक उथल-पुथल एवं परिवर्तन विपक्ष तथा सम्पूर्ण विश्व के लिए एक आश्चर्यजनक परिदृश्य उपस्थित होगा।

जगत् लग्न के समय शूल योग होने से विश्व में कोई बड़ा अमंगल होने का भय रहे तथा दोपहर के समय जगत्-लग्न प्रवेश होने से श्रेष्ठजनों, गणमान्य, प्रसिद्ध व प्रतिष्ठित लोगों को वर्ष में अपमान, पीड़ा, कष्ट झेलना पड़ेगा।

सन् 2019 ई. में गोचर ग्रहस्थिति और विश्व

वर्ष के आरम्भ में ही 1 जनवरी, 2019 ई. को सूर्य-शनि के मध्य अंश-कलात्मक युति तथा वृश्चिक राशि में गुरु-शुक्र का योग बना हुआ है। वि. संवत् 2075 एवं नव वि. संवत् 2076 में भी राजा एवं मन्त्री पद (सूर्य-शनि) पर दो विपरीत एवं शत्रु ग्रहों का आधिपत्य तथा वर्षारम्भ से ही (सूर्य-शनि, गुरु-शुक्र) विपरीत ग्रहों का समसप्तक योग विश्व के मुख्य देशों (विशेषकर एशिया के) जैसे-ईरान, कतर, पाकिस्तान, यमन, ईराक, अफगानिस्तान आदि में अग्निकाण्ड, देश-द्रोह, राजनैतिक-टकराव, आतंकी विस्फोट, साम्प्रदायिक झगड़े-फिसाद होंगे। विद्रोही गुटों तथा सत्तारूढ़ सरकारों में भीषण लड़ाई तथा कहीं युद्धादि की स्थिति भी बने। कुछ क्षेत्रों में कृषि धन की हानि एवं प्राकृतिक प्रकोपों से जन-धन की हानि हो–

गुरु-शुक्रौ यदैकस्थौ नरयुद्धं तदा भवेत्।
अकाले वा भवेद्वृष्टिः जगत्यां नात्र संशयः।।

1 जनवरी, 2019 ई. से 31 दिसम्बर, 2019 ई. तक ग्रहस्थिति अनुसार आगामी वर्ष यूरोपीय देशों के लिए उलझनपूर्ण परिस्थितियां लेकर आएगा। वर्षभर लग्न पर शनि की विशेष दृष्टि तथा एकादश भाव (वाणिज्य, निर्यात भाव) में राहु की स्थिति शोचनीय अर्थव्यवस्था की ओर संकेत कर रही हैं। लग्न भाव पर मंगल एवं शनि की दृष्टि के फलस्वरूप ग्लोबल वार्मिंग

और जलवायु परिवर्तन से ठण्डे यूरोपीय देश भी नहीं बच पाएंगे। फलत: यूरोपीय तथा पश्चिमी एशियाई देशों में भी ऊर्जा की मांग व्यापक रूप से बढ़ जाएगी, जलवायु-परिवर्तन से खड़ी फसलों को हानि तथा विपरीत/खण्ड वर्षा के कारण कुछ क्षेत्रों में दुर्भिक्ष-जन्य परिस्थितियां बनेंगी। ता. 15 जून से 16 जुला. के मध्य सूर्य-शनि मध्ये समसप्तक योग रहने से फ्रांस, बैल्जियम, ब्रिटेन, जर्मनी आदि यूरोपीय देश में आतंकी हमला होने की प्रबल संभावना रहेगी। एकादशस्थ राहु के प्रभाव से अमरीका की दमनकारी एवं एकाधिकारपूर्ण रणनीतियों का प्रभाव यूरोपियन यूनियन की अर्थव्यवस्था पर भी पड़ेगा। तुर्क, यमन, सीरिया आदि देशों के शरणार्थी बैल्जियम, जर्मनी, आस्ट्रिया आदि देशों की शिरोवेदना को ही बढ़ाएंगे।

यूरोपीय देशों की कुण्डली
1 जन., 2019 ई.
मध्यरात्रि 00 घं. 00 मिं.

7 शु. चं. | 5 | 8 बु. गु. | 6 | 4 रा. | 9 सू. श. | 3 | 10 के. | 12 मं. | 2 | 11 | 1

हिजरी सन् 1440 का बादशाह '**बुध**' है। मुस्लिम देशों की नव प्रवेश कुण्डली में कुम्भ लग्न उदित हुआ है। लग्नेश शनि आयात-निर्यात (लाभस्थान) के भाव में होने तथा कालसर्प योग प्रभावस्वरूप कच्चे तेल के कारण मुस्लिम तेल उत्पादक देशों तथा अन्य अमरीका आदि प्रभृत देशों के मध्य शीत-युद्ध का वातावरण रहेगा। जिस कारण क्रूड-ऑयल के भावों में विशेष तेजी बन जाएगी। पाकिस्तानादि देशों की प्रभावराशि कन्या पर शनि की दृष्टि रहने से मुस्लिम देशों के हुक्मरानों में भी आपसी टकराव, विरोध एवं होड़ की भावना रहेगी। 7 मार्च से सम्पूर्णवश एकादश भाव में शनि-केतु योग होने से मुस्लिम देशों के शेष विश्व से सम्बन्ध तनावपूर्ण ही रहेंगे।

मुस्लिम देशों की कुण्डली
(11 सितं., 2018 ई. से 31 अग., 2019 ई. तक)

सूर्यास्त समय 11 सितं., 2018 ई.

गोचर विचार—चान्द्र पौष मास (23 दिसं., 2018 ई. से 21 जनवरी, 2019 ई. तक) में पाँच रविवार एवं पाँच सोमवार होने, 5 जन. को **शनिवारी अमावस्या**, 14 जन. तक **सूर्य-शनि योग** तथा 29 जन. तक गुरु-शुक्र योग विश्व राजनीतिक एवं आर्थिक स्थिति पेचीदापूर्ण एवं उलझनपूर्ण रहेगी। एशियाई देशों में अत्यधिक महँगाई, सूखे एवं दुर्भिक्ष का भय रहे। यमन, पाकिस्तान में आतंकी हमले, किसी देश में छत्रभंग (सत्ता-परिवर्तन), आकस्मिक विस्फोट होने के योग हैं।
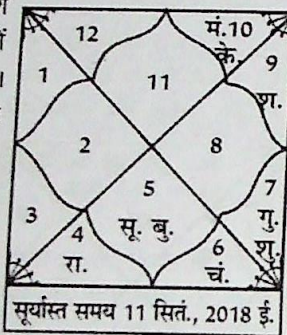
माघ मास (22 जन. से 19 फर. तक) में पांच मंगलवार होने तथा 29 जन. से शुक्र--शनि योग रहने से तथा माघ कृष्ण प्रतिपदा का क्षय होने [illegible] नेता के लिए अशुभ एवं अनिष्टकर समय होगा। विश्व में कहीं हवाई दुर्घटनाएं, आतंकवादी व युद्धन्मोदी घटनाएं घटित होंगी।

फाल्गुन मास (20 फर. से 21 मार्च तक) में पाँच बुधवार एवं बृहस्पतिवार होने से पश्चिम व मुस्लिम देशों जैसे-ईराक, सूडान, इज़रायल-फिलीस्तीन आदि देशों में राजनीतिक व आतंकवादी टकराव तथा युद्धजन्य हालात बनेंगे।

कुम्भस्थ सूर्य पर तथा पाकिस्तान की प्रभावराशि कन्या पर शनि की विशेष दृष्टियां, शुक्र-केतु योग रहने से पाक, अफगानिस्तान तथा यूरोपीय देशों में आतंकी घटनाएं घटित होंगी।

चैत्र मास (21 मार्च से 19 अप्रैल तक) में पाँच शुक्रवार होने, 22 मार्च से मंगल-गुरु मध्य समसप्तक योग, 29 मार्च से **गुरु-शनि-केतु** योग तथा मेष संक्रान्ति रविवार को होने से विश्व के कुछ प्रमुख देशों में टकराव, युद्ध-भय, दंगे-फिसाद एवं विस्फोटक घटनाएं घटित होंगी। मुस्लिम देशों में अमरीका द्वारा युद्ध का वातावरण बना दिया जाएगा।

वैशाख मास (20 अप्रै. से 18 मई तक) में पांच शनिवार आने, 30 अप्रैल से शनि वक्री होने, 4 मई को शनिवारी अमावस आने से विश्व में कहीं भूकम्प, यानादि-दुर्घटना, अग्निकाण्ड, तूफान आदि प्राकृतिक प्रकोपों से भारी जन-धन हानि होने का भय है। मुस्लिम देशों (अफगानिस्तान, सीरिया, तुर्क, यमन) में आतंकी गुटों तथा सत्तारूढ़ फौजों के मध्य भीषण युद्ध-तुल्य संघर्ष होंगे। हजारों लोगों की क्षति हो सकती है। राजा शनि के प्रभावस्वरूप भी लोग एक देश से दूसरे देश में पलायन करने को विवश हो जाएंगे।

ज्येष्ठ मास (19 मई से 17 जून तक) में पाँच रविवार तथा पाँच सोमवार होने, 7 मई से 22 जून तक **मंगल-राहु योग,** 15 जून को शनिवारी आषाढ़ संक्रान्ति होने से विश्व के कुछ देशों विशेषकर अफ्रीका, एशिया में अनाज की कमी, अत्यधिक महँगाई, सूखे व कहीं दुर्भिक्ष का भय रहेगा। कहीं छत्रभंग (सत्ता-परिवर्तन), आकस्मिक आतंकी हमले, मुद्रा (आर्थिक) संकट, जलवायु परिवर्तन आदि के हालात बनेंगे।

आषाढ़ मास (18 जून से 16 जुला. तक) में पाँच मंगलवार घटित होने, 15 जून से 16 जुला. तक सूर्य-शनि मध्य समसप्तक योग एवं सूर्य-राहु योग रहने से पश्चिमी एशियाई देशों में युद्ध के बादल मंडराएंगे। टर्की, अफगानिस्तान, ईरान, सीरिया, यमन में अमरीका, रूस आदि देश अलग-अलग आधिपत्य स्थापित करने के लिए इन देशों को भीषण संघर्ष की अग्नि में झोंक देंगे।

श्रावण मास (17 जुला. से 15 अग.) में पांच बुधवार तथा पाँच बृहस्पतिवार का होना, 23 जुला. से 29 जुला. तक, पुन: 3 अग. से 7 अग. तक सूर्य, मंगल, बुध, शुक्र ग्रहों का चतुर्ग्रही योग होने से अमरीका, इंग्लैंड अथवा यूरोप के किसी देश में कहीं अतिवृष्टि, अनावृष्टि से बाढ़ादि प्रकोपों से जन, धन व सम्पदा को क्षति पहुँचेगी। पश्चिम एशिया के

भाद्रपद मास (16 अग. से 14 सितं.) में पाँच शुक्र तथा पाँच शनिवारों का समावेश होने से मिश्रित प्रभाव होंगे। जनसंख्या में वृद्धि तथा विश्व में धन-सम्पदा का प्रसार व नियोजन बढ़ेगा। पाँच शनिवार होने से शिया-सुन्नी-क्रुद-यहूदी आदि जातियों में हिंसा तथा मिज़ाईल हमले बढ़ेंगे। जनपयोगी आवश्यक वस्तुओं, धान्यों के तथा विशेषकर क्रूड-ऑयल के मूल्यों में वैश्विक स्तर (सम्पूर्ण विश्व में) पर तेजी होगी। भाद्रपद संक्रान्ति भी शनिवार को होने से विरोधी देशों जैसे-अमरीका, ईरान, अमरीका-यमन, इज़रायल-फिलीस्तीन, भारत-पाक, यूक्रेन-रूस में युद्धजन्य माहौल बनेगा।

आश्विन मास (15 सितं. से 13 अक्तू.) में पाँच रविवार होने, सूर्य-मंगल का शनि के साथ 4-10 दृष्टि सम्बन्ध, 25 सितं. से 29 सितं. सू., मं. बु., शु. का **चतुर्ग्रही योग,** 28 सितं. को शनिवारी अमावस होने से पाक, अफगानिस्तान, सीरिया, ईराक आदि मुस्लिम देशों के आन्तरिक, सामाजिक व राजनीतिक हालात अस्थिर एवं असमंजसपूर्ण रहेंगे। सरकारी तन्त्र और दहशतगर्द ग्रुपों के मध्य टकराव बढ़ेंगे।

कार्तिक मास में (14 अक्तू. से 12 नवं.) पाँच मंगलवारों का समावेश होने, मंगल-शनि के मध्य दृष्टि सम्बन्ध (4-10) विस्फोटक हालात पैदा करेंगे। राजनेताओं व राज्याध्यक्षों का आपस में युद्ध विग्रह होगा और युद्ध, आगज़नी, प्राकृतिक आपदाओं से पृथ्वी रक्त-रंजित रहे। विरोधी देशों के मध्य युद्ध अथवा गुरिल्ला युद्ध के कारण व्यापक रूप से रक्तपात एवं जन-हानि का भय है।

मार्गशीर्ष मास (13 नवं. से 12 दिसं., 2019 ई. तक) में पाँच बुधवार एवं पाँच बृहस्पतिवार होने से विश्व में अमरीका, जापान, इण्डोनेशिया जैसे देशों में तूफान, आँधियां, सुनामी, भूकम्प आदि प्रकोप अधिक होंगे। ता. 16 नवं. को शनिवारी मार्गशीर्ष संक्रान्ति तथा 21 नवं. से 15 दिसं. तक **'चतुर्ग्रही योग'** बनने से अफगानिस्तान, ईराक, सीरिया, पाकिस्तान, सूडान आदि मुस्लिम बाहुल्य देशों में आतंकवाद की दावाग्नि पुनः भड़कने लगेगी। इस अवधि में इज़रायल-फिलीस्तीन, भारत-पाक, अमरीका-ईरान, अमरीका-रूस आदि विरोधी देशों में परस्पर युद्ध एवं सैनिक टकराव होने के योग हैं। पश्चिमी ऐशिया के क्षेत्रों में विद्रोही गुटों द्वारा विस्फोटक हमले होने से भयावहपूर्ण माहौल रहेगा।

विश्व के कुछ प्रसिद्ध देश

अमेरिका (America)-इसकी प्रभावराशि मिथुन की जगत् लग्न कुण्डली में द्वादश भाव (व्यय, गुप्तशत्रु, युद्ध सम्बन्धी कार्यों का भाव) में स्थिति है। मिथुन राशि पर 7 मार्च, 2019 ई. से संवतान्त तक राहु का संचार अमरीका के लिए उलझन एवं पेचीदा परिस्थितियां उत्पन्न करेगा। शनि की दृष्टि भी इस राशि पर वर्षभर रहेगी। अमरीका एवं ट्रम्प प्रशासन अपनी कूटनीतिक नीतियों के माध्यम से विश्व के तेल-उत्पादक एवं विकासशील (भारत, पाक, इण्डोनेशिया आदि) देशों पर अपना आधिपत्य स्थापित करने का प्रयास करता रहेगा। अमेरिका द्वारा ईरान, तुर्क, उत्तरी-कोरिया आदि देशों पर प्रतिबन्धों के माध्यम से भारत एवं अन्य देशों की ऊर्जा-आयात (तेलादि) नीति को प्रभावित करेगा। पश्चिमी एशिया (तुर्क, यमन आदि) तथा यूरोपियन यूनियन की अर्थव्यवस्था को अपने नियन्त्रण में लेने का प्रयास करेगा। परन्तु सऊदी अरब, ईज़रायल, पाकिस्तान आदि देशों को परोक्ष समर्थन जारी रखेगा। ईरान, उ. कोरिया, रूस, चीन आदि देशों के साथ युद्ध-जन्य माहौल तैयार करेगा तथा इन देशों पर आर्थिक प्रतिबन्ध आदि लगाकर एक प्रकार से **'मनोवैज्ञानिक युद्ध'** लड़ेगा तथा कतर, यमन जैसे देशों पर सैनिक कार्यवाही करके शेष देशों को भयभीत करने का प्रयास करेगा।

पाकिस्तान (Pakistan)-जगत् लग्न कुण्डली में इस देश की प्रभावराशि कन्या तृतीय भाव (पड़ोसी देशों के साथ सम्बन्धों का भाव) में है। इस पर शनि की विशेष दशम दृष्टि पड़ रही है तथा राशिस्वामी बुध नवम भाव में नीच राशिगत है। ग्रह योगानुसार पाकिस्तान की नवगठित ईमरान खान की सरकार को गम्भीर चुनौतियों का सामना रहेगा। पाकिस्तान की नव-सरकार सेना के ही दबाव एवं प्रभाव (साये) में शासन करने को विवश होगी। इमरान सरकार अलग-अलग किस्म के जिहादियों पर रोक लगाने का काम चाह करके भी नहीं कर पाएगी। सरकार का अधिकतर समय एवं ताकत आर्थिक एवं जल संकट के साथ झूझते हुए व्यतीत होगा। फौजी ताकतों (I.S.I.) के ईशारों पर चलने, आतंकी संगठनों का पोषण करने के विरोध में तथा तानाशाही रवैये के कारण अपने देश के भीतर ही जबरदस्त खिलाफत के बादल मंडराने लगेंगे। बिलोचस्तान, सिन्ध आदि प्रान्तों में उपद्रव, जनांदोलन, विस्फोट एवं हिंसक घटनाओं में वृद्धि होगी। निज़ाम बदलने के बाद भी पाकिस्तान की नीयत में कोई बदलाव नहीं आएगा तथा कश्मीर आदि सीमावर्त्ती क्षेत्रों से आतंकवादी संगठनों को (अप्रत्यक्ष रूप में) घातक हथियारों की सहायता करता रहेगा। भारत के साथ शान्ति वार्ताओं का क्रम कुछ गतिरोध के पश्चात् पुनः समायोजित होगा। परन्तु पाकिस्तानी सेना और जिहादी तत्त्वों को दोस्ती का माहौल रास नहीं आएगा तथा दोनों देशों के मध्य कश्मीर, घुसपैठ, सीमोल्लंघन आदि मुद्दों को जीवन्त रखकर तनावपूर्ण माहौल बनाने का प्रयास होता रहेगा।

वि. सम्वत् २०७६ में गोचर ग्रहस्थिति और भारत का भविष्यफल

जन्मकुंडली स्वतंत्र भारत
14/15 अगस्त, 1947 ई.
(23$^{घं.}$-59$^{मिं.}$) भा. स्टैं. टा.
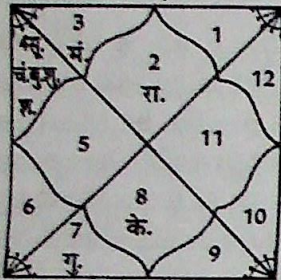
कुंडली गणतंत्र दिवस
26 जनवरी, 1950 ई.
10$^{घं.}$-19$^{मिं.}$ (भा. स्टैं. टा.)
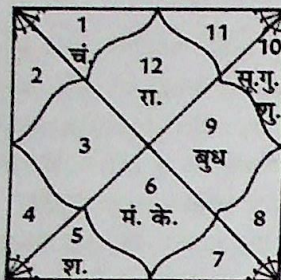
कुं. स्वतंत्र भारत (72वाँ वर्ष)
14/15 अगस्त, 2018 ई.
(28$^{घं.}$-50$^{मिं.}$) (दिल्ली)
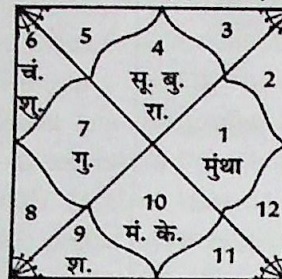
कुं. स्वतंत्र भारत, 73वाँ वर्ष
15 अगस्त, 2019 ई.
(10$^{घं.}$-59$^{मिं.}$) (दिल्ली)

लग्न-6-04°-32′-35″
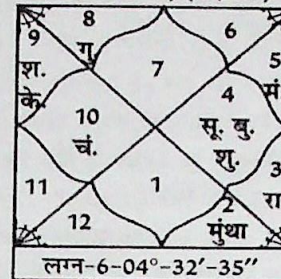
कुं. गणतन्त्र दिवस, 70वाँ वर्ष
26/27 जनवरी, 2019 ई.
(26$^{घं.}$-51$^{मिं.}$), (दिल्ली)

लग्न-7-09°-18′-10″
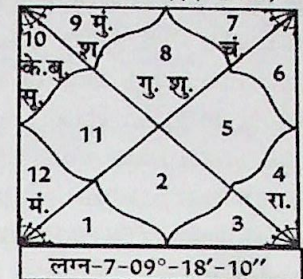
स्वतन्त्र भारत के 72वें वर्ष की कुण्डली (15 अगस्त, 2018 ई.) में कर्क लग्न उदित है। वर्ष-लग्नेश चन्द्रमा तृतीय-भाव (पड़ोसी देशों के साथ सम्बन्धों, पत्रकारिता का भाव) में मित्रराशिगत परन्तु शत्रु ग्रह शुक्र के साथ संचार कर रहा है। मुंथा दशम भाव में मेष राशिगत है तथा मुंथा पर सूर्य, बुध, राहु, मंगल आदि ग्रहों की गुप्त तथा गुरु की प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि पड़ रही है। मुंथेश मंगल सप्तम (वैदेशिक सम्बन्धों, महिला विकास योजनाओं का भाव) भाव में उच्चराशिगत परन्तु केतु आक्रान्त है। इन सबके प्रभावस्वरूप गत वर्षों में शुरु की गई अनेक विकास योजनाएँ विपक्षी विरोध आदि अनेक कारणों से अपने निर्णायक स्तर पर न पहुँचकर अधर में ही लटकती रह जाएंगी। वर्षकुण्डली में चन्द्रमा शत्रु ग्रह युक्त होने तथा कन्या राशि पर शनि की ढैय्या का प्रभाव तथा भारत की प्रभावराशि मकर पर मंगल-केतु योग होने से उत्तराखण्ड, हिमाचल आदि उत्तर-पश्चिमी एवं असम आदि पूर्वीय पर्वतीय क्षेत्रों में आकस्मिक वर्षा, बादल फटने, बाढ़ आदि प्राकृतिक प्रकोपों से लोगों की धन-सम्पदा व जान-ओ-माल व कृषि हानि होने के संकेत हैं।

ता. 11 अक्तूबर, 2018 ई. से वृश्चिक राशिगत गुरु की लग्न भाव पर उच्च दृष्टि के प्रभावस्वरूप गत वर्षों से भाजपा सरकार द्वारा प्रणीत विकास-योजनाओं के कार्यों में तेजी लाकर उन्हें चुनावों से पहिले पूर्ण कर तथा कुछ लोकप्रिय निर्णय लेकर लोगों के मन में पैदा नाराजगी को दूर किया जाएगा। तृतीय एवं सप्तम भाव में विपरीत स्थिति होने से स्पष्ट संकेत मिल रहा हैं कि भारतीय सीमाओं पर दोनों मुख्य पड़ोसी देश चीन एवं पाकिस्तान अपनी आक्रमक गतिविधियों से भारत की सम्प्रभुता को हानि पहुँचाने के प्रयास में रहेंगे। भारत सरकार को विशेष सतर्कता की आवश्यकता रहेगी।

आगे 6 नवम्बर से 23 दिसम्बर, 2018 ई. तक [illegible]

भाजपा सरकार के लिए चुनौतीपूर्ण एवं कठिन समय होगा। कुछ राज्यों में आशा के विपरीत जनमत मिलने से भाजपा पार्टी में नैराश्य की भावना का विस्तार होगा। अन्तर्कलह एवं उत्साह में कमी के कारण आगामी विधानसभा (राजस्थान, म.प्र., छत्तीसगढ़ आदि) चुनवों में भाजपा अपेक्षित सीटें प्राप्त करने में असफल रहेगी।

विपक्षी (कांग्रेस आदि) सरकार के खिलाफ शिरोवेदना वाले कई ज्वलन्त मुद्दे उठाकर, सरकार को असमंजस की स्थिति में ला देगी। 'तीन-तलाक', 'गौ-मांस', 'भीड़-तंत्र', 'आतंकवाद', 'मॉब-लिचिंग', 'अंध राष्ट्रवाद', 'सीमा पार घुसपैठ' आदि ज्वलन्त मुद्दों पर व्याप्क बहस कर समाज का साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण करने का प्रयास किया जाएगा।

भारतीय गणतन्त्र स्थापना के 70वें वर्ष की वर्षकुण्डली में वृश्चिक लग्न उदित है तथा वर्ष लग्नेश मंगल पंचम (विकास योजनाओं, व्यापार का भाव) भाव में मित्र राशिगत है तथा गुरु की शुभ स्वगृही दृष्टि भी है। फलस्वरूप भावी राजनैतिक अस्थिरताओं के बावजूद भारत अन्तरिक्ष विज्ञान क्षेत्र, स्टील एवं वस्त्र उद्योग आदि क्षेत्रों तथा विदेशी व्यापार के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति करेगा। संसद् के शीतसत्र अथवा बजट-सत्र में सत्तारूढ़ भाजपा सरकार द्वारा सामाजिक न्याय से जुड़े व जनोपयोगी विधेयकों के लाने से विपक्ष के पास समर्थन के अलावा कोई अन्य विकल्प नहीं रहेगा।

29 जनवरी, 2019 ई. से शुक्र शत्रुराशिस्थ (धनु) होकर शनि के साथ योग करेगा तथा मंग.-गुरु मध्ये षडाष्टक सम्बन्ध रहने से राजनेताओं के राष्ट्र-विरोधी बयानों से देश के लोग क्षुब्ध होंगे। चुनावों की घोषणा होते ही विभिन्न पार्टियों द्वारा विभाजनकारी राजनीति का परिदृश्य उपस्थित किया जाएगा। बांग्लादेशी घुसपैठियों की पहचान व वापिस भेजने,

वरीयता में रहेगा। ता. 7 मार्च, 2019 ई. तक केतु का भारत की प्रभावराशि मकर पर उपस्थिति भारतीय लोकतन्त्र एवं केन्द्रीय सरकार के लिए अत्यन्त कठिन चुनौतियों से भरा समय होगा। भारत की पूर्वी व पश्चिमी सीमाओं पर पाकिस्तानी एवं चीनी सेनाओं की आक्रामक गतिविधियाँ भारतीय प्रभुसत्ता एवं अस्मिता के लिए गम्भीर चुनौतियां बनकर उभरेंगी। ता. 7 मार्च से द्वितीय भाव में शनि-केतु योग तथा 29 मार्च से 22 अप्रैल, 2019 ई. तक गुरु-शनि-केतु योग द्वितीय भाव (राष्ट्र की आर्थिक स्थिति का भाव) में होगा। इसी समय के लगभग देश में लोकसभा के चुनाव हो रहे होंगे। फलत: दोषपूर्ण आर्थिक नीतियों के कारण अन्तर्राष्ट्रीय बाज़ार में डालर के मुकाबले रुपये का अवमूल्यन और अधिक बढ़ेगा। दैनिक उपयोग व उपभोग्य वस्तुओं के मूल्यों में ज़बरदस्त तेजी हो जाने से सामान्य लोगों का जीवन दूभर हो जाएगा। सर्वप्रकार के खाद्यान्न, चावल, पैट्रोल, डीज़ल, रसोई गैस, बिजलीदर, दूध, फल आदि उपभोग्य वस्तुओं के दाम सामान्य लोगों की पहुँच से दूर होते जाएंगे। पाकिस्तानी सैनिक आतंकवादी तत्त्वों से मिलकर भारतीय सीमाओं पर सैनिकों को क्षति पहुँचाने की ताक में रहेंगे। इन सब अनेक कारणों से लोगों में सरकार के प्रति विश्वसनीयता घटेगी।

स्वतन्त्र भारत के 73वें वर्ष की कुण्डली में (15 अगस्त, 2019 ई.) में तुला लग्न उदित हुआ है। वर्ष-लग्नेश एवं मुंथेश शुक्र दशम भाव (प्रशासन, प्रधानमन्त्री, संसद सम्बन्धी कार्यों का भाव) में शत्रु राशिगत होकर सूर्य एवं बुध के साथ स्थित है। मुंथा भी अष्टम भाव में विपरीत परिस्थितियों की ओर संकेत कर रही है। नवगठित गठबन्धन सरकार को विशेष क्लिष्ट एवं पेचीदा समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। भारत-सरकार के लिए चुनौतियों से भरा एवं अग्नि-परीक्षा जैसा होगा। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों का पूंजी आधार बढ़ाने पर विशेष नीतिगत घोषणाएं होंगी। परन्तु सत्तापक्ष एवं विपक्ष की विचारधाराओं में ज़बरदस्त मतभेद देखने को मिलेगा। वस्तुत: भारतीय राजनीति में राष्ट्रहित को प्राथमिकता देने के लिए अभी साहस, समर्पण और सद्बुद्धि की कमी रहेगी तथा संकल्पशक्ति का अभाव रहेगा। एक गुणात्मक परिवर्तन की आवश्यकता होगी। राजनीति में नेताओं के परस्पर विरोधी एवं राष्ट्र-विरोधी बयानों से वाद-विवाद बढ़ेंगे। भारत की प्रभावराशि मकर पर चन्द्रमा तथा उस पर सूर्य, बुध, शुक्र की शुभाशुभ दृष्टियां रहने से आगामी वर्ष भी प्रधाननेता के लिए असमंजसपूर्ण एवं विवशतापूर्ण परिस्थितियों वाला रहेगा। अनेक अवरोधों एवं समस्याओं के बावजूद नव गठबन्धन सरकार द्वारा नई विकास योजनाओं की घोषणाएं की जाएंगी।

सन् 2019 ई. में ग्रहगोचर और भारतवर्ष

वर्षारम्भ पौष मास (23 दिसम्बर, 2018 ई. से 21 जनवरी, 2019 ई.) में पाँच रविवार, पाँच सोमवार होने, ता. 1/2 जनवरी को सूर्य-शनि अंशात्मक युति, वृश्चिक राशि में गुरु-शुक्र योग केन्द्रीय नेतृत्व के सामने कठिन चुनौती प्रस्तुत करेगा। राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विशेष राजनीतिक घटनाक्रम एवं साम्प्रदायिक व विस्फोटक हालात बनेंगे। देश के कुछ राज्यों जैसे अयोध्या (उ.प्र.), मध्यप्रदेश, असम, उड़ीसा, प. बंगाल आदि पूर्वी प्रदेशों में हिंसक एवं विस्फोटक घटनाएं घटित होंगी। कहीं अग्निकाण्ड या प्राकृतिक प्रकोप घटित होने का भय हो-

अयोध्या-मध्यदेशे लंकापुरे च क्षुधाभयं शस्त्रं करोति।।

(राम-मन्दिर निर्माण मुद्दा ज्वलन्त रूप से सत्ता-विपक्ष के मध्य टकराव का केन्द्रबिन्दु रहेगा।) **माघ मास** (22 जनवरी से 19 फरवरी, 2019 ई.) में पाँच मंगलवार होने, माघ कृष्ण प्रतिपदा का क्षय होना, 29 जन. से शुक्र का शत्रु (धनु) राशि में आकर शनि के साथ योग करने से देश के किसी प्रमुख नेता के लिए अनिष्टकर एवं अशुभ समय होगा। देश में चुनावी माहौल में अग्निकाण्ड, हिंसक एवं विस्फोटक घटनाएं अधिक होंगी। केन्द्रीय मन्त्रीमण्डल अथवा किसी प्रान्त में सत्ता-परिवर्तन (या छत्रभंग) के भी संकेत हैं। आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में वृद्धि से प्रजा में आक्रोश एवं गहन असन्तोष रहे।

फाल्गुन मास (20 फरवरी से 21 मार्च) में पाँच बुध एवं पांच बृहस्पतिवार होने, मंगल-गुरु मध्य षडाष्टक योग, 7 मार्च से राहु मिथुन व केतु धनु में संचार, 13 फर. से 14 मार्च तक सूर्य पर शनि की दृष्टि के फलस्वरूप देश का राजनीतिक एवं सामाजिक वातावरण अत्यन्त विक्षुब्ध, अशान्त व पेचीदा बन जाएगा। सत्तारूढ़ तथा विपक्षी पार्टियों के मध्य आरोप-प्रत्यारोप लगेंगे।

चैत्र मास (22 मार्च से 19 अप्रै.) में पाँच शुक्रवार होने, 22 मार्च से मंगल-गुरु मध्य समसप्तक योग, 29 मार्च से 22 अप्रै. गुरु-शनि-केतु योग तथा रविवारी मेष संक्रान्ति देश का राजनैतिक वातावरण बहुत ही अनिश्चित एवं असमंजसपूर्ण बना देंगे। **इस समय देश भर में लोकसभा चुनावों के रणक्षेत्र में आरोप-प्रत्यारोप की दावाग्नि में पूरे देश में विस्फोटक माहौल रहेगा।** देश के कुछ भागों में अग्निकाण्ड, विस्फोट व उपद्रव भी होंगे।

वैशाख मास (20 अप्रै. से 18 मई) में पाँच शनिवार होने, 30 अप्रैल को शनि वक्री, 4 मई को शनिवारी अमावस आने से लोकसभा चुनावों के नतीजों से पहिले तक सत्तारूढ़ व विपक्षी दलों के नेताओं में परस्पर टकराव व खींचातानी बढ़ेगी। सत्तारूढ़ एनडीए गठबन्धन की विभिन्न पार्टियों में आपसी सामंजस्य की कमी व तनाव रहे। देश के कुछ भागों में गृहयुद्ध जैसे हालात बनेंगे। कहीं दुर्भिक्ष एवं कहीं सीमावर्ती क्षेत्रों में युद्ध का आतंक छाया रहेगा-

''शनि वक्रे दुर्भिक्षं च राज्ञां युद्धं परस्परम्। रूण्ड-मुण्ड च मेदिनीम्।'

जातीय उत्पाद और साम्प्रदायिक दंगे बढ़ेंगे। कहीं राज्य-परिवर्तन एवं कहीं राजनीतिक अस्थिरता का वातावरण बने। नए-नए राजनैतिक गठबन्धन व गठजोड़ बनने के बावजूद अनिश्चितता का वातावरण बनेगा।

ज्येष्ठ मास (19 मई से 17 जून) में पांच रविवार तथा पाँच सोमवार होने, 7 मई से 22 जून तक **मंगल-राहु योग,** 15 जून को शनिवारी आषाढ़ संक्रान्ति, मंगल-शनि मध्य समसप्तक

दृष्टि सम्बन्ध बनने से राजनेताओं के मध्य परस्पर टकराव, विरोध तथा प्रतिष्ठा व साख का युद्ध होगा। लोकसभा चुनावों पश्चात् नवीन गठबन्धन बनेंगे। केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल के लिए अनिष्टकर समय होगा। अर्थात् केन्द्रीय मंत्रीमण्डल का नया सुरूप देखने को मिलेगा–

राहुरंगारकश्च राशि ऋक्षगतौ तदा।
भयाभयं सस्यानां न च वृष्टि प्रजायते।।

आषाढ़ मास (18 जून से 16 जुलाई तक) में पाँच मंगलवार घटित होने, 15 जून से 16 जुला. तक सूर्य-शनि तथा गुरु-शुक्र मध्ये समसप्तक योग, सूर्य-राहु योग होने से किसी प्रधाननेता के अपदस्थ या आकस्मिक मृत्यु होने के संकेत हैं। देश के किसी क्षेत्र विशेष में छत्रभंग (सत्ता-परिवर्तन), अग्निकाण्ड, उपद्रव, साम्प्रदायिक दंगे, तनाव एवं हिंसक घटनाएं घटित होने के योग हैं। सरकार कोई अप्रत्याशित निर्णय भी ले सकती है।

श्रावण मास (17 जुला. से 15 अगस्त) में पाँच बुध व पाँच बृहस्पतिवार होने, 23 जुला. से 29 जुला., पुनः 3 अग. से 7 अग. तक सू., मं., बु., शु. आदि ग्रहों का चतुर्ग्रही योग देश के कुछ राज्यों में प्राकृतिक आपदा, अनावृष्टि से भारी जन-धनादि की हानि हो। प्राकृतिक आपदाओं से ग्रस्त प्रजा के प्रति सरकारी उदासीनता रहे। कहीं छत्रभंग हो। देश के कुछ क्षेत्रों में वर्षा की कमी रहे।

भाद्रपद मास (16 अग. से 14 सितं.) में पाँच शुक्र तथा पाँच शनिवार, **चतुर्ग्रही योग** होने से मिश्रित प्रभाव होंगे। जनसंख्या में वृद्धि, विदेशी निवेश, शेयर-बाज़ार में तेजी तथा धन के प्रचार-प्रसार में वृद्धि होगी। मुद्रा-स्फीति का प्रसार बढ़े तथा जनोपयोगी आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में तेजी तथा पूर्वोत्तर दिशा में कहीं राज्यभंग, अग्निकाण्ड का भय हो।

आश्विन मास (15 सितम्बर से 13 अक्तूबर) में पाँच रविवार होने, सूर्य-मंगल का शनि के साथ 4-10 दृष्टि सम्बन्ध, 25 से 29 सितं. चतुर्ग्रही योग होने से कहीं छत्रभंग, राजनैतिक अस्थिरता एवं राजनैतिक गतिरोध पैदा होने का भय है। 28 सितं. को शनिवारी अमावस्या के कारण पैट्रोल आदि कुछ वस्तुओं में भयंकर तेजी, राजनीतिक एवं सामाजिक क्षेत्र में अति स्वार्थपरता के कारण साम्प्रदायिकता, कट्टरवाद का फैलाव तथा चारित्रिक मूल्यों का ह्रास होगा।

कार्तिक मास (14 अक्तूबर से 12 नवम्बर) में पाँच मंगलवार, मंगल-शनि मध्ये दृष्टि-सम्बन्ध (4-10), होने से कहीं छत्रभंग, पदच्युति एवं किसी प्रधाननेता का आकस्मिक निधन हो। सरकार एवं विपक्षी पार्टियों के मध्य वाद-विवाद एवं आरोप-प्रत्यारोप एक नए शिखर तक पहुँच जाएंगे।

मार्गशीर्ष मास (13 नवम्बर से 12 दिसम्बर) में पाँच बुध एवं पाँच बृहस्पतिवार होने, 16 नवं. को शनिवारी संक्रान्ति, 21 नवं. से 15 दिसम्बर, 2019 ई. तक **'चतुर्ग्रही योग'** बनने से कुछ प्रदेशों में उपयुक्त वर्षा की कमी रहे, सत्तारूढ़ राजनेताओं अर्थात् राष्ट्राध्यक्षों को आन्तरिक एवं बाह्य शत्रुओं में भय हो।

आगे 25 दिसं. से **पंचग्रही योग** तथा **पौष मास** (13 दिसम्बर, 2019 ई. से 10 जनवरी, 2020 ई.) में पाँच शुक्रवारों के प्रभावस्वरूप सम्भ्रांत लोगों में धन का प्रसार बढ़ेगा, सरकारी योजनाओं का लाभ एक विशेष वर्ग को ही प्राप्त होगा। पड़ोसी देशों के साथ सम्बन्ध तनावपूर्ण एवं युद्ध-जन्य माहौल रहेगा। छद्म एवं वैचारिक (मनोवैज्ञानिक) युद्ध खेलने का प्रयास किया जाएगा।

केन्द्र में भाजपा गठबन्धन सरकार के योग

[प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की जन्मकुण्डली की विवेचना एवं विश्लेषण हम गत वि. संवत् २०७१, २०७२, २०७३ में विशेष रूप से कर चुके हैं, वहाँ अवश्य देखना चाहिए।]

वर्तमान में तथा आगामी वर्ष भी श्रीमोदी की जन्म राशि एवं जन्मलग्न पर शनि-साढ़ेसाती का अशुभ प्रभाव रहेगा। चन्द्रमा जन्मकुण्डली में नीचस्थ परन्तु केन्द्रस्थ होकर योगकारक है। मंगल लग्नेश होकर लग्न भाव में ही स्वराशिगत हो एवं भाग्येश चन्द्रमा के साथ होकर लग्न भावस्थ होने से महापुरुष योगों में से रुचक नामक शुभ योग बनता है। वृश्चिक लग्न में भाग्येश चन्द्रमा की महादशा/अन्तर्दशा विशेष रूप से शुभ भाग्योदय-कारक होती है। गुरु-शुक्र-शनि ग्रह केन्द्र भावस्थ है।

जन्मकुण्डली श्री नरेन्द्र मोदी
17 सितम्बर, 1950 ई.
11घं.-00मि. AM, महेसाना (गुज.)

कुण्डली स्थापना
भाजपा
6-04-1980, 11:40 A:M

जातक-पारिजात ग्रन्थानुसार यदि नवमेश, लाभेश, धनेश उनमें से एक भी चन्द्रमा से केन्द्र में हो तो जातक को अखण्ड राज्य का पति बनावें–

धर्मेशलाभेश धनेश्वराणामेकोऽपि शीतद्युतिकेन्द्रवर्ती। अखण्ड साम्राज्य-पति त्वमेति।।

6 अक्तूबर, 2017 ई. से 6 मार्च, 2019 ई. तक मोदी जी पर चन्द्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा चल रही है। शनि केन्द्रस्थ परन्तु शत्रुराशिगत भी है तथा साढ़ेसाती का प्रभाव भी है। अतः संघर्ष, परेशानियों तथा उलझनों के पश्चात् विधानसभा (राजस्थान, म.प्र., ३६गढ़) चुनावों में किंचित सफलता ही मिल पाएगी। 22 अप्रैल, 2019 ई. से गुरु गोचरस्थ वृश्चिक राशिस्थ आकर भाग्य भाव को उच्च दृष्टि से देखेगा। इस ग्रहयोग के प्रभाव से श्री मोदी जी को पुनः उच्च पद (प्रधानमंत्री) प्राप्त हो सकता है। श्रीनरेन्द्र मोदी जी की साख अभी तथा अगले वर्ष भी मजबूत रहेगी। गोचर में गुरु लग्नस्थ संचार करने से श्री मोदी जी की वैश्विक छवि की प्रभा एवं आभा कायम रहेगी।

लोकसभा चुनाव—सन् 2019 ई.

आगामी नवम्बर-दिसम्बर में चार राज्यों के विधानसभा एवं सन् 2019 ई. के लोकसभा चुनावों के परिणाम आश्चर्यजनक एवं अप्रत्याशित होंगे। भारी उल्टफेर भरे परिणाम सामने आएंगे। भाजपा या अन्य किसी पार्टी का स्वतन्त्र रूप से बहुमत या अधिक सीटें प्राप्त करना संदिग्ध रहेगा। कुछ क्षेत्रों (उ.प्र., बिहार आदि) में भाजपा तथा तथाकथित महागठबन्धन की पार्टियों में कांटे की टक्कर होगी। परन्तु भाजपा गठबन्धन को अपेक्षाकृत अधिक सीटें मिलेंगी। अपनी दोषपूर्ण नीतियों एवं अन्तर्कलह के कारण भाजपा सरकार को अनेक प्रान्तों में हार का सामना करना पड़ेगा। जबकि प. बंगाल, असम, कर्नाटक, गुजरात, पूर्वी राज्यों में भाजपा की सीटें एवं वोट प्रतिशत बढ़ेगा भी। केन्द्र में पुन: एक बार गठबन्धन सरकार के ही अस्तित्व में आने के योग बनेंगे, चाहे वो भाजपा तथा उसकी सहयोगी पार्टियों (एनडीए) की हो अथवा विभिन्न क्षेत्रीय दलों को मिलाकर बने महागठबन्धन का नेतृत्व कर रही कांग्रेस की।

परन्तु ग्रहयोग अनुसार श्रीनरेन्द्र मोदी जी के ही पुन: प्रधानमन्त्री बनने के प्रबल योग बन रहे हैं। बहुत कुछ चुनाव पश्चात् गठबन्धन राजनीति पर निर्भर करेगा। परन्तु नवीन सरकार का रूप, रंग गत भाजपा प्रणीत सरकार से भिन्न ही होगा अर्थात् चुनावों के पश्चात् नव-गठबन्धन सरकार अस्तित्व में आएगी।

कांग्रेस पार्टी तथा PM के दावेदार श्री राहुल—गांधी

श्री राहुल गांधी जी की जन्म कुण्डली में वृष लग्न उदित है। लग्नेश शुक्र तृतीय भाव में शत्रुराशिगत होकर सूर्य-मंगल तथा केतु ग्रहों के मध्य पापाक्रान्त स्थिति में है, जोकि जातक को सदैव किसी-न-किसी क्लिष्ट समस्याओं में उलझाए रखने की ओर प्रवृत्त रखता है। द्वितीयेश एवं पंचमेश बुध लग्न भाव में वर्गोत्तम स्थिति में होने से जातक का आकर्षक व्यक्तित्व, तीव्र बुद्धि तथा नई-नई योजनाएं बनाने में कुशल तथा उच्चाभिलाषी होगा। वर्तमान में 21-03-2018 ई. से 9 अप्रैल, 2019 ई. तक मंगल की महादशा में राहु की अन्तर्दशा रहेगी। इस दशाकाल में राहुल-गाँधी को कुछ समविचारक दलों के महागठबन्धन में ताकतवर तथा अहंकारी नेताओं के साथ काम करने तथा उनका दिल जीतने के लिए विशेष संघर्ष एवं उलझनों का सामना करना पड़ेगा। प्रत्येक पार्टी द्वारा अलग-अलग बयान तथा स्वर बदलने से महागठबन्धन की परिकल्पना एवं यथार्थ कुछ राज्यों तक ही सीमित होगा। यद्यपि नवम्बर, 2018 ई. में छ.ग., म.प्र., राजस्थान में कांग्रेस की चुनावी उपलब्धियों को देखते हुए कुछ सहयोगी एवं नए राजनीतिक दल कांग्रेस पार्टी के साथ आने के लिए तत्पर हो जाएंगे।

कुण्डली कांग्रेस पार्टी
22-11-1969
9:57 A:M, बैंगलोर

कुण्डली श्रीराहुल गाँधी
19-06-1970 ई., 5:05AM

9 अप्रैल, 2019 ई. के पश्चात् मंगल मध्ये गुरु की अन्तर्दशा रहेगी। गुरु षष्ठस्थ शत्रुराशिगत है तथा इसके अतिरिक्त श्री राहुल गाँधी वर्तमान काल में शनि-साढ़ेसति के अशुभ प्रभाव में से गुज़र रहे हैं, क्योंकि शनि इनकी जन्म कुं. में नीचराशिगत तथा नवांश कुं. में शत्रु (वृश्चिकस्थ) राशिगत है। फलस्वरूप उपरोक्त ज्योतिषीय कारणों से श्री राहुल गाँधी का अभी प्रधानमन्त्री पद पर प्रतिष्ठित होना संदिग्ध लगता है।

कांग्रेस पार्टी की कुण्डली में शनि लग्नस्थ होकर वर्षभर संचार करेगा, परन्तु लग्नेश गुरु द्वादश भाव में होने से अथक प्रयासों के बावजूद सत्ता के द्वार तक पहुँचना कठिन होगा। यद्यपि कांग्रेस अपनी संयम-सकारात्मकता की राजनीतिक पूंजी के बल पर कुछ राज्यों में सत्ता प्राप्त करने में अवश्य सफल होगी। परन्तु लोकसभा के चुनावी युद्ध के मैदान में न केवल राहुल-गाँधी के चातुर्य की बल्कि कांग्रेस की संगठनात्मक शक्ति की भी जरूरत होगी।

ग्रहयोग अनुसार महागठबन्धन में निजी आकांक्षाएं प्रबल एवं भिन्न-भिन्न स्वर होने से यह रणनीतिक गठजोड़ अधिक देर कर सफल नहीं हो पाएगा तथा सत्तारूढ़ भाजपा गठबन्धन अन्य दलों का समर्थन येन-केन प्रकारेण प्राप्त कर सकता है।

★ भारत के कुछ मुख्य प्रान्त ★

हिमाचल प्रदेश—इसकी **प्रभाव राशि मीन** तथा **नाम राशि कर्क** है। 72वें स्वतन्त्र भारत की कुण्डली में इसकी नाम राशि कर्क लग्न का ही उदय होना तथा उस पर सूर्य, बुध, राहु ग्रहों का संचार एवं मंगल की नीच दृष्टि रहने से इस वर्ष (15 अगस्त, 2018 ई. के बाद) तथा अगले वर्ष विषम परिस्थितियों की ओर संकेत कर रहे हैं। राशिस्वामी गुरु भी शत्रु राशिगत है। गणतन्त्र दिवस कुं. में भी इसकी नाम राशि पर राहु का संचार है। आगामी वर्ष लोकसभा चुनावों में दोनों मुख्य पार्टियों में कांटे की टक्कर के बाद भाजपा को अल्पान्तर से ही सफलता प्राप्ति के योग हैं। आने वाले समय में भाजपा राज्य-सरकार की कारगुजारी और केन्द्र तथा राज्य सरकार की नीतियों, योजनाओं तथा कार्यक्रमों को धरातल पर सरंजाम देने का प्रयास करेगी। विपक्ष (कांग्रेस) भाजपा की केन्द्र तथा राज्य में बेरोज़गार युवाओं को रोज़गार दे पाने में विफलता, कानून व्यवस्था की चरमराई व्यवस्था, शासनतंत्र के हर स्तर पर स्थानांतरणों का सिलसिला न थमना, नशीले पदार्थों का प्रचलन, अवैध खनन का धंधा, बदहाल हुई सड़कों, किसानों-बागवानों को हुए नुक्सान की भरपाई, केन्द्र सरकार से तथा साथ लगते राज्यों से प्रदेश के हक हासिल कर पाने में श्रीजयराम ठाकुर की विफलता जैसे अनेक मुद्दे उठाए जाएंगे। इस सारे परिप्रेक्ष्य में प्रदेश में बड़ी राजनीतिक गहमागहमी रहेगी।

गतवर्ष इसी कॉलम के अन्तर्गत पृष्ठ-79 पर राज्य के विधानसभा चुनावों सम्बन्धी भविष्यवाणी स्पष्टतः पढ़ें, जो अक्षरशः सत्य सिद्ध हुई-''**भाजपा पार्टी के ही सशक्त रूप से विजयी होने के योग बनेंगे।**'

पंजाब–इसकी **नाम राशि कन्या** तथा **प्रभावराशि मीन** है। 72वें स्वतन्त्रता दिवस कुं. में शुक्र नीचस्थ अवस्था में इस राशि पर तथा शनि की विशेष दृष्टि (ढैय्या) भी है। गोचर-ग्रहस्थिति अनुसार वर्तमान कांग्रेस सरकार को विशेष आर्थिक समस्याओं व चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। लोकसभा चुनावों से पूर्व यद्यपि कैप. अमरेन्द्र सिंह (कांग्रेस) सरकार कई नए प्रोजैक्टों तथा लोकलुभावन योजनाओं की घोषणा करेगी परन्तु ऊर्जा (बिजली) के क्षेत्र में मांग एवं सप्लाई का असन्तुलन होने के कारण साधारण जनता तथा औद्योगिक क्षेत्र से विरोध का सामना करना पड़ेगा। राज्य के मंत्रीमण्डल में अन्तर्विरोध, टैक्सों, बिजली (ऊर्जा) समस्या, ड्रग्ज़, कृषि-ऋण के कारण किसानों द्वारा आत्म-हत्याएं, लूट आदि समस्याओं के कारण प्रजा में गहन असन्तोष रहे। आगामी लोकसभा चुनावों में अकाली दल के साथ कांटे की टक्कर के बाद मध्यम रूपेण सफलता ही प्राप्त होगी।

जम्मू-कश्मीर–**प्रभाव राशि तुला** तथा **नाम राशि मकर** है । नव स्वतन्त्रता दिवस. कुं. में तुला राशि पर गुरु का संचार तथा मकर राशि पर मंगल-केतु का संचार कश्मीर क्षेत्र में पेचीदा परिस्थितियों के मध्य जम्मू-कश्मीर का राजनीतिक एवं व्यवसायिक वातावरण विक्षुब्ध एवं अशान्त रहेगा। पाक समर्थित आतंकवादियों द्वारा घुसपैठ एवं हिंसक घटनाओं में वृद्धि होना तथा पाकिस्तान की नवीन सरकार द्वारा कश्मीर समस्या को पुनः बार-बार अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर उठाने का प्रयास करना तथा कश्मीरी युवाओं द्वारा सैनिकों/पुलिस पर नफरत रूपी पत्थर फैंकना इत्यादि विकट समस्याएं केन्द्रीय सत्तारूढ़ सरकार के लिए चुनौतीपूर्ण रहेंगी। लोकसभा चुनावों में श्रीफारुख अब्दुल्ला के नैशनल फ्रंट गठबन्धन को अपेक्षाकृत यथेष्ठ सफलता प्राप्त होगी। जम्मू क्षेत्र में भाजपा-कांग्रेस में कांटे की टक्कर, जबकि पी.डी.पी. का प्रभाव कमज़ोर होगा।

दिल्ली–72वें स्वतन्त्र दिवस कुण्डली में दिल्ली की **प्रभाव राशि मकर** पर मंगल-केतु का संचार तथा नव-गणतन्त्र दिवस (26-01-2019 ई.) कुण्डली में सूर्य-बुध-केतु का संचार है। फलस्वरूप दिल्ली राजनीतिक गतिविधियों का केन्द्र बना रहेगा। लोकसभा चुनावों से पूर्व तथा बाद में भी क्षेत्रीय पार्टियों के भाजपा नीत एनडीए तथा कांग्रेस प्रणीत (यूपीए) के साथ नए-नए समीकरण तथा गठजोड़ बनेंगे। दिल्ली राज्य में सत्तारूढ़ '**आप**' सरकार को काफी कठिन समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। बढ़ती जनसंख्या, बढ़ती यातायात प्रदूषण की समस्या विकराल रूप धारण कर लेंगी। दिल्ली राज्य में भाजपा सशक्त पार्टी के रूप में उभरेगी। कांग्रेस का प्रभावक्षेत्र भी बढ़ेगा। सीलिंग आदि समस्याओं को आंशिक रूप से हल करने के बावजूद सत्तारूढ़ '**आप' पार्टी** के लिए प्रतिष्ठा एवं वर्चस्व को बनाए रखना कठिन होगा।

हरियाणा–**प्रभावराशि मीन** तथा **नाम राशि मिथुन** है। 72वें स्वतन्त्रता दिवस कुण्डली में मीन राशि भाग्य भाव में आने से (15 अगस्त, 2018 ई. के बाद) सत्तारूढ़ भाजपा सरकार द्वारा लोकसभा चुनावों से पूर्व जनता को आकर्षित करने हेतु अनेक लोकलुभावन योजनाओं की घोषणाएं की जाएंगी। परन्तु 7 मार्च, 2019 ई. से हरियाणा की नाम राशि मिथुन पर राहु का संचार तथा गणतन्त्र दिवस कुं. में मिथुन राशि अष्टमस्थ होने से आगामी लोकसभा चुनावों में भाजपा सरकार को सन् 2014 ई. की भान्ति अपार सफलता नहीं प्राप्त होगी। कांग्रेस तथा इनैलो का प्रभावक्षेत्र बढ़ेगा। सत्तारूढ़ मन्त्रीमण्डल में सामूहिक कार्यशैली का अभाव होगा। सरकार को जनसमस्याओं की ओर विशेष ध्यान देना होगा, अन्यथा परिस्थितियां विकट होंगी।

राजस्थान–प्रभाव राशि **कर्क** तथा नाम राशि **तुला** है। 72वें स्वतन्त्र भारत की कुण्डली में कर्क राशि पर सूर्य-बुध-राहु का संचार तथा मंगल की नीच दृष्टि के प्रभावस्वरूप वर्तमान सत्तारूढ़ भाजपा सरकार को कठिन एवं विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा। गतवर्ष के पंचांग में भी लिखा जा चुका है कि आगामी विधानसभा चुनावों में कांग्रेस की स्थिति सुदृढ़ होगी। यद्यपि भाजपा-कांग्रेस में कांटे की टक्कर दृष्टिगोचर होगी। अन्तर्कलह के कारण भाजपा अपेक्षित सीटें प्राप्त नहीं कर पाएगी। यद्यपि लोकसभा चुनावों में भाजपा की स्थिति इस प्रदेश में सुदृढ़ होगी।

उत्तर-प्रदेश–**प्रभाव राशि धनु** तथा **नाम राशि वृष** है। 70वें गणतन्त्र कुं. में धनु राशि पर शनि तथा मुंथा की स्थिति तथा मुंथेश लग्न भाव में शत्रु ग्रह शुक्र युक्त है। गोचर ग्रहस्थिति अनुसार आगामी वर्ष लोकसभा चुनावों से पूर्व प्रदेश में विभिन्न दलों के चुनावी गठजोड़ होंगे। सपा-बसपा-कांग्रेस तथा अन्य क्षेत्रीय दलों के मध्य बने महागठबन्धन के कारण लोकसभा चुनावों में सत्तारूढ़ भाजपा सरकार को कुछ हानि होगी तथा अपेक्षित सीटें प्राप्त नहीं होंगी। फिर भी भाजपा की स्थिति सुदृढ़ रहेगी। अनेक अवरोधों तथा आरोपों के बावजूद सत्तारूढ़ भाजपा (योगी) सरकार कई नई क्रान्तिकारी एवं प्रगतिपद योजनाओं की घोषणाएं तथा उनके क्रियान्वयन की प्रक्रिया में तेजी की जाएगी।

उपरोक्त भविष्यवाणियां देश, राज्य, स्थानादि की जन्म-कुण्डलियों में ग्रह-स्थिति, दशा एवं गोचर ग्रहों के प्रभाव व संकेतों के आधार पर अपनी अल्प बुद्धि के अनुसार लिपिबद्ध की गई हैं। वास्तव में सर्वश्रेष्ठ भविष्यवेत्ता एवं सर्वज्ञ तो स्वयं ईश्वर ही हैं–

''फलानि ग्रह संचारेण सूचयन्ति मनीषिणः। को वक्तः तारतम्यस्य वेधसं विना।''

लेख लिपिबद्धम्–

श्रावण शुक्ल अष्टमी,

18 अगस्त, शनिवार, 2018 ई.

शुभ चिन्तकः

पं. विवेक शर्मा ज्योतिषी

सुपुत्र श्रद्धेय स्व. पं. पन्ना लाल ज्यो.,

अड्डा होशियारपुर, जालन्धर (पंजाब)

सूर्यादि ग्रहों का राशि प्रवेश, वक्री-मार्गी एवं उदयास्त (घं. मिं.) (सन् 2019-20 ई.)

सूर्य राशि प्रवेश

ता. मास	राशि	घं. मिं.	ता. मास	राशि	घं. मिं.
14 जन.	मकर	19/50	17 अग.	सिंह	13/01
13 फर.	कुम्भ	8/47	17 सितं.	कन्या	13/02
14 मार्च	मीन	29/39	17 अक्तू.	तुला	25/02
14 अप्रै.	मेष	14/08	16 नवं.	वृश्चिक	24/50
15 मई	वृष	11/00	16 दिसं.	धनु	15/27
15 जून	मिथुन	17/37	14 जन.(20)	मकर	26/07
16 जुला.	कर्क	28/32	13 फर.	कुम्भ	15/03
			14 मार्च	मीन	11/53

मंगल राशि प्रवेश (संवतारम्भ में वृष में)

ता. मास	राशि	घं. मिं.	ता. मास	राशि	घं. मिं.
7 मई	मिथुन	6/53	10 नवं.	तुला	14/23
22 जून	कर्क	23/21	25 दिसं.	वृश्चिक	21/27
8 अग.	सिंह	28/46	7 फर.(20)	धनु	27/50
25 सितं.	कन्या	6/31	22 मार्च	मकर	14/39

बुध राशि प्रवेश (संवतारम्भ में कुम्भ में)

ता. मास	राशि	घं. मिं.	ता. मास	राशि	घं. मिं.
11 अप्रै.	मीन	28/21	29 सितं.	तुला	12/56
3 मई	मेष	16/59	23 अक्तू.	वृश्चिक	23/21
18 मई	वृष	23/34	31 अक्तू.	वक्री	21/08
1 जून	मिथुन	24/19	7 नवं.	व. तुला	15/25
20 जून	कर्क	26/29	20 नवं.	मार्गी	24/38
7 जुला.	वक्री	28/42	5 दिसं.	वृश्चिक	10/31
30 जुला.	व. मिथुन	13/26	25 दिसं.	धनु	15/44
1 अग.	मार्गी	9/26	13 जन.(20)	मकर	11/34
3 अग.	कर्क	5/52	30 जन.	कुम्भ	26/53
26 अग.	सिंह	14/06	17 फर.	वक्री	6/20
10 सितं.	कन्या	28/59	10 मार्च	मार्गी	9/16

गुरु राशि प्रवेश (संवतारम्भ में धनु में)

ता. मास	राशि	घं. मिं.	ता. मास	राशि	घं. मिं.
10 अप्रै.	वक्री	22/28	11 अग.	मार्गी	19/04
22 अप्रै.	व. वृश्चिक	25/02	4 नवं.	धनु	29/16

शुक्र राशि प्रवेश (संवतारम्भ में कुम्भ में)

ता. मास	राशि	घं. मिं.	ता. मास	राशि	घं. मिं.
15 अप्रै.	मीन	25/02	23 जुला.	कर्क	12/49
10 मई	मेष	19/05	16 अग.	सिंह	20/39
4 जून	वृष	11/20	9 सितं.	कन्या	25/40
28 जून	मिथुन	25/33	3 अक्तू.	तुला	29/13

शुक्र राशि प्रवेश

ता. मास	राशि	घं. मिं.
28 अक्तू.	वृश्चिक	8/31
21 नवं.	धनु	12/22
15 दिसं.	मकर	17/57
(सन् 2020 ई.)		
8 जन.	कुम्भ	28/22
2 फर.	मीन	26/17
28 फर.	मेष	25/32

—शनि राशि प्रवेश—

(संवतारम्भ धनु में)

ता. मास	राशि	घं. मिं.
30 अप्रै.	वक्री	6/20
18 सितं.	मार्गी	14/15
24 जन.(20)	मकर	9/53

—मध्यम राहु राशि प्रवेश—

(संवतारम्भ में मिथुन में)

सम्पूर्ण संवत् मिथुन राशि में संचार करेगा।

—मध्यम केतु राशि प्रवेश—

(संवतारम्भ में धनु में)

सम्पूर्ण संवत् धनु राशि में संचार करेगा।

—यूरेनस—

सम्पूर्ण संवत् मेष राशि में संचार करेगा।

—नैपच्यून—

सम्पूर्ण संवत् कुम्भ राशि में संचार करेगा।

—प्लूटो—

(संवतारम्भ में धनु में)

25 फर.(20) मकर 11/33

ग्रहों का वक्री-मार्गी

मंगल

मार्गी अवस्था में संचार करेगा।

बुध

7 जुला.	वक्री	28/42
1 अग.	मार्गी	9/26
31 अक्तू.	वक्री	21/08
20 नवं.	मार्गी	24/38
17 फर.(20)	वक्री	6/20
10 मार्च	मार्गी	9/16

गुरु

10 अप्रै.	वक्री	22/28
11 अग.	मार्गी	19/04

शुक्र

मार्गी अवस्था में ही संचार करेगा।

शनि

30 अप्रै.	वक्री	6/20
18 सितं.	मार्गी	14/15

यूरेनस

12 अग.	वक्री	7/55
11 जन.(20)	मार्गी	7/16

नैपच्यून

21 जून	वक्री	20/06
27 नवं.	मार्गी	18/06

प्लूटो

24 अप्रै.	वक्री	24/10
3 अक्तू.	मार्गी	12/05

ग्रहों का उदय-अस्त (वि. संवत् २०७६)

मंगल

11 जुला.	पश्चि. अस्त	28/36
23 अक्तू.	पूर्वोदय	6/36

बुध

10 मई	पूर्व में अस्त	5/17
1 जून	पश्चिम में उदय	20/25
13 जुला.	व. पश्चिम अस्त	21/05
29 जुला.	व. पूर्वोदय	19/23
22 अग.	पूर्व में अस्त	5/56
20 सितं.	पश्चिम-उदय	18/05
6 नवं.	व. पश्चिम-अस्त	6/52
17 नवं.	व. पूर्व-उदय	17/24
18 दिसं.	पूर्व में अस्त	5/16

बुध (सन् 2020 ई.)

29 जन.	पश्चिम में उदय	17/56
19 फर.	व. पश्चिम-अस्त	18/14
3 मार्च	व. पूर्व में उदय	6/57

गुरु

15 दिसं.	पश्चिम में अस्त	17/15
10जन.(20)	पूर्व में उदय	7/32

शुक्र

19 जुला.	पूर्व में अस्त	19/28
29 सितं.	पश्चिम में उदय	18/12

शनि

27 दिसं.	पश्चिम में अस्त	29/28
30 जन.(20)	पूर्वोदय	17/57

ग्रहों की मध्यम, शीघ्र, अतिचारी गति

ग्रह	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मध्यम	31′-26″	59′-08″	5′-00″	59′-08″	2′-00″
शीघ्र	39′-01″	104′-46″	12′-22″	73′-43″	5′-27″
परमशीघ्र	46′-11″	113′-32″	14′-04″	75′-42″	7′-45″

ध्यान दें—मध्यम गति से कम गति हो तो मन्द गति, शीघ्र गति से कम हो तो मध्यम गति, परमशीघ्र गति से कम हो तो शीघ्र गति एवं परमशीघ्र गति से अधिक गति हो तो ग्रह '**अतिचारी**' कहलाता है। यहाँ '**गति**' से अभिप्राय ग्रह की दैनिक गति से है। 24 घण्टे में ग्रह जितना आगे या पीछे चलता है, उसे ग्रह की '**दैनिक गति**' कहते हैं।

ग्रहों का नक्षत्र-चरण प्रवेश—संवत् २०७६ वि. (सन् 2019-20 ई.)

सूर्य नक्षत्र प्रवेश

2019 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
7 अप्रै.	रेव. (3)	19/10
10 अप्रै.	रेव. (4)	28/34
14 अप्रै.	अश्वि(1)मेष	14/08
17 अप्रै.	अश्वि (2)	23/53
21 अप्रै.	अश्वि. (3)	9/48
24 अप्रै.	अश्वि. (4)	19/52
28 अप्रै.	भर. (1)	6/02
1 मई	भर. (2)	16/21
4 मई	भर. (3)	26/48
8 मई	भर. (4)	13/44
11 मई	कृति.(1)	24/07
15 मई	कृति. (2) वृष	11/00
18 मई	कृति. (3)	22/02
22 मई	कृति. (4)	9/11
25 मई	रोहि. (1)	20/25
29 मई	रोहि. (2)	7/45
1 जून	रोहि. (3)	19/09
5 जून	रोहि. (4)	6/38
8 जून	मृग. (1)	18/12
12 जून	मृग. (2)	5/52
15 जून	मृग 3 मिथुन	17/37
18 जून	मृग. (4)	29/26
22 जून	आर्द्रा(1)	17/18
25 जून	आर्द्रा(2)	29/10
29 जून	आर्द्रा (3)	17/03
2 जुला.	आर्द्रा (4)	28/56
6 जुला.	पुन. (1)	16/49
9 जुला.	पुन. (2)	28/43
13 जुला.	पुन. (3)	16/38
16 जुला.	पुन. 4 कर्क	28/32
20 जुला.	पुष्य (1)	16/26
23 जुला.	पुष्य (2)	28/15
27 जुला.	पुष्य (3)	16/00
30 जुला.	पुष्य (4)	27/41

2019 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
3 अग.	आश्ले.(1)	15/17
6 अग.	आश्ले.(2)	26/49
10 अग.	आश्ले.(3)	14/14
13 अग.	आश्ले.(4)	25/43
17 अग.	मघा 1 सिंह	13/01
20 अग.	मघा(2)	24/13
24 अग.	मघा(3)	11/17
27 अग.	मघा(4)	22/13
31 अग.	पू.फा.(1)	8/59
3 सितं.	पू.फा.(2)	19/38
7 सितं.	पू.फा.(3)	6/11
10 सितं.	पू.फा.(4)	15/35
13 सितं.	उ.फा.(1)	26/53
17 सितं.	उ.फा.2 कं.	13/02
20 सितं.	उ.फा.(3)	23/00
24 सितं.	उ.फा.(4)	8/47
27 सितं.	हस्त (1)	18/25
30 सितं.	हस्त (2)	27/53
4 अक्तू.	हस्त(3)	13/12
7 अक्तू.	हस्त (4)	22/22
11 अक्तू.	चित्रा (1)	7/25
14 अक्तू.	चित्रा (2)	16/14
17 अक्तू.	चित्रा 3 तुला	25/02
21 अक्तू.	चित्रा (4)	9/35
24 अक्तू.	स्वा. (1)	17/58
27 अक्तू.	स्वा. (2)	26/13
31 अक्तू.	स्वा. (3)	10/17
3 नवं.	स्वा.(4)	18/14
6 नवं.	विशा.(1)	26/03
10 नवं.	विशा.(2)	9/46
13 नवं.	विशा.(3)	17/22
16 नवं.	विशा.4 वृश्चि.	24/50
20 नवं.	अनु.(1)	8/10
23 नवं.	अनु.(2)	15/23
26 नवं.	अनु.(3)	22/32

2019 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
29 नवं.	अनु.(4)	29/28
3 दिसं.	ज्ये.(1)	12/22
6 दिसं.	ज्ये.(2)	19/15
9 दिसं.	ज्ये.(3)	26/02
13 दिसं.	ज्ये.(4)	8/46
16 दिसं.	मूल1धनु	15/27
19 दिसं.	मूल(2)	22/04
22 दिसं.	मूल(3)	28/37
26 दिसं.	मूल(4)	11/06
29 दिसं.	पू.षा.(1)	17/35
(सन् 2020 ई.)		
1 जन.	पू.षा.(2)	24/04
5 जन.	पू.षा.(3)	6/32
8 जन.	पू.षा.(4)	13/03
11 जन.	उ.षा.(1)	19/34
14 जन.	उ.षा.2 मकर	26/07
18 जन.	उ.षा.(3)	8/40
21 जन.	उ.षा.(4)	15/15
24 जन.	श्रव.(1)	21/51
27 जन.	श्रव.(2)	28/29
31 जन.	श्रव.(3)	11/13
3 फर.	श्रव.(4)	18/02
6 फर.	धनि.(1)	24/57
10 फर.	धनि.(2)	7/57
13 फर.	धनि.3 कुम्भ	15/03
16 फर.	धनि.(4)	22/14
19 फर.	शत.(1)	29/29
23 फर.	शत.(2)	12/51
26 फर.	शत.(3)	20/19
29 फर.	शत.(4)	27/55
4 मार्च	पू.भा.(1)	11/42
7 मार्च	पू.भा.(2)	19/37
10 मार्च	पू.भा.(3)	27/41
14 मार्च	पू.भा. 4 मीन	11/53
17 मार्च	उ.भा.(1)	20/12
20 मार्च	उ.भा.(2)	28/40
24 मार्च	उ.भा.(3)	13/16
27 मार्च	उ.भा.(4)	22/01

मंगल नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में कृति (4) में)

2019 ई.	नक्षत्र चरण	घं.मिं.
6 अप्रै.	रोहि.(1)	17/21
11 अप्रै.	रोहि. (2)	18/42
16 अप्रै.	रोहि. (3)	20/26
21 अप्रै.	रोहि.(4)	22/33
26 अप्रै.	मृग.(1)	25/02
1 मई	मृग.(2)	27/48
7 मई	मृग.3 मिथुन	6/53
12 मई	मृग.(4)	10/16
17 मई	आर्द्रा(1)	13/58
22 मई	आर्द्रा(2)	17/59
27 मई	आर्द्रा(3)	22/19
1 जून	आर्द्रा(4)	26/52
7 जून	पुन.(1)	7/39
12 जून	पुन.(2)	12/39
17 जून	पुन.(3)	17/54
22 जून	पुन.4 कर्क	23/21
27 जून	पुष्य(1)	28/57
3 जुला.	पुष्य(2)	10/40
8 जुला.	पुष्य(3)	16/29
13 जुला.	पुष्य(4)	22/26
18 जुला.	आश्ले.(1)	28/29
24 जुला.	आश्ले.(2)	10/35
29 जुला.	आश्ले.(3)	16/41
3 अग.	आश्ले.(4)	22/42
8 अग.	मघा 1 सिंह	28/46
14 अग.	मघा(2)	10/48
19 अग.	मघा(3)	16/45
24 अग.	मघा(4)	22/37
29 अग.	पू.फा.(1)	28/19
4 सितं.	पू.फा.(2)	9/54
9 सितं.	पू.फा.(3)	15/20
14 सितं.	पू.फा.(4)	20/36
19 सितं.	उ.फा.(1)	25/41
25 सितं.	उ.फा. 2 कन्या	6/31
30 सितं.	उ.फा.(3)	11/08

2019 ई.	नक्षत्र चरण	घं.मिं.
5 अक्तू.	उ.फा.(4)	15/28
10 अक्तू.	हस्त (1)	19/36
15 अक्तू.	हस्त(2)	23/30
20 अक्तू.	हस्त(3)	27/05
26 अक्तू.	हस्त(4)	6/20
31 अक्तू.	चित्रा (1)	9/17
5 नवं.	चित्रा (2)	11/59
10 नवं.	चित्रा 3 तुला	14/23
15 नवं.	चित्रा (4)	16/27
20 नवं.	स्वा. (1)	18/12
25 नवं.	स्वा. (2)	19/37
30 नवं.	स्वा. (3)	20/41
5 दिसं.	स्वा. (4)	21/29
10 दिसं.	विशा.(1)	21/59
15 दिसं.	विशा.(2)	22/09
20 दिसं.	विशा.(3)	21/58
25 दिसं.	विशा.4 वृश्चि.	21/27
30 दिसं.	अनु.(1)	20/39
(सन् 2020 ई.)		
4 जन.	अनु.(2)	19/34
9 जन.	अनु.(3)	18/12
14 जन.	अनु.(4)	16/32
19 जन.	ज्ये.(1)	14/30
24 जन.	ज्ये.(2)	12/13
29 जन.	ज्ये.(3)	9/39
3 फर.	ज्ये.(4)	6/53
7 फर.	मूल 1 धनु	27/50
12 फर.	मूल (2)	24/32
17 फर.	मूल (3)	20/58
22 फर.	मूल (4)	17/10
27 फर.	पू.षा.(1)	13/09
3 मार्च	पू.षा.(2)	8/59
7 मार्च	पू.षा.(3)	28/40
12 मार्च	पू.षा.(4)	24/09
17 मार्च	उ.षा.(1)	19/28
22 मार्च	उ.षा.2 मकर	14/39
27 मार्च	उ.षा.(3)	9/46
31 मार्च	उ.षा.(4)	28/53

बुध नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में पू.भा. (2) में)

2019 ई.	नक्षत्र चरण	घं.मिं.
8 अप्रै.	पू.भा.(3)	11/42
11 अप्रै.	पू.भा. 4 मीन	28/21
15 अप्रै.	उ.भा.(1)	7/28
17 अप्रै.	उ.भा.(2)	26/52
20 अप्रै.	उ.भा.(3)	17/00
22 अप्रै.	उ.भा.(4)	27/21
25 अप्रै.	रेव.(1)	10/32
27 अप्रै.	रेव.(2)	15/10
29 अप्रै.	रेव.(3)	17/37
1 मई	रेव.(4)	18/09
3 मई	अश्वि. 1 मेष	16/59
5 मई	अश्वि (2)	14/16
7 मई	अश्वि (3)	10/09
8 मई	अश्वि (4)	28/44
10 मई	भर.(1)	22/07
12 मई	भर.(2)	14/27
14 मई	भर.(3)	5/53
15 मई	भर.(4)	20/25
17 मई	कृति.(1)	10/17
18 मई	कृति. 2 वृष	23/34
20 मई	कृति. (3)	12/25
21 मई	कृति. (4)	25/01
23 मई	रोहि.(1)	13/29
24 मई	रोहि.(2)	26/01
26 मई	रोहि.(3)	14/49
27 मई	रोहि.(4)	28/01
29 मई	मृग.(1)	17/54
31 मई	मृग.(2)	8/34
1 जून	मृग. 3 मिथुन	24/19
3 जून	मृग.(4)	17/21
5 जून	आर्द्रा (1)	11/51
7 जून	आर्द्रा (2)	8/08
9 जून	आर्द्रा (3)	6/33
11 जून	आर्द्रा (4)	7/29
13 जून	पुन.(1)	11/26
15 जून	पुन.(2)	19/07
18 जून	पुन.(3)	7/28

बुध नक्षत्र प्रवेश | शुक्र नक्षत्र प्रवेश | शुक्र नक्षत्र प्रवेश

बुध नक्षत्र प्रवेश

2019 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
20 जून	पुन 4 कर्क	26/29
24 जून	पुष्य (1)	7/31
28 जून	पुष्य(2)	7/17
5 जुला.	पुष्य(3)	6/01
7 जुला.	**वक्री**	28/42
10 जुला.	व. पुष्य (2)	27/07
18 जुला.	व. पुष्य (1)	7/45
23 जुला.	व. पुन. (4)	6/29
30 जुला.	व.पुन.3 मिथु.	13/26
1 अग.	**मार्गी**	9/26
3 अग.	पुन.4 कर्क	5/52
9 अग.	पुष्य(1)	11/58
12 अग.	पुष्य(2)	17/26
15 अग.	पुष्य(3)	6/40
17 अग.	पुष्य(4)	11/31
19 अग.	आश्ले.(1)	11/36
21 अग.	आश्ले.(2)	8/38
22 अग.	आश्ले.(3)	27/36
24 अग.	आश्ले.(4)	21/14
26 अग.	मघा 1 सिंह	14/06
28 अग.	मघा (2)	6/34
29 अग.	मघा (3)	20/54
31 अग.	मघा (4)	15/23
2 सितं.	पू.फा.(1)	8/09
3 सितं.	पू.फा.(2)	25/23
5 सितं.	पू.फा.(3)	19/13
7 सितं.	पू.फा.(4)	13/42
9 सितं.	उ.फा.(1)	8/56
10 सितं.	उ.फा.2 कं.	28/59
12 सितं.	उ.फा.(3)	25/55
14 सितं.	उ.फा.(4)	23/46
16 सितं.	हस्त(1)	22/33
18 सितं.	हस्त(2)	22/19
20 सितं.	हस्त(3)	23/05
22 सितं.	हस्त(4)	24/53
24 सितं.	चित्रा(1)	27/44
27 सितं.	चित्रा(2)	7/44
29 सितं.	चित्रा 3 तुला	12/56
1 अक्तू.	चित्रा (4)	19/23
3 अक्तू.	स्वा.(1)	27/11
6 अक्तू.	स्वा.(2)	12/36

2019 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
8 अक्तू.	स्वा.(3)	23/51
11 अक्तू.	स्वा.(4)	13/22
14 अक्तू.	विशा.(1)	5/50
16 अक्तू.	विशा.(2)	26/35
20 अक्तू.	विशा.(3)	6/05
23 अक्तू.	विशा. 4 वृश्चि.	23/21
30 अक्तू.	अनु.(1)	6/18
31 अक्तू.	**वक्री**	21/08
2 नवं.	व. विशा. (4)	9/39
7 नवं.	व. विशा. 3 तुला	15/25
10 नवं.	व. विशा. (2)	11/01
12 नवं.	व. विशा. (1)	23/40
15 नवं.	व. स्वा. (4)	21/14
20 नवं.	**मार्गी**	24/38
26 नवं.	विशा.(1)	15/57
29 नवं.	विशा.(2)	26/05
2 दिसं.	विशा.(3)	21/19
5 दिसं.	विशा. 4 वृश्चि.	10/31
7 दिसं.	अनु.(1)	20/26
9 दिसं.	अनु.(2)	28/26
12 दिसं.	अनु.(3)	11/08
14 दिसं.	अनु.(4)	17/01
16 दिसं.	ज्ये.(1)	22/20
18 दिसं.	ज्ये.(2)	27/11
21 दिसं.	ज्ये.(3)	7/40
23 दिसं.	ज्ये.(4)	11/51
25 दिसं.	मूल 1 धनु	15/44
27 दिसं.	मूल(2)	19/21
29 दिसं.	मूल (3)	22/39
31 दिसं.	मूल (4)	25/39
(सन् 2020 ई.)		
2 जन.	पू.षा.(1)	28/18
5 जन.	पू.षा.(2)	6/35
7 जन.	पू.षा.(3)	8/28
9 जन.	पू.षा.(4)	9/56
11 जन.	उ.षा.(1)	10/58
13 जन.	उषा. 2 मकर	11/34
15 जन.	उ.षा.(3)	11/42
17 जन.	उ.षा.(4)	11/24
19 जन.	श्रव.(1)	10/41

2020 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
21 जन.	श्रव.(2)	9/35
23 जन.	श्रव.(3)	8/12
25 जन.	श्रव.(4)	6/39
26 जन.	धनि.(1)	29/03
28 जन.	धनि.(2)	27/41
30 जन.	धनि. 3 कुम्भ	26/53
1 फर.	धनि. (4)	27/11
3 फर.	शत. (1)	29/25
6 फर.	शत. (2)	11/21
8 फर.	शत. (3)	24/11
12 फर.	शत. (4)	6/48
17 फर.	**वक्री**	6/20
22 फर.	व. शत. (3)	6/50
25 फर.	व. शत. (2)	18/51
28 फर.	व. शत. (1)	21/38
3 मार्च	व. धनि. (4)	13/21
10 मार्च	**मार्गी**	9/16
17 मार्च	शत.(1)	21/10
21 मार्च	शत.(2)	28/41
25 मार्च	शत.(3)	14/26
28 मार्च	शत.(4)	14/16

गुरु नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में मूल (1) में)

2019 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
10 अप्रै.	वक्री	22/28
22 अप्रै.	व.ज्ये.4 वृश्चि.	25/02
31 मई	व. ज्ये. (3)	23/52
26 जून	व. ज्ये. (2)	28/40
11 अग.	मार्गी	19/04
25 सितं.	ज्ये.(3)	17/36
17 अक्तू.	ज्ये.(4)	27/17
4 नवं.	मूल 1 धनु	29/16
21 नवं.	मूल (2)	9/30
6 दिसं.	मूल (3)	13/19
20 दिसं.	मूल (4)	28/57
(सन् 2020 ई.)		
4 जन.	पू.षा.(1)	16/19
19 जन.	पू.षा.(2)	7/01
3 फर.	पू.षा.(3)	8/54
19 फर.	पू.षा.(4)	9/46
8 मार्च	उ.षा.(1)	6/08

शुक्र नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में शत. (4) में)

तिथि	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
7 अप्रै.	पू.भा.(1)	18/26
10 अप्रै.	पू.भा.(2)	12/41
13 अप्रै.	पू.भा.(3)	6/53
15 अप्रै.	पू.भा. 4 मीन	25/02
18 अप्रै.	उ.भा.(1)	19/12
21 अप्रै.	उ.भा.(2)	13/17
24 अप्रै.	उ.भा.(3)	7/22
26 अप्रै.	उ.भा.(4)	25/23
29 अप्रै.	रेव.(1)	19/22
2 मई	रेव.(2)	13/19
5 मई	रेव.(3)	7/15
7 मई	रेव.(4)	25/11
10 मई	अश्वि. (1) मेष	19/05
13 मई	अश्वि.(2)	12/59
16 मई	अश्वि. (3)	6/51
18 मई	अश्वि.(4)	24/43
21 मई	भर.(1)	18/32
24 मई	भर.(2)	12/21
27 मई	भर.(3)	6/08
29 मई	भर.(4)	23/53
1 जून	कृति.(1)	17/37
4 जून	कृति 2 वृष	11/20
6 जून	कृति. (3)	29/01
9 जून	कृति. (4)	22/41
12 जून	रोहि.(1)	16/19
15 जून	रोहि.(2)	9/56
17 जून	रोहि.(3)	27/32
20 जून	रोहि.(4)	21/06
23 जून	मृग.(1)	14/37
26 जून	मृग.(2)	8/06
28 जून	मृग. 3 मिथुन	25/33
1 जुला.	मृग.(4)	18/56
4 जुला.	आर्द्रा (1)	12/19
7 जुला.	आर्द्रा (2)	5/38
9 जुला.	आर्द्रा (3)	26/35
12 जुला.	आर्द्रा (4)	16/12
15 जुला.	पुन.(1)	9/24
17 जुला.	पुन.(2)	26/35
20 जुला.	पुन.(3)	19/43

शुक्र नक्षत्र प्रवेश

2019 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
23 जुला.	पुन. 4 कर्क	12/49
26 जुला.	पुष्य (1)	5/50
28 जुला.	पुष्य (2)	22/50
31 जुला.	पुष्य (3)	15/47
3 अग.	पुष्य (4)	8/41
5 अग.	आश्ले.(1)	25/32
8 अग.	आश्ले.(2)	18/22
11 अग.	आश्ले.(3)	11/10
13 अग.	आश्ले.(4)	27/55
16 अग.	मघा 1 सिंह	20/39
19 अग.	मघा (2)	13/20
22 अग.	मघा (3)	5/59
24 अग.	मघा (4)	22/36
27 अग.	पू.फा.(1)	15/10
30 अग.	पू.फा.(2)	7/43
1 सितं.	पू.फा.(3)	24/14
4 सितं.	पू.फा.(4)	16/44
7 सितं.	उ.फा.(1)	9/12
9 सितं.	उफा 2 कन्या	25/40
12 सितं.	उ.फा.(3)	18/08
15 सितं.	उ.फा.(4)	10/34
17 सितं.	हस्त (1)	26/59
20 सितं.	हस्त (2)	19/23
23 सितं.	हस्त (3)	11/47
25 सितं.	हस्त (4)	28/09
28 सितं.	चित्रा (1)	20/31
1 अक्तू.	चित्रा (2)	12/53
3 अक्तू.	चित्रा 3 तुला	29/13
6 अक्तू.	चित्रा (4)	21/25
9 अक्तू.	स्वा.(1)	13/56
12 अक्तू.	स्वा.(2)	6/18
14 अक्तू.	स्वा.(3)	22/40
17 अक्तू.	स्वा.(4)	15/02
20 अक्तू.	विशा.(1)	7/24
22 अक्तू.	विशा.(2)	23/46
25 अक्तू.	विशा.(3)	16/12
28 अक्तू.	विशा. 4 वृश्चि	8/31
30 अक्तू.	अनु.(1)	24/53
2 नवं.	अनु.(2)	17/16
5 नवं.	अनु.(3)	9/40
7 नवं.	अनु.(4)	26/03

2019 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
10 नवं.	ज्ये.(1)	18/29
13 नवं.	ज्ये.(2)	10/57
15 नवं.	ज्ये.(3)	27/24
18 नवं.	ज्ये.(4)	19/53
21 नवं.	मूल 1 धनु	12/22
23 नवं.	मूल (2)	28/52
26 नवं.	मूल (3)	21/23
29 नवं.	मूल (4)	13/55
2 दिसं.	पू.षा.(1)	6/28
4 दिसं.	पू.षा.(2)	23/06
7 दिसं.	पू.षा.(3)	15/44
10 दिसं.	पू.षा.(4)	8/25
12 दिसं.	उ.षा.(1)	25/10
15 दिसं.	उषा 2 मकर	17/57
18 दिसं.	उ.षा.(3)	10/48
20 दिसं.	उ.षा.(4)	27/43
23 दिसं.	श्रव.(1)	20/41
26 दिसं.	श्रव.(2)	13/43
29 दिसं.	श्रव.(3)	6/50
31 दिसं.	श्रव.(4)	24/03
(सन् 2020 ई.)		
3 जन.	धनि.(1)	17/22
6 जन.	धनि.(2)	10/48
8 जन.	धनि. 3 कुम्भ	28/22
11 जन.	धनि.(4)	22/05
14 जन.	शत.(1)	15/56
17 जन.	शत.(2)	9/58
19 जन.	शत.(3)	28/10
22 जन.	शत.(4)	22/32
25 जन.	पू.भा.(1)	17/07
28 जन.	पू.भा.(2)	11/55
31 जन.	पू.भा.(3)	6/58
2 फर.	पूभा 4 मीन	26/17
5 फर.	उ.भा.(1)	21/56
8 फर.	उ.भा.(2)	18/53
11 फर.	उ.भा.(3)	14/12
14 फर.	उ.भा.(4)	10/54
17 फर.	रेव.(1)	8/02
20 फर.	रेव.(2)	5/37

शुक्र नक्षत्र प्रवेश

2019-20 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
22 फर.	रेव.(3)	27/41
25 फर.	रेव.(4)	26/18
28 फर.	अश्वि 1 मेष	25/32
2 मार्च	अश्वि. (2)	25/27
5 मार्च	अश्वि. (3)	26/09
8 मार्च	अश्वि. (4)	27/44
12 मार्च	भर.(1)	6/17
15 मार्च	भर.(2)	9/59
18 मार्च	भर.(3)	14/56
21 मार्च	भर.(4)	21/21
24 मार्च	कृति.(1)	29/27

शनि नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में पू.षा. (4) में)

30 अप्रै.	वक्री	6/20
6 जुला.	व. पू.षा.(3)	15/34
1 सितं.	व. पू.षा.(2)	27/59
18 सितं.	मार्गी	14/15
4 अक्तू.	पू.षा.(3)	21/30
25 नवं.	पू.षा.(4)	22/02
26 दिसं.	उ.षा.(1)	26/18
(सन् 2020 ई.)		
24 जन.	उ.षा. 2 मकर	9/53
23 फर.	उ.षा.(3)	6/33

मध्यम राहु नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में पुन. (3) में)

9 मई	पुन.(2)	7/38
10 जुला.	पुन.(1)	29/22
11 सितं.	आर्द्रा(4)	27/06
13 नवं.	आर्द्रा(3)	24/38
(सन् 2020 ई.)		
15 जन.	आर्द्रा (2)	22/20
18 मार्च	आर्द्रा (1)	19/51

मध्यम केतु नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में उ.षा. (1) में)

2019-20 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
9 मई	पू.षा.(4)	7/38
10 जुला.	पू.षा.(3)	29/22
11 सितं.	पू.षा.(2)	27/06
13 नवं.	पू.षा.(1)	24/38
(सन् 2020 ई.)		
15 जन.	मूल(4)	22/20
18 मार्च	मूल (3)	19/51

यूरेनस नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में अश्वि. (3) में)

21 मई	अश्वि.(4)	16/52
12 अग.	वक्री	7/55
9 नवं.	व. अश्वि. (3)	8/33
11 जन.	मार्गी	7/16
11 मार्च	अश्वि.(4)	16/22

नैपच्यून नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में पू.भा. (1) में)

11 अप्रै.	पू.भा.(2)	23/31
21 जून	वक्री	20/06
4 सितं.	व. पू.भा.(1)	25/52
27 नवं.	मार्गी	18/06
12 फर.	पू.भा.(2)	16/42

प्लूटो नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ से उ.षा. (1) में)

24 अप्रै.	वक्री	24/10
7 सितं.	व. पू.षा.(4)	8/52
3 अक्तू.	मार्गी	12/05
29 अक्तू.	उ.षा.(1)	7/04
25 फर.	उषा 2 मकर	11/33

ग्रहों की अंशात्मक युतियां

(सन् 2019-20 ई.)

- 21 मई ➜ सूर्य-बुध (वृष)
- 14 जून ➜ मंग-राहु (मिथुन)
- 16 जून ➜ बुध-राहु (मिथुन)
- 18 जून ➜ मंग-बुध (मिथुन)
- 10 जुला ➜ सूर्य-राहु (मिथुन)
- 21 जुला ➜ सूर्य-बुध (कर्क)
- 25 जुला ➜ बुध-शुक्र (कर्क)
- 14 अग. ➜ सूर्य-शुक्र (कर्क)
- 24 अग. ➜ मंग-शुक्र (सिंह)
- 2 सितं ➜ सूर्य-मंग. (सिंह)
- 3 सितं ➜ मंग-बुध (सिंह)
- 13 सितं ➜ बुध-शुक्र (कन्या)
- 11 नवं. ➜ सूर्य-बुध (तुला)
- 24 नवं. ➜ गुरु-शुक्र (धनु)
- 11 दिसं ➜ शुक्र-शनि (धनु)
- 27 दिसं ➜ सूर्य-गुरु (धनु)

(सन 2020 ई.)

- 2 जन. ➜ बुध-गुरु (धनु)
- 11 जन. ➜ सूर्य-बुध (धनु)
- 13 जन. ➜ सूर्य-शनि (धनु)
- 26 फर. ➜ सूर्य-बुध (कुम्भ)
- 20 मार्च ➜ मंग-गुरु (धनु)
- 31 मार्च ➜ मंग-शनि (मकर)

शास्त्र-वाक्य

➜**आसन**—बिना आसन पर बैठ कर किए गए जप, तप, पाठ एवं मन्त्र आदि अनुष्ठान पूर्ण फल प्रदायक नहीं होते। कुश, कम्बल, मृगचर्म एवं रेशम का आसान जपादि के लिए श्रेष्ठ कहे गए हैं। संतानवान गृहस्थी तो मृगचर्म पर भी न बैठे।

द्विग्रही-योग—सन् 2019-20

- बुध-शुक्र ➜ 21 मार्च से 11 अप्रै. (कुम्भ)
- गुरु-शनि ➜ 29 मार्च से 21 अप्रै. (धनु)
- गुरु-केतु ➜ 29 मार्च से 21 अप्रै. (धनु)
- शनि-केतु ➜ संवतारम्भ से 23 जन. (20) (धनु)
- बुध-शुक्र ➜ 15 अप्रै. से 3 मई (मीन)
- सूर्य-बुध ➜ 3 मई से 15 मई (मेष)
- बुध-शुक्र ➜ 10 मई से 18 मई (मेष)
- मंग-राहु ➜ 7 मई से 22 जून (मिथुन)
- सूर्य-शुक्र ➜ 10 मई से 15 मई (मेष)
- सूर्य-बुध ➜ 18 मई से 1 जून (वृष)
- बुध-राहु ➜ 1 जून से 20 जून (मिथुन)
- मंगल-बुध ➜ 1 जून से 20 जून (मिथुन)
- सूर्य-शुक्र ➜ 4 जून से 15 जून (वृष)
- सूर्य-मंगल ➜ 15 जून से 22 जून (मिथुन)
- सूर्य-राहु ➜ 15 जून से 16 जुला. (मिथुन)
- सूर्य-बुध ➜ 15 जून से 20 जून (मिथुन)
- मंगल-बुध ➜ 22 जून से 30 जुला. (कर्क)
- सूर्य-मंगल ➜ 16 जुला. से 8 अग. (कर्क)
- मंगल-शुक्र ➜ 23 जुला. से 8 अग. (कर्क)
- मंगल-बुध ➜ 3 अग. से 8 अग. (कर्क)
- सूर्य-शुक्र ➜ 23 जुला. से 16 अग. (कर्क)
- बुध-शुक्र ➜ 3 अग. से 16 अग. (कर्क)
- मंगल-शुक्र ➜ 16 अग. से 9 सितं. (सिंह)
- सूर्य-मंगल ➜ 17 अग. से 17 सितं. (सिंह)
- सूर्य-शुक्र ➜ 17 अग. से 9 सितं. (सिंह)
- सूर्य-बुध ➜ 26 अग. से 10 सितं. (सिंह)
- मंगल-बुध ➜ 26 अग. से 10 सितं. (सिंह)
- बुध-शुक्र ➜ 26 अग. से 9 सितं. (सिंह)
- बुध-शुक्र ➜ 10 सितं. से 29 सितं. (कन्या)
- मंगल-बुध ➜ 25 सितं. से 29 सितं. (कन्या)
- सूर्य-बुध ➜ 17 सितं. से 29 सितं. (कन्या)
- सूर्य-शुक्र ➜ 17 सितं. से 3 अक्तू. (कन्या)
- सूर्य-मंगल ➜ 25 सितं. से 17 अक्तू. (कन्या)
- बुध-शुक्र ➜ 3 अक्तू. से 23 अक्तू. (तुला)
- सूर्य-बुध ➜ 17 अक्तू. से 23 अक्तू. (तुला)
- सूर्य-शुक्र ➜ 17 अक्तू. से 28 अक्तू. (तुला)
- बुध-गुरु ➜ 23 अक्तू. से 4 नवं. (वृश्चिक)
- गुरु-शुक्र ➜ 28 अक्तू. से 4 नवं. (वृश्चिक)
- बुध-शुक्र ➜ 28 अक्तू. से 7 नवं. (वृश्चिक)
- गुरु-शनि ➜ 4 नवं. से 24 जन. (20) (धनु)
- सूर्य-शुक्र ➜ 16 नवं. से 21 नवं. (वृश्चिक)
- गुरु-केतु ➜ 4 नवं. से संवतान्त (धनु)
- गुरु-शुक्र ➜ 21 नवं. से 15 दिसं. (धनु)
- शुक्र-शनि ➜ 21 नवं. से 15 दिसं. (धनु)
- शुक्र-केतु ➜ 21 नवं. से 15 दिसं. (धनु)
- सूर्य-बुध ➜ 5 दिसं. से 16 दिसं. (वृश्चिक)
- सूर्य-गुरु ➜ 16 दिसं. से 14 जन. (धनु)
- सूर्य-शनि ➜ 16 दिसं. से 14 जन. (धनु)
- सूर्य-केतु ➜ 16 दिसं. से 14 जन. (धनु)
- सूर्य-बुध ➜ 25 दिसं. से 13 जन. (धनु)
- सूर्य-बुध ➜ 14 जन. से 30 जन. (मकर)
- सूर्य-शनि ➜ 24 जन. से 13 फर. (मकर)
- मंगल-केतु ➜ 7 फर. से 22 मार्च (धनु)
- मंगल-गुरु ➜ 7 फर. से 22 मार्च (धनु)
- सूर्य-बुध ➜ 13 फर. से 14 मार्च (कुम्भ)

तीनग्रही-योग—सन् 2019-20

- गु.+श.+के. ➜ 29 मार्च से 21 अप्रै. (धनु)
- मं.+बु.+रा. ➜ 1 जून से 19 जून (मिथुन)
- सू.+शु.+रा. ➜ 29 जून से 16 जुला. (मिथुन)
- सू.+मं.+बु. ➜ 16 जुला. से 29 जुला. (कर्क)
- सू.+मं.+शु. ➜ 23 जुला. से 7 अग. (कर्क)
- सू.+बु.+शु. ➜ 3 अग. से 15 अग. (कर्क)
- सू.+मं.+शु. ➜ 16 अग. से 8 सितं. (सिंह)
- सू.+बु.+शु. ➜ 17 सितं. से 28 सितं. (कन्या)
- सू.+मं.+शु. ➜ 25 सितं. से 3 अक्तू. (कन्या)
- सू.+मं.+बु. ➜ 25 सितं. से 29 सितं. (कन्या)
- सू.+बु.+शु. ➜ 17 अक्तू. से 22 अक्तू. (तुला)
- मं.+श.+के. ➜ 5 नवं. से 23 जन. (धनु)
- सू.+मं.+बु. ➜ 10 नवं. से 16 नवं. (तुला)

(चतुर्ग्रही योग)

- सू.+मं.+बु.+रा. ➜ 15 जून से 19 जून (मिथुन)
- सू.+मं.+बु.+शु. ➜ 23 जुला. से 29 जुला. (कर्क)
- सू.+मं.+बु.+शु. ➜ 3 अग. से 7 अग. (कर्क)
- सू.+मं.+बु.+शु. ➜ 26 अग. से 8 सितं. (सिंह)
- सू.+मं.+बु.+शु. ➜ 25 सितं. से 29 सितं. (कन्या)
- गु.+शु.+श.+के. ➜ 21 नवं. से 15 दिसं. (धनु)
- सू.+गु.+श.+के. ➜ 16 दिसं. से 13 जन. (धनु)

चान्द्र परम्परा अनुसार प्रत्येक मास के मुख्य व्रत-त्यौहार

चान्द्र परम्परा अनुसार प्रत्येक मास के मुख्य व्रत-त्यौहार
(व्रत-पर्वों के तिथि-निर्णय एवं संक्षिप्त विधि-विधान सहित)

[इस श्रृंखला के अन्तर्गत भारतीय सनातन वैदिक संस्कृति के अनुसार 'पंचांगदिवाकर' में प्रत्येक कृष्ण/शुक्ल पक्ष में दिए जाने वाले मुख्य पर्व/व्रत/त्यौहारों का संक्षिप्त विवरण (शास्त्रोक्त तिथि निर्णय एवं करणीय कर्म) क्रमानुसार दिया जा रहा है। आशा है धर्मपरायण पाठकों के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा। गत तीन वर्षों में हमने चैत्र से ज्येष्ठ मास तक के मुख्य व्रत/पर्वों का विवरण लिख चुके हैं। इस वर्ष हम 'आषाढ़ मास' के मुख्य व्रत/पर्वों सम्बन्धी ही विधि-विधान का विवरण दे रहे हैं।

–पं. विवेक शर्मा, सुपुत्र स्व. पं. पन्ना लाल ज्योतिषी, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर।]

।। आषाढ़ मास ।।

(I) आषाढ़ कृष्ण पक्ष

आषाढ़ कृष्ण पक्ष में श्रीगणेश चतुर्थी, कालाष्टमी, एकादशी व्रत तथा प्रदोष व्रत के अतिरिक्त अन्य कोई विशेष महत्त्वपूर्ण पर्व/त्यौहार घटित नहीं होता। उपरोक्त व्रतों के संकल्प, कथा पूर्ववत मासों के समान ही रहेंगे। एतदर्थ गतवर्षीय पंचांगों (वि. संवत् २०७३, २०७४ या २०७५) का अवलोकन करें। केवल योगिनी एकादशी व्रत का कथासार अलग होगा।

(1) योगिनी एकादशी व्रत

आषाढ़ कृष्ण एकादशी **'योगिनी'** नाम की एकादशी कहलाती है। [संकल्प मन्त्र पूर्व एकादशियों की भान्ति रहेगा तथा कथासार के लिए हमारे कार्यालय से प्रकाशित 'एकादशी माहात्म्य' देखें।]

संक्षिप्त माहात्म्य–आषाढ़ कृष्ण एकादशी को प्रातः स्नानादि करके **'ॐ विष्णुः विष्णुः विष्णुः"""मम सकलपापक्षयपूर्वक कुष्ठादि रोग-निवृत्ति कामनया योगिन्येकादशी व्रतं अहं करिष्ये।'** संकल्प करके पुण्डरीकाक्ष भगवान् का यथाविधि पूजन करें, उनके चरणोदक से सब अङ्गों का मार्जन करे और उपवास करके रात्रि में जागरण करे तो कुष्ठादि सभी त्वचा रोगों की निवृत्ति हो जाती है। प्राचीन काल में कुबेर के कोप से हेममाली को कोढ़ हो गया था, उसने महामुनि मार्कण्डेय जी की आज्ञानुसार योगिनी का उपवास किया, जिससे उसकी सम्पूर्ण व्याधियां मिट गईं और कुबेर ने उसे अपनी सेवा में वापस बुला लिया।

(II) आषाढ़ शुक्ल पक्ष

(2) श्रीजगन्नाथ भगवान् की रथयात्रा

तिथि निर्णय–पुष्य-नक्षत्र से युक्त द्वितीया अथवा केवल आषाढ़ शुक्ल द्वितीया को श्रीरामचन्द्र (सुभद्रा सहित) जी की रथयात्रा का उत्सव होता है।

आषाढ़स्य सिते पक्षे द्वितीया पुष्यसंयुता। तस्यां रथे समारोप्य रामं वै भद्रया सह।। यात्रोत्सवं प्रवर्त्याथ प्रीणयेच्च द्विजान् बहून्। तथा–'ऋक्षाभावे तिथौ कार्या यात्राऽसो प्रीतये मम्।। –(स्कन्दपुराण)

अर्थात् सुभद्रा सहित मुझ राम को बैठाकर यात्रा का उत्सव करना चाहिए और बहुत से ब्राह्मणों को दानादि से प्रसन्न करें, पुष्य नक्षत्र न भी हो तो द्वितीया तिथि में ही मेरी प्रसन्नता के निमित्त रथयात्रा करनी चाहिए।

यदि पुष्य नक्षत्र या द्वितीया दोनों दिन हो तो युग्मवाक्यानुसार दूसरे दिन मनाया जाएगा–**'द्वितीया शुक्लपक्षे परविद्धा ग्राह्या।।'**

करणीय कर्म एवं माहात्म्य–इस दिन पुरी में श्रीजगदीश भगवान् को सपरिवार विशाल रथ पर आरूढ़ करके भ्रमण करवाते हैं। उस दिन वहाँ रथयात्रा का अद्वितीय उत्सव होता है। देश-देशान्तर के लाखों नर-नारी एकत्र होते हैं। उस दिन भगवद् भक्तों के यहाँ व्रत होता है और महोत्सव मनाया जाता है।

उस समय रथ पर विराजमान होकर यात्रा करते हुए श्रीजगन्नाथ जी का जो लोग भक्तिपूर्वक दर्शन करते हैं, उनका भगवान् के धाम में निवास होता है। जिनके नाम का संकीर्तन करने मात्र से सौ जन्मों का पाप नष्ट हो जाता है, रथ में स्थित हो महादेवी की ओर जाते हुए उन पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण, बलभद्र और सुभद्रा जी का दर्शन करके मनुष्य अपने करोड़ों जन्मों के पापों का नाश कर लेता है।

इस दिन सर्वप्रथम भगवान् से यात्रा के लिए निवेदन करें–'प्रभो ! आपने पूर्वकाल में राजा इन्द्रद्युम्न को जैसी आज्ञा दी है, उसके अनुसार रथ से गुण्डिचा-मण्डप के प्रति विजय-यात्रा कीजिए। आपकी कृपा-कटाक्षपूर्ण दृष्टि से दसों दिशाएँ पवित्र हों, तथा स्थावर-जङ्गम समस्त प्राणी कल्याण को प्राप्त हों। आपने यह अवतार लोगों के ऊपर दया की इच्छा से ग्रहण किया है। **इसलिए भगवन् ! आप प्रसन्नतापूर्वक पृथ्वी पर चरण रखकर पधारिये।**

मेघों के द्वारा जल की वर्षा के संयोग से रथ का मार्ग जब कीचड़युक्त हो जाता है,

उस समय भी वह श्रीकृष्ण की दिव्य दृष्टि पड़ने से समस्त पापों का नाश करने वाला होता है। जो लोग भगवान् वासुदेव के आगे '**जय**' शब्द का उच्चारण करते हुए स्तुति करते हैं, वे सभी पापों पर निःसंदेह विजय पा जाते हैं। जो श्रेष्ठ पुरुष वहाँ नृत्य करते हैं और गाते हैं, वे उत्तम वैष्णवों के संसर्ग से मोक्ष प्राप्त कर लेते हैं। जो भगवान् के नामों का कीर्तन करता हुआ भक्तिपूर्वक '**जय कृष्ण, जय कृष्ण, जय कृष्ण**' का उच्चारण करता है, वह माता के गर्भ में निवास करने का दुख कभी नहीं भोगता। जो मनुष्य भगवान् श्रीकृष्ण के उद्देश्य से दान देता है, उसका वह थोड़ा दान भी मेरुदान के समान अक्षय फल देने वाला होता है।

इस प्रकार बलभद्र और सुभद्रा के साथ भगवान् श्रीकृष्ण उत्तम रथ पर विराजमान हो यात्रा करते हैं, क्योंकि प्राचीनकाल में उन्होंने राजा इन्द्रद्युम्न को यह वर दिया था कि 'मैं तुम्हारे तीर्थ के किनारे प्रतिवर्ष निवास करूँगा। मेरा वहाँ स्थित रहने पर सभी तीर्थ उसमें निवास करेंगे। उस तीर्थ में विधिपूर्वक स्नान करके जो लोग सात दिनों तक गुण्डिचा-मण्डप में विराजमान मेरा, बलराम का और सुभद्रा का दर्शन करेंगे, वे मेरा सायुज्य प्राप्त कर लेंगे।'

जो प्रतिदिन प्रातःकाल उठकर उस प्रसङ्ग का पाठ करता है अथवा सुनता है और भगवत् प्रतिमा का चित्र लेकर भी उसे रथ पर बैठाकर भक्तिभाव से इस यात्रा को सम्पन्न करता है, वह भी भगवान् विष्णु की कृपा से फलस्वरूप वैकुण्ठधाम में जाता है।

(3) कुमार-षष्ठी

तिथि-निर्णय—पूर्व (पंचमी)विद्धा आषाढ़ शुक्ल षष्ठी के दिन यह व्रत किया जाता है। वसिष्ठ अनुसार

कृष्णाष्टमी स्कन्दषष्ठी शिवरात्रिश्चतुर्दशी।
एता पूर्वयुताः कार्याः तिथ्यन्ते पारणं भवेत्।।

युग्मवाक्य अनुसार भी स्कन्द (कुमार) षष्ठी पूर्वविद्धा ही ली जाती है-**षष्ठी स्कन्दव्रते पूर्वविद्धा। अन्यव्रतेषु परविद्धैव। पूर्वेद्युः षणमुहूर्त्तन्यून पंचम्यां वेधे पूर्वापि।।**

यहाँ सूर्योदय के बाद त्रिमुहूर्त्त-व्यापिनी पंचमी का ही वेध माना जाएगा।

कृत्य—इसमें कार्तिकेय जी का पूजन किया जाता है। इसे कौमारिकी भी कहते हैं। प्रातः सायंकाल पूजन कर फिर एक बार भोजन करें।

(4) विवस्वत-सप्तमी

तिथि-निर्णय—सूर्य-पूजन का यह पर्व पूर्व (षष्ठी) विद्धा आषाढ़ शुक्ल सप्तमी को मनाया जाता है। स्कन्दपुराण अनुसार-

'षष्ठ्या युता सप्तमी तु कर्त्तव्या तात सर्वदाः।
षष्ठी च सप्तमी यत्र तत्र सन्निहितो रविः।।'

धर्मसिन्धुकार अनुसार भी-'**सप्तमी कर्ममात्रे षष्ठीयुतैव ग्राह्या।।**'

ब्रह्मपुराण अनुसार का भी यह वाक्य है-

'पूर्वविद्धा द्विजश्रेष्ठ कर्त्तव्या सप्तमीतिथिः।।'

करणीय कृत्य—आषाढ़ शुक्ल सप्तमी को भगवान् सूर्य '**विवस्वान्**' नाम से विख्यात हुए थे। अतः इस दिन रथचक्र के समान गोल मण्डल बनाकर उसमें विवस्वान् का गन्ध-पुष्पादि से पूजन करें और अनेक प्रकार के भक्ष्य, भोज्य और पेय पदार्थ अर्पण करके व्रत करें।

(5) देवशयनी एकादशी व्रत

आषाढ़ शुक्ल पक्ष की एकादशी '**देवशयनी**' (या हरिशयनी) एकादशी कहलाती है।

[संकल्प मन्त्र पूर्व एकादशियों की भान्ति रहेगा तथा कथा सार के लिए हमारे कार्यालय से प्रकाशित '**एकादशी माहात्म्य**' देखें।]

संक्षिप्त माहात्म्य—इस दिन उपवास करके सोना, चांदी, तांबा या पीतल की मूर्त्ति बनवाकर उसका यथोपलब्ध उपचारों से पूजन कर और पीताम्बर से विभूषित करके सफेद चादर से ढके हुए गद्दे-तकियावाले पलंग पर शयन करावें।

(6) श्रीविष्णु-शयनोत्सव

आषाढ़ शुक्ल एकादशी व्रत उपरान्त स्मार्त्तों तथा वैष्णवों द्वारा अपने-अपने एकादशी व्रत वाले दिन रात्रि के पूर्वभाग में यह उत्सव मनाया जाता है। अधिकतर श्रद्धालु एकादशी व्रत पारणा वाले दिन अर्थात् द्वादशी को यह उत्सव करते हैं। आषाढ़ शुक्ल एकादशी को भगवान् क्षीरसागर में शेष-शय्या पर शयन करते हैं। अतः इसका उत्सव मनाने के लिए सुन्दर मूर्त्ति बनवावें। विधिपूर्वक पूजन कर रात्रि के समय निम्न मन्त्र से प्रार्थना करें-

सुप्ते त्वयि जगन्नाथे जगत् सुप्तं भवेदिदम्।
विबुद्धे च विबुध्येत प्रसन्नो मे भवाव्यय।।

तथा शय्या पर शयन करावें। भगवान् का सोना रात्रि में, करवट बदलना सन्धि में और जागना दिन में होता है। एक विशेष नियमानुसार शयन अनुराधा के आद्य (प्रथम) तृतीयांश में, परिवर्तन श्रवण के मध्य तृतीयांश में और उत्थान रेवती के अन्तिम तृतीयांश में होता है। यही कारण है कि आषाढ़, भाद्रपद और कार्तिक में एकादशी व्रत पारणा के समय आषाढ़ में अनुराधा का आद्य तृतीयांश, भाद्रपद में श्रवण का मध्य तृतीयांश और कार्तिक में रेवती का अन्तिम तृतीयांश व्यतीत होने के बाद (या उसके आरम्भ से पहिले) पारण करते हैं। (स्मरण रहे कि एक नक्षत्र 60 घड़ी का होता है, अतः उसके 20-20 घड़ी के तृतीयांश बनाकर पहला, दूसरा और तीसरा देख लेना चाहिए।)

देवशयन के चातुर्मासीय व्रतों में पलंग पर सोना, भार्या का संग करना, मिथ्या बोलना, मांस, शहद और दूसरे के दिए हुए दही-भात आदि का भोजन करना और मूली, बैंगन

बाद त्रिमुहूर्त्त-व्यापिनी (लगभग ६ घड़ी) आषाढ़ पूर्णिमा को सम्पादित किए जाते हैं। यदि आषाढ़ पूर्णिमा तीन मुहूर्त्त से कम हो तो गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा आदि पर्व पहले

देवशयन के चातुर्मासीय व्रतों में पलंग पर सोना, भार्या का संग करना, मिथ्या बोलना, मांस, शहद और दूसरे के दिए हुए दही-भात आदि का भोजन करना और मूली, बैंगन आदि शाक-पत्र खाना त्याग देना चाहिए।

(7) चातुर्मास्य व्रत-नियमादि प्रारम्भ

यह व्रत चार महीनों के लिए श्रावण से कार्तिक मास तक किया जाता है। इस व्रत का आरम्भ अपनी-अपनी स्थानीय परम्पराओं अनुसार आषाढ़ शुक्ल एकादशी या द्वादशी अथवा आषाढ़ पूर्णिमा अथवा कर्क संक्रान्ति से लोग करते हैं। इसकी समाप्ति प्रत्येक परम्परा में कार्तिक शुक्ल द्वादशी (एकादशी) को ही होती है। यथा-

'एकादश्यां तु गृह्णीयात् संक्रान्तौ कर्कटस्य वा।
आषाढ़यां वा नरो भक्त्या चातुर्मास्यव्रत-क्रियाम्।। *(ब्रह्मवैवर्त-पुराण)*

यदि सम्पूर्ण चार मास व्रत-पालन सम्भव न हो, तो तुला-संक्रान्ति से भी कर सकते हैं-

असंभवे तुलाऽर्के अपि कर्त्तव्यं तत्प्रयत्नतः।।

अपि च, **तेनाषाढ़ शुक्लकादश्यां द्वादश्यां पौर्णमास्यां वा आरम्भः। समाप्तिस्तु कार्तिक शुक्ल द्वादश्यामेव।।**

इन व्रतों के समाप्ति बारे हेमाद्रि में **'भारत'** का वचन है-

'चतुर्धा गृह्य वै चीर्णे चातुर्मास्यव्रतं नरः।
कार्तिके शुक्लपक्षे तु द्वादश्यां तत् समापयेत्।।'

करणीय कर्म-जो मनुष्य भगवान् विष्णु के शयनकाल में प्रतिदिन नक्षत्रों (प्रदोषकाल) का दर्शन करके ही एक बार भोजन करता है, वह धनवान, रुपवान और माननीय होता है। जो एक दिन का अन्तर देकर भोजन करते हुए चौमासा व्यतीत करता है, वह सदा वैकुण्ठधाम में निवास करता है। जो चौमासे में नमकीन वस्तुओं एवं नमक को छोड़ देता है, उसके सभी पूर्वकर्म सफल होते हैं।

इस चतुर्मास में अपनी रुचि अथवा अभीष्ट के अनुसार नित्य व्यवहार के पदार्थों का त्याग और ग्रहण करें। जैसे मधुर स्वर के लिए **'गुड़'** का, दीर्घायु अथवा पुत्र-पौत्रादि की प्राप्ति के लिए **'तैल'** का, शत्रुनाशादि के लिए **'कडुवे तैल'** का, सौभाग्य के लिए **'मीठे तैल'** का और स्वर्गादि प्राप्ति के लिए **'पुष्पादि'** भोगों का त्याग करें। देह-शुद्धि या सुन्दरता के लिए परिमित प्रमाण के **'पञ्चगव्य'** का, वंश वृद्धि के लिए नियमित **'दूध'** का, सकल पुण्यफल प्राप्ति के लिए **'एकभुक्त, नक्तव्रत या सर्वथा उपवास'** करने का व्रत ग्रहण करें। जो मनुष्य अपनी शक्ति अनुसार चौमासे में-विशेषतः कार्तिक मास में श्रेष्ठ ब्राह्मणों को मिष्ठान्न भोजन कराता है, वह अग्निष्टोम यज्ञ का फल प्राप्त करता है।

(8) गुरु-पूर्णिमा (व्यास पूजा)

तिथि-निर्णय-गुरु-पूजा (गुरु-पूर्णिमा) और व्यास-पूजादि कृत्य सूर्योदय के बाद त्रिमुहूर्त्त-व्यापिनी (लगभग ६ घड़ी) आषाढ़ पूर्णिमा को सम्पादित किए जाते हैं। यदि आषाढ़ पूर्णिमा तीन मुहूर्त्त से कम हो तो गुरु पूर्णिणा, व्यास पूजा आदि पर्व पहले दिन मनाए जाने चाहिए। यथा-

व्यास पूजा निर्णय-'अत्रैव (आषाढ़ पूर्णिमा) व्यास पूजोक्ता। तत्र त्रिमुहूर्त्ता चेत्परैवेति सन्यासपद्धतौ। त्रिमुहूर्त्ताधिकं ग्राह्या पर्वक्षौर-प्रणामयोः।।' -निर्णयसिन्धुः

अर्थात् व्यास पूजा निर्णय के सम्बन्ध में सन्यास पद्धति में कहा गया है कि पूर्णिमा तीन मुहूर्त्त होय, तो अगली लेनी चाहिए। कारण यह है कि पर्व, क्षौर और प्रणाम (अर्थात् पूजार्चना) में तीन मुहूर्त्त से अधिक तिथि ग्रहण करनी चाहिए।

यहाँ धर्मसिन्धुकार का भी यही मत है-

'अस्यां पौर्णमास्यां संन्यासिनां चातुर्मास्यावाससंकल्पांगत्वेन क्षौर-व्यासपूजादिकं विहितम्।। अत्र कर्मणि औदयिकी त्रिमुहूर्त्ता पौर्णमासी ग्राह्या।।'

गुरु-पूर्णिमा का आध्यात्मिक पक्ष-गुरु सर्वेश्वर का साक्षात्कार करवाकर शिष्ट को जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त कर देते हैं। अतएव संसार में गुरु का स्थान विशेष महत्त्व का है। पराशर जी की कृपा से वेदव्यास जी का अवतरण इस भारत वसुन्धरा पर आषाढ़ पूर्णिमा को हुआ। इसलिए आषाढ़ पूर्णिमा को सभी अपने-अपने गुरु की पूजा विशेष रुप से करते हैं। व्यासदेव जी गुरुओं के भी गुरु माने जाते हैं। इसे व्यासपूजा का पर्व भी कहते हैं। इस पूजोत्सव के अवसर पर सत्संग का भव्य आयोजन किया जाता है।

जैसे ज्ञान-विज्ञान के बिना मोक्ष नहीं हो सकता, उसी तरह सद्गुरु से सम्बन्ध हुए बिना ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो सकती। **'गृणाति धर्मादिरहस्यम् इति गुरुः'** अर्थात् जो शिष्य के प्रति धर्म आदि ज्ञातव्य तथ्यों का उपदेश करता है, वह गुरु है।

शिष्यवर्ग में अपने गुरु को ब्रह्मा, विष्णु, महेश और परमब्रह्म के समकक्ष मानने की यह सूक्ति बहुत प्रचलित है-**गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।**
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

यह पूर्णिमा सबसे बड़ी पूर्णिमा मानी जाती है, क्योंकि परमात्मा के ज्ञान, परमात्मा के ध्यान और परमात्मा की प्रीति की तरफ ले जाने वाली है, यह पूर्णिणा। जब तक मनुष्य को सत्य के ज्ञान की प्यास रहेगी, तब तक ऐसे व्यास पुरुषों का, ब्रह्मज्ञानियों का आदर-पूजन होता रहेगा।

गुरुजनों, श्रेष्ठजनों एवं अपने से बड़ों के प्रति अगाध श्रद्धा का यह पर्व भारतीय सनातन संस्कृति का विशिष्ट पर्व है।

इस प्रकार कृतज्ञता व्यक्त करने का और तप, व्रत, साधना में आगे बढ़ने का भी यह

त्यौहार है। संयम, सहजता, शान्ति और माधुर्य तथा जीते-जी मधुर जीवन की दिशा बनाने वाली पूर्णिमा है-**गुरु पूर्णिमा** । ईश्वर प्राप्ति की सहज, साध्य, साफ-सुथरी दिशा बताने वाला त्यौहार है-गुरु-पूर्णिमा। **यह आस्था का पर्व है, श्रद्धा का पर्व है, समर्पण का पर्व है।**

(9) कोकिला व्रत

तिथि निर्णय-प्रदोष व्यापिनी आषाढ़ पूर्णिमा के दिन यह व्रत किया जाता है- **आषाढपौर्णमास्यां कोकिलाव्रतमुक्तं-''आषाढ़ पौर्णमास्यां तु सन्ध्याकाले हि उपस्थिते।।''** (निर्णयसिन्धु:)

यदि पूर्णिमा दो दिन प्रदोषकाल में व्याप्त हो, तो यह व्रत दूसरे दिन होगा।

करणीय कृत्य-यह व्रत आषाढ़ी पूर्णिमा से प्रारम्भ करके श्रावणी पूर्णिमा तक किया जाता है। इसके करने से मुख्यत: स्त्रियों को सात जन्म तक सुत, सौभाग्य और सम्पत्ति मिलती है।

आषाढ़ पूर्णिमा को सायंकाल स्नान करके मानसिक संकल्प करें कि-मैं ब्रह्मचर्य से रहकर कोकिला व्रत करूँगी। श्रावण कृष्ण प्रतिपदा को **'मम धनधान्यादि सहित सौभाग्य प्राप्तये शिवतुष्टये च कोकिलाव्रतमहं करिष्ये।'** यह संकल्प करके आरम्भ के आठ दिन में भीगे और पिसे हुए आँवलों में सुगन्धयुक्त तिल-तैल मिलाकर उसे मलकर स्नान करे। फिर प्रतिदिन आँवले या सर्वोषधि जल से स्नान करें। तदनन्तर श्रावणी पूर्णिमा पर्यन्त करके समाप्ति के दिन तांबे के पात्र में वस्त्राभूषणादि से भूषित करके ब्राह्मण को भेंट करने से स्त्री इस जन्म में प्रीतिपूर्वक पोषण करने वाले सुखरूप पति के साथ सुख-सौभाग्यादि भोगकर अन्त में गौरी (पार्वती) की पुरी में जाती है। इस व्रत में गौरी का कोकिला के रुप में पूजन किया जाता है।

(10) श्रीशिव-शयनोत्सव

तिथि-निर्णय-प्रदोष-व्यापिनी आषाढ़ पूर्णिमा को शिव-शयनोत्सव किया जाता है। **'अस्यामेव पौर्णमास्यां प्रदोष व्यापिन्यां श्री शिवस्य शयनोत्सव:।'** धर्मसिन्धु:

यदि पूर्णिमा दोनों दिन प्रदोषकाल को व्याप्त करें, तो यह उत्सव दूसरे दिन किया जाता है।

कृत्य-आषाढ़ पूर्णिमा को जटाजूट की व्यवस्था के विचार से **शिव जी** सिंह चर्म के बिस्तर पर शयन करते हैं। इस दिन पूर्वविद्धा पूर्णिमा में शिवपूजन करके रुद्रव्रत करने से शिवलोक की प्राप्ति होती है।

नोट-इसी प्रकार **'श्रावण मास'** के व्रत-पर्वों का विशेष तिथि-निर्णय एवं माहात्म्य आदि आगामी वर्ष के **'पंचांगदिवाकर'** में दिया जाएगा।

नव सम्वत्सर का फल और माहात्म्य

भारत की गौरवमयी सभ्यता एवं संस्कृति में **सम्वत्सर** का विशेष महत्त्व है। हिन्दुओं के प्राय: सभी शुभ **संस्कारों (विवाह-मुण्डनादि)** एवं **मन्त्र-जपादि अनुष्ठानों में संकल्पादि के समय सम्वत् के नाम का प्रयोग प्रमुखता से किया जाता है।** चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नवीन सम्वत् का प्रारम्भ होता है। सत्ययुग का आरम्भ भी इसी दिन हुआ माना जाता है तथा ब्रह्मा जी ने सृष्टि का आरम्भ भी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को किया था। **''चैत्रे मासि जगद् ब्रह्मा संसर्ज प्रथमेऽहनि (ब्रह्मपुराण).''** सम्भवत: इसी कारण **इसे स्वयं सिद्ध मुहूर्त्त** माना जाता है। इस दिन किए गए जप-दानादि शुभ कर्मों के प्रभाव से वर्ष भर धन-सम्पदा एवं सुख-शान्ति बनी रहती है। संवत् 2076 में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, 6 अप्रैल, 2019 ई., शनिवार से **'परिधावी'** नामक नया संवत्सर प्रारम्भ होगा।

नव सम्वत्सर के आगमन पर प्रात: तैलाभ्यंग, नित्य कर्मों से निपटकर आसन, पाद्य, अर्घ्य, वस्त्र, यज्ञोपवीत, गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप-दीप, ताम्बुल, नैवेद्य, फल, आदि से सम्वत्सर पूजन एवं फल श्रवणादि, नवरात्र घट-स्थापन, मिट्टी के पात्र में रखी रेत-मिट्टी में जौं-गेहूँ आदि के बीज बोना, ओंकार सहित श्री गणेश, ब्रह्मा, विष्णु, शिव एवं श्री दुर्गा-इन पंचदेवों तथा नवग्रहों की स्वयं अथवा किसी सुयोग्य ब्राह्मणों द्वारा पूजार्चना करवा कर उन्हें क्षीर सहित सात्त्विक भोजन करवाकर उनका **'पंचांगदिवाकर'**, सहित यथाशक्ति अन्न, वस्त्र, फल एवं धनादि देकर सत्कार करना चाहिए।

पूजन के समय भगवान् ब्रह्मा एवं विष्णु की मूर्तियों के समक्ष पुष्पाक्षत, नैवेद्य, अर्घ्य गंगा जल आदि लेकर निम्न मन्त्र पढ़ें-

ॐ ब्रह्मणे नम: से ब्रह्मा जी का आवाहन तथा बहुरूपाय विष्णवे परमात्मने नम: परमात्म-विष्णुमावाहयामि स्थापयामि च। फिर सम्वत्सर की मूर्ति अथवा प्रतीक रूप में सुपारी रखकर निम्न मन्त्रों से पूजन एवं प्रार्थना करें-

''भगवंतस्त्वत्प्रसादेन वर्षं क्षेममिहास्तु मे। संवत्सरोपसर्गा मे विलयं यान्त्वशेषत:।''

ॐ सम्वत्सराय नम:, चैत्राय नम:, वसन्ताय नम:। आदि नाम-मन्त्रों से पूजन करके विद्वान् ब्राह्मण का अर्चन करें। तथा क्षीर सहित भोजन करवाकर यथाशक्ति वस्त्र, फलों नया पंचाँग दिवाकर आदि का दान करें।

तदुपरान्त स्वास्ती वाचन, शान्ति पाठ आदि मांगलिक मन्त्रों का पाठ करने के पश्चात् सूर्य देव को ताम्र बर्तन से मन्त्र-पूर्वक तीन बार अर्घ्य देकर **गायत्री मन्त्र** का जाप करना चाहिए। तत्पश्चात् दिवाकर पंचाँग में किसी ब्राह्मण के श्री मुख से **सम्वत् का नाम, सम्वत् का वास, सवारी, राजा, मन्त्री आदि का फल श्रवण करना** चाहिए चैत्र, प्रतिपदा से लेकर नवमी तक भगवान्-विष्णु, शिव एवं श्री दुर्गा के समक्ष नित्य ज्योति जलाकर श्रद्धानुसार श्री दुर्गासप्तशती का जप पाठ करने का विधान है।

⇒ **चैत्र प्रतिपदा से नवमी तक** प्रतिदिन प्रात: कटु नीम की कोमल पत्तियाँ व पुष्पों का चूर्ण बनाकर, उसमें काली मिर्च, हींग, सेंधा नमक, ईमली, अजवायन, जीरा तथा शक्कर या चीनी बराबर मात्रा में मिलाकर चूर्ण बनाकर भगवान् को भोग लगाकर ग्रहण करने से वर्षभर

वि. संवत् २०७६, चैत्र शुक्ल पक्ष शाक: १९४१

सन् 2019 ई. (ता. 6 अप्रैल से 19 अप्रैल तक) हिजरी सन् 1440
सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, वसन्त ऋतु:

भा.स्टैं.टा. जालन्धर

ग्रह दर्शन—प्रातः गुरु याम्योत्तरवृत्त में, शनि पूर्व कपाल में, बुध–शुक्र पूर्वक्षितिज में होंगे। सायं मं. पश्चिमकपाल में होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घटी	पल	नक्षत्र	समाप्ति काल घटी	पल	योग	समाप्ति काल घटी	पल	करण	समाप्ति काल घटी	पल	तारीखें चैत्र शाके	रज्जब मु.	अप्रैल	चैत्र प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
३१.१८	१	शनि	२२	५३	रेव.	२	४८	वैधृ	३८	५०	ब	२२	५३	16	29	6	२४	मे. २/४८	**'परिधावी'** नाम वि. संवत् २०७६ प्रारम्भ, **चैत्र** (वासन्त) **नवरात्रे (A)**	११	२१	४९	५	6	15	18	46
३१.२०	२	रवि	२४	३०	अश्वि	६	१५	विष्क	३७	१५	कौ	२४	३०	17	श.	7	२५	मेष	शुक्र पू.भा. में ३०/३०, शब्बान (मुस्लि.) मास प्रारम्भ	११	२२	४८	७	6	14	18	46
३१.२८	३	चंद्र	२५	१०	भर.	८	४८	प्रीति	३४	५५	ग	२५	१०	18	2	8	२६	वृ. २४/१५	भ. ५५/०० से, **गणगौरी तृतीया**, श्रीमत्स्य जयन्ती	११	२३	४७	७	6	12	18	47
३१.३३	४	मंग	२४	५०	कृति	१०	२०	आयु	३१	५३	वि	२४	५०	19	3	9	२७	वृष	भ. २४/५० तक, दमनक चतुर्थी	११	२४	४६	२	6	11	18	48
३१.३५	५	बुध	२३	३५	रोहि	१०	५८	सौभा	२८	३	बा	२३	३५	20	4	10	२८	मि. ४०/५५	**श्री (लक्ष्मी) पंचमी, गुरु वक्री ४०/४३,** नाग-पंचमी	११	२५	४४	५८	6	10	18	48
३१.४०	६	गुरु	२१	२३	मृग	१०	४०	शोभ	२३	२८	तै	२१	२३	21	5	11	२९	मिथुन	**स्कन्द षष्ठी व्रत, बुध मीन में** ५५/३३ (28/21)	११	२६	४३	५०	6	9	18	49
३१.४५	७	शुक्र	१८	१०	आर्द्रा	९	२५	अति	१८	५	व	१८	१०	22	6	12	३०	क. ५९/४८	भ. १८/१० से ४६/०५ तक,	११	२७	४२	४२	6	8	18	50
३१.५०	८	शनि	१४	००	पुन	७	१३	सुक	११	५८	ब	१४	००	23	7	13	३१	कर्क	**श्रीदुर्गाष्टमी,** भवान्युत्पत्ति, अशोकाष्टमी, **श्रीरामनवमी** (देखें पृ. 17)**(B)**	११	२८	४१	३०	6	6	18	50
३१.५५	९	रवि	८	४८	पुष्य आश्ले	३ ५९	५८ ४५	धृति शूल	५ ५७	०० १५	कौ	८	४८	24	8	14	वै.	सिं. ५९/४५	**श्रीदुर्गा-नवमी, नवरात्रे समाप्त, सूर्य** अश्वि. **१ मेष में २०/०८,(C)**	११	२९	४०	१७	6	5	18	51
३२.००	१०	चंद्र	२	४०	मघा	५४	५३	गंड	४८	५५	ग	२	४०	25	9	15	२	सिंह	भ. २९/१५ से ५५/४८ तक, **कामदा एकादशी व्रत (स्मार्त) (D)**	०	०	३९	०	6	4	18	52
अवम्	११	चंद्र	५५	४८	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०	००	**एकादशी तिथि का क्षय** ०० ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
३२.०३	१२	मंग	४८	२८	पू.फा.	४९	३०	वृद्धि	४०	१०	ब	२२	८	26	10	16	३	सिंह	**कामदा एकादशी व्रत (वैष्णव),** लक्ष्मीकान्त दोलोत्सव	०	१	३७	४२	6	3	18	52
३२.०८	१३	बुध	४०	५५	उ.फा.	४३	५५	ध्रुव	३१	१३	कौ	१४	४२	27	11	17	४	कं. ३/०८	**प्रदोष व्रत,** अनङ्ग त्रयोदशी, श्रीमहावीर जयन्ती (जैन), श्रीविष्णु दमनोत्सव	०	२	३६	५९	6	2	18	53
३२.१३	१४	गुरु	३३	३५	हस्त	३८	३०	व्या.	२२	२०	ग	७	१५	28	12	18	५	कन्या	भ. ३३/३५ से, शुक्र उ.भा. में ३२/३३, श्रीशिव दमनोत्सव, श्रीसत्यनारायण व्रत	०	३	३४	५६	6	1	18	54
३२.१५	१५	शुक्र	२६	४५	चित्रा	३३	४५	हर्ष	१३	५०	वि	०	१०	29	13	19	६	तु. ६/०३	भ. ०/१० तक, **चैत्री पूर्णिमा** (स्नानादानादि), श्रीहनुमान जयन्ती **(E)**	०	४	३३	३२	6	0	18	54

(A) शुरु, **पंचक समाप्त २/४८, घटस्थापन** (अभिजित मुहूर्त्त में) (देखें पृष्ठ 17), मंगल रोहिणी में २७/४५, संवत्सरफल श्रवण, ध्वजारोहण, तैलाभ्यङ्ग श्रीदुर्गा-पूजा, चन्द्रदर्शन, मु. ३०, **(B) मेला बाहूफोर्ट (जम्मू)-कांगड़ादेवी, नैनादेवी (हि.प्र.) (C) वैशाख संक्रान्ति,** मु. १५, पुण्यकाल सं. प्रात: 7/44 बाद, **वैशाखी पर्व** (पंजाब), **मेला मनसादेवी (पंचकूला)** हरियाणा **(D)** बुध उ.भा. में ३/३०, **शुक्र मीन में ४७/२५ (E)** (दक्षिण-भारत), वैशाखस्नान प्रारम्भ, गुड फ्राइडे (क्रिश्चियन)

शनौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 13 अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	३	१	११	८	१०	८	२	८
२८	१	१४	१	०	२६	२६	२८	२८
४०	१८	१७	४	१३	३५	९	२	२
२	४८	१४	१	४३	४९	३६	५७	५७
58 49	844 33	39 27	63 54	0 32	72 31	1 37	3 11	3 11
रेव ४	पुन ४	रोहि २	पूभा ४	मूल १	पूभा २	पूषा ४	पुन ३	उषा १
०	०	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	०	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रात: 5:30

१ · १२ सू. बु. · ११ शु. · १० · ९ गु. श. के. · ८ · ७ · ६ · ५ · ४ चं. · ३ रा. · २ मं.

शुक्रे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 19 अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	५	१	११	८	११	८	२	८
४	२८	१८	८	०	३	२६	२७	२७
३२	१४	१३	३	७	५१	१७	४३	४३
२१	२७	३१	४८	१५	१०	४९	५२	५२
58 36	864 12	39 18	77 51	1 38	72 36	1 2	3 11	3 11
अश्वि २	चित्रा २	रोहि ३	उभा २	मूल १	उभा १	पूषा ४	पुन ३	उषा १
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रात: 5:30

१ सू. · १२ शु. बु. · ११ · १० · ९ गु.श. के. · ८ · ७ · ६ चं. · ५ · ४ · ३ रा. · २ मं.

चैत्र शुक्ल पक्षफल–

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा (6 अप्रैल, शनिवार) से 'शिवविंशति' का **'परिधावी'** नामक नया विक्रमी संवत् २०७६ प्रारम्भ होगा। संवतारम्भ से व्रतानुष्ठान, होम, दानादि शुभ कार्यों के संकल्पादि में इसी नाम का प्रयोग होगा। नवसम्वत् का राजा **'शनि'** तथा मन्त्री **'सूर्य'** होगा। परस्पर शत्रु ग्रहों के प्रभावस्वरूप विश्व में अनेक राष्ट्रों के मध्य युद्धोन्माद रहे। साधारण लोगों को सरकारी नीतियों के कारण मानसिक व आर्थिक कष्टों का सामना होगा। लोग असुरक्षा की भावना, क्लिष्ट रोगों, महँगाई एवं आर्थिक अस्थिरता के कारण परेशान रहें। विशेष वर्ग के लोगों में सुख-साधनों की वृद्धि होगी। प्रशासकों व राजनीतिज्ञों के मध्य विरोध एवं वैमनस्य रहे। लोगों में भोग-विलास व प्रदर्शन की प्रवृत्ति बढ़े। चैत्र शु. प्रतिपदा को नए संवत् का नाम, वास, सवारी आदि के फल का श्रवण किसी प्रतिष्ठित ब्राह्मण, गुरु या अग्रज (पिता/दादादि) के श्रीमुख द्वारा श्रवण करना शुभ होता है। चैत्र प्रतिपदा से नवमी पर्यन्त **(ता. 6 से 14 अप्रैल)** प्रतिदिन श्रीदुर्गा व श्रीगणेश प्रतिमा के सामने शुद्ध चित्त होकर मन्त्रपूर्वक अग्रजों द्वारा कलश-स्थापन एवं ज्योति प्रज्वलन करना तथा **'श्रीदुर्गा सप्तशती'** पाठ करने का विधान है। प्रतिपदा को वैधृति नक्षत्र रहने से इस बार घटस्थापन अभिजित मुहूर्त्त (देखें पृ. 17) में करके पंचदेव पूजार्चन कर ब्राह्मणों को भोजन, वस्त्र, दान-दक्षिणा, पंचांगादि देकर सम्मानित करना चाहिए। ***वैशाख संक्रान्ति*–14 अप्रैल, रविवार** को दोपहर 2 बजकर 8 मिनट (14/08) पर आश्लेषा नक्षत्र, शूल योग तथा कर्क राशिस्थ चन्द्रमा कालीन कर्क लग्न में प्रवेश करेगी। १५ मुहूर्ति इस सं. का पुण्यकाल प्रात: 7/44 बाद सारा दिन रहेगा। वारानुसार घोरा तथा नक्षत्रानुसार राक्षसी नामक यह सं. नीच व दुष्टजनों के लिए लाभप्रद रहेगी।

***आकाश लक्षण*—**मध्याह्न काले सं. प्रवेश होने से व्यापारियों को लाभ तथा उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में कहीं आंधी/चक्रवात से खड़ी फसलों को हानि पहुँचे।

वि. संवत् २०७६, वैशाख कृष्ण पक्ष शाक : १९४१

सन् 2019 ई. (ता. 20 अप्रैल से 4 मई तक) हिजरी सन् 1440

सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु :

भा.स्टैं.टा. जालन्धर

प्रातः बुध–शुक्र पूर्वक्षितिज में, शनि याम्योत्तरवृत्तासन्न और गुरु याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में होगा। सायं मंगल पश्चिम में होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घटी	पल	नक्षत्र	समाप्ति काल घटी	पल	योग	समाप्ति काल घटी	पल	करण	समाप्ति काल घटी	पल	चैत्र शक	इस्लाम मास	अप्रैल	वैशा. प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.
३२.२३	१	शनि	२०	५८	स्वा.	३०	००	वज्र सिद्धि	६ ५९	८ २०	कौ	२०	५८	30	14	20	७	तुला	वैशाख कृष्णपक्ष प्रारम्भ, सूर्य सायन वृष में २१/१०, ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ	०	५	३२	५	5	58	18	55
३२.२८	२	रवि	१६	३०	विशा	२७	४०	व्य.	५३	५५	ग	१६	३०	वै.	15	21	८	वृ. १३/०५	भ. ५४/०७ से, शक वैशाख प्रारम्भ, अगस्त्य-अस्त	०	६	३०	३८	5	57	18	56
३२.३०	३	चंद्र	१३	४३	अनु	२७	३	वरी	४९	५८	वि	१३	४३	2	16	22	९	वृश्चिक	भ. १३/४३ तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 13-16), **(A)**	०	७	२९	६	5	56	18	56
३२.३५	४	मंग	१२	५३	ज्ये.	२८	२३	परि	४७	४०	बा	१२	५३	3	17	23	१०	ध. २८/२३	सती अनुसूया जयन्ती, गण्डमूल विचार	०	८	२७	३३	5	55	18	57
३२.४०	५	बुध	१४	५	मूल	३१	४३	शिव	४६	५३	तै	१४	५	4	18	24	११	धनु	प्लूटो वक्री 24[घं.]–10[मिं.], गण्डमूल 18/35 तक	०	९	२६	०	5	54	18	58
३२.४३	६	गुरु	१७	१५	पू.षा.	३६	५०	सिद्ध	४७	३०	व	१७	१५	5	19	25	१२	म. ५३/२३	भ. १७/१५ से ४९/३८ तक, बुध रेवती में ११/३८ — 'गुरु' वृश्चिक में 22 अप्रैल	०	१०	२४	२५	5	53	18	58
३२.४८	७	शुक्र	२२	००	उ.षा.	४३	२५	साध्य	४९	१५	ब	२२	००	6	20	26	१३	मकर	मंगल मृगशिर में ४७/५५,	०	११	२२	४८	5	52	18	59
३२.५३	८	शनि	२७	५५	श्रव.	५०	५३	शुभ	५१	३८	कौ	२७	५५	7	21	27	१४	मकर		०	१२	२१	१०	5	51	19	0
३२.५८	९	रवि	३४	२०	धनि.	५८	४०	शुक्ल	५४	१५	तै	१	८	8	22	28	१५	कुं. २४/४८	**पंचक प्रारम्भ** २४/४८, सूर्य भरणी में ०/३०	०	१३	१९	३०	5	50	19	1
३३.००	१०	चंद्र	४०	३८	शत.	६०	००	ब्रह्म	५६	३८	व	७	२९	9	23	29	१६	कुम्भ	भ. ७/२९ से ४०/३८ तक, शुक्र रेवती में ३३/५३	०	१४	१७	४८	5	49	19	1
३३.०५	११	मंग	४६	१५	शत.	६	८	ऐन्द्र	५८	२३	ब	१३	२६	10	24	30	१७	मी. ५६/०८	**वरूथिनी एकादशी व्रत, शनि वक्री १/२०,** श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती	०	१५	१६	४	5	48	19	2
३३.१०	१२	बुध	५०	४५	पू.भा.	१२	४३	वैधृ	५९	१८	कौ	१८	३०	11	25	मई	१८	मीन	मई मास प्रारम्भ, श्रम दिवस	०	१६	१४	१९	5	47	19	3
३३.१३	१३	गुरु	५३	५८	उ.भा.	१८	१०	विष्क	५९	१०	ग	२२	२२	12	26	2	१९	मीन	भ. ५३/५८ से, प्रदोष व्रत, गण्डमूल 13/02 बाद	०	१७	१२	३३	5	46	19	3
३३.१८	१४	शुक्र	५५	४८	रेव.	२२	१८	प्रीति	५८	००	वि	२४	५३	13	27	3	२०	मे. २२/१८	भ. २४/५३ तक, **पंचक समाप्त २२/१८, बुध** अश्वि. १ **मेष में (B)**	०	१८	१०	४५	5	45	19	4
३३.२३	३०	शनि	५६	२०	अश्वि	२५	८	आयु	५५	५०	च	२६	४	14	28	4	२१	मेष	**वैशाख अमावस, शनैश्चरी अमावस,** मेला पिंजौर (हरियाणा)**(C)**	०	१९	८	५५	5	44	19	5

(A) वक्री गुरु ज्ये. ४ वृश्चिक में ४७/४५, गण्डमूल 16/45 बाद **(B)** २८/०५, मासशिवरात्रि व्रत **(C)** गण्डमूल 15/47 तक

शनौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 27 अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	९	१	११	७	११	८	२	८
१२	१३	२३	१९	२९	१३	२६	२७	२७
२०	६	२७	२२	४९	३२	२३	१८	१८
१९	४४	१८	२३	१	२९	२०	२६	२६
58 23	710 44	39 8	93 23	3 5	72 44	0 15	3 11	3 11
अश्वि ४	श्रव १	मृग १	रेव १	ज्ये. ४	उभा ४	पूषा ४	पुन ३	उषा १
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5:30

१ सू.; २ मं.; ३ रा.; ४; ५; ६; ७; ८ गु.; ९ श. के.; १० चं.; ११; १२ शु. बु.

शनौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 4 मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	०	१	०	७	११	८	२	८
१९	७	२८	०	२९	२२	२६	२६	२६
८	५०	०	५४	२३	१	२३	५६	५६
२१	४१	४९	२३	४७	५०	१	११	११
58 11	773 20	39 1	106 10	4 17	72 49	0 26	3 11	3 11
भर २	अश्वि ३	मृग २	अश्वि १	ज्ये. ४	रेव २	पूषा ४	पुन ३	उषा १
०	०	मा	मा	व	मा	व	व	व
०	०	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5:30

१ सू. चं. बु.; २ मं.; ३ रा.; ४; ५; ६; ७; ८ गु.; ९ श. के.; १०; ११; १२ शु.

वैशाख कृष्ण पक्षफल–

वैशाख मास (चैत्र पूर्णिमा से वैशाख पूर्णिमा पर्यन्त) प्रतिदिन प्रातः सूर्योदय से पूर्व किसी तीर्थस्थान, नदी या कुआँ, बावली, तालाब अथवा अपने निवास पर ही गंगाजलादि मिश्रित पवित्र जल से स्नान कर भगवान् लक्ष्मीनारायण की पूजार्चन करके नित्य श्री विष्णुसहस्रनाम, वैशाख माहात्म्य तथा '**ॐ' नमो भगवते वासुदेवाय**' आदि नाम मन्त्रों, पापप्रशमन स्तोत्र का जप करना चाहिए। **वैशाख पूर्णिमा** के दिन ब्राह्मणों को यथाशक्ति वस्त्र, ऋतुफल, वस्त्रादि का दान देने तथा भगवान् विष्णु की विधिपूर्वक पूजा करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। ***ग्रह–गोचर***—गत पक्ष में वृश्चिक राशिगत **गुरु वक्री** हुआ है। अन्न, अनाज, गेहूँ, रूई, कपास, घी के मूल्यों में शीघ्र ही विशेष तेजी बनेगी। ता. 30 अप्रैल को शनि भी वक्री होगा। शनि पर मंगल की विशेष अष्टम दृष्टि है। सत्तारूढ़ व विपक्षी दलों के नेताओं में परस्पर टकराव व खींचातानी बढ़ेगी। सत्तारूढ़ एन.डी.ए. गठबन्धन की विभिन्न पार्टियों में आपसी सामंजस्य की कमी व तनाव रहे। बढ़ती महँगाई के विरुद्ध उपद्रव, जनांदोलन एवं तोड़-फोड़ की घटनाएँ बढ़ेंगी। सुख में कमी हो, देश के कुछ भागों में युद्ध जैसे हालात बनेंगे। कहीं दुर्भिक्ष एवं कहीं सीमावर्त्ती क्षेत्रों में युद्ध का आतंक छाया रहे–'**शनि वक्रे दुर्भिक्षं च राज्ञां युद्धं परस्परम्। रुण्ड मुण्ड च मेदिनीम्।।**' ***लोक–भविष्य***—चान्द्र वैशाख मास में पाँच शनिवार होने से कहीं भूकम्प, बादल-विस्फोट, यानादि दुर्घटना अथवा अग्निकाण्ड, तूफान आदि प्राकृतिक प्रकोपों से भारी जन-धन हानि होने का भय है। अनाज, दालों एवं खाद्य-तेलों में तेजी होगी। कहीं उपद्रव, झगड़े, फिसाद एवं जनांदोलन के संकेत हैं। जातीय उत्पाद और साम्प्रदायिक दंगे बढ़ेंगे। कहीं राज्य-परिवर्तन एवं कहीं राजनैतिक अस्थिरता का वातावरण बने। नए-नए राजनैतिक गठबन्धन बनेंगे। जनोपयोगी आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में तेजी का रुझान रहेगा। '**शनिवारा यदा पंचपाताले कम्पते फणीः। ईशान देशभङ्गश्च वह्नि दाहो महर्घता।।**' ***आकाश लक्षण***—ग्रीष्म (गर्मी) का प्रचण्ड वेग रहे तथा दुर्भिक्ष का भय लगे।

वि. संवत् २०७६, वैशाख शुक्ल पक्ष शाक : १९४१ तारीखें चंद्र राशि सन् 2019 ई. (ता. 5 मई से 18 मई तक) हिजरी सन् 1440 भा.स्टैं.टा. जालन्धर

वि. संवत् २०७६, वैशाख शुक्ल पक्ष शाक: १९४१ — सन् 2019 ई. (ता. 5 मई से 18 मई तक) हिजरी सन् 1440

सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु: — भा. स्टैं. टा. जालन्धर

प्रातः बुध-शुक्र पूर्वक्षितिज में होंगे। 9 मई से बु. पूर्व में ही अस्त हो जाएगा। गु. पश्चिम कपाल तथा शनि याम्योत्तर से पश्चिम में होगा। सायं मं. पश्चिम में होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	योग	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	करण	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	तारीख वैशा. शु.	तारीख शाबान मु.	तारीख मई	तारीख वैशा. प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
३३.२३	१	रवि	५५	३८	भर.	२६	४०	सौभा	५२	४०	किं	२५	५९	15	29	5	२२	वृ. ४१/५५	वैशाख शुक्लपक्ष प्रारम्भ	०	२०	७	३	5	44	19	5
३३.२८	२	चंद्र	५३	५८	कृति.	२७	१५	शोभ	४८	४५	बा	२४	४८	16	30	6	२३	वृष	चन्द्रदर्शन, मु. ४५, श्रीशिवाजी-जयन्ती	०	२१	५	११	5	43	19	6
३३.३३	३	मंग	५१	२८	रोहि.	२६	५३	अति	४४	१०	तै	२२	४३	17	रम	7	२४	मि. ५६/२३	**अक्षय-तृतीया, भगवान् परशुराम जयन्ती**, मंगल मिथुन में २/५८,(A)	०	२२	३	१६	5	42	19	7
३३.३५	४	बुध	४८	१५	मृग.	२५	४८	सुक	३९	००	व	१९	५२	18	2	8	२५	मिथुन	भ. १९/५२ से ४८/१५ तक,	०	२३	१	२२	5	41	19	7
३३.४०	५	गुरु	४४	२८	आर्द्रा	२४	३	धृति	३३	२०	ब	१६	२२	19	3	9	२६	मिथुन	**आद्यगुरु श्रीशंकराचार्य जयन्ती**, राहु पुन २ केतु पू.षा. ४ में (B)	०	२३	५९	२३	5	40	19	8
३३.४०	६	शुक्र	४०	५	पुन.	२१	४३	शूल	२७	१३	कौ	१२	१७	20	4	10	२७	क. ७/२०	श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती, बुध भर. में ४१/०८, **शुक्र** अश्वि. १ (C)	०	२४	५७	२३	5	40	19	9
३३.४८	७	शनि	३५	१५	पुष्य	१८	५५	गंड	२०	४०	ग	७	४०	21	5	11	२८	कर्क	भ. ३५/१५ से, **श्रीगङ्गा-जयन्ती**, सूर्य कृति. में ४६/१०, गण्डमूल	०	२५	५५	२१	5	39	19	10
३३.५०	८	रवि	२९	५८	आश्ले	१५	४३	वृद्धि	१३	५०	वि.	२	३७	22	6	12	२९	सिं. १५/४३	भ. २/३७ तक, **श्रीदुर्गाष्टमी, श्रीबगुलामुखी जयन्ती** (रात्रि-व्या.)	०	२६	५३	१९	5	38	19	10
३३.५५	९	चंद्र	२४	२०	मघा	१२	५	ध्रुव व्या.	६ ५९	३८ १०	कौ	२४	२०	23	7	13	३०	सिंह	**जानकी (सीता) जयन्ती**, गण्डमूल 10/27 तक	०	२७	५१	१३	5	37	19	11
३३.५८	१०	मंग	१८	२८	पू.फा.	८	१०	हर्ष	५१	३८	ग	१८	२८	24	8	14	३१	कं. २२/१०	भ. ४५/२९ से,	०	२८	४९	५	5	37	19	12
३४.००	११	बुध	१२	३०	उ.फा.	४	१०	वज्र	४४	८	वि	१२	३०	25	9	15	ज्ये.	कन्या	भ. १२/३० तक, **मोहिनी एकादशी व्रत, सूर्य वृष में १३/३०, (D)**	०	२९	४६	५८	5	36	19	12
३४.०५	१२	गुरु	६	४३	हस्त चित्रा	० ५६	१८ ४३	सिद्धि	३६	५३	बा	६	४३	26	10	16	२	तु. २८/२५	**प्रदोष व्रत**	१	०	४४	४७	5	35	19	13
३४.०८	१३	शुक्र	१	१५	स्वा.	५३	५०	व्य.	३०	५	तै	१	१५	27	11	17	३	तुला	भ. ५६/३० से, **श्रीनृसिंह-जयन्ती**, मंगल आर्द्रा में २०/५८, (E)	१	१	४२	३४	5	35	19	14
अवम्	१४	शुक्र	५६	३०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	चतुर्दशी तिथि का क्षय ०० ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
३४.१०	१५	शनि	५२	४८	विशा	५२	००	वरी.	२४	००	वि	२४	३९	28	12	18	४	वृ. ३७/२०	भ. २४/३९ तक, **वैशाख पूर्णिमा, श्रीबुद्ध-जयन्ती, बुध वृष में (F)**	१	२	४०	१९	5	34	19	14

(A) केदार-बदरी यात्रा प्रारम्भ, श्रीटैगोर-जयन्ती, रमज़ान (मुस्लि.) मास प्रारम्भ **(B)** ४/५५, बुध पूर्व में अस्त ५९/०३ **(C)** मेष में ३३/३३ **(D) ज्येष्ठ संक्रान्ति**, मु. ३०, पुण्यकाल सं. सूर्योदय बाद सारा दिन **(E)** बुध कृति. में ११/४५ **(F)** ४५/००, **श्रीबुद्ध-पूर्णिमा**, वैशाखस्नान समाप्त, श्रीछिन्नमस्तिका जयन्ती, **श्रीसत्यनारायण व्रत**, श्री कूर्म-जयन्ती

रवौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 12 मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	३	२	०	७	०	८	२	८
२६	२६	३	१५	२८	१	२६	२६	२६
५३	१३	१२	५४	४५	४४	१६	३०	३०
०	३२	१८	५९	१३	२७	४८	४५	४५
57 56	850 30	38 51	120 40	5 29	72 51	1 12	3 11	3 11
कृति १	आश्ले ३	मृग ३	भर १	ज्ये ४	अश्वि १	पूषा ४	पुन २	पूषा ४
०	०	मा	मा	व	मा	व	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5:30 — १ सू. बु. शु.; २; ३ मं. रा.; ४ चं.; ५; ६; ७; ८ गु.; ९ श. के.; १०; ११; १२

शनौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 18 मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	६	२	०	७	०	८	२	८
२	२१	७	२८	२८	९	२६	२६	२६
४०	२२	५	२२	१०	१	८	११	११
१२	५०	४	४१	२३	३९	१३	४०	४०
57 46	824 5	38 44	129 19	6 14	72 53	1 45	3 10	3 10
कृति २	चित्रा १	आर्द्रा १	कृति १	ज्ये ४	अश्वि ३	पूषा ४	पुन २	पूषा ४
०	०	मा	मा	व	मा	व	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5:30 — २ सू.; ३ रा. मं.; १ शु. बु.; १२; ४; ५; ११; ६; ८ गु.; १०; ७ चं.; ९ श. के.

वैशाख शुक्ल पक्षफल–

ता. 7 मई, मंगलवार को अक्षय-तृतीया और भगवान् के अंशावतार श्रीपरशुराम जी की पुण्य जन्म तिथि है। इस तिथिकाल में किए गए शुभ कार्यों जैसे-तीर्थस्नान, दान, जप-तप, होम, देव-पितृ तर्पण आदि शुभ कर्मों का फल अनन्त होता है। इस तिथि की गणना युगादि तिथियों में की जाती है, क्योंकि त्रेतायुग (कल्पभेद से सतयुग) का शुभारम्भ इसी तिथि से हुआ था। नर-नारायण, परशुराम और हयग्रीव-ये तीन मुख्य अवतार इसी तिथि में हुए थे। **यह पवित्र, स्वयं-सिद्ध मुहूर्त्त एवं सुख-सौभाग्य** प्रदायक तिथि मानी गई है। इस दिन व्रत रखकर श्रीगङ्गा, यमुनादि तीर्थस्नान के बाद गेहूँ, चने, चावल, अनाज, दूध, दही, बर्फी जलापूरित घड़ा, पात्र, फल, वस्त्र, नवसंवत् की पंचाङ्ग का दान एवं ब्राह्मण भोजन करवाना चाहिए। **'श्रीगङ्गा-जयन्ती'** (11 मई) को श्रीगङ्गा जी का अवतरण पृथ्वी पर हुआ था। इस पक्ष एवं तिथि में हरिद्वार में गंगा-स्नान एवं पुष्पाक्षत व दीपादि द्वारा गङ्गापूजन, जप-पाठ एवं अन्न, वस्त्र, फलादि दान करने का विशेष माहात्म्य होता है। **ता. 12 मई** को रात्रिव्यापिनी नवमी को शक्तिरूपा **बगुलामुखी देवी** की पूजार्चना करने से ऋण, रोग व शत्रु का भय नहीं रहता। **नृसिंह जयन्ती** (17 मई) पर नृसिंह भगवान् का श्रीलक्ष्मी सहित पंचोपचार पूजन करना चाहिए। प्रतिवर्ष पूजन, व्रतादि करने से नृसिंह भगवान् सब प्रकार से रक्षा करते हैं और धन-धान्य देते हैं। **'वैशाख पूर्णिमा'** (18 मई) को तीर्थ पर गङ्गाजल सहित स्नान करके भगवान् विष्णु का ध्यान, पूजन एवं श्रीविष्णु सहस्रनाम का पाठ करना चाहिए। ***'ज्येष्ठ संक्रान्ति'***–ता. 15 मई, बुधवार को प्रातः 11/00 बजे कर्क लग्न में प्रवेश करेगी। ३० मुहूर्ति इस सं. का पुण्यकाल प्रातः सूर्योदय बाद सारा दिन रहेगा। वारानुसार मन्दाकिनी तथा नक्षत्रानुसार क्षिप्र संज्ञक यह सं. राजनेताओं तथा नीच लोगों को लाभ देने वाली रहेगी। बुधवार की सं. होने से उपभोग्य एवं धान्यादि के भावों में विशेष उतार-चढ़ाव नहीं होंगे तथा वर्षाकाल में मन्द-मन्द व रुक-रुक कर खण्ड वर्षा हो। ***संक्रां. राशिफल***–यह संक्रान्ति कर्क, सिंह, कन्या, तुला, मकर, मीन, मेष राशि के लिए लाभकारी, शेष के लिए कष्टकारी रहे।

वि. संवत् २०७६, ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष शाक: १९४१ — सन् 2019 ई. (ता. 19 मई से 3 जून तक) हिजरी सन् 1440 — भा.स्टैं.टा. **जालन्धर**

सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु:

प्रात: शुक्र पूर्वक्षितिज में, गुरु पश्चिम कपाल में तथा शनि याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में होगा। सायं मं. पश्चिम में तथा 1 जून से बुध भी पश्चिमी क्षितिज में होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घटी	पल	नक्षत्र	समाप्ति काल घटी	पल	योग	समाप्ति काल घटी	पल	करण	समाप्ति काल घटी	पल	तारीखें: वैशा. गते	रमज़ान मं.	मई	ज्ये. प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	घट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
३४.१३	१	रवि	५०	२३	अनु.	५१	२३	परि.	१८	५०	बा	२१	३५	29	13	19	५	वृश्चिक	ज्येष्ठ कृष्णपक्ष प्रारम्भ, गण्डमूल 26/07 बाद	१	३	३८	५	5	34	19	15
३४.१७	२	चंद्र	४९	३३	ज्ये.	५२	२०	शिव	१४	५०	तै	१९	५८	30	14	20	६	ध. ५२/२०	**श्रीनारद-जयन्ती**, वीणादान, गण्डमूल विचार	१	४	३५	४८	5	33	19	16
३४.२०	३	मंग.	५०	२३	मूल	५४	५८	सिद्ध	१२	८	व	१९	५८	31	15	21	७	धनु	भ. १९/५८ से ५०/२३ तक, शुक्र भर. में ३२/३०, सूर्य सायन मिथुन में १९/५३,	१	५	३३	२९	5	32	19	16
३४.२३	४	बुध	५२	५३	पू.षा.	५९	१३	साध्य	१०	४५	ब	२१	३८	ज्ये	16	22	८	धनु	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 13-16), शक ज्येष्ठ प्रारम्भ	१	६	३१	११	5	32	19	17
३४.२७	५	गुरु	५७	००	उ.षा.	६०	००	शुभ	१०	४३	कौ	२४	५७	2	17	23	९	म. १५/३३	बुध रोहिणी में १९/५५,	१	७	२८	५४	5	31	19	18
३४.२८	६	शुक्र	६०	००	उ.षा.	५	००	शुक्ल	११	४८	ग	२९	३९	3	18	24	१०	मकर		१	८	२६	३२	5	31	19	18
३४.३०	६	शनि	२	१८	श्रव.	११	५०	ब्रह्म	१३	४३	व	२	१८	4	19	25	११	कुं. ४५/३०	भ. २/१८ से ३५/१९ तक, **पंचक प्रारम्भ ४५/३०**, सूर्य रोहिणी में ३७/१५	१	९	२४	१०	5	31	19	19
३४.३३	७	रवि	८	२०	धनि.	११	२०	ऐन्द्र	१६	१०	ब	८	२०	5	20	26	१२	कुम्भ		१	१०	२१	४८	5	30	19	19
३४.३५	८	चंद्र	१४	२५	शत.	२६	४८	वैधृ.	१८	३५	कौ	१४	२५	6	21	27	१३	कुम्भ		१	११	१९	२५	5	30	19	20
३४.३९	९	मंग.	२०	५	पू.भा.	३३	४३	विष्क	२०	४०	ग	२०	५	7	22	28	१४	मी. १७/०५	भ. ५२/२३ से,	१	१२	१६	५९	5	29	19	21
३४.४०	१०	बुध	२४	४०	उ.भा.	३९	३३	प्रीति	२१	५५	वि	२४	४०	8	23	29	१५	मीन	भ. २४/४० तक, बुध मृग. में ३१/०३, गण्डमूल 21/18 बाद	१	१३	१४	३५	5	29	19	21
३४.४३	११	गुरु	२७	५३	रेव.	४३	५५	आयु	२२	८	बा	२७	५३	9	24	30	१६	मे. ४३/५५	**पंचक समाप्त ४३/५५, अपरा एकादशी व्रत**, मेला भद्रकाली (A)	१	१४	१२	९	5	29	19	22
३४.४५	१२	शुक्र	२९	३३	अश्वि	४६	५०	सौभा.	२१	५	तै	२९	३३	10	25	31	१७	मेष	**प्रदोष व्रत**, वक्री गुरु ज्ये. (३) में ४६/००, गण्डमूल 24/12 तक	१	१५	९	३९	5	28	19	22
३४.४७	१३	शनि	२९	३३	भर.	४८	८	शोभ	१८	४८	व	२९	३३	11	26	जून	१८	मेष	भ. २९/३३ से ५८/४७ तक, **बुध मिथुन में ४७/०८**, शुक्र (B)	१	१६	७	१२	5	28	19	23
३४.४८	१४	रवि	२८	००	कृति.	४७	५८	अति	१५	१५	श	२८	००	12	27	2	१९	वृ. ३/१०	सावित्री चौदश	१	१७	४	४३	5	28	19	23
३४.५०	३०	चंद्र	२५	१०	रोहि.	४६	३३	सुक.	१०	३८	ना	२५	१०	13	28	3	२०	वृष	**ज्येष्ठ (सोमवती) अमावस**, भावुका अमावस, **शनैश्चर जयन्ती**,(C)	१	१८	२	१४	5	28	19	24

(A) एकादशी (कपूरथला) पंजाब (B) कृति. में ३०/२३, बुध पश्चिम में उदय ३७/२३, मासशिवरात्रि व्रत, जून मास प्रारम्भ (C) वट सावित्री व्रत (अमा. पक्ष), **मेला हरिद्वार-प्रयागराजादि, तीर्थस्नान माहात्म्य**

चन्द्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 27 मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१०	२	१	७	०	८	२	८
११	१४	१२	१७	२७	१९	२५	२५	२५
१९	४२	५२	५९	१०	५८	४९	४३	४३
२५	१०	५८	२१	३३	४	२२	४	४
57 36	714 2	38 34	128 35	7 6	72 59	2 31	3 11	3 11
रोहि १	शत ३	आर्द्रा २	रोहि ३	ज्ये. ४	भर. २	पूषा ४	पुन २	पूषा ४
०	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व
०	०	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रात: 5:30

२ सू. बु. — ३ रा. मं. — १ शु. — १२ — ११ चं. — १० — ९ श. के. — ८ गु. — ७ — ६ — ५ — ४

चन्द्रे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 3 जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१	२	२	७	०	८	२	८
१८	१२	१७	२	२६	२८	२५	२५	२५
२	४४	२२	२३	१९	२९	३०	२०	२०
१९	३८	४३	१४	२६	१२	७	४८	४८
57 30	822 14	38 29	115 2	7 31	73 4	3 3	3 10	3 10
रोहि ३	रोहि १	आर्द्रा ४	मृग ३	ज्ये. ३	कृति १	पूषा ४	पुन २	पूषा ४
०	०	मा	मा	व	मा	व	व	व
०	०	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रात: 5:30

२ सू. चं. — ३ रा. बु. मं. — १ शु. — १२ — ११ — १० — ९ श.के. — ८ गु. — ७ — ६ — ५ — ४

ज्येष्ठ कृष्ण पक्षफल–

ज्येष्ठ मास में एकादशी, संक्रान्ति, अमावस्या, गंगा-दशमी, निर्जला एकादशी, पूर्णमाशी आदि पर्वों पर श्रद्धापूर्वक व्रत रखकर जलापूरित घड़ा (पात्र), गेहूँ, चावल, सत्तु, चने आदि अनाज, दूध, चीनी, शक्कर, पंखा, छाता, आम-खरबूजा आदि फल, वस्त्र तथा अन्य ग्रीष्म-उपयोगी वस्तुओं का संकल्पपूर्वक सुपात्र ब्राह्मण को दक्षिणा सहित दान करने का विशेष माहात्म्य है। इस पक्ष की **अपरा एकादशी (30 मई)** का व्रत विधिपूर्वक रखने तथा किसी गरीब परिवार की समर्थ्यानुसार अन्न-धनादि से सहायता करने से अज्ञानतावश किए गए अनेकश: पापों से मुक्ति मिल जाती है। इस पक्ष की त्रयोदशी से **वट वृक्ष** का पूजन करके अमावस तक तीन दिन वटसावित्री का व्रत वैधव्य दोष की शान्ति हेतु स्त्रियों को करना कल्याणकारी होता है। ता. 3 जून, **शनैश्चर जयन्ती** के दिन सायंकाल दशरथकृत शनि स्तोत्र का पाठ शनि या शिव मन्दिर में करने से शनिजन्य दोषों की शान्ति होती है। इसी दिन **सोमवती अमावस्या** को तीर्थस्नान, भगवान् शिव की पूजार्चना, जप, पाठ पितृ-तर्पण एवं ब्राह्मणों को भोजन, वस्त्र, दक्षिणा आदि का दान करना विशेष पुण्यप्रदायक माना जाता है। *लोक-भविष्य*–'*मंगल-शनि*' के मध्य समसप्तक दृष्टि सम्बन्ध बनने से राजनेताओं के मध्य परस्पर टकराव व विरोध होंगे। लोकसभा चुनावों पश्चात् नवीन गठबन्धन बनेंगे। कुछ राज्यों में राजनीतिक टकराव, उपद्रव, साम्प्रदायिक तनाव, विस्फोटक व हिंसक घटनाएं घटित होने के संकेत हैं। चान्द्र ज्येष्ठ मास में पाँच रविवार होने से भी अत्यधिक महँगाई व भ्रष्टाचार के कारण सामान्य लोगों में आर्थिक परेशानियाँ एवं सामाजिक असुरक्षा का भय होगा। कहीं छत्रभंग, राजनैतिक अस्थिरता एवं राजनैतिक गतिरोध पैदा होने का भय है–**यत्रमासे रविवाराः जायन्ते पंचसततम्।**

वि. संवत् २०७६, ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष शाक: १९४१ ... (ता. 4 जून से 17 जून तक) हिजरी सन् 1440 — भा.स्टैं.टा. जालन्धर — सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु:

वि. संवत् २०७६, ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष शाके: १९४१ | सन् 2019 ई. (... 17 जून तक) हिजरी सन् 1440 | भा.स्टैं.टा. जालन्धर

सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतुः

प्रातः शुक्र पूर्वक्षितिज में, गु. पश्चिमी क्षितिज में तथा शनि पश्चिमी कपाल में होगा। सायं मं.-बु. पश्चिमी क्षितिज में होंगे।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मि.	योग	समाप्ति काल घं.	मि.	करण	समाप्ति काल घं.	मि.	तारीख (1)	तारीख (2)	तारीख (3)	तारीख (4)	चन्द्र राशि प्रवेश घड़ी-पल	विवरण	दे. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.
३४.५४	१	मंग.	२१	१८	मृग.	४४	१५	धृति / शूल	५ / ५८	५ / ४८	ब	२१	१८	14	29	4	२१	मि. १५/३०	चन्द्रदर्शन मु. ३०, **शुक्र वृष में १४/४३**, श्रीगङ्गा-स्नान प्रारम्भ, **(A)**	१	१८	५९	४२	5	27	19	25
३४.५५	२	बुध	१६	३३	आर्द्रा	४१	८	गंड	५१	५८	कौ	१६	३३	15	शव	5	२२	मिथुन	रम्भा तृतीया व्रत (देखें पृ. 17), बुध आर्द्रा में १६/००, शव्वाल (मु.)**(B)**	१	१९	५७	१०	5	27	19	25
३४.५७	३	गुरु	११	१०	पुन.	३७	३५	वृद्धि	४४	४८	ग	११	१०	16	2	6	२३	क. २३/३०	भ. ३८/१९ से, महाराणा प्रताप जयन्ती,	१	२०	५४	१२	5	27	19	26
३४.५८	४	शुक्र	५	२८	पुष्य	३३	४३	ध्रुव	३७	२३	वि	५	२८	17	3	7	२४	कर्क	भ. ५/२८ तक, मंगल पुन. में ५/३०, गण्डमूल 18/56 बाद	१	२१	५२	४	5	27	19	26
००.००	५	शुक्र	५९	३५	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०	००	**पंचमी तिथि का क्षय** ००० ०० ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
३४.५८	६	शनि	५३	४०	आश्ले	२९	४८	व्या.	२९	५५	कौ	२६	३८	18	4	8	२५	सिं. २९/४८	सूर्य मृग. में ३१/५३, अरण्य-षष्ठी, विन्ध्यवासिनी पूजा, गण्डमूल	१	२२	४९	३०	5	27	19	26
३५.००	७	रवि	४७	५५	मघा	२५	५५	हर्ष	२२	३०	ग	२०	४७	19	5	9	२६	सिंह	भ. ४७/५५ से, गण्डमूल 15/49 तक	१	२३	४६	५४	5	27	19	27
३५.०१	८	चन्द्र	४२	२३	पू.फा.	२२	१५	वज्र	१५	१८	वि	१५	९	20	6	10	२७	कं. ३६/२३	भ. १५/०९ तक, **श्रीदुर्गाष्टमी**, धूमावती जयन्ती, मेला क्षीर-**(C)**	१	२४	४४	१७	5	27	19	27
३५.०२	९	मंग.	३७	१३	उ.फा.	१८	५५	सिद्धि	८	१८	बा	९	४८	21	7	11	२८	कन्या		१	२५	४१	३९	5	27	19	28
३५.०३	१०	बुध	३२	३०	हस्त	१६	००	व्य. / वरी	१ / ५५	३८ / २८	तै	४	५२	22	8	12	२९	तु. ४४/४५	**श्रीगङ्गा-दशहरी पर्व (हरिद्वार)**, शुक्र रोहिणी में २७/१०	१	२६	३९	०	5	27	19	28
३५.०४	११	गुरु	२८	२८	चित्रा	१३	४०	परि.	४९	४८	वि	२८	२८	23	9	13	३०	तुला	भ. ०/२९ से २८/२८ तक, **निर्जला एकादशी व्रत**, बुध पुन. में १४/५८	१	२७	३६	२०	5	27	19	29
३५.०५	१२	शुक्र	२५	८	स्वा.	१२	३	शिव	४४	५०	बा	२५	८	24	10	14	३१	वृ. ५६/२५	**प्रदोष व्रत**, वटसावित्री व्रतारम्भ	१	२८	३३	३९	5	27	19	29
३५.०६	१३	शनि	२२	४५	विशा.	११	२०	सिद्ध	४०	३८	तै	२२	४५	25	11	15	आ	वृश्चिक	**सूर्य मिथुन में ३०/२५, आषाढ़ संक्रान्ति**, मु. ३०, पुण्यकाल **(D)**	१	२९	३१	५७	5	27	19	29
३५.०७	१४	रवि	२१	२८	अनु.	११	४०	साध्य	३७	२३	व	२१	२८	26	12	16	२	वृश्चिक	भ. २१/२८ से ५१/२७ तक, **वटसावित्री व्रत** (देखें पृ. 17), श्रीसत्यनारायण व्रत	२	०	२८	१४	5	27	19	30
३५.०८	१५	चन्द्र	२१	२५	ज्ये.	१३	१०	शुभ	३५	५	ब	२१	२५	27	13	17	३	ध. १३/१०	**ज्येष्ठ पूर्णिमा, सन्त कबीर जयन्ती** (621वाँ), गण्डमूल	२	१	२५	३०	5	27	19	30

(A) करवीर-व्रत (सूर्य पूजा), भावुका करिदिन **(B)** मास प्रारम्भ, उमा-अवतार **(C)** -भवानी (कश्मीर) **(D)** सं. प्रातः 11/11 बाद

चन्द्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 10 जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	४	२	२	७	१	८	२	८
२४	२१	२१	१४	२५	७	२५	२४	२४
४४	२६	५१	५५	२६	०	७	५८	५८
२४	३०	४९	१७	१५	४७	२१	३३	३३
57	849	38	96	7	73	3	3	3
22	11	23	57	39	7	31	11	11
मृग. १	पू.फा. ३	पुन. १	आर्द्रा ३	ज्ये. ३	कृत्ति. ४	पू.षा. ४	पुन. २	पू.षा. ४
०	०	मा	मा	व	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5:30

भाव	ग्रह
२	सू. शु.
१	—
१२	—
११	—
१०	—
९	श. के.
८	गु.
७	—
६	—
५	चं.
४	—
३	रा. बु. मं.

चन्द्रे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 17 जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	७	२	२	७	१	८	२	८
१	२७	२६	२५	२४	१५	२४	२४	२४
२५	११	२०	१६	३२	३२	४१	३६	३६
३७	५७	१३	२३	५२	४७	३७	१८	१८
57	767	38	77	7	73	3	3	3
16	59	17	30	33	11	53	11	11
मृग. ३	ज्ये. ४	पुन. २	पुन. २	ज्ये. ३	रोहि. २	पू.षा. ४	पुन. २	पू.षा. ४
०	०	मा	मा	व	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5:30

भाव	ग्रह
३	सू. मं. बु. रा.
२	शु.
१	—
१२	—
११	—
१०	—
९	श. के.
८	चं. गु.
७	—
६	—
५	—
४	—

ज्येष्ठ शुक्ल पक्षफल–

आपदग्रस्त स्त्रियों को '**करवीर व्रत**' शीघ्र फल देता है। द्वितीया-विद्धा तृतीया तिथि को (5 जून) '**रम्भा तृतीया व्रत**' किया जाएगा। इससे स्त्रियों को विवाह, सन्तान एवं सौभाग्य की प्राप्ति होती है। देवी माँ की पुष्प, नैवेद्य आदि से पूजन करके इस मन्त्र से प्रार्थना करनी चाहिए–**देवि ! त्वं शक्तिस्त्वं स्वधा स्वाहा त्वं सावित्री सरस्वती। पतिं देहि गृहं देहि सुतान देहि नमोऽस्तुते।।** माता पार्वती का जन्म भी इस तिथि को हुआ था। '**श्रीगङ्गा-दशहरा**' पर्व (12 जून) पर गंगास्नान एवं श्रीगङ्गा जी का अक्षत, द्रव्यों, नारियलादि सहित पूजार्चन तथा यथाशक्ति दानादि करने से कायिक-वाचिक और मानसिक-दस प्रकार के पापों का नाश होता है। इस दिन गंगा-स्तोत्रादि का पाठ करें तथा निम्न मन्त्र से आवाहन व प्रार्थना करें-'**ॐ नमः शिवायै नारायण्यै दशहरायै गङ्गायै नमः।।**' **निर्जला एकादशी** (13 जून) को संकल्पपूर्वक निराहार व्रत रखकर भगवान् विष्णु के पूजनोपरान्त द्वादशी को ब्राह्मणों को यथाशक्ति अन्न, वस्त्र, फल, जलपात्र, पंखा आदि दक्षिणा सहित दान करने का विशेष माहात्म्य होता है। अखण्ड सौभाग्य प्राप्ति हेतु स्त्रियों को त्र्योदशी से प्रदोष-व्यापिनी पूर्णिमा पर्यन्त (तीन-दिन) **वट-वृक्ष एवं शिव-पार्वती पूजार्चना** करना शुभ होता है। **ज्येष्ठ पूर्णिमा** (17 जून) के दिन जलापूरित घट, आम, खरबूजे, वस्त्र, सत्तू, चावल, गेहूँ, शक्कर, पंखे आदि ग्रीष्म मौसम उपयोगी वस्तुओं का दान दक्षिणा सहित सुपात्र विप्र को देना शुभ होगा। ***आषाढ़ संक्रान्ति*–ता. 15 जून, शनिवार**, सन् 2019 ई० को सायं 5 बजकर 37 मिनट पर वृश्चिक लग्न में प्रवेश करेगी। 30 मुहू. इस सं. का पुण्यकाल प्रातः 11/11 बाद से रहेगा। वारानुसार राक्षसी तथा नक्षत्रानुसार मृदु नामक यह सं. दुष्ट, नीच तथा राजनीतिज्ञों के लिए लाभप्रद रहेगी। **शनिवारी संक्रान्ति** होने से लोगों में शोक, असन्तोष एवं विचित्र प्रकार के रोगों की बहुलता रहेगी। लोगों में तनाव व विग्रह की प्रवृत्ति बढ़े। राजनीतिक पार्टियों में भी परस्पर विरोध एवं टकराव अधिक बढ़े। ***राशिफल*–सं.** वृष, कर्क, सिंह, कन्या, वृश्चिक, मीन राशि वालों के लिए शुभफली रहेगी। ***आकाश लक्षण*–**शनिवारी आषाढ़ सं. दुर्भिक्ष का संकेत दे रही है। **तदा दुर्भिक्षमा देश्यं धान्यस्यापि महर्घता।।** वर्षा की कमी से उपयोगी वस्तुएं महंगी होंगी।

वि. संवत् २०७६, आषाढ़ कृष्ण पक्ष शाक: १९४१

सन् 2019 ई. (ता. 18 जून से 2 जुलाई तक) हिजरी सन् 1440
सूर्य उत्तर–दक्षिणायन, उत्तर गोल, ग्रीष्म–वर्षा ऋतु:

भा.स्टैं.टा. — जालन्धर

ग्रह दर्शन–प्रात: शुक्र पूर्वक्षितिज में तथा शनि पश्चिम में होगा। सायं मं.–बु. पश्चिमी क्षितिज में तथा गुरु पूर्व में होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घटी	समाप्ति काल पल	नक्षत्र	समाप्ति काल घटी	समाप्ति काल पल	योग	समाप्ति काल घटी	समाप्ति काल पल	करण	समाप्ति काल घटी	समाप्ति काल पल	तारीखें रा. शाके	शव्वाल मु.	जून	आषा. प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
३५.०८	१	मंग.	२२	४०	मूल	१५	५८	शुक्ल	३३	५३	कौ	२२	४०	28	14	18	४	धनु	आषाढ़ कृष्णपक्ष प्रारम्भ, गण्डमूल 11/50 तक	२	२	२२	४६	5	27	19	30
३५.०९	२	बुध	२५	१८	पू.षा.	२०	८	ब्रह्म	३३	४५	ग	२५	१८	29	15	19	५	म. ३६/२०	भ. ५७/१६ से, ऋषभनाथ जयन्ती (जैन)	२	३	२०	२	5	27	19	31
३५.१०	३	गुरु	२९	१५	उ.षा.	२५	३०	ऐन्द्र	३४	३५	वि	२९	१५	30	16	20	६	मकर	भ. २९/१५ तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृ.13), **बुध कर्क में (A)**	२	४	१७	१६	5	27	19	31
३५.०९	४	शुक्र	३४	१३	श्रव	३१	५५	वैधृ	३६	१३	ब	१	४४	31	17	21	७	मकर	सूर्य सायन कर्क में ३९/५३, सायन दक्षिणायन प्रारम्भ, वर्षा ऋतु शुरु **(B)**	२	५	१४	३३	5	28	19	31
३५.०८	५	शनि	३९	५८	धनि.	३९	१०	विष्क	३८	३	कौ	७	५	आ	18	22	८	कुं. ५/२८	**पंचक प्रारम्भ ५/२८, सूर्य आर्द्रा में २९/३५, मंगल कर्क में (C)**	२	६	११	४७	5	28	19	31
३५.०७	६	रवि	४६	३	शत.	४६	४०	प्रीति	४०	५५	ग	१३	००	2	19	23	९	कुम्भ	भ. ४६/०३ से, शुक्र मृगशिर में २२/५३	२	७	९	१	5	28	19	31
३५.०७	७	चंद्र	५१	५३	पू.भा.	५३	५५	आयु	४३	१५	वि	१८	५८	3	20	24	१०	मी. ३७/०८	भ. १८/५८ तक, बुध पुष्य में ५/०८	२	८	६	१५	5	28	19	31
३५.०७	८	मंग.	५६	५३	उ.भा.	६०	००	सौभा	४४	५८	बा	२४	२३	4	21	25	११	मीन		२	९	३	३१	5	29	19	32
३५.०६	९	बुध	६०	००	उ.भा.	०	२३	शोभ	४५	५०	तै	२८	४५	5	22	26	१२	मीन	वक्री गुरु ज्ये. २ में ५७/५८, गण्डमूल 5/38 बाद	२	१०	०	४६	5	29	19	32
३५.०६	९	गुरु	०	३८	रेव	५	३८	अति	४५	३०	ग	०	३८	6	23	27	१३	मे. ५/३८	भ. ३१/४३ से, **पंचक समाप्त ५/३८**, मंगल पुष्य में ५८/४०	२	१०	५७	५९	5	29	19	32
३५.०५	१०	शुक्र	२	४८	अश्वि	९	१५	सुक	४३	४५	वि	२	४८	7	24	28	१४	मेष	भ. २/४८ तक, **शुक्र मिथुन में ५०/०८**, गण्डमूल 9/12 तक	२	११	५५	१५	5	30	19	32
३५.०५	११	शनि	३	१०	भर.	११	१०	धृति	४०	३५	बा	३	१०	8	25	29	१५	वृ. २६/२०	**योगिनी एकादशी व्रत**	२	१२	५२	२८	5	30	19	32
३५.०४	१२	रवि	१	४५	कृति	११	१८	शूल	३६	३	तै	१	४५	9	26	30	१६	वृष	भ. ५८/३८ से, **प्रदोष व्रत**	२	१३	४९	४२	5	30	19	32
अवम्	१३	रवि	५८	३८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	**त्र्योदशी तिथि का क्षय** ०० ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
३५.०३	१४	चंद्र	५३	५८	रोहि.	९	४५	गंड	३०	१०	वि	२६	१८	10	27	जुला	१७	मि. ३८/२५	भ. २६/१८ तक, मासशिवरात्रि व्रत, जुलाई मास प्रारम्भ	२	१४	४६	५८	5	31	19	32
३५.०२	३०	मंग.	४८	८	मृग.	६	४८	वृद्धि	२३	१५	च	२१	३	11	28	2	१८	मिथुन	**आषाढ़ अमावस, भौमवती अमावस**	२	१५	४४	११	5	31	19	32

(A) ५२/३५ **(B)** नैपच्यून वक्री 20घं.-06मिं. **(C)** ४४/४३, शक आषाढ़ प्रारम्भ

भौमे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 25 जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	११	३	३	७	१	८	२	८
९	४	१	४	२३	२५	२४	२४	२४
३	३४	२६	११	३३	१८	९	१०	१०
३४	३	१४	१	५२	४३	२३	५२	५२
57 14	722 25	38 14	52 14	7 6	73 19	4 12	3 11	3 11
आर्द्रा १	उ.भा. १	पुन. ४	पुष्य १	ज्ये. ३	मृग. १	पूषा ४	पुन. २	पूषा ४
०	०	मा	मा	व	मा	व	व	व
०	०	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रात: 5:30

भाव	राशि	ग्रह
1	३	सू. रा.
2	२	शु.
3	१	
4	१२	चं.
5	११	
6	१०	
7	९	श. के.
8	८	गु.
9	७	
10	६	
11	५	
12	४	बु. मं.

भौमे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 2 जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	२	३	३	७	२	८	२	८
१५	५	५	८	२२	३	२३	२३	२३
४४	३	५३	५८	४५	५२	३९	४८	४८
९	२१	३७	६	५६	१७	२४	३६	३६
57 13	857 3	38 10	24 57	6 28	73 25	4 22	3 11	3 11
आर्द्रा ३	मृग. ४	पुष्य १	पुष्य २	ज्ये. २	मृग. ४	पूषा ४	पुन. २	पूषा ४
०	०	मा	मा	व	मा	व	व	व
०	०	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रात: 5:30

भाव	राशि	ग्रह
1	३	सू. चं. शु. रा.
2	२	
3	१	
4	१२	
5	११	
6	१०	
7	९	श. के.
8	८	गु.
9	७	
10	६	
11	५	
12	४	बु. मं.

आषाढ़ कृष्ण पक्षफल–

आषाढ़ मास में भगवान् लक्ष्मीनारायण की कृपा प्राप्ति के लिए ब्रह्मचारी रहते हुए नित्यप्रति स्नानादि के पश्चात् भगवान् की पूजार्चना करके श्रीविष्णुसहस्रनाम अथवा श्रीहरिहर स्तोत्र का पाठ करना कल्याणप्रद होता है। इसके अतिरिक्त एकादशी, संक्रान्ति, अमावस्या और पूर्णमाशी के दिन ब्राह्मण दम्पत्ति को मिष्ठान्न सहित भोजन करवाना तथा यथाशक्ति आम, खरबूजे आदि मौसमी फल, जलपूरित घड़ा, पंखा, छाता, आँवले, वस्त्र, अनाज आदि का दान करना कल्याणकारी होता है। **स्वास्थ्य**–आषाढ़ मास में स्वयं को (विशेषकर सिर को) तेज धूप व ऊष्णता से बचाना चाहिए तथा सादा, भोजन, मौसमी फलों, छाछ एवं शीतल पेय का सेवन करना स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद रहता है। ब्रह्मपुराणानुसार इस पक्ष में **योगिनी एकादशी** का व्रत करके भगवान् विष्णु की यथाविधि पूजा करके रात्रि जागरण करने तथा दूसरे दिन अन्न, वस्त्रादि का दान करने से कुष्ठादि त्वचा रोगों की शान्ति होती है। ***ग्रह-गोचर***–पक्षारम्भ से ही **गुरु-शुक्र** तथा **सूर्य-शनि** के मध्य समसप्तक शत्रु दृष्टि सम्बन्ध रहने से राजनैतिक वातावरण अशान्त तथा असमंजसपूर्ण रहेगा। राजनेताओं में परस्पर वाद-विवाद रहे। किसी नेता के अपदस्थ या मृत्यु का समाचार भी मिले। लोगों में रोग-शोक आदि दुखों की बहुलता होगी। नवगठित केन्द्रीय सरकार के समक्ष अनेक गम्भीर चुनौतियां प्रस्तुत होंगी। कहीं अमामयिक वर्षा से हानि हो तथा दैनिक उपभोग्य वस्तुओं के मूल्यों में विशेष वृद्धि हो। चान्द्र आषाढ़ मास में पाँच मंगलवार आने तथा ता. 2 जुला. को मंगलवारी अमावस्या होने से भी कहीं छत्रभंग (सत्ता-परिवर्तन), राजनीतिक टकराव, अग्निकाण्ड एवं हिंसक घटनाएँ होने के संकेत हैं।

वि. संवत २०७६, आषाढ़ शुक्ल पक्ष शाक: १९४१ तारीखें चंद्र राशि सन् 2019 ई. (ता. 3 जुलाई से 16 जुलाई तक) हिजरी सन् 1440 भा.स्टैं.टा.

वि. संवत् २०७६, आषाढ़ शुक्ल पक्ष शाक: १९४१ — सन् 2019 ई. (ता. 3 जुलाई से 16 जुलाई तक) हिजरी सन् 1440

सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु:

भा.स्टैं.टा. — जालन्धर

प्रातः शुक्र पूर्व क्षितिज तथा शनि पश्चिम क्षितिज में होगा। सायं गुरु पूर्व में तथा मं.-बु. पश्चिमी क्षितिज में होंगे। ता. 11 को मं. तथा 13 को बुध पश्चिम में अस्त होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	तिथि समाप्ति काल घटी	पल	नक्षत्र	नक्षत्र समाप्ति काल घटी	पल	योग	योग समाप्ति काल घटी	पल	करण	करण समाप्ति काल घटी	पल	तारीखें: आषा. शाके	शव्वाल	जुलाई	आषा. प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल	विवरण	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
३५.०३	१	बुध	४१	२५	आर्द्रा पुन.	२ ५७	४३ ५०	ध्रुव	१५	२८	किं	१४	१७	12	29	3	१९	क. ४४/०५	आषाढ़ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, गुप्त नवरात्रे प्रारम्भ	२	१६	४१	२४	5	31	19	32
३५.००	२	गुरु	३४	५	पुष्य	५२	२५	व्या. हर्ष	७ ५८	०० १५	बा	७	४५	13	30	4	२०	कर्क	चन्द्रदर्शन मु. ३०, **रथयात्रा उत्सव** (श्रीजगन्नाथपुरी), शुक्र आर्द्रा में १६/५८	२	१७	३८	४०	5	32	19	32
३५.००	३	शुक्र	२६	३३	आश्ले	४६	५५	वज्र	४९	२८	तै	०	१९	14	जि.	5	२१	सिं. ४६/५५	भ. ५२/४८ से, जिल्काद (मुस्लि.) मास प्रारम्भ, गण्डमूल	२	१८	३५	५४	5	32	19	32
३४.५८	४	शनि	१९	३	मघा	४१	३३	सिद्ध	४०	४५	वि	१९	३	15	2	6	२२	सिंह	भ. १९/०३ तक, सूर्य पुन. में २८/१०, वक्री शनि पू.षा. ३ में २५/०३	२	१९	३३	९	5	33	19	32
३४.५८	५	रवि	११	५५	पू.फा.	३६	४३	व्य.	३२	२८	बा	११	५५	16	3	7	२३	कं. ५०/३५	स्कन्द षष्ठी, **कुमार षष्ठी** (देखें पृष्ठ 18), **बुध वक्री ५८/५३**	२	२०	३०	२२	5	33	19	32
३४.५३	६	चंद्र	५	२३	उ.फा.	३२	३०	वरी	२४	४३	तै	५	२३	17	4	8	२४	कन्या	भ. ५९/३८ से, विवस्वत सप्तमी	२	२१	२७	३७	5	34	19	31
अवम्	७	चंद्र	५९	३८	००	०	०	००	०	०	०		०	०	०	०	०	००	**सप्तमी तिथि का क्षय** ०० ०० ००	०	०	००	०	०	०	०	०
३४.५२	८	मंग.	५४	५३	हस्त	२९	१३	परि.	१७	४०	वि	२७	१५	18	5	9	२५	तु. ५७/५८	भ. २७/१५ तक, श्रीदुर्गाष्टमी	२	२२	२४	४९	5	34	19	31
३४.५०	९	बुध	५१	१०	चित्रा	२६	५८	शिव	११	२८	बा	२३	२	19	6	10	२६	तुला	भढली नवमी, राहु पुन. १ केतु पू.षा. ३ में ५८/२७, मेला शरीक **(A)**	२	२३	२२	४	5	35	19	31
३४.५०	१०	गुरु	४८	४०	स्वा.	२५	५०	सिद्ध	६	१३	तै	१९	५५	20	7	11	२७	तुला	**मंगल पश्चिम में अस्त ३८/४५,**	२	२४	१९	१६	5	35	19	31
३४.४५	११	शुक्र	४७	१८	विशा.	२५	५३	साध्य शुभ	१ ५८	५० ३०	व	१७	५९	21	8	12	२८	वृ. १०/४५	भ. १७/५९ से ४७/१८ तक, **हरिशयनी एकादशी व्रत, चातुर्मास्य (B)**	२	२५	१६	३०	5	36	19	30
३४.४४	१२	शनि	४७	१३	अनु.	२७	८	शुक्ल	५६	५	ब	१७	१५	22	9	13	२९	वृश्चिक	वक्री बुध पश्चिम में अस्त ३८/४३, गण्डमूल 16/27 बाद	२	२६	१३	४२	5	36	19	30
३४.४३	१३	रवि	४८	१५	ज्ये.	२९	३३	ब्रह्म	५४	३५	कौ	१७	४४	23	10	14	३०	ध. २९/३३	**प्रदोष व्रत,** गण्डमूल विचार	२	२७	१०	५७	5	37	19	30
३४.४०	१४	चंद्र	५०	३०	मूल	३३	८	ऐन्द्र	५४	३	ग	१९	२३	24	11	15	३१	धनु	भ. ५०/३० से, शुक्र पुन. में ९/२८, मेला ज्वालामुखी (काश्मीर), गं.मू.	२	२८	८	९	5	37	19	29
३४.३७	१५	मंग	५३	४५	पू.षा.	३७	४३	वैधृ.	५४	१८	वि	२२	८	25	12	16	श्रा.	म. ५४/०३	भ. २२/०८ तक, **आषाढ़ी पूर्णिमा, गुरु पूर्णिमा, खण्डग्रास चन्द्रग्रहण(C)**	२	२९	५	२३	5	38	19	29

(A) भवानी (काश्मीर), गुप्त नवरात्रे समाप्त **(B) व्रत, नियमादि प्रारम्भ, श्रीविष्णु शयनोत्सव (C)** (भारत में दृश्य) (देखें पृष्ठ 25), **सूर्य कर्क में ५७/१५, श्रावण संक्रान्ति** मु. ४५, पुण्यकाल सं. अगले दिन, व्यास पूजा, श्रीशिवशयनोत्सव, कोकिला व्रत, श्रीसत्यनारायण व्रत (देखें पृष्ठ 18), वायु परीक्षा, शुक्र वार्धक्य प्रारम्भ 19/28 घं.मिं.

भौमे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 9 जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	५	३	३	७	२	८	२	८
२२	१६	१०	१०	२२	१२	२३	२३	२३
२४	२७	२०	१७	३	२६	८	२६	२६
४०	३१	४०	५१	८	३६	३५	२१	२१
57 12	838 30	38 7	7 12	5 37	73 32	4 26	3 11	3 11
पुन. १	हस्त २	पुष्य ३	पुष्य ३	ज्ये. २	आर्द्रा २	पू.षा. ३	पुन. २	पू.षा. ४
०	०	मा	व	व	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रात: 5:30

भौमे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 16 जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	८	३	३	७	२	८	२	८
२९	१८	१४	७	२१	२१	२२	२३	२३
५	५०	४७	५६	२६	१	३७	४	४
४	५७	२३	१३	४९	३८	४२	६	६
57 13	738 5	38 5	35 2	4 35	73 38	4 22	3 11	3 11
पुन. ३	पू.षा. २	पुष्य ४	पुष्य २	ज्ये. २	पुन. १	पू.षा. ३	पुन. १	पू.षा. ३
०	०	मा	व	व	मा	व	व	व
०	उ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रात: 5:30

आषाढ़ शुक्ल पक्षफल—

द्वितीया तिथि पुष्य नक्षत्रयुता होने से श्रीजगन्नाथ रथयात्रा का पर्व इस वर्ष विशेष पुण्यप्रदा होगा। हरिशयनी (एकादशी (12 जुला.) से कार्तिक शुक्ल एका. (8 नवं.) पर्यन्त धर्मपरायण एवं तपस्वी लोग चातुर्मास्य व्रतादि नियमों का पालन करते हुए चार मास तक नित्य शतनामादि विष्णु स्तोत्र पाठ सहित भगवान् विष्णु की उपासना करते हैं। यद्यपि भगवान् क्षण भर भी कभी सोते नहीं, परन्तु प्रबोधिनी एकादशी के दिन भगवान् योगनिद्रा को त्यागकर प्रत्येक प्रकार की क्रिया में प्रवृत्त हो जाते हैं और प्राणी मात्र का पालन-पोषण और संरक्षण करते हैं। इसी कारण पंजाब, हरियाणा, हिमाचल, जम्मू-कश्मीर आदि प्रदेशों में गत सहस्र वर्षों से ही इस अवधि में विवाह, गृहारम्भ, प्रवेश आदि शुभ कार्यों का सम्पादन करने की परम्परा है। **गुरु पूर्णिमा (16 जुला.)** के दिन ग्रहण-सूतक से पूर्व (15 घं.-14 मिं.) भगवान् विष्णु, शिवजी की पूजार्चना करके देवगुरु बृहस्पति, ऋषि वेदव्यास तथा अपने इष्ट गुरु की यथाशक्ति वस्त्र, फल, मिष्टान्न, धनादि द्वारा सेवा करनी चाहिए। ***श्रावण संक्रान्ति*—16 जुलाई, मंगलवार** की रात्रि के बाद 17 जुला. की प्रात: 4 बजकर 32 मिंट पर मिथुन लग्न में प्रवेश करेगी। ४५ मुहूर्त्ति इस सं. का पुण्यकाल अगले दिन (17 जुला.) प्रात: 10 बजकर 56 मिंट तक रहेगा। वारानुसार महोदरी तथा नक्षत्रानुसार नन्दा नामक यह संक्रान्ति चोरों, ठगी करने वालों एवं ब्राह्मणों के लिए हितकर रहेगी। ***राशिफल*—यह सं. मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, कुम्भ, मीन तथा मेष राशि वालों के लिए लाभकारी रहेगी। ***ग्रहगोचर*—इस पक्ष में अभी सूर्य-शनि मध्य समसप्तक दृष्टि सम्बन्ध रहने से नवगठित केन्द्रीय सरकार के मन्त्रीमण्डल में विशेष उतार-चढ़ाव एवं परिवर्तन देखने को मिलेंगे। जबरदस्त महँगाई, बेरोज़गारी आदि मुद्दों पर विपक्षी दलों के साथ विरोध एवं टकराव बढ़ेगा।

***आकाश-लक्षण*—पूर्वोत्तर भागों-असम, बंगाल, उड़ीसा, बिहार आदि के कुछ क्षेत्रों में रुक-रुक कर वर्षा होगी।

वि. संवत् २०७६, श्रावण कृष्ण पक्ष शाक : १९४१

सन् 2019 ई. (17 जुलाई से 1 अगस्त तक) हिजरी सन् 1440
सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु :

भा.स्टैं.टा. जालन्धर

प्रात: दृश्य शुक्र ता. 19 को पूर्व में अस्त हो जाएगा। ता. 29 जुला. से बुध प्रात: पूर्वक्षितिज में दृश्य होगा। सायं गु. पूर्व कपाल में तथा शनि पूर्वक्षितिज पर होगा। मं. अभी अस्त है।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घटी	समाप्ति काल पल	नक्षत्र	समाप्ति काल घटी	समाप्ति काल पल	योग	समाप्ति काल घटी	समाप्ति काल पल	करण	समाप्ति काल घटी	समाप्ति काल पल	तारीखें आषा. शुक्र	तारीखें जिल्का मु.	तारीखें जुलाई	तारीखें श्राव. प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	इष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
३४.३५	१	बुध	५८	३	उ.षा.	४३	२०	विष्क	५५	१८	बा	२५	५४	26	13	17	२	मकर	श्रावण कृष्णपक्ष प्रारम्भ, ग्रहण-वेध दिन	३	०	२	३८	5	39	19	29
३४.३३	२	गुरु	६०	००	श्रव.	४९	४८	प्रीति	५६	५८	तै	३०	३५	27	14	18	३	मकर	मंगल आश्ले. में ५७/०५, अशून्यशयन व्रत, ग्रहणवेध दिन	३	०	५९	५१	5	39	19	28
३४.३०	२	शुक्र	३	८	धनि.	५६	५३	आयु	५९	८	ग	३	८	28	15	19	४	कुं. २३/१५	भ. ३६/०२ से, **पंचक प्रारम्भ २३/१५, शुक्र पूर्व में अस्त (A)**	३	१	५७	७	5	40	19	28
३४.२८	३	शनि	८	५५	शत.	६०	००	सौभा	६०	००	वि	८	५५	29	16	20	५	कुम्भ	भ. ८/५५, तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृ.13), सूर्य पुष्य में २६/५५	३	२	५४	२१	5	40	19	27
३४.२५	४	रवि	१४	५८	शत.	४	२०	सौभा	१	३३	बा	१४	५८	30	17	21	६	मी. ५४/५८		३	३	५१	३७	5	41	19	27
३४.२०	५	चंद्र	१८	२५	पू.भा.	११	४८	शोभ	३	५८	तै	१८	२५	31	18	22	७	मीन	नाग-पंचमी (राज. व बंगाल), **श्रावण सोमवार व्रत शुरु**	३	४	४८	५४	5	42	19	26
३४.२०	६	मंग	२६	२८	उ.भा.	१८	५०	अति	६	८	व	२६	२८	श्रा.	19	23	८	मीन	भ. २६/२८ से ५८/४३ तक, वक्री बुध पुन. में १/५८, **शुक्र कर्क में(B)**	३	५	४६	१०	5	42	19	26
३४.१५	७	बुध	३०	५८	रेव	२४	५८	सुक	७	३८	ब	३०	५८	2	20	24	९	मे. २४/५८	**पंचक समाप्त २४/५८**, शीतला सप्तमी, गण्डमूल	३	६	४३	३०	5	43	19	25
३४.१५	८	गुरु	३४	५	अश्वि	२९	५०	धृति.	८	१३	बा	२	३२	3	21	25	१०	मेष	गण्डमूल 17/39 तक,	३	७	४०	४७	5	43	19	25
३४.१०	९	शुक्र	३५	३३	भर.	३३	३	शूल	७	३३	तै	४	४९	4	22	26	११	वृ. ४८/३३	शुक्र पुष्य में ०/१५,	३	८	३८	८	5	44	19	24
३४.०५	१०	शनि	३५	३	कृति.	३४	२३	गंड	५	२५	व	५	१८	5	23	27	१२	वृष	भ. ५/१८ से ३५/०३ तक,	३	९	३५	३०	5	45	19	23
३४.०५	११	रवि	३२	४३	रोहि.	३३	५३	वृद्धि ध्रुव	१ ५६	४८ ४०	ब	३	५३	6	24	28	१३	वृष	**कामिका एकादशी व्रत**	३	१०	३२	५१	5	45	19	23
३४.००	१२	चंद्र	२८	२८	मृग.	३१	३०	व्या.	५०	३	कौ	०	३५	7	25	29	१४	मि. २/५३	**सोम प्रदोष व्रत**, वक्री बुध पूर्व में उदय ३४/०३	३	११	३०	१४	5	46	19	22
३३.५५	१३	मंग	२२	३८	आर्द्रा	२७	३०	हर्ष	४२	८	व	२२	३८	8	26	30	१५	मिथुन	भ. २२/३८ से ४९/०३ तक, **वक्री बुध मिथुन में १९/०८**, श्रावण-(C)	३	१२	२७	३८	5	47	19	21
३३.५५	१४	बुध	१५	२८	पुन.	२२	१५	वज्र	३३	१८	श.	१५	२८	9	27	31	१६	क. ८/४०	**पितृकार्येषु अमावस**	३	१३	२५	१	5	47	19	21
३३.५०	३०	गुरु	७	१५	पुष्य	१६	००	सिद्धि	२३	४०	ना	७	१५	10	28	अग	१७	कर्क	श्रावण (हरियाली) अमावस, बुध मार्गी ९/०५, मेला छिन्नमस्तिका (D)	३	१४	२२	२८	5	48	19	20

शुक्र अस्त 19 जुलाई

(A) 19/28 (घं.मिं.), ग्रहणवेध दिन (B) १७/४८, सूर्य सायन सिंह में ६/४०, शक श्रावण प्रारम्भ, मङ्गलागौरी व्रत शुरु (C) शिवरात्रि व्रत (D) (चिन्तपूर्णी) प्रारम्भ, लोकमान्य तिलक स्मरणोत्सव

गुरौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 25 जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	०	३	३	७	३	८	२	८
७	७	२०	२	२०	२	२१	२२	२२
४०	३	३०	७	५१	५	५९	३५	३५
१६	२४	१	०	१४	७	६	२९	२९
57 19	748 51	38 4	33 7	3 7	73 49	4 10	3 11	3 11
पुष्य २	अश्वि ३	आश्ले २	पुन ४	ज्ये. २	पुन ४	पूषा ३	पुन १	पूषा ३
०	०	मा	व	व	मा	व	व	व
०	उ	अ	अ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रात: 5:30

भाव	ग्रह
४	सू. मं. बु. शु.
३	रा.
२	
१	चं.
१२	
११	
१०	
९	श. के.
८	गु.
७	
६	
५	

गुरौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 1 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	३	३	२	७	३	८	२	८
१४	१२	२४	२९	२०	१०	२१	२२	२२
२१	३०	५६	४९	३३	४२	३०	१३	१३
४५	५	३२	२१	७	१६	५०	१३	१३
57 25	899 59	38 4	2 5	1 52	73 58	3 52	3 10	3 10
पुष्य ४	पुष्य ३	आश्ले ३	पुन ३	ज्ये. २	पुष्य ३	पूषा ३	पुन १	पूषा ३
०	०	मा	व	व	मा	व	व	व
०	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रात: 5:30

भाव	ग्रह
४	सू. चं. मं. शु.
३	रा. बु.
२	
१	
१२	
११	
१०	
९	श. के.
८	गु.
७	
६	
५	

श्रावण कृष्ण पक्षफल–

इस पक्ष की द्वितीया को लक्ष्मीनारायण की पूजा व स्तोत्र-पाठ करने का विधान है। यह व्रत पति-पत्नी में पारस्परिक प्रेम बढ़ाने में विशेष प्रशस्त होता है। यह व्रत मार्ग. कृ. द्वितीया तक किया जाता है। **श्रावण मास** में प्रतिदिन अथवा प्रति सोमवार को एकभुक्त व्रत रखकर शिवपूजन बिल्वपत्र, दूध, दही, ताण्डुल, चीनी, पुष्प, गंगाजल सहित '**ॐ नमः शिवाय:**' मन्त्रपूर्वक अभिषेक आदि करने से मनोवांछित कामनाओं की पूर्त्ति होती है। श्रावण मास के ही प्रत्येक मंगलवार को मंगलागौरी का व्रत एवं पूजनादि करने से स्त्रियों को सौभाग्यादि सुखों की प्राप्ति होती है। **हरियाली अमावस** (1 अग.) को तीर्थस्थान पर स्नान, जप, दानादि कर पितृ-तर्पण करने से एक हज़ार गोदान तुल्य पुण्यफल प्राप्त होता है। ***लोक-भविष्य***–चान्द्र श्रावण मास में पाँच बुध तथा पाँच गुरुवार होने से मिश्रित प्रभाव रहेंगे। पाँच बुधवारों के प्रभाव से अनाजादि की पैदावार में वृद्धि होगी तथा उच्च-वर्ग में सुख-सुविधाओं का विस्तार होगा। परन्तु पाँच बृहस्पतिवार होने से कुछ प्रदेशों में उपयुक्त वर्षा की कमी रहे, तो कहीं अतिवृष्टि से जन व धन-सम्पदा को क्षति पहुँचे। पश्चिमी देशों-ईराक, सीरिया, सूडान, ईज़रायल-फिलीस्तीन आदि देशों में कहीं युद्ध एवं फौजी टकराव होने के आसार बनेंगे। केन्द्रीय मन्त्रीमण्डल में कुछ परिवर्तन के संकेत हैं। ***ग्रहगोचर***–श्रावण मास तथा कुम्भ राशि में शुक्र अस्त होने से प्राकृतिक आपदाओं से ग्रस्त प्रजा के प्रति सरकारी उदासीनता रहे तथा ब्राह्मणों के लिए कष्टकारी समय रहे। ता. 23 से 29 जुला. के मध्य सू., बु., मं., शु. ग्रहों का '**चतुर्ग्रही योग**' रहने से पृथ्वी पर जलप्लावन, बाढ़ आदि से जन, धन, सम्पदा आदि की क्षति होगी। राजनीतिक पार्टियों में टकराव व गतिरोध होगा। केन्द्रीय नीतिगत निर्णयों का विरोध होगा। जिससे विकासोन्मुखी योजनाओं के क्रियान्वयन में विलम्ब होगा। ***आकाश लक्षण***–भारत के उत्तर व उत्तर-पूर्वी राज्यों में व्यापक वर्षा होने के योग हैं।

वि. संवत् २०७६, श्रावण शुक्ल पक्ष शाक : १९४१ तारीखें चंद्र राशि सन् 2019 ई. (ता. 2 अगस्त से 15 अगस्त तक) हिजरी सन् 1440 भा.स्टैं.टा.
सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु : जालन्धर

वि. संवत् २०७६, श्रावण शुक्ल पक्ष शाके १९४१ तारीख (ता. [illegible] 15 अगस्त तक) हिजरी सन् 1440 — भा.स्टैं.टा. जालन्धर

सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतुः

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घटी	समाप्ति काल पल	नक्षत्र	समाप्ति काल घटी	समाप्ति काल पल	योग	समाप्ति काल घटी	समाप्ति काल पल	करण	समाप्ति काल घटी	समाप्ति काल पल	श्राव. शुक्ल	जिल्का. मुस्लि.	अगस्त	श्राव. प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल	ग्रह दर्शन—प्रातः बुध पूर्वक्षितिज में होगा। सायं गुरु पूर्वकपाल में तथा शनि पूर्व कपाल की ओर होगा। मंग.-शुक्र अभी अस्त हैं।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
अवम्	१	गुरु	५८	३०	००	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	**श्रावण शुक्ल प्रतिपदा का क्षय** ०० **शुक्र अस्त है**	०	०	०	०	०	०	०	०
३३.४८	२	शुक्र	४९	३०	आश्ले	९	१३	व्य.	१३	४०	बा	२४	००	11	29	2	१८	सिं. ९/१३	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, गण्डमूल विचार	३	१५	१९	५३	5	48	19	19
३३.४३	३	शनि	४०	४३	मघा पू.फा.	२ ५५	१८ ४३	वरी परि	३ ५३	३५ ४५	तै	१५	७	12	जि.	3	१९	सिंह	**मधुस्रवा-हरियाली-सिंघारा तीज**, सूर्य आश्ले. में २३/४०, बुध **(A)**	३	१६	१७	२०	5	49	19	18
३३.३८	४	रवि	३२	२८	उ.फा.	४९	४५	शिव	४४	३०	व	६	३५	13	2	4	२०	कं. ९/०५	भ. ६/३५ से ३२/२८ तक, दूर्वा गणपति व्रत, वरद्-चतुर्थी	३	१७	१४	४९	5	50	19	17
३३.३७	५	चंद्र	२५	१३	हस्त	४४	५५	सिद्ध	३६	५	बा	२५	१३	14	3	5	२१	कन्या	**नाग-पञ्चमी**, श्रीकल्कि जयन्ती (सायाह्न-व्यापिनी), शुक्र आश्ले. में ४९/१५	३	१८	१२	१६	5	50	19	17
३३.३३	६	मंग	१९	१०	चित्रा	४१	२०	साध्य	२८	४३	तै	१९	१०	15	4	6	२२	तु. १२/५५		३	१९	९	४७	5	51	19	16
३३.२८	७	बुध	१४	३३	स्वा.	३९	२०	शुभ	२२	३३	व	१४	३३	16	5	7	२३	तुला	भ. १४/३३ से ४३/०६ तक, गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती	३	२०	७	१८	5	52	19	15
३३.२४	८	गुरु	११	३८	विशा	३९	००	शुक्ल	१७	४८	ब	११	३८	17	6	8	२४	वृ. २३/५५	**श्रीदुर्गाष्टमी, मेला चिन्तपूर्णी**-चामुण्डादेवी (हि.प्र.) समाप्त, **(B)**	३	२१	४	४७	5	52	19	14
३३.२०	९	शुक्र	१०	२०	अनु.	४०	१३	ब्रह्म	१४	१८	कौ	१०	२०	18	7	9	२५	वृश्चिक	बुध पुष्य में १५/१३, गण्डमूल 21/58 बाद	३	२२	२	२०	5	53	19	13
३३.१५	१०	शनि	१०	३८	ज्ये.	४३	००	ऐन्द्र	१२	५	ग	१०	३८	19	8	10	२६	ध. ४३/००	भ. ४१/३३ से, गण्डमूल विचार	३	२२	५९	५३	5	54	19	12
३३.१३	११	रवि	१२	२८	मूल	४७	८	वैधृ	११	३	वि	१२	२८	20	9	11	२७	धनु	भ. १२/२८ तक, **पवित्रा एकादशी व्रत, गुरु मार्गी ३२/५५ (C)**	३	२३	५७	२४	5	54	19	11
३३.०८	१२	चंद्र	१५	३०	पू.षा.	५२	२०	विष्क	११	००	बा	१५	३०	21	10	12	२८	धनु	**सोम प्रदोष व्रत**, यूरेनस वक्री ५/००	३	२४	५४	५८	5	55	19	10
३३.०५	१३	मंग	१९	४०	उ.षा.	५८	३०	प्रीति	११	४८	तै	१९	४०	22	11	13	२९	म. ८/४८		३	२५	५२	३२	5	55	19	9
३३.००	१४	बुध	२४	३५	श्रव.	६०	००	आयु	१३	१३	व	२४	३५	23	12	14	३०	मकर	भ. २४/३५ से ५७/२० तक, **ऋग्वेदि उपाकर्म** (देखें पृ.18), श्रीसत्यनारायण व्रत	३	२६	५०	९	5	56	19	8
३२.५५	१५	गुरु	३०	५	श्रव.	५	१३	सौभा	१५	५	ब	३०	५	24	13	15	३१	कुं. ३८/४८	**श्रावण-पूर्णिमा, रक्षाबन्धन (राखी), पंचक प्रारम्भ ३८/४८, (D)**	३	२७	४७	४७	5	57	19	7

(A) कर्क में ०/०८, जिल्हिजा (मुस्लि.) मास प्रारम्भ **(B)** मंगल मघा १ सिंह में ५७/१५ **(C)** गण्डमूल 24/45 तक **(D)** यजुर्वेदि-अथर्ववेदि उपाकर्म, **भारत स्वतन्त्रता दिवस**, दर्शन श्रीअमरनाथ गुफा, संस्कृत दिवस, गायत्री जयन्ती, कोकिला व्रत समाप्त, ऋषि-तर्पण, हयग्रीव जयन्ती

गुरौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 8 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	६	३	३	७	३	८	२	८
२१	२४	२९	२	२०	१९	२१	२१	२१
३	२७	२३	१८	२३	२०	४	५०	५०
५४	४५	५	२८	५४	१८	५४	५८	५८
57 30	797 14	38 5	47 9	0 35	74 3	3 29	3 11	3 11
आश्ले २	विशा २	आश्ले ४	पुन ४	ज्ये. २	आश्ले १	पूषा ३	पुन १	पूषा ३
०	०	मा	मा	व	मा	व	व	व
०	उ	अ	उ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5:30

४ सू. मं. बु. शु. | ३ रा. | २ | १ | १२ | ११ | १० | ९ | ८ गु. | ७ चं. | ६ | ५ | शा. के.

गुरौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 15 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	९	४	३	७	३	८	२	८
२७	२२	३	९	२०	२७	२०	२१	२१
४६	४	४९	५५	२३	५९	४१	२८	२८
४२	४१	४१	४३	४७	२	५६	४३	४३
57 36	714 22	38 6	87 38	0 43	74 10	3 1	3 11	3 11
आश्ले ४	श्रव ४	मघा २	पुष्य २	ज्ये. २	आश्ले ४	पूषा ३	पुन १	पूषा ३
०	०	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	अ	उ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5:30

४ सू. बु. शु. | ५ मं. | ३ रा. | २ | १ | १२ | ११ | १० चं. | ९ | ८ गु. | ७ | ६ | श. के.

श्रावण शुक्ल पक्षफल—

प्रतिपदा से अष्टमी तक (ता. 1 से 8 अग.) माता चिन्तपूर्णी (छिन्नमस्तिका), ज्वालामुखी एवं चामुण्डादेवी (काँगड़ा) के दरबार में भगवती जागरण, कीर्तन, लंगर एवं भव्य मेले का आयोजन किया जाता है क्योंकि प्रतिपदा तिथि का क्षय हुआ है, अतएव ता. 1 अग. को अभिजित् मुहूर्त्त में घटस्थापन व देवी पूजन के पश्चात् मेले का औपचारिक प्रारम्भ होगा। ता. 3 अग. को **सिंधारा (हरियाली) तीज** के दिन सुहागिन स्त्रियाँ अपने पीहर जाकर हाथों मेहंदी रचाकर झूले झूलती हुई श्रावण के मलहार गीत गाती हैं। **नाग-पंचमी** (5 अग.) को अपने गृह द्वार की दहलीज़ के दोनों ओर गोबर के सर्प बनाकर उनका दूध, दूर्वा, कुशा, गन्ध, पुष्प, अक्षत, लड्डुओं आदि से एवं **'ॐ कुरुकुल्ये हुँ फट् स्वाहा'** मन्त्र का जप किया जाए तो सर्प-विष का भय नहीं रहता। ता. 15 अग. को श्रावण-पूर्णिमा के दिन भाई-बहिन के पवित्र सम्बन्धों का प्रतीक **'रक्षा-बन्धन'** पर्व होगा। **सोम प्रदोष व्रत** (12 अग.) श्रावण मास का मुख्य व्रत/पर्व होगा। इस दिन सायंकाल भगवान् शिव की पूजा, शिवलिङ्ग अभिषेक एवं शिवस्तोत्र पाठ करने का विशेष माहात्म्य होगा। ***लोक-भविष्य***—श्रावण शुक्ल पक्ष में प्रतिपदा तिथि का क्षय होने से आगे कार्तिक मास में कहीं छत्रभंग (शासन-परिवर्तन) के योग बनेंगे-**'श्रावणे शुक्ल पक्षे यद्यदाकश्चित्तिथि क्षयः। तदा कार्तिक मासे स्यात् छत्रभंग अपि जायते।।'** परन्तु श्रावण शुक्ल ७ को स्वाती तथा श्रावण पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र होने से अनाजादि उत्पादन में वृद्धि से प्रजा, किसान प्रसन्न होंगे-**'श्रावणेशुक्ल सप्तम्यां स्वातियोगः सुभिक्षकृत्। श्रवणं पूर्णिमायां स्यात् धान्यैः आनन्दिताः प्रजाः।।'**

ग्रहगोचर—ता. 3 से 7 अग. के मध्य **'चतुर्ग्रही योग'** होने से देश में कहीं दुर्भिक्ष (अकाल) होने से उपभोग्य वस्तुओं में तेजी तथा किसी प्रदेश में शासन-परिवर्तन होगा। राजनीतिक पटल पर विशेष उथल-पुथल रहेगी।

आकाश लक्षण—ता. 3, 8, 11 और 15 अगस्त को हि.प्र., जम्मू-कश्मीर, पंजाब, दिल्ली, हरियाणा आदि के अधिकतर भागों में वर्षा के योग हैं। पूर्वोत्तर से बाढ़ से हानि का समाचार मिलेगा।

वि. संवत् २०७६, भाद्रपद कृष्ण पक्ष शाक : १९४१ — सन् 2019 ई. (ता. 16 अगस्त से 30 अगस्त तक) हिजरी सन् 1440

सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा—शरद् ऋतु : — भा.स्टैं.टा. जालन्धर

प्रातः पूर्वक्षितिज में दृश्य बुध ता. 22 से पूर्व में ही अस्त हो जाएगा। सायं गुरु याम्योत्तरवृत्तासन्न, शनि पूर्वकपाल में होगा। मंग.—शुक्र अस्त हैं।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घटी	समाप्ति काल पल	नक्षत्र	समाप्ति काल घटी	समाप्ति काल पल	योग	समाप्ति काल घटी	समाप्ति काल पल	करण	समाप्ति काल घटी	समाप्ति काल पल	राष्ट्र. शाक	हिज. मु.	अगस्त	भाद्र प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.
३२.५३	१	शुक्र	३६	३	धनि.	१२	२८	शोभ	१७	२०	बा	३	४	25	14	16	३२	कुम्भ	भाद्रपद कृष्णपक्ष प्रा., **शुक्र** मघा १ **सिंह में ३६/४५**, गायत्री जपम्	३	२८	४५	२३	5	57	19	6
३२.४८	२	शनि	४२	८	शत.	१९	५३	अति	१९	४३	तै	९	५	26	15	17	भा.	कुम्भ	**सूर्य** मघा १ **सिंह में १७/३८, भाद्रपद संक्रान्ति**, मु. १५ **(A)**	३	२९	४३	४	5	58	19	5
३२.४३	३	रवि	४८	८	पू.भा.	२७	२०	सुक	२२	८	व	१५	८	27	16	18	२	मी. १०/२८	भ. १५/०८ से ४८/०८ तक, **कज्जली तृतीया**	४	०	४०	४६	5	59	19	4
३२.४०	४	चंद्र	५३	४८	उ.भा.	३४	३३	धृति	२४	२०	ब	२०	५८	28	17	19	३	मीन	**श्रीगणेश (बहुला) चतुर्थी व्रत** (देखें पृ.13), बुध आश्ले. में १४/०३	४	१	३८	२७	5	59	19	3
३२.३५	५	मंग	५८	४८	रेव.	४१	१३	शूल	२६	१०	कौ	२६	१८	29	18	20	४	मे. ४१/१३	**पंचक समाप्त ४१/१३** (22/29), गण्डमूल विचार	४	२	३६	११	6	0	19	2
३२.३०	६	बुध	६०	००	अश्वि	४६	५५	गंड	२७	१८	ग	३०	४७	30	19	21	५	मेष	**चन्दन षष्ठी व्रत,** चन्द्रोदय 22/29 (जालन्धर), बुध पूर्व में अस्त **(B)**	४	३	३३	५८	6	1	19	1
३२.२८	६	गुरु	२	४५	भर.	५१	२८	वृद्धि	२७	३५	व	२	४५	31	20	22	६	मेष	भ. २/४५ से ३४/०२ तक, शीतला-सप्तमी, पुत्र व्रत	४	४	३१	४३	6	1	19	0
३२.२३	७	शुक्र	५	१८	कृति.	५४	२३	ध्रुव	२६	४०	ब	५	१८	भा.	21	23	७	वृ. ७/२०	**श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स्मार्त) गृहस्थियों के लिए** (देखें पृ.19)**(C)**	४	५	२९	३२	6	2	18	59
३२.१८	८	शनि	६	१५	रोहि.	५५	३५	व्या.	२४	२३	कौ	६	१५	2	22	24	८	वृष	**श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत (वैष्णव)**	४	६	२७	२१	6	2	18	57
३२.१३	९	रवि	५	२०	मृग.	५४	५०	हर्ष	२०	३५	ग	५	२०	3	23	25	९	मि. २५/२५	भ. ३३/५४ से, **श्री गुग्गा-नवमी**, गोकुलाष्टमी, नन्दोत्सव	४	७	२५	१४	6	3	18	56
३२.०८	१०	चंद्र	२	२८	आर्द्रा	५२	१३	वज्र	१५	१५	वि	२	२८	4	24	26	१०	मिथुन	भ. २/२८ तक, **अजा एकादशी व्रत (स्मार्त), बुध** मघा १ **सिंह में २०/०५**	४	८	२३	९	6	4	18	55
अवम्	११	चंद्र	५७	४५	००	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	**एकादशी तिथि का क्षय** ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
३२.०५	१२	मंग	५१	२०	पुन.	४८	५३	सिद्धि	८	२५	कौ	२४	३३	5	25	27	११	क. ३४/०५	**अजा एकादशी व्रत (वैष्णव), वत्स द्वादशी (पूजा)**, शुक्र **(D)**	४	९	२१	३	6	4	18	54
३२.००	१३	बुध	४३	३०	पुष्य	४२	५	व्य. वरी	० ५०	१३ ५५	ग	१७	२५	6	26	28	१२	कर्क	भ. ४३/३० से, **प्रदोष व्रत**, मासशिवरात्रि व्रत, अघोरा चतुर्दशी **(E)**	४	१०	१९	०	6	5	18	53
३१.५८	१४	गुरु	३४	३८	आश्ले	३५	१५	परि.	४०	४५	वि	९	४	7	27	29	१३	सिं. ३५/१५	भ. ९/०४ तक, मंगल पू.फा. में ५५/३५	४	११	१६	५८	6	5	18	52
३१.५०	३०	शुक्र	२५	३	मघा	२७	४३	शिव	३०	५	ना	२५	३	8	28	30	१४	सिंह	**भाद्रपद अमावस, कुशाग्रहणी अमावस-'ॐ हुँ फट् स्वाहा' (F)**	४	१२	१५	०	6	6	18	50

(A) पुण्यकाल सं. प्रातः 6/37 बाद **(B)** ५९/४८, हल-षष्ठी **(C) दूर्वाष्टमी व्रत** (देखें पृष्ठ 18), शक भाद्रपद शुरु, सूर्य सायन कन्या में २३/४८, शरद् ऋतु प्रारम्भ **(D)** पू.फा. में २२/४५ **(E)** कैलाश यात्रा प्रारम्भ-2 दिन **(F)** इहमंत्रेण कुशोत्पाटनम्, पिठोरी अमावस, लोहार्गल यात्रा (स्नान), रानी सती मेला (झुंझुनूं-राजस्थान)

शनौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 24 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१	४	३	७	४	८	२	८
६	१०	९	२५	२०	९	२०	२१	२१
२६	५५	३२	२३	३६	७	१७	०	०
४	२०	४७	४३	५३	४	३४	६	६
57 50	785 53	38 9	116 21	2 22	74 19	2 19	3 11	3 11
मघा २	रोहि १	मघा ३	आश्ले ३	उफा २	मघा ३	पूभा ३	पुन १	पूभा ३
०	०	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	अ	अ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5:30

५ सू. मं. शु. · ४ बु. · ३ रा. · २ चं. · १ · १२ · ११ · १० · ९ के. श. · ८ गु. · ७ · ६

शुक्रे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 30 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	४	४	४	७	४	८	२	८
१२	५	१३	७	२०	१६	२०	२०	२०
१३	५४	२१	१२	५३	३३	४	४१	४१
३३	१२	५२	४०	४५	८	५८	१	१
58 1	916 34	38 13	118 40	3 26	74 23	1 48	3 11	3 11
मघा ४	मघा २	पूफा १	मघा ३	उफा २	पूफा १	पूभा ३	पुन १	पूभा ३
०	०	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	अ	अ	अ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5:30

५ सू.चं.मं. बु. शु. · ४ · ३ रा. · २ · १ · १२ · ११ · १० · ९ श. के. · ८ गु. · ७ · ६

भाद्रपद कृष्ण पक्षफल—

इस पक्ष में **श्रीगणेश बहुला चतुर्थी** (19 अग.) तथा चन्दन षष्ठी (21 अग.) का व्रत विधिपूर्वक रखकर रात्रि में उदित चन्द्रमा को अर्घ्य देने से गृहस्थ सुख, सौभाग्य-सन्तति, धन आदि सुखों की प्राप्ति होती है। **पुत्र व्रत**—भाद्र. कृ. सप्तमी (22 अग.) को व्रत रखकर भगवान् विष्णु का पूजन करें, दूसरे दिन '**ॐ क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजन वल्लभाय स्वाहा।**' मन्त्र की तिलों से 108 आहुतियां देकर ब्राह्मणों को भोजन कराकर स्वयं भोजन करें। वर्षान्त में गोदान करें। **श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का व्रत 23 अगस्त, शुक्रवार को अर्द्धरात्रि व्यापिनी अष्टमी में होगा।** ता. 24 **अगस्त शनिवार** को अष्टमी तिथि प्रातः 8 बजकर 32 मिनट तक ही व्याप्त रहेगी, जबकि अर्द्धरात्रि के समय नवमी तिथि व्याप्त रहेगी। वैष्णव मतानुसार श्रीकृष्ण जन्माष्टमी इसी दिन ग्राह्य होगी (देखें पृ. 19)। **वत्स-द्वादशी** (27 अग.) को प्रातः बछड़े सहित गाय का पूजन करके मूँग-मोठ और बाजरा सहित भोजन का भोग लगाते हैं। इसदिन गाय का दूध, दही या गोघृत से परहेज करके भैंस का दूध प्रयोग में लाते हैं। कुशाग्रहणी अमावस (30 अगस्त) को वर्षभर देव-पितृ कार्यों के लिए पूर्व या उत्तरमुख होकर दिन के द्वितीय प्रहर में दाएं हाथ से मन्त्रपूर्वक कुशा संग्रह करनी चाहिए। ***भाद्रपद संक्रान्ति*—17 अगस्त, शनिवार** को दोपहर 1 बजकर 1 मिंट पर (13/01) वृश्चिक लग्न में प्रवेश करेगी। १५ मुहूर्त्ती इस सं. का स्नानदानादि का पुण्यकाल प्रातः 6/37 बाद शुरु होगा। वारानुसार राक्षसी तथा नक्षत्रानुसार चरसंज्ञक नीच, दुष्ट, चोर व बेईमान लोगों के लिए लाभप्रद रहेगी। **सं. राशिफल**—यह सं. वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर, कुम्भ तथा मीन राशि वालों के लिए शुभकर रहेगी।

आकाश लक्षण— [illegible]

वि. संवत् २०७६, भाद्रपद शुक्ल पक्ष शाकः १९४१

सन् 2019 ई. (ता. 31 अगस्त से 14 सितं. तक) हिजरी सन् 1440
सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, शरद् ऋतुः

भा.स्टैं.टा. जालन्धर

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घटी	पल	नक्षत्र	समाप्ति काल घटी	पल	योग	समाप्ति काल घटी	पल	करण	समाप्ति काल घटी	पल	तारीखें भा. शक	मु. हिज.	अगस्त	भा. प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल
३१.४५	१	शनि	१५	१८	पू.फा.	२०	००	सिद्ध	१९	१५	ब	१५	१८	9	29	31	१५	कं. ३३/०८
३१.४३	२	रवि	५	५०	उ.फा.	१२	४०	साध्य शुभ	८ ५८	४३ ४८	कौ	५	५०	10	मु.	सितं	१६	कन्या
अवम्	३	रवि	५७	५	००	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००
३१.३८	४	चंद्र	४९	२५	हस्त	६	३	शुक्ल	४९	४८	व	२३	१५	11	2	2	१७	तु. ३३/१०
३१.३३	५	मंग	४३	२०	चित्रा स्वा.	० ५६	४० ५३	ब्रह्म	४२	८	ब	१६	२३	12	3	3	१८	तुला
३१.२८	६	बुध	३९	००	विशा	५४	५५	ऐन्द्र	३५	५०	कौ	११	१०	13	4	4	१९	वृ. ४०/१३
३१.२५	७	गुरु	३६	४३	अनु.	५५	००	वैधृ.	३१	१३	ग	७	५२	14	5	5	२०	वृश्चिक
३१.२०	८	शुक्र	३६	२३	ज्ये.	५७	००	विष्क	२८	८	वि	५	३३	15	6	6	२१	ध. ५७/००
३१.१३	९	शनि	३८	००	मूल	६०	००	प्रीति	२६	३५	बा	७	१०	16	7	7	२२	धनु
३१.१०	१०	रवि	४१	१५	मूल	०	४५	आयु	२६	२५	तै	९	३८	17	8	8	२३	धनु
३१.०५	११	चंद्र	४५	४८	पू.षा.	६	००	सौभा	२७	१५	व	१३	३२	18	9	9	२४	म. २२/३०
३१.०३	१२	मंग	५१	१८	उ.षा.	१२	२३	शोभ	२८	५३	ब	१८	३३	19	10	10	२५	मकर
३०.५५	१३	बुध	५७	१५	श्रव.	१९	२५	अति	३०	५८	कौ	२४	१७	20	11	11	२६	कुं. ५३/०८
३०.५०	१४	गुरु	६०	००	धनि.	२६	५०	सुक	३३	१८	ग	३०	२०	21	12	12	२७	कुम्भ
३०.४८	१४	शुक्र	३	२५	शत.	३४	२३	धृति	३५	४०	व	३	२५	22	13	13	२८	कुम्भ
३०.४०	१५	शनि	९	३०	पू.भा.	४१	४०	शूल	३७	५५	ब	९	३०	23	14	14	२९	मीं. २४/५३

तिथि	ग्रह दर्शन—सायं गुरु याम्योत्तरवृत्त के पास, शनि पूर्व में होगा। बुध-मंगल-शुक्र अस्त हैं।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.
१	भाद्रपद शुक्लपक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. ४५, सूर्य पू.फा. में ७/१०,	४	१३	१३	३	6	7	18	49
२	**हरितालिका तृतीया**, गौरी तृतीया, श्रीवराह-जयन्ती, सामवेदि **(A)**	४	१४	११	५	6	7	18	48
३	**तृतीया तिथि का क्षय** ०० ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
४	भ. २३/१५ से ४९/२५ तक, **सिद्धि विनायक व्रत**, बुध पू.फा. में **(B)**	४	१५	९	११	6	8	18	47
५	ऋषि-पंचमी पर्व, **सम्वत्सरी महापर्व (जैन)**	४	१६	७	१६	6	8	18	45
६	सूर्य षष्ठी व्रत, **अगस्त्य-उदित**,	४	१७	५	२६	6	9	18	44
७	भ. ३६/४३ से, मुक्ताभरण सन्तान सप्तमी व्रत, गंडमूल 28/09 बाद,	४	१८	३	३४	6	9	18	43
८	भ. ५/३३ तक, **राधाष्टमी, श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ**, दधीची जयन्ती	४	१९	१	५०	6	10	18	42
९	**श्रीचन्द्र नवमी (उदासीन-सम्प्रदाय)**, शुक्र उ.फा. में ७/३३ **(C)**	४	२०	०	०	6	11	18	40
१०	गण्डमूल 6/29 तक	४	२०	५८	१२	6	11	18	39
११	भ. १३/३२ से ४५/४८ तक, **पद्मा एकादशी व्रत**, बुध उ.फा. में **(D)**	४	२१	५६	२८	6	12	18	38
१२	**श्रीवामन-जयन्ती**, श्रवण द्वादशी, **बुध कन्या में ५६/५८**	४	२२	५४	४४	6	12	18	37
१३	**प्रदोष व्रत, पंचक प्रारम्भ ५३/०८**, राहु आर्द्रा ४ केतु पू.षा. २ में ५२/१३	४	२३	५३	४	6	13	18	35
१४	**अनन्त चतुर्दशी व्रत, मेला बाबा सोढल** (जालन्धर) पं., कदली व्रत	४	२४	५१	२४	6	14	18	34
१४	भ. ३/२५ से ३६/२८ तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, पूर्णिमा का श्राद्ध, **(E)**	४	२५	४९	४५	6	14	18	33
१५	**भाद्रपद पूर्णिमा** (स्नानदानादि), **पितृपक्ष (श्राद्ध) प्रारम्भ (F)**	४	२६	४८	१०	6	15	18	31

(A) उपाकर्म (देखें पृष्ठ 20), वक्री शनि पू.षा. (२) में ५४/४०, मुहर्रम (मु.) सं. 1441 हिजरी प्रारम्भ **(B)** ५/०३, **कलंक-चतुर्थी** (चन्द्रदर्शन निषेध), चन्द्रास्त 21/09 (जालन्धर), **पत्थर-चौथ** **(C)** वक्री प्लूटो पू.षा. ४ में ६/४३ **(D)** ६/५०, **शुक्र कन्या में ४८/४०** **(E)** **प्रोष्ठपदी-महालय श्राद्ध प्रारम्भ**, सूर्य उ.फा. में ५१/३८ **(F)** **प्रतिपदा तिथि का श्राद्ध**

शुक्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 6 सितम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	७	४	४	७	४	८	२	८
१९	१७	१७	२०	२१	२५	१९	२०	२०
०	२४	४९	४८	२१	१४	५४	१८	१८
१०	२९	३०	५२	२४	३	२१	४५	४५
58 11	772 54	38 16	112 55	4 37	74 27	1 9	3 10	3 10
पूफा २	ज्ये. १	पूफा २	पूफा ३	ज्ये. २	पूफा ४	पूषा २	पुन. १	पूषा ३
०	०	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	अ	अ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5:30

५ सू. मं. बु. शु. | ६ | ४ | ३ रा. | ७ | २ | ८ चं. गु. | ९ श. के. | ११ | १ | १० | १२

शनौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 14 सितम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१०	४	५	७	५	८	२	८
२६	२४	२२	५	२२	५	१९	१९	१९
४६	४२	५५	२०	२	९	४७	५३	५३
२१	३९	५२	५४	५८	४८	५१	१९	१९
58 24	713 20	38 20	103 56	5 54	74 30	0 23	3 11	3 11
उफा १	पूभा २	पूफा ३	उफा ३	ज्ये. २	उफा ३	पूषा २	आर्द्रा ४	पूषा २
०	०	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	अ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5:30

६ शु. बु. | ५ सू. मं. | ४ | ३ रा. | ७ | ८ गु. | २ | ९ श. के. | ११ चं. | १ | १० | १२

भाद्रपद शुक्ल पक्षफल—

इस पक्ष में **हरितालिका तृतीया** (1 सितं.) का व्रत तथा शिव-गौरी की पूजा करना विशेषकर सौभाग्यवती विवाहित स्त्रियों के लिए पति, पुत्र-सन्तति एवं पौत्रादि सुखों को बढ़ाने वाला होता है। **सिद्धिविनायक** (2 सितं.) का व्रत रखकर श्रीगणेश जी के बीजमन्त्र (**ॐ गं गणपतये नमः**) तथा श्रीगणेश स्तोत्र का पाठ करना चाहिए। इसी दिन सायंकाल चन्द्रदर्शन करना शुभ नहीं माना जाता। **ता. 6 सितं.** को **श्री राधा** एवं **श्रीमहालक्ष्मी का व्रत** एवं पूजन सौभाग्यवती स्त्रियां अपने सुहाग व परिवार के सौभाग्य एवं सन्तान सुख में वृद्धि के लिए करती हैं। ता. 10 सितं. को **वामन-जयन्ती** के दिन प्रातः 11घं.-9मिं. बाद द्वादशी श्रवण-नक्षत्र युक्त होने से भगवान् विष्णु जी के पूजन-स्तोत्र पाठ, दानादि के लिए विशेष प्रशस्त होगी। इसदिन दिए गए दान का फल अक्षय होता है। ता. 12 सितं. को **अनन्त चतुर्दशी** का व्रत रखकर भगवान् विष्णु के अनन्तस्वरूप का ध्यान करते हुए '**ॐ अनन्ताय नमः**' मन्त्रपूर्वक पूजन करना चाहिए। **ता. 13 सितं.** को महालय पूर्णिमा का श्राद्ध होने से अपराह्न-काल में अपने दिवंगत आत्मीय पितरों के निमित्त पूर्णिमा का श्राद्ध किया जाएगा। **ता. 14 सितं. से पितृपक्ष आरम्भ होगा।** ***लोक भविष्य***—चान्द्र भाद्रपद मास में पाँच शुक्रवार तथा पाँच शनिवार होने से देश के कुछ भागों में क्लिष्ट रोगोत्पत्ति, जातीय हिंसा, कहीं छत्रभङ्ग और बाढ़ादि प्राकृतिक आपदाओं के कारण कहीं खड़ी फसलों एवं जन, धनादि की भारी क्षति होने के संकेत हैं एवं सामान्य वस्तुओं के मूल्यों में अत्यधिक तेजी होने से लोगों में आक्रोश बढ़ेगा।

आकाश लक्षण—उ.प्र., बिहार, महाराष्ट्र, गुजरात के कुछ भागों में कहीं बादल चाल व खण्ड वृष्टि होगी। उत्तर-पश्चिमी भारत में वर्षा की कमी रहे।

वि. संवत् २०७६, आश्विन कृष्ण पक्ष शाक : १९४१														तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल	सन् 2019 ई. (ता. 15 सितं. से 28 सितंबर तक) हिजरी सन् 1441 सूर्य दक्षिणायन, उत्तर–दक्षिण गोल, शरद् ऋतु :	भा.स्टें.टा. जालन्धर							
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घड़ी	समाप्ति काल पल	नक्षत्र	समाप्ति काल घड़ी	समाप्ति काल पल	योग	समाप्ति काल घड़ी	समाप्ति काल पल	करण	समाप्ति काल घड़ी	समाप्ति काल पल	भाद्र. शक	मुहर्रम	सितंबर	भाद्र. प्रवि		ग्रह दर्शन–सायं गुरु पश्चिम में, शनि याम्योत्तरवृत्त के पास होगा। ता. 20 से बुध भी सायं पश्चिमक्षितिज में होगा। मंग.–शुक्र अभी अस्त हैं।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	स्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
३०.३८	१	रवि	१५	२३	उ.भा.	४८	४५	गंड	३९	५५	कौ	१५	२३	24	15	15	३०	मीन	आश्विन कृष्णपक्ष प्रारम्भ, **द्वितीया तिथि का श्राद्ध** (देखें पृष्ठ 20)	४	२७	४६	३४	6	15	18	30
३०.३३	२	चंद्र	२०	५०	रेव.	५५	१५	वृद्धि	४१	३३	ग	२०	५०	25	16	16	३१	मे. ५५/१५	भ. ५३/१७ से, **पंचक समाप्त ५५/१५**, बुध हस्त में ४०/४३	४	२८	४५	२	6	16	18	29
३०.२८	३	मंग	२५	४३	अश्वि	६०	००	ध्रुव	४२	४३	वि	२५	४३	26	17	17	आ.	मेष	भ. २५/४३ तक, **अङ्गारकी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत**, सूर्य कन्या में **(A)**	४	२९	४३	३१	6	16	18	27
३०.२३	४	बुध	२९	४८	अश्वि	१	८	व्या.	४३	१०	बा	२९	४८	27	18	18	२	मेष	**चतुर्थी का श्राद्ध, शनि मार्गी १९/५५**, भरणी श्राद्ध	५	०	४२	४	6	17	18	26
३०.१८	५	गुरु	३२	५३	भर.	६	८	हर्ष	४२	५०	कौ	१	२०	28	19	19	३	वृ. २२/१३	**पंचमी का श्राद्ध**, मंगल उ.फा. में ४८/५८	५	१	४०	३८	6	18	18	25
३०.१५	६	शुक्र	३४	४५	कृति.	१०	५	वज्र	४१	३५	ग	३	४९	29	20	20	४	वृष	भ. ३४/४५ से, बुध पश्चिम में उदय २९/२८, चन्द्र षष्ठी व्रत, **(B)**	५	२	३९	१३	6	18	18	24
३०.०८	७	शनि	३५	५	रोहि.	१२	३८	सिद्धि	३९	३	वि	४	५५	30	21	21	५	मि. ४३/२०	भ. ४/५५ तक, **श्रीमहालक्ष्मी व्रत सम्पन्न** (चन्द्रोदय-व्यापनी **(C)**	५	३	३७	५१	6	19	18	22
३०.०५	८	रवि	३३	४८	मृग.	१३	३८	व्य.	३५	१५	बा	४	२७	31	22	22	६	मिथुन	**जीवित्पुत्रिका व्रत, अष्टमी का श्राद्ध**	५	४	३६	३१	6	19	18	21
३०.००	९	चंद्र	३०	४३	आर्द्रा	१२	५५	वरी	३०	००	तै	२	१५	आ	23	23	७	क. ५६/१३	भ. ५८/१९ से, सौभाग्यवतीनां श्राद्ध, नवमी का श्राद्ध, मातृ-नवमी, **(D)**	५	५	३५	१५	6	20	18	20
२९.५३	१०	मंग	२५	५५	पुन.	१०	२५	परि	२३	२३	वि	२५	५५	2	24	24	८	कर्क	भ. २५/५५ तक, बुध चित्रा में ५३/२८, दशमी का श्राद्ध	५	६	३४	०	6	21	18	18
२९.५०	११	बुध	१९	३०	पुष्य	६	२०	शिव	१५	२५	बा	१९	३०	3	25	25	९	कर्क	**इन्दिरा एकादशी व्रत, एकादशी व द्वादशी का श्राद्ध** (देखें पृ.20)**(E)**	५	७	३२	४५	6	21	18	17
२९.४५	१२	गुरु	११	४३	आश्ले/मघा	०/५४	४५/८	सिद्ध/साध्य	६/५६	१८/२०	तै	११	४३	4	26	26	१०	सिं. ०/४५	**प्रदोष व्रत**, त्र्योदशी का श्राद्ध, **मघा त्रयोदशी**	५	८	३१	३६	6	22	18	16
२९.४३	१३	शुक्र	२	५५	पू.फा.	४६	४८	शुभ	४५	४५	व	२	५५	5	27	27	११	कं. ५९/५३	भ. २/५५ से २८/१३ तक, शस्त्र-विष-दुर्घटनादि (अपमृत्यु) से मृतों**(F)**	५	९	३०	२६	6	22	18	15
अवम्	१४	शुक्र	५३	३०	००	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	**चतुर्दशी तिथि का क्षय** ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
२९.३५	३०	शनि	४३	५५	उ.फा.	३९	१०	शुक्ल	३४	५८	च	१८	४३	6	28	28	१२	कन्या	**आश्विन(शनैश्चर) अमावस, सर्वपितृ श्राद्ध**, चतुर्दशी/अमावस**(G)**	५	१०	२९	२०	6	23	18	13

(A) १६/५५, **आश्विन संक्रान्ति**, मु ३०, पुण्यकाल सं. प्रात: 6/45 बाद, **तृतीया का श्राद्ध**, शुक्र हस्त में ५१/२५, विश्वकर्मा पूजन **(B)** षष्ठी का श्राद्ध **(C)** अष्टमी में) (देखें पृ. 20), सप्तमी का श्राद्ध **(D)** शक आश्विन प्रारम्भ, सूर्य सायन तुला में १७/३३, दक्षिण गोल प्रारम्भ **(E)** मंगल कन्या में ०/२५, सन्यासीनां श्राद्ध, गुरु ज्ये. ३ में २८/०८ **(F)** का श्राद्ध, सूर्य हस्त में ३०/०८, मासशिवरात्रि व्रत **(G)** तिथि का श्राद्ध, शुक्र चित्रा में ३५/२०, **गजच्छाया योग 22/03 से 23/57 तक, श्राद्ध समाप्त**, अज्ञात मृत्यु तिथि वालों का श्राद्ध, **पितृ-विसर्जन**

रवौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 22 सितम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	२	४	५	७	५	८	२	८
४	३	२८	१८	२२	१५	१९	१९	१९
३४	१२	२	४२	५४	५	४७	२७	२७
३२	३५	५७	४५	२५	५७	३४	५३	५३
58 40	803 16	38 27	95 40	7 5	74 33	0 24	3 11	3 11
उ.फा ३	मूल ३	उ.फा १	हस्त ३	ज्ये. २	हस्त २	पूषा २	आर्द्रा ४	पूषा २
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	अ	उ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रात: 5:30

भाव	ग्रह
६	सू. बु. शु.
७	
५	मं.
८	गु.
४	
९	श. के.
३	चं. रा.
१२	
१०	
२	
११	
१	

शनौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 28 सितम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	४	५	५	७	५	८	२	८
१०	२९	१	२८	२३	२२	१९	१९	१९
२७	२८	५३	२	३९	३३	५१	८	८
१०	५८	५३	२५	४	२०	२९	४८	४८
58 54	915 15	38 32	90 00	7 56	74 35	1 0	3 11	3 11
हस्त १	उ.फा १	उ.फा २	चित्रा २	ज्ये. ३	हस्त ४	पूषा २	आर्द्रा ४	पूषा २
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	अ	अ	उ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रात: 5:30

भाव	ग्रह
६	सू. मं. बु. शु.
७	
५	चं.
८	गु.
४	
९	श. के.
३	रा.
१२	
१०	
२	
११	
१	

आश्विन कृष्ण पक्षफल–

आश्विन कृष्णपक्ष में अपने पितरों के निमित्त किए जाने वाले प्राय: सभी श्राद्धकर्म **'पार्वण श्राद्ध'** कहलाते हैं। श्राद्धों में अपने दिवंगत पूर्वजों की मृत्यु की तिथ्यानुसार तिल, जौं, चावल, कुशा, गंगाजल सहित तर्पण एवं ब्राह्मण भोजन, दानादि व गोग्रास देने से पितर संतृप्त रहते हैं तथा श्राद्धकर्त्ता को आयु, सन्तान, धन, ज्ञान, स्वर्ग-मोक्षादि सुखों की प्राप्ति होती है। जो कोई व्यक्ति जान बूझकर श्राद्ध नहीं करता, वह शापग्रस्त होकर अनेक प्रकार के कष्टों एवं दु:खों से पीड़ित रहता है। दिवंगत की निधन-तिथि का ज्ञान न होने पर अमावस को श्राद्धादि कर्म करने चाहिए। **ता. 21 सितं.** को चन्द्रोदय-व्यापिनी अष्टमी तिथि को रात्रि-जागरण कर **श्रीमहालक्ष्मी व्रत** सौभाग्यवती स्त्रियाँ अपने सुहाग एवं सन्तान की दीर्घायु की कामना से करती हैं। ता. 22 सितं. को भी प्रदोष-व्यापिनी अष्टमी तिथि होने से **'जीवित्पुत्रिका व्रत'** सम्पन्न होगा। ता. 28 सितं. को चतुर्दशी तिथि/अमावस में/तथा ज्ञात-अज्ञात तिथियों में मृतजनों (पितरों) के निमित्त **श्राद्ध (सर्वपितृ श्राद्ध)** होगा। ***आश्विन संक्रान्ति–*** ता. 17 सितंबर, मंगलवार को दोप. 1 बजकर 2 मिंट (13/02) पर वृश्चिक लग्न में प्रवेश करेगी। ३० मुहूर्त्ति इस सं. का पुण्यकाल प्रात: 6/45 बाद शुरु होगा। वारानुसार महोदरी तथा नक्षत्रानुसार क्षिप्र संज्ञक यह सं. चोर, दुष्ट, बेईमान तथा व्यापारियों के लिए लाभप्रद रहेगी। **सं. राशिफल**–वृष, कर्क, सिंह, कन्या, वृश्चिक, मकर, कुम्भ, मीन राशि वालों के लिए शुभ रहेगी। **आकाश लक्षण**–आश्विन [illegible]

वि. संवत् २०७६ आश्विन शुक्ल पक्ष शाक : १९४१ तारीखें चंद्र राशि सन् 2019 ई. (ता. 29 सितं. से 13 अक्तू. तक) हिजरी सन् 1441 भा.स्टें.टा.

वि. संवत् २०७६, आश्विन शुक्ल पक्ष शाक: १९४१

सन् 2019 ई. (ता. 29 सितं. से 13 अक्तू. तक) हिजरी सन् 1441 — भा.स्टैं.टा.

सूर्य दक्षिणायन, दक्षिण गोल, शरद् ऋतु: — जालन्धर

सायं गुरु पश्चिम कपाल में, शनि याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम की ओर तथा बुध पश्चिमक्षितिज में होगा। ता. 29 सितं. से शुक्र भी सायं पश्चिम में होगा। मंग. अस्त है।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घटी	पल	नक्षत्र	समाप्ति काल घटी	पल	योग	समाप्ति काल घटी	पल	करण	समाप्ति काल घटी	पल	तारीखें: आश्विन	मुहर्रम मु.	सितंबर	आश्विन प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
२९.३०	१	रवि	३४	३५	हस्त	३१	४८	ब्रह्म	२४	२३	किं	९	१५	7	29	29	१३	तु. ५८/२३	शरद् नवरात्रे प्रारम्भ, घटस्थापन, बुध तुला में १६/२०, (A)	५	११	२८	१७	6	24	18	12
२९.२८	२	चंद्र	२६	५	चित्रा	२५	१३	ऐन्द्र	१४	२०	बा	०	२०	8	30	30	१४	तुला	चन्द्रदर्शन, मु. १५,	५	१२	२७	१३	6	24	18	11
२९.२०	३	मंग	१८	४५	स्वा.	१९	५०	वैधृ विष्क	५ ५७	१५ २८	ग	१८	४५	9	सफर	अक्तू	१५	तुला	भ. ४५/५७ से, अक्तूबर मास प्रारम्भ, सफर (मु.) मास प्रारम्भ	५	१३	२६	१३	6	25	18	9
२९.१८	४	बुध	१३	८	विशा	१६	८	प्रीति	५१	१०	वि	१३	८	10	2	2	१६	वृ. १/५३	भ. १३/०८ तक, **महात्मा गाँधी जयन्ती**, उपाङ्ग ललिता व्रत (B)	५	१४	२५	१३	6	25	18	8
२९.१३	५	गुरु	९	२५	अनु.	१४	२०	आयु	४६	३३	बा	९	२५	11	3	3	१७	वृश्चिक	बुध स्वाती में ५१/५३, **शुक्र तुला में ५६/५८**, प्लूटो मार्गी 12घं.-05मिं.	५	१५	२४	१७	6	26	18	7
२९.०८	६	शुक्र	७	५०	ज्ये.	१४	४०	सौभा	४३	३८	तै	७	५०	12	4	4	१८	ध. १४/४०	**सरस्वती आवाहन मूलभे** (देखें पृ. 21), शनि पू.षा. ३ में ३७/३८	५	१६	२३	२३	6	27	18	6
२९.०३	७	शनि	८	३०	मूल	१७	१०	शोभ	४२	२३	व	८	३०	13	5	5	१९	धनु	भ. ८/३० से ३८/३४ तक, **सरस्वती पूजन** पू.षा.भे, भद्रकाली अवतार	५	१७	२२	२८	6	27	18	4
२८.५८	८	रवि	८	३८	पू.षा.	२१	३०	अति	४२	२८	ब	८	३८	14	6	6	२०	म. ३७/५०	**श्रीदुर्गाष्टमी**, महाष्टमी, **सरस्वती बलिदान**	५	१८	२१	३८	6	28	18	3
२८.५३	९	चंद्र	१५	२३	उ.षा.	२७	२०	सुक	४३	४०	कौ	१५	२३	15	7	7	२१	मकर	**महानवमी, नवरात्र-समाप्त, बलिदान दिवस, सरस्वती विसर्जन (C)**	५	१९	२०	४७	6	29	18	2
२८.५०	१०	मंग	२०	५३	श्रव.	३४	१८	धृति	४५	४०	ग	२०	५३	16	8	8	२२	मकर	भ. ५३/५८ से, **विजयादशमी (दशहरा)** (देखें पृ. 21), अपराजिता-पूजन(D)	५	२०	१९	५९	6	29	18	1
२८.४३	११	बुध	२७	३	धनि.	४१	४५	शूल	४७	५८	वि	२७	३	17	9	9	२३	कुं. ७/५८	भ. २७/०३ तक, **पंचक प्रारम्भ ७/५८, पापांकुशा एकादशी व्रत,(E)**	५	२१	१९	१३	6	30	17	59
२८.३८	१२	गुरु	३३	२३	शत.	४९	१८	गंड	५०	१८	ब	०	१३	18	10	10	२४	कुम्भ	मंगल हस्त में ३२/४३, पद्मनाभ द्वादशी	५	२२	१८	३०	6	31	17	58
२८.३५	१३	शुक्र	३९	३३	पू.भा.	५६	३८	वृद्धि	५२	२८	कौ	६	२८	19	11	11	२५	मी. ३९/४८	**प्रदोष व्रत**, सूर्य चित्रा में २/१५	५	२३	१७	४६	6	31	17	57
२८.३०	१४	शनि	४५	१३	उ.भा.	६०	००	ध्रुव	५४	१०	ग	१२	२३	20	12	12	२६	मीन	भ. ४५/१३ से,	५	२४	१७	७	6	32	17	56
२८.२५	१५	रवि	५०	१३	उ.भा.	३	२०	व्या.	५५	२३	वि	१७	४३	21	13	13	२७	मीन	भ. १७/४३ तक, **आश्विन-पूर्णिमा, शरद्-पूर्णिमा**, कोजागर-व्रत, (F)	५	२५	१६	२८	6	33	17	55

(A) शुक्र पश्चिम में उदय 18/12 (घं.मिं.), महाराजा अग्रसेन जयन्ती, मातामह (नाना/नानी) का श्राद्ध **(B)** (देखें पृष्ठ 21), शुक्र बाल्यत्व समाप्त 18घं.-12मिं. **(C)** (श्रवणे) (देखें पृष्ठ 21) **(D)** आयुध/शस्त्रादि पूजन, सीमोल्लंघन **(E)** शुक्र स्वा. में १८/३५, भरत-मिलाप **(F)** श्रीसत्यनारायण व्रत, **महर्षि श्रीवाल्मीकि जयन्ती**, कार्तिक स्नान प्रारम्भ, बुध विशा. में ५८/१३, गं.मू. 7/53 बाद

रवौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 6 अक्तूबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	८	५	६	७	६	८	२	८
१८	२१	७	९	२४	२	२०	१८	१८
१९	४५	२	३५	४६	३०	२	४३	४३
१५	४७	३४	४०	७	२	१३	२१	२१
59 9	734 40	38 39	82 10	8 56	74 35	1 47	3 10	3 10
हस्त ३	पूषा ३	उफा ४	स्वा १	ज्ये ३	चित्रा ३	पूषा ३	आर्द्रा ४	पूषा २
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रात: 5:30 — ७ शु. बु.; ६ सू. मं.; ५; ४; ३ रा.; २; १; १२; ११; १०; ९ चं. श. के.; ८ गु.

रवौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 13 अक्तूबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	११	५	६	७	६	८	२	८
२५	१५	११	१८	२५	११	२०	१८	१८
१३	२८	३३	४५	५१	१२	१६	२१	२१
५४	४१	२४	५१	१०	५	४१	६	६
59 22	724 37	38 45	73 11	9 44	74 34	2 26	3 11	3 11
चित्रा १	उभा ४	हस्त १	स्वा ४	ज्ये ३	स्वा २	पूषा ३	आर्द्रा ४	पूषा २
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रात: 5:30 — ७ शु. बु.; ६ सू. मं.; ५; ४; ३ रा.; २; १; १२ चं.; ११; १०; ९ श. के.; ८ गु.

आश्विन शुक्ल पक्षफल–

आश्विन शुक्ल प्रतिपदा (29 सितं., रविवार) से शारदीय नवरात्रों का शुभारम्भ होगा। प्रतिपदा को सूर्योदय से 10 घटी (लगभग 4 घण्टे) तक अथवा अभिजित् मुहूर्त में शुद्ध पात्र में शुद्ध रेत/मिट्टी डालकर जौं/सप्तधान्य के बीज वपन करके मंत्रोच्चारण सहित घटस्थापन, ज्योत प्रज्वलित कर षोडशोपचार पूजन सहित श्रीदुर्गा पूजन करना चाहिए। संकल्पपूर्वक प्रतिपदा से नवमी तिथि तक भगवती देवि के सम्मुख ज्योति प्रज्वलित कर **'श्रीदुर्गा-सप्तशती'** का नियमित रूप से पाठ करना चाहिए। **पूजन मन्त्र–'ॐ जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी। दुर्गा क्षमा धात्री स्वाहा स्वधा नमोस्तुते। आगच्छ वरदे देवी। पूजां गृहाण सुमुखि नमस्ते शंकरप्रिये।।'** ता. 8 अक्तू. मंगलवार को अपराह्ण व्यापिनी तथा श्रवण नक्षत्र युता दशमी तिथि के दिन **विजयादशमी पर्व** मनाया जाएगा। सायंकाल रावण दहन से पूर्व देवताओं, आयुध, अपराजिता पूजन और पूजनीय गुरुजनों की यथाविधि पूजा करने की भी परम्परा है। ***ग्रहगोचर***–आश्विन मास में पाँच रविवार होने से प्राकृतिक प्रकोपों एवं आतंकवादी गतिविधियों के कारण सामान्य लोगों में असुरक्षा एवं भय की स्थिति बने, कहीं छत्रभंग (सत्ता-परिवर्तन) एवं विस्फोट, जातीय हिंसा, अग्निकाण्ड आदि घटनाओं का भय होगा। कहीं अनाज की कमी, अत्यधिक महँगाई, दुर्भिक्ष अथवा अकालजन्य परिस्थितियां बन सकती हैं। **सूर्य-मंगल का शनि के साथ दृष्टि (4-10) सम्बन्ध** रहने से राजनैतिक वातावरण विक्षुब्ध व तनावपूर्ण रहेगा। ***आकाश लक्षण***–बादलों से आच्छादित होने पर भी वर्षा कम हो। ***शकुन***–आश्विन शु. १० को यदि बादल या वर्षा हो तो उड़द, तिल महँगे होंगे।

वि. संवत् २०७६, कार्तिक कृष्ण पक्ष शाकः १९४१

सन् 2019 ई. (ता. 14 अक्तू. से 28 अक्तू. तक) हिजरी सन् 1441
सूर्य दक्षिणायन, दक्षिण गोल, शरद्–हेमन्त ऋतु:

भा.स्टैं.टा. — जालन्धर

सायं शनि पश्चिम कपाल में, इससे कुछ ऊपर गुरु होगा। बुध–शुक्र पास–पास पश्चिमी क्षितिज में होंगे। ता. 23 अक्तू. से मंग. प्रातः पूर्व में दृश्य होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घटी	पल	नक्षत्र	समाप्ति काल घटी	पल	योग	समाप्ति काल घटी	पल	करण	समाप्ति काल घटी	पल	तारीखें अंग्रे.	मास	अक्तू.	सौर प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	स्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
२८.२३	१	चंद्र	५४	३०	रेव.	९	२८	हर्ष	५६	३	बा	२२	२१	22	14	14	२८	मे. ९/२८	कार्तिक कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, **पंचक समाप्त ९/२८**, गण्डमूल विचार	५	२६	१५	५०	6	33	17	54
२८.१५	२	मंग	५७	५८	अश्वि	१४	५०	वज्र	५६	५	तै	२६	१४	23	15	15	२९	मेष	गण्डमूल 12/30 तक	५	२७	१५	१७	6	34	17	52
२८.१०	३	बुध	६०	००	भर.	१९	२५	सिद्धि	५५	२५	व	२९	१६	24	16	16	३०	वृ. ३५/२८	भ. २९/१६ से,	५	२८	१४	४५	6	35	17	51
२८.०८	३	गुरु	०	३५	कृति	२३	१३	व्य.	५४	८	वि	०	३५	25	17	17	का.	वृष	भ. ०/३५ तक, **व्रत करवा-चौथ** (करक-चतुर्थी) चन्द्रोदय हेतु **(A)**	५	२९	१४	१३	6	35	17	50
२८.०३	४	शुक्र	२	१३	रोहि.	२५	५८	वरी	५१	५५	बा	२	१३	26	18	18	२	मि. ५६/५८		६	०	१३	४७	6	36	17	49
२७.५८	५	शनि	२	५३	मृग.	२७	३८	परि	४८	५०	तै	२	५३	27	19	19	३	मिथुन	स्कन्द षष्ठी व्रत	६	१	१३	२१	6	37	17	48
२७.५५	६	रवि	२	१३	आर्द्रा	२८	८	शिव	४४	४५	व	२	१३	28	20	20	४	मिथुन	भ. २/१३ से ३१/१६ तक, शुक्र विशाखा में १/५८	६	२	१२	५७	6	37	17	47
२७.५०	७	चंद्र	०	१८	पुन.	२७	१५	सिद्ध	३९	३०	ब	०	१८	29	21	21	५	क. १२/३५	**अहोई अष्टमी व्रत**	६	३	१२	३८	6	38	17	46
अवम्	८	चंद्र	५७	००	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	०	०	००	**अष्टमी तिथि का क्षय** ०० ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
२७.४५	९	मंग	५२	१५	पुष्य	२५	००	साध्य	३३	१०	तै	२४	३८	30	22	22	६	कर्क	**मंगल पूर्व में उदय ५९/५३**, गण्डमूल 16/39 बाद	६	४	१२	१८	6	39	17	45
२७.४०	१०	बुध	४६	१३	आश्ले	२१	२३	शुभ	२५	४३	व	१९	१४	का.	23	23	७	सिं. २१/२३	भ. १९/१४ से ४६/१३ तक, **बुध वृश्चिक में ४१/४३**, सूर्य सायन(B)	६	५	१२	४	6	40	17	44
२७.३८	११	गुरु	३९	८	मघा	१६	३५	शुक्ल	१७	२०	ब	१२	४०	2	24	24	८	सिंह	**रमा एकादशी व्रत**, सूर्य स्वाती में २८/१५, कौमुदि महोत्सव प्रारम्भ	६	६	११	४८	6	40	17	43
२७.३३	१२	शुक्र	३१	८	पूफा	१०	४८	ब्रह्म ऐन्द्र	८ ५८	८ २५	कौ	५	८	3	25	25	९	कं. २४/१५	गोवत्स द्वादशी, **प्रदोष व्रत**(देखें पृ. 22), **धन-त्र्योदशी** (देखें पृ.22), **(C)**	६	७	११	३६	6	41	17	42
२७.२८	१३	शनि	२२	४३	उ.फा. हस्त	४ ५७	२३ ४८	वैधृ	४८	२८	व	२२	४३	4	26	26	१०	कन्या	भ. २२/४३ से ४८/२७ तक, **धनवन्तरी जयन्ती**, श्रीहनुमान-**(D)**	६	८	११	२७	6	42	17	41
२७.२३	१४	रवि	१४	१०	चित्रा	५१	२५	विष्क	३८	३८	श	१४	१०	5	27	27	११	तु. २४/३३	**नरक-चतुर्दशी** (पूर्व अरुणोदय वाली) रूप चौदश, **दीपावली, (E)**	६	९	११	२०	6	43	17	40
२७.२०	३०	चंद्र	६	५	स्वा.	४५	४३	प्रीति	२९	१८	ना	६	५	6	28	28	१२	तुला	**कार्तिक अमावस, सोमवती अमावस**, तीर्थस्नान माहात्म्य, **(F)**	६	१०	११	१२	6	43	17	39

कार्तिक संक्रांति 17 अक्तूबर

(A) (देखें पृष्ठ 13), **सूर्य तुला में** ४६/०८, **कार्तिक संक्रान्ति**, मु. ४५, पुण्यकाल सं. अगले दिन प्रातः 7/26 तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत**, गुरु ज्ये. (४) में ५१/४५, आकाश-दीपदान प्रारम्भ **(B)** वृश्चिक में ४०/२८, हेमन्त ऋतु प्रारम्भ, शक कार्तिक प्रारम्भ **(C)** यमाय प्रीत्यर्थ-दीपदान **(D)** जयन्ती (अर्द्धरात्रि-व्यापिनी) (देखें पृ. 22), यमाय तर्पण, मासशिवरात्रि व्रत **(E) श्रीमहालक्ष्मी पूजन** (देखें पृ. 172), कुबेर-पूजा, सायं दीपदान देवालये, काली-पूजन, कौमुदि महोत्सव सम्पन्न **(F) मेला हरिद्वार-प्रयागराज, अन्नकूट-गोवर्धन पूजा**, गोक्रीड़ा, बलिपूजा, श्रीमहावीर निर्वाण (जैन), विश्वकर्मा दिवस (पंजाब), शुक्र वृश्चिक में ४/३०

चन्द्रे सप्तम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 21 अक्तूबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	२	५	६	७	६	८	२	८
३	२६	१६	२७	२७	२१	२०	१७	१७
९	३०	४३	३६	१२	८	३८	५५	५५
५०	५९	५६	५१	४	३८	४४	३९	३९
59 39	821 1	38 54	55 14	10 34	74 34	3 9	3 10	3 10
चित्रा ३	पुन. २	हस्त ३	विशा. ३	ज्ये. ४	विशा. १	पूषा ३	आर्द्रा ४	पूषा २
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. सप्तमी, प्रातः 5:30

७ सू. बु. शु. | ८ गु. | ६ मं. | ९ श. के. | ५ | १० | ४ | १ | ११ | ३ चं. रा. | १२ | २

चन्द्रे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 28 अक्तूबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	६	५	७	७	६	८	२	८
१०	८	२१	२	२८	२९	२१	१७	१७
८	२	१६	४०	२८	५०	२	३३	३३
१३	४१	४०	६	२	३७	४०	२४	२४
59 56	881 12	39 2	23 8	11 14	74 35	3 46	3 11	3 11
स्वा. २	स्वा. १	हस्त ४	विशा. ४	ज्ये. ४	विशा. ३	पूषा ३	आर्द्रा ४	पूषा २
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5:30

७ सू. चं. शु. | ८ गु. बु. | ६ मं. | ९ श. के. | ५ | १० | ४ | १ | ११ | ३ रा. | १२ | २

कार्तिक कृष्ण पक्षफल–

कार्तिक कृष्ण चतुर्थी (17 अक्तू.) को पतिव्रता स्त्रियां अपने पति के मंगल हेतु एवं आयु वृद्धि की कामना से '**करवा-चौथ**' का व्रत रखती हैं। निराहार रहकर सायंकाल श्रीगणेश-पूजन, करवा-दान, शिव-पार्वती पूजन एवं चन्द्रमा को अर्घ्य दान कर पति की प्रतिष्ठा करने के उपरान्त ही स्वयं भोजन करती हैं। प्रदोष-व्यापिनी **त्र्योदशी** (25 अक्तू.) को **धन-त्र्योदशी** के दिन सायं नवीन बर्तन का क्रय करना, श्रीलक्ष्मीनारायण का पूजन करने के बाद अनाज, वस्त्र, औषधियाँ एवं यमार्थ दीपदान करने से अकाल मृत्यु का भय नहीं रहता। ता. 26 अक्तू. को अर्द्धरात्रि चतुर्दशी रुद्रावतार श्रीहनुमान जयन्ती का पर्व उत्तरी भारत में मनाया जाएगा। **ता. 26 अक्तू. की** सायं दक्षिण-अभिमुख होकर जल, तिल और कुश लेकर यम हेतु तर्पण करें। ता. 27 अक्तू. को नरक-चौदश के दिन अरुणोदय से पूर्व बिजली, अग्नि, उल्का आदि से मृतकों की शान्ति के लिए चार मुख वाले दीपक को प्रज्वलित करके यथाशक्ति दान दें। इसी दिन प्रदोष-व्यापिनी **कार्तिक अमावस्या (दीपावली)** को प्रदोषकाल में ही दीपदान करके अपने गृह के पूजा स्थान में मन्त्रपूर्वक दीप प्रज्वलित करके महालक्ष्मी की यथाविधि पूजा करनी चाहिए (**देखें पृ. 172**)। **ता. 28 अक्तू. सोमवार** को अमावस्या प्रातः 9 बजकर 9 मिनट तक है, तदुपरान्त प्रतिपदा विद्यमान है, गोवर्धन पूजन एवं अन्नकूट आदि पर्व अमा. विद्धा प्रतिपदा को ही प्रातः 9/9 उपरान्त मनाएं जाएंगे। ***कार्तिक संक्रान्ति***–ता. 17 अक्तू. बृहस्पतिवार को रात्रि 1 बजकर 02 मिंट (25/02) पर कर्क लग्न में प्रवेश करेगी। ४५ मुहूर्ति इस से. का पुण्यकाल अगले दिन प्रातः 7/26 बजे तक रहेगा। [illegible]

वि. संवत् २०७६, कार्तिक शुक्ल पक्ष शाकः १९४१ तारीखें चंद्र राशि ... से 12 नवं. तक) हिजरी सन् 1441 भा.स्टैं.टा. जालन्धर

वि. संवत् २०७६, कार्तिक शुक्ल पक्ष शाकः १९४१ | तारीखें | सन् 2019 ई. (ता. 29 अक्तू. से 12 नवं. तक) हिजरी सन् 1441 | भा.स्टैं.टा. जालन्धर

सूर्य दक्षिणायन, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतुः

प्रातः मंगल पूर्वक्षितिज में होगा। सायं बुध-शुक्र पश्चिम क्षितिज में होंगे। शनि पश्चिम कपाल में तथा उससे कुछ ऊपर गुरु होगा। ता. 6 नवं. से बुध पश्चिम में ही अस्त होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घटी	पल	नक्षत्र	समाप्ति काल घटी	पल	योग	समाप्ति काल घटी	पल	करण	समाप्ति काल घटी	पल	कार्ति. शु.	सफर मु.	अक्टू.	कार्ति. प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
००.००	१	चंद्र	५८	४५	००	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	**कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा का क्षय** ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
२७.१५	२	मंग	५२	४०	विशा	४१	८	आयु	२०	४५	बा	२५	४३	7	29	29	१३	वृ. २७/०८	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, **भ्रातृ (भाई) दूज**, यमद्वितीया, बुध अनु. में **(A)**	६	११	११	२१	6	44	17	38
२७.१०	३	बुध	४८	१३	अनु.	३८	५	सौभा	१३	२०	तै	२०	२७	8	रबि	30	१४	वृश्चिक	शुक्र अनु. में ४५/२०, रबि-उल्लावल (मु.) मास प्रारम्भ	६	१२	११	९	6	45	17	37
२७.०५	४	गुरु	४५	४०	ज्ये.	३६	५३	शोभ	७	२०	व	१६	५७	9	2	31	१५	ध. ३६/५३	भ. १६/५७ से ४५/४० तक, दूर्वा गणपति व्रत, मंगल चित्रा में **(B)**	६	१३	११	१०	6	46	17	36
२७.००	५	शुक्र	४५	१०	मूल	३७	४३	अति	२	५५	ब	१५	२५	10	3	नवं	१६	धनु	नवम्बर मास प्रारम्भ, ज्ञान-पंचमी, जया पंचमी, गण्डमूल 21/52 तक	६	१४	१५	१३	6	47	17	35
२६.५५	६	शनि	४६	४८	पू.षा.	४०	३३	सुक. धृति	० ५८	८ ५८	कौ	१५	५९	11	4	2	१७	म. ५६/३५	वक्री बुध विशा. ४ में ७/०८, **सूर्य षष्ठी पर्व (बिहार)**	६	१५	११	१८	6	48	17	34
२६.५५	७	रवि	५०	२०	उ.षा.	४५	१८	शूल	५९	१३	ग	१८	३४	12	5	3	१८	मकर	भ. ५०/२० से,	६	१६	११	२०	6	48	17	34
२६.५०	८	चंद्र	५५	२०	श्रव.	५१	२५	गंड	६०	००	वि	२२	५०	13	6	4	१९	मकर	भ. २२/५० तक, **गोपाष्टमी, गुरु मूल १ धनु में ५६/०८**	६	१७	११	२८	6	49	17	33
२६.४५	९	मंग	६०	००	धनि.	५८	३३	गंड	०	२५	बा	२८	१९	14	7	5	२०	कुं. २४/५३	**पंचक प्रारम्भ २४/५३**, अक्षय-नवमी, कूष्माण्ड नवमी, आरोग्य व्रत	६	१८	११	३७	6	50	17	32
२६.४०	९	बुध	१	१८	शत.	६०	००	वृद्धि	२	२०	कौ	१	१८	15	8	6	२१	कुम्भ	सूर्य विशाखा में ४८/००, वक्री बुध पश्चिम में अस्त ०/०३	६	१९	११	४८	6	51	17	31
२६.३८	१०	गुरु	७	३८	शत.	५	५८	ध्रुव	४	३५	ग	७	३८	16	9	7	२२	मीं. ५६/३३	भ. ४०/४४ से, **वक्री बुध तुला में २१/२३**	६	२०	१२	००	6	52	17	31
२६.३३	११	शुक्र	१३	५०	पू.भा.	१३	१८	व्या.	६	४०	वि	१३	५०	17	10	8	२३	मीन	भ. १३/५० तक, **हरिबोधिनी एकादशी व्रत, तुलसी विवाह (C)**	६	२१	१२	१३	6	53	17	30
२६.३०	१२	शनि	१९	२८	उ.भा.	२०	८	हर्ष	८	२५	बा	१९	२८	18	11	9	२४	मीन	**शनि प्रदोष व्रत**, हरिप्रबोधोत्सव, गण्डमूल 14/56 बाद	६	२२	१२	२६	6	53	17	29
२६.२५	१३	रवि	२४	८	रेव.	२८	३३	वज्र	९	२८	तै	२४	८	19	12	10	२५	मे. २८/३३	**पंचक समाप्त २८/३३**, वैकुण्ठ चतुर्दशी (देखें पृष्ठ 22), मंगल **(D)**	६	२३	१२	४३	6	54	17	28
२६.२३	१४	चंद्र	२७	४८	अश्वि	३०	५५	सिद्धि	९	४३	व	२७	४८	20	13	11	२६	मेष	भ. २७/४८ से ५९/०६ तक, गण्डमूल 19/17 तक	६	२४	१३	१	6	55	17	28
२६.१८	१५	मंग	३०	२३	भर.	३४	४८	व्य.	९	१०	ब	३०	२३	21	14	12	२७	वृ. ५०/३८	**कार्तिक पूर्णिमा, श्री गुरु नानक जयन्ती, भीष्मपंचक समाप्त, (E)**	६	२५	१३	२२	6	56	17	27

(A) ५८/५५, **विश्वकर्मा-पूजन**, यमुना-स्नान, कलम-दवात पूजन, प्लूटो उ.षा. (१) में ०/५०, **(B)** ६/१८, **बुध वक्री** ३५/५५, गण्डमूल विचार **(C)** (उ.भा.भे), चातुर्मास्य व्रत, नियमादि समाप्त, **भीष्मपंचक प्रारम्भ (D)** तुला में १८/४३, शुक्र ज्ये. में २८/५८ **(E)** कार्तिक स्नान समाप्त, **मेला रामतीर्थ (अमृतसर) पं.**, मेला पुष्करतीर्थ (राज.), त्रिपुरोत्सव, भरणी दीपम्, श्रीसत्यनारायण व्रत

चन्द्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 4 नवम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	९	५	७	७	७	८	२	८
१७	१२	२५	२	२९	८	२१	१७	१७
८	१९	५०	४०	४८	३२	३०	११	११
१३	५५	१६	४६	२०	३२	४२	८	८
60 7	723 29	39 10	35 22	11 47	74 32	4 20	3 11	3 11
स्वा. ४	श्रव ९	चित्रा ९	विशा ४	ज्ये. ४	अनु. २	पूषा ३	आर्द्रा ४	पूभा २
०	०	मा	व	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5:30

९ श. के. | ८ शु. गु. बु. | ७ सू. | ६ मं. | ५ | १० चं. | ४ | ११ | १ | ३ रा. | १२ | २

भौमे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 12 नवम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	०	६	६	८	७	८	२	८
२५	१८	१	२४	१	१८	२२	१६	१६
९	३८	४	१९	२४	२८	७	४५	४५
५०	११	२	१९	३७	३८	१९	४२	४२
60 19	755 32	39 18	78 23	12 21	74 28	4 54	3 11	3 11
विशा २	भर. २	चित्रा ३	विशा २	मूल १	ज्ये. १	पूषा ३	आर्द्रा ४	पूषा २
०	०	मा	व	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5:30

९ के. गु. श | ८ शु | ७ सू. मं. बु. | ६ | ५ | १० | ४ | ११ | १ चं. | ३ रा. | १२ | २

कार्तिक शुक्ल पक्षफल–

ता. 29 अक्तू. को भाई-बहिन के परस्पर स्नेह का प्रतीक '**भातृ-दूज**' का पर्व मनाया जाएगा। इस दिन प्रातः स्नान-उपरान्त शिव-पार्वती एवं यम पूजनोपरान्त बहन अपने भाई की मंगल कामना हेतु उसे रोली व केसर का तिलक लगाती हैं। **अक्षय नवमी** (5 नवं.) को किया हुआ पूजा-पाठ और दिया हुआ दान-पुण्य अक्षय होता है। **हरिप्रबोधिनी एकादशी** (8 नवं.) को भगवान् लक्ष्मीनारायण की पूजा की जाती है। इसी दिन भीष्मपंचक प्रारम्भ होंगे। उत्तर-भारत में कुछ विद्वान् परम्परानुसार **भीष्मपंचकों** में विवाहादि शुभ कार्यों को करना शुभ नहीं मानते, जबकि उ.प्र., राज., महाराष्ट्र आदि प्रदेशों में यह परम्परा शास्त्र-विहित न होने के कारण भीष्मपंचक सम्बन्धी दोष अविचारणीय माने जाते हैं। इसी दिन ता. 8 को दोपहर 12घं.-12मिं. बाद विवाह-नक्षत्र उ.भा. में **तुलसी विवाह** करवाना शुभ रहेगा। ता. 10 नवं. (**वैकुण्ठ-चतुर्दशी**) को स्नान-ध्यानादि के बाद भगवान् विष्णु एवं शिव दोनों की कमल-पुष्पों सहित पूजार्चन एवं स्तोत्र पाठ किया जाता है। ता. 12 नवं. को कार्तिक पूर्णिमा के दिन कार्तिक स्नान-दानादि का विशेष माहात्म्य होगा। इसीदिन श्रीसत्यनारायण का व्रत रखकर अनाज, गर्मवस्त्रों एवं फलों आदि का दान करने का विशेष माहात्म्य होता है। ***लोकभविष्य***–चान्द्र कार्तिक मास में पाँच सोमवार एवं पाँच मंगलवार होने से मिश्रित प्रभाव घटित होंगे। कहीं छत्रभंग (शासन-परिवर्तन), पदच्युति या किसी प्रधाननेता का आकस्मिक निधन हो। कहीं उपद्रव, जनांदोलन व हिंसक घटनाएं घटित होंगी। सरकार एवं विपक्षी पार्टियों के मध्य वाद-विवाद एवं आरोप-प्रत्यारोप एक नए शिखर तक पहुँच जाएंगे। **रक्तेन पूरित पृथिवी छत्रभङ्गस्तदा भवेत्।।** ***आकाश लक्षण***–शनि धनु राशि में केतु युक्त होने से अनेक स्थलों पर वर्षा की कमी अनुभव हो एवं दुर्भिक्ष (अकालजन्य) की परिस्थितियां बनें।

वि. संवत् २०७६, मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष शाक: १९४१

सन् 2019 ई. (ता. 13 नवं. से 26 नवम्बर तक) हिजरी सन् 1441
सूर्य दक्षिणायन, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु:

भा.स्टैं.टा. — **जालन्धर**

प्रातः मंगल पूर्वक्षितिज में, ता. 17 से बुध भी पूर्व में दृश्य होगा। सायं गुरु-शुक्र पश्चिमक्षितिज में बिल्कुल पास-पास तथा शनि इनसे कुछ ऊपर उठा होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घड़ी	पल	नक्षत्र	समाप्ति काल घड़ी	पल	योग	समाप्ति काल घड़ी	पल	करण	समाप्ति काल घड़ी	पल	तारीखें कार्ति. शक	रबि. मु.	नवंबर	कार्ति. प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
२६.१५	१	बुध	३१	५३	कृति.	३७	४०	वरी	७	४८	बा	१	८	22	15	13	२८	वृष	राहु आर्द्रा ३, केतु पू.षा. १ में ४४/१३, **पद्मक योग 22/01 तक (A)**	६	२६	१३	४३	6	57	17	27
२६.१०	२	गुरु	३२	२३	रोहि	३९	३३	परि	५	३८	तै	२	८	23	16	14	२९	वृष	नेहरू-जयन्ती (बाल-दिवस)	६	२७	१४	५	6	58	17	26
२६.०८	३	शुक्र	३१	५८	मृग	४०	३३	शिव सिद्ध	२ ५९	४३ ८	व	२	१०	24	17	15	३०	मि. १०/०८	भ. २/१० से ३१/५८ तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 13 व 23) **(B)**	६	२८	१४	३३	6	59	17	26
२६.०५	४	शनि	३०	४०	आर्द्रा	४०	४३	साध्य	५४	५०	ब	१	१९	25	18	16	मा	मिथुन	**सूर्य वृश्चिक में** ४४/३८, **मार्गशीर्ष संक्रान्ति,** मु. ४५, पुण्यकाल **(C)**	६	२९	१४	५८	6	59	17	25
२६.००	५	रवि	२८	२८	पुन.	३९	५८	शुभ	४९	५०	तै	२८	२८	26	19	17	२	क. २५/१३	वक्री बुध पूर्व में उदय २६/००	७	०	१५	२७	7	0	17	24
२५.५८	६	चंद्र	२५	२३	पुष्य	३८	२०	शुक्ल	४४	५	व	२५	२३	27	20	18	३	कर्क	भ. २५/२३ से ५३/२४ तक, गण्डमूल 22/21 बाद	७	१	१५	५९	7	1	17	24
२५.५५	७	मंग	२१	२५	आश्ले	३५	५३	ब्रह्म	३७	४०	ब	२१	२५	28	21	19	४	सिं. ३५/५३	**श्रीकालभैरवाष्टमी** (देखें पृष्ठ 23), भैरव-जयन्ती, गण्डमूल	७	२	१६	३१	7	2	17	24
२५.५०	८	बुध	१६	३५	मघा	३२	३५	ऐन्द्र	३०	३५	कौ	१६	३५	29	22	20	५	सिंह	सूर्य अनु. में २/४८, मंगल स्वा. में २७/५३, **बुध मार्गी** ४३/५८, गं.मू.	७	३	१७	६	7	3	17	23
२५.४८	९	गुरु	११	३	पू.फा.	२८	३३	वैधृ	२२	५५	ग	११	३	30	23	21	६	कं. ४२/२८	भ. ३७/५८ से, गुरु मूल २ में ६/०५, **शुक्र मूल १ धनु में १३/१५**	७	४	१७	४१	7	4	17	23
२५.४३	१०	शुक्र	४	५३	उ.फा.	२४	००	विष्क	१४	४८	वि	४	५३	मा	24	22	७	कन्या	भ. ४/५३ तक, **उत्पन्ना एकादशी व्रत (स्मार्त)**, सूर्य सायन धनु **(D)**	७	५	१८	२०	7	5	17	22
अवम्	११	शुक्र	५८	१८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	**एकादशी तिथि का क्षय** ०० ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
२५.४३	१२	शनि	५१	३५	हस्त	१९	१०	प्रीति आयु	६ ५७	२३ ५३	कौ	२४	५७	2	25	23	८	तु. ४६/४३	**उत्पन्ना एकादशी व्रत (वैष्णव), त्रिस्पर्शा महाद्वादशी**	७	६	१८	५७	7	5	17	22
२५.४०	१३	रवि	४५	००	चित्रा	१४	१५	सौभा	४९	३०	ग	१८	१८	3	26	24	९	तुला	भ. ४५/०० से, प्रदोष व्रत **(E)**पुरमण्डल (जम्मू), **श्रीबालाजी जयन्ती**	७	७	१९	३९	7	6	17	22
२५.३८	१४	चंद्र	३८	५५	स्वा.	९	३५	शोभ	४१	३३	वि	११	५८	4	27	25	१०	वृ. ५१/३३	भ. ११/५८ तक, शनि पू.षा. ४ में ३७/१८, मासशिवरात्रि व्रत, मेला **(E)**	७	८	२०	२२	7	7	17	22
२५.३३	३०	मंग	३३	४०	विशा	५	३८	अति	३४	१८	च	६	१८	5	28	26	११	वृश्चिक	**मार्गशीर्ष अमावस, भौमवती अमावस,** बुध विशा. में २२/०३	७	९	२१	७	7	8	17	21

(A) (देखें पृष्ठ-22, मृगछोड़ी स्नान प्रारम्भ **(B)** वक्री बुध स्वा. ४ में ३५/३८, सौभाग्यसुन्दरी व्रत **(C)** सं. अगले दिन प्रात: 7/14 तक, आकाश दीपदान समाप्ति **(D)** में ३३/३३, शक मार्गशीर्ष प्रारम्भ

बुधे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 20 नवम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	४	६	६	८	७	८	२	८
३	४	६	१७	३	२८	२२	१६	१६
१३	४५	१९	३०	५	२४	४८	२०	२०
१५	१७	५	५७	४	१६	२२	१६	१६
60 33	850 8	39 30	3 21	12 48	74 26	5 25	3 11	3 11
विशा ४	मघा २	चित्रा ४	स्वा ४	मूल १	ज्ये ४	पूषा ३	आर्द्रा ३	पूषा १
०	०	मा	व	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रात: 5:30

८ सू. शु. — ७ बु. मं. — ६ — ५ चं. — ४ — ३ रा. — २ — १ — १२ — ११ — १० — ९ के. श. गु.

भौमे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 26 नवम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	७	६	६	८	८	८	२	८
९	१	१०	१९	४	५	२३	१६	१६
१७	२	१६	३८	२२	५०	२१	१	१
३	४७	१९	१८	४२	४६	४६	१२	१२
60 44	843 35	39 37	49 41	13 7	74 23	5 47	3 11	3 11
अनु २	विशा ४	स्वा २	स्वा ४	मूल २	मूल २	पूषा ४	आर्द्रा ३	पूषा १
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रात: 5:30

८ सू. चं. — ७ बु. मं. — ६ — ५ — ४ — ३ रा. — २ — १ — १२ — ११ — १० — ९ श. शु. के. गु.

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षफल–

इस पक्ष में पंजाब, जम्मू, राज. आदि प्रदेशों में चन्द्रोदय-व्यापिनी चतुर्थी को **गणेश चतुर्थी व्रत** 15 नवंबर को होगा, जबकि शेष भारत में 16 नवंबर को (देखें पृष्ठ 23)। **अष्टमी तिथि (19 नवं.)** को शिव-मन्दिर में जाकर भगवान् शिव के प्रतीकात्मक एवं चमत्कारी स्वरूप महाकाल भैरव की पूजा, जप व संकीर्तन करने का विशेष माहात्म्य कहा गया है। **उत्पन्ना एकादशी** (22 व 23 नवं.) का विधिपूर्वक व्रत रखने से सर्वप्रकार के अभीष्टों की सिद्धि होती है। त्र्योदशी से अमावस्या तक जम्मू के निकट **मेला पुरमण्डल** मनाया जाता है। ***मार्गशीर्ष संक्रान्ति*–ता. 16 नवं., शनिवार** को रात्रि 12 बजकर 50 मिनट पर सिंह लग्न में प्रवेश करेगी। ४५ मुहूर्त्ति इस सं. का पुण्यकाल अगले दिन प्रात: 7/14 तक रहेगा। वारानुसार राक्षसी तथा नक्षत्रानुसार चर संज्ञक यह सं. नीच, दुष्ट, चोर तथा बेईमान लोगों के लिए लाभप्रद रहेगी। ***लोक-भविष्य*–शनिवारी संक्रान्ति** तथा ता. 21 नवं. से धनु राशि पर **चतुर्ग्रही योग** होने से राजनीतिक पार्टियों के मध्य विरोध व टकराव पैदा होंगे। सर्वप्रकार के अनाज, धान्य, चने, तिल, तैल आदि पदार्थ तेज भाव होंगे। पृथ्वी पर राजाओं के मध्य टकराव तथा लोगों में भी परस्पर विग्रह एवं विरोध अधिक रहे। क्लिष्ट रोगों का प्रसार बढ़े। ता. 26 नवं. को **भौमवती अमावस** होने से इस दिन श्रीगङ्गादि तीर्थ पर स्नान, जप, दान, देवपूजन एवं पितृतर्पण, ब्राह्मण भोजनादि करने से एक हजार गोदान का फल मिलता है। परन्तु राजनीतिक पक्ष से मंगलवारी अमावस का फल शुभ नहीं माना गया। **'राज्यभ्रंशो राजयुद्धं क्लेशानां च प्रवर्द्धनम्। उपघातोऽल्प वृष्टिश्च क्षयश्चार्थस्य भूमिजे।।'** अर्थात् देश में राजनीतिक पार्टियों के मध्य विग्रह एवं टकराव की स्थिति रहे, किसी प्रदेश में तख्ता (सत्ता-परिवर्तन), उपद्रव एवं हिंसक घटनाएँ घटित होंगी। कहीं अतिवृष्टि या अनावृष्टि एवं प्राकृतिक ...

वि. संवत २०७६, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष शाक: १९४१ तारीखें चंद्र राशि ... 12 दिसम्बर तक) हिजरी सन् 1441 भा.स्टैं.टा. जालन्धर

वि. संवत् २०७६, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष शाक: १९४१ | सन् 2019 ई. (ता. 27 नव. से 12 दिसम्बर तक) हिजरी सन् 1441 | भा.स्टें.टा. जालन्धर

सूर्य दक्षिणायन, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु:

प्रातः बुध पूर्वक्षितिज में, मंगल इससे नीचे होगा। सायं गुरु पश्चिमक्षितिज पर, इनसे ऊपर शुक्र व शनि होंगे।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घटी	पल	नक्षत्र	समाप्ति काल घटी	पल	योग	समाप्ति काल घटी	पल	करण	समाप्ति काल घटी	पल	मार्ग. शुक्ल	रवि. मं.	नवम्बर	मार्ग. प्र.	चन्द्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
२५.३०	१	बुध	२९	३५	अनु.	२	३८	सुक	२८	००	किं	१	३८	6	29	27	१२	वृश्चिक	मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष प्रारम्भ, नैपच्यून मार्गी 18घं.-06मिं., गंडमूल 8/12 बाद	७	१०	२१	५३	7	9	17	21
२५.२८	२	गुरु	२७	३	ज्ये.	१	००	धृति	२२	५३	कौ	२७	३	7	30	28	१३	ध. १/००	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, गण्डमूल विचार	७	११	२२	४१	7	10	17	21
२५.२५	३	शुक्र	२६	१३	मूल	०	५८	शूल	१९	५	ग	२६	१३	8	रवि	29	१४	धनु	भ. ५६/४४ से, रवि-उल्सानी (मु.) मास प्रारम्भ, गण्डमूल 7/34 तक	७	१२	२३	२९	7	11	17	21
२५.२४	४	शनि	२७	१५	पू.षा.	२	४३	गंड	१६	४५	वि	२७	१५	9	2	30	१५	म. १८/२५	भ. २७/१५ तक,	७	१३	२४	१६	7	11	17	21
२५.२३	५	रवि	३०	५	उ.षा.	६	१०	वृद्धि	१५	४५	बा	३०	५	10	3	दिसं	१६	मकर	शुक्र पू.षा. में ५८/१०, श्रीपञ्चमी, श्रीराम-विवाहोत्सव, नाग-पंचमी,**(A)**	७	१४	२५	८	7	12	17	21
२५.२०	६	चंद्र	३४	२८	श्रव.	११	१५	ध्रुव	१६	००	कौ	२	१७	11	4	2	१७	कुं. ४४/२०	**पंचक प्रारम्भ ४४/२०**, स्कन्द (गुह) षष्ठी, चम्पा षष्ठी	७	१५	२५	५९	7	13	17	21
२५.१८	७	मंग	४०	००	धनि.	१७	३८	व्या.	१७	१५	ग	७	१४	12	5	3	१८	कुम्भ	भ. ४०/०० से, सूर्य ज्येष्ठा में १२/५०, मित्र (विष्णु) सप्तमी	७	१६	२६	५२	7	14	17	21
२५.१५	८	बुध	४६	१३	शत.	२४	४५	हर्ष	१९	५	वि	१३	७	13	6	4	१९	कुम्भ	भं. १३/०७ तक, श्रीदुर्गाष्टमी	७	१७	२७	४५	7	15	17	21
२५.१४	९	गुरु	५२	३३	पू.भा.	३२	१०	वज्र	२१	१३	बा	१९	२३	14	7	5	२०	मी. १५/२०	**बुध वृश्चिक में ८/१०**, नन्दा नवमी	७	१८	२८	३७	7	15	17	21
२५.१३	१०	शुक्र	५८	१८	उ.भा.	३९	१३	सिद्धि	२३	५	तै	२५	२५	15	8	6	२१	मीन	गुरु मूल ३ में १५/०८, गण्डमूल 22/57 बाद	७	१९	२९	३३	7	16	17	21
२५.११	११	शनि	६०	००	रेव	४५	२८	व्य.	२४	२५	व	३०	३९	16	9	7	२२	मे. ४५/२८	भ. ३०/३९ से, **पंचक समाप्त ४५/२८**, बुध अनु. में ३२/५३	७	२०	३०	२९	7	17	17	21
२५.०८	११	रवि	३	००	अश्वि	५०	३०	वरी	२४	५३	वि	३	००	17	10	8	२३	मेष	भ. ३/०० तक, **मोक्षदा एकादशी व्रत, श्रीगीता-जयन्ती, गं.मू.**	७	२१	३१	२६	7	18	17	21
२५.०५	१२	चंद्र	६	२८	भर.	५४	१५	परि	२४	२०	बा	६	२८	18	11	9	२४	मेष	**सोम प्रदोष व्रत**, अखण्ड द्वादशी, अनङ्ग त्रयोदशी व्रत	७	२२	३२	२४	7	19	17	21
२५.०४	१३	मंग	८	३३	कृति.	५६	३५	शिव	२२	४५	तै	८	३३	19	12	10	२५	वृ. ९/५८	मंगल विशा. में ३६/४०, पिशाचमोचन श्राद्ध, शिव चतुर्दशी व्रत	७	२३	३३	२०	7	19	17	21
२५.०३	१४	बुध	९	८	रोहि	५७	३५	सिद्ध	२०	००	व	९	८	20	13	11	२६	वृष	भ. ९/०८ से ३८/४६ तक, **श्रीदत्तात्रेय जयन्ती**, श्रीसत्यनारायण व्रत, **(B)**	७	२४	३४	१९	7	20	17	21
२५.०२	१५	गुरु	८	२३	मृग.	५७	२३	साध्य	१६	१३	ब	८	२३	21	14	12	२७	मि. २७/३५	**मार्गशीर्ष पूर्णिमा**, शुक्र उ.षा. में ४४/३३, गुरु वार्धक्य प्रारम्भ **(C)**	७	२५	३५	२०	7	21	17	22

(A) दिसम्बर मास (2019 ई०) प्रारम्भ **(B)** त्रिपुरभैरव जयन्ती **(C)** 17/15 (घं.मिं.)

बुधे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 4 दिसम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१०	६	६	८	८	८	२	८
१७	१४	१५	२८	६	१५	२४	१५	१५
२३	१४	३३	२३	८	४५	९	३५	३५
२४	६	४४	१५	४४	३४	२४	४५	४५
60 52	712 19	39 46	79 42	13 25	74 17	6 10	3 10	3 10
ज्ये. ९	शत. ३	स्वा. ३	विशा. ३	मूल २	पूषा. १	पूषा. ४	आर्द्रा ३	पूषा. १
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5:30

श.९ शु. के.गु. | ७ बु. मं. | ८ सू. | १० | ६ | ११ चं. | ५ | १२ | २ | ४ | १ | ३ रा.

गुरौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 12 दिसम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१	६	७	८	८	८	२	८
२५	२२	२०	९	७	२५	२५	१५	१५
३०	५१	५२	३९	५६	३९	०	१०	१०
४३	३०	२४	९	५४	१६	०	१९	१९
60 58	801 32	39 56	88 38	13 38	74 7	6 30	3 10	3 10
ज्ये. ३	रोहि. ४	विशा. १	अनु. २	मूल ३	पूषा. ४	पूषा. ४	आर्द्रा ३	पूषा. १
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5:30

श.९ शु. के.गु. | ७ मं. | ८ सू. बु. | १० | ६ | ११ | ५ | १२ | २ चं. | ४ | १ | ३ रा.

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष की पंचमी को श्रीराम-विवाहोत्सव मनाया जाता है। इसी दिन **श्रीपंचमी** (1 दिसं.) को कमलासन पर विराजित एवं कमलपुष्प लिए श्रीलक्ष्मी की सुवर्णमयी या ताम्र अथवा चाँदी की मूर्ति को कलश पर स्थापित कर गणपति मातृका एवं पंचादि उपचारों से पूजन एवं श्रीसूक्त, लक्ष्मीसूक्त का पाठ, ब्राह्मण भोजन, दानादि करने से सौभाग्य एवं अचल लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। मार्ग. शुक्ल षष्ठी को कार्तिकेय जो तारकासुर को मारकर अभिषिक्त हुए थे। इसमें स्नानदान और व्रत करने से पुण्य होता है। ता. 8 दिसं. को **मोक्षदा एकादशी** का व्रत विधिपूर्वक रखने तथा भगवान् विष्णु की पूजा, यथाशक्ति दानादि करने से अनेक मानसिक व कायिक पापों की निवृत्ति तथा पुण्यों की प्राप्ति होती है। इसीदिन भगवान् श्रीकृष्ण ने अर्जुन को गीता का उपदेश दिया था। **ता. 11 दिसं.** को प्रदोष व्यापिनी मार्ग. पूर्णिमा को ब्रह्मा, विष्णु, महेश के अंशावतार **श्रीदत्तात्रेय** की बालरूप में पूजा की जाती है **(देखें पृष्ठ 23)**।

***लोक-भविष्य*–**चान्द्र मार्गशीर्ष मास में पाँच बुधवार और बृहस्पतिवार होने से मिश्रित प्रभाव रहेंगे। गेहूँ, धान्य, गुड़, उड़दादि सर्वप्रकार की दालें तीन महीने के भीतर बहुत तेज होंगी। लोगों के दुःखों व कष्टों में वृद्धि होगी। पश्चिमी व मुस्लिम देशों जैसे–ईराक, सूडान, इज़रायल–फिलीस्तीन आदि देशों में राजनीतिक व आतंकवादी टकराव तथा युद्ध जन्य हालात बनेंगे। ता. 21 नवं. से धनु राशि में चला आ रहा चतुर्ग्रही योग इस पक्ष में भी रहेगा। किसी राज्य में छत्रभंग की सम्भावना बने। ***आकाश लक्षण*–**इस पक्ष के उत्तरार्द्ध में शीत लहर चलने लगेगी। कहीं खण्ड वर्षा एवं ओलावृष्टि होने के संकेत हैं। ***शकुन*–**मार्ग. कृ. ११ रविवार होने से कपास, सूत, रुई वैशाख मास में लाभ देंगे।

वि. संवत् २०७६, पौष कृष्ण पक्ष शाकः १९४१

सन् 2019 ई. (ता. 13 दिसं. से 26 दिसम्बर तक) हिजरी सन् 1441 — भा.स्टैं.टा. जालन्धर

सूर्य दक्षिण–उत्तरायण, दक्षिण गोल, हेमन्त–शिशिर ऋतुः

प्रातः मंगल पूर्व में तथा बु. पूर्वक्षितिज पर होगा। जो ता. 17 से पूर्व में ही अस्त हो जाएगा। सायं पश्चिम में दृश्य गु. ता. 15 को अस्त हो जाएगा। शनि पश्चिम क्षितिज में तथा इससे काफी ऊपर शुक्र होगा।

गुरु अस्त 15 दिसंबर

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	पल	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	पल	योग	समाप्ति काल घं.	पल	करण	समाप्ति काल घं.	पल	मा. शु.	रवि. मुं.	दिसंबर	मा. प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
२५.०२	१	शुक्र	६	३०	आर्द्रा	५६	१५	शुभ	११	३५	कौ	६	३०	22	15	13	२८	मिथुन	पौष कृष्णपक्ष प्रारम्भ	७	२६	३६	१८	7	21	17	22
२५.०१	२	शनि	३	३३	पुन.	५४	१३	शुक्ल	६	८	ग	३	३३	23	16	14	२९	क. ३९/४८	भ. ३१/४३ से ५९/५३ तक,	७	२७	३७	२०	7	22	17	22
अवम्	३	शनि	५९	५३	००	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	**तृतीया तिथि का क्षय** ०० ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
२४.५९	४	रवि	५५	३०	पुष्य	५१	३५	ब्रह्म/ऐन्द्र	०/५३	३/३०	ब	२७	४२	24	17	15	३०	कर्क	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृ.13), **गुरु पश्चिम में अस्त 17/15(A)**	७	२८	३८	२३	7	23	17	22
२४.५९	५	चंद्र	५०	४३	आश्ले	४८	३०	वैधृ	४६	३५	कौ	२३	७	25	18	16	पौ.	सिं. ४८/३०	**सूर्य मूल १ धनु में २०/१०, पौष संक्रान्ति,** मु. १५, पुण्यकाल **(B)**	७	२९	३९	२४	7	23	17	23
२४.५८	६	मंग	४५	३५	मघा	४५	५	विष्क	३९	२३	ग	१८	९	26	19	17	२	सिंह	भ. ४५/३५ से, बुध पूर्व में अस्त ५४/४०, गण्डमूल 25/26 तक	८	०	४०	४८	7	24	17	23
२४.५७	७	बुध	४०	१५	पू.फा	४१	३०	प्रीति	३२	३	वि	१२	५५	27	20	18	३	कं. ५५/३५	भ. १२/५५ तक, **(B)** सं. प्रातः 9/03 बाद, बुध ज्येष्ठा में ३७/२३	८	१	४१	३४	7	25	17	24
२४.५६	८	गुरु	३४	५५	उ.फा.	३७	५३	आयु	२४	३८	बा	७	३५	28	21	19	४	कन्या	रूक्मिणी अष्टमी, अष्टका श्राद्ध	८	२	४२	३८	7	25	17	24
२४.५५	९	शुक्र	२९	३८	हस्त	३४	१८	सौभा	१७	१५	तै	२	१७	29	22	20	५	कन्या	भ. ५७/०७ से, गुरु मूल ४ में ५३/४८	८	३	४३	४५	7	26	17	24
२४.५४	१०	शनि	२४	३५	चित्रा	३०	५८	शोभ	१०	००	वि	२४	३५	30	23	21	६	तु. २/३५	भ. २४/३५ तक, श्रीपार्श्वनाथ जयन्ती (जैन)	८	४	४४	५१	7	26	17	24
२४.५५	११	रवि	१९	५०	स्वा.	२७	५८	अति सुक	३/५६	००/२५	बा	१९	५०	पौ	24	22	७	तुला	**सफला एकादशी व्रत,** सूर्य सायन मकर में ५/५८, सायन उत्तरायण**(C)**	८	५	४६	१	7	27	17	25
२४.५५	१२	चंद्र	१५	३८	विशा.	२५	३३	धृति	५०	२०	तै	१५	३८	2	25	23	८	वृ. ११/०५	**सोम प्रदोष व्रत,** शुक्र श्रवण में ३३/०५,	८	६	४७	८	7	27	17	25
२४.५६	१३	मंग	१२	८	अनु.	२३	४८	शूल	४४	५३	व	१२	८	3	26	24	९	वृश्चिक	भ. १२/०८ से ४०/५२ तक, मासशिवरात्रि व्रत	८	७	४८	१८	7	28	17	26
२४.५६	१४	बुध	९	३५	ज्ये.	२३	३	गंड	४०	१५	श.	९	३५	4	27	25	१०	ध. २३/०३	अमावस (पितृकार्येषु-11/18 बाद), **मंगल वृश्चिक में ३४/५८ (D)**	८	८	४९	२८	7	28	17	26
२४.५६	३०	गुरु	८	५	मूल	२३	२५	वृद्धि	३६	३३	ना	८	५	5	28	26	११	धनु	**पौष अमावस, कंकण सूर्यग्रहण** (भारत में दृश्य) (देखें पृ.27) **(E)**	८	९	५०	४०	7	29	17	27

(A) (घं.मिं.), **शुक्र मकर में २६/२५ (C)** शुरु, शिशिर ऋतु प्रारम्भ, शक पौष प्रारम्भ **(D) बुध मूल १ धनु में २०/४०, क्रिसमिस-डे** (क्रिश्चियन), ग्रहणवेध **(E)** शनि उ.षा. १ में ४७/०३

गुरौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 19 दिसम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	४	६	७	८	९	८	२	८
२	२९	२५	२०	९	४	२५	१४	१४
३७	५४	३२	८	३२	१७	४६	४८	४८
५१	५६	२३	४८	४७	३६	१६	४	४
61/5	851/10	40/5	91/19	13/46	73/57	6/44	3/11	3/11
मूल १	उ.फा. १	विशा. २	ज्ये. २	मूल ३	उ.षा. ३	पू.षा. ४	आर्द्रा ३	पू.षा. १
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	अ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5:30

९ सू. गु. श. के. | १० शु. | ११ | १२ | १ | २ | ३ रा. | ४ | ५ चं. | ६ | ७ मं. | ८ बु.

गुरौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 26 दिसम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	८	७	८	८	९	८	२	८
९	७	०	०	११	१२	२६	१४	१४
४५	६	१३	५३	९	५४	३४	२५	२५
४३	४३	२९	११	२२	४३	०	४९	४९
61/9	786/28	40/14	93/00	13/50	73/46	6/55	3/11	3/11
मूल ३	मूल ३	विशा. ४	मूल १	मूल ४	श्रव. १	पू.षा. ४	आर्द्रा ३	पू.षा. १
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	अ	अ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5:30

९ सू. चं. बु. गु. श. के. | १० शु. | ११ | १२ | १ | २ | ३ रा. | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ मं.

पौष कृष्ण पक्षफल–

पौष मास में गेहूँ, धान्यादि अनाज, कम्बलादि गर्मवस्त्र, ईंधन सामग्री, मौसमी फल, मिष्ठान्न दक्षिणा सहित दान करने का विशेष माहात्म्य होता है। पौष संक्रान्ति को अनाज से पूरित ताम्र-पात्र (कलश-गड़वा आदि) का गुड़ सहित दान करने से क्लिष्ट रोगों की शान्ति होती है। **ता. 19 दिसं., 'रुक्मिणी अष्टमी'** को कृष्ण, रूक्मिणी और प्रद्युम्न की मूर्त्तियों का गन्धयुक्त पूजनकर उत्तम पदार्थ अर्पण करें और सामर्थ्यानुसार सौभाग्यवती आठ स्त्रियों को भोजन करवाकर दक्षिणा दे तो रूक्मिणी जी की प्रसन्नता प्राप्त होती है। ***पौष संक्रान्ति***–16 दिसंबर, सोमवार को दोपहर 3 बजकर 27 मिंट (15/27) पर वृष लग्न में प्रवेश करेगी। १५ मुहूर्त्ति इस सं. का पुण्यकाल प्रातः 9/03 बाद शुरु होगा। वारानुसार, ध्वांक्षी तथा नक्षत्रानुसार तीक्ष्ण संज्ञक यह सं. व्यापारियों तथा दुष्टजनों के लिए लाभकारी सिद्ध होगी। ***सं. राशिफल***–वृष, कर्क, सिंह, कन्या, वृश्चिक, मकर, कुम्भ व मीन राशि वालों के लिए शुभफली रहेगी। ***ग्रह गोचर***–धनु राशि में ता. 16 दिसं. से **'चतुर्ग्रही योग'** तथा ता. 25 दिसं. से ता. 13 जन. तक **पंचग्रही योग (सू. बु. गु. श. के.)** रहने से विश्व एवं भारत की राजनीति में विशेष उथल-पुथल रहेगा। केन्द्रीय अथवा किसी राज्य के मन्त्रीमण्डल में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन होने के संकेत हैं। भारत की प्रभावराशि कन्या पर शनि की दृष्टि रहने से कुछ राज्यों में छत्रभंग (शासन-परिवर्तन), ओलावृष्टि एवं प्राकृतिक प्रकोपों से खड़ी अथवा तैयार फसलों विशेषकर ईख व धान्य की फसलों को नुकसान पहुँचे। विश्व में कुछ राष्ट्रों के मध्य युद्ध के बादल मण्डराएंगे। ***आकाश लक्षण***–इस पक्ष में बादल चाल के बावजूद वर्षा की कमी अनुभव होगी। **शकुन**–परन्तु पौष अमा. को मूल नक्षत्र होने से आगामी मास व पक्ष में वर्षा की सम्भावना बने–पौषमूलममावस्यां [illegible]

वि. संवत् २०७६, पौष शुक्ल पक्ष शाकः १९४१ तारीखें चंद्र राशि ... [illegible] दिसं. से 10 जन. तक) हिजरी सन् 1441 भा.स्टैं.टा. जालन्धर

वि. संवत् २०७६, **पौष शुक्ल पक्ष** शाके: १९४१														तारीख				चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल	सन् 2019-20 ई. (ता. 27 दिसं. से 10 जन. तक) हिजरी सन् 1441 सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतु:					भा.स्टैं.टा. जालन्धर			
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घटी	पल	नक्षत्र	समाप्ति काल घटी	पल	योग	समाप्ति काल घटी	पल	करण	समाप्ति काल घटी	पल	पौष शक	रबि. मु.	दिसम्बर	पौष प्रवि.		प्रातः मंगल पूर्व में दृश्य, ता. 10 जन. से गुरु भी प्रातः पूर्व–क्षितिज में होगा। ता. 27 दिसं. से शनि भी पश्चिम में अस्त होगा। सायं शुक्र को पश्चिम कपाल में देखें।	दे. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
२४.५७	१	शुक्र	७	५८	पू.षा.	२५	३	ध्रुव	३३	५५	ब	७	५८	6	29	27	१२	म. ४०/४०	पौष शुक्लपक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. ४५, **शनि पश्चिम में अस्त (A)**	८	१०	५१	४९	7	29	17	28
२४.५८	२	शनि	९	१३	उ.षा.	२८	५	व्या.	३२	२५	कौ	९	१३	7	जम	28	१३	मकर	जमादि-उल्लावल (मु.) मास प्रारम्भ, आरोग्य व्रत, ग्रहणवेध दिन	८	११	५२	५९	7	29	17	28
२४.५८	३	रवि	११	५५	श्रव	३२	३०	हर्ष	३१	५८	ग	११	५५	8	2	29	१४	मकर	भ. ४३/५९ से, सूर्य पू.षा. में २५/१३, ग्रहणवेध दिन, गौरी पूजन	८	१२	५४	१७	7	30	17	29
२४.५९	४	चंद्र	१६	३	धनि	३८	१३	वज्र	३२	३०	वि	१६	३	9	3	30	१५	कुं. ५/१३	भ. १६/०३ तक, **पंचक प्रारम्भ ५/१३**, मंगल अनु. में ३२/५३	८	१३	५५	२७	7	30	17	30
२५.००	५	मंग	२१	२०	शत.	४४	५५	सिद्धि	३३	५५	बा	२१	२०	10	4	31	१६	कुम्भ		८	१४	५६	३७	7	30	17	30
२५.०१	६	बुध	२७	२५	पू.भा.	५२	१३	व्य.	३५	५०	तै	२७	२५	11	5	जन.	१७	मी. ३५/२०	**जनवरी (सन् 2020 ई.) मास प्रारम्भ**	८	१५	५७	४७	7	30	17	31
२५.०२	७	गुरु	३३	४५	उ.भा.	५९	३३	वरी	३७	५३	ग	०	३५	12	6	2	१८	मीन	भ. ३३/४५ से, बुध पू.षा. में ५१/५८, मार्तण्ड-सप्तमी, श्रीगुरु गोबिन्द**(B)**	८	१६	५८	५९	7	31	17	32
२५.०४	८	शुक्र	३९	५०	रेव.	६०	००	परि	३९	४३	वि	६	४८	13	7	3	१९	मीन	भ. ६/४८ तक, शुक्र धनि. में २४/३८, श्रीदुर्गाष्टमी, महारूद्र व्रत	८	१७	०	१०	7	31	17	33
२५.०५	९	शनि	४५	५	रेव.	६	२५	शिव	४०	५८	बा	१२	२८	14	8	4	२०	मे. ६/२५	**पंचक समाप्त ६/२५**, गुरु पू.षा. १ में २२/००, गण्डमूल विचार	८	१९	१	१९	7	31	17	33
२५.०७	१०	रवि	४९	०	अश्वि	१२	२०	सिद्ध	४१	१३	तै	१७	३	15	9	5	२१	मेष	गण्डमूल 12/27 तक	८	२०	२	२९	7	31	17	34
२५.१०	११	चंद्र	५१	२०	भर.	१६	५०	साध्य	४०	१५	व	२०	१०	16	10	6	२२	वृ. ३२/४३	भ. २०/१० से ५१/२० तक, **पुत्रदा एकादशी व्रत**	८	२१	३	३७	7	31	17	35
२५.१२	१२	मंग	५१	५०	कृति	१९	४३	शुभ	३७	५८	ब	२१	३५	17	11	7	२३	वृष	सुजन्म द्वादशी — **गुरु उदय 10 जनवरी**	८	२२	४	४६	7	31	17	36
२५.१३	१३	बुध	५०	३३	रोहि	२०	४८	शुक्ल	३४	१५	कौ	२१	१२	18	12	8	२४	मि. ५०/४३	प्रदोष व्रत, **शुक्र कुम्भ में ५२/०५**	८	२३	५	५६	7	32	17	37
२५.१५	१४	गुरु	४७	३८	मृग	२०	१५	ब्रह्म	२९	१५	ग	१९	५	19	13	9	२५	मिथुन	भ. ४७/३८ से, ईशान व्रत	८	२४	७	४	7	32	17	38
२५.१६	१५	शुक्र	४३	१८	आर्द्रा	१८	१३	ऐन्द्र	२३	५	वि	१५	२८	20	14	10	२६	मिथुन	भ. १५/२८ तक, **पौष पूर्णिमा**, श्रीसत्यनारायण व्रत, माघस्नान प्रारम्भ**(C)**	८	२५	८	१२	7	32	17	38

(A) ५४/५८, ग्रहणवेध दिन **(B)** सिंह जयन्ती (प्राचीनमतेन) **(C)** गुरु पूर्व में उदय 7/32 (घं.मिं.), शाकम्भरी जयन्ती

शुक्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 3 जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	११	७	८	८	९	८	२	८
१७	१५	५	१३	१२	२२	२७	१४	१४
५५	४५	३५	२४	५९	४३	२९	०	०
२	४५	५५	४४	५८	४१	५२	२३	२३
61	716	40	95	13	73	7	3	3
9	29	24	17	49	26	2	11	11
पूषा २	उभा ४	अनु १	पूषा १	मूल ४	श्रव ४	उषा १	आर्द्रा ३	पूषा १
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5:30

९ सू. बु. गु. श. के. | १० शु. | ११ | १२ चं. | १ | २ | ३ रा. | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ मं.

शुक्रे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 10 जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	२	७	८	८	१०	८	२	८
२५	१४	१०	२४	१४	१	२८	१३	१३
३	३६	१९	३९	३६	१६	१९	३८	३८
२	३७	४	३१	२४	३३	२३	७	७
61	839	40	98	13	73	7	3	3
7	44	32	1	43	2	7	10	10
पूषा ४	आर्द्रा ३	अनु ३	पूषा ४	पूषा १	धनि ३	उषा १	आर्द्रा ३	पूषा १
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	अ	उ	अ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5:30

९ सू. बु. गु. श. के. | १० | ११ शु. | १२ | १ | २ | ३ चं. रा. | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ मं.

पौष शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष की द्वितीया को गायों के सींगों को धोकर लिए जल सहित स्नान करके श्वेत वस्त्र धारण कर बालेन्दु (द्वितीया) चन्द्रमा का गन्धादि से पूजन करके ब्राह्मणों को क्षीर सहित विविध भोजन करवाकर सन्तुष्ट करना चाहिए। इससे रोगों की निवृत्ति और आरोग्य की प्राप्ति होती है। **मार्तण्ड सप्तमी** (2 जन.) को भगवान् सूर्य का व्रत, पूजन, गोदान करने से आरोग्य व तेज की वृद्धि होती है। इसीदिन श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जयन्ती समस्त भारत में बड़ी श्रद्धा से मनाई जाती है। ता. 6 जन. को **पुत्रदा एकादशी** का विधिवत व्रत रखकर जप, हवन, ब्राह्मण भोजन एवं यथाशक्ति दान करने से दम्पत्ति को मनोवांछित पुत्र सन्तान की प्राप्ति होती है। **पौष पूर्णिमा (10 जन.)** से हरिद्वार, प्रयाग, कुरुक्षेत्र आदि तीर्थों पर (अथवा गृह में ही गंगाजल सहित) शुद्ध जल से स्नान, जप, ध्यान, दान, तर्पणादि का विशेष माहात्म्य होता है। ***ग्रह-गोचर***–इस पक्ष में धनु राशि पर **'पंचग्रही योग'** बना हुआ है। विश्व में सत्तारूढ़ राजाओं (नेताओं) को शत्रु राष्ट्रों से अनेक प्रकार के आक्रमणों, संकटों का सामना करना पड़ेगा। कहीं प्राकृतिक आपदाओं से लोगों को हानि होगी। **'चत्वारः पञ्चषा खेटा बलिनस्त्वेक राशिगाः। राज्ञां बहुभयं दद्युः अरिभिः दुखदा मताः।।'** ***लोक-भविष्य***–चान्द्र पौष मास में पाँच शुक्रवार होने से आगामी महीनों में सुभिक्ष अर्थात् अच्छी फसल होने के संकेत हैं। प्रजा में सुख-साधनों की तथा जनसंख्या में विशेष वृद्धि होने के योग हैं। समाज में स्त्रियों का प्रभाव बढ़ेगा। ता. 4 जन. को गुरु पू.षा. नक्षत्र में आने से लोग सुखी रहे तथा तीन महीने जल बरसे तथा एक मास नहीं बरसे। ता. 10 जन. को धनुराशिगत गुरु उदय होने से अल्प वर्षा के ही संकेत हैं।

वि. संवत् २०७६, **माघ कृष्ण पक्ष** शाक: १९४१															तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल	सन् 2020 ई. (ता. 11 जन. से 24 जनवरी तक) हिजरी सन् 1441 सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतु:	भा.स्टैं.टा. जालन्धर							
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घड़ी	पल	नक्षत्र	समाप्ति काल घड़ी	पल	योग	समाप्ति काल घड़ी	पल	करण	समाप्ति काल घड़ी	पल	पौष शक	जमादि मु.	जनवरी	पौष प्रवि.		प्रातः गुरु पूर्वक्षितिज में और इससे ऊपर मंगल होगा। सायं शुक्र पश्चिम कपाल में होगा। बुध व शनि अस्त हैं।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
२५.१८	१	शनि	३७	५३	पुन	१४	५५	वैधृ	१५	५५	बा	११	६	21	15	11	२७	क. ०/५०	माघ कृष्णपक्ष प्रारम्भ, सूर्य उ.षा. में ३०/०५, बुध उ.षा. में ८/३५ **(A)**	८	२६	९	१९	7	32	17	39
२५.२३	२	रवि	३१	४३	पुष्य	१०	४८	विष्क प्रीति	८ ५९	५ ४५	तै	४	४८	22	16	12	२८	कर्क	भ. ५८/२४ से, **स्वामी विवेकानन्द जयन्ती**, गण्डमूल 11/50 बाद	८	२७	१०	२५	7	31	17	40
२५.२५	३	चन्द्र	२५	५	आश्ले	६	००	आयु	५१	८	वि	२५	५	23	17	13	२९	सिं. ६/००	भ. २५/०५ तक, **श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी व्रत** (देखें पृ. 13), **(B)**	८	२८	११	३१	7	31	17	41
२५.२८	४	मंग	१८	१८	मघा पू.फा.	१ ५६	०० ५	सौभा	४२	३५	बा	१८	१८	24	18	14	मा	सिंह	**सूर्य मकर में ४६/३०, मकर (माघ) संक्रान्ति**, मु. ३०, पुण्यकाल**(C)**	८	२९	१२	३८	7	31	17	42
२५.३०	५	बुध	११	४०	उ.फा.	५१	३०	शोभ	३४	१३	तै	११	४०	25	19	15	२	कं. ९/५३	राहु आर्द्रा २, केतु मूल ४ में ३७/०३,	९	०	१३	४४	7	31	17	43
२५.३३	६	गुरु	५	२८	हस्त	४७	३०	अति	२६	१८	व	५	२८	26	20	16	३	कन्या	भ. ५/२८ से ३२/४१ तक, शीतला षष्ठी	९	१	१४	५१	7	31	17	44
अवम्	७	गुरु	५९	५३	००	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	**सप्तमी तिथि का क्षय** ०० ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
२५.३५	८	शुक्र	५५	८	चित्रा	४४	१५	सुक	१८	५८	बा	२७	३१	27	21	17	४	तु. १५/४५		९	२	१५	४७	7	31	17	45
२५.३६	९	शनि	५१	१५	स्वा.	४१	५३	धृति	१२	१५	तै	२३	१२	28	22	18	५	तुला	गुरु पू.षा. २ में ५८/४५	९	३	१७	३	7	31	17	45
२५.४०	१०	रवि	४८	२५	विशा	४०	२८	शूल	६	२०	व	१९	५०	29	23	19	६	वृ. २५/४५	भ. १९/५० से ४८/२५ तक, मंगल ज्येष्ठा में १७/३०, बुध श्रवण में ७/५८	९	४	१८	६	7	30	17	46
२५.४३	११	चन्द्र	४६	३०	अनु	४०	००	गंड वृद्धि	१ ५६	१० ४८	ब	१७	८	30	24	20	७	वृश्चिक	**षट्तिला एकादशी व्रत**, सूर्य सायन कुम्भ में ३२/१८, गण्डमूल	९	५	१९	१२	7	30	17	47
२५.४५	१२	मंग	४५	३८	ज्ये.	४०	३३	ध्रुव	५३	१३	कौ	१६	४	मा	25	21	८	ध. ४०/३३	**तिल द्वादशी**, शक माघ प्रारम्भ, गण्डमूल विचार	९	६	२०	१७	7	30	17	48
२५.५०	१३	बुध	४५	५०	मूल	४२	८	व्या.	५०	२८	ग	१५	४४	2	26	22	९	धनु	भ. ४५/५० से, **प्रदोष व्रत**, गण्डमूल 24/20 तक	९	७	२१	२०	7	29	17	49
२५.५३	१४	गुरु	४७	३	पू.षा.	४४	४०	हर्ष	४८	२८	वि	१६	२७	3	27	23	१०	धनु	भ. १६/२७ तक, मासशिवरात्रि व्रत	९	८	२२	२४	7	29	17	50
२५.५५	३०	शुक्र	४९	१८	उ.षा.	४८	१३	वज्र	४७	१८	च	१८	११	4	28	24	११	म. ०/२८	**माघ (मौनी) अमावस, स्नानदानादि, सूर्य श्रव. में ३५/५५, शनि (D)**	९	९	२३	२८	7	29	17	51

(A) यूरेनस मार्गी 7घं.-16मिं. **(B)**बुध मकर में १०/०८, लोहड़ी पर्व, गौरी-वकतुण्ड चतुर्थी **(C)** सं. अगले दिन प्रात: 8/31 तक, निरयण उत्तरायण प्रारम्भ, गण्डमूल 7/55 तक **(D)** उ.षा. २ मकर में ६/००

शुक्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 17 जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	५	७	९	८	१०	८	२	८
२	२५	१५	६	१६	९	२९	१३	१३
१०	६	३	१५	१२	४६	९	१५	१५
४९	१३	१७	९	२	२९	८	५२	५२
61 6	843 50	40 42	101 12	13 35	72 36	7 6	3 11	3 11
उषा २	चित्रा १	अनु ४	उषा ३	पूषा १	शत १	उषा १	आर्द्रा २	मूल ४
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रात: 5:30

११ शु. | श.९के. गु. | १० सू. बु. | ८ मं. | १२ | ९ | ७ | २ | ३ रा. | ४ | ५ | ६ चं.

शुक्रे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 24 जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	८	७	९	८	१०	८	२	८
९	२८	१९	१८	१७	१८	२९	१२	१२
१८	५१	४८	११	४६	१३	५८	५३	५३
२५	५१	३४	३८	२७	६	४३	३६	३६
61 4	753 40	40 50	103 26	13 21	72 4	7 2	3 10	3 10
उषा ४	उषा १	ज्ये. १	श्रव ३	पूषा २	शत ४	उषा १	आर्द्रा २	मूल ४
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	अ	उ	उ	अ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रात: 5:30

११ शु. | श.९ गु. चं.के. | १० सू. बु. | ८ मं. | १२ | ९ | ७ | २ | ३ रा. | ४ | ५ | ६

माघ कृष्ण पक्षफल—

इस पक्ष की चतुर्थी (13 जन.) को **श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी** के दिन प्रात: स्नानादि के बाद संकल्प मन्त्र '**गणपति प्रीतये संकष्ट चतुर्थी व्रतं करिष्ये।**' पढ़कर व्रत करके '**ॐ गं गणपतये नम:**' मन्त्र जाप व स्तोत्र पाठ करें। रात्रि को श्रीगणेश एवं चन्द्र की लड्डुओं सहित पूजा करके चन्द्रोदय पर '**ॐ सोम् सोमाय नम:**' द्वारा अर्घ्य देने से भगवान् गणेश जी की कृपा से अनेक मानसिक एवं कायिक कष्टों का निवारण हो जाता है। इसी दिन संक्रान्ति से पूर्व '**लोहड़ी पर्व**' अग्नि की पूजा के रूप में उत्तरी भारत में विशेषकर पं., हि.प्र., हरियाणा, दिल्ली, ज.का. आदि प्रदेशों में लकड़ियां, समिधा, रेवड़ियां, तिल सहित अग्नि प्रदीप्त करके बड़े उत्साह से मनाया जाता है। **ता. 14 जन., मंगलवार को मकर संक्रान्ति,** अर्द्धरात्रि कालीन 2 बजकर 07 मिनट पर पू.फा. नक्षत्रकालीन तुला लग्न में प्रविष्ट होगी। वारानुसार **महोदरी** तथा नक्षत्रानुसार उग्र संज्ञक यह सं. दुष्ट, चोरों तथा बेईमान लोगों के लिए लाभप्रद रहेगी। इस संक्रान्ति के स्नान, जप-पाठ, दानादि का **पुण्यकाल अगले दिन ता. 15 जन. के मध्याह्न तक रहेगा।** प्रात: स्नानादि के पश्चात् भगवान् विष्णु-पूजन, सूर्य-जप, पुरुषसूक्त, स्तोत्र-पाठ, तिल-घृतादि सहित होम, तिल सहित तर्पण, ब्राह्मण-भोजन एवं अनाज, वस्त्र, फल, गुड़, तिलादि के दान का विशेष महत्त्व होता है। इस दिन हरिद्वार, प्रयागराज, काशी, कुरुक्षेत्र आदि तीर्थों पर स्नान-दान, जपादि का भी विशेष माहात्म्य होता है। इस दिन से माघ माहात्म्य का पाठ आरम्भ करके माघ-मासान्त तक नित्यप्रति पाठ करने का विशेष माहात्म्य होता है। ता. 24 जन. को **माघ (मौनी) अमावस** होने से इसदिन तीर्थस्नान, वस्त्र, चावलादि अन्न-दान, फल, आंवला, तिल निर्मित रेवड़ियां, गच्चकादि मिष्ठान्न, पितृ-तर्पण, ब्राह्मण-भोजन दक्षिणा सहित देने का विशेष एवं अक्षय फल होगा। ***सं. राशिफल***—मेष, मिथुन, कर्क, सिंह, तुला, वृश्चिक तथा कुम्भ राशि वालों के लिए शुभ रहेगी। **आकाश लक्षण**—पक्ष के पूर्वार्द्ध में शीत लहरों के सहित कहीं [illegible] वर्षा होगी।

वि. संवत् २०७६, **माघ शुक्ल पक्ष** शाक: १९४१ तारीखें चंद्र राशि सन् 2020 ई. (ता. 25 जन. से 9 फरवरी तक) हिजरी सन् 1441 भा.स्टैं.टा.
सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतु: जालन्धर

वि. संवत् २०७६, माघ शुक्ल पक्ष शाके १९४१ तारीख (... 9 फरवरी तक) हिजरी सन् 1441 **सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतुः** — भा.स्टैं.टा. **जालन्धर**

प्रातः गुरु पूर्व में तथा इसके ऊपर मंगल होगा। ता. 30 जन. से शनि भी पूर्वक्षितिज में दृश्य होगा। सायं शुक्र को पश्चिम–कपाल में देखें।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घटी	समाप्ति काल पल	नक्षत्र	समाप्ति काल घटी	समाप्ति काल पल	योग	समाप्ति काल घटी	समाप्ति काल पल	करण	समाप्ति काल घटी	समाप्ति काल पल	माघ शक	जमादि	जनवरी	माघ प्र.	चन्द्र राशि प्रवेश घड़ी-पल	विवरण	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
२६.००	१	शनि	५२	४०	श्रव.	५२	५०	सिद्धि	४६	५८	किं	२०	५१	5	29	25	१२	मकर	माघ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, शुक्र पू.भा. में २४/०८, गुप्त नवरात्रे प्रारम्भ	९	१०	२४	२६	7	28	17	52
२६.०३	२	रवि	५७	००	धनि	५८	२३	व्य.	४७	२०	बा	२४	५०	6	30	26	१३	कुं. २५/२८	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, **पंचक प्रारम्भ २५/२८**, बुध धनि. में ५३/५८, **(A)**	९	११	२५	२८	7	28	17	53
२६.०८	३	चन्द्र	६०	००	शत.	६०	००	वरी	४८	३०	तै	२९	३९	7	जम	27	१४	कुम्भ	जमादि–उल्सानी (मु.) मास प्रारम्भ,	९	१२	२६	२६	7	27	17	54
२६.०९	३	मंग	२	१८	शत.	४	५०	परि.	५०	१३	ग	२	१८	8	2	28	१५	मी. ५५/०८	भ. ३५/१९ से, **गौरी तृतीया (गोंतरी) व्रत** (देखें पृष्ठ 23), **(B)**	९	१३	२७	२८	7	27	17	54
२६.१३	४	बुध	८	२०	पू.भा.	११	५८	शिव	५२	१८	वि	८	२०	9	3	29	१६	मीन	भ. ८/२० तक, **बुध पश्चिम में उदय** २६/१५	९	१४	२८	२२	7	26	17	55
२६.१५	५	गुरु	१४	४५	उ.भा.	१९	२५	सिद्ध	५४	२८	बा	१४	४५	10	4	30	१७	मीन	**वसन्त-पंचमी**, श्रीपञ्चमी, सरस्वती पूजन, **बुध कुम्भ में** ४८/३८, **(C)**	९	१५	२९	२०	7	26	17	56
२६.२०	६	शुक्र	२१	८	रेव.	२६	५३	साध्य	५६	२५	तै	२१	८	11	5	31	१८	मे. २६/५३	**पंचक समाप्त २६/५३**, गण्डमूल विचार	९	१६	३०	१५	7	25	17	57
२६.२३	७	शनि	२६	५५	अश्वि	३३	४३	शुभ	५७	४३	व	२६	५५	12	6	फर	१९	मेष	भ. २६/५५ से ५९/१८ तक, रथ–आरोग्य सप्तमी, पुत्र सप्तमी व्रत, **(D)**	९	१७	३१	११	7	25	17	58
२६.२८	८	रवि	३१	४०	भर.	३९	२८	शुक्ल	५८	३	ब	३१	४०	13	7	2	२०	वृ. ५५/४०	**भीष्माष्टमी, शुक्र मीन में ४७/१३**	९	१८	३२	३	7	24	17	59
२६.३३	९	चन्द्र	३४	५३	कृति.	४३	४३	ब्रह्म	५७	५	बा	३	१७	14	8	3	२१	वृष	बुध शत. में ५५/०५, गुरु पू.षा. ३ में ३/४८, गुप्त नवरात्रे समाप्त	९	१९	३२	५४	7	23	18	0
२६.३५	१०	मंग	३६	८	रोहि.	४६	५	ऐन्द्र	५४	५५	तै	५	३१	15	9	4	२२	वृष		९	२०	३३	४६	7	23	18	1
२६.४०	११	बुध	३५	२३	मृग.	४६	३३	वैधृ	५०	३३	व	५	४५	16	10	5	२३	मि. १६/३५	भ. ५/४५ से ३५/२३ तक, **जया एकादशी व्रत**, शुक्र उ.भा. में ३६/२५	९	२१	३४	३४	7	22	18	2
२६.४३	१२	गुरु	३२	३८	आर्द्रा	४५	००	विष्क	४४	५५	ब	४	१	17	11	6	२४	मिथुन	भीष्म–द्वादशी, **तिल द्वादशी**, सूर्य धनिष्ठा में ४४/००	९	२२	३५	२२	7	21	18	2
२६.४५	१३	शुक्र	२७	५८	पुन.	४१	४०	प्रीति	३७	५०	कौ	०	१८	18	12	7	२५	क. २७/३८	प्रदोष व्रत, **मंगल मूल १ धनु में ५१/१३**, मेला जैसलमेर (राज.) **(E)**	९	२३	३६	९	7	21	18	3
२६.५०	१४	शनि	२१	४५	पुष्य	३६	५३	आयु	२९	३५	व	२१	४५	19	13	8	२६	कर्क	भ. २१/४५ से ४८/०३ तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, गण्डमूल 22/05 से,	९	२४	३६	५३	7	20	18	4
२६.५५	१५	रवि	१४	२०	आश्ले	३१	००	सौभा	२०	२३	ब	१४	२०	20	14	9	२७	सिं. ३१/००	**माघ पूर्णिमा, माघ स्नान समाप्त, श्रीगुरु रविदास जयन्ती, (F)**	९	२५	३७	३६	7	19	18	5

(A) भारत गणतन्त्र दिवस (71वाँ), **बाबा श्रीलाल दयाल जयन्ती** (ध्यानपुर) पं. **(B) श्रीगणेश तिल चतुर्थी**, वरद् (कुन्द) चतुर्थी **(C) शनि पूर्व में उदय 17घं.-57मि.**, वागेश्वरी जयन्ती **(D)** अचला-भानु सप्तमी, श्रीमाधवाचार्य जयन्ती, फरवरी (सन् 2020 ई०) मास शुरु, गण्डमूल 20/54 तक **(E)** प्रारम्भ-3 दिन **(F)** श्रीललिता जयन्ती

रवौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 2 फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	०	७	१०	८	१०	९	२	८
१८	१७	२५	३	१९	२८	१	१२	१२
२७	४०	५६	२९	४५	५८	१	२४	२४
१९	२२	४०	३१	१२	२१	३३	५९	५९
60 53	734 31	40 59	96 36	12 58	71 11	6 53	3 10	3 10
श्रव 3	भर 2	ज्ये 3	धनि 4	पूषा 2	पूभा 3	उषा 2	आर्द्रा 2	मूल 4
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5:30

रवौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 9 फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	३	८	१०	८	११	९	२	८
२५	२१	०	१३	२१	७	१	१२	१२
३३	१२	४३	३६	१४	१४	४९	२	२
४	४८	५६	११	५२	७	१२	४४	४४
60 44	892 30	41 6	67 35	12 35	70 18	6 42	3 11	3 11
धनि 1	आश्ले 2	मूल 1	शत 3	पूषा 3	उभा 2	उषा 2	आर्द्रा 2	मूल 4
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5:30

माघ शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष में चतुर्थी युता तृतीया को **गौरी तृतीया** (28 जन.) के दिन उमा (पार्वती) का पूजन करके गुड़, अदरख, लवण, पालक और खीर–इनसे बलि देकर ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिए। **श्रीगणेश तिल चतुर्थी** (28 जन.) को श्रीगणेश जी का व्रत एवं पूजन तिल, फल व गुड़, लड्डुओं सहित करने का विधान है। **वसन्त-पंचमी** (30 जन.) को भगवान् श्रीविष्णु, सरस्वती व श्रीकृष्ण-राधा की पूजा पीले पुष्पों, गुलाल, अर्घ्य, धूप, दीप, नैवेद्य (भिगोकर छीली हुई हल्दी, गुड़-शक्कर और घी) आदि द्वारा करके फिर पीले एवं मीठे चावलों एवं पीले हलुवा का भोग लगाकर स्वयं सेवन करने की परम्परा है। **रथा-सप्तमी** (1 फर.) को भगवान् सूर्यनारायण ने मनवन्तर के आदि में इसी दिन जगत् को अपने प्रकाश से आलोकित किया था। विधि अनुसार व्रत रखने से पुत्र-सन्तति, आरोग्य, धनादि की प्राप्ति होती है। **जया-एकादशी** (5 फर.) का व्रत, पाठादि करने से पिशाचादि योनियों से छुटकारा मिलता है। **माघ पूर्णिमा (9 फर.)** को तीर्थजल से स्नान करके देव-पितृ तर्पण करने के बाद तिल, गुड़, अनाज, घी, फल, वस्त्रों आदि का दान करने से विशेष पुण्य प्राप्त होता है। ***लोक-भविष्य***–चान्द्र माघ मास में पाँच शनिवार तथा पाँच रविवार होने से दैनिक उपभोग्य वस्तुओं के मूल्यों में अत्यधिक तेजी तथा अनेक स्थलों पर प्रजा में क्लिष्ट/पेचीदा रोगों की उत्पत्ति होने से कष्टों व दुःखों में वृद्धि होगी। कहीं युद्धभय तथा कहीं छत्रभंग अर्थात् शासन-परिवर्तन भी होगा।–**शनिवारा यदा पंचजायन्ते रविपंचकम्। महार्घं जायते धान्यं रोगशोकाकुला पृथिवी।।** ***आकाश लक्षण***–उत्तर-पश्चिम भारत में शीत-प्रकोप, बर्फबारी और कहीं खण्ड वर्षा के योग हैं।

वि. संवत् २०७६, फाल्गुन कृष्ण पक्ष शाक: १९४१

सन् 2020 ई. (ता. 10 फर. से 23 फरवरी तक) हिजरी सन् 1441 — भा.स्टैं.टा. जालन्धर

सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर–वसन्त ऋतु:

प्रात: गुरु पूर्वकपाल में तथा उससे ऊपर मंगल तथा उससे ऊपर शनि दिखाई देगा। सायं शुक्र पश्चिम–कपाल में तथा बुध ता. 19 से पश्चिम क्षितिज में ही अस्त हो जाएगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	पल	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	पल	योग	समाप्ति काल घं.	पल	करण	समाप्ति काल घं.	पल	माघ शक	जमादि उ.	फरवरी	माघ प्रवि	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
२७.००	१	चन्द्र	६	८	मघा	२४	३०	शोभ	१०	३५	कौ	६	८	21	15	10	२८	सिंह	फाल्गुन कृष्णपक्ष प्रारम्भ, गण्डमूल 17/06 तक,	९	२६	३८	१७	7	18	18	6
००.००	२	चन्द्र	५७	३३	००	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	0	०	००	द्वितीया तिथि का क्षय ०० ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
२७.०५	३	मंग	४९	००	पू.फा.	१७	४५	अति सुक	० ५०	३० २८	व	२३	१७	22	16	11	२९	कं. ३१/०५	भ. २३/१७ से ४९/०० तक,	९	२७	३८	५८	7	17	18	7
२७.०८	४	बुध	४०	५८	उ.फा.	११	१३	धृति	४०	५०	ब	१४	५९	23	17	12	३०	कन्या	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (चन्द्रोदय हेतु देखें पृष्ठ 13-16)	९	२८	३९	३८	7	17	18	8
२७.१३	५	गुरु	३३	४८	हस्त	५	२३	शूल	३१	५५	कौ	७	२३	24	18	13	फा.	तु. ३२/४८	**सूर्य कुम्भ में १९/२८, फाल्गुन संक्रान्ति**, मु. ३०, पुण्यकाल **(A)**	९	२९	४०	१७	7	16	18	9
२७.१५	६	शुक्र	२७	४८	चित्रा स्वा.	० ५६	३३ ५५	गंड	२३	५८	ग	०	४८	25	19	14	२	तुला	भ. २७/४८ से ५५/२९ तक,	१०	०	४०	५३	7	15	18	9
२७.२०	७	शनि	२३	१०	विशा	५४	४८	वृद्धि	१७	८	ब	२३	१०	26	20	15	३	वृ. ४०/१३	श्रीनाथ-उत्सव	१०	१	४१	२९	7	14	18	10
२७.२५	८	रवि	२०	३	अनु.	५४	१३	ध्रुव	११	२८	कौ	२०	३	27	21	16	४	वृश्चिक	**बुध वक्री ५७/४८**, जानकी-व्रत, गण्डमूल 28/54 बाद	१०	२	४२	४	7	13	18	11
२७.३०	९	चन्द्र	१८	३०	ज्ये.	५५	५	व्या.	७	३	ग	१८	३०	28	22	17	५	ध. ५५/०५	भ. ४८/२८ से, शुक्र रेवती में २/०५, रामदास-नवमी, गण्डमूल	१०	३	४२	३७	7	12	18	12
२७.३५	१०	मंग	१८	२५	मूल	५७	१८	हर्ष	३	५०	वि	१८	२५	29	23	18	६	धनु	भ. १८/२५ तक, स्वामी दयानन्द सरस्वती जयन्ती, गण्डमूल 30/06 तक	१०	४	४३	९	7	11	18	13
२७.३८	११	बुध	१९	४३	पू.षा.	६०	००	वज्र	१	४०	बा	१९	४३	30	24	19	७	धनु	**विजया एकादशी व्रत**, सूर्य शत. में ५५/४८, गुरु पू.षा. ४ में ६/३०, **(B)**	१०	५	४३	४०	7	10	18	13
२७.४३	१२	गुरु	२२	८	पू.षा.	०	४८	सिद्धि	०	२५	तै	२२	८	फा.	25	20	८	म. १६/४८	**प्रदोष व्रत**, शक फाल्गुन प्रारम्भ	१०	६	४४	९	7	9	18	14
२७.४८	१३	शुक्र	२५	३५	उ.षा.	५	१३	व्य.	०	२	व	२५	३५	2	26	21	९	मकर	भ. २५/३५ से ५७/४३ तक, ***श्रीमहाशिवरात्रि व्रत***	१०	७	४४	३६	7	8	18	15
२७.५३	१४	शनि	२९	५०	श्रव.	१०	३०	वरी	०	१५	श	२९	५०	3	27	22	१०	कुं. ४३/२५	**पंचक प्रारम्भ ४३/२५**, शनि उ.षा. ३ में ५८/३५	१०	८	४५	२	7	7	18	16
२७.५८	३०	रवि	३४	५०	धनि.	१६	३३	परि	१	५	च	२	२०	4	28	23	११	कुम्भ	**फाल्गुन अमावस** (स्नानदान, तर्पणादि)	१०	९	४५	२७	7	6	18	17

(A) सं. प्रात: 8/39 बाद **(B)** वक्री बुध पश्चिम में अस्त २७/४०, सूर्य सायन मीन में ८/१३, वसन्त ऋतु प्रारम्भ

रवौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 16 फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	७	८	१०	८	११	९	२	८
२	३	५	१८	२२	१५	२	११	११
३७	३२	३२	३९	४१	२३	३५	४०	४०
४७	६	९	४५	४१	२२	२३	२८	२८
60	808	41	5	12	69	6	3	3
36	15	14	37	9	19	27	11	11
धनि	अनु	मूल	शत	पूषा	उभा	उषा	आर्द्रा	मूल
३	९	२	४	३	४	२	२	४
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रात: 5:30

१२ शु. | ११ सू. बु. | १० श. | ९ मं.गु.के. | १ | ८ चं. | २ | ३ रा. | ५ | ७ | ४ | ६

रवौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 23 फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१०	८	१०	८	११	९	२	८
९	२	१०	१५	२४	२३	३	११	११
४१	३२	२१	५२	५	२५	१९	१८	१८
३०	४	१६	३१	८	९	४४	१३	१३
60	723	41	56	11	68	6	3	3
27	10	22	18	37	9	10	11	11
शत	धनि	मूल	शत	पूभा	रेव	उषा	आर्द्रा	मूल
१	३	४	३	४	३	२	२	४
०	०	मा	व	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रात: 5:30

१२ शु. | ११ सू. चं. बु. | १० श. | ९ के. मं. शु. | १ | ८ | २ | ३ रा. | ५ | ७ | ४ | ६

फाल्गुन कृष्ण पक्षफल–

इस पक्ष की **श्रीगणेश चतुर्थी** (12 फर.) का व्रत रखकर सायंकाल पुन: स्नान करके लाल वस्त्र धारण कर गन्ध-पुष्पादि से गणेश जी का लड्डुओं सहित पूजन कर चन्द्रोदय होने पर मन्त्रपूर्वक अर्घ्य देकर नमस्कार करें, फिर भोग लगाकर स्वयं परिवार सहित भोजन करने से सुख-सौभाग्य एवं सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। 21 फर., शुक्रवार को **श्रीमहाशिवरात्रि** का सर्वकल्याणकर व्रत रखने से अश्वमेध यज्ञ तुल्य फल प्राप्त होता है। इस दिन काले तिलों सहित स्नानकर व्रत पालन कर रात्रि में भगवान् शिव-शंकर की विधिवत् पूजा करनी चाहिए। पूजन के समय शिव कथा, शिवसहस्रनाम तथा शिवस्तोत्रादि का पाठ करना चाहिए। दूसरे दिन ब्राह्मण को भोजन एवं दानादि के पश्चात् स्वयं भोजन करना चाहिए। ***फाल्गुन संक्रान्ति***–ता. 13 फर., गुरुवार, दोपहर 3 बजकर 3 मिनट पर (15/03) मिथुन लग्न में प्रवेश करेगी। 30 मुहूर्त्ति इस सं. का स्नानदानादि पुण्यकाल प्रात: 8/39 बाद शुरु होगा। नन्दा नामक यह सं. ब्राह्मणों के लिए लाभप्रदायक व सुखकारक रहेगी। ***सं. राशिफल***–मेष, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, धनु, कुम्भ, मीन राशि वालों के लिए लाभप्रद रहेगी। ***लोक-भविष्य***–चान्द्र फाल्गुन मास में पाँच सोमवारों के फलस्वरूप देश में गेहूँ, मक्की आदि शीतकालीन फसलें अच्छी होने के संकेत हैं। कृषि उत्पादन में वृद्धि तथा सुख-साधनों में वृद्धि होगी, परन्तु अधिकांश उपभोग्य वस्तुओं का लाभ विशेष वर्ग को ही प्राप्त होगा। गोचरस्थ मंगल-गुरु केतु युक्त होने से देश की राजनीतिक परिस्थितियों में अस्थिरता रहेगी। ***आकाश लक्षण***–पक्ष के पूर्वार्द्ध भाग में भारत के उत्तर-पश्चिमी भागों तथा पहाड़ी क्षेत्रों में बादल चाल एवं खण्ड वृष्टि पड़ने के योग हैं। ***शकुन***–फाल्गुन कृ. ५ को [illegible]

वि. संवत् २०७६, फाल्गुन शुक्ल पक्ष शाक: १९४१ तारीखें चंद्र राशि सन् 2020 ई. (ता. 24 फर. से 9 मार्च तक) हिजरी सन् 1441 भा.स्टैं.टा. सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, वसन्त ऋतु: जालन्धर

वि. संवत् २०७६, **फाल्गुन शुक्ल पक्ष** शाके: १९४१														तारीख				चन्द्र राशि प्रवेश घड़ी-पल
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	प.	योग	समाप्ति काल घ.	प.	करण	समाप्ति काल घ.	प.	फाल्गु. रा.	जमा. मु.	फरवरी	फाल्गु. प्र.	
२८.००	१	चन्द्र	४०	२५	शत	२३	१०	शिव	२	२५	किं	७	३८	5	29	24	१२	कुम्भ
२८.०५	२	मंग	४६	३०	पू.भा.	३०	१५	सिद्ध	४	१३	बा	१३	२८	6	30	25	१३	मी. १३/२८
२८.१०	३	बुध	५२	५३	उ.भा.	३७	४३	साध्य	६	१५	तै	१९	४२	7	रज्ज	26	१४	मीन
२८.१५	४	गुरु	५९	१८	रेव.	४५	१५	शुभ	८	३०	व	२६	६	8	2	27	१५	मे. ४५/१५
२८.१८	५	शुक्र	६०	००	अश्वि	५२	३५	शुक्ल	१०	४५	ब	३२	२३	9	3	28	१६	मेष
२८.२५	५	शनि	५	२८	भर.	५७	३०	ब्रह्म	१२	४३	बा	५	२८	10	4	29	१७	मेष
२८.३०	६	रवि	१०	४५	कृति	६०	००	ऐन्द्र	१४	३	तै	१०	४५	11	5	मा	१८	वृ. १५/५०
२८.३५	७	चन्द्र	१४	५०	कृति	४	५५	वैधृ	१४	२८	व	१४	५०	12	6	2	१९	वृष
२८.३८	८	मंग	१७	१८	रोहि	९	००	विष्क	१३	३५	ब	१७	१८	13	7	3	२०	मि. ४०/१८
२८.४३	९	बुध	१७	४३	मृग	११	१०	प्रीति	११	१५	कौ	१७	४३	14	8	4	२१	मिथुन
२८.४८	१०	गुरु	१६	३	आर्द्रा	११	२०	आयु	७	१५	ग	१६	३	15	9	5	२२	क. ५५/०३
२८.५३	११	शुक्र	१२	१५	पुन	९	२३	सौभा शोभ	१ ५४	३३ १५	वि	१२	१५	16	10	6	२३	कर्क
२८.५५	१२	शनि	६	३५	पुष्य	५	३५	अति	५०	३८	बा	६	३५	17	11	7	२४	कर्क
अवम्	१३	शनि	५९	१३	००	०	०	०			०	०		०	०	०		००
२९.०३	१४	रवि	५०	३५	आश्ले मघा	० ५३	५ २०	सुक	३५	५३	ग	२४	५४	17	12	8	२५	सिं. ०/०५
२९.०८	१५	चन्द्र	४१	१३	पू.फा.	४५	५०	धृति	२५	२०	वि	१५	५४	18	13	9	२६	कं. ५८/५३

से 9 मार्च तक) हिजरी सन् 1441

सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, वसन्त ऋतु:

भा.स्टें.टा. **जालन्धर**

तिथि	प्रातः मंगल–गुरु पूर्वकपाल में तथा शनि इनसे नीचे पूर्व में ही होगा। सायं शुक्र पश्चिम कपाल में, 3 मार्च से बुध प्रातः पूर्वक्षितिज से दृश्य होगा।	दे. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
१	फाल्गुन शुक्लपक्ष प्रारम्भ	१०	१०	४५	५१	7	5	18	17
२	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, श्रीरामकृष्ण परमहंस जयन्ती, फूलेरा-दूज (मथुरा) **(A)**	१०	११	४६	१३	7	4	18	18
३	रज्जब (मुस्लि.) मास प्रारम्भ, गण्डमूल 22/08 बाद	१०	१२	४६	३३	7	3	18	19
४	भ. २६/०६ से ५९/१८ तक, **पंचक समाप्त ४५/१५,** मंगल पू.षा. में १५/१८	१०	१३	४६	५२	7	2	18	20
५	याज्ञवल्क्य जयन्ती, **शुक्र** अश्वि. १ **मेष में ४६/१८,** गंडमूल 28/03 तक	१०	१४	४७	४	7	1	18	20
५		१०	१५	४७	२०	6	59	18	21
६	**मार्च** (सन् 2020 ई०) मास प्रारम्भ	१०	१६	४७	३३	6	58	18	22
७	भ. १४/५० से ४६/०४ तक,	१०	१७	४७	४३	6	57	18	23
८	**होलाष्टक प्रारम्भ,** अन्नपूर्णा-अष्टमी, वक्री बुध धनि. ४ में १६/०३, **(B)**	१०	१८	४७	५२	6	56	18	23
९	सूर्य पू.भा. में ११/५८	१०	१९	४७	५८	6	55	18	24
१०	भ. ४४/०९ से,	१०	२०	४८	३	6	54	18	25
११	भ. १२/१५ तक, **आमलकी एकादशी व्रत, गोविन्द द्वादशी**	१०	२१	४८	५	6	53	18	26
१२	**शनि प्रदोष व्रत,** गुरु उ.षा. १ में ५८/१३	१०	२२	४८	२	6	51	18	26
१३	**त्रयोदशी तिथि का क्षय** ०० ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
१४	भ. ५०/३५ से, महेश्वर व्रत, वृषदान व्रत	१०	२३	४८	०	6	50	18	27
१५	भ. १५/५४ तक, **फाल्गुन पूर्णिमा, होलिका दहन** (प्रदोषकाले), **(C)**	१०	२४	४७	५७	6	49	18	28

(A) उ.प्र., प्लूटो मकर में 11घं.–33मिं. **(B) वक्री बुध पूर्व में उदय** ०/०३, लक्ष्मी-सीताष्टमी **(C) होलाष्टक समाप्त,** श्रीसत्यनारायण व्रत, लक्ष्मीनारायण व्रत, श्रीचैतन्य महाप्रभु जयन्ती

भौमे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 3 मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१	८	१०	८	०	९	२	८
१८	२०	१६	६	२५	३	४	१०	१०
४४	४१	३३	५४	४६	३१	१३	४९	४९
२०	२४	५८	२६	३५	१२	२४	३६	३६
60 9	766 53	41 28	44 11	10 49	66 14	5 42	3 11	3 11
शत ४	रोहि ४	पूषा १	शत १	पूषा ४	अश्वि २	उषा ३	आर्द्रा २	मूल ४
०	०	मा	व	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5:30

१२ ; ११ सू. बु. ; १० श. ; ९ के. मं. गु. ; १ शु. ; २ चं. ; ८ ; ३ रा. ; ५ ; ७ ; ४ ; ६

चन्द्रे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 9 मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	४	८	१०	८	०	९	२	८
२४	१४	२०	४	२६	१०	४	१०	१०
४४	१०	४२	८	५०	४	४६	३०	३०
४२	४७	५९	५३	२	४८	४५	३१	३१
59 56	916 1	41 33	4 11	10 14	64 39	5 20	3 11	3 11
पूभा २	पूफा १	पूषा ३	धनि ४	उषा १	अश्वि ४	उषा ३	आर्द्रा २	मूल ४
०	०	मा	व	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5:30

१२ ; ११ सू. बु. ; १० श. ; ९ मं.गु. के. ; १ शु. ; २ ; ८ ; ३ रा. ; ५ चं. ; ७ ; ४ ; ६

फाल्गुन शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष में ता. **3 मार्च से 9 मार्च** तक **'होलाष्टक'** रहेंगे। इन दिनों परम्परानुसार पंजाब, हिमाचल, हरियाणादि कुछ प्रदेशों में शुभ मंगल कार्यों का आरम्भ वर्जित माना गया है, जबकि अन्य प्रदेशों में विशेष विचार नहीं किया जाता। **आमलकी एकादशी (6 मार्च)** के दिन आँवले के वृक्ष के नीचे बैठकर भगवान् विष्णु की भक्ति करनी चाहिए तथा आँवले की टहनी को कलश में स्थापन करके पूजन करना चाहिए। पूजनोपरान्त इस दिन आँवलों सहित भोजन का दान एवं सेवन करना उत्तमोत्तम होता है। इससे पापों का क्षय तथा सौभाग्य की वृद्धि होती है। **ता. 9 मार्च** को पूर्णिमा के प्रदोषकाल में होलिका-दहन करने का शास्त्र-विधान है। ता. 9 मार्च, फाल्गुन पूर्णिमा (उदय व्या.), सोमवार को पंजाब, जम्मू, हि.प्र. आदि कुछ राज्यों में होलिका-दहन से पूर्व ही उदय व्या. पूर्णिमा में होली पर्व मनाया जाएगा, जबकि शेष भारत विशेषकर उ.प्र., मथुरा, वृन्दावन, हरियाणादि प्रदेशों में ता. 9 मार्च को **होलिका-दहन** परम्पराया करने के बाद अगले दिन ता. **10 मार्च, मंगलवार** को **'होली पर्व'** बड़ी श्रद्धा एवं उत्साह से मनाया जाएगा। ता. 9 मार्च को फाल्गुन पूर्णिमा के दिन पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र होने से सुपूजित शय्या विद्वान् ब्राह्मण को दान करने से आज्ञाकारिणी व सुन्दर स्त्री/पति की प्राप्ति होती है। ***गोचर-विचार***–पक्ष में कालसर्प योग का प्रभाव, मंगल-गुरु का मेल तथा 28 फर. से शुक्र मेष राशि में आकर गुरु के साथ दृष्टि सम्बन्ध भी बनाएगा। जिससे देश के प्रधान नेता के लिए अशुभ फल घटित होंगे। देश में कहीं उपद्रव एवं हिंसा तथा प्राकृतिक प्रकोप होंगे। राजनीतिक क्षेत्र में भी उथल-पुथल, असमंजस तथा छत्रभंग (परिवर्तन) की स्थिति बने–**दैत्यगुरु यदा मेषे सर्वधान्य महर्घता। महिषी पशुपीडा च मेघवर्षा भविष्यति।।** ***आकाश लक्षण***–ता. 28 फर. के बाद शीघ्र ही तेज़ आँधियों के साथ खण्ड वर्षा होगी।

वि. संवत् २०७६, चैत्र कृष्ण पक्ष शाकः १९४१-४२

सन् 2020 ई. (ता. 10 मार्च से 24 मार्च तक) हिजरी सन् 1441
सूर्य उत्तरायण, दक्षिण-उत्तर गोल, वसन्त ऋतुः

भा. स्टैं. टा. — जालन्धर

प्रातः मंगल-गुरु पास-पास पूर्वकपाल में तथा शनि इनसे नीचे पूर्व में होगा। बुध पूर्वक्षितिज में होगा। सायं शुक्र पश्चिम कपाल में दृश्य होगा।

दिनमान घटी-पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घटी	पल	नक्षत्र	समाप्ति काल घटी	पल	योग	समाप्ति काल घटी	पल	करण	समाप्ति काल घटी	पल	तारीखें फाल्गुन रा.	रज्जब	मार्च	फाल्गुन प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दे. रा.	सू. अ.	स्प. क.	स्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.
२९.१०	१	मंग	३१	३०	उ.फा.	३८	५	शूल	१४	२५	बा	६	२२	20	14	10	२७	कन्या	चैत्र कृष्णपक्ष प्रारम्भ, बुध मार्गी ६/१०, वसन्तोत्सव, **होली पर्व, (A)**	१०	२५	४७	५०	6	48	18	28
२९.१५	२	बुध	२१	५८	हस्त	३०	३३	गंड वृद्धि	३ ५२	३३ ५८	ग	२१	५८	21	15	11	२८	तु. ५७/००	भ. ४७/३३ से, **सन्त तुकाराम जयन्ती**, शुक्र भरणी में ५८/४५	१०	२६	४७	४२	6	47	18	29
२९.२०	३	गुरु	१३	८	चित्रा	२३	४८	ध्रुव	४३	१८	वि	१३	८	22	16	12	२९	तुला	भ. १३/०८ तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 13-16)	१०	२७	४७	३०	6	46	18	30
२९.२८	४	शुक्र	५	१८	स्वा.	१८	१०	व्या.	३४	३८	बा	५	१८	23	17	13	३०	वृ. ५९/५३	**श्रीरंग-पंचमी**, मेला नवचण्डी (मेरठ) प्रा., मेला गुरु रामराय (देहरादून)	१०	२८	४७	१९	6	44	18	31
अवम्	५	शुक्र	५८	५३	००	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	**पंचमी तिथि का क्षय** ०० ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
२९.३०	६	शनि	५४	१८	विशा	१४	३	हर्ष	२७	१५	ग	२६	३६	24	18	14	चै.	वृश्चिक	भ. ५४/१८ से, **सूर्य मीन में** १२/५५, **चैत्र संक्रान्ति**, मु. ४५, **(B)**	१०	२९	४७	५	6	43	18	31
२९.३५	७	रवि	५१	३५	अनु	११	४३	वज्र	२१	२५	वि	२२	५७	25	19	15	२	वृश्चिक	भ. २२/५७ तक, शीतला सप्तमी	११	०	४६	५१	6	42	18	32
२९.४३	८	चन्द्र	५०	५०	ज्ये.	११	२०	सिद्धि	१७	८	बा	२१	१३	26	20	16	३	ध. ११/२०	**शीतलाष्टमी व्रत**	११	१	४६	३२	6	40	18	33
२९.४५	९	मंग	५१	५३	मूल	१२	४८	व्य.	१४	२०	तै	२१	२२	27	21	17	४	धनु	सूर्य उ.भा. में ३३/५३, मंगल उ.षा. में ३२/०३, बुध शत. में ३६/१८	११	२	४६	१४	6	39	18	33
२९.५०	१०	बुध	५४	३३	पू.षा.	१५	५८	वरी	१२	५३	व	२३	१३	28	22	18	५	म. ३१/५८	भ. २३/१३ से ५४/३३ तक, राहु आर्द्रा १ केतु मूल ३ में ३३/०३	११	३	४५	५३	6	38	18	34
२९.५५	११	गुरु	५८	२८	उ.षा.	२०	३३	परि.	१२	३३	ब	२६	३१	29	23	19	६	मकर	**पापमोचनी एकादशी व्रत** (स्मार्त)	११	४	४५	३१	6	37	18	35
३०.००	१२	शुक्र	६०	००	श्रव.	२६	१५	शिव	१३	१३	कौ	३०	५६	30	24	20	७	कुं. ५९/२३	**पापमोचनी एकादशी व्रत (वैष्णव), पंचक प्रारम्भ ५९/२३ (C)**	११	५	४५	५	6	35	18	35
३०.०५	१२	शनि	३	२५	धनि.	३२	४५	सिद्ध	१४	३०	तै	३	२५	चै.	25	21	८	कुम्भ	शनि प्रदोष व्रत, शक चैत्र एवं संवत् 1942 शुरु, महावारुणी योग 19/40 से,	११	६	४४	४०	6	34	18	36
३०.१०	१३	रवि	८	५८	शत	३९	४५	साध्य	१६	१३	व	८	५८	2	26	22	९	कुम्भ	भ. ८/५८ से ४१/५८ तक, **वारुणी योग** 10/08 तक, **मंगल (D)**	११	७	४४	१३	6	33	18	37
३०.१३	१४	चन्द्र	१४	५८	पू.भा.	४७	२३	शुभ	१८	१८	श	१४	५८	3	27	23	१०	मी. ३०/१३	**मेला पृथूदक-पिहोवातीर्थ (हरि.)-द्वितीय दिन**	११	८	४३	४४	6	32	18	37
३०.२०	३०	मंग	२१	१०	उ.भा.	५४	३३	शुक्ल	२०	३३	ना	२१	१०	4	28	24	११	मीन	**चैत्र अमावस, भौमवती अमावस,** शुक्र कृति. में ५७/२३ **(E)**	११	९	४२	३१	6	30	18	38

(A) होला मेला (श्रीआनन्दपुर व पांओटा साहिब), ध्वजारोहण, धुलण्डी, होलिका विभूति धारण, धूलिवन्दन, आम्रकुसुम प्राशन **(B)** पुण्यकाल सं. सारा दिन, एकनाथ षष्ठी **(C)** सूर्य सायन मेष में ६/५३, उत्तर गोल प्रारम्भ, **महाविषुव दिन (D) मकर में २०/१५,** मासशिवरात्रि व्रत, **मेला पृथूदक-पिहोवातीर्थ (हरियाणा)-2 दिन (E)** विक्रमी संवत् २०७६ पूर्ण

चन्द्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 16 मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	७	८	१०	८	०	९	२	८
१	२६	२५	५	२७	१७	५	१०	१०
४३	५०	३४	४१	५९	३१	२२	८	८
४०	५१	८	३७	२२	४	५१	१६	१६
59 44	787 24	41 38	33 39	9 27	62 29	4 54	3 11	3 11
पूभा ४	ज्ये ४	पूषा ४	धनि ४	उषा १	भर २	उषा ३	आर्द्रा २	मूल ४
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5:30

१ शु. | १२ सू. | ११ बु. | १० श. | ९ मं. गु. के. | ८ चं. | ७ | ६ | ५ | ४ | ३ रा. | २

भौमे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 24 मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	११	९	१०	८	०	९	२	८
९	५	१	११	२९	२५	६	९	९
४०	२३	७	५५	११	४०	०	४२	४२
४४	२१	२९	२२	४०	४२	२	५०	५०
59 29	712 00	41 42	60 59	8 29	59 25	4 19	3 11	3 11
उभा २	उभा १	उषा २	शत २	उषा १	भर ४	उषा ३	आर्द्रा १	मूल ३
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5:30

१ शु. | १२ सू. चं. | ११ बु. | १० मं. श. | ९ गु. के. | ८ | ७ | ६ | ५ | ४ | ३ रा. | २

चैत्र कृष्ण पक्षफल–

प्रतिपदा (10 मार्च) को होला मेला, धुलैण्डी व वसन्तोत्सव पंजाब, हरि., हि.प्र. आदि अनेक प्रदेशों में मनाया जाता है। उ.प्र. विशेषकर मथुरा-वृन्दावन में '**होली पर्व**' बड़े श्रद्धाभाव व उत्साह से मनाया जाएगा। ता. 21 मार्च को सायं 19घं.-40मिं. से त्रयोदशी, शनिवार तथा शतभिषा नक्षत्र का योग होने से '**महावारुणी योग**' बना है। इसदिन तथा 22 मार्च को वारुणी योग 10घं.-18मिं. तक होने से तीर्थादि स्थल पर स्नान, दानादि का विशेष महत्त्व होता है। इसका माहात्म्य **ग्रहण-तुल्य** माना गया है। ता. 22 मार्च को अपराह्ण व्यापिनी चतुर्दशी होने से पिहोवा-तीर्थ (कुरुक्षेत्र) पर मेला पृथूदक इसी दिन से बड़ा श्राद्धपूर्वक प्रारम्भ हो जाएगा जोकि अगले दिन ता. 23 को भी रहेगा। ***चैत्र संक्रान्ति***–14 मार्च, शनिवार को दोपहर 11 बजकर 53 मिनट पर मिथुन लग्न में प्रवेश करेगी। ४५ मुहूर्त्ति इस सं. का पुण्यकाल सारा दिन रहेगा। राक्षसी नामक यह सं. दुष्ट, नीच व निंद्य कर्म करने वालों के लिए लाभकारी रहेगी। ***सं. राशिफल***–यह संक्रान्ति मेष, कर्क, सिंह, कन्या, तुला कुम्भ व मीन राशि वालों के लिए शुभ, शेष राशि वालों के लिए संघर्षमयी समय रहेगा। ***लोक-भविष्य***–सं. शनिवार के दिन होने से सभी प्रकार के अनाज, धान्यादि महंगे होंगे। लोगों में शोक, असन्तोष एवं विचित्र प्रकार के रोगों की बहुलता होगी। लोगों में तनाव व विग्रह की प्रवृत्ति बढ़े। राजनीतिक पार्टियों में भी परस्पर विरोध एवं टकराव अधिक बढ़े। **आकाश लक्षण**–पक्ष के उत्तरार्द्ध भाग में देश के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में तेज हवाओं के साथ बौछारें पड़ने के योग हैं।

वि. संवत् 2075-76, **अप्रैल** महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2019 ई.

वि. संवत् 2075-76, अप्रैल महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2019 ई.

मास पक्ष	अप्रैल	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	करण	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश घण्टा-मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] (सूर्योत्तरायण / वसन्त-ग्रीष्म ऋतुः)	ता.	जम्मू सूर्योदय घं. मि.	जम्मू सूर्यास्त घं. मि.	दिल्ली सूर्योदय घं. मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मि.	मुम्बई सूर्योदय घं. मि.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मि.
चैत्र कृष्ण (सं.2075)	1	१२	चन्द्र	–	–	धनि.	21	54	साध्य	20	17	कौ	19	22	कुं. 8/21	पापमोचनी एकादशी व्रत (वैष्णव), पंचक प्रा. 8/21, अप्रैल मास प्रा.	1	6/24	18/45	6/16	18/35	6/16	18/37	6/36	18/49
	2	१२	मंग	8	39	शत.	24	49	शुभ	21	10	तै	8	39	कुम्भ	भौम प्रदोष व्रत, वारुणी योग 8/39 से 24/49 तक, वारुणी पर्व	2	6/23	45	6/15	35	6/15	38	6/35	49
	3	१३	बुध	10	57	पू.भा.	27	25	शुक्ल	21	48	व	10	57	मी. 20/46	भ. 10/57 से 23/54 तक, मासशिवरात्रि व्रत, मेला पिहोवातीर्थ (A)	3	6/21	46	6/13	36	6/14	38	6/34	49
	4	१४	गुरु	12	51	उ.भा.	29	36	ब्रह्म	22	7	श	12	51	मीन	मेला पृथूदक-पिहोवातीर्थ (हरियाणा)	4	6/19	47	6/12	37	6/12	39	6/34	49
	5	३०	शुक्र	14	21	रेव.	–	–	ऐन्द्र	22	7	ना	14	21	मीन	चैत्र अमावस (देवपितृकार्येपु), वि. संवत् 2075 पूर्ण, गण्डमूल 05/36 से	5	6/18	48	6/11	38	6/11	40	6/33	49
चैत्र शुक्ल पक्ष (वि. संवत् 2076)	6	१	शनि	15	24	रेव.	7	22	वैधृ	21	47	ब	15	24	मे. 7/22	'परिधावी' नाम वि. संवत् 2076 प्रा., चैत्र (वासन्त) नवरात्रे शुरु, (B)	6	6/17	50	6/10	38	6/10	40	6/32	49
	7	२	रवि	16	2	अश्वि	8	44	विष्क	21	8	कौ	16	2	मेष	शुक्र पू.भा. में 18/26, शब्वान (मुस्लि.) मास प्रारम्भ	7	6/16	50	6/09	38	6/09	41	6/31	49
	8	३	चंद्र	16	16	भर.	9	43	प्रीति	20	10	ग	16	16	वृ. 15/54	भ. 28/12 से, गणगौरी तृतीया, श्रीमत्स्य जयन्ती	8	6/14	51	6/08	39	6/08	42	6/30	50
	9	४	मंग	16	7	कृति.	10	19	आयु	18	56	वि	16	7	वृष	भ. 16/07 तक, दमनक चतुर्थी	9	6/13	52	6/07	39	6/06	42	6/30	50
	10	५	बुध	15	36	रोहि.	10	33	सौभा	17	23	बा	15	36	मि.22/32	श्री (लक्ष्मी) पंचमी, नाग-पंचमी, गुरु वक्री 22/27	10	6/12	52	6/06	40	6/05	43	6/29	50
	11	६	गुरु	14	42	मृग.	10	25	शोभ	15	32	तै	14	42	मिथुन	स्कन्द षष्ठी व्रत, बुध मीन में 28/21,	11	6/11	53	6/05	41	6/04	44	6/29	51
	12	७	शुक्र	13	24	आर्द्रा	9	54	अति	13	22	व	13	24	क.27/15	भ. 13/24 से 24/33 तक,	12	6/09	54	6/04	41	6/03	45	6/28	51
	13	८	शनि	11	42	पुन	8	59	सुक	10	53	ब	11	42	कर्क	श्रीदुर्गाष्टमी, भवान्युत्पत्ति, अशोकाष्टमी, श्रीरामनवमी (देखें पृ.17) (C)	13	6/08	55	6/02	42	6/02	45	6/27	51
	14	९	रवि	9	36	पुष्य आश्ले	7 29	40 59	धृति शूल	8 28	5 59	कौ	9	36	सिं.29/59	श्रीदुर्गा-नवमी, नवरात्रे-समाप्त, सूर्य अश्वि (1) मेष में 14/08 (D)	14	6/07	55	6/01	42	6/01	46	6/26	51
	15	१०	चंद्र	7	8	मघा	28	1	गंड	25	38	ग	7	8	सिंह	भ. 17/46 से 28/23 तक, कामदा एकादशी व्रत (स्मार्त), (E)	15	6/06	56	6/00	43	5/59	46	6/25	52
	०	११	चन्द्र	28	23	००	00	00	००	०	०	०	०	०	००	एकादशी तिथि का क्षय ०० ०० ००	०	००	००	००	००	००	००	००	००
	16	१२	मंग	25	26	पू.फा.	25	51	वृद्धि	22	7	ब	14	55	सिंह	कामदा एकादशी व्रत (वैष्णव), लक्ष्मीकान्त दोलोत्सव,	16	6/04	57	5/59	43	5/58	47	6/24	52
	17	१३	बुध	22	24	उ.फा.	23	36	ध्रुव	18	31	कौ	11	55	कं. 7/17	प्रदोष व्रत, अनङ्ग त्रयोदशी, श्रीमहावीर जयन्ती (जैन), श्रीविष्णु दमनोत्सव	17	6/03	57	5/58	44	5/57	47	6/23	52
	18	१४	गुरु	19	27	हस्त	21	25	व्या.	14	57	ग	8	56	कन्या	भ. 19/27 से 30/05 तक, शुक्र उ.भा. में 19/12. श्रीशिव दमनोत्सव, (F)	18	6/02	58	5/57	44	5/56	48	6/23	53
	19	१५	शुक्र	16	42	चित्रा	19	30	हर्ष	11	32	वि	6	5	तु. 8/25	चैत्री पूर्णिमा (स्नानदानादि), श्रीहनुमान जयन्ती (दक्षिण-भारत), (G)	19	6/01	59	5/56	45	5/55	49	6/22	53
वैशाख कृष्ण पक्ष	20	१	शनि	14	21	स्वा	17	58	वज्र सिद्धि	8 29	25 42	कौ	14	21	तुला	वैशाख कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, सूर्य सायन वृष में 14/26, ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ	20	6/00	19/00	5/55	46	5/54	49	6/21	53
	21	२	रवि	12	33	विशा	17	1	व्य.	27	31	ग	12	33	वृ. 11/11	भ. 23/59 से, शक वैशाख प्रारम्भ, अगस्त्य-अस्त	21	5/59	19/00	5/54	46	5/53	50	6/21	53
	22	३	चन्द्र	11	25	अनु.	16	45	वरी	25	55	वि	11	25	वृश्चिक	भ. 11/25 तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (देखें पृ.13), वक्री गुरु ज्ये. (4) (H)	22	5/58	01	5/53	47	5/52	51	6/20	54
	23	४	मंग	11	4	ज्ये.	17	16	परि	24	59	बा	11	4	ध. 17/16	सती अनुसूया जयन्ती, गण्डमूल विचार	23	5/56	02	5/52	47	5/51	52	6/19	54
	24	५	बुध	11	32	मूल	18	35	शिव	24	39	तै	11	32	धनु	प्लूटो वक्री 24/10, गण्डमूल 18/35 तक	24	5/55	03	5/51	48	5/50	52	6/19	54
	25	६	गुरु	12	47	पू.षा.	20	37	सिद्ध	24	53	व	12	47	म. 27/14	भ. 12/47 से 25/44 तक, बुध रेवती में 10/32	25	5/54	03	5/50	49	5/49	53	6/18	54
	26	७	शुक्र	14	40	उ.षा.	23	14	साध्य	25	34	ब	14	40	मकर	मंगल मृग. में 25/02	26	5/53	04	5/49	49	5/48	54	6/17	55
	27	८	शनि	17	1	श्रव.	26	12	शुभ	26	30	कौ	17	1	मकर		27	5/52	05	5/48	50	5/47	54	6/17	55
	28	९	रवि	19	34	धनि.	29	18	शुक्ल	27	32	तै	6	18	कुं.15/45	पंचक प्रारम्भ 15/45, सूर्य भरणी में 6/02	28	5/51	05	5/47	50	5/46	55	6/16	56
	29	१०	चन्द्र	22	4	शत	–	–	ब्रह्म	28	28	व	8	49	कुम्भ	भ. 8/49 से 22/04 तक, शुक्र रेवती में 19/22,	29	5/50	06	5/47	51	5/45	55	6/16	56
	30	११	मंग	24	18	शत	8	15	ऐन्द्र	29	9	ब	11	11	मी.28/15	वरूथिनी एकादशी व्रत, शनि वक्री 6/20, श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती	30	5/49	19/07	5/46	18/52	5/44	18/56	6/15	18/56

'परिधावी' नाम संवत्सर

(A) (हरियाणा)-2 दिन (B) पंचक समाप्त 7/22, घटस्थापन (अभिजित मुहूर्त में) (देखें पृ. 17), मंगल रोहि. (1) में 17/21, संवत्सरफल श्रवण, ध्वजारोहण, तैलाभ्यङ्ग, श्रीदुर्गा-पूजा, चन्द्रदर्शन, मु. 30, (C) मेला बाहूफोर्ट (जम्मू)-कांगड़ादेवी, नैनादेवी (हि.प्र.) (D) वैशाख संक्रान्ति, मु. 15, पुण्यकाल सं. प्रात: 7/44 बाद, वैशाखी पर्व (पंजाब), मेला मनसादेवी (पंचकूला) हरियाणा (E) बुध उ.भा. में 7/28, शुक्र मीन में 25/02 (F) श्रीसत्यनारायण व्रत (G) वैशाखस्नान प्रारम्भ, गुड फ्राइडे (क्रिश्चियन) (H) वृश्चिक में 25/02

वि. संवत् 2076, मई महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2019 ई.

मास पक्ष	मई	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	करण	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश — सूर्योत्तरायण — घण्टा–मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] — ग्रीष्म ऋतुः	ता. मई	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
वैशाख कृष्ण	1	१२	बुध	26:5	पू.भा.	10:52	वैधृ.	29:30	कौ	13:12	मीन	मई मास प्रारम्भ, श्रम दिवस	1	5/48	19/08	5/45	18/52	5/43	18/57	6/15	18/56
	2	१३	गुरु	27:21	उ.भा.	13:2	विष्क	29:26	ग	14:43	मीन	भ. 27/21 से, **प्रदोष व्रत**, गण्डमूल 13/02 बाद	2	5/47	08	5/44	53	5/42	58	6/14	56
	3	१४	शुक्र	28:4	रेव.	14:40	प्रीति	28:57	वि	15:43	मे.14/40	भ. 15/43 तक, **पंचक समाप्त** 14/40, बुध अश्वि. (1) **मेष में 16/59(A)**	3	5/46	09	5/43	53	5/41	58	6/14	57
	4	३०	शनि	28:16	अश्वि.	15:47	आयु	28:4	च	16:10	मेष	**वैशाख अमावस, शनैश्चरी अमावस, मेला पिंजौर** (हरियाणा), गं.मू.	4	5/45	10	5/42	54	5/40	59	6/13	57
वैशाख शुक्ल पक्ष	5	१	रवि	27:59	भर.	16:24	सौभा	26:48	किं	16:8	वृ.22/30	वैशाख शुक्ल पक्ष प्रारम्भ	5	5/44	11	5/42	55	5/40	18/59	6/13	58
	6	२	चन्द्र	27:18	कृति.	16:37	शोभ	25:13	बा	15:39	वृष	चन्द्रदर्शन, मु. 45, श्रीशिवाजी-जयन्ती	6	5/43	11	5/41	55	5/39	19/00	6/12	58
	7	३	मंग	26:17	रोहि.	16:27	अति	23:22	तै	14:48	मि.28/15	**अक्षय-तृतीया, भगवान् परशुराम जयन्ती, मंगल मिथुन में 6/53 (B)**	7	5/42	12	5/40	56	5/38	01	6/12	58
	8	४	बुध	24:59	मृग	16:0	सुक	21:17	व	13:38	मिथुन	भ. 13/38 से 24/59 तक, स.सि.यो.	8	5/42	13	5/39	56	5/37	01	6/12	59
	9	५	गुरु	23:27	आर्द्रा	15:17	धृति	19:0	ब	12:13	मिथुन	**आद्यगुरु श्रीशंकराचार्य जयन्ती**, राहु पुन. 2 केतु पू.षा. 4 में 7/38,**(C)**	9	5/41	14	5/39	57	5/36	02	6/11	59
	10	६	शुक्र	21:42	पुन.	14:21	शूल	16:33	कौ	10:35	क. 8/36	श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती, बुध भर. में 22/07, **शुक्र** अश्वि.(1) मेष में 19/05	10	5/40	14	5/38	58	5/36	03	6/11	18/59
	11	७	शनि	19:45	पुष्य	13:13	गंड	13:55	ग	8:44	कर्क	भ. 19/45 से, **श्रीगङ्गा-जयन्ती**, सूर्य कृति. में 24/07, गण्डमूल 11/55 बाद	11	5/39	15	5/37	58	5/35	03	6/10	19/01
	12	८	रवि	17:37	आश्ले	11:55	वृद्धि	11:10	वि	6:41	सिं.11/55	भ. 6/41 तक, **श्रीदुर्गाष्टमी, श्रीबगुलामुखी जयन्ती**	12	5/38	16	5/37	18/59	5/34	04	6/10	01
	13	९	चन्द्र	15:21	मघा	10:27	ध्रुव व्या.	8:16 29:17	कौ	15:21	सिंह	**जानकी (सीता) नवमी**, गण्डमूल 10/27 तक,	13	5/38	16	5/36	19/00	5/34	05	6/09	01
	14	१०	मंग	13:0	पू.फा.	8:53	हर्ष	26:16	ग	13:0	कं.14/29	भ. 23/48 से,	14	5/37	17	5/35	19/00	5/33	05	6/09	02
	15	११	बुध	10:36	उ.फा.	7:16	वज्र	23:15	वि	10:36	कन्या	भ. 10/36 तक, **मोहिनी एकादशी व्रत, सूर्य वृष में 11/00, (D)**	15	5/36	18	5/35	01	5/32	06	6/09	02
	16	१२	गुरु	8:16	हस्त चित्रा	5:42 28:16	सिद्धि	20:20	बा	8:16	तु.16/57	प्रदोष व्रत,	16	5/35	19	5/34	01	5/32	07	6/09	02
	17	१३	शुक्र	6:5	स्वा.	27:7	व्य.	17:37	तै	6:15	तुला	भ. 28/11 से, **श्रीनृसिंह-जयन्ती**, मंगल आर्द्रा में 13/58, बुध कृति. में 10/17	17	5/35	19	5/33	02	5/31	07	6/09	03
	०	१४	शुक्र	28:11	००	00:00	००	०:०	०	०:०	००	चतुर्दशी तिथि का क्षय ०० ०० ००	०	००	००	००	००	००	००	००	००
	18	१५	शनि	26:41	विशा	26:22	वरी	15:10	वि	15:26	वृ. 20/30	भ. 15/26 तक, **वैशाख पूर्णिमा, श्रीबुद्ध-जयन्ती, श्रीबुद्ध-पूर्णिमा (E)**	18	5/34	20	5/33	03	5/30	08	6/08	03
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	19	१	रवि	25:43	अनु.	26:7	परि.	13:6	बा	14:12	वृश्चिक	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, गण्डमूल 26/07 बाद	19	5/33	21	5/32	03	5/30	08	6/08	03
	20	२	चन्द्र	25:22	ज्ये.	26:29	शिव	11:29	तै	13:33	ध. 26/29	श्रीनारद-जयन्ती, वीणादान, गण्डमूल विचार	20	5/33	21	5/32	04	5/29	09	6/07	04
	21	३	मंग	25:41	मूल	27:31	सिद्ध	10:23	व	13:32	धनु	भ. 13/32 से 25/41 तक, शुक्र भर. में 18/32, सूर्य सायन मिथुन में 13/29	21	5/32	22	5/31	04	5/29	10	6/07	04
	22	४	बुध	26:41	पू.षा.	29:13	साध्य	9:50	ब	14:11	धनु	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 13-16), शक ज्येष्ठ प्रारम्भ	22	5/32	23	5/31	05	5/28	11	6/07	04
	23	५	गुरु	28:19	उ.षा.	–:–	शुभ	9:48	कौ	15:30	म. 11/44	बुध रोहिणी में 13/29	23	5/31	23	5/31	05	5/28	11	6/06	05
	24	६	शुक्र	–:–	उ.षा.	7:31	शुक्ल	10:14	ग	17:23	मकर		24	5/31	24	5/30	06	5/27	12	6/06	05
	25	६	शनि	6:26	श्रव.	10:15	ब्रह्म	11:0	व	6:26	कुं.23/43	भ. 6/26 से 19/38 तक, **पंचक प्रारम्भ 23/43**, सूर्य रोहिणी में 20/25	25	5/30	25	5/30	07	5/27	12	6/06	05
	26	७	रवि	8:50	धनि.	13:14	ऐन्द्र	11:58	ब	8:50	कुम्भ		26	5/30	25	5/29	07	5/26	13	6/06	06
	27	८	चन्द्र	11:16	शत.	16:13	वैधृ	12:56	कौ	11:16	कुम्भ		27	5/29	26	5/29	08	5/26	13	6/06	06
	28	९	मंग	13:31	पू.भा.	18:58	विष्क	13:45	ग	13:31	मी.12/19	भद्रा 26/26 से,	28	5/29	27	5/29	08	5/26	14	6/05	07
	29	१०	बुध	15:21	उ.भा.	21:18	प्रीति	14:15	वि	15:21	मीन	भ. 15/21 तक, बुध मृग. में 17/54, गण्डमूल 21/18 बाद	29	5/29	27	5/28	08	5/25	15	6/05	07
	30	११	गुरु	16:38	रेव.	23:3	आयु	14:20	बा	16:38	मे.23/03	**पंचक समाप्त 23/03, अपरा एकादशी व्रत**, भद्रकाली एकादशी (कपूरथला) पं.	30	5/28	28	5/28	09	5/25	15	6/05	08
	31	१२	शुक्र	17:17	अश्वि	24:12	सौभा	13:54	तै	17:17	मेष	**प्रदोष** व्रत, वक्री गुरु ज्ये. (3) में 23/52, गण्डमूल 24/12 तक	31	5/28	19/28	5/28	19/10	5/25	19/16	6/05	19/08

(A) मासशिवरात्रि व्रत **(B)** केदार-बदरीनाथ यात्रा प्रारम्भ, श्रीटैगोर-जयन्ती, रमज़ान (मुस्लि.) मास प्रारम्भ **(C)** बुध पूर्व में अस्त 29/17 **(D)** ज्येष्ठ संक्रान्ति, मु. 30, पुण्यकाल सं. सूर्योदय बाद सारा दिन **(E)** वैशाख स्नान समाप्त, श्रीछिन्नमस्तिका जयन्ती, श्रीसत्यनारायण व्रत, बुध वृष में 23/34, श्रीकूर्म जयन्ती

वि. संवत् 2076, जून महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2019 ई.

समाप्ति | समाप्ति | समाप्ति | समाप्ति | चंद्र-राशि | भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश | जम्मू | दिल्ली | चण्डीगढ़ | मुम्बई

मास पक्ष	ता.	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	करण	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश (सूर्य उत्तर-दक्षिणायन) घण्टा–मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] (ग्रीष्म-वर्षा ऋतुः)	ता.	जम्मू सूर्योदय घं. मि.	जम्मू सूर्यास्त घं. मि.	दिल्ली सूर्योदय घं. मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मि.	मुम्बई सूर्योदय घं. मि.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मि.
ज्ये. कृष्ण	1	१३	शनि	17:17	भर.	24:43	शोभ	12:59	व	17:17	मेष	भ. 17/17 से 28/59 तक, बुध मिथुन में 24/19, शुक्र कृति. में 17/37 **(A)**	1	5/28	19/29	5/28	19/10	5/25	19/16	6/05	19/08
	2	१४	रवि	16:40	कृति.	24:39	अति	11:34	श	16:40	वृ. 6/44	सावित्री चौदश	2	5/27	30	5/28	10	5/24	16	6/05	09
	3	३०	चन्द्र	15:32	रोहि.	24:5	सुक	9:43	ना	15:32	वृष	**ज्येष्ठ (सोमवती) अमावस**, भावुका अमावस, **शनैश्चर जयन्ती (B)**	3	5/27	30	5/27	11	5/24	17	6/05	09
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	4	१	मंग	13:58	मृग.	23:9	धृति / शूल	7:29 / 28:58	ब	13:58	मि.11/39	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, **शुक्र वृष में** 11/20, चन्द्रदर्शन, मु. 30, **(C)**	4	5/27	31	5/27	11	5/24	17	6/05	09
	5	२	बुध	12:4	आर्द्रा	21:54	गंड	26:14	कौ	12:4	मिथुन	**रम्भा तृतीया व्रत** (देखें पृ. 17), बुध आर्द्रा में 11/51, शव्वाल (मु.)मास प्रा.	5	5/27	31	5/27	12	5/24	18	6/05	10
	6	३	गुरु	9:55	पुन.	20:29	वृद्धि	23:22	ग	9:55	क.14/51	भ. 20/47 से, महाराणा प्रताप जयन्ती, उमा अवतार	6	5/26	32	5/27	12	5/24	18	6/05	10
	7	४	शुक्र	7:38	पुष्य	18:56	ध्रुव	20:24	वि	7:38	कर्क	भ. 7/38 तक, मंगल पुन. में 7/39, गण्डमूल 18/56 बाद	7	5/26	32	5/27	13	5/23	19	6/05	10
	०	५	शुक्र	29:17	००	00:00	००	०:०	०	०:०	००	**पंचमी तिथि का क्षय** ०० ०० ००	०	००	००	००	००	००	००	००	००
	8	६	शनि	26:55	आश्ले	17:22	व्या.	17:25	कौ	16:6	सिं.17/22	सूर्य मृगशिर में 18/12, अरण्य-षष्ठी, विन्ध्यवासिनी पूजा, गण्डमूल	8	5/26	33	5/27	13	5/23	19	6/05	11
	9	७	रवि	24:37	मघा	15:49	हर्ष	14:27	ग	13:46	सिंह	भ. 24/37 से, गण्डमूल 15/49 तक	9	5/26	33	5/27	14	5/23	20	6/05	11
	10	८	चन्द्र	22:24	पू.फा.	14:21	वज्र	11:34	वि	11:31	कं.20/00	भ. 11/31 तक, **श्रीदुर्गाष्टमी**, धूमावती जयन्ती, मेला क्षीर-भवानी (कश्मीर)	10	5/26	34	5/27	14	5/23	20	6/05	11
	11	९	मंग	20:20	उ.फा.	13:1	सिद्धि	8:46	बा	9:22	कन्या		11	5/26	34	5/27	14	5/23	21	6/05	11
	12	१०	बुध	18:27	हस्त	11:51	व्य. / वरी	6:6 / 27:38	तै	7:24	तु.23/21	**श्रीगङ्गा-दशहरा पर्व (हरिद्वार)**, शुक्र रोहिणी में 16/19	12	5/26	35	5/27	15	5/23	21	6/05	12
	13	११	गुरु	16:50	चित्रा	10:55	परि	25:22	वि	16:50	तुला	भ. 5/39 से 16/50 तक, **निर्जला एकादशी व्रत**, बुध पुन. में 11/26	13	5/26	35	5/27	15	5/23	21	6/05	12
	14	१२	शुक्र	15:30	स्वा.	10:16	शिव	23:23	बा	15:30	वृ.28/01	**प्रदोष व्रत**, वटसावित्री व्रतारम्भ	14	5/26	35	5/27	16	5/23	22	6/05	12
	15	१३	शनि	14:33	विशा	9:59	सिद्ध	21:42	तै	14:33	वृश्चिक	**सूर्य मिथुन में** 17/37, **आषाढ़ संक्रान्ति**, मु. 30, पुण्यकाल सं. प्रातः 11/11 बाद	15	5/26	36	5/27	16	5/23	22	6/05	12
	16	१४	रवि	14:2	अनु.	10:7	साध्य	20:24	व	14:2	वृश्चिक	भ. 14/02 से 26/02 तक, **वटसावित्री व्रत** (देखें पृ.17), श्रीसत्यनारायण व्रत	16	5/26	36	5/27	16	5/23	22	6/05	13
	17	१५	चन्द्र	14:1	ज्ये.	10:43	शुभ	19:29	ब	14:1	ध.10/43	**ज्येष्ठ पूर्णिमा, सन्त कबीर जयन्ती** (621वाँ), गण्डमूल, ज्येष्ठी योग	17	5/26	36	5/27	17	5/24	23	6/06	13
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	18	१	मंग	14:31	मूल	11:50	शुक्ल	19:0	कौ	14:31	धनु	**आषाढ़ कृष्णपक्ष प्रारम्भ, गण्डमूल 11/50 तक**	18	5/26	37	5/27	17	5/24	23	6/06	13
	19	२	बुध	15:34	पू.षा.	13:30	ब्रह्म	18:57	ग	15:34	म.19/59	भ. 28/22 से, ऋषभनाथ जयन्ती (जैन)	19	5/27	37	5/28	17	5/24	23	6/06	13
	20	३	गुरु	17:9	उ.षा.	15:39	ऐन्द्र	19:17	वि	17:9	मकर	भ. 17/09 तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 13), **बुध कर्क में 26/29**	20	5/27	37	5/28	17	5/24	24	6/06	14
	21	४	शुक्र	19:9	श्रव.	18:14	वैधृ	19:57	ब	6:9	मकर	सूर्य सायन कर्क में 21/24, सायन दक्षिणायन प्रारम्भ, **वर्षा ऋतु शुरु(D)**	21	5/27	38	5/28	18	5/24	24	6/06	14
	22	५	शनि	21:27	धनि.	21:8	विष्क	20:51	कौ	8:18	कुं. 7/39	**पंचक प्रारम्भ** 7/39, सूर्य आर्द्रा में 17/18, **मंगल कर्क में 23/21, (E)**	22	5/27	38	5/28	18	5/24	24	6/07	14
	23	६	रवि	23:53	शत.	24:8	प्रीति	21:50	ग	10:40	कुम्भ	भ. 23/53 से, शुक्र मृगशिर में 14/37,	23	5/27	38	5/28	18	5/25	24	6/07	14
	24	७	चन्द्र	26:13	पू.भा.	27:2	आयु	22:46	वि	13:3	मी.20/19	भ. 13/03 तक, बुध पुष्य में 7/31,	24	5/28	38	5/29	18	5/25	24	6/07	14
	25	८	मंग.	28:14	उ.भा.	–:–	सौभा	23:28	बा	15:14	मीन	**स. सि. यो.**	25	5/28	38	5/29	18	5/25	25	6/07	15
	26	९	बुध	–:–	उ.भा.	5:38	शोभ	23:49	तै	16:59	मीन	वक्री गुरु ज्ये. (2) में 28/40, गण्डमूल 5/38 बाद	26	5/28	38	5/29	18	5/25	25	6/07	15
	27	९	गुरु	5:44	रेव.	7:44	अति	23:41	ग	5:44	मे. 7/44	भ. 18/11 से, **पंचक समाप्त 7/44**, मंगल पुष्य में 28/57	27	5/28	38	5/29	19	5/26	25	6/07	15
	28	१०	शुक्र	6:37	अश्वि	9:12	सुक	23:0	वि	6:37	मेष	भ. 6/37 तक, **शुक्र मिथुन में 25/33**, गण्डमूल 9/12 तक	28	5/29	38	5/30	19	5/26	25	6/07	15
	29	११	शनि	6:46	भर.	9:58	धृति	21:44	बा	6:46	वृ.16/02	**योगिनी एकादशी व्रत**	29	5/29	38	5/30	19	5/26	25	6/08	16
	30	१२	रवि	6:12	कृति.	10:1	शूल	19:55	तै	6:12	वृष	भ. 28/57 से, **प्रदोष व्रत**	30	5/30	19/38	5/30	19/19	5/27	19/25	6/08	19/16
	०	१३	रवि	28:57	००	००:००	००	०:०	०	०:०	००	**त्र्योदशी तिथि का क्षय** ०० ०० ००	०	००	००	००	००	००	००	००	००

(A) बुध पश्चिम में उदय 20/25, मासशिवरात्रि व्रत, जून मास प्रारम्भ, वटसावित्री व्रत प्रारम्भ **(B)** वटसावित्री व्रत (अमा.-पक्ष), **मेला हरिद्वार-प्रयागराजादि**, तीर्थस्नान माहात्म्य (देखें पृष्ठ 24)
(C) **श्रीगङ्गा-स्नान प्रारम्भ**, करवीर-व्रत (सूर्य पूजा), भावुका करिदिन **(D)** नैपच्यून वक्री 20/06 **(E)** शक आषाढ़ प्रारम्भ

वि. संवत् 2076, जुलाई महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2019 ई.

मास पक्ष	जुलाई	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	करण	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश — सूर्य दक्षिणायन — घण्टा-मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] — वर्षा ऋतुः
आ.कृ.	1	१४	चन्द्र	27	6	रोहि.	9	25	गंड	17	35	वि	16	2	मि.20/53	भ. 16/02 तक, मासशिवरात्रि व्रत, जुलाई मास प्रारम्भ, स. सि. यो.
	2	३०	मंग	24	46	मृग.	8	14	वृद्धि	14	49	च	13	56	मिथुन	**आषाढ़ अमावस, भौमवती अमावस (देखें पृष्ठ 24)**
आषाढ़ शुक्ल पक्ष	3	१	बुध	22	5	आर्द्रा पुन.	6 28	36 39	ध्रुव	11	42	किं	11	26	क.23/09	**आषाढ़ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, गुप्त नवरात्रे प्रारम्भ**
	4	२	गुरु	19	10	पुष्य	26	30	व्या. हर्ष	8 28	20 50	बा	8	38	कर्क	चन्द्रदर्शन, मु. 30, **रथयात्रा उत्सव** (श्रीजगन्नाथपुरी), शुक्र आर्द्रा में 12/19
	5	३	शुक्र	16	9	आश्ले	24	18	वज्र	25	19	तै	5	40	सिं.24/18	भ. 26/40 से, जिल्काद (मुस्लि.) मास प्रारम्भ, गण्डमूल
	6	४	शनि	13	10	मघा	22	10	सिद्धि	21	51	वि	13	10	सिंह	भ. 13/10 तक, सूर्य पुन. में 16/49, वक्री शनि पू.षा. (3) में 15/34
	7	५	रवि	10	19	पू.फा.	20	14	व्य.	18	32	बा	10	19	कं.25/47	**स्कन्द षष्ठी, कुमार षष्ठी** (देखें पृष्ठ 18), **बुध वक्री 28/42**
	8	६	चन्द्र	7	43	उ.फा.	18	34	वरी	15	27	तै	7	43	कन्या	भ. 29/25 से, **विवस्वत सप्तमी**
	०	७	चन्द्र	29	25	००	00	00	००	०	०	०	०	०	००	**सप्तमी तिथि का क्षय** ०० ००
	9	८	मंग	27	31	हस्त	17	15	परि.	12	38	वि	16	28	तु.28/45	भ. 16/28 तक, **श्रीदुर्गाष्टमी,**
	10	९	बुध	26	3	चित्रा	16	22	शिव	10	10	बा	14	47	तुला	भढली नवमी, राहु पुन. (1) केतु पू.षा. 3 में 29/22, मेला शरीक (A)
	11	१०	गुरु	25	3	स्वा.	15	55	सिद्ध	8	4	तै	13	33	तुला	**मंगल पश्चिम में अस्त 28/36**
	12	११	शुक्र	24	31	विशा	15	57	साध्य शुभ	6 29	20 00	व	12	47	वृ. 9/54	भ. 12/47 से 24/31 तक, **हरिशयनी एकादशी व्रत,** चातुर्मास्य व्रत-(B)
	13	१२	शनि	24	29	अनु.	16	27	शुक्ल	28	2	ब	12	30	वृश्चिक	वक्री बुध पश्चिम में अस्त 21/05, गण्डमूल 16/27 बाद
	14	१३	रवि	24	55	ज्ये.	17	26	ब्रह्म	27	27	कौ	12	42	ध. 17/26	**प्रदोष व्रत,** गण्डमूल विचार
	15	१४	चन्द्र	25	49	मूल	18	52	ऐन्द्र	27	14	ग	13	22	धनु	भ. 25/49 से. शुक्र पुन. में 9/24, मेला ज्वालामुखी (काश्मीर), गंडमूल
	16	१५	मंग	27	8	पू.षा.	20	43	वैधृ	27	21	वि	14	29	म.27/15	भ. 14/28 तक, **आषाढ़ी पूर्णिमा, गुरु पूर्णिमा, खण्डग्रास चन्द्रग्रहण(C)**
श्रावण कृष्ण पक्ष	17	१	बुध	28	52	उ.षा.	22	59	विष्क	27	46	बा	16	0	मकर	श्रावण कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, ग्रहण-वेध दिन
	18	२	गुरु	–	–	श्रव.	25	34	प्रीति	28	26	तै	17	54	मकर	मंगल आश्लेषा में 28/29, अशून्यशयन व्रत, ग्रहणवेध दिन
	19	२	शुक्र	6	55	धनि.	28	25	आयु	29	19	ग	6	55	कुं.14/58	भ. 20/05 से, **पंचक प्रारम्भ** 14/58, **शुक्र पूर्व में अस्त** 19/28, ग्रहणवेध दिन
	20	३	शनि	9	14	शत	–	–	सौभा	–	–	वि	9	14	कुम्भ	भ. 9/14 तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 13), सूर्य पुष्य में 16/26
	21	४	रवि	11	40	शत	7	25	सौभा	6	18	बा	11	40	मी.27/40	
	22	५	चन्द्र	14	4	पू.भा.	10	25	शोभ	7	17	तै	14	4	मीन	नाग-पंचमी (राज. व बंगाल), **श्रावण सोमवार व्रत शुरु**
	23	६	मंग	16	17	उ.भा.	13	14	अति	8	9	व	16	17	मीन	भ. 16/17 से 29/12 तक, वक्री बुध पुनं. में 6/29, शुक्र कर्क में 12/49(D)
	24	७	बुध	18	6	रेव.	15	42	सुक	8	46	ब	18	6	मे.15/42	**पंचक समाप्त 15/42,** शीतला सप्तमी, गण्डमूल
	25	८	गुरु	19	21	अश्वि	17	39	धृति	9	0	बा	6	44	मेष	गण्डमूल 17/39 तक
	26	९	शुक्र	19	57	भर.	18	57	शूल	8	45	तै	7	39	वृ.25/09	शुक्र पुष्य में 5/50,
	27	१०	शनि	19	46	कृति.	19	30	गंड	7	55	व	7	52	वृष	भ. 7/52 से 19/46 तक,
	28	११	रवि	18	50	रोहि.	19	18	वृद्धि ध्रुव	6 28	28 25	ब	7	18	वृष	**कामिका एकादशी व्रत,**
	29	१२	चन्द्र	17	9	मृग	18	22	व्या.	25	47	कौ	6	0	मि. 6/55	**सोम प्रदोष व्रत,** वक्री बुध पूर्व में उदय 19/23,
	30	१३	मंग	14	50	आर्द्रा	16	47	हर्ष	22	38	व	14	50	मिथुन	भ. 14/50 से 25/24 तक, **वक्री बुध मिथुन में** 13/26, श्रावण-शिवरात्रि व्रत
	31	१४	बुध	11	58	पुन.	14	41	वज्र	19	6	श	11	58	क. 9/15	**पितृकार्येषु अमावस**

खण्डग्रास चन्द्रग्रहण 16 जुलाई

शुक्र अस्त 19 जुलाई

जुला. ता.	जम्मू सूर्योदय घं. मि.	जम्मू सूर्यास्त घं. मि.	दिल्ली सूर्योदय घं. मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मि.	मुम्बई सूर्योदय घं. मि.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मि.
1	5/30	19/38	5/31	19/19	5/27	19/25	6/09	19/16
2	5/30	38	5/31	19	5/28	25	6/09	16
3	5/31	38	5/31	19	5/28	25	6/10	16
4	5/31	38	5/32	19	5/28	25	6/10	16
5	5/32	38	5/32	19	5/29	25	6/10	16
6	5/32	38	5/33	18	5/29	25	6/11	16
7	5/33	38	5/33	18	5/30	24	6/11	16
8	5/33	38	5/34	18	5/30	24	6/12	16
०	००	००	००	००	००	००	००	००
9	5/34	37	5/34	18	5/31	24	6/12	16
10	5/34	37	5/34	18	5/31	24	6/12	16
11	5/35	37	5/35	18	5/32	23	6/13	16
12	5/35	37	5/35	18	5/32	23	6/13	16
13	5/36	36	5/36	17	5/33	23	6/13	16
14	5/36	36	5/36	17	5/33	23	6/14	16
15	5/37	35	5/37	17	5/34	22	6/14	16
16	5/38	35	5/37	16	5/34	22	6/14	16
17	5/38	35	5/38	16	5/35	22	6/14	15
18	5/39	34	5/38	16	5/35	21	6/15	15
19	5/39	34	5/39	15	5/36	21	6/15	15
20	5/40	33	5/40	15	5/37	21	6/15	14
21	5/41	33	5/40	14	5/37	20	6/16	14
22	5/41	32	5/41	14	5/38	20	6/16	14
23	5/42	32	5/41	13	5/38	19	6/16	13
24	5/43	31	5/42	13	5/39	19	6/17	13
25	5/43	30	5/42	12	5/40	18	6/17	13
26	5/44	30	5/43	12	5/40	17	6/17	12
27	5/45	29	5/43	11	5/41	17	6/18	12
28	5/45	28	5/44	11	5/41	16	6/18	12
29	5/46	28	5/44	10	5/42	15	6/18	11
30	5/47	27	5/45	10	5/43	15	6/19	11
31	5/47	26	5/46	09	5/43	14	6/19	10

(A) भवानी (काश्मीर), **गुप्त नवरात्रे समाप्त** **(B)** नियमादि प्रारम्भ, श्रीविष्णु-शयनोत्सव **(C)** (देखें पृष्ठ 25), **सूर्य कर्क में 28/32, श्रावण संक्रान्ति,** मु. 45, पुण्यकाल सं. अगले दिन, व्यास-पूजा, श्रीशिवशयनोत्सव, कोकिला व्रत, श्रीसत्यनारायण व्रत (देखें पृष्ठ 18), वायु-परीक्षा, शुक्र वार्धक्य प्र. 19/28 **(D)** [illegible] श्रावण प्रारम्भ, मङ्गलागौरी व्रत शुरु

श्रीशिवशयनोत्सव, कोकिला व्रत, श्रीसत्यनारायण व्रत (दे... (C) (देखें पृष्ठ 25), सूर्य कर्क में 28/32, श्रावण संक्रान्ति, मु. 45, पुण्यकाल सं. अगले दिन, व्यास-पूजा,

वि. संवत् 2076, अगस्त महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.) सन् 2019 ई.

मास पक्ष	अगस्त	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	करण	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश — सूर्य दक्षिणायन — घण्टा–मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] — वर्षा-शरद् ऋतुः	ता. अग.	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
	1	३०	गुरु	8:42	पुष्य	12:12	सिद्धि	15:16	ना	8:42	कर्क	श्रावण (हरियाली) अमावस, बुध मार्गी 9/26, मेला छिन्नमस्तिका(A)	1	5/48	19/25	5/46	19/08	5/44	19/13	6/20	19/10
श्रावण शुक्ल पक्ष	०	१	गुरु	29:12	००	००:००	००	०:०	०	०:०	००	श्रावण शुक्ल प्रतिपदा का क्षय ०० ०० **शुक्र अस्त है**	०	००	००	००	००	००	००	००	००
	2	२	शुक्र	25:36	आश्ले	9:29	व्या.	11:16	बा	15:24	सिं. 9/29	चन्द्रदर्शन, मु. 30, गण्डमूल विचार	2	5/49	24	5/47	08	5/44	12	6/20	09
	3	३	शनि	22:6	मघा 6:44 पू.फा.	28:6	वरी 7:15 परि	27:19	तै	11:51	सिंह	मधुस्रवा-हरियाली-सिंघारा तीज, सूर्य आश्ले. में 15/17, (B)	3	5/49	24	5/47	07	5/45	11	6/20	09
	4	४	रवि	18:49	उ.फा.	25:44	शिव	23:38	व	8:28	कं. 9/28	भ. 8/28 से 18/49 तक, दूर्वा गणपति व्रत, वरद्-चतुर्थी	4	5/50	23	5/48	06	5/46	11	6/21	08
	5	५	चन्द्र	15:55	हस्त	23:48	सिद्ध	20:16	बा	15:55	कन्या	नाग-पञ्चमी, श्रीकल्कि जयन्ती (सायाह्न-व्यापिनी), शुक्र आश्ले. में 25/32	5	5/51	22	5/48	05	5/46	10	6/21	08
	6	६	मंग	13:31	चित्रा	22:23	साध्य	17:20	तै	13:31	तु. 11/01		6	5/51	21	5/49	05	5/47	09	6/21	07
	7	७	बुध	11:41	स्वा.	21:36	शुभ	14:53	व	11:41	तुला	भ. 11/41 से 23/06 तक, गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती	7	5/52	20	5/49	04	5/47	08	6/22	07
	8	८	गुरु	10:31	विशा	21:28	शुक्ल	12:59	ब	10:31	वृ.15/26	श्रीदुर्गाष्टमी, मेला चिन्तपूर्णी-चामुण्डादेवी (हि.प्र.) समाप्त, (C)	8	5/53	19	5/50	03	5/48	07	6/22	06
	9	९	शुक्र	10:1	अनु.	21:58	ब्रह्म	11:36	कौ	10:1	वृश्चिक	बुध पुष्य में 11/58, गण्डमूल 21/58 बाद	9	5/53	18	5/51	02	5/49	06	6/22	05
	10	१०	शनि	10:9	ज्ये.	23:6	ऐन्द्र	10:44	ग	10:9	ध.23/06	भ. 22/31 से, गण्डमूल विचार	10	5/54	17	5/51	01	5/49	05	6/22	05
	11	११	रवि	10:53	मूल	24:45	वैधृ	10:19	वि	10:53	धनु	भ. 10/53 तक, पवित्रा एकादशी व्रत, गुरु मार्गी 19/04, गण्डमूल	11	5/55	16	5/52	01	5/50	04	6/22	04
	12	१२	चन्द्र	12:7	पू.षा.	26:51	विष्क	10:19	बा	12:7	धनु	सोम प्रदोष व्रत, यूरेनस वक्री 7/55	12	5/55	15	5/52	19/00	5/51	03	6/23	03
	13	१३	मंग	13:47	उ.षा.	29:19	प्रीति	10:38	तै	13:47	म. 9/26		13	5/56	14	5/53	18/59	5/51	02	6/23	03
	14	१४	बुध	15:46	श्रव.	–:–	आयु	11:13	व	15:46	मकर	भ. 15/46 से 28/53 तक, ऋग्वेदि उपाकर्म (देखें पृ.18), श्रीसत्यनारायण व्रत	14	5/57	13	5/53	58	5/52	02	6/23	02
	15	१५	गुरु	17:59	श्रव.	8:2	सौभा	11:59	ब	17:59	कुं.21/28	श्रावण-पूर्णिमा, रक्षाबन्धन (राखी), पंचक प्रारम्भ 21/28 (D)	15	5/58	12	5/54	57	5/52	01	6/23	02
भाद्रपद कृष्ण पक्ष	16	१	शुक्र	20:22	धनि.	10:56	शोभ	12:53	बा	7:11	कुम्भ	भाद्रपद कृष्ण पक्ष प्रा. शुक्र मघा (1) सिंह में 20/39, गायत्री जपम्	16	5/58	11	5/54	56	5/53	19/00	6/24	01
	17	२	शनि	22:49	शत.	13:55	अति	13:51	तै	9:36	कुम्भ	सूर्य मघा-सिंह में 13/01, भाद्रपद संक्रान्ति, मु. 15, पुण्यकाल सं. प्रात: 6/37 बाद,	17	5/59	10	5/55	55	5/54	18/59	6/24	01
	18	३	रवि	25:14	पू.भा.	16:55	सुक	14:50	व	12:2	मी.10/10	भ. 12/02 से 25/14 तक, कज्जली तृतीया	18	6/00	09	5/55	54	5/54	58	6/24	00
	19	४	चन्द्र	27:30	उ.भा.	19:48	धृति	15:43	ब	14:22	मीन	श्रीगणेश (बहुला) चतुर्थी व्रत (देखें पृ. 13), बुध आश्ले. में 11/36	19	6/00	08	5/56	53	5/55	56	6/24	00
	20	५	मंग	29:31	रेव	22:29	शूल	16:28	कौ	16:31	मे.22/29	पंचक समाप्त 22/29, गण्डमूल विचार	20	6/01	07	5/56	52	5/55	55	6/24	19/00
	21	६	बुध	–:–	अश्वि	24:47	गंड	16:56	ग	18:19	मेष	चन्दन षष्ठी व्रत चन्द्रोदय 22/29 (जालन्धर), हल-षष्ठी,	21	6/02	05	5/57	51	5/56	54	6/25	18/59
	22	६	गुरु	7:7	भर.	26:36	वृद्धि	17:3	व	7:7	मेष	भ. 7/07 से 19/38 तक, शीतला-सप्तमी, बुध पूर्व में अस्त 5/56	22	6/02	04	5/58	50	5/56	53	6/25	58
	23	७	शुक्र	8:9	कृत्ति	27:47	ध्रुव	16:42	ब	8:9	वृ. 8/58	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स्मार्त) गृहस्थियों के लिए (देखें पृ.19)(E)	23	6/03	03	5/58	49	5/57	52	6/25	57
	24	८	शनि	8:32	रोहि.	28:16	व्या.	15:47	कौ	8:32	वृष	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (वैष्णव)	24	6/04	02	5/59	48	5/58	51	6/25	56
	25	९	रवि	8:11	मृग.	27:59	हर्ष	14:17	ग	8:11	मि.16/13	भ. 19/37 से, श्रीगुग्गा-नवमी, गोकुलाष्टमी, नन्दोत्सव	25	6/04	19/01	5/59	47	5/58	50	6/26	55
	26	१०	चन्द्र	7:3	आर्द्रा	26:57	वज्र	12:10	वि	7:3	मिथुन	भ. 7/03 तक, अजा एकादशी व्रत (स्मार्त), बुध मघा 1 सिंह में 14/06	26	6/05	18/59	6/00	46	5/59	49	6/26	54
	०	११	चन्द्र	29:10	००	00:00	००	०:०	०	०:०	००	एकादशी तिथि का क्षय ०० ००	०	००	००	००	००	००	००	००	००
	27	१२	मंग	26:36	पुन	25:13	सिद्धि	9:26	कौ	15:53	क.19/42	अजा एकादशी व्रत वैष्णव, वत्स द्वादशी (पूजा), शुक्र पू.फा. में 15/10	27	6/06	18/58	6/00	45	5/59	47	6/26	53
	28	१३	बुध	23:29	पुष्य	22:55	व्य 6:10 वरी	26:27	ग	13:3	कर्क	भ. 23/29 से, प्रदोष व्रत, मासशिवरात्रि व्रत, अघोरा-चतुर्दशी (F)	28	6/06	57	6/01	44	6/00	46	6/27	52
	29	१४	गुरु	19:56	अश्ले	20:11	परि	22:23	वि	9:43	सिं.20/11	भ. 9/43 तक, मंगल पू.फा. में 28/19, गण्डमूल विचार	29	6/07	56	6/02	42	6/01	44	6/28	50
	30	३०	शुक्र	16:7	मघा	17:11	शिव	18:8	ना	16:7	सिंह	भाद्रपद अमावस, कुशाग्रहणी अमावस-'ॐ हुँ फट् स्वाहा' (G)	30	6/07	54	6/02	42	6/01	44	6/28	50
	31	१	शनि	12:14	पू.फा.	14:7	सिद्ध	13:49	ब	12:14	कं.19/22	भाद्रपद शुक्लपक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 45, सूर्य पू.फा. में 8/59	31	6/08	18/53	6/02	18/41	6/02	18/43	6/28	18/49

(A) (**चिन्तपूर्णी**) प्रारम्भ, गंडमूल 12/12 बाद, लोकमान्य तिलक स्मरणोत्सव **(B)** बुध कर्क में 5/52, जिल्हिजा (मुस्लि.) मास शुरु, गंडमूल 6/44 तक **(C)** मंगल मघा (1) सिंह में 28/46, **(D)** यजुर्वेद-अथर्ववेद उपाकर्म, **भारत स्वतन्त्रता दिवस**, दर्शन श्रीअमरनाथ गुफा, संस्कृत दिवस, गायत्री जयन्ती, कोकिला व्रत समाप्त, ऋषि-तर्पण, हयग्रीव जयन्ती **(E)** दूर्वाष्टमी व्रत (देखें पृष्ठ 18), शक भाद्रपद शुरु, सूर्य सायन कन्या में 15/32, शरद् ऋतु प्रारम्भ **(F)** कैलाश यात्रा प्रारम्भ-2 दिन **(G)** इहमंत्रेण कुशोत्पाटनम, पिठोरी अमावस, लोहार्गल यात्रा (स्नान), रानी सती मेला (झुंझुनूं-राज.)

वि. संवत् 2076, सितम्बर महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा–मिन्टों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2019 ई.

मास पक्ष	सितंबर	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	करण	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश — सूर्य दक्षिणायन — घण्टा–मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] — शरद् ऋतुः	ता.	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	1	२	रवि	8:27	उ.फा.	11:11	साध्य / शुभ	9:36 / 29:38	कौ	8:27	कन्या	हरितालिका तृतीया, गौरी तृतीया, श्रीवराह-जयन्ती, सामवेदि उपाकर्म **(A)**	1	6/09	18/52	6/03	18/39	6/02	18/42	6/29	18/48
	०	३	रवि	28:57	००	00:00	००	०:०	०	०:०	००	तृतीया तिथि का क्षय ०० ०० ००	०	००	००	००	००	००	००	००	००
	2	४	चन्द्र	25:54	हस्त	8:33	शुक्ल	26:3	व	15:26	तु.19/24	भ. 15/26 से 25/54 तक, **सिद्धि विनायक व्रत**, बुध पू.फा. में 8/09 **(B)**	2	6/09	51	6/03	38	6/03	41	6/29	47
	3	५	मंग	23:28	चित्रा / स्वा.	6:24 / 28:53	ब्रह्म	22:59	ब	12:41	तुला	**ऋषि-पंचमी पर्व**, सम्वत्सरी महापर्व (जैन)	3	6/10	49	6/04	36	6/03	40	6/29	46
	4	६	बुध	21:45	विशा	28:7	ऐन्द्र	20:29	कौ	10:37	वृ.22/14	**सूर्य षष्ठी व्रत, अगस्त्य-उदित**	4	6/11	48	6/04	35	6/04	38	6/29	45
	5	७	गुरु	20:50	अनु	28:9	वैधृ	18:38	ग	9:18	वृश्चिक	भ. 20/50 से, मुक्ताभरण-सन्तान सप्तमी व्रत, गण्डमूल 28/09 बाद	5	6/11	47	6/05	34	6/05	37	6/29	44
	6	८	शुक्र	20:43	ज्ये.	28:58	विष्क	17:25	वि	8:47	ध.28/58	भ. 8/47 तक, **राधाष्टमी, श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ**, दधीची जयन्ती	6	6/12	45	6/05	33	6/05	35	6/29	44
	7	९	शनि	21:23	मूल	–:–	प्रीति	16:49	बा	9:3	धनु	श्रीचन्द्र नवमी (उदासीन सम्प्रदाय), शुक्र उ.फा. में 9/12, गण्डमूल	7	6/13	44	6/06	32	6/06	34	6/30	43
	8	१०	रवि	22:41	मूल	6:29	आयु	16:45	तै	10:2	धनु	**गण्डमूल 6/29 तक**	8	6/13	43	6/06	31	6/06	33	6/30	43
	9	११	चन्द्र	24:31	पू.षा.	8:36	सौभा	17:6	व	11:39	म.15/12	भ. 11/39 से 24/31 तक, **पद्मा एकादशी व्रत**, बुध उ.फा. में 8/56 **(C)**	9	6/14	42	6/07	29	6/07	32	6/30	42
	10	१२	मंग	26:43	उ.षा.	11:9	शोभ	17:45	ब	13:37	मकर	**श्रीवामन-जयन्ती, श्रवण-द्वादशी, बुध कन्या में 28/59**	10	6/15	40	6/07	28	6/07	30	6/30	41
	11	१३	बुध	29:7	श्रव.	13:59	अति	18:36	कौ	15:55	कुं.27/28	प्रदोष व्रत, **पंचक प्रारम्भ 27/28**, राहु आर्द्रा 4 केतु पू.षा. 2 में 27/06	11	6/15	39	6/07	27	6/08	29	6/30	40
	12	१४	गुरु	–:–	धनि.	16:58	सुक	19:33	ग	18:22	कुम्भ	**अनन्त चतुर्दशी व्रत, मेला बाबा सोढल** (जालन्धर) पं., कदली व्रत	12	6/16	38	6/08	26	6/08	28	6/30	40
	13	१४	शुक्र	7:36	शत.	19:59	धृति	20:30	व	7:36	कुम्भ	भ. 7/36 से 20/50 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, **पूर्णिमा का श्राद्ध (D)**	13	6/16	36	6/08	25	6/09	27	6/30	39
	14	१५	शनि	10:3	पू.भा.	22:55	शूल	21:25	ब	10:3	मी.16/12	**भाद्रपद पूर्णिमा**, स्नानदानादि, **पितृपक्ष (श्राद्ध) प्रारम्भ (E)**	14	6/17	35	6/09	23	6/10	25	6/30	38
आश्विन कृष्ण पक्ष	15	१	रवि	12:24	उ.भा.	25:45	गंड	22:13	कौ	12:24	मीन	आश्विन कृष्णपक्ष प्रारम्भ, **द्वितीया तिथि का श्राद्ध** (देखें पृष्ठ 20)	15	6/18	33	6/09	22	6/10	24	6/30	37
	16	२	चन्द्र	14:36	रेव.	28:22	वृद्धि	22:53	ग	14:36	मे.28/22	भ. 27/35 से, **पंचक समाप्त 28/22**, बुध हस्त में 22/33	16	6/18	32	6/10	21	6/11	23	6/31	36
	17	३	मंग	16:33	अश्वि	–:–	ध्रुव	23:21	वि	16:33	मेष	भ. 16/33 तक, **अङ्गारकी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, सूर्य कन्या में** 13/02**(F)**	17	6/19	31	6/10	20	6/11	22	6/31	35
	18	४	बुध	18:12	अश्वि	6:44	व्या.	23:33	बा	18:12	मेष	चतुर्थी का श्राद्ध, भरणी श्राद्ध, **शनि मार्गी 14/15**, गण्डमूल 6/44 तक	18	6/20	29	6/11	19	6/12	20	6/31	34
	19	५	गुरु	19:27	भर.	8:45	हर्ष	23:26	कौ	6:50	वृ.15/11	**पंचमी का श्राद्ध**, मंगल उ.फा. में 25/41	19	6/20	28	6/11	17	6/12	19	6/31	34
	20	६	शुक्र	20:12	कृति.	10:20	वज्र	22:56	ग	7:50	वृष	भ. 20/12 से, चन्द्र षष्ठी व्रत, षष्ठी का श्राद्ध, बुध पश्चिम में उदय 18/05	20	6/21	27	6/12	16	6/13	18	6/31	33
	21	७	शनि	20:21	रोहि.	11:22	सिद्धि	21:56	वि	8:17	मि.23/39	भ. 8/17 तक, **श्रीमहालक्ष्मी व्रत सम्पन्न** (चन्द्रोदयव्यापिनी अष्टमी में)**(G)**	21	6/21	25	6/12	15	6/14	16	6/32	32
	22	८	रवि	19:50	मृग.	11:46	व्य.	20:25	बा	8:6	मिथुन	जीवित्पुत्रिका व्रत, **अष्टमी का श्राद्ध**	22	6/22	24	6/13	14	6/14	15	6/32	31
	23	९	चन्द्र	18:37	आर्द्रा	11:30	वरी	18:20	तै	7:14	क.28/49	भ. 29/40 से, सौभाग्यवतीनां श्राद्ध, नवमी का श्राद्ध, मातृ-नवमी **(H)**	23	6/23	23	6/13	13	6/15	14	6/32	30
	24	१०	मंग	16:43	पुन.	10:31	परि	15:42	वि	16:43	कर्क	भ. 16/43 तक, बुध चित्रा में 27/44, **दशमी का श्राद्ध**	24	6/23	21	6/14	12	6/15	13	6/32	29
	25	११	बुध	14:9	पुष्य	8:53	शिव	12:31	बा	14:9	कर्क	**इन्दिरा एकादशी व्रत, एकादशी व द्वादशी का श्राद्ध** (देखें पृष्ठ 20)**(I)**	25	6/24	20	6/14	10	6/16	11	6/33	28
	26	१२	गुरु	11:3	आश्ले / मघा	6:40 / 28:1	सिद्ध / साध्य	8:53 / 28:54	तै	11:3	सिं. 6/40	प्रदोष व्रत, **त्रयोदशी का श्राद्ध, मघा त्रयोदशी**	26	6/25	19	6/15	09	6/16	10	6/33	27
	27	१३	शुक्र	7:32	पू.फा.	25:5	शुभ	24:40	व	7:32	कं.30/19	भ. 7/32 से 17/39 तक, शस्त्र-विष-दुर्घटनादि से मृतों का श्राद्ध **(J)**	27	6/25	17	6/15	08	6/17	09	6/33	26
	०	१४	शुक्र	27:46	००	00:00	००	०:०	०	०:०	००	चतुर्दशी तिथि का क्षय ०० ००	०	००	००	००	००	००	००	००	००
	28	३०	शनि	23:57	उ.फा.	22:3	शुक्ल	20:22	च	13:52	कन्या	**आश्विन (शनैश्चर) अमावस, सर्वपितृ श्राद्ध**, चतुर्दशी/अमावस **(K)**	28	6/26	16	6/16	07	6/18	08	6/33	25
शुक्ल	29	१	रवि	20:14	हस्त	19:7	ब्रह्म	16:9	किं	10:6	तु.29/45	**शरद् नवरात्रे प्रा.**,घटस्थापन, **बुध तुला में 12/56**, शुक्र पश्चिम में उदय**(L)**	29	6/27	15	6/16	06	6/18	06	6/33	24
	30	२	चन्द्र	16:50	चित्रा	16:29	ऐन्द्र	12:8	बा	6:32	तुला	चन्द्रदर्शन, मु. 15, **शुक्र उदय–29 सितं.**	30	6/27	13	6/17	04	6/19	05	6/33	23

(A) (देखें पृष्ठ 20), मुहर्रम (मु.) सं. 1441 हिजरी प्रारम्भ **(B) कलंक-चतुर्थी** (चन्द्रदर्शन-निषेध) चन्द्रास्त 21/09 (जालन्धर), **पत्थर चौथ** **(C) शुक्र कन्या में 25/40** **(D) प्रोष्ठपदी-महालय श्राद्ध प्रारम्भ**, सूर्य उ.फा. में 26/53 **(E) प्रतिपदा तिथि श्राद्ध** **(F) आश्विन संक्रान्ति**, मु. 30, पुण्यकाल सं. प्रात: 6/38 बाद, **तृतीया श्राद्ध**, शुक्र हस्त में 26/50, विश्वकर्मा पूजन **(G)** (देखें पृष्ठ 20), सप्तमी का श्राद्ध **(H)** शक आश्विन प्रारम्भ, सूर्य सायन तुला में 13/21, दक्षिण गोल प्रारम्भ **(I) मंगल कन्या में 6/31**, संन्यासीनां श्राद्ध, गुरु ज्ये. (3) में 17/36 **(J)** सूर्य हस्त में 18/25, मासशिवरात्रि व्रत **(K)** श्राद्ध, शुक्र चित्रा में 20/31, **गजच्छाया योग 22/03 से 23/57 तक, श्राद्ध समाप्त**, अज्ञात मृत्यु तिथि वालों का श्राद्ध, पितृ-विसर्जन **(L)** 18/12, महाराजा अग्रसेन जयन्ती, मातामह (नाना/नानी) का श्राद्ध

वि. संवत् 2076, अक्तूबर महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2019 ई.

मास पक्ष	अक्टूबर	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	करण	समाप्ति काल घं. मि.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मि.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश — सूर्य दक्षिणायन — घण्टा–मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] — शरद्-हेमन्त ऋतुः	अक्टू. ता.	जम्मू सूर्योदय घं. मि.	जम्मू सूर्यास्त घं. मि.	दिल्ली सूर्योदय घं. मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मि.	मुम्बई सूर्योदय घं. मि.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मि.
आश्विन शुक्ल पक्ष	1	३	मंग	13:55	स्वा.	14:21	वैधृ / विष्कं	8:31 / 29:24	ग	13:55	तुला	भ. 24/48 से, अक्तूबर मास प्रारम्भ, सफर (मु.) मास प्रारम्भ	1	6/28	18/12	6/18	18/03	6/20	18/04	6/34	18/23
	2	४	बुध	11:40	विशा	12:52	प्रीति	26:53	वि	11:40	वृ, 7/10	भ. 11/40 तक, महात्मा गाँधी जयन्ती, उपाङ्ग ललिता व्रत (देखें पृ. 21)**(A)**	2	6/29	11	6/18	02	6/20	03	6/34	22
	3	५	गुरु	10:12	अनु.	12:10	आयु	25:3	बा	10:12	वृश्चिक	बुध स्वाती में 27/11, **शुक्र तुला में 29/13**, प्लूटो मार्गी 12/05	3	6/29	09	6/19	18/00	6/21	01	6/34	21
	4	६	शुक्र	9:35	ज्ये.	12:19	सौभा	23:54	तै	9:35	ध.12/19	**सरस्वती आवाहन मूलभे (देखें पृष्ठ 21)**, शनि पू.षा. 3 में 21/30	4	6/30	08	6/19	17/59	6/22	18/00	6/34	21
	5	७	शनि	9:51	मूल	13:19	शोभ	23:24	व	9:51	धनु	भ. 9/51 से 22/23 तक, सरस्वती पूजन पू.षा.भे, भद्रकाली अवतार	5	6/31	07	6/20	58	6/22	17/59	6/34	20
	6	८	रवि	10:55	पू.षा.	15:4	अति	23:27	ब	10:55	म.21/36	**श्रीदुर्गाष्टमी**, महाष्टमी, **सरस्वती–बलिदान उ.षाभे**	6	6/31	05	6/20	57	6/23	58	6/35	19
	7	९	चन्द्र	12:38	उ.षा.	17:25	सुक	23:57	कौ	12:38	मकर	महानवमी, **नवरात्र–समाप्त**, बलिदान दिवस, सरस्वती विसर्जन (श्रवणे) (देखें पृ.21)	7	6/32	04	6/21	56	6/23	56	6/35	19
	8	१०	मंग	14:50	श्रव.	20:12	धृति	24:45	ग	14:50	मकर	भ. 28/05 से, **विजयादशमी (दशहरा)** (देखें पृ. 21), अपराजिता पूजन,**(B)**	8	6/33	03	6/22	55	6/24	55	6/35	18
	9	११	बुध	17:19	धनि.	23:12	शूल	25:41	वि	17:19	कुं. 9/41	भ. 17/19 तक, **पंचक प्रारम्भ 9/41, पापांकुशा एकादशी व्रत,(C)**	9	6/34	01	6/22	54	6/25	54	6/35	17
	10	१२	गुरु	19:52	शत.	26:14	गंड	26:38	ब	6:36	कुम्भ	मंगल हस्त में 19/36, पद्मनाभ द्वादशी	10	6/34	18/00	6/23	52	6/25	53	6/35	16
	11	१३	शुक्र	22:20	पू.भा.	29:10	वृद्धि	27:30	कौ	9:6	मी.22/26	**प्रदोष व्रत**, सूर्य चित्रा में 7/25	11	6/35	17/59	6/23	51	6/26	52	6/36	15
	12	१४	शनि	24:37	उ.भा.	–:–	ध्रुव	28:12	ग	11:29	मीन	भ. 24/37 से,	12	6/36	17/58	6/24	50	6/27	51	6/36	14
	13	१५	रवि	26:38	उ.भा.	7:53	व्या.	28:42	वि	13:38	मीन	भ. 13/38 तक, **आश्विन पूर्णिमा, शरद् पूर्णिमा**, कोजागर व्रत, **(D)**	13	6/36	57	6/24	49	6/27	49	6/36	14
कार्तिक कृष्ण पक्ष	14	१	चन्द्र	28:21	रेव.	10:20	हर्ष	28:58	बा	15:30	मे.10/20	कार्तिक कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, **पंचक समाप्त 10/20**, गण्डमूल विचार	14	6/37	55	6/25	48	6/28	48	6/37	13
	15	२	मंग	29:45	अश्वि	12:30	वज्र	29:00	तै	17:3	मेष	गण्डमूल 12/30 तक	15	6/38	54	6/26	47	6/29	47	6/37	12
	16	३	बुध	–:–	भर.	14:21	सिद्धि	28:45	व	18:17	वृ.20/46	भ. 18/17 से,	16	6/39	53	6/26	46	6/29	46	6/37	11
	17	३	गुरु	6:49	कृति.	15:52	व्य.	28:14	वि	6:49	वृष	भ. 6/49 तक, **व्रत करवा चौथ** (करक–चतुर्थी) चन्द्रोदय हेतु देखें पृष्ठ 13,**(E)**	17	6/39	52	6/27	45	6/30	45	6/38	10
	18	४	शुक्र	7:29	रोहि.	16:59	वरी	27:22	बा	7:29	मि.29/23		18	6/40	51	6/27	44	6/31	44	6/38	09
	19	५	शनि	7:44	मृग.	17:40	परि	26:9	तै	7:44	मिथुन	स्कन्द षष्ठी व्रत,	19	6/41	50	6/28	43	6/31	43	6/38	08
	20	६	रवि	7:30	आर्द्रा	17:52	शिव	24:31	व	7:30	मिथुन	भ. 7/30 से 19/08 तक, शुक्र विशाखा में 7/24	20	6/42	48	6/29	42	6/32	42	6/39	07
	21	७	चन्द्र	6:45	पुन.	17:32	सिद्ध	22:26	ब	6:45	क.11/40	**अहोई अष्टमी व्रत**	21	6/43	47	6/29	41	6/33	41	6/39	06
	०	८	चन्द्र	29:26	००	00:00	००	०:०	०	०:०	००	अष्टमी तिथि का क्षय ०० ०० ००	०	००	००	००	००	००	००	००	००
	22	९	मंग	27:33	पुष्य	16:39	साध्य	19:55	तै	16:30	कर्क	**मंगल पूर्व में उदय 30/36**, गण्डमूल 16/39 बाद	22	6/43	46	6/30	40	6/34	40	6/39	06
	23	१०	बुध	25:9	आश्ले	15:13	शुभ	16:57	व	14:21	सिं.15/13	भ. 14/21 से 25/09 तक, **बुध वृश्चिक में** 23/21, सूर्य सायन वृश्चिक**(F)**	23	6/44	45	6/31	39	6/34	39	6/40	05
	24	११	गुरु	22:19	मघा	13:18	शुक्ल	13:36	ब	11:44	सिंह	**रमा एकादशी व्रत**, सूर्य स्वाती में 17/58, कौमुदि महोत्सव प्रारम्भ	24	6/45	44	6/31	38	6/35	38	6/40	05
	25	१२	शुक्र	19:8	पू.फा.	11:0	ब्रह्म / ऐन्द्र	9:56 / 30:3	कौ	8:44	कं.16/23	गोवत्स द्वादशी, प्रदोष व्रत (देखें पृ. 22), **धन त्रयोदशी** (देखें पृ.22)**(G)**	25	6/46	43	6/32	37	6/36	37	6/40	04
	26	१३	शनि	15:47	उ.फा. / हस्त	8:27 / 29:49	वैधृ	26:5	व	15:47	कन्या	भ. 15/47 से 26/05 तक, **धनवन्तरी जयन्ती, श्रीहनुमान–जयन्ती,(H)**	26	6/47	42	6/33	37	6/37	36	6/41	04
	27	१४	रवि	12:23	चित्रा	27:17	विष्क	22:10	श	12:23	तु.16/32	नरक–चतुर्दशी (पूर्व अरुणोदय वाली), रुप चौदश, **दीपावली, (I)**	27	6/47	41	6/33	36	6/37	35	6/41	04
	28	३०	चन्द्र	9:9	स्वा.	25:0	प्रीति	18:26	ना	9:9	तुला	**कार्तिक (सोमवती) अमावस**, तीर्थस्नान माहात्म्य, मेला हरिद्वार–प्रयागराज**(J)**	28	6/48	40	6/34	35	6/38	34	6/41	03
का. शुक्ल	०	१	चन्द्र	30:13	००	00:00	००	०:०	०	०:०	००	**कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा का क्षय** ०० ००	०	००	००	००	००	००	००	००	००
	29	२	मंग	27:48	विशा	23:11	आयु	15:2	बा	17:1	वृ.17/35	चन्द्रदर्शन, मु. 30, **भ्रातृ (भाई) दूज**, यमद्वितीया, बुध अनु. में 30/18,**(K)**	29	6/49	39	6/35	34	6/39	33	6/42	03
	30	३	बुध	26:2	अनु.	21:59	सौभा	12:5	तै	14:55	वृश्चिक	शुक्र अनु. में 24/53, रबि–उल्लावल (मु.) मास प्रारम्भ	30	6/50	38	6/36	34	6/40	32	6/42	03
	31	४	गुरु	25:2	ज्ये.	21:31	शोभ	9:42	व	13:32	ध.21/31	भ. 13/32 से 25/02 तक, दूर्वा गणपति व्रत, मंगल चित्रा में 9/17, **(L)**	31	6/51	17/37	6/36	17/33	6/40	17/31	6/43	18/02

(A) शुक्र बाल्यत्व समाप्त 18/12 **(B)** आयुध/शस्त्रादि पूजन, सीमोल्लंघन **(C)** शुक्र स्वा. में 13/56, भरत–मिलाप **(D)** श्रीसत्यनारायण व्रत, महर्षि वाल्मीकि जयन्ती, कार्तिक स्नान प्रारम्भ, गं.मू. 7/53 बाद, बुध विशा. में 29/50 **(E) सूर्य तुला में 25/02, कार्तिक संक्रान्ति**, मु. 45, पुण्यकाल सं. अगले दिन प्रातः 7/26 तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत**, गुरु ज्ये. (4) में 27/17, आकाश–दीपदान प्रारम्भ **(F)** में 22/50, हेमन्त ऋतु प्रारम्भ, शक कार्तिक प्रारम्भ **(G)** यमाय प्रीत्यर्थ दीपदान **(H)** (अर्द्धरात्रि–व्यापिनी) (देखें पृष्ठ 22), यमाय–तर्पण, मासशिवरात्रि व्रत **(I) श्रीमहालक्ष्मी पूजन** (देखें पृष्ठ 172), कुबेर–पूजा, सायं दीपदान देवालये, प्रभात–स्नान, काली पूजन, कौमुदि महोत्सव सम्पन्न **(J) अन्नकूट, गोवर्धन पूजा**, गोक्रीड़ा, बलिपूजा, श्रीमहावीर–निर्वाण (जैन), विश्वकर्मा दिवस (पंजाब), **शुक्र वृश्चिक में 8/31** **(K)** विश्वकर्मा पूजन, यमुना–स्नान, कलम–दवात पूजन, प्लूटो उ.षा. 1 में 7/04 **(L) बुध वक्री 21/08**, गण्डमूल विचार

वि. संवत् 2076, नवम्बर महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2019 ई.

मास पक्ष	नवम्बर	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	करण	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश — सूर्य दक्षिणायन — घण्टा–मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] — हेमन्त ऋतुः	ता. नव.	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
कार्तिक शुक्ल पक्ष	1	५	शुक्र	24	51	मूल	21	52	अति	7	57	ब	12	56	धनु	नवम्बर मास प्रारम्भ, ज्ञान-पंचमी, जया-पंचमी, गण्डमूल 21/52	1	6/52	17/36	6/37	17/32	6/41	17/30	6/43	18/02
	2	६	शनि	25	31	पू.षा.	23	1	सुक धृति.	6 30	51 23	कौ	13	11	म.29/26	वक्री बुध विशा. (4) में 9/39, **सूर्य षष्ठी पर्व (बिहार)**	2	6/52	35	6/37	34	6/41	30	6/44	01
	3	७	रवि	26	56	उ.षा.	24	55	शूल	30	29	ग	14	14	मकर	भ. 26/56 से,	3	6/53	34	6/38	33	6/42	29	6/44	01
	4	८	चन्द्र	28	57	श्रव.	27	23	गंड	–	–	वि	15	57	मकर	भ. 15/57 तक, **गोपाष्टमी, गुरु मूल 1 धनु में 29/16**	4	6/54	33	6/39	32	6/43	28	6/45	00
	5	९	मंग	–	–	धनि.	30	15	गंड	7	00	बा	18	10	कुं.16/47	**पंचक प्रारम्भ 16/47, अक्षय-नवमी,** कूष्माण्ड-नवमी, आरोग्य व्रत	5	6/55	33	6/39	31	6/44	27	6/45	18/00
	6	९	बुध	7	22	शत.	–	–	वृद्धि	7	47	कौ	7	22	कुम्भ	सूर्य विशाखा में 26/03, वक्री बुध पश्चिम में अस्त 6/52	6	6/56	32	6/40	30	6/45	26	6/45	17/59
	7	१०	गुरु	9	55	शत.	9	15	ध्रुव	8	42	ग	9	55	मी.29/29	भ. 23/10 से, **वक्री बुध तुला में 15/25,**	7	6/57	31	6/41	30	6/46	26	6/46	59
	8	११	शुक्र	12	25	पू.भा.	12	12	व्या.	9	33	वि	12	25	मीन	भ. 12/25 तक, **हरिप्रबोधिनी एकादशी व्रत, तुलसी विवाह** (उ.भा.भे) **(A)**	8	6/58	30	6/42	29	6/46	25	6/46	58
	9	१२	शनि	14	40	उ.भा.	14	56	हर्ष	10	15	बा	14	40	मीन	**शनि प्रदोष व्रत**, गण्डमूल 14/56 बाद, **हरिप्रबोधोत्सव**	9	6/58	30	6/43	28	6/47	24	6/47	58
	10	१३	रवि	16	33	रेव	17	19	वज्र	10	41	तै	16	33	मे.17/19	**पंचक समाप्त 17/19**, वैकुण्ठ चतुर्दशी, मंगल तुला में 14/23, शुक्र ज्ये. में 18/29	10	6/59	29	6/43	28	6/48	24	6/47	58
	11	१४	चन्द्र	18	2	अश्वि	19	17	सिद्धि	10	48	व	18	2	मेष	भ. 18/02 से 30/34 तक, गण्डमूल 19/17 तक	11	7/00	28	6/44	27	6/49	23	6/48	57
	12	१५	मंग	19	5	भर.	20	51	व्य.	10	36	ब	19	5	वृ.27/11	**कार्तिक पूर्णिमा, श्रीगुरु नानक जयन्ती, भीष्म पंचक समाप्त, (B)**	12	7/01	27	6/45	26	6/50	22	6/49	57
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	13	१	बुध	19	42	कृति.	22	1	वरी	10	4	बा	7	24	वृष	मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष प्रारम्भ, राहु आर्द्रा (3) केतु पू.षा. 1 में 24/38, **(C)**	13	7/02	27	6/46	26	6/51	22	6/49	57
	14	२	गुरु	19	55	रोहि.	22	47	परि.	9	13	तै	7	49	वृष	नेहरू जयन्ती (बाल-दिवस)	14	7/03	26	6/46	25	6/51	21	6/50	56
	15	३	शुक्र	19	46	मृग	23	12	शिव सिद्ध	8 30	4 38	व	7	51	मि.11/02	भ. 7/51 से 19/46 तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 13, 23),**(D)**	15	7/04	26	6/47	25	6/52	21	6/50	56
	16	४	शनि	19	15	आर्द्रा	23	16	साध्य	28	55	ब	7	31	मिथुन	**सूर्य वृश्चिक में 24/50, मार्गशीर्ष संक्रान्ति**, मु. 45, पुण्यकाल **(E)**	16	7/05	25	6/48	24	6/53	20	6/51	56
	17	५	रवि	18	23	पुन.	22	59	शुभ	26	56	तै	18	23	क.17/05	वक्री बुध पूर्व में उदय 17/24,	17	7/06	25	6/49	24	6/54	20	6/51	55
	18	६	चन्द्र	17	10	पुष्य	22	21	शुक्ल	24	39	व	17	10	कर्क	भ. 17/10 से 28/23 तक, गण्डमूल 22/21 बाद	18	7/07	24	6/50	23	6/55	19	6/52	55
	19	७	मंग	15	36	आश्ले	21	23	ब्रह्म	22	6	ब	15	36	सिं.21/23	**श्रीकालभैरवाष्टमी** (देखें पृष्ठ 23), भैरव-जयन्ती, गण्डमूल	19	7/08	24	6/50	23	6/56	19	6/52	55
	20	८	बुध	13	41	मघा	20	5	ऐन्द्र	19	17	कौ	13	41	सिंह	सूर्य अनु. में 8/10, मंगल स्वाती में 18/12, **बुध मार्गी 24/38**, गण्डमूल	20	7/08	23	6/51	22	6/57	19	6/53	55
	21	९	गुरु	11	29	पू.फा.	18	29	वैधृ	16	14	ग	11	29	कं.24/03	भ. 22/16 से, **गुरु मूल 2 में 9/30, शुक्र धनु में 12/22**	21	7/09	23	6/52	22	6/57	18	6/54	55
	22	१०	शुक्र	9	2	उ.फा.	16	41	विष्क	13	00	वि	9	2	कन्या	भ. 9/02 तक, **उत्पन्ना एकादशी व्रत** (स्मार्त), सूर्य सायन धनु में 20/29**(F)**	22	7/10	22	6/53	22	6/58	18	6/54	55
	०	११	शुक्र	30	24	००	००	००	००	०	०	०	०	०	००	**एकादशी तिथि का क्षय** ०० ०० ००	०	००	००	००	००	००	००	००	००
	23	१२	शनि	27	43	हस्त	14	45	प्रीति आयु	9 30	38 14	कौ	17	4	तु.25/46	**उत्पन्ना एकादशी व्रत** (वैष्णव), त्रिस्पर्शा महाद्वादशी	23	7/11	22	6/54	21	6/59	18	6/55	55
	24	१३	रवि	25	6	चित्रा	12	48	सौभा	26	54	ग	14	25	तुला	भ. 25/06 से, **प्रदोष व्रत**	24	7/12	22	6/54	21	7/00	18	6/55	55
	25	१४	चन्द्र	22	41	स्वा.	10	57	शोभ	23	44	वि	11	54	वृ.27/44	भ. 11/54 तक, शनि पू.षा. 4 में 22/02, मासशिवरात्रि व्रत, देविका **(G)**	25	7/13	21	6/55	21	7/01	17	6/56	55
	26	३०	मंग	20	36	विशा.	9	23	अति	20	51	च	9	39	वृश्चिक	**मार्गशीर्ष अमावस, भौमवती अमावस** (देखें पृ. 24,) ,बुध विशा. में 15/57	26	7/14	21	6/56	20	7/02	17	6/56	55
मार्ग. शुक्ल	27	१	बुध	18	59	अनु.	8	12	सुक	18	21	किं	7	48	वृश्चिक	मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, गण्डमूल 8/12 बाद, नैपच्यून मार्गी 18/06	27	7/15	21	6/57	20	7/03	17	6/57	55
	28	२	गुरु	17	59	ज्ये.	7	34	धृति	16	19	कौ	17	59	ध. 7/34	चन्द्रदर्शन, मु. 30, गण्डमूल विचार	28	7/16	21	6/58	20	7/03	17	6/57	55
	29	३	शुक्र	17	40	मूल	7	34	शूल	14	49	ग	17	40	धनु	भ. 29/53 से, रवि-उल्सानी (मु.) मास प्रारम्भ, गण्डमूल 7/34 तक	29	7/16	20	6/58	20	7/04	17	6/58	55
	30	४	शनि	18	5	पू.षा.	8	16	गंड	13	53	वि	18	5	म.14/33	भद्रा 18/05 तक,	30	7/17	17/20	6/59	17/20	7/05	17/17	6/59	17/55

(A) चातुर्मास्य व्रत, नियमादि समाप्त, भीष्मपंचक प्रारम्भ **(B)** कार्तिकस्नान समाप्त, मेला रामतीर्थ (अमृतसर) पं., पुष्करतीर्थ (राज.), त्रिपुरोत्सव, भरणी दीपम्, श्रीसत्यनारायण व्रत **(C)** मृगछोड़ी स्नान प्रा., पद्मक योग (22/01 तक) (पुष्कर-स्नान माहात्म्य) **(D)** वक्री बुध स्वा. 4 में 21/14, सौभाग्यसुन्दरी व्रत **(E)**सं. अगले दिन प्रातः 7/14 तक, आकाश दीपदान समाप्ति **(F)**शक मार्गशीर्ष शुरू **(G)** स्नान ([illegible]), मेला पुरमण्डल (जम्मू), श्रीबालाजी जयन्ती

वि. संवत् 2076, दिसम्बर महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2019 ई.

मास पक्ष	दिसम्बर	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	करण	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश [सूर्य दक्षिण/उत्तरायणे] घण्टा–मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] [हेमन्त/शिशिर ऋतुः]	दि. ता.	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	1	५	रवि	19	14	उ.षा.	9	40	वृद्धि	13	30	बा	19	14	मकर	दिसम्बर मास (2019 ई.) प्रारम्भ, शुक्र पू.षा. में 30/28, श्रीपञ्चमी, (A)	1	7/18	17/20	7/00	17/20	7/06	17/16	6/59	17/56
	2	६	चन्द्र	21	00	श्रव.	11	43	ध्रुव	13	37	कौ	8	7	कुं.24/57	**पंचक प्रारम्भ 24/57**, स्कन्द (गुह) षष्ठी, चम्पा षष्ठी	2	7/19	20	7/01	20	7/07	16	7/00	56
	3	७	मंग	23	14	धनि.	14	17	व्या.	14	8	ग	10	7	कुम्भ	भ. 23/14 से, सूर्य ज्येष्ठा में 12/22, मित्र (विष्णु) सप्तमी	3	7/20	20	7/02	20	7/08	16	7/01	56
	4	८	बुध	25	44	शत.	17	9	हर्ष	14	53	वि	12	29	कुम्भ	भ. 12/29 तक, श्रीदुर्गाष्टमी,	4	7/21	20	7/02	20	7/08	16	7/01	56
	5	९	गुरु	28	16	पू.भा.	20	7	वज्र	15	44	बा	15	0	मी.13/23	**बुध वृश्चिक में 10/31**, नन्दा–नवमी	5	7/21	20	7/03	20	7/09	16	7/02	57
	6	१०	शुक्र	30	35	उ.भा.	22	57	सिद्धि	16	30	तै	17	26	मीन	गुरु मूल (3) में 13/19, गण्डमूल 22/57 बाद	6	7/22	20	7/04	20	7/10	16	7/03	57
	7	११	शनि	–	–	रेव.	25	28	व्य.	17	3	व	19	33	मे.25/28	भ. 19/33 से, **पंचक समाप्त 25/28**, बुध अनु. में 20/26	7	7/23	20	7/05	20	7/11	17	7/03	57
	8	११	रवि	8	30	अश्वि	27	30	वरी	17	15	वि	8	30	मेष	भ. 8/30 तक, **मोक्षदा एकादशी व्रत**, **श्रीगीता-जयन्ती**, गण्डमूल 27/30 तक	8	7/24	20	7/05	20	7/11	17	7/04	57
	9	१२	चन्द्र	9	54	भर.	29	1	परि	17	3	बा	9	54	मेष	**सोम प्रदोष व्रत**, अखण्ड द्वादशी, अनङ्ग त्रयोदशी व्रत	9	7/25	20	7/06	21	7/12	17	7/05	58
	10	१३	मंग	10	44	कृति	29	57	शिव	16	25	तै	10	44	वृ.11/18	मंगल विशा. में 21/59, **पिशाचमोचन श्राद्ध**, शिव चतुर्दशी व्रत	10	7/25	21	7/07	21	7/13	17	7/05	58
	11	१४	बुध	10	59	रोहि	30	22	सिद्ध	15	20	व	10	59	वृष	भ. 10/59 से 22/51 तक, **श्रीदत्तात्रेय जयन्ती**, श्रीसत्यनारायण व्रत, (B)	11	7/26	21	7/07	21	7/14	17	7/06	58
	12	१५	गुरु	10	42	मृग	30	18	साध्य	13	50	ब	10	42	मि.18/23	**मार्गशीर्ष पूर्णिमा**, शुक्र उ.षा. में 25/10, गुरु वार्धक्य प्रारम्भ 17/15	12	7/27	21	7/08	21	7/14	17	7/07	59
पौष कृष्ण पक्ष	13	१	शुक्र	9	57	आर्द्रा	29	51	शुभ	11	59	कौ	9	57	मिथुन	पौष कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, **[गुरु अस्त 15 दिसंबर]**	13	7/28	21	7/09	21	7/15	18	7/07	59
	14	२	शनि	8	47	पुन.	29	3	शुक्ल	9	49	ग	8	47	क.23/17	भ. 20/03 से 31/19 तक,	14	7/28	21	7/09	22	7/16	18	7/08	59
	०	३	शनि	31	19	००	00	00	००	०	०	०	०	०	००	**तृतीया तिथि का क्षय** ०० ०० ००	०	००	००	००	००	००	००	००	००
	15	४	रवि	29	35	पुष्य	28	1	ब्रह्म / ऐन्द्र	7 / 28	24 / 47	ब	18	27	कर्क	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 13), गुरु पश्चिम में अस्त 17/15, (C)	15	7/29	22	7/10	22	7/16	18	7/08	17/59
	16	५	चन्द्र	27	40	आश्ले	26	47	वैधृ	26	1	कौ	16	38	सिं.26/47	**सूर्य मूल 1 धनु में 15/27, पौष संक्रान्ति**, मु. 15, पुण्यकाल (D)	16	7/29	22	7/11	22	7/17	19	7/09	18/00
	17	६	मंग	25	38	मघा	25	26	विष्क	23	9	ग	14	39	सिंह	भ. 25/38 से, बुध पूर्व में अस्त 29/16, गण्डमूल 25/26 तक	17	7/30	22	7/11	23	7/18	19	7/09	00
	18	७	बुध	23	31	पू.फा.	24	1	प्रीति	20	14	वि	12	35	कं.29/39	भ. 12/35 तक,	18	7/31	23	7/12	23	7/18	20	7/10	01
	19	८	गुरु	21	23	उ.फा.	22	34	आयु	17	16	बा	10	27	कन्या	रुक्मिणी अष्टमी, अष्टका श्राद्ध **[कंकण सूर्यग्रहण 26 दिसंबर]**	19	7/31	23	7/12	23	7/19	20	7/10	01
	20	९	शुक्र	19	17	हस्त	21	9	सौभा	14	20	तै	8	20	कन्या	भ. 30/17 से, गुरु मूल (4) में 28/57	20	7/32	24	7/13	24	7/19	20	7/11	02
	21	१०	शनि	17	16	चित्रा	19	49	शोभ	11	26	वि	17	16	तु. 8/28	भ. 17/16 तक, श्रीपार्श्वनाथ जयन्ती (जैन)	21	7/32	24	7/14	24	7/20	21	7/11	02
	22	११	रवि	15	23	स्वा.	18	38	अति / सुक	8 / 30	39 / 1	बा	15	23	तुला	**सफला एकादशी व्रत**, सूर्य सायन मकर में 9/50, सायन उत्तरायण शुरु (E)	22	7/33	25	7/14	25	7/20	21	7/12	03
	23	१२	चन्द्र	13	42	विशा.	17	40	धृति	27	35	तै	13	42	वृ.11/53	**सोम प्रदोष व्रत**, शुक्र श्रवण में 20/41	23	7/33	25	7/15	26	7/21	22	7/12	03
	24	१३	मंग	12	19	अनु.	16	59	शूल	25	25	व	12	19	वृश्चिक	भ. 12/19 से 23/49 तक, मासशिवरात्रि व्रत, गण्डमूल 16/59 बाद	24	7/34	26	7/15	26	7/21	23	7/13	04
	25	१४	बुध	11	18	ज्ये.	16	41	गंड	23	34	श	11	18	ध.16/41	**अमावस** (पितृकार्येषु–11/18 बाद), **मंगल वृश्चिक में 21/27**, (F)	25	7/34	26	7/15	27	7/22	23	7/13	04
	26	३०	गुरु	10	43	मूल	16	50	वृद्धि	22	6	ना	10	43	धनु	**पौष अमावस, कंकण सूर्यग्रहण** (भारत में दृश्य) (देखें पृ.27), शनि उ.षा. 1 में (G)	26	7/35	27	7/16	27	7/22	24	7/14	05
पौष शुक्ल	27	१	शुक्र	10	40	पू.षा.	17	30	ध्रुव	21	3	ब	10	40	म.23/45	पौष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 45, शनि पश्चिम में अस्त 29/28, ग्रहणवेध दिन	27	7/35	27	7/16	28	7/23	24	7/14	05
	28	२	शनि	11	10	उ.षा.	18	43	व्या.	20	27	कौ	11	10	मकर	जमादि–उल्लावल (मु.) मास प्रारम्भ, आरोग्य व्रत, ग्रहणवेध दिन	28	7/35	28	7/17	29	7/23	25	7/14	06
	29	३	रवि	12	16	श्रव.	20	30	हर्ष	20	17	ग	12	16	मकर	भ. 25/06 से, सूर्य पू.षा. में 17/35, ग्रहणवेध दिन, गौरी पूजन	29	7/36	29	7/17	29	7/23	26	7/15	06
	30	४	चन्द्र	13	55	धनि.	22	47	वज्र	20	30	वि	13	55	कुं. 9/35	भ. 13/55 तक, **पंचक प्रारम्भ** 9/35, मंगल अनु. में 20/39	30	7/36	29	7/17	30	7/24	26	7/15	07
	31	५	मंग	16	2	शत.	25	28	सिद्धि	21	4	बा	16	2	कुम्भ		31	7/36	17/30	7/18	17/31	7/24	17/27	7/15	18/07

(A) श्रीराम-विवाहोत्सव, नाग-पंचमी **(B)** त्रिपुरभैरव-जयन्ती **(C)** **शुक्र मकर में 17/57**, गण्डमूल 28/01 बाद **(D)** सं. प्रातः 9/03 बाद, बुध ज्येष्ठा में 22/20 **(E)** शिशिर ऋतु प्रारम्भ, शक पौष प्रारम्भ **(F)** **बुध मूल 1 धनु में 15/44**, क्रिसमिस डे (क्रिश्चियन), ग्रहणवेध प्रारम्भ **(G)** 26/18, गण्डमूल 16/50 तक

वि. संवत् 2076, जनवरी महीने का तिथ्यादि पंचाङ्ग घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.) सन् 2020 ई.

मास पक्ष	जनवरी	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	करण	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश — सूर्य उत्तरायण — घण्टा–मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] — शिशिर ऋतुः	ता.	जम्मू सूर्योदय घं. मि.	जम्मू सूर्यास्त घं. मि.	दिल्ली सूर्योदय घं. मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मि.	मुम्बई सूर्योदय घं. मि.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मि.
पौष शुक्ल पक्ष	1	६	बुध	18:28	पू.भा.	28:23	व्य.	21:50	तै	18:28	मी.21/38	जनवरी (सन् 2020 ई०) मास प्रारम्भ	1	7/37	17/31	7/18	17/31	7/24	17/28	7/16	18/08
	2	७	गुरु	21:1	उ.भा.	31:20	वरी	22:40	ग	7:45	मीन	भ. 21/01 से, बुध पू.षा. में 28/18, मार्तण्ड-सप्तमी, श्रीगुरु गोबिन्द सिंह(A)	2	7/37	32	7/18	32	7/25	28	7/16	09
	3	८	शुक्र	23:27	रेव.	–:–	परि.	23:24	वि	10:14	मीन	भ. 10/14 तक, शुक्र धनि. में 17/22, श्रीदुर्गाष्टमी, महारूद्र व्रत, गं.मू.	3	7/37	32	7/19	32	7/25	29	7/16	10
	4	९	शनि	25:33	रेव.	10:5	शिव	23:54	बा	12:30	मे.10/05	**पंचक समाप्त 10/05**, गुरु पू.षा. 1 में 16/19, गण्डमूल विचार	4	7/37	33	7/19	33	7/25	30	7/17	10
	5	१०	रवि	27:7	अश्वि	12:27	सिद्ध	24:0	तै	14:20	मेष	**गण्डमूल 12/27 तक, स. सि. यो.**	5	7/37	34	7/19	34	7/25	31	7/17	11
	6	११	चन्द्र	28:3	भर.	14:15	साध्य	23:37	व	15:35	वृ.20/36	भ. 15/35 से 28/03 तक, **पुत्रदा एकादशी व्रत** — गुरु उदय 10 जन.	6	7/37	35	7/19	34	7/25	31	7/17	11
	7	१२	मंग	28:15	कृति.	15:24	शुभ	22:42	ब	16:9	वृष	सुजन्म द्वादशी, स. सि. यो.	7	7/37	35	7/19	35	7/25	32	7/17	12
	8	१३	बुध	27:45	रोहि.	15:51	शुक्ल	21:14	कौ	16:0	मि.27/49	प्रदोष व्रत, **शुक्र कुम्भ में 28/22**	8	7/38	36	7/19	36	7/25	33	7/17	12
	9	१४	गुरु	26:35	मृग.	15:38	ब्रह्म	19:14	ग	15:10	मिथुन	भ. 26/35 से, ईशान व्रत	9	7/38	37	7/19	37	7/25	34	7/17	13
	10	१५	शुक्र	24:51	आर्द्रा	14:49	ऐन्द्र	16:46	वि	13:43	मिथुन	भ. 13/43 तक, **पौष पूर्णिमा**, श्रीसत्यनारायण व्रत, माघस्नान प्रारम्भ(B)	10	7/38	38	7/19	38	7/25	35	7/18	14
माघ कृष्ण पक्ष	11	१	शनि	22:41	पुन.	13:30	वैधृ	13:54	बा	11:46	क. 7/52	माघ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, सूर्य उ.षा. में 19/34, बुध उ.षा. में 10/58	11	7/37	39	7/20	38	7/25	36	7/18	14
	12	२	रवि	20:12	पुष्य	11:50	विष्क / प्रीति	10:45 / 31:25	तै	9:27	कर्क	भ. 30/53 से, स्वामी विवेकानन्द जयन्ती, गण्डमूल 11/50 बाद	12	7/37	40	7/20	39	7/25	36	7/18	15
	13	३	चन्द्र	17:33	आश्ले	9:55	आयु	27:58	वि	17:33	सिं. 9/55	भ. 17/33 तक, **श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 13), (C)	13	7/37	41	7/19	40	7/25	37	7/19	16
	14	४	मंग	14:50	मघा / पू.फा.	7:55 / 29:57	सौभा	24:33	बा	14:50	सिंह	**सूर्य मकर में** 26/07, **मकर (माघ) संक्रान्ति**, पुण्यकाल सं. अगले (D)	14	7/37	42	7/19	41	7/25	38	7/19	17
	15	५	बुध	12:11	उ.फा.	28:7	शोभ	21:12	तै	12:11	कं.11/28	राहु आर्द्रा (2) केतु मूल 4 में 22/20	15	7/37	42	7/19	42	7/25	39	7/19	17
	16	६	गुरु	9:42	हस्त	26:31	अति	18:2	व	9:42	कन्या	भ. 9/42 से 20/35 **तक, शीतला-षष्ठी**	16	**7/37**	**43**	**7/19**	**42**	**7/25**	**40**	**7/19**	**18**
	०	७	गुरु	31:28	००	००:००	००	०:०	०	०:०	००	सप्तमी तिथि का क्षय ०० ०० ००	०	००	००	००	००	००	००	००	००
	17	८	शुक्र	29:34	चित्रा	25:13	सुक	15:6	बा	18:31	तु.13/49		17	7/37	44	7/19	43	7/24	41	7/19	18
	18	९	शनि	28:1	स्वा.	24:16	धृति	12:25	तै	16:48	तुला	गुरु पू.षा. (2) में 31/01, स. सि. यो.	18	7/36	45	7/19	44	7/24	42	7/19	19
	19	१०	रवि	26:52	विशा	23:41	शूल	10:2	व	15:27	वृ.17/48	भ. 15/27 से 26/52 तक, मंगल ज्येष्ठा में 14/30, बुध श्रवण में 10/41	19	7/36	46	7/18	45	7/24	43	7/19	20
	20	११	चन्द्र	26:6	अनु.	23:30	गंड / वृद्धि	7:58 / 30:13	ब	14:29	वृश्चिक	**षट्तिला एकादशी व्रत**, सूर्य सायन कुम्भ में 20/25, गण्डमूल 23/30 बाद	20	7/36	47	7/18	46	7/24	43	7/19	20
	21	१२	मंग	25:45	ज्ये.	23:43	ध्रुव	28:47	कौ	13:56	ध.23/43	तिल द्वादशी, शक माघ प्रारम्भ, गण्डमूल विचार	21	7/35	48	7/18	47	7/24	44	7/19	21
	22	१३	बुध	25:49	मूल	24:20	व्या.	27:40	ग	13:47	धनु	भ. 25/49 से, प्रदोष व्रत, गण्डमूल 24/20 तक	22	7/35	49	7/18	47	7/23	45	7/19	22
	23	१४	गुरु	26:18	पू.षा.	25:21	हर्ष	26:52	वि	14:4	धनु	भ. 14/04 तक, मासशिवरात्रि व्रत	23	7/35	50	7/17	48	7/23	46	7/19	22
	24	३०	शुक्र	27:12	उ.षा.	26:46	वज्र	26:24	च	14:45	म. 7/40	**माघ (मौनी) अमावस**, सूर्य श्रव. में 21/51, शनि उ.षा. 2 मकर में 9/53	24	7/34	51	7/17	49	7/23	47	7/19	23
माघ शुक्ल पक्ष	25	१	शनि	28:32	श्रव.	28:36	सिद्धि	26:15	किं	15:52	मकर	माघ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, शुक्र पू.भा. में 17/07, गुप्त नवरात्रे प्रारम्भ	25	7/34	52	7/17	50	7/22	48	7/19	23
	26	२	रवि	30:16	धनि.	30:49	व्य.	26:24	बा	17:24	कुं.17/39	चन्द्रदर्शन, मु. 30, **पंचक प्रारम्भ** 17/39, बुध धनि. में 29/03, (E)	26	7/33	53	7/16	51	7/22	49	7/18	24
	27	३	चन्द्र	–:–	शत.	–:–	वरी	26:51	तै	19:19	कुम्भ	जमादि-उल्सानी (मुस्लि.) मास प्रारम्भ,	27	7/33	54	7/16	52	7/21	50	7/18	24
	28	३	मंग	8:22	शत.	9:23	परि	27:32	ग	8:22	मी.29/30	भ. 21/34 से, गौरी तृतीया (गोंतरी) व्रत (देखें पृष्ठ 23), श्रीगणेश तिल चतुर्थी(F)	28	7/32	55	7/16	52	7/21	51	7/18	25
	29	४	बुध	10:46	पू.भा.	12:13	शिव	28:21	वि	10:46	मीन	भ. 10/46 तक, बुध पश्चिम में उदय 17/56	29	7/32	56	7/15	53	7/20	52	7/18	25
	30	५	गुरु	13:20	उ.भा.	15:12	सिद्ध	29:13	बा	13:20	मीन	**वसन्त-पंचमी**, श्रीपञ्चमी, सरस्वती पूजन, **बुध कुम्भ में 26/53**,(G)	30	7/31	57	7/15	54	7/20	53	7/18	26
	31	६	शुक्र	15:52	रेव.	18:10	साध्य	29:59	तै	15:52	मे.18/10	**पंचक समाप्त 18/10**	31	7/30	57	7/14	55	7/19	54	7/18	27

(A) जयन्ती (प्राचीनमतेन) (B) शाकम्भरी जयन्ती, गुरु पूर्व में उदय 7/32, यूरेनस मार्गी 31/16 (C) बुध मकर में 11/34, लोहड़ी पर्व, गुरु बाल्यत्व समाप्त 7/32, गौरी–वक्रतुण्ड चतुर्थी (D) दिन प्रातः 8/31 तक, निरयण उत्तरायण प्रारम्भ, गण्डमूल 7/55 तक, (E) भारत गणतन्त्र दिवस (71वाँ), बाबा श्रीलाल दयाल जयन्ती (ध्यानपुर) पं. (F) वरद (कुन्द) चतुर्थी (G) वागेश्वरी जयन्ती, शनि पूर्व में उदय 17/57

वि. संवत् 2076, फरवरी महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2020 ई.

सूर्योत्तरायण — शिशिर-वसन्त ऋतुः

मास पक्ष	फरवरी	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	करण	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा–मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.]	ता. फ़र.	जम्मू सूर्योदय घं. मि.	जम्मू सूर्यास्त घं. मि.	दिल्ली सूर्योदय घं. मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मि.	मुम्बई सूर्योदय घं. मि.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मि.
माघ शुक्ल पक्ष	1	७	शनि	18	11	अश्वि	20	54	शुभ	30	30	व	18	11	मेष	भ. 18/11 से 31/08 तक, रथ-आरोग्य-पुत्र सप्तमी, अचला-भानु **(A)**	1	7/30	17/58	7/14	17/56	7/19	17/54	7/17	18/28
	2	८	रवि	20	4	भर.	23	11	शुक्ल	30	37	ब	20	4	वृ.29/40	भीष्माष्टमी, **शुक्र मीन में 26/17**	2	7/29	17/59	7/13	57	7/18	55	7/17	28
	3	९	चन्द्र	21	20	कृति.	24	52	ब्रह्म	30	13	बा	8	42	वृष	बुध शत. में 29/25, गुरु पू.षा. 3 में 8/54	3	7/28	18/00	7/12	57	7/17	56	7/17	29
	4	१०	मंग	21	50	रोहि.	25	49	ऐन्द्र	29	13	तै	9	35	वृष		4	7/28	18/01	7/12	58	7/17	57	7/16	29
	5	११	बुध	21	31	मृग.	25	59	वैधृ	27	35	व	9	41	मि.14/00	भ. 9/41 से 21/31 तक, **जया एकादशी व्रत**, शुक्र उ.भा. में 21/56	5	7/27	02	7/11	17/59	7/16	58	7/16	30
	6	१२	गुरु	20	24	आर्द्रा	25	21	विष्क	27	19	ब	8	58	मिथुन	भीष्म-द्वादशी, तिल द्वादशी, सूर्य धनिष्ठा में 24/57	6	7/26	03	7/11	18/00	7/15	59	7/16	30
	7	१३	शुक्र	18	32	पुन.	24	1	प्रीति	22	29	कौ	7	28	क.18/24	प्रदोष व्रत, **मंगल मूल 1 धनु में 27/50**, मैला जैसलमेर (राज.) प्रा.-3 दिन	7	7/25	04	7/10	01	7/15	17/59	7/15	31
	8	१४	शनि	16	2	पुष्य	22	5	आयु	19	10	व	16	2	कर्क	भद्रा 16/02 से 26/33 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, गण्डमूल 22/05 से,	8	7/25	05	7/09	01	7/14	18/00	7/15	31
	9	१५	रवि	13	3	आश्ले	19	43	सौभा	15	28	ब	13	3	सिं.19/43	**माघ पूर्णिमा, माघस्नान समाप्त, श्रीगुरु रविदास जयन्ती**, श्रीललिता जयन्ती	9	7/24	06	7/09	02	7/13	01	7/14	32
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	10	१	चन्द्र	9	45	मघा	17	6	शोभ	11	32	कौ	9	45	सिंह	फाल्गुन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, गण्डमूल 17/06 तक,	10	7/23	07	7/08	03	7/12	02	7/14	32
	०	२	चन्द्र	30	19	००	00	00	००	०	०	०	०	०	००	द्वितीया तिथि का क्षय ०० ०० ००	०	००	००	००	००	००	००	००	००
	11	३	मंग	26	53	पू.फा.	14	23	अति सुक.	7 27	29 28	व	16	36	कं.19/43	भ. 16/36 से 26/53 तक,	11	7/22	08	7/07	04	7/11	03	7/13	33
	12	४	बुध	23	40	उ.फा.	11	46	धृति	23	37	ब	13	17	कन्या	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (चन्द्रोदय हेतु देखें पृष्ठ 13), नैपच्यून पू.भा. 2 में 16/42	12	7/21	09	7/06	05	7/11	04	7/13	33
	13	५	गुरु	20	47	हस्त	9	25	शूल	20	2	कौ	10	14	तु.20/23	सूर्य कुम्भ में 15/03, **फाल्गुन संक्रान्ति**, मु. 30, पुण्यकाल सं. प्रातः 8/39 बाद	13	7/20	09	7/05	05	7/10	04	7/12	34
	14	६	शुक्र	18	22	चित्रा स्वा.	7 30	28 1	गंड	16	50	ग	7	35	तुला	भ. 18/22 से 29/26 तक,	14	7/19	10	7/05	06	7/09	05	7/12	34
	15	७	शनि	16	30	विशा	29	9	वृद्धि	14	5	ब	16	30	वृ.23/19	श्रीनाथ-उत्सव	15	7/18	11	7/04	07	7/08	06	7/11	35
	16	८	रवि	15	14	अनु	28	54	ध्रुव	11	48	कौ	15	14	वृश्चिक	बुध वक्री 30/20, जानकी व्रत, गण्डमूल 28/54 बाद	16	7/17	12	7/03	08	7/07	07	7/11	35
	17	९	चन्द्र	14	36	ज्ये.	29	14	व्या.	10	1	ग	14	36	ध.29/14	भ. 26/35 से, शुक्र रेवती में 8/02, रामदास नवमी, गण्डमूल	17	7/16	13	7/02	08	7/06	08	7/10	36
	18	१०	मंग	14	33	मूल	30	6	हर्ष	8	43	वि	14	33	धनु	भ. 14/33 तक, स्वामी दयानन्द सरस्वती जयन्ती, गण्डमूल 30/06 तक	18	7/15	14	7/01	09	7/05	09	7/09	36
	19	११	बुध	15	3	पू.षा.	–	–	वज्र	7	50	बा	15	3	धनु	**विजया एकादशी व्रत**, सूर्य शत. में 29/29, गुरु पू.षा. 4 में 9/46 **(B)**	19	7/14	15	7/00	10	7/04	09	7/09	37
	20	१२	गुरु	16	0	पू.षा.	7	28	सिद्धि	7	19	तै	16	0	म.13/52	**प्रदोष व्रत**, शक फाल्गुन प्रारम्भ	20	7/13	16	6/59	11	7/03	10	7/08	37
	21	१३	शुक्र	17	22	उ.षा.	9	13	व्य.	7	8	व	17	22	मकर	भ. 17/22 से 30/13 तक, **श्रीमहाशिवरात्रि व्रत**	21	7/12	16	6/59	11	7/02	11	7/08	37
	22	१४	शनि	19	3	श्रव.	11	19	वरी	7	13	श	19	3	कुं.24/29	**पंचक प्रारम्भ 24/29**, शनि उ.षा. 3 में 30/33	22	7/11	17	6/58	12	7/01	12	7/07	38
	23	३०	रवि	21	2	धनि.	13	43	परि	7	32	च	8	3	कुम्भ	**फाल्गुन अमावस** (स्नानदान, तर्पणादि)	23	7/10	18	6/57	13	7/00	13	7/06	38
फाल्गुन शुक्ल	24	१	चन्द्र	23	15	शत	16	21	शिव	8	3	किं	10	9	कुम्भ	फाल्गुन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ	24	7/09	19	6/56	13	6/59	14	7/06	38
	25	२	मंग	25	40	पू.भा.	19	10	सिद्ध	8	45	बा	12	28	मी.12/27	चन्द्रदर्शन, मु. 30, श्रीरामकृष्ण परमहंस जयन्ती, फुलेरा-दूज (मथुरा)**(C)**	25	7/08	20	6/55	14	6/58	15	7/05	39
	26	३	बुध	28	12	उ.भा.	22	8	साध्य	9	33	तै	14	56	मीन	रजब (मुस्लि.) मास प्रारम्भ, गण्डमूल 22/08 बाद	26	7/07	21	6/54	15	6/57	15	7/04	39
	27	४	गुरु	30	45	रेव	25	8	शुभ	10	26	व	17	29	मे.25/08	भ. 17/29 से 30/45 तक, **पंचक समाप्त 25/08**, मंगल पू.षा. में 13/09	27	7/06	21	6/53	15	6/56	16	7/03	39
	28	५	शुक्र	–	–	अश्वि	28	3	शुक्ल	11	19	ब	19	58	मेष	याज्ञवल्क्य जयन्ती, **शुक्र अश्वि. 1 मेष में 25/32**, गण्डमूल 28/03 तक	28	7/04	18/22	6/52	18/16	6/55	18/16	7/03	18/39
	29	५	शनि	9	10	भर.	30	42	ब्रह्म	12	4	बा	9	10	मेष		29	7/03	18/23	6/52	18/16	6/55	18/16	7/03	18/39

(A) सप्तमी, श्रीमाधवाचार्य जयन्ती, फरवरी (2020 ई०) मास शुरु, गण्डमूल **(B)** सूर्य सायन मीन में 10/27, **वसन्त ऋतु प्रारम्भ**, वक्री बुध पश्चिम में अस्त 18/14 **(C)** उ.प्र., प्लूटो मकर में 11/33

वि. संवत् 2076, मार्च महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2020 ई.

मास पक्ष	मार्च	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	करण	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश — सूर्योत्तरायण — घण्टा–मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] — वसन्त ऋतुः
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	1	६	रवि	11:16	कृति.	–:–	ऐन्द्र	12:35	तै	11:16	वृ.13/18	मार्च (सन् 2020 ई०) मास प्रारम्भ
	2	७	चन्द्र	12:53	कृति.	8:55	वैधृ	12:44	व	12:53	वृष	भ. 12/53 से 25/22 तक,
	3	८	मंग	13:51	रोहि.	10:32	विष्क	12:22	ब	13:51	मि.23/03	**होलाष्टक प्रारम्भ**, अन्नपूर्णा-अष्टमी, वक्री बुध धनि. (4) में 13/21**(A)**
	4	९	बुध	14:0	मृग.	11:23	प्रीति	11:25	कौ	14:0	मिथुन	सूर्य पू.भा. में 11/42
	5	१०	गुरु	13:19	आर्द्रा	11:26	आयु	9:48	ग	13:19	क.28/55	भ. 24/33 से,
	6	११	शुक्र	11:47	पुन.	10:38	सौभा शोभ	7:30 28:35	वि	11:47	कर्क	भ. 11/47 तक, **आमलकी एकादशी व्रत**, गोविन्द द्वादशी
	7	१२	शनि	9:29	पुष्य	9:5	अति	25:6	बा	9:29	कर्क	शनि प्रदोष व्रत, गुरु उ.षा. 1 में 30/08
	०	१३	शनि	30:32	००	००:००	००	०:०	०	०:०	००	**त्रयोदशी तिथि का क्षय** ००
	8	१४	रवि	27:4	आश्ले मघा	6:52 28:10	सुक	21:11	ग	16:48	सिं. 6/52	भ. 27/04 से, महेश्वर व्रत, वृषदान व्रत
	9	१५	चन्द्र	23:18	पू.फा.	25:9	धृति	16:57	वि	13:11	कं.30/22	भ. 13/11 तक, **फाल्गुन पूर्णिमा** (स्नानदानादि), **होलाष्टक समाप्त, (B)**
चैत्र कृष्ण पक्ष	10	१	मंग	19:24	उ.फा.	22:2	शूल	12:34	बा	9:21	कन्या	चैत्र कृष्णपक्ष, बुध मार्गी 9/16, वसन्तोत्सव, **होली पर्व, होला-मेला (C)**
	11	२	बुध	15:34	हस्त	19:0	गंड वृद्धि	8:12 27:58	ग	15:34	तु.29/35	भ. 25/47 से, सन्त तुकाराम जयन्ती, शुक्र भरणी में 30/17
	12	३	गुरु	12:0	चित्रा	16:16	ध्रुव	24:4	वि	12:0	तुला	भ. 12/00 तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ–)
	13	४	शुक्र	8:51	स्वा.	14:0	व्या.	20:35	बा	8:51	वृ.30/41	श्रीरंग-पंचमी, मेला नवचण्डी (मेरठ) प्रा., मेला गुरु रामराय (देहरादून)
	०	५	शुक्र	30:17	००	००:००	००	०:०	०	०:०	००	**पंचमी तिथि का क्षय** ०० ०० ००
	14	६	शनि	28:26	विशा.	12:20	हर्ष	17:37	ग	17:22	वृश्चिक	भ. 28/26 से, **सूर्य मीन में 11/53, चैत्र संक्रान्ति**, मु. 45, पुण्यकाल **(D)**
	15	७	रवि	27:20	अनु.	11:23	वज्र	15:16	वि	15:53	वृश्चिक	भ. 15/53 तक, शीतला सप्तमी
	16	८	चन्द्र	27:0	ज्ये.	11:12	सिद्धि	13:31	बा	15:10	ध.11/12	**शीतलाष्टमी व्रत**
	17	९	मंग	27:24	मूल	11:46	व्य.	12:23	तै	15:12	धनु	सूर्य उ.भा. में 20/12, मंगल उ.षा. में 19/28, बुध शत. में 21/10
	18	१०	बुध	28:27	पू.षा.	13:1	वरी	11:47	व	15:56	म.19/25	भ. 15/56 से 28/27 तक, राहु आर्द्रा 1 केतु मूल 3 में 19/51
	19	११	गुरु	30:00	उ.षा.	14:50	परि	11:38	ब	17:14	मकर	पापमोचनी एकादशी व्रत (स्मार्त)
	20	१२	शुक्र	–:–	श्रव.	17:5	शिव	11:52	कौ	18:58	कुं.30/20	पापमोचनी एकादशी व्रत (वैष्णव), **पंचक प्रारम्भ 30/20**, सूर्य सायन **(E)**
	21	१२	शनि	7:56	धनि.	19:40	सिद्ध	12:22	तै	7:56	कुम्भ	**शनि प्रदोष व्रत, शक चैत्र एवं संवत् 1942 प्रारम्भ, (F)**
	22	१३	रवि	10:8	शत.	22:27	साध्य	13:2	व	10:8	कुम्भ	भ. 10/08 से 23/20 तक, **वारुणी योग** 10/08 तक, **मंगल मकर में (G)**
	23	१४	चन्द्र	12:31	पू.भा.	25:21	शुभ	13:51	श	12:31	मी.18/37	**(G) 14/39**, मासशिवरात्रि व्रत, मेला पृथूदक पिहोवातीर्थ (हरियाणा)–2 दिन
	24	३०	मंग	14:58	उ.भा.	28:19	शुक्ल	14:43	ना	14:58	मीन	चैत्र अमावस, **भौमवती अमावस**, शुक्र कृति. में 29/27, विक्रमी संवत् 2076 पूर्ण

होलाष्टक 3 से 9 मार्च

मार्च ता.	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
1	7/02	18/24	6/50	18/17	6/53	18/17	7/02	18/40
2	7/01	25	6/49	18	6/52	17	7/01	40
3	7/00	25	6/48	18	6/51	18	7/01	41
4	6/58	26	6/47	19	6/50	19	7/00	41
5	6/57	27	6/46	19	6/49	20	7/00	42
6	6/56	28	6/45	20	6/48	20	6/59	42
7	6/55	28	6/44	21	6/46	21	6/58	42
०	००	००	००	००	००	००	००	००
8	6/54	29	6/43	21	6/45	22	6/57	43
9	6/52	30	6/42	22	6/44	22	6/56	43
10	6/51	31	6/41	23	6/43	23	6/55	44
11	6/50	32	6/40	23	6/42	24	6/54	44
12	6/48	32	6/38	24	6/40	24	6/53	44
13	6/47	33	6/37	24	6/39	25	6/53	44
०	००	००	००	००	००	००	००	००
14	6/46	34	6/36	25	6/38	26	6/52	44
15	6/45	34	6/35	25	6/37	26	6/51	44
16	6/43	35	6/34	26	6/36	26	6/51	44
17	6/42	36	6/33	26	6/35	27	6/50	44
18	6/41	37	6/32	27	6/34	27	6/49	45
19	6/39	37	6/31	28	6/32	28	6/48	45
20	6/38	38	6/29	28	6/31	29	6/47	45
21	6/37	39	6/28	29	6/30	30	6/46	45
22	6/35	40	6/27	29	6/29	30	6/45	46
23	6/34	40	6/26	30	6/27	31	6/45	46
24	6/33	18/41	6/25	30	6/26	32	6/44	46

(A) वक्री बुध पूर्व में उदय 6/57, लक्ष्मी-सीताष्टमी **(B) होलिका दहन (प्रदोषकाले)**, श्रीसत्यनारायण व्रत, लक्ष्मीनारायण व्रत, श्रीचैतन्य महाप्रभु जयन्ती **(C)** (श्रीआनन्दपुर व पांओटा साहिब,), ध्वजारोहण, धुलण्डी, होलिका विभूति धारण, धूलिवन्दन, आम्रकुसुम प्राशन **(D)** सं. सारा दिन, एकनाथ षष्ठी **(E)** मेष में 9/20, उत्तर गोल प्रा., महाविषुव दिन **(F)** महावारुणी योग 19/40 बाद (देखें पृष्ठ 24)

सूर्य-बुध भेदयुति (संक्रमण) (Transit of Mercury)—(11 नवम्बर, 2019 ई. को एक अद्वितीय आकाशीय दृश्य)

इस वर्ष 11 नवम्बर, 2019 ई. को भा.स्टैं.टा. अनुसार सायं 18घं.-05मिं. से रात्रि 23घं.-34मिं. तक यह सूर्य-बुध संक्रमण होगा। अर्थात् सायं 18/05 बजे से बुध सूर्य बिम्ब के पूर्व से प्रविष्ट होकर रात्रि सूर्य बिम्ब के पश्चिम भाग से बाहर निकल जाएगा। क्योंकि यह भेदयुति सायंकाल प्रारम्भ होकर रात्रि तक चलेगी, इसलिए भारत में यह अद्भुत् आकाशीय घटना को नहीं देखा जा सकेगा। केवल गुजरात के सुदूर तटीय क्षेत्रों में जहाँ 11 नवम्बर, 2019 ई. को सूर्यास्त 18घं.-05मिं. के बाद होगा, वहाँ कुछ 2–3 मिन्टों के लिए इस घटना के आरम्भिक दृश्य को दूरबीन द्वारा देखा जा सकेगा।

चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश काल घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.) वि. संवत् २०७६ (सन् 2019-20 ई.)

(चन्द्रमा के नक्षत्र चरणों के अनुसार बच्चों (शिशुओं) का नामकरण करें।)

आगे लिखे चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश का समय घण्टे मिनटों में भा. स्टैं. टा. अनुसार दिया जा रहा है। रात्रि बारह (12) बजे के बाद के समय को आगामी तारीख के रूप में दर्शाया गया है। आगामी पृष्ठों पर दिया गया चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश का प्रारम्भ काल है, न कि समाप्तिकाल। इस सारिणी के प्रयोग से किसी जातक के जन्म समय (घण्टा-मिनटों में) के आधार पर शीघ्र ही जातक का जन्म नक्षत्र एवं उसका चरण आदि सुगमता से जान सकते हैं। प्राचीन परिपाटी के अनुसार घड़ी-पलों या भयात्-भभोग की गणित प्रक्रिया से नक्षत्र-चरण निकालने का झंझट नहीं होगा।

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘		1		2		3		4	
अप्रै. 2019	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
31मा/1 अप्रै.	धनि.	18	47	1	34	8	21	15	07
1/2 अप्रै.	शत.	21	54	4	38	11	21	18	05
3 अप्रै.	पू.भा.	0	49	7	28	14	07	20	46
4 अप्रै.	उ.भा.	3	25	9	58	16	30	23	03
5 अप्रै.	रेवती	5	36	12	02	18	29	5	55
6/7 अप्रै.	अश्वि.	7	22	13	42	20	03	2	24
7/8 अप्रै.	भरणी	8	44	14	59	21	13	3	28
8/9 अप्रै.	कृति.	9	43	15	54	22	01	4	10
9/10 अप्रै.	रोहि.	10	19	16	22	22	26	4	29
10/11 अप्रै.	मृग.	10	33	16	31	22	32	4	27
11/12 अप्रै.	आर्द्रा	10	25	16	17	22	10	4	02
12/13 अप्रै.	पुर्न	9	54	15	40	21	27	3	15
13/14 अप्रै.	पुष्य	8	59	14	39	20	20	2	00
14/15 अप्रै.	आश्ले	7	40	13	15	18	49	0	24
15 अप्रै.	मघा	5	59	11	29	17	00	22	31
16 अप्रै.	पू.फा.	4	01	9	28	14	56	20	24
17 अप्रै.	उ.फा.	1	51	7	17	12	43	18	09
17/18 अप्रै.	हस्त	23	36	5	03	10	31	15	58
18/19 अप्रै.	चित्रा	21	25	2	56	8	25	13	59
19/20 अप्रै.	स्वाती	19	30	1	07	6	44	12	21
20/21 अप्रै.	विशा	17	58	23	44	5	29	11	11
21/22 अप्रै.	अनु	17	01	22	57	4	53	10	49
22/23 अप्रै.	ज्येष्ठा	16	45	22	53	5	00	11	08
23/24 अप्रै.	मूल	17	16	23	36	5	55	12	15
24/25 अप्रै.	पू.षा.	18	35	1	05	7	36	14	06
25/26 अप्रै.	उ.षा.	20	37	3	14	9	56	16	35
26/27 अप्रै.	श्रवण	23	14	5	58	12	43	19	28
28 अप्रै.	धनि.	2	12	8	58	15	45	22	31
29/30 अप्रै.	शत.	5	18	12	02	18	47	1	31

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘		1		2		3		4	
अप्रै. 2019	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
30/1 मई	पू.भा.	8	15	14	54	21	34	4	15
1/2 मई	उ.भा.	10	52	17	24	23	57	6	29
2/3 मई	रेवती	13	02	19	26	1	51	8	15
3/4 मई	अश्वि.	14	40	20	27	2	53	9	20
4/5 मई	भरणी	15	47	21	56	4	06	10	15
5/6 मई	कृति	16	24	22	30	4	31	10	34
6/7 मई	रोहि	16	37	22	34	4	32	10	29
7/8 मई	मृग.	16	27	16	20	4	15	10	07
8/9 मई	आर्द्रा	16	00	21	49	3	39	9	28
9/10 मई	पुर्न	15	17	21	03	2	49	8	36
10/11 मई	पुष्य	14	21	20	04	1	47	7	30
11/12 मई	आश्ले	13	13	18	53	0	34	6	15
12/13 मई	मघा	11	55	17	33	23	11	4	49
13/14 मई	पू.फा.	10	27	16	03	21	40	3	17
14/15 मई	उ.फा.	8	53	14	29	20	04	1	40
15/16 मई	हस्त	7	16	12	52	18	29	0	05
16 मई	चित्रा	5	42	11	20	16	57	22	38
17 मई	स्वाती	4	16	9	59	15	41	21	24
18 मई	विशा	3	07	8	56	14	44	20	30
19 मई	अनु	2	22	8	18	14	15	20	11
20 मई	ज्येष्ठा	2	07	8	12	14	18	20	23
21 मई	मूल	2	29	8	44	15	00	21	15
22 मई	पू.षा.	3	31	9	56	16	22	22	47
23/24 मई	उ.षा.	5	13	11	44	18	22	0	57
24/25 मई	श्रवण	7	31	14	12	20	53	3	34
25/26 मई	धनि.	10	15	17	00	23	43	6	29
26/27 मई	शत.	13	14	19	59	2	43	9	28
27/28 मई	पू.भा.	16	13	22	54	5	36	12	19
28/29 मई	उ.भा.	18	58	1	33	8	08	14	43

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘		1		2		3		4	
मई 2019	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
29/30 मई	रेवती	21	18	3	44	10	11	16	37
30/31 मई	अश्वि.	23	03	5	20	11	38	17	55
1 जून	भरणी	0	12	6	20	12	27	18	35
2 जून	कृति.	0	43	6	44	12	41	18	40
3 जून	रोहि.	0	39	6	30	12	22	18	14
4 जून	मृग.	0	05	5	51	11	39	17	23
4/5 जून	आर्द्रा	23	09	4	50	10	32	16	13
5/6 जून	पुर्न.	21	54	3	33	9	11	14	51
6/7 जून	पुष्य	20	29	2	06	7	42	13	19
7/8 जून	आश्ले	18	56	0	32	6	09	11	46
8/9 जून	मघा	17	22	22	59	4	35	10	12
9/10 जून	पू.फा.	15	49	21	27	3	05	8	43
10/11 जून	उ.फा.	14	21	20	00	1	41	7	21
11/12 जून	हस्त	13	01	18	43	0	26	6	09
12/13 जून	चित्रा	11	51	17	37	23	21	5	09
13/14 जून	स्वा.	10	55	16	45	22	36	4	26
14/15 जून	विशा	10	16	16	12	22	07	4	01
15/16 जून	अनु.	9	59	16	01	22	03	4	05
16/17 जून	ज्ये.	10	07	16	16	22	25	4	34
17/18 जून	मूल	10	43	17	00	23	16	5	33
18/19 जून	पू.षा.	11	50	18	15	0	40	7	05
19/20 जून	उ.षा.	13	30	19	59	2	35	9	07
20/21 जून	श्रवण	15	39	22	18	4	56	11	35
21/22 जून	धनि.	18	14	0	57	7	39	14	24
22/23 जून	शत.	21	08	3	53	10	38	17	23
24 जून	पू.भा.	0	08	6	51	13	35	20	19
25 जून	उ.भा.	3	02	9	41	16	20	22	59
26/27 जून	रेवती	5	38	12	09	18	41	1	13
27/28 जून	अश्वि.	7	44	14	06	20	28	2	50

चन्द्रमा का नक्षत्र–चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘		1		2		3		4	
जून 2019	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
28/29 जून	भरणी	9	12	15	23	21	35	3	46
29/30 जून	कृति.	9	58	16	02	21	59	4	00
30/1 जुला	रोहि.	10	01	15	52	21	43	3	34
1/2 जुला	मृग.	9	25	15	07	20	53	2	32
2/3 जुला	आर्द्रा	8	14	13	49	19	25	1	00
3 जुला	पुन	6	36	12	07	17	37	23	09
4 जुला	पुष्य	4	39	10	07	15	34	21	02
5 जुला	आश्ले	2	30	7	57	13	24	18	51
6 जुला	मघा	0	18	5	46	11	14	16	42
6/7 जुला	पू.फा.	22	10	3	41	9	12	14	43
7/8 जुला	उ.फा.	20	14	1	47	7	24	12	59
8/9 जुला	हस्त	18	34	0	14	5	55	11	35
9/10 जुला	चित्रा	17	15	23	02	4	45	10	35
10/11 जुला	स्वा.	16	22	22	15	4	09	10	02
11/12 जुला	विशा.	15	55	21	55	3	56	9	54
12/13 जुला	अनु.	15	57	22	04	4	12	10	19
13/14 जुला	ज्ये.	16	27	22	42	4	56	11	11
14/15 जुला	मूल.	17	26	23	47	6	09	12	30
15/16 जुला	पू.षा.	18	52	1	20	7	47	14	15
16/17 जुला	उ.षा.	20	43	3	15	9	51	16	25
17/18 जुला	श्रवण	22	59	5	38	12	16	18	55
19 जुला	धनि.	1	34	8	17	14	58	21	42
20/21 जुला	शत.	4	25	11	10	17	55	0	40
21/22 जुला	पू.भा.	7	25	14	10	20	55	3	40
22/23 जुला	उ.भा.	10	25	17	07	23	50	6	32
23/24 जुला	रेवती	13	14	19	51	2	28	9	05
24/25 जुला	अश्वि.	15	42	22	11	4	41	11	10
25/26 जुला	भरणी.	17	39	23	58	6	18	12	37
26/27 जुला	कृति	18	57	1	09	7	14	13	22
27/28 जुला	रोहि.	19	30	1	27	7	24	13	21
28/29 जुला	मृग.	19	18	1	04	6	55	12	36
29/30 जुला	आर्द्रा	18	22	23	58	5	35	11	11
30/31 जुला	पुर्न.	16	47	22	15	3	44	9	15
31/1 अग.	पुष्य	14	41	20	04	1	26	6	49
1/2 अग.	आश्ले.	12	12	17	31	22	51	4	10
2/3 अग.	मघा	9	29	14	48	20	06	1	25

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘		1		2		3		4	
अग. 2019	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
3 अग.	पू.फा.	6	44	12	04	17	25	22	46
4 अग.	उ.फा.	4	06	9	28	14	55	20	19
5 अग.	हस्त	1	44	7	15	12	46	18	17
5/6 अग.	चित्रा	23	48	5	27	11	01	16	44
6/7 अग.	स्वा.	22	23	4	11	10	00	15	48
7/8 अग.	विशा.	21	36	3	34	9	32	15	26
8/9 अग.	अनु.	21	28	3	35	9	43	15	50
9/10 अग.	ज्ये.	21	58	4	15	10	32	16	49
10/11 अग.	मूल	23	06	5	31	11	55	18	20
12 अग.	पू.षा.	0	45	7	16	13	48	20	19
13 अग.	उ.षा.	2	51	9	26	16	05	22	42
14/15 अग.	श्रवण	5	19	12	00	18	40	1	21
15/16 अग.	धनि.	8	02	14	45	21	28	4	12
16/17 अग.	शत.	10	56	17	41	0	25	7	10
17/18 अग.	पू.भा.	13	55	20	40	3	25	10	10
18/19 अग.	उ.भा.	16	55	23	38	6	22	13	05
19/20 अग.	रेवती	19	48	2	28	9	09	15	49
20/21 अग.	अश्वि	22	29	5	03	11	38	18	12
22 अग.	भरणी	0	47	7	14	13	42	20	09
23 अग.	कृति.	2	36	8	58	15	11	21	29
24 अग.	रोहि.	3	47	9	54	16	02	22	09
25 अग.	मृग	4	16	10	12	16	13	22	03
26 अग.	आर्द्रा	3	59	9	43	15	28	21	12
27 अग.	पुन.	2	57	8	31	14	05	19	42
28 अग.	पुष्य	1	13	6	38	12	04	17	29
28/29 अग.	आश्ले	22	55	4	14	9	33	14	52
29/30 अग.	मघा	20	11	1	26	6	41	11	56
30/31 अग.	पू.फा.	17	11	22	25	3	39	8	53
31/1 सितं.	उ.फा.	14	07	19	22	0	39	5	55
1/2 सितं.	हस्त	11	11	16	29	21	47	3	05
2/3 सितं.	चित्रा	8	23	13	54	19	24	0	54
3 सितं.	स्वा.	6	24	12	01	17	39	23	16
4 सितं.	विशा.	4	53	10	41	16	30	22	14
5 सितं.	अनु.	4	07	10	07	16	08	22	09
6 सितं.	ज्ये.	4	09	10	21	16	34	22	46
7/8 सितं.	मूल	4	58	11	21	17	43	0	06

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘		1		2		3		4	
सितं. 2019	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
8/9 सितं.	पू.षा.	6	29	13	01	19	32	2	04
9/10 सितं.	उ.षा.	8	36	15	12	21	53	4	31
10/11 सितं.	श्रवण	11	09	17	51	0	34	7	16
11/12 सितं.	धनि.	13	59	20	44	3	28	10	13
12/13 सितं.	शत.	16	58	23	43	6	29	13	14
13/14 सितं.	पू.भा.	19	59	2	43	9	27	16	12
14/15 सितं.	उ.भा.	22	55	5	37	12	20	19	02
16 सितं.	रेवती	1	45	8	24	15	04	21	43
17/18 सितं.	अश्वि.	4	22	10	57	17	33	0	08
18/19 सितं.	भरणी.	6	44	13	14	19	45	2	15
19/20 सितं.	कृति.	8	45	15	11	21	32	3	56
20/21 सितं.	रोहि.	10	20	16	35	22	51	5	06
21/22 सितं.	मृग.	11	22	17	28	23	39	5	40
22/23 सितं.	आर्द्रा.	11	46	17	42	23	38	5	34
23/24 सितं.	पुन.	11	30	17	15	23	01	4	49
24/25 सितं.	पुष्य	10	31	16	06	21	42	3	17
25/26 सितं.	आश्ले.	8	53	14	20	19	46	1	13
26 सितं.	मघा	6	40	12	00	17	21	22	41
27 सितं.	पू.फा.	4	01	9	17	14	33	19	49
28 सितं.	उ.फा.	1	05	6	19	11	34	16	48
28/29 सितं.	हस्त	22	03	3	19	8	35	13	51
29/30 सितं.	चित्रा	19	07	0	27	5	45	11	08
30/1 अक्तू	स्वाती	16	29	21	57	3	25	8	53
1/2 अक्तू	विशा.	14	21	19	59	1	36	7	10
2/3 अक्तू	अनु.	12	52	18	41	0	31	6	20
3/4 अक्तू	ज्ये.	12	10	18	12	0	15	6	17
4/5 अक्तू	मूल.	12	19	18	34	0	49	7	04
5/6 अक्तू	पू.षा.	13	19	19	45	2	12	8	38
6/7 अक्तू	उ.षा.	15	04	21	36	4	15	10	50
7/8 अक्तू	श्रवण	17	25	0	07	6	48	13	30
8/9 अक्तू	धनि.	20	12	2	57	9	41	16	27
9/10 अक्तू	शत.	23	12	5	57	12	43	19	28
11 अक्तू	पू.भा.	2	14	8	58	15	42	22	26
12/13 अक्तू	उ.भा.	5	10	11	51	18	31	1	12
13/14 अक्तू	रेवती	7	53	14	30	21	06	3	43
14/15 अक्तू	अश्वि.	10	20	16	52	23	26	5	57

चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

चन्द्र नक्षत्र चरण		1		2		3		4	
अक्तू. 2019	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
15/16 अक्तू	भरणी	12	30	18	58	1	25	7	53
16/17 अक्तू	कृति.	14	21	20	46	3	06	9	29
17/18 अक्तू	रोहि.	15	52	22	09	4	25	10	42
18/19 अक्तू	मृग.	16	59	23	09	5	23	11	30
19/20 अक्तू	आर्द्रा	17	40	23	43	5	46	11	49
20/21 अक्तू	पुन.	17	52	23	47	5	42	11	40
21/22 अक्तू	पुष्य	17	32	23	19	5	05	10	52
22/23 अक्तू	आश्ले	16	39	22	17	3	56	9	34
23/24 अक्तू	मघा	15	13	20	44	2	16	7	47
24/25 अक्तू	पू.फा.	13	18	18	43	0	09	5	34
25/26 अक्तू	उ.फा.	11	00	16	23	21	43	3	05
26/27 अक्तू	हस्त	8	27	13	47	19	08	0	28
27 अक्तू	चित्रा	5	49	11	11	16	32	21	55
28 अक्तू	स्वा.	3	17	8	43	14	08	19	34
29 अक्तू	विशा	1	00	6	33	12	05	17	35
29/30 अक्तू	अनु.	23	11	4	53	10	35	16	17
30/31 अक्तू	ज्ये.	21	59	3	52	9	45	15	38
31/1 नवं.	मूल	21	31	3	36	9	42	15	47
1/2 नवं.	पू.षा.	21	52	4	09	10	27	16	44
2/3 नवं.	उ.षा.	23	01	5	26	11	58	18	26
4 नवं.	श्रवण	0	55	7	32	14	09	20	46
5 नवं.	धनि.	3	23	10	06	16	47	23	32
6/7 नवं.	शत.	6	15	13	00	19	45	2	30
7/8 नवं.	पू.भा.	9	15	15	59	22	44	5	29
8/9 नवं.	उ.भा.	12	12	18	53	1	34	8	15
9/10 नवं.	रेवती	14	56	21	32	4	07	10	43
10/11 नवं.	अश्वि.	17	19	23	48	6	18	12	47
11/12 नवं.	भरणी	19	17	1	40	8	04	14	27
12/13 नवं.	कृति.	20	51	3	11	9	26	15	43
13/14 नवं.	रोहि	22	01	4	12	10	24	16	35
14/15 नवं.	मृग.	22	47	4	53	11	02	17	06
15/16 नवं.	आर्द्रा	23	12	5	13	11	14	17	15
16/17 नवं.	पुर्न.	23	16	5	12	11	07	17	05
17/18 नवं.	पुष्य	22	59	4	49	10	40	16	30
18/19 नवं.	आश्ले.	22	21	4	06	9	52	15	37
19/20 नवं.	मघा	21	23	3	03	8	44	14	24

चन्द्र नक्षत्र चरण		1		2		3		4	
नवं. 2019	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
20/21 नवं.	पू.फा.	20	05	1	41	7	17	12	53
21/22 नवं.	उ.फा.	18	29	0	03	5	35	11	08
22/23 नवं.	हस्त	16	41	22	12	3	43	9	14
23/24 नवं.	चित्रा	14	45	20	16	1	46	7	17
24/25 नवं.	स्वा.	12	48	18	20	23	53	5	25
25/26 नवं.	विशा.	10	57	16	33	22	10	3	44
26/27 नवं.	अनु.	9	23	15	05	20	48	2	30
27/28 नवं.	ज्ये.	8	12	14	02	19	53	1	43
28/29 नवं.	मूल.	7	34	13	35	19	37	1	38
29/30 नवं.	पू.षा.	7	39	13	48	19	58	2	07
30/1 दिसं.	उ.षा.	8	16	14	33	20	58	3	19
1/2 दिसं.	श्रवण	9	40	16	11	22	41	5	12
2/3 दिसं.	धनि.	11	43	18	21	0	57	7	38
3/4 दिसं.	शत.	14	17	21	00	3	43	10	26
4/5 दिसं.	पू.भा.	17	09	23	53	6	38	13	23
5/6 दिसं.	उ.भा.	20	07	2	49	9	32	16	14
6/7 दिसं.	रेवती	22	57	5	35	12	12	18	50
8 दिसं.	अश्वि.	1	28	7	58	14	29	20	59
9 दिसं.	भरणी	3	30	9	53	16	15	22	38
10 दिसं.	कृति.	5	01	11	18	17	29	23	43
11/12 दिसं.	रोहि.	5	57	12	03	18	10	0	16
12/13 दिसं.	मृग.	6	22	12	21	18	23	0	19
13 दिसं.	आर्द्रा	6	18	12	11	18	05	23	58
14 दिसं.	पुर्न.	5	51	11	39	17	27	23	17
15 दिसं.	पुष्य	5	03	10	47	16	32	22	16
16 दिसं.	आश्ले.	4	01	9	42	15	24	21	05
17 दिसं.	मघा	2	47	8	27	14	06	19	46
18 दिसं.	पू.फा.	1	26	7	05	12	43	18	22
19 दिसं.	उ.फा.	0	01	5	39	11	17	16	56
19/20 दिसं.	हस्त	22	34	4	13	9	51	15	30
20/21 दिसं.	चित्रा	21	09	2	49	8	28	14	09
21/22 दिसं.	स्वा.	19	49	1	31	7	14	12	56
22/23 दिसं.	विशा.	18	38	0	23	6	09	11	53
23/24 दिसं.	अनु.	17	40	23	30	5	19	11	09
24/25 दिसं.	ज्ये.	16	59	22	54	4	50	10	45
25/26 दिसं.	मूल.	16	41	22	43	4	46	10	48

चन्द्र नक्षत्र चरण		1		2		3		4	
दिसं. 2019	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
26/27 दिसं.	पू.षा.	16	50	23	00	5	10	11	20
27/28 दिसं.	उ.षा.	17	30	23	45	6	07	12	25
28/29 दिसं.	श्रवण	18	43	1	10	7	36	14	03
29/30 दिसं.	धनि.	20	30	3	04	9	35	16	13
30/31 दिसं.	शत.	22	47	5	27	12	08	18	48
1 जन.2020	पू.भा.	1	28	8	12	14	55	21	38
2/3 जन.	उ.भा.	4	23	11	07	17	52	0	36
3/4 जन.	रेवती	7	20	14	01	20	43	3	24
4/5 जन.	अश्वि.	10	05	16	40	23	16	5	51
5/6 जन.	भरणी	12	27	18	54	1	21	7	48
6/7 जन.	कृति.	14	15	20	36	2	50	9	07
7/8 जन.	रोहि.	15	24	21	31	3	37	9	44
8/9 जन.	मृग.	15	51	21	48	3	49	9	41
9/10 जन.	आर्द्रा	15	38	21	26	3	13	9	01
10/11 जन.	पुन.	14	49	20	29	2	10	7	52
11/12 जन.	पुष्य	13	30	19	05	0	40	6	15
12/13 जन.	आश्ले.	11	50	17	21	22	53	4	24
13/14 जन.	मघा	9	55	15	25	20	55	2	25
14/15 जन.	पू.फा.	7	55	13	25	18	56	0	27
15 जन.	उ.फा.	5	57	11	28	17	02	22	34
16 जन.	हस्त	4	07	9	43	15	19	20	55
17 जन.	चित्रा	2	31	8	11	13	49	19	32
18 जन.	स्वा.	1	13	6	59	12	44	18	30
19 जन.	विशा.	0	16	6	07	11	59	17	48
19/20 जन.	अनु.	23	41	5	38	11	36	17	33
20/21 जन.	ज्ये.	23	30	5	33	11	37	17	40
21/22 जन.	मूल.	23	43	5	52	12	02	18	11
23 जन.	पू.षा.	0	20	6	35	12	51	19	06
24 जन.	उ.षा.	1	21	7	40	14	04	20	25
25 जन.	श्रवण	2	46	9	13	15	41	22	08
26/27 जन.	धनि.	4	36	11	09	17	39	0	16
27/28 जन.	शत.	6	49	13	27	20	06	2	44
28/29 जन.	पू.भा.	9	23	16	05	22	48	5	30
29/30 जन.	उ.भा.	12	13	18	58	1	42	8	27
30/31 जन.	रेवती	15	12	21	56	4	41	11	25
31/1 फर.	अश्वि.	18	10	0	51	7	32	14	13

चन्द्रमा का नक्षत्र–चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

चन्द्र नक्षत्र चरण		1		2		3		4	
फर. 2020	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
1/2 फर.	भरणी	20	54	3	28	10	03	16	37
2/3 फर.	कृति	23	11	5	40	12	02	18	27
4 फर.	रोहि.	0	52	7	06	13	21	19	35
5 फर.	मृग.	1	49	7	51	14	00	19	56
6 फर.	आर्द्रा	1	59	7	49	13	40	19	30
7 फर.	पुन.	1	21	7	01	12	41	18	24
8 फर.	पुष्य	0	01	5	32	11	03	16	34
8/9 फर.	आश्ले.	22	05	3	29	8	54	14	18
9/10 फर.	मघा	19	43	1	04	6	24	11	45
10/11 फर.	पू.फा.	17	06	22	25	3	45	9	04
11/12 फर.	उ.फा.	14	23	19	44	1	04	6	25
12/13 फर.	हस्त	11	46	17	01	22	35	4	00
13/14 फर.	चित्रा	9	25	14	56	20	23	1	57
14/15 फर.	स्वा.	7	28	13	06	18	45	0	23
15 फर.	विशा.	6	01	11	48	17	35	23	19
16 फर.	अनु.	5	09	11	05	17	02	22	58
17 फर.	ज्ये.	4	54	10	59	17	04	23	09
18 फर.	मूल	5	14	11	27	17	40	23	53
19/20 फर.	पू.षा.	6	06	12	26	18	47	1	07
20/21 फर.	उ.षा.	7	28	13	52	20	21	2	47
21/22 फर.	श्रवण	9	13	15	44	22	16	4	47
22/23 फर.	धनि.	11	19	17	55	0	29	7	07
23/24 फर.	शत.	13	43	20	22	3	02	9	41
24/25 फर.	पू.भा.	16	21	23	03	5	46	12	27
25/26 फर.	उ.भा.	19	10	1	54	8	39	15	23
26/27 फर.	रेवती	22	08	4	53	11	38	18	23
28 फर.	अश्वि.	1	08	7	52	14	35	21	19
29/1 मार्च	भरणी	4	03	10	43	17	22	0	02
1/2 मार्च	कृति	6	42	13	18	19	49	2	22
2/3 मार्च	रोहि.	8	55	15	19	21	44	4	08
3/4 मार्च	मृग.	10	32	16	46	23	03	5	10
4/5 मार्च	आर्द्रा	11	23	17	24	23	24	5	25
5/6 मार्च	पुर्न.	11	26	17	15	23	03	4	55
6/7 मार्च	पुष्य	10	38	16	15	21	51	3	28
7/8 मार्च	आश्ले.	9	05	14	32	19	58	1	25
8 मार्च	मघा	6	52	12	11	17	31	22	50

चन्द्र नक्षत्र चरण		1		2		3		4	
मार्च 2020	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
9 मार्च	पू.फा.	4	10	9	25	14	39	19	54
10 मार्च	उ.फा.	1	09	6	22	11	36	16	49
10/11 मार्च	हस्त	22	02	3	16	8	31	13	45
11/12 मार्च	चित्रा	19	00	0	19	5	35	10	57
12/13 मार्च	स्वा.	16	16	21	42	3	08	8	34
13/14 मार्च	विशा.	14	00	19	34	1	09	6	41
14/15 मार्च	अनु.	12	20	18	06	23	51	5	37
15/16 मार्च	ज्ये.	11	23	17	20	23	18	5	15

चन्द्र नक्षत्र चरण		1		2		3		4	
मार्च 2020	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
16/17 मार्च	मूल	11	12	17	20	23	29	5	37
17/18 मार्च	पू.षा.	11	46	18	05	0	23	6	42
18/19 मार्च	उ.षा.	13	01	19	25	1	57	8	24
19/20 मार्च	श्रवण	14	50	21	24	3	57	10	31
20/21 मार्च	धनि.	17	05	23	45	6	20	13	02
21/22 मार्च	शत.	19	40	2	22	9	03	15	45
22/23 मार्च	पू.भा.	22	27	5	10	11	54	18	37
24 मार्च	उ.भा.	1	21	8	05	14	50	21	34

श्रावण मास में शिवभक्ति का प्रतीक काँवड़ी जलाभिषेक मुहूर्त्त–2019 ई.

गोमुख, श्रीकेदारनाथ, श्रीअमरनाथ, श्री हरिद्वार, नीलकण्ठ एवं गंगादि तीर्थों से श्री गंगाजल के कलश भरकर भगवान श्री शिव की प्रसन्नता हेतु **आषाढ़ पूर्णिमा से लेकर सम्पूर्ण श्रावण मास पर्यन्त भगवान श्री शिव के प्रतिष्ठित मन्दिरों, विग्रहों, स्वरूपों एवं ज्योतिर्लिङ्गों** तथा **क्षेत्रीय मन्दिरों** में शिवभक्त काँवड़ियों द्वारा श्रद्धारूपी श्रीगङ्गाजल अभिषेक किया जाता है।

श्री गंगादि तीर्थों से जल लाने एवं भगवान् शिवपूजन एवं शिवलिङ्ग को जलांजली अभिषेक करने की शुभ एवं पुण्य तारीखें–

पक्ष तिथि	वार	नक्षत्र	तारीखें
श्रावण कृ. ५	सोम	पू.भा.	22 जुलाई
श्रावण कृ. ८	गुरू	अश्विनी	25 जुलाई
श्रावण कृ. ११	रवि.	रोहिणी	28 जुलाई
श्रावण कृ. १२/१३ (सोम प्रदोष)	सोम.	मृग.	29 जुलाई
श्रावण कृ. १३ (14/50 तक)	मंगल	आर्द्रा	30 जुलाई
श्रावण कृ. १४ (11/58 तक)	बुध	पुर्न.	31 जुलाई
श्रावण शु. ५	सोम	हस्त	5 अगस्त

पक्ष तिथि	वार	नक्षत्र	तारीखें
श्रावण शु. ८ (10/31 तक)	गुरू	विशाखा	8 अगस्त
श्रावण शु. १२ (10/53 बाद)	रवि	मूल	11 अगस्त
श्रावण शु. १२/१३ (सोम प्रदोष)	सोम	पू.षा.	12 अगस्त
श्रावण शु. १३ (13/47 तक)	मंगल	उ.षा.	13 अगस्त
श्रावण शु. १४ (15/46 तक)	बुध	श्रवण	14 अगस्त
श्रावण पूर्णिमा	गुरू	श्रवण/धनि	15 अगस्त

विशेष–श्रावण मास में 19 जुलाई से शुक्र अस्त रहेगा। परन्तु शुक्र ग्रह अस्त होने के बावजूद नित्यकर्म एवं श्री रूद्राभिषेक के लिए गंगाजल आदि ग्रहण करना शुभ होगा। अस्त का विचार नहीं किया जाता।।

यद्यपि उपरोक्त मुहूर्त्तों में से कांवड़ जलाभिषेक हेतु जल ग्रहण करने एवं जलांजली अभिषेक हेतु कोई भी मुहूर्त्त ग्रहण कर सकते हैं। शिवलिङ्ग पर जलाभिषेक के लिए प्रातःकाल ही श्रेष्ठ समय होता है, परन्तु कुछ विद्वान् प्रदोषकाल में एवं श्रावण–शिवरात्रि को चार प्रहर पूजनोपरान्त सम्पूर्ण रात्रि जल–अभिषेक भी करते हैं। मुख्य मुहूर्त्त 30 एवं 31 जुलाई दोनों दिन रहेगा।

अभिषेक हेतु जलामृत लिवाने की यात्रा में शुभ दिन विचार

काँवडियां शुभयात्रा हेतु जाने से पूर्व चन्द्रमा का सम्मुख व दाएँ आदि दिशा वास जानकर शुभ यात्रा आरम्भ करें तो कल्याणकारी होगा। **उदाहरणार्थ**–जिस दिशा की ओर जाना हो उस राशि से सम्बन्धित दिशा सम्मुख अर्थात् कल्याणकारी कहलाएगी। उससे दाहिनी ओर की दिशा में पड़ने वाली चन्द्र राशि एवं उसकी दिशा भी शुभ एवं लाभकारी होगी। जबकि बाईं ओर पड़ने वाली एवं दिशा कष्टकारी एवं अशुभ होगी।

चन्द्रराशि अनुसार यात्रा में दिशा की शुभाशुभ विचार

दिशा	पूर्व	पश्चिम	उत्तर	दक्षिण
द्वादश राशियां	मेष, सिंह, धनु	मिथुन, तुला, कुम्भ	कर्क, वृश्चिक, मीन	वृष, कन्या, मकर।

प्रातः साढ़े पाँच (5/30 घं. मिं.) से

प्रातः साढ़े पाँच (5/30 घं. मिं.) से अन्य समय के लिए ग्रह स्पष्ट करना

यदि आपको प्रातः साढ़े पाँच बजे के ग्रहस्पष्ट के अतिरिक्त किसी अन्य समय के ग्रह स्पष्ट करने हों, तो नीचे लिखी तालिका (Table) का प्रयोग करके अभीष्ट समय के ग्रहस्पष्ट प्राप्त कर सकते हैं–मान लीजिए, आपको **5 अप्रैल, 2019 ई.** की दोपहर एक (1) बजे का सूर्य स्पष्ट करना है। आगामी पृष्ठों में **5 अप्रैल** के सामने सूर्य स्पष्ट (11–20°–48′–10″) राशि-अंशादि लिखे गए हैं, जो कि प्रातः साढ़े पाँच बजे के हैं। हमें दोपहर 1 अर्थात् 13/00 बजे के सूर्य स्पष्ट चाहिए। तेरह (13) से साढ़े पाँच का अन्तर 7 घंटे 30 मिंट हुआ। अब 7 घण्टे 30 मिंट की गति को 5 अप्रैल में जोड़ दें, तो हमें दोपहर 1 बजे का स्पष्ट मिल जाएगा। (6) अप्रै. में से 5 अप्रै. का सूर्य स्पष्ट घटा देने से हमें सूर्य की दैनिक गति (59′/07″) प्राप्त हुई। इस दै. गति द्वारा नीचे लिखी तालिका में 7 घंटे की गति (17–12) कला तथा 30 मिनट की गति (1.14) कला प्राप्त हुई। जमा करने पर साढ़े सात घण्टे की गति (18′.26) हुई, इसको **5 अप्रैल प्रातः 5/30 के सूर्यस्पष्ट** में जमा कर देने पर हमें 5 अप्रैल की दुपै. एक बजे का सूर्यस्पष्ट (11–21°–06′–36″) प्राप्त हो जाएगा॥ ग्रहस्पष्ट करने की अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारी पुस्तक ज्योतिष तत्त्व (गणित खण्ड) का अध्ययन करें॥

ग्रहों की दैनिक गति के अनुसार प्रति घण्टा मिनटादि की तालिका

दै. गति (24 घं.)	गति (30 मिंट)	गति 1 घण्टे	गति 2 घण्टे	गति (3 घं.)	गति (4 घं.)	गति (5 घं.)	गति (6 घं.)	गति (7 घं.)	गति (8 घं.)	गति (9 घं.)	दै.गति (24 घं.)	गति (30 मिं.)	गति (1 घं.)	गति (2 घं.)	गति (3 घं.)	गति (4 घं.)	गति (5 घं.)	गति (6 घं.)	गति (7 घं.)	गति 8 घण्टे	गति 9 घण्टे
कला	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	कला	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.
3'	0.04	0.07	0.15	0.22	0.30	0.37	0.45	0.52	1.00	1.07	61'	1.16	2.32	5.05	7.37	10.10	12.42	15.15	17.47	20.20	22.52
5'	0.06	0.12	0.25	0.37	0.50	1.02	1.11	1.27	1.40	1.52	63'	1.19	2.37	5.15	7.52	10.30	13.07	15.45	18.22	21.00	23.37
7'	0.09	0.17	0.35	0.52	1.10	1.27	1.45	2.02	2.20	2.37	65'	1.21	2.42	5.25	8.07	10.50	13.32	16.15	18.57	21.40	24.22
9'	0.11	0.22	0.45	1.07	1.30	1.52	2.15	2.37	3.00	3.22	67'	1.24	2.47	5.35	8.22	11.10	13.57	16.45	19.25	22.20	25.07
11'	0.14	0.27	0.55	1.22	1.50	2.17	2.45	3.12	3.40	4.07	69'	1.26	2.52	5.45	8.37	11.30	14.22	17.15	20.07	23.00	25.52
13'	0.16	0.32	1.05	1.37	2.10	2.42	3.15	3.47	4.20	4.52	71'	1.29	2.57	5.55	8.52	11.50	14.57	17.45	20.42	23.40	26.37
15'	0.19	0.37	1.15	1.52	2.30	3.07	3.45	4.22	5.00	5.37	73'	1.31	3.02	6.05	9.07	12.10	15.12	18.15	21.17	24.20	27.22
17'	0.21	0.42	1.25	2.07	2.50	3.32	4.15	4.57	5.40	6.22	75'	1.34	3.07	6.15	9.22	12.30	15.37	18.45	21.52	25.00	28.07
19'	0.24	0.47	1.35	2.22	3.10	3.57	4.45	5.32	6.20	7.07	77'	1.36	3.12	6.25	9.37	12.50	16.02	19.15	22.27	25.40	28.52
21'	0.26	0.52	1.45	2.37	3.30	4.22	5.15	6.07	7.00	7.52	79'	1.39	3.17	6.35	9.52	13.10	16.27	19.45	23.02	26.20	29.37
23'	0.29	0.57	1.55	2.52	3.50	4.47	5.45	6.42	7.40	8.37	81'	1.41	3.22	6.45	10.07	13.30	16.52	20.15	23.37	27.00	30.22
25'	0.31	1.02	2.05	3.07	4.10	5.12	6.15	7.17	8.20	9.22	83'	1.44	3.27	6.55	10.22	13.50	17.17	20.45	24.12	27.40	31.07
27'	0.34	1.07	2.15	3.22	4.30	5.37	6.45	7.52	9.00	10.07	85'	1.46	3.32	7.05	10.37	14.10	17.42	21.15	24.47	28.20	31.52
29'	0.36	1.12	2.25	3.37	4.50	6.02	7.15	8.27	9.40	10.52	87'	1.49	3.37	7.15	10.52	14.30	18.07	21.45	25.22	29.00	32.37
31'	0.39	1.17	2.35	3.52	5.10	6.27	7.45	9.02	10.20	11.37	89'	1.51	3.42	7.25	11.07	14.50	18.32	22.15	25.57	29.40	33.22
33'	0.41	1.22	2.45	4.07	5.30	6.52	8.15	9.37	11.00	12.22	90'	1.52	3.45	7.30	11.15	15.00	18.45	22.30	26.15	30.00	33.45
35'	0.44	1.27	2.55	4.22	5.50	7.17	8.45	10.12	11.40	13.07	92'	1.55	3.50	7.40	11.30	15.20	19.10	23.00	26.50	30.40	34.30
37'	0.46	1.32	3.05	4.37	6.10	7.42	9.15	10.47	12.20	13.52	94'	1.57	3.55	7.50	11.45	15.40	19.35	23.30	27.25	31.20	35.15
39'	0.49	1.37	3.15	4.52	6.30	8.07	9.45	11.22	13.00	14.37	96'	2.00	4.00	8.00	12.00	16.00	20.00	24.00	28.00	32.00	36.00
41'	0.51	1.42	3.25	5.07	6.50	8.32	10.15	11.57	13.40	15.22	98'	2.02	4.05	8.10	12.15	16.20	20.25	24.30	28.35	32.40	36.45
43'	0.54	1.47	3.35	5.22	7.10	8.57	10.45	12.32	14.20	16.07	99'	2.04	4.07	8.15	12.22	16.30	20.37	24.45	28.52	33.00	37.07
45'	0.56	1.52	3.45	5.37	7.30	9.22	11.15	13.07	15.00	16.52	100'	2.05	4.10	8.20	12.30	16.40	20.50	25.00	29.10	33.20	37.30
47'	0.59	1.57	3.55	5.52	7.50	9.47	11.45	13.42	15.40	17.37	102'	2.07	4.15	8.30	12.45	17.00	21.15	25.30	29.45	34.00	38.15
49'	1.01	2.02	4.05	6.07	8.10	10.12	12.15	14.17	16.20	18.22	104'	2.10	4.20	8.40	13.00	17.20	21.30	26.00	30.20	34.40	39.00
51'	1.04	2.07	4.15	6.22	8.30	10.37	12.45	14.52	17.00	19.07	106'	2.12	4.25	8.50	13.15	17.40	22.05	26.30	30.55	35.20	39.45
53'	1.06	2.12	4.25	6.37	8.50	11.02	13.15	15.27	17.40	19.52	108'	2.15	4.30	9.00	13.30	18.00	22.30	27.00	31.30	36.00	40.30
55'	1.09	2.17	4.35	6.52	9.10	11.27	13.45	16.02	18.20	20.37	110'	2.17	4.35	9.10	13.45	18.20	22.55	27.30	32.05	36.40	41.15
57'	1.11	2.22	4.45	7.07	9.30	11.52	14.15	16.37	19.00	21.22	112'	2.20	4.40	9.20	14.00	18.40	23.20	28.00	32.40	37.20	42.00
58'	1.12	2.25	4.50	7.15	9.40	12.05	14.30	16.55	19.20	21.45	114'	2.22	4.45	9.30	14.15	19.00	23.45	28.30	33.15	38.00	42.45
59'	1.14	2.27	4.55	7.27	9.50	12.17	14.45	17.12	19.40	22.07	116'	2.25	4.50	9.40	14.30	19.20	24.10	29.00	33.50	38.40	43.30
60'	1.15	2.30	5.00	7.30	10.00	12.30	15.00	17.30	20.00	22.30	118'	2.27	4.55	9.50	14.45	19.40	24.35	29.30	34.25	39.20	44.15

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः 5 घंटे 30 मिंट बजे (भा. स्टैं. टा.) वि. संवत् 2076 (सन् 2019-20 ई.)

नोट–अपने अभीष्टकाल के अनुसार ग्रह स्पष्ट करने के लिए गत पृष्ठ पर दी गई सारिणी देखें। *(1 अप्रै. से 2 मई तक)* 1 अप्रैल, 2019 ई० को अयनांश = 24°/07′/17″

ता. अप्रै.	सम्पातिक काल 0-00 Hr. GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	अप्रैल
		रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	
अप्रै.	12 36 17	11 16 51 24	9 28 35 59	1 6 22 12	10 22 30 32	8 0 4 53	10 12 6 46	8 25 42 54	2 28 41 5	2 29 32 56	+4° 21	–16 15	अप्रै
2	12 40 13	11 17 50 39	10 10 25 7	1 7 1 54	10 22 51 19	8 0 6 36	10 13 19 5	8 25 45 38	2 28 37 54	2 29 26 51	4 44	–12 55	2
3	12 44 10	11 18 49 51	10 22 20 6	1 7 41 35	10 23 16 50	8 0 8 9	10 14 31 25	8 25 48 17	2 28 34 43	2 29 17 55	5 7	– 9 2	3
4	12 48 6	11 19 49 2	11 4 23 31	1 8 21 14	10 23 46 51	8 0 9 30	10 15 43 46	8 25 50 50	2 28 31 33	2 29 6 30	5 30	–4 46	4
5	12 52 3	11 20 48 10	11 16 37 2	1 9 0 53	10 24 21 6	8 0 10 40	10 16 56 9	8 25 53 18	2 28 28 22	2 28 53 19	5 53	–0 15	5
6	12 55 59	11 21 47 17	11 29 1 32	1 9 40 30	10 24 59 25	8 0 11 39	10 18 8 33	8 25 55 40	2 28 25 12	2 28 39 27	6 16	+4 21	6
7	12 59 56	11 22 46 21	0 11 37 18	1 10 20 6	10 25 41 32	8 0 12 26	10 19 20 58	8 25 57 56	2 28 22 1	2 28 26 8	6 38	8 50	7
8	13 3 52	11 23 45 24	0 24 24 17	1 10 59 40	10 26 27 17	8 0 13 2	10 20 33 24	8 26 0 7	2 28 18 50	2 28 14 33	7 1	13 1	8
9	13 7 49	11 24 44 24	1 7 22 32	1 11 39 14	10 27 16 27	8 0 13 27	10 21 45 51	8 26 2 12	2 28 15 39	2 28 5 34	7 23	16 39	9
10	13 11 46	11 25 43 23	1 20 32 15	1 12 18 46	10 28 8 51	8 0 13 41	10 22 58 19	8 26 4 12	2 28 12 29	2 27 59 37	7 46	19 31	10
11	13 15 42	11 26 42 17	2 3 54 10	1 12 58 17	10 29 4 22	8 0 13 43	10 24 10 48	8 26 6 6	2 28 9 18	2 27 56 33	8 8	21 22	11
12	13 19 39	11 27 41 11	2 17 29 18	1 13 37 46	11 0 2 48	8 0 13 33	10 25 23 18	8 26 7 54	2 28 6 7	2 27 55 36	8 30	22 1	12
13	13 23 35	11 28 40 2	3 1 18 48	1 14 17 14	11 1 4 1	8 0 13 13	10 26 35 49	8 26 9 36	2 28 2 57	2 27 55 37	8 52	21 21	13
14	13 27 32	11 29 38 51	3 15 23 21	1 14 56 41	11 2 7 55	8 0 12 41	10 27 48 20	8 26 11 13	2 27 59 46	2 27 55 14	9 13	19 20	14
15	13 31 28	0 0 37 37	3 29 42 36	1 15 36 6	11 3 14 22	8 0 11 58	10 29 0 52	8 26 12 44	2 27 56 35	2 27 53 11	9 35	16 5	15
16	13 35 25	0 1 36 21	4 14 14 28	1 16 15 29	11 4 23 16	8 0 11 4	11 0 13 25	8 26 14 9	2 27 53 24	2 27 48 36	9 57	11 49	16
17	13 39 21	0 2 35 3	4 28 54 46	1 16 54 51	11 5 34 31	8 0 9 59	11 1 25 59	8 26 15 28	2 27 50 14	2 27 41 14	10 18	6 48	17
18	13 43 18	0 3 33 43	5 13 37 17	1 17 34 12	11 6 48 4	8 0 8 43	11 2 38 34	8 26 16 42	2 27 47 3	2 27 31 25	10 39	+1 24	18
19	13 47 15	0 4 32 21	5 28 14 27	1 18 13 31	11 8 3 48	8 0 7 15	11 3 51 10	8 26 17 49	2 27 43 52	2 27 20 3	11 0	–4 3	19
20	13 51 11	0 5 30 57	6 12 38 39	1 18 52 49	11 9 21 39	8 0 5 37	11 5 3 46	8 26 18 51	2 27 40 41	2 27 8 23	11 21	–9 12	20
21	13 55 8	0 6 29 32	6 26 43 20	1 19 32 6	11 10 41 36	8 0 3 47	11 6 16 24	8 26 19 47	2 27 37 31	2 26 57 37	11 41	–13 45	21
22	13 59 4	0 7 28 3	7 10 24 8	1 20 11 21	11 12 3 34	8 0 1 47	11 7 29 3	8 26 20 37	2 27 34 20	2 26 48 48	12 2	–17 27	22
23	14 3 1	0 8 26 33	7 23 39 20	1 20 50 35	11 13 27 30	7 29 59 35	11 8 41 42	8 26 21 22	2 27 31 9	2 26 42 30	12 22	–20 8	23
24	14 6 57	0 9 25 2	8 6 29 44	1 21 29 47	11 14 53 23	7 29 57 13	11 9 54 22	8 26 22 0	2 27 27 58	2 26 38 47	12 42	–21 41	24
25	14 10 54	0 10 23 29	8 18 58 8	1 22 8 59	11 16 21 11	7 29 54 40	11 11 7 4	8 26 22 33	2 27 24 48	2 26 37 13	13 1	–22 7	25
26	14 14 50	0 11 21 55	9 1 8 44	1 22 48 9	11 17 50 51	7 29 51 56	11 12 19 46	8 26 22 59	2 27 21 37	2 26 36 58	13 21	–21 28	26
27	14 18 47	0 12 20 19	9 13 6 44	1 23 27 18	11 19 22 23	7 29 49 1	11 13 32 29	8 26 23 20	2 27 18 26	2 26 37 1	13 40	–19 51	27
28	14 22 44	0 13 18 42	9 24 57 28	1 24 6 26	11 20 55 46	7 29 45 56	11 14 45 13	8 26 23 35	2 27 15 15	2 26 36 17	13 59	–17 23	28
29	14 26 40	0 14 17 2	10 6 46 21	1 24 45 32	11 22 30 59	7 29 42 40	11 15 57 58	8 26 23 44	2 27 12 5	2 26 33 53	14 18	–14 13	29
30	14 30 37	0 15 15 21	10 18 38 23	1 25 24 38	11 24 8 1	7 29 39 14	11 17 10 43	8 26 23 48	2 27 8 54	2 26 29 13	14 37	–10 27	30
मई	14 34 33	0 16 13 38	11 0 37 53	1 26 3 42	11 25 46 53	7 29 35 37	11 18 23 29	8 26 23 45	2 27 5 43	2 26 22 3	14 55	–6 15	मई
2	14 38 30	0 17 11 54	11 12 48 22	1 26 42 46	11 27 27 33	7 29 31 50	11 19 36 16	8 26 23 36	2 27 2 32	2 26 12 38	15 13	–1 45	2

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (प्रातः 5 घं – 30 मि) (3 मई से 5 जून तक) 1 मई, 2019 ई० को अयनांश ...

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (प्रातः 5घ-30मि) (3 मई से 5 जून तक) 1 मई, 2019 ई० को अयनांश = 24°/07'/20'' 1 जून, 2019 ई० को अयनांश = 24°/07'/25''

ता. मई	सम्पातिक काल 0-00 Hr. GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	मई
		रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	
3	14 42 26	0 18 10 9	11 25 12 13	1 27 21 48	11 29 10 4	7 29 27 53	11 20 49 3	8 26 23 21	2 26 59 22	2 26 1 33	15 31	+2 54	3
4	14 46 23	0 19 8 21	0 7 50 41	1 28 0 49	0 0 54 23	7 29 23 47	11 22 1 50	8 26 23 1	2 26 56 11	2 25 49 45	15 49	7 31	4
5	14 50 19	0 20 6 32	0 20 44 1	1 28 39 50	0 2 40 33	7 29 19 30	11 23 14 39	8 26 22 35	2 26 53 0	2 25 38 19	16 6	11 55	5
6	14 54 16	0 21 4 42	1 3 51 23	1 29 18 49	0 4 28 32	7 29 15 4	11 24 27 27	8 26 22 21	2 26 49 49	2 25 28 18	16 24	15 50	6
7	14 58 13	0 22 2 49	1 17 11 22	1 29 57 46	0 6 18 23	7 29 10 28	11 25 40 17	8 26 21 25	2 26 46 39	2 25 20 35	16 40	19 2	7
8	15 2 9	0 23 0 55	2 0 42 27	2 0 36 43	0 8 10 4	7 29 5 43	11 26 53 6	8 26 20 41	2 26 43 28	2 25 15 34	+16 57	21 13	8
9	15 6 6	0 23 58 59	2 14 23 10	2 1 15 39	0 10 3 34	7 29 0 48	11 28 5 56	8 26 19 51	2 26 40 17	2 25 13 11	17 13	22 12	9
10	15 10 2	0 24 57 1	2 28 12 24	2 1 54 33	0 11 58 54	7 28 55 45	11 29 18 46	8 26 18 56	2 26 37 6	2 25 12 49	17 29	21 51	10
11	15 13 59	0 25 55 2	3 12 9 22	2 2 33 26	0 13 56 3	7 28 50 33	0 0 31 36	8 26 17 55	2 26 33 56	2 25 13 30	17 45	20 9	11
12	15 17 55	0 26 53 0	3 26 13 32	2 3 12 18	0 15 54 59	7 28 45 13	0 1 44 27	8 26 16 48	2 26 30 45	2 25 14 4	18 0	17 12	12
13	15 21 52	0 27 50 56	4 10 24 2	2 3 51 9	0 17 55 39	7 28 39 44	0 2 57 18	8 26 15 36	2 26 27 34	2 25 13 25	18 15	13 13	13
14	15 25 48	0 28 48 51	4 24 39 23	2 4 29 59	0 19 58 2	7 28 34 7	0 4 10 10	8 26 14 19	2 26 24 23	2 25 10 49	18 30	8 29	14
15	15 29 45	0 29 46 44	5 8 57 3	2 5 8 47	0 22 2 1	7 28 28 23	0 5 23 1	8 26 12 55	2 26 21 13	2 25 5 58	18 45	+3 16	15
16	15 33 42	1 0 44 35	5 23 13 16	2 5 47 34	0 24 7 32	7 28 22 30	0 6 35 53	8 26 11 27	2 26 18 2	2 24 59 7	18 59	−2 6	16
17	15 37 38	1 1 42 24	6 7 23 28	2 6 26 19	0 26 14 28	7 28 16 30	0 7 48 46	8 26 9 52	2 26 14 51	2 24 50 58	19 13	−7 20	17
18	15 41 35	1 2 40 12	6 21 22 50	2 7 5 4	0 28 22 41	7 28 10 23	0 9 1 39	8 26 8 13	2 26 11 40	2 24 42 28	19 26	−12 7	18
19	15 45 31	1 3 37 58	7 5 6 55	2 7 43 48	1 0 32 0	7 28 4 9	0 10 14 32	8 26 6 28	2 26 8 30	2 24 34 38	19 39	−16 11	19
20	15 49 28	1 4 35 43	7 18 32 27	2 8 22 30	1 2 42 15	7 27 57 49	0 11 27 27	8 26 4 38	2 26 5 19	2 24 28 16	19 52	−19 20	20
21	15 53 24	1 5 33 27	8 1 37 37	2 9 1 11	1 4 53 12	7 27 51 21	0 12 40 22	8 26 2 42	2 26 2 8	2 24 23 55	20 5	−21 23	21
22	15 57 21	1 6 31 9	8 14 22 34	2 9 39 51	1 7 4 37	7 27 44 47	0 13 53 17	8 26 0 41	2 25 58 57	2 24 21 38	20 17	−22 16	22
23	16 1 17	1 7 28 52	8 26 48 54	2 10 18 31	1 9 16 14	7 27 38 8	0 15 6 13	8 25 58 36	2 25 55 47	2 24 21 10	20 29	−22 2	23
24	16 5 14	1 8 26 32	9 8 59 41	2 10 57 9	1 11 27 48	7 27 31 22	0 16 19 10	8 25 56 25	2 25 52 36	2 24 21 57	20 40	−20 44	24
25	16 9 11	1 9 24 10	9 20 58 57	2 11 35 46	1 13 39 1	7 27 24 31	0 17 32 7	8 25 54 9	2 25 49 25	2 24 23 14	20 51	−18 31	25
26	16 13 7	1 10 21 48	10 2 51 26	2 12 14 22	1 15 49 38	7 27 17 34	0 18 45 5	8 25 51 48	2 25 46 14	2 24 24 16	21 2	−15 33	26
27	16 17 4	1 11 19 25	10 14 42 10	2 12 52 58	1 17 59 21	7 27 10 33	0 19 58 4	8 25 49 22	2 25 43 4	2 24 24 22	21 12	−11 57	27
28	16 21 0	1 12 17 1	10 26 36 12	2 13 31 32	1 20 7 56	7 27 3 27	0 21 11 3	8 25 46 51	2 25 39 53	2 24 23 4	21 23	−7 53	28
29	16 24 57	1 13 14 37	11 8 38 24	2 14 10 6	1 22 15 7	7 26 56 16	0 22 24 3	8 25 44 15	2 25 36 42	2 24 20 10	21 32	−3 28	29
30	16 28 53	1 14 12 11	11 20 52 56	2 14 48 39	1 24 20 41	7 26 49 1	0 23 37 4	8 25 41 35	2 25 33 31	2 24 15 43	21 47	+1 9	30
31	16 32 50	1 15 9 44	0 3 23 18	2 15 27 11	1 26 24 26	7 26 41 42	0 24 50 5	8 25 38 50	2 25 30 21	2 24 10 6	21 50	5 49	31
जून	16 36 46	1 16 7 17	0 16 11 38	2 16 5 43	1 28 26 13	7 26 34 20	0 26 3 7	8 25 36 0	2 25 27 10	2 24 3 52	21 59	10 21	जून
2	16 40 43	1 17 4 48	0 29 18 54	2 16 44 13	2 0 25 51	7 26 26 55	0 27 16 9	8 25 33 6	2 25 23 59	2 23 57 44	22 7	14 32	2
3	16 44 39	1 18 2 19	1 12 44 38	2 17 22 43	2 2 23 14	7 26 19 26	0 28 29 12	8 25 30 7	2 25 20 48	2 23 52 25	22 15	18 5	3
4	16 48 36	1 18 59 49	1 26 26 52	2 18 1 12	2 4 18 16	7 26 11 55	0 29 42 16	8 25 27 4	2 25 17 38	2 23 48 27	22 22	20 43	4
5	16 52 33	1 19 57 17	2 10 22 47	2 18 39 40	2 6 10 50	7 26 4 22	1 0 55 20	8 25 23 57	2 25 14 27	2 23 46 9	22 29	22 9	5

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (प्रातः 5घं–30मि) (6 जून से 9 जुलाई तक) 1 जुलाई 2019 ई. को अयनांश 24°/07'/30''

ता. जून	सम्पातिक काल 0-00 Hr. GMT	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	मध्यम राहु रा. अं. क. वि.	स्पष्ट राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रांति अं. क.	चंद्र क्रांति अं. क.	ता.
6	16 56 29	1 20 54 45	2 24 28 49	2 19 18 8	2 8 0 55	7 25 56 47	1 2 8 24	8 25 20 46	2 25 11 16	2 23 45 28	22 36	22 13	6
7	17 0 26	1 21 52 11	3 8 41 24	2 19 56 34	2 9 48 26	7 25 49 11	1 3 21 29	8 25 17 30	2 25 8 5	2 23 46 6	22 42	20 50	7
8	17 4 22	1 22 49 37	3 22 57 2	2 20 35 0	2 11 33 21	7 25 41 33	1 4 34 35	8 25 14 11	2 25 4 55	2 23 47 26	22 48	18 9	8
9	17 8 19	1 23 47 1	4 7 12 55	2 21 13 25	2 13 15 39	7 25 33 54	1 5 47 41	8 25 10 48	2 25 1 44	2 23 48 47	22 53	14 21	9
10	17 12 15	1 24 44 24	4 21 26 30	2 21 51 49	2 14 55 17	7 25 26 15	1 7 0 47	8 25 7 21	2 24 58 33	2 23 49 30	22 58	9 46	10
11	17 16 12	1 25 41 46	5 5 35 41	2 22 30 12	2 16 32 14	7 25 18 36	1 8 13 54	8 25 3 50	2 24 55 22	2 23 49 10	23 3	4 40	11
12	17 20 9	1 26 39 7	5 19 38 35	2 23 8 34	2 18 6 29	7 25 10 56	1 9 27 1	8 25 0 16	2 24 52 12	2 23 47 37	23 7	−0 37	12
13	17 24 5	1 27 36 27	6 3 33 12	2 23 46 55	2 19 38 1	7 25 3 17	1 10 40 9	8 24 56 39	2 24 49 1	2 23 44 58	23 11	−5 50	13
14	17 28 2	1 28 33 46	6 17 17 37	2 24 25 16	2 21 6 48	7 24 55 39	1 11 53 18	8 24 52 58	2 24 45 50	2 23 41 37	+23 14	−10 42	14
15	17 31 58	1 29 31 4	7 0 49 53	2 25 3 36	2 22 32 48	7 24 48 2	1 13 6 27	8 24 49 14	2 24 42 39	2 23 38 4	+23 17	−14 57	15
16	17 35 55	2 0 28 21	7 14 8 26	2 25 41 55	2 23 56 1	7 24 40 26	1 14 19 36	8 24 45 27	2 24 39 29	2 23 34 52	23 20	−18 23	16
17	17 39 51	2 1 25 37	7 27 11 57	2 26 20 13	2 25 16 23	7 24 32 52	1 15 32 47	8 24 41 37	2 24 36 18	2 23 32 24	23 22	−20 50	17
18	17 43 48	2 2 22 53	8 9 59 56	2 26 58 30	2 26 33 53	7 24 25 19	1 16 45 58	8 24 37 44	2 24 33 7	2 23 30 56	23 23	−22 9	18
19	17 47 44	2 3 20 9	8 22 32 45	2 27 36 47	2 27 48 27	7 24 17 49	1 17 59 11	8 24 33 49	2 24 29 56	2 23 30 30	23 25	−22 19	19
20	17 51 41	2 4 17 23	9 4 51 27	2 28 15 3	2 29 0 3	7 24 10 22	1 19 12 24	8 24 29 50	2 24 26 46	2 23 30 58	23 26	−21 23	20
21	17 55 38	2 5 14 38	9 16 58 15	2 28 53 17	3 0 8 36	7 24 2 57	1 20 25 38	8 24 25 49	2 24 23 35	2 23 32 4	23 26	−19 28	21
22	17 59 34	2 6 11 52	9 28 56 2	2 29 31 33	3 1 14 4	7 23 55 35	1 21 38 53	8 24 21 46	2 24 20 24	2 23 33 27	23 26	−16 43	22
23	18 3 31	2 7 9 6	10 10 48 26	3 0 9 47	3 2 16 20	7 23 48 17	1 22 52 8	8 24 17 40	2 24 17 13	2 23 34 48	23 26	−13 18	23
24	18 7 27	2 8 6 20	10 22 39 37	3 0 48 1	3 3 15 21	7 23 41 3	1 24 5 25	8 24 13 33	2 24 14 3	2 23 35 49	23 25	−9 23	24
25	18 11 24	2 9 3 34	11 4 34 3	3 1 26 14	3 4 11 1	7 23 33 52	1 25 18 43	8 24 9 23	2 24 10 52	2 23 36 18	23 24	−5 6	25
26	18 15 20	2 10 0 48	11 16 36 28	3 2 4 28	3 5 3 15	7 23 26 46	1 26 32 2	8 24 5 11	2 24 7 41	2 23 36 12	23 22	−0 34	26
27	18 19 17	2 10 58 1	11 28 51 20	3 2 42 40	3 5 51 56	7 23 19 45	1 27 45 22	8 24 0 57	2 24 4 30	2 23 35 32	23 20	+4 3	27
28	18 23 13	2 11 55 15	0 11 22 54	3 3 20 52	3 6 36 56	7 23 12 48	1 28 58 43	8 23 56 41	2 24 1 19	2 23 34 26	23 18	8 37	28
29	18 27 10	2 12 52 28	0 24 14 25	3 3 59 4	3 7 18 11	7 23 5 57	2 0 12 5	8 23 52 24	2 23 58 9	2 23 33 9	23 15	12 56	29
30	18 31 7	2 13 49 42	1 7 28 15	3 4 37 15	3 7 55 33	7 22 59 11	2 1 25 28	8 23 48 5	2 23 54 58	2 23 31 53	23 12	16 45	30
जुला	18 35 3	2 14 46 56	1 21 4 53	3 5 15 26	3 8 28 53	7 22 52 31	2 2 38 52	8 23 43 46	2 23 51 47	2 23 30 52	23 8	19 48	जुला
2	18 39 0	2 15 44 9	2 5 3 21	3 5 53 37	3 8 58 6	7 22 45 56	2 3 52 17	8 23 39 24	2 23 48 36	2 23 30 12	23 4	21 46	2
3	18 42 56	2 16 41 22	2 19 20 24	3 6 31 47	3 9 23 3	7 22 39 28	2 5 5 42	8 23 35 2	2 23 45 25	2 23 29 57	23 0	22 22	3
4	18 46 53	2 17 38 36	3 3 51 29	3 7 9 57	3 9 43 38	7 22 33 7	2 6 19 9	8 23 30 39	2 23 42 15	2 23 30 2	22 55	21 30	4
5	18 50 49	2 18 35 49	3 18 30 18	3 7 48 6	3 9 59 45	7 22 26 53	2 7 32 37	8 23 26 15	2 23 39 4	2 23 30 20	22 50	19 10	5
6	18 54 46	2 19 33 2	4 3 10 49	3 8 26 15	3 10 11 18	7 22 20 45	2 8 46 5	8 23 21 51	2 23 35 53	2 23 30 41	22 44	15 35	6
7	18 58 42	2 20 30 15	4 17 46 58	3 9 4 24	3 10 18 11	7 22 14 45	2 9 59 35	8 23 17 26	2 23 32 42	2 23 30 57	22 38	11 4	7
8	19 2 39	2 21 27 28	5 2 13 47	3 9 42 32	3 10 20 23	7 22 8 53	2 11 13 5	8 23 13 0	2 23 29 32	2 23 31 4	22 32	5 58	8
9	19 6 36	2 22 24 40	5 16 27 31	3 10 20 40	3 10 17 51	7 22 3 8	2 12 26 36	8 23 8 35	2 23 26 21	2 23 31 3	22 25	+0 38	9

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (प्रातः 5घं–30मि)

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (प्रातः 5घं–30मि) (10 जुला. से 12 अग. 2019 ई. तक) 1 अगस्त. 2019 ई. को अयनांश 24°/07'/35''

ता. जुला	सम्पातिक काल 0-00 Hr. GMT	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	मध्यम राहु रा. अं. क. वि.	स्पष्ट राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रांति अं. क.	चंद्र क्रांति अं. क.	जुलाई
10	19 10 32	2 23 21 52	6 0 26 1	3 10 58 47	3 10 10 39	7 21 57 31	2 13 40 8	8 23 4 9	2 23 23 10	2 23 30 58	22 18	–4 38	10
11	19 14 29	2 24 19 4	6 14 8 15	3 11 36 54	3 9 58 49	7 21 52 3	2 14 53 40	8 22 59 44	2 23 19 59	2 23 30 56	22 10	–9 34	11
12	19 18 25	2 25 16 16	6 27 34 14	3 12 15 1	3 9 42 27	7 21 46 43	2 16 7 14	8 22 55 19	2 23 16 49	2 23 31 0	22 2	–13 57	12
13	19 22 22	2 26 13 28	7 10 44 28	3 12 53 7	3 9 21 44	7 21 41 31	2 17 20 48	8 22 50 54	2 23 13 38	2 23 31 14	21 54	–17 34	13
14	19 26 18	2 27 10 40	7 23 39 56	3 13 31 12	3 8 56 54	7 21 36 28	2 18 34 24	8 22 46 29	2 23 10 27	2 23 31 36	21 45	–20 15	14
15	19 30 15	2 28 7 52	8 6 21 42	3 14 9 18	3 8 28 16	7 21 31 34	2 19 48 0	8 22 42 5	2 23 7 16	2 23 31 59	21 36	–21 52	15
16	19 34 11	2 29 5 4	8 18 50 57	3 14 47 23	3 7 56 13	7 21 26 49	2 21 1 38	8 22 37 42	2 23 4 6	2 23 32 15	21 26	–22 22	16
17	19 38 8	3 0 2 17	9 1 9 2	3 15 25 28	3 7 21 11	7 21 22 14	2 22 15 16	8 22 33 20	2 23 0 55	2 23 32 16	21 17	–21 46	17
18	19 42 5	3 0 59 30	9 13 17 24	3 16 3 32	3 6 43 42	7 21 17 47	2 23 28 56	8 22 28 58	2 22 57 44	2 23 31 55	21 6	–20 9	18
19	19 46 1	3 1 56 43	9 25 17 45	3 16 41 37	3 6 4 20	7 21 13 30	2 24 42 37	8 22 24 38	2 22 54 33	2 23 31 9	20 56	–17 38	19
20	19 49 58	3 2 53 57	10 7 12 18	3 17 19 41	3 5 23 45	7 21 9 23	2 25 56 19	8 22 20 19	2 22 51 23	2 23 30 0	20 45	–14 25	20
21	19 53 54	3 3 51 11	10 19 3 33	3 17 57 45	3 4 42 37	7 21 5 25	2 27 10 2	8 22 16 1	2 22 48 12	2 23 28 34	+20°34'	–10 38	21
22	19 57 51	3 4 48 26	11 00 54 33	3 18 35 49	3 4 1 39	7 21 1 37	2 28 23 46	8 22 11 45	2 22 45 1	2 23 27 4	20 22	–6 27	22
23	20 1 47	3 5 45 42	11 12 48 49	3 19 13 53	3 3 21 34	7 20 57 59	2 29 37 32	8 22 7 30	2 22 41 50	2 23 25 42	20 10	–2 0	23
24	20 5 44	3 6 42 59	11 24 50 22	3 19 51 57	3 2 43 7	7 20 54 32	3 0 51 18	8 22 3 17	2 22 38 40	2 23 24 41	19 58	+2 33	24
25	20 9 40	3 7 40 16	0 7 3 24	3 20 30 1	3 2 7 0	7 20 51 14	3 2 5 7	8 21 59 6	2 22 35 29	2 23 24 13	19 45	7 5	25
26	20 13 37	3 8 37 35	0 19 32 15	3 21 8 5	3 1 33 53	7 20 48 7	3 3 18 56	8 21 54 56	2 22 32 18	2 23 24 22	19 33	11 25	26
27	20 17 34	3 9 34 54	1 2 21 3	3 21 46 9	3 1 4 25	7 20 45 11	3 4 32 46	8 21 50 49	2 22 29 7	2 23 25 5	19 19	15 22	27
28	20 21 30	3 10 32 15	1 15 33 13	3 22 24 14	3 0 39 9	7 20 42 24	3 5 46 38	8 21 46 44	2 22 25 57	2 23 26 12	19 6	18 42	28
29	20 25 27	3 11 29 36	1 29 11 0	3 23 2 18	3 0 18 36	7 20 39 49	3 7 0 31	8 21 42 42	2 22 22 46	2 23 27 25	18 52	21 6	29
30	20 29 23	3 12 26 58	2 13 14 47	3 23 40 22	3 0 03 14	7 20 37 24	3 8 14 25	8 21 38 42	2 22 19 35	2 23 28 19	18 38	22 18	30
31	20 33 20	3 13 24 21	2 27 42 38	3 24 18 27	2 29 53 22	7 20 35 10	3 9 28 20	8 21 34 44	2 22 16 24	2 23 28 33	18 23	22 3	31
अग.	20 37 16	3 14 21 45	3 12 30 5	3 24 56 32	2 29 49 21	7 20 33 7	3 10 42 16	8 21 30 50	2 22 13 13	2 23 27 53	18 8	20 17	अग.
2	20 41 13	3 15 19 10	3 27 30 4	3 25 34 36	2 29 51 26	7 20 31 15	3 11 56 14	8 21 26 58	2 22 10 3	2 23 26 13	17 53	17 5	2
3	20 45 9	3 16 16 35	4 12 33 55	3 26 12 41	2 29 59 46	7 20 29 33	3 13 10 12	8 21 23 9	2 22 6 52	2 23 23 43	17 38	12 44	3
4	20 49 6	3 17 14 2	4 27 32 36	3 26 50 46	3 0 14 31	7 20 28 3	3 14 24 12	8 21 19 24	2 22 3 41	2 23 20 46	17 22	7 38	4
5	20 53 3	3 18 11 29	5 12 18 3	3 27 28 50	3 0 35 43	7 20 26 44	3 15 38 12	8 21 15 41	2 22 0 30	2 23 17 52	17 6	+2 10	5
6	20 56 59	3 19 8 57	5 26 44 17	3 28 6 55	3 1 3 28	7 20 25 36	3 16 52 13	8 21 12 2	2 21 57 20	2 23 15 30	16 50	–3 18	6
7	21 0 56	3 20 6 25	6 10 47 50	3 28 45 0	3 1 37 43	7 20 24 39	3 18 6 15	8 21 8 26	2 21 54 9	2 23 14 6	16 33	–8 27	7
8	21 4 52	3 21 3 54	6 24 27 45	3 29 23 5	3 2 18 28	7 20 23 54	3 19 20 18	8 21 4 54	2 21 50 58	2 23 13 50	16 17	–13 3	8
9	21 8 49	3 22 1 24	7 7 44 59	4 0 1 10	3 3 5 37	7 20 23 19	3 20 34 21	8 21 1 25	2 21 47 47	2 23 14 38	16 0	–16 52	9
10	21 12 45	3 22 58 55	7 20 41 55	4 0 39 15	3 3 59 5	7 20 22 56	3 21 48 26	8 20 58 1	2 21 44 37	2 23 16 9	15 42	–19 46	10
11	21 16 42	3 23 56 26	8 3 21 26	4 1 17 20	3 4 58 46	7 20 22 44	3 23 2 31	8 20 54 40	2 21 41 26	2 23 17 49	15 25	–21 38	11
12	21 20 38	3 24 53 58	8 15 46 41	4 1 55 25	3 6 4 28	7 20 22 43	3 24 16 38	8 20 51 22	2 21 38 15	2 23 19 2	15 7	–22 23	12

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (प्रातः 5घं-30मि) (13 अगस्त से 15 सितंबर 2019 ई. तक)

1 सितम्बर, 2019 ई. को अयनांश 24°/07'/39''

ता. अग.	सम्पातिक काल 0-00 Hr. GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	अगस्त
		रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	
13	21 24 35	3 25 51 32	8 28 0 36	4 2 33 30	3 7 16 0	7 20 22 53	3 25 30 45	8 20 48 9	2 21 35 4	2 23 19 10	14 49	-22 2	13
14	21 28 32	3 26 49 6	9 10 5 51	4 3 11 36	3 8 33 11	7 20 23 14	3 26 44 53	8 20 45 0	2 21 31 54	2 23 17 50	14 31	-20 40	14
15	21 32 28	3 27 46 42	9 22 4 41	4 3 49 41	3 9 55 43	7 20 23 47	3 27 59 2	8 20 41 56	2 21 28 43	2 23 14 47	14 12	-18 22	15
16	21 36 25	3 28 44 18	10 3 59 3	4 4 27 47	3 11 23 21	7 20 24 30	3 29 13 12	8 20 38 55	2 21 25 32	2 23 10 5	13 54	-15 19	16
17	21 40 21	3 29 41 56	10 15 50 50	4 5 5 53	3 12 55 44	7 20 25 25	4 0 27 22	8 20 35 59	2 21 22 21	2 23 4 2	13 35	-11 39	17
18	21 44 18	4 0 39 36	10 27 41 50	4 5 44 0	3 14 32 32	7 20 26 30	4 1 41 34	8 20 33 7	2 21 19 10	2 22 57 10	13 15	-7 32	18
19	21 48 14	4 1 37 17	11 9 34 6	4 6 22 6	3 16 13 23	7 20 27 47	4 2 55 47	8 20 30 20	2 21 16 0	2 22 50 7	12 56	-3 9	19
20	21 52 11	4 2 34 59	11 21 30 2	4 7 00 14	3 17 57 52	7 20 29 14	4 4 10 0	8 20 27 37	2 21 12 49	2 22 43 37	12 37	+1 23	20
21	21 56 7	4 3 32 43	0 3 32 34	4 7 38 21	3 19 45 34	7 20 30 52	4 5 24 15	8 20 24 59	2 21 9 38	2 22 38 18	12 17	5 54	21
22	22 0 4	4 4 30 28	0 15 45 1	4 8 16 29	3 21 36 3	7 20 32 42	4 6 38 30	8 20 22 26	2 21 6 27	2 22 34 36	11 57	10 16	22
23	22 4 1	4 5 28 15	0 28 11 15	4 8 54 38	3 23 28 55	7 20 34 42	4 7 52 47	8 20 19 57	2 21 3 16	2 22 32 43	11 37	14 17	23
24	22 7 57	4 6 26 4	1 10 55 20	4 9 32 47	3 25 23 43	7 20 36 53	4 9 7 4	8 20 17 34	2 21 0 6	2 22 32 27	11 16	17 45	24
25	22 11 54	4 7 23 54	1 24 1 13	4 10 10 56	3 27 20 4	7 20 39 15	4 10 21 23	8 20 15 15	2 20 56 55	2 22 33 20	10 56	20 27	25
26	22 15 50	4 8 21 47	2 7 32 23	4 10 49 6	3 29 17 35	7 20 41 47	4 11 35 42	8 20 13 1	2 20 53 44	2 22 34 32	10 35	22 5	26
27	22 19 47	4 9 19 41	2 21 30 50	4 11 27 17	4 1 15 55	7 20 44 31	4 12 50 2	8 20 10 52	2 20 50 33	2 22 35 12	10 14	22 25	27
28	22 23 43	4 10 17 36	3 5 56 31	4 12 5 28	4 3 14 43	7 20 47 25	4 14 4 23	8 20 8 49	2 20 47 22	2 22 34 29	9 53	21 18	28
29	22 27 40	4 11 15 34	3 20 46 23	4 12 43 40	4 5 13 43	7 20 50 29	4 15 18 45	8 20 6 51	2 20 44 12	2 22 31 49	9 32	18 41	29
30	22 31 36	4 12 13 33	4 5 54 12	4 13 21 52	4 7 12 40	7 20 53 45	4 16 33 8	8 20 4 58	2 20 41 1	2 22 27 5	9 11	14 45	30
31	22 35 33	4 13 11 34	4 21 10 46	4 14 0 5	4 9 11 20	7 20 57 11	4 17 47 31	8 20 3 10	2 20 37 50	2 22 20 36	8 49	9 49	31
सितं	22 39 29	4 14 9 36	5 6 25 19	4 14 38 18	4 11 9 32	7 21 0 47	4 19 1 55	8 20 1 28	2 20 34 39	2 22 13 4	8 28	+4 17	सितं
2	22 43 26	4 15 7 40	5 21 27 8	4 15 16 31	4 13 7 6	7 21 4 34	4 20 16 20	8 19 59 52	2 20 31 29	2 22 5 29	8 6	-1 25	2
3	22 47 23	4 16 5 45	6 6 7 41	4 15 54 45	4 15 3 55	7 21 8 31	4 21 30 45	8 19 58 20	2 20 28 18	2 21 58 50	7 44	-6 55	3
4	22 51 19	4 17 3 52	6 20 21 34	4 16 33 0	4 16 59 52	7 21 12 38	4 22 45 10	8 19 56 55	2 20 25 7	2 21 53 52	7 22	-11 53	4
5	22 55 16	4 18 2 0	7 4 6 51	4 17 11 15	4 18 54 52	7 21 16 56	4 23 59 36	8 19 55 35	2 20 21 56	2 21 50 58	7 0	-16 4	5
6	22 59 12	4 19 0 10	7 17 24 29	4 17 49 30	4 20 48 52	7 21 21 24	4 25 14 3	8 19 54 21	2 20 18 45	2 21 50 0	6 38	-19 18	6
7	23 3 9	4 19 58 21	8 0 17 23	4 18 27 46	4 22 41 47	7 21 26 1	4 26 28 30	8 19 53 12	2 20 15 35	2 21 50 25	6 15	-21 26	7
8	23 7 5	4 20 56 33	8 12 49 43	4 19 6 2	4 24 33 37	7 21 30 49	4 27 42 57	8 19 52 9	2 20 12 24	2 21 51 18	5 53	-22 27	8
9	23 11 2	4 21 54 47	8 25 6 3	4 19 44 19	4 26 24 20	7 21 35 46	4 28 57 25	8 19 51 12	2 20 9 13	2 21 51 36	5 30	-22 21	9
10	23 14 59	4 22 53 3	9 7 10 44	4 20 22 36	4 28 13 55	7 21 40 54	5 0 11 53	8 19 50 20	2 20 6 2	2 21 50 21	5 8	-21 11	10
11	23 18 55	4 23 51 20	9 19 7 45	4 21 00 54	5 0 2 22	7 21 46 11	5 1 26 21	8 19 49 34	2 20 2 51	2 21 46 48	4 45	-19 5	11
12	23 22 52	4 24 49 38	10 1 0 22	4 21 39 13	5 1 49 40	7 21 51 37	5 2 40 49	8 19 48 54	2 19 59 41	2 21 40 35	4 22	-16 10	12
13	23 26 48	4 25 47 59	10 12 51 21	4 22 17 32	5 3 35 51	7 21 57 13	5 3 55 18	8 19 48 20	2 19 56 30	2 21 31 43	3 59	-12 37	13
14	23 30 45	4 26 46 21	10 24 42 39	4 22 55 52	5 5 20 54	7 22 2 58	5 5 9 48	8 19 47 51	2 19 53 19	2 21 20 41	3 36	-8 34	14
15	23 34 41	4 27 44 45	11 6 35 59	4 23 34 12	5 7 4 50	7 22 8 52	5 6 24 18	8 19 47 28	2 19 50 8	2 21 8 16	3 13	-4 11	15

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (प्रातः 5घं-30मि) [illegible]

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (प्रातः 5 घं - 30 मि) (16 सितं. से 19 अक्तूबर, 2019 ई. तक)

1 अक्तूबर, 2019 ई. को अयनांश 24° /07'/41''

ता. सितं	सम्पातिक काल 0-00 Hr. GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	सितं.
		रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	
16	23 38 38	4 28 43 11	11 18 32 45	4 24 12 33	5 8 47 41	7 22 14 55	5 7 38 48	8 19 47 12	2 19 46 57	2 20 55 30	2 50	+0 23	16
17	23 42 34	4 29 41 39	0 0 34 26	4 24 50 55	5 10 29 28	7 22 21 8	5 8 53 18	8 19 47 1	2 19 43 47	2 20 43 27	2 27	4 57	17
18	23 46 31	5 0 40 9	0 12 42 38	4 25 29 18	5 12 10 10	7 22 27 30	5 10 7 49	8 19 46 55	2 19 40 36	2 20 33 9	2 4	9 23	18
19	23 50 28	5 1 38 41	0 24 59 37	4 26 7 42	5 13 49 50	7 22 34 0	5 11 22 20	8 19 46 56	2 19 37 25	2 20 25 19	1 41	13 30	19
20	23 54 24	5 2 37 16	1 7 28 1	4 26 46 6	5 15 28 29	7 22 40 40	5 12 36 52	8 19 47 3	2 19 34 14	2 20 20 16	1 18	17 7	20
21	23 58 21	5 3 35 52	1 20 11 10	4 27 24 31	5 17 6 7	7 22 47 28	5 13 51 24	8 19 47 15	2 19 31 3	2 20 17 47	0 54	20 0	21
22	0 2 17	5 4 34 32	2 3 12 35	4 28 2 57	5 18 42 45	7 22 54 25	5 15 5 57	8 19 47 34	2 19 27 53	2 20 17 11	0 31	21 55	22
23	0 6 14	5 5 33 12	2 16 35 51	4 28 41 24	5 20 18 25	7 23 1 30	5 16 20 30	8 19 47 58	2 19 24 42	2 20 17 23	+0 8	22 41	23
24	0 10 10	5 6 31 55	3 0 23 49	4 29 19 52	5 21 53 6	7 23 8 44	5 17 35 3	8 19 48 29	2 19 21 31	2 20 17 8	−0 16	22 5	24
25	0 14 7	5 7 30 40	3 14 37 50	4 29 58 22	5 23 26 50	7 23 16 7	5 18 49 37	8 19 49 5	2 19 18 20	2 20 15 15	−0 39	20 5	25
26	0 18 3	5 8 29 28	3 29 16 48	5 0 36 51	5 24 59 38	7 23 23 38	5 20 4 11	8 19 49 47	2 19 15 9	2 20 10 56	−1 2	16 43	26
27	0 22 0	5 9 28 18	4 14 16 23	5 1 15 21	5 26 31 30	7 23 31 17	5 21 18 45	8 19 50 35	2 19 11 59	2 20 3 54	−1 26	12 12	27
28	0 25 56	5 10 27 10	4 29 28 58	5 1 53 53	5 28 2 25	7 23 39 4	5 22 33 20	8 19 51 29	2 19 8 48	2 19 54 30	−2 49	6 51	28
29	0 29 53	5 11 26 4	5 14 44 13	5 2 32 25	5 29 32 25	7 23 47 0	5 23 47 55	8 19 52 29	2 19 5 37	2 19 43 38	−2 13	+1 4	29
30	0 33 50	5 12 25 0	5 29 50 57	5 3 10 58	6 1 1 28	7 23 55 3	5 25 2 30	8 19 53 35	2 19 2 26	2 19 32 30	−2 36	−4 43	30
अक्तू	0 37 46	5 13 23 58	6 14 39 6	5 3 49 32	6 2 29 35	7 24 3 15	5 26 17 5	8 19 54 46	2 18 59 15	2 19 22 24	−2 59	−10 7	अक्तू
2	0 41 43	5 14 22 58	6 29 1 24	5 4 28 7	6 3 56 45	7 24 11 34	5 27 31 41	8 19 56 4	2 18 56 5	2 19 14 20	−3 22	−14 49	2
3	0 45 39	5 15 21 59	7 12 54 10	5 5 6 43	6 5 22 58	7 24 20 1	5 28 46 16	8 19 57 28	2 18 52 54	2 19 8 50	−3 46	−18 33	3
4	0 49 36	5 16 21 3	7 26 17 16	5 5 45 19	6 6 48 13	7 24 28 35	6 0 0 52	8 19 58 57	2 18 49 43	2 19 5 54	−4 9	−21 8	4
5	0 53 32	5 17 20 8	8 9 13 4	5 6 23 56	6 8 12 28	7 24 37 17	6 1 15 27	8 20 0 32	2 18 46 32	2 19 4 53	−4 32	−22 32	5
6	0 57 29	5 18 19 15	8 21 45 47	5 7 2 34	6 9 35 40	7 24 46 7	6 2 30 2	8 20 2 13	2 18 43 21	2 19 4 49	−4 55	−22 44	6
7	1 1 25	5 19 18 24	9 4 0 27	5 7 41 13	6 10 57 50	7 24 55 3	6 3 44 37	8 20 4 0	2 18 40 11	2 19 4 30	−5 18	−21 48	7
8	1 5 22	5 20 17 34	9 16 2 15	5 8 19 53	6 12 18 53	7 25 4 7	6 4 59 12	8 20 5 53	2 18 37 0	2 19 2 44	−5 41	−19 54	8
9	1 9 19	5 21 16 46	9 27 56 11	5 8 58 33	6 13 38 49	7 25 13 18	6 6 13 47	8 20 7 51	2 18 33 49	2 18 58 38	−6 4	−17 9	9
10	1 13 15	5 22 16 1	10 9 46 34	5 9 37 14	6 14 57 33	7 25 22 36	6 7 28 21	8 20 9 55	2 18 30 38	2 18 51 43	−6 27	−13 42	10
11	1 17 12	5 23 15 17	10 21 37 2	5 10 15 57	6 16 15 1	7 25 32 0	6 8 42 56	8 20 12 5	2 18 27 27	2 18 41 55	−6 49	−9 44	11
12	1 21 8	5 24 14 35	11 3 30 25	5 10 54 40	6 17 31 9	7 25 41 32	6 9 57 30	8 20 14 20	2 18 24 17	2 18 29 40	−7 12	−5 22	12
13	1 25 5	5 25 13 54	11 15 28 41	5 11 33 24	6 18 45 51	7 25 51 10	6 11 12 5	8 20 16 41	2 18 21 6	2 18 15 50	−7 35	−0 47	13
14	1 29 1	5 26 13 16	11 27 33 18	5 12 12 9	6 19 59 2	7 26 0 54	6 12 26 39	8 20 19 7	2 18 17 55	2 18 1 29	−7 57	+3 53	14
15	1 32 58	5 27 12 40	0 9 45 11	5 12 50 56	6 21 10 35	7 26 10 46	6 13 41 13	8 20 21 39	2 18 14 44	2 17 47 50	−8 19	8 26	15
16	1 36 54	5 28 12 6	0 22 5 3	5 13 29 43	6 22 20 22	7 26 20 43	6 14 55 47	8 20 24 16	2 18 11 33	2 17 36 1	−8 41	12 43	16
17	1 40 51	5 29 11 34	1 4 33 54	5 14 8 31	6 23 28 14	7 26 30 47	6 16 10 21	8 20 26 59	2 18 8 23	2 17 26 51	−9 4	16 32	17
18	1 44 48	6 0 11 5	1 17 12 55	5 14 47 21	6 24 34 2	7 26 40 57	6 17 24 55	8 20 29 47	2 18 5 12	2 17 20 45	−9 25	19 38	18
19	1 48 44	6 1 10 37	2 0 3 55	5 15 26 11	6 25 37 33	7 26 51 13	6 18 39 29	8 20 32 41	2 18 2 1	2 17 17 34	−9 47	21 49	19

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (प्रातः 5घं-30मि) (20 अक्टू. से 22 नवंबर, 2019 ई. तक) 1 नवंबर 2019 ई. को अयनांश 24°/07'/45''

ता.	सम्पातिक काल	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	अक्टू.
अक्टू	0-00 Hr. GMT	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	
20	1 52 41	6 2 10 12	2 13 9 5	5 16 5 3	6 26 38 34	7 27 1 36	6 19 54 3	8 20 35 40	2 17 58 50	2 17 16 36	−10 9	22 52	20
21	1 56 37	6 3 9 50	2 26 30 59	5 16 43 56	6 27 36 51	7 27 12 4	6 21 8 38	8 20 38 44	2 17 55 39	2 17 16 47	−10 30	22 39	21
22	2 0 34	6 4 9 29	3 10 12 0	5 17 22 50	6 28 32 5	7 27 22 38	6 22 23 12	8 20 41 53	2 17 52 29	2 17 16 49	−10 52	21 5	22
23	2 4 30	6 5 9 12	3 24 13 38	5 18 1 46	6 29 24 5	7 27 33 18	6 23 37 46	8 20 45 8	2 17 49 18	2 17 15 28	−11 13	18 13	23
24	2 8 27	6 6 8 56	4 8 35 51	5 18 40 42	7 0 12 21	7 27 44 4	6 24 52 20	8 20 48 28	2 17 46 7	2 17 11 52	−11 34	14 11	24
25	2 12 23	6 7 8 42	4 23 16 13	5 19 19 40	7 0 56 32	7 27 54 55	6 26 6 55	8 20 51 54	2 17 42 56	2 17 5 40	−11 55	9 13	25
26	2 16 20	6 8 8 30	5 8 9 36	5 19 58 39	7 1 36 13	7 28 5 52	6 27 21 29	8 20 55 24	2 17 39 45	2 16 57 7	−12 16	+3 40	26
27	2 20 17	6 9 8 21	5 23 8 10	5 20 37 39	7 2 10 56	7 28 16 55	6 28 36 3	8 20 58 59	2 17 36 35	2 16 47 3	−12 36	−2 9	27
28	2 24 13	6 10 8 13	6 8 2 41	5 21 16 40	7 2 40 6	7 28 28 2	6 29 50 37	8 21 2 40	2 17 33 24	2 16 36 36	−12 56	−7 49	28
29	2 28 10	6 11 8 9	6 22 43 53	5 21 55 42	7 3 3 14	7 28 39 16	7 1 5 12	8 21 6 26	2 17 30 13	2 16 27 0	−13 17	−12 58	29
30	2 32 6	6 12 8 5	7 7 4 8	5 22 34 45	7 3 19 40	7 28 50 34	7 2 19 46	8 21 10 16	2 17 27 2	2 16 19 15	−13 36	−17 15	30
31	2 36 3	6 13 8 3	7 20 58 36	5 23 13 49	7 3 28 48	7 29 1 57	7 3 34 20	8 21 14 12	2 17 23 51	2 16 13 56	−13 56	−20 27	31
नवं.	2 39 59	6 14 8 4	8 4 25 28	5 23 52 54	7 3 30 2	7 29 13 26	7 4 48 53	8 21 18 13	2 17 20 41	2 16 11 9	−14 16	−22 23	नवं.
2	2 43 56	6 15 8 6	8 17 25 41	5 24 32 1	7 3 22 47	7 29 24 59	7 6 3 27	8 21 22 18	2 17 17 30	2 16 10 25	−14 35	−23 3	2
3	2 47 52	6 16 8 8	9 0 2 23	5 25 11 8	7 3 6 29	7 29 36 37	7 7 18 0	8 21 26 28	2 17 14 19	2 16 10 56	−14 54	−22 29	3
4	2 51 49	6 17 8 13	9 12 19 55	5 25 50 16	7 2 40 46	7 29 48 20	7 8 32 32	8 21 30 42	2 17 11 8	2 16 11 39	−15 12	−20 50	4
5	2 55 46	6 18 8 20	9 24 23 24	5 26 29 26	7 2 5 24	8 0 0 7	7 9 47 4	8 21 35 2	2 17 7 57	2 16 11 33	−15 31	−18 17	5
6	2 59 42	6 19 8 28	10 6 18 7	5 27 8 36	7 1 20 28	8 0 11 58	7 11 1 36	8 21 39 25	2 17 4 47	2 16 9 49	−15 49	−14 59	6
7	3 3 39	6 20 8 38	10 18 9 3	5 27 47 48	7 0 26 17	8 0 23 54	7 12 16 8	8 21 43 53	2 17 1 36	2 16 5 55	−16 7	−11 7	7
8	3 7 35	6 21 8 49	11 0 0 44	5 28 27 0	6 29 23 36	8 0 35 55	7 13 30 38	8 21 48 25	2 16 58 25	2 15 59 43	−16 25	−6 49	8
9	3 11 32	6 22 9 2	11 11 56 58	5 29 6 14	6 28 13 38	8 0 47 59	7 14 45 9	8 21 53 2	2 16 55 14	2 15 51 31	−16 42	−2 15	9
10	3 15 28	6 23 9 16	11 24 0 42	5 29 45 29	6 26 58 11	8 1 0 8	7 15 59 39	8 21 57 43	2 16 52 4	2 15 41 54	−16 59	+2 27	10
11	3 19 25	6 24 9 32	0 6 14 3	6 0 24 45	6 25 39 16	8 1 12 21	7 17 14 9	8 22 2 29	2 16 48 53	2 15 31 44	−17 16	7 8	11
12	3 23 22	6 25 9 50	0 18 38 11	6 1 4 2	6 24 19 19	8 1 24 37	7 18 28 38	8 22 7 19	2 16 45 42	2 15 21 59	−17 33	11 36	12
13	3 27 18	6 26 10 9	1 1 13 43	6 1 43 20	6 23 0 56	8 1 36 58	7 19 43 6	8 22 12 13	2 16 42 31	2 15 13 31	−17 49	15 39	13
14	3 31 15	6 27 10 30	1 14 0 44	6 2 22 40	6 21 46 39	8 1 49 22	7 20 57 35	8 22 17 11	2 16 39 21	2 15 7 5	−18 5	19 3	14
15	3 35 11	6 28 10 53	1 26 59 1	6 3 2 1	6 20 38 53	8 2 1 50	7 22 12 2	8 22 22 13	2 16 36 10	2 15 3 1	−18 21	21 33	15
16	3 39 8	6 29 11 18	2 10 8 32	6 3 41 23	6 19 39 36	8 2 14 22	7 23 26 30	8 22 27 19	2 16 32 59	2 15 1 17	−18 36	22 56	16
17	3 43 4	7 0 11 44	2 23 29 28	6 4 20 47	6 18 50 23	8 2 26 58	7 24 40 57	8 22 32 29	2 16 29 48	2 15 1 24	−18 51	23 2	17
18	3 47 1	7 1 12 13	3 7 2 15	6 5 0 12	6 18 12 15	8 2 39 37	7 25 55 24	8 22 37 43	2 16 26 38	2 15 2 35	−19 6	21 47	18
19	3 50 57	7 2 12 43	3 20 47 26	6 5 39 38	6 17 45 45	8 2 52 18	7 27 9 50	8 22 43 0	2 16 23 27	2 15 3 52	−19 20	19 15	19
20	3 54 54	7 3 13 15	4 4 45 17	6 6 19 5	6 17 30 57	8 3 5 4	7 28 24 16	8 22 48 22	2 16 20 16	2 15 4 19	−19 34	15 33	20
21	3 58 51	7 4 13 48	4 18 55 25	6 6 58 35	6 17 27 36	8 3 17 52	7 29 38 42	8 22 53 47	2 16 17 5	2 15 3 17	−19 48	10 57	21
22	4 2 47	7 5 14 24	5 3 16 15	6 7 38 5	6 17 35 10	8 3 30 44	8 0 53 8	8 22 59 16	2 16 13 55	2 15 0 29	−20 1	5 41	22

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (प्रातः 5घं-30मि) (23 नवं. से 26 दिसंबर 2019 ई. तक) 1 दिसंबर, 2019 ई. को अयनांश 24°/07'/50''

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (प्रातः 5$^{घं}$–30$^{मि}$) (23 नवं. से 26 दिसंबर 2019 ई. तक) 1 दिसंबर, 2019 ई. को अयनांश 24°/07'/50"

ता.	सम्पातिक काल	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	ता.
नवं.	0-00 Hr. GMT	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	
23	4 6 44	7 6 15 1	5 17 44 38	6 8 17 37	6 17 52 52	8 3 43 39	8 2 7 33	8 23 4 48	2 16 10 44	2 14 56 1	−20 14	+0 4	23
24	4 10 40	7 7 15 41	6 2 15 51	6 8 57 10	6 18 19 53	8 3 56 37	8 3 21 58	8 23 10 24	2 16 7 33	2 14 50 26	−20 26	−5 35	24
25	4 14 37	7 8 16 21	6 16 44 0	6 9 36 44	6 18 55 19	8 4 9 38	8 4 36 22	8 23 16 4	2 16 4 22	2 14 44 30	−20 38	−10 54	25
26	4 18 33	7 9 17 3	7 1 2 47	6 10 16 19	6 19 38 18	8 4 22 42	8 5 50 46	8 23 21 46	2 16 1 12	2 14 39 1	−20 50	−15 35	26
27	4 22 30	7 10 17 47	7 15 6 22	6 10 55 56	6 20 27 59	8 4 35 49	8 7 5 9	8 23 27 33	2 15 58 1	2 14 34 42	−21 1	−19 18	27
28	4 26 26	7 11 18 32	7 28 50 25	6 11 35 34	6 21 23 30	8 4 48 58	8 8 19 33	8 23 33 22	2 15 54 50	2 14 31 58	−21 12	−21 51	28
29	4 30 23	7 12 19 18	8 12 12 28	6 12 15 13	6 22 24 9	8 5 2 10	8 9 33 55	8 23 39 15	2 15 51 39	2 14 30 56	−21 23	−23 4	29
30	4 34 20	7 13 20 5	8 25 11 59	6 12 54 53	6 23 29 15	8 5 15 25	8 10 48 16	8 23 45 11	2 15 48 28	2 14 31 20	−21 33	−23 0	30
दिसं.	4 38 16	7 14 20 54	9 7 50 31	6 13 34 34	6 24 38 13	8 5 28 41	8 12 2 37	8 23 51 9	2 15 45 18	2 14 32 44	−21 43	−21 44	दिसं
2	4 42 13	7 15 21 43	9 20 10 56	6 14 14 16	6 25 50 30	8 5 42 0	8 13 16 57	8 23 57 11	2 15 42 7	2 14 34 31	−21 52	−19 27	2
3	4 46 9	7 16 22 33	10 2 17 15	6 14 54 0	6 27 5 38	8 5 55 21	8 14 31 16	8 24 3 16	2 15 38 56	2 14 36 4	−22 1	−16 21	3
4	4 50 6	7 17 23 24	10 14 14 6	6 15 33 44	6 28 23 15	8 6 8 44	8 15 45 34	8 24 9 24	2 15 35 45	2 14 36 54	−22 10	−12 37	4
5	4 54 2	7 18 24 16	10 26 6 25	6 16 13 30	6 29 42 57	8 6 22 9	8 16 59 51	8 24 15 34	2 15 32 35	2 14 36 41	−22 18	−8 26	5
6	4 57 59	7 19 25 9	11 7 59 3	6 16 53 17	7 1 4 28	8 6 35 36	8 18 14 7	8 24 21 48	2 15 29 24	2 14 35 18	−22 25	−3 56	6
7	5 1 55	7 20 26 3	11 19 56 39	6 17 33 5	7 2 27 31	8 6 49 5	8 19 28 21	8 24 28 3	2 15 26 13	2 14 32 51	−22 33	+0 45	7
8	5 5 52	7 21 26 57	0 2 3 16	6 18 12 54	7 3 51 53	8 7 2 36	8 20 42 35	8 24 34 22	2 15 23 2	2 14 29 36	−22 39	5 27	8
9	5 9 48	7 22 27 52	0 14 22 11	6 18 52 45	7 5 17 23	8 7 16 8	8 21 56 47	8 24 40 43	2 15 19 52	2 14 25 59	−22 46	10 2	9
10	5 13 45	7 23 28 48	0 26 55 50	6 19 32 37	7 6 43 51	8 7 29 42	8 23 10 58	8 24 47 6	2 15 16 41	2 14 22 27	−22 52	14 17	10
11	5 17 42	7 24 29 45	1 9 45 31	6 20 12 30	7 8 11 9	8 7 43 17	8 24 25 8	8 24 53 32	2 15 13 30	2 14 19 26	−22 57	18 0	11
12	5 21 38	7 25 30 43	1 22 51 30	6 20 52 24	7 9 39 9	8 7 56 54	8 25 39 16	8 25 0 0	2 15 10 19	2 14 17 16	−23 2	20 53	12
13	5 25 35	7 26 31 41	2 6 13 2	6 21 32 20	7 11 7 47	8 8 10 32	8 26 53 23	8 25 6 30	2 15 7 9	2 14 16 8	−23 6	22 42	13
14	5 29 31	7 27 32 41	2 19 48 27	6 22 12 17	7 12 36 56	8 8 24 12	8 28 7 29	8 25 13 3	2 15 3 58	2 14 15 58	−23 10	23 13	14
15	5 33 28	7 28 33 41	3 3 35 41	6 22 52 15	7 14 6 34	8 8 37 53	8 29 21 33	8 25 19 37	2 15 0 47	2 14 16 35	−23 14	22 20	15
16	5 37 24	7 29 34 42	3 17 32 17	6 23 32 15	7 15 36 37	8 8 51 35	9 0 35 36	8 25 26 14	2 14 57 36	2 14 17 38	−23 17	20 4	16
17	5 41 21	8 0 35 44	4 1 35 53	6 24 12 16	7 17 7 2	8 9 5 18	9 1 49 37	8 25 32 53	2 14 54 26	2 14 18 44	−23 20	16 36	17
18	5 45 17	8 1 36 47	4 15 44 9	6 24 52 19	7 18 37 46	8 9 19 2	9 3 3 37	8 25 39 33	2 14 51 15	2 14 19 34	−23 22	12 9	18
19	5 49 14	8 2 37 51	4 29 54 56	6 25 32 23	7 20 8 48	8 9 32 47	9 4 17 36	8 25 46 16	2 14 48 4	2 14 19 54	−23 24	7 3	19
20	5 53 11	8 3 38 56	5 14 6 6	6 26 12 28	7 21 40 7	8 9 46 33	9 5 31 33	8 25 53 0	2 14 44 53	2 14 19 40	−23 25	+1 35	20
21	5 57 7	8 4 40 2	5 28 15 28	6 26 52 35	7 23 11 41	8 10 0 19	9 6 45 29	8 25 59 46	2 14 41 42	2 14 18 58	−23 26	−3 57	21
22	6 1 4	8 5 41 9	6 12 20 35	6 27 32 43	7 24 43 31	8 10 14 7	9 7 59 23	8 26 6 34	2 14 38 32	2 14 17 58	−23 26	−9 16	22
23	6 5 0	8 6 42 16	6 26 18 53	6 28 12 53	7 26 15 35	8 10 27 55	9 9 13 16	8 26 13 23	2 14 35 21	2 14 16 56	−23 26	−14 4	23
24	6 8 57	8 7 43 24	7 10 7 42	6 28 53 3	7 27 47 53	8 10 41 43	9 10 27 7	8 26 20 14	2 14 32 10	2 14 16 3	−23 25	−18 4	24
25	6 12 53	8 8 44 34	7 23 44 22	6 29 33 15	7 29 20 25	8 10 55 32	9 11 40 56	8 26 27 6	2 14 28 59	2 14 15 28	−23 24	−21 2	25
26	6 16 50	8 9 45 43	8 7 6 43	7 0 13 29	8 0 53 11	8 11 9 22	9 12 54 43	8 26 34 0	2 14 25 49	2 14 15 11	−23 23	−22 46	26

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (प्रातः 5^घं -30^मि) (27 दिसंबर, 2018 ई. से 29 जनवरी 2020 ई. तक)

1 जनवरी, 2020 ई० को अयनांश = 24°/07′/55″

ता. दिसं.	सम्पातिक काल 0-00 Hr. GMT	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	मध्यम राहु रा. अं. क. वि.	स्पष्ट राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रांति अं. क.	चंद्र क्रांति अं. क.	दिनां.
27	6 20 46	8 10 46 52	8 20 13 11	7 0 53 43	8 2 26 11	8 11 23 12	9 14 8 29	8 26 40 55	2 14 22 38	2 14 15 11	−23 21	−23 13	27
28	6 24 43	8 11 48 2	9 3 3 7	7 1 33 58	8 3 59 27	8 11 36 59	9 15 22 12	8 26 47 51	2 14 19 27	2 14 15 21	−23 18	−22 24	28
29	6 28 40	8 12 49 12	9 15 36 52	7 2 14 15	8 5 32 58	8 11 50 51	9 16 35 53	8 26 54 49	2 14 16 16	2 14 15 32	−23 15	−20 28	29
30	6 32 36	8 13 50 22	9 27 55 57	7 2 54 33	8 7 6 44	8 12 4 41	9 17 49 32	8 27 1 48	2 14 13 6	2 14 15 39	−23 12	−17 37	30
31	6 36 33	8 14 51 32	10 10 2 45	7 3 34 52	8 8 40 47	8 12 18 30	9 19 3 8	8 27 8 47	2 14 9 55	2 14 15 40	−23 8	−14 3	31
जन.	6 40 29	8 15 52 42	10 22 0 34	7 4 15 12	8 10 15 8	8 12 32 20	9 20 16 42	8 27 15 48	2 14 6 44	2 14 15 34	−23 4	−9 58	जन.
2	6 44 26	8 16 53 51	11 3 53 26	7 4 55 33	8 11 49 46	8 12 46 9	9 21 30 13	8 27 22 49	2 14 3 33	2 14 15 26	−22 59	−5 33	2
3	6 48 22	8 17 55 2	11 15 45 45	7 5 35 55	8 13 24 44	8 12 59 58	9 22 43 41	8 27 29 52	2 14 0 23	2 14 15 22	−22 53	−0 57	3
4	6 52 19	8 18 56 11	11 27 42 14	7 6 16 19	8 15 0 1	8 13 13 47	9 23 57 7	8 27 36 54	2 13 57 12	2 14 15 28	−22 48	+3 44	4
5	6 56 16	8 19 57 21	0 9 47 42	7 6 56 43	8 16 35 39	8 13 27 35	9 25 10 29	8 27 43 58	2 13 54 1	2 14 15 49	−22 41	8 20	5
6	7 0 12	8 20 58 29	0 22 6 30	7 7 37 9	8 18 11 39	8 13 41 22	9 26 23 49	8 27 51 2	2 13 50 50	2 14 16 26	−22 35	12 41	6
7	7 4 9	8 21 59 38	1 4 42 33	7 8 17 36	8 19 48 1	8 13 55 9	9 27 37 5	8 27 58 7	2 13 47 40	2 14 17 14	−22 28	16 36	7
8	7 8 5	8 23 0 46	1 17 38 47	7 8 58 4	8 21 24 46	8 14 8 55	9 28 50 18	8 28 5 12	2 13 44 29	2 14 18 5	−22 20	19 51	8
9	7 12 2	8 24 1 54	2 0 56 48	7 9 38 34	8 23 1 56	8 14 22 40	10 0 3 27	8 28 12 18	2 13 41 18	2 14 18 46	−22 12	22 7	9
10	7 15 58	8 25 3 2	2 14 36 37	7 10 19 4	8 24 39 31	8 14 36 24	10 1 16 33	8 28 19 23	2 13 38 7	2 14 19 3	−22 4	23 11	10
11	7 19 55	8 26 4 9	2 28 36 21	7 10 59 36	8 26 17 32	8 14 50 7	10 2 29 35	8 28 26 30	2 13 34 57	2 14 18 46	−21 55	22 48	11
12	7 23 51	8 27 5 17	3 12 52 24	7 11 40 10	8 27 56 0	8 15 3 49	10 3 42 34	8 28 33 36	2 13 31 46	2 14 17 49	−21 46	20 58	12
13	7 27 48	8 28 6 23	3 27 19 39	7 12 20 45	8 29 34 54	8 15 17 30	10 4 55 28	8 28 40 43	2 13 28 35	2 14 16 17	−21 36	17 45	13
14	7 31 45	8 29 7 30	4 11 52 7	7 13 1 21	9 1 14 16	8 15 31 10	10 6 8 19	8 28 47 47	2 13 25 24	2 14 14 21	−21 26	13 26	14
15	7 35 41	9 0 8 36	4 26 23 58	7 13 41 58	9 2 54 6	8 15 44 49	10 7 21 7	8 28 54 55	2 13 22 13	2 14 12 23	−21 15	8 21	15
16	7 39 38	9 1 9 43	5 10 50 0	7 14 22 37	9 4 34 24	8 15 58 26	10 8 33 50	8 29 2 1	2 13 19 3	2 14 10 44	−21 5	+2 51	16
17	7 43 34	9 2 10 49	5 25 6 13	7 15 3 17	9 6 15 9	8 16 12 2	10 9 46 29	8 29 9 8	2 13 15 52	2 14 9 46	−20 53	−2 45	17
18	7 47 31	9 3 11 55	6 9 10 3	7 15 43 59	9 7 56 21	8 16 25 37	10 10 59 5	8 29 16 14	2 13 12 41	2 14 9 39	−20 41	−8 7	18
19	7 51 27	9 4 13 1	6 23 0 17	7 16 24 42	9 9 38 0	8 16 39 9	10 12 11 36	8 29 23 20	2 13 9 30	2 14 10 22	−20 29	−13 1	19
20	7 55 24	9 5 14 7	7 6 36 41	7 17 5 26	9 11 20 3	8 16 52 41	10 13 24 3	8 29 30 25	2 13 6 20	2 14 11 42	−20 17	−17 10	20
21	7 59 20	9 6 15 12	7 19 59 29	7 17 46 11	9 13 2 30	8 17 6 10	10 14 36 25	8 29 37 30	2 13 3 9	2 14 13 12	−20 4	−20 21	21
22	8 3 16	9 7 16 17	8 3 9 19	7 18 26 57	9 14 45 17	8 17 19 38	10 15 48 43	8 29 44 35	2 12 59 58	2 14 14 22	−19 51	−22 24	22
23	8 7 13	9 8 17 22	8 16 6 36	7 19 7 45	9 16 28 21	8 17 33 3	10 17 0 57	8 29 51 39	2 12 56 47	2 14 14 40	−19 37	−23 13	23
24	8 11 10	9 9 18 25	8 28 51 51	7 19 48 34	9 18 11 38	8 17 46 27	10 18 13 6	8 29 58 43	2 12 53 36	2 14 13 44	−19 23	−22 47	24
25	8 15 7	9 10 19 29	9 11 25 31	7 20 29 24	9 19 55 4	8 17 59 48	10 19 25 10	9 0 5 45	2 12 50 26	2 14 11 23	−19 9	−21 12	25
26	8 19 3	9 11 20 31	9 23 48 16	7 21 10 15	9 21 38 32	8 18 13 8	10 20 37 8	9 0 12 47	2 12 47 15	2 14 7 40	−18 54	−18 38	26
27	8 23 0	9 12 21 32	10 6 0 26	7 21 51 7	9 23 21 54	8 18 26 25	10 21 49 2	9 0 19 48	2 12 44 4	2 14 2 52	−18 39	−15 16	27
28	8 26 56	9 13 22 34	10 18 3 55	7 22 32 0	9 25 5 2	8 18 39 39	10 23 0 50	9 0 26 48	2 12 40 53	2 13 57 29	−18 23	−11 19	28
29	8 30 53	9 14 23 33	11 0 0 25	7 23 12 54	9 26 47 45	8 18 52 51	10 24 12 32	9 0 33 48	2 12 37 43	2 13 52 5	−18 8	−6 58	29

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (30 जनवरी से 29 फरवरी 2020 ई. तक) 1 फरवरी, 2020 ई. को अयनांश 24°/08′/00″

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट *(30 जनवरी से 29 फरवरी 2020 ई. तक)* 1 फरवरी, 2020 ई. को अयनांश 24°/08'/00''

ता. जन.	सम्पातिक काल 0-00 Hr. GMT	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	मध्यम राहु रा. अं. क. वि.	स्पष्ट राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रांति अं. क.	चंद्र क्रांति अं. क.	ता.
30	8 34 49	9 15 24 31	11 11 52 38	7 23 53 49	9 28 29 50	8 19 6 0	10 25 24 9	9 0 40 46	2 12 34 32	2 13 47 15	–17 52	–2 23	30
31	8 38 46	9 16 25 28	11 23 43 56	7 24 34 45	10 0 11 1	8 19 19 7	10 26 35 39	9 0 47 43	2 12 31 21	2 13 43 31	–17 35	+2 16	31
फर.	8 42 42	9 17 26 24	0 5 38 19	7 25 15 42	10 1 51 2	8 19 32 11	10 27 47 3	9 0 54 38	2 12 28 10	2 13 41 13	–17 19	6 52	फर.
2	8 46 39	9 18 27 19	0 17 40 22	7 25 56 40	10 3 29 31	8 19 45 12	10 28 58 21	9 1 1 33	2 12 24 59	2 13 40 26	–17 2	11 16	2
3	8 50 36	9 19 28 12	0 29 54 53	7 26 37 39	10 5 6 6	8 19 58 10	11 0 9 32	9 1 8 26	2 12 21 49	2 13 40 59	–16 44	15 17	3
4	8 54 32	9 20 29 4	1 12 26 43	7 27 18 39	10 6 40 18	8 20 11 5	11 1 20 36	9 1 15 17	2 12 18 38	2 13 42 24	–16 27	18 45	4
5	8 58 29	9 21 29 55	1 25 20 16	7 27 59 40	10 8 11 39	8 20 23 57	11 2 31 33	9 1 22 7	2 12 15 27	2 13 44 0	–16 9	21 23	5
6	9 2 25	9 22 30 45	2 8 39 4	7 28 40 42	10 9 39 34	8 20 36 46	11 3 42 23	9 1 28 56	2 12 12 16	2 13 45 0	–15 51	22 57	6
7	9 6 22	9 23 31 32	2 22 24 55	7 29 21 45	10 11 3 26	8 20 49 31	11 4 53 5	9 1 35 43	2 12 9 5	2 13 44 42	–15 32	23 11	7
8	9 10 18	9 24 32 19	3 6 37 17	8 0 2 50	10 12 22 34	8 21 2 13	11 6 3 40	9 1 42 28	2 12 5 55	2 13 42 35	–15 14	21 57	8
9	9 14 15	9 25 33 4	3 21 12 48	8 0 43 56	10 13 36 19	8 21 14 52	11 7 14 7	9 1 49 12	2 12 2 44	2 13 38 30	–14 55	19 14	9
10	9 18 11	9 26 33 48	4 6 5 18	8 1 25 2	10 14 43 54	8 21 27 27	11 8 24 25	9 1 55 54	2 11 59 33	2 13 32 43	–14 36	15 13	10
11	9 22 8	9 27 34 32	4 21 6 18	8 2 6 11	10 15 44 35	8 21 39 59	11 9 34 36	9 2 2 33	2 11 56 22	2 13 25 52	–14 16	10 12	11
12	9 26 5	9 28 35 12	5 6 6 19	8 2 47 20	10 16 37 35	8 21 52 27	11 10 44 38	9 2 9 12	2 11 53 11	2 13 18 52	–13 56	+4 35	12
13	9 30 1	9 29 35 53	5 20 56 25	8 3 28 30	10 17 22 14	8 22 4 51	11 11 54 32	9 2 15 48	2 11 50 1	2 13 12 38	–13 37	–1 14	13
14	9 33 58	10 0 36 32	6 5 29 46	8 4 9 42	10 17 57 49	8 22 17 12	11 13 4 18	9 2 22 22	2 11 46 50	2 13 7 58	–13 16	–6 53	14
15	9 37 54	10 1 37 10	6 19 42 8	8 4 50 55	10 18 23 49	8 22 29 28	11 14 13 54	9 2 28 53	2 11 43 39	2 13 5 17	–12 56	–12 3	15
16	9 41 51	10 2 37 47	7 3 32 6	8 5 32 9	10 18 39 45	8 22 41 41	11 15 23 22	9 2 35 23	2 11 40 28	2 13 4 32	–12 35	–16 27	16
17	9 45 47	10 3 38 23	7 17 0 21	8 6 13 24	10 18 45 22	8 22 53 50	11 16 32 41	9 2 41 50	2 11 37 17	2 13 5 11	–12 15	–19 52	17
18	9 49 44	10 4 38 57	8 0 8 59	8 6 54 41	10 18 40 30	8 23 5 54	11 17 41 50	9 2 48 15	2 11 34 7	2 13 6 22	–11 54	–22 10	18
19	9 53 40	10 5 39 31	8 13 0 50	8 7 35 58	10 18 25 20	8 23 17 54	11 18 50 50	9 2 54 38	2 11 30 56	2 13 7 1	–11 33	–23 14	19
20	9 57 37	10 6 40 3	8 25 38 44	8 8 17 16	10 18 0 12	8 23 29 49	11 19 59 40	9 3 0 59	2 11 27 45	2 13 6 9	–11 11	–23 5	20
21	10 1 34	10 7 40 33	9 8 5 14	8 8 58 35	10 17 25 43	8 23 41 41	11 21 8 20	9 3 7 16	2 11 24 34	2 13 2 59	–10 50	–21 46	21
22	10 5 30	10 8 41 3	9 20 22 29	8 9 39 55	10 16 42 48	8 23 53 27	11 22 16 50	9 3 13 31	2 11 21 23	2 12 57 10	–10 28	–19 26	22
23	10 9 27	10 9 41 30	10 2 32 4	8 10 21 16	10 15 52 31	8 24 5 8	11 23 25 9	9 3 19 44	2 11 18 13	2 12 48 46	–10 6	–16 16	23
24	10 13 23	10 10 41 57	10 14 35 14	8 11 2 38	10 14 56 13	8 24 16 45	11 24 33 18	9 3 25 54	2 11 15 2	2 12 38 16	–9 44	–12 26	24
25	10 17 20	10 11 42 21	10 26 33 6	8 11 44 0	10 13 55 26	8 24 28 17	11 25 41 15	9 3 32 0	2 11 11 51	2 12 26 31	–9 22	–8 10	25
26	10 21 16	10 12 42 44	11 8 26 56	8 12 25 24	10 12 51 44	8 24 39 44	11 26 49 1	9 3 38 4	2 11 8 40	2 12 14 30	–9 0	–3 36	26
27	10 25 13	10 13 43 5	11 20 18 23	8 13 6 48	10 11 46 48	8 24 51 6	11 27 56 34	9 3 44 5	2 11 5 29	2 12 3 17	–8 37	+1 5	27
28	10 29 10	10 14 43 24	0 2 9 38	8 13 48 12	10 10 42 12	8 25 2 22	11 29 3 56	9 3 50 4	2 11 2 19	2 11 53 48	–8 15	5 43	28
29	10 33 6	10 15 43 41	0 14 3 36	8 14 29 38	10 9 39 26	8 25 13 34	0 0 11 5	9 3 55 59	2 10 59 8	2 11 46 42	–7 52	10 11	29

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (1 मार्च से 31 मार्च 2020 ई. तक)

1 मार्च, 2020 ई. को अयनांश 24°/08′/03″

ता. मार्च	सम्पातिक काल 0-00 Hr. GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	ता.
		रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	
मार्च	10 37 3	10 16 43 56	0 26 3 56	8 15 11 4	10 8 39 50	8 25 24 40	0 1 18 1	9 4 1 50	2 10 55 57	2 11 42 12	−7 29	14 18	मार्च
2	10 40 59	10 17 44 9	1 8 14 56	8 15 52 30	10 7 44 32	8 25 35 40	0 2 24 43	9 4 7 39	2 10 52 46	2 11 40 7	−7 7	17 54	2
3	10 44 56	10 18 44 20	1 20 41 24	8 16 33 58	10 6 54 26	8 25 46 35	0 3 31 12	9 4 13 24	2 10 49 36	2 11 39 47	−6 44	20 46	3
4	10 48 52	10 19 44 29	2 3 28 17	8 17 15 26	10 6 10 15	8 25 57 24	0 4 37 26	9 4 19 6	2 10 46 25	2 11 40 13	−6 21	22 42	4
5	10 52 49	10 20 44 36	2 16 40 10	8 17 56 55	10 5 32 27	8 26 8 8	0 5 43 25	9 4 24 45	2 10 43 14	2 11 40 13	−5 57	23 26	5
6	10 56 45	10 21 44 40	3 0 20 29	8 18 38 25	10 5 1 20	8 26 18 45	0 6 49 10	9 4 30 20	2 10 40 3	2 11 38 41	−5 34	22 49	6
7	11 0 42	10 22 44 43	3 14 30 41	8 19 19 55	10 4 37 4	8 26 29 17	0 7 54 39	9 4 35 52	2 10 36 53	2 11 34 47	−5 11	20 45	7
8	11 4 38	10 23 44 43	3 29 9 11	8 20 1 27	10 4 19 37	8 26 39 43	0 8 59 51	9 4 41 20	2 10 33 42	2 11 28 13	−4 47	17 16	8
9	11 8 35	10 24 44 42	4 14 10 47	8 20 42 59	10 4 8 53	8 26 50 2	0 10 4 48	9 4 46 45	2 10 30 31	2 11 19 15	−4 24	12 36	9
10	11 12 32	10 25 44 38	4 29 26 48	8 21 24 32	10 4 4 42	8 27 0 16	0 11 9 27	9 4 52 5	2 10 27 20	2 11 8 42	−4 0	7 4	10
11	11 16 28	10 26 44 33	5 14 46 6	8 22 6 6	10 4 6 49	8 27 10 23	0 12 13 49	9 4 57 23	2 10 24 10	2 10 57 44	−3 37	+1 4	11
12	11 20 25	10 27 44 26	5 29 57 9	8 22 47 40	10 4 14 57	8 27 20 24	0 13 17 53	9 5 2 36	2 10 20 59	2 10 47 39	−3 13	−4 56	12
13	11 24 21	10 28 44 17	6 14 50 2	8 23 29 16	10 4 28 49	8 27 30 18	0 14 21 39	9 5 7 46	2 10 17 48	2 10 39 31	−2 50	−10 32	13
14	11 28 18	10 29 44 6	6 29 18 5	8 24 10 52	10 4 48 5	8 27 40 6	0 15 25 7	9 5 12 52	2 10 14 37	2 10 33 58	−2 26	−15 25	14
15	11 32 14	11 0 43 54	7 13 18 19	8 24 52 30	10 5 12 28	8 27 49 47	0 16 28 16	9 5 17 54	2 10 11 27	2 10 31 0	−2 2	−19 16	15
16	11 36 11	11 1 43 40	7 26 50 51	8 25 34 8	10 5 41 37	8 27 59 22	0 17 31 4	9 5 22 51	2 10 8 16	2 10 30 4	−1 39	−21 56	16
17	11 40 7	11 2 43 24	8 9 58 15	8 26 15 46	10 6 15 16	8 28 8 49	0 18 33 33	9 5 27 45	2 10 5 5	2 10 30 7	−1 15	−23 20	17
18	11 44 4	11 3 43 6	8 22 44 13	8 26 57 25	10 6 53 9	8 28 18 10	0 19 35 41	9 5 32 35	2 10 1 54	2 10 29 52	−0 51	−23 26	18
19	11 48 1	11 4 42 47	9 5 13 0	8 27 39 5	10 7 34 58	8 28 27 23	0 20 37 28	9 5 37 20	2 9 58 44	2 10 28 6	−0 28	−22 21	19
20	11 51 57	11 5 42 26	9 17 28 41	8 28 20 45	10 8 20 31	8 28 36 29	0 21 38 53	9 5 42 1	2 9 55 33	2 10 23 49	−0 4	−20 13	20
21	11 55 54	11 6 42 3	9 29 34 55	8 29 2 25	10 9 9 31	8 28 45 28	0 22 39 56	9 5 46 38	2 9 52 22	2 10 16 32	+0 20	−17 12	21
22	11 59 50	11 7 41 39	10 11 34 41	8 29 44 6	10 10 1 47	8 28 54 20	0 23 40 35	9 5 51 11	2 9 49 11	2 10 6 15	+0 44	−13 30	22
23	12 3 47	11 8 41 12	10 23 30 15	9 0 25 48	10 10 57 8	8 29 3 4	0 24 40 51	9 5 55 39	2 9 46 0	2 9 53 27	1 7	−9 17	23
24	12 7 43	11 9 40 44	11 5 23 21	9 1 7 29	10 11 55 22	8 29 11 40	0 25 40 42	9 6 0 2	2 9 42 50	2 9 39 4	1 31	−4 45	24
25	12 11 40	11 10 40 13	11 17 15 21	9 1 49 11	10 12 56 21	8 29 20 9	0 26 40 7	9 6 4 21	2 9 39 39	2 9 24 14	1 55	−0 3	25
26	12 15 36	11 11 39 41	11 29 7 33	9 2 30 52	10 13 59 54	8 29 28 29	0 27 39 6	9 6 8 36	2 9 36 28	2 9 10 10	2 18	+4 40	26
27	12 19 33	11 12 39 6	0 11 1 26	9 3 12 34	10 15 5 53	8 29 36 42	0 28 37 37	9 6 12 45	2 9 33 17	2 8 57 59	2 42	9 14	27
28	12 23 30	11 13 38 29	0 22 58 54	9 3 54 16	10 16 14 15	8 29 44 47	0 29 35 40	9 6 16 51	2 9 30 7	2 8 48 27	3 5	13 29	28
29	12 27 26	11 14 37 50	1 5 2 33	9 4 35 58	10 17 24 49	8 29 52 43	1 0 33 14	9 6 20 51	2 9 26 56	2 8 41 58	3 28	17 15	29
30	12 31 23	11 15 37 9	1 17 15 24	9 5 17 40	10 18 37 41	9 0 0 32	1 1 30 17	9 6 24 46	2 9 23 45	2 8 38 24	3 52	20 19	30
31	12 35 19	11 16 36 25	1 29 41 33	9 5 59 22	10 19 52 15	9 0 8 11	1 2 26 49	9 6 28 36	2 9 20 34	2 8 37 6	4 15	22 31	31

यूरेनस, नेपच्यून एवं प्लूटो के निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे

यूरेनस, नैपच्यून एवं प्लूटो के निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे (भा. स्टै. टा.) वि. २०७६ (2019–20 ई.)

ता.	यूरेनस	नैपच्यून	प्लूटो	ता.	यूरेनस	नैपच्यून	प्लूटो	ता.	यूरेनस	नैपच्यून	प्लूटो	ता.	यूरेनस	नैपच्यून	प्लूटो
अप्रै.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	जुला	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अक्तू	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. रा	अं. क.३०	2020	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.
1	0 7 9 54	10 22 58	8 28 54	जुला	0 11 46 53	10 24 35	8 28 4	अक्तू	0 11 32 40	10 22 38	8 26 30	जन.	0 8 33 43	10 22 8	8 28 17
4	0 7 19 48	10 23 4	8 28 56	4	0 11 52 33	10 24 34	8 28 0	4	0 11 26 17	10 22 33	8 26 30	4	0 8 32 22	10 22 12	8 28 23
7	0 7 29 49	10 23 11	8 28 58	7	0 11 57 51	10 24 32	8 27 56	7	0 11 19 42	10 22 29	8 26 31	7	0 8 31 29	10 22 16	8 28 29
10	0 7 39 57	10 23 17	8 28 59	10	0 12 2 46	10 24 30	8 27 51	10	0 11 12 56	10 22 25	8 26 31	10	0 8 31 4	10 22 20	8 28 35
13	0 7 50 9	10 23 22	8 29 0	13	0 12 7 17	10 24 29	8 27 47	13	0 11 5 59	10 22 21	8 26 32	13	0 8 31 7	10 22 24	8 28 41
16	0 8 0 24	10 23 28	8 29 1	16	0 12 11 24	10 24 27	8 27 43	16	0 10 58 53	10 22 17	8 26 33	16	0 8 31 39	10 22 29	8 28 47
19	0 8 10 42	10 23 34	8 29 1	19	0 12 15 7	10 24 24	8 27 38	19	0 10 51 41	10 22 13	8 26 34	19	0 8 32 38	10 22 33	8 28 53
22	0 8 21 2	10 23 39	8 29 2	22	0 12 18 25	10 24 22	8 27 34	22	0 10 44 23	10 22 10	8 26 36	22	0 8 34 6	10 22 39	8 28 59
25	0 8 31 21	10 23 44	8 29 2	25	0 12 21 17	10 24 19	8 27 29	25	0 10 37 1	10 22 6	8 26 38	25	0 8 36 3	10 22 44	8 29 5
28	0 8 41 41	10 23 49	8 29 1	28	0 12 23 43	10 24 16	8 27 25	28	0 10 29 37	10 22 3	8 26 40	28	0 8 38 27	10 22 49	8 29 11
मई	0 8 51 58	10 23 54	8 29 1	31	0 12 25 43	10 24 12	8 27 21	31	0 10 22 13	10 22 0	8 26 42	31	0 8 41 19	10 22 55	8 29 17
4	0 9 2 13	10 23 59	8 29 0	अग.	0 12 26 17	10 24 11	8 27 20	नवं.	0 10 19 45	10 22 0	8 26 43	फर.	0 8 42 22	10 22 57	8 29 19
7	0 9 12 23	10 24 3	8 28 59	4	0 12 27 42	10 24 7	8 27 16	4	0 10 12 24	10 21 57	8 26 46	4	0 8 45 50	10 23 3	8 29 25
10	0 9 22 30	10 24 7	8 28 58	7	0 12 28 40	10 24 4	8 27 12	7	0 10 5 6	10 21 55	8 26 49	7	0 8 49 45	10 23 9	8 29 30
13	0 9 32 29	10 24 11	8 28 56	10	0 12 29 11	10 24 0	8 27 8	10	0 9 57 54	10 21 53	8 26 52	10	0 8 54 6	10 23 15	8 29 36
16	0 9 42 21	10 24 15	8 28 55	13	0 12 29 16	10 23 56	8 27 5	13	0 9 50 50	10 21 51	8 26 56	13	0 8 58 52	10 23 21	8 29 41
19	0 9 52 5	10 24 18	8 28 53	16	0 12 28 54	10 23 51	8 27 2	16	0 9 43 54	10 21 50	8 26 59	16	0 9 4 2	10 23 28	8 29 46
22	0 10 1 39	10 24 21	8 28 50	19	0 12 28 6	10 23 47	8 26 58	19	0 9 37 9	10 21 49	8 27 3	19	0 9 9 37	10 23 34	8 29 51
25	0 10 11 4	10 24 24	8 28 48	22	0 12 26 52	10 23 42	8 26 55	22	0 9 30 36	10 21 48	8 27 7	22	0 9 15 35	10 23 41	8 29 56
28	0 10 20 17	10 24 26	8 28 45	25	0 12 25 11	10 23 38	8 26 52	25	0 9 24 16	10 21 48	8 27 12	25	0 9 21 56	10 23 47	9 0 1
31	0 10 29 18	10 24 29	8 28 43	28	0 12 23 5	10 23 33	8 26 49	28	0 9 18 12	10 21 48	8 27 16	28	0 9 28 39	10 23 54	9 0 6
जून	0 10 32 16	10 24 29	8 28 42	31	0 12 20 34	10 23 28	8 26 46	दिसं	0 9 12 25	10 21 48	8 27 21	मार्च	0 9 33 19	10 23 59	9 0 9
4	0 10 40 59	10 24 31	8 28 38	सितं	0 12 19 37	10 23 26	8 26 45	4	0 9 6 55	10 21 49	8 27 26	4	0 9 40 35	10 24 5	9 0 13
7	0 10 49 28	10 24 33	8 28 35	4	0 12 16 33	10 23 21	8 26 42	7	0 9 1 46	10 21 49	8 27 31	7	0 9 48 11	10 24 12	9 0 17
10	0 10 57 41	10 24 34	8 28 32	7	0 12 13 4	10 23 17	8 26 40	10	0 8 56 57	10 21 51	8 27 36	10	0 9 56 5	10 24 19	9 0 21
13	0 11 5 38	10 24 35	8 28 28	10	0 12 9 13	10 23 11	8 26 38	13	0 8 52 30	10 21 52	8 27 41	13	0 10 4 16	10 24 26	9 0 25
16	0 11 13 18	10 24 36	8 28 24	13	0 12 4 59	10 23 7	8 26 36	16	0 8 48 25	10 21 54	8 27 47	16	0 10 12 43	10 24 33	9 0 28
19	0 11 20 40	10 24 36	8 28 21	16	0 12 0 23	10 23 2	8 26 34	19	0 8 44 45	10 21 56	8 27 52	19	0 10 21 26	10 24 39	9 0 32
22	0 11 27 43	10 24 36	8 28 17	19	0 11 55 28	10 22 57	8 26 33	22	0 8 41 29	10 21 58	8 27 58	22	0 10 30 23	10 24 46	9 0 35
25	0 11 34 27	10 24 36	8 28 13	22	0 11 50 12	10 22 52	8 26 32	25	0 8 38 38	10 22 1	8 28 3	25	0 10 39 33	10 24 53	9 0 38
28	0 11 40 50	10 24 35	8 28 8	25	0 11 44 38	10 22 47	8 26 31	28	0 8 36 14	10 22 4	8 28 9	28	0 10 48 55	10 24 59	9 0 40
30	0 11 44 54	10 24 35	8 28 6	28	0 11 38 47	10 22 42	8 26 31	31	0 8 34 52	10 22 7	8 28 15	31	0 10 58 28	10 25 6	9 0 42

जालन्धर में दैनिक चन्द्रोदय-चन्द्रास्त काल (भा. स्टैं. टा.) (सन् 2019-20 ई.)

तारीख	अप्रैल 2019		मई 2019		जून 2019		जुलाई 2019		अगस्त 2019		सितम्बर 2019		अक्तूबर 2019		नवम्बर 2019		तारीख
	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	
	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	
1	4 15	15 15	3 54	15 48	4 01	17 22	3 56	18 12	5 37	19 49	7 55	20 31	8 56	20 20	10 52	21 16	1
2	4 50	16 08	4 25	16 42	4 38	18 23	4 48	19 15	6 48	20 37	9 03	21 09	10 02	21 02	11 48	22 10	2
3	5 23	17 02	4 56	17 38	5 20	19 26	5 46	20 15	7 58	21 20	10 10	21 48	11 07	21 47	12 37	23 05	3
4	5 54	17 56	5 29	18 36	6 07	20 29	6 51	21 11	9 07	22 00	11 15	22 27	12 08	22 36	13 21	— —	4
5	6 25	18 51	6 04	19 35	7 01	21 30	7 58	22 00	10 14	22 37	12 18	23 09	13 04	23 27	13 59	0 01	5
6	6 57	19 47	6 42	20 36	8 01	22 27	9 07	22 44	11 19	23 13	13 19	23 54	13 55	— —	14 34	0 56	6
7	7 29	20 45	7 26	21 38	9 05	23 18	10 15	23 24	12 23	23 51	14 16	— —	14 41	0 20	15 05	1 50	7
8	8 05	21 44	8 15	22 39	10 12	— —	11 21	— —	13 25	— —	15 09	00 42	15 22	1 15	15 35	2 43	8
9	8 44	22 44	9 10	23 37	11 18	0 04	12 25	00 01	14 26	00 30	15 58	1 33	15 59	2 9	16 05	3 37	9
10	9 29	23 44	10 10	— —	12 24	0 45	13 28	00 37	15 24	1 12	16 42	2 27	16 32	3 4	16 34	4 30	10
11	10 19	— —	11 14	00 31	13 28	1 23	14 29	1 13	16 20	1 57	17 21	3 21	17 03	3 57	17 06	5 25	11
12	11 15	0 43	12 19	1 19	14 31	1 59	15 31	1 50	17 12	2 46	17 57	4 15	17 33	4 51	17 39	6 21	12
13	12 16	1 40	13 25	2 03	15 34	2 35	16 31	2 30	17 59	3 38	18 30	5 09	18 03	5 44	18 17	7 19	13
14	13 21	2 32	14 31	2 44	16 36	3 11	17 29	3 13	18 42	4 31	19 01	6 30	18 33	6 38	18 59	8 19	14
15	14 29	3 20	15 36	3 21	17 38	3 50	18 24	4 00	19 21	5 26	19 31	6 56	19 05	7 33	19 48	9 19	15
16	15 36	4 04	16 40	3 58	18 39	4 31	19 16	4 50	19 56	6 20	20 00	7 49	19 40	8 29	20 42	10 18	16
17	16 44	4 45	17 44	4 35	19 37	5 16	20 02	5 43	20 28	7 14	20 31	8 43	20 18	9 27	21 41	11 14	17
18	17 51	5 23	18 48	5 13	20 32	6 05	20 44	6 38	20 58	8 08	21 03	9 37	21 02	10 25	22 44	12 05	18
19	18 56	6 01	19 51	5 53	21 21	6 57	21 21	7 32	21 28	9 01	21 39	10 33	21 51	11 24	23 49	12 52	19
20	20 01	6 39	20 51	6 37	22 06	7 51	21 55	8 27	21 58	9 54	22 19	11 31	22 47	12 21	— —	13 35	20
21	21 05	7 19	21 48	7 24	22 46	8 46	22 26	9 20	22 29	10 47	23 05	12 30	23 47	13 16	0 55	14 14	21
22	22 07	8 01	22 41	8 15	23 22	9 41	22 57	10 13	23 03	11 43	23 57	13 29	— —	14 07	2 01	14 51	22
23	23 05	8 47	23 28	9 07	23 55	10 35	23 26	11 06	23 40	12 40	— —	14 27	00 52	14 53	3 07	15 27	23
24	23 59	9 35	— —	10 02	— —	11 28	23 57	12 00	— —	13 39	0 56	15 22	1 59	15 36	4 13	16 04	24
25	— —	10 26	0 10	10 56	0 26	12 21	— —	12 55	0 24	14 40	2 1	16 13	3 08	16 16	5 19	16 43	25
26	0 49	11 19	0 48	11 50	0 56	13 15	0 30	13 52	1 13	15 40	3 9	17 00	4 16	16 54	6 26	17 25	26
27	1 33	12 12	1 23	12 44	1 26	14 10	1 06	14 52	2 10	16 39	4 19	17 43	5 24	17 32	7 32	18 11	27
28	2 13	13 06	1 55	13 38	1 58	15 07	1 47	15 53	3 14	17 35	5 30	18 23	6 32	18 10	8 35	19 02	28
29	2 49	14 00	2 26	14 32	2 33	16 07	2 34	16 56	4 23	18 25	6 39	19 01	7 40	18 52	9 34	19 56	29
30	3 23	14 54	2 56	15 27	3 12	17 09	3 28	17 58	5 34	19 11	7 48	19 40	8 47	19 36	10 28	20 52	30
31	— —	— —	3 28	16 23	— —	— —	4 30	18 56	6 45	19 52	— —	— —	9 52	20 24	— —	— —	31

शुद्ध एवं शुभ विवाह मुहूर्त—सं. २०७६ वि. (सन् 2019-20 ई.)

समय शुद्धि विचार (अशुभ समय—अवधि)—

शुक्र अस्त—शुक्र इस वर्ष 19 जुलाई, 2019 ई. को पूर्व में अस्त होकर 29 सितं., 2019 ई. को पश्चिम में उदय होगा। ता. 16 जुलाई से 18 जुलाई तक शुक्रवार्धक्य दोष तथा 2 अक्तू., 2019 ई. तक शुक्र बाल्यत्व दोष रहेगा।

गुरु अस्त—गुरु इस वर्ष 15 दिसंबर, 2019 ई. को पश्चिम में अस्त होकर 10 जनवरी, 2020 ई. को पूर्व में उदित होगा। ता. 12 दिसं. से 14 दिसं. तक गुरुवार्धक्य दोष तथा 13 जन., 2020 ई. तक गुरु-बाल्यत्व दोष व्याप्त रहेगा। अतः इस अवधि में शुभ कृत्य नहीं किए जाएंगे।

श्राद्ध दिन—ता. 14 सितं. से 28 सितंबर तक श्राद्ध दिन (पितृपक्ष) रहेंगे।

खण्डग्रास चन्द्रग्रहण (16 जुलाई, 2019 ई.)—यह खण्डग्रास चन्द्रग्रहण '**उत्तराषाढ़ा**' नक्षत्रकालीन घटित होने से आगामी चार मास (16 नवं., 2019 ई.) तक यह नक्षत्र विवाहादि शुभ कार्यों के लिए त्याज्य रहेगा। (देखें पृष्ठ 25)

चातुर्मास्यादि में विवाह मुहूर्त—पंजाब, हि.प्र., दिल्ली, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर आदि प्रदेशों में चातुर्मास (आषाढ़ शुक्ल एकादशी से कार्तिक शुक्ल एकादशी तक) में गत सैंकड़ों वर्षों से परम्परावश एवं लोकमान्यता अनुसार विवाहादि शुभ मुहूर्त्त स्वीकार किए गए हैं। हमारे मुहूर्तकारों ने भी स्थानीय परम्पराओं को शास्त्रादेश के समान आदर देने की अनुमति दी है। कुछ मुहूर्त्तशास्त्रकारों ने तो ऐसी परम्पराओं को शास्त्र से भी अधिक महत्त्व देने का परामर्श दिया है। '**वृहत्संहिता**' में वराह का यह वाक्य है—

देशाचारस्तावदादौ विचिन्त्यः, देशे देशे या स्थिति सैव कार्या।
लोके दुष्टं पण्डिता वर्जयन्ति, दैवज्ञोऽतो लोकमार्गेण यायात्॥

कार्तिक मास—ता. 17 अक्तू. से 15 नवं., 2019 ई. तक सौर कार्तिक मास रहेगा। इस समयावधि में केवल पर्वतीय प्रदेशों में ही विवाहादि शुभ कार्य सम्पादित किए जाते हैं।

कंकण-सूर्यग्रहण (26 दिसंबर, 2019 ई.)—यह कंकण सूर्यग्रहण '**मूल**' नक्षत्रकालीन घटित होने से आगामी छः मास (26 जून, 2020 ई.) तक यह नक्षत्र विवाहादि शुभ कार्यों के लिए त्याज्य रहेगा। (देखें पृष्ठ 27)

होलाष्टक—ता. 3 से 9 मार्च, 2020 ई. तक होलाष्टक रहेंगे। इस अवधि में भी विवाहादि शुभ कृत्य वर्जित रहेंगे। विशेषकर पंजाब, हि.प्र., जम्मू-कश्मीर, हरियाणा आदि राज्यों में। जबकि कुछ राज्यों/क्षेत्रों में (उ.प्र., बिहारादि) होलाष्टक-दिनों में मंगल कार्यों का सम्पादन शुभ माना जाता है। (देखें **पंचांगदिवाकर वि. संवत् २०७३** पृष्ठ 98)।

आगे दिए गए विवाह मुहूर्त्तों में '**लतादि दश गुण-दोष रेखाएं**' शीर्षक के अन्तर्गत सीधी रेखा (।) दोषाभाव अर्थात् गुण की सूचक है, जबकि आड़ी रेखा (ऽ) दोष की सूचक है। मुहूर्त्तों में क्रूर ग्रह की युति, वेध, मृत्युबाण, क्रान्तिसाम्य, भद्रा, लग्नस्थ व सप्तमस्थ क्रूर ग्रहादि दोषों का विशेष रूप से विचार किया जाता है। (आगामी पृष्ठों पर दिया गया लेख '**विवाह-मुहूर्त्त में लतादि दश दोष विचार**' पढ़ें।) परन्तु जहाँ पर इन दोषों के शास्त्र सम्मत परिहार मिल जाते हैं, वहाँ सम्बद्ध ग्रह की पूजा, दानादि के पश्चात् विवाह मुहूर्त्त को शुभ एवं ग्राह्य मान लिया गया है, नवम दोष क्रान्तिसाम्य के लिए स्थूल क्रान्तिसाम्य के स्थान पर सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य (महापात् गणित) प्रक्रिया का आश्रय लिया गया है।

सांकेतिक शब्दों का स्पष्टीकरण—**विवाह मुहूर्त्तों में लग्न विवरण में १ को मेष, २ को वृष, ३ को मिथुन, ४ को कर्क, ५ को सिंह, ६ को कन्या, ७ को तुला, ८ को बृश्चिक, ९ को धनु, १० को मकर, ११ को कुम्भ** तथा **१२ की संख्या** को **मीन लग्न** जानें॥

दि. ल. = दिन का लग्न ; रा. ल. = रात्रि का लग्न

चं. दा. = अर्थात् इस विवाह लग्न में चन्द्रमा से सम्बन्धित वस्तुओं का दान व पूजा करके विवाह कर सकते हैं। इसी प्रकार मं.दा., बु. दा. आदि अन्य ग्रहों का भी जानें।

आवश्यके = लग्न निर्बल है, अतः अत्यावश्यकता में इस लग्न में विवाह किया जा सकता है।

पादवेध = विवाह लग्न के समय नक्षत्रचरण को शुभ ग्रह का वेध है।

ध्यान रहे—विवाह मुहूर्त्तों में दी गई अंग्रेजी तारीख सूर्योदयकालिक हैं। जहाँ मुहूर्त्तकाल (लग्न) रात्रि 12 बजे के बाद तथा सूर्योदय से पहिले का हो, वहाँ अंग्रेजी तारीख अगली (अग्रिम) समझनी चाहिए।

आवश्यक नोट—जिस मुहूर्त में गुरु, बुध—शुक्र की केन्द्र—त्रिकोण में स्थिति अथवा गुरु की शुभ दृष्टिवश परिहार हो जाता है, उस मुहूर्त, लग्न को शुभ मुहूर्तों में शामिल कर लिया गया है। **परन्तु मुहूर्त्त शास्त्रानुसार लग्नस्थ एवं सप्तमस्थ क्रूर ग्रह की स्थिति को त्याज्य ही माना गया है।** ध्यान दें, ता. 29 मार्च से 22 अप्रै. तक गुरु सभी राशियों के लिए पूजनीय रहेगा।

वैशाख मास (अप्रैल—मई) सन् 2019 ईसवी

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	वि.नक्षत्र	समय (भा.स्टैं.टा.)	सूर्य राशि	चंद्र राशि	लतादि दश रेखाएं	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में)
चैत्र शुक्ल १०,चंद्र	15 अप्रै.	२ वैशा.	मघा	28/01 तक	मेष	सिंह	।ऽ।।।।।।ऽऽ।	दि. ल. ५ (बु. शु. दा.) (14/37 तक) 14/37 से 26/55 तक मृत्युबाण, 28/23 तक भद्रादोष (भूलोके)

शुभ विवाह मुहूर्त्त—वैशाख मास (अप्रैल-मई)—सन् 2019 ई.

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	समय (भा.स्टै.टा.)	सूर्य राशि	चंद्र राशि	लतादि दश रेखाएं	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टै. टा. घंटा मिंट में)
चैत्र शुक्ल १२,मंग	16 अप्रै.	३ वैशा.	उ.फा.	25/51 बाद	मेष	सिंह	ऽसू.।।।ऽशु.ऽअ।।ऽ।	रा.ल. ११ (चं. दा. व पूज्य):, १२ (षष्ठस्थ चंद्र परिहार)
चैत्र शुक्ल १३,बुध	17 अप्रै.	४ वैशा.	उ.फा.	23/36 तक	मेष	सिं./कं.	ऽ सू.।।।ऽ शु.।।।।।	दि. ल. ४ (गु. दा.), 18/31 से 22/07 तक व्याघात दोष
चैत्र शुक्ल १३,बुध	17 अप्रै.	४ वैशा.	हस्त	23/36 बाद	मेष	कन्या	।।।ऽ बु.ऽबु.।।।।।	रा. ल. १० (श. दा.), १२ (चं. रा. दा.)
चैत्र शुक्ल १४,गुरु	18 अप्रै.	५ वैशा.	हस्त	21/25 तक	मेष	कन्या	।।।ऽ बु.शु.ऽबु.।।।।।	दि. ल. ५ (15/27 बाद) (10/30 से 15/27 तक बुध पादवेध) (अष्टमस्थ शु. परिहार), ६ (बु. शु. दा. पूज्य वा) (19/12 से 21/25 तक शुक्र पादवेध)
चैत्र शुक्ल १४, गुरु	18 अप्रै.	५ वैशा.	चित्रा	21/25 बाद	मेष	कन्या	।ऽ।।।ऽनृ.।ऽ।।	रा. ल. १० (श. दा.), १२ (चं. बु. शु. दा.)
चैत्र पूर्णिमा, शुक्र	19 अप्रै.	६ वैशा.	चित्रा	19/30 तक	मेष	कं./तु.	।ऽ।।।।।ऽ।।	11/32 से 15/08 तक वज्रदोष, दि. ल. ५ (15/08 बाद) (अष्टमस्थ शुक्र परिहार, लग्नोऽपरि गु. दृष्टि) (बु. शु. दा.), ६ (सू. बु. शु. दा.), गोधूलि
चैत्र पूर्णिमा, शुक्र	19 अप्रै.	६ वैशा.	स्वा.	19/30 बाद	मेष	तुला	ऽरा.।।। ऽसू.। ।ऽ।।	रा. ल. १० (श. दा.), ११, १२ (अष्टमस्थ चंद्र परिहार, चं. बु. शु. रा. दा.)
वैशा. कृष्ण,१ शनि	20 अप्रै.	७ वैशा.	स्वा.	17/58 तक	मेष	तुला	ऽरा.।।। ऽसू.। ।ऽ।।	दि. ल. ४ (गु. दा.), ५ (अष्टमस्थ शुक्र परिहार, लग्नोऽपरि गुरु दृष्टि शुभप्रदा), ६ (17/58 तक
वैशा. कृ. २, रवि	21 अप्रै.	८ वैशा.	अनु.	17/01 बाद	मेष	वृश्चिक	।ऽ।।।।ऽव्य.।।।	रा. ल. ११ (27/31 बाद), १२ (बु. शु. रा. दा.)
वैशा. कृ. ३, चंद्र	22 अप्रै.	९ वैशा.	अनु.	16/45 तक	मेष	वृश्चिक	।ऽ।।।।।।।।	दि. ल. ४, ५ (अष्टमस्थ शुक्र परिहार, चं. शु. दा.), ६ (16/45 तक) (बु. शु. दा.)
वैशा. कृ. ७, शुक्र	26 अप्रै.	१३ वैशा.	श्रव.	23/14 बाद	मेष	मकर	ऽ शु.ऽ।।।।।ऽ।।	रा. ल. १० (चं. श. दा.), ११ (चं. दा.), १२ (बु. शु. रा. दा.)
वैशा. कृ. ८, शनि	27 अप्रै.	१४ वैशा.	श्रव.	26/12 तक	मेष	मकर	ऽ शु. ऽ ।।।।ऽ ।।	दि. ल. ४ (चं. दा.), ६ (बु. शु. दा.), रा. ल. १० (चं. श. दा.) (26/12 तक)
वैशा. कृ. ८, शनि	27 अप्रै.	१४ वैशा.	धनि.	26/12 बाद	मेष	मकर	ऽगु.।।।।ऽनृ.।ऽ।।	रा. ल. १० (26/12 बाद) (चं. श. दा.), ११ (चं. दा.), १२ (बु. शु. रा. दा.)
वैशा. कृ. ९, रवि	28 अप्रै.	१५ वैशा.	धनि.	29/18 तक	मेष	मं./कु.	ऽगु.।।।।ऽनृ.।ऽ।।	दि. ल. ४ (चं. दा.), ६ (बु. शु. दा.) (15/45 तक) 15/45 बाद चं. षष्ठस्थ होगा, रा. ल. १० (25/36 तक) (श. दा.) 25/36 से क्रान्तिसाम्य दोष
वैशा. शुक्ल २,चंद्र	6 मई	२३ वैशा.	रोहि.	16/37 बाद	मेष	वृष	।।।।।।ऽ।।।	रा. ल. १० (25/13 तक) (श. दा.), 25/13 से 27/37 तक अतिगण्डदोष, १२ (27/37 बाद, शु. दा.)
वैशा. शु. ३, मंग	7 मई	२४ वैशा.	रोहि.	16/27 तक	मेष	वृष	।।।।।ऽनृ. ।।।।	दि. ल. २ (प्रात: 6/53 बाद) (चं. दा.), ४, ५
वैशा. शु. ८, रवि	12 मई	२९ वैशा.	मघा	11/55 बाद	मेष	सिंह	।।।।।।।ऽऽ।	दि. ल. ४ (11/55 बाद), ५ (चं. दा.), गोधूलि, रा. ल. ८ (अष्टमस्थ मं. परिहार), १०, ११ (चं. दा.), १२ (रा. दा.)
वैशा. शुक्ल ९, चंद्र	13 मई	३० वैशा.	मघा	10/27 तक	मेष	सिंह	।।।।।।।ऽऽ।	दि. ल. २ (गु. दा.) प्रात: 8/16 से व्याघात दोष, 9/15 से मृत्युबाणदोष

✲ ज्येष्ठ मास (मई—जून) ✲ सन् 2019 ई.

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	समय (भा.स्टै.टा.)	सूर्य राशि	चंद्र राशि	लतादि दश रेखाएं	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण
वैशा. शु. १२, गुरु	16 मई	२ ज्ये.	चित्रा	5/42 से 28/16	वृष	कं./तु.	ऽसू.।।।।।।।।।	दि. ल. ४ (11/54 तक) (11/54 से मृत्युबाणदोष)
वैशा. शु. १३, शुक्र	17 मई	३ ज्ये.	स्वा.	27/07 तक	वृष	तुला	ऽरा.ऽ।।ऽशु.ऽअ.ऽ।।।	दि. ल. ७ (17/37 बाद) (बु. शु. दा.), गोधूलि, रा. ल. १० (श. दा.), ११, १ (बु. शु. दा.)
वैशा. पूर्णिमा, शनि	18 मई	४ ज्ये.	अनु.	26/22 बाद	वृष	वृश्चिक	।।।।ऽ सू. बु.।ऽ ऽ ।।	रा. ल. १२ (चं. दा.), १ (चं. बु. शु. दा.) (अष्टमस्थ चंद्र परिहार)
ज्ये. कृष्ण १, रवि	19 मई	५ ज्ये.	अनु.	26/07 तक	वृष	वृश्चिक	।।।।ऽ सू. बु.ऽनृ.।ऽ।।	दि. ल. ४ (चं. दा.), ५, ७ (शु. दा.), गोधूलि, रा. ल. १० (श. दा.), ११ (26/07 तक)
ज्ये. कृष्ण ५, गुरु	23 मई	९ ज्ये.	उ.षा.	पूरा दिन	वृष	ध./म.	।।।।ऽरा.ऽरो.।ऽ।।	दि. ल. ४ (षष्ठस्थ चंद्र परिहार, चं. दा.), ५ (षष्ठस्थ चं. परिहार), ७ (शु. दा.), गोधूलि, रा. ल. १० (23/35 तक) (चं. श. दा.) 23/35 से क्रान्तिसाम्य दोष
ज्ये. कृष्ण ६, शुक्र	24 मई	१० ज्ये.	श्रव.	7/31 बाद	वृष	मकर	।।।।।।।।।ऽ।	दोप. 12/07 तक क्रान्तिसाम्य-दोष, दि. ल. ५ (षष्ठस्थ चंद्र परिहार) (12/07 बाद), ७, गोधूलि, रा. ल. १० (चं. श. दा.), ११, १२, १ (गु. शु. दा.)
ज्ये. कृष्ण ६, शनि	25 मई	११ ज्ये.	श्रव.	10/15 तक	वृष	मकर	।।।।।।।।।ऽ।	दि. ल. ४ (10/15 तक) (चं. दा.)

शुभ विवाह मुहूर्त्त—ज्येष्ठ मास (मई-जून)—सन् 2019 ई.

शुभ विवाह मुहूर्त—ज्येष्ठ मास (मई-जून)—सन् 2019 ई.

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	समय (भा.स्टैं.टा.)	सूर्य राशि	चंद्र राशि	लतादि दश रेखाएं	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में)
ज्ये. कृष्ण ६, शनि	25 मई	११ ज्ये.	धनि.	10/15 बाद	वृष	म./कुं.	ऽगु.।।।।।।ऽ।।	दि. ल. ४ (10/15 बाद) (चं. दा.), ५ (षष्ठस्थ चं. परिहार), ७ (शु. दा.), गोधूलि (20/25 बाद मृत्युबाण-दोष)
ज्ये. कृष्ण ७, रवि	26 मई	१२ ज्ये.	धनि.	13/14 तक	वृष	कुम्भ	ऽगु.।।।।।ऽ।।।	8/55 तक मृत्युबाण, दि. ल. ४ (अष्टमस्थ चं. परिहार), ५ (11/58 तक) 11/58 बाद वैधृति
ज्ये. कृष्ण ९, मंग.	28 मई	१४ ज्ये.	उ.भा.	18/58 बाद	वृष	मीन	।।।।।ऽनृ.।ऽ।।	गोधूलि, रा. ल. १० (श. दा.), ११, १२ (26/26 तक) (चं. दा.) 26/26 से भद्रा विचार
ज्ये.कृष्ण १०, बुध	29 मई	१५ ज्ये.	उ.भा.	21/18 तक	वृष	मीन	।(ऽ)।।।।ऽनृ.।ऽ।।	15/21 तक भद्रा भूलोके, दि. ल. ७ (षष्ठस्थ चं. परिहार) (शु. दा.), गोधूलि
ज्ये.कृष्ण १०, बुध	29 मई	१५ ज्ये.	रेव.	21/18 बाद	वृष	मीन	ऽ।।।।।।ऽ।।	रा. ल. १० (श. दा.), ११, १२ (चं. रा. दा.), १ (चं. गु. पूज्य)
ज्ये.कृष्ण ११, गुरु	30 मई	१६ ज्ये.	रेव.	23/03 तक	वृष	मीन	ऽ।।।।।।ऽ।।	दि. ल. ४ (मं. दा.), ५ (अष्टमस्थ चं. परिहार), ७ (शु. दा.), गोधूलि, रा. ल. १० (23/03 तक)
ज्ये.कृष्ण ११, गुरु	30 मई	१६ ज्ये.	अश्वि.	23/03 बाद	वृष	मेष	ऽके.।।।।ऽचौ.।ऽ।।	रा. ल. १० (23/03 बाद) (श. दा.), ११, १२ (चं. दा.), १ (चं. गु. शु. दा.)
ज्ये.कृष्ण १२,शुक्र	31 मई	१७ ज्ये.	अश्वि.	24/12 तक	वृष	मेष	ऽके.।।।।ऽचौ.।ऽ।।	दि. ल. ४, ५, ७ (चं. शु. दा.) (17/17 तक)
ज्ये. शुक्ल १, मंग.	4 जून	२१ ज्ये.	मृग.	23/09 तक	वृष	मिथुन	।।ऽबु.।ऽ।।।।।	प्रात: 5/35 से 18/06 तक मृत्युबाण, रा. ल. १० (23/09 तक) (सू., चं., श. दा.)
ज्ये. शुक्ल ६, शनि	8 जून	२५ ज्ये.	मघा	17/22 बाद	वृष	सिंह	।ऽ।।।।।।।।	गोधूलि, रा. ल. ११ (चं. दा.), १२ (षष्ठस्थ चं. परिहार, चं. दा.), १ (गु. दा.)
ज्ये. शुक्ल ७, रवि	9 जून	२६ ज्ये.	मघा	15/49 तक	वृष	सिंह	।ऽ।।।ऽचौ.।।।।	दि. ल. ४ (मं. दा.), ५ (चं. दा.), ६ (14/27 तक)
ज्ये. शुक्ल ८, चंद्र	10 जून	२७ ज्ये.	उ.फा.	14/21 बाद	वृष	सिं./कं.	।।।।।।।ऽ।।	दि. ल. ६ (14/21 बाद), गोधूलि, रा. ल. १० (श. दा.), ११ (अष्टमस्थ चं. परिहार), १२ (चं. दा.)
ज्ये. शुक्ल ९, मंग	11 जून	२८ ज्ये.	उ.फा.	13/01 तक	वृष	कन्या	।।।।।।।ऽ।।	दि. ल. ४ (मं. दा.) (8/46 तक)
ज्ये. शुक्ल १०,बुध	12 जून	२९ ज्ये.	हस्त	11/51 तक	वृष	कन्या	।ऽ।।।।।।।।	दि. ल. ४ (मं. दा.), ५ (11/51 तक)
ज्ये. शुक्ल १०,बुध	12 जून	२९ ज्ये.	चित्रा	11/51 बाद	वृष	कं./तु.	।।।।।।।ऽ।।	दि. ल. ५ (11/51 बाद), ६ (चं. दा.), गोधूलि, रा. ल. १०, ११, १ (27/38 तक)
ज्ये. शुक्ल ११,गुरु	13 जून	३० ज्ये.	चित्रा	10/55 तक	वृष	तुला	।।।।।।।ऽ।।	दि. ल. ४, ५ (10/55 तक) भद्रा परिहार
ज्ये. शुक्ल ११,गुरु	13 जून	३० ज्ये.	स्वा.	10/55 बाद	वृष	तुला	ऽरा.।।।।।।।।।	दि. ल. ५ (10/55 बाद), ६, ७ (15/22 तक) (चं. दा.) 15/22 से 27/58 मृत्युबाणदोष

✲ आषाढ़ मास (जून–जुलाई) ✲ सन् 2019 ई.

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	समय (भा.स्टैं.टा.)	सूर्य राशि	चंद्र राशि	लतादि दश रेखाएं	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में)
ज्ये. शुक्ल१४, रवि	16 जून	२ आषा.	अनु.	10/07 तक	मिथुन	वृश्चिक	।।।।।।।।।।	दि. ल. ४
आषा. कृ. ३, गुरु	20 जून	६ आषा.	श्रव.	15/39 बाद	मिथुन	मकर	।।।।।।ऽऽ।।	दि. ल. ८ (गु. शु. दा.) 19/17 बाद वैधृतिदोष
आषा. कृ. ४, शुक्र	21 जून	७ आषा.	धनि.	18/14 बाद	मिथुन	मकर	ऽगु.ऽ।।।ऽचौ.।ऽ।।	21/09 तक वैधृति-विष्कम्भ दोष, रा. ल. १० (21/09 बाद), ११ (चं. दा.), १२, १ (गु. दा.), २ (शु. दा.)
आषा. कृ. ५, शनि	22 जून	८ आषा.	धनि.	21/08 तक	मिथुन	म./कुं.	ऽगु.ऽ।।।ऽचौ.।ऽ।।	दि. ल. ५ (चं. दा.), ६ (षष्ठस्थ चं. परिहार, चं. पूज्य), ८ (गु. शु. दा.)
आषा. कृ. ७, चंद्र	24 जून	१०आषा.	उ.भा.	27/02 बाद	मिथुन	मीन	।।।।।।।ऽ।ऽ	रा. ल. २ (27/02 बाद) (गु. शु. दा.) दग्धातिथि परिहार
आषा. कृ. ८, मंग	25 जून	११आषा.	उ.भा.	पूरा दिन	मिथुन	मीन	।।।।।।।ऽ।ऽ	दि. ल. ५ (अष्टमस्थ चं. परिहार, चं, दा.), ६ (चं. दा.), ८ (गु. शु. दा.), रा. ल. ११, १२ (चं. दा.), १ (गु. दा.), २ (गु. शु. दा.)–दग्धातिथि परिहार
आषा. कृ. ९, बुध	26 जून	१२आषा.	रेव.	5/38 बाद	मिथुन	मीन	ऽश.।।।।।।ऽ।।	मृत्युबाणदोष 17/45 तक, दि. ल. ८ (17/45 बाद), (गु. शु. दा.), रा. ल. ११ 23/49 से 26/13 तक अतिगण्डदोष, २ (गु. शु. दा.)
आषा. कृ. ९, गुरु	27 जून	१३आषा.	अश्वि.	7/44 बाद	मिथुन	मेष	ऽ।।।।ऽअ.।ऽ।।	दि. ल. ५, ६ (अष्टमस्थ चं. परिहार, चं. के. दा.), ८ (षष्ठस्थ चं. परिहार, गु. शु. दा.), रा. ल. ११, १२, १ (चं. गु. दा.), २ (गु. शु. दा.)
आषा. शु. ४, शनि	6 जुला.	२२आषा.	मघा	22/10 तक	मिथुन	सिंह	ऽमं.।।।।ऽअ.।ऽ।।	दि. ल. ७, ८ (अष्टमस्थ शु. परिहार, शु. पूज्य), 21/51 बाद व्यतीपात

शुभ विवाह मुहूर्त—आषाढ़ मास (जून-जुलाई)—सन् 2019 ई.

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	समय (भा.स्टैं.टा.)	सूर्य राशि	चंद्र राशि	लतादि दश रेखाएं	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में)
आषा. शु. ५, रवि	7 जुला.	२३आषा.	उ.फा.	20/14 बाद	मिथुन	सिं./कं.	I I I I I I I I I I	रा. ल. ११ (चं. दा.), १२ (षष्ठस्थ चं. परिहार, चं. पूज्य), २ (गु. दा.)
आषा. शु. ६, चंद्र	8 जुला.	२४आषा.	उ.फा.	18/34 तक	मिथुन	कन्या	I I I I I I I I I I	दि. ल. ५, ६ (चं. दा.), ७ (15/27 तक) 15/27 से 18/27 तक परिघार्ध
आषा. शु. ६, चंद्र	8 जुला.	२४आषा.	हस्त	18/34 बाद	मिथुन	कन्या	I I I I I ऽनृ.ऽऽ I I	रा. ल. १२ (चं. दा.), २ (गु. दा.)
आषा. शु. ८, मंग	9 जुला.	२५आषा.	हस्त	17/15 तक	मिथुन	कन्या	I I I I I ऽनृ.ऽऽ I ऽ	दि. ल. ५, ६ (चं. दा.), ७, ८ (17/15 तक) (अष्टमस्थ शु. परिहार, गु. शु. दा.) दग्धातिथि-परिहार
आषा. शु. ८, मंग	9 जुला.	२५आषा.	चित्रा	17/15 बाद	मिथुन	कं./तु.	I I I I I I I ऽ I ऽ	दि. ल. ८ (17/15 बाद) (अष्टमस्थ शु. परिहार), रा. ल. १२ (चं. दा.), २ (गु. दा.)
आषा. शु. ९, बुध	10 जुला	२६आषा.	चित्रा	16/22 तक	मिथुन	तुला	I I I I I I I ऽ I I	दि. ल. ५, ६, ७ (चं. दा.), ८ (16/22 तक) (अष्टमस्थ शुक्र परिहार) (गु. शु. दा. व पूज्य)
आषा. शु. ९, बुध	10 जुला	२६आषा.	स्वा.	16/22 बाद	मिथुन	तुला	ऽरा. I I I I ऽचौ. I I I I	दि. ल. ८ (16/22 बाद) (अष्टमस्थ शु. परिहार), रा. ल. ११, १ (गु. दा.), २ (गु. दा.)
आषा. शु.१०, गुरु	11 जुला	२७आषा.	स्वा.	15/55 तक	मिथुन	तुला	ऽ I I I I ऽचौ. I I I I	दि. ल. ५, ६, ७ (चं. दा.), ८ (15/55 तक) (शु. पूज्य)
आषा. शु.११, शुक्र	12 जुला	२८आषा.	अनु.	15/57 बाद	मिथुन	वृश्चिक	I I I I I ऽरो. I I I I	दि. ल. ८ (15/57 बाद) (अष्टमस्थ शु. परिहार, शु. पूज्य), रा. ल. ११, १२, २ (गु. दा.)
आषा. शु.१२, शनि	13जुला	२९आषा.	अनु.	16/27 तक	मिथुन	वृश्चिक	I I I I I ऽरो. I I I I	दि. ल. ५, ६, ७, ८ (16/27 तक) (गु. शु. पूज्य) (अष्टमस्थ शुक्र परिहार)

✲ आश्विन मास (सितं.—अक्तू.) ✲ सन् 2019 ई.

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	समय (भा.स्टैं.टा.)	सूर्य राशि	चंद्र राशि	लतादि दश रेखाएं	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में)
आश्वि. शु.४, बुध	2 अक्तू	१६आश्वि	अनु.	12/52 बाद	कन्या	वृश्चिक	I I I I I ऽचौ. I ऽ I I	18/12 तक शुक्र बाल्यत्व, रा. ल. १ (बु. गु. शु. दा.), २ (गु. दा.), ४, ५
आश्वि. शु.५, गुरु	3 अक्तू	१७आश्वि	अनु.	12/10 तक	कन्या	वृश्चिक	I I I I I I I ऽ I I	दि. ल. ७ (मं. शु. दा.), ८ (12/10 तक) (चं. गु. दा.)
आश्वि. शु.६, शुक्र	4 अक्तू	१८आश्वि	मूल	12/19 बाद	कन्या	धनु	I I I I I ऽरो. I ऽ I I	दि. ल. १० (चं. श. दा.), ११ (अष्टमस्थ मं. परिहार, मं. दा.), रा. ल. १ (गु. पूज्य), ५
आश्वि. शु.७, शनि	5 अक्तू	१९आश्वि	मूल	13/19 तक	कन्या	धनु	I I I I I ऽरो. I ऽ I I	दि. ल. ७ (बु. शु. दा.), ८ (गु. दा.) दग्धातिथि परिहार
आश्वि. शु.९, चंद्र	7 अक्तू	२१आश्वि	श्रव.	17/25 बाद	कन्या	मकर	I I I I I ऽअ. I ऽ I I	रा. ल. १ (गु. पूज्य), ४ (चं. दा.), ५ (षष्ठस्थ चं. परिहार)
आश्वि. शु.१०, मंग	8 अक्तू	२२आश्वि	श्रव.	20/12 तक	कन्या	मकर	I I I I I ऽअ. I ऽ I I	दि. ल. ७ (बु. शु. दा.), ८ (गु. दा.), १० (चं. श. दा.), ११ (मं. दा. व पूज्य), रा. ल. १ (अष्टमस्थ गु. परिहार, गु. दा.)
आश्वि. शु.१०, मंग	8 अक्तू	२२आश्वि	धनि	20/12 बाद	कन्या	मकर	ऽगु. I I I I I I I I I	रा. ल. ४ (24/45 तक) (चं. दा.) 24/45 से 26/45 तक शूलदोष, ५ (26/45 बाद) (षष्ठस्थ-चंद्र परि.)
आश्वि. शु.११, बुध	9 अक्तू	२३आश्वि	धनि.	23/12 तक	कन्या	म./कुं.	ऽ I I I I ऽनृ. I I I I	दि. ल. ७ (बु. शु. दा.), 9/41 से 17/19 तक भद्रा भूलोके, रा. ल. १ (गु. दा.)
आश्वि पूर्णिमा, रवि	13अक्तू	२७आश्वि	रेव.	7/53 बाद	कन्या	मीन	ऽश. I I I ऽमं. I ऽऽऽ I	13/38 तक भद्रा, दि. ल. १० (श. दा.), ११ (अष्टमस्थ मं. परिहार, मं. दा.), रा. ल. १ (गु. दा.), ४, ५ (चं. दा.)
कार्ति. कृ. १, चंद्र	14अक्तू	२८आश्वि	रेव.	10/20 तक	कन्या	मीन	ऽ I I I ऽमं.ऽरो. I ऽऽ I	दि. ल. ७ (बु. शु. दा.) (षष्ठस्थ चं. परिहार), ८ (10/20 तक) (गु. दा.)
कार्ति. कृ. १, चंद्र	14अक्तू	२८आश्वि	अश्वि.	10/20 बाद	कन्या	मेष	ऽके.ऽ I I ऽसू. I I ऽ I I	दि. ल. ८ (10/20 बाद, गु. दा.), १०, ११ (अष्टमस्थ मं. परिहार), रा. ल. १ (गु. दा. पूज्य वा), ४, ५
कार्ति. कृ. २, मंग	15अक्तू	२९आश्वि	अश्वि.	12/30 तक	कन्या	मेष	ऽऽ I I ऽ I I ऽ I I	8/34 तक वज्रदोष, दि. ल. ७ (8/34 बाद) (चं. दा.), ८ (षष्ठस्थ चं. परिहार, गु. दा.)

✲ कार्तिक मास (अक्तू.—नवम्बर) ✲ सन् 2019 ई. (केवल पर्वतीय प्रदेशों के लिए)

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	समय (भा.स्टैं.टा.)	सूर्य राशि	चंद्र राशि	लतादि दश रेखाएं	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में)
कार्ति. कृ. ४, शुक्र	18अक्तू	२ कार्ति.	मृग.	16/59 बाद	तुला	वृ./मि.	I I I I ऽगु. I I ऽ I I	रा. ल. २ (लग्नेश शु. षष्ठस्थ परिहार) (गु. शु. दा.), ४ (25/13 तक) 25/13 से मृत्युबाण
कार्ति. कृ. ५, शनि	19अक्तू	३ कार्ति.	मृग.	17/40 तक	तुला	मिथुन	I I I I ऽगु. I I ऽ I I	13/19 तक मृत्युबाण, दि. ल. ११ (अष्टमस्थ मं. परिहार)
कार्ति. कृ.१०, बुध	23अक्तू	७ कार्ति.	मघा	15/13 बाद	तुला	सिंह	ऽबु. I I I I I I ऽ I I	दि. ल. ११ (15/13 बाद) (अष्टमस्थ मं. परिहार), (चं. मं. दा.), रा. ल. २ (लग्नेश शु. षष्ठस्थ परिहार), ४, ५ (चं. दा.)
कार्ति. कृ.११, गुरु	24अक्तू	८ कार्ति.	मघा	13/18 तक	तुला	सिंह	ऽबु. I I I I ऽची. I ऽ I I	दि. ल. ८ (बु. गु. दा.)

शुभ विवाह मुहूर्त—कार्तिक मास

शुभ विवाह मुहूर्त—कार्तिक मास (अक्तू.-नवम्बर)—सन् 2019 ई.

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	समय (भा.स्टैं.टा.)	सूर्य राशि	चंद्र राशि	लतादि दश रेखाएं	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में)
कार्ति. कृ.१२, शुक्र	25अक्तू	९ कार्ति.	उ.फा.	11/00 बाद	तुला	सिं./कं.	ऽ शु. । । । । ऽ रो. । ऽ । ।	दि. ल. ११ (15/25 तक) (अष्टमस्थ मं. परिहार, मं. दा.) 15/25 बाद क्रान्तिसाम्य
कार्ति. शु. २, मंग.	29अक्तू	१३कार्ति.	अनु.	23/11 बाद	तुला	वृश्चिक	। । । । । । । । । ।	रा. ल. ४ (23/11 बाद), ५
कार्ति. शु. ३, बुध	30अक्तू	१४कार्ति.	अनु.	21/59 तक	तुला	वृश्चिक	। । ऽ बु. । । । । । । ।	दि. ल. ८ (चं. बु. गु. दा.), १० (श. दा.), ११ (अष्टमस्थ मं. परिहार, मं. दा.), गोधूलि, रा. ल. २ (बु. गु. शु. दा.)
कार्ति. शु. ४, गुरु	31अक्तू	१५कार्ति.	मूल	21/31 बाद	तुला	धनु	। । । । । । ऽ ऽ । ।	रा. ल. ४ (षष्ठस्थ चं. परिहार), ५
कार्ति. शु. ५, शुक्र	1 नवं.	१६कार्ति.	मूल	21/52 तक	तुला	धनु	। । । । । । । ऽ । ।	दि. ल. ८ (बु. गु. शु. दा.), १० (चं. श. दा.), ११ (अष्टमस्थ मं. परिहार), गोधूलि, रा. ल. २ (बु. गु. शु. दा.)
कार्ति. शु. ९, मंग	5 नवं.	२०कार्ति.	धनि.	30/15 तक	तुला	म./कुं.	। ऽ । । । । । । । ।	दि. ल. ८ (बु. शु. दा.), १० (चं. श. दा.), ११ (अष्टमस्थ मं. परिहार), गोधूलि, रा. ल. २ (अष्टमस्थ गु. परिहार, गु. के. दा.) 20/58 से 27/37 तक क्रान्तिसाम्य
कार्ति. शु.११, शुक्र	8 नवं.	२३कार्ति.	उ.भा.	12/12 बाद	तुला	मीन	। ऽ । । । । । । । ऽ	दि. ल. १० (12/12 बाद, श. दा.), ११ (अष्टमस्थ मं. परिहार, मं. दा.), गोधूलि, रा. ल. २ (गु. शु. दा.), ४ (गु. दा.), ५ (अष्टमस्थ चं. परिहार, लग्नोऽपरि गुरु दृष्टि शुभप्रदा) दग्धा-तिथि परिहार
कार्ति. शु.१२, शनि	9 नवं.	२४कार्ति.	उ.भा.	14/56 तक	तुला	मीन	। ऽ । । । ऽ नृ. । । । ऽ	दि. ल. ८ (शु. दा.), 10/15 से 13/51 तक वज्र दोष, ११ (13/51 बाद) (अष्टमस्थ मं. परि.) *भीष्म-पंचक विचार*
कार्ति. शु.१२, शनि	9 नवं.	२४कार्ति.	रेव.	14/56 बाद	तुला	मीन	ऽ । । । । । ऽ । । ।	दि. ल. ११ (अष्टमस्थ मं. परिहार, मं. दा.), १२ (चं. दा.) रा. ल. २ (गु. दा.), ४, ५ (अष्टमस्थ चं. परिहार, चं. दा.) ***भीष्मपंचक विचार***
कार्ति. शु.१३, रवि	10 नवं.	२५कार्ति.	रेव.	17/19 तक	तुला	मीन	ऽ । । । । । ऽ । । ।	दि. ल. ८ (शु. दा.), १० (गु. श. दा.), ११ (अष्टमस्थ मं. परिहार, मं. दा.) **भीष्मपंचक**
कार्ति. शु.१३, रवि	10 नवं.	२५कार्ति.	अश्वि.	17/19 बाद	तुला	मेष	ऽ के. । । । ऽ मं. । । । । ।	रा. ल. २ (गु. शु. दा.), ४, ५ ***(भीष्मपंचक विचार)***
कार्ति. शु.१४, चंद्र	11 नवं.	२६कार्ति.	अश्वि.	19/17 तक	तुला	मेष	ऽ । । । ऽ ऽ चौ. । । । ।	दि. ल. ८ (षष्ठस्थ चं. परिहार, चं. शु. पूज्य) 10/48 बाद व्यतीपात **(भीष्मपंचक)**
मार्ग. कृ. १, बुध	13 नवं.	२८कार्ति.	रोहि.	22/01 बाद	तुला	वृष	। । । । । । ऽ । । ।	रा. ल. ४ (गु. दा.), ५, ६
मार्ग. कृ. २, गुरु	14 नवं.	२९कार्ति.	रोहि.	22/47 तक	तुला	वृष	। । । । । । । । । ।	दि. ल. ८ (शु. दा.), १०, ११, रा. ल. २ (चं. दा.), ४ (22/47 तक) (गु. दा.)
मार्ग. कृ. २, गुरु	14 नवं.	२९कार्ति.	मृग.	22/47 बाद	तुला	वृष	। । । । । । । । । ।	रा. ल. ४ (22/47 बाद), ५ (25/09 तक) 25/09 बाद मृत्युबाण-दोष

✲ मार्गशीर्ष मास (नवं—दिसं.) ✲ सन् 2019 ई.

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	समय (भा.स्टैं.टा.)	सूर्य राशि	चंद्र राशि	लतादि दश रेखाएं	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में)
मार्ग. कृ. ७, मंग.	19 नवं.	४ मार्ग.	मघा	21/23 बाद	वृश्चिक	सिंह	। । । । । । । ऽ । ।	रा. ल. ४ (21/23 बाद), ५ (25/05 तक), 25/05 से क्रान्तिसाम्य-दोष
मार्ग. कृ. ८, बुध	20 नवं.	५ मार्ग.	मघा	20/05 तक	वृश्चिक	सिंह	। । । । । । । । । ।	8/30 तक क्रान्तिसाम्य, दि. ल. ११ (चं. दा.), १२ (अष्टमस्थ मं. परिहार), गोधूलि
मार्ग. कृ. ९, गुरु	21 नवं.	६ मार्ग.	उ.फा.	18/29 बाद	वृश्चिक	सिं./कं.	। । । । । । । ऽ । ऽ	रा. ल. ४ (22/16 तक, गु. दा.), 22/16 से 24/03 तक भद्रा भूलोके, ५ (24/03 बाद) (चं. दा.), ६ (चं. दा.) (दग्धा तिथि परिहार)
मार्ग. कृ.१०, शुक्र	22 नवं.	७ मार्ग.	उ.फा.	16/41 तक	वृश्चिक	कन्या	। । । । । । । ऽ । ।	दि. ल. १० (श. दा.), १२ (16/41 तक) (अष्टमस्थ मं. परिहार) (मं. दा.)
मार्ग. कृ.१०, शुक्र	22 नवं.	७ मार्ग.	हस्त	16/41 बाद	वृश्चिक	कन्या	। । । । । ऽ चौ. । ऽ । ।	दि. ल. १२ (16/41 बाद) (अष्टमस्थ मं. परिहार), गोधूलि, रा. ल. ५, ६
मार्ग. कृ.१२, शनि	23 नवं.	८ मार्ग.	हस्त	14/45 तक	वृश्चिक	कन्या	। । । । । ऽ चौ. । ऽ । ।	दि. ल. १० (श. दा.), १२ (14/45 तक) (अष्टमस्थ मं. परिहार, मं. दा.)
मार्ग. कृ.१२, शनि	23 नवं.	८ मार्ग.	चित्रा	14/45 बाद	वृश्चिक	कं./तु.	ऽ रा. । । । । । । ऽ । ।	दि. ल. १२ (14/45 बाद), गोधूलि, रा. ल. ५, ६ (27/43 तक) (के. दा.)
मार्ग. शुक्ल २, गुरु	28 नवं.	१३ मार्ग.	मूल	7/34 बाद	वृश्चिक	धनु	। । ऽ गु. । । ऽ अ. ऽ । । ।	दि. ल. १० (चं. दा.), ११, १२ (अष्टमस्थ मं. परिहार), गोधूलि, रा. ल. ५, ६

शुभ विवाह मुहूर्त्त—मार्गशीर्ष मास (नवं.-दिसम्बर)—सन् 2019 ई.

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	समय (भा.स्टैं.टा.)	सूर्य राशि	चंद्र राशि	लतादि दश रेखाएं	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में)
मार्ग. शु. ४, शनि	30 नवं.	१५ मार्ग.	उ.षा.	8/16 बाद	वृश्चिक	ध./म.	।।।।।।ऽऽ।।	दि. ल. १० (चं. श. दा.), ११, १२ (अष्टमस्थ मं. परिहार) 23/00 बाद क्रान्तिसाम्य
मार्ग. शु. ५, रवि	1 दिसं.	१६ मार्ग.	श्रव.	9/40 बाद	वृश्चिक	मकर	।।।।।ऽचौ.।।।।	11/40 तक क्रान्तिसाम्य, दि. ल. १० (11/40 बाद) चं. श. दा., ११, १२ (अष्टमस्थ मं. परि.), गोधूलि, रा. ल. ५ (षष्ठस्थ चं. परिहार), ६
मार्ग. शु. ६, चंद्र	2 दिसं.	१७ मार्ग.	श्रव.	11/43 तक	वृश्चिक	मकर	।।।।।ऽचौ.।।।।	दि. ल. १० (चं. श. दा.) (11/43 तक)
मार्ग. शु. ६, चंद्र	2 दिसं.	१७ मार्ग.	धनि.	11/43 बाद	वृश्चिक	म./कुं.	।।।।।।।ऽ।।	दि. ल. १० (11/43 बाद), ११ (चं. दा.) 13/37 से 17/13 तक व्याघात-दोष, रा. ल. ५ (षष्ठस्थ चं. परिहार-24/57 तक), ६ (षष्ठस्थ चं. परिहार) (चं. पूज्य)
मार्ग. शु. ७, मंग	3 दिसं.	१८ मार्ग.	धनि.	14/17 तक	वृश्चिक	कुम्भ	।।।।।।।ऽ।।	दि. ल. १० (श. दा.), ११ (चं. दा.), १२ (14/17 तक) (अष्टमस्थ मं. परिहार)
मार्ग. शु.१०, शुक्र	6 दिसं.	२१ मार्ग.	उ.भा.	22/57 तक	वृश्चिक	मीन	।।।।।।।।।ऽ	प्रात: 7/26 तक मृत्युबाण, दि. ल. १० (श. दा.), ११, १२ (अष्टमस्थ मं. परिहार, मं. पूज्य), 16/30 से व्यतीपात
मार्ग. शु.११, शनि	7 दिसं.	२२ मार्ग.	अश्वि	25/28 बाद	वृश्चिक	मेष	ऽके.।।।।।।।।।	रा. ल. ६ (25/28 बाद) (चं. दा.) (अष्टमस्थ चं. परिहार)
मार्ग. शु.११, रवि	8 दिसं.	२३ मार्ग.	अश्वि	27/30 तक	वृश्चिक	मेष	ऽ।।।।ऽनृ.।।।।	दि. ल. १० (श. दा.), ११, १२ (अष्टमस्थ मं. परिहार, मं. दा.), गोधूलि, रा. ल. ५, ६ (के. दा.)
मार्ग. शु.१४, बुध	11दिसं.	२६ मार्ग.	रोहि.	30/22 तक	वृश्चिक	वृष	।।।।ऽबु.।।ऽ।।	दि. ल. १० (श. दा.), ११, १२ (अष्टमस्थ मं. परिहार, मं. दा.), गोधूलि, रा. ल. ५, ६ (के. दा.)
मार्ग. पूर्णिमा, गुरु	12दिसं.	२७ मार्ग.	मृग.	30/18 तक	वृश्चिक	वृष	।ऽ।।ऽसू.ऽरो.।ऽ।।	दि. ल. १० (श. दा.), ११, १२ (अष्टमस्थ मं. परिहार) 17/15 से गुरु वार्धक्य शुरु

✲ माघ मास (जन.—फर.) ✲ सन् 2020 ई.

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	समय (भा.स्टैं.टा.)	सूर्य राशि	चंद्र राशि	लतादि दश रेखाएं	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में)
माघ कृ. ५, बुध	15 जन.	२ माघ	उ.फा.	28/07 तक	मकर	सिं./कं.	।।।।।।।ऽ।।	13/57 तक सूर्य क्षीणांश, गोधूलि, रा. ल. ५ (21/12 तक) (शु. दा.) 21/12 से 23/36 तक अतिगण्ड दोष, ६ (23/36 बाद), ७ (25/41 तक) 25/41 बाद मृत्युबाण दोष
माघ कृष्ण ६, गुरु	16 जन.	३ माघ	हस्त	26/31 तक	मकर	कन्या	।।।।।।।।।।	13/29 तक मृत्युबाण, गोधूलि, रा. ल. ५ (लग्नेश सूर्य षष्ठस्थ परिहार), ६ (शुक्र षष्ठस्थ परिहार), ७ (26/31 तक) (चं. दा.)
माघ कृष्ण ६, गुरु	16 जन.	३ माघ	चित्रा	26/31 बाद	मकर	कन्या	ऽरा.।।।।।।ऽ।।	रा. ल. ७ (26/31 बाद) तदुपरान्त लग्नऽभाव
माघ कृष्ण ८, शुक्र	17 जन.	४ माघ	चित्रा	25/13 तक	मकर	कं./तु.	ऽ।।।।ऽअ.।ऽ।।	दि. ल. ११ (अष्टमस्थ चं. परिहार, शु. दा.), १२, गोधूलि, रा. ल. ५ (सूर्य षष्ठस्थ परिहार), ६ (षष्ठस्थ शु. परिहार), ७ (25/13 तक)
माघ कृष्ण ८, शुक्र	17 जन.	४ माघ	स्वा.	25/13 बाद	मकर	तुला	ऽबु.।।ऽशु.।।।।।।	रा. ल. ७ (25/13 बाद) शुक्र पादवेधऽभाव:
माघ कृष्ण ९, शनि	18 जन.	५ माघ	स्वा.	24/16 तक	मकर	तुला	ऽ।।ऽशु.।।ऽ।।।	दि. ल. १२ (अष्टमस्थ चं. परिहार, चं. पूज्य) (आवश्यके), १ (12/25 तक) (चं. दा.) (12/45 से 18/31 तक शुक्र पादवेध), रा. ल. ६
माघ कृष्ण१०, रवि	19 जन.	६ माघ	अनु.	23/41 बाद	मकर	वृश्चिक	।ऽ।।।।ऽऽ।।	रा. ल. ६ (23/41 बाद), ७
माघ कृष्ण११, चंद्र	20 जन.	७ माघ	अनु.	23/30 तक	मकर	वृश्चिक	।ऽ।।।।।ऽ।।	दि. ल. ११ (शु. श. दा.), १२, गोधूलि, रा. ल. ५ (शु. दा.), ६ (23/08 तक) (षष्ठस्थ-शुक्र परिहार) 23/08 बाद क्रान्तिसाम्य
माघ शुक्ल ४, बुध	29 जन.	१६ माघ	उ.भा.	12/13 बाद	मकर	मीन	।।।।।ऽचौ.।ऽ।।	रा. ल. ५ (षष्ठस्थ सूर्य परिहार) (सू. शु. दा.), ६ (षष्ठस्थ बु. शु. परिहार) (चं. बु. शु. दा.), ७ (षष्ठस्थ चं. परिहार)
माघ शुक्ल ५, गुरु	30 जन.	१७ माघ	उ.भा.	15/12 तक	मकर	मीन	।।।।।ऽचौ.।ऽ।।	दि. ल. ११ (शु. श. दा.), १२ (चं. दा.)
माघ शुक्ल ५, गुरु	30 जन.	१७ माघ	रेव.	15/12 बाद	मकर	मीन	ऽके.।।।।।।।।।।	रा. ल. ५ (षष्ठस्थ सूर्य परिहार, शु. दा.), ६ (चं. शु. दा.), ७ (चं. दा.)

शुभ विवाह मुहूर्त्त—माघ मास (जनवरी-फरवरी) सन् 2020 ई.

शुभ विवाह मुहूर्त—माघ मास (जनवरी-फरवरी) सन् 2020 ई.

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	समय (भा.स्टैं.टा.)	सूर्य राशि	चंद्र राशि	लतादि दश रेखाएं	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में)
माघ शुक्ल ६, शुक्र	31 जन.	१८ माघ	रेव.	18/10 तक	मकर	मीन	ऽ । । । । । । । । ।	दि. ल. ११ (बु. शु. दा.), १२, १ (मं. अष्टमस्थ परिहार)
माघ शुक्ल ६, शुक्र	31 जन.	१८ माघ	अश्वि	18/10 बाद	मकर	मेष	ऽश.ऽ । । । ऽ रो. । ऽ । ।	रा. ल. ५ (षष्ठस्थ सूर्य परिहार, बु. शु. दा.), ७ (चं. दा.)
माघ शुक्ल ७, शनि	1 फर.	१९ माघ	अश्वि	20/54 तक	मकर	मेष	ऽ ऽ । । । । । ऽ । ।	दि. ल. ११ (बु. शु. दा.), १२, १ (मं. अष्टमस्थ परिहार), रा. ल. ५ (20/54 तक) (सूर्य षष्ठस्थ परिहार)
माघ शुक्ल ९, चंद्र	3 फर.	२१ माघ	रोहि.	24/52 बाद	मकर	वृष	। । । । । । । ऽ ऽ ।	रा. ल. ७ (24/52 बाद) (अष्टमस्थ चं. परिहार)
माघ शुक्ल१०, मंग	4 फर.	२२ माघ	रोहि.	25/49 तक	मकर	वृष	। । । । । । । ऽ ऽ ।	दि. ल. ११ (बु. शु. दा.), १२, १ (मं. अष्टमस्थ परिहार, मं. दा.) रा. ल. ५ (सूर्य षष्ठस्थ परिहार), ७ (अष्टमस्थ चं परिहार, मं.दा.)
माघ पूर्णिमा, रवि	9 फर.	२७ माघ	मघा	19/43 बाद	मकर	सिंह	। । । । ऽ सू.ऽरो. । ऽ । ।	रा. ल. ६ (बु. शु. दा.) (लग्नेश बु. षष्ठस्थ परिहार), ८
फाल्गु. कृ. १, चंद्र	10फर.	२८ माघ	मघा	17/06 तक	मकर	सिंह	। । । । ऽ । । ऽ । ।	दि. ल. ११ (चं. बु. दा.), १२ (षष्ठस्थ चं. परिहार, चं. शु. दा.), १ (11/32 तक)

✲ फाल्गुन मास (फर.—मार्च) ✲ सन् 2020 ई.

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	समय (भा.स्टैं.टा.)	सूर्य राशि	चंद्र राशि	लतादि दश रेखाएं	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण
फाल्गु. कृ. ६, शुक्र	14फर.	२ फाल्गु	स्वा.	7/28 से 30/01	कुम्भ	तुला	। ऽ । ऽ । । । । ऽ ।	26/40 तक मृत्युबाण दोष, रा. ल. ८ (26/40 बाद)
फाल्गु. कृ. ८, रवि	16फर.	४ फाल्गु	अनु.	28/54 तक	कुम्भ	वृश्चिक	। । । । । । । ऽ । ।	दि. ल. १२ (शु. दा.), १ (अष्टमस्थ चं. परिहार), २ (11/48 तक) (अष्टमस्थ मं. परिहार, मं. दा.) 11/48 से 15/24 तक व्याघात, रा. ल. ६ (शु. दा.), ८ (चं. दा.)
फाल्गु. शु. २, मंग	25फर.	१३फाल्गु	उ.भा.	19/10 बाद	कुम्भ	मीन	। ऽ । । । । । । । ।	रा. ल. ६ (चं. शु. के. दान व पूजा), ८
फाल्गु. शु. ३, बुध	26फर.	१४फाल्गु	उ.भा.	22/08 तक	कुम्भ	मीन	। ऽ । । । ऽ नृ. । । । ।	दि. ल. १२ (चं. शु. दा.), १ (चं. दा.), २ (अष्टमस्थ मं. गु. परिहार), गोधूलि, रा. ल. ६ (षष्ठस्थ बु. परिहार)
फाल्गु. शु. ३, बुध	26फर.	१४फाल्गु	रेव.	22/08 बाद	कुम्भ	मीन	ऽ के. । ऽशु. । । । । । । ऽ	रा. ल. ८
फाल्गु. शु. ४, गुरु	27फर.	१५फाल्गु	रेव.	25/08 तक	कुम्भ	मीन	ऽ । ऽ । । । । । । ऽ	दि. ल. १२ (चं. शु. दा.), १ (चं. दा.), २ (अष्टमस्थ मं. गु. परिहार, मं. गु. दा.), गोधूलि, रा. ल. ६ (चं. शु. दा.) (षष्ठस्थ बु. परिहार), ८ (25/08 तक) दग्धातिथि परिहार
फाल्गु. शु. ४, गुरु	27फर.	१५फाल्गु	अश्वि.	25/08 बाद	कुम्भ	मेष	ऽ श. । । । । । । ऽ । ऽ	रा. ल. ८ (25/08 बाद) दग्धातिथि परिहार
फाल्गु. शु. ५, शुक्र	28फर.	१६फाल्गु	अश्वि.	28/03 तक	कुम्भ	मेष	ऽ । । । । ऽ चौ. । ऽ । ।	दि. ल. १२ (चं. शु. दा.), १ (चं. दा.), २ (अष्टमस्थ मं. गु. परिहार, मं. गु. दा.), गोधूलि, रा. ल. ६ (20/25 बाद) (अष्टमस्थ चं. व षष्ठस्थ बु. परि.), ८ (शुक्र युति परिहार)
फाल्गु. शु. ७, चंद्र	2 मार्च	१९फाल्गु	रोहि.	8/55 बाद	कुम्भ	वृष	। ऽ । । । । । ऽ । ।	13/36 तक वैधृति-विष्कम्भ दोष, गोधूलि, रा. ल. ६ (षष्ठस्थ बु. परिहार), ७ (अष्टमस्थ चं. परिहार), ८ (चं. दा.)
चैत्र कृष्ण १, मंग.	10मार्च	२७फाल्गु	हस्त	22/02 बाद	कुम्भ	कन्या	। ऽ । । । ऽ रो. । । । ।	रा. ल. ७ (22/02 बाद), ८ (षष्ठस्थ शु. परिहार)
चैत्र कृष्ण २, बुध	11मार्च	२८फाल्गु	हस्त	19/00 तक	कुम्भ	कन्या	। ऽ । । । । । । । ।	दि. ल. १२ (चं. दा.), १ (षष्ठस्थ चं. परिहार) (शु. दा.), २ (अष्टमस्थ मं. गु. परिहार)
चैत्र कृष्ण ३, गुरु	12मार्च	२९फाल्गु	स्वा.	16/16 बाद	कुम्भ	तुला	। । । । । । । ऽ । ऽ	11/45 से 23/46 तक मृत्युबाणदोष, रा. ल. ८ (23/46 से 24/04 तक केवल) (षष्ठस्थ शु. परिहार) 24/04 से 27/40 तक व्याघात (आवश्यके)

आगामी वर्ष (वि. संवत् २०७७) में गुरु-शुक्रास्त की सम्भावित तारीखें

(1) शुक्र लगभग 31 मई, 2020 ई. को पश्चिम में अस्त होकर लगभग 8 जून, 2020 ई. को पूर्व में उदय होगा।
(2) पुनः शुक्र लगभग 4 फरवरी, 2021 ई. को पूर्व में अस्त होकर लगभग 17 अप्रैल, 2021 ई. को पश्चिम में उदय होगा।
(3) गुरु लगभग 17 जनवरी, 2021 ई. को पश्चिम में अस्त होकर 15 फरवरी, 2021 ई. को पूर्व में उदय होगा।

दोषयुक्त एवं अशुद्ध विवाह मुहूर्त–संवत् २०७६ वि. (सन् 2019–20 ई.)

नीचे वि. संवत् २०७६ में उन विशेष दोषपूर्ण एवं अशुद्ध विवाह मुहूर्त्तों का स्पष्टीकरण दिया जा रहा है, जिनके अन्तर्गत विवाह नक्षत्र होते हुए भी उनको शुद्ध विवाह मुहूर्त्तों में सम्मिलित नहीं किया गया। यहाँ अशुद्ध एवं त्याज्य विवाह मुहूर्त्तों के आगे जिन युति, वेध, मृत्युबाण आदि दोषों का विवरण लिखा है, उनका कोई शास्त्रीय परिहार नहीं मिलता है। गत पृष्ठों में जिन मुहूर्त्तों, लग्नों में क्रूर ग्रह युति, लग्नेश षष्ठाष्टमस्थ, चंद्र षष्ठाष्टमस्थ, शुक्र षष्ठाष्टमस्थ आदि दोषों का परिहार मिल गया है, उन्हें शुद्ध मुहूर्त्तों में सम्मिलित कर लिया गया है।

निवेदक—पं. विवेक शर्मा ज्योतिषी, गणितकर्त्ता

ता. मास वार	नक्षत्र	समय	दोष विवरण
23 अप्रै., मंग.	मूल	17/16 बाद	राहु-वेध
24 अप्रै., बुध	मूल	18/35 तक	राहु-वेध
25 अप्रै., गुरु	उ.षा.	20/37 बाद	केतु युति अपरिहार्य
26 अप्रै., शुक्र	उ.षा.	23/14 तक	केतुयुति अपरिहार्य
1 मई, बुध	उ.भा.	10/52 बाद	वैधृति दोष कृष्ण त्रयोदशी
7 मई, मंग.	मृग.	16/27 बाद	केतु वेध
8 मई, बुध	मृग.	16/00 तक	केतु वेध
14 मई, मंग.	उ.फा.	8/53 बाद	मासान्त
15 मई, बुध	उ.फा.	7/16 तक	संक्रान्ति
15 मई, बुध	हस्त	7/16 बाद	संक्रान्ति
16 मई, गुरु	हस्त	5/42 तक	लग्नाभाव
16 मई, गुरु	स्वा.	28/16 बाद	व्यतीपात
20 मई, चन्द्र	मूल	26/29 बाद	राहु-वेध
21 मई, मंग.	मूल	27/31 तक	राहु-वेध
22 मई, बुध	उ.षा.	29/13 बाद	लग्नाभाव
24 मई, शुक्र	उ.षा.	7/31 तक	लग्नाभाव
2 जून, रवि	रोहि.	24/39 बाद	कृष्ण चतुर्दशी
11 जून, मंग.	हस्त	13/01 बाद	व्यतीपात
14 जून, शुक्र	स्वा.	10/16 तक	मासान्त
15 जून, शनि	अनु.	9/59 बाद	संक्रान्ति
17 जून, चन्द्र	मूल	10/43 बाद	मंगल-राहु-वेध
18 जून, मंग.	मूल	11/50 तक	मंगल-राहु-वेध
19 जून, बुध	उ.षा.	13/30 बाद	सूर्य-वेध
20 जून, गुरु	उ.षा.	15/39 तक	सूर्य-वेध
21 जून, शुक्र	श्रव.	18/14 तक	वैधृति
26 जून, बुध	उ.भा.	5/38 तक	मृत्युबाण, लग्नाभाव
27 जून, गुरु	रेव.	7/44 तक	लग्नाभाव
28 जून, शुक्र	अभि.	9/12 तक	लग्नाभाव

ता. मास वार	नक्षत्र	समय	दोष विवरण
30 जून, रवि	रोहि.	10/01 बाद	कृष्ण त्रयोदशी
5 जुला, शुक्र	मघा	24/18 बाद	मृत्युबाण, भद्रा
14 जुला, रवि	मूल	17/26 बाद	सूर्य-राहु वेध
15 जुला, चंद्र	मूल	18/52 तक	सूर्य-राहु वेध

15 जुलाई से 19 जुलाई, 2019 ई. तक ग्रहणवेध दोष
16 जुलाई से 2 अक्तू., 2019 तक शुक्र अस्त दोष

ता. मास वार	नक्षत्र	समय	दोष विवरण
6अक्तू., रवि	उ.षा.	15/04 बाद	चंद्रग्रहण नक्षत्र
7अक्तू., चंद्र	उ.षा.	17/25 तक	चंद्रग्रहण नक्षत्र
11 अक्तू., शुक्र	उ.भा.	29/10 बाद	भौम-वेध
12 अक्तू., शनि	उ.भा.	सारा-दिन	भौम-वेध,
13 अक्तू., रवि	उ.भा.	7/53 तक	भौमवेध, व्याघात
17 अक्तू., गुरु	रोहि.	15/52 बाद	संक्रान्ति
18 अक्तू., शुक्र	रोहि.	16/59 तक	क्षीण सूर्यांश
2 नवं., शनि	उ.षा.	23/01 बाद	चंद्रग्रहण नक्षत्र
3 नवं., रवि	उ.षा.	24/55 तक	चंद्रग्रहण नक्षत्र
3 नवं., रवि	श्रव.	24/55 तक	भुजंगपात
4 नवं., चंद्र	श्रव.	27/23 तक	भुजंगपात
4 नवं., चंद्र	धनि.	27/23 बाद	लग्नाभाव
15 नवं., शुक्र	मृग.	23/12 तक	मृत्युबाण
24 नवं., रवि	चित्रा	12/48 तक	कृष्ण त्रयोदशी
24 नवं., रवि	स्वा.	12/48 बाद	भौमयुति, कृष्ण १३
27 नवं., बुध	अनु.	8/12 तक	सूर्य युति
29 नवं., शुक्र	मूल	7/34 तक	लग्नाभाव
1 दिसं., रवि	उ.षा.	9/40 तक	क्रान्तिसाम्य दोष
5 दिसं., गुरु	उ.भा.	20/07 बाद	मृत्युबाण दोष
6 दिसं., शुक्र	रेव.	22/57 बाद	व्यतीपात
7 दिसं., शनि	रेव.	25/28 तक	व्यतीपात, भद्रा
10दिसं., मंग.	रोहि.	29/57 बाद	लग्नाभाव
11दिसं., बुध	मृग.	30/22 बाद	लग्नाभाव

⇒ 12 दिसंबर, 2019 ई. से 13 जनवरी, 2020 ई. तक गुरु अस्त दोष

⇒ 16 दिसंबर, 2019 ई. से 13 जनवरी, 2020 ई. तक पौष मास

ता. मास वार	नक्षत्र	समय	दोष विवरण
14 जन., मंग.	उ.फा.	29/57 बाद	संक्रान्ति
15 जन., बुध	हस्त	28/07 बाद	मृत्युबाण दोष
21 जन., मंग.	मूल	23/43 बाद	केतु-युति अपरिहार्य
25 जन., शनि	श्रव.	28/36 तक	सूर्य-युति, व्यतीपात
25 जन., शनि	धनि.	28/36 बाद	व्यतीपात
26 जन., रवि	धनि.	30/49 तक	व्यतीपात, लग्नाभाव
4 फर., मंग.	मृग.	25/49 बाद	शनिवेध, वैधृति
5 फर., बुध	मृग.	25/49 तक	शनिवेध, वैधृति
11 फर., मंग.	उ.फा.	14/23 बाद	भद्रा, 15/34 से मृत्युबाण
12 फर., बुध	उ.फा.	11/46 तक	मासान्त
12 फर., बुध	हस्त	11/46 बाद	मासान्त
13 फर., गुरु	ह/चि	सारा दिन	संक्रान्ति
14 फर., शुक्र	चित्रा	7/28 तक	भुजंगपात
15 फर., शनि	अनु.	29/09 बाद	लग्नाभाव
17 फर., चंद्र	मूल	29/14 बाद	भौम-केतु युति
18 फर., मंग.	मूल	30/06 तक	भौम-केतु युति
20 फर., गुरु	उ.षा.	7/28 बाद	व्यतीपात, कृष्ण त्रयो.

3 से 9 मार्च, 2020 ई. तक होलाष्टक विचार

ता. मास वार	नक्षत्र	समय	दोष विवरण
10 मार्च, मंग.	उ.फा.	22/02 तक	भुजंगपात
11 मार्च, बुध	चित्रा	19/00 बाद	सूर्य-वेध
12 मार्च, गुरु	चित्रा	16/16 तक	सूर्य-वेध
13 मार्च, शुक्र	स्वा.	14/00 तक	मासान्त

त्रिबल शुद्धि पर आधारित–वर-कन्या की राशि अनुसार शुभ विवाह-मुहूर्त्त निकालें–संवत् २०७६ वि. (सन् 2019–20 ई.)

नीचे वर-कन्या की जन्म अथवा नाम राशि के अनुसार (**त्रिबल शुद्धि-सूर्य, चन्द्र एवं गुरु पर आधारित**) विवाह मुहूर्त्त दिए जा रहे हैं। वर-कन्या की कुण्डली मिलान के पश्चात् उनकी राशियों में जो-जो तारीखें समान होंगी, उन तारीखों में वर-कन्या का विवाह शुभ एवं ग्राह्य होगा। **विवाह लग्न** का निर्णय करने के लिए गत पृष्ठों पर दिए गए शुद्ध मुहूर्त्तों में से किसी विद्वान पण्डित जी के परामर्श अनुसार चयन करना चाहिए। **उदाहरण**–मेष राशि का लड़का और सिंह राशि की लड़की का विवाह मुहूर्त्त **अप्रैल** (वैशाख), 2019 ई. में देखना हो तो, दोनों की राशियों में 18, 19, 20, 26 अप्रैल की तारीखों एवं मुहूर्त्तों में समानता पाई गई है, इनमें से कोई भी तारीख अपनी सुविधानुसार ग्रहण कर सकते हैं। **कार्तिक मास के मुहूर्त्त यद्यपि पर्वतीय** (पहाड़ी) क्षेत्रों में ही ग्राह्य माने जाते हैं। परन्तु वर्तमान परिस्थितियों वश, अन्य प्रदेशों के वासी भी कार्तिक मास में विवाह ग्रहण करने लगे हैं। **ध्यान रहे**, विवाह के मास का निर्धारण मुख्यत: लड़के (वर) की राश्यनुसार किया जाता है। **कन्या** की राशि से गुरु बल तथा दोनों में चन्द्र बल विचारणीय होता है। वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों में जबकि कन्याओं का विवाह बालिग होने पर ही करते हैं, अत: गुरु शुद्धि को गम्भीरतापूर्वक न लेते एवं ४, ८, १२वें गुरु को वर्ज्य न समझते हुए पूज्य के रूप में ग्रहण किया गया है।

ध्यान रहे, लड़के की जन्म (अथवा नाम) राशि से ३, ६, १०, ११वें सूर्य शुभ; १, २, ५, ७, ९ वें सूर्य पूज्य तथा ४, ८, १२वें सूर्य त्याज्य होता है। कन्या को १, ३, ६ व १०वें गुरु साधारण पूज्य एवं उन्हें ४, ८, १२वें गुरु विशेष रूपेण पूज्य होगा। विवाह समय में अशुभ ग्रहों का यथाशक्ति दान व पूजा करवा लेनी चाहिए। सूर्य एवं गुरु स्वराशि या मित्रक्षेत्री हों तो उन्हें पूज्य न मानकर शुभ एवं ग्राह्य मान लिया जाता है।

❑ वर (लड़का) ❑	वर कन्या को शुभ, पूज्य मासादि	❑ कन्या (लड़की) ❑
मेष राशि–अप्रै. की 15, 16, 17, 18, 19, 20, 26 (23/14 बाद), 27, 28, **मई की** 6, 7, 12, 13, 16, 17, 23, 24, 25, 26, 28–29–30 (चं.दा.), 31, **जून की** 4, 8, 9, 10, 11, 12, 13, 20, 21, 22, 24–25–26 (चं.दा.), 27, **जुला. की** 6, 7, 8, 9, 10, 11, **अक्तू. की** 4, 5, 7, 8, 9, 13–14 (चं.दा.), 15 [**कार्तिक मासे अक्तू. की** 18, 19, 23, 24, 25, 31, **नवं. की** 1, 5, 8–9–10 (चं.दा.), 11, 13, 14] **सन् 2020 ई. में जन. की** 15, 16, 17, 18, 29–30–31 (चं.दा.), **फर. की** 1, 3, 4, 9, 10, 14, 25–26–24 (चं.दा.), 28, **मार्च की** 2, 10, 11, 12 **तारीखें शुभ होंगी।**	मेष राशि के वर को आषा., आश्विन, माघ, फाल्गुन-शुभ, वैशाख, ज्येष्ठ व कार्तिक मासों में **सूर्य पूज्य** तथा श्रावण, **मार्गशीर्ष मास त्याज्य रहेंगे।** इस राशि की **कन्या** को **गुरु 5 नवं. तक विशेष रूपेण पूज्य, तदुपरान्त संवतान्त तक शुभ रहेगा।**	**मेष राशि–अप्रै. की** 15, 16, 17, 18, 19, 20, 26 (23/14 बाद), 27, 28, **मई की** 6, 7, 12, 13, 16, 17, 23, 24, 25, 26, 28, 29, 30, 31, **जून की** 4, 8, 9, 10, 11, 12, 13, 20, 21, 22, 24, 25, 26, 27, **जुला. की** 6, 7, 8, 9, 10, 11, **अक्तू. की** 4, 5, 7, 8, 9, 13, 14, 15 [**कार्तिक मासे अक्तू. की** 18, 19, 23, 24, 25, 31, **नवं. की** 1, 5, 8, 9, 10, 11, 13, 14] **मार्गशीर्ष में नवं. की** 19, 20, 21, 22, 23, 28, 30, **दिसं. की** 1, 2, 3, 6, 7, 8, 11, 12, **सन् 2020 ई. में जन. की** 15, 16, 17, 18, 29, 30, 31, **फर. की** 1, 3, 4, 9, 10, 14, 25, 26, 27, 28, **मार्च की** 2, 10, 11, 12 **तारीखें शुभ होंगी।**
वृष राशि–मई की 16, 17, 18, 19, 23 (11/44 बाद), 24, 25, 26, 28, 29, 30–31 (चं.दा.), **जून की** 4, 10 (20/00 बाद), 11, 12, 13, 16, 20, 21, 22, 24, 25, 26, 27 (चं.दा.), **जुला. की** 7 (25/47 बाद), 8, 9, 10, 11, 12, 13, **अक्तू. की** 2, 3, 7, 8, 9, 13, 14–15 (चं.दा.) [**कार्तिक मासे अक्तू. की** 18, 19, 25 (16/23 बाद), 29, 30, **नवं. की** 5, 8, 9, 10–11 (चं.दा.), 13, 14] **मार्गशीर्ष में नवं. की** 21 (24/03 बाद), 22, 23, 30 (14/33 बाद), **दिसं. की** 1, 2, 3, 6, 7–8 (चं.दा.), 11, 12, **सन् 2020 ई. में जन. की** 15 (11/28 बाद), 16, 17, 18, 19, 20, 29, 30, 31–**फर. की** 1 (चं.दा.), 3, 4, 14, 16, 25, 26, 27–28 (चं.दा.), **मार्च की** 2, 10, 11, 12 **तारीखें शुभ होंगी।**	वृष के वर को श्रावण, कार्तिक, फाल्गुन मास-शुभ, ज्येष्ठ, आश्विन, मार्ग., माघ **मासों में सूर्य पूज्य** तथा वैशाख, भाद्रपद मास त्याज्य रहेंगे। इस राशि की कन्या को गुरु 5 नवं. तक शुभ, तदुपरान्त विशेष रूपेण पूज्य रहेगा।	**वृष राशि–अप्रै. की** 17 (7/17 बाद), 18, 19, 20, 21, 22, 26 (23/14 बाद), 27, 28, **मई की** 6, 7, 16, 17, 18, 19, 23 (11/44 बाद), 24, 25, 26, 28, 29, 30, 31, **जून की** 4, 10 (20/00 बाद), 11, 12, 13, 16, 20, 21, 22, 24, 25, 26, 27, **जुला. की** 7 (25/47 बाद), 8, 9, 10, 11, 12, 13, **अक्तू. की** 2, 3, 7, 8, 9, 13, 14–15 (चं.दा.), [**कार्तिक मासे अक्तू. की** 18, 19, 25 (16/23 बाद), 29, 30, **नवं. की** 5, 8, 9, 10, 11, 13, 14] **मार्गशीर्ष में नवं. की** 21 (24/03 बाद), 22, 23, 30 (14/33 बाद), **दिसं. की** 1, 2, 3, 6, 7, 8, 11, 12, **सन् 2020 ई. में जन. की** 15 (11/28 बाद), 16, 17, 18, 19, 20, 29, 30, 31, **फर. की** 1, 3, 4, 14, 16, 25, 26, 27, 28, **मार्च की** 2, 10, 11, 12 **तारीखें शुभ होंगी।**
मिथुन राशि–अप्रै. की 15, 16, 17 (7/17 तक), 19 (8/25 बाद), 20, 21, 22, 28 (15/45 बाद), **मई की** 6, 7, 12, 13, **जून की** 16, 22 (7/39 बाद), 24, 25, 26, 27, **जुला. की** 6, 7 (25/47 तक), 9 (28/45 बाद), 10, 11, 12, 13, [**कार्तिक मासे अक्तू. की** 18, 19, 23, 24, 25 (16/23 तक), 29, 30,	मिथुन के वर को वैशाख, मार्गशीर्ष मास-शुभ। आषाढ़, श्रावण, कार्तिक व फाल्गुन मासों में **सूर्य पूज्य** तथा ज्येष्ठ, आश्विन, माघ मास त्याज्य रहेंगे।	**मिथुन राशि–अप्रै. की** 15, 16, 17 (7/17 तक), 19 (8/25 बाद), 20, 21, 22, 28 (15/45 बाद), **मई की** 6, 7, 12, 13, 16 (16/57 बाद), 17, 18, 19, 23 (11/44 तक), 25, (23/43 बाद), 26, 28, 29, 30, 31, **जून की** 4, 8, 9, 10 (20/00 तक), 12 (23/21 बाद), 13, 16, 22 (7/39 बाद), 24, 25, 26, 27, **जुला. की** 6, 7, (25/47 तक), 9 (28/45 बाद), 10, 11, 12, 13, **अक्तू.**

❑ वर (लड़का) ❑	वर कन्या को शुभ, पूज्य मासादि	❑ कन्या (लड़की) ❑
31, नवं. की 1, 5 (16/47 बाद), 8, 9, 10, 11, 13-14 (चं.दा.)] मार्गशीर्ष में नवं. की 19, 20, 21 (24/03 तक), 23 (25/46 बाद), 28, 30 (14/33 तक), दिसं. की 2 (24/57 बाद), 3, 6, 7, 8, 11-12 (चं.दा.), सन् 2020 ई. में फर. की 14, 16, 25, 26, 27, 28, मार्च की 2 (चं.दा.), 12 तारीखें शुभ होंगी।	इस राशि की कन्या को 5 नवं. तक साधारण रूपेण पूज्य, तदुपरान्त शुभ रहेगा।	की 2, 3, 4, 5, 9 (9/41 बाद), 13, 14, 15 [कार्तिक मास अक्तू. की 18, 19, 23, 24, 25 (16/23 तक), 29, 30, 31, नवं. की 1, 5 (16/47 बाद), 8, 9, 10, 11, 13, 14] मार्गशीर्ष में नवं. की 19, 20, 21 (24/03 तक), 23, (25/46 बाद), 28, 30 (14/33 तक), दिसं. की 2 (24/57 बाद), 3, 6, 7, 8, 11, 12, सन् 2020 ई. में जन. की 15 (11/28 तक), 17 (13/49 बाद), 18, 19, 20, 29, 30, 31, फर. की 1, 3, 4, 9, 10, 14, 16, 25, 26, 27, 28, मार्च की 2, 12 तारीखें शुभ होंगी।
कर्क राशि–अप्रै. की 15, 16, 17, 18, 19 (8/25 तक), 21, 22, 26 (23/14 बाद), 27, 28 (15/45 तक), **मई की** 6, 7 (चं.दा.), 12, 13, 16 (16/57 तक), 18, 19, 23, 24, 25 (23/43 तक), 28, 29, 30, 31, **जून की** 4, 8, 9, 10, 11, 12 (23/21 तक), **अक्तू. की** 2, 3, 4, 5, 7, 8, 9, (9/41 तक), 13, 14, 15, **मार्गशीर्ष मास में नवं. की** 19, 20, 21, 22, 23 (25/46 तक), 28, 30, **दिसं. की** 1, 2 (24/57 तक), 6, 7, 8, 11, 12 (चं.दा.), **सन् 2020 ई. में जन. की** 15, 16, 17 (13/49 तक), 19, 20, 29, 30, 31, **फर. की** 1, 3, 4, 9, 10 तारीखें शुभ होंगी।	कर्क के वर को विवाह हेतु वैशाख, ज्येष्ठ, आश्विन मास-**शुभ**, श्रावण, भाद्र., मार्गशीर्ष व माघ मासों में सूर्य **पूज्य**, तथा आषाढ़, कार्तिक व फाल्गुन मास त्याज्य रहेंगे। कर्क राशि की कन्या को गुरु 5 नवं. तक शुभ, तदुपरान्त साधारण रूपेण पूज्य रहेगा।	**कर्क राशि**–अप्रै. की 15, 16, 17, 18, 19 (8/25 तक), 21, 22, 26 (23/14 बाद), 27, 28 (15/45 तक), **मई की** 6, 7, 12, 13, 16 (16/57 तक), 18, 19, 23, 24, 25 (23/43 तक), 28, 29, 30, 31, **जून की** 4, 8, 9, 10, 11, 12 (23/21 तक), 16, 20, 21, 22 (7/39 तक), 24, 25, 26, 27, **जुला. की** 6, 7, 8, 9 (28/45 तक), 12, 13, **अक्तू. की** 2, 3, 4, 5, 7, 8, 9 (9/41 तक), 13, 14, 15 [**कार्तिक मासे अक्तू. की** 18, 19, 23, 24, 25, 29, 30, 31, **नवं. की** 1, 5 (16/47 तक), 8, 9, 10, 11, 13, 14] **मार्गशीर्ष में नवं. की** 19, 20, 21, 22, 23 (25/46 तक), 28, 30, **दिसं. की** 1, 2 (24/57 तक) 6, 7, 8, 11, 12, **सन् 2020 ई. में जन. की** 15, 16, 17 (13/49 तक), 19, 20, 29, 30, 31, **फर. की** 1, 3, 4, 9, 10, 16, 25, 26, 27, 28, **मार्च की** 2, 10, 11 तारीखें शुभ होंगी।
सिंह राशि–अप्रै. की 15, 16, 17, 18, 19, 20, 26 (23/14 बाद), 27, 28, **मई की** 6, 7, 12, 13, 16, 17, 23, 24, 25, 26, 30 (23/03 बाद), 31, **जून की** 4, 8, 9, 10, 11, 12, 13, 20, 21, 22, 27, **जुला. की** 6, 7, 8, 9, 10, 11, **अक्तू. की** 4, 5, 7, 8, 9, 14 (10/20 बाद), 15 [**कार्तिक मासे अक्तू. की** 18, 19, 23, 24, 25, 31, **नवं. की** 1, 5, 10 (17/19 बाद), 11, 13, 14] **सन् 2020 ई. में जन. की** 15, 16, 17, 18, 31 (18/10 बाद), **फर. की** 1, 3, 4, 9, 10, 14, 27 (25/08 बाद), 28, **मार्च की** 2, 10, 11, 12 तारीखें शुभ होंगी।	सिंह राशि के **वर** को आश्विन, फाल्गुन मासों में सूर्य **पूज्य**, ज्येष्ठ, आषाढ़, कार्तिक एवं माघ मास **शुभ** तथा चैत्र, श्रावण तथा मार्ग. मास त्याज्य होंगे। सिंह राशि की वधू को गुरु 5 नवं. तक विशेष रूपेण पूज्य, तदुपरान्त शुभ रहेगा।	**सिंह राशि**–अप्रै. की 15, 16, 17, 18, 19, 20, 26 (23/14 बाद), 27, 28, **मई की** 6, 7, 12, 13, 16, 17, 23, 24, 25, 26, 30 (23/03 बाद), 31, **जून की** 4, 8, 9, 10, 11, 12, 13 20, 21, 22, 27, **जुला की** 6, 7, 8, 9, 10, 11, **अक्तू. की** 4, 5, 7, 8 9, 14 (10/20 बाद), 15 [**कार्तिक मासे अक्तू. की** 18, 19, 23, 24, 25, 31, **नवं. की** 1, 5, 10 (17/19 बाद), 11, 13, 14] **मार्गशीर्ष मास में नवं. की** 19, 20, 21, 22, 23, 28, 30, **दिसं. की** 1, 2, 3, 7 (25/28 बाद), 8, 11, 12, **सन् 2020 ई. में जन. की** 15, 16, 17, 18, 31 (18/10 बाद), **फर. की** 1, 3, 4, 9, 10, 14, 27 (25/08 बाद), 28, **मार्च की** 2, 10, 11, 12 तारीखें शुभ होंगी।
कन्या राशि–मई की 16, 17, 18, 19, 23 (11/44 बाद), 24, 25, 26, 28, 29, 30 (23/03 तक), **जून की** 4, 8-9-10 (चं.दा.), 11, 12, 13, 16, 20, 21, 22, 24, 25, 26, **जुला. की** 6-7 (चं.दा.), 8, 9, 10, 11, 12, 13, **अक्तू. की** 2, 3, 7, 8, 9, 13, 14 (10/20 तक) [**कार्तिक मासे अक्तू. की** 18, 19, 23, 24, 25, 29, 30, **नवं. की** 5, 8, 9, 10 (17/19 तक), 13, 14] **मार्गशीर्ष मास में नवं. की** 19, 20, 21, 22, 23, 30 (14/33 बाद), **दिसं. की** 1, 2, 3, 6, 11, 12, **सन् 2020 ई. में जन. की** 15, 16, 17, 18, 19, 20, 29, 30, 31 (18/10 तक), **फर. की** 3, 4, 9, 10, 14, 16, 25, 26, 27 (25/08 तक), **मार्च की** 2, 10, 11, 12 तारीखें शुभ होंगी।	कन्या राशि के वर को आषाढ़, श्रावण, मार्गशीर्ष व फाल्गुन मास **शुभ**। ज्येष्ठ, आश्विन, कार्तिक व माघ मासों में सूर्य की पूजा/दानादि ; वैशाख, भाद्रपद मास त्याज्य होंगे। इस राशि की वधू को गुरु 5 नवंबर, 2019 ई. तक साधारण रूपेण पूज्य, तदुपरान्त विशेष रूपेण पूज्य रहेगा।	**कन्या राशि**–अप्रै. की 15, 16, 17, 18, 19, 20, 21, 22, 26 (23/14 बाद), 27, 28, **मई की** 6, 7, 12, 13, 16, 17, 18, 19, 23 (11/44 बाद), 24, 25, 26, 28, 29, 30 (23/03 तक), **जून की** 4, 8, 9, 10, 11, 12, 13, 16, 20, 21, 22, 24, 25, 26, **जुला. की** 6, 7, 8, 9, 10, 11, 12, 13, **अक्तू. की** 2, 3, 7, 8, 9, 13, 14 (10/20 तक) [**कार्तिक मासे अक्तू. की** 18, 19, 23, 24, 25, 29, 30, **नवं. की** 5, 8, 9, 10 (17/19 तक), 13, 14] **मार्गशीर्ष में नवं. की** 19, 20, 21, 22, 23, 30 (14/33 बाद), **दिसं. की** 1, 2, 3, 6, 11, 12, **सन् 2020 ई. में जन. की** 15, 16, 17, 18, 19, 20, 29, 30, 31 (18/10 तक), **फर. की** 3, 4, 9, 10, 14, 16, 25, 26, 27 (25/08 तक), **मार्च की** 2, 10, 11, 12 तारीखें शुभ होंगी।

❑ वर (लड़का) ❑	वर कन्या को शुभ, पूज्य मासादि	❑ कन्या (लड़की) ❑
तुला राशि–अप्रै. की 15, 16, 17-18-19 (चं.दा.), 20, 21, 22, 28 (15/45 बाद), **मई की** 12, 13, **जून की** 16, 22 (7/39 बाद), 24, 25, 26, 27, **जुला. की** 6, 7-8-9 (चं.दा.), 10, 11, 12, 13 **[कार्तिक मासे अक्तू. की** 18 (29/23 बाद), 19, 23, 24, 25 (चं.दा.), 29, 30, 31, **नवं. की** 1, 5 (16/47 बाद), 8, 9, 10, 11 **] मार्गशीर्ष मास में नवं. की** 19, 20, 21-22-23 (चं.दा.), 28, 30 (14/33 तक), **दिसं. की** 2 (24/57 बाद), 3, 6, 7, 8, **सन् 2020 ई. में फर. की** 14, 16, 25, 26, 27, 28, **मार्च की** 10-11-12 (चं.दा.) तारीखें शुभ होंगी।	तुला के वर को श्रावण, भाद्रपद-**शुभ**। वैशाख, आषाढ़, कार्तिक, मार्ग. व फाल्गुन मासों में सूर्य की पूजा/दान होगा। ज्येष्ठ, आश्विन व माघ मास त्याज्य होंगे। इस राशि की कन्या को गुरु 5 नवं. तक शुभ, तदुपरान्त साधारण रूपेण पूज्य रहेगा।	**तुला राशि–अप्रै. की** 15, 16, 17, 18, 20, 21, 22, 28 (15/45 बाद), **मई की** 12, 13, 16, 17, 18, 19, 23 (11/44 तक), 25 (23/43 बाद), 26, 28, 29, 30, 31, **जून की** 4, 8, 9, 10, 11, 12, 13, 16, 22 (7/39 बाद), 24, 25, 26, 27, **जुला. की** 6, 7, 8, 9, 10, 11, 12, 13, **अक्तू. की** 2, 3, 4, 5, 9 (9/41 बाद), 13, 14, 15 **[कार्तिक मासे अक्तू. की** 18 (29/23 बाद), 19, 23, 24, 25, 29, 30, 31, **नवं. की** 1, 5 (16/47 बाद), 8, 9, 10, 11 **] मार्गशीर्ष में नवं. की** 19, 20, 21, 22, 23, 28, 30 (14/33 तक), **दिसं. की** 2 (24/57 बाद), 3, 6, 7, 8, **सन् 2020 ई. में जन. की** 15, 16, 17, 18, 19, 20, 29, 30, 31, **फर. की** 1, 9, 10, 14, 16, 25, 26, 27, 28, **मार्च की** 10, 11, 12 तारीखें शुभ होंगी।
वृश्चिक राशि–अप्रै. की 15, 16, 17, 18, 19-20 (चं.दा.), 21, 22, 26, 27, 28 (15/45 तक), **मई की** 6, 7 (16/27 तक), 12, 13, 16-17 (चं.दा.), 18, 19, 23, 24, 25 (23/43 तक), 28, 29, 30, 31, **जून की** 8, 9, 10, 11, 12-13 (चं.दा.), **अक्तू. की** 2, 3, 4, 5, 7, 8, 9 (9/41 तक), 13, 14, 15, **मार्गशीर्ष मास में नवं. की** 19, 20, 21, 22, 23, 28, 30, **दिसं. की** 1, 2 (24/57 तक), 6, 7, 8, 11, 12, **सन् 2020 ई. में जन. की** 15, 16, 17-18 (चं.दा.), 19, 20, 29, 30, 31, **फर. की** 1, 3, 4, 9, 10 तारीखें शुभ होंगी।	वृश्चिक राशि के वर को वैशाख, भाद्रपद, आश्विन एवं माघ मास **शुभ**, ज्येष्ठ, श्रावण और मार्ग. मासों में सूर्य पूजा/दानादि तथा आषाढ़, कार्तिक व फाल्गुन मास त्याज्य होंगे। इस राशि की कन्या को गुरु 5 नवं. तक साधारणतया पूज्य, तदुपरान्त शुभ रहेगा।	**वृश्चिक राशि–अप्रै. की** 15, 16, 17, 18, 19, 20, 21, 22, 26, 27, 28 (15/45 तक), **मई की** 6, 7 (16/27 तक), 12, 13, 16, 17, 18, 19, 23, 24, 25 (23/43 तक), 28, 29, 30, 31, **जून की** 8, 9, 10, 11, 12, 13, 16, 20, 21, 22 (7/39 तक), 24, 25, 26, 27, **जुला की** 6, 7, 8, 9, 10, 11, 12, 13, **अक्तू. की** 2, 3, 4, 5, 7, 8, 9 (9/41 तक), 13, 14, 15, **[कार्तिक मासे अक्तू. की** 18 (29/23 तक), 23, 24, 25, 29, 30, 31, **नवं. की** 1, 5 (16/47 तक), 8, 9, 10, 11, 13, 14 **] मार्गशीर्ष में नवं. की** 19, 20, 21, 22, 23, 28, 30, **दिसं. की** 1, 2 (24/57 तक), 6, 7, 8, 11, 12, **सन् 2020 ई. में जन. की** 15, 16, 17, 18, 19, 20, 29, 30, 31, **फर. की** 1, 3, 4, 9, 10, 14, 16, 25, 26, 27, 28, **मार्च की** 2, 10, 11, 12 तारीखें शुभ होंगी।
धनु राशि–अप्रै. की 15, 16, 17, 18, 19, 20, 21-22 (चं.दा.), 26, 27, 28, **मई की** 6, 7, 12, 13, 16, 17, 18, 19, 23, 24, 25, 26, 30 (23/03 बाद), 31, **जून की** 4, 8, 9, 10, 11, 12, 13, 16 (चं.दा.), 20, 21, 22, 27, **जुला. की** 6, 7, 8, 9, 10, 11, 12-13 (चं.दा.) **अक्तू. की** 2-3 (चं.दा.), 4, 5, 7, 8, 9, 14 (10/20 बाद), 15, **[कार्तिक मासे अक्तू. की** 18, 19, 23, 24, 25, 29-30 (चं.दा.), 31, **नवं. की** 1, 5, 10 (17/19 बाद), 11, 13, 14 **] सन् 2020 ई. में जन. की** 15, 16, 17, 18, 19-20 (चं.दा.), 31 (18/10 बाद), **फर. की** 1, 3, 4, 9, 10, 14, 16 (चं.दा.), 27 (25/08 बाद), 28, **मार्च की** 2, 10, 11, 12 तारीखें शुभ होंगी।	धनु राशि के वर को ज्येष्ठ, आश्विन, कार्तिक व फाल्गुन मास **शुभ**, वैशाख, आषाढ़, भाद्र. मासों में सूर्य पूज्य तथा श्रावण, मार्गशीर्ष मास त्याज्य होंगे। इस राशि की कन्या को गुरु 5 नवंबर, तक विशेष रूपेण पूज्य, तदुपरान्त साधारण रूपेण पूज्य रहेगा।	**धनु राशि–अप्रै. की** 15, 16, 17, 18, 19, 20, 21, 22, 26, 27, 28, **मई की** 6, 7, 12, 13, 16, 17, 18, 19, 23, 24, 25, 26, 30 (23/03 बाद), 31, **जून की** 4, 8, 9, 10, 11, 12, 13, 16, 20, 21, 22, 27, **जुला. की** 6, 7, 8, 9, 10, 11, 12, 13, **अक्तू. की** 2, 3, 4, 5, 7, 8, 9, 14 (10/20 बाद), 15 **[कार्तिक मासे अक्तू. की** 18, 19, 23, 24, 25, 29, 30, 31, **नवं. की** 1, 5, 10 (17/19 बाद), 11, 13, 14 **] मार्गशीर्ष मास में नवं. की** 19, 20, 21, 22, 23, 28, 30, **दिसं. की** 1, 2, 3, 7 (25/28 बाद), 8, 11, 12, **सन् 2020 ई. में** 28, 30, **दिसं. की** 1, 2, 3, 7 (25/28 बाद), 8, 11, 12, **सन् 2020 ई. में जन. की** 15, 16, 17, 18, 19, 20, 31 (18/10 बाद), **फर. की** 1, 3, 4, 9, 10, 14, 16, 27 (25/08 बाद), 28, **मार्च की** 2, 10, 11, 12 तारीखें शुभ होंगी।
मकर राशि–मई की 16, 17, 18, 19, 23 (चं.दा.), 24, 25, 26, 28, 29, 30 (23/03 तक), **जून की** 4, 10 (20/00 बाद), 11, 12, 13, 16, 20, 21, 22, 24, 25, 26, **जुला. की** 7 (25/47 बाद), 8, 9, 10, 11, 12, 13, **अक्तू. की** 2, 3, 4-5 (चं.दा.), 7, 8, 9, 13, 14 (10/20 तक) **[कार्तिक मासे अक्तू. की** 18, 19, 25 (16/23 बाद), 29, 30, 31, **नवं., की** 1 (चं.दा.), 5, 8, 9, 10 (17/19 तक), 13, 14 **] मार्गशीर्ष मास में नवं. की** 21 (24/03 बाद), 22, 23, 28-30 (चं.दा.), **दिसं. की** 1, 2, 3, 6, 11, 12, **सन् 2020 ई. में जन. की** 15 (11/28 बाद), 16, 17, 18, 19, 20, 29, 30, 31 (18/10 तक), **फर. की** 3, 4, 14, 16, 25, 26, 27 (25/08 तक), **मार्च की** 2, 10, 11, 12 तारीखें शुभ होंगी।	मकर के वर को आषाढ़, कार्तिक, मार्ग. मास **शुभ**। ज्येष्ठ, श्रावण व आश्विन मासों में सूर्य पूज्य तथा वैशाख, भाद्रपद व पौष मास त्याज्य होंगे। इस राशि की कन्या को गुरु 5 नवंबर, 2019 ई. तक शुभ, तदुपरान्त विशेष रूपेण पूज्य रहेगा।	**मकर राशि–अप्रै. की** 17 (7/17 बाद), 18, 19, 20, 21, 22, 26, 27, 28, **मई की** 6, 7, 16, 17, 18, 19, 23, 24, 25, 26, 28, 29, 30 (23/03 तक), **जून की** 4, 10 (20/00 बाद), 11, 12, 13, 16, 20, 21, 22, 24, 25, 26, **जुला. की** 7 (25/47 बाद), 8, 9, 10, 11, 12, 13, **अक्तू. की** 2, 3, 4, 5, 7, 8, 9, 13, 14 (10/20 तक) **[कार्तिक मासे अक्तू. की** 18, 19, 25 (16/23 बाद), 29, 30, 31, **नवं. की** 1, 5, 8, 9, 10 (17/19 तक), 13, 14 **] मार्गशीर्ष में नवं. की** 21 (24/03 बाद), 22, 23, 28, 30, **दिसं. की** 1, 2, 3, 6, 11, 12, **सन् 2020 ई. में जन. की** 15 (11/28 बाद), 16, 17, 18, 19, 20, 29, 30, 31 (18/10 तक), **फर. की** 3, 4, 14, 16, 25, 26, 27 (25/08 तक), **मार्च की** 2, 10, 11, 12 तारीखें शुभ होंगी।

❑ वर (लड़का) ❑	वर कन्या को शुभ, पूज्य मासादि	❑ कन्या (लड़की) ❑
कुम्भ राशि–अप्रै. की 15, 16, 17 (7/17 तक), 19 (8/25 बाद), 20, 21, 22, 26-27-28 (चं.दा.), **मई की** 8, 12, 13, **जून की** 16, 20-21-22 (चं.दा.), 24, 25, 26, 27, **जुला. की** 6, 7 (25/47 तक), 9 (28/45 बाद), 10, 11, 12, 13 [**कार्तिक मासे अक्तू. की** 18 (29/23 बाद), 19, 23, 24, 25 (16/23 तक), 29, 30, 31, **नवं. की** 1, 5, 8, 9, 10, 11] **मार्गशीर्ष मास में नवं. की** 19, 20, 21 (24/03 तक), 23 (25/46 बाद), 28, 30–**दिसं. की** 1-2 (चं.दा.), 3, 6, 7, 8, **सन् 2020 ई. में फर. की** 14, 16, 25, 26, 27, 28, **मार्च की** 12 तारीखें शुभ होंगी।	कुम्भ राशि के वर को वैशाख, मार्गशीर्ष, श्रावण मास **शुभ**, आषाढ़, भाद्रपद व कार्तिक मासों में सूर्य की पूजा ; ज्येष्ठ, आश्विन व माघ मास त्याज्य रहेंगे। कुम्भ राशि की कन्या को 5 नवंबर, 2019 ई. तक साधारण रूपेण पूज्य, तदुपरान्त शुभ रहेगा।	**कुम्भ राशि–अप्रै. की** 15, 16, 17 (7/17 तक), 19 (8/25 बाद), 20, 21, 22, 26, 27, 28, **मई की** 12, 13, 16 (16/57 बाद), 17, 18, 19, 23, 24, 25, 26, 28, 29, 30, 31, **जून की** 4, 8, 9, 10 (20/00 तक), 12 (23/21 बाद), 13, 16, 20, 21, 22, 24, 25, 26, 27, **जुला. की** 6, 7 (25/47 तक), 9 (28/45 बाद), 10, 11, 12, 13, **अक्तू. की** 2, 3, 4, 5, 7, 8, 9, 13, 14, 15 [**कार्तिक मासे अक्तू. की** 18 (29/23 बाद), 19, 23, 24, 25 (16/23 तक), 29, 30, 31, **नवं. की** 1, 5, 8, 9, 10, 11] **मार्गशीर्ष में नवं. की** 19, 20, 21 (24/03 तक), 23 (25/46 बाद), 28, 30, **दिसं. की** 1, 2, 3, 6, 7, 8, **सन् 2020 ई. में जन. की** 17 (13/49 बाद), 18, 19, 20, 29, 30, 31, **फर. की** 1, 9, 10, 14, 16, 25, 26, 27, 28, **मार्च की** 12 तारीखें शुभ होंगी।
मीन राशि–अप्रै. की 15, 16, 17, 18, 19 (8/25 तक), 21, 22, 26, 27, 28, **मई की** 6, 7 (16/27 तक), 12, 13, 16 (16/57 तक), 18, 19, 23, 24, 25, 26 (चं.दा.), 28, 29, 30, 31, **जून की** 8, 9, 10, 11, 12 (23/21 तक), **अक्तू. की** 2, 3, 4, 5, 7, 8, 9 (चं.दा.), 13, 14, 15, **मार्गशीर्ष मास में नवं. की** 19, 20, 21, 22, 23 (25/46 तक), 28, 30, **दिसं. की** 1, 2-3 (चं.दा.), 6, 7, 8, 11, 12, **सन् 2020 ई. में जन. की** 15, 16, 17 (13/49 तक), 19, 20, 29, 30, 31, **फर. की** 1, 3, 4, 9, 10 तारीखें शुभ होंगी।	मीन राशि के वर को ज्येष्ठ, भाद्रपद व माघ मास शुभ, वैशाख, श्रावण, आश्विन व मार्ग. मासों में सूर्य पूज्य तथा आषाढ़, कार्तिक व फाल्गुन मास त्याज्य होंगे। मीन राशि की कन्या को 5 नवंबर, 2019 ई. तक गुरु शुभ, तदुपरान्त साधारण रूपेण पूज्य रहेगा।	**मीन राशि–अप्रै. की** 15, 16, 17, 18, 19 (8/25 तक), 21, 22, 26, 27, 28, **मई की** 6, 7 (16/27 तक), 12, 13, 16 (16/57 तक), 18, 19, 23, 24, 25, 26, 28, 29, 30, 31, **जून की** 8, 9, 10, 11, 12 (23/21 तक), 16, 20, 21, 22, 24, 25, 26, 27, **जुला. की** 6, 7, 8, 9 (28/45 तक), 12, 13, **अक्तू. की** 2, 3, 4, 5, 7, 8, 9, 13, 14, 15 [**कार्तिक मासे अक्तू. की** 18, (29/23 तक), 19, 23, 24, 25, 29, 30, 31, **नवं. की** 1, 5, 8, 9, 10, 11, 13, 14] **मार्गशीर्ष में नवं. की** 19, 20, 21, 22, 23 (25/46 तक), 28, 30, **दिसं. की** 1, 2, 3, 6, 7, 8, 11, 12, **सन् 2020 ई. में जन. की** 15, 16, 17 (13/49 तक), 19, 20, 29, 30, 31, **फर. की** 1, 3, 4, 9, 10, 16, 25, 26, 27, 28, **मार्च की** 2, 10, 11 तारीखें शुभ होंगी।

(पृष्ठ 152 का शेष)

जालन्धर में दैनिक चन्द्रोदय–चन्द्रास्तकाल (भा. स्टैं. टा.) (सन् 2019-20 ई.)

दिसम्बर 2019

तारीख	उदय घं. मिं.	अस्त घं. मिं.	ता.	उदय	अस्त
1	11 15	21 49	15	20 36	10 02
2	11 56	22 45	16	21 42	10 51
3	12 33	23 40	17	22 48	11 35
4	13 06	— —	18	23 53	12 15
5	13 36	0 34	19	— —	12 52
6	14 06	1 27	20	0 58	13 28
7	14 35	2 20	21	2 02	14 03
8	15 05	3 14	22	3 06	14 40
9	15 37	4 10	23	4 11	15 19
10	16 13	5 07	24	5 16	16 03
11	16 54	6 07	25	6 19	16 50
12	17 41	7 08	26	7 20	17 43
13	18 34	8 09	27	8 16	18 38
14	19 33	9 07	28	9 06	19 35
			29	9 51	20 32
			30	10 30	21 29
			31	11 05	22 24

जनवरी 2020

तारीख	उदय घं. मिं.	अस्त घं. मिं.	ता.	उदय	अस्त
1	11 36	23 17	15	22 51	10 53
2	12 06	— —	16	23 56	11 30
3	12 35	0 10	17	— —	12 05
4	13 04	1 03	18	1 00	12 41
5	13 35	1 57	19	2 04	13 19
6	14 08	2 53	20	3 07	14 00
7	14 46	3 51	21	4 10	14 45
8	15 30	4 51	22	5 10	15 34
9	16 20	5 52	23	6 07	16 28
10	17 18	6 53	24	6 59	17 24
11	18 21	7 51	25	7 45	18 21
12	19 28	8 44	26	8 26	19 18
13	20 37	9 32	27	9 03	20 14
14	21 45	10 15	28	9 36	21 08
			29	10 06	22 01
			30	10 35	22 54
			31	11 04	23 47

फरवरी 2020

तारीख	उदय घं. मिं.	अस्त घं. मिं.	ता.	उदय	अस्त
1	11 33	— —	15	— —	11 19
2	12 05	0 41	16	1 01	12 00
3	12 40	1 37	17	2 04	12 43
4	13 20	2 35	18	3 05	13 31
5	14 06	3 34	19	4 03	14 23
6	14 59	4 35	20	4 55	15 17
7	16 00	5 34	21	5 43	16 14
8	17 06	6 30	22	6 25	17 10
9	18 16	7 21	23	7 02	18 06
10	19 26	8 07	24	7 36	19 01
11	20 36	8 49	25	8 07	19 55
12	21 44	9 27	26	8 37	20 47
13	22 51	10 04	27	9 05	21 40
14	23 56	10 41	28	9 34	22 33
			29	10 04	23 28
			—	— —	— —
			—	— —	— —

मार्च 2020

तारीख	उदय घं. मिं.	अस्त घं. मिं.	ता.	उदय	अस्त
1	10 37	— —	15	— —	10 39
2	11 14	0 24	16	0 59	11 27
3	11 56	1 21	17	1 59	12 19
4	12 45	2 20	18	2 53	13 13
5	13 40	3 18	19	3 42	14 09
6	14 43	4 14	20	4 26	15 05
7	15 50	5 06	21	5 04	16 01
8	17 00	5 55	22	5 38	16 56
9	18 11	6 38	23	6 10	17 49
10	19 21	7 19	24	6 39	18 42
11	20 31	7 58	25	7 08	19 35
12	21 40	8 36	26	7 36	20 29
13	22 48	9 14	27	8 06	21 23
14	23 55	9 55	28	8 38	22 18
			29	9 13	23 14
			30	9 52	— —
			31	10 37	0 11

मुण्डन, गृहारम्भ, गृहप्रवेश, विपणि, उपनयन, सर्वदेव प्रतिष्ठादि मुहूर्त्त–वि. संवत् २०७६

प्राचीन भारतीय ज्योतिषाचार्यों द्वारा शुद्धता की दृष्टि से विवाह, मुण्डनादि मुहूर्त्तों के निर्धारण में मुख्यतः इक्कीस दोषों का उल्लेख किया गया है। इनमें पंचाँगशुद्धि, क्रूर ग्रह का नक्षत्र–वेध, पापग्रह की युति, क्रान्तिसाम्य दोष, मृत्युबाण, षष्ठाष्टम चन्द्र एवं शुक्र विचार, व्यतीपात– वैधृति आदि दुष्ट योगों की युति, गुरु शुक्रास्त का विचार, दग्धा तिथि विचार आदि दोषों का विशेष रूप से विचार किया जाता है। राजमार्त्तण्ड–वशिष्ठ आदि शास्त्रकारों एवं आचार्यों ने भी विवाह के अतिरिक्त चूड़ाकरण, गृहारम्भ, व्रत, प्रतिष्ठा, पुंसवन, कर्णवेध आदि मुहूर्त्तों में भी क्रूर ग्रहों के वेध, युति, व्यतीपात, वैधृति आदि अशुभ योगों एवं दोषों का विचार करने का निर्देश दिया है–विवाहेऽर्ध प्रतिष्ठायां व्रते पुंसवनं तथा कर्णवेधादि चूडायां विद्धऋक्षं विवर्जयेत्॥ ध्यान रहे, शास्त्र नियमानुसार बुधवार के दिन अभिजित मुहूर्त्त भी ग्राह्य नहीं होता। जिन मुहूर्त्तों के आगे केवल शुद्धकाल दिया गया है, वहाँ दैवज्ञों को शुद्धकाल की अवधि में सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र एवं लग्नेश की शुभ स्थानों में स्थिति को ध्यान रखते हुए शुभ लग्न का निर्णय स्वयं कर सकते हैं। 'पंचांगदिवाकर' में दिए गए सभी मुहूर्त्तों में सर्वत्र शास्त्र विहित नियमों का यथासम्भव पालन किया जाता है। कुछ अन्य नए प्रचलित पंचांगों के मुहूर्त्तों में क्रूर ग्रहों का वेध, क्रूर ग्रह युति, क्षीण चन्द्र आदि अपरिहार्य दोष पाए जाते हैं, जो मुहूर्त्त–शास्त्र की दृष्टि से सर्वथा चिन्तनीय है।

—निवेदक: पं. विवेक शर्मा

मुण्डन मुहूर्त्त–२०७६ वि.

विशेष विवरण हेतु देखें 'आवश्यक मुहूर्त्त' के अन्तर्गत पृष्ठ 178

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
चैत्र शु.,१३, बुध	17 अप्रै.	उ.फा.	ल. ४
चैत्र पूर्णिमा, शुक्र	19 अप्रै.	चित्रा	मु. 11/32 तक, ल. २
वैशा. कृ. १, शनि	20 अप्रै.	स्वा.	ल. ४, ५ (शु.दा.), अभि. (वैश्यानां)
वै.कृ.४/५, मंग.	23 अप्रै.	ज्ये.	मु. 11/04 बाद, ल. ४, अभि., ५ (क्षत्रियाणां)
वैशा. कृ.१०, चंद्र	29 अप्रै.	शत.	मु. 8/09 से 8/49 तक
वैशा. कृ.११, मंग.	30 अप्रै.	शत.	मु. 8/15 तक (क्षत्रियाणां)
वैशा. शु. ६, शुक्र	10 मई	पुन.	मु. 8/36 तक (राहुयुति परि.)
वैशा. शु. ७, शनि	11 मई	पुष्य	ल. अभि., ५ (13/13 तक) (गुरु वेधऽभाव)
वैशा. शु. १२, गुरु	16 मई	चित्रा	ल. २, अभि., ५
ज्ये. कृ. २, चंद्र	20 मई	ज्ये.	ल. २, अभि., ५ (गुरु युति परि.)
ज्ये. कृ. ६, शनि	25 मई	श्र./ध.	ल. ५ (भद्रा परि.) (वैश्यानां)
ज्ये. कृ. ७, रवि	26 मई	धनि.	मु. 11/58 तक, ल. २, ४ (11/58 तक) (विप्राणां)
ज्ये. कृ.११, गुरु	30 मई	रेव.	दि. ल. ५, अभिजित्
ज्ये. कृ.१२, शुक्र	31 मई	अश्वि	दि. ल. ५, अभिजित्
ज्ये. शु. ३, गुरु	6 जून	पुन.	मु. 9/55 तक, ल. २ (9/55 तक)
ज्ये. शु. ५, शुक्र	7 जून	पुष्य	मु. 7/38 बाद, 7/43 तक गुरुपादवेध, ल. ५, अभिजित्
ज्ये. शु.१०, बुध	12 जून	ह/चि	मु. 6/06 बाद, ल. २, ५
ज्ये. शु.११, गुरु	13 जून	चि/स्व.	मु. 6/38 बाद, ल. २, ५, अभि. (भद्रा परि.-पाताले)
ज्ये. पूर्णिमा, रवि	16 जून	ज्ये.	मु. 14/02 बाद (भद्रा-परिहार) (विप्राणां)
ज्ये. पूर्णिमा, चंद्र	17 जून	ज्ये.	मु. 10/43 तक
आषा. कृ. ३, गुरु	20 जून	श्रव.	मु. 15/39 से 17/09 तक
●आ. कृ. ५, शनि	22 जून	धनि.	ल. ५, ६, अभि. (वैश्यानां)
●आ. कृ. ६, रवि	23 जून	शत.	ल. ५, ६, अभि. (विप्राणां)
● आ. कृ.१०, गुरु	27 जून	रे/अ	मु. 5/44 बाद, ल. ५, ६, अभि.
●आ. कृ.१०, शुक्र	28 जून	अश्वि	मु. 9/12 तक
●आ. शु.१०, गुरु	11 जुला	स्वा.	ल. ५, ६, अभिजित
(आश्विन नवरात्रों में–आवश्यक परिस्थिति में)			
आश्वि. शु.६, शुक्र	4 अक्तू	ज्ये.	मु. 12/19 तक, दि. ल. ७, ८
(सन् 2020 ई. में)			
माघ कृ. ६, गुरु	16 जन.	हस्त	दि. ल. १२, १, अभि., २
माघ शुक्ल ३, चंद्र	27 जन.	शत.	दि. ल. ११, १२, १, अभि.
माघ शुक्ल ५, गुरु	30 जन.	रेव.	मु. 15/12 बाद
माघ शुक्ल ६, शुक्र	31 जन.	रेव.	दिल. ल. ११, १२, १, अभि.
माघ शुक्ल७, शनि	1 फर.	अश्वि.	दि. ल. ११, १२, १, अभि. (वैश्यानां)
फाल्गु. कृ.१०, चंद्र	17 फर.	ज्ये.	मु. 14/36 बाद
फाल्गु. शु. ५, शुक्र	28 फर.	अश्वि	ल. १२, १, २, अभि., मु. 15/17 तक
चैत्र कृष्णा २, बुध	11 मार्च	हस्त	ल. १२, १, २,

नोट–उपरोक्त स्टार (●) चिन्हित मुहूर्त्त भारतीय प्राचीन परम्परानुसार दिए गए हैं। पंजाब/हिमाचल के अतिरिक्त काशी आदि के पंचाँगकार निरयन कर्क संक्रान्ति (16 जुला.) से ही सूर्य दक्षिणायन मानते हैं। न कि सायन कर्क संक्रान्ति (21 जून) से –निवेदक-पं. विवेक शर्मा ज्यो.

नींव/गृहारम्भ मुहूर्त्त– सं. २०७६
(खनन, भूमि–पूजन एवं शिलान्यास मुहूर्त्त)

विशेष विवरण हेतु देखें पृष्ठ 183–पं. विवेक शर्मा

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
चैत्र पूर्णिमा, शुक्र	19 अप्रै.	चित्रा	ल. १, २ (मु. 11/32 तक)
*वैशा.कृ.१०, चंद्र	29 अप्रै.	शत.	मु. 8/09 से 8/49 तक
*वैशा.शु. २, चंद्र	6 मई	रोहि.	मु. 16/37 बाद

नींव/गृहारम्भ मुहूर्त्त

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
*वैशा.शु. ५, गुरु	9 मई	पुन.	15/17 बाद (राहु युति परि.)
*वैशा. शु.६,शुक्र	10 मई	पुनः	मु. 8/36 तक, ल. २
*ज्ये. कृ. ६,शुक्र	24 मई	श्रव.	मुहू. 12/07 बाद, ल. ६
*ज्ये. कृ. ६,शनि	25 मई	श्र/ध	ल. २, ५, अभि., ६
*ज्ये. कृ.११,गुरु	30 मई	रेव.	ल. २, ५, अभि., ६
*ज्ये. कृ.१२,शुक्र	31 मई	अश्वि	ल. २, ५, अभि., ६
*ज्ये. शु. ३, गुरु	6 जून	पुन.	ल. २, मु. 9/55 तक (राहु युति परिहार)
ज्ये. शु. १०, बुध	12 जून	चित्रा	मु. 11/51 बाद, ल. ५,
ज्ये. शु. ११, गुरु	13 जून	चि/स्वा	मु. 6/38 बाद, भद्रा-परिहार ल. ४, ५, अभि., ६
*आ.कृ.१०, गुरु	27 जून	रे/अ	मु 5/44 बाद,ल.५,अभि.,६
*आ.कृ.१०,शुक्र	28 जून	अश्वि	मु. 9/12 तक
*आषा. शु.१,बुध	3 जुला.*	पुन.	6/36 बाद, मु. 11/42 तक (राहु-युति परिहार)
आषा. शु.११,शुक्र	12 जुला.*	अनु.	मु. 15/57 बाद
आषा. शु.१२,शनि	13 जुला.*	अनु.	ल. ५, ६, अभि. ८
कार्ति. कृ.५,शुक्र	18 अक्तू	रोहि.	मु. 7/29 बाद, ल. ८, अभि. (सू. दा.)
*कार्ति. शु.३,बुध	30 अक्तू	अनु.	ल. ८, ११
कार्ति. शु.११,शुक्र	8 नवं.	उ.भा.	मु. 12/25 बाद
मार्ग. कृ. २, गुरु	14 नवं.	रोहि.	ल. ८, अभि., ११
*मार्ग. कृ.६, चंद्र	18 नवं.	पुष्य	मु. 10/41 बाद, अभि., ११
*मार्ग.कृ.१२,शनि	23 नवं.	हस्त	ल. ९, अभि., ११
*मार्ग.शु. ६, चंद्र	2 दिसं.	श्रव.	ल. ९ (मु. 11/43 तक)
मार्ग. पूर्णिमा, बुध	11 दिसं.	रोहि.	मु. 10/59 बाद, ल. ११
मार्ग. पूर्णिमा, गुरु	12 दिसं.	मृग.	ल. ९, ११, अभिजित्
(सन् 2020 ई. में)			
*माघ कृ. ६, गुरु	16 जन.	हस्त	ल. ११, १२, अभिजित्
*माघ शु. ३, चंद्र	27 जन.	शत.	ल. ११, १२, अभिजित्
*माघ शु. ५, गुरु	30 जन.	रेव.	मु. 15/12 बाद
*माघ शु. ६,शुक्र	31 जन.	रेव.	ल. ११, १२, अभिजित्
*फाल्गु.शु.३,बुध	26 फर.	उ.भा.	ल. १२, २,
फाल्गु. शु. ७,चंद्र	2 मार्च	रोहि.	मु. 13/56 बाद, ल. ३
चैत्र कृष्ण २, बुध	11 मार्च	हस्त	ल. २, ३

नोट= *तारांकित मुहूर्त्तों में केवल वृषवास्तुचक्र शुद्धि नहीं है। शेष सभी मुहूर्त्त दोषों से मुक्त (शुद्ध) हैं।

●उपरोक्त बिन्दु चिन्हित मुहूर्त्त भारतीय प्राचीन परम्परानुसार दिए गए हैं। पंजाब/हिमाचल के अतिरिक्त काशी आदि के पंचांगकार निरयण कर्क संक्रान्ति (16 जुला.) से ही सूर्य दक्षिणायन मानते हैं। न कि सायन कर्क संक्रान्ति (लगभग 21 जून) से।

नूतन (नवीन) गृह प्रवेश मुहूर्त्त (संवत् २०७६)

नूतन (नवीन) गृह प्रवेश में अपने पण्डित जी द्वारा निकाले गए मुहूर्त्त पर **नव-गृह में वास्तु-पूजा शान्ति,** नवग्रह पूजन-शान्ति, स्वस्तिवाचन एवं पंचदेव, गोपूजन आदि के पश्चात् ब्राह्मणों एवं आश्रितजनों को भोजन-दानादि एवं कन्या पूजन, जलपूर्ण कलश तथा ब्राह्मणों को आगे करके शंख ध्वनि एवं सुहागिनों द्वारा मंगल गान सहित नव गृह में प्रवेश करना चाहिए।

●बिन्दु चिन्हित मुहूर्त्त यहाँ मतान्तरवश दिए जा रहे हैं। इन्हें परम्परा एवं आवश्यक परिस्थितिवश ग्रहण करें। विशेष विवरण हेतु देखें पृष्ठ 184

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
चैत्र शु. १३, बुध	17 अप्रै.	उ.फा.	ल. २, ५
*चैत्र पूर्णिमा, शुक्र	19 अप्रै.	चित्रा	मु. 11/32 तक, 11/32 से 15/08 तक वज्र दोष
*वैशा. कृ.१,शनि	20 अप्रै.	स्वा.	ल. २, अभि., ५
*वैशा. कृ.३, चंद्र	22 अप्रै.	अनु.	मु. 11/25 तक, ल. २, ३
वैशा. कृ.१०, चंद्र	29 अप्रै.	शत.	मु. 8/09 से 8/49 तक (आवश्यके)
वैशा. शु. ५, गुरु	9 मई	पुन.	मु. 15/17 से 19/00 तक (राहु-युति परिहार)
वैशा. शु. ६, शुक्र	10 मई	पुन.	ल. २, मु. 8/36 तक (राहु युति परिहार)
वैशा. शु. ७, शनि	11 मई	पुष्य	मु. 13/13 तक, ल. २, अभि., ५ (गुरु पादवेधऽभाव)
वैशा. शु.१२, गुरु	16 मई	ह/चि	ल. २, ५ (मु. 11/54 तक)
ज्ये. कृष्ण ५, गुरु	23 मई	उ.षा.	ल. २, ५, अभि., ६
*ज्ये. कृ. ६,शुक्र	24 मई	श्रव.	मु. 12/07 बाद, ल. ६
*ज्ये. कृ. ६,शनि	25 मई	श्र/ध	ल. २,५,अभि.,६ (भद्रा परि.)
ज्ये. कृ. १०, बुध	29 मई	उ.भा.	मु. 15/21 बाद (आवश्यके)
ज्ये. कृ. ११, गुरु	30 मई	रेव.	ल. २, ५, अभि., ६
ज्ये. कृ. १२,शुक्र	31 मई	अश्वि	ल. २, ५, अभि., ६
*ज्ये. शु. ३, गुरु	6 जून	पुन.	ल. २, मु. 9/55 तक (राहु-युति परिहार)
*ज्ये. शु. ५,शुक्र	7 जून	पुष्य	मु. 7/38 बाद, 7/43 तक गुरुपादवेधऽभाव,ल.५,अभि.
ज्ये. शु. १०, बुध	12 जून	ह/चि	ल. २,५ (मु. 6/06 बाद)
ज्ये. शु. ११, गुरु	13 जून	चि/स्वा	मु. 6/38 बाद, भद्रा परिहार ल. २, ५, अभि., ६
*आषा.कृ.५,शनि	22 जून●	धनि.	ल. ५, ६, अभिजित्
आषा. कृ.१०,गुरु	27 जून●	रे/अ	मु.5/44 बाद,ल.५,६,अभि.
आषा.कृ.१०,शुक्र	28 जून●	अश्वि.	मु. 9/12 तक
*आषा. शु. १,बुध	3 जुला●	पुन.	मु. 6/36 से 11/42 तक (चं.दा.) (राहु-युति परि.)
आषा. शु. ६, चंद्र	8 जुला●	उ.फा.	ल. ५, ६, अभिजित्
आषा. शु. १०,गुरु	11 जुला●	स्वा.	ल. ५, ६, अभिजित्, ८
आषा.शु. १२,शनि	13 जुला●	अनु.	मु. 16/27 तक, ल. ५, ६, अभि., ८
*कार्ति.कृ.५,शुक्र	18 अक्तू	रोहि.	मु. 7/29 बाद, ल. ८, अभि., ११ (सू. दा.)
*कार्ति.कृ.५,शनि	19 अक्तू	मृग.	ल. ८, अभि., ११
कार्ति.कृ.१२,शुक्र ११	25 अक्तू	उफा.	मु. 11/00 बाद, ल. अभि.,
*कार्ति.शु.३, बुध	30 अक्तू	अनु.	ल. ८, ११
कार्ति. शु.१०,बुध	6 नवं.	शत.	मु. 7/22 बाद, ल. ८, ९
कार्ति. शु.१०,गुरु	7 नवं.	शत.	मु. 8/42 तक, ल. ८
कार्ति. शु.११,शुक्र	8 नवं.	उ.भा.	मु. 12/25 बाद, ल. ११
कार्ति. शु.१२,शनि	9 नवं.	उ.भा.	मु. 10/15 तक (10/15 से 13/51 तक वज्र दोष)

पक्ष तिथि वार | तारीख | नक्षत्र | मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.) | पक्ष तिथि वार | तारीख | नक्षत्र | मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.) | पक्ष तिथि वार | तारीख | नक्षत्र | मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त विवरण (घं. मिं.)
*मार्ग.कृ. २, गुरु	14 नवं.	रोहि.	ल. ८, ९, अभि., ११
*मार्ग.कृ. ६, चंद्र	18 नवं.	पुष्य	10/41 बाद, अभि., ११ (10/41 तक शुक्रपादवेध)
मार्ग. कृ.१०,शुक्र	22 नवं.	उ.फा.	ल. ९, अभि., ११
मार्ग. कृ.१२,शनि	23 नवं.	ह/चि	ल. ९, अभि., ११, १२
मार्ग. शु. ६, चंद्र	2 दिसं.	श्र/ध.	मु. 13/37 तक, ल ९, अभि., ११
मार्ग. शु. ८, बुध	4 दिसं.	शत.	मु. 12/29 से 14/53 तक
मार्ग. शु.१०,शुक्र	6 दिसं.	उ.भा.	मु. 16/30 तक, ल. ९, ११, अभि., १२,
*मार्ग.पूर्णिमा,बुध	11 दिसं.	रोहि.	मु. 10/59 बाद, ल. ११, १२
*मार्ग.पूर्णिमा,गुरु	12 दिसं.	मृग.	ल. ९, ११, अभि., १२
(सन् 2020 ई. में)			
*माघ कृ. ५, बुध	15 जन.	उ.फा.	ल. १ (सू. दा.)
*माघ कृ. ६, गुरु	16 जन.	हस्त	ल. ११, १२, अभि., २
*माघ कृ. ८,शुक्र	17 जन.	चित्रा	ल. ११, १२, अभि., २
माघ कृ: ११,चन्द्र	20 जन.	अनु.	ल. ११, १२, अभि., २
*माघ शु. ३. चन्द्र	27 जन.	शत.	ल. ११, १२, अभि., २
*माघ शु. ५, बुध	29 जन.	उ.भा.	मु. 12/13 बाद, ल. २, ३
*माघ शु. ५, गुरु	30 जन.	उ.भा.	ल. ११, १२, अभि., २
माघ शुक्ल६,शुक्र	31 जन.	रेव.	ल. ११, १२, अभि., २
माघ शुक्ल७,शनि	1 फर.	अश्वि	ल. ११, १२, अभि., २
*फा. शु. ३, बुध	26 फर.	उ.भा.	ल. १२, २, ३
*फा. शु. ५,शुक्र	28 फर.	अश्वि	ल. १२, २, अभि., ३ (मु. 15/17 तक)
*चैत्र कृ. २, बुध	11 मार्च	हस्त	ल. २, ३

नोट– *तारांकित मुहूर्त्तों में केवल कलश-चक्र शुद्धि नहीं है। शेष सभी मुहूर्त्त दोषों से मुक्त (शुद्ध) हैं।

पुराने गृह में प्रवेश मुहूर्त्त-सं. २०७६ वि.

विशेष विवरण पृष्ठ 184 पर देखें।

गुरु-शुक्र-अस्त-काल में (आवश्यक परिस्थितिवश)

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त विवरण (घं. मिं.)
श्राव. कृ. ५, चंद्र	22 जुला	उ.भा.	मु. 10/25 बाद, ल. ६ (10/25 बाद), ८
श्राव. कृ. ७, बुध	24 जुला	रे/अ	ल. ५ (चं. दा.), ६, अभि., ८
श्राव. कृ. ८, गुरु	25 जुला	अश्वि.	मु. 9:00 बजे तक, 9:00 से 11/00 तक शूलदोष पुन: 11/00 बजे बाद
श्राव. कृ. १२,चंद्र	29 जुला	मृग.	मु. 8/01 बाद, ल. ५ (8/01 बाद), ६, अभि.
श्राव. शु. ५, चंद्र	5 अग.	हस्त	ल. ५, ६ (चं. दा.), अभि., ८
श्राव. शु. ७, बुध	7 अग.	स्वा.	ल. ५, ६, ८
श्राव. शु.१०,शुक्र	9 अग.	अनु.	मु. 10/01 बाद, ल. ६ (10/01 बाद), अभि., ८
पौष कृ. २, शनि	14 दिसं.	पुन.	ल. ९, ११, अभि.

विपणि (दुकानादि) अर्थात् व्यवसाय शुरु करने के मुहूर्त्त-वि. संवत् २०७६ (2019-20 ई.)

व्यवसाय में दुकान, कार्यालय, फैक्ट्री आदि शुरु करने के मुहूर्त्त के समय किसी कर्मकाण्डी ब्राह्मण द्वारा सर्वदेव, नवग्रह पूजन के पश्चात् दृढ़ कलश-स्थापन एवं कन्या-पूजन आदि के पश्चात् ब्राह्मणों, आश्रित एवं सहयोगीजनों को यथाशक्ति भोजन आदि करवाना चाहिए। विशाल-पैमाने पर व्यापार करने के लिए केवल बु.गु. एवं शुक्रवारों को ही ग्रहण करना चाहिए।

नोट–मुहूर्त्त वाले दिन अपनी राशि से चन्द्र 4, 8, 12वें हो, तो वह दिन त्याग दें। वार-स्वामी भी उदित होना चाहिए।

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
चैत्र शु. १३, बुध	17 अप्रै.	उ.फा.	ल. २, ४, ५
चैत्र पूर्णिमा, शुक्र	19 अप्रै.	चित्रा	ल. २ (चं.दा.), ४, अभि., ५
वैशा. कृ. ३, चंद्र	22 अप्रै.	अनु.	मु. 11/25 तक
वैशा. शु. ६, शुक्र	10 मई	पुष्य	14/21 से 16/33 तक
वैशा. शु. ७, शनि	11 मई	पुष्य	ल. ४, अभि., ५ (13/13 तक) (गुरु पादवेधऽभाव)
वैशा. शु. १२,गुरु	16 मई	ह/चि	ल. २, ४, अभि., ५ (सू.दा.)
ज्ये. कृष्ण १, रवि	19 मई	अनु.	ल. २, ४, अभि., ५
ज्ये. कृष्ण ५, गुरु	23 मई	उ.षा.	ल. २, ४, अभि., ५
ज्ये. कृ. १०, बुध	29 मई	उ.भा.	मु. 15/21 बाद (बु. दा.) बुधास्त
ज्ये. कृ. ११, गुरु	30 मई	रेव.	ल. २, ४, ५, अभि., ६
ज्ये. कृ. १२,शुक्र	31 मई	अश्वि	ल. २, ४, ५, अभि., ६
ज्ये. शुक्ल ५,शुक्र	7 जून	पुष्य	मु. 7/38 बाद, 7/43 तक गुरु पादवेध, ल. ४, ५, अभि.
ज्ये. शु. १०, बुध	12 जून	ह/चि	ल. २, ४, ५, (मु. 6/06 बाद)
ज्ये. शु. ११, गुरु	13 जून	चित्रा	मु. 10/55 तक, ल. २, ४, ५ (10/55 तक)
आषा. कृ.१०,गुरु	27 जून	रे/अ	5:44 बाद, ल. ५, ६, अभि., ८
आषा. कृ.१०,शुक्र	28 जून	अश्वि	मु. 9/12 तक
आषा. शु. ६, चंद्र	8 जुला	उ.फा.	ल. ५, ६, अभि., मु. 15/27 तक
आषा.शु. ११,शुक्र	12 जुला	अनु.	मु. 15/57 बाद
आषा. शु.१२,शनि	13 जुला	अनु.	ल. ५, ६, अभि., ८ (मं.दा.)
आश्वि. शु. ५, गुरु	3 अक्तू	अनु.	मु. 12/10 तक, ल. ८ (मं.दा.)
आश्वि पूर्णिमा,रवि	13 अक्तू	रेव.	मु. 13/38 बाद
कार्ति. कृ. १, चंद्र	14 अक्तू	रे/अ	ल. ८ (मं. दा.)
कार्ति. कृ. ५,शुक्र	18 अक्तू	रोहि.	ल. ८ (मं. दा.), अभिजित्
कार्ति. कृ. ५,शनि	19 अक्तू	मृग.	ल. ८ (चं. मं. दा.), अभि.
कार्ति.कृ.१२,शुक्र	25 अक्तू	उ.फा.	मु. 11/00 बाद,
कार्ति. शु. ३, बुध	30 अक्तू	अनु.	ल. ८ (मं. दा.)
कार्ति. शु.११,शुक्र	8 नवं.	उ.भा.	मु. 12/25 बाद (बु. दा.)
कार्ति. शु.१२,शनि	9 नवं.	उ.भा.	मुहू. 10/15 तक, 10/15 से 13/51 तक वज्रदोष
कार्ति. शु.१३,रवि	10 नवं.	रेव.	ल. ८ (मं. दा.), ९, अभि.
मार्ग. कृ. २, गुरु	14 नवं.	रोहि.	ल. ८ (मं. दा.), अभिजित्
मार्ग. कृ. ६, चंद्र	18 नवं.	पुष्य	मु. 10:41 बाद, ल. ९, अभि., १२
मार्ग. कृ.१०,शुक्र	22 नवं.	उ.फा.	ल. ८ (मं.दा.), ९, अभि., १२
मार्ग. कृ. १२,शनि	23 नवं.	ह/चि	ल. ८ (मं. दा.), ९, अभि., १२
मार्ग. शु. १०,शुक्र	6 दिसं.	उ.भा.	मु. 16/30 तक, ल. ९, १०, अभि.,
मार्ग. शु. ११, रवि	8 दिसं.	अश्वि	ल. ९ (के. दा.), १०, अभि.
मार्ग. पूर्णिमा, बुध	11 दिसं.	रोहि.	मु. 10/59 बाद
मार्ग. पूर्णिमा, गुरु	12 दिसं.	मृग.	ल. ९, १०, अभिजित्

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
(सन् 2020 ई. में)			
माघ कृष्ण ५,बुध	15 जन.	उ.फा	ल. १ (बु. दा.)
माघ कृष्ण ६,गुरु	16 जन.	हस्त	ल. १२, अभिजित्, १
माघ कृष्ण ८,शुक्र	17 जन.	चित्रा	ल. १२, अभि., १, २
माघ कृ. ११, चंद्र	20 जन.	अनु.	ल. १२, अभि., २
मा.शु.४/५, बुध	29 जन.	उ.भा	मु. 12/13 बाद, ल. २, ३ (बु. दा.) (आवश्यके)
माघ शुक्ल ५,गुरु	30 जन.	उ.भा	ल. १२, अभिजित्, २
माघ शुक्ल ६,शुक्र	31 जन.	रेव.	ल. १२, १, अभि., २
माघ शुक्ल ७,शनि	1 फर.	अश्वि	ल. १२, १, अभि., २
फाल्गु. कृ. ८,रवि	16 फर.	अनु.	मु. 11/48 तक, ल. १२, १ (चं. दा.), २
फाल्गु. शु. ३,बुध	26 फर.	उ.भा	ल. १२, १, २, (बु. दा.:
फाल्गु. शु. ५,शुक्र	28 फर.	अश्वि	ल. १२, १, २, अभि. मु. 15/17 तक
फाल्गु. शु. ७, चंद्र	2 मार्च	रोहि.	मु. 13/56 बाद, ल. ३
चैत्र कृष्ण २, बुध	11 मार्च	हस्त	ल. १, २, ३

उपनयन (यज्ञोपवीत) मुहूर्त्त-सं. २०७६

विशेष विवरण आगामी पृष्ठों पर 'आवश्यक मुहूर्त्तों' में पृष्ठ नं. 179 पर देखें।

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
चैत्र शुक्ल २,रवि	7 अप्रै.	अश्वि	मु. 8/44 तक
चैत्र शुक्ल ५, बुध	10 अप्रै.	मृग.	ल. मु. 10/33 बाद, ४, ५
चैत्र शु. १३, बुध	17 अप्रै.	उ.फा	ल. १, ४, ५
वैशा. कृ. ३, चंद्र	22 अप्रै.	अनु.	मु. 11/25 तक
वैशा. शु. ३, मंग	7 मई	रोहि.	ल. २, ४, ५, अभिजित् (सामवेदि)
वैशा. शु. १२,गुरु	16 मई	ह/चि	मु. 8/16 तक
ज्ये. कृष्ण १, रवि	19 मई	अनु.	ल. २, ४, ५, अभिजित्
ज्ये. कृष्ण ५, गुरु	23 मई	उ.षा.	ल. २, ४, ५, अभिजित्
ज्ये. शुक्ल ३,गुरु	6 जून	पुन.	ल. २, ४, ५, अभि., (राहु युति परिहार)
ज्ये. शुक्ल ५,शुक्र	7 जून	पुष्य	मु. 7/38 बाद, 7/43 तक गुरुवेध, ल. २, ४, अभि.
ज्ये. शु. १०, बुध	12 जून	ह/चि	मु. 6/06 बाद, ल. २,४,५
ज्ये. शु. ११, गुरु	13 जून	चि/स्वा	मु. 6/38 बाद, भद्रा परिहार, ल. ४, ५, अभि., ६
(सन् 2020 ई. में)			
माघ शुक्ल ३,चंद्र	27 जन.	शत.	ल. ११, १२, अभि., १
माघ शुक्ल ३,मंग	28 जन.	शत.	मु. 8:22 तक (सामवेदियोंहेतु) (आवश्यके)
माघ शु.४/५,बुध	29 जन.	पू.भा.	मु. 10/46 बाद (शुक्र युति)
माघ शुक्ल ५,गुरु	30 जन.	उ.भा.	ल. ११, १२, १, अभि. (मु. 13/20 तक) वसन्त-पंचमी
माघ शु. १०, मंग.	4 फर.	रोहि.	ल. ११, १२, अभिजित् (सामवेदियों के लिए)
फाल्गु.कृष्ण ३,मंग	11 फर.	पू.फा.	ल. ११, १२, १, अभि. (सामवेदियों हेतु)
फाल्गु. शु. २, मंग	25 फर.	पू.भा.	ल. १२, १, २, अभि (सामवेदि)
फाल्गु. शु. ३, बुध	26 फर.	उ.भा.	ल. १२, १, २
फाल्गु. शु. ५,शुक्र	28 फर.	अश्वि	ल. १२, १, अभि. (15/17 तक)
चैत्र कृष्ण २, बुध	11 मार्च	हस्त	ल. १२, १

मुहूर्त्त मुकलावा (द्विरागमन)-सं. २०७६

विवाह के दिन से 16 दिन के भीतर ही द्विरागमन हो, तो निर्धारित मुहूर्त्तों के बिना भी वधू प्रवेश या द्विरागमन करवाना शुभ होता है। इसके अतिरिक्त, नवविवाहिता स्त्री को विवाह के बाद द्विरागमन अथवा यात्रा में सम्मुख शुक्र एवं दक्षिण शुक्र का भी विचार किया जाता है-आजकल कुछ ज्योतिषी परिस्थितिवश एवं लोकाचार स्वरूप रवि एवं शनिवार भी ग्रहण करने लगे हैं। द्विरागमन में शुक्ल पक्ष विशेष प्रशस्त होता है।

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
चैत्र शुक्ल१३,बुध	17 अप्रै.	उ.फा.	ल. २, अभि., ५
चैत्र पूर्णिमा, शुक्र	19 अप्रै.	चित्रा	मु. 11/32 तक, ल. २
वैशा. कृष्ण३ ,चंद्र	22 अप्रै.	अनु.	मु. 11/25 तक
वैशा. कृ. १०,चंद्र	29 अप्रै.	शत.	मु. 8/09 से 8/49 तक
वैशा. शुक्ल २,चंद्र	6 मई	रोहि.	मु. 16/37 बाद
वैशा. शुक्ल ५,गुरु	9 मई	पुन.	मु. 15/17 बाद (राहुयुति परि.)
वैशा. शु. ६, शुक्र	10 मई	पुन.	मु. 8/36 तक, ल. २
मार्ग कृष्ण ६, चंद्र	18 नवं.	पुष्य	10/41 तक शुक्रपादवेध, मु. अभिजित्, ल. १२
मार्ग. कृ. १०,शुक्र	22 नवं.	उ.फा.	ल. ९, अभि., १२
मार्ग. शुक्ल१ ,बुध	27 नवं.	अनु.	मु. 8/12 तक
मार्ग. शुक्ल२ ,गुरु	28 नवं.	मूल	मु. 7/34 बाद, ल. ९, अभि., १२
मार्ग. शुक्ल ६, चंद्र	2 दिसं.	श्र/ध	ल. ९, अभि., १२
मार्ग शु. १०,शुक्र	6 दिसं.	उ.भा.	मु. 16/30 तक, ल. ९, अभि., १२
मार्ग. पूर्णिमा, बुध	11 दिसं.	रोहि.	मु. 10/59 बाद, ल. १२
मार्ग. पूर्णिमा, गुरु	12 दिसं.	मृग.	ल. ९, अभि., १२
(सन् 2020 ई. में)			
फाल्गु. कृ. ६ ,शुक्र	14 फर.	स्वा.	मु. 13/06 बाद, 13/06 तक बुधपादवेध
फाल्गु. शु. १, चंद्र	24 फर.	शत.	ल. १२, अभि., २
फाल्गु. शु. ३, बुध	26 फर.	उ.भा.	ल. १२, अभि., २
फाल्गु. शु. ५,शुक्र	28 फर.	अश्वि	मु. 15/17 तक, ल. १२, अभि., २
चैत्र कृष्ण २, बुध	11 मार्च	हस्त	ल. २, ३, ५

सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त-सं. २०७६

आगे लिखे मुहूर्त्त प्रायः सभी देवी-देवताओं की मूर्त्ति स्थापना, जलाशय, तालाब, बावड़ी, कूआं आदि के निर्माण हेतु भी ग्रहणीय होंगे। सात्त्विक देवी-देवताओं की मूर्त्ति स्थापना में उत्तरायण मास तथा देवी/देवता का जयंती दिन विशेष प्रशस्त माने जाते हैं।

श्री विष्णु, राम की मूर्त्ति स्थापना में वैशाख आदि उत्तरायण मासों के अतिरिक्त अक्षय तृतीया, रामनवमी, विजयादशमी,

दीपावली आदि विशेष शुभ हैं। श्री विष्णु प्रतिमा में माघ मास वर्जित होता है। भैरव आदि तामस देवों के लिए दक्षिणायन एवं मार्गशीर्ष मास विशेष ग्राह्य हैं। श्रीकृष्ण की प्रतिमा के लिए उत्तरायण मास, भाद्र. कृष्णाष्टमी तथा मार्गशीर्ष मास शुभ माने जाते हैं।

श्री शिव मूर्त्ति, एवं शिवलिंग की प्रतिष्ठा में श्रावण एवं फाल्गुण मास की चतुर्दशी (शिवरात्रि) विशेषतया प्रशस्त है।

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
चैत्र शु. १३, बुध	17 अप्रै.	उ.फा	ल. २, ४, ५ (शिव)
चैत्र पूर्णिमा, शुक्र	19 अप्रै.	चित्रा	ल. २, ४, अभि., ५
वैशा. कृ. १, शनि	20 अप्रै.	स्वा.	ल. १, २ (चं. दा.), ४, अभिजित्, ५
वैशा. कृ. ३, चंद्र	22 अप्रै.	अनु.	मु. 11/25 तक, ल. १, ३ (गौरी)
वैशा. कृ. ८, शनि	27 अप्रै.	श्रव.	ल. २, ४, अभि., ५, शिव, दुर्गा
वैशा. शु. ६, शुक्र	10 मई	पुन.	मु. 8/36 तक (राहु युति परि.)
वैशा. शु. ७, शनि	11 मई	पुष्य	मु. 13/13 तक, ल. २, ४, अभि., ५ (सूर्य, राम)
वैशा. शु. १२, गुरु	16 मई	ह./चि	ल. ४, ५, अभि. (लक्ष्मीनारायण)
ज्ये. कृष्ण १, रवि	19 मई	अनु.	ल. ४, ५, अभिजित्
ज्ये. कृष्ण ५, गुरु	23 मई	उ.षा.	ल. २, ४, ५, अभि., कृष्ण-राधा
ज्ये. कृष्ण६, शनि	25 मई	श्र/ध	ल. २, ४, ५, अभि. (कार्तिकेय), (शिवशक्ति)
ज्ये. कृष्ण ७, रवि	26 मई	धनि.	मु. 11/58 तक (सूर्य)
ज्ये. कृ. ११, गुरु	30 मई	रेव.	ल. २, ४, ५, अभि.
ज्ये. कृ. १२, शुक्र	31 मई	अश्वि	ल. २, ४, ५, अभि., श्रीविष्णु
ज्ये. शुक्ल ३, गुरु	6 जून	पुन.	मु. 9/55 तक (गौरी)
ज्ये. शुक्ल ५, शुक्र	7 जून	पुष्य	मु. 7/38 बाद, 7/43 तक गुरुपादवेध, ल. ४, ५, अभि.
ज्ये. शु. १०, बुध	12 जून	ह./चि	मु. 6/06 बाद
ज्ये. शु. ११, गुरु	13 जून	चि/स्वा	मु. 6/38 बाद, भद्रा परिहार ल. ४, ५, अभि. (श्रीविष्णु)
आषा. कृ. ५, शनि	22 जून	धनि.	ल. ४, ५, अभिजित्
आषा. कृ. ६, रवि	23 जून	शत.	ल. ४, ५, अभिजित्
आ. कृ. १०, गुरु	27 जून	रे/अ	मु. 5/44 बाद, ल. ५, अभि.
आ. कृ. १०, शुक्र	28 जून	अश्वि	मु. 9/12 तक
आषा. शु. ६, चंद्र	8 जुला	उ.फा	ल. ५, ६, अभि.
आ. शु. १०, गुरु	11 जुला	स्वा.	ल. ५, ६, अभि.
आ. शु. १२, शनि	13 जुला	अनु.	ल. ५, ६, अभिजित्
(सन् 2020 ई. में)			
माघ कृष्ण ५, बुध	15 जन.	उ.फा	ल. १ (सू. मं. दा.)
माघ कृष्ण ६, गुरु	16 जन.	हस्त	ल. ११, १२, अभि.
माघ कृष्ण ८, शुक्र	17 जन.	चित्रा	ल. ११, १२, अभि. १
माघ कृ. ११, चंद्र	20 जन.	अनु.	ल. ११, १२, अभि.
माघ शुक्ल ३, चंद्र	27 जन.	शत.	ल. ११, १२, १, अभि.
माघ शुक्ल ६, शुक्र	31 जन.	रेव.	ल. ११, १२, १
माघ शुक्ल ७, शनि	1 फर.	अश्वि	ल. ११, १२, १, अभि.
फाल्गु. कृ. ८, रवि	16 फर.	अनु.	मु. 11/48 तक,
फाल्गु. शु. १, चंद्र	24 फर.	शत.	ल. १२, १, २
फाल्गु. शु. ३ बुध	26 फर.	उ.भा	ल. १२, १, २
फाल्गु. शु. ५, शुक्र	28 फर.	अश्वि	ल. १२, १, २
चैत्र कृष्ण २, बुध	11 मार्च	हस्त	ल. १, २, ३

श्रीदुर्गा/गौरी देवी प्रतिष्ठा मुहूर्त्त २०७६

(आगे लिखे मुहूर्त्त समस्त देवियों की प्रतिष्ठा के लिए शुभ होंगे। परन्तु श्रीगौरी की प्रतिष्ठा के मुहूर्त्त के लिए शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथियां विशेष रूप से शुभ एवं प्रशस्त होंगी।

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
चैत्र पूर्णिमा, शुक्र	19 अप्रै.	चित्रा	ल. २, ४, अभि.
वैशा. कृ. १, शनि	20 अप्रै.	स्वा.	ल. २, अभिजित्
वैशा. कृ. ३, चंद्र	22 अप्रै.	अनु.	मु. 11/25 तक, ल. २
वैशा. कृ. ८, शनि	27 अप्रै.	श्रव.	ल. २, ४, अभि.,
वैशा. शु. २, चंद्र	6 मई	कृति.	ल. २, ४
वैशा. शु. ७, शनि	11 मई	पुष्य	ल. २, ४, मु. 13/13 तक
वैशा. शु. १२, गुरु	16 मई	चित्रा	मु. 5/42 बाद, ल. २, ४, ५
ज्ये. कृष्ण १, रवि	19 मई	अनु.	ल. २, ४, अभि.
ज्ये. कृष्ण २, चंद्र	20 मई	ज्ये.	ल. २, ४, अभि.
ज्ये. कृष्ण ६, शनि	25 मई	धनि.	ल. २, ४, अभि., ५
ज्ये. शुक्ल ५, शुक्र	7 जून	पुष्य	मु. 7/43 बाद,
ज्ये. शुक्ल ९, मंग	11 जून	उ.फा.	मु. 8/46 तक
ज्ये. शु. ११, गुरु	13 जून	चित्रा	ल. २, ४, ५, अभि.
आषा. शु. ९, बुध	10 जुला	चित्रा	ल. ४, ५, ६
आषा. शु. १०, गुरु	11 जुला	स्वा.	ल. ४, ५, ६, अभि.
आ. शु. १२, शनि	13 जुला	अनु.	ल. ४, ५, ६, अभि.
आश्वि शु. ५, गुरु	3 अक्तू	अ/ज्ये	ल. ८, अभि.
आश्वि शु. ६, शुक्र	4 अक्तू	ज्ये.	ल. ८, अभि.
आश्वि शु. ७, शनि	5 अक्तू	मूल	ल. ८, अभि.
कार्ति. कृ. ५, शुक्र	18 अक्तू	रोहि.	मु. 7/29 बाद,
कार्ति. कृ. ९, मंग	22 अक्तू	पुष्य	ल. ८, अभिजित्
कार्ति. शु. ३, बुध	30 अक्तू	अनु.	ल. ८ (बु. दा.)
कार्ति. शु. ५, शुक्र	1 नवं.	मूल	ल. ८, अभि.
मार्ग. कृ. २, गुरु	14 नवं.	रोहि.	ल. ८, ९
मार्ग. शु. २, गुरु	28 नवं.	ज्ये/मू	ल. ९, अभि. (शु. दा.)
मार्ग. शु. ६, चंद्र	2 दिसं.	श्रव.	ल. ९, १०
मार्ग. पूर्णिमा, गुरु	12 दिसं.	मृग.	ल. ९, १०, अभि.
(सन् 2020 ई. में)			
माघ कृष्ण ८, शुक्र	17 जन.	चित्रा	ल. ११, १२
माघ कृष्ण ९, शनि	18 जन.	स्वा.	ल. ११, १२ (मु. 12/25 तक)
माघ कृ. ११, चंद्र	20 जन.	अनु.	ल. ११, १२, अभि.
माघ शुक्ल ९, चंद्र	3 फर.	कृति.	ल. ११, १२, अभि.
फाल्गु. कृ. ८, रवि	16 फर.	अनु.	ल. १२, २, मु. 11/48 तक
फाल्गु. कृ. ९, चंद्र	17 फर.	ज्ये.	ल. १२, २, अभि.
फाल्गु. शु. ६, रवि	1 मार्च	कृति.	मु. 12/35 तक

भगवान् शिव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त सं. २०७६

शिव प्रतिमा/शिवलिङ्ग प्रतिष्ठा हेतु निम्न मुहूर्तों में आगे दिए गए 'शिववास चक्र' का भी प्रयोग करें तो विशेष शुभ होगा। शिव प्रतिष्ठा हेतु उत्तरायण मास, मिथुन लग्न व आर्द्रा नक्षत्र विशेष प्रशस्त एवं ग्राह्य माने गए हैं। शिव प्रतिष्ठा में श्रावण व मार्गशीर्ष मास भी ग्राह्य माने गए हैं।

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
चैत्र शु. १०, चंद्र	15 अप्रै.	मघा	ल. २, ४, अभि.
चैत्र शु. १४, गुरु	18 अप्रै.	हस्त	ल. २, ४, अभि.
वैशा. कृ. १, शनि	20 अप्रै.	स्वा.	ल. २, ५
वैशा. कृष्ण ३, चंद्र	22 अप्रै.	अनु.	ल. २, ५
वैशा. कृ. ४, मंग.	23 अप्रै.	ज्ये.	ल. २, ४, ५
वैशा. कृ. ८, शनि	27 अप्रै.	श्रव.	ल. २, ४
वैशा. शु. ३, मंग.	7 मई	रोहि.	ल. २, ४, अभि.
वैशा. शु. ७, शनि	11 मई	पुष्य	ल. २, ४, ५, अभि.
ज्ये. कृष्ण १, रवि	19 मई	अनु.	ल. ४, ५, अभि.
ज्ये. शुक्ल ३, गुरु	6 जून	पुन.	ल. २, ४ (14/51 तक)
ज्ये. शुक्ल ७, रवि	9 जून	मघा	ल. २, ५, अभि.
ज्ये. शुक्ल ८, चंद्र	10 जून	पू.फा.	ल. २, ५, अभि.
ज्ये. शु. १०, बुध	12 जून	हस्त	ल. २, ५,
ज्ये. शु. १४, रवि	16 जून	अनु/ज्ये	ल. ४, ५, अभि., ६
आषा. कृ. ५, शनि	22 जून	धनि.	ल. ४, ५, ६, अभि.
आषा. कृ. ६, रवि	23 जून	शत.	ल. ४, ५, ६, अभि.
आषा.कृ. १२, रवि	30 जून	रोहि	मु. 10/01 बाद
आषा. कृ. १४, चंद्र	1 जुला	रोहि.	ल. ४, ५, ६, अभि.
आषा. शु. ८, मंग.	9 जुला	हस्त	ल. ४, ५, ६, अभि.
आषा. शु. १०, गुरु	11 जुला	स्वा.	ल. ४, ५, ६, अभि.
मार्ग. शुक्ल २, गुरु	28 नवं.	मूल	ल. ९, अभि.
मार्ग. शुक्ल ६, चंद्र	2 दिसं.	श्र/ध.	ल. ९, अभि.
मार्ग. शु. १४, बुध	11 दिसं.	रोहि.	ल. ९, ११,
(सन् 2020 ई. में)			
माघ शुक्ल ३, चंद्र	27 जन.	शत.	ल. ११, १२, अभि.

पक्ष तिथि वार	2020 ई.	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
माघ शुक्ल ७, शनि	1 फर.	अश्वि	ल. ११, १२, अभि.
माघ शु. १२, गुरु	6 फर.	आर्द्रा	ल. ११, १२, अभि.
माघ शु. १४, शनि	8 फर.	पुष्य	ल. ११, १२, अभि.
फाल्गु. कृ. १, चंद्र	10 फर.	मघा	ल. ११, १२, 11/32 तक
फाल्गु. कृ. ८, रवि	16 फर.	अनु.	ल. १२, २, अभि.
फाल्गु.कृ.१३, शुक्र	21 फर.	श्रव.	मु. 9/13 बाद
फा. कृ. १४, शनि	22 फर.	श्र/ध	मु. 10/13 बाद
चैत्र कृष्ण २, बुध	11 मार्च	हस्त	ल. १२, २

—शिववास चक्र—

शिवलिङ्ग एवं शिव मूर्त्ति स्थापना एवं प्रतिष्ठार्थ

ऊपर लिखे शास्त्र-विहित मुहूर्त्तों में से विशेष मुहूर्त्त के चयन हेतु कुछ विद्वान् शिववास चक्र का भी प्रयोग करते हैं। पाठकों के लाभ हेतु शिववास चक्र दिया जा रहा हैं। इस चक्र की प्रयोग विधि इस प्रकार से है– उपरोक्त लिखी गई तिथियों में से अभीष्ट (Required) तिथि की संख्या को दोगुणा करके उसमें, पाँच जोड़ देवें, फिर कुल मान को सात से भाग कर देवें, जो शेष संख्या बचे, उसके अनुसार शिव का वास जानना। उदाहरण–मान लो हमने पंचमी तिथि के सम्बन्ध में शिववास जानना है, तो पाँच संख्या को दोगुणा करने पर दस संख्या मिली, इसमें 5 जमा करके 15 संख्या हुई, इसको 7 द्वारा भाग देने पर शेष 1 बचा, इसका फल लाभ/सुख अच्छा लिखा है। कुछ विद्वान् महामृत्युमुञ्जय आदि शैव मन्त्रानुष्ठान के पश्चात् करणीय होमादि में भी इस शिववास चक्र का विचार करते हैं।

शिववास चक्र

शेष	शिववास	फल
१	कैलाश पर	शुभ/लाभ, सुख
२	गौरी संग	शुभ-लाभ
३	बैल पर	कार्य सिद्धि
४	सभा में	कष्टकारी
५	भोजन	दुख प्रदायक
६	रमण	कष्टप्रद
(शून्य)	श्मशान	नेष्ट फल

श्रीमद्भागवत, हरिवंशपुराण, रामायणादि कथा प्रारम्भ मुहूर्त्त-वि. संवत् २०७६

वैसे तो भगवान् श्री हरि की कथा किसी भी स्थिति या समय में गाई जा सकती है, परन्तु श्रीमद्भागवत्, श्रीहरिवंश पुराण, रामायण, शिव महापुराण आदि पूज्य ग्रन्थों के पाठ का प्रारम्भ शास्त्र निर्धारित तिथि, नक्षत्र, वार, मास आदि के अनुसार किया जाए, तो विशेष अधिक पुण्यफल प्रद होता है। सुनिश्चित मुहूर्तों में भी कृष्ण पक्ष की अपेक्षा शुक्ल पक्ष श्रेष्ठतर माना गया है। श्री शिवपुराण पाठारम्भ में श्रावण, माघ व फागुन मास विशेष प्रशस्त माने जाते हैं। श्रीदेवीभागवत् वाचन हेतु श्री दुर्गा प्रतिष्ठा में लिखे मुहूर्त्त भी ग्राह्य होंगे।

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
चैत्र शु. १३, बुध	17 अप्रै.	उ.फा.	ल. २, ५
चैत्र पूर्णिमा, शुक्र	19 अप्रै.	चित्रा	ल. २, ४, ५
वैशा. कृष्ण३, चंद्र	22 अप्रै.	अनु.	मु. 11/25 तक
वैशा. कृ. १०, चंद्र	29 अप्रै.	शत.	मु. 8/09 से 8/49 तक
वैशा. शु. ६, शुक्र	10 मई	पुन.	मु. 8/36 तक (राहु युति परिहार)
वैशा. शु. १२, गुरु	16 मई	ह/चि	ल. ४, ५, अभि.
ज्ये. कृष्ण १, रवि	19 मई	अनु.	ल. २, ४, अभि., ५
ज्ये. कृष्ण ५, गुरु	23 मई	उ.षा.	ल. २, ४, अभि., ५
ज्ये. कृष्ण ७, रवि	26 मई	धनि.	मु. 11/58 तक
ज्ये. कृ. ११, गुरु	30 मई	रेव.	ल. २, ४, ५
ज्ये. कृ. १२, शुक्र	31 मई	अश्वि	ल. २, ४, ५, अभि.
ज्ये. शुक्ल ३, गुरु	6 जून	पुन.	मु. 9/55 तक
ज्ये. शुक्ल ४, शुक्र	7 जून	पुष्य	मु. 7/43 बाद
ज्ये. शु. १०, बुध	12 जून	ह/चि	मु. 6/06 बाद,
ज्ये. शु. ११, गुरु	13 जून	चि/स्वा	मु. 6/38 बाद, ल. २, ४, ५
आषा. कृ. ६, रवि	23 जून	शत.	ल. ५, ६, अभि.
आषा. कृ. ७, चंद्र	24 जून	पू.भा.	ल. ५, ६, अभि.
आषा. कृ. ९, गुरु	27 जून	रे/अ	मु. 5/44 बाद
आ. कृ. १०, शुक्र	28 जून	अश्वि	मु. 9/12 तक
आषा. शु. १, बुध	3 जुला	पुन.	मु. 6/36 से 11/42
आषा. शु. ६, चंद्र	8 जुला	उ.फा	ल. ५, ६, अभिजित्
आषा. शु. १०, गुरु	11 जुला	स्वा.	ल. ५, ६, अभि.
अश्वि. शु. ५, गुरु	3 अक्टू	अनु.	मु. 12/10 तक

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त विवरण (घं. मिं.)
कार्ति. कृ. १, चंद्र	14 अक्तू	रेव.	ल. ८, अभि. (मं. दा.)
कार्ति. कृ. ४,शुक्र	18 अक्तू	रोहि.	मु. 7/29 बाद, ल. ८
का. कृ. १२,शुक्र	25 अक्तू	पू.फा	ल. ८, अभिजित्
कार्ति. शु. ३, बुध	30 अक्तू	अनु.	ल. ८,
कार्ति. शु.१०,बुध	6 नवं.	शत.	ल. ८,
कार्ति. शु.१०,गुरु	7 नवं.	शत	मु. 8/42 तक
कार्ति. शु.१३,रवि	10 नवं.	रेव.	ल. ८, ९, अभि.
मार्ग. कृ. २, गुरु	14 नवं.	रोहि.	ल. ८ (मं. दा.), अभिजित्
मार्ग. कृ. ५, रवि	17 नवं.	पुन.	ल. ९, ११, अभि. गुरुपादवेधऽभाव
मार्ग. कृ. १०,शुक्र	22 नवं.	उ.फा	ल. ८ (मं. दा.), ९
मार्ग. शु. ६, चंद्र	2 दिसं.	श्र/ध	ल. ९, १०, मु. 13/37 तक
मार्ग. शु. १०,शुक्र	6 दिसं.	उ.भा	मु. 16/30 तक, ल. ९, १०
मार्ग. शु. ११,रवि	8 दिसं.	अश्वि.	ल. ९, १०, अभि.
मार्ग. शु. १४,बुध	11 दिसं.	रोहि.	मु. 10/59 बाद
(सन् 2020 ई. में)			
माघ कृ. ६, गुरु	16 जन.	हस्त	ल. १२
माघ कृ. ८, शुक्र	17 जन.	चित्रा	ल. १२
माघ कृ. ११, चंद्र	20 जन.	अनु.	ल. ११, १२
माघ शुक्ल ३,चंद्र	27 जन.	शत.	ल. ११, १२
माघ शुक्ल ५,गुरु	30 जन.	उ.भा.	ल. ११, १२, १
माघ शु. ६, शुक्र	31 जन.	रेव.	ल. १२, १, अभि.
फाल्गु. शु. ३,बुध	26 फर.	उ.भा.	ल. १२, १, २
फाल्गु. शु. ५,शुक्र	28 फर.	अश्वि	ल. १२, १, २
चैत्र कृष्ण २, बुध	11 मार्च	हस्त	ल. १, २, ३

श्रीगणेश प्रतिमा प्रतिष्ठा मुहूर्त वि. संवत् २०७६ (2019-20 ई.)

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त विवरण
वैशा. कृ. ४, मंग.	23 अप्रै.	ज्ये.	मु. 11/04 तक
ज्ये. कृ. ४, बुध	22 मई	पू.षा.	ल. २, ४, ५
आषा. कृ. ४,शुक्र	21 जून	श्रव.	ल. ४, ५
मार्ग. कृ. ४, शनि	16 नवं.	आर्द्रा	ल. ९, १०

वाहनादि क्रय मुहूर्त-वि. संवत् २०७६

आगे लिखे मुहूर्त्त कार, स्कूटर, साईकल, ट्रक आदि का क्रय करने के अतिरिक्त कम्प्यूटर, रेफ्रिजरेटर, जनरेटर, टैलीविजन, ज़मीन-जायदाद, बहुमूल्य आभूषण, वस्त्रादि की खरीद करने में समान रूप में उपयोगी होंगे। शनिवार वाला दिन तभी ग्रहण करें, यदि कुण्डली में शनि शुभ या योगकारक हो। वाहनादि से पूर्ण लाभ प्राप्ति एवं सुरक्षा हेतु अपने पण्डित या पुरोहित जी द्वारा वाहन पर मन्त्रपूर्वक स्वास्तिक चिन्ह रचना, श्रीगणेश अम्बिका पूजन एवं हनुमान पूजा एवं कवच/स्तोत्र पाठ करवाना शुभ होगा। पूजनोपरान्त पण्डित जी को यथाशक्ति दान-दक्षिणा देकर उनसे शुभाशीष ग्रहण करना चाहिए। वाहन क्रय करने वाले व्यक्ति का चंद्रमा भी ४, ८ या १२वें नहीं होना चाहिए।

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
चैत्र शु. १०, चंद्र	15 अप्रै.	मघा	ल. २, ४, अभि., ५ (सू.दा.)
चैत्र शु. १३, बुध	17 अप्रै.	उ.फा	ल. २, ४, ५
चैत्र पूर्णिमा, शुक्र	19 अप्रै.	चित्रा	ल. २, ४, ५, अभि.
वैशा. कृ. ३, चंद्र	22 अप्रै.	अनु.	मु. 11/25 तक
वैशा. शु. ७, शनि	11 मई	पुष्य	मु. 13/13 तक
वै. शु.९/१०, चंद्र	13 मई	पू.फा.	मु. 15/21 बाद, शुक्रवेधऽभाव
वैशा. शु. १२,गुरु	16 मई	ह/चि	ल. २, ४, अभि., ५
ज्ये. कृष्ण १, रवि	19 मई	अनु.	ल. २, ४, अभि., ५
ज्ये. कृष्ण ५, गुरु	23 मई	उ.षा.	ल. २, ४, ५, अभि.
ज्ये. कृष्ण ६,शुक्र	24 मई	श्रव.	मु. 12/07 बाद
ज्ये. कृष्ण ६,शनि	25 मई	श्र/ध	ल. २, ४, ५, अभि.
ज्ये. कृष्ण ७, रवि	26 मई	धनि.	मु. 11/58 तक
ज्ये. कृ. ११, गुरु	30 मई	रेव.	ल. २, ४, ५, अभि. ६
ज्ये. कृ. १२,शुक्र	31 मई	अश्वि	ल. २, ४, ५, अभि. ६
ज्ये. शुक्ल ३,गुरु	6 जून	पुन.	मु. 9/55 तक
ज्ये. शुक्ल ५,शुक्र	7 जून	पुष्य	मु. 7/43 बाद, ल. ४, ५
ज्ये. शु. १०, बुध	12 जून	ह/चि	मु. 6/06 बाद, ल. ४, ५
ज्ये. शु. ११, गुरु	13 जून	चि/स्वा	ल. ४, ५, अभिजित्
आषा. कृ. ५,शनि	22 जून	धनि.	ल. ५, ६, अभिजित्
आ. कृ.९/१०, गुरु	27 जून	रे/अ	मु. 5/44 बाद
आ. कृ. १०,शुक्र	28 जून	अश्वि	मु. 9/12 तक

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
आषा. शु. ६, चंद्र	8 जुला	उ.फा.	ल. ५, ६, अभिजित्
आषा. शु. १०,गुरु	11 जुला	स्वा.	ल. ५, ६, अभि., ८
आषा. शु.१२,शनि	13 जुला	अनु.	मु. 16/27 तक
आश्वि शु. ५, गुरु	3 अक्तू	अनु.	मु. 12/10 तक, ल. ८ (मं.दा.)
आश्वि शु. ७,शनि	5 अक्तू	मूल	मु. 9/51 तक
आश्वि. पूर्णिमा, रवि	13 अक्तू	रेव.	मु. 13/38 बाद
कार्ति. कृष्ण ५,शुक्र	18 अक्तू	रोहि.	मु. 7/29 बाद
कार्ति. कृ. ५,शनि	19 अक्तू	मृग.	ल. ८ (चं. मं. दा.), अभि.
कार्ति. कृ.११,गुरु	24 अक्तू	मघा	ल. ८ (मं. दा.), ९, ११
का. कृ. १२,शुक्र	25 अक्तू	पू.फा.	मु. 11/00 तक
का. कृ. १२,शुक्र	25 अक्तू	उ.फा.	11/00 बाद,
कार्ति. शु. ३, बुध	30 अक्तू	अनु.	ल. ८ (मं. दा.), ९, ११
कार्ति. शु. ५,शुक्र	1 नवं.	मूल	ल.८(मं.दा.), ९, ११, अभि.
कार्ति. शु.१०,बुध	6 नवं	शत.	मु. 7/22 बाद
का. शु. ११,शुक्र	8 नवं.	उ.भा.	मु. 12/25 बाद
मार्ग. कृ. २, गुरु	14 नवं.	रोहि.	ल. ८ (मं. दा.), अभिजित्
मार्ग. कृ. ५, रवि	17 नवं.	पुन.	ल. ९, ११, अभि.
मार्ग. कृ. ६, चंद्र	18 नवं.	पुष्य	मु. 10/41 से 17/10 तक
मार्ग. कृ.१०,शुक्र	22 नवं.	उ.फा.	ल.८(मं.दा.), ९, अभि., ११
मार्ग. कृ.१२,शनि	23 नवं.	ह/चि	ल. ८ (मं. दा.), ९, ११, १२
मार्ग. शु. २, गुरु	28 नवं.	मूल	7/34 बाद
मार्ग. शु. ६, चंद्र	2 दिसं.	श्र/ध	ल. ९, १०, अभि., 13/37 तक
मार्ग. शु.१०,शुक्र	6 दिसं.	उ.भा.	मु. 16/30 तक, ल. ९, ११
मार्ग. शु. ११, रवि	8 दिसं.	अश्वि	ल. ९, १०, अभिजित्
मार्ग. पूर्णिमा, बुध	11 दिसं.	रोहि.	मु. 10/59 बाद
मार्ग. पूर्णिमा, गुरु	12 दिसं.	मृग.	ल. ९, ११, अभि., १२
(सन् 2020 ई. में)			
माघ शु. ६, शुक्र	31 जन.	रेव.	ल. ११, १२, अभि., २
माघ शु. ७, शनि	1 फर.	अश्वि	ल. ११, १२, अभि., २
फाल्गु. कृ. १,चंद्र	10 फर.	मघा	मु. 11/32 तक
फाल्गु. शु. ३,बुध	26 फर.	उ.भा.	ल. १२, १, २
फाल्गु. शु. ५,शुक्र	28 फर.	अश्वि	ल. १२, १, २, अभि.
फाल्गु. शु. ७,चंद्र	2 मार्च	रोहि.	मु. 13/56 बाद
चैत्र कृष्ण २, बुध	11 मार्च	हस्त	ल. १, २, ३

श्रीमहालक्ष्मी पूजन (दीपावली) के शुभकाल (मुहूर्त्त) (27 अक्तूबर, रविवार, सन् 2019 ई.)

श्रीमहालक्ष्मी पूजन एवं दीपावली का महापर्व कार्तिक कृष्ण अमावस में प्रदोषकाल एवं अर्द्धरात्रि-व्यापिनी हो, तो विशेष रूप से शुभ होती है।

कार्तिकस्यासिते पक्षे लक्ष्मीर्निद्रां विमुञ्चति।
स च दीपावली प्रोक्ता: सर्वकल्याणरूपिणी।। *(ज्योतिर्निबन्ध)*

भविष्यपुराण में भी लक्ष्मीपूजन, के लिए प्रदोषकाल विशेषतया प्रशस्त माना गया है–

कार्तिके प्रदोषे तु विशेषेण अमावस्या निशावर्धके।
तस्यां सम्पूज्येत् देवीं भोगमोक्ष प्रदायिनीम्।।

प्रस्तुत वर्ष कार्तिक कृष्ण पक्ष की अमावस का संयोग दो दिन हो रहा है। ता. 27 अक्तू., 2019 ई., रविवार को चतुर्दशी दुपैहर 12घं–23मिं. तक है, तत्पश्चात् अमावस मध्याह्न, अपराह्न, सायाह्न, प्रदोष, निशीथ, महानिशीथ-व्यापिनी होगी। अत: दीपावली पर्व 27 अक्तूबर, रविवार, 2019 ई. को ही होगा। 28 अक्तूबर, सोमवार को कार्तिक अमावस प्रात: 9घं–09मिं. तक रहेगी। उसके पश्चात् प्रतिपदा (रात्रि-पर्यन्त) होने से अन्नकूट व गोवर्धन पूजा का पर्व 28 अक्तू., सोमवार को प्रशस्त होगा।

दीपावली पर्व में सायं सूर्यास्त (प्रदोषकाल आरम्भ) के बाद मेष/वृष लग्न एवं चित्रा नक्षत्र विद्यमान होने से यह समयावधि श्रीगणेश, श्रीमहालक्ष्मी पूजन आदि कृत्यों के आरम्भ के लिए विशेष प्रशस्त रहेगी।

दीपावली के दिन अपने निवास स्थान में प्रदोषकाल से महालक्ष्मी पूजन प्रारम्भ करके अर्धरात्रि तक जप-अनुष्ठानादि करने का विशेष माहात्म्य होता है। प्रदोषकाल से कुछ समय पूर्व स्नानादि उपरान्त धर्मस्थल पर मन्त्रपूर्वक दीपदान करके अपने निवास स्थान पर श्रीगणेश सहित महालक्ष्मी, कुबेर पूजनादि करके अल्पाहार करना चाहिए। तदुपरान्त यथोपलब्ध निशीथादि शुभ मुहूर्त्तों में मन्त्र-जप, यन्त्र-सिद्धि आदि अनुष्ठान सम्पादित करने चाहिए।

दीपावली वास्तव में पाँच पर्वों का महोत्सव माना जाता है, जिसकी व्याप्ति कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी (धनतेरस) से कार्तिक शुक्ल द्वितीया (भाई-दूज) तक रहती है। दीपावली के पर्व पर धन की प्रभूत प्राप्ति के लिए धन की अधिष्ठात्री धनदा भगवती लक्ष्मी का समारोहपूर्वक आवाहन, षोडशोपचार सहित पूजा की जाती है। आगे दिए गए निर्दिष्ट शुभ कालों में किसी स्वच्छ एवं पवित्र स्थान पर आटा, हल्दी, अक्षत एवं पुष्पादि से अष्टदल कमल बनाकर श्रीलक्ष्मी का आवाहन एवं स्थापना करके देवों की विधिवत पूजार्चना करनी चाहिए।

आवाहन मन्त्र–'**कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।**
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोप ह्वये श्रियम्।।' (श्रीसूक्तम्)

पूजा मन्त्र–'ॐ गं गणपतये नम:।। लक्ष्म्यै नम:।। नमस्ते सर्वदेवानां वरदासि हरे: प्रिया। या गतिस्त्वत्प्रपन्नानां सा मे भूयात्त्वदर्चनात्।।' से लक्ष्मी की, 'एरावतसमारूढो वज्रहस्तो महाबल:। शतयज्ञाधिपो देवस्तस्मा इन्द्राय ते नम:।' मन्त्र से इन्द्र की और कुबेर की निम्न मन्त्र से पूजा करें– '**कुबेराय नम:, धनदाय नमस्तुभ्यं निधिपद्माधिपाय च।**
भवन्तु त्वत्प्रसादान्मे धनधान्यादि सम्पद:।।'

पूजन सामग्री में विभिन्न प्रकार की मिठाई, फल-पुष्पाक्षत, धूप, दीपादि सुगन्धित वस्तुएँ सम्मिलित करनी चाहिए। दीपावली पूजन में प्रदोष, निशीथ एवं महानिशीथ काल के अतिरिक्त चौघड़ियाँ मुहूर्त भी पूजन, बही-खाता पूजन, कुबेर-पूजा, जपादि अनुष्ठान की दृष्टि से विशेष प्रशस्त माने जाते हैं–

27 अक्तूबर, 2019 ई. के चौघड़िया मुहूर्त्त

दिन की चौघड़ियां (घं.मिं.)		रात्रि की चौघड़ियां (घं.-मिं.)	
उद्वेग	6:43 से 8:05 तक	शुभ	17:40 से 19:18 तक
चर	8:05 से 9:27 तक	अमृत	19:18 से 20:56 तक
लाभ	9:27 से 10:50 तक	चर	20:56 से 22:34 तक
अमृत	10:50 से 12:12 तक	रोग	22:34 से 24:12 तक
काल	12:12 से 13:34 तक	काल	24:12 से 25:50 तक
शुभ	13:34 से 14:56 तक	लाभ	25:50 से 27:28 तक
रोग	14:56 से 16:18 तक	उद्वेग	27:28 से 29:06 तक
उद्वेग	16:18 से 17:40 तक	शुभ	29:06 से 30:43 तक

नोट–(1) चर, लाभ, अमृत और शुभ की चौघड़ियां ग्राह्य होती हैं।

(2) 25 बजे का अर्थ अर्द्धरात्रि 1 बजे से है तथा 30 बजे का अर्थ आगामी दिन प्रात: 6 बजे से है।

(3) यहाँ चौघड़ियां मुहूर्त 27 अक्तू., 2019 ई. को जालन्धर के दिनमान व रात्रिमान के अनुसार है। अपने स्थानीय नगर के चौघड़ियां मुहूर्त्त के लिए इसी पंचांग में दी गई मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी में से स्थानीय सूर्योदयास्त निकालकर इसी पंचांग के पृष्ठ नं. 271 का अवलोकन कर चौघड़ियां मुहूर्त्त निकालें।

प्रदोष काल–27 अक्तू., 2019 ई, को जालन्धर एवं निकटवर्त्ती नगरों में सूर्यास्त (17घं.–40मिं.) से लेकर 2घं.–36मिं. पर्यन्त 20घं.–16मिं. तक प्रदोषकाल व्याप्त रहेगा। (प्रत्येक नगर के रात्रिमान अनुसार प्रदोषकाल निर्धारित करें (देखें पृष्ठ नं. 43 इसी पंचांग में)

सायं 18घं.–42मिं. तक मेष (चर) लग्न तथा सायं 18घं.–42मिं. से 20घं.–37मिं. तक वृष (स्थिर) लग्न विशेष प्रशस्त होगा। प्रदोषकाल में मेष व वृष लग्न, चित्रा नक्षत्र, तुलास्थ चन्द्र तथा सम्पूर्ण प्रदोषकाल में 'शुभ' तथा 'अमृत' की चौघड़ियां रहने से इस योग (काल) में दीपदान, श्रीगणेश-लक्ष्मी-कुबेर आदि सम्पूर्ण दीपावली पूजन शीघ्र से शीघ्र प्रारम्भ कर लेना चाहिए तथा प्रयास करना चाहिए 20घं.–56मिं. अर्थात् 9 बजे तक मुख्य पूजन समाप्त हो जाए। इसीकाल में ब्राह्मणों तथा आश्रितों को भेंट, मिष्ठान्नादि बाँटना शुभ होगा।

निशीथ काल–27 अक्तूबर, 2019 ई. को जालन्धर व समीपस्थ नगरों में निशीथकाल रात्रि 20घं.–16मिं. से 22घं.–52मिं. तक रहेगा। निशीथ-काल में 'चर' की चौघड़ियां 29घं.–56मिं. से 22घं.–34मिं. तक रहेगी। इस समयावधि में मिथुन लग्न मध्यमफली रहेगा।

अत: प्रयास करना चाहिए कि प्रदोषकाल में आरम्भ किया हुआ पूजन रात्रि 22घं.–34मिं. तक समाप्त हो जाए, अन्यथा 22घं.–34मिं. से 24घं.–12मिं. तक रोग की चौघड़ियां रहेंगी। इस अवधि में महालक्ष्मी पूजन समाप्त कर श्रीसूक्त, कनकधारा स्तोत्र तथा लक्ष्मी स्तोत्रादि मन्त्रों का जपानुष्ठान करना चाहिए।

महानिशीथ काल–रात्रि 22घं.–52मिं. से 25घं.–28मिं. तक महानिशीथ काल रहेगा। इस समयावधि में 'रोग' एवं 'काल' की चौघड़ियां अशुभ हैं। परन्तु 22घं.–51मिं. से 25घं.–14मिं. तक 'कर्क' (चर) लग्न तथा तदुपरान्त 'सिंह' लग्न विशेष रूप से शुभ हैं।

अत: अशुभ चौघड़ियां की परवाह न करते हुए तथा कोई भी अभीष्ट पाठ प्रदोष-काल या निशीथकाल में प्रारम्भ करके इस महानिशीथ-काल में सम्पन्न करें। इसी अवधि में काली-उपासना, तन्त्रादि क्रियाएं, विशेष काम्य प्रयोग, तन्त्र अनुष्ठान, साधनाएं एवं यज्ञादि किए जाते हैं।

नोट–अपने स्थानीय नगर में महालक्ष्मी पूजन एवं साधना के लिए प्रशस्त मेष, वृष एवं कर्क आदि लग्नों के लिए पृष्ठ 273 का अवलोकन कर निकालें। साधारण जमा/क्षण कर आप निकाल सकते हैं।

विवाहादि शुभ कार्यों में लग्न शुद्धि विचार

विवाह लग्न सम्बन्धी परिहार वाक्य

विवाहादि शुभ कार्यों में लग्न शुद्धि विचार

विवाह, मुण्डन, गृहारम्भादि शुभ कार्यों में मास, तिथि, नक्षत्र, योगादि की शुद्धि के साथ विवाह लग्न की शुद्धि को विशेष महत्त्व एवं प्रधानता दी गई है। तिथि को शरीर, चन्द्रमा को मन, योग-नक्षत्रों आदि को शरीर के अंग तथा लग्न को आत्मा माना गया है। यथा—

तिथिः शरीरं मन इन्दुवीर्यं विलग्नमात्माऽवयवास्तु-भाद्याः —ज्योर्तिनिबंध

लग्न बल के बिना जो कुछ भी शुभ कार्य किया जाता है, उसका फल वैसे ही व्यर्थ हो जाता है, जैसे ग्रीष्मकाल में बिना जल के नदी।

लग्नवीर्यं विना यत्र यत्कर्म क्रियते बुधैः।
तत्फलं विलयं याति ग्रीष्मे कुसरिता यथा॥ —ज्योति. विदरणे

सभी शुभ कार्यों में लग्न शुद्धि का विशेष महत्त्व है।

विवाह लग्न का निश्चय करना हो, तो त्रिविक्रम-संहितानुसार, लग्न स्थान में चन्द्र तथा सूर्य, शनि, मंगल, राहु, केतु आदि क्रूर ग्रह न हों, लग्न से छठे स्थान में शुक्र, चन्द्र, व लग्नेश न हो तथा आठवें स्थान में चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र व लग्नेश नहीं होने चाहिएं तथा सप्तम स्थान में कोई भी ग्रह नहीं होना चाहिए। **सातवें चन्द्र और गुरु समफल करते हैं।** अर्थात् चन्द्र, गुरु का दानादि करने से शान्ति हो जाती है।

विवाह लग्न में अशुभ एवं पूज्य ग्रह

× ×
चंद्र
शनि
शुक्र
विवाह
सभी पाप
ग्रह
× ×
राहु
मंगल
× ×
सभी ग्रह
[चं.-गु.]
(परिहार)
× ×
लग्नेश
शुक्र, चंद्र
चं. मं.
लग्नेश शुभ ग्रह

"त्याज्या लग्नेऽब्दयो मंदः षष्ठे शुक्रेन्दुलग्नपाः।
रन्ध्रे-चन्द्रादयः पंच, सर्वेऽब्जगुरु समौ॥"

परिहारस्वरूप १२वें शनि, तीसरे शुक्र, चतुर्थ में राहु, दशम भाव में मंगल का दोष यथोचित दानादि करने से शान्ति हो जाती है। 'पंचांगदिवाकर' में लगाए गए लग्न मुहूर्तों में इन तीनों भावों में शनि, शुक्र व मंगल ग्रहों की स्थिति हो वहां उचित दानादि करवा लें।

आगे षष्ठाष्टम एवं द्वादश चन्द्र, शुक्र, अष्टम भौम, लग्नस्थ एवं सप्तमस्थ चन्द्र गुरु आदि के अपवाद (परिहार) लिखे गए हैं।

विवाह में ग्राह्य शुभ लग्न—मुहूर्त ग्रन्थों के अनुसार विवाह लग्न काल में ३, ६, ८, ११वें सूर्य तथा इन्हीं स्थानों (३, ६, ११) में राहु, केतु और शनि भी शुभ होते हैं। ३, ६ और ११वें मंगल, २, ३, ११वें **चंद्रमा**, ३, ६, ७ शुभ और ८वें स्थानों को छोड़कर अन्य भावों में स्थित शुक्र शुभ होता है। ग्यारहवें भाव में सूर्य तथा केन्द्र त्रिकोण में गुरु लग्नगत अनेक दोषों का परिहार करते हैं—

लग्ने वर्गोत्तमे वेन्दौ धूनाद्ये लाभगेऽथवा।
केन्द्र कोणे गुरौ दोषा नश्यन्ति सकलाऽपि॥ मु. गणपति॥

विवाह लग्न सम्बन्धी परिहार वाक्य

जन्म राशि से अष्टमस्थ लग्न—वर कन्या की जन्म राशि या लग्न से चतुर्थ, अष्टम तथा बारहवी राशिस्थ लग्न अशुभ कहे गए हैं। यथोक्तम्—

सुखध्नं तुर्यमुद्वाहे द्वादश वित्तनाश कृत्। जन्म भात् जन्म लग्नाच्च मृत्युदंलग्नमष्टमम्॥

परन्तु परिहार स्वरूप जन्म राशि या लग्न राशि का स्वामी तथा विवाह लग्न का स्वामी ग्रह समान हो, अथवा मित्र क्षेत्री हो, अथवा अष्टमस्थ लग्न राशि का स्वामी, केन्द्र स्थित हो अथवा गुर्वादि शुभ ग्रह से वीक्षित हो तो अष्टम लग्न का दोष दूर होता है।

कर्तृरि दोष—लग्न में क्रूर ग्रह मार्गी होकर १२ भाव में तथा क्रूर (पापी) ग्रह वक्री गत होकर दूसरे भाव में हो, तो कर्तृरि दोष होता है। यह योग दारिद्रय, शोक व मृत्युतुल्य कष्टकारी होता है।

परिहार—कर्तृरि दोष कारक ग्रह नीच, शत्रु क्षेत्री, अथवा अस्तगत हो, तो इस दोष का परिहार हो जाता है। इसके अतिरिक्त गुरु, शुक्र, बुध इनमें से कोई शुभ ग्रह केन्द्र त्रिकोण में अथवा २रे या १२वें भावस्थ गुरु हो तो भी कृर्तरि दोष निवार्य हो जाता है।

अष्टमस्थ भौम का परिहार—मंगल अस्तंगत, नीच राशि का (कर्क) या शत्रु राशि (मिथुन एवं कन्या) का होकर अष्टम स्थान में हो, तो दोषकारक नहीं, परन्तु लग्नेश होकर अष्टमगत नहीं होना चाहिए। **अस्तगे नीचगे भौमे शत्रुक्षेत्रगतेऽपि वा।**
कुजाष्टमोद्भवो दोषो न किंचिदपि विद्यते॥ **कश्यप॥**

छठे, अष्टम चन्द्र का परिहार—नीच राशि, शत्रु राशि या नीच-राशिगत चन्द्रमा ६ या ८वें स्थानस्थ होना दोषपूर्ण नहीं माना गया। जैसे—वृश्चिक, मिथुन, कन्या राशि (३, ६)

नीचराशिगते चन्द्रे नीचांशगतेऽपि वा, चन्द्रे षष्ठारि—रिः फस्थे दोषो नास्ति न संशयः।

परन्तु लग्नेश होकर चन्द्र षष्ठाष्टम नहीं होना चाहिए।

लग्नस्थ चन्द्रमा यद्यपि त्याज्य माना गया है, परन्तु यदि लग्नगत चन्द्र पर गुरु की दृष्टि हो अथवा वह गुरु से युक्त हो, तो अशुभ चन्द्रमा भी शुभ हो जाता है—

"अशुभोऽपि शुभचन्द्रो, गुरुणा लोकितो युतः॥" (पीयूषधारा)

लग्नस्थ चन्द्र का परिहार—"कर्किगोस्थः पूर्णो विधुस्तनौ"

व्रतबन्धोक्त अनुसार वृष, कर्क एवं पूर्ण चन्द्रमा या शुभग्रह से दृष्ट हो लग्न में दोषकारक नहीं होता। मु. मार्तण्ड

षष्ठाष्टमस्थ शुक्रापवाद—नीच एवं शत्रु राशिगत (कर्क, सिंह या कन्या) शुक्र छठे, आठवें हो तो दोषकारक नहीं परन्तु लग्नेश होकर इन भावों में न हो। जैसे—

नीच राशिगते शुक्रे शत्रु क्षेत्रगतेऽपि वा।
भृगु षट्कोत्थितो दोषो नास्ति तत्र न संशयः॥ मुहूर्त चिं. पीयूषंधारा

सप्तम भावस्थ चन्द्र-गुरु—सप्तम भाव में यद्यपि सभी ग्रह वर्जित कहे हैं, परन्तु चन्द्र गुरु का परिहार है। **"चन्द्र चान्द्री शुक्रजीवा यामित्रे शुभकारकाः।"**

'मुहूर्तगणपति' अनुसार विवाहादि शुभ कार्य के लग्न में, केन्द्र-त्रिकोण में **गुरु, शुक्र** एवं बुध एवं ग्यारहवें भाव में चन्द्र या सूर्य अथवा सप्तमेश हो, तो अनेक दोषों का नाश हो जाता है।

वेध दोष परिहार—पंचशलाका चक्रानुसार विवाह नक्षत्र का क्रूर ग्रह द्वारा वेध हो जाने

पर विवाहित नक्षत्र सर्वथा त्याज्य माना जाता है। परन्तु गुरु, बुध आदि सौम्य ग्रहों का चरण वेध (१ एवं ४थे चरण के मध्य तथा २ रे व ३ रे चरण ही अशुभ माना है। —ज्योतिर्निबन्ध

युतिदोष परिहार—पाप एवं क्रूर ग्रह की युति त्याज्य मानी जाती है। परन्तु यदि चन्द्रमा उच्चस्थ, स्वक्षेत्री या मित्रक्षेत्री (वृष, कर्क, मिथुन, सिंह एवं कन्या) राशि का हो तो युतिदोष अविचारणीय होता है। यथा—

स्वक्षेत्रय: स्वोच्चगो व मित्रक्षेत्रगतो विधु:।
युति दोषाय न भवेत् दम्पत्यो: श्रेयसेतदा॥ (नारद:)

(१०) **दग्धा तिथि परिहार**—विवाह लग्न समय केन्द्र-त्रिकोण गत गुरु हो एवं एकादश (११वां) भाव शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो, तो दग्धातिथि का दोष नहीं रहता।—मु० गणपति

पंचांगदिवाकर में शुभ विवाह मुहूर्त्तों में जहाँ कहीं अशुभ योग का स्पर्श हुआ है, वहां विशेष दोषपूर्ण घड़ियों को विचार करके ही वि. मुहूर्त लगाए गए हैं।

कश्यप ऋषि अनुसार लग्न से केन्द्र, त्रिकोण में गुरू, शुक्र या बुधादि सौम्य ग्रह हो, तो समस्त दोषों का ऐसे परिहार हो जाता है, जैसे भगवान् विष्णु को मात्र स्मरण करने से पापों का नाश हो जाता है

काव्यो गुरु र्वा सौम्यो वा यदा केन्द्र त्रिकोणगा:।
नाशयन्ति अखिलान् दोषान् पापानि व हरिस्मृति:॥ (कश्यप)

भद्रा का शुभाशुभ विचार

भद्राकाल में विवाह, मुण्डन, गृहारम्भ, गृहप्रवेश, रक्षा बन्धन आदि मांगलिक कृत्यों का निषेध माना जाता है, परन्तु भद्रा काल में शत्रु का उच्चाटन करना, स्त्री प्रसंग में, यज्ञ करना, स्नान करना, अस्त्र-शस्त्र का प्रयोग, आप्रेशन करना, मुकद्दमा करना, अग्नि लगाना, किसी वस्तु को काटना, भैंस, घोड़ा, ऊँट सम्बन्धी कर्म प्रशस्त माने जाते हैं।

भद्रा परिहार विचार—सामान्य परिस्थितियों में विवाह आदि शुभ मुहूर्त्तों में भद्रा का त्याग ही करना चाहिए, परन्तु आवश्यक परिस्थितिवश **भूलोक की भद्रा**, तथा **भद्रा मुख** छोड़कर भद्रा पुच्छ में शुभ कृत्य किए जा सकते हैं।

कार्येत्वाश्यके विष्टेर्मुख, कण्ठहृदि मात्रं परित्येत्।

एक अन्य मतानुसार अत्यावश्यक स्थिति में रात्रि में तिथि के पूर्वार्द्ध की भद्रा, दिन में परार्ध की भद्रा ग्रहण कर सकते हैं।

तिये: पूर्वार्धजा रात्रौ दिने भद्रा परार्धजा। भद्रा दोषो न तत्र स्यात् कार्येऽत्यावश्यके सति॥

भद्रा परिहार

कुछ आवश्यक स्थितियों में भद्रा दोष का परिहार हो जाता है। यथा—

तिथि पूर्वार्धजा भद्रा दिवा भद्रा प्रकीर्तिता। तिथिरुत्तरजा भद्रा रात्रिभद्रेति कथ्यते॥
दिवा भद्रा रात्रौ रात्रिभद्रा यदा दिवा। तदाविष्टिकृतो—दोषो न, भवेत्सर्व सौख्यद:॥

अर्थात् तिथि के पूर्वार्द्ध भाग में प्रारम्भ भद्रा अर्थात् तिथि दिवस के पूर्वार्ध भाग में प्रारम्भ

(ii) **पीयूषधारानुसार**—दिन की भद्रा रात्रि को और रात्रि की भद्रा दिन को आ जाए, तो भद्रा **दोषरहित** हो जाती है।

रात्रिभद्रा यदह्नि स्याद् दिवा भद्रा यदा निशि। न तत्र भद्रादोष:, सा भद्रा—भद्र दायिनी॥

(iii) **"दिवा परार्द्धजा विष्टि:, पूर्वार्द्धोत्था निशि। तदा विष्टि: शुभायेति कमलासनभाषितम्॥"**
उत्तरार्ध की भद्रा दिन में, तथा पूर्वार्द्ध की रात्रि में शुभ होती है।

भद्रा लोक वास

मेष, वृष, मिथुन, वृश्चिक का चन्द्रमा होने से भद्रा **स्वर्ग लोक** में, कन्या, तुला, धनु, मकर का चन्द्रमा होने से **पाताल** में, कर्क, सिंह, कुम्भ व मीन राशि के चन्द्रमा में भद्रा **मर्त्यलोक (भू लोक)** में—अर्थात् **सम्मुख रहती है।** जब भद्रा **भू-लोक में (सम्मुख)** रहती है, **अशुभफल दायिनी** एवं वर्जित मानी जाती है, अन्य लोकों में हो, तो शुभ है—

स्थिताभूर्लोस्था भद्रा सदा त्याज्या स्वर्गपातालगा शुभा —(मु. मार्त्तण्ड)

लोकवास	स्वर्ग	पाताल	भू-लोक
चन्द्रराशि	१, २, ३, ८	६, ७, ९, १०	४, ५, ११, १२
भद्रा-मुख	ऊर्ध्वमुखी	अधोमुख	सम्मुख

स्वर्गे भद्रा धनं धान्यं पाताले च धनागम:। मृत्युलोके यदा भद्रा कार्य सिद्धिस्तदानहि॥

(iv) शुक्ल पक्ष की भद्रा का नाम **वृश्चिकी** है। कृष्ण पक्ष की भद्रा का नाम **सर्पिणी** है। **मतान्तर से**, दिन की भद्रा **सर्पिणी**, रात्रि की भद्रा **वृश्चिकी** है। बिच्छू का विष डंक में तथा सर्प का विष मुख में होने के कारण **वृश्चिकी** भद्रा की पुच्छ और **सर्पिणी** भद्रा का मुख विशेषत: त्याज्य है।

(v) भद्रा दोष, मंगल-शनिवार जनित दोष, व्यतीपात, अष्टम भावस्थ एवं जन्म नक्षत्र दोष, मध्याह्न के पश्चात् शुभकारक मानी जाती है।

गोधूलि काल

विवाह मुहूर्त्तों में क्रूर ग्रह युति, वेध, मृत्युबाण आदि दोषों की शुद्धि उपरान्त यदि अभिवांछित मुहूर्त्त में शुद्ध विवाह-लग्न न निकलता हो, तो मुहूर्त्त ग्रन्थाचार्यों ने गोधूलि का लग्न ग्रहण करने की सम्मति प्रदान की है।

गोधूलि काल—जब सूर्यास्त न हुआ हो (अर्थात् सूर्यास्त होने वाला हो) और गाय आदि चौपाय अपने-अपने गृहों को लौटते हुए अपने खुरों से पथ की धूलि को आकाश में उड़ाकर जाने लगें, तो उस काल को मुहूर्तकारों ने **गोधूलि काल** का नाम प्रदान करते हुए, इसे विवाहादि सब मांगलिक कार्यों में प्रशस्त कहा है। यह लग्न, मुहूर्त्त, पात, अष्टम भाव, जामित्रादि दोषों को नष्ट प्राय कर देता है।

नो वा योगो न मृतिभवनं नैव जामित्र दोषो,
गोधूलि: सा मुनिभिरुदिता सर्वकार्येषु शस्ता॥ —मुहूर्त चिन्तामणि

जब कोई अन्य शुभ लग्न न बनता हो, और कन्या विवाह योग्य हो गई हो तो गोधूलि में विवाह शुभ होता है। ज्योतिर्निबन्धानुसार–

लग्न शुद्धिर्यदा न स्याद् यौवने समुपास्थिते, तदा वै सर्ववर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम्॥

गोधूलि लग्न काल के सम्बन्ध में विद्वानों ने मतान्तर पाए जाते हैं–

(i) पीयूषधारा के मतानुसार सूर्य के अर्ध–अस्त होने के अनन्तर २ घड़ी (४८ मिनट) का समय गोधूलि काल है।

(ii) मुहूर्त्त गणपति के अनुसार सूर्यार्ध बिम्ब के अस्त हो जाने के पूर्व एवं पश्चात् १५–१५ पल अर्थात् १२ मिनट का मध्यान्तर गोधूलि संज्ञक है।

(iii) आचार्य नारदानुसार सूर्योदय से सप्तम लग्न गोधूलि लग्न काल होता है।

चतुर्थमभिजित लग्नमुदयार्क्षात्तु सप्तमम्॥ –नारद

(iv) कुछ विद्वानों के अनुसार लग्न, सप्तम तथा अष्टम भाव में मंगल को भी वर्ज्य माना गया है। शेष भावों में अन्य किसी ग्रह का विचार गोधूलि लग्न में नहीं किया जाता।

(v) गुरुवार को सूर्यास्त के बाद तथा शनिवार को सूर्यास्त होने से पूर्व (पहले) की ही आधी घड़ी (12 मिनट) को गोधूलिकाल माना गया है, अन्यथा नहीं. (मुहूर्त्त चिन्तामणि)

––क्षौरकर्म (हजामत) के लिए शुभाशुभ दिन––

गर्गादि आचार्यों के अनुसार रविवार, मंगलवार एवं शनिवार को क्षौर (हजामत) कर्म करवाने से आयु का क्षय होता है। **सोमवार, बुधवार, गुरुवार और शुक्रवार** को क्षौर कर्म (हजामत) करवाना शुभ होता है। मतान्तर से एक पुत्र सन्तान वाले गृहस्थी को सोमवार के दिन, तथा विद्या एवं धनाकांक्षी गृहस्थी को गुरुवार के दिन क्षौर नहीं करवाना चाहिए।

इसके अतिरिक्त पर्व वाले दिन, जन्मदिन, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी (१४) आदि रिक्ता तिथियों में, व्रत के दिन, अमावस्या, पूर्णिमा, संक्रान्ति, श्राद्ध के दिन, भद्रा और व्यातिपात योग में तथा भोजन करने के बाद, देश-प्रदेश जाने के समय में शुभाकांक्षी क्षौर कर्म न करावें।

––तैलाभ्यंग–अर्थात् तैल मालिश करना––

रविवार, मंगलवार, गुरुवार तथा शुक्रवार को तैल लगाना शुभ नहीं माना जाता है। **निर्णय सिन्धु** के अनुसार रविवार तैल लगाने से ताप, मंगलवार को आयु क्षीणता, गुरुवार से धन-हानि, शुक्रवार को तैल लगाने से दुःख होता है। सोमवार, बुधवार तथा शनिवारों को तैल लगाना शुभ होता है। प्रतिदिन तैल लगाने वालों को भी दोष नहीं लगता–(**–अभ्यङ्गके चैव वासिते नैव दूषणम्॥**)

चतुर्कोणों दिशाशूल विचार

आग्नेय (पूर्व-दक्षिण) में सोम व गुरुवार, **नैऋत्य** (दक्षिण-पश्चिम) दिशा में रविवार व शुक्रवार, **वायव्य** (उत्तर-पश्चिम) में मंगलवार तथा **ईशान** (पूर्व-उत्तर) में बुध एवं शनिवार के दिन **दिशाशूल** होता है (मुहूर्त गणपति)।

दिशापति के वार अनुसार उसी दिशा की यात्रा शुभदायिनी तथा उससे पीछे (सामनेवाली) दिशा की यात्रा अनिष्टप्रदा होती है–

दिगीशाहे शुभा यात्रा पृष्ठा हे मरणं ध्रुवम् (ज्योतिस्तत्व)

परन्तु बुधवार उत्तर दिशा का स्वामी होते हुए, बुध की उत्तर में निषिद्ध माना गया है (गर्ग)

विशेष–यदि एक जगह से रवाना होकर, उसी दिन गन्तव्य स्थान पर पहुँच जाना निश्चित हो, तो ऐसी यात्रा में तिथि-वार-नक्षत्र, दिशा-शूल, प्रतिशुक, योगिनी आदि जनित दोषों का विचार नहीं करना चाहिए–यथा

"एकस्मिन्नपि दिवसे यदि चेद् गमनं प्रवेशश्च।
प्रतिशुक्रवार शूलं न चिन्तयेत् योगिनी पूर्वम्॥।"–(पीयूषधारा)

यात्रादि मुहूर्त्त विचार

किसी कार्य के उद्देश्य से देशान्तर गमन को यात्रा कहते हैं। कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा और २, ३, ५, ७, १०, ११, १३–इन तिथियों में, अश्वि., मृग. पुर्न, पुष्य, अनु, हस्त, श्रव., धनि, रेव.–इन नक्षत्रों में तथा चौर, बाण, भद्रा, वैधृति, व्यतियात और मासांत दिनादि दोष रहित समय में यात्रा करें। यात्रा करने से पूर्व क्रोध और मैथुन कर्म का त्याग करना चाहिए।

दिशाशूल

सोमवार, शनिवार को पूर्व, रविवार और शुक्रवार को पश्चिम, मंगलवार, बुधवार को उत्तर तथा गुरुवार को दक्षिण दिशा का दिशाशूल होता है, अतः उक्त वारों को उस दिशा की यात्रा नहीं करनी चाहिए। अत्यावश्यक होने पर रविवार को दलिया एवं घी खाकर, सोमवार को दर्पण देखकर या दूध पीकर, मंगलवार को गुड़ खाकर, बुधवार को धनिया या तिल खाकर, गुरुवार को दही खाकर, शुक्रवार को जौं खाकर दूध पीकर और शनिवार को अदरक या उड़द खाकर प्रस्थान किया जा सकता है।

यात्रा में सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पाँव आगे उठाकर चले, इसी तरह सवारी पर चढ़े, यात्रा सफल होगी।

चन्द्रवास ज्ञान चक्र

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
मेष	वृष	मिथुन	कर्क
सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
धनु	मकर	कुम्भ	मीन

चन्द्रवास विचार

जाने वाली दिशा में चन्द्रमा का वास सम्मुख और दाहिनी ओर को हो तो धन का लाभ और सुख होता है। यदि पीठ की ओर अथवा बाईं तरफ चन्द्रवास हो तो कष्ट और धन की हानि होती है।

सम्मुख चन्द्रमा का विशेष फल

करणदोष, नक्षत्रदोष, वारदोष, संक्रान्ति दोष, अशुभतिथिदोष, कुलिक दोष, प्रहार्द्ध वारवेला दोष, मंगल, शनि, रवि, राहु-केतु के दोष को सम्मुख चन्द्रमा दूर करता है।

'यात्रा के समय शुभ शकुन'

यात्रा के समय श्वेत पुष्पों का दर्शन श्रेष्ठ माना गया है। भरे हुए घड़े का दिखाई देना तो बहुत ही उत्तम है। दूर का कोलाहल, अकेला वृद्ध पुरुष, पशुओं में बकरे, गौ, घोड़े तथा हाथी, देवप्रतिमा, प्रज्वलित अग्नि, दूर्वा, ताज़ा गोबर, सोना, चांदी, रत्न, बच, सरसों आदि औषधियां, मूँग, छाता, पीढ़ा, राजचिह्न, जिसके पास कोई रोता न हो ऐसा शव, फल, घी, दही, दूध, अक्षत, दर्पण, मधु, शंख, ईख, शुभ सूचक वचन, भक्त पुरुषों का गाना-बजाना, मेघ की गम्भीर गर्जना, बिजली की चमक तथा मन का सन्तोष–ये सब शुभ शकुन हैं। 'चले आओ'–यह शब्द यदि सामने की ओर से सुनाई पड़े तो उत्तम है। 'जाओ'–यह शब्द यदि पीछे की ओर से हो तो उत्तम है।

विवाहादि शुभ कार्यों में शास्त्रीय विचार

विवाह में जन्म मास, नक्षत्रादि का विचार–

आद्य गर्भ, अर्थात् बड़े लड़के या बड़ी लड़की का विवाह जन्म मास, जन्म नक्षत्र, जन्म तिथि, जन्म लग्न में न करें। **"आद्य गर्भ सुत कन्ययो र्द्वयो जन्म मास भतिथौ कर ग्रहः। नोचितोऽथ विबुधैः प्रशस्यते चेद् द्वितीय जनुषोः सुतप्रदः॥ मु. चिंतामणि॥"**

परन्तु ज्येष्ठ पुत्र के बाद उत्पन्न पुत्र या कन्या का विवाह जन्म मास, नक्षत्रादि में करना प्रशस्त है। ज्येष्ठ पुत्र-कन्या के अतिरिक्त अन्य स्थितियों में जन्म-मास, जन्म राशि, नक्षत्र एवं जन्म लग्न विशेष शुभ माना है।

जन्ममासे च पुत्राढया धनाढया च धनोदये। जन्म मे जन्मराशौ च कन्या हि ध्रुव सन्तति॥

आचार्य भृगु जी के अनुसार जन्म मास, जन्म नक्षत्र एवं जन्म लग्न में विवाह होने पर दम्पत्ति के सुख एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है तथा वह धन सम्पत्ति तथा सन्तान सुख से सौभाग्यशालिनी होती है।

जन्ममासेऽथ जन्मर्क्षे जन्मलग्नेऽथ जन्मनि। उद्वाहेषु च नारीणां प्रतिष्ठा महती भवेत्। भृगुः
जन्ममासेऽथ पुत्राढ्या धनादया जन्मभोदये। जन्मभे वा भवेदूढा वृद्धा संतति वर्धिनी॥ (यवनाचार्य)

ज्येष्ठ मास में विवाह का विचार

ज्येष्ठ मास, ज्येष्ठ पुत्र और ज्येष्ठ कन्या यह तीन ज्येष्ठ विवाह संस्कार में विशेषतया वर्जित माने जाते हैं। परन्तु यदि दो ज्येष्ठ वर्तमान हों अर्थात् लड़का-लड़की दोनों ज्येष्ठ (बड़े) हों, परन्तु महीना ज्येष्ठ के अतिरिक्त हो अथवा लड़का-लड़की में से एक ज्येष्ठ हो और दूसरा अनुज हो, तो ज्येष्ठ मास में भी विवाह करना सामान्य एवं मध्यम फल होता है–

द्वौ ज्येष्ठौ मध्यमौ प्रोक्तत्वेक ज्येष्ठः शुभावहः।
ज्येष्ठ त्रयं न कर्वीत् विवाहे सर्वसम्मतम् —वाराहमिहिर॥

तथापि आवश्यक परिस्थितिवश ज्येष्ठ मास में कृतिका से सूर्य निकल जाने पर सूर्य दानादि करके विवाह करने में कोई हानि नहीं। **मुनि भारद्वाज** के मतानुसार ज्येष्ठ के महीने की भान्ति मार्गशीर्ष मास में भी अग्रज लड़का-लड़की एवं मार्ग मास-तीनों का यथासम्भव त्याग करें।

(३) **सगे भाई-बहन** के विवाह छः मास के भीतर नहीं करने चाहिएं। यदि इस बीच संवत् परिवर्तन हो जाए, तो कोई दोष नहीं (**मु. मार्तण्ड**)। पुत्र के विवाह के उपरान्त अपनी कन्या का विवाह ६ महीने तक न करें। इसी तरह विवाह के बाद ६ महीने तक मुण्डन, यज्ञोपवीत आदि शुभ कार्य न करें। (**नारद**), परन्तु कन्या-विवाह के पश्चात् पुत्र विवाह ६ मास के भीतर शुभ है। दो सगे भाईयों का विवाह दो सगी बहनों से न करें अथवा एक वर के साथ दो सगी बहनों का विवाह न करें (**वसिष्ठ**) तथा जिस वर को अपनी कन्या देवें, उसकी बहन के साथ अपने लड़के का विवाह न करे (**नारदः**)।

दो सगे भाईयों या दो सगी बहनों का एक संस्कार ६ महीने के भीतर करना सम्भव है (**वृन्द्धमनुः**)। दो सहोदर (भाई-बहन) के संस्कार आवश्यक स्थिति उत्पन्न होने पर नदी, पर्वत, स्थान एवं पुरोहित भेद (भिन्न) से एक ही दिन अथवा ६ महीने के भीतर शुभ होंगे (**शार्गधर**) जुड़वें भाई-बहन के मांगलिक कार्य एक ही मण्डप में भी शुभ हैं। विवाहादि मंगल कार्य से ६ मास तक लघु मंगल कार्य न करें। यह ६ महीने का निषेध केवल तीन पीढ़ि तक के मनुष्यों के लिए कहा है।

मङ्गल संस्कार से ६ महीने तक पितृकर्म, श्राद्धादि न करे। वाग्दान अर्थात विवाह सम्बन्ध का निश्चय हो जाने के बाद वर-कन्या के कुल में माता-पिता, भाई आदि निकटस्थ बन्धु की दुःखद मृत्यु हो जाने [illegible]

संकट काल में अथवा अत्यावश्यक परिस्थितिवश एक मास के बाद अथवा मृतक निवृत्ति के बाद जप, पाठ, होम शान्ति एवं यथाशक्ति द्रव्य, वस्त्र, गोदानादि के बाद शुभ कार्य ग्राह्य होंगे–

प्रतिकूले–लेऽपि कर्त्तव्यो विवाहो मासमन्तरात्।
शान्तिं विधाय गां दत्त्वा वाग्दानादि चरेत् पुनः॥ (ज्योति. प्रकाश)

जन्म नक्षत्र विचार

जातक का जन्म नक्षत्र अन्न प्राशन, उपनयन, मुंडन (चूड़ाकरण), राज्याभिषेक, जन्मदिनादि कृत्यों में प्रशस्त माना गया है, परन्तु यात्रा, सीमान्तोन्नयन तथा विवाहादि कार्यों में जन्म नक्षत्र अनिष्टकर होता है–

बालान्नभुक्तौ व्रतबन्धनेऽपि राज्याभिषेके खलुजन्मधिण्यम्।
शुभं तु अनिष्टं सततं विवाह सीमन्त यात्रादिषु मंगलेषु॥ —वसिष्ठ

मतान्तर से ज्योतिर्निबन्ध एवं मुहूर्त्त दीपिकानुसार केवल चूड़ाकरण (मुण्डन), औषध सेवन, विवाद, यात्रा और कर्णवेध में ही **जन्म-नक्षत्र** का निषेध कहते है, अन्य सभी कार्यों में जन्म नक्षत्र शुभ कहा है–

जन्म नक्षत्रगश्चन्द्रः प्रशस्तः सर्वकर्मसु।
क्षौर भैषजविवादध्वकर्त्तनेषु विवर्जयेत्॥ (मुहूर्त्त दीपिका)

परन्तु जन्म नक्षत्र से २५वां तथा २७वां नक्षत्र शुभ कार्यों में त्याज्य माना जाता है।

जन्म मास अग्रज (बड़े) लड़के या लड़की का विवाह **जन्म नक्षत्र** एवं **जन्म मास** में करने का निर्विवादेन निषेध माना गया है–

न जन्ममासे जन्मर्क्षे न जन्मदिवसेऽपि वा। आद्य गर्भ सुतस्याथ दुहितुर्वा करग्रहः॥ —नारद

परन्तु अनुज लड़के या लड़की का विवाह **जन्म मास** में ग्रहणीय माना गया है–

विबुधैः प्रशस्यते चेत् द्वितीयजनुषोः सुतप्रदः —मुहूर्त्त चिंतामणि

विवाह में सम–विषम वर्षों का विचार

सम वर्षों (१८, २०, २२, २४ आदि) में कन्या का विवाह और **विषम वर्षों** (१९, २१, २३, २५ आदि) में लड़के (पुत्र) का विवाह शुभ माना गया है। –अर्थात् इन वर्षों में कन्या या पुत्र का विवाह करना, उनके वैवाहिक जीवन में सुख, सौहार्द आदि की दृष्टि से कल्याणकारी होता है। इसके विपरीत वर्षों (अर्थात् कन्या का विषम वर्षों में तथा लड़के का सम वर्षों) में करना दुःख, रोग एवं कष्टप्रद होता है– (ज्योतिष तत्त्व प्रकाश)

आपको किस दिन क्या कार्य करना शुभ है ?

नाम वार	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	वीरवार	शुक्रवार	शनिवार
यात्रा में शुभ ग्राह्य-दिशाएँ	पूर्व, उत्तर आग्नेय (दक्षिण पूर्व)	पश्चिम, दक्षिण वायव्य (उत्तर-पश्चिम)	दक्षिण-पूर्व आग्नेय (दक्षिण-पूर्व)	दक्षिण, पूर्व नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम)	पूर्व, उत्तर ईशान (पूर्व-उत्तर)	पूर्व, उत्तर ईशान (उत्तर-पूर्व)	पश्चिम, दक्षिण नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम)
यात्रा में त्याज्य (दिशाशूले)	पश्चिम, नैऋत्य (दक्षि.-पश्चि. कोण)	पूर्व, उत्तर आग्नेय (दक्षि.-पूर्व)	उत्तर, पश्चिम वायव्य (उत्तर पश्चि.)	उत्तर, पश्चिम ईशान (पूर्व-उत्तर)	दक्षिण, पूर्व नैऋत्य (दक्षि. पश्चि.)	पश्चिम, दक्षिण नैऋत्य कोण (द. पश्चि.)	पूर्व, उत्तर ईशान (पूर्व-उत्तर)
विद्या एवं शिक्षा सम्बन्धी	विज्ञान, इंजीनियरिंग, सेना, उद्योग, बिजली, मैडिकल, एवं प्रशासनिक शिक्षा सम्बन्धी।	लेखनादि कार्य, मैडीकल शिक्षा, सौंदर्य प्रसाधन, औषधि निर्माण व योजना सम्बन्धी।	बिजली (इलैक्ट्रानिक), सर्जरी की शिक्षा, शस्त्र विद्या सीखना, अग्नि, स्पोर्टस, भूगर्भ विज्ञान, दंत चिकित्सा आदि।	गणित, लेखनादि, बौद्धिक कार्य, बैंक वकालत, तकनीकि हुनर, ज्योतिष, विज्ञान, वाहनादि चलाना सीखना।	दर्शन-शास्त्र, धर्म मंत्र ज्योतिष, वकालत, उच्च पद प्रशासनिक शिक्षा वैद्यक आदि।	नृत्य, वाद्य, गायन, कला, संगीत, ऐक्टिंग, गीत-काव्य, रचना, स्त्रियों एवं सौंदर्य सम्बन्धी शिक्षा।	तकनीकी शिल्प, कला, मशीनरी सम्बन्धी ज्ञान (Engineering) अंग्रेज़ी, उर्दू, फारसी का ज्ञान शुरु करना।
व्यापार सम्बन्धी कार्य	राज्य प्रशासनिक कार्य सेनाधिकारी, ज्यूलर्ज़, औषधि, शस्त्र, अग्नि, अनाज, सोना, तांबा, चाँदी, गाय, बैलादि का क्रय-विक्रय, मैडीकल, इलैक्ट्रीकल, मंत्रानुष्ठान यज्ञादि।	कृषि, गाय, भैंस, दूध, घी डेयरी, फार्म, औषधि, सोडादि तरल पदार्थ, शंख, मोती, स्त्री, धन सम्पदा, सौंदर्य प्रसाधन, सुगन्धि (Perfumes) सम्बन्धी वस्तुओं का क्रय-विक्रय, विदेशी पत्राचार आदि।	शक्ति, अग्नि एवं बिजली से सम्बिन्धत कार्य, बेकरी electronics, स्पोर्टस Goods, सोना, तांबा, मूंगा, पीतलादि का क्रय भूमि, सर्जरी एवं रक्षा सामग्री, सन्धि विच्छेद आदि कार्य।	कृषि एवं व्यापारिक वस्तुओं का क्रय-विक्रय, शेयरों का क्रय, पुस्तक, लेखन प्रशासन, लेखाकार्य (Accounts) शिक्षण, वकालत, शिल्प, एवं सम्पादन कार्य, वाहन क्रय-विक्रय।	धार्मिक अनुष्ठान, उच्च प्रशासनिक कार्य, उच्च शिक्षा के कार्य, आभूषण, औषधि, लकड़ी, भूमि, वाहनादि का लेन-देन, विदेश गमनादि कार्य।	संगीत, सिनेमा, विदेश बारे, टैलीविजन, स्त्रियों, एवं श्रृंगारिक वस्तुओं से संबन्धित कार्य, रूई, कपड़ा बैंकिंग, चाँदी, जवाहरात, रसायन, शरबत, सोडा, सुगन्धित द्रव्य, वाहनादि क्रय-विक्रय, खुशबूदार वस्तु।	मशीनरी, लोहा, लकड़ी चमड़ा, सीमेंट, तेल, पैट्रोल, पत्थर, भूमि, ठेकेदारी, शस्त्रों का क्रय-विक्रय, अन्वेषण एवं आप्रेशण कार्य, अधीनस्थ कर्मचारी, वाहनादि प्रयोग विदेश-यात्रादि कार्य।

नाम वार	रवि	चन्द	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि
नवीन वस्त्र धारण करना	शुभ है	मध्यम	अशुभ	शुभ	शुभ	अति शुभ	अशुभ
नवीन आभूषण धारण	शुभ	शुभ	मध्यम	शुभ	शुभ	शुभ	अशुभ
तेल लगाना	अशुभ	शुभ	अशुभ	विशेष शुभ	अशुभ	शुभ	विशेष शुभ
हजामत करना	मध्यम	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम
नया जूता पहनना	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम	शुभ	मध्यम
मुकद्दमा करना	अशुभ	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	मध्यम	शुभ

अभिजित मुहूर्त्त

पुराणानुसार अभिजित मुहूर्त्त काल में क्रियमाण सभी कर्म प्रायः सफल होते हैं। भगवान् विष्णु के सुदर्शन चक्र की भान्ति अभिजित् मुहूर्त्त सब दोषों को नाश कर देता है–**दिनमध्यगते सूर्ये मुहूर्त्ते हि अभिजित् प्रभुः। चक्रमादाय गोविन्दः सर्वान्दोषान्निकृन्तति॥**

दिनमान के अर्ध भाग में स्थानीय सूर्योदय जमा कर देने से अभिजित् मुहूर्त्त का मध्य भाग निकल आता है। **'नारद पुराण'** के अनुसार **अभिजित्** के मध्याह्न काल से 1 घटी अर्थात् 24 मिनट पूर्व और मध्याह्न से 24 मिनट पश्चात् तक के समय को **अभिजित् काल** कहा जाता है।

उदाहरण–मान लो, आपने 28 नवम्बर को अभिजित मुहूर्त्त का समय जानना है, तो उस दिन के दिनमान (25/30 घटी पल) का अर्धभाग 12 घड़ी, 45 पल होंगे। इस अर्ध भाग के 5 घंटे, 6 मिनट बनते हैं। इनके उस दिन में जालन्धर के सूर्योदय 7/10 घं. मिं. में जमा कर देने से दुपै. 12 बजकर 16 मिनट पर अभिजित मुहूर्त्त का मध्यकाल होगा। इससे 24 मिनट पूर्व अर्थात् 11/52 घं. मिं. से अभिजित का प्रारम्भ काल तथा (12/16 + 00/24 मिनट = 12 घं. 40 मिनट पर अभिजित का समाप्ति काल (घंटा मिंट) होगा।

आवश्यक मुहूर्त्त निर्णय

आगे हम भारतीय संस्कृति एवं शास्त्रानुसार मुख्य मुहूर्त्तों का निर्णय प्रकार दे रहे हैं, जिसमें विभिन्न मुहूर्त्तों में ग्राह्य मास, तिथि, वार, नक्षत्र आदि का विवरण दे रहे हैं। **ध्यान रहे,** सभी मुहूर्त्तों में वर्ज्य तत्त्वों जैसे–अधिक मास, क्षय मास, पितृ पक्ष, रिक्ता-तिथि (४, ९, १४), वैधृति-व्यतीपात आदि दुष्ट योग, भद्रा (भूलोके) एवं गुरु-शुक्रास्तादि का भी विचार कर लेना उचित होगा। ज्ञातव्य रहे, पंचांगदिवाकर में षोडश संस्कार अन्तर्गत गर्भाधान से अन्नप्राशन तक के मुहूर्त्त स्थायी स्तम्भ **'भारतीय संस्कृति में संस्कारों का महत्त्व'** में दिए रहते हैं। हम इसके आगे के मुख्य मुहूर्त्तों का ग्राह्य-अग्राह्य तत्त्वों का निर्णय प्रकार लिख रहे हैं–

(1) मुण्डन (चौल, चूड़ाकरण) मुहूर्त्त

जन्म या गर्भाधान से ३, ५, ७ आदि विषम वर्षों में मुण्डन संस्कार किया जाता है। कुलाचार अनुसार इसे प्रथम वर्ष भी सम्पन्न कर लेते हैं अथवा यज्ञोपवीत संस्कार के साथ करते हैं। कन्या का चौल (मुण्डन) संस्कार सम वर्षों में होता है।

ग्राह्य मास–उत्तरायण मासों में (14 जन. से 15 जुला.-आषाढ़ तक)-**यथा**-वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, माघ व फाल्गुन मास।

ग्राह्य तिथि–२, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२ (कृ. व शु. पक्ष), १३ (शुक्लपक्ष) एवं पूर्णिमा।

ग्राह्य वार–सोम, बुध, गुरु एवं शुक्रवार सभी वर्णों के लिए शुभ हैं। (परन्तु ब्राह्मणों को रविवार, क्षत्रियों को मंगलवार तथा वैश्यों को शनिवार मुण्डनादि कार्यों के लिए विशेष शुभ माने गए हैं।) शुक्ल पक्ष का सोमवार विशेष शुभ होता है, जबकि कृष्ण पक्ष का सोमवार अशुभ (साधारण) होता है।

ग्राह्य नक्षत्र–लघु संज्ञक नक्षत्र (अश्वि., पुष्य, हस्त, अभि.), अनुराधा नक्षत्र को त्यागकर मृदुसंज्ञक (मृग., चित्रा, रेवती) तथा चरसंज्ञक (पुन, स्वा., श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा) तथा ज्येष्ठा नक्षत्रों में मुण्डन कार्य शुभ रहते हैं।

कुछ विद्वान जन्म-मास व जन्म-नक्षत्र, विरुद्ध व विपरीत चन्द्र (४, ८, १२ व शत्रुगत) में वर्ज्य मानते हैं–

न जन्ममासे न च जन्मभे तथा विधौ विरुद्धेऽशुभतारकासु।
युग्माब्दमासे न च कृष्ण पक्षे चूडा न कार्या खलु चैत्रमासे॥

परन्तु कुछ विद्वान जन्म नक्षत्र या जन्म राशि को शुभ मानते हैं।

नोट–ज्येष्ठा नक्षत्र में ज्येष्ठ (बड़े) लड़के का मुण्डन न करें।

शुभ लग्न–२, ३, ४, ६, ७, ९ या १२ राशियों के लग्न अथवा इनके नवांश में मुण्डन शुभ होते हैं। ग्राह्य लग्न राशि जन्म-लग्न या जन्म-राशि से अष्टमस्थ न हो। अष्टम भाव (शुक्र के अतिरिक्त) शुद्ध होना चाहिए। सामान्य लग्न शुद्धि तो आवश्यक ही है।

तारा–शुद्धि–मुहूर्त ग्रन्थों में चूड़ाकरण (मुण्डन) में तारा का प्रबल होना चन्द्रमा से भी अधिक आवश्यक माना गया है। (ज्योतिर्निबन्ध)

परन्तु तारा-विचार कृष्ण-पक्ष में ही विचारणीय है, शुक्ल पक्ष में नहीं। शुक्ल पक्ष में चन्द्र-बल ही विचारणीय है।–**'कृष्णे बलवती तारा शुक्लपक्षे बली शशी।'** (नारद), अपि च, कृष्ण पक्ष में भी अशुभ तारा होने पर भी यदि चन्द्रमा उच्चस्थ, मित्रवर्ग या किसी शुभ ग्रह के साथ हो, तो मुण्डन कार्य किया जा सकता है। ('तारा-चक्र' वि. संवत् २०७४ के पंचांगदिवाकर में देखें।)

विशेष ध्यातव्य–यदि बालक की माता रजस्वला या गर्भवती हो, और गर्भ पाँच मास से अधिक का हो, तो मुण्डन कार्य न करावें। इस संस्कार से गर्भ नष्ट हो सकता है, परन्तु यदि संस्कार्य बालक 5 वर्ष से अधिक हो, तो माता के गर्भ के दोषापत्ति नहीं रहती।

(2) नूतन अक्षर–लेखनारम्भ मुहूर्त्त

बालक की पाँच वर्ष की अवस्था में सम्प्राप्त हो जाने पर आगे वर्णित विशुद्ध दिन को श्रीगणेश, सरस्वती, लक्ष्मीनारायण, गुरु एवं कुलदेवता की पूजा के साथ उसे लिखने-पढ़ने के उद्देश्य से नूतन अक्षराम्भ संस्कार करवाना चाहिए। उपर्युक्त देवताओं के नाम से घी का हवन करे तथा ब्राह्मणों को दक्षिणादि से सन्तुष्ट करना चाहिए। तदनन्तर पूर्वाभिमुख गुरु के सम्मुख पश्चिमाभिमुख बालक को अक्षरारम्भ करवाना चाहिए। संस्कार्य बालक का चन्द्र-बुध बल अपेक्षित है।

ग्राह्य मास–कुम्भस्थ सूर्य को छोड़कर उत्तरायण मासों में (14 जन. से 15 जुला. तक), कुछ विद्वान कुम्भस्थ सूर्य की अवधि को भी ग्राह्य मानते हैं।

ग्राह्य तिथि–२, ३, ५, ७, १०, ११, १२।

ग्राह्य वार–सोम, बुध, गुरु एवं शुक्रवार।

ग्राह्य नक्षत्र–अश्वि., आर्द्रा, पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., ज्ये., अभि., श्रव. और रेवती नक्षत्र।

शुभ लग्न–२, ३, ६, ९, १२ लग्नराशि। अष्टम भाव ग्रहरहित होना चाहिए।

नोट–यज्ञोपवीत (उपनयन) संस्कार से पहिले अक्षराम्भ और व्रतबन्ध के पश्चात् वेदारम्भ शुभ होता है।

(3) विद्यारम्भ–मुहूर्त्त

वर्णमाला-गणितादि में बालक परिपक्व हो जाने पर भविष्यत् आजीविका-प्रदात्री कोई विशेष या सर्वसामान्य विद्या का शुभारम्भ करना चाहिए।

ग्राह्य मास—फाल्गुन मास को छोड़कर उत्तरायण के मास।

ग्राह्य तिथि—२, ३, ५, ६, १०, ११, १२

ग्राह्य वार—रवि, बुध, गुरु और शुक्रवार।

ग्राह्य नक्षत्र—अश्वि., रोहि., मृग. आर्द्रा, पुन, पुष्य, आश्ले, पू.फा., उ.फा., हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, पू.षा. उ.षा., श्रव., धनि., शत., पू.भा., उ.भा. और रेवती।

शुभ लग्न—२, ५, ८ राशि लग्न। तथा केन्द्र-त्रिकोण में शुभ ग्रह तथा ३, ६, ११वें क्रूर ग्रह हों।

(4) उपनयन (यज्ञोपवीत) मुहूर्त्त

यह नवम संस्कार यज्ञोपवीत, व्रतबन्ध, उपनयन, मौञ्जिबन्धन और जनेऊ आदि नामों से प्रचलित है। ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य का प्रथम जन्म माता के गर्भ से और द्वितीय जन्म व्रतबन्ध से संस्कृत होने पर माना गया है। अत: वे '**द्विज**' वा '**द्विजन्मा**' कहलाने के अधिकारी हैं। अत: ऐसे महत्त्वपूर्ण संस्कार को शास्त्र-सम्मत् काल में विधिवत् सम्पादित करना चाहिए।

उपनयन (यज्ञोपवीत) संस्कार कब करना चाहिए ? इस संस्कार में काम्य, नित्य और गौण काल के भेद से तीन प्रकार के काल कहे गए हैं। ब्राह्मण बालक के गर्भधारण या जन्मदिन से पंचम वर्ष में काम्यकाल या अष्टम वर्ष में नित्यकाल ; क्षत्रिय का षष्ठ या 11वें वर्ष में क्रमश: काम्य व नित्यकाल एवं 8वें या 12वें वर्ष में वैश्य का काम्य व नित्यकाल में उपनयन संस्कार हो जाना चाहिए।

यदि उपरोक्त वर्षों तक उपनयन संस्कार न हो सके, तो उपरोक्त वर्षों को द्विगुणित कर देने से मध्यमान्तर काल '**गौण-काल**' माना गया है। अर्थात् 8 से 16वें वर्ष तक ब्राह्मण का, 11 से 22 वर्ष तक क्षत्रिय का तथा 12 से 24 वर्ष तक वैश्य का यज्ञोपवीत संस्कार मध्यम फलप्रदी होने से अत्यावश्यकता में करणीय हैं।

शुभ ग्राह्य मास—चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ (देवशयनी एकादशी से पूर्वकाल तक), माघ व फाल्गुन मास।

ज्ञातव्य बिन्दु—(*i*) ज्येष्ठ पुत्र के लिए ज्येष्ठ मास त्याज्य रखना चाहिए। मीनस्थ सूर्य यज्ञोपवीत में शुभ कहा गया है। (निर्णय सिन्धु)

(*ii*) यज्ञोपवीत संस्कार के लिए वसन्त ऋतु तथा अष्टम वर्ष की उत्कृष्टता इतनी है कि दोनों के संयोग में जन्ममास-तिथि-नक्षत्र भी दूषित नहीं होते।

(*iii*) यद्यपि जन्ममास यज्ञोपवीत में त्याज्य है, तथापि आवश्यक होने पर जन्मदिन से दस दिन छोड़कर अन्य दिनों में संस्कार दोषपूर्ण नहीं होता। (राजमार्तण्ड)

(*iv*) अन्य मतानुसार जन्मकालिक पक्ष को छोड़कर दूसरे पक्ष में शुभ कार्य करने पर जन्म मास का दोष नहीं रहता। (निर्णय सिन्धु:)

ग्राह्य तिथि—शुक्ल पक्ष की २, ३, ५, १०, ११, १२ एवं कृष्ण पक्ष की–१, २, ३, ५ तिथियां शुभ हैं।

ज्ञातव्य बिन्दु—(*i*) चैत्र-वैशाख शुक्ल तृतीया, माघ शुक्ल सप्तमी तथा फाल्गुन शुक्ल तृतीया उपनयन में विशेष रूप से ग्राह्य हैं। (पुरुषार्थ-चिन्तामणि)

(*ii*) मन्वादि-युगादि- *सोपपद तिथियां, चतुर्दशी, अमावस्या, प्रतिपदा, अष्टमी तथा निरयण सूर्य संक्रान्ति दिन उपनयन संस्कार के लिए अनध्याय हैं। इसी प्रकार पौष, माघ और फाल्गुन की तीनों कृष्णाष्टमी तथा ७, ८, ९ तिथियां '**अष्टका**' संज्ञक अनध्याय हैं।

ग्राह्य वार—रवि, सोम, बुध, गुरु एवं शुक्रवार।

वर्णेश, शाखेश बल—विशेष रूप से **ब्राह्मणों** को गुरु व शुक्रवार में, **क्षत्रियों** का रवि, मंगलवार में तथा **वैश्यों** का सोम और बुधवार में उपनयन शुभ हैं, क्योंकि ये ही इनके वर्णेश हैं। (पुरुषार्थ-चिन्तामणि)

(*ii*) बुध यदि अस्त हो या पापाक्रान्त हो, तो बुधवार त्यागें।

(*iii*) मुहूर्त्त के दिन बालक का चन्द्र ४, ८, या १२वें नहीं होना चाहिए।

शुभ समय—**पूर्वाह्न उत्तम,** मध्याह्न मध्यम और अपराह्न वर्जित कहा गया है।

शुभ नक्षत्र—अश्वि., रोहि., मृग., आर्द्रा, पुन., पुष्य, आश्ले., पू.फा., उ.फा., हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, पू.षा., उ.षा., अभि., श्रव., धनि., शत., पू.भा., उ.भा. और रेवती नक्षत्र।

ब्राह्मणों के लिए पुनर्वसु नक्षत्र त्याज्य है।

शुभ लग्न—विशेषतया २, ३, ५, ६, ९ राशि लग्न उत्कृष्ट कहे गए हैं, तथापि कोई भी राशि लग्न ग्राह्य हैं, जब ८, १२वां भाव शुद्ध ; ३, ६, ११वें पापग्रह, अन्यत्र (लग्न बिना) सौम्य ग्रह तथा वृष या कर्कस्थ पूर्णचन्द्र लग्न में हो। पुन: गुरु, शुक्र और स्वशाखा, स्ववर्ण का अधिपति ग्रह उच्चस्थ, स्वक्षेत्री, वर्गोत्तम, मूलत्रिकोण या केन्द्र-त्रिकोणस्थ हो, तो वह काल उपनयन में शुभ जानना चाहिए।

सूर्य-चन्द्र व गुरु बल (त्रिबल)—उपनयन मुहूर्त्त के प्रवरण हेतु संस्कार्य बालक की जन्मराशि से सूर्य, गुरु और चन्द्र बल का विचार अवश्य करना चाहिए।

रवि-चन्द्र-गुरु शुद्धि चक्र

ग्रह बल	सूर्य बल	चन्द्र बल	गुरु बल
शुभ स्थान	३,६,१०,११	१,२,३,५,६,७,९,१०,११	२,५,७,९,११
पूज्य स्थान	१,२,५,७,९	१२	१,३,६,१०
अनिष्ट स्थान	४,८,१२	४,८	४,८,१२

उच्चस्थ, स्वनवांश, मित्रराशि या वर्गोत्तम या स्वराशि में गुरु हो, तो अनिष्ट गुरु भी ग्राह्य होता है।

रोग-बाण—उपनयन मुहूर्त्त में रोगबाण का भी विचार किया जाता है। (रोगबाण प्रत्येक

***सोपपद तिथियाँ**—ज्ये. शुक्ल २, आषाढ़ शुक्ल १०, पौष शुक्ल ११, माघ शुक्ल १२

राशि के 9, 18, और 27वें अंश में स्थित सूर्य का संचारकाल होता है) परन्तु ध्यान रहे, रोगबाण और चौरबाण का विचार रात्रि में किया जाता है। तथा उपनयन का समय तो पूर्वार्द्ध या मध्याह्न तक ही होता है। अपि च, लग्न बल की उपलब्धि में बाण विचार निरर्थक है–

लग्ने पूर्णबलोयेते न दोषः पंचकस्य च।। –मुहूर्त गणपति

नोट–यदि संस्कार्य बालक की माता रजस्वला हो जाए तो उसकी शुद्धि के बाद ही यज्ञोपवीत संस्कार करना चाहिए।

(5) केशान्त कर्म मुहूर्त्त

ब्राह्मण को 16वें, क्षत्रियों को 22वें तथा वैश्य को 24वें वर्ष में केशान्त संस्कार करना चाहिए। इस संस्कार के लिए काल-शुद्धि, ग्राह्य-वर्ज्य दोष चूड़ाकर्म (मुण्डन) संस्कार के सदृश ही जानने चाहिएं।

(6) समावर्तन मुहूर्त्त

यह संस्कार आचार्य-गृह (गुरुकुल) में विद्या समाप्त कर गृहस्थाश्रम में प्रवेश के समय एक विशेष अनुष्ठान के रूप में किया जाता है। केशान्त तथा विवाह संस्कार के मध्यवर्ती काल में, जब बालक गुरु से अध्ययन करके स्वगृह लौटता है, तब उपाकर्म की तरह ही समावर्तन करना चाहिए। इसे कुछ विद्वान लोग **'मौंजी-मोक्षण'** संस्कार भी कहते हैं। इस संस्कार में वर्ज्य-ग्राह्य एवं काल-शुद्धि आदि उपनयन संस्कार की भान्ति रहेगी। समावर्तन संस्कार के उपरान्त ही ब्रह्मचारी विद्याव्रत स्नातक कहलाता है।

विवाह संस्कार

विवाह गृहस्थाश्रम का सर्वप्रमुख संस्कार है। इस संस्कार के प्रमुख तीन उद्देश्य होते हैं– (1) अनर्गल प्रवृत्ति का निरोध, (2) पुत्रोत्पादन द्वारा वंश की रक्षा एवं (3) भगवत्प्रेम का अभ्यास। ऋषि-ऋण, देव-ऋण और पितृ-ऋण–इन तीन ऋणों का शोधन कर अपना चित्त मोक्ष में लगाना चाहिए। तीन ऋणों से बिना छुटकारा पाये मुक्ति मार्ग का आश्रय लेने से मानव का पतन हो जाता है। अतएव स्वाध्याय द्वारा ऋषि-ऋण, यज्ञ-साधन द्वारा देव-ऋण और पुत्रोत्पत्ति द्वारा पितृ-ऋण से सद्गृहस्थ मुक्त होते हैं। नैष्ठिक ब्रह्मचारी के समस्त ऋण ज्ञानयज्ञ में लय हो जाते हैं।

गृहस्थ बनने के लिए मन के अनुरूपा, भिन्नगोत्रीया, अपने से अल्पवयस्का एवं अनन्यपूर्विका (पहिले किसी के साथ अविवाहिता) कन्या का पाणिग्रहण करें।

(7) वर–वरण (सगाई) मुहूर्त्त

वर-कन्या की जन्मपत्रियों में परस्पर सम्यक् मिलान हो जाने के पश्चात् दोनों के माता-पिता विवाह के संकल्प (वाग्दान) को सम्पुष्ट करने के लिए वर-कन्या का वरण (सगाई) करते हैं। इसके निम्नलिखित शुभ मुहूर्त्त में कन्या का भाई कुल पुरोहित (ब्राह्मण) एवं परिवार के सन्निकट सगे-सम्बन्धियों के साथ यज्ञोपवीत, नारियल, साबुत सुपारी, हल्दी, अक्षत, छुहारे, गुड़, वस्त्र, अँगूठी, मिष्ठान्न, फल, फूलादि अर्पण करके वर का शास्त्र प्रशस्त मांगलिक मन्त्रों के साथ वरण करें। (पूर्ण विधि जानने के लिए हमारी नवीन प्रकाशित **'विवाह-पद्धति'** का अवलोकन करें।)

ग्राह्य मास–पौष एवं चैत्र मास (धनु एवं मीनस्थ सूर्यकालीन) को छोड़कर शेष मास।

शुभ–ग्राह्य तिथि–१ (कृष्ण पक्ष की), २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२ (दोनों पक्षों की), १३ (शुक्ल) एवं पूर्णिमा तिथि।

ग्राह्य वार–रवि, चन्द्र, बुध, गुरु तथा शुक्रवार।

ग्राह्य नक्षत्र–कृति., रोहि., मृग, तीनों पूर्वा, हस्त, श्रवण, चित्रा।

शुभ लग्न–सभी राशि लग्न, परन्तु केन्द्र/त्रिकोण में शुभ ग्रह तथा 3, 6, 11वें भावों में क्रूर ग्रह हों।

(8) कन्या–वरण मुहूर्त्त

वर-वरण की भान्ति ही वर के माता-पिता अथवा रक्त-सम्बन्धी कन्या के वरण के लिए कन्या के घर में जाकर शास्त्र-प्रशस्त मांगलिक मन्त्रों के साथ वरण करें।

शुभ मास–धनुस्थ एवं मीनस्थ (पौष एवं चैत्र मास) सूर्य को छोड़कर शेष मास।

ग्राह्य तिथि–१ (कृष्ण पक्ष की), २ ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२ (दोनों पक्षों की), १३ (शुक्ल) एवं पूर्णिमा।

ग्राह्य नक्षत्र–मघा, तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा तथा विवाह-मुहूर्त्त वाले सभी नक्षत्र।

शुभ लग्न–सभी राशि लग्न, तथा केन्द्र/त्रिकोण में शुभ ग्रह (बुध, गुरु, शुक्र) हों।

(9) विवाहांग कृत्यारम्भ मुहूर्त्त

विवाह से पूर्व महत्त्वपूर्ण कृत्य जैसे–दलन, कण्डन, अनाज-शोधन, पिष्टीकरण, घर को लीपना (पेंट), सजाना, चित्रकारी करना, स्तम्भारोपण, अंकुरार्पण, गणेशादि पूजन, वस्त्रालंकार संग्रह, भूषण-कंकणादि धारण, कलश-स्थापन, मंगल-स्नान तथा नान्दीश्राद्धादि विवाहांग कृत्यों को विवाह दिन से पूववर्ती ३, ६, ९वें दिनों को छोड़कर करना चाहिए। इन्हें विवाह-मुहूर्त्तोक्त नक्षत्रों तथा सामान्य पंचांग शुद्धि में २, ४, ५, ७, ८, १०, ११, १२ दिन पूर्व करें।

वेदिका निर्माण और स्तम्भारोपण

विवाह में वेदी-रचना (मण्डप) भी अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। ब्राह्मणों के लिए विवाह के लिए (कन्या) के 4 हाथ परिमित लम्बी-चौड़ी, एक हाथ ऊँची और पूर्व की ओर क्रमशः ढालु होती हुई वेदी बनानी चाहिए। समस्त वर्णों के लिए कन्या-घर के बायीं ओर वेदी का निर्माण करना चाहिए। अर्थात् घर के बाहर घर की ओर मुँह करके खड़े व्यक्ति के दायीं ओर बनाई जाए। इस मण्डपवेदी को चारों ओर चार मण्डप-स्तम्भों से आवृत्त किया जाता है। मण्डप निर्माणान्तर्गत प्रथण स्तम्भ के आरोपणार्थ दिशा ज्ञान के हेतु सूर्य राशि संचार के अनुसार निम्न चक्र द्रष्टव्य है–

दिशा	ईशान	आग्नेय	नैर्ऋत्य	वायव्य
सूर्य राशि	५,६,७	२,३,४	११,१२,१	८,९,१०

अर्थात् सूर्य के सिंह, कन्या, तुला राशि संचार कालीन (भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक मास) स्तम्भ ईशान कोण में सर्वप्रथम गाड़ा जाना चाहिए।

विशेष–मण्डप निर्माणारम्भ में ***'विवाहांग कृत्यारम्भ'*** में कहे हुए तत्त्वों का विचार तथा मंगलवार व पंचक-नक्षत्रों का परित्याग करना चाहिए।

विवाह कार्य पूर्ण हो जाने के अनन्तर पूर्वनिर्मित मण्डपादि तथा पूर्वामन्त्रित गणेशषोडश-मातृकादि का विसर्जन २, ४, ५, ७वें दिन करना शुभावह माना गया है।

ध्यान रहे–नान्दीमुख श्राद्ध से मण्डपोद्वासन पर्यन्त पिता, भाई तथा सभी सगोत्र/सपिण्ड बान्धवों को दर्श श्राद्ध, क्षयश्राद्ध, ठण्डे पानी से स्नान, अपसव्य, स्वधाकार, नित्यश्राद्ध, ब्रह्मयज्ञ, अध्ययन, नदी व सीमा का लांघना, उपवास, व्रत और श्राद्ध में भोजन नहीं करना चाहिए।

(10) तैलादि–लापन (चढ़ाने) का मुहूर्त्त

वर-कन्या जिसको विवाह से पूर्व तैल चढ़ाना (उबटन) हो, उसका चन्द्र-बल देख लेना चाहिए। तैलादि मंगल कार्य हेतु मेषादि राशि वालों के लिए चक्र में निर्दिष्ट संख्या दिन के पूर्व (पहिले) करना चाहिए। **उदाहरणार्थ**–मिथुन राशि वाले वर-कन्या को विवाह से 5 दिन पूर्व तैलाभ्यंग करना चाहिए। इसमें विवाह का दिन गिनती में न करें।

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
तैलसंख्या	7	10	5	10	5	7	7	5	5	5	5	7

(11) विवाह–मुहूर्त्त

विवाह-मुहूर्त्त निर्णय में सामान्य वर्ज्य दोषों के अतिरिक्त लतादि दस दोषों का विवरण तथा लग्न शुद्धि एवं अन्य घटक तत्त्व इसी पंचांग में वार्षिक विवाह-मुहूर्त्तों के अनन्तर पृष्ठों पर प्रतिवर्ष दिया रहता है। मुख्य ग्राह्य मासादि का विवरण पुनः लिख रहे हैं–

ग्राह्य मास–विवाह संस्कार में पूर्वाचार्यों ने यद्यपि वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, मार्गशीर्ष, माघ व फाल्गुन मास ग्रहण किए हैं। परन्तु अनेक विद्वानों एवं मुहूर्त्त चिन्तामणि पीयूषधारा अनुसार लोकाचार से श्रावण, भाद्रपद, आश्विन मास भी ग्रहणीय हैं। इसीदिन (भद्रदेश) पंजाब (हि.प्र., हरियाणा, जम्मू सहित) में अति प्राचीन काल से श्रा., भाद्र., आश्वि महीनों में विवाह करने की प्रथा चली आ रही है। पर्वतीयों प्रदेशों (हि.प्र., उत्तराखण्ड आदि) में कार्तिक मास में भी विवाह होते हैं।

ग्राह्य तिथि–कृष्णपक्ष की त्रयोदशी से शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तक की तिथियों को छोड़कर शेष तिथियों में।

ग्राह्य वार–सभी वार ग्रहणीय है। परन्तु रवि, सोम, बुध, गुरु, शुक्र विशेष शुभ तथा मंगल-शनिवार मध्यम कहे गए हैं।

ग्राह्य नक्षत्र–अश्वि., रोहि., मृग., मघा, उ.फा., हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, उ.षा., श्रव., धनि., उ.भा. और रेवती नक्षत्र।

अश्वि., चित्रा, श्रव. व धनिष्ठा–ये चार विवाह नक्षत्र कात्यायन गृहसूत्रोक्त त्रिषुत्रिषूत्तरादिषु प्रमाणानुसार ग्रहण किए गए हैं। गृहसूत्र के अतिरिक्त 'धर्मसिन्धु', 'ज्योतिर्विदाभरणम्' तथा 'सत्यकृत्य मुक्तावली' ग्रन्थ में भी ये चारों नक्षत्र विवाह हेतु ग्राह्य माने गए हैं।

विवाह में लग्न शुद्धि एवं विशेष विषयों पर विचार–विवाह में त्रिविक्रमसंहिता अनुसार शुद्ध काल, लग्न-शुद्धि, लग्न-बल, वर-कन्या के सम-विषम वर्षों का विचार, भद्रादि दोष, गोधूली लग्न सम्बन्धी सभी विषयों का निर्णयप्रकार सप्रपञ्च इसी पंचांग में वार्षिक विवाह-मुहूर्त्त वाले पृष्ठों के बाद स्थायी स्तम्भों में देखें।

(12) नववधू प्रवेश–(वध्वागमन) मुहूर्त्त

विवाह दिन से 16 दिनों के मध्यान्तर में सम दिनों में एवं 5, 7, 9वें विषम दिनों एवं स्थिर लग्न में वधू प्रवेश शुभ है। उपरोक्त दिनों में तिथि और नक्षत्रादियों का नियम नहीं होता। यदि ऊपर कहे हुए दिनों में वधू प्रवेश न हो सके तो विषम दिनों (तिथियों) में, विषम मासों में और विषम वर्षों में होना चाहिए। परन्तु यदि किसी कारण अथवा दैवगत व्यवधान के कारण पाँच वर्ष तक भी नववधू प्रवेश न हो सके तो फिर किसी भी अन्य शुभ मुहूर्त्त में प्रवेश करना चाहिए। 16 दिन के पश्चात् ही निम्न तिथ्यादि तत्त्व विचारणीय होंगे–

ग्राह्य मास–कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी से शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथियाँ तथा ४, ९, १४ तिथियाँ त्यागकर सभी तिथियां।

ग्राह्य वार–सोम, बुध, गुरु, शुक्र एवं शनिवार।

ग्राह्य नक्षत्र–अश्वि., रोहि., मृग, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, उत्तरा-तीनों, श्रव., धनि. तथा रेवती।

शुभ लग्न–५, ८, ११ लग्न विशेष शुभ हैं। परन्तु अन्य लग्नों में भी (४, ८ भाव शुद्ध होने पर) वधू प्रवेश रात्रि के समय किया जा सकता है।

नववधू प्रवेश के समय भद्रा, व्यतिपातादि अशुभ दोषों का विचार तो करना ही चाहिए।

विवाह के बाद प्रथम वर्ष में कन्या वास-चिन्तन

विवाह के पश्चात् नव-परिणीता स्त्री प्रथम ज्येष्ठ मास में पति के घर निवास करे, तो पति के ज्येष्ठ (जेठ) को, प्रथम अधिक मास में पति को, क्षय मास में स्वयं का, प्रथम आषाढ़ (मासान्तर श्रावण) में सास को एवं पौष में श्वसुर को अशुभ फल प्राप्त होता है। इसी प्रकार प्रथम चैत्र मास में मायके (पितृ-गृह) में रहने से पिता को अशुभ फल प्राप्त होता है।

(13) द्विरागमन (मुकलावा) मुहूर्त्त

नवविवाहिता वधू का वधू-प्रवेश के अनन्तर पिता के गृह में लौटकर पुनः भर्तृगृह गमन (ससुराल) **'द्विरागमन'** कहलाता है। अतः इसे **'पुनर्वधूप्रवेश'** भी कहा जा सकता है।

द्विरागमन काल–यदि द्विरागमन विवाह दिन से 16 दिन के मध्यान्तर में किया जाए तो विषम या सम दिनों में सूर्य-चन्द्र बल, गुरु-शुक्रास्त, गुरु-शुक्र बाल्य-वृद्धत्व, एक राशिगत सूर्य-

चन्द्र बल, गुरु शुक्रास्त, गुरु-शुक्र बाल्य-वृद्धत्व, एकराशिगत सूर्य-चन्द्र, सम्मुख एवं दक्षिणस्थ शुक्र, भद्रा का विचार नहीं किया जाता। परन्तु यदि 16 दिनों के बाद हो, तो द्विरागमन में ये घटक त्याज्य रहेंगे। विवाह के बाद प्रथम, तृतीय या पंचम-सप्तमादि विषम वर्षों में वर (पुरुष) के सूर्य एवं गुरु तथा दोनों (वर-वधू) के चन्द्रमा बलवान् होने पर पत्नी का द्विरागमन शुभ होता है।

ग्राह्य मास—मेष, वृश्चिक तथा कुम्भस्थ कालीन सूर्य अर्थात् वैशाख, मार्गशीर्ष तथा फाल्गुन सौर मासों में।

ग्राह्य शुभ तिथि—शुक्ल पक्ष की २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ एवं पूर्णिमा।

ग्राह्य नक्षत्र—अश्वि., रोहि., मृग., पुन., पुष्य, उत्तरा-तीनों, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, श्रव., धनि., शत. तथा रेवती नक्षत्र।

शुभ लग्न—२, ३, ६, ७, १२ लग्न विशेष शुभ हैं तथा इन पर शुभ ग्रहों की दृष्टियां हों। लग्न से ३, ६, १०, ११वें गुरु तथा केन्द्र भावों में शुक्र विशेष शुभप्रद होगा।

शुक्र–विचार—शुक्र की शुद्धि द्विरागमन में अत्यावश्यक है। शुक्र जिस दिशा में उदित हुआ हो, उसी दिशा से शुक्रवास का विचार करना चाहिए। **उदाहरणार्थ**—जैसे यदि शुक्र पूर्व दिशा से उदय हुआ हो [जब शुक्र, सूर्य से पीछे (कम) रहता है, तो प्रातःकाल पूर्व में उदित रहता है।]–उस समय पूर्व-उत्तर (आग्नेय-ईशान) की यात्रा में शुक्र सम्मुख-दक्षिण होने से अशुभ होगा। परन्तु पश्चिम-दक्षिण (नैऋत्य-वायव्य) की यात्रा में शुक्र पृष्ठ-वाम (बाएं) होने से शुभ है। इसी प्रकार शुक्र जब सूर्य से आगे (अधिक) रहता है, तो सन्ध्या में पश्चिम में उदित रहता है, उस समय पश्चिम (वायव्य) की यात्रा में शुक्र सम्मुख (सामने) तथा दक्षिण की यात्रा में दक्षिण (दाहिना) होता है। अतः पूर्व (आग्नेय) तथा उत्तर (ईशान) की यात्रा में पृष्ठ एवं वाम (बाएं) शुक्र होते हैं। **सम्मुख** एवं **दक्षिण** शुक्र में बालक, गर्भिणी तथा नवोढ़ा के लिए यात्रा अशुभ कही गई है।

यह शुक्र का विचार तृतीयादि विषम वर्ष के द्विरागमन, नवविवाहिता तथा गर्भिणी की यात्रा में करना आवश्यक है।

सम्मुख-शुक्र का परिहार—एक ही नगर/ग्राम में, किसी विषय (बिमारी या उत्पात) आदि के उपद्रव में, विवाह सम्बन्धी यात्रा में, देव-तीर्थ यात्रादि में, राज-पीड़ित होकर और विवाह के बाद एक वर्ष के भीतर स्त्री पिता के घर से पतिगृह की यात्रा करें तो सम्मुख-दक्षिण शुक्र का दोष नहीं होगा। अपि च, जब चन्द्रमा रेवती से मृगशिर तक हो, तो भी सम्मुख-दक्षिण शुक्र का दोष नहीं होता। क्योंकि इस अवधि में शुक्र अन्धा हो जाता है। इसीप्रकार पति द्वारा पत्नी के ले जाने पर (अर्थात् यदि पति साथ हो) तो तथा भृगु, अंगिरा, वत्स, वशिष्ठ, कश्यप, अत्रि और भारद्वाज–इन 7 मुनियों के वंश (गोत्र) में भी सम्मुख शुक्र का दोष नहीं लगता है।

(14) प्रथम स्त्री–समागम मुहूर्त्त

रजोदर्शन उपरान्त 16 रात्रि पर्यन्त, प्रथम चार रात्रियों को छोड़कर शेष 12 रात्रियों में स्त्री संगम (समागम) करें। पुरुष अपने चन्द्र बल में प्रसन्नचित्त होकर नवांगना से प्रथम–समागम करे। विषम रात्रि में संभोग से गर्भ होने पर कन्या, समरात्रियों में पुत्र का जन्म होता है।

ग्राह्य तिथि—१ (कृ.), २, ३, ५, ७, १०, ११, १२ तथा शुक्ल पक्ष की १३

ग्राह्य वार—सोम, बुध, गुरु एवं शुक्रवार

ग्राह्य नक्षत्र—रोहि., मृग., उत्तरा-तीनों, हस्त, स्वाती, अनु., श्रव., धनि और शतभिषा

शुभ लग्न—१, ३, ५, ७, ९, ११ राशि लग्न

(15) नववधू द्वारा प्रथम पाककर्म मुहूर्त्त

नवविवाहिता वधू को ससुराल में सर्वप्रथम रसोई बनवाना शुरु करने हेतु विचारणीय शुभ काल–

ग्राह्य तिथि—१ (कृ.), २, ३, ५, ६, ७, १० तथा शुक्ल पक्ष की १३ व पूर्णिमा

ग्राह्य वार—सोम, बुध, गुरु, शुक्र एवं शनिवार

ग्राह्य नक्षत्र—कृति., रोहि., मृग, पुन., उत्तरा-तीनों, विशा., ज्ये., श्रव., धनि., शत. एवं रेवती।

शुभ लग्न—२, ५, ८, ११ राशि लग्न। जब चतुर्थ स्थान में शुभ ग्रह या ग्रहाभाव, सप्तम में बलयुत सौम्य ग्रह तथा अष्टम भाव भी शुद्ध हो।

(16) वास्तु भूमि का शुभाशुभ विचार

(क) गृहादि निर्माण हेतु जिस भूमि की शुभाशुभ परीक्षा करनी हो, तो शाम के समय वहाँ पर भूमि पूजन करवाने के पश्चात् वहाँ अपने एक हाथ लम्बा, एक हाथ चौड़ा और डेढ़ हाथ गहरा गड्ढा खोद कर उसे जल से भर दें। प्रातःकाल आकर उसे देखने पर, यदि वह गड्ढा पानी से भरा हुआ दिखे तो, भूमि शुभ जानें। यदि पानी न हो, तो मध्यम जानें, और यदि गड्ढा में पानी न हो और उसके आस-पास की मिट्टी फटी हुई हो, तो भूमि को अशुभ समझें।

(ख) वास्तुभूमि में परीक्षा के लिए भूमि में लगभग डेढ़ फुट गहरा उतना ही चौड़ा गड्ढा खोदें। खुदाई के समय यदि पत्थर, ईंट, ताम्बा, पात्र, धनादि द्रव्य मिलें, तो यह परिवार की आयु, धन, संतति आदि में वृद्धि होने के संकेत हैं। इसे शुभ शकुन मानना चाहिए। यदि भूमि खोदने पर कपाल, हड्डी, कोयला, केश, राख, गुठली, रुई, सीप खोपड़ी, लोहादि मिलें तो इसे अशुभ शकुन समझना चाहिए।

(ग) विश्वकर्मा के अनुसार एक अन्य परीक्षा भूमि में उत्तर दिशा की ओर एक लगभग डेढ़ फुट गहरा और डेढ़ फुट चौड़ा गड्ढा खोदें। गड्ढे में से सारी मिट्टी निकाल लें। तथा निकाली हुई मिट्टी को दुबारा उसी गड्ढे में भर देवें। यदि गड्ढा भर देने के बाद भी मिट्टी शेष बच जाती है, तो समझ लें कि भूमि उत्तम है। यदि फिर भरने के बाद मिट्टी शेष नहीं बचती और गड्ढा पूरा भर जाता है, तो इससे यह समझना चाहिए कि भूमि मध्यम स्तरीय होगी। यदि निकाली गई सारी मिट्टी गड्ढे में भरने पर भी, गड्ढा पूरी तरह नहीं भरता है, तो समझें कि ज़मीन निकृष्ट प्रकार की है।

(घ) फटी हुई, शूल (कांटों), दीमक आदि से युक्त ऊँची-नीची भूमि अशुभ होती है।

(ङ) **शुभ-भूमि**—चिकनी, गीली, उपजाऊ मिट्टी अथवा घास, पुष्प, लताओं, फूलों आदि से सुगन्धित एवं समतल भूमि गृह स्वामी एवं उसके परिवार के लिए सुख-सम्पत्ति में वृद्धिकारक होती है।

(च) मकान की नींव को गहरा खोदते समय यदि काली ईंटें देखने को मिलें, तो भूमि शुभ

जानें। हड्डी, केश, (बाल), कोयला राखादि निकलें तो वहां मकान बनवाने वाले को रोगादि से कष्ट रहे॥

(17) गृहारम्भ (नींव) मुहूर्त्त

विभिन्न सूर्य संक्रान्तियों में राहु-मुख से पृष्ठवर्तिनी दिशा में घर की नींव खोदना शुभता का द्योतक होता है। भूखण्ड में सूर्य की राशि के अनुसार सर्पाकार राहु का मुख, उदर एवं पुच्छ परिवर्तित होती रहती है। इसीलिए उस दिशा में खुदाई प्रारम्भ करनी चाहिए। जहाँ राहु का कोई अंश (अवयव) न हो-

(1) सूर्य, वृष, मिथुन या कर्क (ज्येष्ठ, आषाढ़ या श्रावण) में हो, तो नींव की खुदाई का प्रारम्भ **नैऋत्य** (दक्षिण-पश्चिम) कोण से करें।

(2) सूर्य सिंह, कन्या या तुला (भाद्र., आश्वि. या कार्तिक) में हो, तो नींव की खुदाई का प्रारम्भ **आग्नेय कोण** (पूर्व-दक्षिण) में करें।

(3) सूर्य वृश्चिक, धनु या मकर (मार्ग., पौष या माघ) में हो, तो नींव की खुदाई का प्रारम्भ **ईशान कोण** (उत्तर-पूर्व) में करें।

(4) सूर्य मेष, कुम्भ या मीन (वैशाख, फाल्गुन या चैत्र) में हो, तो नींव की खुदाई का आरम्भ **वायव्य कोण** (उत्तर-पश्चिम) से करें।

ध्यान दें, नींव की खुदाई में सुप्त-भूमि (भू-शयन) का विचार करना भी आवश्यक है।

***सुप्तभूमि (भू-शयन)*—(i) प्रत्येक सूर्य संक्रान्ति से ५, ७, ९, १५, २१ एवं २४वें प्रविष्टे को पृथ्वी सोई रहती है,** अतएव सुप्त भूमि के दिवसों में यथासम्भव कृषि, गृह-निर्माण, वापी, कुआं, तालाब के लिए भूमि का खनन न करें।

(ii) एक अन्य मतानुसार, सूर्य नक्षत्र से ५, ७, ९, १२, १९ तथा २६वें चन्द्र नक्षत्रों में भी भूमि का शयन होता है। **(पंचांगदिवाकर में दिए गए गृहारम्भ मुहूर्त्तों में इन दोनों मतों का अनुसरण होता है।)** (**भू-रजस्वला**–सूर्य-संक्रान्ति के दिन से १, ५, १०, ११, १६, १८, १९वें दिन भूमि रजस्वला रहती है। अतः इन दिनों भी यज्ञ, हवन, कृषि, तालाब, गृह निर्माणारम्भ आदि कार्यों का आरम्भ न करें–परन्तु अधिकतर पंचांगकार एवं विद्वान इस मत को मान्यता नहीं देते।)

ग्राह्य मास–वैशाख, ज्येष्ठ, श्रावण, मार्ग., माघ तथा फाल्गुन श्रेष्ठ कहे हैं। भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम हैं।

द्वार-मुख के अनुसार मास ग्रहण–जब सूर्य मेष-वृष-वृश्चिक-तुला राशि में हो, तो दक्षिण या उत्तर मुख का और जब सूर्य कर्क-सिंह-मकर-कुम्भ राशि में हो, तो पूर्व या पश्चिम मुख का गृह बनाना चाहिए।

पूर्व-पश्चिमाभिमुख गृह	उत्तरदक्षिणाभिमुख गृह
सौर श्रावण, भाद्रपद, माघ तथा फाल्गुन मास	सौर वैशाख, ज्येष्ठ, कार्तिक और मार्गशीर्ष मास

ग्राह्य तिथि–१ (कृ.), २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३ (शु.), १५

ग्राह्य वार–सोम, बुध, गुरु, शुक्र और शनिवार

ग्राह्य नक्षत्र–अश्विनी, रोहि., मृग., पुन, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वा., उत्तरा-तीनों, अनु., श्रव., धनि., शत. और रेवती।

शुभ लग्न–स्थिर या द्विस्वभाव लग्न शुभ होंगे (२, ३, ५, ६, ८, ९, ११, १२)। लग्न पर शुभ ग्रहों की दृष्टि, पापग्रह ३, ६, ११ में हों तथा शुभ ग्रह ८, १२वें भाव के अतिरिक्त अन्य भावों में हों, दशम भाव में सबल सौम्य ग्रह तथा चन्द्रमा १, ६, ८, १२वें न हों।

अग्निबाण–'गृहगोपेऽग्निपंचकम्' अनुसार गृहारम्भ के समय अग्निबाण वर्जित है। परन्तु अधिकतर विद्वानों के अनुसार लकड़ी आदि की छत डालते समय, इलैक्ट्रिक वायरिंग प्रारम्भ करते हुए तथा स्तम्भ आरोहणादि काल में ही अग्निबाण का विचार करना चाहिए। अपि च, लग्न बल की उपलब्धि में बाण विचार निरर्थक है।

वृषवास्तु चक्र

बैल के अंग	शिर	अगले पाद (पांव)	पृष्ठपाद (पिछले पांव)	पृष्ठ (पीठ)	दक्ष कुक्षि (दाईं कोख)	पुच्छ (पूँछ)	वाम कुक्षि (बाईं कोख)	मुख
नक्षत्र	३	४	४	३	४	३	४	३
फल	अग्नि-भय	शून्य (०)	स्थिरता शान्तिप्रद	श्रीलक्ष्मी प्राप्ति	लाभ-प्रद	स्वामी कष्टकारी	दारिद्र्य	सदा पीड़ा व कष्ट

गृहारम्भ के मुहूर्त्तों में से मास शुद्धि, ग्रह-बलादि देखने के बाद, कल्पित वृष (बैल) के अंगों पर अभिजित् सहित अट्ठाईस नक्षत्रों को प्रत्यारोप (स्थापित) करें। सूर्याधिष्ठित नक्षत्र से मुहूर्त्त के दिन तक गणना करने पर मुहूर्त्त वाला दिन दोषपूर्ण आता हो, तो उस स्थिति में मुहूर्त्त का दिन बदल लेना चाहिए।

उदाहरण–जैसे सूर्य के नक्षत्र से लेकर प्रथम तीन नक्षत्रों तक गिनने पर **मुहूर्त्त दिन** पड़ता हो, तो गृह में **अग्निदाह** का भय रहेगा। आगे 4, 5, 6 एवं 7वें नक्षत्र पर मु. नक्षत्र आवे तो शून्य यानि-कुछ भी शुभाशुभ फल न हो। अर्थात् अपने कर्मों के अनुसार ही फल मिले। आगामी चार (8, 9, 10, 11)वें नक्षत्रों के मध्यपात हो तो भाग्य में स्थिरता एवं शान्ति रहेगी। चतुर्थ भाग उससे आगे के तीन नक्षत्रों के मध्य मुहूर्त्त आ जावे तो लक्ष्मी प्राप्ति अर्थात् धन प्राप्ति के योग होंगे। इसी क्रमानुसार फल जानें।

निष्कर्षतः–गृह निर्माण का आरम्भ करने के लिए सूर्य के नक्षत्र से प्रथम सात नक्षत्र अशुभ। आठवें नक्षत्र से अठारहवें तक शुभ तथा शेष अंतिम दश नक्षत्र पुनः अशुभ होंगे।

ध्यान रहे, भूखनन के बाद भूमि-पूजन एवं वास्तु-पूजा करनी आवश्यक है।

शिलान्यास मुहूर्त्त–गृहारम्भ की शुभ बेला में खनित नींव को गृहारम्भ के लिए निर्दिष्ट

समय-शुद्धि का विचार करके विधिवत् पत्थरों, शिलाओं, ईंटों से पूरित कर देना चाहिए। वृहत्संहिता अनुसार पहिले से खोदी हुई नींव में पूर्व व दक्षिण दिशा के मध्य में अर्थात् अग्निकोण में पूजा करके प्रथम शिला स्थापित करके प्रदक्षिणा के क्रम से अर्थात् अग्नि के बाद दक्षिण-पश्चिम (नैऋत्य) तथा वायव्यादि(उत्तर) दिशाओं में स्थापित करना चाहिए एवं खम्भ को भी इसी रीति से बनवाना चाहिए।

■■■■■ नींव में रखने योग्य पदार्थ ■■■■■

शिलान्यास हेतु आवश्यक सामग्री–

- तांबे की गड़वी में चावल भरकर तथा सरसों, हल्दी भरें तथा गड़वी को मौली तथा आम्र पत्तों से बांध लें। ➽ ५ नई ईंटे
- ५ पंचरत्नी तथा गीता आदि धार्मिक ग्रन्थ
- १ जोड़ी सर्प, सर्वोषधि, श्रीफल एक, लाल वस्त्र, जनेऊ-जोड़ा
- **(विशेष)** –भाद्रपद, आश्विनी और कार्तिक मास में भवन निर्माण हो तो सर्प का मुख पूर्व में होना चाहिए।
- फाल्गुन, चैत्र, वैशाख मासों में निर्माण हो तो सर्प का मुख पश्चिम दिशा की ओर हो।
- ज्येष्ठ, आषाढ़ श्रावण मासों में सर्प का मुख उत्तर दिशा की ओर हो।
- मार्गशीर्ष, पौष, माघ मासों में सर्प का मुख दक्षिण दिशा में होना चाहिए।
- ५ कौड़ीयां, सिंधूर, ५ सुपारी साबुत, 1 नारियल।
- दरिया या तालाब के किनारे की घास तथा १ पाव कच्चा दूध। (यदि सम्भव हो तो गंगाजल एवं गंगादि तीर्थ से लाई हुई रेत या मिट्टी भी रख दी जाए तो अधिक अच्छा है।

(18) द्वार–शाखा स्थापन मुहूर्त्त

उचित दिशा में प्रमुख द्वार का निर्माण व उसमें चौखट लगवाने में उपयुक्त काल शुद्धि–
तिथि–५, ७, ८, ९ [पंचमी धनदा चैव, मुनिनन्दवसौ शुभम्।।–ज्येतिर्निबन्ध]
ग्राह्य वार–सोम, बुध, गुरु, शुक्र
ग्राह्य नक्षत्र–अश्वि., रोहि., मृग., पुष्य, उत्तरा–तीनों, हस्त, स्वा., श्रव. और रेवती।

सूर्यभात् द्वार-देहली चक्र

सूर्यभात् नक्षत्र	४	८	८	३	४
फल	लक्ष्मी प्राप्ति	उद्वेग	देहसौख्य	मृत्युतुल्य कष्ट	सौख्य
वास	शिर	चतुष्कोण	चतुः शाखा	देहली	मध्य

(19) जलाशय, देवालय खनन मुहूर्त्त

सामान्य रूप से कुआँ, तालाब, बावड़ी आदि समस्त जलस्थानों का शुभारम्भ निम्न मुहूर्त्त में शास्त्र-सम्मत होगा–

ग्राह्य मास–वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ (मिथुनार्क), माघ तथा फाल्गुन।
ग्राह्य तिथि–शुक्ल पक्ष की २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३
ग्राह्य वार–सोम, बुध, गुरु, शुक्र।
ग्राह्य नक्षत्र–अश्वि., रोहि., मृग., पुन, पुष्य, उत्तरा–तीनों, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, श्रव., धनि., शत., रेवती।
लग्न–शुद्धि–२, ४, ७, ९, १०, ११, १२ आदि राशि लग्न तथा शुभ ग्रहों के नवांश। केन्द्र में शुभ ग्रह हों।
विशेष–गुरु-शुक्रास्त, गुर्वादित्य, दक्षिणायन, भद्रा, कुयोगादि त्याज्य।

(20) राहु मुख ज्ञान चक्रम्

सूर्य के भिन्न-भिन्न राशियों में संचार-कालीन देवालय-प्रारम्भ, गृहारम्भ तथा जलाशय (कुआँ, नल, तालाबादि) के लिए भू-खननोपयोगी दिशा ज्ञान चक्र है। तीन-तीन राशि की स्थिति में ऊपर के क्रम से राहु के मुख की दिशा लिखी है, उसकी विपरीत (पृष्ठ) दिशा में खात करना शुभ होगा।

सूर्यराशिवशात् खात चक्रम

राहुमुखम्	ईशान्ये	वायव्ये	नैऋत्ये	आग्नये
देवालयारम्भे सूर्य	मीन, मेष, वृष	मिथुन, कर्क, सिंह	कन्या, तुला, वृश्चिक	धनु, मकर, कुम्भ
गृहारम्भे सूर्य	सिंह, कन्या, तुला,	वृश्चि., धनु, मकर	कुम्भ, मीन, मेष	वृष, मिथुन कर्क
जलाशयारम्भे सूर्य	मकर, कुम्भ, मीन	मेष, वृष, मिथुन	कर्क, सिंह, कन्या	तुला, वृश्चि., धनु
खातदिशा (खुदाई) शुभ→	आग्नेये (पूर्व-दक्षिण)	ईशाने (उत्तर-पूर्व)	वायव्ये (उत्तर-पश्चिम)	नैऋत्ये (दक्षिण-पश्चिम)

सूर्यभात् कूप-नल (जल चक्र

नक्षत्र	३	३	३	३	३	३	३	३	३
दिशा	मध्य	पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान
प्राप्यजल	स्वादु	खण्डित	स्वादु	अभाव	स्वादु	क्षार	मिश्रित	मधुर	क्षार

(21) नूतन गृह प्रवेश मुहूर्त्त

ग्राह्य मास–निरयण उत्तरायणकाल अर्थात् वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ (लगभग 15 जुलाई तक की कालावधि), माघ तथा फाल्गुन मास। कार्तिक एवं मार्गशीर्ष मास मध्यम माने गए हैं।
ग्राह्य वार–चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र एवं शनिवार।
ग्राह्य शुभ तिथियां–रिक्ता तिथियां (४, ९, १४) तथा अमावस को छोड़कर शेष प्रायः सभी तिथियां।

में शास्त्र-सम्मत होगा– | प्रायः सभी तिथियाँ।

प्रकारन्तरेण, दिग्द्वार के अनुसार अनुरूप गृह-प्रवेशोपयोगी तिथियां–

द्वार दिशा	पूर्व	पश्चिम	उत्तर	दक्षिण
शुभ तिथियां	५,१०,१५	२,७,१२	३,८,१३	१,६,११

ग्राह्य नक्षत्र–अश्वि., रोहि., मृग., पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., उ.फा., उ.षा., उ.भा., श्रव., धनि., शत., रेवती।

'गृह प्रवेश में कलश वास्तु चक्र'

नवगृह प्रवेश सम्बन्धी मुहूर्त्तों में और अधिक सूक्ष्मता प्राप्ति के लिए कलश-वास्तु चक्र का प्रयोग किया जाता है। किसी काल्पनिक कलश को आठ विभागों में बाँट लें। मुहूर्त्त काल में सूर्याधीष्ठित नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र (मुहूर्त वाला नक्षत्र) तक यथाक्रम नक्षत्र रखें। घट चित्र रेखांकित है। सूर्य नक्षत्र से चंद्र नक्षत्र 1 (समान) होने पर मुख पर स्थापित करें। सूर्य के नक्षत्र से आगे गिनने पर दो से पाँच अर्थात् आगे के चार नक्षत्र पूर्व दिशा में रखें, इसी प्रकार 6 से 9 तक चार नक्षत्र कलश के दक्षिण में रखें, फिर दस से तेरह तक चार नक्षत्र पश्चिम में रखें, फिर 14 से 17 तक चार नक्षत्र उत्तर में रखें तथा 18 से 21 तक चार नक्षत्र कलश के उदर में रखें, फिर 22 से 24 तक तीन नक्षत्र कलश के तल में रखें तथा शेष 25 से 27 तीन नक्षत्र कलश के कण्ठ में रखें। इसके बाद गृह प्रवेश का फल इस प्रकार जानें–

कुम्भ गृह-प्रवेश
उत्तर (१४ से १७ तक) (4)
(4) पूर्व (२ से ५ तक)
उदर १८ से २१
पश्चिम (4) (१० से १३ तक)
दक्षिण 4 (६ से ९ तक)

गृह-प्रवेश में नक्षत्र फल	फल
1. यदि मुख का नक्षत्र ही प्रवेशनक्षत्र	अग्नि से भय होता है।
2. पूर्व के चार नक्षत्रों में भवन	उजाड़ होने का भय होता है।
3. दक्षिण के चार नक्षत्रों में	धन लाभ होता है।
4. पश्चिम के चार नक्षत्रों में	धन-वैभव प्राप्त होता है।
5. उत्तर के चार नक्षत्रों में	कलह-क्लेश रहता है।
6. उदर के चार नक्षत्रों में	विनाश का भय रहता है।
7. तल के तीन नक्षत्रों में	स्थिरता (स्थायी वास)।
8. कण्ठ के तीन नक्षत्रों में	गृहस्वामी की चिरायु हो।
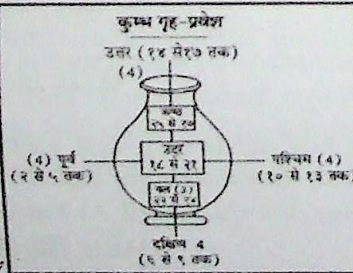
शुभ लग्न–विशेष रूप से गृहस्वामी के जन्म-लग्न या जन्मराशि से अष्टम लग्न न हो, जन्मराशि/जन्मलग्न से उपचय 3, 6, 10 या 11वें तथा स्थिर लग्न में गृह-प्रवेश करना चाहिए। ग्राह्य लग्न में लग्न से 1, 2, 5, 7, 9, 10 भावों में शुभ ग्रह और 3, 6, 11वें भावों में पाप-ग्रह हों तथा चतुर्थ व अष्टम भाव शुद्ध होने पर गृह-प्रवेश करना शुभ होता है।

वामस्थ रवि विचार–गृह प्रवेश के समय ग्राह्य लग्न में वामस्थ सूर्य शुभ माना गया है। गृह प्रवेश के लग्न से 8वें स्थान में जो राशि हो, तो उससे 5 स्थान आगे–8, 9, 10, 11, 12वें भाव में यदि सूर्य हो, तो पूर्वदिशा की ओर गृहप्रवेश में रवि वाम होता है और दक्षिणाभिमुख: वाले द्वारगृह में प्रवेश लग्न के समय यदि सूर्य 5, 6, 7, 8, 9वें भाव में सूर्य हो, तो दक्षिण दिशा वाले घर में प्रवेश के लिए सूर्य वाम होगा। इसी प्रकार गृह प्रवेश लग्न से दूसरे स्थान से आगे 5 स्थान 2, 3, 4, 5, 6वें भाव में सूर्य होने से पश्चिम दिशा वाले घर में प्रवेश के लिए सूर्य वाम होगा तथा प्रवेश लग्न से 11वें स्थान से आगे 5 स्थानों 11, 12, 1, 2, 3 भाव में सूर्य हो, तो उत्तर दिशा वाले घर में प्रवेश के लिए सूर्य वाम होता है।

वामस्थ रवि ज्ञानार्थ चक्र

द्वार दिशा	गृह-प्रवेश लग्न से	आगे 5 स्थान तक वामस्थ सूर्य
पूर्वाभिमुख गृह	अष्टम स्थान से	सूर्य 8, 9, 10, 11, 12वें भाव
दक्षिणाभिमुख गृह	पंचम स्थान से	सूर्य 5, 6, 7, 8, 9वें भाव
पश्चिमाभिमुख गृह	दूसरे स्थान (भाव) से	सूर्य 2, 3, 4, 5, 6ठे भाव
उत्तराभिमुख गृह	11वें स्थान (भाव) से	सूर्य 11, 12, 1, 2, 3 रे भाव

स्पष्टीकरण–जैसे आपके नवीन गृह का द्वार मुख पूर्व की ओर है तथा गृह-प्रवेश ग्राह्य लग्न सिंह है, तो सूर्य की मीन, मेष. वृष, मिथुन व कर्क राशि संचारकालीन (चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ तथा श्रावण) सूर्य वामस्थ होगा। अत: चैत्र, श्रावण को छोड़कर वै., ज्ये., आषा. में गृहप्रवेश करेंगे, तो अधिक शुभकारक होगा। इसी प्रकार अन्य निर्धारित मुहूर्त्त-लग्नों एवं द्वारमुख की दिशा के अनुसार वामस्थ रवि का विचार करें।

(22) पुरातन (पुराने) गृह–प्रवेश मुहूर्त्त

अस्थायी रूप से किराये (ट्रांस्फर आदि के कारण) आदि के मकान में प्रवेश अथवा पुराने गृह में प्रवेश के मुहूर्त्त के लिए ऊपर दिए गए शुभ मासों के अतिरिक्त **श्रावण मास** भी ग्राह्य होगा। पुरातन गृह प्रवेश मुहूर्त्तों में **रिक्ता तिथि, गुरु-शुक्रास्त काल, अधिक-क्षय मास भी ग्राह्य होते हैं।** परन्तु मासान्त, भद्रा, व्यतीपात, वैधृति, त्रयोदश-दिनात्मक पक्ष, तिथि-क्षय, निर्बल चन्द्र, युति, वेधादि का विचार अवश्य करना चाहिए। यद्यपि नवग्रह शान्ति, स्वास्तीवाचन, कलश-पूजनादि आपेक्षित हैं, परन्तु वास्तु-शान्ति, कलशचक्र शुद्धि, स्थापनादि आवश्यक नहीं। ग्राह्य वार, तिथि, नक्षत्र नूतन गृह प्रवेश की भान्ति ही रहेंगे।

(23) विपणि मुहूर्त्त

(अर्थात् दुकान, व्यवसाय, फैक्टरी शुरु करने के मुहूर्त्त)

शुभ एवं ग्राह्य मास–वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, माघ व फाल्गुन। ***ग्राह्य तिथियाँ***–रिक्ता तिथियाँ (४, ९, १४), कृष्ण १३ तथा अमावस तिथियाँ छोड़कर शेष तिथियाँ। ***ग्राह्य नक्षत्र***–अश्वि., रोहि., मृग., पुन, मूल, पुष्य, उत्तरा-तीनों, हस्त, चित्रा, अनु., श्रव., अभिजित् और रेवती। ***शुभ वार***–रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र एवं शनिवार। ***शुभ लग्न***–कुम्भ लग्न त्याज्य है। शेष राशि लग्नों में भी चन्द्र, बुध-शुक्र केन्द्र स्थानों में, अष्टम तथा द्वादश भाव शुद्ध हों तथा 2, 10, 11वें भावों में शुभ ग्रह हों। **नोट**–क्रूर ग्रह की युति, वेध, गुरु-शुक्रस्तादि का विचार तो करना ही चाहिए।

(24) बीज बोने (हल चलाने) का मुहूर्त्त

ग्राह्य तिथियाँ–१ (कृ.) २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ (शुक्ल) तथा पूर्णिमा। ***ग्राह्य वार***–रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र एवं शनिवार ***ग्राह्य नक्षत्र***–अश्वि., रोहि., मृग., पुन, पुष्य, मघा, उत्तरा-तीनों, हस्त, चित्रा, स्वा., विशा., अनु., मूल, धनि. तथा रेवती।

(25) अनाज संग्रह (भरने) का मुहूर्त्त

ग्राह्य तिथियाँ–२, ३, ५, ७, ८, ११, १२, १३ (शुक्ल), १५। ***ग्राह्य वार***–चन्द्र,

बुध, गुरु व शुक्रवार। ***ग्राह्य नक्षत्र***—अश्वि., रोहि., मृग, पुन., पुष्य, उत्तरा-तीनों, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, श्रव., धनि., शत. तथा रेवती।

(26) औषधि निर्माण एवं सेवन मुहूर्त्त

ग्राह्य तिथि—१ (कृ.) २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ (शु.)। ***ग्राह्य वार***—रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र। ***ग्राह्य नक्षत्र***—यहाँ जन्म नक्षत्र त्याज्य रहेगा। लघु संज्ञक (अश्वि., पुष्य, हस्त, अभि.), मृदुसंज्ञक (मृग., चित्रा, रेवती), चरसंज्ञक (पुन., स्वा., श्रव., धनि., शत.) तथा मूल नक्षत्र (ज्येष्ठा, मूल) ***लग्न शुद्धि***—द्विस्वभाव राशिलग्न (३, ६, ९, १२) तथा लग्न, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव शुद्ध हों अर्थात् इन भावों पर क्रूर की स्थिति व दृष्टि वर्ज्य है।

(27) सर्ववस्तु क्रय-विक्रय मुहूर्त्त

खरीदने के नक्षत्र में बेचना शुभ नहीं है। विक्रय (बेचने) के नक्षत्र में खरीदना अच्छा नहीं होता। ***वस्तु खरीदने के नक्षत्र***—रेव., शत., अश्वि, स्वा., श्रव. और चित्रा नक्षत्रों में शुभ है। ***वस्तु बेचने के नक्षत्र***—तीनों पूर्वा, विशाखा, कृतिका, आश्लेषा और भरणी नक्षत्र। लग्न शुद्धि, तिथ्यादि के लिए विपणि मुहूर्त्त देखें।

(28) आप्रेशन कराने का मूहूर्त्त

ग्राह्य तिथि—२, ३, ५, ६, ७, १०, १२ (१३-शुक्ल पक्ष की)। ***ग्राह्य वार***—रवि, मंगल, गुरु और शनिवार। ***ग्राह्य नक्षत्र***—अश्वि., रोहि., मृग., हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., अभि., श्रव.।

(29) मन्त्र सिद्ध करने का मुहूर्त्त

ग्राह्य तिथि—२, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शु.) तथा १५ ***ग्राह्य वार***—रवि, चन्द्र, बुध, गुरु एवं शुक्रवार ***ग्राह्य नक्षत्र***—अश्वि., मृग., उ.फा., हस्त, श्रव. तथा विशाखा। इसके अतिरिक्त रविपुष्य योगों, निरयण एवं सायन संक्रान्ति संक्रमण-काल, दीपावली आदि योगों में मन्त्र सिद्धि सम्बन्धी कार्य किए जाते हैं।

(30) भूमि-खरीदने का मुहूर्त्त

ग्राह्य मास—वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ (मिथुनार्क तक-15 जुला.), मार्गशीर्ष, माघ और फाल्गुन मास भूमि क्रय के लिए उत्तम कहे गए हैं। ***ग्राह्य तिथियाँ***—१ (कृष्ण पक्षे), कृष्ण तथा शुक्लपक्ष की २,५,६,१०,११ एवं पूर्णिमा।। ***ग्राह्य नक्षत्र***—मृग., पुन., आश्ले., मघा, विशा, अनु., तीनों पूर्वा, मूल, स्वा., शत और रेवती।। ***शुभ वार***—मंगल, गुरु एवं शुक्रवार।

(31) मुकद्दमा दायर करने का मुहूर्त्त

ग्राह्य तिथि—३, ५, ८, १०, १३ (शुक्लपक्ष) तथा पूर्णिमा ***ग्राह्य वार***—रवि, मंगल, बुध एवं गुरुवार। ***ग्राह्य नक्षत्र***—भरणी, आर्द्रा, आश्ले., मघा, पूर्वा-तीनों, ज्येष्ठा तथा मूल। ***ग्राह्य लग्न***—३, ६, ७, ८, ११ राशि लग्न। जब शुभ ग्रह लग्न में हो, पापग्रह ३, ६, ११वें हों तथा अष्टम भाव शुद्ध हो। **विशेष**—गोचरानुसार याचिकाकर्त्ता का चंद्रमा एवं मंगल भी बलान्वित होने चाहिएं।

(32) पशु खरीदने का मुहूर्त्त

ग्राह्य तिथि—१ (कृष्णपक्ष की), २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२ (कृष्ण व शुक्ल पक्ष की), १३ (शुक्ल पक्ष की), १५ ***ग्राह्य वार***—रवि, चन्द्र, बुध, गुरु एवं शनिवार। ***ग्राह्य नक्षत्र***—अश्वि., पुन, पुष्य, हस्त, विशा., ज्ये., धनि., शत और रेवती।

(33) ऋण-दान (कर्ज़ देने) का मुहूर्त्त

ब्याज अर्जित करने के उद्देश्य से धन का उधार देना निम्न मुहूर्त्त में हितकर है-

ग्राह्य तिथि—१ (कृष्ण पक्ष की), २, ३, ६, ७, ८, १०, ११, १२ (कृष्ण एवं शुक्ल पक्ष की), १३ (शुक्ल) तथा १५ ***ग्राह्य वार***—रवि, चन्द्र, मंग., गुरु, शुक्र एवं शनिवार। ***ग्राह्य नक्षत्र***—अश्वि., मृग., पुन, पुष्य, चित्रा, स्वा., विशा, श्रव., धनि., शत और रेवती। ***लग्न शुद्धि***—१, ४, ७, १० राशि लग्न।। पंचम-नवम भाव में शुभग्रह तथा अष्टम भाव शुद्ध होना चाहिए। **विशेष**—बुधवार को अपना धन किसी को नहीं देना चाहिए। अर्थात् बुधवार को दिया हुआ धन वापिस नहीं मिलता। भद्रा, व्यतीपात, महापात तथा अमावस में दिया गया धन वापिस प्राप्त नहीं होता।

(34) ऋण-ग्रहण (कर्ज़ लेने) मुहूर्त्त

ग्राह्य तिथि—१ (कृष्ण पक्ष की), २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२ (कृष्ण व शुक्लपक्ष की), १३ (शुक्ल), १५ ***ग्राह्य वार***—सोम, बुध, गुरु, शुक्र एवं शनिवार। ***ग्राह्य नक्षत्र***—अश्वि., रोहि., मृग. पुन, पुष्य, उत्तरा-तीनों, हस्त, चित्रा, अनु., श्रव., धनि, शत तथा रेवती।। तथापि मृग., चित्रा, अनु. तथा रेवती विशेष रूप से शुभ हैं। ***शुभ लग्न***—१, ४, ७, १० राशि लग्न श्रेष्ठ है। शुभ ग्रह त्रिकोण (5, 9वें) तथा अष्टम भाव शुद्ध हो। **विशेष**—मंगलवार को कर्ज के रूप में किसी से धन नहीं लेना चाहिए। संक्रान्ति वाले दिन, वृद्धि योग, हस्त नक्षत्र और रविवार में ऋण (कर्ज़) नहीं लेना चाहिए।

अपि च, "**ऋणच्छेदं कुजे कुर्यात् संचयं सोमनन्दे**"-मंगलवार को ऋणों को चुका देना तथा बुधवार को धन संचय करना चाहिए।

(35) चुनाव में खड़े होने का मुहूर्त्त

शुभ तिथियाँ—(१ कृ.), २, ३, ५, ९, १०, १२ एवं १५ शुक्ल। ***शुभ वार***—सोम, बुध, गुरु एवं शुक्रवार। ***शुभ नक्षत्र***—अश्वि., रोहि., पुर्न, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, अनु., श्रव., धनि., रेवती। ***शुभ लग्न***—१, ४, ७, १०। **विशेष**—केन्द्र-त्रिकोण में शुभ ग्रह हों, ३, ६, ११वें पाप ग्रह हों। लग्न एवं लग्नेश पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो। बुध, शुक्र, गुरु उदित हों। चन्द्र बली हो तथा प्रत्याशी की राशि मुहूर्त्त वाले दिन-छटे, आठवें एवं १२वें न हो। संसद् में शपथ ग्रहण के समय **स्थिर लग्न** प्रशस्त होता है।

(36) नवीन वस्त्र धारण करने का मुहूर्त्त

विवाह, यज्ञ, सम्वत् या वर्षारम्भ में, विशेषोत्सव, त्यौहार, प्रेम के उपहार-स्वरूप, जन्म-नक्षत्र के दिन, ईश्वर भक्ति में अथवा ब्राह्मण की आज्ञा मिलने पर बिना पंचांग-शुद्धि के भी नवीन वस्त्र धारण किए जा सकते हैं। यद्यपि व्यक्ति अपना चन्द्रबल देखकर और शुभ लग्न में नूतन वस्त्रों को धारण करें- ***शुभ तिथियाँ***—१ (कृष्ण), २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शु.) व पूर्णिमा। ***शुभ वार***—रवि, बुध, गुरु व शुक्र ***शुभ नक्षत्र***—अश्वि., रोहि., पुन. पुष्य, उत्तरा (तीनों), हस्त, चित्रा, स्वा, विशा., अनु. धनि. व रेवती।

विवाह-मुहूर्त्त में लत्तादि दस दोष विचार

विवाह-मुहूर्त्त में लत्तादि दस दोष विचार

विवाह मुहूर्त्तों के साधन में लत्ता, पात, युति, वेध, जामित्र, पंचबाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रान्तिसाम्य और दग्धातिथि-इन दश दोषों का विचार करके निर्णय लेना आवश्यक है। पंचांगदिवाकर या किसी अन्य पंचांग में भी इन दस दोषों का विचार करके ही विवाह मुहूर्त्त दिए जाते हैं। इन दस महादोषों में से वेध, मृत्युबाण तथा क्रान्तिसाम्य-ये तीन महादोष अपरिहार्य होने से विवाह में सर्वत्र सर्वथा वर्जित हैं-शेष सात दोषों में से चार से अल्प दोष रहने पर वे विवाह-मुहूर्त्त की लग्न-शुद्धि से नष्ट हो जाते हैं। विवाह मुहूर्त्त में उपरोक्त दस दोषों में से क्रमश: जो दोष वर्तमान रहता है, उसे वक्ररेखा (ऽ) से तथा जो दोष नहीं रहता, उसे खड़ी रेखा (।) से सूचित किया जाता है। जैसा कि पंचांगदिवाकर के विवाह मुहूर्त्तों में दस महादोषान्तर्गत शुद्धि-रेखा के स्तम्भ में आपको मिलेगा। ये रेखायें इस पंचांग या अन्य किसी भी पंचांग में यथाक्रम शुद्धतापूर्वक लगायी गयी हैं या नहीं, इसकी जाँच आप चाहें तो सरलता से कर सके तथा स्वयं विवाह-मुहूर्त्त शोधन में सुयोग्य बन जाएं। इसलिए प्रत्येक महादोष का विचार व चक्र दिया जा रहा है-

(1) लत्तादोष-चक्र

विवाह नक्षत्र → ग्रह	अश्वि.	रोहि	मृग.	मघा	उ.फा	हस्त	चित्रा	स्वाती	अनु	मूल	उ.षा.	श्रवण	धनि.	उ.भा.	रेव.
सूर्य	अनु	पू.षा.	उ.षा.	उ.भा.	अश्वि.	भर.	कृति.	रोहि	आर्द्रा	पुष्य	मघा	पू.फा.	उ.फा.	स्वा.	विशा.
मंग.	उ.भा.	भरणी	कृति.	पुष्य	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	स्वाती	अनु.	मूला	पू.षा.	उ.षा.	शत.	पू.भा.
बुध	पुर्न	मघा	पू.फा.	विशा.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	धनि.	पू.भा.	रेवती	अश्वि.	भर.	मृग.	आर्द्रा
गुरू	धनि.	उ.भा.	रेवती	मृग.	पुर्न.	पुष्य	आश्ले	मघा	उ.फा.	चित्रा	विशा.	अनु.	ज्ये.	उ.षा.	श्रव.
शुक्र	मृग.	पुष्य	अश्ले	चित्रा	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	उ.षा.	धनि.	पू.भा.	उ.भा.	रेव.	कृति.	रोहि.
शनि	उ.षा.	शत	पू.भा.	कृति.	मृग.	आर्द्रा	पुर्न.	पुष्य	मघा	उ.फा.	चित्रा	स्वा.	विशा.	मूल	पू.षा.
राहु	पू.षा.	धनि.	शत.	भर.	रोह.	मृग.	आर्द्रा	पुर्न	अश्ले	पू.फा.	हस्त	चित्रा	स्वा.	ज्ये.	मूल

***(i)* लत्तादोष**-ऊपर की प्रथम पंक्ति में लिखे गए विवाह-नक्षत्रों के नीचे जिस ग्रह का नक्षत्र आ जाए, तो उस ग्रह से सम्बन्धित लत्तादोष होगा। मान लीजिए आपने रोहिणी नक्षत्र के विवाह हेतु लत्तादोष देखना हो तो साथ दिए गए चक्र (तालिका) में सूर्य यदि पू.षा. में हो अथवा गुरु उ.भा. नक्षत्र में हो या राहु (या केतु) धनिष्ठा नक्षत्र में हों, तो उन्हीं ग्रहों का लत्तादोष माना जाएगा।

(2) पातदोष चक्र

विवाह नक्षत्र	अश्वि.	रोह.	मृग.	मघा	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वा.	अनु.	मूल	उ.षा.	श्रव.	धनि.	उ.भा.	रेव.
सूर्य नक्षत्र	रेव.	आर्द्रा	मृग	अश्वि	कृति	भर.	रोहि	कृति.	अश्वि	रोह.	भर.	अश्वि	रेव.	भर.	अश्वि.
	श्ले.	पुर्न	आर्द्रा	मृग	आर्द्रा	मृग.	श्ले.	पुष्य	आर्द्रा	श्ले.	पुर्न.	आर्द्रा	मृग	पू.फा.	मघा
	मघा	पू.फा.	मघा	पुष्य	पू.फा.	मघा	चित्रा	हस्त	पू.फा.	ज्ये.	विशा.	स्वा.	चित्र	उ.फा.	पू.फा.
	चित्रा	चित्रा	हस्त	हस्त	विशा	स्वा.	धनि	श्रव.	पू.षा.	मूल	अनु.	विशा.	स्वा.	विशा.	स्वा.
	अनु.	मूल	ज्ये.	ज्ये.	पू.भा.	शत.	शत.	धनि.	उ.षा.	धनि	उ.षा.	पू.षा.	मूल	मूल	ज्ये.
	श्रव.	शत.	धनि.	रेव.	उ.भा.	पू.भा.	अश्वि.	रेव	पू.भा.	उ.भा.	शत.	धनि.	श्रव.	शत.	धनि.

***(ii)* पातदोष**-विवाह नक्षत्रों के नीचे विवाह-काल में सूर्य निम्न नक्षत्रों पर हो, तो पातदोष होता है। **उदाहरण**-विवाह-नक्षत्र यदि श्रवण हो, तो सूर्य-अश्वि, आर्द्रा, स्वा., विशाखा, पू.षा. एवं धनि. आदि नक्षत्र में हो, तो पातदोष होगा। **विशेष**-हर्षण, वैधृति, साध्य, व्यतीपात, गण्ड और शूल योगों का अन्त जिस विवाह नक्षत्र में हो, वह भी पात-दूषित हो जाता है। विवाह नक्षत्र में शूल योग हो या उसका अन्त हो, तो '**भुजंग**' नामक पातदोष होता है, जोकि सर्वत्र त्याज्य माना जाता है। **नोट**-वैधृति-व्यतिपात की सम्पूर्ण घड़ियां, शूल-योग की प्रथम 5 घड़ियां, गण्ड की प्रथम 6 घड़ियां विशेषत: त्याज्य हैं। हर्षण, साध्य को पूज्य माना गया है।

(3) युति दोष-जिस नक्षत्र का विवाह निकाल रहे हों, यदि उसी नक्षत्र में कोई ग्रह हो तो उस ग्रह की युति का दोष माना जाता है। 'श्रीपति' अनुसार पापग्रहों की युति विशेषतया त्याज्य मानी जाती है। जबकि शुभ ग्रह की युति शुभ मानी जाती है। परन्तु चन्द्रमा यदि अपनी (स्व) राशि, उच्च या मित्रग्रह की राशि में हों, तो युति दोष नही होता, अपितु वर-वधू का कल्याण करने वाला होता है। यथा-चन्द्रमा वृष, मिथुन, सिंह, कन्या राशि में हो, तो क्रूर ग्रह की युति का परिहार माना जाता है।

(4) वेध दोष-पंचशलाका चक्र अनुसार विवाह नक्षत्र यदि किसी अन्य क्रूर आदि ग्रह से विद्ध हो जाएं, तो उस नक्षत्र का विवाह सर्वथा त्याज्य माना जाता है। वेध नक्षत्र ज्ञान के लिए पंचशलाका एवं सप्तशलाका चक्रों का आश्रय लिया जाता है। वधू-प्रवेश, दान, वर-कन्या का वरण एवं विवाहादि शुभ कार्यों में

(4) वेध दोष चक्र

अश्वि	रोहि.	मृग.	मघा	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वा.	अनु.	मूल	उ.षा.	श्रव.	धनि.	उ.भा.	रेव.
पू.फा.	अभि.	उ.षा.	श्रव.	रेव.	उ.भा.	पू.भा.	शत.	भर.	पुर्न	मृग.	मघा	आश्ले	हस्त	उ.फा.

'पंचश्लाका' चक्र का तथा अन्य मंगल कार्यों में सप्तश्लाका चक्र के द्वारा विचार करना चाहिए। विवाह पटल अनुसार सूर्यवेध से वैधव्य, भौमवेध से पुत्रशोक बुधवेध से वन्ध्या योग, गुरुवेध से प्रव्रज्या, शुक्रवेध से केवल कन्या सन्तति तथा शनि, राहु-केतु वेध से दारिद्रय योग होता है।

ज्योतिर्निबन्धानुसार सौम्य ग्रह से विद्ध नक्षत्र का चरण ही त्याज्य होता है, परन्तु क्रूर ग्रह से कोई भी चरण विद्ध होने पर पूर्ण नक्षत्र त्याज्य माना जाता है। यथा-बुध, गुरु, शुक्रादि शुभ ग्रह का केवल चरण वेध (प्रथम-चतुर्थ, द्वितीय-तृतीय) का विचार करें। जबकि सूर्य, मंगल, शनि, राहु आदि क्रूर ग्रहों के सभी चरण त्याज्य होंगे। अर्थात् वेधदोष होगा।

(5) यामित्रदोष–

विवाह नक्षत्र के नीचे वाले नक्षत्रों पर स्थित कोई भी ग्रह उस नक्षत्र में होने पर यामित्रदोष होता है। चक्र में ऊपर प्रत्येक विवाह नक्षत्र और नीचे के कोष्ठक में उससे 14वाँ नक्षत्र है, जिस पर कोई भी ग्रह होने पर वह ऊपरी खाने के विवाह-नक्षत्र को यामित्र-दोष से दूषित करेगा। पापी या क्रूर ग्रह का यामित्र दोष पूज्य होता है। **नोट**–(*i*) यामित्रदोष वाले ग्रह को शुभ ग्रह देखते हों, तो यह दोष नहीं रहता। (*ii*) सप्तम भाव में चंद्र-गुरु स्वगृही, उच्चस्थ या मित्रक्षेत्री हो तो यामित्रदोष नहीं रहता।

(5) यामित्र दोष चक्र

अश्वि	रोहि.	मृग.	मघा	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वा.	अनु.	मूल	उ.षा.	श्रव.	धनि.	उ.भा.	रेव.
चित्रा	अनु.	ज्ये.	धनि.	पू.भा.	उ.भा.	रेव.	अश्वि	कृति.	मृग.	पुन.	पुष्य	आश्ले	उ.फा.	हस्त

(6) बाणदोष–

रोगादि पाँच बाणों का सम्बन्ध सूर्य के विशेष अंशों से है, चाहे वह किसी राशि का हो। प्रत्येक राशि के जिन अंशों का सम्बन्ध जिस बाण से है, उससे पहले के अंश (गतांश) उस बाण के सामने चक्र में दिए गए हैं, क्योंकि पंचांग में दैनिक सूर्यस्पष्ट के गत राश्यंश के साथ अग्रिमांश की भुक्त कला-विकला दी जाती है। अतः आप सरलतापूर्वक दैनिक सूर्य-गति निकालकर सूर्यस्पष्ट के समय में (1° अंश की) जमा-घटा देने से बाणारम्भ-काल तथा समाप्तिकाल जान सकते हैं। यों तो पाँच-बाणों के विशेष समय व वारानुसार त्याज्य माने गए हैं। परन्तु मुहूर्त-शोधन में इन सभी बाणों को प्रत्येक वार में सभी कालों में वर्ज्य करने की परम्परा है। अपि च, पंचांगदिवाकर में केवल 1° से 1°-30′ अर्थात् 30′ कला तक ही अशुभ प्रभाव को समाप्तिकाल मानकर मुहूर्त-लग्न लगाए जाते हैं।

(6) बाणदोष चक्र

नाम बाण	सूर्य के गतांश	वर्ज्य कर्म	वर्ज्य वार	वर्ज्य काल
रोग	8°-17°-27°	उपनयन	रविवार	रात्रि
अग्नि	2°-11°-20°-29°	गृहारम्भ	मंगलवार	सदैव
नृप	4°-13°-22°	राजसेवा	शनिवार	दिवाकाल
चोर	6°-15°-24°	यात्रा	मंगलवार	रात्रि
मृत्यु	1°-10°-19°-28°	विवाह	बुधवार	संध्या

(7) एकार्गल दोष–

विवाह नक्षत्र के समय यदि सूर्य अधिष्ठित नक्षत्र साभिजित गिनने पर विषम हो, तो एकार्गल दोष होता है, परन्तु उस समय व्याघात, गण्ड, व्यतीपात, विष्कम्भ, शूल, वैधृति, वज्र, परिघ, अतिगण्ड-इन अशुभ योगों की विद्यमानता अनिवार्य है। अतः चक्र में प्रत्येक वैवाहिक नक्षत्र से विषम संख्यक नक्षत्रों को उस नक्षत्र के नीचे वाले कोष्ठकों में दिया गया है। जिनमें से किसी नक्षत्र पर सूर्य के होने से उस कोष्ठक का विवाह-नक्षत्र एकार्गल दोष से दूषित होता है। यह कश्मीर में विशेषतः वर्जित है। **परिहार**–ज्योतिर्निबन्ध एवं मुहूर्त्त-गणपति अनुसार अशुभ योगों में कुछ विशेष घड़ियां ही विशेष रूप से त्याज्य मानी गई हैं- विष्कम्भ की प्रथम 3 घड़ियां, गण्ड और अतिगण्ड की प्रथम 6 घड़ियां, वैधृति-व्यतीपात योग सम्पूर्ण त्याज्य होंगे।

विवाह नक्षत्र →	अश्वि.	रोह.	मृग.	मघा	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वा.	अनु.	मूल	उ.षा.	श्रव.	धनि.	उ.भा.	रेव.
–सूर्य अधिष्ठित नक्षत्र–	अश्वि	पू.भा.	शत	पू.षा.	ज्ये.	अनु	विशा	स्वा	हस्त	पू.फा.	अश्ले	मृग.	धनि.	कृति	भर.
	कृति	रेव	उ.भा.	अभि	पू.षा.	मूल	ज्ये.	अनु	स्वा	हस्त	पू.फा.	पुर्न	पू.भा.	मृग	रोहि
	मृग	भर	अश्वि	धनि.	अभि	उ.षा.	पू.षा.	मूल	अनु	स्वा.	हस्त	श्ले.	रेव	पुर्न	आर्द्रा
	पुर्न	रोह.	कृति	पू.भा.	धनि	श्रवण	अभि.	उ.षा.	मूल	अनु	स्वा	पू.फा.	भर	अश्ले	पुष्य
	अश्ले	आर्द्रा	मृग.	रेव.	पू.भा.	शत.	धनि	श्रव	उ.षा.	मूल	अनु	हस्त	रोहि	पू.फा.	मघा
	पू.फा.	पुष्य	पुर्न	भर.	रेव	उ.भा.	पू.भा.	शत.	श्रव	उ.षा.	मूल	स्वा	आर्द्रा	हस्त	उ.फा.
	हस्त	मघा	अश्ले	रोहि.	भर.	अश्वि	रेव	उ.भा.	शत	श्रव.	उ.षा.	अनु.	पुष्य	स्वा.	चित्रा
	स्वा.	उ.फा.	पू.फा.	आर्द्रा	रोहि.	कृति	भर.	अश्वि	उ.भा.	शत	श्रव.	मूल	मघा	अनु.	विशा.
	अनु.	चित्रा	हस्त	पुष्य	आर्द्रा	मृग.	रोहि.	कृति.	अश्वि	उ.भा.	शत	उ.षा.	उ.फा.	मूल	ज्ये.
	मूल	विशा	स्वा.	मघा	पुष्य	पुर्न	आर्द्रा	मृग.	कृति	अश्वि	उ.भा.	श्रव	चित्रा	उ.षा.	पू.षा.
	उ.षा.	ज्ये.	अनु.	उ.फा.	मघा	अश्ले	पुष्य	पुर्न	मृग.	कृति	अश्वि	शत	विशा	श्रव	अभि.
	श्रव.	पू.षा.	मूला	चित्रा	उ.फा.	पू.फा.	मघा	अश्ले	पुर्न	मृग	कृति	उ.भा.	ज्ये.	शत.	धनि
	शत	अभि.	उ.षा.	विशा.	चित्रा	हस्त	उ.फा.	पू.फा.	अश्ले	पुर्न	मृग	अश्वि	पू.षा.	उ.भा.	पू.भा.
	उ.भा.	धनि.	श्रव.	ज्ये.	विशा.	स्वा.	चित्रा	हस्त	पू.फा.	अश्ले	पुर्न	कृति	अभि	अश्वि	रेव.

(8) उपग्रह दोष–

विवाह-नक्षत्र के समय सूर्य जिस नक्षत्र में हो, तो उसे 5वें, 7वें, 8वें, 10वें, 14वें, 15वें, 18वें, 19वें, 21वें, 22वें, 23वें, 24वें, 25वें नक्षत्र पर यदि वहीं विवाह-नक्षत्र हो, तो उपग्रह दोष होता है। **उदाहरणार्थ**–यदि अश्विनी नक्षत्र हो, तो सूर्य यदि शत., श्रव., उ.षा. आदि नक्षत्रों में होगा तो उपग्रह दोष होगा। यह दोष कुरु देश (दिल्ली के समीप) और बाह्लिक (कश्मीर के पश्चिम) क्षेत्रों में विशेषतः अशुभ होता है। अन्यत्र नहीं।

अशुभ प्रभाव की समाप्तिकाल मानकर मुहूर्त लग्न लगाए जाते हैं।

—सूर्य नक्षत्र—

अश्वि.	रोह.	मृग.	मघा	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वा.	अनु.	मूल	उ.षा.	श्रव.	धनि.	उ.भा.	रेव.
शत.	रेव.	अश्वि	आर्द्रा	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	हस्त	स्वा.	अनु.	ज्ये.	मूल	श्रव.	धनि.
श्रव.	पू.भा.	उ.भा.	रोहि	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	पू.फा.	हस्त	स्वा.	विशा.	अनु.	पू.षा.	उ.षा.
उ.षा.	शत.	पू.भा.	कृति	मृग	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	मघा	उ.फा.	चित्रा	स्वा.	विशा.	मूल	पू.षा.
मूल	श्रव.	धनि.	अश्वि.	कृति	रोहि.	मृग	आर्द्रा	पुष्य	मघा	उ.फा.	हस्त	चित्रा	अनु.	ज्ये.
स्वा.	ज्ये.	मूल	शत.	उ.भा.	रेव.	अश्वि	भर.	रोहि.	आर्द्रा	पुष्य	आश्ले	मघा	हस्त	चित्रा
चित्रा	अनु.	ज्ये.	धनि.	पू.भा.	उ.भा.	रेव	अश्वि.	कृति.	मृग.	पुन.	पुष्य	आश्ले.	उ.फा.	हस्त
पू.फा.	चित्रा	स्वा.	पू.षा.	श्रव.	धनि.	शत.	पू.भा.	रेव.	भर.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	आश्ले	मघा
मघा	हस्त	चित्रा	मूल	उ.षा.	श्रव.	धनि.	शत.	उ.भा.	अश्वि.	कृति	रोहि.	मृग.	पुष्य	आश्ले
पुष्य	पू.फा.	उ.फा.	अनु.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रव.	शत.	उ.भा.	अश्वि	भर.	कृति	आर्द्रा	पुन.
पुन.	मघा	पू.फा.	विशा.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	धनि.	पूभा.	रेव	अश्वि.	भर.	मृग.	आर्द्रा
आर्द्रा	आश्ले	मघा	स्वा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	श्रव.	शत.	उ.भा.	रेव.	अश्वि.	रोहि.	मृग.
मृग.	पुष्य	आश्ले	चित्रा	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	उ.षा.	धनि.	पूभा	उ.भा.	रेव.	कृति	रोहि.
रोहि.	पुन.	पुष्य	हस्त	स्वा.	विशा	अनु.	ज्ये.	पू.षा.	श्रव.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	भर.	कृति.

(9) स्थूल क्रान्तिसाम्य दोष:—

सूर्य	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
चन्द्र	सिंह	मकर	धनु	वृश्चि.	मेष	मीन	कुम्भ	कर्क	मिथुन	वृष	तुला	कन्या

चक्र के ऊपरी बॉक्स में क्रमशः द्वादश राशियां सूर्य की दी गई हैं। उनमें से जिस राशि पर सूर्य हो उस बॉक्स की नीचे वाली राशि पर चन्द्रमा के होने से क्रान्तिसाम्य दोष होता है। क्रान्तिसाम्य सर्वत्र त्याज्य है। परन्तु उपर्युक्त प्रकार का क्रान्तिसाम्य नितान्त स्थूल होता है। महापात गणित द्वारा प्रणीत क्रान्तिसाम्य दोष ही विवाह-मुहूर्त्त शोधन में वर्जित होता है।

(10) दग्धातिथि दोष चक्र—

सूर्य राशि	मेष (वेशा.)	वृष (ज्ये.)	मिथुन (आषा.)	कर्क (श्राव.)	सिंह (भाद्र.)	कन्या (आश्वि.)	तुला (कार्ति.)	वृश्चि. (मार्ग.)	धनु (पौष)	मकर (माघ)	कुम्भ (फाल्गु.)	मीन चैत्र)
दग्धा तिथि	६	४	८	६	१०	८	१२	१०	२	१२	४	२

जब सूर्य मेष (वैशाख), वृष (ज्येष्ठ), मिथुन (आषाढ़) आदि में हो तब क्रमशः ६, ४, ८ आदि तिथियां दग्धा तिथियां कहलाती हैं। **अपवाद**—मास में दग्धा तिथियां केवल मध्य देश में ही वर्जित होती हैं। सर्वत्र नहीं।

१२ राशियों का घाती चक्र

द्वादश राशि के प्रत्येक मनुष्य को घाती चक्र में दिए अनुसार प्रत्येक तिथि, वार नक्षत्र, लग्न, चंद्रमास घातक होते हैं। अत: मनुष्य को चाहिये कि वे अपना कोई भी इष्ट और शुभ कार्य घातक समय वा मुहूर्त्त पर आरम्भ न करें। नीचे दिया हुआ घात चक्र युद्ध, विवाद (शास्त्रार्थ) राज सेवा, वाहन, यात्रा, रोगादि कार्यों में देखना चाहिए। अर्थात् इन राशि वालों के लिए इन कार्यों में घात चन्द्र, वारादि शुभ नहीं और तीर्थ यात्रा, विवाहादि में घात चन्द्रादि का विचार न करें। विशेष फलादेश जानने के लिये पत्र व्यवहार करें।

राशय:	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
घातमास	कार्तिक	मार्ग	आषाढ़	पौष	ज्येष्ठ	भाद्रपद	माघ	आश्विन	श्रावण	वैशाख	चैत्र	फाल्गुन
घात तिथि	१-६-११	५-१०-१५	२-७-१२	२-७-१२	३-८-१३	५-१०-१५	४-९-१४	१-६-११	३-८-१३	४-९-१४	३-८-१३	५-१०-१५
घात वार	रवि	शनि	चन्द्र	बुध	शनि	शनि	गुरु	शुक्र	शुक्र	मंगल	गुरु	शुक्र
घात नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वाति	अनुराधा	मूल	श्रवण	शत.	रेवती	भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	आश्लेषा
घात योग	विष्कुम्भ	सुकर्मा	परिघ	धृति	प्रीति	सुकर्मा	अतिगंड	ब्रह्म	वैधृति	गंड	व्याघात	वज्र
घात करण	बव	शकुनि	कौलव	नाग	बालव	कौलव	तैतिल	गर	तैतिल	शकुनि	किंस्तुघ्न	चतुष्पाद
घात लग्न	१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५
घात प्रहर	प्रथम	चतुर्थ	तृतीय	प्रथम	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	तृतीय	चतुर्थ
पु. घा. चंद्र	मेष	कन्या	कुम्भ	सिंह	मकर	मिथुन	धनु	वृष	मीन	सिंह	धनु	कुम्भ
स्त्री घा. चंद्र	मेष	धनु	धनु	मिथुन	वृश्चिक	वृश्चिक	मीन.	धनु	कन्या	वृश्चिक	मिथुन	मेष

ग्रहों का नैसर्गिक मैत्री चक्र

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मित्र	चंद्र मंगल गुरु	सूर्य बुध	सूर्य चंद्र गुरु	सूर्य शुक्र	सूर्य चंद्र मंगल	बुध शनि	बुध शुक्र	शुक्र बुध शनि	बुध गुरु
सम	बुध	मंगल गुरु शुक्र शनि	शुक्र शनि	मंगल गुरु शनि	शनि	मंगल गुरु	गुरु	गुरु केतु	मंग. राहु शुक्र
शत्रु	शुक्र शनि	०० ००	बुध राहु	चंद्र	बुध शुक्र	सूर्य चंद्र	सूर्य मंगल चंद्र	सूर्य चंद्र मंगल	सूर्य चंद्र शनि
उच्चांश	मेष १०	वृषे ३	म. २८	कं. १५	कर्क ५	मी. २७	तु. २०	वृ. १५	
नीचांश	तु. १०	वृश्चि ३	क. २८	मी १५	म. ५	कं. २७	मे.२०°	वृ. १५	

नक्षत्र, राशि, वर्ण, योनि आदि ज्ञान चक्र

नक्षत्र	चरणाक्षर	राशि	वश्य	योनि	महावैर योनि	राशि स्वामी	गण	नाड़ी	तत्त्व हंसका	नाम (संज्ञा)	नक्षत्र देवता	कितने तारे	पंचश्ला का वेध
अश्विनी	चू. चे. चो. ला.	मेष	चतुष्पद	अश्व	महिष	मंगल	देव	आदि	अग्नि	क्षिप्र	अश्वि कु.	३	पू. फा.
भरणी	ली. लू. ले. लो.	मेष	चतुष्पद	गज	सिंह	मंगल	मनुष्य	मध्य	अग्नि	उग्र	यम	३	अनु
कृत्तिका	अ. इ. उ. ए.	मे.१ वृष ३	चतुष्द	मेढ़ा	वानर	मं.१ शु.३	राक्षस	अन्त्य	अ.१ पृ.३	मिश्र	अग्नि	६	विशा
रोहिणी	ओ. वा. वी. वू.	वृष	चतुष्पद	सर्प	न्योला	शुक्र	मनुष्य	अन्त्य	पृथ्वी	ध्रुव	ब्रह्मा	५	अभि
मृगशिर	वे. वो. का. की.	वृ.२ मि.२	च.२ नर२	सर्प	न्योला	शु.२ बु.२	देव	मध्य	पृ.२ वा.२	मृदु	चन्द्रमा	५	उ.षा.
आर्द्रा	कु. घ. ङ. छ.	मिथुन	नर (मनुष्य)	श्वान	मृग	बुध	मनुष्य	आदि	वायु	तीक्ष्ण	शिव	१	पू.षा.
पुनर्वसु	के. को. हा. ही.	मि.३ क.१	न.३ ज.१	मार्जार	मूषक	बु.३ चं.१	देव	आदि	वा.३ ज.१	चर	अदिति	४	मूल
पुष्य	हू. हे. हो. डा.	कर्क	जलचर	मेढ़ा	वानर	चंद्र	देव	मध्य	जल	क्षिप्र	गुरु	३	ज्ये.
आश्लेषा	डी. डू. डे. डो.	कर्क	जलचर	मार्जा.	मूषक	चंद्र	राक्षस	अन्त्य	जल	तीक्ष्ण	सर्प	५	धनि
मघा	मा. मी. मू. मे.	सिंह	वनचर	मूषक	बिडाल	सूर्य	राक्षस	अन्त्य	अग्नि	उग्र	पितर	५	श्रव
पू.फा.	मो. टा.टी. टू.	सिंह	वनचर	मूषक	बिडाल	सूर्य	मनुष्य	मध्य	अग्नि	उग्र	भग, सूर्य	२	अश्वि
उ.फा.	टे. टो. पा. पी.	सिं.१ कं.३	व.१ न.३	गौ	व्याघ्र	सू.१ बु.३	मनुष्य	आदि	अ.१ पृ.३	ध्रुव	अर्यमा	२	रेव
हस्त	पू. ष. ण. ठ.	कन्या	नर	महिष	अश्व	बुध	देव	आदि	पृथ्वी	क्षिप्र	सूर्य	५	उ.भा.
चित्रा	पे. पो. रा. री.	के.२ तु.२	नर	व्याघ्र	गौ	बु.२ शु.२	राक्षस	मध्य	पृ.२ वा.२	मृदु	विश्वकर्मा	१	पू.भा.
स्वाती	रू. रे. रो. ता.	तुला	नर	महिष	अश्व	शुक्र	देव	अन्त्य	वायु	चर	वायु	१	शत
विशाखा	ती. तू. ते. तो.	तु.३ वृ.१	न.३ की.१	व्याघ्र	गौ	शु.३ मं.१	राक्षस	अन्त्य	वा.३ ज.१	मिश्र	इंद्राग्नि	४	कृति
अनुराधा	ना. नी. नू. ने.	वृश्चिक	कीट	मृग	श्वान	मंगल	देव	मध्य	जल	मृदु	मित्र	४	भर
ज्येष्ठा	नो. या. यी. यू.	वृश्चिक	कीट	मृग	श्वान	मंगल	राक्षस	आदि	जल	तीक्ष्ण	इन्द्र	३	पुष्य
मूल	ये. यो. भा. भी.	धनु	नर	श्वान	मृग	गुरु	राक्षस	आदि	अग्नि	तीक्ष्ण	राक्षस	११	पुन
पूर्वाषाढ़ा	भू. ध. फ. ढ.	धनु	न॥ चतु ३	वानर	मेंढ़ा	गुरु	मनुष्य	मध्य	अग्नि	उग्र	जल	२	आर्द्रा
उत्तराषाढ़ा	भे. भो. जा. जी.	ध.१ मं.३	चतुष्पद	नकुल	सर्प	गु.१ श.३	मनुष्य	अन्त्य	अ.१ पृ.३	ध्रुव	विश्वदेव	२	मृग
अभिजित	जु. जे. जो. ख.	मकर	—	नकुल	सर्प	शनि	—	—	पृथ्वी	क्षिप्र	विष्णु	३	रोह
श्रवण	खी. खू. खे. खो.	मकर	चतु.१ ॥जर	वानर	मेंढ़ा	शनि	देव	अन्त्य	पृथ्वी	चर	विष्णु	३	कृति
धनिष्ठा	गा. गी. गू. गे.	म.२ कुं.२	ज.२ न.२	सिंह	गज	शनि	राक्षस	मध्य	पृ.२ वा.२	चर	वसु	४	विशा
शतभिषा	गो. सा. सी. सू.	कुम्भ	नर	अश्व	महिष	शनि	राक्षस	आदि	वायु	चर	वरुण	१००	स्वा
पूर्वाभाद्रपद	से. सो. दा. दी.	कुं.३ मी.१	न.३ ज.१	सिंह	गज	श.३ गु.१	मनुष्य	आदि	वा.३ ज.१	उग्र	अजैकपाद	२	चित्रा
उ. भाद्रपद	दू. थ. झ. ञ.	मीन	जलचर	गौ	व्याघ्र	गुरु	मनुष्य	मध्य	जल	ध्रुव	अहिबर्बुध्न्य	२	हस्त
रेवती	दे. दो. चा. ची.	मीन	जलचर	गज	सिंह	गुरु	देव	अन्त्य	जल	मृदु	पूषा	३२	उ.फा.

नामाक्षरों से वर्ग देखने का चक्र (अपने से चतुर्थ वर्ग को मित्र क्षेत्री समझना चाहिए)

अ ई उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह
गरुड़	बिडाल	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	हरिण	मेढ़ा

वर्ण ज्ञान चक्र

वर्ण	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
राशि	१२/४/८	१/५/९	२/६/१०	३/७/११

ग्रह मैत्री चक्र

ग्रहाः	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मित्राणि	चं मं गु	सू बु	सू चं गुरु	सू शु	सू चं मं.	बु श	शु बु
समाः	बुधः	मं गु शु श	शु श	मं गु श	श	मं गु	गु.
शत्रव	शु श	० ०	बुध	चं	बु शु	सू चं	सू चं मं
उच्चांश	मे १०	वृष ३	म २८	क १५	कर्क ५	मी २७	तु २०
नीचांश	तु १०	वृ ३	क २८	मी १५	म ५	क २७	मे २०

मित्र नवपंचम चक्र								शत्रु नवपंचम चक्र			
१	२	३	५	७	८	९	१०	१२	११	६	४
५	६	७	९	११	१२	१	२	४	३	१०	८

मित्रषडाष्टक चक्र						शत्रुषडाष्टक चक्र					
१	२	३	४	५	६	१	३	५	७	९	११
८	७	१०	९	१२	११	६	८	१०	१२	२	४

मित्रद्विर्द्वादश चक्र						शत्रुद्विर्द्वादश चक्र					
१२	२	४	६	८	१०	१	३	५	७	९	११
१	३	५	७	९	११	२	४	६	८	१०	१२

नवपंचम दोष–कन्या से वर अथवा वर से कन्या की राशि पांचवीं, नौवीं हो, तो दम्पत्ति को संतान हानि की संभावना होती है। परन्तु मीन-कर्क, कर्क-बृश्चिक, कुम्भ-मिथुन, कन्या-मकर विशेषत: त्याज्य माने जाते हैं। राशि मैत्री होने की स्थिति में नव-पंचम दोष अचिन्तनीय है।

षडाष्टक दोष–लड़के और लड़की की राशियां परस्पर छठे-आठवें हों तो षडाष्टक यथा-सम्भव त्याज्य है। शत्रु षडाष्टक दोष विशेषत: त्याज्य माना जाता है।

विस्तृत विवेचन के लिए देखें आगामी पृष्ठ 192

(५) बलान्वित गुरु वा शुक्र लग्न में हो, तो वक्री, नीचस्थ, अस्तंगत अथवा शत्रुक्षेत्री मंगल

मेलापक में मंगलीक योग एवं परिहार

विवाह योग्य लड़के-लड़की की जन्म कुण्डली में वर्ण, वश्य, तारा, ग्रहमैत्री, नाड़ी आदि अष्टकूट सम्बन्धी गुण मिलान के पश्चात् कुण्डली में मंगल एवं मंगलीक दोष पर विशेष रूप से विचार किया जाता है। मंगलीक दोष का आधार सामान्यतः निम्न श्लोक माना जाता है।

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे। कन्या भर्तृविनाशाय भर्त्ता कन्या विनाशदः।

—मु. संग्रहदर्पण

अर्थात् जिस कन्या की कुण्डली में १, ४, ७, ८ या १२वें स्थान में मंगल हो, तो वह कन्या वर (पति) के लिए हानिकारक तथा इसी भान्ति जिस लड़के की कुण्डली में इन्हीं स्थानों में मंगल हो वह कन्या को हानिकारक होता है। इसी भांति लग्न, चन्द्र और कभी-कभी शुक्र की राशि से भी मंगल की उपर्युक्त स्थितियों का विचार किया जाता है।

अपवाद—(१) मंगल दोष वाली कन्या का विवाह मंगलीक दोष वाले वर के साथ करने से मंगल का अनिष्ट दोष नहीं होता तथा वर-वधू के मध्य दाम्पत्य सुख बढ़ता है—

कुज दोष वती देया कुजदोषवते किल। नास्ति दोषो न चानिष्टं दम्पत्योः सुखवर्धनम्॥

मंगलीक सम्बन्धी उपरोक्त श्लोक के परिहारस्वरूप मुहूर्त्त ग्रन्थों में अनेकत्र परिहार वाक्य मिलते हैं। यथा—

(२) यदि लड़की की कुण्डली में जिस स्थान पर मंगल स्थित (मंगलीक कारक) हो, और लड़के की कुण्डली में उसी स्थान पर शनि, मंगल, सूर्य, राहु आदि कोई पाप ग्रह स्थित हों, तो भौमदोष भंग हो जाता है। इसी प्रकार लड़के की कुण्डली में भौम दोष होने पर कन्या की कुण्डली में उसी भाव में कोई पाप ग्रह होने से भी भौमदोष नहीं रहता—

शनिः भौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोष विनाश कृत्॥—फलित संग्रह अन्येऽपि—
भौमेन सदृशो भौमः पापो व तादृशो भवेत्। विवाहः शुभदः प्रोक्तश्चिरायुः पुत्रपौत्रदः॥

अर्थात् एक की कुण्डली में मंगल दोष हो, तो दूसरे की कुण्डली में भी उन्हीं स्थानों में शनि आदि पाप ग्रह होने से मंगलीक दोष का प्रभाव क्षीण होकर विवाह में शुभ होता है।

यामित्रे च यदा सौरि लग्ने वा हिबुके तथा। अष्टमे द्वादशे चैव भौमदोषो न विद्यते॥

यह श्लोक भी लगभग इसी आशय का है।

(३) मेष राशि का मंगल लग्न में, वृश्चिक राशि का चौथे भाव में, मकर का सातवें, कर्क राशि का आठवें, एवं धनु राशि का मंगल १२वें हो, तो मंगल दोष नहीं होता। यथोक्तम्—

अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके कुजे।
द्यूने मृगे कर्किचाष्टौ भौमदोषो न विद्यते॥ —मुहूर्त्त पारिजात

प्रकारान्तर से, मीन का मंगल ७वें भाव तथा कुम्भ राशि का मंगल अष्टम में हो, तो भौम दोष नहीं होता।

"द्यूने मीने घटे चाष्टौ भौम दोषो न विद्यते" —मुहूर्त्त चिंतामणि

(४) यदि द्वितीय भाव में चन्द्र-शुक्र का योग हो, या मंगल गुरु द्वारा दृष्ट हो, केन्द्र भावस्थ राहु हो, अथवा केन्द्र में राहु-मंगल का योग हो, तो मंगल दोष नहीं रहता—

न मंगली चन्द्र भृगु द्वितीये, न मंगली पश्यति यस्य जीवा।
न मंगली केन्द्रगते च राहुः, न मंगली मंगल-राहु योगे॥ —मुहूर्त्त दीपक

(५) बलान्वित गुरु वा शुक्र लग्न में हो, तो वक्री, नीचस्थ, अस्तंगत अथवा शत्रुक्षेत्री मंगल उपरोक्त दुष्ट स्थानों में होने पर भी भौम दोष नहीं होता—

सबले गुरौ भृगौ वा लग्ने द्यूनेऽथवाभौमे।
वक्रे नीचारि गृहस्थे वाऽस्तेऽपि न कुजदोषः॥ —मुहूर्त्त दीपक

(६) इसी भांति केन्द्र व त्रिकोण में यदि शुभ ग्रह हों, तथा ३, ६, ११वें भावों में पाप-ग्रह हों तथा सप्तमेश ग्रह सप्तम में ही हो, तो मंगल दोष नहीं होता—

"केन्द्र कोणे शुभादये च त्रिषडायेऽप्यसद्ग्रहाः।
तदा भौमस्य दोषो न मदने मदपस्तथा॥" —मुहूर्त्त चिंतामणि

(७) यद्यपि १, २, ४, ७, ८, ११ और १२वें भावों में स्थित मंगल वर-वधू के वैवाहिक जीवन में विघटन उत्पन्न करता है, परन्तु यदि मंगल अपने घर (१, ८) का हो, उच्चस्थ (मकर) का किंवा मित्र क्षेत्री मंगल दोष कारक नहीं होता—

तनु धन सुख मदनायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्।
विघट्यति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा॥ —मु. चिंतामणि

(८) यदि वर-कन्या की कुण्डलियों में परस्पर राशिमैत्री हो, गणैक्य हो, २७ गुण या अधिक मिलान होता हो, तो भी भौम दोष अविचारणीय है। **'मुहूर्त्त दीपक'** नामक ग्रन्थानुसार—

राशिमैत्रं यदा याति गणैक्यं वा यदा भवेत्। अथवा गुण बाहुल्ये भौम दोषो न विद्यते॥

विवेचन—उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि मुहूर्त्त संग्रह दर्पण में दिए गए मंगलीक सम्बन्धी उपरोक्त श्लोक ("लग्ने व्यये पाताले-") के परिहारस्वरूप कुछ अर्वाचीन ग्रन्थों में उपलब्ध होते हैं, जिनमें परस्पर विरोध वाक्यता भी मिलती है।

उल्लेखनीय है कि प्राचीन सैद्धान्तिक एवं प्रतिष्ठित मुहूर्त्त ग्रंथों जैसे-विवाह वृन्दावन, मुहूर्त्त मार्तण्ड, सारावली, मु. चिन्तामणि (प्राचीन संस्करण), ज्योतिर्निबन्ध आदि) में मंगलीक सम्बन्धी उपर्युक्त श्लोक एवं तत्सम्बन्ध विभिन्न परिहार वाक्यों का स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता।

वर-कन्या की कुण्डली में मंगलीक दोष एवं उसके परिहार का निर्णय अत्यन्त सावधानीपूर्वक करना चाहिए। केवल १, ४, ७, ८ आदि भावों में मंगल को देखकर दाम्पत्य जीवन के सुख-दुःख का निर्णय कर देना उपयुक्त नहीं। मंगलीक वाले स्थानों (भावों) में मंगल के अतिरिक्त कोई अन्य क्रूर ग्रह भी १, २, ७ एवं १२वें स्थानों में हो, तो वह भी पारिवारिक एवं वैवाहिक जीवन के लिए अनिष्टकारी होता है। यथा—

लग्ने क्रूरा व्यये क्रूरा धने क्रूराः कुजस्तथा।
सप्तमे भवने क्रूराः परिवार क्षयंकराः॥ —मु. संग्रह दर्पण

मंगल अथवा मंगलीक दोष का निर्णय कुण्डली विशेष में सभी ग्रहों के पारस्परिक अनुशीलन के पश्चात् ही करना चाहिए। मिलान करते समय केवल मंगल या मंगलीक पर ही अत्यधिक बल न देते हुए मेलापक सम्बन्धी अन्य तत्त्वों का भी सर्वाङ्ग रूप से विवेचन करना चाहिए। जैसे- चलित भाव कुण्डली, सप्तमेश की उच्च-नीच स्थिति, सप्तम भाव पर गुरु, शुक्र की दृष्टि आदि तत्त्वों का सम्यक विचार किसी विद्वान ज्योतिषी जी से करवाना चाहिए।

वर-कन्या मिलान में वर्णादि अष्टकूटों का महत्त्व

विवाह गृहस्थाश्रम की आधारशिला है और उसी के माध्यम से मनुष्य, देव, ऋषि एवं पितृ आदि ऋण त्रय से उद्धृण होकर परम कल्याण को प्राप्त कर सकता है। तद् हेतु उत्तम लक्षणों जैसे-सुन्दर, सुशीला, मधुरभाषिणी एवं पतिव्रता कन्या तथा कर्त्तव्यनिष्ठ, स्वस्थ, शिक्षित, सदाचारी एवं सुसंस्कृत लड़के के साथ विवाह सम्बन्ध शुभ होता है। विवाह सम्बन्ध करने से पूर्व लड़के-लड़की का कुल-गोत्र, सनाथता, विद्या, धन, स्वास्थ्य (शरीर) और आयु-इन सात गुणों की परीक्षा करने के पश्चात् ही कुण्डलियों में परस्पर **मंगलीक आदि अरिष्ट** योगों तथा वर्ग, **स्त्रीदूर, कर्तरि एवं वर्णादि अष्टकूटों** का विचार करना चाहिए।

मेलापक प्रक्रिया में **मंगलीक और अष्टकूट** तत्त्वों का विशेष महत्त्व है, क्योंकि वर-कन्या के दाम्पत्य जीवन को अधिकाधिक सुखी एवं मंगलमय बनाने के लिए उनके जन्म नक्षत्रों एवं जन्म कुण्डलियों के अनुसार मिलान करना अत्यन्त आवश्यक है। उपयुक्त मिलान न होने की स्थिति में पति-पत्नी के वैवाहिक जीवन में-विचार वैमनस्य, सन्तान कष्ट, वैधव्य, वैधुर्यादि दोष अथवा पारिवारिक कष्ट होने की सम्भावनाएं हो जाती है। **मंगलीक दोष** का विशेष विवरण इसी पंचाँग के गत पृष्ठ पर दिया गया है। यहाँ पर नक्षत्र मिलान के मुख्य तत्त्व अष्टकूट का विवेचन किया जा रहा है। ध्यान रहे, अष्ट (आठ) कुंटों का निर्णय वर-कन्या के जन्म नक्षत्रों से ही किया जाता है। अष्टकूटों के आठ कूट (अंग) निम्नलिखित हैं :-

(१) वर्ण (२) वश्य (३) तारा (४) योनि (५) ग्रहमैत्री (६) गणमैत्री (७) भकूट तथा **(८) नाड़ी** -ये आठ कूट हैं।

प्रत्येक कूट की क्रम संख्या अपने श्रेष्ठ गुणों की सूचक है। वर्णादि अष्टकूटों में **गुणों का योग ३६ होता है।** इसमें क्रमानुसार वर्ण का १ गुण, वश्य के २, तारा के ३, योनि के ४, ग्रहमैत्री के ५, गण-मैत्री के ६, भकूट के ७ एवं नाड़ी के ८ (आठ) गुण जानने चाहिएं।

वर्णादि कुल ३६ गुणों के योग में से १ से १७ तक गुण मिलान तुच्छ एवं निन्दनीय (त्याज्य) माने जाते हैं, १८ से २१ तक मध्यम एवं ग्राह्य और २२ से २८ तक उत्तम तथा २९ से ३६ तक गुण सर्वोत्कृष्ट मिलान माना जाता है।

एकैकवृद्धितो ज्ञेया वर्णादीनां गुणाः क्रमात्।
विवाहः शुभदस्तेषां गुणे त्वष्टादशाधिके॥

—मु० गणपति

वर्णादि अष्टकूट

(1) वर्णकूट विचार—समाज में प्रचलित वर्णों की भान्ति राशियों में भी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र चार वर्ण होते हैं। ४, ८, १२ राशियों का ब्राह्मण ; १, ५, ९ का क्षत्रिय ; २, ६, १० वैश्य तथा ३, ७, ११ राशियों का शूद्रवर्ण होता है। वर का वर्ष कन्या के वर्ण से उच्चस्तरीय अथवा समान होने पर एक गुण प्राप्त होता है, अन्यथा शून्य प्राप्त होता है।

परिहार—(*i*) राशीश मैत्री—यदि वर की राशि का वर्ण कन्या के राशि-वर्ण से हीन हो, परन्तु राशिपति उत्तम वर्ण हो, तो वर्ण मिलान शुभ हो जाता है। अथवा वर-कन्या के राशिस्वामी परस्पर मित्र-मित्र या मित्र-सम हो।

सूर्य-मंगल का वर्ण क्षत्रिय, चन्द्रमा का वैश्य, बुध-शनि का शूद्र तथा गुरु-शुक्र का ब्राह्मण है।

वर्ण गुण चक्र

कन्या↓ वर→	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
ब्राह्मण	1	0	0	0
क्षत्रिय	1	1	0	0
वैश्य	1	1	1	0
शूद्र	1	1	1	1

(*ii*) **राशीश एकता**—वर-कन्या का एक ही राशीश।

(*iii*) **नवमांशेश मैत्री**—वर-कन्या के नवमांशेश परस्पर मित्र-मित्र अथवा मित्र-सम हों।

(*iv*) **नवमांशेश एकता**—वर-कन्या का एक ही नवमांशेश हो।

(2) वश्यकूट विचार—'**वैश्य**' का अर्थ है-वश में करने योग्य। सिंह राशि के अतिरिक्त सभी राशियाँ पुरुष (नर) राशियों के वश में हैं। जल राशियाँ (४, १० उ./१२)-नर राशियों (३, ६, ७, ९ पूर्वार्ध, ११) का भक्ष्य है। वृश्चिक राशि को छोड़कर शेष राशियाँ सिंह राशि के वश्य हैं। चतुष्पद, मानव, जलचर, वनचर तथा कीट आदि वश्य-पंचक-राशियों के अनुसार निम्न चक्र से ज्ञातव्य हैं—

वश्य	वर—कन्या राशि
चतुष्पद	मेष, वृष, धनु का उत्तरार्द्ध, मकर-पूर्वार्ध
मानव	मिथुन, कन्या, तुला, धनु का पूर्वार्ध, कुम्भ
जलचर	कर्क, मकर-उत्तरार्ध, मीन
वनचर	सिंह
कीट	वृश्चिक

गुण-विभाग—वश्य-विचार के अन्तर्गत वश्यों के परस्पर मैत्री, वैर, भक्ष्य और वश्य आदि 4 मूल तत्त्व हैं। एक समान वश्य अथवा मैत्री होने पर 2 गुण ; एक वश्य और दूसरा शत्रु होने पर एक गुण ; एक वश्य और एक भक्ष्य होने पर आधा गुण तथा एक शत्रु और एक भक्ष्य होने पर शून्य अर्थात् गुणाभाव होगा-जैसा-द्विपद (मानव) राशियों का जलचर राशियों से वश्य-भक्ष्य, सिंह (वन) से वैर-भक्ष्य, चतुष्पदों से वश्य-शत्रु सम्बन्ध है।

वश्य गुण चक्र

कन्या↓ वर→	चतुष्पद	मानव	जल	वन	कीट
चतुष्पद	2	1	1	0	1
मानव	1	2	1/2	0	1
जल	1	1/2	2	1	1
वन	0	0	1	2	0
कीट	1	0	1	0	2

वश्यकूट परिहार

(*i*) **राशीश मैत्री**—वर-कन्या के राशिस्वामी परस्पर मित्र-मित्र अथवा मित्र-सम हों।

(*ii*) **राशीश एकता**—दोनों का एक ही राशीश हो।

(iii) **नवमांशेश-मैत्री**—दोनों (वर-कन्या) के नवमांशेश परस्पर मित्र-मित्र या मित्र-सम।

(iv) **नवमांशेश-एकता**—दोनों का ही नवमांशेश हो।

(v) **योनि-मैत्री**—वर-कन्या में परस्पर योनि-मैत्री होने पर भी वश्य दोष का परिहार हो जाता है।

(3) ताराकूट विचार—ताराकूट का सम्बन्ध नक्षत्रों से है। जन्मनक्षत्र से गिरने पर तारा का ज्ञान होता है। जन्म, सम्पद्, विपद्, क्षेम, प्रत्यरि, साधक, वध, मैत्र, अतिमैत्र—ये नक्षत्र ही ताराएं होती है। ये शुभ और अशुभ दोनों प्रकार के हैं। कन्या के जन्म नक्षत्र से वर के जन्म नक्षत्र तक तथा वर के जन्म नक्षत्र से कन्या के जन्म नक्षत्र तक गिनकर दोनों तारा संख्याओं को अलग-अलग 9 द्वारा भाग देने पर यदि शेष 3, 5, 7 बचे तों '**अशुभ-तारा**' होती है, अन्यथा '**शुभतारा**' होगी।

तारा गुण चक्र

शेषांक	वर								
कन्या	१	२	३	४	५	६	७	८	०
१	3	3	1.5	3	1.5	3	1.5	3	3
२	3	3	1.5	3	1.5	3	1.5	3	3
३	1.5	1.5	0	1.5	0	1.5	0	1.5	1.5
४	3	3	1.5	3	1.5	3	1.5	3	3
५	1.5	1.5	0	1.5	0	1.5	0	1.5	1.5
६	3	3	1.5	3	1.5	3	1.5	3	3
७	1.5	1.5	0	1.5	0	1.5	0	1.5	1.5
८	3	3	1.5	3	1.5	3	1.5	3	3
०	3	3	1.5	3	1.5	3	1.5	3	3

यदि दोनों प्रकार से (वर-कन्या) शुभ तारा प्राप्त हो, तो समझना चाहिए कि ताराकूट दोष का अभाव है अर्थात् 3 गुण होंगे। यदि एक प्रकार से शुभतारा और दूसरे प्रकार से अशुभतारा मिले तो डेढ़ (1.5') गुण होंगे। यदि दोनों ताराओं में अशुभ तारा हो तो शून्य गुण होगा। **ध्यान रहे**, दोनों प्रकार से अशुभतारा कभी भी प्राप्त नहीं होती। **जैसे**—वर के नक्षत्र अश्विनी से कन्या के नक्षत्र मृगशिर तक गिनने पर 5वीं तारा (प्रत्यरि) होती है तथा कन्या के नक्षत्र मृगशिर से वर के नक्षत्र अश्विनी तक की नक्षत्र संख्या 24 हुई।

तारादोष परिहार—*(i)* **राशीश मैत्री**—दोनों (वर-कन्या) के राशिस्वामी परस्पर मित्र-मित्र या मित्र-सम हों।

(ii) **राशीश एकता**—दोनों (वर-कन्या) का राशीस्वामी एक हो।

(iii) **नवमांशेश मैत्री**—दोनों के नवमांशेश मित्र-मित्र या मित्र-सम हों।

(iv) **नवमांशेश एकता**—दोनों के नवमांशेश एक हों।

(4) योनिकूट विचार—अश्विनी आदि नक्षत्रों के अनुसार जातक की योनि ज्ञात की जाती है। वर और कन्या की योनियों का आपसी वैर त्याज्य है। जैसे—गौ और व्याघ्र में, सिंह और गज, न्यौला और सर्प में, अश्व और महिष में, श्वान और हरिण में, वानर और मेष में, मूषक और मार्जार में, परस्पर महावैर (शत्रुता) है।

इसी प्रकार वर-वधू की योनियों में शत्रु-मित्रादि के सम्बन्धों के आधार पर गुणों की व्यवस्था की गई है।

योनि—बोधक चक्र

योनि	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वान	मार्जार	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र	मृग	वानर	नकुल	सिंह
नक्षत्र	अश्वि, शत	भर, रेव.	कृति, पुष्य	रोहि, मृग	आर्द्रा मूल	पुन, आश्ले.	मघा, पू.फा.	उ.फा., उ.भा.	हस्त स्वाती	चित्रा, विशा.	अनु ज्ये.	पू.षा., श्रव.	उ.षा. अभि.	धनि., पू.भा.

गुणविभाग—वर-कन्या की एक ही योनि होना शुभ है। योनियों में परस्पर अतिमित्रता हो तो ४ गुण, मित्र हो तो ३, सहज प्रकृति (उदासीनता) समान हो तो २, सामान्य वैर हो तो १ गुण तथा योनियों में अतिशत्रुता (महावैर) हो तो शून्य-अर्थात् गुणाभाव होगा।

योनि-गुण चक्र

योनि	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वान	मार्जार	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र	मृग	वानर	नकुल	सिंह
अश्व	4	2	3	2	2	3	3	3	0	1	3	2	2	1
गज	2	4	3	2	2	3	3	3	3	1	2	2	2	0
मेष	3	3	4	2	2	3	2	3	3	1	3	0	3	1
सर्प	2	2	2	4	2	2	1	2	2	2	2	2	0	2
श्वान	2	2	2	2	4	1	1	2	2	1	0	2	2	1
मार्जार	3	3	3	1	1	4	0	3	3	2	3	2	2	1
मूषक	3	3	2	1	2	0	4	2	2	2	2	2	1	2
गौ	3	2	3	2	2	2	2	4	3	0	3	2	3	1
महिष	0	3	3	2	2	2	2	3	4	1	2	2	2	1
व्याघ्र	1	1	1	2	1	1	2	0	1	4	2	1	2	2
मृग	3	3	3	2	0	2	2	3	2	1	4	2	2	1
वानर	2	2	0	2	2	2	2	2	2	1	2	4	2	1
नकुल	2	2	2	0	2	2	1	3	2	2	2	2	4	2
सिंह	1	0	1	2	1	2	2	1	1	2	1	1	2	4

(5) ग्रह मैत्री—ग्रह मैत्री कूट के सन्दर्भ में वर-कन्या के राशि स्वामियों का ऐक्य अथवा मैत्री भावादि अभिप्रेत्य है। (राशि स्वामी तथा नैसर्गिक '**मैत्री-चक्र**' का

ग्रह	मित्र	सम	शत्रु
मित्र	अति मित्रता	सामान्य मित्रता	सामान्य समता
सम	सामान्य मित्रता	समता	सामान्य शत्रुता
शत्रु	सामान्य समता	सामान्य शत्रुता	अतिशत्रुता

विवरण गत पृष्ठों में नक्षत्र, राशि, वर्णादि तालिका चक्र में दिया गया है।)

ग्रह-सम्बन्धों से अन्ततः 5 प्रकार बन जाते हैं। यथा-दोनों मित्र हो तो 'अधिमित्र', दोनों शत्रु हों तो 'अधिशत्रु' और दोनों में समभाव हो तो 'सम' कहलाते हैं। स्पष्टता चक्र से प्राप्य है-

गुण विचार-वर-कन्या की राशियों में परस्पर अधि-मित्रता या राश्यैक होने पर 5 गुण, एक सम और दूसरा मित्र हो, तो 4 गुण, एक-दूसरे के सम हो, तो 3 गुण, एक मित्र दूसरा शत्रु हो, तो 1 गुण, एक सम दूसरा शत्रु हो, तो आधा गुण, दोनों की राशियां परस्पर शत्रु हों, तो शून्य अर्थात् गुणाभाव होता है।

ग्रह मैत्री गुण बोधक चक्र

कन्या \ वर	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्य	5	5	5	4	5	0	0
चन्द्र	5	5	4	1	4	½	½
मंगल	5	4	5	½	5	3	½
बुध	4	1	½	5	½	5	4
गुरु	5	4	5	½	5	½	3
शुक्र	0	½	3	5	½	5	5
शनि	0	½	½	4	3	5	5

अष्टकूटों में राशि स्वामी की मैत्री को विशेष महत्त्व दिया गया है। मिलान में वर्ण, योनि, गण और षडाष्टक दोष होने पर भी यदि परस्पर राशि मैत्री पाई जाती हो तो अन्य किंचिद् दोषों का निवारण हो जाता है। यथा-

गणदोषो योनि दोषो वर्णदोषः षडाष्टकम्।
चत्वारि नैव दुष्यन्ति राशिमैत्री यदा भवेत्॥ —**बृहज्जयोतिः सार**

अपवाद-वर-कन्या के राशिपतियों में परस्पर वैर होने पर भी राशि नवांशपति परस्पर मित्र हो, तो विवाह शुभ माना जाता है। यथा-

राशिनाथे विरुद्धेऽपि सबल नवांशकाधिपौ।
तन्मैत्रेऽपि च कर्त्तव्य, दम्पज्योः शुभमिच्छता॥

(6) गण विचार-अश्वि., मृग., पुन., पुष्य, हस्त, स्वा., अनु., श्रव., रेवती नक्षत्रों का **देवता गण**, तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रोहिणी, भर० और आर्द्रा इन नक्षत्रों का **मनुष्यगण**, कृति., अश्ले, मघा, चित्रा, विशा., ज्ये., मूल, धनि. और शत. का **राक्षसगण**।

वर-कन्या का **एक ही गण** होने पर विवाह **उत्तम**, देव-मनुष्य हो तो शुभ, किसी एक का राक्षसगण और दूसरा मनुष्यगण हो अथवा किसी एक का देवगण और दूसरा राक्षस गण हो तो अशुभ एवं त्याज्य होता है।

गुण विभाजन-वर-कन्या का एक ही गण हो, तो ६ गुण, वर का देवगण एवं कन्या का मनुष्यगण हो तो भी ६ गुण, पर कन्या देवगण एवं वर का मनुष्यगण हो तो ५ गुण, एक का देवगण तथा दूसरा राक्षसगण अथवा एक का मनुष्यगण दूसरे का राक्षसगण हो, तो शून्य गुण होता है इत्यादि।

मनुष्यादि गणों का गुण बोधक चक्र

	वर			
	गुण	देव	मनुष्य	राक्षस
कन्या	देव	6	5	1
	मनुष्य	6	6	0
	राक्षस	0	0	6

गण दोष परिहार-

(क) राशिपतियों में परस्पर मित्रता या राशिनवांशपति में मित्रता हो, तो गणदोष नहीं रहता।
ग्रहमैत्री च राशिश्च विद्यते नियतं यदि। न गणभाव जनितं दूषणंस्याद विरोधदम्॥
गर्ग—मु. चिन्तामणि च

(ख) ग्रहमैत्री तथा वर-कन्या के नक्षत्रों की नाड़ियों में भिन्नता हो, तो गणदोष होने पर भी दोष नहीं होता। **—पीयूषधारा**

(ग) इसी भान्ति तारा, वश्य, योनि ग्रहमैत्री तथा भकूट की शुद्धि होने पर कोई दोषपत्ति नहीं होती। **—मुहूर्त्त मार्त्तण्ड**

(7) भकूट विचार-इसे 'राशिकूट' भी कहते हैं। भकूट का तात्पर्य वर एवं कन्या की राशियों के परस्पर अन्तर से है। यह छह प्रकार का होता है-प्रथम-सप्तक (समसप्तक), तृतीय एकादश, द्वितीय-द्वादश, चतुर्थ-दशम, पंचम-नवम (नवपंचम) तथा षडाष्टक (6-8).

इनमें द्विर्द्वादश, नवपंचम तथा षडाष्टक अशुभ भकूट हैं। तथा शेष (1-7), (3-11) तथा (4-10) शुभ भकूट होते हैं। भकूट को जानने की सरल विधि यह है कि वर की राशि से कन्या की राशि तक तथा कन्या की राशि से वर की राशि तक गणना करनी चाहिए। यदि दोनों की राशि आपस में दूसरी-बारहवीं हो तो द्विर्द्वादश भकूट होता है। तदनुसार गुण-विभाजन किया जाता है। स्पष्टता के लिए आगामी पृष्ठ पर चक्र देखें-

वर-कन्या की जन्म राशि परस्पर छठे एवं आठवें हो, तो **षडाष्टक दोष** होता है। यदि वर-कन्या की जन्म राशि परस्पर पांचवीं-नौवीं हो, तो **नव पंचम दोष**, यदि दोनों की राशियाँ परस्पर दूसरी और बारहवीं हो, तो **द्विद्वादश दोष** कहलाता है। **षडाष्टक दोष** (विशेषकर शत्रु-षडाष्टक) होने की स्थिति में वर-कन्या, इनके माता-पिता अथवा उनके किसी निकटस्थ बन्धु को मृत्यु-तुल्य कष्ट होने की सम्भावना होती है। **नवपंचम दोष** की स्थिति में विवाहित दम्पत्ति को संतान सम्बन्धी दुःख होने का भय होता है तथा **द्विद्वादश दोष** (शत्रुकूट) होने पर वर कन्या को धन हानि एवं आर्थिक परेशानियों का सामना रहता है।

षडाष्टक परिहार-(i) मेष-वृश्चिक, वृष-तुला, मिथुन-मकर, कर्क-धनु, सिंह-मीन तथा कन्या-कुम्भ आदि मित्र राशियों का षडाष्टक शुभ होता है, जबकि वैर-षडाष्टक ही विशेषतया त्याज्य होता है। यथा-१-६, २-९, ३-८, ४-११, ५-१०, ७-१२ राशियों का शत्रुगत षडाष्टक होने से त्याज्य माना जाता है।

भकूट गुण चक्र

कन्या की राशि / वर→	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
मेष	7	0	7	7	0	0	7	0	0	7	7	0
वृष	0	7	0	7	7	0	0	7	0	0	7	7
मिथुन	7	0	7	0	7	7	0	0	7	0	0	7
कर्क	7	7	0	7	0	7	7	0	0	7	0	0
सिंह	0	7	7	0	7	0	7	7	0	0	7	0
कन्या	0	0	7	7	0	7	0	7	7	0	0	7
तुला	7	0	0	7	7	0	7	0	7	7	0	0
वृश्चि.	0	7	0	0	7	7	0	7	0	7	7	0
धनु	0	0	7	0	0	7	7	0	7	0	7	7
मकर	7	0	0	7	0	0	7	7	0	7	0	7
कुम्भ	7	7	0	0	7	0	0	7	7	0	7	0
मीन	0	7	7	0	0	7	0	0	7	7	0	7

(ii) परन्तु परिहारस्वरूप **तारा-शुद्धि, राशीश-मैत्री, राशिवश्यैक्य**, अथवा **राशि स्वामी ग्रह समान** होने पर षडाष्टक दोष भी ग्राह्य होता है। यथा–

न वर्गवर्णो न गणोः न योनिर्द्विद्वादशे चैव षडाष्टके वा।
तारा विरुद्धे नव पंचमे वा मैत्री यदा स्यात्शुभदो विवाहः॥ –बृ. ज्योतिस्सार

नव पंचम परिहार–

(i) वर की राशि से कन्या की राशि पांचवीं हो और कन्या की राशि से वर की राशि ९वीं हो, तो यह नव-पंचम शुभ होता है–

वरस्य पंचमे कन्या, कन्यायां नवमेवरः। एतत् त्रिकोणकं ग्राह्यं पुत्रपौत्र सुखावहम्॥
–बृहज्योतिषः सारः

(ii) मीन-कर्क, वृश्चिक-कर्क, मिथुन-कुम्भ और कन्या-मकर-ये चार नवपंचक विशेषतया त्याज्य माने जाते हैं।

मीनालिम्यां युते कीटे कुम्भे मिथुन संगते। मकरे कन्यकायुक्ते न कुर्यान्नवजचमे॥–शार्गंधर

(iii) वर-कन्या दोनों के चन्द्र राशि अधिपति अथवा राशि नवांशपति परस्पर मित्रक्षेत्री हों, तो नवपंचम अविचारणीय है।

द्वि-द्वादश दोष का परिहार–

(i) लड़के की राशि से कन्या की राशि दूसरी हो तो कन्या धन हानिकारक और १२वीं हो तो वह धनवती और पतिप्रिया होती है।

(ii) १-२, ३-४, ५-६, ७-८, ९-१० एवं ११-१२ राशियों का द्वि-द्वादश शत्रु-द्विद्वादश एवं च अनिष्टकर मानते हैं।

(iii) मतान्तर में **सिंह और कन्या** द्वि-द्वादश ग्राह्य है। **–मुहूर्त्तमार्त्तण्ड**

इसके अतिरिक्त कुछ परिस्थितियों में वर-कन्या की परस्पर राशि-स्थिति विशेष शुभकारी होती है। जैसे-वर-कन्या, दोनों की एक ही राशि १०वें का होना, दोनों की राशियों का परस्पर ३-११वें (त्रिरेकादश) होना, दोनों की राशियों का आपस में ४-१०वें होना एवं च दोनों की राशियों का परस्पर सप्तम (**समसप्तक**) होना वर-कन्या के वैवाहिक जीवन के लिए शुभफल प्रद होता है। परन्तु **अपवाद** रूप में, कर्क-मकर का तथा सिंह-कुम्भ राशियों का समसप्तक योग वर-कन्या के विवाह में शुभ नहीं माना गया–

मकरे कर्कटे चैव कुम्भे सिंहे तथैव च।
परस्परं सप्तमे च वैधव्यं तु विनिर्दिशेत्॥ –ज्योतिनिबन्ध

(८) नाड़ी दोष विचार–अष्टकूट निर्धारक तत्त्वों में नाड़ी का विशेष महत्त्व है। वर-कन्या की एक ही नाड़ी होना विवाह में अशुभ माना गया है। 36 गुणों में से इसके 8 गुण होते हैं। भिन्न नाड़ी के आठ गुण तथा नाड़ी समान होने पर गुणाभाव अर्थात् शून्य गुण होता है।

अश्वन्यादि २७ जन्म नक्षत्रों को तीन नाड़ियों (पंक्तियों) में विभाजित किया गया है–आदि, मध्य और अन्त्य। इनका विवरण निम्न चक्र में दिया गया है।

नाड़ी चक्र

आदि नाड़ी	अश्वि	आर्द्रा	पुन	उ.फा.	हस्त	ज्ये.	मूल	शत	पू.भा.
मध्य नाड़ी	भर	मृग	पुष्य	पू.फा.	चित्रा	अनु.	पूषा	धनि	उ.भा.
अन्त्य नाड़ी	कृति	रोह	श्ले.	मघा	स्वा	विशा	उ.षा.	श्रव	रेव

वर-कन्या का जन्म नक्षत्र एक ही नाड़ी में पड़ना विवाह में अशुभ माना जाता है। दोनों की **आदि (प्रथम)** नाड़ी हो, तो विवाह के पश्चात् उनका परस्पर वियोग आदि, **मध्य नाड़ी** हो, तो दोनों की हानि तथा **अन्त्य** नाड़ी हो तो वैधव्य या अतिशय दुःख होता है।**–बृहज्योतिषसार**

वर-कन्या के नक्षत्र एक ही नाड़ी वाले हों, तो नाड़ी दोष माना जाता है। एक समान नाड़ी वाले वर-कन्या को ज्योतिषाचार्यों ने बहुत अशुभ माना है।

विवाह में नाड़ी दोष का आचार्यों द्वारा विशेष महत्त्व दिया गया है। नारद ऋषि अनुसार–

एक नाडी विवाहश्च गुणैः सर्वे समन्वितः।
वर्जनीयः प्रयत्नेन दम्पत्योः निधनं यतः॥ (नारद)

अर्थात् विवाह मिलान में चाहे सब गुण मिल रहे हों, परन्तु वर-कन्या की एक ही नाड़ी का

प्रयत्नपूर्वक त्याग करना चाहिए। यह दोष दम्पत्ति के लिए अनिष्टकर/घातक माना जाता है। नाड़ी दोष में एक ही नक्षत्र और समान नक्षत्र चरण होने पर भी सभी आचार्यों ने एकमत से अनिष्टकारी कहा है।

नाड़ी दोषापवाद एवं परिहार–

(i) वर-कन्या की एक ही राशि हो, परन्तु नक्षत्र अलग-अलग हों।

(ii) वर-कन्या दोनों का जन्म नक्षत्र एक हो, परन्तु राशियाँ भिन्न-भिन्न हों, तो नाड़ी दोष अविचारणीय है। (विवाह वृन्दावन)

(iii) वर-कन्या, दोनों का नक्षत्र एक हो, परन्तु चरण भिन्न-भिन्न हों।

(iv) नाड़ी दोष ब्राह्मणों के लिए, वर्णदोष क्षत्रियों के लिए, गण दोष वैश्यों के लिए तथा योनि दोष शूद्रों के लिए विशेष रूप से विचारणीय होता है–

नाड़ी दोषस्तु विप्राणां वर्णदोषश्च क्षत्रिये। गणदोषश्च वैश्येषु योनि दोषस्तु पाद्‌जान्॥

ध्यान रहे, ब्राह्मणेतर वर्ण जातियों के लिए नाड़ी दोष नित्तान्तः उपेक्षनीय नहीं होता॥

हमारे मतानुसार नाड़ी दोष का विचार सभी जाति के वर-कन्याओं के मिलान के सम्बन्ध में समान रूप से करना चाहिए। विशेष रूप से कर्क, वृश्चिक तथा मीन (४, ८, १२) राशियों के सन्दर्भ में।

(v) यदि वर-कन्या दोनों की एक राशि हो, परन्तु नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों अथवा यदि दोनों का नक्षत्र एक हो और राशि अलग-अलग हो, एवं च नक्षत्र चरण भिन्न (पाद भेद) हो, तो ऐसी स्थिति में नाड़ी एवं गण दोष नहीं होता–अर्थात् शुभ होता है।

राश्यैक्ये चेद् भिन्नमृक्षं द्वयोः स्यान्नक्षत्रैक्ये राशियुग्मं तथैव।
नाड़ी दोषों नो गणानां च दोषो नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभंस्यात्॥–मुहूर्त्त संग्रह दर्पण

यद्यपि वर-कन्या का एक ही नक्षत्र अथवा एक ही राशि का होने से नाड़ी दोष का परिहार माना गया है, परन्तु यदि दोनों के नक्षत्र चरणों में समानता हो अथवा नक्षत्रों में पाद वेध* हो, तो विवाह सर्वदा त्याज्य एवं वर्जित होगा। यथा–

एक नक्षत्र जातानां नाड़ी दोषो न विद्यते। अन्यर्क्षनाड़ीवेधेषु विवाहो वर्जितः सदा॥
–ज्योतिष तत्त्व प्रकाश

अन्यत्र भी कहा गया है– **दम्पत्योरेक नक्षत्र भिन्नपादे शुभावहम्।**
दम्पत्योरेकपादे तु वर्षान्ते मरणं ध्रुवम्॥ (का. नि.)

पराशरानुसार भी यही अभिमत है–

पराशरः प्राह नवांशभेदाद एकनक्षत्र राशचोरपि सौमनस्यम्॥

***नोट**–ध्यान रहे, किसी नक्षत्र के प्रथम पाद और चतुर्थ पाद तथा दूसरे एवं तीसरे पाद में परस्पर वेध होना भी पाद-वेध कहलाता है।

(vi) **'नरपतिजचर्या'** अनुसार वर कन्या के नक्षत्र चरणों के I & IV, II & III तथा IV & I, III & II चरणों के मध्य ही पादवेध चरणों का विचार करना अनिवार्य होता है। इसके अतिरिक्त अन्य नक्षत्र चरणों के वेध जैसे I & III, II & IV नक्षत्र चरणों में वेधाभाव होने के कारण स्वल्पदोष रह जाता है। (मुहूर्त्त-चिन्तामणि)-पीयूषधारा-

आद्यांशेन चतुर्थांश चतुर्थांशेन यादिमम्। द्वितीयेन तृतीयं तु तृतीयेन द्वितीयकम्॥
ययो भांशव्यधश्चैवं जायते वर कन्ययोः। तयो मृत्युर्न सन्देहः शेषांशाः स्वल्पदोषदाः॥

(vii) 'ज्योतिष चिन्तामणि' अनुसार रोहिणी, मृगशिर, आर्द्रा, ज्येष्ठा, कृतिका, पुष्य, श्रवण, रेवती एवं उत्तराभाद्रपद-इन नक्षत्रों में उत्पन्न वर-कन्या को नाड़ी दोष नहीं लगता।

रोहिण्यार्द्रा मृगेन्द्राग्नी पुष्यश्रवणपौष्णभम्।
अहिर्बुध्न्यर्क्षमेतेषां नाड़ी दोषो न विद्यते॥ **–ज्यो० चिन्तामणि**

नाड़ी आदि दोषों का परिहार होने की स्थिति में उनसे सम्बन्धित आधे गुणों को जोड़ (जमा.कर) देने का भी विधान है।

उपयुक्त उपायों से परिहार–

हमारे मतानुसार गण, योनि, षडाष्टक, द्विद्वादश, नाड़ी आदि अष्टकूटों में परिहार वाक्य उपलब्ध हो जाने पर भी अपनी शक्ति एवं सामर्थ्यानुसार यथोचित संख्या में जप, पाठ, दानादि करवा लेना चाहिए।

'बृहस्पति संहिता' के अनुसार नाड़ी दोष की शान्ति के लिए **श्रीमृत्युञ्जय मन्त्र** का जाप (यथोचित संख्या में) करके ब्राह्मणों को गौ, वस्त्र, अनाज, घृतादि सहित भोजन एवं सुवर्ण, चांदी, रत्नों की दक्षिण आदि से सन्तुष्ट करने से नाड़ी दोष का परिहार हो जाता है–

अन्यत्र भी लिखा है–श्री महामृत्युञ्जय के जप-पाठ के उपरान्त–

षडाष्टके गोमिथुनं प्रदेयं, कास्यं सरूप्यं नवपंचमेच।
नाड्यां सुवर्णान्नमथो सुधेनुं द्विद्वादशे ब्राह्मणतपर्णं च॥

अर्थात् शत्रु षडाष्टक दोष होने पर गोमिथुन (एक गाय, एक बैल), **नवपंचम** में चांदी-कांसे का बर्तन, **नाड़ी दोष** में गाय, अन्न, सुवर्ण-वस्त्र का दान तथा **द्विद्वादश** में ब्राह्मणों एवं सुपात्र जनों को यथाशक्ति भोजन, दान-दक्षिणादि द्वारा सन्तुष्ट करने से मिलान सम्बन्धी **अष्टकूट दोषों** की शान्ति हो जाती है।

वर-कन्या की कुण्डली में नाड़ी-दोष हो, परन्तु अत्यन्त आवश्यक परिस्थितिवश विवाह करना आवश्यक हो, तो उस स्थिति में वर/कन्या का अर्क/कुम्भ विवाह, महामृत्युजंय जप, सुवर्ण, रत्न, चांदी, अनाजादि के दान, ब्राह्मण भोजन आदि के पश्चात् ही विवाह कार्य करना प्रशस्त होगा– **हेमाज्यरत्नगोदानं मृत्युञ्जयजपस्तथा।**
कुर्यादवश्यमुद्वाहे नाडीदोषाऽपनुत्तये॥ (मुहूर्त गणपति)

शुद्ध वर-कन्या मेलापक सारिणी (भाग-१)

वर/नक्षत्र →		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
कन्या ↓	नक्षत्र	अश्वि 1 से 4	भर. 1 से 4	कृति 1	कृति 2,3,4	रोह 1 से 4	मृग 1,2	मृग 3,4	आर्द्रा 1 से 4	पुर्न 1,2,3	पुर्न 4	पुष्य 1 से 4	श्ले 1 से 4	मघा 1 से 4	पू.फा. 1 से 4	उ.फा. 1	उ.फा. 2,3,4	हस्त 1 से 4	चित्रा 1,2
मेष	अश्वि 1 से 4	२८ 8	३३ 4	२८ 3,6	१८॥ 1236	२१॥ 1,2,3	२२॥ 1,2,3	२६ 1,3,5	१७ 1,5,8	१९ 1358	२३॥ 3,8	३१॥ 3	२८ 6	२१ 6,9,व	२५ 9,व	१५ 389व	११ 3578	९ 14578	१३॥ 14567
	भर 1 से 4	३४ 4	२८ 8	२९ 6	१९ 1,2,6	२३ 1,2,3	१४॥ 1238	१८ 1358	२६॥ 1,3,5	२७ 1,3,5	३१॥ 3	२३॥ 3,8	२५ 3,6	२० 6,9,व	१८॥ 8,9व	२६ 9,व	२१॥ 1,5,7	२० 1357	५ 13578
	कृति 1 चरण	२७॥ 3,6	२९ 6	२८ 8	१८ 1,2,8	१० 1268	१६॥ 1236	२० 1356	२०॥ 1356	२१ 1356	२५॥ 3,6	२६॥ 3,6	२३॥ 3,8	१७ 389व	२० 6,9व	२० 6,9व	१५॥ 1567	१६ 1567	१८ 1357
वृष	कृति 2,3,4	१९ 2,3,6	२० 2,6	१९ 2,8	२८ 8	२० 6,8	२६॥ 3,6	१७॥ 2,3,6	१७॥ 2,3,6	१८॥ 2,3,6	२२ 3,5,6	२३ 3,5,6	२० 3,5,8	१९ 358व	२२ 5,6व	२२ 5,6व	२१ 6,9	२१ 6,9	२३॥ 3,9
	रोह 1 से 4	२४ 2,3	२३॥ 2,3	११ 2,6,8	२० 6,8	२८ 8	३६	२७ 1,2	२४ 1,2,3	२३ 1234	२६ 3,4,5	२७ 3,5	१२॥ 3468	१०॥ 3568	२४॥ 3,5व	२७ 5,व	२६ 4,9	२६ 4,9	२० 4,6,9
	मृग 1-2	२३॥ 2,3	१५ 2,3,8	१९ 2,3,6	२७॥ 3,6	३५ -	२८ 8	१९॥ 1,2,8	२४॥ 1,2,4	२३ 1234	२६ 3,4,5	१९ 3,5,8	२१ 3,5,6	१९॥ 456व	१५ 3458	२४॥ 3,5व	२४ 3,9	२६	१३ 6,8,9
मिथुन	मृग 3-4	२७ 3,5	१८ 3,5,8	२२ 3,5,6	२० 2,3,6	२७॥ 2,व	२० 2,8,व	२८ 8	३३ 4	३१॥ 3,4	१९॥ 2,4,5	१२ 2356	१४॥ 2356	२४ 3,4,6	२० 348व	२८॥ 3,व	३१॥ 3	३४ 4	२१ 4,6,8
	आर्द्रा 1 से 4	१९॥ 3,5,8	२७॥ 3,5	२१॥ 3,5,6	१९ 2,3,6	२५ 2,3,4	२६ 2,4	३४ -	२८ 8	२५ 4,8	१३ 24568	२०॥ 235व	१३ 2356	२४ 3,6,व	२९॥ 3,4व	२१॥ 3,4,8	२४॥ 3,4,8	२५ 3,4,8	२७॥ 4,6
	पुन. 1,2,3	२० 3,5,8	२७ 3,5	२३॥ 3,5,6	२०॥ 2,3,6	२३ 2,3,4	२४ 2,3,4	३१॥ 3,4	२४ 4,8	२८ 8	१६ 258व	२३ 2,5,व	१७ 235व	२३ 346व	२७ 3,4व	२२ 3,8व	२५ 3,8	२६ 3,8	२७॥ 3,6
कर्क	पुन. 4	२३ 1,3,8	२९॥ 1,3	२५॥ 1,3,6	२२ 1356	२४ 1345	२५ 1345	१८ 1245	१० 12568	१५ 1258	२८ 8	३५ .	२९॥ 3,6	१६॥ 1246	२०॥ 1234	१५॥ 1238	१८ 1358	१९॥ 1358	२१ 1356
	पुष्य 1 से 4	३०॥ 1,3	२१॥ 1,3,8	२७ 1,3,6	२३ 1356	२५ 1,3,5	१८ 1358	११॥ 12358	१८॥ 1235	२२ 125व	३५ .	२८ 8	३० 6	२० 1236	१५॥ 1238	२३॥ 1,2,3	२६ 1,3,5	२७ 1,3,5	१२॥ 14568
	श्ले. 1 से 4	२६ 1,6	२५ 1,3,6	२३ 1,3,8	१९ 1358	११॥ 14568	१९ 1456	१३ 12456	१२ 12456	१५॥ 1256	२८ 3,6	२९ 6	२८ 8	१५ 1248	१५॥ 1246	१८॥ 1236	२१॥ 1356	२१ 1356	२६ 1,3,5
सिंह	मघा 1 से 4	२० 6,9,व	२० 6,9,व	१६॥ 8,9,व	१७॥ 158व	९॥ 1568व	१७॥ 156व	२१॥ 146व	२२॥ 136व	२१ 1346व	१६॥ 2,4,6	२० 2,3,6	१६॥ 2,4,8	२८ 8	३० 6	२७ 3,6	१६ 1236	१६॥ 1236	२१॥ 123व
	पू.फा. 1 से 4	२६ 9,व	१८॥ 8,9,व	२० 6,9,व	२१ 156व	२३॥ 145व	१५॥ 1458	२० 148व	२८॥ 1,3,व	२६ 1,4,व	२२॥ 2,3,4	१७॥ 2,3,8	१६॥ 2346	३० 6	२८ 8	३५	२४ 1,2व	२३ 123व	७॥ 1268
	उ.फा. 1	१७ 8,9,व	२६ 9,व	२१ 6,9,व	२१ 156व	२६ 1,5,व	२५ 135व	२८॥ 1,3व	२१ 1,3,8	२१॥ 1,3,8	१७॥ 2,3,8	२५॥ 2,3	२० 2,3,6	२७॥ 3,6	३५ .	२८ 8	१७ 128व	१६॥ 128व	१३॥ 1236
कन्या	उ.फा. 2,3,4	१३ 3578	२२॥ 5,7	१६ 5,6,7	२१ 6,9	२६ 4,9	२४॥ 3,9	३१॥ 1,3	२३॥ 1,3,8	२४॥ 1,3,8	२० 3,5,8	२८ 3,5	२२॥ 3,5,6	१८ 2,6,व	२५ 2,व	१८ 2,8व	२८ 8	२७॥ 8	२५ 3,4,6
	हस्त 1 से 4	१० 34578	२० 3,5,7	१७॥ 5,6,7	२२ 6,9	२५ 9	२६ 9	३३ 1,4	२२॥ 1,3,8	२४ 1,3,8	२० 358व	२८ 3,5व	२३ 3,5,6	१८॥ 236व	२२॥ 2,3व	१६ 2,8व	२६ 8	२८ 8	२८ 4,6
	चित्रा 1,2	१३ 3567	४॥ 45678	१९ 3,5,7	२४ 3,4,9	२० 6,9	१२॥ 6,8,9	१९ 1,6,8	२६ 1,4,6	२५॥ 1,3,6	२१॥ 356व	१२॥ 3568व	२७ 35,व	२२॥ 2,3,व	८॥ 2368व	१४॥ 2346व	२४॥ 3,4,6	२७॥ 4,6	२८ 8

नोट—गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1, 2, 3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वादश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाड़ी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

वर-कन्या मैलापक सारिणी – (भाग-२)

कन्या राशि	वर/नक्षत्र → / कन्या नक्षत्र ↓	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि 1 से 4	भर. 1 से 4	कृति 1	कृति 2,3,4	रोह 1 से 4	मृग 1,2	मृग 3,4	आर्द्रा 1 से 4	पुर्न 1,2,3	पुर्न 4	पुष्य 1 से 4	श्ले 1 से 4	मघा 1 से 4	पू.फा. 1 से 4	उ.फा. 1	उ.फा. 2,3,4	हस्त 1 से 4	चित्रा 1,2
तुला	चित्रा 3,4	२२ ॥ 3,4,6	१४ 3468	२८ ॥ 3,4	२४ 3,7	२० ॥ 4,6,7	१२ 6,7,8	१३ 6,8,9	२१ 4,6,9	१९ ॥ 3,6,9	२० ॥ 3,5,6	११ 3568	२६ ॥ 3,5,व	२५ ॥ 3,5,व	११ ॥ 3568	१७ ॥ 456व	१७ ॥ 2346	२० 2,4,6	२१ 2,8
	स्वा. 1 से 4	२७ ॥ 3,4	२९ ॥ 3	१७ ॥ 3,6,8	१३ 3678	१५ ॥ 3,7,8	२६ 4,7	२७ 9	२६ ॥ 4,9	२८ 9	२९ 5,व	२७ 3,5	१४ 3568	१३ 3568	२५ ॥ 3,5व	२५ ॥ 3,5व	२६ 2,3	२७ ॥ 2,3	२१ 2,4,6
	विशा 1,2,3	२२ ॥ 3,4,6	२३ 3,4,6	२० ॥ 3,4,8	१५ ॥ 3478	१० ॥ 3678	१८ ॥ 3,6,7	२० 3,6,9	२० 4,6,9	२१ 4,6,9	२२ 56,व	२१ ॥ 4,5,6	१८ ॥ 3,5,8	१७ ॥ 358,व	१९ ॥ 356व	१७ ॥ 2346	१७ ॥ 2346	११ 2346	२७ ॥ 2,3
वृश्चिक	विशा 4	१७ 1467	१७ 1467	१४ ॥ 1478	१९ ॥ 1,4,8	१४ ॥ 1368	२२ ॥ 1,3,6	१२ ॥ 1567	१३ 1567	१३ ॥ 1567	१९ ॥ 4,6,9	१८ ॥ 4,6,9	१५ ॥ 3,8,9	२२ 1,3,8	२३ ॥ 136व	२१ ॥ 146व	१७ ॥ 1456	१८ 1456	२७ 135व
	अनु. 1 से 4	२५ 1,3,7	१५ ॥ 1378	२० 1367	२४ ॥ 1,3,6	२७ ॥ 1,3,4	२० ॥ 1,3,8	१० 13578	१५ 13457	२० ॥ 1,5,7	२६ ॥ 9	१८ ॥ 8,9	२१ 6,9	२५ 1,3,6	२१ 138व	२९ ॥ 1,3व	२५ 135व	२६ 135व	११ ॥ 1358
	ज्ये. 1 से 4	१२ 1678	१८ ॥ 1367	२५ 1,3,7	२९ ॥ 1,3	२२ ॥ 1,3,6	२२ ॥ 1,3,6	१३ 13567	३ 134578	५ ॥ 135678	१० ॥ 3689	२० 6,9	२६ 9	३१ 1,4,व	२४ 136व	१७ 1368	१३ 13568	१३ 1568व	२४ ॥ 1345
धनु	मूल 1 से 4	१२ 4689	२१ 6,9	२५ 3,9	१९ ॥ 1,5,7	१३ 1567	१३ ॥ 1567	२१ 1356	१५ 1568	१२ 14568	७ ॥ 4678	१७ ॥ 3,6,7	२४ 4,7	२५ 9,व	२० 6,9व	९ ॥ 689व	१३ 1568	१३ 1568	२६ 1,4,5
	पू.षा. 1 से 4	२६ 9	१८ ॥ 8,9	१८ ॥ 4,6,9	१२ ॥ 14567	१८ ॥ 1457	११ 14578	१८ ॥ 1458	२७ 1,3,5	२७ 1,3,5	२३ ॥ 37,व	१३ 3478	१७ ॥ 3,6,7	१९ 6,9,व	१७ ॥ 8,9व	२५ 9,व	२८ ॥ 1,5	२७ 1,3,5	१३ ॥ 13568
	उ.षा. 1	२५ 3,9	२६ 4,9	१२ 4689	६ 15678	१० 14578	१७ 1457	२५ 1,4,5	२७ 1,3,5	२७ ॥ 1,3,5	२३ ॥ 37,व	२३ ॥ 3,7,व	८ ॥ 678व	८ ॥ 4689	२४ 4,9व	२५ 9,व	२८ ॥ 1,5	२८ ॥ 1,5	२१ 1,5,6
मकर	उ.षा. 2,3,4	२७ 3,5	२८ ॥ 4,5	१४ ॥ 4568	१२ 4689	१६ 4,8,9	२३ 3,4,9	२१ 1347	२२ 1,3,7	२२ ॥ 1,3,7	२८ 3,5	२८ 3,5	१४ 3568	४ ॥ 45678	२० 4,5,7	२१ 4,5,7	२४ ॥ 9,व	२५ 9,व	१७ ॥ 4,6,9
	श्रव 1234	२७ 3,5	२६ ॥ 3,4,5	१४ 4568	१२ 4689	१६ 4,8,9	२६ 4,9	२३ 147व	२१ 1,3,7	२२ 1,4,7	२८ 4,5	२६ 4,5	१५ 4568	६ ॥ 5678	१८ ॥ 4,5,7	२० 4,57	२४ 4,9व	२४ ॥ 4,9व	१९ ॥ 4,6,9
	धनि 1,2	२० 3456	११ ॥ 34568	२६ 3,4,5	२४ 3,4,9	२० ॥ 4,6,9	१२ 4689	९ 1678	१६ 1467	१६ 1467	२२ 4,5,6	१३ 4568	२८ 4,5	१९ ॥ 4,5,7	५ ॥ 5678	१२ ॥ 4567	१६ 469व	१८ 469व	१५ 489व
कुम्भ	धनि 3,4	२० 4,5,6	१० ॥ 4568	२६ 3,4,5	३० ॥ 3,4	२७ 4,6	१९ ॥ 4,6,8	१२ 4,8,9	१९ 4,6,9	१८ ॥ 3469	१३ 4567	४ ॥ 45678	१९ ॥ 357व	२५ ॥ 3,5,व	११ 568व	१८ ॥ 456व	१८ 4,6,7	१९ 4,6,7	१७ 4,7,8
	शत 1 से 4	१५ 3568	२१ 3,5,6	२८ 3,5	३२ ॥ 3	२५ ॥ 3,4,6	२७ 4,6	२० 4,6,9	१२ 4698	१३ 6,9,8	८ 5678व	१४ 567व	२१ 5,7,व	२६ ॥ 3,5,व	२० ॥ 356व	१२ ॥ 568व	११ ॥ 3678	९ 4678	२५ 4,7
	पू.भा. 1,2,3	१८ 4,5,8	२५ 3,4,5	२० 4,5,6	२५ 3,4,6	३१ ॥ 3,4	३१ ॥ 3,4	२५ 3,4,9	१७ ॥ 4,8,9	१८ ॥ 4,8,9	१३ ॥ 4578व	२० 457व	१३ 3567व	१९ ॥ 5,6,व	२५ ॥ 4,5व	१६ ॥ 458व	१५ ॥ 4,7,8	१५ ॥ 3478	१७ ॥ 3467
मीन	पू.भा. 4	१४ ॥ 1248	२२ 1234	१६ ॥ 1246	१९ 1456	२६ 1345	२६ 1345	२६ 145व	१८ ॥ 1458	१९ 1458	१८ 4,8,9	२५ 4,9	१९ 4,6,9	१८ 1467	२३ ॥ 1347	१४ ॥ 1478	१६ 1458व	१७ 1458	१८ ॥ 1456
	उ.भा. 1 से 4	२५ 1,2,3	१७ 1238	१९ 1236	२१ 1356	२६ 1345	१८ 1358	१७ ॥ 1358	२५ 135व	२८ 1,5,व	२७ ॥ 9	१९ ॥ 8,9	२१ ॥ 6,9	१९ 1367	१७ 1378	२६ 1,3,7	२७ ॥ 135व	२७ 135व	१० 14568
	रेव 1 से 4	२५ 1,2,4	२४ ॥ 1,2,3	११ 1268	१४ 1568	१७ ॥ 1358	२६ 1,3,5	२५ 135व	२४ ॥ 135व	२६ 1,3,5	२६ 3,9	२७ ॥ 9	१४ 6,8,9	१३ 1687	२३ ॥ 1,3,7	२४ 1,3,7	२६ 135व	२७ 135व	१९ ॥ 1456

नोट–गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1,2,3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वादश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाड़ी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

वर-कन्या मैलापक सारिणी – (भाग-३)

	वर/नक्षत्र →	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
कन्या	नक्षत्र ↓	चित्रा 3,4	स्वा. 1 से 4	विशा 1,2,3	विशा 4	अनु 1 से 4	ज्ये 1 से 4	मूल 1 से 4	पू.षा. 1 से 4	उ.षा. 1 चरण	उ.षा. 2,3,4	श्रव 1 से 4	धनि 1,2	धनि 3,4	शत 1 से 4	पू.भा. 1,2,3	पू.भा. 4	उ.भा. 1 से 4	रेव 1 से 4
मेष	अश्वि 1 से 4	२२॥ 1346	२६॥ 1,3,4	२२॥ 1346	१८॥ 3467	२५॥ 3,7	१४॥ 6,7,8	१३ 6,8,9	२५ 4,9	२३॥ 1,3,9	२५ 1,3,5	२६ 1,3,5	२० 1456	२०॥ 1456	१५ 1358	१६ 1358	१५ 2348	२५ 2,3	२६ 2,4
मेष	भर 1 से 4	१३॥ 1368	२९ 1,3	२१॥ 1,3,6	१७॥ 3467	१७॥ 378	२० 3,6,7	२० 6,9	१८॥ 8,9	२६ 9	२७॥ 1,5	२६ 1,3,5	१० 14568	९॥ 14568	२० 1356	२४ 1345	२३ 2,3,4	१७॥ 2,3,8	२७ 2,3
मेष	कृति 1 चरण	२७॥ 1,3,4	१५ 1368	१९॥ 1348	१५॥ 3478	१९॥ 3,6,7	२५॥ 3,7	२५ 3,9	१८॥ 4,6,9	१२॥ 6,8,9	१३॥ 1568	१२ 14568	२५ 1,3,5	२५॥ 1,3,5	२७ 1,3,5	१९॥ 1356	१७॥ 2346	१९॥ 2,3,6	१२ 2368
वृष	कृति 2,3,4	२३ 1347	११ 13678	१४॥ 1378	२०॥ 3,4,8	२४॥ 3,6	३०॥ 3	२० 3,5,7	१४ 4567	७ 5678	१२ 6,9,8	१०॥ 4689	२४ 3,4,9	२९॥ 1,3,4	३१॥ 1,3	२३॥ 1346	२० 3456	२२ 3,5,6	१४ 3568
वृष	रोह 1 से 4	१९॥ 1,6,7	१५॥ 1378	९॥ 1678	१५ 1368	२९॥ 3,4	२४ 3,6	१४॥ 3567	१९॥ 3,5,7	११॥ 4578	१६ 4,8,9	१७॥ 4,8,9	२०॥ 4,6,9	२६ 1,4,6	२५ 1,3,6	३१ 1,3,4	२७ 3,4,5	२७ 3,4,5	१९ 3,5,8
वृष	मृग 1-2	१२ 1678	२५॥ 1,7	१९ 1367	२५ 3,6	२१॥ 3,5,8	२४॥ 3,6	१५ 3567	१०॥ 3578	१७॥ 3457	२२ 3,4,9	२५॥ 4,9	१३ 4689	१९॥ 1468	२७ 1,4,6	२९॥ 1,3,4	२६ 3,5	१८ 3,5,8	२७ 3,5
मिथुन	मृग 3-4	१४ 6,8,9	२७ 4,9	२१ 3,6,9	१४ 3567	११ 3578	१४ 3567	२३ 3,5,6	१८॥ 3458	२५ 3,4,5	२०॥ 347व	२४ 4,7,व	११ 678व	१३ 6,8,9	२१॥ 6,9	२४ 3,9	२५॥ 3,5,व	१७॥ 3,5,8	२६॥ 3,5,व
मिथुन	आर्द्रा 1 से 4	२१ 4,6,9	२७ 9	२०॥ 4,6,9	१३ 4567	१७॥ 3457	३ 345678	१६ 3568	२८ 3,5	२८ 3,5	२३॥ 3,7व	२३॥ 3,7,व	१८ 467व	१९॥ 4,6,7	१२॥ 689	१७॥ 4,8,9	१९ 5,8,व	२६॥ 3,5व	२७ 3,5,व
मिथुन	पुन. 1,2,3	२१ 3,6,9	२८ 9	२२ 6,9	१५ 5,7व	२२ 5,7व	७ 35678	१४ 34568	२७ 3,5	२७ 3,5	२२॥ 3,7व	२३॥ 3,7,व	१७॥ 3467	१९ 3469	१४ 6,8,9	१६ 4,8,9	१८॥ 4,8,9	२८ 5,व	२७॥ 3,5,व
कर्क	पुन. 4	२१ 1356	२८ 1,5व	२२ 156व	२० 6,9	२६ 9	१२ 3689	८॥ 14678	२१ 147व	२१॥ 147व	२६ 1,3,5	२७ 1,3,5	२१ 1456	१२ 14567	८॥ 1567	१०॥ 14578	१६॥ 4,8,9	२६॥ 9	२६ 3,9
कर्क	पुष्य 1 से 4	११ 14568	२६॥ 1,3,5	२१॥ 1456	१९॥ 4,6,9	१८॥ 8,9	२१ 6,9	१७॥ 1367	११॥ 1478	२१॥ 1347	२६ 1,3,5	२५ 1345	१३ 13568	४॥ 145678	१४ 13567	१८॥ 1457	२४ 4,9	१८॥ 8,9	२७ 9
कर्क	श्ले. 1 से 4	२५॥ 1,3,5	१२ 1568	१७॥ 1,5,8	१५ 3,8,9	२०॥ 6,9	२६ 9	२३ व 1,4,7	१६ 1367	७॥ 3678	१३ 4568	१३ 4568	२६ 1,4,5	१७॥ 1457	२० 1357	११ 14567	१८ 4,6,9	२१ 6,9	१३ 6,8,9
सिंह	मघा 1 से 4	२४॥ 1,3,5	११॥ 13568	१६॥ 1358व	२२॥ 3,8व	२६ 3,6व	३३ व	२५ 9,व	१९॥ 6,9व	८॥ 689व	३॥ 15678	४॥ 15678	१८॥ 1,5,7	२४॥ 1,5,व	२५॥ 1,5,व	१८॥ 156व	१९ 3,6,7	२० 3,6,7	१३॥ 6,7,8
सिंह	पू.फा. 1 से 4	१०॥ 1568	२५॥ 135व	१८॥ 156व	२४ 3,6व	२३॥ 3,8व	२५॥ 3,6व	२० 6,9व	१७॥ 8,9,व	२४ 4,9व	१९ 1,5,7	१८॥ 1,5,7	४॥ 15678	११ 1568	१९॥ 156व	२४॥ 135व	२५ 3,7	१७॥ 3,7,8	२६ 3,7
सिंह	उ.फा. 1	१७ 13456	२५॥ 1,3,5	१६॥ 13456	२२॥ 3,4,6	३१॥ 3,व	१७॥ 3,6,8	९॥ 3689	२५ 9,व	२५॥ 9,व	२० 1,5,7	२० 1,5,7	११॥ 1567	१७॥ 1356	११ 3568	१५॥ 358व	१६ 3478	२६॥ 3,7	२६ 3,7
कन्या	उ.फा. 2,3,4	१६॥ 1246	२५॥ 1,2,3	१७ 1246	१८ 456व	२७॥ 3,5व	१३॥ 568व	१४ 3568	२९॥ 5	२९॥ 5	२४॥ 9,व	२५ 9,व	१७ 3,6,9	१६॥ 1367	१०॥ 3678	१४॥ 1378	१७॥ 3,5,8	२८ 3,5व	२७॥ 3,5,व
कन्या	हस्त 1 से 4	२० 1246	२६॥ 1,2,3	१८॥ 1236	२० 3456	२६ 3,5व	१३॥ 3568	१५ 3568	२७ 3,5	२८॥ 5	२४ 9,व	२४ 9,व	१९ 4,6,9	१९ 1467	८॥ 34678	१३॥ 1378	१६॥ 3458	२६॥ 3,5व	२७॥ 3,5,व
कन्या	चित्रा 1,2	२० 1,2,8	१९ 1246	२६॥ 1,2,3	२८॥ 3,5व	११ 3568	२५ 345व	२७ 3,4,5	१४ 3568	२२ 3,5,6	१७॥ 3,6,9	१९ 6,9,व	१५॥ 4,8,9	१६ 1478	२४ 1,4,7	१६॥ 1467	१९॥ 3456	१० 34568	१९॥ 3456

नोट—गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1, 2, 3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वादश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाड़ी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

वर-कन्या मेलापक सारिणी – (भाग-४)

वर/नक्षत्र →		तुला			बृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
कन्या नक्षत्र ↓		चित्रा 3,4	स्वा. 1 से 4	विशा 1,2,3	विशा 4	अनु 1 से 4	ज्ये 1 से 4	मूल 1 से 4	पू.षा. 1 से 4	उ.षा. 1 चरण	उ.षा. 2,3,4	श्रव 1 से 4	धनि 1,2	धनि 3,4	शत 1 से 4	पू.भा. 1,2,3	पू.भा. 4	उ.भा. 1 से 4	रेव 1 से 4
तुला	चित्रा 3,4	२८ 8	२७ 4,6	३४ 3	२३॥ 2,3व	६ 2348व	२१ 234व	२७॥ 3,4,5	१४ 3568	२२ 3,5,6	२५ 3,6,व	२७ 6,व	२३॥ 4,8,व	१८॥ 4,8,9	२६ 4,9	१९ 3469	१२ 4567	३ 345678	१२ 34567
	स्वा. 1 से 4	२८ 4,6	२८ 8	२० 4,6,8	१० 248व	२१॥ 2,3व	१६॥ 236व	२३ 3,5,6	२७ 3,5	१९ 3,5,8	२२ 3,8,व	२३ 3,8,व	२७ 4,6	२१ 4,6,9	२० 4,6,9	२५ 4,9	१९ 457,व	१९॥ 357,व	१२ 3578
	विशा 1,2,3	३४॥ 3	१९ 4,6,8	२८ 8	१७॥ 2,8व	१६ 246व	२१॥ 234व	२७॥ 3,4,5	२२ 3,5,6	१४ 3568	१७ 368व	१७॥ 368व	३०॥ 3,4,व	२५ 3,4,9	२६ 4,9	२० 4,6,9	१४ 4567	१३॥ 4567	४ 45678
बृश्चिक	विशा 4	२३ 123व	७ 12468व	१६॥ 128व	२८ 8	२७॥ 4,6	३१॥ 3,4	२२ 1234	१७॥ 1362व	९ 12368	१२॥ 13568	१२॥ 13568	२५ 1345	२४ 1345	२६ 145,व	२० 1456	१९॥ 4,6,9	१८॥ 4,6,9	९॥ 4689
	अनु. 1 से 4	६॥ 12व68	२२ 123व	१६ 1246	२८ 4,6	२८ 8	३१ 6	१५ 12346	१३॥ 1238व	२२ 123व	२५ 1,3,5	२६ 1,3,5	१२ 13568	११ 1358	२१ 1356	२४॥ 145व	२४ 4,9	१८॥ 8,9	२७॥ 9
	ज्ये. 1 से 4	१९॥ 1234	१५ 126व	१९॥ 1234	३१॥ 3,4	३० 6	२८ 8	१४॥ 1248	१७॥ 1236	१७॥ 1व236	२० 1356	२० 1356	२५ 1,3,5	२४ 1345व	१८ 1358	१० 13568	९॥ 3689	२१॥ 6,9	२१ 6,9
धनु	मूल 1 से 4	२६ 1,4,5	२१ 1356	२६ 1,4,5	२३ 124व	१५॥ व2346	१५ व248	२८ 8	२८ 4,6	२६॥ 3,6	१५॥ 1236	१५॥ 1236	२०॥ 1234	२८॥ 1,3,4	२१॥ 1,3,8	१४॥ 1468	१६॥ 3468	२५ 6,व	२७ 6,व
	पू.षा. 1 से 4	१३ 1568	२७ 1,3,5	२१ 1356	१८ 246व	१५॥ 238व	१८ 246व	२८ 4,6	२८ 8	३४ -	२३ 124व	२३॥ 1,2,व	५॥ 1268	१४॥ 1468	२३॥ 1,4,6	२८॥ 1,4	३०॥ 4,व	२३॥ 8,व	३१ 3,व
	उ.षा. 1	२१ 1,5,6	१९ 1,5,8	१३ 1568	९॥ 268व	२४ 2,3व	१८॥ 2,3,6	२६॥ 3,4,6	३४ -	२८ 8	१६॥ 128व	१५ 1248व	१५॥ 1236व	२३॥ 1,3,6	२३॥ 1,3,6	२९॥ 1,3,4	३१ 3,व	३१ 3,व	२३ 3,8,व
मकर	उ.षा. 2,3,4	२४ 1,3,6	२२॥ 1,3,8	१५॥ 1368	१३ 4568	२७ 4,5	२१ 4,5,6	१६ 246व	२४ 2,4व	१७॥ 2,8व	२८ 8	२६ 4,8	२६॥ 4,6	१७॥ 126व	१७॥ 126व	२३॥ 1234	३०॥ 3	३१ 3	२२॥ 3,4,8
	श्रव 1234	२७ 146व	२२॥ 148व	१७॥ 1468	१४ 3568	२७ 3,4,5	२२ 3456	१७॥ 246व	२३॥ 2,3व	१५ 248व	२५ 4,8	२८ 8	२८ 4,6	१९ 1246	१८ 1246	२१॥ 124व	२८॥ 3,4	२९॥ 3	२२॥ 3,8
	धनि 1,2	२३ 148व	२४॥ 146व	२९ 1,4व	२६ 3,4,5	१२ 4568	२६ 3,4,5	२१ 234व	७॥ 2468व	१६ 2346	२७ 3,4,6	२७॥ 4,6	२८ 8	१८॥ 128व	२४ 124व	२० 126व	२६॥ 3,6	१५॥ 4,6,8	२२॥ 3,4,6
कुम्भ	धनि 3,4	१८॥ 4,8,9	२० 4,6,9	२५ 3,4,9	२५ 4,5व	११ 4568	२५ 4,5व	२९॥ 3,4	१५॥ 3468	२४॥ 3,6	१८ 236व	१९ 246व	२० 2,8,व	२८ 8	३३ 4	२८॥ 3,6	१८ 236व	७ 2468व	१४॥ 246व
	शत 1 से 4	२६ 4,9	१९॥ 4,6,9	२६ 4,9	२६॥ 4,5व	२१ 356व	१९ 358व	२२॥ 3,4,8	२४॥ 3,4,6	२४॥ 3,4,6	१८॥ 236व	१८॥ 236व	२५ 2,4,व	३३ 4	२८ 8	१९॥ 4,6,8	८॥ 2468व	१७॥ 236व	१६ 236व
	पू.भा. 1,2,3	१९ 3469	२६ 4,9	२० 4,6,9	२०॥ 456व	२६॥ 4,5व	११ 4568व	१५ 3468	२९॥ 3,4	३०॥ 3,4	२४॥ 234व	२३॥ 234व	२०॥ 236व	२९ 3,6	१९ 4,6,8	२८ 8	१७॥ 2,8,व	२२॥ 2,4,व	२०॥ 234व
मीन	पू.भा. 4	१२ 14567	१९॥ 1457	१३॥ 14567	१९॥ 4,6,9	२५ 4,9	९ 4689	१५॥ 1468	२९ 134व	३० 1,3व	२९॥ 1,3,4	२८॥ 1,3,4	२५॥ 1,3,6	१७ 1236व	८ 12468	१७ 128व	२८ 8	३३ 4	३०॥ 3,4
	उ.भा. 1 से 4	३ 145678	१९॥ 1357	१२॥ 14567	१८॥ 4,6,9	१९॥ 8,9	२१॥ 6,9	२४॥ 136व	२२॥ 1,8व	३० 134व	२९॥ 1,3,4	२९॥ 1,3,4	१४॥ 1468	५॥ 12468	१६॥ 1236व	२२ 124व	३३ 4	२८ 8	३५ -
	रेव 1 से 4	१३ 14567	११ 1578व	४॥ 145678	१०॥ 4689	२७॥ 9	२२॥ 6,9	२७ 146व	२९॥ 1,3व	२१॥ 138व	२१ 1348	२१॥ 1348	२३ 1346	१४॥ 1246व	१६॥ 1236व	१८॥ 124व	३० 3,4	३४ -	२८ 8

नोट–गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1,2,3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वादश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाड़ी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

तिथि, नक्षत्रादि गण्डान्त नक्षत्रों का विचार

(1) अश्विनी नक्षत्र–मेष राशि एवं केतु के इस नक्षत्र में उत्पन्न हुए बच्चे का जीवन प्रायः संघर्षशील होता है। इस नक्षत्र में **प्रथम चरण** में जन्म होने से पिता के लिए कष्टकारी, **दूसरे चरण** में फिजूलखर्ची, **तीसरे चरण** में भ्रमणशील तथा **चतुर्थ नक्षत्र** में कृश शरीर (अपने शरीर के लिए) कष्ट रहता है।

(2) आश्लेषा नक्षत्र–कर्क राशि एवं बुध के नक्षत्र के जातक प्रायः चंचल एवं चतुर बुद्धि वाले तथा परिवर्तनशील प्रकृति के होते हैं। **प्रथम चरण** में जन्म हो तो विशेष दोष नहीं, **दूसरे चरण** में पैतृक धन की हानि, **तीसरे चरण** में माता-पिता के लिए गण्डान्त शूल तथा **चतुर्थ चरण** में पिता के लिए अनिष्टकारी है–

आश्लेषाद्ये न गण्डं स्यातंधनगण्डं द्वितीयके। तृतीये मातृगण्डं तु पितृगण्डं चतुर्थके॥

(3) मघा नक्षत्र–सूर्य राशि और केतु के नक्षत्र में उत्पन्न जातक स्पष्टवादी, शीघ्र क्रुद्ध होने वाले, उद्यमी और धनवान होते हैं। **प्रथम चरण** में उत्पन्न हो तो माता-पिता को कष्ट या मातृ पक्ष की हानि, **दूसरे चरण** में पिता को परेशानी, **तीसरे चरण** में जन्म हो तो शुभ फलदायक, **चतुर्थ चरण** में जन्म हो तो विद्या, धनादि के लिए शुभ होता है।

(4) ज्येष्ठा नक्षत्र–मंगल की राशि (वृश्चिक) एवं बुध के नक्षत्र में उत्पन्न जातक सरल हृदय, तीक्ष्ण बुद्धि, धर्म परायण तथा उन्नति के कार्यों में अनेक बाधाओं से युक्त होते हैं। ज्येष्ठा नक्षत्र के **प्रथम पाद** (चरण) में उत्पन्न बच्चा ज्येष्ठ (बड़े) को अरिष्टकर, **दूसरे चरण** में पैदा हो तो छोटे भाई को नेष्ट, **तीसरे चरण** में पिता के लिए अरिष्टकर तथा यदि **चतुर्थ चरण** में उत्पन्न हो जातक स्वयं अपने एवं पिता के लिए अनिष्टकारी होता है।

ज्येष्ठाद्यपादेऽग्रजमार्शु हन्याद् द्वितीयपादे यदि तत्कनिष्ठम्।
तृतीयपादे पितरं निहन्ति स्वयं चतुर्थे मृतिमेति जातः॥ (जातक-पारिजात)

ज्येष्ठा नक्षत्र और मंगलवार के योग में उत्पन्न कन्या बड़े भाई के लिए अरिष्टकारक होती है।

(5) अभुक्त मूल नक्षत्र–ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम २ घटियाँ तथा मूल नक्षत्र के आरम्भ की २ घटियाँ–कुल चार घड़ियाँ **अभुक्त मूल** गण्ड नक्षत्र कहलाते हैं। इनमें उत्पन्न कन्या, पुत्र, पशु और नौकर कुल के लिए अनिष्टकारी होते हैं। इनमें उत्पन्न बच्चे को बिना शान्ति कराये न देखें।

अभुक्त मूलं गठिका चतुष्टयं ज्येष्ठान्त्यमूलादि भवं हि नारदः।
जातं शिशुं तत्र परित्यजेत् वा मुखं पिताऽस्याष्ट समा न पश्येत्॥

अभुक्त मूल–नक्षत्रों की आद्यान्त घटियों के बारे में विद्वानाचार्यों में मतान्तर पाया जाता है। यथा-नारद के अनुसार ज्येष्ठा, मूल नक्षत्र की चार घटियाँ, वशिष्ठ के अनुसार २ घड़ियाँ तथा बृहस्पति के मतानुसार केवल १-१ अभुक्त-मूल संज्ञक है। अभुक्तमूलोत्पन्न बालक यदि जीवित रहे, तो अपने वंश की वृद्धि करने वाला, धनवान् एवं सम्पत्तिवान होता है।

मूल नक्षत्र–केतु के नक्षत्र और गुरु की राशि (धनु) में उत्पन्न जातक धार्मिक रुचि वाला, उदार हृदय, मिलनसार, परोपकारी, धन-वाहनादि सुखों से युक्त होता है। चरण भेदानुसार मूल के **प्रथम चरण** में उत्पन्न जातक पिता की हानि करता है। **दूसरे चरण** में माता की हानि, **तीसरे चरण** में धन का नाश तथा **चौथा चरण** शुभ होता है। नक्षत्र की विधिपूर्वक शान्ति करवा लेने से अनिष्ट का भय नहीं रहता।

मूलाद्यपादे पितरं निहन्याद् द्वितीयके मातरमाशु हन्ति।
तृतीयजो वित्तविनाशकः स्यात् चतुर्थपादे समुपैति सौख्यम्॥ (जातक-पारिजात)

मूल नक्षत्र और रविवार दोनों के योग में उत्पन्न कन्या श्वसुर के लिए अनिष्टकारी होती है–

भौमवासरे योगेन ज्येष्ठाजा ज्येष्ठ सोदरम्॥ भानुवासरयोगेन मूलजा श्वसुरं हरेत्॥

मूल नक्षत्र फल का अन्य प्रकार

मूल नक्षत्र की सम्पूर्ण घटियों को 15 द्वारा भाग देकर 15 खण्ड बना लें। प्रत्येक खण्ड का फल इस प्रकार से होगा। **प्रथम भाग** हो तो पिता के लिए अनिष्टकर, **दूसरे में** चाचा की हानि, **तीसरे में** बहनोई की हानि, **चौथे में** पितामह (दादा) की हानि, **आठवें में** चाची के लिए अनिष्टकर, **नवमे में** सबके लिए अनिष्टकर, **दसवें अंश में** पशु का नाश, **ग्यारहवें में** नौकर का नाश होता है। **बारहवें अंश में** स्वयं जातक का नाश होता है। **तेरहवें अंश में** हो तो उसके ज्येष्ठ भाई का नाश, **चौदहवें अंश में** जातक की बहिन का अनिष्ट होता है। अगर **पन्द्रहवें में** हो तो नाना का नाश (अनिष्ट) होता है।

उदाहरणार्थ यदि मूल का सर्वर्क्ष योग ६४ घड़ी १८ पल है, तो इसमें १५ द्वारा भाग देने से लब्ध प्रथम भाग में ४ घड़ी, १७ पल हुए। मान लो कि जन्मकालीन भयात् २८।४५ है। ४।१७ घट्यादि को ९ से गुणा करने पर पता चला कि ३८।३३ पर नौवां खण्ड (भाग) समाप्त होकर ३८।४५ पर दसवां भाग पड़ता है। तदनुसार फल चौपाय आदि पशु के लिए अनिष्ट रहेगा।

(6) रेवती नक्षत्र–बुध के नक्षत्र और गुरु की राशि (मीन) में उत्पन्न जातक सर्वप्रिय, विद्यावान, सुन्दर आकृति, तर्कशील एवं धनवान् होता है। रेवती के **प्रथम चरण** में जन्म हो तो राजा के समान वैभवशाली, **दूसरे में** मन्त्री के समान सुख साधनों से युक्त, **तीसरे में** जन्म होने से धनवान तथा **चतुर्थ में** जन्म होने से माता-पिता के लिए अरिष्टकारी होता है।

दिवाजातस्तु पितरं रात्रौ तु जननीं तथा। आत्मानं संध्ययोर्हन्ति ततो गण्डं विवर्जयेत्।।

गण्डमूल नक्षत्र शान्ति के लिए हमारे कार्यालय से प्रकाशित **'सम्पूर्ण गण्डमूल नक्षत्र-शान्ति प्रयोग' पुस्तक मंगवा लेवें। मूल्य-75 रुपए।**

भारतीय संस्कृति में संस्कारों का महत्त्व
(मुख्य-मुख्य मुहूर्त्तों का निर्णय स्वयं करें)

भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति में संस्कारों का विशेष महत्त्व है। प्राचीन ऋषियों ने गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि कर्म तक **षोडश-संस्कारों** के महत्त्व को एकमत से स्वीकार किया है। मनुष्य जन्म से अबोध होता है, परन्तु संस्कारों से मनुष्य के आन्तरिक एवं बाह्य व्यक्तित्व का निखार व परिष्कार होता है। जैसे, शास्त्र में कहा गया है-

जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद् द्विज उच्यते।
वेद पाठात् भवेद् विप्रः, ब्रह्म जानाति ब्राह्मणः॥

अतएव सुख, समृद्धि एवं कल्याण चाहने वाले प्रत्येक वर्ण के गृहस्थी मनुष्य को भारतीय परम्परा एवं संस्कृति का अनुगमन करते हुए गर्भाधान, पुंसवन, नामकरणादि संस्कारों को धारण करना चाहिए। शास्त्र विधि अनुसार बच्चे के संस्कार करने से बालक/कन्या मेधावी, धनी, यशस्वी एवं दीर्घायु होता है॥

षोडश संस्कार इस प्रकार से हैं-

(१) गर्भाधान (२) पुंसवन (३) सीमन्तोन्नयन (४) जातकर्म (५) नामकरण (६) निष्क्रमण (७) अन्न प्राशन (८) चूडाकरण (मुण्डन), (९) यज्ञोपवीत (१०) से (१३) तक चतुर्वेदीय व्रत, (१४) समानवर्त्तन (१५) विवाह (१६) अन्त्येष्टि।

☞ **(१) गर्भाधान संस्कार**—यह प्रथम संस्कार है, जो स्त्री के ऋतु (रजस्वला) स्नान के पश्चात् किया जाता है। भार्या के स्त्री धर्म (रजोदर्शन) में होने के १६ दिन तक वह गर्भ-धारण के योग्य रहती है। **रजोदर्शन** के दिन ६, ८, १०, १२, १४, १६वें दिनों में क्रियमाण गर्भाधान पुत्रदायक तथा विषम दिनों (५, ७, ९, ११, १३, १५) में कन्या-प्रद होता है। उपरोक्त दिनों में भी शुद्ध मुहूर्त्त दिनों का विचार किया जाता है।

(१) गर्भाधान संस्कार का मुहूर्त्त

शुभतिथियां—१ (कृष्ण) २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ (शुक्ल)

शुभ वार—सोम, बुध गुरु एवं शुक्रवार

शुभ नक्षत्र—रोह, मृग, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, पुन, पुष्य, स्वा, अनु, श्रव, धनिष्ठा व शतभिषा।

शुभ लग्न—लग्न, केन्द्र-त्रिकोण में शुभ ग्रह हों एवं लग्न को सूर्य, मंगल, और गुरु देखते हों, तो गर्भाधान से पुत्रोत्पत्ति की संभावना होती है। इसके अतिरिक्त **पुत्रार्थी** विषम लग्न राशि एवं विषम नवांशगत लग्न में तथा कन्यार्थी [illegible]

गर्भ-धारण के दिन स्त्री-पुरुष दोनों का चन्द्र-बल प्राप्त होना शुभ होता है।

गर्भाधान के लिए त्याज्य काल—रजोदर्शन से प्रथम चार रात्रि को छोड़कर, रिक्ता तिथि, जन्म नक्षत्र, मघा-अश्ले आदि तीनों गण्डांत, मूला, भरणी, अश्विनी, रेवती नक्षत्र, ग्रहण का दिन, माता-पिता के श्राद्ध का दिन, वैधृति, परिघ का पूर्वार्ध, संक्रान्ति, व्यतीपात, ग्रहण, सन्ध्या, दिन का समय, जन्म राशि से अष्टम लग्न, दीवाली, दशहरा, नवरात्र आदि पर्व दिनों को स्त्री संसर्ग में त्याग करना चाहिए।

गर्भ मासों के अधिपति

गर्भाधान से लेकर नव एवं दस मास तक भिन्न-भिन्न ग्रह अधिपति होते हैं। अरिष्टभय की स्थिति में उसी मास से सम्बन्धित ग्रह की पूजा-दानादि करना चाहिए।

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी	शुक्र	मंगल	गुरु	सूर्य	चंद्र	शनि	बुध	आधानकालिक लग्नेश	चंद्र	सूर्य

☞ **(२) पुंसवन संस्कार मुहूर्त्त**—यह संस्कार गर्भधारण से तीसरे मास में किया जाता है। इस मास का स्वामी गुरु है। इस दिन श्री विष्णु पूजा करना शुभ होता है। इस संस्कार के शुभ मुहूर्त इस प्रकार से हैं।

शुभवार—रवि, चंद्र, मंग, बुध, गुरु व शुक्र। **मंगल** व बुध वारों में मं. बु. उदित होने चाहिएं।

शुभ तिथियां—१ (कृ) २, ३, ५, ७, १०, १२, १३ (शुक्ल)।

शुभ नक्षत्र—रोहणी, मृग, पुन. पुष्य, हस्त, तीनों उत्तरा, श्रवण, अनु एवं रेवती नक्षत्र। विद्ध नक्षत्र त्याज्य हैं।

☞ **(३) सीमन्त संस्कार**—यह तृतीय संस्कार है, जो गर्भ धारण से ६, ८ वें मास, जब मास-स्वामी बली हो। **शुभवार**—रवि, मंगल, एवं गुरु।

शुभ तिथियां—२, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शुक्ला)।

नक्षत्र—मृग, पुन, पुष्य, हस्त, मूल, श्रवण:

लग्न—१, ३, ५, ७, ९ आदि विषम लग्न, केन्द्र त्रिकोण में शुभग्रह हों॥

(३) (क) श्री विष्णु पूजा मुहूर्त्त—यह पूजा गर्भाधान से आठवें मास गर्भरक्षा के उद्देश्य से की जाती है। इसमें शंख चक्र-गदा-पद्मधारी भगवान विष्णु की यथाशक्ति, सुवर्णमयी प्रतिमा बनवाकर षोडशोपचार से पूजा करके परिधान सहित, प्रतिमा को ब्राह्मण को दान करें।

शुभ तिथियां—२, ७, १२

शुभ वार—चंद्र, बुध, गुरू, शुक्र।

शुभ नक्षत्र—रोहिणी, पुष्य और श्रवण।

☞ **(४) जातकर्म संस्कार**—कुछ शास्त्रकार प्रसव के समय नालछेदन के पूर्व ही इस संस्कार को कार्यान्वित करने की आज्ञा दी है। परन्तु आजकल नरघटी अथवा १६ घटी तक कर लेना चाहिए।

कुछ लोग परम्परानुसार **११वें** अथवा **१२वें** दिन कर लेते हैं।

शुभ तिथियां—१ (कृ.) २, ३, ५, ७, १०, १२, १३ (शु.)

शुभ वार = चं., बु., गु., शु.

नक्षत्र—अश्वि. रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा-तीनों, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., श्रव., धनि, शत, रेव।

☞ **मेधा-जनन संस्कार**—जात कर्म के साथ ही इस कृत्य का निष्पादन करना चाहिए। बालक/बालिका मेधावी, कीर्तिमान एवं सौभाग्यशाली हो, इसके लिए दाएं हाथ की अनामिका अंगुली से शहद एवं गोघृत चार बार बच्चे को चटाएँ। चारों बार क्रमशः "ॐ भूस्त्वपि धधामि।" ॐ भुस्त्वपि दधामि।" तथा ॐ भूर्भुवस्वः सर्वत्वपि दधामि। **मंत्रों का उच्चारण करें।** इसके साथ ही कुछ घृत-मिश्रित गुड़ भी बालक के तालु में लगा देना शुभ होता है। जिससे बच्चे को स्तनपान के पूर्व ही कुछ चूसने की आदत हो जाए। (अंगुली के अतिरिक्त सुवर्ण या चांदी के चम्मच का भी प्रयोग कर सकते हैं।

☞ **(५) स्तनपान का मुहूर्त्त**—जन्मान्तर ५वें या ७वें किसी दिन नीचे लिखे भद्रा, व्यति, वैधृति, व्याघात आदि योगों को छोड़कर निम्न शुभ मुहूर्त्त माता संतान को प्रथम बार स्तनपान कराए।

शुभ तिथि—१ (कृ.), २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शु.), १५,

शुभ नक्षत्र—रोह., मृग. ,पुन, पुष्य, उत्तरा ३ हस्त, चित्रा, अनु, श्रव. धनि, व रेवती॥

शुभ वार—चंद्र, बुध, गुरु व शुक्र।

शुभ लग्न—२, ३, ४, ६, ७, ९, १२ राशि लग्न।

सूतिका पथ्य में भी उपरोक्त मुहूर्त्त ग्राह्य है।

☞ **(६) षष्ठी पूजन**—जन्म से पांचवें दिन, जीवन्ती देवी का पूजन करना चाहिए। इसी प्रकार छठे दिन रात्रि में षष्ठी

पूजन, कात्यायनी देवी' का आनन्द मंगल व गीत वाद्य के साथ पूजन करना चाहिए। जीवन्ती एवं षष्ठी पूजा में सूतक की दोष आपत्ति नहीं होती। देशाचारानुसार कोई २१वें या ३१वें दिन की षष्ठी पूजन करते हैं।

☛(७) प्रसूता स्नान मुहूर्त्त–सूतिका स्नान बच्चे के जन्मदिन से एक सप्ताह के बाद करना चाहिए।

शुभ तिथियां–१ (कृ.) २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शु.) १५।

शुभ वार–रवि, मंगल, गुरू, शुभ हैं। सोम एवं शुक्रवार मध्यम हैं।

शुभ नक्षत्र–अश्वि., रोह, मृग, तीनों उत्तरा, हस्त, स्वा., अनु., रेव.।

शुभ लग्न–२, ३, ४, ६, ७, ९, १२ सौम्य ग्रह से युत या दृष्ट।

☛(८) नामकरण संस्कार–यद्यपि प्रत्येक मनुष्य के बाह्य एवं आन्तरिक व्यक्तित्व पर उसके परिवेश एवं परिस्थितियों का विशेष प्रभाव होता है। परन्तु ज्योतिष आचार्यों के अनुसार मनुष्य के व्यक्तित्व के विकास में उसके प्रसिद्ध नाम का भी विशेष महत्त्व होता है–

"नामाखिलस्य व्यवहार हेतुः, शुभावहं कर्मसु भाग्य हेतुः।
नाम्नैव कीर्तिं लभते मनुष्यस्ततः प्रशस्तं खलु नाम कर्म॥"

गृहारम्भ–प्रवेश, युद्ध व्यापार, व्यावहारिक कार्य, दान, मन्त्र-सिद्धि, भाग्य, पुनर्विवाह, रोगोत्पत्ति तथा स्वामी-सेवक के पारस्परिक कृत्यों में नाम राशि वांछनीय है।

☛नामकरण–सूतक-समाप्ति पर देशानुसार १०, ११, १२, १३, १६, १९, २२वें दिन संस्कार करना चाहिए। एक अन्य मतानुसार ब्राह्मण को १० या १२वें दिन, क्षत्रिय को ११ या १२ वें दिन वैश्य को १६ या २०वें दिन नामकरण संस्कार करना चाहिए। नामकरण पिता-पितामह या कुल के वृद्ध व्यक्ति के द्वारा स्वास्ती वाचन मन्त्रों सहित (विद्वान ज्योतिषी से कुण्डली परामर्श के बाद) उच्चारित करवाना चाहिए।

शुभ तिथियाँ–१ (कृष्ण), २,३,७,१०,११,१२,१३ (शुक्ल)।

शुभ वार–चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र।

शुभ नक्षत्र–अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, श्रव, धनि, शत, रेवती।

शुभ लग्न–१,४,६,७,९,१२ लग्न शुभ ग्रह युत या दृष्ट हों। भद्रा, ग्रहण, श्राद्ध दिन, दुष्ट योग, संक्रान्ति आदि रहित काल में, सुयोग्य ज्योतिषी से प्रथम नामाक्षर पूछ कर कानों को मधुर लगने वाले अक्षर, महापुरुषों के नाम सदृश अथवा शुभ सार्थक शब्दों वाला नाम रखना कल्याणकारी रहता है।

बालक के दाँत निकलने का फल

यदि पहले मास में बालक के **दाँत** निकल आएं तो स्वयं अपनी आयु के लिए अरिष्टकारक, दूसरे मास में भाई को, तीसरे मास में बहिन को, चौथे मास में माता को, पाँचवें मास में बड़े भाई के लिए विशेष कष्टकारी होता है, **छटे मास में दाँत निकलें** तो अत्यन्त सुख, सातवें मास में पिता से सुख, आठवें मास में देह की पुष्टता, नवें मास में लक्ष्मी की प्राप्ति, दसवें मास में सौख्य प्राप्ति, ११वें निकलें तो **अति सौख्य**, १२वें मांस में निकलें तो विपुल धन-प्राप्ति होती है। यदि गर्भ से ही दाँतों सहित उत्पन्न हुआ हो वह माता-पिता के सुख से विहीन अथवा ऊपर की पंक्ति के दाँत पहलें निकले तो भी माता-पिता तथा नानके पक्ष के लिए हानिकारक माना जाता है। यदि उपरोक्त अशुभ मासों में बालक को दन्तोत्पत्ति की संभावना हो तो मृत्युञ्जय का जाप, ग्रह शान्ति एवं उचित दान आदि करने से अशुभत्व का निवारण तथा अरिष्ट की शान्ति हो जाती है।

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
फल	स्वयं को अरिष्ट	भ्रातृ कष्ट	बहिन को कष्ट	मातृ कष्ट	ज्येष्ठ भ्रातृ कष्ट	सुख	पिता से सुख	देह सुख	धन प्राप्ति	सौख्य प्राप्ति	अति सौख्य	विपुल धन

☛(९) झूला आरोहन मुहूर्त्त–बालक के जन्मदिन से १०, १२, १६, २२ एवं ३२वें दिन बालक को आराम देह झूले में सुलाना चाहिए। झूले में डालने से पूर्व शुभ तिथि, वार, नक्षत्र, योगादि का विचार कर लेना चाहिए। झूले में माता या दादा, दादी के द्वारा, भगवान् विष्णु का ध्यान करते हुए बच्चे का सिर पूर्व की ओर रखकर शिशु को सुलाना चाहिए।

शुभ तिथियां–१ (कृ), २,३,५,७,१०,११,१३ (शुक्ल) व पूर्णिमा।

शुभ वार–सोम, बुध, गुरु, एवं शुक्रवार।

ग्राह्य नक्षत्र–अश्वि, रोहिणी, मृग, पुनर्वसु, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा तथा अनुराधा।

☛(१०) निष्क्रमण मुहूर्त्त–जन्म से ३,४ मासों में निम्नलिखित शुभ योगों में बालक को प्रथम बार घर से बाहर निकालना हितकर होता है। शीघ्रता में आवश्यक हो तो जन्म से १२वें दिन भी निष्क्रमण लिखा गया है।

शुभ तिथियां–१ (कृ) २,३,४,७,१०,११,१२ (शु.) एवं १५।

शुभ वार–सोम, बुध, गुरु तथा शुक्र।

शुभ नक्षत्र–अश्वि, मृग, पुन, पुष्य, हस्त, अनु, श्रव, धनि।

शुभ लग्न–२,३,४,५,६,७,९,१०,११ राशि लग्न।

माता, दादी आदि आत्मीयजन बालक को स्नानादि करवा कर वस्त्रादि से अलंकृत करें तथा पुण्याहवाचन, शंख और मंगल मंत्रों एवं गीत-वाद्य सहित ध्वनि के साथ उसे प्रथम देवालय (मन्दिर) में ले जावें। वहाँ देव पूजा व अर्चना करके आत्मीयजन शुभाशीष दें तथा मन्दिर की परिक्रमा करके स्वगृह लौट कर बच्चे को ननिहाल या मौसी के घर ले जावे। पुनः गृहागमन के समय दीर्घायु संज्ञक आशीर्वचनों से बालक का अभिनन्दन करें। पुनश्च, निष्क्रमण तृतीय मास में हो, तो बालक को सूर्य-दर्शन तथा चतुर्थ मास में हो तो चन्द्र-दर्शन करवाना चाहिए।

☛(११) भूम्युपवेशन-मुहूर्त्त–जन्म से पंचम मास में मंगल के बलान्वित होने पर बालक को प्रथम बार भूमि पर विराजमान (बिठाने) के लिए विचारणीय मुहूर्त्त–

शुभ तिथियां–१ (कृ) २,३,४,७,१०,११,१३ (शु.) तथा पूर्णिमा।

शुभ वार–चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्रवार।

शुभ नक्षत्र–अश्वि, रोह, मृग, पुन, तीनों उतरा, हस्त, अनु, ज्ये, अभिजित।

शुभ लग्न–२,५,८,११ राशि लग्न।

☛(१२) जीविका परीक्षा–'भूम्युपवशन' के अवसर पर बालक के सामने हानि रहित अस्त्र-शस्त्र, पुस्तकें, लेखनी (Pen-Pencil), वस्त्र, सोना, चाँदी, ताँबा, लोहादि धातुएँ, मशीनें मोटर, पंखा-रेडियों, टी. वी. आदि खिलौने, विज्ञान, हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृतादि साहित्य आदि वस्तुएँ रखें। इन वस्तुओं में से जिस वस्तु को बालक सहज रूप में सर्वप्रथम स्पर्श करें, वही उसकी भावी आजीविका होगी। ऐसा अनुमान लगाना चाहिए। कुल परम्परा अनुसार, कहीं-कहीं यह क्रिया अन्नप्राशन के साथ भी कर लेते हैं।

☛(१३) अन्न-प्राशन का मुहूर्त्त–जन्म से सौर मास ६, ८, १० या १२वें मास में पुत्र को तथा ५,७,९ या ११वें मास पुत्री को उसकी पाचन शक्ति उपयुक्त होने पर प्रथम बार बच्चे को अन्न प्राशन कराना **अन्न प्राशन** में शुक्ल पक्ष विशेष प्रशस्त माना गया है। यद्यपि कृष्ण पक्ष की १,३,५,७,१० तिथियाँ भी ग्राह्य हैं। सोमवार, बुध, गुरु, एवं शुक्रवार शुभ हैं।

नक्षत्र–अश्वि, रोह, मृग, पुन, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, अभिजित श्रव, धनि, रेवती तथा जन्म-नक्षत्र 'सप्तशलाका चक्र' द्वारा क्रूर ग्रह विद्ध नक्षत्र त्याज्य होगा। जन्म राशि से ६, ८वें लग्न को छोड़कर २,३,४,५,६,७,९,१०,११ की राशि का लग्न जबकि लग्न से १,४,७वें शुभ ग्रह हों तथा लग्न शुभ ग्रहों द्वार दृष्ट हो।

विशेष–अन्न प्राशन दिन के पूर्वार्द्ध भाग में बालक की राशि का चन्द्रबल देखकर भद्रा रहित काल एवं उपरोक्त शुभ दिन को

सूर्य, ब्रह्म, विष्णु, महेश तथा दिक्पतियों की पूजा करके माता स्वलंकृत बालक को अपनी गोद में बिठाकर ईश्वर-स्मरण करते हुए उसे मधु, घृत, दही, खीर का भोजन सर्व प्रथम कराएँ।

☛ **(१४) कर्ण वेध का मुहूर्त्त**—बालक के जन्म से १२, १६वें दिन, या ६,७,८वें मास में अथवा ३,५वें वर्ष बालक का कर्ण छेदन प्रशस्त माना जाता है।

ग्राह्य मास—चैत्र, (का. शु. ११ के बाद), पौष तथा फाल्गुन।

तिथियां—४,९,१४ (रिक्ता तिथियां) छोड़कर सभी तिथियां।

वार—चं, बु., गु., शु, वारों में अश्वि, मृग, आ. पुन, पुष्य हस्त, चित्रा, अनु, अभि, श्रव, धनि, रेव। विद्ध तथा जन्म नक्षत्र भी त्याज्य।

शुभ लग्न—२,३,४,६,७,९,१२।

विशेष—बोलक को पूर्वाभिमुख बिठाकर हाथ में कुछ मिष्ठान्न दें तथा पुत्र के बाएं कान को तथा पुत्री के दाएं कान को सुवर्ण या चाँदी की स्लाका से सौभाग्यवती स्त्री या कुशल स्वर्णकार से कर्ण विधवाना चाहिए।

☛ **कन्या की नासिका छेदन**—हेतु उपरोक्त कर्ण वेध मुहुर्त के मासों में ही कन्या का नामक विंधवाया जाता है। शुक्ल पक्ष की तिथियाँ शुभ होती हैं—२, ३ ५, ७, १०, ११, १२, १३, १५।

जन्म दिन कृत्य

सामान्यत: लोग अंग्रेजी तारीख अनुसार ही जन्मदिन कृत्य कर लेते हैं। परन्तु इसमें कई बार भूल होने की सम्भावना रहती है। सिद्धान्त: एक सौर वर्ष उपरान्त जिस दिन जन्मेष्ट एवं जन्मदिन के समान ही स्पष्ट सूर्य के राशि, अंश, कलादि की जब पुनरावृत्ति आ जाए, उसी दिन को जन्मदिन का नववर्ष प्रवेश माना जाएगा। यदि इतनी सूक्ष्मता का पता न चल पाए तो देशी प्रविष्टों के अनुसार जन्म दिन के वर्ष का निर्धारण किया जाए तो शुद्धता के अधिक पास रहेंगे। यदि किसी सुयोग्य ज्योतिषी द्वारा वार्षिक जन्मदिन का निर्णय (गणितानुसार) करवा लें तो और अधिक उचित होगा।

जन्मदिन के अवसर पर प्रात: उठकर गंगाजल सहित शुद्ध पवित्र जल से बालकको स्नानादि के पश्चात् सुन्दर वस्त्र धारण करवाकर पूर्वाभिमुख होकर माता पिता उसे गोदी में बिठाकर किसी सुयोग्य पण्डित जी द्वारा पंचदेव पूजन, नवग्रह पूजन एवं संकल्पपूर्वक छाया दान सहित जन्मदिन पूजन करवाना चाहिए। पूजनोपरांत भगवान् सूर्यदेव को अर्घ्य, ब्राह्मण भोजन एवं यथाशक्ति दानादि करें।

विशेषकर वर्षफल में स्थित अशुभ ग्रहों के दान, जपादि करवाने से बच्चों को आरोग्यता एवं माता-पिता को सुख-शान्ति बनी रहती है। जन्मदिन पर तिल स्नान, तिलों चावल, दूध, चीनी आदि से बनी खीर तथा वस्त्र अन्नादि का दान एवं स्वयं भी खीर सेवन शुभ होता है।

अथ अशौच व्यवस्था

अशौच दो प्रकार का होता है—(१) जनना शौच जिसे सूतक और (२) मरणाशौच जिसे पातक कहते हैं।

गर्भास्त्रावादि अशौच-व्यवस्था

चार मास तक गर्भ के गिरने को 'गर्भस्त्राव' कहते हैं। पांचवें, छटे मास में 'गर्भपात' और इसके उपरान्त 'प्रसव' कहलाता है। तीन मास के भीतर, किसी भी मास में गर्भ के गिराने से गर्भिणी को तीन दिन का और चौथे महीने में चार दिन का अशौच रहता है, पिता आदि सपिण्ड केवल स्नानमात्र से शुद्ध हो जाते हैं। पितादि सपिण्डों को ३ दिन का 'सूतक' होता है।

जननाशौच व्यवस्था

सात महीने से लेकर किसी भी महीने में जन्म हो तो माता-पितादि सपिण्डों को अपने २ वर्ण के अनुसार पूरा अशौच (सूतक) होता है, जैसे ब्राह्मण को १० दिन, क्षत्रिय को १२ दिन, वैश्य को १५ दिन और शूद्र को एक मास का सूतक रहता है, किन्तु माता को सूतक निकालने के बाद भी पुत्र जन्मा हों, तो, २० दिन और कन्या उत्पन्न होने से एक मास तक धर्मकार्य करने का अधिकार नहीं होता। नाल छेदन से पीछे सूतक हो जाने के कारण जात कर्म का अधिकार नहीं होता।

मृतोत्पत्ति में विचार

यदि मरा हुआ बालक उत्पन्न हो तो पितादि सपिण्डों को अपने-अपने वर्ण के अनुसार अशौच (सूतक) होता है। बालक जन्म लेकर नाल-छेदन से पूर्व ही मर जाये तो माता को १० दिन तक सूतक और पितादि सपिण्डों को ३ दिन का जननाशौच (सूतक) होता है। नाल-छेदन के बाद १० दिन के भीतर अर्थात् नाम संस्कार से पूर्व बालक की मृत्यु हो जाये तो पितादि सपिण्डों का पूर्ण जननाशौच (सूतक) रहता है। पातक में देवकर्म और पितृकर्म का अधिकार नहीं होता।

मृताशौच-व्यवस्था

नामकरण अर्थात् १० दिन के बाद ६ महीने के भीतर अर्थात् दाँत आने से पहिले बालक के मरने पर माता और पिता को ३ दिन का मृताशौच (पातक) होता है किन्तु सपिण्ड स्नानमात्र से शुद्ध हो जाते हैं। कन्या मरने पर पिता को एक दिन का पातक लगता है। स्मरण रखना चाहिए ७वें महीने से अर्थात् दांत निकलने के पीछे ३ वर्ष तक, अर्थात् मुंडन संस्कार न हुए बालक के मरने पर माता-पिता को ३ दिन सपिण्डों को १ दिन तक पातक हो जाता है और ३ वर्ष में मुण्डन [illegible]

कन्या शौच-व्यवस्था

सगाई होने से पहले कन्या मरने पर तीन पुरुषों तक १ दिन का पातक होता है, सगाई हो जाने के बाद और विवाह से पहले कन्या मरने पर पिताकुल के और पतिकुल को ३ दिन का पातक रहता है। यदि विवाह हुई कन्या पिता के घर में मर जाए व प्रसूता हो तो माता-पिता सहोदर, भाईयों को तीन दिन का पातक, चाचा आदि को १ दिन का अशौच होता है। परन्तु पतिकुल में पूर्ण अशौच होता है।

मातामह-मातामही दौहित्र मरण पर विचार

नाना मरे तो दौहित्र को ३ दिन, नानी मरने पर १ दिन का पातक होता है। यज्ञोपवीत संस्कार हुए दौहित्र के मरने पर नाना की ३ दिन, बिना यज्ञोपवीत के १ ॥ दिन का पातक होता है।

सास-ससुर तथा जामातृ पर अशौच विचार

सास और ससुर यदि मर जाये तो जामित्र पास होने से ३ दिन, बिना समीप होने से १ ॥ दिन का पातक लगता है। जामाई के मरने पर १ दिन का पातक होता है।

बन्धुत्रय-विचार

भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को आत्मबांधव कहते हैं। पिता की भूआ, मासी की मामी के पुत्रों को पितृबांधव कहते हैं। माता की भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को मातृबांधव कहते हैं। इन तीन प्रकार के बांधवों में से किसी की मृत्यु हो जाये तो तीन दिन का पातक होता है। इनकी बहिन मरे तो १ दिन का पातक होता है। और विवाहित कन्या मरने पर १ दिन का।

अशौच-संपात पर निर्णय

10 दिन के अशौच में यदि 5 दिन के भीतर दूसरा 10 दिन का या इससे कम दिन का मृत-अशौच प्राप्त हो जाए तो पहले के साथ ही दूसरे अशौच की शुद्धि हो जाती है। 5 दिन के बाद 9 दिन के भीतर हो तो पिछले के साथ ही दूसरे आशौच की भी शुद्धि हो जाती है, यदि दसवें दिन की रात्री में दूसरा अशौच हो जाये तो 2 दिन अशौच और बढ़ जाता है। 10 दिनों के मृताशौच में 10 दिन अथवा 3 दिन वाला जननाशौच आ पड़े तो मृताशौच की समाप्ति पर ही जननाशौच की भी समाप्ति या शुद्धि हो जाती है। जननाशौच में मृताशौच अथवा मृतशौच में जननाशौच हो जावे तो मृताशौच के साथ शुद्धि होती है।

अधिक जानकारी के लिए धर्मसिन्धु, निर्णयसिन्धु आदि ग्रन्थों [illegible] अवलोकन करना चाहिए।

जन्मदिन पर तिल स्नान, तिलों चावल, दूध, चीनी आदि से बनी खीर तथा ...

सपिण्डों को १ दिन तक पातक हो जाता है और ३ वर्ष में मुण्डन ...

अधिक जानकारी के लिए धर्मसिन्धु, निर्णयसिन्धु आदि ग्रन्थों का अवलोकन करना चाहिए।

अथ प्रसूत लग्नादि का विचार

मेष—बालक के जन्म समय मेष लग्न हो तो घर के पूर्व की ओर प्रसूतिका की शय्या, दो उपसूतिकाएँ अथवा लग्न व चन्द्रमा के मध्य में जितने ग्रह हों उतनी उपसूतिका की संख्या जानें, मुख की कांति लाल वर्ण की, माता का मुख पूर्व की ओर, बालक की प्रकृति पित्तकारक, चंचल एवं साहसी होगी। माता के वस्त्र लाल वर्ण के तथा उसने पहले मीठा भोजन किया हो। जन्म के बाद बालक दीर्घ शब्द से रोया हो। मकान पुराना होगा। आयु के २, ४, ११, १६, २९वें साल विशेष कष्ट रहे।

वृष—बालक के जन्म समय वृष लग्न हो, तो बालक गौरपूर्ण सुन्दर रूप, द्वार एवं माता का शिर दक्षिण की ओर, रक्त-पित्त प्रकृति, माता ने श्वेत वस्त्र और चाँदी के आभूषण पहने हों, पहले शाकादि का भोजन किया हो। पाँव से प्रसवोत्पन्न, ३ या ४ उपसूतिकाएँ हों। आयु के १, १३, १८, ३३, ४३, ५८वें वर्ष में विशेष कष्ट हो।

मिथुन—बालक का चंचल स्वभाव, वात-श्लेष्म (वायु बलगम) प्रकृति, उपसूतिकाएँ (स्त्रियाँ) ३ या ५, माता का मुख पश्चिम की ओर, स्तनों में दूध कम उतरा हो, माता ने पहले नमकीन विचित्र (मिश्रित) भोजन किया हो, वस्त्र हरा पुराना, गृह का द्वार पश्चिम की ओर हो, शिराभिमुख प्रसव हुआ हो, बालक ने दीर्घ स्वर में रूदन किया हो। आयु के २, ४, १०, १३, ३८, ४८वें साल कष्ट रहे।

कर्क—गौर वर्ण, कोमल पर पुष्ट शरीर, चंचल नेत्र, वात-श्लेष्म प्रकृति, कद लम्बा व गोल, सुन्दर मुख, माता का मुख उत्तर की ओर, प्रसव से पूर्व माता ने मीठा-शीतल थोड़ा भोजन किया हो, तथा पुराने वस्त्र पहिने हो, माता के दाहिने अंग पर लहसन का निशान हो, प्रसव से पूर्व माता ने श्वेत व गुलाबी वस्त्र व चाँदी के आभूषण पहिने हों। प्रसवोपरान्त बालक कुछ देर से रोया हो। वह जलीय (liquids) का शौकीन हो। आयु के १, ५, २५, ३९, ४८, ६२वें वर्ष कष्ट।

सिंह—जन्म समय सिंह लग्न हो, तो माता का मुख पूर्व किन्तु गृहद्वार दक्षिण की ओर, उसने रक्त वस्त्र एवं सुवर्ण आभूषण पहने हों, प्रसव पूर्व उसने खट्टा व कसैला भोजन किया हो। जन्म समय ३ या ५ स्त्रियाँ, नया मकान, बालक की पीठ पर चिन्ह हो और वह दीर्घ स्वर में रोया हो। आयु के ३, ५, १२, २८, ३६, ४९वें वर्ष कष्ट रहे।

कन्या—इस लग्न का स्वामी बुध है। जन्म समय बालक के सुन्दर नेत्र, गौर वर्ण, अल्प बाल, गोल चेहरा, सौम्य पांव, चंचल वृत्ति, कण्ठ व जंघा में चिह्न हो। माता का मुख दक्षिण की ओर, स्त्रियां ४ या ५, माता लाल एवं प्राचीन वस्त्र, कसैला सहित भोजन, पिता घर से बाहर, बालक अल्प शब्द से रोया हो। आयु के २, ४, १५, २३, २५, ३५, ४५, ५६वें वर्ष विशेष कष्ट रहे।

तुला—गौरवर्ण, कुछ लम्बा चेहरा, काले नेत्र, बड़ी नाक, थोड़े बाल, चंचल, तीक्ष्ण बुद्धि, दुबला कृश शरीर, माता का मुख पश्चिम की ओर, कषाय भोजन किया हो तथा पुराने वस्त्र धारण किए हों, बालक-बालिका दीर्घ शब्द में रोए। आयु के ३, ६, ८, १५, २७, ३१वें वर्ष विशेष कष्ट हो।

वृश्चिक—ऊँचा मस्तक, सौम्य प्रकृति, पुष्ट शरीर, ताम्रवर्ण भूरे नेत्र, शीर्षोदय, तेज स्वभाव, केश लम्बे, स्त्रियाँ २ या ३, गृह का द्वार उत्तर की ओर, बालक की पीठ पर चिन्ह, माता ने लाल वस्त्र पहनें हों, बालक देर से रोया हो। आयु के २,६,११,२७,५८वें वर्ष विशेष कष्ट हो।

धनु—रंग गोरा, ऊँचा मस्तक, बड़े नेत्र, माता का मुख पूर्व की ओर, पीले वस्त्र सहित चित्रित वस्त्र एवं पकवान भोजन किया हो, बालक की छाती पर चिन्ह, माता का मुख उत्तर-पूर्व की ओर होगा तथा जन्म समय १ या ५ स्त्रियां, बालक दीर्घ शब्द से रोया हो। वर्ष के १, ३, १०, १८, २१, ३७, ४२वें वर्ष विशेष कष्टकारी होंगे।

मकर—जन्म समय कृश शरीर, पिंगल वर्ण, बहुत केश, ऊँचा मस्तक एवं ऊँची नाक, वात-विकार, माता का सिर दक्षिण की ओर, पुराना काला, नीला वस्त्र धारण किया हो, कसैला भोजन व शीतल जल पिया हो, स्त्रियां ३ या ४ हों, सूतिका गृह प्राचीन एवं गृह द्वार उत्तर की ओर, जन्म के बाद बालक ने थोड़ा रोया हो। आयु के ३, ५, १३, २७, ३३, ५७वें वर्ष में विशेष कष्ट रहें। जातक पर शनि का विशेष प्रभाव रहे।

कुम्भ—जन्म समय कुम्भ लग्न हो, तो बालक-बालिका का चौड़ा मस्तक, कुछ मोटे होंठ, वात-पित्त प्रकृति, श्वेत-श्याम वर्ण, धूम्रवर्ण वस्त्र, मध्यम केश, माता का मुख पश्चिम की ओर, ३ या ५ स्त्रियाँ, शाकादि का भोजन किया हो, माता को शरीर कष्ट, पिता घर में न हो तथा बालक-बालिका ने थोड़ा रूदन किया हो। आयु के २, ४, १३, २८, ३३, ४२, ४८, ५४वें वर्ष विशेष कष्ट हो। बालक पर शनि ग्रह का विशेष प्रभाव रहेगा।

मीन—बालक जन्म समय सुन्दर सौम्य एवं पीत (पिंगल) वर्ण, वात-श्लेष्म कफ प्रकृति, माता पीले वर्ण सहित मिश्रित वर्ण के वस्त्र धारण किए हुए मिष्ठान्न सहित अल्प भोजन किए, उस का मुख उत्तर की ओर, जन्म समय २ या ३ स्त्रियां हों, बालक जन्म से कुछ देरी के बाद रोया हो। आयु के १, ७, १०, १३, १६, २६, २९, ३८, ४१वें वर्ष विशेष कष्ट रहे।

एक ही नक्षत्र में जन्म का फल

यदि एक ही परिवार में, एक ही माता-पिता और उनकी सन्तानों में से किन्हीं दो का जन्म एक ही नक्षत्र में हुआ हो, तो वह अत्यन्त अनिष्टकारी होता है। यह अनिष्ट दोनों में से किसी एक को होता है। यदि भाई-भाई, भाई-बहन, पिता-पुत्र या माता-पुत्र या माता-पुत्री अथवा पिता-पुत्री का जन्म एक ही नक्षत्र में हो, तो वह मृत्यु-तुल्य कष्टदायक होता है। इसकी शान्ति अवश्य करनी चाहिए।

पिगोश्च जन्मनक्षत्रे जातस्तु पितृमातृहा।
जन्मर्क्षांशे च तल्लग्ने जातः सद्योमृतिप्रदः। (वसिष्ठ)

एक नक्षत्र जनन की शान्ति संक्षिप्त रूप से इस प्रकार से वर्णित की गई है—अग्नि (हवनकुण्ड) के ईशानकोण में कलश के ऊपर जिस नक्षत्र का जन्म हो, उस नक्षत्र के देवता के स्वरूप की नक्षत्र प्रतिमा बनवाकर स्थापित करें। उस नक्षत्र के मन्त्र से कलश के ऊपर उस नक्षत्र की पूजा करनी चाहिए। कलश को दो लाल रंग के वस्त्रों से लपेट देना चाहिए। फिर वैदिक पद्धति के अनुसार समिधा द्वारा होम आदि विधान करना चाहिए। प्रत्येक समिधा को घी में डुबोकर हवन करना चाहिए।

इस प्रकार प्रायश्चित होम करने के बाद जातक और उसके माता-पिता का अभिषेक भी आचार्य को करना चाहिए। कर्म समाप्ति के बाद यजमान (पूजा कराने वाला जातक) आचार्य पण्डित जी को भोजन, गोदान, वस्त्र दक्षिणा आदि से सम्मानित करें।

—त्रिखल जन्म फल एवं शान्ति—

तीन कन्याओं के पश्चात् लड़का उत्पन्न होना तथा तीन लड़कों के पश्चात् कन्या की उत्पत्ति त्रिखल दोषकारक मानी जाती है। इसके कारण लड़का पिता, नानके पक्ष को हानि तथा कन्या माता के लिए कष्टप्रद होते हैं। त्रिखल शान्ति करवा लेने से गृह में सुख शान्ति रहती है। शान्ति हेतु सूतकादि के उपरान्त किसी शुभ मुहूर्त में पत्नी सहित शुद्ध आसन पर पूर्वाभिमुख होकर संकल्पपूर्वक श्रीगणपति-पूजन व नवग्रहादि पूजनोपरान्त कलश स्थापन करते हुए उसके ऊपर ताम्र पात्र रखकर उसमें श्री विष्णु भगवान् की स्वर्णमयी मूर्त्ति (उसके अभाव में ताम्र की) पूजा करके रखें। फिर विधिपूर्वक त्रिखलशान्ति कर्म किसी सुयोग्य ब्राह्मण द्वारा करवा लेनी चाहिए। यदि किसी कारणवश आप पूजा न कर पाए हों तो फिर बच्चे के जन्मदिन के आसपास किसी मुहूर्त में त्रिखल पूजा करवा लेनी कल्याणकारी होगी। दान में तीन अन्न, तीन वस्त्र, तीन धातु (सोना, चाँदी, ताँबा) तथा साथ में गुड़, एक लाल परना व नारियल दक्षिणा सहित संकल्पपूर्वक बच्चे व उसकी माता का हाथ लगवाकर मन्दिर में या ब्राह्मण को दान करें।

पंचाँग-परिवर्तन करना

'पंचांगदिवाकर' में जहाँ तिथि, नक्षत्र, योगादि का समाप्ति काल तथा ग्रहों की वक्री-मार्गी तथा राशि चार्ट भा. स्टै. टा. में दिए गए हैं, उन (समयों) में भारत के किसी अन्य स्थल के लिए कोई संस्कार करने की आवश्यकता नहीं है तथा विश्व के किसी अन्य नगर के लिए तिथि, नक्षत्रादि का समाप्ति काल जानने हेतु भा. स्टै. टा. से उस देश का स्टै. अन्तर जमा या घटा कर प्राप्त कर सकते हैं। परन्तु **पंचांगदिवाकर** में तिथ्यादि के समाप्ति काल घड़ी पलों में दिए हुए हैं, क्योंकि यह घड़ी पल जालन्धर के स्पष्ट सूर्योदय काल से हैं, इसलिए अन्य नगर के लिए तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र राशि प्रवेश आदि हेतु पंचांग परिवर्तन आवश्यक है। यह ध्यान रहे कि भारतीय ज्योतिष में वार (रविवार, सोमवार) का प्रारम्भ तथा तिथि, नक्षत्र आदि का घड़ी पलों में समाप्तिकाल सूर्योदय के समय से ही माना जाता है।

भारत के किसी भी अन्य नगर का पंचांग अर्थात् तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र-सूर्यादि संचार घटी पलों में प्राप्त करना हो तो आप इसी पंचांग में आगामी पृष्ठों से अपने अभीष्ट नगर का अक्षांश, रेखांशादि ज्ञात करके मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी से सू. उ. ज्ञात कर लें। आपके अभीष्ट नगर के सू. उ. का जालन्धर के सूर्योदय से जितना अन्तर होगा, उसके घड़ी पल बनाकर $2\frac{1}{2}$ गुणा करके) ऋण (घटावे) या जमा (धन) करे। यदि अभीष्ट नगर जालन्धर से पूर्व अर्थात् जहाँ का सूर्योदय जालन्धर से पूर्व (पहले) होगा, वहाँ सूर्योदय अन्तर (कालान्तर) के घड़ी पल बनाकर पंचांगदिवाकर में तिथ्यादि के घड़ी-पलों में जमा करें तथा यदि अभीष्ट नगर जालन्धर से पश्चिम में स्थित होगा अर्थात् जहाँ का सूर्योदय जालन्धर के सू. उ. से बाद होगा, वहाँ कालान्तर के घड़ी पल बनाकर तिथ्यादि के घड़ी-पल में से घटावें।

उदाहरण—मान लीजिए 11 अप्रै., 2019 ई. को दिल्ली का पंचांग बनाना है, तो दिल्ली का अक्षांश, स्टै. अन्तर प्राप्त कर मध्यम सूर्योदय सारिणी से 6/05 सू.उ. प्राप्त ('तिथ्यादि पंचांग के घण्टे मिनटों वाले' पृष्ठों से दिल्ली का तैयार दैनिक सू. उ. देख सकते हैं) हुआ जोकि जालन्धर के सू. उ. (6/09) से 4 मिनट पूर्व (पहले) है। अत: घड़ी पलों में तिथि, नक्षत्रादि दिल्ली के प्राप्त करने के लिए हमें जालन्धर के तिथि, नक्षत्र आदि में 4 मिनट के घटी पल 10 पल जमा करने होंगे। (ढाई गुणा करके)। **ध्यान रहे,** सूर्योदय अन्तर नगरों में सदैव एक समान नहीं रहता। इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि भारतीय ज्योतिष अनुसार जन्मपत्री निर्माण के समय जन्मपत्री में उसी तिथि, नक्षत्रादि के घड़ी पल लिखे जाते हैं जो जातक के जन्म वार के दिन स्थानीय सू. उ. के समय वर्तमान हो। चाहे वह तिथि, नक्षत्र जातक के जन्म से पूर्व ही समाप्त क्यों न हो जाए। कई बार पंचांग परिवर्तन करते हुए तिथियों/नक्षत्रों के क्षय या वृद्धि में भी अन्तर पड़ सकता है।

11 अप्रैल, 2019 ई. को जालन्धर का पंचांग—11 अप्रैल, 2019 ई. को दिल्ली का पंचांग

11 अप्रैल, 2019 ई. को जालन्धर का पंचांग (घटी पल)	11 अप्रैल, 2019 ई. को दिल्ली का पंचांग (घटी पल)
तिथि – २१/२३ (समाप्ति काल)	तिथि – २१/३३ (समाप्ति काल)
नक्षत्र – १०/४०	नक्षत्र – १०/५०
योग – २३/२८	योग – २३/३८

जालन्धर से अतिरिक्त नगर की जन्मपत्री निर्माण हेतु पंचांग परिवर्तन आवश्यक है। इस प्रक्रिया द्वारा आप भारत के किसी भी नगर का सू. उ. ज्ञात करके जालन्धर के सू.उ. से अन्तर जानकर पंचांग परिवर्तन कर सकते हैं। जबकि जहाँ तिथ्यादि, ग्रहों के वक्री-मार्गी का समय भा. स्टै. टा. में दिया गया है, वहाँ पंचांग परिवर्तन करने की कोई आवश्यकता नहीं है। घण्टा मिनट वाले पृष्ठों पर सर्वत्र समय (तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र संचार आदि का) भा. स्टै. टा. में दिया गया है, वहाँ पंचांग परिवर्तन करने की कोई आवश्यकता नहीं।

लग्न सारिणी द्वारा लग्न स्पष्ट करने की विधि

आगामी पृष्ठों पर विभिन्न अक्षांशों पर आधारित, निर्मित लग्न सारिणियां दी गई हैं। जिस नगर का लग्न स्पष्ट करना हो, सर्वप्रथम अपने अभीष्ट काल का सूर्योदयात् इष्टकाल घट्यादि में बना ले। इसके लिए उस स्थान का सही सूर्योदय का ज्ञान होना आवश्यक है। अपने नगर की शुद्ध एवं सूक्ष्म **सूर्योदय काल** जानने के लिए पंचांगदिवाकर के आगामी पृष्ठों में दी गई। **अक्षांश सारिणियों** का प्रयोग करना चाहिए। स्थानीय इष्टकाल बना लेने के पश्चात् अपने अभीष्ट काल का सूर्य स्पष्ट ग्रहण करें। सूर्यस्पष्ट जिस राशि के जितने अंश पर हो, लग्न सारिणी में उसी राशि के सामने तथा सूर्य स्पष्ट के अंशों के कोष्ठक के नीचे जितने घड़ी पल हो, उनमें अपने इष्ट के घड़ी पल जोड़ (जमा) देने से लग्न स्पष्ट जानने के लिए घड़ी पल होंगे। यह घड़ी पल लग्नसारिणी में जिस राशि के सामने और जितने अंश के नीचे होगा, वही राश्यादि पर लग्नस्पष्ट होगा।

उदाहरण—मान लीजिए, विक्रमी संवत् २०७६ मध्ये कांगड़ा (हि. प्र.) में चैत्र शुक्ल षष्ठी प्रविष्टे २९ चैत्र, तदनुसार 11 अप्रै., 2019 ई. को दोपहर 2 बजकर 24 मिनट पर उत्पन्न बालक का लग्न स्पष्ट करना है। इसका सूर्योदयात् ईष्ट २० घड़ी ४० पल बनेगा तथा ईष्टकालिक सूर्यस्पष्ट ११/२७°/०४'/०९" होगा। कांगड़ा का अक्षांश ३२/०५ होने के कारण आगामी पृष्ठों पर दी गई ३२° अक्षांश की लग्न सारिणी प्रयोग में लाई जाएगी। लग्न सारिणी में सूर्य स्पष्ट की राशि अर्थात् मीन राशि के सामने और २७° अंश के नीचे कोष्ठक में अनुपातिक विधि द्वारा हमें २/१९ घट्यादि प्राप्त हुए। इनको जन्म इष्ट के घटयादि २०/४० में जमा कर देने से कुल जोड़ २२/५९ घट्यादि बनेगा। इस जोड़ को पुन: लग्न सारिणी में निकटवर्ती संख्या २३/०० सिंह (४) राशि के सामने और १ अंश के नीचे प्राप्त हुई। यह संख्या हमारे कुल जोड़ २२/५९ से केवल १ पल अधिक है। अब अनुपातिक विधि द्वारा १ पल के कलादि निकाल लेने से हमें इष्टकालिक लग्न स्पष्ट पता चल जाएगा। जैसे यदि १२ पल के पीछे १ अंश अर्थात् ६० कला का अन्तर पड़ता है तो १ पल के पीछे ०५ कला का अन्तर पड़ेगा। इस प्रकार उपरोक्त इष्टकाल पर (२०/४० घट्यादि) ४ गत राशि अर्थात् सिंह लग्न, ० अंश, ५५ कला पर लग्न स्पष्ट होगा। (लग्न स्पष्ट ४/००°/५५'/०४")। अधिक सूक्ष्मता के लिए हमारे कार्यालय से प्रकाशित पुस्तक **'ज्योतिष तत्त्व'** का अध्ययन करें।

उत्तर पलभा १५।०।५०

लग्न सारणी लंदन (अक्षांश ५१।३०)

चरखण्ड १५१।१२०।५१

उपरोक्त लंदन सारणी विदेशी नगरों जैसे–लंदन, बर्मिंघम, साऊथ हैम्पटन, आक्सफोर्ड, स्लोह तथा लंदन के आसपास नगरों के लग्न निकालने के लिए विशेष उपयोगी सिद्ध होगी। ध्यान रहें, लग्न स्पष्ट करने के लिए लंदनादि नगरों का ही सूर्योदय एवं सूर्य स्पष्ट करना चाहिए।

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	घ.	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४
	प.	४६	५०	५५	५९	४	९	१४	१९	२४	२९	३५	४०	४६	५२	५८	३	९	१५	२१	२७	३२	३८	४४	५०	५७	२	८	१२	१८	२४
१ वृष	घ.	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८
	प.	३०	३५	४१	४७	५३	५९	५	११	२०	३०	३९	४८	५७	६	१५	२४	३३	४२	५१	००	०७	१५	२३	३२	४१	५०	५९	८	१७	२६
२ मिथुन	घ.	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४
	प.	३५	४४	५३	०२	११	२०	३१	४२	५३	०२	१५	२८	४१	५४	०७	२०	३३	४६	५९	१२	२४	३७	५०	०३	१६	२९	४२	५५	०७	१९
३ कर्क	घ.	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१
	प.	२९	४२	५५	०८	२०	३३	४६	५९	१३	२७	४१	५५	०९	२३	३७	५२	०७	२१	३५	५०	०४	१८	३२	४६	००	१३	२७	४१	५५	०९
४ सिंह	घ.	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८
	प.	२३	३७	५२	०६	२०	३४	४८	०३	१७	३१	४५	५९	१३	२७	४१	५५	०९	२३	३७	५१	१८	१८	३२	४६	००	१४	२८	४२	५६	१०
५ कन्या	घ.	२८	२८	२८	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३५
	प.	२४	३८	५२	०७	२१	३५	५०	०२	१६	३०	४५	५९	१३	२७	४२	५६	१०	२३	३७	५१	५	१९	३३	४७	०१	१५	२९	४३	५७	११
६ तुला	घ.	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४२
	प.	२५	३९	५३	०७	२२	३७	५१	०५	२०	३४	४८	०२	१६	३१	४५	००	१३	२७	४१	५५	९	२३	३७	४१	५५	०९	२३	३७	५१	०५
७ वृश्चिक	घ.	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८
	प.	३०	४४	५८	१२	२६	४१	५६	१०	२३	३५	४७	५८	१२	२६	३८	५०	०२	१६	२८	४२	५४	०६	१९	३१	४४	५६	०८	२०	३२	४४
८ धनु	घ.	४८	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३
	प.	५९	११	२४	३७	४९	०२	१५	२७	३८	४७	५५	०४	१३	२२	३१	४०	४९	५८	०६	१५	२४	३३	४२	५१	००	०८	१७	२६	३५	४४
९ मकर	घ.	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७
	प.	५२	०१	१०	१९	२८	३७	४६	५५	००	०६	१२	१७	२३	२९	३४	४०	४६	५२	५८	०४	१०	१६	२२	२८	३४	३९	४५	५१	५७	०३
१० कुम्भ	घ.	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९
	प.	०८	१३	१९	२५	३०	३५	४१	४७	५२	५७	०१	०५	०९	१४	१९	२३	२८	३३	३७	४१	४५	५०	५५	००	०४	०८	१३	१७	२२	२७
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	प.	३१	३५	३९	४४	४८	५२	५७	०२	७	११	१५	२०	२४	२८	३३	३७	४१	४५	४९	५३	५८	०३	०८	१३	१८	२२	२७	३२	३७	४२

अक्षांश १९°

पलभा ४।७।५५

मुम्बई, कल्याण, पूना, औरंगाबाद, अहमदनगर, बस्तर, खण्डाला, भुवनेश्वर, पुरी, दादरा आदि नगरों के लिए

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	घ.	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७
	प.	६	१४	२१	२९	३७	४५	५३	१	१०	१९	२८	३६	४५	५४	३	१२	२१	३०	३८	४७	५६	५	१४	२३	३२	४१	४९	५८	७	१६	२५
१ वृष	घ.	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२
	प.	२५	३४	४३	५१	०	९	१८	२७	३७	४८	५८	८	१९	२९	३९	५०	००	१०	२०	३०	४१	५२	२	१२	२३	३३	४३	५४	४	१४	२५
२ मिथुन	घ.	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	२४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७
	प.	२५	३५	४५	५६	६	१६	२७	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०	५१	३	१४	२५	३६	४८	५८	१०	२१	३२	४३	५५
३ कर्क	घ.	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३
	प.	५५	६	१७	२८	३९	५१	२	१३	२४	३५	४६	५७	८	१९	३०	४१	५२	४	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४३	५४	५	१६	२७
४ सिंह	घ.	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
	प.	२७	३९	५०	१	१२	२३	३४	४५	५६	६	१७	२७	३८	४९	५९	१०	२१	३१	४२	५३	३	१४	२४	३५	४६	५६	६	१७	२८	३९	५०
५ कन्या	घ.	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
	प.	५०	०	११	२२	३२	४३	५३	४	१५	२५	३६	४६	५७	८	१८	२९	४०	५०	१	१२	२२	३३	४३	५४	५	१५	२६	३७	४७	५८	०९
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९
	प.	०९	१९	३०	४०	५१	०२	१२	२३	३४	४५	४६	७	१८	२९	४०	५१	३	१४	२५	३६	४७	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७
७ वृश्चिक	घ.	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५
	प.	३७	४९	००	११	२२	३३	४४	५५	६	१७	२९	४०	५१	२	१३	२५	३६	४७	५८	९	२२	३२	४२	५४	५	१६	२७	३९	५०	१	१३
८ धनु	घ.	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०
	प.	१३	२४	३५	४६	४७	९	२०	३१	४१	५२	२	१२	२३	३३	४२	५४	४	१४	२५	३५	४५	५६	६	१६	२६	३७	४७	५७	८	१८	२९
९ मकर	घ.	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५
	प.	२९	३१	४१	००	१०	२०	३१	४१	५०	५९	८	१६	२५	३४	४३	५२	१	१०	१८	२७	३६	४५	५४	३	१२	२१	२९	३८	४७	५६	५
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
	प.	५	१४	२३	३१	४०	४९	५८	७	१५	२३	३१	३९	४६	५४	२	१०	१८	२९	३४	४२	५०	५८	५	१३	२१	२९	३७	४५	५३	१	९
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	३
	प.	९	१७	२४	३२	४०	४८	५६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२६	३४	४२	५०	५८	६

पंचाँग-परिवर्तन करना

'पंचांगदिवाकर' में जहाँ तिथि, नक्षत्र, योगादि का समाप्ति काल तथा ग्रहों की वक्री-मार्गी तथा राशि चार्ट भा. स्टै. टा. में दिए गए हैं, उन (समयों) में भारत के किसी अन्य स्थल के लिए कोई संस्कार करने की आवश्यकता नहीं है तथा विश्व के किसी अन्य नगर के लिए तिथि, नक्षत्रादि का समाप्ति काल जानने हेतु भा. स्टै. टा. से उस देश का स्टै. अन्तर जमा या घटा कर प्राप्त कर सकते हैं। परन्तु **पंचांगदिवाकर** में तिथ्यादि के समाप्ति काल घड़ी पलों में दिए हुए हैं, क्योंकि यह घड़ी पल जालन्धर के स्पष्ट सूर्योदय काल से हैं, इसलिए अन्य नगर के लिए तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र राशि प्रवेश आदि हेतु पंचांग परिवर्तन आवश्यक है। यह ध्यान रहे कि भारतीय ज्योतिष में वार (रविवार, सोमवार) का प्रारम्भ तथा तिथि, नक्षत्र आदि का घड़ी पलों में समाप्तिकाल सूर्योदय के समय से ही माना जाता है।

भारत के किसी भी अन्य नगर का पंचांग अर्थात् तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र-सूर्यादि संचार घटी पलों में प्राप्त करना हो तो आप इसी पंचांग में आगामी पृष्ठों से अपने अभीष्ट नगर का अक्षांश, रेखांशादि ज्ञात करके मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी से सू. उ. ज्ञात कर लें। आपके अभीष्ट नगर के सू. उ. का जालन्धर के सूर्योदय से जितना अन्तर होगा, उसके घड़ी पल बनाकर $2\frac{1}{2}$ गुणा करके) ऋण (घटावे) या जमा (धन) करे। यदि अभीष्ट नगर जालन्धर से पूर्व अर्थात् जहाँ का सूर्योदय जालन्धर से पूर्व (पहले) होगा, वहाँ सूर्योदय अन्तर (कालान्तर) के घड़ी पल बनाकर पंचांगदिवाकर में तिथ्यादि के घड़ी-पलों में जमा करें तथा यदि अभीष्ट नगर जालन्धर से पश्चिम में स्थित होगा अर्थात् जहाँ का सूर्योदय जालन्धर के सू. उ. से बाद होगा, वहाँ कालान्तर के घड़ी पल बनाकर तिथ्यादि के घड़ी-पल में से घटावें।

उदाहरण–मान लीजिए 11 अप्रै., 2019 ई. को दिल्ली का पंचांग बनाना है, तो दिल्ली का अक्षांश, स्टै. अन्तर प्राप्त कर मध्यम सूर्योदय सारिणी से 6/05 सू.उ. प्राप्त ('तिथ्यादि पंचांग के घण्टे मिनटों वाले' पृष्ठों से दिल्ली का तैयार दैनिक सू. उ. देख सकते हैं) हुआ जोकि जालन्धर के सू. उ. (6/09) से 4 मिनट पूर्व (पहले) है। अतः घड़ी पलों में तिथि, नक्षत्रादि दिल्ली के प्राप्त करने के लिए हमें जालन्धर के तिथि, नक्षत्र आदि में 4 मिनट के घटी पल 10 पल जमा करने होंगे। (ढाई गुणा करके)। *ध्यान रहे*, सूर्योदय अन्तर नगरों में सदैव एक समान नहीं रहता। इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि भारतीय ज्योतिष अनुसार जन्मपत्री निर्माण के समय जन्मपत्री में उसी तिथि, नक्षत्रादि के घड़ी पल लिखे जाते हैं जो जातक के जन्म वार के दिन स्थानीय सू. उ. के समय वर्तमान हो। चाहे वह तिथि, नक्षत्र जातक के जन्म से पूर्व ही समाप्त क्यों न हो जाए। कई बार पंचांग परिवर्तन करते हुए तिथियों/नक्षत्रों के क्षय या वृद्धि में भी अन्तर पड़ सकता है।

11 अप्रैल, 2019 ई. को जालन्धर का पंचांग–11 अप्रैल, 2019 ई. को दिल्ली का पंचांग

11 अप्रैल, 2019 ई. को जालन्धर का पंचांग (घटी पल)	11 अप्रैल, 2019 ई. को दिल्ली का पंचांग (घटी पल)
तिथि – २१/२३ (समाप्ति काल)	तिथि – २१/३३ (समाप्ति काल)
नक्षत्र – १०/४०	नक्षत्र – १०/५०
योग – [illegible]	योग – [illegible]

जालन्धर से अतिरिक्त नगर की जन्मपत्री निर्माण हेतु पंचांग परिवर्तन आवश्यक है। इस प्रक्रिया द्वारा आप भारत के किसी भी नगर का सू. उ. ज्ञात करके जालन्धर के सू.उ. से अन्तर जानकर पंचांग परिवर्तन कर सकते हैं। जबकि जहाँ तिथ्यादि, ग्रहों के वक्री-मार्गी का समय भा. स्टै. टा. में दिया गया है, वहाँ पंचांग परिवर्तन करने की कोई आवश्यकता नहीं है। घण्टा मिनट वाले पृष्ठों पर सर्वत्र समय (तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र संचार आदि का) भा. स्टै. टा. में दिया गया है, वहाँ पंचांग परिवर्तन करने की कोई आवश्यकता नहीं।

लग्न सारिणी द्वारा लग्न स्पष्ट करने की विधि

आगामी पृष्ठों पर विभिन्न अक्षांशों पर आधारित, निर्मित लग्न सारिणियां दी गई हैं। जिस नगर का लग्न स्पष्ट करना हो, सर्वप्रथम अपने अभीष्ट काल का सूर्योदयात् इष्टकाल घट्यादि में बना ले। इसके लिए उस स्थान का सही सूर्योदय का ज्ञान होना आवश्यक है। अपने नगर की **शुद्ध एवं सूक्ष्म सूर्योदय काल** जानने के लिए पंचांगदिवाकर के आगामी पृष्ठों में दी गई। **अक्षांश सारिणियों** का प्रयोग करना चाहिए। स्थानीय इष्टकाल बना लेने के पश्चात् अपने अभीष्ट काल का सूर्य स्पष्ट ग्रहण करें। सूर्यस्पष्ट जिस राशि के जितने अंश पर हो, लग्न सारिणी में उसी राशि के सामने तथा सूर्य स्पष्ट के अंशों के कोष्ठक के नीचे जितने घड़ी पल हो, उनमें अपने इष्ट के घड़ी पल जोड़ (जमा) देने से लग्न स्पष्ट जानने के लिए घड़ी पल होंगे। यह घड़ी पल लग्नसारिणी में जिस राशि के सामने और जितने अंश के नीचे होगा, वही राश्यादि पर लग्नस्पष्ट होगा।

उदाहरण–मान लीजिए, विक्रमी संवत् २०७६ मध्ये कांगड़ा (हि. प्र.) में चैत्र शुक्ल षष्ठी प्रविष्टे २९ चैत्र, तदनुसार 11 अप्रै., 2019 ई. को दोपहर 2 बजकर 24 मिनट पर उत्पन्न बालक का लग्न स्पष्ट करना है। इसका सूर्योदयात् ईष्ट २० घड़ी ४० पल बनेगा तथा ईष्टकालिक सूर्यस्पष्ट ११/२७°/०४'/०९" होगा। कांगड़ा का अक्षांश ३२/०५ होने के कारण आगामी पृष्ठों पर दी गई ३२° अक्षांश की लग्न सारिणी प्रयोग में लाई जाएगी। लग्न सारिणी में सूर्य स्पष्ट की राशि अर्थात् मीन राशि के सामने और २७° अंश के नीचे कोष्ठक में अनुपातिक विधि द्वारा हमें २/१९ घट्यादि प्राप्त हुए। इनको जन्म इष्ट के घटयादि २०/४० में जमा कर देने से कुल जोड़ २२/५९ घट्यादि बनेगा। इस जोड़ को पुनः लग्न सारिणी में निकटवर्ती संख्या २३/०० सिंह (४) राशि के सामने और १ अंश के नीचे प्राप्त हुई। यह संख्या हमारे कुल जोड़ २२/५९ से केवल १ पल अधिक है। अब अनुपातिक विधि द्वारा १ पल के कलादि निकाल लेने से हमें इष्टकालिक लग्न स्पष्ट पता चल जाएगा। जैसे यदि १२ पल के पीछे १ अंश अर्थात् ६० कला का अन्तर पड़ता है तो १ पल के पीछे ०५ कला का अन्तर पड़ेगा। इस प्रकार उपरोक्त इष्टकाल पर (२०/४० घट्यादि) ४ गत राशि अर्थात् सिंह लग्न, ० अंश, ५५ कला पर लग्न स्पष्ट होगा। (लग्न स्पष्ट ४/००°/५५'/०४")। अधिक [illegible] प्रकाशित पुस्तक 'ज्योतिष तत्त्व' का अध्ययन करें।

उत्तर पलभा १५।०।५० **लग्न सारणी लंदन (अक्षांश ५१।३०)** चरखण्ड १५१।१२०।५१

उपरोक्त लंदन सारिणी विदेशी नगरों जैसे–लंदन, बर्मिंघम, साऊथ हैम्पटन, आक्सफोर्ड, स्लोह तथा लंदन के आसपास नगरों के लग्न निकालने के लिए विशेष उपयोगी सिद्ध होगी। ध्यान रहें, लग्न स्पष्ट करने के लिए लंदनादि नगरों का ही सूर्योदय एवं सूर्य स्पष्ट करना चाहिए।

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	घ.	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४
	प.	४६	५०	५५	५९	४	९	१४	१९	२४	२९	३५	४०	४६	५२	५८	३	९	१५	२१	२७	३२	३८	४४	५०	५७	२	८	१२	१८	२४
१ वृष	घ.	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८
	प.	३०	३५	४१	४७	५३	५९	५	११	२०	३०	३९	४८	५७	६	१५	२४	३३	४२	५१	००	०७	१५	२३	३२	४१	५०	५९	८	१७	२६
२ मिथुन	घ.	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४
	प.	३५	४४	५३	०२	११	२०	३१	४२	५३	०२	१५	२८	४१	५४	०७	२०	३३	४६	५९	१२	२४	३७	५०	०३	१६	२९	४२	५५	०७	१९
३ कर्क	घ.	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१
	प.	२९	४२	५५	०८	२०	३३	४६	५९	१३	२७	४१	५५	०९	२३	३७	५२	०७	२१	३५	५०	०४	१८	३२	४६	००	१३	२७	४१	५५	०९
४ सिंह	घ.	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८
	प.	२३	३७	५२	०६	२०	३४	४८	०३	१७	३१	४५	५९	१३	२७	४१	५५	०९	२३	३७	५१	१८	१८	३२	४६	००	१४	२८	४२	५६	१०
५ कन्या	घ.	२८	२८	२८	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३५
	प.	२४	३८	५२	०७	२१	३५	५०	०२	१६	३०	४५	५९	१३	२७	४२	५६	१०	२३	३७	५१	५	१९	३३	४७	०१	१५	२९	४३	५७	११
६ तुला	घ.	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४२
	प.	२५	३९	५३	०७	२२	३७	५१	०५	२०	३४	४८	०२	१६	३१	४५	००	१३	२७	४१	५५	९	२३	३७	४१	५५	०९	२३	३७	५१	०५
७ वृश्चिक	घ.	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८
	प.	३०	४४	५८	१२	२६	४१	५६	१०	२३	३५	४७	५८	१२	२६	३८	५०	०२	१६	२८	४२	५४	०६	१९	३१	४४	५६	०८	२०	३२	४४
८ धनु	घ.	४८	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३
	प.	५९	११	२४	३७	४९	०२	१५	२७	३८	४७	५५	०४	१३	२२	३१	४०	४९	५८	०६	१५	२४	३३	४२	५१	००	०८	१७	२६	३५	४४
९ मकर	घ.	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७
	प.	५२	०१	१०	१९	२८	३७	४६	५५	००	०६	१२	१७	२३	२९	३४	४०	४६	५२	५८	०४	१०	१६	२२	२८	३४	३९	४५	५१	५७	०३
१० कुम्भ	घ.	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९
	प.	०८	१३	१९	२५	३०	३५	४१	४७	५२	५७	०१	०५	०९	१४	१९	२३	२८	३३	३७	४१	४५	५०	५५	००	०४	०८	१३	१७	२२	२७
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	प.	३१	३५	३९	४४	४८	५२	५७	०२	७	११	१५	२०	२४	२८	३३	३७	४१	४५	४९	५३	५८	०३	०८	१३	१८	२२	२७	३२	३७	४२

अक्षांश १९° पलभा ४।७।५५

मुम्बई, कल्याण, पूना, औरंगाबाद, अहमदनगर, बस्तर, खण्डाला, भुवनेश्वर, पुरी, दादरा आदि नगरों के लिए

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७
	६	१४	२१	२९	३७	४५	५३	१	१०	१९	२८	३६	४५	५४	३	१२	२१	३०	३८	४७	५६	५	१४	२३	३२	४१	४९	५८	७	१६	२५
१ वृष	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२
	२५	३४	४३	५१	०	९	१८	२७	३७	४८	५८	८	१९	२९	३९	५०	००	१०	२०	३०	४१	५२	२	१२	२३	३३	४३	५४	४	१४	२५
२ मिथुन	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	२४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७
	२५	३५	४५	५६	६	१६	२७	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०	५१	३	१४	२५	३६	४८	५८	१०	२१	३२	४३	५५
३ कर्क	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३
	५५	६	१७	२८	३९	५१	२	१३	२४	३५	४६	५७	८	१९	३०	४१	५२	४	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४३	५४	५	१६	२७
४ सिंह	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
	२७	३९	५०	१	१२	२३	३४	४५	५६	६	१७	२७	३८	४९	५९	१०	२१	३१	४२	५३	३	१४	२४	३५	४६	५६	६	१७	२८	३९	५०
५ कन्या	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
	५०	०	११	२१	३२	४३	५३	४	१५	२५	३६	४६	५७	८	१८	२९	४०	५०	१	१२	२२	३३	४३	५४	५	१५	२६	३७	४७	५८	०९
६ तुला	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९
	९	१९	३०	४०	५१	०२	१२	२३	३४	४५	४६	७	१८	२९	४०	५१	३	१४	२५	३६	४७	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७
७ वृश्चिक	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५
	३७	४९	००	११	२२	३३	४४	५५	६	१७	२९	४०	५१	२	१३	२५	३६	४७	५८	९	२२	३२	४२	५४	५	१६	२७	३९	५०	१	१३
८ धनु	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०
	१३	२४	३५	४६	४७	९	२०	३१	४१	५२	२	१२	२३	३३	४२	५४	४	१४	२५	३५	४५	५६	६	१६	२६	३७	४७	५७	८	१८	२९
९ मकर	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५
	२९	३९	४९	००	१०	२०	३१	४१	५०	५९	८	१६	२५	३४	४३	५२	१	१०	१८	२७	३६	४५	५४	३	१२	२१	२९	३८	४७	५६	५
१० कुम्भ	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
	५	१४	२३	३१	४०	४९	५८	७	१५	२३	३१	३९	४६	५४	२	१०	१८	२९	३४	४२	५०	५८	५	१३	२१	२९	३७	४५	५३	१	९
११ मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	३
	९	१७	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६

अक्षांश २३° पलभा ५।५।३८

कलकत्ता, अहमदाबाद, इटारसी, इन्दौर, उज्जैन, कटनी, कच्छ, जबलपुर, भोपाल, राँची, हौशंगाबाद आदि नगरों के लिए

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
०	२	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	[illegible]
मेष	५९	६	१४	२१	२९	३७	४४	५२	०	९	१८	२६	३५	४४	५२	१	१०	१८	२७	३५	४४	५३	१	१०	१९	२७	३६	४४	५३	२	[illegible]
१	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	[illegible]
वृष	१०	१९	२८	३६	४५	५४	२	११	२१	३१	४२	५२	२	१२	२८	३३	४३	५३	४	१४	२४	३५	४५	५५	५	१६	२६	३६	४६	५७	[illegible]
२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	[illegible]
मिथुन	७	१७	२७	३७	४८	५८	९	१९	३०	४१	५३	४	१५	२६	३८	४९	०	११	२३	३४	४५	५६	८	१९	३०	४२	५३	४	१५	२७	[illegible]
३	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	[illegible]
कर्क	३८	४९	०	१२	२३	३४	४६	५७	८	१९	३१	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०	१	१२	२४	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५४	५	[illegible]
४	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	[illegible]
सिंह	१७	२८	३९	५१	२	१३	२५	३६	४७	५८	९	२०	३०	४१	५२	३	१४	२५	३६	४७	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१४	२५	३६	[illegible]
५	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	[illegible]
कन्या	४७	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४२	५३	४	[illegible]
६	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	[illegible]
तुला	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२०	३२	४३	५४	६	१७	२८	४०	५१	२	१४	२५	३६	४७	५९	१०	२१	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०	[illegible]
७	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	[illegible]
वृश्चिक	५२	३	१४	२६	३७	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	७	१८	३०	४१	५२	३	१५	२६	३७	४९	००	११	२२	३४	४५	५६	७	१९	[illegible]
८	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	[illegible]
धनु	३०	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	५९	९	२०	३०	४०	५०	१	११	२१	३१	४२	५२	२	१३	२३	३३	४३	५४	४	१४	२४	३४	[illegible]
९	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	४२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	[illegible]
मकर	४५	५५	५	१६	२६	३६	४६	५७	५	१४	२३	३१	४०	४९	५७	६	१४	२३	३२	४०	४९	५८	६	१५	२४	३२	४१	४९	५८	७	[illegible]
१०	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	४८	५८	५८	५९	[illegible]
कुम्भ	१५	२४	३३	४१	५०	५९	७	१६	२३	३१	३९	४६	५४	१	९	१७	२४	३२	३९	४७	५५	२	१०	१७	२५	३३	४१	४७	५५	३	[illegible]
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	[illegible]
मीन	११	१८	२६	३३	४१	४९	५६	४	११	१९	२७	३४	४२	४९	५७	५	१२	२०	२७	३५	४३	५०	५८	५	१३	२१	२८	३६	४३	५१	[illegible]

अक्षांश २७° पलभा ६।६।५०

जयपुर, आगरा, अयोध्या, लखनऊ, कानपुर, कन्नौज, गोंडा, गोरखपुर, मथुरा, अजमेर, अलवर, जोधपुर, अलीगढ़, हरदोई, कन्नौज, इटावा, उन्नाव, देवरिया, फैजाबाद, फर्रूखाबाद, भरतपुर, ग्वालियर आदि नगरों के लिए

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	[illegible]
०	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	[illegible]
मेष	५०	५७	४	१२	१९	२६	३३	४१	४९	५७	६	१४	२२	३१	३९	४७	५६	४	१२	२१	२९	३७	४६	५४	२	११	१९	२७	३६	४४	[illegible]
१	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	[illegible]
वृष	५२	१	९	१७	२६	३४	४२	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१३	२३	३३	[illegible]
२	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	[illegible]
मिथुन	४३	५३	३	१३	२३	३३	४४	५४	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	१९	३१	४२	५४	५	[illegible]
३	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	[illegible]
कर्क	१७	२८	३९	५१	२	१४	२५	३७	४८	००	११	२३	३५	४६	५८	९	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	५	१७	२९	४०	५२	[illegible]
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	[illegible]
सिंह	३	१५	२७	३८	५०	१	१३	२५	३६	४७	५९	१०	२१	३२	४४	५५	६	१८	२९	४०	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	११	२२	३३	[illegible]
५	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	[illegible]
कन्या	४५	५६	७	१८	३०	४१	५२	०४	१५	२६	३८	४९	००	११	२३	३४	४५	५७	८	१९	३१	४२	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१२	[illegible]
६	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	[illegible]
तुला	२४	३५	४६	५७	९	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४१	५२	०४	१५	२७	३९	५०	२	१३	२५	३७	४८	००	११	२३	३५	४६	५८	[illegible]
७	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	[illegible]
वृश्चिक	९	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४२	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५६	०८	१९	३१	४२	[illegible]
८	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	[illegible]
धनु	५४	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२४	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४५	५५	५	१५	२५	३६	४५	५५	५	१५	२६	३६	४६	५६	[illegible]
९	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	४३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	[illegible]
मकर	६	१६	२६	३६	४६	५६	०७	१७	२५	३३	४२	५०	५८	७	१५	२३	३२	४०	४८	५७	५	१३	२२	३०	३८	४७	५५	३	१२	२०	[illegible]
१०	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	[illegible]
कुम्भ	२८	३७	४५	५३	२	१०	१८	२७	३४	४१	४८	५६	०३	१०	१७	२४	३२	३९	४६	५३	१	८	१५	२२	३०	३७	४४	५१	५९	६	[illegible]
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	[illegible]
मीन	१३	२०	२७	३५	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३३	४०	४७	५४	१	९	१६	२३	३०	३८	४५	५२	५९	७	१४	२१	२८	३६	४३	[illegible]

लग्न सारिणी (अक्षांश–२८°)

(अलीगढ़, बरेली, बुलन्दशहर, वृन्दावन, चुरू, नारनौल, झुंझुनू, बीकानेर, रामगढ़, फरीदाबाद नगरों के लिए)

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	घ.	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
	प.	४८	५६	०३	१०	१७	२४	३१	३९	४७	५५	०३	१२	२०	२८	३६	४४	५३	०१	१०	१८	२६	३४	४३	५१	५९	०७	१६	२४	३३	४०
१ वृष	घ.	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	प.	४९	५७	०५	१४	२२	३०	३८	४७	५५	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०८	१८	२८	३८	४८	५८	०८	१८	२८
२ मिथुन	घ.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
	प.	३८	४८	५८	०८	१८	२८	३९	४९	०	१२	२३	३४	४६	५७	०९	२०	३२	४३	५५	०६	१८	२९	४१	५२	०३	१५	२६	३८	४९	०१
३ कर्क	घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
	प.	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	०८	१९	३१	४३	५४	०६	१८	२९	४१	५३	०४	१६	२८	३९	५१	०३	१४	२६	३८	४९
४ सिंह	घ.	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८
	प.	०१	१३	२४	३६	४८	५९	११	२३	३४	४५	५७	०८	१९	३१	४२	५४	०५	१६	२८	३९	५०	०२	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२१	३३
५ कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
	प.	४४	५५	०७	१८	२९	४१	५२	०४	१५	२६	३८	४९	०	१२	२३	३५	४६	५७	०९	२०	३१	४३	५४	०५	२०	२८	४०	५१	०२	१४
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०
	प.	२५	३६	४८	५९	१०	२२	३३	४५	५६	०८	२०	३१	४३	५५	०६	१८	३०	४१	५३	०५	१६	२८	४०	५१	०३	१५	२६	३८	५०	०१
७ वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५
	प.	१३	२५	३६	४८	०	११	२३	३५	४६	५८	०९	२०	३२	४३	५५	०६	१८	२९	४१	५२	०४	१५	२७	३८	५०	०१	१२	२४	३५	४७
८ धनु	घ.	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१
	प.	५८	१०	२१	३३	४४	५६	०७	१८	२९	३९	४९	५९	०९	१९	२९	३९	४९	५९	०	११	२९	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०
९ मकर	घ.	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५
	प.	१०	२०	३०	४०	५०	०	११	२१	२९	३७	४५	५४	०२	१०	१८	२७	३५	४३	५२	०	०८	१६	२५	३३	४१	४९	५८	०६	१४	२२
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
	प.	३१	३९	४७	५६	०४	१२	२०	२९	३६	४३	५०	५८	०४	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५५	०२	०९	१६	२३	३०	३८	४५	५२	०	०६
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
	प.	१३	२१	२८	३५	४२	४९	५६	०४	११	१८	२५	३२	३९	४७	५४	०१	०८	१५	२२	३०	३७	४४	५१	५८	०५	१३	२०	२७	३४	४१

लग्न सारणी अक्षांश २९°

उत्तर पलभा (६।३९।०५)

दिल्ली, अमरोहा, रोहतक, जीन्द, मेरठ, हिसार, गुड़गांव, मुरादाबाद, नैनीताल, गाज़ियाबाद आदि के लिए उपयोगी

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	घ.	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
	प.	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	११	१९	२७	३५	४४	५२	०	९	१७	२५	३३	४२	५०	५८	६	१५	२३	३१	३९	४८
१ वृष	घ.	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
	प.	४८	५६	४	१३	२१	२९	३७	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७
२ मिथुन	घ.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
	प.	३७	४७	५७	७	१७	२७	३८	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२५	३७	४८	०	११
३ कर्क	घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
	प.	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०
४ सिंह	घ.	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२५	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
	प.	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३२	४४
५ कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
	प.	४४	५५	७	१८	२९	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२३	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५२	३	१४	२६
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
	प.	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४१	५२	४	१६	२७	३९	५१	२	१४
७ वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५
	प.	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३६	४७	५९	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९
८ धनु	घ.	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
	प.	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
९ मकर	घ.	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
	प.	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२२	३०	३८	४६	५५	३	११	१९	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२६	३४	४२	५०	५९	७	१५	२३	३२
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
	प.	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५१	६	१४
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
	प.	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३२	३९	४६	५३	१	८	१५	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४१	४८

लग्न सारणी अक्षांश (३०°)

पलभा ६/५५/४३

अम्बाला, चण्डीगढ़, कालका, कुराली, खन्ना, देहरादून, नाभा, नाहन, पटियाला, भटिण्डा, रोपड़, फाज़िल्का, सहारनपुर, फरीदकोट इत्यादि

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	[illegible]
	प.	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	[illegible]
१ वृष	घ.	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	[illegible]
	प.	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	[illegible]
२ मिथुन	घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	[illegible]
	प.	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४८	००	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	[illegible]
३ कर्क	घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	[illegible]
	प.	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	८	१९	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	[illegible]
४ सिंह	घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	[illegible]
	प.	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	[illegible]
५ कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	[illegible]
	प.	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	[illegible]
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	[illegible]
	प.	३०	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२५	३७	४८	०	१२	२४	३६	४७	५९	११	२३	३५	४६	५८	१०	[illegible]
७ वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	[illegible]
	प.	२२	३४	४५	५७	९	२१	३३	४४	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	[illegible]
८ धनु	घ.	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	[illegible]
	प.	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	[illegible]
९ मकर	घ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	[illegible]
	प.	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३६	४४	५२	००	८	१६	२४	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	[illegible]
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	[illegible]
	प.	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	[illegible]
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	[illegible]
	प.	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१३	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	[illegible]

लग्न सारणी अक्षांश ३१/२०

उत्तर पलभा (७/१७/२१)

जालन्धर, लुधियाना, चण्डीगढ़, रोपड़, फगवाड़ा, कपूरथला, होशियारपुर, फिरोज़पुर, शिमला, मण्डी, हमीरपुर, ऊना आदि के लिए

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
	प.	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६	१४	२२	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	[illegible]
१ वृष	घ.	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	प.	३४	४२	५०	५८	६	१४	२३	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	००	१०	[illegible]
२ मिथुन	घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
	प.	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४१	५३	५	१६	२७	३८	५०	३	१४	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४६	५८	०९	२१	३२	४४	[illegible]
३ कर्क	घ.	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
	प.	५५	०७	१९	३१	४३	५४	०६	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९	४०	५२	४	१६	२८	४०	५२	०३	१५	२७	३९	५१	०३	१५	२७	३८	[illegible]
४ सिंह	घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
	प.	५०	२	१४	२६	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	००	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	०८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	[illegible]
५ कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
	प.	४२	५३	०५	१७	२८	४०	५२	०३	१५	२७	३८	५०	०२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३४	४६	५८	०९	२१	[illegible]
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
	प.	३३	४४	५६	०८	१९	३१	४३	५४	६	१८	२९	४२	५४	०६	१७	२९	४१	५३	०५	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९	४१	५३	०५	१६	२८
७ वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
	प.	२८	४०	५२	०४	१६	२८	४०	५१	०३	१५	२६	३८	४९	०१	१२	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६	०८	२०	३२	४४	५५	०७	१८
८ धनु	घ.	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
	प.	१८	३०	४२	५३	०५	१६	२८	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९
९ मकर	घ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५
	प.	२९	३९	४९	५९	९	१८	२८	३८	४७	५५	०३	११	१९	२७	३४	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३५	४३
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
	प.	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४६	५३	००	७	१४	२०	२७	३४	४१	४७	५४	०१	८	१५	२१	२८	३५	४१	४८	५५	०२	९	१६
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
	प.	१६	२३	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२७	३४	४१

लग्न सारिणी (अक्षांश–३२°)

(अमृतसर, कठुआ, कुल्लू, गुरदासपुर, जोगिन्द्रनगर (हि.प्र.), दीनानगर, धर्मशाला, सुन्दरनगर, कांगड़ा, सरकाघाट आदि नगरों के लिए)

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६
	प.	४०	४७	५३	०	०७	१४	२१	२७	३५	४३	५१	५९	०७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	०३	११	१९	२७	३५	४३	५१	५९	०७	१५	२३
१ वृष	घ.	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११
	प.	३१	३९	४७	५५	०३	११	१९	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७
२ मिथुन	घ.	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६
	प.	१७	२७	३७	४७	५७	०६	१६	२६	३८	५०	०१	१३	२४	३६	४७	५९	११	२२	३४	४५	५७	०८	२०	३१	४३	५५	०६	१८	२९	४१
३ कर्क	घ.	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२
	प.	५२	०४	१६	२७	३९	५०	०३	१३	२५	३७	४९	०१	१३	२५	३७	४९	०१	१३	२५	३७	४९	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६
४ सिंह	घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८
	प.	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	११	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३४	४६	५७	०९	२०	३२	४४	५६	०७	१९	३१	४३	५५	०६	१८	३०
५ कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
	प.	४१	५३	०५	१६	२८	४०	५२	०३	१५	२७	३९	५०	०२	१४	२६	३७	४९	०१	१२	२४	३६	४८	५९	११	२३	३५	४६	५८	१०	२२
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
	प.	३३	४५	५७	०८	२०	३२	४४	५५	०७	१९	३१	४३	५५	०७	१९	३१	४३	५५	०७	१९	३१	४२	५४	०६	१८	३०	४२	५४	०६	१८
७ वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६
	प.	३०	४२	५४	०६	१८	३०	४१	५३	०५	१७	२८	४०	५१	०३	१४	२६	३८	४९	०१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	०८
८ धनु	घ.	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
	प.	१९	३१	४३	५४	०६	१७	२९	४१	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०
९ मकर	घ.	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
	प.	३०	४०	५०	०	१०	१९	२९	३९	४७	५५	०३	११	१९	२७	३५	४३	५१	०	०७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	०३	११	१९	२७	३५
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
	प.	४३	५१	५९	०७	१५	२३	३१	३९	४६	५३	००	०७	१३	२०	२७	३४	४१	४७	५४	०१	०८	१५	२१	२८	३५	४२	४९	५५	०२	०९
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
	प.	१६	२३	२९	३७	४३	५०	५७	०३	१०	१७	२४	३१	३७	४४	५१	५८	०५	११	१८	२५	३२	३९	४५	५२	०	६	१२	१९	२६	३३

लग्न सारणी (अक्षांश ३३°)

पलभा ७।४८।३०

अखनूर, जम्मू, श्रीनगर, ऊधमपुर, रावलपिंडी, कठुआ, अनन्तनाग, किश्तवाड़, डोडा, रामबन, डल्हौज़ी आदि

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	घ.	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६
	प.	३७	४४	५१	५८	४	११	१८	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५४	२	१०	१८	२६
१ वृष	घ.	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११
	प.	२६	३४	४२	५०	५८	६	१३	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	००	१०
२ मिथुन	घ.	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
	प.	१०	२०	३०	४०	५०	५९	९	१९	३१	४३	५४	६	१७	२९	४१	५२	४	१५	२७	३९	५०	२	१३	२५	३७	४८	००	११	२३	३५	४६
३ कर्क	घ.	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२
	प.	४६	५८	९	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४३	५५	८	२०	३२	४४	५६	८	२०	३२	४४	५६	८	२०	३२	४४	५६	८	२०	३२	४४
४ सिंह	घ.	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
	प.	४४	५६	८	२०	३२	४४	५६	८	२०	३२	४४	५६	८	१९	३०	४३	५५	७	१९	३०	४२	५४	६	१८	३०	४१	५३	५	१७	२९	४१
५ कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४
	प.	४१	५२	४	१६	२८	४०	५२	३	१५	२७	३९	५१	३	१४	२६	३८	५०	२	१४	२५	३७	४९	१	१३	२५	३६	४८	०	१२	२४	३६
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
	प.	३६	४७	५९	११	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३४	४६	५९	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३५
७ वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६
	प.	३५	४७	५९	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५५	७	१९	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५१	३	१५	२६
८ धनु	घ.	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१
	प.	२६	३८	४९	१	१३	२४	३६	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६
९ मकर	घ.	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५
	प.	३६	४६	५६	६	१६	२५	३५	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४१	४९	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	००	८	१५	२३	३१	३९	४७
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
	प.	४७	५५	३	११	१९	२७	३४	४२	४९	५६	२	९	१६	२३	२९	३६	४३	४९	५६	३	९	१६	२३	३०	३६	४३	५०	५६	३	१०	१६
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
	प.	१६	२३	३०	३७	४३	५०	५७	३	१०	१७	२३	३०	३७	४४	५०	५७	४	१०	१७	२४	३०	३७	४४	५१	५७	४	११	१७	२४	३१	३७

दशमलग्न सारणी

(सर्वत्र उपयोगी) लंकोदय २७८ । २९९ । ३२३

अंश	००	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३
	३३	४२	५२	१	१०	१९	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७
१ वृष	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५
२ मिथुन	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
	४५	५५	०६	१७	२८	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	१९	३०	४१	५२	३	१४	२५	३५	४३	५७	८
३ कर्क	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९
	८	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२
४ सिंह	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३
	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	५९	९	१८	२७	३७	४६	५५
५ कन्या	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८
	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	००	१०	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५६	५	१५	२४	३३
६ तुला	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३
	३३	४२	५२	१	१०	१९	२९	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७
७ वृश्चिक	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८
	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३४	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५
८ धनु	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	४
	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४१	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८
९ मकर	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९
	८	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२
१० कुम्भ	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३
	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	०	९	१८	२७	३७	४६	५५
११ मीन	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८
	५५	४	१३	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५६	५	१५	२४	३३

दशम स्पष्ट तथा भावस्पष्ट

इष्ट कालिक द्वादश भावों की वास्तविक स्थिति जानने के लिए भाव-स्पष्ट किया जाता है। भाव स्पष्ट के लिए दशम् लग्न सारिणी का प्रयोग किया जाता है ॥ **विधि इस प्रकार है।–** **लग्न स्पष्ट** करने के लिए लग्न सारिणी में सूर्य स्पष्ट के राश्यंशों से प्राप्त घटी-पलों को इष्टकाल के घटी पलों में जमा करने पर जो **योगफल** मिले उसको **दशम लग्न सारिणी** के निकटस्थ कोष्ठकों में देखने पर जो राशि अंशादि प्राप्त होंगे वही **दशम लग्न स्पष्ट** होगा।

भाव स्पष्ट का उदाहरण–मान लो किसी जातक का जन्मोष्टकाल २० ।४५ घट्यादि है तथा **जालंधर लग्न सा० से** सूर्य स्पष्ट (० ।१२ ।७) द्वारा प्राप्तांक ४ ।९ है, और लग्न स्पष्ट ४ । १० ।३५ है। इष्ट और सू. स्प. से प्राप्तांकों को जमा करने से हमें २४ ।५४ घट्यादि प्राप्त हुए। इन प्राप्त योगांकों को **दशम् लग्न सारिणी** में देखने पर हमें **दशम् भाव स्पष्ट** ११ ।८ ।३६ प्राप्त हुआ। **दशभाव** स्प. में ६ राशि जोड़ने से **चतुर्थ भाव** तथा ४ थे भाव में से लग्न भाव स्पष्ट घटा कर शेष को ६ द्वारा भाग देने पर जो अंश-कलादि प्राप्त हों, वह **षष्ठांश** कहलाता है। **षष्ठांश** को लग्न भाव में जोड़ने से लग्न की सन्धि तथा इस सन्धि में षष्ठांश को पुनः जोड़ने से द्वितीय भाव स्प. होगा। **द्वितीय भाव** में **षष्ठांश** जोड़ने से दूसरे भाव की सन्धि, इस सन्धि में षष्ठांश जमा करने से **तृतीय भाव** होगा। तृतीय भाव में षष्ठांश जमा करते से **३रे भाव की सन्धि**, और इस सन्धि में **षष्ठांश** जोड़ने से **चतुर्थ भाव** प्राप्त हो जाता है। अब उसी षष्ठांश को एक राशि में से घटाकर शेष को ४थें भाव में जोड़ने से चतुर्थ भाव की सन्धि, फिर इस सन्धि में उसी शेष को जोड़ने से **पंचम भाव** होगा। लग्न भाव स्पष्ट में ६ राशि जोड़ने से सप्तम भाव तथा प्रथम लग्नभाव की सन्धि में ६ राशि युक्त करने से सप्तम भाव की सन्धि होगी। इसी प्रकार २रें, ३रें भावों में प्रत्येक में क्रम से ६-६ राशि जोड़ने से **अष्टम, नवम, दशम, एकादश आदि भाव एवं सन्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं।**

—पं० विवेक शर्मा ज्यो.

ग्रहों के छः प्रकार के बल

स्थान बल, दिग्बल, काल बल, नैसर्गिक बल, चेष्टा बल और दृक् बल, यह छः प्रकार के बल हैं। फलित ज्ञान के लिए इन बलों को जान लेना आवश्यक है। **स्थान बल**–जो ग्रह उच्च, मित्रगृही, मूल त्रिकोणस्थ, स्वनवांशस्थ अथवा द्रेष्काणस्थ होता है, वह स्थान बली कहलाता है। **दिग्बल**–बुध और गुरु लग्न में रहने से, शुक्र और चन्द्रमा चतुर्थ में रहने से, शनि सप्तम में रहने से, सूर्य और मंगल दशम स्थान में रहने से दिग्बली होते हैं। **कालबल**–रात में जन्म होने पर चन्द्र, शनि और मंगल तथा दिन में जन्म होने पर सूर्य, बुध और शुक्र कालबली होते हैं। मतान्तर से बध को सर्वदा काल बली माना जाता है। **नैसर्गिक बल**–शनि, मंगल, बुध, शुक्र, चन्द्र और सूर्य उत्तरोत्तर बली होते हैं। **चेष्टाबल**–मकर से मिथुन पर्यन्त किसी राशि में रहने से सूर्य और चन्द्रमा तथा मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि चन्द्रमा के साथ रहने से चेष्टाबली होते हैं। **दृक् बल**–शुभ ग्रहों से दृष्ट ग्रह दृक् बली होते हैं। बलवान् ग्रह अपने स्वभाव के अनुसार जिस भाव में रहता है, उस भाव का फल देता है। पाठकों को राशि स्वभाव और ग्रहस्वभाव दोनों का समन्वय कर फल अवगत करना चाहिये।

षड्वर्ग सारणी चक्रम्

राशि	भाग	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
अंशादि		२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
रा. षट्		३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
		०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४२	०	०	०	५१	०	०	०
०	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९
	सं	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
मे.	द्वा	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२
	त्रि	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
१	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
	सं	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२
	नं	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
वृ.	द्वा	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१
	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
२	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११
	सं	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
मि.	द्वा	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२
	त्रि	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
३	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
	सं	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
क.	द्वा	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३
	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
४	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१
	सं	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
सिं.	द्वा	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४
	त्रि	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
५	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२
	सं	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६
कं.	न	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वा	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५
	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

राशि	भाग	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
		२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
		३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
		०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४२	०	०	०	५१	०	०	०
		५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
६		७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३
		७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१
		७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
तु.		७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६
		१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
		४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
७		८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४
		२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८
		४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
वृ.		८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७
		२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
		५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
८		९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५
		९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३
		१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
ध.		९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८
		१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
		४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
९		१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६
		४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०
		१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
म.		१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९
		२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
		५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
१०		११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७
		११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५
		७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
कुं		११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०
		१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
		४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
		१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८
११		६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२
		४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
मी.		१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११
		२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैं. अन्तर

नोट—जिस शहर के आगे (–) का चिन्ह लगाया गया है, वह नगर 82½ रेखांश से उतने मिनट पश्चिम में है और जिस स्थान पर (+) का चिन्ह लगा है, वह स्थान उतने मिनट पूर्व में है। सूर्योदयास्त जानने के लिए जिन नगरों का स्टै. अन्तर (–) है, उन्हें मध्यम सूर्योदयास्त जाने के लिए जिन नगरों का स्टै. अन्तर (–) है, उन्हें मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी में (–) की बजाए (+) करना होगा तथा '+' चिन्ह वाले नगरों को मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी से प्राप्त सू. उ. – सू. अ. में (–) ऋण करें। स्पष्टीकरण = (पं.) = पंजाब ; (आं. प्र.) = आंध्रप्रदेश ; (अरु) = अरुणांचल प्रदेश ; (आसा) = आसाम ; (उत्तरा.) = उत्तराखण्ड ; (उ.प्र.) = उत्तप्रदेश ; (छ. ग.) = छत्तीसगढ़ ; (गुज.) = गुजरात ; (राज.) = राजस्थान ; (हरि.) = हरियाणा ; (बिहा.) = बिहार ; (हि. प्र.) = हिमाचल प्रदेश ; (महा.) = महाराष्ट्र ; (म. प्र.) = मध्यप्रदेश ; (ज. का.) = जम्मू–काश्मीर।

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सैं.
अण्डेमान एवं निकोबार			
पोर्टब्लेअर	11 40	92 45	+41 00
अरुणांचल प्रदेश			
ईटानगर	27 08	93 37	+44 28
तवांग	27 33	91 48	+37 12
आंध्रा प्रदेश			
अनन्तपुर	14 41	77 36	–19 36
Cuddapah	14 28	78 49	–14 44
Guntur	16 18	80 27	–08 12
Kurnool	15 50	78 03	–17 48
Vizianagaram	18 07	83 25	+03 40
विजयवाड़ा	16 31	80 39	–07 24
विशाखापट्टनम्	17 42	83 18	+03 12
गोलकुण्डा(आं. प्र.)	17 24	78 23	–16 28
तिरुपति(आंध्र.)	13 40	79 24	–12 24
आसाम			
उ.लखीमपुर	27 14	94 07	+46 28
गुवाहाटी	26 11	91 44	+36 56
जोरहाट	26 45	94 13	+46 52
तेजपुर	26 38	92 49	+41 16
डिब्रूगढ़	27 29	94 54	+49 36
डिगबोई	27 23	95 38	+52 32
लखीमपुर	27 14	94 15	+47 00

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सैं.
उड़ीसा			
कटक	20 30	85 50	+13 20
बालासोर	21 30	86 56	+17 44
बहरामपुर	19 21	84 51	+09 24
भुवनेश्वर	20 14	85 50	+13 20
उत्तरप्रदेश			
अलीगढ़	27 53	78 05	–17 40
अमरोहा	28 55	78 28	–16 08
अमेठी	26 08	81 50	–02 40
अयोध्या	26 48	82 14	–01 04
अकबरपुर	26 25	82 33	+00 12
अगोरी	24 34	82 56	+01 44
अच्छनेरा	27 11	77 46	–18 56
अम्बाह	26 44	78 15	–17 00
अतरौली	28 00	78 16	–16 48
अफ़ज़लगढ़	29 23	78 41	–15 16
अलीगंज	27 30	79 11	–13 16
आजमगढ़	26 04	83 11	+ 02 44
आगरा	27 11	78 01	–17 56
इलाहाबाद	25 28	81 54	–02 24
इटावा	26 46	79 02	–13 52
इटवा	27 20	82 42	+00 48
ईसानगर	27 54	81 14	–05 04
उझानी	28 00	79 02	–13 52
उतरौला	27 19	82 25	–00 20

उत्तर प्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सैं.
उन्नाव	26 33	80 31	–07 56
उरई	25 58	79 27	–12 12
उस्का	27 08	83 12	+02 48
एटा	27 38	78 40	–15 20
ऐत	25 56	79 12	–13 12
औरैया	26 26	79 32	–11 52
औरंगाबाद	24 44	84 22	+07 28
कटारनियां घाट	28 22	81 10	–05 20
कदौरा	26 00	79 50	–10 40
कन्नौज	27 03	79 58	–10 08
कमसिन	25 32	80 56	–06 16
करहल	27 02	78 58	–14 08
कर्वी	25 12	80 54	–06 24
कसिया	26 44	83 56	+05 44
कानपुर	**26 28**	**80 22**	**–08 32**
कांठ	29 01	78 38	–15 28
कादीपुर	26 11	82 24	–00 24
कान्धला	29 20	77 15	–21 00
काम्पिल	27 36	79 16	–12 56
काल्पी	26 06	79 44	–11 04
कासगंज	27 50	78 40	–15 20
कुच्छा	28 06	84 21	+07 24
कुण्डा	25 43	81 30	–04 00
कुराओं	25 00	82 05	–01 40
कुरौली	27 25	79 00	–14 00
कुलपहाड़	25 20	79 40	–11 20
कूँच	26 00	79 08	–13 28

उत्तर प्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सैं.
कैसरगंज	27 20	81 34	–03 44
कैप्टनगंज	26 56	83 43	+04 52
कैमगंज	27 35	79 20	–12 40
कोरा	26 06	80 27	–08 12
कोरियालाघाट	28 20	81 04	–05 44
कोसी	27 50	77 26	–20 16
कौपागंज	26 00	83 34	+04 16
खतौली	29 18	77 43	–19 08
खागा	25 48	81 07	–05 32
खिलचीपुर	24 00	76 34	–23 44
खुर्जा	28 15	77 50	–18 40
खेड़ी	27 55	80 49	–06 44
खैर	27 57	77 50	–18 40
खैरागढ़	26 58	77 53	–18 28
खैराबाद	27 31	80 45	–07 00
गंगोह (सहार.)	29 45	77 16	–20 56
गढ़मुक्तेश्वर	28 49	77 05	–17 40
गरौठा	25 35	79 19	–12 44
गाज़ियाबाद	28 40	77 26	–20 16
गाजीपुर	25 34	83 35	+04 20
गुरसराए	25 38	79 12	–13 12
गुन्नौर	28 15	78 27	–16 12
गुलावठी	28 37	77 48	–18 48
गोण्डा	27 08	82 01	–01 56
गोरखपुर	26 45	83 24	+03 36
गोलागोकर्णनाथ	28 06	80 30	–08 00
गोवर्धन	27 32	77 28	–20 08

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

उत्तर प्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
चकला	25 02	83 12	+ 02 48
चकिया	26 26	85 02	+10 08
चन्दौसी	28 28	78 48	−14 48
चरखाड़ी	25 25	79 46	−10 56
चित्रकूटधाम	25 12	80 52	−06 32
चिरगांव	25 36	78 50	−14 40
चुनार	25 10	82 56	+01 44
चोपां	24 30	83 00	+02 00
छतरपुर	24 56	79 38	−11 28
छपरा	24 39	76 48	−22 48
छाटा	27 45	77 30	−20 00
छितौनी	27 10	83 58	+05 52
जगदीशपुर	25 30	84 26	+07 44
जपिया	24 34	84 00	+06 00
जलालाबाद	27 44	79 40	−11 20
जलेसर	27 29	78 20	−16 36
जसरा	25 17	81 48	−02 48
जसराना	27 15	78 42	−15 12
जसवन्तनगर	26 52	78 56	−14 16
जहांगीराबाद	28 26	78 06	−17 36
जहानाबाद	25 12	84 58	+09 52
जाईस	26 16	81 30	−04 00
जानसठ (मु.)	29 20	77 52	−18 32
जालौन	26 10	79 20	−12 40
जिगनी	25 46	79 26	−12 16
जौनपुर	25 45	82 40	+00 40
झाँसी	25 27	78 37	−15 32
टप्पल	28 04	77 36	−19 36
टाण्डा	28 56	78 59	−14 04
टूण्डला	27 10	78 15	−17 00
ठाकुरद्वारा	29 10	78 50	−14 40
डिबाई	28 12	78 16	−16 56

उत्तर प्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
डेरापुर	26 28	79 48	−10 48
ताजपुर	29 08	78 30	−16 00
दानापुर	25 40	85 02	+10 08
दालमऊ	26 02	81 02	−05 52
दूधी	24 13	83 15	+03 00
देवगांव	25 24	83 01	+02 04
देवबन्द	29 42	77 41	−19 16
देवरिया	26 32	83 45	+05 00
देहरी	24 52	84 11	+06 44
धामपुर	29 19	78 31	−15 56
नगीना	29 27	78 27	−16 12
नजीबाबाद	29 38	78 20	−16 40
नरैनी	25 11	80 29	−08 04
नवाबगंज	28 33	79 38	−11 28
नवाबगंज	26 52	82 08	−01 28
नानपाड़ा	27 52	81 30	−04 00
निहतौर	29 20	78 23	−16 28
नोएडा	28 35	77 20	−20 40
पट्टी	25 55	82 12	−01 12
पदरौना	26 55	83 59	+05 56
पयागपुर	27 25	81 48	02 48
पवायां	28 04	80 06	−09 36
पिलखुआं	28 43	77 39	−19 24
पिहानी	27 38	80 12	−09 12
पीलीभीत	28 38	79 48	−10 48
पुखरायां	26 14	79 51	−10 36
पुरवा	26 28	80 50	−06 40
पूरनपुर	28 31	80 09	−09 24
प्रतापगढ़	25 50	81 59	− 2 04
फतेहपुर	25 56	80 48	−06 48
फतेहपुरसीकरी	27 06	77 40	−19 20
फतेहाबाद	27 01	78 19	−16 44

उत्तर प्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
फरीदनगर	28 46	77 37	−19 32
फरीदपुर	28 13	79 33	−11 48
फर्रूखाबाद	27 24	79 34	−11 44
फिरोज़ाबाद	27 09	78 25	−16 20
फैज़ाबाद	26 47	82 08	−01 28
बक्सर	25 35	83 59	+05 56
बगहा	27 06	84 05	+06 20
बदायूँ	28 02	79 07	−13 32
बनारस (वाराणसी)	25 20	83 00	+02 00
बबीना	25 15	78 28	−16 08
बहराइच	27 35	81 36	−03 36
बहेड़ी	28 47	79 30	−12 00
बरवासागर	25 23	78 44	−15 04
बलिया	25 45	84 10	+06 40
बरेली	28 21	79 25	−12 20
बलरामपुर	27 26	82 11	−01 16
बस्ती	26 48	82 43	+00 52
बागपत	28 57	77 13	−21 08
बाड़ी	26 39	77 36	−19 36
बान्दा	25 29	80 20	−08 40
बाराबंकी	26 55	81 12	−05 12
बांसी	27 11	82 56	+01 44
बाह	26 53	78 36	−15 36
बिजनौर	29 22	78 08	−17 28
बिलग्राम	27 11	80 02	−09 52
बिलसी	28 08	78 55	−14 20
बिलारी	28 38	78 48	−14 48
बिलासपुर	28 53	79 16	−12 56
बीसलपुर	28 18	79 48	−10 48
बुलन्दशहर	28 24	77 51	−18 36
बुढ़ाना	29 17	77 28	−20 08
भदोही	25 25	82 34	+00 16

उत्तर प्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
भरथाना	26 45	79 14	−13 04
भाण्डेर	25 44	78 45	−15 00
भोनगांव	27 15	79 11	−13 16
भोवाली	29 23	79 31	−11 56
मन्दावर	29 30	78 08	−17 28
मऊ	25 17	81 23	−04 28
मऊ-ऐम्मा	25 42	81 55	−02 20
मऊनाथभंजन	25 57	83 33	+04 12
मऊरानीपुर	25 15	79 08	−13 28
मखदूमनगर	26 28	82 46	+01 04
मछलीशहर	25 41	82 25	−00 20
मथुरा	27 30	77 41	−19 16
मवाना	29 06	77 55	−18 20
मलीहाबाद	26 55	80 43	−07 08
महमूदाबाद	27 18	81 07	−05 32
महरौली	24 35	78 43	−15 08
महाराजगंज	26 07	84 29	+07 56
महाराजगंज	27 09	83 34	+04 16
महोवा	25 17	79 52	−10 32
मिर्ज़ापुर	25 09	82 35	+00 20
मिसरिख	27 27	80 31	−07 56
मुंगराबादशाहपुर	25 40	82 11	−00 16
मुज़फ्फरनगर	29 28	77 41	−19 16
मुगलसराय	25 18	83 07	+02 28
मुबारकपुर	26 05	83 18	+03 12
मुरादाबाद	28 51	78 49	−14 44
मुरादनगर (गा.)	28 47	77 30	−20 00
मुस्किरा	25 40	79 48	−10 48
मुहम्मदी	27 57	80 13	−09 08
मेरठ	28 59	77 42	−19 12
मेहनगर	25 53	83 07	+02 28
मेहन्दाबाल	26 59	83 07	+02 28

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

उत्तर प्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
मैनपुरी	27 14	79 01	−13 56
मैलानी	28 17	80 21	−08 36
राजाखेड़ा	26 55	78 11	−17 16
राबर्ट्सगंज	24 42	83 04	+02 16
रामनगर	25 17	83 02	+02 08
रायबरेली	26 13	81 14	−05 04
रूदौली	26 45	81 45	−03 00
लखनऊ	26 51	80 55	−06 20
लखीमपुर	27 57	80 46	−06 56
ललितपुर	24 41	78 25	−16 20
शाहजहाँपुर	27 53	79 55	−10 20
शिकोहाबाद	27 06	78 36	−15 36
सम्भल	28 35	78 33	−15 48
सरधना	29 09	77 37	−19 32
सहसवां	28 05	78 45	−15 00
सहारनपुर	29 58	77 33	−19 48
सहानीकलां	28 41	77 25	−20 20
सहानीखुर्द	28 42	77 25	−20 20
सिंगरामऊ	25 57	82 23	−00 28
सिधौली	27 17	80 50	−06 40
सिरसागंज	27 03	78 42	−15 12
सीतापुर	27 34	80 41	−07 16
सुल्तानपुर	26 16	82 04	−01 44
सेमरिया	24 16	79 54	−10 24
सैदपुर	25 33	83 11	+02 44
सोनवां	27 40	81 45	−03 00
हमीरपुर	25 57	80 09	−09 24
हरदोई	27 25	80 07	−09 32
हरैया	26 47	82 36	+00 24
हलिया	24 48	82 20	−00 40
हसनपुर	28 43	78 17	−16 52

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
हाजीपुर	25 41	85 13	+10 52
हाथरस	27 36	78 03	−17 48
हापुड़	28 43	77 47	−18 52
नवाबगंज	28 33	79 38	−11 28
उत्तराखण्ड			
अल्मोड़ा	29 37	79 40	−11 20
आमपाटा	30 17	78 37	−15 32
आदिब्रद्री	30 10	79 12	−13 12
उत्तरकाशी	30 44	78 27	−16 12
उखीमठ	30 31	79 07	−13 32
ऋषिकेश	30 07	78 18	−15 12
कर्णप्रयाग	30 15	79 16	−12 56
कपकोट	29 58	79 54	−10 54
काठगोदाम	29 16	79 32	−11 52
काशीपुर	29 13	78 57	−14 12
काण्डी	29 56	78 25	−16 20
केदारनाथ	30 44	79 04	−13 44
केनूर	30 03	79 01	−13 56
कोटद्वार	29 45	78 32	−15 52
खानपुर	29 36	78 07	−17 32
खाती	30 08	79 54	−10 54
गरजिया	29 29	79 06	−13 36
गंगनाणी	30 55	78 42	−15 12
गंगोत्तरी	30 39	79 02	−13 52
गंगापुर	26 30	76 44	−23 04
गिरगांव	30 02	80 07	−09 32
घरमघर	29 52	80 01	−09 56
घनस्याली	30 27	78 13	−17 08
चकराता (देह.)	30 42	77 51	−18 36
चम्पा	30 18	78 25	−16 20

उत्तराखण्ड के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
चमौली	30 24	79 21	−12 36
चन्दौसी	28 27	78 46	−14 56
चम्पावत	29 20	80 06	−09 36
चुरानी	29 47	78 55	−14 20
जमनोत्री	31 01	78 27	−16 12
जोशीमठ	30 34	79 34	−11 44
टनकपुर	29 02	80 08	−09 28
टिहरी	30 32	78 31	−15 56
डांगचौरा	30 17	78 19	−15 32
डाण्डा	29 10	79 55	−10 20
डीडीहाट	29 48	80 12	−09 12
डोईवाला	30 12	78 06	−17 36
तेजम	29 56	80 10	−09 20
देहरादून	30 19	78 02	−17 52
देवप्रयाग	30 09	78 37	−15 32
धनोलटी	30 25	78 19	−16 44
नरेन्द्रनगर	30 10	78 18	−16 48
नन्द्रप्रयाग	30 19	79 24	−12 24
नैनीताल	29 23	79 27	−12 12
पिन्सवार	30 38	78 42	−15 12
पिथौरागढ़	29 35	80 13	−09 08
पीपलकोटी	30 26	79 27	−12 12
पौड़ीगढ़वाल	30 09	78 47	−14 52
बद्रीनाथ	30 44	79 29	−12 04
भगवानपुर	29 59	77 56	−18 16
भटवाड़ी	30 49	78 36	−15 36
मनेरी	30 41	78 30	−16 00
मंसूरी	30 27	78 05	−17 40
मोलनेऊँ	30 22	78 36	−15 36
रालम	30 16	80 12	−09 12
रानीखेत	29 39	79 25	−12 20

उत्तराखण्ड के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
राजगढ़ी	30 52	78 49	−14 44
रामनगर	29 24	79 07	−13 32
राजपुर	30 25	78 06	−17 36
रामपुर	28 49	79 02	−13 52
रायपुर	30 19	78 06	−17 36
रूद्रपुर	30 26	77 59	−18 04
रूद्रप्रयाग	30 16	78 59	−14 04
रूड़की	29 52	77 53	−18 28
लक्सर	29 49	78 02	−17 52
लम्बगाँव	30 29	78 31	−15 56
लालकुआं	29 06	79 32	−11 52
लालढाग	29 50	78 19	−16 44
लिसकोट	29 46	79 01	−13 56
लैंसडाऊन	29 50	78 41	−15 16
विकासनगर	30 29	77 50	−18 40
श्रीनगर (गढ़वा)	30 13	78 47	−14 52
सहसपुर (देह.)	30 24	77 58	−18 08
हरिद्वार	29 58	78 10	−17 20
हरकीदून	30 58	78 24	−16 24
हल्द्वानी	29 13	79 31	−11 56
कर्नाटक			
बैंगलुरु	12 59	77 35	−19 40
गुलबर्गा	17 20	76 50	−22 40
मैसूर	12 18	76 39	−23 24
हुबली	15 20	75 14	−29 04
केरला			
कोचीन	09 58	76 14	−25 04
त्रिवन्तपुरम्	12 40	76 55	−22 20
कन्नूर	11 52	75 25	−28 20
त्रिवेन्द्रम	08 29	76 57	−22 12

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

गुजरात

गुजरात के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
अंकलेश्वर	21 36	73 00	−38 00
अंजार	23 08	70 01	−49 56
अमरापुर	21 45	70 02	−49 52
अमरेली	21 37	71 14	−45 04
अमोद	21 59	72 54	−38 24
अहमदाबाद	23 02	72 40	−39 20
आनन्द	22 34	72 56	−38 16
आनन्दपुर	22 10	71 08	−45 28
ईडर	23 50	73 00	−38 00
उपलेटा	21 44	70 17	−48 52
ओलपाड़	21 20	72 49	−38 44
कच्छ (भुज)	22 50	70 25	−48 20
कटाना	22 18	72 49	−38 44
कलोल(महेसाणा)	23 15	72 29	−40 04
कांडला	23 03	70 11	−49 16
कुटियाना	21 39	71 04	−45 44
कोरल	21 53	73 10	−37 20
खम्भात	22 20	72 38	−39 28
खम्भालिया	22 12	69 39	−51 24
खावड़ा	23 51	69 43	−51 08
गोधरा	22 45	73 38	−35 28
जखाऊ	23 13	68 43	−55 08
जसदान	22 02	71 12	−45 12
जाफराबाद	20 52	71 22	−44 32
जामनगर	22 28	70 04	−49 44
जारोद	22 26	73 20	−36 40
जूनागढ़	21 31	70 28	−48 08
जेतपुर	21 44	70 37	−47 32
जोड़िया	22 42	70 18	−48 48

गुजरात के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
झिंझूवाड़ा	23 30	71 38	−43 28
डीसा	24 15	72 10	−41 20
ढोला	20 51	71 48	−42 48
तनखला	21 57	72 50	−38 40
तालाला(जूना.)	21 02	70 32	−47 48
तालाजा	21 21	72 03	−41 48
थराड़	24 24	71 38	−43 28
दभोई	22 11	73 26	−36 16
दासदा	23 19	71 50	−42 40
देहज	21 42	72 35	−39 40
देवदार	24 07	71 50	−42 40
दोहाद	22 47	74 18	−32 48
द्वारिका	22 14	68 58	−54 08
धर्मपुर	20 32	73 11	−37 16
धारी	21 20	71 01	−45 56
धुले	20 54	74 47	−30 52
धोराजी	21 44	70 27	−48 12
नडियाद	22 41	72 55	−38 20
नवसारी	20 51	72 55	−38 20
नारा	23 39	69 10	−53 20
नालिया	23 18	68 50	−54 40
पड़ाना	22 21	69 52	−50 16
पाटन	23 50	72 07	−41 16
पाटरी	23 08	71 10	−45 20
पालनपुर	24 10	72 26	−40 16
पोरबन्दर	21 38	69 36	−51 36
बगासरा	20 58	70 56	−46 16
बजाना	23 04	71 45	−43 00
बड़ोदा	22 18	73 12	−37 12

गुजरात के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
बरूच	21 38	72 56	−38 16
बुलसार	20 38	72 56	−38 16
बोताड़	22 10	71 40	−43 20
भंगोर	22 02	69 55	−50 20
भरूच	21 40	72 58	−38 08
भावनगर	21 46	72 09	−41 24
भुज	23 16	69 40	−51 20
महेसाणा	23 37	72 28	−40 08
महुआ	21 05	71 48	−42 48
माधवपुर	21 18	70 01	−49 56
मालसार	22 00	73 22	−36 32
रतनपुर	21 44	73 16	−36 56
राजकोट	22 18	70 47	−46 52
रापार	23 34	70 38	−47 28
लखपत	23 49	68 47	−54 52
लूनावाड़ा	23 08	73 37	−35 32
वड़ोदरा	22 18	73 12	−37 12
वलसाड़	20 40	72 55	−38 20
वादनगर	23 47	72 38	−39 28
वीजापुर	23 34	72 45	−39 00
सुरेन्द्रनगर	22 42	71 41	−43 16
सूरत	21 10	72 50	−38 40
सिहोर	21 42	71 58	−42 08
सोनगढ़	20 59	70 29	−48 04
सोमनाथ	21 00	70 30	−48 00
हडोल	23 55	73 13	−37 08
हिम्मतनगर	23 36	72 57	−38 12
गोवा			
पंजिम	15 29	73 50	−34 40
मडगांव	15 18	73 57	−34 12

जम्मू-कश्मीर

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
अनन्तनाग	33 43	75 12	−29 12
अखनूर	32 54	74 45	−31 00
अवन्तीपुरा	33 56	75 03	−29 48
अमरनाथगुफा	34 13	75 33	−27 48
उड़ी	34 04	74 02	−33 52
ऊधमपुर	32 56	75 08	−29 28
कठुआ	32 22	75 31	−27 56
कटरा	33 01	74 58	−30 08
कारगिल	34 30	76 13	−25 08
किश्तवाड़	33 19	75 48	−26 48
कुलगाम	33 42	75 02	−29 52
केरन	34 40	73 59	−34 04
कोटली	33 30	73 53	−34 12
खयालू	35 10	76 20	−24 40
गिलगित	35 55	74 22	−32 32
गुलमर्ग	34 05	74 25	−32 20
गुरयास	34 38	74 56	−30 16
चिनेनी	33 01	75 20	−28 40
चिलास	35 27	74 06	−33 36
चुशूल	33 35	78 39	−15 24
छम्ब	32 51	74 23	−32 28
जम्मू	32 43	74 54	−30 24
जंगला	33 40	77 00	−22 00
जास्कार	33 20	77 00	−22 00
डोडा	33 10	75 35	−27 40
द्रास	34 22	75 50	−26 40

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

जम्मू-कश्मीर के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
नवांशहर	32 30	74 46	−30 56
नागिर	36 17	74 45	−31 00
नौशेहरा	33 11	74 17	−32 52
पहलगांव	34 01	75 24	−28 24
परिपंजाल	33 36	74 22	−22 32
पुंछ	33 51	74 08	−33 28
बनिहाल	33 32	75 19	−28 44
बटोटी	33 06	75 19	−28 44
बटोत	33 06	75 19	−28 44
बड़गाम	34 00	74 44	−31 04
बसौली	32 30	75 49	−26 24
बारामूला	34 10	74 20	−32 40
भद्रवाह	32 59	75 43	−27 08
मनावर	32 50	74 25	−32 20
मार्तण्ड	33 48	75 18	−28 48
मुज़फ्फराबाद	34 22	73 31	−35 56
रामनगर	32 50	75 22	−28 32
राजौरी	33 23	74 18	−32 48
रामबन.	33 14	75 15	−29 00
रियासी	33 04	74 53	−30 28
लद्दाख (रेंज)	32 00	80 00	−10 00
वैष्णोदेवी	33 03	74 56	−30 16
शेरकिला	36 05	74 04	−33 44
श्रीनगर	34 06	74 51	−30 36
सोपूर	34 19	74 30	−32 00
सोनामर्ग	34 19	75 20	−28 40
सोन्दर	33 29	75 57	−26 12
सुन्दरबनी	33 02	74 29	−32 04
लद्दाख (रेंज)	32 00	80 00	−10 00
झारखण्ड			
जमशेदपुर	22 50	86 10	+14 40
राँची	23 23	85 23	+11 32

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
तामिलनाडू			
चेन्नई	13 05	80 17	−08 52
कांचीपुरम्	12 50	79 44	−11 04
मदुरै	9 58	78 10	−17 20
रामेश्वरम्	09 17	79 22	−12 32
तेलंगाना			
करनूल	15 50	78 03	−17 48
हैदराबाद	17 24	78 30	−16 00
त्रिपुरा			
अगरतला	23 49	91 18	+35 12
दादर-नगर-हवेली			
सिल्वासा	20 17	73 00	−38 00
डमन एण्ड डियू			
डामन	20 25	72 51	−38 36
डियू (Diu)	20 42	70 59	−46 04
दिल्ली			
पु. दिल्ली	28 39	77 12	−21 12
शाहदरा	28 40	77 19	−20 44
न्यू दिल्ली	28 40	77 13	−21 08
नागालैण्ड			
कोहिमा	25 41	94 07	+46 28
प. बंगाल			
आसनसोल	23 42	87 01	+18 04
कोलकाता	22 34	88 24	+23 36
दार्जिलिंग	27 03	88 18	+23 12
पुरुलिया	23 20	86 24	+15 36
दुर्गापुर	23 30	87 20	+19 20
सिलीगुड़ी	26 42	88 26	+23 44
हावड़ा	22 25	88 20	+23 20

पंजाब के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
पंजाब			
अमृतसर	31 37	74 55	−30 20
अजनाला	31 51	74 48	−30 48
अटारी	31 37	74 36	−31 36
अमलोह	30 37	76 15	−25 00
अहमदगढ़	30 41	75 51	−26 36
अबोहर	30 09	74 11	−33 16
अकालगढ़	29 50	75 54	−26 24
अमरगढ़	30 28	76 01	−25 56
अलावलपुर	31 26	75 39	−27 24
आनन्दपुर सा.	31 15	76 32	−23 52
आदमपुर	31 25	75 43	−27 08
उरमर-टाण्डा	31 40	75 41	−27 16
कपूरथला	31 23	75 25	−28 20
करतारपुर	31 27	75 30	−28 00
कादियां	31 49	75 23	−28 28
कीतरपुर साहिब	31 11	76 34	−23 44
कुराली	30 50	76 35	−23 40
कोटकपूरा	30 34	74 52	−30 32
खन्ना	30 42	76 13	−25 08
खरड़	30 45	76 38	−23 28
खेमकरण	31 08	74 35	−31 40
गड़दीवाल	31 44	75 45	−27 00
गढ़शंकर	31 13	76 08	−25 28
गिद्दड़बाहा	30-12	74-40	−31 20
गुरदासपुर	32 02	75 27	−28 12
गुरुहरसहाय	30 43	74 25	−32 20
गोईन्दवाल सा.	31 22	75 08	−29 28
गोराया	31 06	75 47	−26 52
गोबिन्दगढ़ मण्डी	30 41	76 18	−24 28
घनौर	30 21	76 37	−23 32

पंजाब के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
चमकौर साहि.	30 55	76 24	−24 24
छहरटा	31 16	74 53	−30 28
जगरांव	30 48	75 30	−28 00
जलालाबाद	30 37	74 15	−33 00
जण्डियालागुरु	31 34	75 01	−29 56
जाखल	29 48	75 41	−26 36
जालन्धर	31 19	75 34	−27 44
जालन्धर कैंट	31 20	75 26	−28 16
जीरा	30 57	74 59	−30 04
जैतों	30 28	74 53	−30 28
जैजों	31 21	76 09	−25 24
डबवाली मण्डी	29 59	74 42	−31 12
ढिलवां	31 25	75 19	−28 44
तपा मण्डी	30 19	75 21	−28 36
तरनतारन	31 28	74 58	−30 08
तलवाड़ा	31 56	75 54	−26 24
तलवंडी साबो	29 59	74 59	−30 04
दतारपुर	31 53	75 45	−27 00
दसूहा	31 49	75 38	−27 28
दमदमा साहिब	30 50	76 04	−25 44
दीनानगर	32 08	75 28	−28 08
दोराहा मण्डी	30 49	76 01	−25 56
दौलतपुर	31 58	75 38	−27 28
धर्मकोट	30 53	75 14	−29 04
धारीवाल	31 57	75 19	−28 44
धूरी	30 22	75 52	−26 32
नकोदर	31 07	75 29	−28 04
नवांशहर	31 07	76 08	−25 28
नंगल	31 23	76 23	−24 28
नाभा	30 25	76 09	−25 24
नूरमहल	31 01	75 22	−28 32
नूरपुर बेदी	31 09	76 29	−24 04

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

पंजाब के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
पटियाला	30 20	76 25	−24 20
पट्टी	31 17	74 51	−30 36
पठानकोट	32 17	75 42	−27 12
फरीदकोट	30 40	74 45	−31 00
फगवाड़ा	31 14	75 46	−26 56
फतेहगढ़ सा.	30 39	76 22	−24 32
फतेहगढ़	31 03	75 03	−29 48
फाज़िल्का	30 24	74 04	−33 44
फिल्लौर	31 01	75 48	−26 48
फिरोजपुर	30 55	74 40	−31 20
बरनाला	30 23	75 33	−27 48
बनूड़ (मोहाली)	30 34	76 43	−23 08
बस्सी	30 35	76 50	−22 40
बसी-पठाना	30 40	76 23	−24 28
बटाला	31 48	75 12	−29 12
बंगा	31 11	75 59	−26 04
बलाचौर	31 03	76 19	−24 44
बाबा बकाला	31 33	75 15	−29 00
बिलगा	31 02	75 26	−28 16
बुढलाडा	29 56	75 34	−27 44
बेला	30 56	76 24	−24 24
ब्यास	31 32	75 18	−28 48
भटिण्डा	30 11	75 00	−30 00
भवानीगढ़	30 16	76 01	−25 56
भुलत्थ	31 32	75 32	−27 32
भुच्चो (मण्डी)	30 13	75 06	−29 36
भोगपुर	31 33	75 38	−27 28
मजीठा	31 46	74 57	−30 12
मलोट	30 13	74 29	−32 04
मलेरकोटला	30 31	75 53	−26 28
मलकाणा	29 56	75 03	−29 48
मुकेरिया	31 57	75 37	−27 32

पंजाब के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
मुबारिकपुर	30 37	76 51	−22 36
मुक्तसर	30 29	74 31	−31 56
मोगा	30 48	75 10	−29 20
मोरांवली	31 18	76 01	−25 56
मोरिण्डा	30 48	76 30	−24 00
मोहाली	30 42	76 42	−23 12
राजपुरा	30 29	76 36	−23 36
रामपुरा फूल	30 17	75 14	−29 04
रायकोट	30 41	75 36	−27 36
राहों	31 03	76 07	−25 32
रोपड़ (रूपनगर)	30 57	76 32	−23 52
लुधियाना	30 55	75 54	−26 24
लोहियांखास	31 08	75 28	−28 04
शाहकोट	31 03	75 19	−28 44
शाहपुर	32 17	75 46	−26 56
संगरूर	30 12	75 53	−26 28
सरहिन्द	30 38	76 23	−24 28
समराला	30 51	76 11	−25 16
सनौर	30 18	76 30	−24 00
समाना	30 09	76 12	−25 12
सुजानपुर	32 19	75 26	−28 16
सुल्तानपुर लोधी	31 13	75 11	−29 16
सुनाम	30 08	75 48	−26 48
सोहाणां	30 42	76 42	−23 12
हमीरा	31 27	75 19	−28 44
हरयाणा	31 36	75 48	−26 48
हरीके पत्तन	31 30	74 57	−30 12
हाजीपुर टा.	31 59	75 45	−27 00
होशियारपुर	31 32	75 57	−26 12
पाण्डिच्चेरी			
पांडिचेरी	11 56	79 53	−10 28
महे (Mahe)	11 42	75 32	−27 52

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
बिहार			
गया	24 49	85 01	+10 04
छपरा	25 47	84 45	+09 00
दरभंगा	26 10	85 57	+13 48
सीतामढ़ी	26 35	85 32	+12 08
सीवां	26 12	84 23	+07 32
पटना	25 37	85 10	+10 40
झरिया	23 50	86 24	+15 36
समस्तीपुर	25 55	85 50	+13 20
धनबाद	23 47	86 30	+16 00
बांकीपुर	25 40	85 12	+10 48
बेगुसराय	25 25	86 08	+14 32
भागलपुर	25 15	87 00	+18 00
मधुबनी	26 22	86 05	+14 20
मणिपुर			
इम्फाल	24 46	93 58	+45 52
मध्यप्रदेश			
अगर	23 42	76 01	−25 56
अजयगढ़	24 53	80 13	−09 08
अंजद	22 02	75 03	−29 48
अमरकंटक	22 40	81 45	−03 00
अमला	21 56	78 07	−17 32
अम्बाह	26 43	78 14	−17 04
अन्नूपुर	22 40	81 48	−05 18
अलिराजपुर	22 19	74 21	−32 36
अशोकनगर	24 34	77 43	−19 08
इच्छापुर	21 05	76 09	−25 24
इच्छावर	23 01	77 01	−21 56
इटारसी	22 37	77 45	−19 00
इटावा	24 05	78 12	−17 12
इन्दौर	22 43	75 50	−26 40
इन्द्रगढ़	25 56	78 35	−15 40
उज्जैन	23 11	75 46	−26 56
उमरी	26 33	79 00	−14 00

मध्यप्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
उमरिया	23 32	80 50	−06 40
उमरिया (बा.गढ़)	23 48	80 56	−06 16
ओरछा	25 21	78 39	−15 24
कटंगी	21 44	79 48	−10 48
कटनी	23 51	80 24	−08 24
कुकशी	22 12	74 45	−31 00
कोठी	24 45	80 45	−07 00
कोरवई	24 08	78 03	−17 48
क्षिप्रा	22 54	78 00	−26 00
खजुराहो	24 50	79 58	−10 08
खण्डवा	21 50	76 20	−24 40
खरगोन	21 49	75 36	−27 36
खेतिया	21 40	74 35	−31 40
खुरई	24 03	78 19	−16 44
गादरवाड़ा	22 55	78 47	−14 52
गुना	24 39	77 19	−20 44
गोहद	26 26	78 27	−16 12
ग्वालियर	26 13	78 10	−17 20
चन्दला	25 05	80 12	−09 12
चन्देरी	24 43	78 08	−17 28
चाचोरा	24 10	76 59	−22 04
चापरा	22 44	76 20	−24 40
छतरपुर	24 55	79 36	−11 36
छिन्दवाड़ा	22 04	78 56	−14 16
छोटा छिन्दवाड़ा	23 03	79 29	−12 04
जबलपुर	23 10	79 57	−10 12
जऔरा	28 38	75 08	−29 28
जावद	24 38	74 52	−30 32
झाबुआ	22 46	74 36	−31 36
टीकमगढ़	24 46	78 53	−14 28
तिरोदी	21 41	79 42	−11 12
दतिया	25 40	78 28	−16 08
दमोह	23 50	79 27	−12 12

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

मध्यप्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
दिन्दोरी	22 57	81 05	−05 40
धार	22 36	75 18	−28 48
नयागाँव	25 54	77 10	−21 20
नरसिंहपुर	22 57	79 12	−13 12
नीमच	24 28	74 52	−30 32
नैनपुर	22 26	80 07	−09 32
पंचमढ़ी	22 30	78 26	−16 16
पठारिया	23 54	79 12	−13 12
पन्ना	24 43	80 12	−09 12
पाटन	23 18	79 42	−11 12
पांधुरना	21 36	78 31	−15 56
पिचोर	25 11	78 11	−17 16
पिछोर (ग्वा.)	25 58	78 24	−16 24
पिपारिया	22 45	78 21	−16 36
प्रतापगढ़	24 02	74 47	−30 52
बन्दा	24 03	78 57	−14 12
बरनगर	23 03	75 22	−28 32
बरवाह	22 16	76 03	−25 48
बालाघाट	21 48	80 11	−09 16
बासोदा	23 51	77 56	−18 16
बान्धवगढ़	23 53	79 05	−13 40
बिच्छिया	22 27	80 42	−07 12
बिजावर	24 38	79 30	−12 00
बीना (इटावा)	24 11	78 11	−17 16
बुरहानपुर	21 18	76 14	−25 04
बैतूल	21 55	77 54	−18 24
भिण्ड	26 34	78 48	−14 48
भोपाल	23 16	77 24	−20 24
मऊगंज	24 41	81 53	−02 28
मकराई	22 04	77 06	−21 36
मण्डला	22 36	80 23	−08 28
मनावर	22 14	75 05	−29 40

मध्यप्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
मन्दसौर	24 04	75 04	−29 44
महाराजपुर	25 01	79 44	−11 04
महेश्वर	22 11	75 35	−27 40
मानपुर	23 46	81 08	−05 28
मुरैना	26 30	78 09	−17 24
मुलतई	21 46	78 15	−17 00
मैहर	24 16	80 45	−07 00
रतलाम	23 19	75 04	−29 44
राजगढ़	23 56	76 58	−22 08
राजपुर	25 23	81 09	−05 24
रामनगर	22 13	80 47	−06 52
रामपुरा	24 28	75 26	−28 16
रायसेन	23 20	77 48	−18 48
राहतगढ़	23 47	78 22	−16 32
रीवा	24 32	81 18	−04 48
रेहली	23 38	79 05	−13 40
लखनादोन	22 36	79 36	−11 36
लखेड़ी	25 40	76 10	−25 20
लामटा	22 08	80 07	−09 32
विदिशा	23 32	77 49	−18 44
वैधन	24 04	82 20	−00 40
शहडोल	23 20	81 21	−04 36
शाजापुर	23 26	76 16	−24 56
शाहपुरा	23 11	80 42	−07 12
शिवपुरी	25 26	77 39	−19 24
श्योपुर	25 40	76 42	−23 12
सतना	24 35	80 50	−06 40
सनावद	22 11	76 04	−25 44
सबलगढ़	26 15	77 24	−20 24
सरदारपुर	22 39	74 59	−30 04
सागर	23 50	78 43	−15 08
सांची	23 29	77 44	−19 04
सारंगपुर	23 34	76 28	−24 08

मध्यप्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
सिरोंज	24 06	77 42	−19 12
सिहोरा	23 29	80 07	−09 32
सिहोर	23 12	77 05	−21 40
सीधी	24 25	81 53	−02 28
सेओनी	22 05	79 32	−11 52
सेओनीमालवा	22 27	77 28	−20 08
सेंधवा	21 41	75 06	−29 36
सोहागपुर	22 42	78 12	−17 12
हट्टा	24 07	79 36	−11 36
हरदा	22 20	77 06	−21 36
होशंगाबाद	22 45	77 44	−19 04
छत्तीसगढ़			
अम्बिकापुर	23 07	83 12	+02 48
आरंग	21 12	81 58	−02 08
कवर्धा	22 00	81 15	−05 00
कांकेर	20 17	81 29	−04 04
काठघोरा	22 30	82 33	+00 12
कुतरू	19 05	80 48	−06 48
कुरसेकोडी	20 12	80 48	−06 48
कोईसारी	23 57	81 45	−03 00
कोंगूर	19 53	81 27	−04 12
कोण्डागांव	19 36	81 40	−03 20
कोरबा	22 21	82 41	+00 44
जगदलपुर	19 04	82 02	−01 52
जशपुरनगर	22 54	84 09	+06 36
दन्तेवाड़ा	18 54	81 21	−04 36
दुर्ग	21 11	81 17	−04 52
धमतरी	20 41	81 34	−03 44
धर्मजयगढ़	22 28	83 13	+02 52
धर्मावरम	18 16	80 55	−06 20
नवापाड़ा	20 58	81 53	−02 28
पण्डारिया	22 14	81 25	−04 20

३६गढ़ के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
परताबपुर	23 29	83 13	+02 52
बलोदाबाज़ार	21 40	82 10	−01 20
बस्तर	19 12	81 57	−02 12
बिलासपुर	22 05	82 09	−01 24
बैकुण्ठपुर	23 15	82 33	+00 12
भरतपुर	23 44	81 45	−03 00
भाटपाड़ा	21 44	81 56	−02 16
भिलाई	21 13	81 26	−04 16
महासमुन्द	21 06	82 06	−01 36
राजनान्दगांव	21 06	81 02	−05 52
रामानुजगंज	23 48	83 42	+04 48
रायगढ़	21 55	83 26	+03 44
रायपुर	21 14	81 38	−03 28
सक्ति	22 02	82 58	+01 52
सारनगढ़	21 36	83 05	+02 20
सेओरी नारायण	21 44	82 35	+00 20
महाराष्ट्र			
अकलकोट	17 32	76 13	−25 08
अकोला (मुम्ब.)	20 44	77 00	−22 00
अकोट	21 11	77 04	−21 44
अचलपुर	21 16	77 31	−19 56
अमरावती	20 56	77 45	−19 00
अम्बजोगई	18 44	76 23	−24 28
अरमोरी	20 28	79 59	−10 04
अरवी	20 59	78 14	−17 04
अलीपुर	20 34	78 41	−15 16
अलीबाग	18 39	72 54	−38 24
अहमदनगर	19 05	74 44	−31 04
इगतपुरी	19 42	73 33	−35 48
उमरेड़	20 51	79 20	−12 40
उल्हासनगर	19 13	73 07	−37 32
एलोरा	20 01	75 10	−29 20

भारत के प्रमुख नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

महाराष्ट्र के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
ओस्मानाबाद	18 10	76 02	—25 52
औरंगाबाद	19 53	75 20	—28 40
कतोल	21 16	78 35	—15 40
कराड़	17 17	74 12	—33 12
कल्याण	19 15	73 09	—37 24
कामथी	21 14	79 12	—13 12
किरकी	18 34	73 52	—34 32
कुरदुवाड़ी	18 05	75 26	—28 16
कोपारगांव	19 53	74 29	—32 04
कोल्हापुर	16 42	74 13	—33 08
खमगांव	20 41	76 34	—23 44
खेड़ (रत्नागिरी)	17 43	73 23	—36 28
गंगापुर	19 41	75 01	—29 56
गोंडिया(मुम्बई)	21 27	80 12	—09 12
घाटकोपर (मुम्बई)	19 05	72 54	—38 24
चन्द्रापुर	19 57	79 18	—12 48
चालिसगांव	20 28	75 01	—29 56
चिखली	20 21	76 15	—25 00
चिपलून	17 32	73 31	—35 56
चोपड़ा	21 15	75 18	—28 48
जलगांव	21 01	75 34	—27 44
जलगांव (अकोला)	21 03	76 32	—23 52
जालना	19 50	75 53	—26 28
जुन्नार	19 12	73 53	—34 28
तालोडा	21 34	74 13	—33 08
तासगांव	17 02	74 36	—31 36
तुमसार	21 23	79 44	—11 04
थाने	19 12	72 58	—38 08
दरवाहा	20 19	77 46	—18 56
दिगरस	20 06	77 43	—19 08
दिगलूर	18 33	77 36	—19 36
देयूलगावराजा	20 01	76 02	—25 52
देवलाली	19 57	73 50	—34 40

महाराष्ट्र के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
धुलिया	20 54	74 47	—30 52
नन्दगांव	20 19	74 39	—31 24
नागपुर	21 09	79 06	—13 36
नान्देड़	19 09	77 20	—20 40
नासिक	19 59	73 48	—34 48
पंढरपुर	17 40	75 20	—28 40
पनवेल	18 59	73 06	—37 36
पाचोरा	20 40	75 21	—28 36
पाटन(महेसाणा)	23 50	72 07	—41 32
पातुर	20 27	76 56	—22 16
पुणे	18 32	73 52	—34 44
पुसाद	19 54	77 35	—19 40
पुलगांव	20 44	78 20	—16 40
बडनेरा	20 52	77 44	—19 04
बारसी	18 14	75 42	—27 12
बारामती	18 09	74 35	—21 40
बालापुर	20 40	76 46	—22 56
बासमत	19 19	77 10	—21 20
बीड़	18 59	75 46	—26 56
भण्डारा	21 10	79 39	—11 24
भिवंडी	19 18	73 04	—37 44
भुसावल	21 03	75 46	—26 56
भोकरदान	20 16	75 46	—26 56
मंगलवेढ़ा	17 31	75 28	—28 08
मनमाड़	20 15	74 27	—32 12
मनवात	19 18	76 30	—24 00
मल्कापुर(बुल्डाना)	20 53	76 12	—25 12
महाद	18 05	73 25	—36 20
महाबलेश्वर	17 55	73 40	—35 20
मालवान	16 04	73 28	—36 08
मालेगांव (ना.)	20 33	74 32	—31 52
मिराज	16 50	74 38	—31 28
मुम्बई	18 58	72 50	—38 40

महाराष्ट्र के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
मुम्ब्रा (थाना)	19 10	73 03	—37 48
मुरुद	18 19	72 58	—38 08
मुर्तजापुर	20 44	77 23	—20 28
मुल	20 04	79 40	—11 20
मेहेकर	20 09	76 34	—23 44
यवतमाल	20 24	78 08	—17 28
रत्नागिरि	16 59	73 18	—36 48
रहिमतपुर	17 36	74 12	—33 12
रामटेक	21 24	79 20	—12 40
लाटूर	18 24	76 34	—23 44
वर्धा	20 45	78 37	—15 32
वसाई	19 21	72 48	—38 48
वाशिम	20 06	77 09	—21 24
वाशी	19 13	73 10	—37 20
वाई	17 56	73 54	—34 24
वैजापुर	19 55	74 44	—31 12
शहादा	21 28	74 18	—32 48
शिरपुर	21 21	74 53	—30 28
शेगांव	20 47	76 41	—23 16
शोलापुर	17 41	75 55	—26 20
श्रीवर्धन	18 02	73 01	—37 56
सकोली	21 05	79 59	—10 04
संगोला	17 26	75 12	—29 12
सतना	20 35	74 12	—33 12
सतारा	17 41	73 59	—34 04
सांगली	16 52	74 34	—31 44
सावन्तवाड़ी	15 54	73 49	—34 44
सिन्नार	19 51	74 00	—34 00
हरनाई	17 48	73 06	—37 36
हिंगनघाट	20 34	78 52	—14 32
हिंगोली	19 43	77 09	—21 24
मिज़ोरम			
ऐज़वाल	23 43	92 44	+40 56

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
मेघालय			
शिलांग	25 34	91 56	+37 44
राजस्थान			
अजमेर	26 27	74 42	—31 12
अनूपगढ़	29 07	73 06	—37 36
अलवर	27 34	76 38	—23 28
असोप	26 48	73 44	—35 04
अलीगढ़	25 58	76 07	—25 30
अमेट	25 20	73 59	—34 04
आबू	24 40	72 45	—39 00
आमेर	26 59	75 52	—26 32
उदयपुर	24 35	73 41	—35 16
एकलिंगजी	24 44	73 46	—34 56
करौली	26 30	77 01	—21 56
कांकरोली	25 02	73 54	—34 24
किशनगढ़	26 33	74 52	—30 32
केकड़ी	25 55	75 10	—29 20
कोटा	25 10	75 52	—26 32
खण्डेला	27 37	75 32	—27 52
गोगुण्डा	24 46	73 34	—35 44
घोटारू	27 18	70 04	—49 44
चात्सू	26 36	75 59	—26 04
चितौड़गढ़	24 54	74 42	—31 12
चूरू	28 19	75 01	—29 56
चोमू	27 08	75 47	—26 52
चोटां	25 28	71 06	—45 36
छाबरा	24 40	76 54	—22 24
छोटीसदड़ी	24 24	74 36	—31 36
जयपुर	26 55	75 52	—26 32
जसवंतपुरा	24 48	72 30	—40 00
जालौर	25 22	72 38	—39 28
जैसलमेर	26 55	70 54	—46 24

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

मध्यप्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सैं.
दिन्दोरी	22 57	81 05	−05 40
धार	22 36	75 18	−28 48
नयागाँव	25 54	77 10	−21 20
नरसिंहपुर	22 57	79 12	−13 12
नीमच	24 28	74 52	−30 32
नैनपुर	22 26	80 07	−09 32
पंचमढ़ी	22 30	78 26	−16 16
पठारिया	23 54	79 12	−13 12
पन्ना	24 43	80 12	−09 12
पाटन	23 18	79 42	−11 12
पांधुरना	21 36	78 31	−15 56
पिचोर	25 11	78 11	−17 16
पिछोर (ग्वा.)	25 58	78 24	−16 24
पिपारिया	22 45	78 21	−16 36
प्रतापगढ़	24 02	74 47	−30 52
बन्दा	24 03	78 57	−14 12
बरनगर	23 03	75 22	−28 32
बरेवाह	22 16	76 03	−25 48
बालाघाट	21 48	80 11	−09 16
बासोदा	23 51	77 56	−18 16
बान्धवगढ़	23 53	79 05	−13 40
बिच्छिया	22 27	80 42	−07 12
बिजावर	24 38	79 30	−12 00
बीना (इटावा)	24 11	78 11	−17 16
बुरहानपुर	21 18	76 14	−25 04
बैतूल	21 55	77 54	−18 24
भिण्ड	26 34	78 48	−14 48
भोपाल	23 16	77 24	−20 24
मऊगंज	24 41	81 53	−02 28
मकराई	22 04	77 06	−21 36
मण्डला	22 36	80 23	−08 28
मनावर	22 14	75 05	−29 40

मध्यप्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सैं.
मन्दसौर	24 04	75 04	−29 44
महाराजपुर	25 01	79 44	−11 04
महेश्वर	22 11	75 35	−27 40
मानपुर	23 46	81 08	−05 28
मुरैना	26 30	78 09	−17 24
मुलताई	21 46	78 15	−17 00
मैहर	24 16	80 45	−07 00
रतलाम	23 19	75 04	−29 44
राजगढ़	23 56	76 58	−22 08
राजपुर	25 23	81 09	−05 24
रामनगर	22 13	80 47	−06 52
रामपुरा	24 28	75 26	−28 16
रायसेन	23 20	77 48	−18 48
राहतगढ़	23 47	78 22	−16 32
रीवा	24 32	81 18	−04 48
रेहली	23 38	79 05	−13 40
लखनादोन	22 36	79 36	−11 36
लखेड़ी	25 40	76 10	−25 20
लामटा	22 08	80 07	−09 32
विदिशा	23 32	77 49	−18 44
वैधन	24 04	82 20	−00 40
शहडोल	23 20	81 21	−04 36
शाजापुर	23 26	76 16	−24 56
शाहपुरा	23 11	80 42	−07 12
शिवपुरी	25 26	77 39	−19 24
श्योपुर	25 40	76 42	−23 12
सतना	24 35	80 50	−06 40
सनावद	22 11	76 04	−25 44
सबलगढ़	26 15	77 24	−20 24
सरदारपुर	22 39	74 59	−30 04
सागर	23 50	78 43	−15 08
सांची	23 29	77 44	−19 04
सारंगपुर	23 34	76 28	−24 08

मध्यप्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सैं.
सिरोंज	24 06	77 42	−19 12
सिहोरा	23 29	80 07	−09 32
सिहोर	23 12	77 05	−21 40
सीधी	24 25	81 53	−02 28
सेओनी	22 05	79 32	−11 52
सेओनीमालवा	22 27	77 28	−20 08
सेंधवा	21 41	75 06	−29 36
सोहागपुर	22 42	78 12	−17 12
हट्टा	24 07	79 36	−11 36
हरदा	22 20	77 06	−21 36
होशंगाबाद	22 45	77 44	−19 04
छत्तीसगढ़			
अम्बिकापुर	23 07	83 12	+02 48
आरंग	21 12	81 58	−02 08
कवर्धा	22 00	81 15	−05 00
कांकेर	20 17	81 29	−04 04
काठघोरा	22 30	82 33	+00 12
कुतरू	19 05	80 48	−06 48
कुरसेकोडी	20 12	80 48	−06 48
कोईसारी	23 57	81 45	−03 00
कोंगूर	19 53	81 27	−04 12
कोण्डागांव	19 36	81 40	−03 20
कोरबा	22 21	82 41	+00 44
जगदलपुर	19 04	82 02	−01 52
जशपुरनगर	22 54	84 09	+06 36
दन्तेवाड़ा	18 54	81 21	−04 36
दुर्ग	21 11	81 17	−04 52
धमतरी	20 41	81 34	−03 44
धर्मजयगढ़	22 28	83 13	+02 52
धर्मावरम	18 16	80 55	−06 20
नवापाड़ा	20 58	81 53	−02 28
पण्डारिया	22 14	81 25	−04 20

३६गढ़ के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सैं.
परताबपुर	23 29	83 13	+02 52
बलोदाबाज़ार	21 40	82 10	−01 20
बस्तर	19 12	81 57	−02 12
बिलासपुर	22 05	82 09	−01 24
बैकुण्ठपुर	23 15	82 33	+00 12
भरतपुर	23 44	81 45	−03 00
भाटपाड़ा	21 44	81 56	−02 16
भिलई	21 13	81 26	−04 16
महासमुन्द	21 06	82 06	−01 36
राजनान्दगांव	21 06	81 02	−05 52
रामानुजगंज	23 48	83 42	+04 48
रायगढ़	21 55	83 26	+03 44
रायपुर	21 14	81 38	−03 28
सक्ति	22 02	82 58	+01 52
सारनगढ़	21 36	83 05	+02 20
सेओरी नारायण	21 44	82 35	+00 20
महाराष्ट्र			
अकलकोट	17 32	76 13	−25 08
अकोला (मुम्ब.)	20 44	77 00	−22 00
अकोट	21 11	77 04	−21 44
अचलपुर	21 16	77 31	−19 56
अमरावती	20 56	77 45	−19 00
अम्बजोगई	18 44	76 23	−24 28
अरमोरी	20 28	79 59	−10 04
अरवी	20 59	78 14	−17 04
अलीपुर	20 34	78 41	−15 16
अलीबाग	18 39	72 54	−38 24
अहमदनगर	19 05	74 44	−31 04
इगतपुरी	19 42	73 33	−35 48
उमरेड़	20 51	79 20	−12 40
उल्हासनगर	19 13	73 07	−37 32
एलोरा	20 01	75 10	−29 20

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

महाराष्ट्र के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
ओस्मानाबाद	18 10	76 02	−25 52
औरंगाबाद	19 53	75 20	−28 40
कतोल	21 16	78 35	−15 40
कराड़	17 17	74 12	−33 12
कल्याण	19 15	73 09	−37 24
कामथी	21 14	79 12	−13 12
किरकी	18 34	73 52	−34 32
कुरदुवाड़ी	18 05	75 26	−28 16
कोपारगांव	19 53	74 29	−32 04
कोल्हापुर	16 42	74 13	−33 08
खमगांव	20 41	76 34	−23 44
खेड़ (रत्नागिरी)	17 43	73 23	−36 28
गंगापुर	19 41	75 01	−29 56
गोंडिया(मुम्बई)	21 27	80 12	−09 12
घाटकोपर (मुम्बई)	19 05	72 54	−38 24
चन्द्रापुर	19 57	79 18	−12 48
चालिसगांव	20 28	75 01	−29 56
चिखली	20 21	76 15	−25 00
चिपलून	17 32	73 31	−35 56
चोपड़ा	21 15	75 18	−28 48
जलगांव	21 01	75 34	−27 44
जलगांव (अकोला)	21 03	76 32	−23 52
जालना	19 50	75 53	−26 28
जुन्नार	19 12	73 53	−34 28
तालोदा	21 34	74 13	−33 08
तासगांव	17 02	74 36	−31 36
तुमसार	21 23	79 44	−11 04
थाने	19 12	72 58	−38 08
दरवाहा	20 19	77 46	−18 56
दिगरस	20 06	77 43	−19 08
दिगलूर	18 33	77 36	−19 36
देयूलगावराजा	20 01	76 02	−25 52
देवलाली	19 57	73 50	−34 40

महाराष्ट्र के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
धुलिया	20 54	74 47	−30 52
नन्दगांव	20 19	74 39	−31 24
नागपुर	21 09	79 06	−13 36
नान्देड़	19 09	77 20	−20 40
नासिक	19 59	73 48	−34 48
पंढरपुर	17 40	75 20	−28 40
पनवेल	18 59	73 06	−37 36
पाचोरा	20 40	75 21	−28 36
पाटन(महेसाणा)	23 50	72 07	−41 32
पातुर	20 27	76 56	−22 16
पुणे	18 32	73 52	−34 44
पुसाद	19 54	77 35	−19 40
पुलगांव	20 44	78 20	−16 40
बडनेरा	20 52	77 44	−19 04
बारसी	18 14	75 42	−27 12
बारामती	18 09	74 35	−21 40
बालापुर	20 40	76 46	−22 56
बासमत	19 19	77 10	−21 20
बीड़	18 59	75 46	−26 56
भण्डारा	21 10	79 39	−11 24
भिवंडी	19 18	73 04	−37 44
भुसावल	21 03	75 46	−26 56
भोकरदान	20 16	75 46	−26 56
मंगलवेढ़ा	17 31	75 28	−28 08
मनमाड़	20 15	74 27	−32 12
मनवात	19 18	76 30	−24 00
मल्कापुर(बुल्डाना)	20 53	76 12	−25 12
महाद	18 05	73 25	−36 20
महाबलेश्वर	17 55	73 40	−35 20
मालवान	16 04	73 28	−36 08
मालेगांव (ना.)	20 33	74 32	−31 52
मिराज	16 50	74 38	−31 28
मुम्बई	18 58	72 50	−38 40

महाराष्ट्र के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
मुम्ब्रा (थाना)	19 10	73 03	−37 48
मुरुद	18 19	72 58	−38 08
मुर्तजापुर	20 44	77 23	−20 28
मुल	20 04	79 40	−11 20
मेहेकर	20 09	76 34	−23 44
यवतमाल	20 24	78 08	−17 28
रत्नागिरि	16 59	73 18	−36 48
रहिमतपुर	17 36	74 12	−33 12
रामटेक	21 24	79 20	−12 40
लातूर	18 24	76 34	−23 44
वर्धा	20 45	78 37	−15 32
वसाई	19 21	72 48	−38 48
वाशिम	20 06	77 09	−21 24
वाशी	19 13	73 10	−37 20
वाई	17 56	73 54	−34 24
वैजापुर	19 55	74 44	−31 12
शहादा	21 28	74 18	−32 48
शिरपुर	21 21	74 53	−30 28
शेगांव	20 47	76 41	−23 16
शोलापुर	17 41	75 55	−26 20
श्रीवर्धन	18 02	73 01	−37 56
सकोली	21 05	79 59	−10 04
संगोला	17 26	75 12	−29 12
सतना	20 35	74 12	−33 12
सतारा	17 41	73 59	−34 04
सांगली	16 52	74 34	−31 44
सावन्तवाड़ी	15 54	73 49	−34 44
सिन्नार	19 51	74 00	−34 00
हरनाई	17 48	73 06	−37 36
हिंगनघाट	20 34	78 52	−14 32
हिंगोली	19 43	77 09	−21 24
मिज़ोरम			
ऐज़वाल	23 43	92 44	+40 56

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
मेघालय			
शिलांग	25 34	91 56	+37 44
राजस्थान			
अजमेर	26 27	74 42	−31 12
अनूपगढ़	29 07	73 06	−37 36
अलवर	27 34	76 38	−23 28
असोप	26 48	73 44	−35 04
अलीगढ़	25 58	76 07	−25 30
अमेट	25 20	73 59	−34 04
आबू	24 40	72 45	−39 00
आमेर	26 59	75 52	−26 32
उदयपुर	24 35	73 41	−35 16
एकलिंगजी	24 44	73 46	−34 56
करौली	26 30	77 01	−21 56
कांकरोली	25 02	73 54	−34 24
किशनगढ़	26 33	74 52	−30 32
केकड़ी	25 55	75 10	−29 20
कोटा	25 10	75 52	−26 32
खण्डेला	27 37	75 32	−27 52
गोगुण्डा	24 46	73 34	−35 44
घोटारू	27 18	70 04	−49 44
चात्सू	26 36	75 59	−26 04
चितौड़गढ़	24 54	74 42	−31 12
चूरू	28 19	75 01	−29 56
चौमू	27 08	75 47	−26 52
चोटां	25 28	71 06	−45 36
छाबरा	24 40	76 54	−22 24
छोटीसदड़ी	24 24	74 36	−31 36
जयपुर	26 55	75 52	−26 32
जसवंतपुरा	24 48	72 30	−40 00
जालौर	25 22	72 38	−39 28
जैसलमेर	26 55	70 54	−46 24

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

राजस्थान के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
जोधपुर	26 18	73 04	−37 44
जोधासर	28 07	73 50	−34 40
झालावाड़	24 36	76 09	−25 24
झुंझुनू	28 06	75 25	−28 20
टोडारायसिंह	26 00	75 29	−28 04
टोंक	26 11	75 50	−26 40
डीडवाना	27 17	74 25	−32 20
डूँगरपुर	23 50	73 43	−35 08
तिजारा	27 55	76 50	−22 40
थानागाजी	27 25	76 19	−24 44
देओरा	26 30	70 42	−47 12
देचू	26 47	72 20	−40 40
देओरा	26 30	70 42	−47 12
दौसा	26 51	76 21	−24 36
धौलपुर	26 42	77 53	−18 28
नवलगढ़	27 51	75 18	−28 48
नसीराबाद	26 18	74 46	−30 56
नागौर	27 11	73 40	−35 20
नाचना	27 29	71 45	−43 00
नाथद्वारा	24 56	73 50	−34 40
नीम का थाना	27 44	75 48	−26 48
नोखा	27 35	73 29	−36 04
नौहर	29 11	74 46	−30 56
पचपदरा	25 55	72 21	−40 36
परबतसर	26 53	74 47	−30 52
पल्लू	28 56	74 13	−33 08
पाली	25 46	73 25	−36 20
पिलानी	28 23	75 35	−27 40
पुष्कर	26 30	74 34	−31 44
पोखरन	26 56	71 55	−42 20
फतेहपुर	28 00	75 00	−30 00
फलौदी	27 09	72 22	−40 32

राजस्थान के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
फुलेरा	26 52	75 16	−28 56
बड़ी सादड़ी	24 25	74 28	−32 08
बयाना	26 55	77 17	−20 52
बाड़मेर	25 46	71 25	−44 20
बांदीकुई	27 02	76 34	−23 44
बाप	27 24	72 22	−40 32
बाराँ	25 07	76 30	−24 00
बांसवाड़ा	23 30	74 24	−32 24
बालोतरा	25 50	72 14	−41 04
बिलाड़ा	26 11	73 42	−35 12
बीकानेर	28 01	73 22	−36 32
बून्दी	25 27	75 40	−27 20
भरतपुर	27 05	77 30	−20 00
भादरा	29 15	75 20	−28 40
भीलवाड़ा	25 21	74 40	−31 20
भीनमाल	25 01	72 19	−40 44
मकराना	27 04	74 43	−31 08
महाजन	28 49	73 56	−34 16
मांगरोल	25 21	76 30	−24 00
मावली	24 48	73 58	−34 08
मुकन्दबाड़ा	24 49	76 01	−25 56
मुनाबाओ	25 43	70 15	−49 00
मेड़ता सिटी	26 40	74 06	−33 36
मेड़ता रोड़	26 44	73 55	−34 20
मोहनगढ़	27 17	71 18	−44 48
रतनगढ़	28 05	74 39	−31 24
रानीवाड़ा	24 46	72 13	−41 08
रायसिंहनगर	29 32	73 27	−36 12
रीगस	27 21	75 34	−27 44
रूपनगर	26 47	74 54	−30 24
लछमनगढ़	27 45	75 04	−29 44
लाठी	27 03	71 30	−44 00

राजस्थान के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
शाहगढ़	27 08	69 58	−50 08
श्रीगंगानगर	29 49	73 50	−34 40
श्रीमाधोपुर	27 25	75 32	−27 52
श्रीमोहनगढ़	27 17	71 12	−45 12
समदड़ी	25 49	72 35	−39 40
सरदारशहर	28 27	74 30	−32 00
सरूपसर	29 22	73 37	−35 32
सवाईमाधोपुर	25 59	76 30	−24 00
सांगानेर	26 49	75 52	−26 32
सांचोर	24 41	71 50	−42 40
साम्भर	26 55	75 10	−29 20
सादूलपुर	28 39	75 24	−28 24
सिरोही	24 54	72 55	−38 20
सिवाना	25 37	72 27	−40 12
सिरोही	24 53	72 54	−38 24
सीकर	27 36	75 09	−29 24
सुजानगढ़	27 42	74 30	−32 00
सूरतगढ़	29 19	73 57	−34 12
हनुमानगढ़	29 35	74 21	−32 36
रामगढ़ (जयपुर)	27 14	75 10	−29 20
शाहपुरा (जयपुर)	27 22	75 58	−26 08
शाहपुरा (भीलवाड़ा)	25 40	74 50	−30 40
शेरगढ़ (जोधपुर)	26 24	72 21	−40 36
शेरगढ़ (झालाबाड़)	24 41	76 32	−23 52
हनुमानगढ़	29 35	74 21	−32 36
सिक्किम			
गंगटोक	27 22	88 36	+24 24
हरियाणा			
अम्बाला	30 21	76 52	−22 32
अलीपुर	29 10	75 52	−26 36
अगरोहा	29 20	75 38	−27 88

हरियाणा के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
करनाल	29 42	77 02	−21 52
कलानौर	28 52	76 23	−24 28
कालका	30 50	76 56	−22 16
कुरुक्षेत्र	29 59	76 51	−22 36
केसरी	30 15	76 53	−26 28
कैथल	29 48	76 26	−24 16
खतौली	30 37	76 58	−22 08
गुरुग्राम	28 28	77 04	−21 44
गोहाना	29 09	76 41	−23 16
घरौण्डा	29 34	76 58	−22 08
चरखी-दादरी	28 36	76 16	−24 56
जगाधरी	30 10	77 16	−20 56
जाखल	29 48	75 50	−26 40
जीन्द	29 19	76 19	−24 44
झज्जर	28 37	76 39	−23 24
टोहाना	29 42	75 54	−26 24
थानेसर	29 58	76 56	−22 16
दादरी	28 33	77 32	−19 52
नरवाणा	29 36	76 08	−25 28
नारनौल	28 02	76 14	−25 04
नारायणगढ़	30 30	77 09	−21 24
नाहर	28 23	76 23	−24 28
नीलोखेड़ी	29 52	76 54	−22 24
पंचकूला	30 42	76 52	−22 32
पटौदी	28 19	76 48	−22 48
पलवर	28 10	77 19	−20 44
पानीपत	29 23	76 59	−22 04
पिंजौर	30 49	76 55	−22 20
पिपली	29 59	76 52	−22 32
पिहोवा	29 58	76 35	−23 40
फतेहाबाद	29 31	75 27	−28 12
फरीदाबाद	28 26	77 19	−20 44
बल्लभगढ़	28 21	77 19	−20 44

...	...	27 08	बल्लभगढ़	28 21	77 19	–20 44

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

हरियाणा के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
बहादुरगढ़	28 42	76 55	–22 20
बरवाला	29 23	75 55	–26 20
बालसमन्द	29 05	75 29	–28 04
भादसों	29 56	76 56	–22 16
भिवानी	28 47	76 08	–25 48
मनसादेवी	30 44	76 52	–22 32
मनीमाजरा	30 42	76 52	–22 32
महेन्द्रगढ़	28 17	76 09	–25 24
मोहाना	29 04	76 50	–22 40
यमुनानगर	30 07	77 18	–20 48
रादौर	30 02	77 06	–21 36
रिवाड़ी	28 12	76 38	–23 28
रेना	29 28	74 54	–30 24
रोड़ी	29 44	75 15	–29 00
रोहतक	28 54	76 38	–23 28
लाडवा	29 59	77 05	–21 40
शाहाबाद	30 10	76 55	–22 20
सिरसा	29 32	75 01	–29 56
सिवानी	28 55	75 37	–27 32
सोनीपत	28 59	77 01	–21 56
हसनपुर	27 59	77 29	–20 04
हांसी	29 06	76 00	–26 00
हिसार	29 10	75 46	–26 56
हिमाचल-प्रदेश			
अम्ब	31 43	76 06	–25 36
अर्की	31 09	76 59	–22 04
आनी	31 28	77 20	–20 40
आलमपुर	31 54	76 30	–24 00
इन्दौरा	32 06	75 41	–27 16
ऊना	31 32	76 18	–24 48
करसोग	31 23	77 13	–21 08

हि. प्र. के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
कसौली	30 55	76 57	–22 12
कथला	31 59	76 47	–22 52
कल्पा	31 34	78 16	–16 56
कण्डाघाट	30 57	77 08	–21 28
काला अम्ब	30 29	77 13	–21 08
काँगड़ा	**32 05**	**76 18**	**–24 48**
किन्नौर	31 32	78 20	–16 40
कुफरी	31 07	77 12	–21 12
कुम्हारहट्टी	30 52	77 03	–21 48
कुल्लू	31 58	77 06	–21 36
कुमारसेन	31 18	77 37	–19 32
कुनिहार	30 58	77 10	–21 20
केलांग	32 37	77 05	–21 40
कोटखाई	31 08	77 36	–19 36
कोटगढ़	31 19	77 29	–20 04
कोटला	32 17	76 02	–25 52
खजियार	32 31	76 03	–25 40
गर्ली (परागपुर)	31 48	76 18	–24 48
गगरेट	31 41	76 04	–25 44
गोहर	31 32	77 02	–21 52
घुमारवीं	31 28	76 42	–23 12
चम्बा	**32 34**	**76 08**	**–25 28**
चच्योट	31 36	77 04	–21 44
चामुण्डा देवी	32 08	76 22	–24 32
चायल	31 03	77 14	–21 04
चिन्तपूर्णी	31 47	76 04	–25 44
जस्सूर	32 17	75 55	–26 20
जतोग	31 06	77 07	–21 32
जोगिन्द्रनगर	31 59	76 46	–22 56
ज्वाली	32 07	76 01	–25 56
ज्वालामुखी	31 53	76 20	–24 40
ठयोग	31 08	77 33	–19 48
डमटाल	32 13	75 41	–27 16
डगशाई	30 53	77 06	–21 36

हि. प्र. के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
डल्हौज़ी	32 31	76 00	–26 00
ढलियारा	31 52	76 11	–25 16
तारादेवी	31 04	77 10	–21 20
तत्तापानी	31 14	77 10	–21 20
त्रिलोकनाथ	32 43	76 39	–23 24
त्रिलोकपुर	30 34	77 09	–21 24
देहरा गोपीपुर	31 55	76 14	–25 04
दौलतपुर	31 46	75 58	–26 08
धनेटा	31 38	76 29	–24 04
धर्मशाला	32 16	76 23	–24 48
धर्मपुर	30 54	77 04	–21 44
धौलाकुआं	30 30	77 29	–20 04
नगर	32 07	77 10	–21 20
नगरोटा बगवां	32 06	76 22	–24 32
नगरोटा	32 07	76 23	–24 28
नादौन	31 47	76 21	–24 36
नाहन	30 33	77 18	–20 48
नालागढ़	31 03	76 42	–23 12
नारकण्डा	31 15	77 28	–20 08
निरमण्ड	31 28	77 34	–19 44
नूरपुर	32 18	75 54	–26 24
नैनादेवी	31 19	76 31	–23 56
पच्छाद	31 47	77 08	–21 28
पण्डोह	31 41	77 07	–21 32
पपरोला	32 04	76 34	–23 44
परवाणू	30 50	76 57	–22 12
पाओंटा साहिब	30 27	77 37	–19 32
पालमपुर	32 07	76 33	–23 48
बरसर (भोटा)	31 34	76 28	–24 08
बसौली	31 34	76 23	–24 28
बंगाना तै.	31 33	76 27	–24 16
बड़ागांव	31 20	77 15	–21 00
बंजार	31 40	77 20	–20 40
बनीखेत	32 32	75 58	–26 08
बकलोह	32 27	75 59	–26 04

हि. प्र. के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
बिलासपुर	31 20	76 45	–23 00
बैजनाथ	32 03	76 38	–23 28
भरवाईं	31 47	76 07	–25 36
भरमौर	32 27	76 32	–23 52
भाखड़ा	31 20	76 30	–24 00
भुन्तर	31 54	77 09	–21 24
मण्डी	**31 43**	**76 58**	**–22 08**
मनाली	32 16	77 10	–21 20
मनीकरण	32 01	77 20	–20 40
मशोबरा	31 07	77 14	–21 04
मंगवाल	32 03	76 05	–25 40
महासू	31 05	77 13	–21 08
राजगढ़	30 52	77 22	–20 32
रामपुरबुशहर	31 27	77 38	–19 28
रोहड़	31 12	77 45	–19 00
लाहौल स्पीति	31 28	77 39	–19 24
शाहपुर	32 13	76 11	–25 16
शिमला	**31 06**	**77 10**	**–21 20**
शेरपुर	32 34	75 59	–26 04
सपाटू	30 59	76 59	–22 04
सरकाघाट	31 43	76 45	–23 00
सन्धोल	31 59	76 45	–22 56
संतोखगढ़	31 21	76 20	–24 40
सिरमौर	30 45	77 30	–20 00
सुन्दरनगर	**31 32**	**76 53**	**–22 28**
सुजानपुरटिहरा	31 50	76 30	–24 00
सोलन	30 55	77 09	–21 24
हमीरपुर	31 41	76 31	–23 56
हड़सर	32 21	76 33	–23 48
हरिपुर	32 39	76 11	–25 16
हरिपुरधार	30 53	77 28	–20 08
हाटकोटी	31 09	77 45	–19 00
अन्य केन्द्रीय प्रदेश			
चण्डीगढ़	30 44	76 52	–22 32

विदेशी नगरों के अक्षांश-रेखांश एवं स्टैं. अन्तर

आगे लिखे गए विदेशी नगरों के सामने स्थानीय समय का भा. स्टै. टा. से अन्तर जानने के लिए अन्तिम कालम में (–) चिन्ह वाले नगरों का समय भा. स्टै. टा. से पहले घटित होगा जबकि (+) चिन्ह वाले नगरों के आगे निर्दिष्ट समय, उतने घण्टे मिनट बाद में घटित होगा। जैसे इंग्लैंड (लंदन) के आगे +5/30 घं. मिं. लिखे हैं, इसका भाव यह हुआ कि यदि इंग्लैंड में प्रातः के 6/30 बजे हैं तो भारत में दोपहर के 12 बजे होंगे। इसी भान्ति न्यूयार्क (अमेरिका) के आगे +10/30 घं. मिं. होने से इसका यह तात्पर्य होगा कि वहां साढ़े दस घण्टे पीछे अर्थात् गत दिवस के डेढ़ (1/30) बजे होंगे। ज्ञातव्य रहे, अमेरिका, कैनेडा, मैक्सीको आदि देशों में एक ही समय अलग–अलग स्टैण्डर्ड टाईम का निर्धारण किया जाता है। जैसे– **एटलांटिक टाईम (A.T.), ईस्टर्न टाईम (Eastern Time), सैंटर्ल टाईम (Central Time), माऊंटेन टाईम, पैसेफिक टाईम इत्यादि।** यह सब स्टै. टाईम अलग–अलग रेखांशों पर आधारित होते हैं। जिसे स्टैण्डर्ड मेरिडियन कहते हैं। उदाहरणतया ईस्टर्न टाईम 75° रेखांश, सैंट्रल टाईम 90° रेखांश पर, माऊंटेन टाईम 105° पश्चिम रेखांश अनुसार निर्धारित होता है। अमरीका या कैनेडा में किसी नगर का भा. स्टै. टा. से अन्तर जानने के लिए वहां स्टैण्डर्ड मेरिडियन निर्धारक रेखांश का ज्ञान आवश्यक है। दूसरे, विदेशी समयांतर में विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि अमरीका, कैनेडा, ब्रिटेन आदि कुछ देशों में ग्रीष्मकालीन समय (Day Saving Time) या Summer Time का भी विचार किया जाता है। जोकि प्रायः अप्रैल के अन्तिम रविवार से अक्तूबर के अन्तिम रविवार तक होता है। (अमरीका, कैनेडा में)। इन दिनों देश की घड़ियां एक घण्टा आगे कर दी जाती है।

इसी प्रकार Australia (आस्ट्रेलिया) (दक्षिणी धुवीय देशों) में अक्तूबर के अन्तिम रविवार से मार्च के अन्तिम रविवार तक ग्रीष्मकालीन समय (D.S.T.) प्रयोग में लाया जाता है। ध्यान रहे, Western Australia तथा Queensland आदि कुछ क्षेत्रों में D.S.T. प्रयोग में नहीं लाया जाता। इसी प्रकार न्यूज़ीलैण्ड (New-Zealand) में अक्तू. के प्रथम सप्ताह के रविवार से मार्च के तृतीय सप्ताह के रविवार तक ग्रीष्मकालीन (D.S.T.) समय प्रयोग में लाया जाता है।

नगर	अक्षांश उ.=North द.=South अं. क.	रेखांश पू.=East प..=West अं. क.	स्टैं. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन (मानक रेखांश) अं. क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
(1) AMERICA [UNITED-STATES] [यह देश पाँच कालक्षेत्रों में बंटा हुआ है।]					
Abilen, Texas	30 27 उ.	99 44 प.	–38 56	90 00 प.	+11 30
Albany, N.Y.	42 39 उ.	73 45 प.	+05 00	75 00 प.	+10 30
Abotsford	49 00 उ.	122 30 प.	–10 00	120 00 प.	+13 30
Anderson, Indiana	40 06 उ.	85 41 प.	–42 44	75 00 प.	+10 30
Athens, Georgia	33 57 उ.	83 23 प.	–33 32	75 00 प.	+10 30
Atlanta, Georgia	33 45 उ.	84 23 प.	–37 32	75 00 प.	+10 30
Atlantic City, N.J.	39 22 उ.	74 25 प.	+02 20	75 00 प.	+10 30
Auburn, N.Y.	42 56 उ.	76 34 प.	–06 16	75 00 प.	+10 30
Austin, Texas	30 16 उ.	97 45 प.	–31 00	90 00 प.	+11 30
Asbury Park (N.J.)	40 13 उ.	74 01 प.	+03 56	75 00 प.	+10 30
Bakersfield, Califo.	35 22 उ.	119 01 प.	+03 56	120 00 प.	+13 30
Bay City, Michigan	43 36 उ.	83 53 प.	–35 32	75 00 प.	+10 30
Bay Town, Texas	29 44 उ.	94 59 प.	–19 56	90 00 प.	+11 30
Boston, Massa.	42 21 उ.	71 04 प.	+15 44	75 00 प.	+10 30
Buffalo, N. York	42 53 उ.	78 53 प.	–15 32	75 00 प.	+10 30
Cambridge, Massa.	42 22 उ.	71 06 प.	+15 36	75 00 प.	+10 30
Chicago, Illinois	41 51 उ.	87 39 प.	+09 24	90 00 प.	+11 30
Cincinnati, Ohio	39 10 उ.	84 27 प.	–37 48	75 00 प.	+10 30
Californiacity (Cal.)	35 08 उ.	117 59 प.	+08 04	120 00 प.	+13 30
Columbia, Missouri	38 57 उ.	92 20 प.	–09 20	90 00 प.	+11 30
Columbus, Georgia	32 28 उ.	84 59 प.	–39 56	75 00 प.	+10 30
Dales, Texas	29 56 उ.	97 34 प.	–30 16	90 00 प.	+11 30
Detriot, Michi.	42 20 उ.	83 03 प.	–32 12	75 00 प.	+10 30
Edison, N. Jersey	41 04 उ.	74 34 प.	+01 44	75 00 प.	+10 30
Essex, Maryland	39 19 उ.	76 29 प.	– 05 56	75 00 प.	+10 30
Florida City, FL	25 27 उ.	80 29 प.	–21 56	75 00 प.	+10 30
Frederick (D.M.)	39 38 उ.	78 31 प.	–14 04	75 00 प.	+10 30
Frankfort, Kentucky	38 12 उ.	84 52 प.	–39 28	75 00 प.	+10 30
Greenville, Missi	33 25 उ.	91 04 प.	–04 16	90 00 प.	+11 30
Hamilton, Ohio	39 24 उ.	84 34 प.	–38 16	75 00 प.	+10 30
Houston, Texas	29 46 उ.	95 22 प.	–21 28	90 00 प.	+11 30
Irving, Texas	32 49 उ.	96 57 प.	–27 48	90 00 प.	+11 30
Jersey City, N.J.	40 44 उ.	74 05 प.	+03 20	75 00 प.	+10 30
Johnson City, Tenne.	36 19 उ.	82 21 प.	+30 36	90 00 प.	+11 30
Kingston, N.Y.	41 56 उ.	74 00 प.	+04 00	75 00 प.	+10 30
Lockport, N.Y.	43 10 उ.	78 41 प.	–14 44	75 00 प.	+10 30
Los Angeles, Calif.	34 03 उ.	118 15 प.	+07 00	120 00 प.	+13 30

नगर	अक्षांश उ.=North द.=South अं. क.	रेखांश पू.=East प..=West अं. क.	स्टै. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन (मानक रेखांश) अं. क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
Manchester, N. Hamp.	43 00 उ.	71 27 प.	+14 54	75 00 प.	+10 30
Meridian, Missi	32 22 उ.	88 42 प.	+05 12	90 00 प.	+11 30
Michigan City, Indiana	41 42 उ.	86 54 प.	–47 36	75 00 प.	+10 30
Midland, Texas	32 00 उ.	102 05 प.	–48 20	90 00 प.	+11 30
Milwankee, Wiscon.	43 02 उ.	87 54 प.	+08 24	90 00 प.	+11 30
Montgomery, Alabama	32 22 उ.	86 18 प.	+14 48	90 00 प.	+11 30
New Bedford, Massa	41 38 उ.	70 56 प.	+ 16 16	75 00 प.	+10 30
New Castle, P.A.	40 44 उ.	76 13 प.	–04 52	75 00 प.	+10 30
Newton, Massa	42 20 उ.	71 13 प.	+15 10	75 00 प.	+10 30
New York, N.Y.	40 43 उ.	74 00 प.	+04 00	75 00 प.	+10 30
Ontario, Calif	34 04 उ.	117 39 प.	+11 24	120 00 प.	+13 30
Oxford, Alabama	33 37 उ.	85 50 प.	+16 40	90 00 प.	+11 30
Redlands, California	34 04 उ.	117 11 प.	+11 16	120 00 प.	+13 30
Reston, Virginia	38 58 उ.	77 20 प.	–09 20	75 00 प.	+10 30
Richfield, Minnesota	44 53 उ.	93 17 प.	–13 08	90 00 प.	+11 30
Richmond, Calif	37 56 उ.	122 21 प.	–09 24	120 00 प.	+13 30
Sacramento, Calif	38 35 उ.	121 30 प.	–06 00	120 00 प.	+13 30
St. Louis Park, Minne	44 57 उ.	93 21 प.	–13 24	90 00 प.	+11 30
San Francisco, Calif	37 47 उ.	122 25 प.	–09 40	120 00 प.	+13 30
Santa Rosa, Calif	38 27 उ.	122 43 प.	–10 52	120 00 प.	+13 30
Seattle, Washington	47 36 उ.	122 20 प.	–09 20	120 00 प.	+13 30
Texas City, Texa	29 23 उ.	94 54 प.	–19 36	90 00 प.	+11 30
Washington, D.C.	38 55 उ.	77 02 प.	–08 08	75 00 प.	+10 30
Yuba City, Calif	39 08 उ.	121 37 प.	–06 28	120 00 प.	+13 30
(2) AFGANISTAN (Standard Meridian—67-30 पू.)					
Daulatabad	36 25 उ.	64 55 पू.	–10 20	67 30 पू.	+01 00
Kabul	34 31 उ.	69 12 पू.	+06 48	67 30 पू.	+01 00
Kandhar	31 32 उ.	65 30 पू.	–08 00	67 30 पू.	+01 00
(3) ARGENTINA [यह देश दो कालक्षेत्रों में बंटा हुआ है।] (St. Meridian-45-00 प.)					
Rofaela	31 16 द.	61 29 प.	–05 56	60 00 प.	+08 30
San Francisco	31 26 द.	62 05 प.	–08 20	60 00 प.	+08 30
(4) AUSTRALIA [यह देश तीन कालक्षेत्रों में बंटा हुआ है।]					
Adelaide	34 55 द.	138 35 पू.	–15 40	142 30 पू.	–04 00
Brisbane	27 28 द.	153 02 पू.	+12 08	150 00 पू.	–04 30
Canberra	35 17 द.	149 08 पू.	–03 28	150 00 पू.	–04 30
Hobart	42 53 द.	147 19 पू.	–10 44	150 00 पू.	–04 30
Liverpool	33 54 द.	150 56 पू.	+03 44	150 00 पू.	–04 30
Melbourne	37 50 द.	144 58 पू.	–20 08	150 00 पू.	–04 30
Perth	31 56 द.	115 50 पू.	–16 40	120 00 पू.	–02 30
Sydney	33 52 द.	151 12 पू.	+04 48	150 00 पू.	–04 30
(5) Austria (Standard Meridian – 15-00 पू.)					
Graz	47 05 उ.	15 27 पू.	–01 48	15 00 पू.	–04 30
(6) Bangladesh					
Chittagong	22 20 उ.	91 50 पू.	+07 20	90 00 पू.	–00 30
Dhaka	22 43 उ.	90 25 पू.	+01 40	90 00 पू.	–00 30
(7) Bhutan					
Thimbu	27 28 उ.	89 39 पू.	–01 24	90 00 पू.	–00 30
(8) BRAZIL [कुछ क्षेत्रों में ही ग्रीष्मकालीन समय प्रयोग में लाया जाता है।] [चार कालक्षेत्र में आवंटित है।]					
Brasilia	15 47 द.	47 55 प.	–11 40	45 00 प.	+08 30
Maringa	23 25 द.	51 55 प.	–27 40	45 00 प.	+08 30
Rio Branco	9 58 द.	67 48 प.	+28 48	75 00 प.	+10 30
Rio Claro	22 24 द.	47 33 प.	–10 12	45 00 प.	+08 30
Rio de Janeiro	22 54 द.	43 14 प.	+07 04	45 00 प.	+08 30
(9) BURMA (MYANMAR)					
Rangoon	16 47 उ.	96 10 पू.	–05 20	97 30 पू.	–01 00
(10) CANADA [इस देश में भी छः कालक्षेत्र प्रचलित हैं।]					
Brampton, Ontario	43 41 उ.	79 46 प.	–19 04	75 00 प.	+10 30
Calgary, Alberta	51 03 उ.	114 05 प.	–36 20	105 00 प.	+12 30
Edmonton, Alberta	53 33 उ.	113 30 प.	–34 00	105 00 प.	+12 30
Kingston, Ontario	44 14 उ.	76 30 प.	–06 00	75 00 प.	+10 30
Mississauga, Ontario	43 35 उ.	79 37 प.	–18 28	75 00 प.	+10 30
Montreal, Quebec	45 31 उ.	73 34 प.	+05 44	75 00 प.	+10 30
Niagara Falls, Ontario	43 06 उ.	79 04 प.	–16 16	75 00 प.	+10 30
North York, Ontario	43 46 उ.	79 25 प.	–17 40	75 00 प.	+10 30
Ottawa, Ontario	45 25 उ.	75 42 प.	–02 48	75 00 प.	+10 30
Prince George, B.C.	53 55 उ.	122 46 प.	–11 04	120 00 प.	+13 30
Prince Rupert, B.C.	54 19 उ.	130 19 प.	–41 16	120 00 प.	+13 30
Quebec, Quebec	46 49 उ.	71 14 प.	+15 04	75 00 प.	+10 30
Richmond, British Col.	49 10 उ.	123 10 प.	–12 40	120 00 प.	+13 30
Saint John's- -New Foundland	47 33 उ.	52 40 प.	–00 40	52 30 प.	+09 00
Toronto, Ontario	43 39 उ.	79 23 प.	–17 32	75 00 प.	+10 30

नगर	अक्षांश उ.=North द.=South अं. क.	रेखांश पू.=East प..=West अं. क.	स्टैं. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन (मानक रेखांश) अं. क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
Vancouver- (B.C.)	49 16 उ.	123 07 प.	–12 28	120 00 प.	+13 30
Victoria-B.C.	48 25 उ.	123 21 प.	–13 24	120 00 प.	+13 30
Winnipeg, Manitoba	49 53 उ.	97 09 प.	–28 36	90 00 प.	+13 30
Windsor, Ontario	42 18 उ.	83 01 प.	–32 04	75 00 प.	+11 30
(11) CHINA	**(ZHONGGUO)**				
Beijing (Peking)	39 55 उ.	116 25 पू.	–14 20	120 00 पू.	–02 30
Fushun	29 11 उ.	105 00 पू.	–60 00	120 00 पू.	–02 30
Huainan	32 40 उ.	117 00 पू.	–12 00	120 00 पू.	–02 30
Ji'an	41 06 उ.	126 08 पू.	+24 32	120 00 पू.	–02 30
Shanghai	31 14 उ.	121 28 पू.	+05 52	120 00 पू.	–02 30
(12) ENGLAND	**(UNITED-KINGDOM) U.K.**				
Adenberg	55 52 उ.	03 12 प.	–12 48	00 00	+05 30
Bedford	52 08 उ.	00 29 प.	–01 56	00 00	+05 30
Birmingham	52 28 उ.	01 54 प.	–07 36	00 00	+05 30
Bradford	53 48 उ.	01 45 प.	–07 00	00 00	+05 30
Bristol	51 27 उ.	02 35 प.	–10 20	00 00	+05 30
Cambridge	52 13 उ.	00 08 पू.	+00 32	00 00	+05 30
Coventry	52 25 उ.	01 30 प.	–06 00	00 00	+05 30
Derby	52 55 उ.	01 29 प.	–05 56	00 00	+05 30
Glasgow, Scotla	55 53 उ.	04 15 प.	–17 00	00 00	+05 30
Hamilton, Scotla	55 47 उ.	04 03 प.	–16 12	00 00	+05 30
Kingswood	51 27 उ.	02 31 प.	–10 04	00 00	+05 30
Leeds	53 50 उ.	01 35 प.	–06 20	00 00	+05 30
Leicester	52 38 उ.	01 05 प.	–04 20	00 00	+05 30
Liverpool	53 25 उ.	02 58 प.	–11 52	00 00	+05 30
London	51 32 उ.	00 05 प.	–00 20	00 00	+05 30
Manchester	53 30 उ.	02 13 प.	–08 52	00 00	+05 30
New-Castle	52 26 उ.	03 06 प.	–12 24	00 00	+05 30
Northampton	52 14 उ.	00 54 प.	–03 36	00 00	+05 30
Nottingham	52 58 उ.	01 10 प.	–04 40	00 00	+05 30
Slough	51 31 उ.	00 36 प.	–02 24	00 00	+05 30
Southampton	50 55 उ.	01 25 प.	–05 40	00 00	+05 30
Walsall	52 35 उ.	01 58 प.	–07 52	00 00	+05 30
Wolverhampton	52 36 उ.	02 08 प.	–08 32	00 00	+05 30

नगर	अक्षांश उ.=North द.=South अं. क.	रेखांश पू.=East प..=West अं. क.	स्टैं. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन (मानक रेखांश) अं. क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
(13) FIJI [ग्रीष्मकालीन समय ग्रहण किया जाता है।] (नवम्बर के प्रथम सप्ताह के रविवार से फरवरी के अन्तिम रविवार तक)					
Kandavu Island	19 03 द.	178 13 पू.	–05 58	180 00 पू.	–06 30
Lau Group	18 20 द.	178 30 पू.	–06 00	180 00 पू.	–06 30
ONO-I-LAU	20 39 द.	178 42 पू.	–05 12	180 00 पू.	–06 30
Rotuma Island	12 30 द.	177 05 पू.	–11 40	180 00 पू.	–06 30
Taveuni	16 51 द.	179 58 प.	–00 08	180 00 पू.	–06 30
Vanua Levu	16 33 द.	179 15 पू.	–03 00	180 00 पू.	–06 30
Vitina	16 19 द.	179 43 पू.	–01 08	180 00 पू.	–06 30
(14) FRANCE					
Lyon	45 45 उ.	04 51 पू.	–40 36	15 00 पू.	+04 30
Paris	48 52 उ.	02 20 पू.	–50 40	15 00 पू.	+04 30
(15) Germany					
Berlin	52 32 उ.	13 25 पू.	–06 20	15 00पू.	+04 30
Bonn	50 44 उ.	07 05 पू.	–31 40	15 00पू.	+04 30
(16) GREECE					
Piraievs (Piraeus)	37 57 उ.	23 38 पू.	–25 28	30 00पू.	+03 30
(17) HONGKONG (CHINA का भाग)					
Kwun Tong	22 19 उ.	114 12 पू.	–23 12	120 00 पू.	–02 30
Tai Tong	22 25 उ.	114 01 पू.	–23 56	120 00 पू.	–02 30
(18) Indonesia [यह देश तीन कालक्षेत्रों में विभाजित है] [105°-00 पू., 120°-00 पू., 135°-00 पू.,]					
Jambi	01 42 द.	103 34 पू.	–05 44	105 00 पू.	–01 30
Jakarta	06 10 द.	106 48 पू.	+07 12	105 00 पू.	–01 30
(19) IRAN					
Tehran	35 40 उ.	51 26 पू.	–04 16	52 30 पू.	+02 00
(20) IRAQ					
Baghdad	33 21 उ.	44 25 पू.	–02 20	45 00 पू.	+02 30
(21) IRELAND					
Dublin	53 20 उ.	06 15 प.	–25 00	00 00	+05 30
(22) ITALY					
Brescia	45 33 उ.	10 15 पू.	–19 00	15 00 पू.	+04 30
Monza	45 35 उ.	09 16 पू.	–22 56	15 00 पू.	+04 30
Lucca	43 50 उ.	10 29 पू.	–18 04	15 00 पू.	+04 30
Milano (Milan)	45 28 उ.	09 12 पू.	–23 12	15 00 पू.	+04 30
Rho	45 32 उ.	09 02 पू.	–23 52	15 00 पू.	+04 30
Rome	41 54 उ.	12 29 पू.	–10 04	15 00 पू.	+04 30

नगर	अक्षांश उ.=North द.=South अं. क.	रेखांश पू.=East प..=West अं. क.	स्टै. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन (मानक रेखांश) अं. क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
(23) JAPAN					
Tokyo	35 42 उ.	139 46 पू.	+19 04	135 00 पू.	−03 30
(24) KENYA					
Mombasa	04 03 द.	39 40 पू.	−21 20	45 00 पू.	+02 30
Nairobi	01 17 द.	36 49 पू.	−32 44	45 00 पू.	+02 30
(25) KOREA (South)					
Seoul	37 33 उ.	126 58 पू.	−32 08	135 00 पू.	−03 30
(26) KUWAIT					
AL-Kuwayt	29 20 उ.	47 59 पू.	+11 56	45 00 पू.	+02 30
AL-Jahrah	29 20 उ.	47 40 पू.	+10 40	45 00 पू.	+02 30
(27) MALAYSIA					
Kualalumpur	03 10 उ.	101 42 पू.	−73 12	120 00 पू.	−02 30
(28) MAURITIUS					
Port Louis	20 10 द.	57 30 पू.	−10 00	60 00 पू.	+01 30
(29) NEPAL					
Kathmandu	27 43 उ.	85 19 पू.	−03 44	86 15 पू.	−00 15
(30) NETHERLANDS (HOLLAND)					
Amsterdam	52 22 उ.	04 54 पू.	−40 24	15 00 पू.	+04 30
(31) NEW-ZEALAND					
Auckland	36 52 द.	174 46 पू.	−20 56	180 00 पू.	−06 30
Christchurch	43 32 द.	172 38 पू.	−29 28	180 00 पू.	−06 30
Hamilton	37 47 द.	175 17 पू.	−18 52	180 00 पू.	−06 30
Napier	39 29 द.	176 55 पू.	−12 20	180 00 पू.	−06 30
Wellington	41 18 द.	174 47 पू.	−20 52	180 00 पू.	−06 30
(32) NORWAY					
Drammen	59 44 उ.	10 15 पू.	−19 00	15 00 पू.	+04 30
Oslo	59 55 उ.	10 45 पू.	−18 00	15 00 पू.	+04 30
(33) OMAN					
Muscat	23 37 उ.	58 35 पू.	−05 40	60 00 पू.	+01 30
(34) PAKISTAN					
Islamabad	33 42 उ.	73 10 पू.	−07 20	75 00 पू.	+00 30
Karachi	24 52 उ.	67 03 पू.	−31 48	75 00 पू.	+00 30
Lahore	31 35 उ.	74 18 पू.	−02 48	75 00 पू.	+00 30
Multan	30 11 उ.	71 29 पू.	−14 04	75 00 पू.	+00 30
Sialkot	32 30 उ.	74 31 पू.	−01 56	75 00 पू.	+00 30
(35) PHILIPPINES					
Manila	14 35 उ.	121 00 पू.	+04 00	120 00 पू.	−02 30
Olongapo	14 50 उ.	120 16 पू.	+01 04	120 00 पू.	−02 30
(36) PORTUGAL [Standard Meridian—G.M.T.—0°-00′]					
Lisbon	38 43 उ.	09 08 प.	−36 32	00 00 पू.	+05 30
(37) QATAR					
Doha	25 17 उ.	51 32 पू.	+26 08	45 00 पू.	+02 30
(38) RUSSIA [यह देश भी अलग-अलग कालक्षेत्रों में बंटा हुआ है।]					
Moscow	55 45 उ.	37 35 पू.	−29 40	45 00 पू.	+02 30
(39) SAUDI-ARABIA					
Al-Mubarraz	22 17 उ.	46 44 पू.	+06 56	45 00 पू.	+02 30
Riyadh	24 38 उ.	46 43 पू.	+06 52	45 00 पू.	+02 30
Jiddah	21 30 उ.	39 12 पू.	−23 12	45 00 पू.	+02 30
(40) SINGAPORE					
Singapore	01 17 उ.	103 51 पू.	−64 36	120 00 पू.	−02 30
(41) SOUTH-AFRICA					
Cape Town	33 55 द.	18 22 पू.	−46 32	30 00 पू.	+03 30
Durban	29 55 द.	30 56 पू.	+03 44	30 00 पू.	+03 30
East London	33 00 द.	27 55 पू.	−08 20	30 00 पू.	+03 30
Johannesburg	26 15 द.	28 00 पू.	−08 00	30 00 पू.	+03 30
Port-Elizabeth	33 58 द.	25 40 पू.	−17 20	30 00 पू.	+03 30
(42) SPAIN					
Barcelona	41 23 उ.	02 11 पू.	−51 16	15 00 पू.	+04 30
Madrid	40 24 उ.	03 41 प.	−74 44	15 00 पू.	+04 30
Manresa	41 44 उ.	01 50 प.	−67 20	15 00 पू.	+04 30
Salamanca	40 58 उ.	05 39 प.	−82 26	15 00 पू.	+04 30
San Fernando	36 28 उ.	06 12 प.	−84 48	15 00 पू.	+04 30
(43) SRI-LANKA					
Colombo	06 56 उ.	79 51 पू.	−40 36	90 00 पू.	−00 30
Jaffna	09 40 उ.	80 00 पू.	−40 00	90 00 पू.	−00 00
Kandy	07 18 उ.	80 38 पू.	−37 28	90 00 पू.	−00 00
(44) Switzerland					
Berne	46 57 उ.	07 26 पू.	−30 16	15 00 पू.	+04 30
Geneva	46 12 उ.	06 09 पू.	−35 24	15 00 पू.	+04 30
(45) UNITED-ARAB-EMIRATES					
Abudhabi	24 28 उ.	54 22 पू.	−22 32	60 00 पू.	+01 30
Sharjah	25 22 उ.	55 23 पू.	−18 28	60 00 पू.	+01 30
Dubai	25 18 उ.	55 18 पू.	−18 48	60 00 पू.	+01 30
(46) ZIMBABWE					
Harare	17 50 द.	31 03 पू.	+04 08	30 00 पू.	+03 30

मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी से विश्व के किसी भी नगर का सूर्योदयास्त निकालें

ज्योतिष शास्त्र में सूर्योदयास्त की उपयोगिता सर्वविदित है। पृथ्वी पर सभी स्थानों पर सूर्योदयास्त एवं दिनमान एक समान नहीं होता। पृथ्वी की दैनिक गति एवं परिक्रमण गति के कारण प्रत्येक स्थान पर प्रतिदिन सूर्योदय एवं अस्त काल में अन्तर पड़ता है। सूर्योदयास्तादि तथा विभिन्न स्थानों की पारस्परिक अंशात्मक दूरी जानने के लिए अभीष्ट स्थान का अक्षांश, रेखांश एवं स्टैण्डर्ड अन्तर की आवश्यकता पड़ती है। किसी नगर के स्टैण्डर्ड अन्तर की जानकारी के लिए तत्सम्बन्धी देश के मानक समय (Standard Time) के माध्यमिक मध्यान्ह (Stand. Meridian) रेखा ज्ञान होना चाहिए। भारतीय मानक समय का निर्धारण रेखांश ८२/३० पूर्व (ग्रीनविच से) एवं अक्षांश २३/११ उत्तर रेखाओं के मध्य बिन्दु पर आधारित है। इसी मध्यवर्ती रेखांश बिन्दु ८२/३० के आधार पर भारत में स्थित अन्य नगरों की अंशात्मक दूरी (Standard difference) ४ मिंट प्रति एक अंश के अनुपात से ऋण (−) अथवा जमा (+) किया जाता है। जो भारतीय नगर ८२°/३० रेखांश से पश्चिम में पड़ेंगे, वहां का देशान्तर (स्टै० अन्तर) ऋण (−) लिखा जाता है तथा जो भा० नगर ८२°/३०' के पूर्व में पड़ेंगे, वहां का स्टै० अन्तर जमा (+) में अंकित किया जाता है।

गत पृष्ठों पर लिखे गए प्राव: सभी नगर ८२°/३०' पू० **रेखांश से पश्चिम** में स्थित होने के कारण, **उनका रेखांतर** (स्टैण्डर्ड अन्तर) ऋण (−) लिखा गया है, जबकि अपने नगर का सूर्योदय-अस्त जानने के लिए नगर के आगे लिखे हुए स्टै० अन्तर को स्थानीय मध्यम सूर्योदयास्त अक्षांश सारणी में प्राप्त सूर्योदयास्त में जमा (+) करके अभीष्ट नगर का सूर्योदयास्त पता चलेगा।

यदि आपके नगर के अक्षांश (अंश कला में) मध्यम अक्षांश सारिणी में दिए सूर्योदयादि से कम या अधिक हो तो आप अभीष्ट तिथि से सूर्योदय-अस्त में अनुपातिक विधि से मिंट/सैकिंडज़ का संस्कार करके अभीष्ट तिथि का सूर्योदयास्त निकाल सकते हैं। **इस दृश्यमान सूर्योदयास्त में अपने अक्षांश भेद के अनुसार लगभग ३ मिंट जमा करने (किरणवक्री भवन संस्कार) से शुद्ध शास्त्रीय मान (इष्टकालिक) का सूर्योदयास्त प्राप्त हो जायेगा।**

उदाहरण—मान लो, आपको 2 फर. को सोनीपत का सूर्योदय ज्ञात करना है। सर्वप्रथम सोनीपत के अक्षांश, रेखांश ज्ञात करेंगे। गत पृष्ठों में देखने से हमें सोनीपत का अक्षांश 28/58, रेखांश 77°/01′ तथा स्टैं. अन्तर −21/56 मिं. सै. प्राप्त हुआ है। सारिणी में अक्षांश २५ से ३० के मध्य अनुपातिक विधि से देखने पर हमें सू. उ. 6/49 प्राप्त हुआ। इसमें स्टैं. अन्तर (−21 मिं.−56 सैं.) अर्थात् २२ मिनट जमा करने (क्योंकि स्टैं. अन्तर ऋण है अथवा यूं कहिए सोनीपत ८२°/३० रेखांश के पश्चिम में है) से सूर्योदय 7/11 प्राप्त हुए। इसमें ३ मिनट शास्त्रीय समय भी जमा करने से शुद्ध इष्टकालिक सूर्योदय प्राप्त होगा। अर्थात् 7/14

आगे लिखे अक्षांशों में भारत के अतिरिक्त विदेशों के भी जैसे-इंग्लैण्ड, कैनेडा, अमरीका आदि नगरों के सूर्योदयास्त सुगमता से ज्ञात किए जा सकते हैं।

ध्यान रहे, **भारत के अधिकांश नगरों के अक्षांश १०° से ३५° अक्षांश तक ही पड़ते हैं, शेष अक्षांश विदेशी नगरों के हैं।**

—शुभचिन्तक पं. विवेक शर्मा गणितकर्त्ता

नीचे उत्तरी अक्षांशों के अनुसार स्वदेशीय (लोकल) मध्यम सूर्योदयास्त लिख रहे हैं इनमें अपने अभीष्ट अक्षांश का स्टै. अन्तर + या − करने से स्टै. टा. में सू. उ. व सू. अ. निकल आएगा।

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.
जनवरी	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1 जन	6 17	17 49	6 35	17 31	6 45	17 21	6 56	17 10	7 08	16 58	7 22	16 44	7 39	16 28	7 59	16 08	8 08	15 58	8 19	15 47
3 ,,	6 18	17 51	6 36	17 33	6 46	17 24	6 56	17 13	7 08	17 00	7 22	16 46	7 39	16 31	7 59	16 11	8 08	16 01	8 19	15 50
5 ,,	6 18	17 52	6 36	17 34	6 46	17 25	6 57	17 14	7 09	17 02	7 22	16 49	7 38	16 33	7 59	16 13	8 08	16 04	8 19	15 53
7 ,,	6 19	17 53	6 37	17 35	6 47	17 27	6 57	17 16	7 09	17 04	7 22	16 51	7 38	16 35	7 58	16 16	8 07	16 07	8 18	15 56
9 ,,	6 20	17 54	6 37	17 36	6 47	17 28	6 57	17 17	7 09	17 05	7 22	16 53	7 38	16 37	7 58	16 18	8 06	16 09	8 17	15 59
11 ,,	6 20	17 55	6 38	17 38	6 47	17 29	6 57	17 18	7 09	17 07	7 22	16 55	7 37	16 40	7 57	16 21	8 05	16 11	8 15	16 02
13 ,,	6 21	17 56	6 38	17 39	6 47	17 30	6 57	17 20	7 08	17 09	7 21	16 57	7 37	16 42	7 56	16 23	8 04	16 14	8 14	16 04
15 ,,	6 22	17 58	6 38	17 40	6 47	17 31	6 57	17 22	7 08	17 11	7 21	16 59	7 36	16 44	7 55	16 26	8 03	16 17	8 12	16 08
17 ,,	6 22	17 59	6 38	17 41	6 47	17 33	6 57	17 24	7 08	17 13	7 20	17 01	7 35	16 47	7 54	16 29	8 01	16 21	8 10	16 12
19 ,,	6 23	18 00	6 38	17 42	6 47	17 34	6 56	17 25	7 07	17 15	7 19	17 03	7 33	16 50	7 52	16 32	7 59	16 24	8 08	16 15
21 ,,	6 23	18 01	6 38	17 43	6 47	17 35	6 56	17 27	7 06	17 17	7 18	17 06	7 32	16 52	7 50	16 35	7 57	16 27	8 06	16 19
23 ,,	6 23	18 02	6 38	17 44	6 46	17 38	6 55	17 29	7 05	17 19	7 17	17 08	7 30	16 55	7 48	16 39	7 54	16 30	8 04	16 23
25 ,,	6 23	18 03	6 37	17 46	6 46	17 40	6 55	17 31	7 04	17 21	7 16	17 10	7 29	16 58	7 45	16 42	7 52	16 34	8 00	16 27
27 ,,	6 23	18 04	6 37	17 48	6 45	17 42	6 54	17 33	7 03	17 23	7 14	17 13	7 27	16 01	7 42	16 45	7 49	16 38	7 57	16 31
29 ,,	6 23	18 05	6 37	17 49	6 45	17 43	6 53	17 34	7 02	17 25	7 13	17 15	7 25	16 04	7 40	16 48	7 47	16 42	7 54	16 35
31 ,,	6 23	18 05	6 37	17 51	6 44	17 44	6 52	17 36	7 01	17 27	7 11	17 18	7 23	16 07	7 37	16 52	7 44	16 46	7 51	16 39

7 37 | 16 52 | 7 44 | 16 46 | 7 51 | 16 39

तारीख	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश [illegible]		अक्षांश [illegible]		अक्षांश [illegible]		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.
फरवरी	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
2 फर	6 23	18 06	6 36	17 52	6 43	17 45	6 50	17 37	6 59	17 29	7 09	17 20	7 21	17 09	7 34	16 56	7 41	16 50	7 48	16 43
4 ,,	6 22	18 06	6 35	17 53	6 41	17 47	6 49	17 39	6 58	17 31	7 07	17 23	7 18	17 12	7 32	17 00	7 38	16 54	7 44	16 47
6 ,,	6 22	18 07	6 34	17 54	6 40	17 49	6 48	17 41	6 56	17 33	7 05	17 25	7 16	17 15	7 28	17 03	7 34	16 57	7 41	16 51
8 ,,	6 22	18 07	6 34	17 55	6 39	17 50	6 47	17 42	6 54	17 35	7 03	17 27	7 13	17 17	7 25	17 07	7 31	17 01	7 37	16 55
10 ,,	6 21	18 08	6 33	17 56	6 38	17 50	6 45	17 44	6 52	17 37	7 01	17 30	7 10	17 20	7 22	17 10	7 27	17 05	7 33	16 59
12 ,,	6 21	18 08	6 32	17 57	6 36	17 52	6 44	17 46	6 50	17 39	6 58	17 32	7 08	17 23	7 18	17 13	7 24	17 08	7 29	17 03
14 ,,	6 20	18 08	6 31	17 58	6 36	17 53	6 42	17 47	6 48	17 41	6 56	17 34	7 05	17 26	7 15	17 16	7 20	17 12	7 25	17 07
16 ,,	6 20	18 09	6 30	17 59	6 34	17 55	6 40	17 49	6 46	17 43	6 53	17 36	7 02	17 29	7 11	17 20	7 16	17 15	7 21	17 11
18 ,,	6 19	18 09	6 28	18 00	6 33	17 56	6 38	17 50	6 43	17 45	6 51	17 39	6 58	17 32	7 08	17 23	7 12	17 19	7 17	17 15
20 ,,	6 19	18 09	6 27	18 01	6 31	17 57	6 36	17 52	6 41	17 47	6 48	17 42	6 55	17 35	7 04	17 26	7 08	17 23	7 12	17 19
22 ,,	6 18	18 10	6 26	18 02	6 30	17 58	6 35	17 53	6 39	17 49	6 45	17 44	6 52	17 38	7 00	17 29	7 04	17 27	7 08	17 23
24 ,,	6 17	18 10	6 24	18 03	6 27	17 59	6 33	17 55	6 36	17 51	6 43	17 46	6 49	17 41	6 56	17 33	7 00	17 30	7 03	17 27
26 ,,	6 16	18 10	6 23	18 03	6 26	18 00	6 30	17 56	6 34	17 53	6 40	17 48	6 46	17 43	6 52	17 36	6 55	17 33	6 59	17 31
28 ,,	6 15	18 10	6 22	18 04	6 24	18 01	6 28	17 58	6 32	17 54	6 38	17 50	6 42	17 45	6 48	17 39	6 51	17 36	6 54	17 34
1 मार्च	6 15	18 10	6 20	18 05	6 23	18 02	6 26	17 59	6 30	17 55	6 34	17 52	6 39	17 47	6 44	17 42	6 47	17 39	6 50	17 38
3 ,,	6 14	18 11	6 19	18 05	6 22	18 03	6 24	18 00	6 28	17 57	6 31	17 54	6 35	17 49	6 40	17 45	6 42	17 43	6 45	17 41
5 ,,	6 13	18 11	6 17	18 06	6 20	18 04	6 22	18 02	6 24	17 59	6 28	17 56	6 32	17 52	6 36	17 48	6 38	17 47	6 40	17 44
7 ,,	6 12	18 11	6 15	18 07	6 18	18 05	6 20	18 03	6 22	18 01	6 25	17 58	6 28	17 55	6 32	17 51	6 33	17 50	6 35	17 48
9 ,,	6 11	18 11	6 14	18-08	6 16	18 06	6 18	18 04	6 20	18 02	6 22	18 00	6 26	17 58	6 28	17 55	6 29	17 54	6 30	17 52
11 ,,	6 10	18 11	6 12	18 08	6 14	18 07	6 15	18 05	6 17	18 04	6 19	18 03	6 21	18 00	6 23	17 58	6 24	17 57	6 26	17 56
13 ,,	6 08	18 11	6 11	18.09	6 12	18 08	6 13	18 07	6 14	18 06	6 16	18 05	6 17	18 03	6 19	18 01	6 20	18 01	6 21	18 00
15 ,,	6 07	18 11	6 09	18 10	6 10	18 09	6 10	18 08	6 11	18 07	6 12	18 08	6 13	18 07	6 15	18 05	6 15	18 04	6 16	18 03
17 ,,	6 06	18 11	6 08	18 10	6 08	18 10	6 08	18 09	6 09	18 09	6 09	18 09	6 10	18 08	6 10	18 08	6 11	18 08	6 12	18 07
19 ,,	6 05	18 11	6 05	18 11	6 06	18 10	6 06	18 10	6 06	18 10	6 06	18 11	6 06	18 10	6 06	18 11	6 06	18 11	6 06	18 11
21 ,,	6 04	18 11	6 04	18 11	6 04	18 11	6 03	18 12	6 02	18 12	6 02	18 13	6 02	18 13	6 02	18 14	6 01	18 15	6 01	18 15
23 ,,	6 03	18 11	6 03	18 12	6 02	18 12	6 01	18 13	5 59	18 14	5 59	18 15	5 58	18 16	5 57	18 17	5 57	18 18	5 56	18 19
25 ,,	6 02	18 11	6 02	18 12	6 00	18 13	5 58	18 14	5 56	18 15	5 56	18 17	5 55	18 19	5 53	18 21	5 52	18 21	5 51	18 22
27 ,,	6 00	18 11	6 00	18 12	5 57	18 14	5 56	18 15	5 53	18 16	5 53	18 19	5 51	18 21	5 48	18 24	5 47	18 24	5 46	18 26
29 ,,	5 59	18 11	5 57	18 13	5 55	18 15	5 53	18 17	5 50	18 18	5 50	18 21	5 47	18 24	5 44	18 27	5 43	18 28	5 41	18 30
31 ,,	5 58	18 10	5 55	18 13	5 53	18 16	5 51	18 18	5 46	18 20	5 46	18 23	5 43	18 26	5 42	18 30	5 39	18 31	5 34	18 33
2 अप्रै	5 57	18 10	5 53	18 14	5 51	18 17	5 49	18 19	5 45	18 22	5 43	18 25	5 40	18 29	5 40	18 33	5 34	18 31	5 31	18 37
4 ,,	5 56	19 10	5 51	18 14	5 49	18 17	5 46	18 20	5 43	18 23	5 40	18 27	5 36	18 31	5 36	18 36	5 29	18 38	5 26	18 41
6 ,,	5 55	18 10	5 50	18 15	5 47	18 18	5 44	18 21	5 41	18 25	5 37	18 29	5 32	18 34	5 32	18 39	5 26	18 42	5 22	18 45
8 ,,	5 54	18 10	5 48	18 16	5 45	18 19	5 42	18 22	5 38	18 26	5 34	18 31	5 29	18 36	5 29	18 42	5 19	18 45	5 17	18 48
10 ,,	5 52	18 10	5 46	18 17	5 43	18 20	5 40	18 24	5 35	18 28	5 31	18 33	5 25	18 39	5 25	18 46	5 14	18 49	5 12	18 52
12 ,,	5 51	18 10	5 45	18 17	5 41	18 21	5 38	18 25	5 33	18 29	5 28	18 35	5 21	18 41	5 21	18 49	5 11	18 52	5 07	18 56
14 ,,	5 50	18 10	5 43	18 18	5 39	18 22	5 35	18 26	5 30	18 31	5 24	18 37	5 18	18 44	5 18	18 52	5 06	18 56	5 02	19 00
16 ,,	5 49	18 10	5 41	18 18	5 37	18 23	5 33	18 27	5 27	18 32	5 21	18 39	5 14	18 46	5 14	18 55	5 02	18 59	4 58	19 04
18 ,,	5 48	18 10	5 40	18 19	5 36	18 24	5 30	18 29	5 25	18 34	5 18	18 41	5 12	18 49	5 12	18 58	4 58	19 02	4 53	19 07
20 ,,	5 47	18 11	5 39	18 19	5 34	18 24	5 28	18 30	5 22	18 36	5 16	18 43	5 08	18 51	5 08	19 01	4 53	19 04	4 48	19 11
22 ,,	5 46	18 11	5 37	18 20	5 32	18 25	5 26	18 31	5 20	18 38	5 13	18 45	5 04	18 54	5 04	19 04	4 49	19 09	4 44	19 15
24 ,,	5 45	18 11	5 36	18 20	5 31	18 26	5 24	18 32	5 17	18 39	5 10	18 47	5 01	18 56	5 01	19 07	4 45	19 13	4 39	19 18

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.
अप्रैल	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
26 अप्रै	5 45	18 11	5 34	18 21	5 29	18 27	5 22	18 34	5 15	18 41	5 08	18 49	4 58	18 59	4 58	19 11	4 41	19 16	4 35	19 22
28 ,,	5 44	18 11	5 33	18 22	5 27	18 28	5 20	18 35	5 13	18 43	5 04	18 51	4 54	19 01	4 54	19 14	4 37	19 19	4 31	19 25
30 ,,	5 43	18 11	5 32	18 23	5 26	18 29	5 18	18 36	5 11	18 44	5 02	18 53	4 51	19 04	4 51	19 17	4 33	19 23	4 26	19 29
2 मई	5 42	18 12	5 30	18 23	5 24	18 30	5 16	18 38	5 09	18 46	4 59	18 55	4 48	19 06	4 35	19 20	4 29	19 26	4 22	19 33
4 ,,	5 42	18 12	5 29	18 24	5 23	18 31	5 15	18 39	5 07	18 47	4 57	18 57	4 45	19 09	4 32	19 23	4 25	19 29	4 18	19 37
6 ,,	5 41	18 12	5 28	18 25	5 21	18 32	5 13	18 40	5 05	18 49	4 54	18 59	4 43	19 11	4 28	19 26	4 22	19 32	4 14	19 40
8 ,,	5 40	18 12	5 27	18 26	5 20	18 33	5 12	18 41	5 03	18 51	4 52	19 01	4 40	19 14	4 25	19 29	4 18	19 36	4 10	19 44
10 ,,	5 40	18 13	5 26	18 26	5 19	18 34	5 11	18 42	5 01	18 53	4 50	19 03	4 37	19 16	4 20	19 32	4 15	19 39	4 06	19 47
12 ,,	5 40	18 13	5 25	18 27	5 18	18 35	5 09	18 44	4 59	18 54	4 48	19 05	4 35	19 19	4 17	19 35	4 11	19 42	4 03	19 51
14 ,,	5 39	18 14	5 24	18 28	5 17	18 36	5 07	18 46	4 57	18 56	4 46	19 07	4 32	19 21	4 14	19 37	4 08	19 45	3 59	19 54
16 ,,	5 39	18 14	5 24	18 29	5 16	18 37	5 06	18 47	4 56	18 57	4 44	19 09	4 30	19 24	4 12	19 40	4 05	19 49	3 56	19 58
18 ,,	5 38	18 14	5 23	18 30	5 15	18 38	5 05	18 48	4 54	18 59	4 42	19 11	4 28	19 26	4 09	19 43	4 02	19 52	3 53	20 01
20 ,,	5 38	18 15	5 22	18 31	5 14	18 39	5 04	18 49	4 53	19 00	4 41	19 13	4 26	19 28	4 07	19 46	3 59	19 55	3 50	20 04
22 ,,	5 38	18 15	5 22	18 31	5 13	18 40	5 03	18 50	4 52	19 02	4 39	19 15	4 24	19 30	4 04	19 48	3 57	19 58	3 47	20 07
24 ,,	5 38	18 16	5 21	18 32	5 12	18 41	5 02	18 51	4 51	19 03	4 38	19 16	4 22	19 32	4 02	19 51	3 54	20 00	3 44	20 10
26 ,,	5 38	18 16	5 21	18 33	5 11	18 42	5 01	18 52	4 50	19 05	4 36	19 18	4 21	19 34	4 01	19 53	3 52	20 03	3 42	20 13
28 ,,	5 38	18 17	5 20	18 34	5 11	18 43	5 00	18 54	4 49	19 06	4 35	19 19	4 19	19 36	3 59	19 56	3 50	20 05	3 39	20 16
30 ,,	5 38	18 17	5 20	18 34	5 11	18 44	5 00	18 55	4 48	19 07	4 34	19 20	4 18	19 38	3 58	19 58	3 48	20 08	3 37	20 18
1 जून	5 38	18 18	5 20	18 35	5 10	18 45	4 59	18 56	4 47	19 08	4 33	19 22	4 17	19 39	3 56	20 00	3 46	20 10	3 35	20 21
3 ,,	5 38	18 18	5 20	18 36	5 10	18 46	4 59	18 57	4 47	19 09	4 32	19 24	4 16	19 41	3 55	20 02	3 45	20 12	3 33	20 23
5 ,,	5 38	18 19	5 20	18 37	5 10	18 47	4 58	18 58	4 46	19 10	4 32	19 25	4 15	19 42	3 53	20 04	3 43	20 14	3 32	20 26
7 ,,	5 38	18 19	5 20	18 37	5 10	18 48	4 58	18 59	4 46	19 11	4 31	19 27	4 14	19 44	3 52	20 06	3 42	20 16	3 30	20 28
9 ,,	5 39	18 20	5 20	18 38	5 10	18 49	4 58	19 00	4 46	19 12	4 31	19 28	4 14	19 45	3 52	20 07	3 41	20 18	3 29	20 30
11 ,,	5 39	18 20	5 20	18 39	5 10	18 50	4 58	19 01	4 45	19 13	4 30	19 29	4 13	19 46	3 51	20 08	3 41	20 20	3 28	20 31
13 ,,	5 39	18 21	5 20	18 40	5 10	18 51	4 58	19 01	4 45	19 14	4 30	19 30	4 12	19 48	3 50	20 10	3 40	20 22	3 27	20 34
15 ,,	5 39	18 21	5 20	18 40	5 10	18 51	4 59	19 02	4 46	19 15	4 30	19 31	4 12	19 49	3 50	20 11	3 39	20 22	3 27	20 35
17 ,,	5 39	18 22	5 21	18 41	5 10	18 51	4 59	19 03	4 46	19 16	4 31	19 31	4 13	19 49	3 50	20 12	3 39	20 23	3 27	20 36
19 ,,	5 40	18 22	5 21	18 41	5 11	18 52	4 59	19 03	4 46	19 16	4 31	19 32	4 13	19 50	3 50	20 12	3 39	20 23	3 27	20 36
21 ,,	5 40	18 23	5 22	18 42	5 11	18 52	5 00	19 04	4 47	19 17	4 31	19 32	4 13	19 50	3 51	20 13	3 40	20 23	3 27	20 36
23 ,,	5 41	18 23	5 22	18 42	5 12	18 53	5 00	19 04	4 47	19 17	4 33	19 33	4 14	19 51	3 52	20 13	3 41	20 24	3 28	20 36
25 ,,	5 41	18 24	5 23	18 43	5 12	18 53	5 01	19 05	4 48	19 17	4 33	19 33	4 15	19 51	3 53	20 13	3 41	20 24	3 29	20 36
27 ,,	5 42	18 24	5 23	18 43	5 13	18 53	5 01	19 05	4 48	19 18	4 34	19 33	4 16	19 51	3 54	20 13	3 43	20 24	3 29	20 36
29 ,,	5 42	18 24	5 24	18 43	5 13	18 53	5 02	19 05	4 49	19 18	4 34	19 33	4 17	19 51	3 54	20 13	3 43	20 24	3 32	20 36
1 जुला	5 42	18 24	5 24	18 43	5 14	18 53	5 02	19 05	4 49	19 18	4 34	19 32	4 17	19 50	3 54	20 12	3 44	20 23	3 32	20 35
3 ,,	5 43	18 25	5 24	18 43	5 15	18 54	5 03	19 05	4 50	19 17	4 35	19 32	4 18	19 50	3 56	20 12	3 45	20 22	3 33	20 34
5 ,,	5 44	18 25	5 25	18 43	5 15	18 53	5 04	19 05	4 51	19 17	4 37	19 31	4 19	19 49	3 58	20 11	3 47	20 21	3 35	20 33
7 ,,	5 44	18 25	5 26	18 43	5 16	18 53	5 05	19 04	4 52	19 17	4 38	19 31	4 20	19 49	4 00	20 10	3 49	20 20	3 37	20 32
9 ,,	5 45	10 25	5 27	18 43	5 17	18 53	5 06	19 04	4 53	19 16	4 39	19 31	4 22	19 48	4 02	20 09	3 51	20 14	3 40	20 30
11 ,,	5 45	18 25	5 27	18 43	5 18	18 53	5 07	19 04	4 54	19 16	4 40	19 30	4 24	19 47	4 04	20 07	3 53	20 17	3 42	20 28
13 ,,	5 46	18 25	5 28	18 43	5 19	18 53	5 08	19 03	4 56	19 15	4 42	19 29	4 25	19 45	4 06	20 05	3 55	20 16	3 44	20 26
15 ,,	5 46	18 25	5 29	18 43	5 20	18 52	5 09	19 02	4 57	19 14	4 43	19 28	4 27	19 44	4 08	20 04	3 57	20 14	3 47	20 24
17 ,,	5 47	18 25	5 29	18 42	5 21	18 52	5 10	19 01	4 58	19 13	4 45	19 27	4 29	19 42	4 10	20 02	4 00	20 12	3 50	20 22

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश [illegible]		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख जुलाई	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.
19जुला	5 47	18 25	5 30	18 42	5 22	18 51	5 11	19 01	4 59	19 12	4 46	19 25	4 31	19 41	4 12	20 00	4 03	20 09	3 52	20 19
21 ,,	5 47	18 25	5 31	18 41	5 22	18 50	5 12	19 00	5 01	19 11	4 48	19 24	4 33	19 39	4 14	19 57	4 06	20 07	3 55	20 17
23 ,,	5 47	18 25	5 32	18 41	5 23	18 49	5 13	18 59	5 02	19 10	4 50	19 22	4 35	19 37	4 16	19 55	4 08	20 04	3 58	20 14
25 ,,	5 48	18 24	5 32	18 40	5 24	18 48	5 14	18 58	5 04	19 08	4 51	19 21	4 37	19 35	4 19	19 53	4 11	20 01	4 01	20 11
27 ,,	5 48	18 24	5 33	18 39	5 25	18 47	5 15	18 57	5 05	19 07	4 53	19 19	4 39	19 33	4 22	19 50	4 14	19 58	4 04	20 07
29 ,,	5 49	18 23	5 34	18 38	5 26	18 46	5 17	18 55	5 07	19 05	4 55	19 17	4 41	19 31	4 24	19 47	4 17	19 55	4 07	20 04
31 ,,	5 49	18 23	5 35	18 37	5 27	18 45	5 17	18 54	5 08	19 04	4 57	19 15	4 44	19 28	4 27	19 44	4 20	19 52	4 11	20 01
2 अग	5 50	18 22	5 35	18 36	5 28	18 44	5 19	18 52	5 09	19 02	4 59	19 13	4 46	19 25	4 30	19 41	4 23	19 48	4 14	19 57
4 ,,	5 50	18 22	5 36	18 35	5 29	18 43	5 20	18 51	5 11	19 00	5 00	19 11	4 48	19 23	4 33	19 38	4 26	19 45	4 18	19 53
6 ,,	5 50	18 21	5 36	18 34	5 30	18 42	5 22	18 50	5 12	18 58	5 02	19 08	4 50	19 20	4 36	19 34	4 28	19 42	4 21	19 49
8 ,,	5 50	18 21	5 37	18 33	5 31	18 40	5 23	18 48	5 14	18 56	5 04	19 06	4 53	19 18	4 39	19 31	4 32	19 38	4 25	19 45
10 ,,	5 50	18 20	5 38	18 32	5 32	18 39	5 25	18 46	5 16	18 54	5 06	19 03	4 55	19 15	4 42	19 28	4 35	19 34	4 28	19 45
12 ,,	5 51	18 19	5 39	18 31	5 33	18 37	5 26	18 44	5 17	18 52	5 08	19 01	4 57	19 12	4 45	19 24	4 38	19 30	4 32	19 37
14 ,,	5 51	18 18	5 39	18 30	5 33	18 35	5 27	18 42	5 19	18 49	5 10	18 58	5 00	19 08	4 47	19 21	4 42	19 26	4 35	19 32
16 ,,	5 51	18 17	5 40	18 28	5 34	18 34	5 28	18 40	5 20	18 47	5 12	18 56	5 02	19 05	4 51	19 17	4 45	19 22	4 39	19 28
18 ,,	5 51	18 16	5 41	18 26	5 35	18 32	5 29	18 38	5 22	18 45	5 14	18 23	5 04	19 02	4 53	19 13	4 48	19 18	4 42	19 23
20 ,,	5 51	18 15	5 41	18 25	5 36	18 30	5 30	18 36	5 23	18 43	5 16	18 50	5 07	18 59	4 57	19 09	4 51	19 14	4 46	19 19
22 ,,	5 51	18 14	5 42	18 23	5 37	18 28	5 32	18 34	5 25	18 40	5 18	18 47	5 09	18 56	4 59	19 05	4 55	10 10	4 49	19 15
24 ,,	5 51	18 13	4 42	18 22	5 38	18 27	5 33	18 32	5 26	18 37	5 19	18 44	5 12	18 52	5 02	19 01	4 58	19 06	4 53	19 10
26 ,,	5 51	18 12	5 43	18 20	5 39	18 25	5 34	18 29	5 28	18 34	5 21	18 41	5 14	18 49	5 05	18 57	5 01	19 02	4 57	19 05
28 ,,	5 51	18 11	5 43	18 19	5 39	18 23	5 35	18 27	5 29	18 32	5 23	18 38	5 16	18 45	5 08	18 53	5 04	18 57	5 00	19 01
30 ,,	5 51	18 10	5 44	18 17	5 40	18 21	5 36	18 25	5 31	18 29	5 25	18 35	5 19	18 41	5 11	18 49	5 08	18 53	5 04	18 56
1 सितं	5 51	19 09	5 44	18 15	5 41	18 19	5 37	18 23	5 32	18 27	5 27	18 32	5 22	18 38	5 14	18 45	5 11	18 48	5 08	18 51
3 ,,	5 51	18 08	5 45	18 13	5 42	18 17	5 38	18 20	5 34	18 24	5 29	18 29	5 24	18 34	5 16	18 41	5 14	18 43	5 11	18 47
5 ,,	5 51	18 07	5 46	18 12	5 42	18 15	5 39	18 18	5 35	18 21	5 31	18 26	5 26	18 30	5 20	18 36	5 17	18 39	5 15	18 42
7 ,,	5 50	18 06	5 46	18 10	5 43	18 12	5 40	18 15	5 37	18 18	5 33	18 23	5 28	18 27	5 23	18 31	5 21	18 34	5 18	18 37
9 ,,	5 50	18 04	5 46	18 08	5 44	18 10	5 41	18 13	5 38	18 16	5 35	18 11	5 31	18 23	5 26	18 27	5 24	18 29	5 22	18 32
11 ,,	5 50	18 03	5 46	18 07	5 44	18 08	5 42	18 10	5 39	18 13	5 37	18 16	5 33	18 19	5 29	18 23	5 27	18 24	5 25	18 27
13 ,,	5 50	18 02	5 47	18 05	5 45	18 06	5 43	18 08	5 41	18 10	5 39	18 13	5 36	18 15	5 32	18 19	5 30	18 20	5 29	18 22
15 ,,	5 50	18 00	5 47	18 03	5 46	18 04	5 44	18 05	5 42	18 07	5 40	18 10	5 38	18 11	5 34	18 14	5 34	18 16	5 32	18 17
17 ,,	5 50	17 59	5 48	18 01	5 47	18 02	5 45	18 03	5 44	18 04	5 42	18 06	5 41	18 08	5 38	18 10	5 37	18 11	5 36	18 12
19 ,,	5 49	17 58	5 48	17 59	5 47	18 00	5 46	18 01	5 45	18 02	5 44	18 03	5 43	18 04	5 41	18 06	5 41	18 06	5 40	18 07
21 ,,	5 49	17 57	5 48	17 57	5 48	17 58	5 47	17 58	5 47	17 59	5 46	17 59	5 45	18 00	5 44	18 01	5 44	18 01	5 43	18 02
23 ,,	5 49	17 55	5 49	17 55	5 49	17 55	5 49	17 56	5 48	17 56	5 48	17 56	5 48	17 56	5 47	17 56	5 47	17 56	5 47	17 57
25 ,,	5 49	17 54	5 49	17 54	5 50	17 53	5 50	17 53	5 50	17 53	5 50	17 53	5 50	17 52	5 50	17 52	5 50	17 52	5 50	17 52
27 ,,	5 49	17 53	5 50	17 52	5 51	17 51	5 51	17 50	5 51	17 50	5 52	17 50	5 52	17 48	5 53	17 48	5 53	17 48	5 54	17 47
29 ,,	5 49	17 52	5 51	17 50	5 51	17 49	5 52	17 48	5 53	17 47	5 54	17 46	5 55	17 45	5 56	17 43	5 57	17 43	5 58	17 42
1 अक्तू	5 49	17 51	5 51	17 48	5 52	17 47	5 53	17 46	5 54	17 44	5 56	17 43	5 57	17 41	5 59	17 38	6 00	17 39	6 01	17 37
3 ,,	5 49	17 49	5 51	17 46	5 53	17 45	5 54	17 43	5 56	17 41	5 58	17 40	6 00	17 37	6 03	17 35	6 03	17 34	6 05	17 32
5 ,,	5 48	17 48	5 52	17 44	5 54	17 43	5 55	17 40	5 57	17 38	6 00	17 37	6 02	17 33	6 06	17 30	6 07	17 29	6 08	17 27
7 ,,	5 48	17 47	5 52	17 43	5 55	17 41	5 57	17 38	5 59	17 36	6 02	17 33	6 05	17 30	6 09	17 26	6 10	17 24	6 12	17 22
9 ,,	5 48	17 46	5 53	17 42	5 55	17 39	5 58	17 36	6 01	17 33	6 04	17 30	6 07	17 27	6 12	17 22	6 14	17 19	6 16	17 17

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख अक्तूबर	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.
11 अक्तू	5 48	17 45	5 53	17 40	5 56	17 37	5 59	17 34	6 02	17 31	6 06	17 27	6 10	17 23	6 15	17 18	6 17	17 15	6 20	17 13
13 ,,	5 48	17 44	5 54	17 38	5 57	17 35	6 00	17 31	6 04	17 28	6 08	17 24	6 12	17 20	6 18	17 14	6 21	17 11	6 23	17 08
15 ,,	5 49	17 43	5 55	17 37	5 58	17 33	6 02	17 29	6 06	17 25	6 10	17 21	6 15	17 16	6 21	17 10	6 24	17 07	6 27	17 03
17 ,,	5 49	17 42	5 55	17 35	5 59	17 31	6 03	17 27	6 07	17 23	6 12	17 18	6 18	17 12	6 24	17 06	6 28	17 02	6 31	16 59
19 ,,	5 49	17 41	5 56	17 34	6 00	17 30	6 05	17 25	6 09	17 20	6 14	17 15	6 20	17 09	6 28	17 02	6 31	16 58	6 35	16 54
21 ,,	5 49	17 40	5 57	17 32	6 01	17 28	6 06	17 23	6 11	17 18	6 16	17 13	6 23	17 05	6 31	16 58	6 35	16 54	6 39	16 49
23 ,,	5 49	17 39	5 58	17 31	6 02	17 26	6 07	17 21	6 12	17 15	6 18	17 10	6 26	17 02	6 34	16 54	6 38	16 50	6 43	16 45
25 ,,	5 49	17 39	5 58	17 29	6 03	17 24	6 08	17 19	6 14	17 13	6 20	17 03	6 28	16 59	6 38	16 50	6 42	16 46	6 46	16 41
27 ,,	5 50	17 38	5 59	17 28	6 05	17 23	6 10	17 17	6 16	17 11	6 22	17 04	6 31	16 56	6 41	16 46	6 46	16 42	6 50	16 37
29 ,,	5 50	17 38	6 00	17 27	6 06	17 21	6 12	17 15	6 18	17 09	6 24	17 02	6 34	16 53	6 45	16 42	6 49	16 38	6 54	16 32
31 ,,	5 50	17 37	6 00	17 26	6 07	17 20	6 13	17 14	6 20	17 07	6 27	16 59	6 37	16 50	6 48	16 39	6 52	16 34	6 58	18 28
2 नवं.	5 51	17 37	6 02	17 24	6 08	17 11	6 14	17 12	6 22	17 05	6 30	16 56	6 39	16 47	6 51	16 35	6 56	16 30	7 02	16 24
4 ,,	5 51	17 36	6 03	17 23	6 09	17 18	6 16	17 11	6 23	17 03	6 32	16 54	6 42	16 45	6 54	16 32	7 00	16 27	7 06	16 21
6 ,,	5 52	17 36	6 04	17 23	6 10	17 17	6 18	17 09	6 25	17 01	6 34	16 52	6 45	16 42	6 57	16 29	7 03	16 23	7 10	16 17
8 ,,	5 52	17 35	6 05	17 22	6 12	17 16	6 19	17 08	6 27	16 59	6 37	16 50	6 48	16 39	7 01	16 26	7 07	16 20	7 14	16 13
10 ,,	5 53	17 35	6 06	17 22	6 13	17 15	6 21	17 06	6 29	16 57	6 39	16 48	6 50	16 37	7 04	16 23	7 10	16 17	7 17	16 09
12 ,,	5 54	17 35	6 07	17 21	6 15	17 14	6 22	17 05	6 31	16 56	6 41	16 47	6 53	16 35	7 07	16 20	7 14	16 14	7 21	16 06
14 ,,	5 54	17 35	6 08	17 21	6 16	17 13	6 24	17 04	6 33	16 55	6 44	16 45	6 56	16 33	7 11	16 17	7 18	16 11	7 25	16 03
16 ,,	5 55	17 34	6 09	17 20	6 17	17 12	6 26	17 03	6 35	16 54	6 46	16 43	6 59	16 31	7 14	16 15	7 21	16 08	7 29	16 00
18 ,,	5 56	17 34	6 11	17 20	6 18	17 12	6 27	17 03	6 37	16 53	6 48	16 41	7 01	16 29	7 17	16 12	7 25	16 05	7 33	15 57
20 ,,	5 57	17 35	6 12	17 19	6 20	17 11	6 29	17 02	6 39	16 52	6 51	16 40	7 04	16 27	7 20	16 10	7 28	16 03	7 36	15 54
22 ,,	5 58	17 35	6 13	17 19	6 21	17 11	6 31	17 01	6 41	16 51	6 53	16 39	7 07	16 25	7 23	16 08	7 31	16 00	7 40	15 51
24 ,,	5 58	17 35	6 14	17 19	6 23	17 10	6 32	17 01	6 43	16 50	6 55	16 38	7 09	16 24	7 26	16 06	7 35	15 58	7 44	15 49
26 ,,	5 59	17 35	6 15	17 19	6 24	17 10	6 34	17 00	6 45	16 50	6 57	16 37	7 12	16 22	7 29	16 04	7 38	15 56	7 47	15 47
28 ,,	6 00	17 36	6 17	17 19	6 26	17 10	6 36	17 00	6 47	16 49	6 59	16 36	7 14	16 21	7 32	16 03	7 41	15 55	7 50	15 45
30 ,,	6 01	17 36	6 18	17 19	6 28	17 10	6 37	17 00	6 49	16 49	7 01	16 36	7 17	16 21	7 35	16 02	7 44	15 53	7 54	15 43
2 दिसं.	6 02	17 37	6 19	17 19	6 29	17 10	6 39	17 00	6 51	16 58	7 03	16 35	7 19	16 20	7 38	16 01	7 47	15 52	7 57	15 42
4 ,,	6 03	17 37	6 21	17 20	6 30	17 10	6 41	17 00	6 52	16 48	7 05	16 35	7 21	16 20	7 40	16 00	7 49	15 51	8 01	15 41
6 ,,	6 04	17 38	6 22	17 20	6 32	17 10	6 42	17 00	6 54	16 48	7 07	16 35	7 23	16 19	7 43	15 59	7 52	15 50	8 04	15 39
8 ,,	6 05	17 38	6 23	17 20	6 33	17 10	6 44	17 00	6 55	16 48	7 09	16 35	7 25	16 19	7 45	15 59	7 54	15 50	8 06	15 39
10 ,,	6 06	17 39	6 24	17 21	6 34	17 11	6 45	17 00	6 57	16 48	7 11	16 35	7 27	16 18	7 47	15 58	7 57	15 49	8 09	15 38
12 ,,	6 07	17 40	6 25	17 22	6 35	17 11	6 46	17 01	6 58	16 48	7 13	16 35	7 29	16 17	7 49	15 58	7 59	15 48	8 11	15 37
14 ,,	6 08	17 41	6 27	17 23	6 37	17 12	6 48	17 01	7 0	16 49	7 14	16 35	7 31	16 19	7 51	15 58	8 1	15 48	8 13	15 37
16 ,,	6 09	17 42	6 28	17 23	6 38	17 13	6 49	17 02	7 1	16 49	7 15	16 36	7 32	16 19	7 53	15 59	8 3	15 48	8 14	15 38
18 ,,	6 10	17 43	6 29	17 24	6 39	17 14	6 50	17 03	7 2	16 50	7 17	16 36	7 33	16 20	7 54	15 59	8 4	15 49	8 16	15 38
20 ,,	6 11	17 44	6 30	17 25	6 40	17 15	6 51	17 04	7 4	16 51	7 18	16 37	7 35	16 21	7 55	16 00	8 5	15 50	8 17	15 39
22 ,,	6 12	17 45	6 31	17 26	6 41	17 16	6 52	17 05	7 5	16 52	7 19	16 38	7 36	16 21	7 56	16 00	8 6	15 51	8 18	15 39
24 ,,	6 13	17 46	6 32	17 27	6 42	17 17	6 53	17 06	7 6	16 54	7 20	16 39	7 37	16 23	7 57	16 02	8 7	15 52	8 19	15 41
26 ,,	6 14	17 47	6 33	17 28	6 43	17 18	6 54	17 07	7 6	16 55	7 21	16 41	7 37	16 24	7 58	16 03	8 8	15 53	8 19	15 42
28 ,,	6 15	17 48	6 34	17 29	6 44	17 20	6 55	17 09	7 7	16 56	7 21	16 42	7 38	16 25	7 58	16 05	8 8	15 55	8 19	15 44
30 ,,	6 16	17 49	6 34	17 30	6 45	17 21	6 56	17 10	7 8	16 57	7 22	16 44	7 38	16 26	7 59	16 07	8 8	15 57	8 19	15 46
31 ,,	6 17	17 50	6 34	17 31	6 45	17 23	6 56	17 10	7 8	16 58	7 22	16 44	7 38	16 27	7 59	16 08	8 8	15 58	8 19	15 47

हिमाचल प्रदेश के प्रमुख शहरों के सूर्योदयास्त की सारणी

हिमाचल प्रदेश के प्रमुख शहरों के सूर्योदयास्त की सारणी भा. स्टै. टाईम

नीचे हिमाचल प्रदेश के कुछ प्रमुख नगरों के सूर्योदयास्त दिए गए हैं जो किरण-वक्री भवन संस्कार रहित है। जो सूर्योदयादि इष्ट, ज्योतिष शास्त्रीय एवं धार्मिक अनुष्ठानादि कृत्यों के लिए समान रूप से उपयोगी होते हैं। किसी नगर के सूर्योदय में लगभग 2/3 मिनट घटाने तथा अस्त में 2/3 मिनट जोड़ने से किरण वक्री संस्कार सहित (Upper Limb) अर्थात् दृश्यमान सूर्योदय-सूर्यास्त होंगे।

पाठकों की सुविधा हेतु आगे प्रमुख नगरों के सूर्योदयास्त से पूर्व हिमाचल प्रदेश के विभिन्न नगरों के सूर्योदयास्त में परिवर्तन संस्कार लिख रहे हैं जिससे आप किसी भी अभीष्ट नगर का सू. उदय सुगमता पूर्वक ज्ञात कर सकते हैं।

उदाहरण—मान लीजिए करसोग में 11 अप्रैल को सूर्योदय व सूर्यास्त जानना है तो हमें जिला मण्डी के स्तम्भ (Column) में देखने से सूर्योदय 6 घण्टे 1 मिनट तथा सूर्यास्त 18 घण्टे 44 मिनट प्राप्त हुए। इन दोनों सू. उ. व सू. अ. में नीचे दी गई संस्कार तालिका में करसोग का संस्कार-1 घण्टे 04 मिनट घटाने से हमें 5 घण्टे 59 मिनट 56 सैकेण्ड और 18 घण्टे 42 मिनट 26 सैकेण्ड में प्राप्त हुए। ये करसोग के शुद्ध शास्त्रीय (जन्मपत्री निर्माण हेतु) सूर्योदय एवं सूर्यास्त होंगे।

नगर	काँगड़ा-धर्म.		हमीरपुर		ऊना		बिलासपुर		मंडी-कुल्लू		सरकाघाट		शिमला		सोलन		चम्बा		नाहन		रामपुर बुशै.	
तारीख	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
जनवरी	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	7 28	17 29	7 27	17 28	7 27	17 29	7 23	17 28	7 24	17 26	7 27	17 29	7 22	17 27	7 23	17 27	7 27	17 29	7 22	17 25	7 22	17 26
4	7 28	17 32	7 28	17 31	7 28	17 32	7 24	17 31	7 25	17 29	7 27	17 31	7 23	17 30	7 24	17 29	7 28	17 31	7 23	17 29	7 22	17 28
7	7 29	17 34	7 28	17 33	7 28	17 33	7 24	17 32	7 25	17 31	7 27	17 33	7 24	17 32	7 24	17 31	7 28	17 34	7 23	17 30	7 22	17 29
10	7 29	17 37	7 29	17 36	7 29	17 36	7 24	17 34	7 25	17 33	7 28	17 35	7 24	17 34	7 24	17 33	7 28	17 36	7 23	17 32	7 22	17 31
13	7 28	17 39	7 28	17 38	7 28	17 39	7 23	17 36	7 25	17 36	7 27	17 38	7 23	17 36	7 24	17 35	7 28	17 39	7 23	17 35	7 22	17 34
16	7 28	17 42	7 27	17 41	7 28	17 42	7 23	17 39	7 25	17 39	7 26	17 41	7 23	17 39	7 23	17 38	7 27	17 42	7 22	17 37	7 21	17 37
19	7 27	17 44	7 26	17 43	7 27	17 43	7 23	17 42	7 24	17 43	7 25	17 43	7 22	17 41	7 22	17 42	7 26	17 46	7 21	17 41	7 21	17 41
22	7 26	17 47	7 25	17 46	7 26	17 46	7 22	17 44	7 23	17 45	7 25	17 45	7 21	17 43	7 21	17 43	7 25	17 48	7 20	17 43	7 20	17 43
25	7 25	17 50	7 25	17 49	7 25	17 49	7 21	17 47	7 22	17 48	7 24	17 48	7 20	17 46	7 20	17 46	7 24	17 50	7 19	17 46	7 19	17 46
28	7 23	17 52	7 23	17 51	7 24	17 52	7 19	17 50	7 20	17 50	7 23	17 51	7 18	17 49	7 19	17 49	7 23	17 53	7 17	17 48	7 17	17 48
31	7 21	17 55	7 21	17 54	7 21	17 54	7 17	17 53	7 18	17 54	7 22	17 55	7 16	17 52	7 18	17 52	7 22	17 56	7 15	17 51	7 15	17 51
3 फर.	7 20	17 58	7 19	17 57	7 19	17 57	7 16	17 56	7 17	17 57	7 19	17 57	7 15	17 55	7 16	17 54	7 20	17 58	7 14	17 54	7 13	17 54
6	7 18	18 00	7 17	17 59	7 18	18 00	7 14	17 58	7 15	17 59	7 17	17 59	7 13	17 57	7 14	17 57	7 18	18 01	7 12	17 56	7 12	17 56
9	7 15	18 03	7 14	18 03	7 15	18 02	7 12	18 02	7 12	18 02	7 14	18 01	7 10	18 01	7 11	18 00	7 15	18 04	7 09	18 00	7 09	18 00
12	7 12	18 06	7 12	18 06	7 12	18 06	7 08	18 04	7 09	18 04	7 12	18 04	7 07	18 03	7 09	18 02	7 13	18 06	7 06	18 02	7 06	18 02
15	7 10	18 08	7 09	18 08	7 10	18 08	7 06	18 06	7 06	18 06	7 09	18 07	7 05	18 05	7 06	18 05	7 10	18 09	7 05	18 04	7 04	18 04
18	7 07	18 10	7 06	18 10	7 07	18 10	7 03	18 08	7 03	18 08	7 06	18 09	7 02	18 07	7 03	18 07	7 07	18 12	7 02	18 07	7 02	18 07
21	7 04	18 13	7 03	18 13	7 04	18 13	7 00	18 11	7 00	18 11	7 03	18 12	6 59	18 10	7 00	18 10	7 04	18 14	6 59	18 09	6 58	18 10
24	7 01	18 15	7 00	18 14	7 01	18 15	6 57	18 13	6 57	18 13	7 01	18 15	6 56	18 12	6 57	18 12	7 01	18 16	6 56	18 11	6 55	18 12
27	6 58	18 18	6 57	18 17	6 58	18 18	6 54	18 16	6 54	18 16	6 56	18 17	6 53	18 15	6 54	18 15	6 57	18 19	6 52	18 14	6 53	18 14
2 मार्च	6 54	18 20	6 53	18 20	6 53	18 19	6 50	18 18	6 50	18 19	6 53	18 20	6 49	18 17	6 50	18 17	6 53	18 20	6 48	18 16	6 49	18 16
5	6 51	18 22	6 50	18 21	6 51	18 22	6 47	18 20	6 47	18 20	6 50	18 22	6 46	18 19	6 47	18 19	6 51	18 23	6 46	18 18	6 46	18 18
8	6 46	18 24	6 46	18 23	6 46	18 24	6 43	18 22	6 43	18 23	6 46	18 24	6 41	18 21	6 43	18 21	6 47	18 25	6 42	18 21	6 40	18 20
11	6 43	18 27	6 42	18 26	6 43	18 26	6 39	18 24	6 40	18 24	6 43	18 26	6 38	18 24	6 40	18 23	6 44	18 17	6 39	18 22	6 37	18 23
14	6 40	18 28	6 39	18 27	6 39	18 27	6 36	18 25	6 36	18 25	6 39	18 27	6 36	18 25	6 37	18 24	6 40	18 28	6 35	18 24	6 35	18 24
17	6 36	18 30	6 35	18 29	6 35	18 29	6 32	18 27	6 32	18 27	6 35	18 29	6 31	18 27	6 32	18 26	6 36	18 30	6 31	18 25	6 30	18 26
20	6 31	18 32	6 30	18 31	6 31	18 31	6 26	18 29	6 28	18 31	6 31	18 31	6 26	18 29	6 28	18 27	6 32	18 32	6 27	18 26	6 25	18 28

नगर	काँगड़ा-धर्म.		हमीरपुर		ऊना		बिलासपुर		मंडी-कुल्लू		सरकाघाट		शिमला		सोलन		चम्बा		नाहन		रामपुर बुशै.	
तारीख	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
मार्च	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
23	6 28	18 34	6 27	18 33	6 28	18 33	6 24	18 30	6 25	18 31	6 28	18 33	6 23	18 31	6 25	18 30	6 29	18 34	6 24	18 28	6 22	18 30
26	6 24	18 36	6 23	18 35	6 24	18 35	6 21	18 33	6 21	18 33	6 24	18 35	6 20	18 33	6 21	18 33	6 25	18 36	6 20	18 31	6 19	18 32
29	6 21	18 38	6 20	18 37	6 20	18 37	6 18	18 34	6 18	18 34	6 20	18 37	6 16	18 35	6 17	18 35	6 21	18 38	6 16	18 33	6 15	18 34
2 अप्रै.	6 15	18 40	6 14	18 39	6 15	18 40	6 12	18 37	6 13	18 38	6 15	18 40	6 11	18 37	6 12	18 37	6 16	18 41	6 11	18 36	6 10	18 36
5	6 12	18 43	6 10	18 42	6 12	18 42	6 08	18 39	6 09	18 39	6 12	18 42	6 07	18 39	6 09	18 39	6 13	18 43	6 08	18 37	6 06	18 38
8	6 09	18 45	6 08	18 44	6 08	18 43	6 05	18 42	6 06	18 42	6 08	18 43	6 04	18 41	6 05	18 41	6 09	18 44	6 04	18 39	6 03	18 40
11	6 04	18 47	6 03	18 46	6 04	18 46	6 01	18 44	6 01	18 44	6 04	18 46	6 00	18 43	6 01	18 43	6 05	18 47	6 00	18 41	5 59	18 42
14	6 01	18 50	6 00	18 49	6 01	18 49	5 58	18 47	5 58	18 47	6 01	18 49	5 57	18 46	5 58	18 46	6 02	18 49	5 57	18 44	5 56	18 45
17	5 57	18 51	5 56	18 50	5 57	18 51	5 54	18 49	5 54	18 49	5 57	18 50	5 53	18 47	5 54	18 48	5 58	18 51	5 53	18 46	5 52	18 46
20	5 54	18 54	5 53	18 53	5 54	18 53	5 51	18 51	5 51	18 51	5 54	18 53	5 50	18 50	5 51	18 51	5 55	18 54	5 50	18 49	5 49	18 49
23	5 50	18 56	5 50	18 56	5 50	18 55	5 47	18 53	5 47	18 53	5 50	18 55	5 46	18 52	5 48	18 52	5 51	18 56	5 47	18 51	5 45	18 51
26	5 48	18 58	5 47	18 58	5 48	18 57	5 45	18 55	5 45	18 55	5 48	18 57	5 44	18 54	5 45	18 54	5 49	18 58	5 44	18 52	5 43	18 53
29	5 46	19 01	5 45	19 00	5 45	19 00	5 42	18 58	5 42	18 58	5 45	19 00	5 42	18 57	5 42	18 57	5 46	19 01	5 41	18 55	5 41	18 56
2 मई	5 44	19 02	5 43	19 01	5 43	19 01	5 40	18 59	5 40	18 59	5 43	19 01	5 39	18 58	5 40	18 58	5 44	19 02	5 39	18 56	5 38	18 57
4	5 41	19 03	5 39	19 02	5 40	19 02	5 37	18 59	5 37	18 59	5 40	19 02	5 37	18 59	5 37	19 00	5 41	19 03	5 36	18 58	5 36	18 58
7	5 38	19 05	5 37	19 04	5 37	19 04	5 34	19 00	5 34	19 00	5 37	19 04	5 34	19 01	5 34	19 01	5 38	19 05	5 33	19 00	5 33	19 00
10	5 35	19 07	5 34	19 06	5 35	19 06	5 32	19 03	5 33	19 04	5 35	19 06	5 32	19 03	5 32	19 03	5 36	19 07	5 31	19 03	5 31	19 02
13	5 34	19 09	5 32	19 08	5 33	19 09	5 30	19 06	5 30	19 06	5 33	19 09	5 30	19 05	5 30	19 05	5 34	19 10	5 29	19 05	5 29	19 04
16	5 32	19 11	5 30	19 11	5 31	19 11	5 28	19 07	5 29	19 07	5 31	19 11	5 28	19 07	5 28	19 07	5 32	19 12	5 27	19 06	5 27	19 06
19	5 30	19 13	5 28	19 12	5 29	19 13	5 26	19 09	5 26	19 09	5 29	19 13	5 26	19 09	5 26	19 10	5 30	19 14	5 25	19 08	5 25	19 08
22	5 28	19 14	5 26	19 13	5 27	19 14	5 24	19 11	5 24	19 11	5 27	19 14	5 24	19 11	5 25	19 11	5 28	19 15	5 23	19 10	5 24	19 10
25	5 27	19 16	5 25	19 15	5 26	19 16	5 23	19 14	5 24	19 14	5 26	19 16	5 23	19 13	5 24	19 14	5 27	19 17	5 22	19 12	5 23	19 12
28	5 25	19 18	5 24	19 17	5 25	19 18	5 22	19 16	5 22	19 16	5 25	19 18	5 21	19 15	5 21	19 15	5 26	19 19	5 21	19 14	5 21	19 14
31	5 24	19 20	5 22	19 21	5 24	19 20	5 21	19 17	5 21	19 17	5 24	19 20	5 20	19 17	5 20	19 17	5 25	19 21	5 20	19 16	5 20	19 16
3 जून	5 23	19 23	5 22	19 22	5 23	19 22	5 20	19 19	5 20	19 19	5 23	19 22	5 20	19 20	5 20	19 19	5 24	19 23	5 19	19 18	5 19	19 19
6	5 23	19 24	5 21	19 23	5 22	19 24	5 20	19 21	5 20	19 21	5 22	19 24	5 19	19 21	5 20	19 21	5 23	19 25	5 19	19 20	5 18	19 20
9	5 22	19 25	5 21	19 25	5 22	19 25	5 19	19 22	5 19	19 22	5 22	19 25	5 19	19 22	5 20	19 22	5 23	19 26	5 19	19 21	5 19	19 21
12	5 22	19 27	5 21	19 26	5 22	19 27	5 18	19 23	5 18	19 23	5 22	19 27	5 18	19 23	5 19	19 23	5 23	19 28	5 19	19 22	5 18	19 22
15	5 22	19 28	5 21	19 27	5 22	19 28	5 18	19 23	5 19	19 23	5 22	19 28	5 18	19 23	5 19	19 23	5 23	19 29	5 18	19 23	5 18	19 22
18	5 21	19 30	5 21	19 29	5 21	19 30	5 18	19 24	5 19	19 25	5 21	19 29	5 17	19 24	5 19	19 24	5 23	19 30	5 18	19 24	5 17	19 23
21	5 22	19 31	5 22	19 30	5 22	19 31	5 19	19 25	5 20	19 26	5 22	19 31	5 18	19 25	5 20	19 25	5 23	19 31	5 19	19 24	5 18	19 24
24	5 23	19 32	5 22	19 31	5 23	19 32	5 21	19 25	5 22	19 26	5 23	19 32	5 19	19 25	5 21	19 25	5 24	19 32	5 20	19 24	5 18	19 24
27	5 25	19 33	5 23	19 32	5 25	19 32	5 22	19 27	5 22	19 27	5 25	19 32	5 21	19 26	5 22	19 26	5 26	19 33	5 21	19 25	5 20	19 25
30	5 25	19 33	5 24	19 33	5 25	19 33	5 23	19 27	5 23	19 27	5 25	19 33	5 22	19 26	5 23	19 27	5 26	19 32	5 22	19 25	5 22	19 25
3 जुला	5 26	19 32	5 25	19 32	5 26	19 32	5 24	19 28	5 25	19 28	5 27	19 32	5 23	19 27	5 24	19 28	5 28	19 32	5 23	19 25	5 23	19 26
6	5 28	19 32	5 27	19 31	5 28	19 32	5 26	19 27	5 26	19 28	5 28	19 31	5 25	19 28	5 25	19 28	5 29	19 32	5 24	19 25	5 25	19 27
9	5 30	19 30	5 29	19 29	5 30	19 31	5 27	19 27	5 28	19 27	5 30	19 30	5 27	19 27	5 27	19 27	5 31	19 31	5 26	19 24	5 27	19 26
12	5 32	19 29	5 31	19 28	5 31	19 29	5 29	19 26	5 29	19 26	5 31	19 29	5 29	19 26	5 28	19 25	5 32	19 30	5 27	19 23	5 28	19 25

नगर | काँगड़ा-धर्म. | हमीरपुर | ऊना | बिलासपुर | मंडी-कुल्लू | सरकाघाट | शिमला | सोलन

नगर	कांगड़ा-धर्म.		हमीरपुर		ऊना		बिलासपुर		मंडी-कुल्लू		सरकाघाट		शिमला		सोलन		चम्बा		नाहन		रामपुर बुशे.	
तारीख	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
जुलाई	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
15	5 33	19 28	5 33	19 27	5 33	19 28	5 30	19 26	5 31	19 25	5 33	19 28	5 30	19 25	5 30	19 24	5 34	19 29	5 29	19 22	5 30	19 24
18	5 34	19 27	5 33	19 26	5 34	19 27	5 32	19 24	5 32	19 24	5 34	19 27	5 31	19 23	5 32	19 22	5 35	19 28	5 31	19 21	5 31	19 22
21	5 36	19 25	5 35	19 25	5 36	19 25	5 33	19 21	5 33	19 22	5 36	19 25	5 33	19 21	5 33	19 21	5 37	19 26	5 32	19 20	5 33	19 20
24	5 38	19 23	5 37	19 22	5 38	19 23	5 35	19 19	5 36	19 20	5 38	19 23	5 35	19 19	5 35	19 19	5 39	19 24	5 34	19 18	5 35	19 18
27	5 40	19 22	5 39	19 21	5 40	19 22	5 37	19 17	5 38	19 18	5 40	19 22	5 37	19 18	5 37	19 18	5 41	19 23	5 36	19 16	5 37	19 16
30	5 42	19 19	5 41	19 19	5 42	19 19	5 39	19 15	5 40	19 16	5 42	19 19	5 39	19 16	5 39	19 15	5 43	19 20	5 38	19 14	5 38	19 14
2 अग.	5 44	19 18	5 43	19 17	5 44	19 18	5 41	19 14	5 42	19 15	5 44	19 18	5 41	19 14	5 41	19 13	5 45	19 19	5 40	19 12	5 40	19 13
5	5 46	19 16	5 45	19 15	5 46	19 16	5 43	19 12	5 44	19 13	5 46	19 16	5 43	19 13	5 43	19 11	5 47	19 17	5 42	19 10	5 43	19 12
8	5 48	19 13	5 47	19 12	5 48	19 13	5 45	19 11	5 46	19 12	5 48	19 13	5 45	19 11	5 45	19 09	5 49	19 14	5 44	19 07	5 45	19 10
11	5 50	19 11	5 49	19 10	5 50	19 11	5 47	19 08	5 48	19 09	5 50	19 11	5 47	19 08	5 57	19 06	5 51	19 12	5 46	19 04	5 47	19 07
14	5 51	19 09	5 50	19 08	5 51	19 09	5 48	19 06	5 49	19 07	5 51	19 09	5 48	19 05	5 48	19 02	5 52	19 10	5 47	19 00	5 48	19 05
17	5 53	19 04	5 52	19 03	5 53	19 04	5 50	19 01	5 51	19 03	5 53	19 04	5 50	19 01	5 50	18 59	5 54	19 05	5 49	18 57	5 50	19 00
20	5 55	19 01	5 55	19 01	5 55	19 01	5 52	18 59	5 53	19 00	5 55	19 01	5 52	18 59	5 52	18 57	5 56	19 02	5 51	18 55	5 52	18 58
23	5 57	18 58	5 57	18 58	5 57	18 58	5 54	18 55	5 55	18 55	5 57	18 58	5 54	18 55	5 54	18 54	5 58	18 59	5 53	18 53	5 53	18 54
26	5 59	18 54	5 59	18 53	5 59	18 53	5 56	18 50	5 57	18 51	5 58	18 54	5 56	18 50	5 56	18 51	5 59	18 55	5 55	18 48	5 55	18 49
29	6 01	18 50	6 00	18 49	6 00	18 50	5 58	18 46	5 59	18 47	5 59	18 50	5 58	18 46	5 58	18 46	6 02	18 50	5 57	18 45	5 57	18 45
1 सितं.	6 02	18 46	6 02	18 45	6 02	18 46	5 59	18 44	6 00	18 45	6 02	18 46	5 59	18 44	6 00	18 43	6 04	18 46	5 59	18 41	5 58	18 43
4	6 04	18 43	6 03	18 41	6 04	18 42	6 02	18 40	6 03	18 41	6 04	18 42	6 01	18 39	6 02	18 39	6 06	18 42	6 01	18 39	6 00	18 38
7	6 06	18 40	6 06	18 39	6 06	18 40	6 04	18 37	6 04	18 37	6 05	18 39	6 03	18 37	6 04	18 36	6 07	18 39	6 03	18 37	6 02	18 35
10	6 09	18 35	6 09	18 34	6 09	18 34	6 06	18 32	6 06	18 32	6 08	18 33	6 06	18 32	6 05	18 32	6 09	18 35	6 05	18 31	6 05	18 31
13	6 11	18 31	6 11	18 30	6 11	18 30	6 07	18 28	6 08	18 29	6 10	18 29	6 07	18 28	6 07	18 28	6 11	18 31	6 06	18 27	6 07	18 27
16	6 12	18 27	6 12	18 26	6 12	18 27	6 09	18 24	6 10	18 25	6 12	18 27	6 09	18 24	6 09	18 24	6 13	18 28	6 08	18 24	6 09	18 23
19	6 14	18 23	6 14	18 23	6 13	18 23	6 10	18 20	6 11	18 21	6 14	18 23	6 10	18 20	6 10	18 20	6 14	18 23	6 09	18 18	6 10	18 19
22	6 16	18 18	6 16	18 18	6 16	18 18	6 12	18 15	6 13	18 16	6 16	18 18	6 12	18 15	6 13	18 16	6 17	18 18	6 12	18 13	6 12	18 14
25	6 17	18 15	6 17	18 15	6 17	18 15	6 14	18 12	6 15	18 13	6 17	18 15	6 14	18 12	6 14	18 12	6 18	18 15	6 13	18 10	6 14	18 11
28	6 19	18 11	6 19	18 11	6 19	18 11	6 16	18 08	6 17	18 09	6 19	18 11	6 15	18 08	6 16	18 08	6 19	18 12	6 15	18 07	6 15	18 07
1 अक्तू	6 22	18 07	6 21	18 07	6 22	18 07	6 18	18 04	6 18	18 04	6 21	18 07	6 17	18 04	6 18	18 03	6 22	18 07	6 17	18 02	6 16	18 03
4	6 23	18 04	6 23	18 03	6 23	18 04	6 19	18 00	6 19	18 00	6 23	18 04	6 18	18 00	6 19	18 00	6 23	18 04	6 18	17 59	6 18	17 59
7	6 25	18 01	6 24	18 00	6 24	18 00	6 21	17 57	6 21	17 57	6 24	18 00	6 20	17 57	6 21	17 56	6 25	18 00	6 20	17 56	6 20	17 56
10	6 27	17 57	6 26	17 56	6 26	17 56	6 23	17 54	6 24	17 55	6 26	17 56	6 22	17 53	6 23	17 53	6 27	17 56	6 23	17 52	6 23	17 52
13	6 29	17 53	6 28	17 52	6 29	17 52	6 26	17 50	6 26	17 50	6 29	17 52	6 24	17 49	6 26	17 49	6 30	17 53	6 25	17 49	6 25	17 48
16	6 31	17 50	6 30	17 49	6 31	17 49	6 28	17 47	6 28	17 47	6 31	17 49	6 26	17 46	6 28	17 45	6 32	17 49	6 27	17 45	6 26	17 45
19	6 33	17 46	6 32	17 45	6 33	17 45	6 30	17 43	6 30	17 43	6 33	17 45	6 29	17 42	6 30	17 42	6 34	17 46	6 29	17 41	6 29	17 41
22	6 36	17 43	6 35	17 43	6 35	17 42	6 32	17 40	6 32	17 40	6 35	17 42	6 31	17 39	6 32	17 40	6 36	17 43	6 31	17 38	6 30	17 38
25	6 38	17 40	6 38	17 40	6 37	17 40	6 34	17 37	6 34	17 36	6 37	17 40	6 33	17 36	6 34	17 36	6 38	17 40	6 33	17 35	6 32	17 35
28	6 40	17 37	6 40	17 37	6 39	17 37	6 36	17 34	6 36	17 33	6 39	17 37	6 35	17 33	6 36	17 34	6 40	17 37	6 35	17 32	6 35	17 32
31	6 43	17 34	6 43	17 34	6 42	17 33	6 39	17 31	6 39	17 31	6 42	17 34	6 38	17 30	6 39	17 31	6 43	17 34	6 38	17 29	6 38	17 29
3 नवं.	6 45	17 30	6 45	17 31	6 44	17 30	6 41	17 28	6 41	17 28	6 44	17 31	6 40	17 27	6 41	17 28	6 45	17 32	6 40	17 27	6 40	17 26

नगर	काँगड़ा-धर्म.		हमीरपुर		ऊना		बिलासपुर		मंडी-कुल्लू		सरकाघाट		शिमला		सोलन		चम्बा		नाहन		रामपुर बुशै.	
तारीख	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
नवंबर	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
6	6 48	17 29	6 47	17 28	6 47	17 28	6 43	17 26	6 43	17 26	6 47	17 28	6 43	17 26	6 43	17 25	6 47	17 29	6 42	17 24	6 42	17 25
9	6 50	17 27	6 49	17 26	6 49	17 26	6 45	17 24	6 45	17 24	6 49	17 26	6 45	17 24	6 45	17 23	6 50	17 27	6 44	17 22	6 44	17 23
12	6 52	17 25	6 51	17 24	6 51	17 24	6 47	17 22	6 47	17 23	6 51	17 24	6 47	17 22	6 47	17 21	6 52	17 25	6 46	17 20	6 46	17 21
15	6 54	17 23	6 53	17 23	6 54	17 23	6 51	17 20	6 51	17 20	6 54	17 23	6 49	17 20	6 51	17 20	6 55	17 24	6 49	17 19	6 48	17 19
18	6 57	17 21	6 56	17 21	6 57	17 21	6 54	17 19	6 54	17 18	6 57	17 21	6 52	17 18	6 54	17 18	6 58	17 22	6 53	17 17	6 51	17 17
21	7 00	17 20	6 59	17 19	6 59	17 20	6 56	17 18	6 56	17 17	6 59	17 20	6 55	17 17	6 56	17 17	7 00	17 21	6 55	17 16	6 54	17 16
24	7 02	17 19	7 01	17 18	7 02	17 19	6 59	17 17	6 59	17 18	7 03	17 19	6 58	17 16	6 59	17 16	7 04	17 20	6 58	17 15	6 57	17 15
27	7 04	17 19	7 04	17 18	7 04	17 18	7 01	17 17	7 01	17 17	7 04	17 18	7 00	17 16	7 02	17 15	7 05	17 19	7 01	17 14	6 59	17 15
30	7 07	17 18	7 06	17 18	7 07	17 18	7 04	17 16	7 04	17 16	7 06	17 18	7 03	17 15	7 04	17 15	7 07	17 19	7 03	17 14	7 02	17 14
3 दिसं	7 09	17 18	7 08	17 18	7 09	17 18	7 06	17 16	7 06	17 16	7 09	17 18	7 05	17 15	7 06	17 15	7 10	17 19	7 05	17 14	7 04	17 14
6	7 12	17 18	7 11	17 17	7 12	17 18	7 09	17 15	7 09	17 15	7 12	17 18	7 08	17 15	7 09	17 15	7 13	17 19	7 08	17 14	7 07	17 14
9	7 14	17 18	7 13	17 18	7 14	17 18	7 11	17 15	7 11	17 15	7 14	17 18	7 10	17 15	7 11	17 15	7 15	17 19	7 10	17 14	7 09	17 14
12	7 16	17 19	7 15	17 18	7 16	17 19	7 14	17 16	7 14	17 16	7 16	17 19	7 12	17 16	7 14	17 16	7 17	17 20	7 13	17 15	7 11	17 15
15	7 18	17 21	7 17	17 20	7 18	17 21	7 16	17 18	7 16	17 17	7 18	17 21	7 14	17 18	7 16	17 17	7 19	17 22	7 15	17 16	7 13	17 16
18	7 20	17 22	7 19	17 21	7 20	17 21	7 17	17 19	7 17	17 18	7 20	17 22	7 16	17 18	7 17	17 18	7 21	17 23	7 16	17 17	7 15	17 17
21	7 22	17 23	7 21	17 22	7 22	17 23	7 19	17 21	7 19	17 20	7 22	17 23	7 18	17 20	7 19	17 19	7 23	17 24	7 18	17 18	7 17	17 18
24	7 23	17 24	7 22	17 23	7 23	17 24	7 20	17 22	7 21	17 22	7 23	17 24	7 19	17 21	7 20	17 21	7 24	17 25	7 19	17 20	7 18	17 19
27	7 25	17 26	7 24	17 25	7 25	17 26	7 21	17 23	7 21	17 23	7 25	17 26	7 21	17 23	7 21	17 22	7 26	17 27	7 20	17 21	7 20	17 21
30	7 26	17 28	7 25	17 27	7 26	17 28	7 22	17 24	7 22	17 24	7 26	17 27	7 22	17 24	7 22	17 24	7 27	17 28	7 21	17 23	7 21	17 14

हिमाचल प्रदेश के अन्य नगरों के लिए संस्कार सारिणी

धर्मशाला

नगर	संस्कार
	मिं. सैं.
काँगड़ा	+ ० २०
नूरपुर	+ १ २८
नगरोटा	+ ० ०४
खजियार	+ १ १२
ज्वालामुखी	+ ० १२
सरकाघाट	+ ० ०४
पालमपुर	– ० ४०
भुन्तर	– ३ ०४
बैजनाथ	– ० ५२

हमीरपुर

नगर	संस्कार
	मिं. सैं.
नादौन	+ ० ३२
सुजानपुरटिहरी	+ ० ०४

ऊना

नगर	संस्कार
गगरेट	+ १ ००
अम्ब	+ ० ४८
दौलतपुर	+ १ २०
चिन्तपूर्णी	+ ० ५६

बिलासपुर

नगर	संस्कार
	मिं. सैं.
घुमारवीं	+ ० ३६
भाखड़ा	+ १ २०
नैना देवी	+ १ १६

मण्डी

नगर	संस्कार
जोगिन्द्रनगर	+ ० ५२
सुन्दरनगर	+ ० २०
करसोग	– १ ०४
किन्नौर	– ५ २८

मण्डी

नगर	संस्कार
	मिं. सैं.
मनाली	– १ २४
बंजार	– १ २८
अनी	– ० ५६
निरमण्ड	– २ २४

शिमला

नगर	संस्कार
तारादेवी	+ ० १२
नारकण्डा	– १ ००
कुमारसेन	– १ ३६

शिमला

नगर	संस्कार
	मिं. सैं.
कोटखाई	– १ ३२
रोहड़ू	– २ ०४

सोलन

नगर	संस्कार
सपाटू	+ ० ३२
परवाणू	+ ० १६
कसौली	+ ० २८
अर्की	+ ० ४०
नालागढ़	+ ३ ०८

चम्बा

नगर	संस्कार
	मिं. सैं.
बनीखेत	+ ० ४८
डलहौज़ी	– ० ४०
लाहौल स्पीति	– ३ २४
त्रिलोकनाथ	–३ ३४

नाहन

नगर	संस्कार
पौंटा साहिब	+ १ ०८
राजगढ़	– ० १२

दैनिक लग्नसारणी-शिमला (हि.प्र.) में लग्न समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

वैशाख (अप्रैल-मई)

अप्रैल	वैशाख प्रवि.	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	७ ३१	९ २५	११ ३९	१४ ०२	१६ २१	१८ ३९	२१ ०१	२३ २१	१ २६	३ ०७	४ ३२	५ ५४
15	२	७ २७	९ २१	११ ३६	१३ ५८	१६ १७	१८ ३५	२० ५७	२३ १७	१ २२	३ ०३	४ २८	५ ५०
16	३	७ २३	९ १७	११ ३२	१३ ५४	१६ १३	१८ ३१	२० ५३	२३ १३	१ १८	२ ५९	४ २४	५ ४६
17	४	७ १९	९ १३	११ २८	१३ ५१	१६ १०	१८ २७	२० ४९	२३ ०९	१ १४	२ ५५	४ २०	५ ४२
18	५	७ १५	९ १०	११ २४	१३ ४७	१६ ०६	१८ २४	२० ४५	२३ ०५	१ १०	२ ५१	४ १६	५ ३८
19	६	७ ११	९ ०६	११ २०	१३ ४३	१६ ०२	१८ २०	२० ४१	२३ ०१	१ ०६	२ ४७	४ १२	५ ३४
20	७	७ ०७	९ ०२	११ १६	१३ ३९	१५ ५८	१८ १६	२० ३७	२२ ५७	१ ०२	२ ४३	४ ०८	५ ३०
21	८	७ ०३	८ ५८	११ १२	१३ ३५	१५ ५४	१८ १२	२० ३३	२२ ५४	० ५८	२ ३९	४ ०४	५ २६
22	९	६ ५९	८ ५४	११ ०९	१३ ३१	१५ ५०	१८ ०८	२० २९	२२ ५०	० ५४	२ ३५	४ ००	५ २२
23	१०	६ ५५	८ ५०	११ ०५	१३ २७	१५ ४६	१८ ०४	२० २६	२२ ४६	० ५०	२ ३१	३ ५६	५ १८
24	११	६ ५१	८ ४६	११ ०१	१३ २३	१५ ४३	१८ ००	२० २२	२२ ४२	० ४६	२ २७	३ ५२	५ १५
25	१२	६ ४७	८ ४२	१० ५७	१३ १९	१५ ३९	१७ ५६	२० १८	२२ ३८	० ४२	२ २३	३ ४८	५ ११
26	१३	६ ४३	८ ३८	१० ५३	१३ १५	१५ ३५	१७ ५२	२० १४	२२ ३४	० ३८	२ २०	३ ४४	५ ०७
27	१४	६ ४०	८ ३४	१० ४९	१३ ११	१५ ३१	१७ ४८	२० १०	२२ ३०	० ३४	२ १६	३ ४०	५ ०३
28	१५	६ ३६	८ ३०	१० ४५	१३ ०८	१५ २८	१७ ४४	२० ०६	२२ २६	० ३०	२ १२	३ ३६	४ ५९
29	१६	६ ३२	८ २६	१० ४१	१३ ०४	१५ २४	१७ ४०	२० ०२	२२ २२	० २६	२ ०८	३ ३२	४ ५५
30	१७	६ २८	८ २२	१० ३७	१३ ००	१५ २०	१७ ३७	१९ ५८	२२ १८	० २२	२ ०४	३ २८	४ ५१
मई	१८	६ २४	८ १८	१० ३३	१२ ५६	१५ १६	१७ ३३	१९ ५४	२२ १४	० १८	२ ००	३ २५	४ ४७
2	१९	६ २०	८ १४	१० २९	१२ ५२	१५ १२	१७ २९	१९ ५०	२२ १०	० १४	१ ५६	३ २१	४ ४४
3	२०	६ १६	८ १०	१० २५	१२ ४८	१५ ०८	१७ २५	१९ ४६	२२ ०६	० ११	१ ५२	३ १७	४ ४०
4	२१	६ १२	८ ०६	१० २१	१२ ४४	१५ ०४	१७ २१	१९ ४२	२२ ०२	० ०७	१ ४८	३ १३	४ ३६
5	२२	६ ०८	८ ०२	१० १७	१२ ४०	१५ ००	१७ १७	१९ ३८	२१ ५८	० ०३	१ ४४	३ ०९	४ ३२
6	२३	६ ०४	७ ५८	१० १३	१२ ३६	१४ ५६	१७ १३	१९ ३४	२१ ५४	२३ ५९	१ ४०	३ ०५	४ २८
7	२४	६ ००	७ ५४	१० ०९	१२ ३२	१४ ५२	१७ ०९	१९ ३०	२१ ५०	२३ ५५	१ ३६	३ ०१	४ २४
8	२५	५ ५६	७ ५०	१० ०५	१२ २८	१४ ४८	१७ ०५	१९ २६	२१ ४६	२३ ५१	१ ३२	२ ५७	४ २०
9	२६	५ ५२	७ ४६	१० ०१	१२ २४	१४ ४४	१७ ०१	१९ २२	२१ ४२	२३ ४७	१ २८	२ ५३	४ १६
10	२७	५ ४८	७ ४२	९ ५७	१२ २०	१४ ४०	१६ ५७	१९ १८	२१ ३८	२३ ४३	१ २४	२ ४९	४ १२
11	२८	५ ४४	७ ३९	९ ५३	१२ १६	१४ ३६	१६ ५३	१९ १४	२१ ३४	२३ ३९	१ २०	२ ४५	४ ०८
12	२९	५ ४०	७ ३५	९ ४९	१२ १२	१४ ३२	१६ ४९	१९ १०	२१ ३०	२३ ३५	१ १६	२ ४१	४ ०४
13	३०	५ ३६	७ ३१	९ ४५	१२ ०९	१४ २८	१६ ४५	१९ ०६	२१ २६	२३ ३१	१ १२	२ ३७	४ ००
14	३१	५ ३३	७ २७	९ ४२	१२ ०५	१४ १४	१६ ४१	१९ ०२	२१ २२	२३ २७	१ ०८	२ ३३	३ ५६
15	ज्ये	५ २९	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –

ज्येष्ठ (मई-जून)

मई	ज्ये. प्रवि.	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
15	१	७ २३	९ ३८	१२ ०१	१४ २०	१६ ३८	१८ ५९	२१ १९	२३ २३	१ ०४	२ २९	३ ५२	५ २५
16	२	७ १९	९ ३४	११ ५७	१४ १६	१६ ३४	१८ ५५	२१ १५	२३ १९	१ ००	२ २५	३ ४८	५ २१
17	३	७ १६	९ ३०	११ ५३	१४ १२	१६ ३०	१८ ५१	२१ ११	२३ १५	० ५६	२ २१	३ ४४	५ १७
18	४	७ १२	९ २६	११ ४९	१४ ०८	१६ २६	१८ ४७	२१ ०७	२३ ११	० ५२	२ १७	३ ४०	५ १३
19	५	७ ०८	९ २२	११ ४५	१४ ०४	१६ २२	१८ ४३	२१ ०३	२३ ०८	० ४९	२ १३	३ ३६	५ ०९
20	६	७ ०४	९ १८	११ ४१	१४ ००	१६ १८	१८ ३९	२० ५९	२३ ०४	० ४५	२ १०	३ ३२	५ ०५
21	७	७ ००	९ १४	११ ३७	१३ ५६	१६ १४	१८ ३५	२० ५५	२३ ००	० ४१	२ ०६	३ २८	५ ०१
22	८	६ ५६	९ १०	११ ३३	१३ ५२	१६ १०	१८ ३१	२० ५१	२२ ५६	० ३७	२ ०२	३ २४	४ ५७
23	९	६ ५३	९ ०७	११ ३०	१३ ४९	१६ ०७	१८ २८	२० ४८	२२ ५३	० ३४	१ ५८	३ २१	४ ५४
24	१०	६ ४९	९ ०३	११ २६	१३ ४५	१६ ०३	१८ २४	२० ४४	२२ ४९	० ३०	१ ५५	३ १७	४ ५०
25	११	६ ४५	८ ५९	११ २२	१३ ४१	१५ ५९	१८ २०	२० ४०	२२ ४५	० २६	१ ५१	३ १३	४ ४६
26	१२	६ ४१	८ ५५	११ १८	१३ ३७	१५ ५५	१८ १६	२० ३६	२२ ४१	० २२	१ ४७	३ ०९	४ ४२
27	१३	६ ३७	८ ५१	११ १४	१३ ३३	१५ ५१	१८ १२	२० ३२	२२ ३७	० १८	१ ४३	३ ०५	४ ३८
28	१४	६ ३३	८ ४७	११ १०	१३ २९	१५ ४७	१८ ०८	२० २८	२२ ३३	० १४	१ ३९	३ ०१	४ ३४
29	१५	६ २९	८ ४३	११ ०६	१३ २५	१५ ४३	१८ ०४	२० २४	२२ २९	० १०	१ ३५	२ ५७	४ ३०
30	१६	६ २५	८ ३९	११ ०२	१३ २१	१५ ३९	१८ ००	२० २०	२२ २५	० ०६	१ ३१	२ ५३	४ २६
31	१७	६ २१	८ ३५	१० ५८	१३ १७	१५ ३५	१७ ५६	२० १६	२२ २१	० ०२	१ २७	२ ४९	४ २२
जून	१८	६ १७	८ ३१	१० ५४	१३ १३	१५ ३१	१७ ५२	२० १२	२२ १७	२३ ५८	१ २३	२ ४५	४ १८
2	१९	६ १३	८ २७	१० ५०	१३ ०९	१५ २७	१७ ४८	२० ०८	२२ १३	२३ ५४	१ १९	२ ४१	४ १४
3	२०	६ ०९	८ २३	१० ४६	१३ ०५	१५ २३	१७ ४४	२० ०४	२२ ०९	२३ ५०	१ १५	२ ३६	४ १०
4	२१	६ ०५	८ १९	१० ४२	१३ ०१	१५ १९	१७ ४०	२० ००	२२ ०५	२३ ४६	१ ११	२ ३३	४ ०६
5	२२	६ ०१	८ १५	१० ३८	१२ ५७	१५ १५	१७ ३६	१९ ५६	२२ ०१	२३ ४२	१ ०७	२ २९	४ ०२
6	२३	५ ५७	८ १२	१० ३५	१२ ५४	१५ १२	१७ ३३	१९ ५३	२१ ५८	२३ ३९	१ ०३	२ २६	३ ५८
7	२४	५ ५३	८ ०८	१० ३१	१२ ५०	१५ ०८	१७ २९	१९ ४९	२१ ५४	२३ ३५	० ५९	२ २२	३ ५५
8	२५	५ ४९	८ ०४	१० २७	१२ ४६	१५ ०४	१७ २५	१९ ४५	२१ ५०	२३ ३१	० ५५	२ १८	३ ५१
9	२६	५ ४५	८ ००	१० २३	१२ ४२	१५ ००	१७ २१	१९ ४१	२१ ४६	२३ २७	० ५१	२ १४	३ ४७
10	२७	५ ४१	७ ५६	१० १९	१२ ३८	१४ ५६	१७ १७	१९ ३७	२१ ४२	२३ २३	० ४७	२ १०	३ ४३
11	२८	५ ३७	७ ५२	१० १५	१२ ३४	१४ ५२	१७ १३	१९ ३३	२१ ३८	२३ १९	० ४३	२ ०६	३ ३९
12	२९	५ ३३	७ ४८	१० ११	१२ ३०	१४ ४८	१७ ०९	१९ २९	२१ ३४	२३ १५	० ३९	२ ०२	३ ३५
13	३०	५ २९	७ ४४	१० ०७	१२ २६	१४ ४४	१७ ०५	१९ २५	२१ ३०	२३ ११	० ३५	१ ५८	३ ३१
14	३१	५ २५	७ ४०	१० ०३	१२ २२	१४ ४०	१७ १	१९ २१	२१ २६	२३ ७	० ३१	१ ५४	३ २७
15	आ.	५ २२	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –

दैनिक लग्नसारणी-शिमला (हि.प्र.) में लग्न समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

आषाढ़ (जून-जुलाई)

जून	आषाढ़	मिथुन घं. मिं.	कर्क घं. मिं.	सिंह घं. मिं.	कन्या घं. मिं.	तुला घं. मिं.	वृश्चिक घं. मिं.	धनु घं. मिं.	मकर घं. मिं.	कुम्भ घं. मिं.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.
15	१	७ ३६	९ ५९	१२ १८	१४ ३६	१६ ५७	१९ १७	२१ २२	२३ ०३	० २८	१ ५०	३ २३	५ १८
16	२	७ ३२	९ ५५	१२ १४	१४ ३२	१६ ५३	१९ १३	२१ १८	२२ ५९	० २४	१ ४६	३ १९	५ १४
17	३	७ २८	९ ५१	१२ १०	१४ २८	१६ ४९	१९ ०९	२१ १४	२२ ५५	० २०	१ ४२	३ १५	५ १०
18	४	७ २४	९ ४७	१२ ०६	१४ २४	१६ ४५	१९ ०५	२१ १०	२२ ५१	० १६	१ ३८	३ ११	५ ०६
19	५	७ २०	९ ४३	१२ ०२	१४ २०	१६ ४१	१९ ०१	२१ ०६	२२ ४७	० १२	१ ३४	३ ०७	५ ०२
20	६	७ १६	९ ३९	११ ५८	१४ १६	१६ ३७	१८ ५७	२१ ०२	२२ ४३	० ०८	१ ३०	३ ०३	४ ५८
21	७	७ १२	९ ३५	११ ५४	१४ १२	१६ ३३	१८ ५३	२० ५८	२२ ३९	० ०४	१ २६	२ ५९	४ ५४
22	८	७ ०९	९ ३१	११ ५०	१४ ०८	१६ २९	१८ ४९	२० ५४	२२ ३५	० ००	१ २२	२ ५५	४ ५०
23	९	७ ०५	९ २७	११ ४६	१४ ०४	१६ २५	१८ ४५	२० ५०	२२ ३१	२३ ५६	१ १८	२ ५१	४ ४६
24	१०	७ ०१	९ २३	११ ४२	१४ ००	१६ २१	१८ ४१	२० ४६	२२ २७	२३ ५२	१ १४	२ ४७	४ ४२
25	११	६ ५७	९ १९	११ ३८	१३ ५६	१६ १७	१८ ३७	२० ४२	२२ २३	२३ ४८	१ १०	२ ४३	४ ३८
26	१२	६ ५३	९ १५	११ ३४	१३ ५२	१६ १३	१८ ३३	२० ३८	२२ १९	२३ ४४	१ ०६	२ ३९	४ ३४
27	१३	६ ४९	९ १२	११ ३१	१३ ४९	१६ १०	१८ ३०	२० ३५	२२ १६	२३ ४१	१ ०३	२ ३६	४ ३१
28	१४	६ ४५	९ ०८	११ २८	१३ ४५	१६ ०६	१८ २६	२० ३१	२२ १२	२३ ३७	० ५९	२ ३२	४ २७
29	१५	६ ४१	९ ०४	११ २३	१३ ४१	१६ ०२	१८ २२	२० २७	२२ ०८	२३ ३३	० ५५	२ २८	४ २३
30	१६	६ ३७	९ ००	११ १९	१३ ३७	१५ ५८	१८ १८	२० २३	२२ ०४	२३ २९	० ५१	२ २४	४ १९
जुला	१७	६ ३३	८ ५६	११ १५	१३ ३३	१५ ५४	१८ १४	२० १९	२२ ००	२३ २५	० ४७	२ २०	४ १५
2	१८	६ २९	८ ५२	११ ११	१३ २९	१५ ५०	१८ १०	२० १५	२१ ५६	२३ २१	० ४३	२ १६	४ ११
3	१९	६ २५	८ ४८	११ ०७	१३ २५	१५ ४६	१८ ०६	२० ११	२१ ५२	२३ १७	० ३९	२ १२	४ ०७
4	२०	६ २१	८ ४४	११ ०३	१३ २१	१५ ४२	१८ ०२	२० ०७	२१ ४८	२३ १३	० ३५	२ ०८	४ ०३
5	२१	६ १७	८ ४०	१० ५९	१३ १७	१५ ३८	१७ ५८	२० ०३	२१ ४४	२३ ०९	० ३२	२ ०५	३ ५९
6	२२	६ १३	८ ३६	१० ५५	१३ १३	१५ ३४	१७ ५४	१९ ५९	२१ ४०	२३ ०५	० २८	२ ०१	३ ५५
7	२३	६ १०	८ ३३	१० ५२	१३ १०	१५ ३१	१७ ५१	१९ ५६	२१ ३७	२३ ०२	० २५	१ ५८	३ ५२
8	२४	६ ०६	८ २९	१० ४८	१३ ०६	१५ २७	१७ ४७	१९ ५२	२१ ३३	२२ ५८	० २१	१ ५४	३ ४८
9	२५	६ ०२	८ २५	१० ४४	१३ ०२	१५ २३	१७ ४३	१९ ४८	२१ २९	२२ ५४	० १७	१ ५०	३ ४४
10	२६	५ ५८	८ २१	१० ४०	१२ ५८	१५ १९	१७ ३९	१९ ४४	२१ २५	२२ ५०	० १३	१ ४६	३ ४०
11	२७	५ ५४	८ १७	१० ३६	१२ ५४	१५ १५	१७ ३५	१९ ४०	२१ २१	२२ ४६	० ०९	१ ४२	३ ३६
12	२८	५ ५०	८ १३	१० ३२	१२ ५०	१५ ११	१७ ३१	१९ ३६	२१ १७	२२ ४२	० ०५	१ ३८	३ ३२
13	२९	५ ४६	८ ०९	१० २८	१२ ४६	१५ ०७	१७ २७	१९ ३२	२१ १३	२२ ३८	० ०१	१ ३४	३ २८
14	३०	५ ४२	८ ०५	१० २४	१२ ४२	१५ ०३	१७ २३	१९ २८	२१ ०९	२२ ३४	२३ ५७	१ ३०	३ २४
15	३१	५ ३८	८ ०१	१० २०	१२ ३८	१४ ५९	१७ १९	१९ २४	२१ ०५	२२ ३०	२३ ५३	१ २६	३ २०
16	श्रा.	५ ३४	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –

श्रावण (जुलाई-अगस्त)

जुलाई	श्रावण	कर्क घं. मिं.	सिंह घं. मिं.	कन्या घं. मिं.	तुला घं. मिं.	वृश्चिक घं. मिं.	धनु घं. मिं.	मकर घं. मिं.	कुम्भ घं. मिं.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.	मिथुन घं. मिं.
16	१	७ ५७	१० १६	१२ ३४	१४ ५५	१७ १५	१९ २०	२१ ०१	२२ २६	२३ ४९	१ २२	३ १६	५ ३०
17	२	७ ५३	१० १२	१२ ३०	१४ ५१	१७ ११	१९ १६	२० ५७	२२ २२	२३ ४५	१ १८	३ १२	५ २६
18	३	७ ४९	१० ०८	१२ २६	१४ ४७	१७ ०७	१९ १२	२० ५३	२२ १८	२३ ४१	१ १४	३ ०८	५ २२
19	४	७ ४६	१० ०५	१२ २३	१४ ४४	१७ ०४	१९ ०९	२० ४९	२२ १५	२३ ३८	१ ११	३ ०४	५ १८
20	५	७ ४२	१० ०१	१२ १९	१४ ४०	१७ ००	१९ ०५	२० ४५	२२ ११	२३ ३४	१ ०७	३ ००	५ १४
21	६	७ ३८	९ ५७	१२ १५	१४ ३६	१६ ५६	१९ ०१	२० ४१	२२ ०७	२३ ३०	१ ०३	२ ५६	५ १०
22	७	७ ३४	९ ५३	१२ ११	१४ ३२	१६ ५२	१८ ५७	२० ३७	२२ ०३	२३ २६	० ५९	२ ५२	५ ०६
23	८	७ ३०	९ ४९	१२ ०७	१४ २८	१६ ४८	१८ ५३	२० ३३	२१ ५९	२३ २२	० ५५	२ ४८	५ ०२
24	९	७ २६	९ ४५	१२ ०३	१४ २४	१६ ४४	१८ ४९	२० २९	२१ ५५	२३ १८	० ५१	२ ४४	४ ५८
25	१०	७ २२	९ ४१	११ ५९	१४ २०	१६ ४०	१८ ४५	२० २५	२१ ५१	२३ १४	० ४७	२ ४०	४ ५४
26	११	७ १८	९ ३७	११ ५५	१४ १७	१६ ३७	१८ ४१	२० २२	२१ ४७	२३ १०	० ४३	२ ३६	४ ५०
27	१२	७ १४	९ ३३	११ ५१	१४ १३	१६ ३३	१८ ३७	२० १८	२१ ४३	२३ ०६	० ३९	२ ३२	४ ४६
28	१३	७ १०	९ २९	११ ४८	१४ ०९	१६ २९	१८ ३३	२० १४	२१ ३९	२३ ०२	० ३५	२ २८	४ ४३
29	१४	७ ०६	९ २५	११ ४४	१४ ०५	१६ २५	१८ २९	२० १०	२१ ३५	२२ ५८	० ३१	२ २४	४ ३९
30	१५	७ ०२	९ २१	११ ४०	१४ ०१	१६ २१	१८ २५	२० ०६	२१ ३१	२२ ५४	० २७	२ २१	४ ३५
31	१६	६ ५८	९ १७	११ ३६	१३ ५७	१६ १८	१८ २१	२० ०२	२१ २७	२२ ५०	० २३	२ १७	४ ३१
अग	१७	६ ५४	९ १३	११ ३२	१३ ५३	१६ १४	१८ १७	१९ ५८	२१ २३	२२ ४६	० १९	२ १३	४ २७
2	१८	६ ५०	९ ०९	११ २८	१३ ४९	१६ १०	१८ १३	१९ ५४	२१ १९	२२ ४२	० १५	२ ०९	४ २३
3	१९	६ ४६	९ ०५	११ २४	१३ ४५	१६ ०६	१८ ०९	१९ ५०	२१ १५	२२ ३८	० ११	२ ०५	४ १९
4	२०	६ ४२	९ ०२	११ २०	१३ ४१	१६ ०२	१८ ०५	१९ ४६	२१ ११	२२ ३५	० ०७	२ ०१	४ १५
5	२१	६ ३८	८ ५८	११ १७	१३ ३८	१५ ५८	१८ ०२	१९ ४३	२१ ०७	२२ ३२	० ०४	१ ५८	४ ११
6	२२	६ ३४	८ ५४	११ १३	१३ ३४	१५ ५४	१७ ५८	१९ ३९	२१ ०४	२२ २८	० ००	१ ५४	४ ०८
7	२३	६ ३१	८ ५०	११ ०९	१३ ३०	१५ ५०	१७ ५४	१९ ३५	२१ ००	२२ २४	२३ ५६	१ ५०	४ ०४
8	२४	६ २७	८ ४६	११ ०५	१३ २६	१५ ४७	१७ ५०	१९ ३२	२० ५६	२२ २०	२३ ५२	१ ४६	४ ००
9	२५	६ २३	८ ४२	११ ०१	१३ २२	१५ ४३	१७ ४६	१९ २८	२० ५२	२२ १६	२३ ४८	१ ४२	३ ५६
10	२६	६ १९	८ ३८	१० ५७	१३ १८	१५ ३९	१७ ४२	१९ २४	२० ४८	२२ १२	२३ ४४	१ ३८	३ ५२
11	२७	६ १५	८ ३४	१० ५३	१३ १४	१५ ३५	१७ ३८	१९ २०	२० ४४	२२ ०८	२३ ४०	१ ३४	३ ४८
12	२८	६ ११	८ ३०	१० ४९	१३ १०	१५ ३१	१७ ३४	१९ १६	२० ४१	२२ ०४	२३ ३६	१ ३१	३ ४४
13	२९	६ ०७	८ २६	१० ४५	१३ ०६	१५ २७	१७ ३०	१९ १२	२० ३७	२२ ००	२३ ३२	१ २७	३ ४१
14	३०	६ ०३	८ २२	१० ४१	१३ ०२	१५ २३	१७ २६	१९ ०८	२० ३३	२१ ५६	२३ २८	१ २३	३ ३७
15	३१	५ ५९	८ १८	१० ३७	१२ ५८	१५ १९	१७ २२	१९ ०४	२० २९	२१ ५२	२३ २४	१ १९	३ ३३
16	३२	५ ५५	८ १४	१० ३३	१२ ५४	१५ १५	१७ २८	१९ ००	२० २५	२१ ४८	२३ २०	१ १५	३ २९
17	भाद्र	५ ५१	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –

दैनिक लग्नसारणी-शिमला (हि.प्र.) में लग्न समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

भाद्रपद (अगस्त-सितम्बर)

अगस्त	भाद्रपद	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
17	१	८ १०	१० २९	१२ ५०	१५ ११	१७ १४	१८ ५६	२० २१	२१ ४४	२३ १६	१ ११	३ २५	५ ४७
18	२	८ ०६	१० २६	१२ ४६	१५ ०७	१७ १०	१८ ५२	२० १७	२१ ४०	२३ १२	१ ०७	३ २१	५ ४३
19	३	८ ०२	१० २२	१२ ४२	१५ ०३	१७ ०६	१८ ४८	२० १३	२१ ३६	२३ ०८	१ ०३	३ १७	५ ३९
20	४	७ ५९	१० १८	१२ ३९	१४ ५९	१७ ०२	१८ ४४	२० ०९	२१ ३२	२३ ०४	० ५९	३ १३	५ ३५
21	५	७ ५५	१० १४	१२ ३५	१४ ५५	१६ ५९	१८ ४०	२० ०५	२१ २८	२३ ०१	० ५५	३ ०९	५ ३१
22	६	७ ५१	१० १०	१२ ३१	१४ ५१	१६ ५५	१८ ३७	२० ०१	२१ २४	२२ ५७	० ५१	३ ०५	५ २७
23	७	७ ४७	१० ०६	१२ २७	१४ ४७	१६ ५१	१८ ३३	१९ ५७	२१ २०	२२ ५३	० ४७	३ ०१	५ २३
24	८	७ ४३	१० ०२	१२ २३	१४ ४३	१६ ४७	१८ २९	१९ ५४	२१ १६	२२ ४९	० ४४	२ ५७	५ १९
25	९	७ ३९	९ ५८	१२ १९	१४ ३९	१६ ४३	१८ २५	१९ ५०	२१ १३	२२ ४५	० ४०	२ ५४	५ १६
26	१०	७ ३५	९ ५४	१२ १६	१४ ३६	१६ ३९	१८ २१	१९ ४६	२१ ०९	२२ ४१	० ३६	२ ५०	५ १२
27	११	७ ३१	९ ५०	१२ १२	१४ ३२	१६ ३६	१८ १७	१९ ४२	२१ ०५	२२ ३७	० ३२	२ ४६	५ ०८
28	१२	७ २७	९ ४६	१२ ०८	१४ २८	१६ ३२	१८ १३	१९ ३८	२१ ०१	२२ ३३	० २८	२ ४२	५ ०४
29	१३	७ २३	९ ४२	१२ ०४	१४ २४	१६ २८	१८ ०९	१९ ३४	२० ५७	२२ २९	० २४	२ ३८	५ ००
30	१४	७ १९	९ ३८	१२ ००	१४ २०	१६ २४	१८ ०५	१९ ३०	२० ५३	२२ २५	० २०	२ ३४	४ ५६
31	१५	७ १५	९ ३४	११ ५६	१४ १६	१६ २०	१८ ०१	१९ २६	२० ४९	२२ २१	० १६	२ ३०	४ ५२
सितं	१६	७ ११	९ ३०	११ ५२	१४ १२	१६ १६	१७ ५७	१९ २२	२० ४५	२२ १७	० १२	२ २६	४ ४८
2	१७	७ ०७	९ २७	११ ४८	१४ ०८	१६ १२	१७ ५३	१९ १८	२० ४१	२२ १३	० ०८	२ २२	४ ४४
3	१८	७ ०३	९ २३	११ ४४	१४ ०४	१६ ०८	१७ ४९	१९ १४	२० ३७	२२ १०	० ०४	२ १८	४ ४०
4	१९	६ ५९	९ १९	११ ४०	१४ ००	१६ ०४	१७ ४५	१९ १०	२० ३३	२२ ०६	० ००	२ १४	४ ३६
5	२०	६ ५५	९ १५	११ ३६	१३ ५६	१६ ००	१७ ४१	१९ ०६	२० २९	२२ ०२	२३ ५६	२ १०	४ ३२
6	२१	६ ५२	९ ११	११ ३२	१३ ५२	१५ ५६	१७ ३७	१९ ०२	२० २५	२१ ५८	२३ ५२	२ ०६	४ २८
7	२२	६ ४८	९ ०७	११ २८	१३ ४८	१५ ५२	१७ ३३	१८ ५८	२० २१	२१ ५४	२३ ४८	२ ०२	४ २४
8	२३	६ ४४	९ ०३	११ २४	१३ ४४	१५ ४८	१७ २९	१८ ५४	२० १७	२१ ५०	२३ ४४	१ ५८	४ २०
9	२४	६ ४०	८ ५९	११ २०	१३ ४०	१५ ४४	१७ २५	१८ ५०	२० १३	२१ ४६	२३ ४०	१ ५४	४ १६
10	२५	६ ३६	८ ५५	११ १६	१३ ३६	१५ ४०	१७ २१	१८ ४६	२० ०९	२१ ४२	२३ ३६	१ ५०	४ १२
11	२६	६ ३२	८ ५१	११ १२	१३ ३२	१५ ३६	१७ १७	१८ ४२	२० ०५	२१ ३८	२३ ३२	१ ४६	४ ०८
12	२७	६ २८	८ ४७	११ ०८	१३ २८	१५ ३२	१७ १३	१८ ३८	२० ०१	२१ ३४	२३ २८	१ ४२	४ ०४
13	२८	६ २४	८ ४३	११ ०४	१३ २४	१५ २८	१७ ०९	१८ ३४	१९ ५७	२१ ३०	२३ २४	१ ३८	४ ००
14	२९	६ २०	८ ३९	११ ००	१३ २०	१५ २४	१७ ०५	१८ ३०	१९ ५३	२१ २६	२३ २०	१ ३४	३ ५६
15	३०	६ १६	८ ३५	१० ५६	१३ १६	१५ २०	१७ ०१	१८ २६	१९ ४९	२१ २२	२३ १६	१ ३०	३ ५२
16	३१	६ १२	८ ३१	१० ५२	१३ १२	१५ १६	१६ ५७	१८ २२	१९ ४५	२१ १८	२३ १२	१ २६	३ ४८
17	आ.	६ ०९	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -

आश्विन (सितम्बर-अक्तूबर)

सितंबर	आश्विन प्र.	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
17	१	८ २७	१० ४८	१३ ०८	१५ १२	१६ ५३	१८ १८	१९ ४१	२१ १४	२३ ०८	१ २२	३ ४५	६ ०५
18	२	८ २३	१० ४४	१३ ०४	१५ ०८	१६ ४९	१८ १४	१९ ३७	२१ १०	२३ ०४	१ १८	३ ४१	६ ०१
19	३	८ १९	१० ४०	१३ ००	१५ ०४	१६ ४५	१८ १०	१९ ३३	२१ ०६	२३ ००	१ १४	३ ३७	५ ५७
20	४	८ १५	१० ३६	१२ ५६	१५ ००	१६ ४१	१८ ०६	१९ २९	२१ ०२	२२ ५६	१ १०	३ ३३	५ ५३
21	५	८ ११	१० ३२	१२ ५२	१४ ५६	१६ ३७	१८ ०२	१९ २५	२० ५८	२२ ५२	१ ०६	३ २९	५ ४९
22	६	८ ०७	१० २८	१२ ४८	१४ ५२	१६ ३३	१७ ५८	१९ २१	२० ५४	२२ ४८	१ ०२	३ २५	५ ४५
23	७	८ ०३	१० २४	१२ ४४	१४ ४८	१६ २९	१७ ५४	१९ १७	२० ५०	२२ ४४	० ५८	३ २१	५ ४१
24	८	७ ५९	१० २०	१२ ४०	१४ ४४	१६ २५	१७ ५०	१९ १३	२० ४६	२२ ४०	० ५४	३ १७	५ ३७
25	९	७ ५५	१० १६	१२ ३६	१४ ४०	१६ २१	१७ ४६	१९ ०९	२० ४२	२२ ३६	० ५१	३ १३	५ ३३
26	१०	७ ५१	१० १३	१२ ३३	१४ ३७	१६ १८	१७ ४३	१९ ०६	२० ३८	२२ ३२	० ४७	३ ०९	५ २९
27	११	७ ४७	१० ०९	१२ २९	१४ ३३	१६ १४	१७ ३९	१९ ०२	२० ३४	२२ २९	० ४३	३ ०५	५ २५
28	१२	७ ४३	१० ०५	१२ २५	१४ २९	१६ १०	१७ ३५	१८ ५८	२० ३०	२२ २५	० ३९	३ ०१	५ २१
29	१३	७ ३९	१० ०१	१२ २१	१४ २५	१६ ०६	१७ ३१	१८ ५४	२० २६	२२ २१	० ३५	२ ५७	५ १७
30	१४	७ ३५	९ ५७	१२ १७	१४ २१	१६ ०२	१७ २७	१८ ५०	२० २२	२२ १७	० ३१	२ ५३	५ १३
अक्तू.	१५	७ ३१	९ ५३	१२ १३	१४ १७	१५ ५८	१७ २३	१८ ४६	२० १८	२२ १३	० २७	२ ४९	५ ०९
2	१६	७ २७	९ ४९	१२ ०९	१४ १३	१५ ५४	१७ १९	१८ ४२	२० १५	२२ ०९	० २३	२ ४५	५ ०५
3	१७	७ २३	९ ४५	१२ ०५	१४ ०९	१५ ५०	१७ १५	१८ ३८	२० ११	२२ ०५	० १९	२ ४२	५ ०१
4	१८	७ १९	९ ४१	१२ ०१	१४ ०५	१५ ४६	१७ ११	१८ ३४	२० ०७	२२ ०१	० १५	२ ३८	४ ५७
5	१९	७ १५	९ ३७	११ ५७	१४ ०१	१५ ४२	१७ ०७	१८ ३०	२० ०३	२१ ५७	० ११	२ ३४	४ ५४
6	२०	७ ११	९ ३३	११ ५३	१३ ५७	१५ ३८	१७ ०३	१८ २६	१९ ५९	२१ ५३	० ०७	२ ३०	४ ५०
7	२१	७ ०७	९ २९	११ ४९	१३ ५३	१५ ३४	१६ ५९	१८ २२	१९ ५५	२१ ४९	० ०३	२ २७	४ ४६
8	२२	७ ०३	९ २५	११ ४५	१३ ४९	१५ ३०	१६ ५५	१८ १८	१९ ५१	२१ ४५	२३ ५९	२ २३	४ ४२
9	२३	६ ५९	९ २१	११ ४१	१३ ४५	१५ २६	१६ ५१	१८ १४	१९ ४७	२१ ४१	२३ ५५	२ १९	४ ३८
10	२४	६ ५६	९ १८	११ ३८	१३ ४२	१५ २३	१६ ४८	१८ ११	१९ ४३	२१ ३७	२३ ५२	२ १५	४ ३५
11	२५	६ ५२	९ १४	११ ३४	१३ ३८	१५ १९	१६ ४४	१८ ०७	१९ ३९	२१ ३४	२३ ४८	२ ११	४ ३१
12	२६	६ ४८	९ १०	११ ३०	१३ ३४	१५ १५	१६ ४०	१८ ०३	१९ ३५	२१ ३०	२३ ४४	२ ०७	४ २७
13	२७	६ ४४	९ ०६	११ २६	१३ ३०	१५ ११	१६ ३६	१७ ५९	१९ ३१	२१ २६	२३ ४०	२ ०३	४ २३
14	२८	६ ४०	९ ०२	११ २२	१३ २६	१५ ०७	१६ ३२	१७ ५५	१९ २७	२१ २२	२३ ३६	१ ५९	४ १९
15	२९	६ ३६	८ ५८	११ १८	१३ २२	१५ ०३	१६ २८	१७ ५१	१९ २३	२१ १८	२३ ३२	१ ५५	४ १५
16	३०	६ ३२	८ ५४	११ १४	१३ १८	१४ ५९	१६ २४	१७ ४७	१९ १९	२१ १४	२३ २८	१ ५१	४ ११
17	का.	६ २८	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -

दैनिक लग्नसारणी–शिमला (हि.प्र.) में लग्न समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

अक्टू.	कार्तिक	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
17	१	८ ५०	११ १०	१३ १४	१४ ५५	१६ २०	१७ ४३	१९ १५	२१ १०	२३ २४	१ ४७	४ ०६	६ २४
18	२	८ ४६	११ ०६	१३ १०	१४ ५१	१६ १६	१७ ३९	१९ ११	२१ ०६	२३ २०	१ ४३	४ ०३	६ २०
19	३	८ ४२	११ ०२	१३ ०६	१४ ४७	१६ १२	१७ ३५	१९ ०७	२१ ०२	२३ १६	१ ३९	३ ५८	६ १६
20	४	८ ३८	१० ५८	१३ ०२	१४ ४३	१६ ०८	१७ ३१	१९ ०३	२० ५८	२३ १२	१ ३५	३ ५४	६ १२
21	५	८ ३४	१० ५४	१२ ५८	१४ ३९	१६ ०४	१७ २७	१८ ५९	२० ५४	२३ ०८	१ ३१	३ ५०	६ ०८
22	६	८ ३०	१० ५०	१२ ५४	१४ ३५	१६ ००	१७ २३	१८ ५५	२० ५०	२३ ०४	१ २७	३ ४६	६ ०४
23	७	८ २६	१० ४६	१२ ५०	१४ ३१	१५ ५६	१७ १९	१८ ५१	२० ४६	२३ ०१	१ २३	३ ४३	६ ००
24	८	८ २२	१० ४२	१२ ४६	१४ २७	१५ ५२	१७ १५	१८ ४७	२० ४२	२२ ५७	१ १९	३ ३९	५ ५७
25	९	८ १९	१० ३९	१२ ४३	१४ २३	१५ ४८	१७ १२	१८ ४४	२० ३८	२२ ५३	१ १६	३ ३५	५ ५३
26	१०	८ १५	१० ३५	१२ ३९	१४ २०	१५ ४५	१७ ०८	१८ ४०	२० ३५	२२ ४९	१ १२	३ ३२	५ ४९
27	११	८ ११	१० ३१	१२ ३५	१४ १६	१५ ४१	१७ ०४	१८ ३६	२० ३१	२२ ४५	१ ०८	३ २८	५ ४५
28	१२	८ ०७	१० २७	१२ ३१	१४ १२	१५ ३७	१७ ००	१८ ३२	२० २७	२२ ४१	१ ०४	३ २४	५ ४१
29	१३	८ ०३	१० २३	१२ २७	१४ ०८	१५ ३३	१६ ५६	१८ २८	२० २३	२२ ३७	१ ००	३ २०	५ ३७
30	१४	७ ५९	१० १९	१२ २३	१४ ०४	१५ २९	१६ ५२	१८ २४	२० १९	२२ ३३	० ५६	३ १६	५ ३४
31	१५	७ ५५	१० १५	१२ १९	१४ ००	१५ २५	१६ ४८	१८ २०	२० १५	२२ २९	० ५२	३ १२	५ ३०
नवं.	१६	७ ५१	१० ११	१२ १५	१३ ५६	१५ २१	१६ ४४	१८ १६	२० ११	२२ २५	० ४८	३ ०८	५ २६
2	१७	७ ४७	१० ०७	१२ ११	१३ ५२	१५ १७	१६ ४०	१८ १२	२० ०७	२२ २१	० ४४	३ ०४	५ २२
3	१८	७ ४३	१० ०३	१२ ०७	१३ ४८	१५ १३	१६ ३६	१८ ०९	२० ०३	२२ १७	० ४०	३ ००	५ १८
4	१९	७ ३९	९ ५९	१२ ०३	१३ ४४	१५ ०९	१६ ३२	१८ ०५	१९ ५९	२२ १३	० ३६	२ ५६	५ १४
5	२०	७ ३५	९ ५५	११ ५९	१३ ४०	१५ ०५	१६ २८	१८ ०१	१९ ५५	२२ ०९	० ३२	२ ५२	५ १०
6	२१	७ ३१	९ ५१	११ ५५	१३ ३६	१५ ०१	१६ २४	१७ ५७	१९ ५१	२२ ०५	० २८	२ ४८	५ ०६
7	२२	७ २८	९ ४७	११ ५१	१३ ३२	१४ ५७	१६ २०	१७ ५३	१९ ४७	२२ ०१	० २४	२ ४४	५ ०२
8	२३	७ २४	९ ४३	११ ४७	१३ २८	१४ ५३	१६ १६	१७ ४९	१९ ४३	२१ ५७	० २०	२ ४०	४ ५८
9	२४	७ २०	९ ३१	११ ४३	१३ २४	१४ ४९	१६ १२	१७ ४५	१९ ३९	२१ ५३	० १६	२ ३६	४ ५४
10	२५	७ १६	९ ३५	११ ३९	१३ २०	१४ ४५	१६ ०८	१७ ४१	१९ ३५	२१ ५०	० १२	२ ३२	४ ५०
11	२६	७ १२	९ ३१	११ ३५	१३ १७	१४ ४२	१६ ०५	१७ ३७	१९ ३२	२१ ४६	० ०८	२ २८	४ ४६
12	२७	७ ०८	९ २७	११ ३२	१३ १३	१४ ३८	१६ ०१	१७ ३३	१९ २८	२१ ४२	० ०५	२ २४	४ ४२
13	२८	७ ०४	९ २४	११ २८	१३ ०९	१४ ३४	१५ ५७	१७ २९	१९ २४	२१ ३८	० ०१	२ २०	४ ३८
14	२९	७ ००	९ २०	११ २४	१३ ०५	१४ ३०	१५ ५३	१७ २५	१९ २०	२१ ३४	२३ ५७	२ १६	४ ३४
15	३०	६ ५६	९ १६	११ २०	१३ ०२	१४ २६	१५ ४९	१७ २१	१९ १६	२१ ३०	२३ ५३	२ १२	४ ३०
16	पा.	६ ५२	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–

नवम्बर	मार्गशीर्ष	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
16	१	९ १२	११ १६	१२ ५७	१४ २२	१५ ४५	१७ १७	१९ १२	२१ २६	२३ ४९	२ ०८	४ २६	६ ४८
17	२	९ ०८	११ १२	१२ ५३	१४ १८	१५ ४१	१७ १३	१९ ०८	२१ २२	२३ ४५	२ ०४	४ २२	६ ४४
18	३	९ ०४	११ ०८	१२ ४९	१४ १४	१५ ३७	१७ ०९	१९ ०४	२१ १८	२३ ४१	२ ००	४ १८	६ ४०
19	४	९ ००	११ ०४	१२ ४५	१४ १०	१५ ३३	१७ ०५	१९ ००	२१ १४	२३ ३७	१ ५६	४ १४	६ ३६
20	५	८ ५६	११ ००	१२ ४१	१४ ०६	१५ २९	१७ ०१	१८ ५६	२१ १०	२३ ३३	१ ५२	४ १०	६ ३२
21	६	८ ५२	१० ५६	१२ ३७	१४ ०२	१५ २५	१६ ५७	१८ ५२	२१ ०६	२३ २९	१ ४८	४ ०६	६ २८
22	७	८ ४८	१० ५२	१२ ३३	१३ ५८	१५ २१	१६ ५४	१८ ४९	२१ ०३	२३ २५	१ ४५	४ ०३	६ २५
23	८	८ ४४	१० ४८	१२ २९	१३ ५४	१५ १७	१६ ५०	१८ ४५	२० ५९	२३ २१	१ ४१	३ ५९	६ २१
24	९	८ ४०	१० ४४	१२ २५	१३ ५०	१५ १३	१६ ४६	१८ ४१	२० ५५	२३ १७	१ ३७	३ ५५	६ १७
25	१०	८ ३७	१० ४१	१२ २२	१३ ४७	१५ १०	१६ ४२	१८ ३७	२० ५१	२३ १३	१ ३३	३ ५१	६ १३
26	११	८ ३३	१० ३७	१२ १८	१३ ४३	१५ ०६	१६ ३८	१८ ३३	२० ४७	२३ १०	१ २९	३ ४७	६ ०९
27	१२	८ २९	१० ३३	१२ १४	१३ ३९	१५ ०२	१६ ३४	१८ २९	२० ४३	२३ ०६	१ २५	३ ४३	६ ०५
28	१३	८ २५	१० २९	१२ १०	१३ ३५	१४ ५८	१६ ३०	१८ २५	२० ३९	२३ ०२	१ २१	३ ३९	६ ०१
29	१४	८ २१	१० २५	१२ ०६	१३ ३१	१४ ५४	१६ २७	१८ २१	२० ३५	२२ ५९	१ १८	३ ३६	५ ५७
30	१५	८ १७	१० २१	१२ ०२	१३ २७	१४ ५०	१६ २३	१८ १७	२० ३१	२२ ५५	१ १४	३ ३२	५ ५३
दिसं.	१६	८ १३	१० १७	११ ५८	१३ २३	१४ ४६	१६ १९	१८ १३	२० २७	२२ ५१	१ १०	३ २८	५ ४९
2	१७	८ ०९	१० १३	११ ५४	१३ १९	१४ ४२	१६ १५	१८ ०९	२० २३	२२ ४७	१ ०६	३ २४	५ ४५
3	१८	८ ०५	१० ०९	११ ५०	१३ १५	१४ ३८	१६ ११	१८ ०५	२० १९	२२ ४३	१ ०२	३ २०	५ ४१
4	१९	८ ०१	१० ०५	११ ४६	१३ ११	१४ ३४	१६ ०७	१८ ०१	२० १५	२२ ३९	० ५८	३ १६	५ ३७
5	२०	७ ५७	१० ०१	११ ४२	१३ ०७	१४ ३०	१६ ०३	१७ ५७	२० ११	२२ ३५	० ५४	३ १२	५ ३३
6	२१	७ ५३	९ ५७	११ ३८	१३ ०३	१४ २६	१५ ५९	१७ ५३	२० ०७	२२ ३१	० ५०	३ ०८	५ २९
7	२२	७ ४९	९ ५३	११ ३४	१२ ५९	१४ २२	१५ ५५	१७ ४९	२० ०३	२२ २७	० ४६	३ ०४	५ २५
8	२३	७ ४५	९ ४९	११ ३०	१२ ५५	१४ १८	१५ ५१	१७ ४५	१९ ५९	२२ २३	० ४२	३ ००	५ २१
9	२४	७ ४१	९ ४५	११ २६	१२ ५१	१४ १४	१५ ४७	१७ ४१	१९ ५५	२२ १९	० ३८	२ ५६	५ १७
10	२५	७ ३८	९ ४२	११ २३	१२ ४८	१४ ११	१५ ४४	१७ ३८	१९ ५२	२२ १६	० ३५	२ ५३	५ १४
11	२६	७ ३४	९ ३८	११ १९	१२ ४४	१४ ०७	१५ ४०	१७ ३४	१९ ४८	२२ १२	० ३१	२ ४९	५ १०
12	२७	७ ३०	९ ३४	११ १५	१२ ४०	१४ ०३	१५ ३६	१७ ३०	१९ ४४	२२ ०८	० २७	२ ४५	५ ०६
13	२८	७ २६	९ ३०	११ ११	१२ ३६	१३ ५९	१५ ३२	१७ २६	१९ ४०	२२ ०४	० २३	२ ४१	५ ०३
14	२९	७ २२	९ २६	११ ०७	१२ ३२	१३ ५५	१५ २८	१७ २२	१९ ३६	२२ ००	० १९	२ ३७	४ ५९
15	३०	७ १८	९ २२	११ ०३	१२ २८	१३ ५१	१५ २४	१७ १८	१९ ३२	२१ ५६	० १५	२ ३३	४ ५५
16	पौ.	७ १४	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–

दैनिक लग्नसारणी–शिमला (हि.प्र.) में

दैनिक लग्नसारणी–शिमला (हि.प्र.) में लग्न समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

पौष (दिसम्बर-जनवरी)

दिसंबर	पौष प्रवि	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
16	१	९ १८	१० ५९	१२ २४	१३ ४७	१५ २०	१७ १४	१९ २८	२१ ५२	० ११	२ २९	४ ५०	७ १०
17	२	९ १४	१० ५५	१२ २१	१३ ४३	१५ १६	१७ १०	१९ २४	२१ ४८	० ०७	२ २५	४ ४६	७ ०६
18	३	९ १०	१० ५२	१२ १७	१३ ३९	१५ १२	१७ ०६	१९ २०	२१ ४४	० ०३	२ २१	४ ४२	७ ०२
19	४	९ ०६	१० ४८	१२ १३	१३ ३५	१५ ०८	१७ ०२	१९ १६	२१ ४०	२३ ५९	२ १७	४ ३८	६ ५८
20	५	९ ०२	१० ४४	१२ ०९	१३ ३१	१५ ०४	१६ ५८	१९ १२	२१ ३६	२३ ५५	२ १३	४ ३४	६ ५४
21	६	८ ५८	१० ४०	१२ ०५	१३ २७	१५ ००	१६ ५४	१९ ०८	२१ ३२	२३ ५१	२ १०	४ ३०	६ ५०
22	७	८ ५४	१० ३६	१२ ०१	१३ २३	१४ ५६	१६ ५०	१९ ०५	२१ २८	२३ ४७	२ ०६	४ २६	६ ४६
23	८	८ ५०	१० ३२	११ ५७	१३ १९	१४ ५२	१६ ४६	१९ ०१	२१ २४	२३ ४३	२ ०२	४ २२	६ ४२
24	९	८ ४७	१० २८	११ ५३	१३ १५	१४ ४८	१६ ४३	१८ ५७	२१ २०	२३ ३९	१ ५८	४ १८	६ ३८
25	१०	८ ४३	१० २४	११ ४९	१३ ११	१४ ४४	१६ ३९	१८ ५३	२१ १६	२३ ३५	१ ५४	४ १४	६ ३५
26	११	८ ३९	१० २०	११ ४५	१३ ०८	१४ ४०	१६ ३५	१८ ४९	२१ १२	२३ ३१	१ ५०	४ १०	६ ३१
27	१२	८ ३५	१० १६	११ ४१	१३ ०४	१४ ३७	१६ ३१	१८ ४५	२१ ०८	२३ २७	१ ४६	४ ०७	६ २७
28	१३	८ ३१	१० १२	११ ३७	१३ ००	१४ ३३	१६ २७	१८ ४१	२१ ०४	२३ २३	१ ४२	४ ०३	६ २३
29	१४	८ २७	१० ०८	११ ३३	१२ ५६	१४ २९	१६ २३	१८ ३७	२१ ००	२३ १९	१ ३८	३ ५९	६ १९
30	१५	८ २३	१० ०४	११ २९	१२ ५२	१४ २५	१६ १९	१८ ३३	२० ५६	२३ १५	१ ३४	३ ५५	६ १५
31	१६	८ १९	१० ००	११ २५	१२ ४८	१४ २१	१६ १५	१८ २९	२० ५२	२३ ११	१ ३०	३ ५१	६ ११
जन.	१७	८ १५	९ ५६	११ २१	१२ ४४	१४ १७	१६ ११	१८ २५	२० ४८	२३ ०७	१ २६	३ ४७	६ ७
2	१८	८ ११	९ ५२	११ १७	१२ ४०	१४ १३	१६ ०७	१८ २१	२० ४४	२३ ०३	१ २२	३ ४३	६ ३
3	१९	८ ०७	९ ४८	११ १३	१२ ३६	१४ ०९	१६ ०३	१८ १७	२० ४०	२२ ५९	१ १८	३ ३९	५ ५९
4	२०	८ ०३	९ ४४	११ ०९	१२ ३२	१४ ०५	१५ ५९	१८ १३	२० ३६	२२ ५५	१ १४	३ ३५	५ ५५
5	२१	७ ५९	९ ४०	११ ०५	१२ २८	१४ ०१	१५ ५५	१८ ०९	२० ३२	२२ ५१	१ १०	३ ३१	५ ५१
6	२२	७ ५५	९ ३६	११ ०१	१२ २४	१३ ५७	१५ ५१	१८ ०५	२० २८	२२ ४७	१ ०६	३ २७	५ ४७
7	२३	७ ५१	९ ३२	१० ५७	१२ २०	१३ ५३	१५ ४७	१८ ०१	२० २४	२२ ४३	१ ०२	३ २३	५ ४३
8	२४	७ ४७	९ २८	१० ५३	१२ १६	१३ ४९	१५ ४३	१७ ५७	२० २०	२२ ३९	० ५८	३ १९	५ ३९
9	२५	७ ४३	९ २४	१० ४९	१२ १२	१३ ४५	१५ ३९	१७ ५३	२० १६	२२ ३५	० ५४	३ १५	५ ३५
10	२६	७ ३९	९ २०	१० ४५	१२ ०८	१३ ४१	१५ ३५	१७ ४९	२० १२	२२ ३१	० ५०	३ ११	५ ३१
11	२७	७ ३५	९ १६	१० ४१	१२ ०४	१३ ३७	१५ ३१	१७ ४५	२० ०८	२२ २७	० ४६	३ ०७	५ २७
12	२८	७ ३१	९ १२	१० ३७	१२ ००	१३ ३३	१५ २७	१७ ४१	२० ०४	२२ २३	० ४२	३ ०३	५ २३
13	२९	७ २७	९ ०८	१० ३३	११ ५६	१३ २९	१५ २३	१७ ३७	२० ००	२२ १९	० ३८	२ ५९	५ १९
14	मा.	७ २३	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –

माघ (जनवरी-फरवरी)

जनवरी	माघ प्रवि	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	९ ०४	१० २९	११ ५२	१३ २५	१५ १९	१७ ३३	१९ ५६	२२ १५	० ३४	२ ५५	५ १५	७ १९
15	२	९ ००	१० २५	११ ४८	१३ २१	१५ १५	१७ २९	१९ ५२	२२ ११	० ३०	२ ५१	५ ११	७ १५
16	३	८ ५७	१० २२	११ ४५	१३ १८	१५ १२	१७ २५	१९ ४९	२२ ८	० २७	२ ४७	५ ७	७ ११
17	४	८ ५३	१० १८	११ ४१	१३ १४	१५ ८	१७ २१	१९ ४५	२२ ४	० २३	२ ४३	५ ३	७ ७
18	५	८ ४९	१० १४	११ ३७	१३ १०	१५ ४	१७ १८	१९ ४१	२२ ०	० १९	२ ३९	४ ५९	७ ३
19	६	८ ४५	१० १०	११ ३३	१३ ६	१५ ००	१७ १४	१९ ३७	२१ ५६	० १५	२ ३५	४ ५६	६ ५९
20	७	८ ४१	१० ०६	११ २९	१३ २	१४ ५६	१७ १०	१९ ३३	२१ ५२	० ११	२ ३१	४ ५२	६ ५५
21	८	८ ३७	१० २	११ २५	१२ ५८	१४ ५२	१७ ९	१९ २९	२१ ४८	० ७	२ २७	४ ५७	६ ५२
22	९	८ ३३	९ ५८	११ २१	१२ ५४	१४ ४८	१७ २	१९ २५	२१ ४४	० ३	२ २३	४ ४४	६ ४८
23	१०	८ २९	९ ५४	११ १७	१२ ५०	१४ ४४	१६ ५८	१९ २१	२१ ४०	२३ ५९	२ १९	४ ४०	६ ४४
24	११	८ २५	९ ५०	११ १३	१२ ४६	१४ ४०	१६ ५४	१९ १८	२१ ३६	२३ ५५	२ १६	४ ३६	६ ४०
25	१२	८ २१	९ ४६	११ ९	१२ ४२	१४ ३६	१६ ५०	१९ १४	२१ ३२	२३ ५१	२ १२	४ ३२	६ ३६
26	१३	८ १८	९ ४३	११ ६	१२ ३९	१४ ३३	१६ ४७	१९ १०	२१ २९	२३ ४८	२ ८	४ २८	६ ३२
27	१४	८ १४	९ ३९	११ २	१२ ३५	१४ २९	१६ ४३	१९ ६	२१ २५	२३ ४४	२ ४	४ २४	६ २८
28	१५	८ १०	९ ३५	१० ५८	१२ ३१	१४ २५	१६ ३९	१९ २	२१ २१	२३ ४०	२ ०	४ २०	६ २४
29	१६	८ ०६	९ ३१	१० ५४	१२ २७	१४ २१	१६ ३५	१८ ५८	२१ १७	२३ ३६	१ ५६	४ १६	६ २०
30	१७	८ २	९ २७	१० ५०	१२ २३	१४ १७	१६ ३१	१८ ५४	२१ १३	२३ ३२	१ ५२	४ १३	६ १७
31	१८	७ ५८	९ २३	१० ४६	१२ १९	१४ १३	१६ २७	१८ ५०	२१ ९	२३ २८	१ ४८	४ ९	६ १३
फर	१९	७ ५४	९ १९	१० ४२	१२ १५	१४ ९	१६ २३	१८ ४६	२१ ५	२३ २४	१ ४४	४ ५	६ ९
2	२०	७ ५०	९ १५	१० ३८	१२ ११	१४ ५	१६ १९	१८ ४२	२१ १	२३ २०	१ ४०	४ १	६ ५
3	२१	७ ४६	९ ११	१० ३४	१२ ७	१४ १	१६ १५	१८ ३८	२० ५७	२३ १६	१ ३६	३ ५७	६ १
4	२२	७ ४२	९ ७	१० ३०	१२ ३	१३ ५७	१६ ११	१८ ३४	२० ५३	२३ १२	१ ३२	३ ५३	५ ५७
5	२३	७ ३८	९ ३	१० २६	११ ५९	१३ ५३	१६ ७	१८ ३०	२० ५०	२३ ८	१ २८	३ ४९	५ ५३
6	२४	७ ३४	८ ५९	१० २२	११ ५५	१३ ४९	१६ ३	१८ २६	२० ४६	२३ ४	१ २५	३ ४५	५ ४९
7	२५	७ ३०	८ ५५	१० १८	११ ५१	१३ ४५	१५ ५९	१८ २२	२० ४२	२३ ०	१ २१	३ ४१	५ ४५
8	२६	७ २६	८ ५१	१० १४	११ ४७	१३ ४१	१५ ५५	१८ १८	२० ३८	२२ ५६	१ १७	३ ३७	५ ४१
9	२७	७ २२	८ ४७	१० १०	११ ४३	१३ ३७	१५ ५१	१८ १५	२० ३४	२२ ५२	१ १३	३ ३३	५ ३७
10	२८	७ १८	८ ४३	१० ६	११ ३९	१३ ३३	१५ ४७	१८ ११	२० ३०	२२ ४८	१ ९	३ २९	५ ३३
11	२९	७ १४	८ ३९	१० २	११ ३५	१३ २९	१५ ४३	१८ ७	२० २६	२२ ४४	१ ५	३ २५	५ २९
12	३०	७ १०	८ ३५	९ ५८	११ ३१	१३ २५	१५ ३९	१८ ३	२० २२	२२ ४०	१ १	३ २१	५ २५
13	फा.	७ ७	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –

दैनिक लग्नसारणी-शिमला (हि.प्र.) में लग्न समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

फरवरी	फाल्गुन	फाल्गुन (फरवरी-मार्च)											
		कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
13	१	८ ३१	९ ५४	११ २७	१३ २१	१५ ३५	१७ ५९	२० १८	२२ ३६	० ५७	३ १७	५ २१	७ ३
14	२	८ २७	९ ५०	११ २३	१३ १७	१५ ३१	१७ ५५	२० १४	२२ ३२	० ५३	३ १३	५ १७	६ ५९
15	३	८ २३	९ ४६	११ १९	१३ १३	१५ २७	१७ ५१	२० १०	२२ २८	० ४९	३ ९	५ १३	६ ५५
16	४	८ १९	९ ४२	११ १५	१३ ९	१५ २३	१७ ४७	२० ६	२२ २४	० ४५	३ ५	५ ९	६ ५१
17	५	८ १५	९ ३८	११ ११	१३ ५	१५ १९	१७ ४३	२० २	२२ २०	० ४१	३ १	५ ६	६ ४७
18	६	८ ११	९ ३४	११ ७	१३ १	१५ १५	१७ ३९	१९ ५८	२२ १६	० ३७	२ ५७	५ २	६ ४३
19	७	८ ७	९ ३०	११ ३	१२ ५७	१५ ११	१७ ३५	१९ ५४	२२ १२	० ३३	२ ५३	४ ५८	६ ३९
20	८	८ ४	९ २७	११ ०	१२ ५३	१५ ७	१७ ३१	१९ ५०	२२ ८	० २९	२ ४९	४ ५४	६ ३५
21	९	८ ०	९ २३	१० ५६	१२ ५०	१५ ४	१७ २७	१९ ४६	२२ ४	० २५	२ ४६	४ ५०	६ ३१
22	१०	७ ५६	९ १९	१० ५२	१२ ४६	१५ ०	१७ २३	१९ ४२	२२ ०	० २१	२ ४२	४ ४६	६ २७
23	११	७ ५२	९ १४	१० ४८	१२ ४२	१४ ५६	१७ १९	१९ ३८	२१ ५६	० १८	२ ३८	४ ४२	६ २३
24	१२	७ ४८	९ १०	१० ४४	१२ ३८	१४ ५२	१७ १५	१९ ३४	२१ ५२	० १४	२ ३४	४ ३८	६ १९
25	१३	७ ४५	९ ०७	१० ४१	१२ ३५	१४ ४९	१७ १२	१९ ३१	२१ ४९	० ११	२ ३१	४ ३५	६ १६
26	१४	७ ४२	९ ०४	१० ३८	१२ ३२	१४ ४६	१७ ०९	१९ २८	२१ ४६	० ०८	२ २८	४ ३२	६ १३
27	१५	७ ३९	९ ०१	१० ३५	१२ २९	१४ ४३	१७ ०६	१९ २५	२१ ४३	० ०५	२ २५	४ २९	६ १०
28	१६	७ ३६	८ ५८	१० ३२	१२ २६	१४ ४०	१७ ०३	१९ २२	२१ ४०	० ०२	२ २२	४ २६	६ ०७
29	१७	७ ३२	८ ५५	१० २८	१२ २२	१४ ३६	१६ ५१	१९ १८	२१ ३६	२३ ५८	२ १८	४ २२	६ ०४
मार्च	१८	७ २८	८ ५१	१० २४	१२ १८	१४ ३२	१६ ५५	१९ १४	२१ ३२	२३ ५४	२ १४	४ १८	६ ०
2	१९	७ २४	८ ४७	१० २०	१२ १४	१४ २८	१६ ५१	१९ १०	२१ २८	२३ ५०	२ १०	४ १४	५ ५६
3	२०	७ २१	८ ४४	१० १७	१२ ११	१४ २५	१६ ४७	१९ ६	२१ २४	२३ ४६	२ ६	४ १०	५ ५२
4	२१	७ १७	८ ४०	१० १३	१२ ७	१४ २१	१६ ४३	१९ २	२१ २०	२३ ४२	२ २	४ ६	५ ४८
5	२२	७ १३	८ ३६	१० ९	१२ ३	१४ १७	१६ ३९	१८ ५८	२१ १६	२३ ३९	१ ५८	४ ३	५ ४४
6	२३	७ ९	८ ३२	१० ५	११ ५९	१४ १३	१६ ३५	१८ ५४	२१ १२	२३ ३५	१ ५४	३ ५९	५ ४०
7	२४	७ ५	८ २८	१० १	११ ५५	१४ ९	१६ ३१	१८ ५०	२१ ९	२३ ३१	१ ५०	३ ५५	५ ३६
8	२५	७ १	८ २४	९ ५७	११ ५१	१४ ५	१६ २७	१८ ४६	२१ ५	२३ २७	१ ४६	३ ५१	५ ३२
9	२६	६ ५७	८ २०	९ ५३	११ ४७	१४ १	१६ २४	१८ ४३	२१ १	२३ २३	१ ४३	३ ४७	५ २८
10	२७	६ ५३	८ १६	९ ४९	११ ४३	१३ ५७	१६ २०	१८ ३९	२० ५७	२३ १९	१ ३९	३ ४३	५ २४
11	२८	६ ४९	८ १२	९ ४५	११ ३९	१३ ५३	१६ १७	१८ ३५	२० ५३	२३ १५	१ ३५	३ ३९	५ २०
12	२९	६ ४५	८ ८	९ ४१	११ ३५	१३ ४९	१६ १३	१८ ३२	२० ४९	२३ १२	१ ३१	३ ३५	५ १७
13	३०	६ ४१	८ ४	९ ३७	११ ३१	१३ ४५	१६ ९	१८ २८	२० ४५	२३ ८	१ २८	३ ३२	५ १३
14	चैत्र	६ ३७	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–

मार्च	चैत्र प्रवि	चैत्र (मार्च-अप्रैल)											
		मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	८ ००	९ ३३	११ २७	१३ ४१	१६ ५	१८ २४	२० ४१	२३ ७	१ २४	३ २८	५ ९	६ ३३
15	२	७ ५६	९ २९	११ २३	१३ ३७	१६ १	१८ २०	२० ३७	२३ ०	१ २०	३ २४	५ ५	६ २९
16	३	७ ५२	९ २५	११ १९	१३ ३३	१५ ५७	१८ १६	२० ३३	२२ ५६	१ १६	३ २०	५ १	६ २५
17	४	७ ४८	९ २१	११ १५	१३ २९	१५ ५३	१८ १२	२० २९	२२ ५२	१ १२	३ १६	४ ५७	६ २१
18	५	७ ४४	९ १७	११ ११	१३ २५	१५ ४९	१८ ८	२० २५	२२ ४८	१ ८	३ १२	४ ५३	६ १७
19	६	७ ४०	९ १३	११ ७	१३ २१	१५ ४५	१८ ४	२० २१	२२ ४४	१ ४	३ ८	४ ४९	६ १३
20	७	७ ३६	९ ९	११ ३	१३ १८	१५ ४१	१८ ०	२० १७	२२ ४०	१ ०	३ ४	४ ४५	६ ९
21	८	७ ३२	९ ५	१० ५९	१३ १४	१५ ३७	१७ ५६	२० १३	२२ ३६	० ५६	३ ००	४ ४१	६ ५
22	९	७ २८	९ १	१० ५५	१३ १०	१५ ३३	१७ ५२	२० ९	२२ ३२	० ५२	२ ५६	४ ३७	६. १
23	१०	७ २५	८ ५७	१० ५२	१३ ६	१५ २९	१७ ४८	२० ५	२२ २८	० ४८	२ ५२	४ ३३	५ ५७
24	११	७ २१	८ ५३	१० ४८	१३ २	१५ २५	१७ ४४	२० १	२२ २४	० ४४	२ ४८	४ ३०	५ ५३
25	१२	७ १७	८ ४९	१० ४४	१२ ५८	१५ २१	१७ ४०	१९ ५७	२२ २०	० ४०	२ ४४	४ २६	५ ४९
26	१३	७ १३	८ ४५	१० ४०	१२ ५४	१५ १७	१७ ३६	१९ ५४	२२ १६	० ३६	२ ४०	४ २२	५ ४५
27	१४	७ ९	८ ४२	१० ३६	१२ ५०	१५ १३	१७ ३२	१९ ५०	२२ १२	० ३२	२ ३६	४ १८	५ ४१
28	१५	७ ५	८ ३८	१० ३२	१२ ४६	१५ ९	१७ २८	१९ ४६	२२ ८	० २८	२ ३३	४ १४	५ ३७
29	१६	७ १	८ ३४	१० २८	१२ ४२	१५ ५	१७ २४	१९ ४२	२२ ४	० २४	२ २९	४ १०	५ ३४
30	१७	६ ५७	८ ३०	१० २४	१२ ३९	१५ १	१७ २०	१९ ३८	२२ ०	० २०	२ २५	४ ६	५ ३०
31	१८	६ ५३	८ २६	१० २०	१२ ३५	१४ ५७	१७ १६	१९ ३४	२१ ५६	० १६	२ २१	४ २	५ २६
अप्रै	१९	६ ४९	८ २२	१० १६	१२ ३१	१४ ५३	१७ १२	१९ ३०	२१ ५२	० १२	२ १७	३ ५८	५ २२
2	२०	६ ४५	८ १८	१० १२	१२ २७	१४ ४९	१७ ८	१९ २६	२१ ४८	० ८	२ १३	३ ५४	५ १८
3	२१	६ ४१	८ १४	१० ८	१२ २३	१४ ४५	१७ ४	१९ २२	२१ ४४	० ४	२ ९	३ ५०	५ १४
4	२२	६ ३७	८ १०	१० ४	१२ १९	१४ ४१	१७ ०	१९ १९	२१ ४०	२४ ००	२ ५	३ ४६	५ १०
5	२३	६ ३३	८ ०६	१० ०	१२ १५	१४ ३७	१६ ५६	१९ १५	२१ ३७	२३ ५७	२ १	३ ४२	५ ६
6	२४	६ ३०	८ ३	९ ५६	१२ ११	१४ ३३	१६ ५२	१९ ११	२१ ३३	२३ ५३	१ ५७	३ ३८	५ २
7	२५	६ २६	७ ५९	९ ५३	१२ ७	१४ २९	१६ ४९	१९ ७	२१ २९	२३ ४९	१ ५३	३ ३४	४ ५८
8	२६	६ २२	७ ५५	९ ४९	१२ ३	१४ २५	१६ ४५	१९ ३	२१ २५	२३ ४५	१ ४९	३ ३०	४ ५४
9	२७	६ १८	७ ५१	९ ४५	११ ५९	१४ २१	१६ ४१	१८ ५९	२१ २१	२३ ४१	१ ४५	३ २६	४ ५१
10	२८	६ १४	७ ४७	९ ४१	११ ५५	१४ १७	१६ ३७	१८ ५५	२१ १७	२३ ३७	१ ४१	३ २२	४ ४७
11	२९	६ १०	७ ४३	९ ३७	११ ५१	१४ १४	१६ ३३	१८ ५१	२१ १३	२३ ३३	१ ३७	३ १८	४ ४३
12	३०	६ ६	७ ३९	९ ३३	११ ४७	१४ १०	१६ २९	१८ ४७	२१ ९	२३ २९	१ ३४	३ १४	४ ३९
13	चै.	६ २	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–

भारत के प्रमुख नगरों के दैनिक सूर्योदय-सूर्यास्त (भा. स्टैं. टा.)

भारत के प्रमुख नगरों के दैनिक सूर्योदय-सूर्यास्त (भा. स्टैं. टा.)-2019 ई.

नीचे भारत के कुछ प्रमुख नगरों के सूर्योदयास्त दिए गए हैं जो किरण-वक्री भवन संस्कार रहित है। जो सूर्योदयादि इष्ट, ज्योतिष शास्त्रीय एवं धार्मिक अनुष्ठानादि कृत्यों के लिए समान रूप से उपयोगी होते हैं। किसी नगर के सूर्योदय में लगभग ३/४ मिनट घटाने तथा अस्त में ३/४ मिनट जोड़ने से किरण वक्री संस्कार सहित (Upper Limb) अर्थात् दृश्यमान सूर्योदय-सूर्यास्त होंगे।

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		अल्मोड़ा		जयपुर		नैनीताल		हरिद्वार		करनाल		पिथौरागढ़		कठुआ		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
जन.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	जन.
1	7 34	17 34	7 28	17 30	7 23	17 29	7 21	17 32	7 10	17 19	7 20	17 40	7 11	17 21	7 17	17 24	7 21	17 30	7 08	17 17	7 33	17 30	1
2	35	34	29	31	23	30	21	33	10	20	20	41	11	21	17	25	21	31	08	18	34	30	2
3	35	35	29	32	23	31	21	34	11	21	21	43	11	22	17	25	22	31	08	18	34	31	3
4	35	36	29	33	24	32	22	35	11	21	21	43	11	23	18	26	22	32	09	19	34	32	4
5	35	36	29	34	24	32	22	35	11	22	21	43	11	23	18	27	22	33	09	20	34	33	5
6	35	37	29	35	24	33	22	36	11	23	21	44	12	24	18	28	22	34	09	21	34	33	6
7	35	38	29	36	24	34	22	37	11	24	22	45	12	25	18	28	22	34	09	21	34	34	7
8	35	39	29	36	24	35	22	38	11	24	22	46	12	26	18	29	22	35	09	22	34	35	8
9	35	40	29	37	24	36	22	39	11	25	22	46	12	27	18	30	22	36	09	23	34	36	9
10	35	40	29	38	24	37	22	39	11	26	22	47	12	27	18	31	22	37	09	24	34	37	10
11	35	41	29	39	24	38	22	40	11	27	22	48	12	28	18	32	22	38	09	25	34	38	11
12	35	42	29	39	24	39	22	41	11	28	22	49	12	29	18	32	22	38	09	25	34	38	12
13	35	43	29	40	24	40	22	42	11	28	22	50	12	30	18	33	22	39	09	26	34	39	13
14	35	44	29	41	24	40	22	43	11	29	22	50	12	31	18	34	22	40	09	27	34	40	14
15	35	45	29	42	24	41	22	44	11	30	21	51	12	31	18	35	22	41	09	28	34	41	15
16	35	46	29	43	24	42	22	45	11	31	21	52	11	32	18	36	22	42	09	29	33	42	16
17	34	47	29	44	24	42	21	46	11	32	21	53	11	33	18	37	22	43	09	30	33	43	17
18	34	47	28	46	23	43	21	46	11	33	21	53	11	34	17	38	22	43	08	30	33	44	18
19	34	48	28	47	23	44	21	47	11	34	21	54	11	35	17	39	21	44	08	31	33	45	19
20	34	49	28	46	23	45	21	48	10	34	21	55	11	36	17	40	21	45	08	32	32	46	20
21	33	50	27	47	23	46	20	48	10	35	20	56	10	36	17	41	21	46	08	33	32	47	21
22	33	51	27	48	22	47	20	49	10	36	21	56	10	37	16	42	20	47	07	34	32	48	22
23	33	52	27	49	22	48	20	50	09	37	20	57	10	38	16	43	20	48	07	35	31	49	23
24	32	53	27	50	21	49	20	51	09	38	20	58	09	39	16	43	20	49	07	36	31	49	24
25	32	54	26	51	21	49	19	52	09	39	19	17 59	09	40	15	44	19	49	06	36	30	50	25
26	31	55	26	52	21	50	19	53	08	40	19	18 00	09	41	15	44	19	50	06	37	30	51	26
27	31	56	25	53	20	51	19	54	08	40	18	01	08	42	14	46	19	51	06	38	29	52	27
28	30	57	25	54	20	52	18	55	07	41	18	01	08	42	14	46	18	52	05	39	29	53	28
29	30	58	24	55	19	53	18	56	07	42	18	02	07	43	13	47	18	53	05	40	28	54	29
30	29	17 58	23	56	19	54	17	56	06	43	17	03	07	44	13	48	17	54	04	41	28	55	30
31	7 29	18 00	7 23	17 57	7 18	17 55	7 17	17 57	7 06	17 44	7 17	18 03	7 06	17 45	7 12	17 49	7 17	17 55	7 04	17 42	7 27	17 56	31
फर.	28	18 00	7 22	17 57	7 18	17 56	7 16	17 58	7 05	17 45	7 16	18 04	7 06	17 46	7 12	17 50	7 16	17 55	7 03	17 42	7 26	17 57	फर.
2	27	01	22	58	17	56	15	59	05	46	16	05	05	47	11	50	15	56	03	43	26	58	2
3	27	02	21	17 59	17	57	15	17 59	04	46	15	06	05	48	11	51	15	57	02	44	25	59	3
4	26	03	21	18 00	16	58	14	18 00	04	47	15	06	04	48	10	52	14	58	01	45	24	18 00	4
5	25	04	20	01	15	17 59	14	01	03	48	14	07	03	49	09	53	14	17 59	01	46	24	01	5
6	25	05	21	02	15	18 00	13	02	02	49	14	08	03	50	09	54	13	18 00	7 00	47	23	02	6
7	24	06	19	02	14	01	13	03	02	50	14	08	02	51	08	55	12	00	6 59	47	22	02	7
8	7 23	18 07	7 18	18 03	7 13	18 02	7 12	18 04	7 01	17 51	7 13	18 09	7 01	52	7 07	17 56	7 11	18 01	59	48	7 21	18 03	8

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		अल्मोड़ा		जयपुर		नैनीताल		हरिद्वार		करनाल		पिथौरागढ़		कठुआ		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
फर.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	फर.
9	7 22	18 08	7 17	18 04	7 12	18 03	7 11	18 05	7 00	17 51	7 12	18 10	7 01	17 52	7 07	17 56	7 11	18 02	6 58	17 49	7 20	18 04	9
10	21	08	16	05	11	04	10	06	6 59	52	11	11	00	53	06	57	10	03	57	50	20	05	10
11	20	09	15	06	11	05	09	06	59	53	10	12	6 59	54	05	58	09	04	56	51	19	06	11
12	20	10	14	07	10	06	09	07	58	54	10	12	58	55	04	17 59	08	04	56	52	18	07	12
13	19	11	13	08	09	06	08	08	57	55	09	13	58	56	03	18 00	08	05	55	52	17	08	13
14	17	12	12	09	08	07	07	09	56	55	08	14	57	56	03	00	07	06	54	53	16	09	14
15	18	13	11	10	07	08	06	09	55	56	07	14	56	57	02	01	06	07	53	54	15	10	15
16	16	14	10	11	06	09	06	10	54	57	06	15	55	58	01	02	05	08	52	55	14	10	16
17	15	14	10	11	05	09	05	11	54	58	06	16	54	59	7 00	03	04	08	51	55	13	11	17
18	13	15	09	12	04	10	04	12	53	58	05	16	53	17 59	6 59	04	03	09	50	56	12	12	18
19	14	16	08	13	03	11	03	13	52	17 59	04	17	52	18 00	58	04	02	10	49	57	11	13	19
20	12	17	07	13	02	11	02	13	51	18 00	03	18	51	01	57	05	01	11	49	58	10	14	20
21	11	18	06	14	01	12	01	14	50	01	02	18	50	02	56	06	7 00	11	48	58	09	15	21
22	10	18	05	15	7 00	13	7 00	14	49	01	01	19	49	02	55	07	6 59	12	47	17 59	08	16	22
23	09	19	04	16	6 59	13	6 59	15	48	02	7 00	20	48	03	54	07	58	13	6 46	18 00	07	16	23
24	08	20	03	17	58	14	58	15	47	03	6 59	20	48	04	53	08	57	14	45	01	06	17	24
25	07	21	02	18	57	15	57	16	46	03	59	21	47	04	52	09	56	14	44	01	05	18	25
26	06	22	01	19	56	15	56	16	45	04	58	21	45	05	51	09	55	15	43	02	03	19	26
27	05	22	7 00	20	55	16	55	17	44	05	57	23	44	06	50	10	54	16	42	03	02	20	27
28	7 03	18 23	6 58	18 20	6 54	18 17	6 54	18 18	6 43	18 06	6 55	18 23	6 43	18 07	6 49	18 11	6 53	6 16	6 41	18 03	7 01	18 20	28
मार्च	7 02	18 24	6 57	18 20	6 53	18 18	6 53	18 19	6 42	18 06	6 55	18 23	6 42	18 07	6 47	18 12	6 52	18 17	6 39	18 04	7 00	18 21	मार्च
2	01	25	56	21	52	19	52	19	41	07	54	24	41	08	46	13	51	18	38	05	6 59	22	2
3	7 00	26	55	22	51	19	51	20	40	08	53	24	40	09	45	14	50	18	37	05	58	23	3
4	6 58	26	54	23	50	20	50	21	38	08	52	25	39	09	44	14	49	19	36	06	56	23	4
5	57	27	53	23	49	20	49	22	37	09	51	26	38	10	43	15	48	20	35	07	56	24	5
6	56	28	51	24	48	21	48	22	36	10	50	26	37	11	41	16	47	20	34	07	54	25	6
7	55	29	50	25	47	21	47	23	35	10	49	27	36	11	40	18	46	21	33	08	53	26	7
8	54	29	49	25	45	22	45	23	34	11	48	27	35	12	39	17	44	22	32	09	52	27	8
9	53	30	48	26	44	23	44	24	33	12	46	28	34	12	38	18	43	22	31	09	50	27	9
10	51	31	46	27	43	23	43	24	32	12	45	28	32	13	37	18	42	23	29	10	49	28	10
11	50	31	45	27	42	24	42	25	31	13	44	29	31	14	36	19	41	24	28	11	48	29	11
12	49	32	44	28	41	25	41	26	29	13	43	30	30	14	35	20	40	24	27	11	47	29	12
13	48	33	43	29	40	26	40	27	28	14	42	31	29	15	33	20	39	25	26	12	45	30	13
14	46	34	42	29	39	27	38	27	27	15	41	31	28	16	32	21	37	25	25	12	44	31	14
15	45	34	40	29	38	27	37	28	26	15	40	32	27	16	31	21	36	26	24	13	43	32	15
16	44	35	39	30	36	28	36	28	25	16	39	32	26	17	30	22	35	27	22	14	41	32	16
17	43	36	38	31	35	28	35	29	24	17	38	33	24	17	29	23	34	27	21	14	40	33	17
18	41	36	36	31	34	29	34	29	22	17	37	33	23	18	27	23	33	28	20	15	39	34	18
19	40	37	35	32	33	30	33	30	21	18	36	34	22	19	26	24	32	29	19	16	38	35	19
20	39	38	34	33	31	31	31	30	20	18	35	34	21	19	25	25	30	29	18	16	36	35	20
21	38	38	33	34	30	31	30	31	19	19	33	35	20	20	24	25	29	30	17	17	35	36	21
22	36	39	32	34	29	32	29	31	18	20	32	35	18	20	23	26	28	30	15	17	34	37	22
23	35	40	31	34	28	32	28	32	16	20	31	36	17	21	21	26	27	31	14	18	32	37	23
24	34	40	30	35	26	33	26	32	15	21	30	36	16	22	20	27	26	32	13	18	31	38	24
25	32	41	28	36	25	33	25	33	14	21	29	37	15	22	19	28	24	32	12	19	30	39	25
26	31	42	27	37	24	34	24	33	13	22	28	37	14	23	18	28	23	33	11	20	28	39	26
27	6 30	18 42	6 25	18 37	6 23	18 34	6 23	18 34	6 12	18 22	6 27	18 38	6 12	18 23	6 17	18 29	6 22	18 34	6 09	18 20	7 27	18 40	27

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		हरिद्वार		करनाल		पिथौरागढ़		कठुआ		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
मार्च	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	मार्च
28	6 29	18 43	6 24	18 38	6 21	18 35	6 22	18 35	6 10	18 23	6 26	18 38	6 11	18 24	6 15	18 29	6 21	18 34	6 08	18 21	7 26	18 41	28
29	27	44	23	39	20	35	21	36	09	24	25	38	10	24	14	30	20	35	07	21	25	42	29
30	26	44	22	39	19	36	20	36	08	24	24	39	09	18 25	13	31	18	35	06	22	23	42	30
31	6 25	18 45	6 21	18 40	6 18	18 37	6 19	18 37	6 07	18 25	6 23	18 39	6 08	18 26	6 12	18 31	6 17	18 36	6 05	18 23	6 22	18 43	31
अप्रै.	6 23	18 46	6 19	18 41	6 16	18 38	6 17	18 37	6 06	18 25	6 22	18 40	6 07	18 26	6 10	18 32	6 16	18 36	6 03	18 23	6 21	18 44	अप्रै.
2	22	46	18	42	15	38	16	38	6 04	26	21	40	05	27	09	32	15	37	02	24	19	44	2
3	21	47	17	42	14	39	15	38	03	27	20	41	04	27	08	33	14	38	01	24	18	45	3
4	20	48	16	43	13	40	14	39	02	27	19	41	03	28	07	34	12	38	6 00	25	17	46	4
5	19	48	15	43	12	40	13	39	01	28	18	42	02	29	06	34	11	39	5 59	26	16	46	5
6	17	49	13	44	11	41	12	40	6 00	28	16	42	01	29	05	35	10	39	58	26	14	48	6
7	16	50	12	44	10	41	11	40	5 59	29	15	43	6 00	30	03	35	09	40	56	27	13	48	7
8	15	50	11	45	09	82	09	41	57	30	14	43	5 58	30	02	36	08	40	55	27	12	48	8
9.	14	51	10	46	08	42	08	42	56	30	13	44	57	31	01	37	07	41	54	28	11	49	9
10	16	52	09	47	06	43	07	43	55	31	12	44	56	31	6 00	37	06	42	53	29	09	50	10
11	11	52	07	47	05	43	06	43	54	31	11	45	55	32	5 59	38	04	42	52	29	08	51	11
12	10	53	06	48	03	44	05	44	53	32	10	45	54	33	58	39	03	43	51	30	07	51	12
13	09	54	05	48	02	44	04	44	52	33	09	46	53	33	57	39	02	44	50	30	06	52	13
14	08	54	04	49	01	45	03	45	51	33	08	46	52	34	55	40	01	44	48	31	04	53	14
15	07	55	03	50	6 00	45	02	45	50	34	08	46	51	34	55	40	6 00	45	47	32	03	53	15
16	05	56	01	50	5 59	46	01	46	49	34	06	47	50	35	52	42	5 59	45	46	32	02	54	16
17	04	56	6 00	51	48	47	6 00	46	47	35	05	48	48	36	52	42	58	46	45	33	01	55	17
18	03	57	5 59	52	57	48	5 59	47	46	36	04	48	47	36	51	42	57	47	44	33	00	55	18
19	02	58	57	53	56	48	58	47	45	36	03	49	46	37	51	42	56	47	43	34	00	56	19
20	01	58	56	54	55	49	57	48	44	37	02	49	45	37	49	43	55	48	42	35	5 57	57	20
21	6 00	18 59	55	55	54	50	56	49	43	37	01	50	44	38	49	44	54	48	41	35	56	58	21
22	5 59	19 00	54	55	54	50	56	49	42	38	6 01	50	43	39	49	45	53	49	40	36	55	58	22
23	58	00	53	56	52	51	54	50	41	39	5 59	51	42	39	47	45	52	50	39	36	54	59	23
24	57	01	52	57	51	51	53	51	40	39	59	52	41	40	46	46	51	50	38	37	53	19 00	24
25	56	02	51	57	50	52	52	51	39	40	58	52	40	40	45	46	50	51	37	38	52	00	25
26	55	02	50	57	49	53	51	52	38	41	57	53	39	41	44	47	49	52	36	38	51	01	26
27	54	03	49	58	48	53	50	52	37	41	56	53	38	42	43	47	48	52	35	39	50	02	27
28	53	04	48	58	47	54	49	53	36	42	55	54	38	42	42	48	47	53	34	40	49	03	28
29	52	04	47	18 59	46	55	48	53	35	42	54	54	37	43	41	49	46	53	33	40	48	03	29
30	5 51	19 05	5 46	19 00	5 45	18 55	5 47	18 54	5 35	18 43	5 53	18 55	5 36	18 44	5 40	18 49	5 45	18 54	5 32	18 41	5 47	19 04	30
मई	5 50	19 06	5 45	19 01	5 44	18 56	5 46	18 54	5 34	18 44	5 53	18 55	5 35	18 44	5 34	18 50	5 44	18 55	5 31	18 41	5 47	19 05	मई
2	49	06	45	02	43	57	45	55	33	44	52	56	34	45	38	51	43	55	31	42	45	06	2
3	48	07	43	03	43	57	44	56	32	45	51	56	33	45	37	51	42	56	30	43	45	06	3
4	47	08	43	03	42	58	44	57	31	46	50	57	32	46	36	52	41	57	29	43	43	07	4
5	46	09	42	04	42	59	43	57	30	46	50	57	31	47	36	53	41	57	28	44	42	08	5
6	45	09	41	05	41	18 59	43	58	29	47	49	58	31	47	35	53	40	58	27	45	41	08	6
7	44	10	40	05	40	19 00	42	58	29	48	48	59	30	48	34	54	39	59	26	18 45	40	09	7
8	44	11	40	05	39	00	41	18 59	28	48	47	18 59	29	49	33	55	38	59	26	46	40	14	8
9	43	11	39	07	38	01	41	19 00	27	49	47	19 00	28	49	32	55	38	19 00	25	47	39	11	9
10	42	07	38	07	38	02	40	01	26	49	46	00	28	50	32	56	37	00	24	47	38	11	10
11	41	13	37	07	37	02	39	01	26	50	46	01	27	51	31	56	36	01	24	48	37	12	11
12	5 41	19 13	5 37	19 08	5 36	19 03	5 39	19 02	5 25	18 51	5 45	19 01	5 26	18 51	5 30	18 57	5 35	19 02	5 23	18 48	5 36	19 13	12

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		अल्मोड़ा		जयपुर		नैनीताल		हरिद्वार		करनाल		पिथौरागढ़		कठुआ		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
फर.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	फर.
9	7 22	18 08	7 17	18 04	7 12	18 03	7 11	18 05	7 00	17 51	7 12	18 10	7 01	17 52	7 07	17 56	7 11	18 02	6 58	17 49	7 20	18 04	9
10	21	08	16	05	11	04	10	06	6 59	52	11	11	00	53	06	57	10	03	57	50	20	05	10
11	20	09	15	06	11	05	09	06	59	53	10	12	6 59	54	05	58	09	04	56	51	19	06	11
12	20	10	14	07	10	06	09	07	58	54	10	12	58	55	04	17 59	08	04	56	52	18	07	12
13	19	11	13	08	09	06	08	08	57	55	09	13	58	56	03	18 00	08	05	55	52	17	08	13
14	17	12	12	09	08	07	07	09	56	55	08	14	57	56	03	00	07	06	54	53	16	09	14
15	18	13	11	10	07	08	06	09	55	56	07	14	56	57	02	01	06	07	53	54	15	10	15
16	16	14	10	11	06	09	06	10	54	57	06	15	55	58	01	02	05	08	52	55	14	10	16
17	15	14	10	11	05	09	05	11	54	58	06	16	54	59	7 00	03	04	08	51	55	13	11	17
18	13	15	09	12	04	10	04	12	53	58	05	16	53	17 59	6 59	04	03	09	50	56	12	12	18
19	14	16	08	13	03	11	03	13	52	17 59	04	17	52	18 00	58	04	02	10	49	57	11	13	19
20	12	17	07	13	02	11	02	13	51	18 00	03	18	51	01	57	05	01	11	49	58	10	14	20
21	11	18	06	14	01	12	01	14	50	01	02	18	50	02	56	06	7 00	11	48	58	09	15	21
22	10	18	05	15	7 00	13	7 00	14	49	01	01	19	49	02	55	07	6 59	12	47	17 59	08	16	22
23	09	19	04	16	6 59	13	6 59	15	48	02	7 00	20	48	03	54	07	58	13	6 46	18 00	07	16	23
24	08	20	03	17	58	14	58	15	47	03	6 59	20	48	04	53	08	57	14	45	01	06	17	24
25	07	21	02	18	57	15	57	16	46	03	59	21	47	04	52	09	56	14	44	01	05	18	25
26	06	22	01	19	56	15	56	16	45	04	58	21	45	05	51	09	55	15	43	02	03	19	26
27	05	22	7 00	20	55	16	55	17	44	05	57	23	44	06	50	10	54	16	42	03	02	20	27
28	7 03	18 23	6 58	18 20	6 54	18 17	6 54	18 18	6 43	18 06	6 55	18 23	6 43	18 07	6 49	18 11	6 53	6 16	6 41	18 03	7 01	18 20	28
मार्च	7 02	18 24	6 57	18 20	6 53	18 18	6 53	18 19	6 42	18 06	6 55	18 23	6 42	18 07	6 47	18 12	6 52	18 17	6 39	18 04	7 00	18 21	मार्च
2	01	25	56	21	52	19	52	19	41	07	54	24	41	08	46	13	51	18	38	05	6 59	22	2
3	7 00	26	55	22	51	19	51	20	40	08	53	24	40	09	45	14	50	18	37	05	58	23	3
4	6 58	26	54	23	50	20	50	21	38	08	52	25	39	09	44	14	49	19	36	06	56	23	4
5	57	27	53	23	49	20	49	22	37	09	51	26	38	10	43	15	48	20	35	07	56	24	5
6	56	28	51	24	48	21	48	22	36	10	50	26	37	11	41	16	47	20	34	07	54	25	6
7	55	29	50	25	47	21	47	23	35	10	49	27	36	11	40	18	46	21	33	08	53	26	7
8	54	29	49	25	45	22	45	23	34	11	48	27	35	12	39	17	44	22	32	09	52	27	8
9	53	30	48	26	44	23	44	24	33	12	46	28	34	12	38	18	43	22	31	09	50	27	9
10	51	31	46	27	43	23	43	24	32	12	45	28	32	13	37	18	42	23	29	10	49	28	10
11	50	31	45	27	42	24	42	25	31	13	44	29	31	14	36	19	41	24	28	11	48	29	11
12	49	32	44	28	41	25	41	26	29	13	43	30	30	14	35	20	40	24	27	11	47	29	12
13	48	33	43	29	40	26	40	27	28	14	42	31	29	15	33	20	39	25	26	12	45	30	13
14	46	34	42	29	39	27	38	27	27	15	41	31	28	16	32	21	37	25	25	12	44	31	14
15	45	34	40	29	38	27	37	28	26	15	40	32	27	16	31	21	36	26	24	13	43	32	15
16	44	35	39	30	36	28	36	28	25	16	39	32	26	17	30	22	35	27	22	14	41	32	16
17	43	36	38	31	35	28	35	29	24	17	38	33	24	17	29	23	34	27	21	14	40	33	17
18	41	36	36	31	34	29	34	29	22	17	37	33	23	18	27	23	33	28	20	15	39	34	18
19	40	37	35	32	33	30	33	30	21	18	36	34	22	19	26	24	32	29	19	16	38	35	19
20	39	38	34	33	31	31	31	30	20	18	35	34	21	19	25	25	30	29	18	16	36	35	20
21	38	38	33	34	30	31	30	31	19	19	33	35	20	20	24	25	29	30	17	17	35	36	21
22	36	39	32	34	29	32	29	31	18	20	32	35	18	20	23	26	28	30	15	17	34	37	22
23	35	40	31	34	28	32	28	32	16	20	31	36	17	21	21	26	27	31	14	18	32	37	23
24	34	40	30	35	26	33	26	32	15	21	30	36	16	22	20	27	26	32	13	18	31	38	24
25	32	41	28	36	25	33	25	33	14	21	29	37	15	22	19	28	24	32	12	19	30	39	25
26	31	42	27	37	24	34	24	33	13	22	28	37	14	23	18	28	23	33	11	20	28	39	26
27	6 30	18 42	6 25	18 37	6 23	18 34	6 23	18 34	6 12	18 22	6 27	18 38	6 12	18 23	6 17	18 29	6 22	18 34	6 09	18 20	7 27	18 40	27

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		[illegible]		[illegible]		[illegible]		नैनीताल		हरिद्वार		करनाल		पिथौरागढ़		कठुआ		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
मार्च	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	मार्च
28	6 29	18 43	6 24	18 38	6 21	18 35	6 22	18 35	6 10	18 23	6 26	18 38	6 11	18 24	6 15	18 29	6 21	18 34	6 08	18 21	7 26	18 41	28
29	27	44	23	39	20	35	21	36	09	24	25	38	10	24	14	30	20	35	07	21	25	42	29
30	26	44	22	39	19	36	20	36	08	24	24	39	09	18 25	13	31	18	35	06	22	23	42	30
31	6 25	18 45	6 21	18 40	6 18	18 37	6 19	18 37	6 07	18 25	6 23	18 39	6 08	18 26	6 12	18 31	6 17	18 36	6 05	18 23	6 22	18 43	31
अप्रै.	6 23	18 46	6 19	18 41	6 16	18 38	6 17	18 37	6 06	18 25	6 22	18 40	6 07	18 26	6 10	18 32	6 16	18 36	6 03	18 23	6 21	18 44	अप्रै.
2	22	46	18	42	15	38	16	38	6 04	26	21	40	05	27	09	32	15	37	02	24	19	44	2
3	21	47	17	42	14	39	15	38	03	27	20	41	04	27	08	33	14	38	01	24	18	45	3
4	20	48	16	43	13	40	14	39	02	27	19	41	03	28	07	34	12	38	6 00	25	17	46	4
5	19	48	15	43	12	40	13	39	01	28	18	42	02	29	06	34	11	39	5 59	26	16	46	5
6	17	49	13	44	11	41	12	40	6 00	28	16	42	01	29	05	35	10	39	58	26	14	48	6
7	16	50	12	44	10	41	11	40	5 59	29	15	43	6 00	30	03	35	09	40	56	27	13	48	7
8	15	50	11	45	09	82	09	41	57	30	14	43	5 58	30	02	36	08	40	55	27	12	48	8
9.	14	51	10	46	08	42	08	42	56	30	13	44	57	31	01	37	07	41	54	28	11	49	9
10	16	52	09	47	06	43	07	43	55	31	12	44	56	31	6 00	37	06	42	53	29	09	50	10
11	11	52	07	47	05	43	06	43	54	31	11	45	55	32	5 59	38	04	42	52	29	08	51	11
12	10	53	06	48	03	44	05	44	53	32	10	45	54	33	58	39	03	43	51	30	07	51	12
13	09	54	05	48	02	44	04	44	52	33	09	46	53	33	57	39	02	44	50	30	06	52	13
14	08	54	04	49	01	45	03	45	51	33	08	46	52	34	55	40	01	44	48	31	04	53	14
15	07	55	03	50	6 00	45	02	45	50	34	08	46	51	34	55	40	6 00	45	47	32	03	53	15
16	05	56	01	50	5 59	46	01	46	49	34	06	47	50	35	52	42	5 59	45	46	32	02	54	16
17	04	56	6 00	51	48	47	6 00	46	47	35	05	48	48	36	52	42	58	46	45	33	01	55	17
18	03	57	5 59	52	57	48	5 59	47	46	36	04	48	47	36	51	42	57	47	44	33	00	55	18
19	02	58	57	53	56	48	58	47	45	36	03	49	46	37	51	42	56	47	43	34	00	56	19
20	01	58	56	54	55	49	57	48	44	37	02	49	45	37	49	43	55	48	42	35	5 57	57	20
21	6 00	18 59	55	55	54	50	56	49	43	37	01	50	44	38	49	44	54	48	41	35	56	58	21
22	5 59	19 00	54	55	54	50	56	49	42	38	6 01	50	43	39	49	45	53	49	40	36	55	58	22
23	58	00	53	56	52	51	54	50	41	39	5 59	51	42	39	47	45	52	50	39	36	54	59	23
24	57	01	52	57	51	51	53	51	40	39	59	52	41	40	46	46	51	50	38	37	53	19 00	24
25	56	02	51	57	50	52	52	51	39	40	58	52	40	40	45	46	50	51	37	38	52	00	25
26	55	02	50	57	49	53	51	52	38	41	57	53	39	41	44	47	49	52	36	38	51	01	26
27	54	03	49	58	48	53	50	52	37	41	56	53	38	42	43	47	48	52	35	39	50	02	27
28	53	04	48	58	47	54	49	53	36	42	55	54	38	42	42	48	47	53	34	40	49	03	28
29	52	04	47	18 59	46	55	48	53	35	42	54	54	37	43	41	49	46	53	33	40	48	03	29
30	5 51	19 05	5 46	19 00	5 45	18 55	5 47	18 54	5 35	18 43	5 53	18 55	5 36	18 44	5 40	18 49	5 45	18 54	5 32	18 41	5 47	19 04	30
मई	5 50	19 06	5 45	19 01	5 44	18 56	5 46	18 54	5 34	18 44	5 53	18 55	5 35	18 44	5 34	18 50	5 44	18 55	5 31	18 41	5 47	19 05	मई
2	49	06	45	02	43	57	45	55	33	44	52	56	34	45	38	51	43	55	31	42	45	06	2
3	48	07	43	03	43	57	44	56	32	45	51	56	33	45	37	51	42	56	30	43	45	06	3
4	47	08	43	03	42	58	44	57	31	46	50	57	32	46	36	52	41	57	29	43	43	07	4
5	46	09	42	04	42	59	43	57	30	46	50	57	31	47	36	53	41	57	28	44	42	08	5
6	45	09	41	05	41	18 59	43	58	29	47	49	58	31	47	35	53	40	58	27	45	41	08	6
7	44	10	40	05	40	19 00	42	58	29	48	48	59	30	48	34	54	39	59	26	18 45	40	09	7
8	44	11	40	05	39	00	41	18 59	28	48	47	18 59	29	49	33	55	38	59	26	46	40	14	8
9	43	11	39	07	38	01	41	19 00	27	49	47	19 00	28	49	32	55	38	19 00	25	47	39	11	9
10	42	07	38	07	38	02	40	01	26	49	46	00	28	50	32	56	37	00	24	47	38	11	10
11	41	13	37	07	37	02	39	01	26	50	46	01	27	51	31	56	36	01	24	48	37	12	11
12	5 41	19 13	5 37	19 08	5 36	19 03	5 39	19 02	5 25	18 51	5 45	19 01	5 26	18 51	5 30	18 57	5 35	19 02	5 23	18 48	5 36	19 13	12

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		अल्मोड़ा		जयपुर		नैनीताल		हरिद्वार		करनाल		पिथौरागढ़		कठुआ		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
मई	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	मई
13	5 40	19 14	36	19 09	5 36	19 04	5 38	19 02	5 24	18 51	5 44	19 02	5 26	18 52	5 30	18 58	5 35	19 02	5 22	18 49	5 36	19 13	13
14	39	15	35	10	35	04	38	03	24	52	44	02	25	52	29	58	34	03	22	50	35	14	14
15	38	15	34	11	34	05	37	03	23	53	43	03	24	53	28	18 59	33	04	21	50	34	15	15
16	38	16	34	11	33	06	36	04	22	53	43	04	24	54	28	19 00	33	04	20	51	33	16	16
17	37	17	33	12	33	06	36	04	22	54	42	04	23	54	27	00	32	05	20	52	33	16	17
18	37	17	33	12	32	07	35	05	21	55	42	05	23	55	26	01	32	06	19	52	32	17	18
19	36	18	32	13	32	08	34	06	21	55	41	05	22	56	26	02	31	06	19	53	32	18	19
20	35	19	32	13	31	08	34	07	20	56	41	06	22	56	25	02	31	07	18	53	31	18	20
21	35	20	31	14	31	09	33	07	20	56	40	06	21	57	25	03	30	07	18	54	30	19	21
22	34	20	31	15	30	09	33	08	19	57	40	07	21	57	24	03	30	08	17	55	30	20	22
23	34	21	30	15	30	10	32	08	19	58	40	07	20	58	24	04	29	09	17	55	29	20	23
24	33	22	30	16	29	10	32	09	18	58	39	08	20	59	23	05	29	09	16	56	29	21	24
25	33	22	29	16	29	11	31	09	18	59	39	08	19	18 59	23	05	28	10	16	56	28	22	25
26	33	23	29	17	29	11	31	10	18	18 59	39	09	19	19 00	23	06	28	10	15	57	28	22	26
27	32	24	28	18	28	12	30	10	17	19 00	38	10	19	00	22	06	28	11	15	58	28	23	27
28	32	24	28	18	27	13	30	11	17	00	38	10	18	01	22	07	27	11	15	58	27	24	28
29	31	25	27	19	27	14	30	11	17	01	38	11	18	01	22	08	27	12	14	59	27	24	29
30	31	26	27	19	27	14	29	12	16	02	37	11	18	02	21	08	27	13	14	18 59	26	25	30
31	5 31	19 26	5 27	19 20	5 27	19 15	5 29	19 12	5 16	19 02	5 37	19 12	5 17	19 02	5 21	19 09	5 27	19 13	5 14	19 00	5 26	19 25	31
जून	5 31	19 26	5 27	19 20	5 27	19 15	5 29	19 13	5 16	19 03	5 37	19 12	5 17	19 03	5 21	19 09	5 26	19 13	5 14	19 00	5 26	19 26	जून
2	30	27	26	21	26	16	28	13	16	03	37	12	17	03	21	10	26	14	13	01	26	26	2
3	30	27	26	22	26	16	28	14	15	04	37	13	17	04	20	10	26	15	13	01	25	27	3
4	30	28	26	23	26	17	28	14	18	04	37	13	16	05	20	11	26	15	13	02	25	28	4
5	30	28	27	23	26	17	28	15	18	05	36	14	16	05	20	11	26	16	13	02	25	28	5
6	30	29	26	23	26	18	28	15	15	05	36	14	16	05	20	12	25	16	13	03	25	29	6
7	29	29	26	24	26	18	28	16	15	06	36	15	16	06	20	12	25	16	13	03	25	29	7
8	29	30	26	24	25	19	28	16	15	06	36	15	16	06	20	13	25	17	13	04	25	30	8
9	29	30	26	24	25	19	28	17	15	06	36	15	16	07	20	13	25	17	12	04	24	30	9
10	29	30	26	25	25	19	28	17	15	07	36	16	16	07	20	13	25	18	12	05	24	30	10
11	29	31	26	25	25	20	28	18	15	07	36	16	16	08	19	14	25	18	12	05	24	31	11
12	29	31	26	26	25	20	28	18	15	08	36	16	16	08	19	14	25	19	12	05	24	31	12
13	29	32	26	26	25	20	28	19	15	08	36	17	16	08	20	15	25	19	12	06	24	32	13
14	29	32	26	26	25	21	28	19	15	08	36	17	16	09	20	15	25	19	12	06	24	32	14
15	29	32	26	27	25	21	28	19	15	09	36	17	16	09	20	15	25	19	13	07	24	32	15
16	29	33	26	27	25	21	28	19	15	09	37	18	16	09	20	15	25	20	13	07	25	33	16
17	30	33	26	27	25	22	28	20	15	09	37	18	16	10	20	15	26	20	13	07	25	33	17
18	30	33	26	27	25	22	28	20	15	10	37	18	16	10	20	16	26	21	13	07	25	33	18
19	30	34	26	27	25	22	29	20	15	10	37	19	17	10	20	16	26	21	13	08	25	34	19
20	30	34	26	28	26	23	29	21	15	10	37	19	17	11	20	17	26	21	13	08	25	34	20
21	30	34	27	28	26	23	29	21	15	10	37	19	17	11	20	17	26	21	13	08	25	34	21
22	30	34	27	28	26	23	30	21	16	11	37	20	17	11	20	17	26	21	14	08	26	34	22
23	31	34	27	28	26	23	30	22	16	11	38	20	17	11	20	17	27	22	14	09	26	34	23
24	31	35	27	29	27	23	30	22	16	11	38	20	18	11	21	18	27	22	14	09	26	35	24
25	31	35	28	29	27	23	30	22	17	11	39	20	18	11	21	18	27	22	14	09	26	35	25
26	31	35	28	29	27	23	31	22	17	11	39	20	18	12	22	18	27	22	15	09	27	35	26
27	31	35	28	29	27	24	31	22	17	11	39	20	19	12	22	18	28	22	15	09	27	35	27
28	5 32	19 35	5 28	19 29	5 27	19 24	5 31	19 22	5 17	19 11	5 39	19 20	5 19	19 12	5 22	19 18	5 28	19 22	5 15	19 09	5 27	19 35	28

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		[illegible]		[illegible]		[illegible]		नैनीताल		हरिद्वार		करनाल		पिथौरागढ़		कठुआ		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
जून	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	जून
29	5 32	19 35	5 29	19 29	5 28	19 24	5 32	19 22	5 18	19 12	5 40	19 20	5 19	19 12	5 23	19 18	5 28	19 22	5 16	19 09	5 28	19 35	29
30	5 33	19 35	5 29	19 29	5 28	19 24	5 32	19 22	5 18	19 12	5 40	19 20	5 20	19 12	5 23	19 18	5 29	19 22	5 16	19 09	5 28	19 35	30
जुला	5 33	19 35	5 30	19 29	5 29	19 24	5 32	19 22	5 19	19 12	5 41	19 21	5 20	19 12	5 23	19 18	5 29	19 22	5 16	19 09	5 28	19 35	जुला
2	34	35	29	29	30	24	32	22	19	12	41	21	20	12	24	18	30	22	17	09	29	35	2
3	34	35	30	29	30	24	33	22	19	12	41	21	21	12	24	18	30	22	17	09	29	35	3
4	34	35	30	29	31	24	34	22	20	11	41	21	21	12	25	18	30	22	18	09	30	35	4
5	35	35	31	29	31	24	34	22	20	11	42	21	21	12	25	18	31	22	18	09	30	35	5
6	35	35	31	29	31	23	34	22	21	11	43	20	22	12	26	18	31	22	18	09	31	35	6
7	36	35	33	29	32	23	32	22	21	11	42	21	22	11	25	18	32	22	19	09	31	34	7
8	36	34	33	29	32	23	35	21	21	11	43	20	23	11	26	18	32	22	19	09	32	34	8
9	37	34	33	29	3	23	35	21	22	11	43	20	23	11	27	17	33	22	20	09	32	34	9
10	37	34	34	2	33	22	36	21	22	11	44	20	24	11	27	17	33	21	20	08	33	34	10
11	38	34	3	28	34	22	36	21	23	10	44	20	24	11	28	17	34	21	21	08	33	33	11
12	38	33	35	28	34	22	37	20	23	10	45	20	25	11	28	17	34	21	21	08	34	33	12
13	39	33	36	27	35	22	38	20	24	10	45	19	25	11	29	17	35	21	22	08	34	33	13
14	39	33	36	27	35	21	38	20	24	10	46	19	26	10	29	16	35	20	22	07	35	32	14
15	40	32	37	27	36	21	39	20	25	09	46	19	26	10	30	16	36	20	23	07	35	32	15
16	41	32	37	26	36	21	39	19	26	09	47	18	27	09	30	16	36	20	23	07	36	32	16
17	41	32	37	26	37	21	40	19	26	09	47	18	27	09	31	15	37	19	24	06	37	31	17
18	42	31	38	26	38	20	40	19	27	08	48	18	28	09	32	15	37	19	24	06	37	31	18
19	42	31	39	25	38	20	41	18	27	08	48	17	28	08	32	14	38	18	25	06	38	30	19
20	43	30	39	25	39	20	41	18	28	07	49	17	29	08	33	14	38	18	26	05	38	30	20
21	44	30	39	24	39	19	42	17	28	07	49	17	30	07	33	13	39	18	26	05	39	29	21
22	44	29	40	24	40	19	42	17	29	06	50	16	30	07	34	13	40	17	27	04	40	29	22
23	45	29	41	23	40	18	43	16	29	06	50	16	31	06	34	12	40	17	27	04	40	28	23
24	45	29	41	23	41	18	43	16	30	05	51	15	31	06	35	12	41	16	28	03	41	28	24
25	46	28	42	22	42	17	44	15	31	05	51	15	32	05	36	11	41	15	28	03	42	27	25
26	47	27	43	22	42	17	44	15	31	04	52	14	32	05	36	11	42	15	29	02	42	26	26
27	47	26	44	21	42	16	45	14	32	04	32	14	33	04	37	10	42	14	30	01	43	26	27
28	48	26	44	21	43	16	45	14	32	03	53	13	34	03	37	10	43	14	30	01	44	25	28
29	48	25	44	20	44	15	46	13	33	02	53	13	34	03	38	09	44	13	31	19 00	44	24	29
30	49	24	45	19	45	14	46	13	34	02	54	12	35	02	39	08	44	12	31	18 59	45	23	30
31	5 50	19 23	5 46	19 18	5 45	19 13	5 47	19 12	5 34	19 01	5 54	19 12	5 35	19 01	5 39	19 08	5 45	19 12	5 32	18 59	5 46	19 23	31
अग.	5 50	19 23	5 46	19 18	5 46	19 13	5 47	19 12	5 35	19 00	5 55	19 11	5 36	19 01	5 40	19 07	5 45	19 11	5 32	19 58	5 46	19 22	अग.
2	51	22	47	17	46	12	48	11	35	19 00	55	10	37	19 00	40	06	46	10	33	57	47	21	2
3	52	21	48	16	47	11	49	10	36	18 59	56	10	37	18 59	41	05	47	09	34	57	48	20	3
4	52	20	49	15	47	10	50	09	36	58	56	09	38	59	42	05	47	09	34	56	48	19	4
5	53	20	49	15	48	10	50	09	37	57	57	08	38	58	42	04	48	08	35	55	49	19	5
6	54	19	49	13	49	09	51	08	38	57	57	08	39	57	43	03	48	07	35	54	50	18	6
7	54	18	50	12	49	08	51	07	38	56	58	07	39	56	43	02	49	06	36	53	50	17	7
8	55	17	51	11	50	07	52	06	39	55	58	06	40	55	44	01	50	05	37	53	51	16	8
9	55	16	51	11	51	06	52	05	39	54	59	05	41	54	45	00	50	05	37	52	52	15	9
10	56	15	52	05	51	05	53	04	40	53	5 59	04	41	54	45	19 00	51	04	38	51	52	14	10
11	57	14	53	09	52	04	53	03	41	52	6 00	04	42	53	46	18 59	51	03	38	50	53	13	11
12	57	14	54	08	52	03	54	02	41	51	00	03	42	52	46	58	52	02	39	49	54	12	12
13	58	12	54	07	53	92	54	01	42	50	01	02	43	51	47	57	52	01	40	48	54	11	13
14	5 59	19 11	5 55	19 06	5 54	19 01	5 55	19 00	5 42	18 49	6 01	19 01	5 43	18 50	5 48	18 56	5 53	19 00	5 40	18 47	5 55	19 10	14

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		अल्मोड़ा		जयपुर		नैनीताल		हरिद्वार		करनाल		पिथौरागढ़		कठुआ		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
अग.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	अग.
15	5 59	19 10	5 56	19 04	5 55	18 59	5 57	18 58	5 43	18 49	6 02	18 59	5 44	18 49	5 49	18 54	5 54	18 59	5 41	18 46	5 56	19 09	15
16	6 00	09	56	04	55	59	57	58	43	48	02	59	45	48	49	54	54	58	41	45	56	08	16
17	01	08	56	03	55	58	57	57	44	47	03	58	45	47	49	53	55	57	42	44	57	07	17
18	01	07	56	02	56	57	58	56	45	46	04	58	46	46	50	52	55	56	42	43	58	06	18
19	02	06	57	19 01	56	56	58	55	45	45	04	57	46	45	50	51	56	55	43	42	58	04	19
20	02	05	59	18 59	57	55	59	54	46	43	05	56	47	44	51	50	56	54	44	41	59	03	20
21	03	04	59	59	58	54	5 59	53	46	42	05	55	47	43	52	49	57	53	44	40	6 00	02	21
22	04	03	5 59	58	58	53	6 00	52	47	41	05	54	48	42	52	48	58	52	45	39	00	01	22
23	04	02	6 00	57	59	52	00	51	47	40	06	53	48	41	53	47	58	51	45	38	01	19 00	23
24	05	19 00	01	55	5 59	51	01	50	48	39	07	52	49	40	53	46	59	50	46	37	02	18 59	24
25	06	18 59	01	55	6 00	50	01	49	49	38	07	51	50	39	54	54	59	49	46	36	02	57	25
26	06	58	02	54	00	49	02	48	49	37	07	50	50	18 38	54	43	6 00	48	47	35	03	56	26
27	07	57	03	52	01	47	02	47	50	36	08	49	51	18 37	55	42	00	46	47	34	04	55	27
28	07	54	04	50	01	46	48	27	50	35	08	47	51	35	56	40	01	45	48	33	04	54	28
29	08	54	04	49	02	45	03	45	51	34	08	47	52	34	56	40	01	44	48	31	05	53	29
30	09	53	04	49	03	44	04	44	51	33	09	46	52	34	57	39	02	43	49	30	05	51	30
31	6 09	18 52	6 05	18 48	6 04	18 43	6 04	18 42	5 52	18 31	6 09	18 46	5 53	18 32	5 57	18 39	6 02	18 42	5 50	18 29	6 06	18 50	31
सितं.	6 10	18 51	6 06	18 46	6 04	18 42	6 05	18 41	5 52	18 30	6 10	18 44	5 53	18 31	5 50	18 36	6 03	18 41	5 50	18 28	6 07	18 49	सितं.
2	10	50	06	46	05	41	05	40	53	29	10	42	54	30	51	35	04	40	51	27	07	48	2
3	11	48	06	45	05	40	06	39	53	28	11	41	54	29	51	34	04	38	51	26	08	46	3
4	12	47	07	43	06	39	06	33	54	27	11	40	55	29	52	33	05	37	52	24	09	45	4
5	12	46	09	41	06	37	07	37	54	26	11	39	55	26	52	32	05	36	52	23	09	44	5
6	13	45	08	41	07	36	07	36	55	24	12	38	56	25	53	30	06	35	53	22	10	42	6
7	13	43	09	40	07	35	08	34	55	23	12	37	56	24	53	29	06	34	53	21	10	41	7
8	14	42	10	38	08	34	08	32	56	22	13	36	57	23	54	28	07	32	54	20	11	40	8
9	15	41	11	36	08	32	09	31	57	21	13	35	57	21	54	27	07	31	54	18	12	39	9
10	15	39	11	35	09	31	09	30	57	19	14	34	58	20	55	26	08	30	55	17	12	37	10
11	16	38	12	18 34	09	29	10	29	58	18	14	33	59	19	55	24	08	29	55	16	13	36	11
12	16	37	12	17 33	10	28	10	28	58	17	14	31	5 59	18	56	23	08	27	56	15	14	35	12
13	17	36	13	18 31	10	27	11	27	59	16	15	30	6 00	17	57	22	09	26	56	14	14	33	13
14	17	34	13	31	11	26	11	26	5 59	15	15	29	00	15	57	21	10	25	57	12	15	32	14
15	18	33	13	30	11	24	12	25	6 00	13	16	28	01	14	58	19	10	24	57	11	15	31	15
16	19	32	14	28	12	23	12	24	00	12	16	27	01	13	58	18	11	23	58	10	16	29	16
17	19	30	15	25	12	22	13	22	01	11	17	26	02	12	5 59	17	12	21	58	09	17	28	17
18	20	29	15	25	13	21	13	21	01	10	17	25	02	10	6 00	16	12	20	5 59	07	17	27	18
19	20	28	16	24	13	19	14	20	02	08	17	23	03	09	01	14	13	19	6 00	06	18	25	19
20	21	26	17	22	14	18	14	19	02	07	18	22	03	08	01	13	13	18	00	05	19	24	20
21	22	25	18	20	14	17	15	18	03	06	18	21	04	07	02	12	14	16	01	04	19	23	21
22	22	24	18	19	15	16	15	17	03	05	19	20	04	05	02	11	14	15	01	02	20	21	22
23	23	23	18	19	16	14	16	16	04	03	19	19	05	04	03	09	15	14	02	01	21	20	23
24	23	21	19	18	16	13	16	14	04	02	20	18	05	03	03	08	15	13	02	18 00	21	18	24
25	24	20	20	15	17	12	17	13	05	01	20	17	06	02	04	07	16	11	03	17 59	22	17	25
26	25	19	20	14	17	11	17	12	05	18 00	20	15	06	18 01	04	06	16	10	03	58	22	16	26
27	25	17	21	13	18	09	18	11	06	17 59	21	14	07	17 59	12	04	17	09	04	56	23	15	27
28	26	16	21	12	18	08	18	09	07	57	21	13	07	58	12	03	17	08	04	55	24	13	28
29	27	15	22	10	19	07	19	08	07	56	22	12	08	57	13	02	18	06	05	54	24	12	29
30	6 27	18 13	6 23	18 10	6 19	18 06	6 19	18 07	6 08	17 55	6 22	18 11	6 08	17 56	6 13	18 01	6 19	18 05	6 05	17 53	6 25	18 11	30

तारीख | अमृतसर | लुधियाना | अम्बाला | रोहतक | अल्मोड़ा | जयपुर | नैनीताल | हरिद्वार | करनाल | पिथौरागढ़ | कठुआ | ता

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		अल्मोड़ा		जयपुर		नैनीताल		हरिद्वार		करनाल		पिथौरागढ़		कठुआ		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
अक्तू	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	अक्तू
अक्तू	6 28	18 12	6 23	18 08	6 20	18 04	6 20	18 06	6 08	17 54	6 23	18 10	6 09	17 55	6 14	17 59	6 19	18 04	6 06	17 51	6 25	18 09	अक्तू
2	28	11	24	07	21	03	20	05	09	52	23	09	10	53	15	58	6 20	03	07	50	26	08	2
3	29	10	25	05	21	02	21	03	09	51	24	08	10	52	15	47	20	02	07	49	27	07	3
4	30	08	25	04	22	01	21	18 01	10	50	24	06	11	51	16	56	20	00	08	48	28	05	4
5	30	07	25	02	22	18 00	22	17 00	10	49	25	05	11	50	16	55	21	17 59	08	47	28	04	5
6	31	06	26	02	23	17 58	23	59	11	48	25	04	12	49	17	53	22	58	09	45	29	03	6
7	32	05	27	00	23	57	24	58	12	47	26	03	12	47	18	52	23	57	09	44	30	02	7
8	32	03	27	18 00	24	56	24	57	12	45	26	02	13	46	18	51	23	56	10	43	30	18 00	8
9	33	02	27	17 59	25	55	25	56	13	44	27	01	14	45	19	50	24	55	11	42	31	17 59	9
10	34	01	29	57	25	54	25	55	13	43	27	18 00	14	44	19	49	24	53	11	41	32	58	10
11	34	18 00	30	55	26	53	26	54	14	42	28	17 59	15	43	20	48	25	52	12	40	33	57	11
12	35	17 59	30	55	27	51	26	53	15	41	28	58	15	42	21	46	26	51	12	39	33	55	12
13	36	57	31	54	27	50	27	52	15	40	29	57	16	41	21	45	26	50	13	37	34	54	13
14	36	56	32	52	28	49	27	51	16	39	29	56	17	40	22	44	27	49	14	36	35	53	14
15	37	55	33	51	29	48	28	50	16	38	30	55	17	39	23	43	27	48	14	35	35	52	15
16	38	54	33	50	29	47	28	49	17	36	30	54	18	37	23	42	28	47	15	34	36	51	16
17	39	53	33	49	30	46	29	48	18	35	31	53	18	36	24	41	29	46	16	33	37	49	17
18	39	52	34	48	30	45	30	47	18	34	31	52	19	35	24	40	29	45	16	32	38	48	18
19	40	50	35	48	31	44	31	46	19	33	32	51	20	34	25	39	30	44	17	31	38	47	19
20	41	49	35	46	32	43	31	45	20	32	33	50	20	33	26	38	31	43	17	30	39	46	20
21	42	48	36	45	32	42	32	44	20	31	33	49	21	32	26	37	31	42	18	29	40	45	21
22	42	47	37	44	33	41	33	43	21	30	34	48	22	31	27	36	32	41	19	28	41	44	22
23	43	46	38	42	34	40	34	42	22	29	34	47	22	30	28	35	33	40	19	27	41	43	23
24	44	45	39	42	35	39	34	41	22	28	35	47	23	29	29	34	33	39	20	26	42	42	24
25	45	44	40	41	35	38	35	40	23	27	36	45	24	28	29	33	34	38	21	25	43	41	25
26	45	43	40	39	36	37	35	39	24	26	36	45	24	28	30	32	35	37	22	24	44	40	26
27	46	42	41	38	37	36	36	38	24	26	37	44	25	27	31	31	35	36	22	23	45	39	27
28	47	41	42	37	37	35	36	37	25	25	37	43	26	26	31	31	36	35	23	22	45	38	28
29	48	40	42	37	38	34	37	36	26	24	37	42	26	25	31	30	37	34	24	22	46	37	29
30	49	39	43	36	39	35	38	35	27	23	39	42	27	24	33	28	38	33	24	21	47	36	30
31	6 49	17 38	6 45	17 33	6 40	17 32	6 39	17 34	6 27	17 22	6 40	17 40	6 28	17 23	6 34	17 27	6 38	17 32	6 25	17 20	6 48	17 35	31
नवं.	6 50	17 38	6 45	17 33	6 40	17 32	6 39	17 34	6 28	17 21	6 40	17 40	6 29	17 22	6 34	17 27	6 39	17 32	6 26	17 19	6 49	17 34	नवं.
2	51	37	45	33	41	31	40	34	29	20	41	39	29	22	34	26	40	31	27	18	50	33	2
3	52	36	47	32	42	31	41	33	30	20	41	39	30	21	36	25	41	30	27	17	50	32	3
4	53	35	48	31	43	30	42	32	30	19	42	38	31	20	37	24	41	29	28	17	51	31	4
5	53	34	48	31	43	30	42	32	31	18	42	38	32	19	37	24	42	29	29	16	52	30	5
6	54	33	48	30	44	29	43	31	32	17	44	37	32	19	38	23	43	28	30	15	53	30	6
7	55	33	50	30	45	28	44	30	33	17	44	36	33	18	39	22	44	27	30	15	54	29	7
8	56	32	51	29	46	27	45	29	34	16	45	36	34	17	40	21	45	27	31	14	55	28	8
9	57	31	52	28	47	27	45	29	34	15	46	35	35	17	41	21	45	26	32	13	56	27	9
10	58	31	52	27	47	26	46	28	35	15	46	35	36	16	41	20	46	25	33	13	57	27	10
11	6 59	30	53	27	48	25	47	28	36	14	47	34	36	15	42	20	47	25	34	12	57	26	11
12	7 00	29	54	26	49	24	48	27	37	14	48	33	37	15	43	19	48	24	34	12	58	25	12
13	00	29	54	26	50	23	48	27	38	13	49	33	38	14	44	18	49	24	35	11	59	25	13
14	01	28	55	26	51	23	49	26	38	13	49	33	39	14	45	18	49	23	36	10	7 00	24	14
15	02	28	56	25	52	22	50	26	39	12	50	32	40	13	46	17	50	23	37	10	01	24	15
16	7 03	17 27	6 58	17 24	6 53	17 22	6 51	17 25	6 40	17 12	6 51	17 32	7 40	17 13	6 46	17 17	6 51	17 22	6 38	17 10	7 02	17 23	16

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		अल्मोड़ा		जयपुर		नैनीताल		हरिद्वार		करनाल		पिथौरागढ़		कठुआ		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
नवं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	नवं.
17	7 04	17 26	6 58	17 24	6 53	17 21	6 52	17 24	6 41	17 11	6 52	17 31	6 41	17 12	6 47	17 16	6 52	17 22	6 39	17 09	7 03	17 23	17
18	05	26	6 59	23	54	21	53	24	42	11	52	31	42	12	48	16	53	21	39	09	04	22	18
19	06	26	7 00	23	55	21	54	23	42	10	53	31	43	12	49	16	53	21	40	08	05	22	19
20	07	25	01	22	56	21	55	23	43	10	54	30	44	11	50	15	54	21	41	08	05	21	20
21	07	25	01	22	57	20	55	23	44	10	55	30	44	11	51	15	55	20	42	08	06	21	21
22	08	24	02	22	57	20	56	22	45	09	55	30	45	11	51	15	56	20	43	07	07	20	22
23	09	24	04	22	58	20	57	22	46	09	56	30	46	10	52	14	57	20	43	07	08	20	23
24	10	24	05	21	6 59	20	58	22	47	09	57	29	47	10	53	14	58	19	44	07	09	20	24
25	11	23	06	21	7 00	19	6 59	22	47	09	58	29	48	10	54	14	58	19	45	07	10	20	25
26	12	23	06	21	01	19	7 00	22	48	08	58	29	49	10	55	14	59	19	46	06	11	19	26
27	13	23	07	21	02	19	01	22	49	08	6 59	29	49	10	55	13	7 00	19	47	06	12	19	27
28	14	23	08	20	03	19	02	22	50	08	7 00	29	50	09	56	13	01	19	48	06	13	19	28
29	14	23	08	20	03	19	02	21	51	08	01	29	51	09	57	13	02	19	48	06	13	19	29
30	7 15	17 23	7 09	17 20	7 04	17 19	7 03	17 21	6 51	17 08	7 02	17 29	6 52	17 09	6 58	17 13	7 02	17 18	6 49	17 06	7 14	17 19	30
दिसं.	7 16	17 22	7 10	17 20	7 05	17 19	7 03	17 21	6 52	17 08	7 02	17 29	6 53	17 09	6 59	17 13	7 03	17 18	6 50	17 06	7 15	17 18	दिसं.
2	17	22	11	20	06	19	04	21	53	08	03	29	53	09	6 59	13	04	18	51	06	16	18	2
3	18	22	11	20	06	19	04	21	54	08	04	29	54	09	7 00	13	05	18	52	06	17	18	3
4	19	22	12	20	07	19	05	21	55	08	05	29	55	09	01	13	06	18	52	06	18	18	4
5	19	22	13	20	08	19	06	21	55	08	06	29	56	09	02	13	06	18	53	06	18	18	5
6	20	22	14	20	09	19	07	21	56	08	07	29	56	09	03	13	07	19	54	06	19	18	6
7	21	22	14	20	09	19	07	21	57	08	07	29	57	10	03	13	08	19	55	06	20	19	7
8	22	23	15	20	10	19	08	22	58	08	08	30	58	10	04	13	09	19	55	06	21	19	8
9	22	23	16	20	11	19	09	22	58	08	09	30	59	10	05	13	09	19	56	06	21	19	9
10	23	23	17	20	12	19	10	22	6 59	09	09	30	59	10	06	14	10	19	57	07	22	19	10
11	24	23	18	20	12	19	10	22	7 00	09	09	30	7 00	10	06	14	11	19	57	07	23	19	11
12	25	23	19	21	13	20	11	23	00	09	10	30	01	10	07	14	11	19	58	07	24	19	12
13	25	24	19	21	14	20	12	23	01	09	11	31	01	11	08	14	12	20	59	07	24	20	13
14	26	24	20	21	14	20	13	23	02	10	11	31	02	11	08	15	13	20	6 59	08	25	20	14
15	27	24	21	22	15	21	13	24	02	10	12	31	03	11	09	15	13	21	7 00	08	26	20	15
16	27	25	22	22	16	21	14	24	03	10	13	32	03	12	10	15	14	21	01	08	26	21	16
17	28	25	22	22	16	21	14	24	04	11	13	32	04	12	10	16	15	21	01	09	27	21	17
18	28	25	23	23	17	22	15	25	04	11	14	32	05	13	11	16	15	22	02	09	28	21	18
19	29	26	23	23	17	22	15	25	05	12	14	33	06	13	11	17	16	22	02	09	28	22	19
20	30	26	24	23	18	23	16	26	05	12	14	33	06	13	12	17	16	23	03	10	29	22	20
21	30	27	24	24	18	23	16	26	06	13	15	34	27	14	12	17	17	23	04	10	29	23	21
22	13	27	25	25	19	14	17	27	06	13	16	34	07	14	13	18	17	24	04	11	30	23	22
23	31	28	25	25	19	24	17	27	07	14	16	35	08	15	13	18	18	24	05	11	30	24	23
24	32	28	25	26	20	25	18	28	07	14	17	35	08	15	14	19	18	25	05	12	31	24	24
25	32	29	25	26	20	26	18	28	08	15	17	36	08	16	14	20	19	25	05	12	31	25	25
26	32	29	26	27	21	26	19	29	08	15	18	37	09	17	15	20	19	26	06	13	31	25	26
27	33	30	26	27	21	27	19	29	09	16	18	37	09	17	15	21	19	26	06	14	32	26	27
28	33	31	27	28	21	27	20	30	09	16	18	38	10	18	15	21	20	27	07	14	32	27	28
29	33	31	27	28	22	28	20	30	09	17	19	38	10	18	16	22	20	28	07	15	33	27	29
30	34	32	28	29	22	28	21	31	10	18	19	39	10	19	16	23	21	28	07	16	33	28	30
31	7 34	17 33	7 28	17 30	7 22	17 28	7 21	17 31	7 10	17 18	7 20	17 40	7 10	17 20	7 16	17 23	7 21	17 29	7 08	17 16	7 33	17 29	31

चन्द्रमा-स्पष्ट द्वारा विंशोत्तरी

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश	कला	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
१५	२०	शुक्र	१७	०	०	चन्द्र	६	०	०	राहु	६	३	१८	शनि	१	१०	२४
१५	३०		१६	९	०		५	१०	१५		६	०	२७		१	७	२८
१५	४०		१६	६	०		५	९	०		५	१०	६		१	५	३
१५	५०		१६	३	०		५	७	१५		५	७	१५		१	२	७
१६	०		१६	०	०		५	६	०		५	४	२४		०	११	१२
१६	१०		१५	९	०		५	४	१५		५	२	३		०	८	१६
१६	२०		१५	६	०		५	३	०		४	११	१२		०	५	२१
१६	३०		१५	३	०		५	१	१५		४	८	२१		०	२	२६
१६	४०		१५	०	०		५	०	०		४	६	०	शनि बुध	१७	०	०
१६	५०		१४	९	०		४	१०	१५		४	३	९		१६	९	१३
१७	०		१४	६	०		४	९	०		४	०	१८		१६	६	२७
१७	१०		१४	३	०		४	७	१५		३	९	२७		१६	४	१०
१७	२०		१४	०	०		४	६	०		३	७	६		१६	१	२४
१७	३०		१३	९	०		४	४	१५		३	४	१५		१५	११	७
१७	४०		१३	६	०		४	३	०		३	१	२४		१५	८	२१
१७	५०		१३	३	०		४	१	१५		२	११	३		१५	६	४
१८	०		१३	०	०		४	०	०		२	८	१२		१५	३	१८
१८	१०		१२	९	०		३	१०	१५		२	५	२१		१५	१	१
१८	२०		१२	६	०		३	९	०		२	३	०		१४	१०	१५
१८	३०		१२	३	०		३	७	१५		२	०	९		१४	७	२८
१८	४०		१२	०	०		३	६	०		१	९	१८		१४	५	१२
१८	५०		११	९	०		३	४	१५		१	६	२७		१४	२	२५
१९	०		११	६	०		३	३	०		१	४	६		१४	०	९
१९	१०		११	३	०		३	१	१५		१	१	१५		१३	९	२२
१९	२०		११	०	०		३	०	०		०	१०	२४		१३	७	६
१९	३०		१०	९	०		२	१०	१५		०	८	३		१३	४	१९
१९	४०		१०	६	०		२	९	०		०	५	१२		१३	२	३
१९	५०		१०	३	०		२	७	१५		०	२	२१		१२	११	१६
२०	०		१०	०	०		२	६	०	राहु गुरु	१६	०	०		१२	९	०
२०	१०		९	९	०		२	४	१५		१५	९	१८		१२	६	१३
२०	२०		९	६	०		२	३	०		१५	७	६		१२	३	२७
२०	३०		९	३	०		२	१	१५		१५	४	२४		१२	१	१०
२०	४०		९	०	०		२	०	०		१५	२	१२		११	१०	२४
२०	५०		८	९	०		१	१०	१५		१५	०	०		११	८	७
२१	०		८	६	०		१	९	०		१४	९	१८		११	५	२१
२१	१०		८	३	०		१	७	१५		१४	७	६		११	३	४
२१	२०		८	०	०		१	६	०		१४	४	२४		११	०	१८
२१	३०		७	९	०		१	४	१५		१४	२	१२		१०	१०	१
२१	४०		७	६	०		१	३	०		१४	०	०		१०	७	१५
२१	५०		७	३	०		१	१	१५		१३	९	१८		१०	४	२८
२२	०		७	०	०		१	०	०		१३	७	६		१०	२	१२
२२	१०		६	९	०		०	१०	१५		१३	४	२४		९	११	२५
२२	२०		६	६	०		०	९	०		१३	२	१२		९	९	९
२२	३०		६	३	०		०	७	१५		१३	०	०		९	६	२२
२२	४०		६	०	०		०	६	०		१२	९	१८		९	४	६
२२	५०		५	९	०		०	४	१५		१२	७	६		९	१	१९
२३	०		५	६	०		०	३	०		१२	४	२४		८	११	३
२३	१०		५	३	०		०	१	१५		१२	२	१२		८	८	१६
२३	२०		५	०	०	चंद्र मंग	७	०	०		१२	०	०		८	६	०
२३	३०		४	९	०		६	१०	२९		११	९	१८		८	३	१३
२३	४०		४	६	०		६	९	२७		११	७	६		८	०	२७
२३	५०		४	३	०		६	८	२६		११	४	२४		७	१०	१०
२४	०		४	०	०		६	७	२४		११	२	१२		७	७	२४
२४	१०		३	९	०		६	६	२३		११	०	०		७	५	७
२४	२०	शुक्र	३	६	०	मंग	६	५	२१	गुरु	१०	९	१८	बुध	७	२	२१

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश	कला	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
२४	३०	शुक्र	३	३	०	मंग	६	४	२०	गुरु	१०	७	६	बुध	७	०	४
२४	४०		३	०	०		६	३	१८		१०	४	२४		६	९	१८
२४	५०		२	९	०		६	२	१७		१०	२	१२		६	७	१
२५	०		२	६	०		६	१	१५		१०	०	०		६	४	१५
२५	१०		२	३	०		६	०	१४		९	९	१८		६	१	२८
२५	२०		२	०	०		५	११	१२		९	७	६		५	११	१२
२५	३०		१	९	०		५	१०	११		९	४	२४		५	८	२५
२५	४०		१	६	०		५	९	९		९	२	१२		५	६	९
२५	५०		१	३	०		५	८	८		९	०	०		५	३	२२
२६	०		१	०	०		५	७	६		८	९	१८		५	१	६
२६	१०		०	९	०		५	६	५		८	७	६		४	१०	१९
२६	२०		०	६	०		५	५	३		८	४	२४		४	८	३
२६	३०		०	३	०		५	४	२		८	२	१२		४	५	१६
२६	४०	शुक्र सूर्य	६	०	०		५	३	०		८	०	०		४	३	०
२६	५०		५	११	३		५	१	२९		७	९	१८		४	०	१३
२७	००		५	१०	६		५	०	२७		७	७	६		३	९	२७
२७	१०		५	९	९		४	११	२६		७	४	२४		३	७	१०
२७	२०		५	८	१२		४	१०	२४		७	२	१२		३	४	२४
२७	३०		५	७	१५		४	९	२३		७	०	०		३	२	७
२७	४०		५	६	१८		४	८	२१		६	९	१८		२	११	२१
२७	५०		५	५	२१		४	७	२०		६	७	६		२	९	४
२८	०		५	४	२४		४	६	१८		६	४	२४		२	६	१८
२८	१०		५	३	२७		४	५	१७		६	२	१२		२	४	१
२८	२०		५	३	०		४	४	१५		६	०	०		२	१	१५
२८	३०		५	२	३		४	३	१४		५	९	१८		१	१०	२८
२८	४०		५	१	६		४	२	१२		५	७	६		१	८	१२
२८	५०		५	०	९		४	१	११		५	४	२४		१	५	२५
२९	०		४	११	१२		४	०	९		५	२	१२		१	३	९
२९	१०		४	१०	१५		३	११	८		५	०	०		१	०	२२
२९	२०		४	९	१८		३	१०	६		४	९	१८		०	१०	०६
२९	३०		४	८	२१		३	९	५		४	७	६		०	७	१९
२९	४०		४	७	२४		३	८	३		४	४	२४		०	५	०३
२९	५०		४	६	२७		३	७	२		४	२	१२		०	२	१७
३०	०	सूर्य	४	६	०	मंग	३	६	०	गुरु	४	०	०	बुध	०	०	०

सारिणी नं० II (ख)

अनुपातिक चन्द्र कलाओं के अनुसार शेष भोग्य दशा

कला	केतु		शुक्र		सूर्य		चन्द्र		मंगल		राहु		गुरु		शनि		बुध		कला
	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	
१	०	०३	०	०९	०	०३	०	०५	०	०३	०	०८	०	०७	०	०९	०	०८	१
२	०	०६	०	१८	०	०५	०	०९	०	०६	०	१६	०	१४	०	१७	०	१५	२
३	०	०९	०	२७	०	०८	०	१४	०	०९	०	२४	०	२२	०	२६	०	२३	३
४	०	१३	१	०६	०	११	०	१८	०	१३	१	०२	०	२९	१	०४	१	०१	४
५	०	१६	१	१५	०	१४	०	२३	०	१६	१	११	१	०६	१	१३	१	०८	५
६	०	१९	१	२४	०	१६	०	२७	०	१९	१	१९	१	१३	१	२१	१	१६	६
७	०	२२	२	०३	०	१९	१	०२	०	२२	१	२७	१	२०	२	००	१	२४	७
८	०	२५	२	१२	०	२२	१	०६	०	२५	२	०५	१	२८	२	०८	२	०१	८
९	०	२८	२	२१	०	२४	१	११	०	२८	२	१३	२	०५	२	१७	२	०९	९
१०	१	०१	३	००	०	२७	१	१५	१	०१	२	२१	२	१२	२	२६	२	१७	१०

ग्रहों की दशाऽन्तर्दशा का ज्ञान

दशा का भुक्त भोग्य ज्ञान–जन्म समय जो नक्षत्र हो उसका भयात (जन्म समय तक जितना नक्षत्र व्यतीत हो गया हो) और भभोग (कुल नक्षत्र) बनाओ फिर उसके पलादि बनाकर भयात के पलों को जन्म दशा के वर्षों से गुणा दो और भभोग के पलों से भाग दो, लब्ध व्यतीत दशा के वर्ष आवेंगे। शेष को 12 से गुणा कर भभोग से भाग दो लब्ध मास निकलेंगे, शेष को 30 से गुणा कर भभोग से भाग दो, लब्ध दिन आवेंगे, शेष को 60 से गुणा कर भभोग से भाग दो, लब्ध घड़ी आवेंगी, शेष को 60 से गुणा कर भभोग से भाग दो, लब्ध पल इत्यादि आवेंगे। यह भुक्त दशा के वर्ष मासादि आवेंगे, जन्म समय की दशा के कुल वर्षों में से घटा दो, लब्ध भोग्य दशा आवेगी, इसमें आगामी ग्रहों की दशा के वर्षों को जोड़ते जाने से दशा चक्र हो जाएगा।

सूर्यदशावर्ष ६				चन्द्रदशावर्ष १०				भौमदशावर्ष ७			
कृति उ.फा. उ.षा.				रोहि. हस्त श्रवण				मृग. चित्रा. धनि.			
ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.
सू.	०	३	१८	चं.	०	१०	०	मं.	०	४	२७
चं.	०	६	०	मं.	०	७	०	रा.	१	०	१८
मं.	०	४	६	रा.	१	६	०	बृ.	०	११	६
रा.	०	१०	२४	बृ.	१	४	०	श.	१	१	९
गु.	०	९	१८	श.	१	७	०	बु.	०	११	२७
श.	०	११	१२	बु.	१	५	०	के.	०	४	२७
बु.	०	१०	६	के.	०	७	०	शु.	१	२	०
के.	०	४	६	शु.	१	८	०	सू.	०	४	६
शु.	१	०	०	सू.	०	६	०	चं.	०	७	०

राहुदशावर्ष १८				गुरुदशावर्ष १६				शनिदशावर्ष १९			
आर्द्रा. स्वा. शत.				पुन. विशा. पू.भा.				पुष्य. अनु. उ. भा.			
ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.
रा.	२	८	१२	गु.	२	१	१८	श.	३	०	३
बृ.	२	४	२४	श.	२	६	१२	बु.	२	८	९
श.	२	१०	६	बु.	२	३	६	के.	१	१	९
बु.	२	६	१८	के.	०	११	६	शु.	३	२	०
के.	१	०	१८	शु.	२	८	०	सू.	०	११	१२
शु.	३	०	०	सू.	०	९	१८	चं.	१	७	०
सू.	०	१०	२४	चं.	१	४	०	मं.	१	१	९
चं.	१	६	०	मं.	०	११	६	रा.	२	१०	६
मं.	१	०	१८	रा.	२	४	२४	बृ.	२	६	१२

बुधदशावर्ष १७				केतुदशावर्ष ७				शुक्रदशावर्ष २०			
श्ले. ज्ये. रेवती				मघा. मूल. अश्वि				पू. फा. पू. षा. भर.			
ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.
बु.	२	४	२७	के.	०	४	२७	शु.	३	४	०
के.	०	११	२७	शु.	१	२	०	सू.	१	०	०
शु.	२	१०	०	सू.	०	४	६	चं.	१	८	०
सू.	०	१०	६	चं.	०	७	०	मं.	१	२	०
चं.	१	५	०	मं.	०	४	२७	रा.	३	०	०
मं.	०	११	२७	रा.	१	०	१८	बृ.	२	८	०
रा.	२	६	१८	बृ.	०	११	६	श.	३	२	०
बृ.	२	३	६	श.	१	१	९	बु.	२	१०	०
श.	२	८	९	बु.	०	११	२७	के.	१	२	०

योगिनीदशाऽन्तर्दशाज्ञान के लिए चक्र

मंगला १			पिंगला २			धान्या ३			भ्रामरी ४		
मा.	१२	चं.	मा.	२४	सू.	मा.	३६	बृ.	मा.	४८	मं.
मं.	०	१०	पिं.	१	१०	धा.	३	०	भ्रा.	५	१०
पिं.	०	२०	धा.	२	०	भ्रा.	४	०	भ.	६	२०
धा.	१	०	भ्रा.	२	२०	भ.	५	०	उ.	८	०
भ्रा.	१	१०	भ.	३	१०	उ.	६	०	सि.	९	१०
भ.	१	२०	उ.	४	०	सि.	७	०	सं.	१०	२०
उ.	२	०	सि.	४	२०	सं.	८	०	मं.	१	१०
सि.	२	१०	सं.	५	१०	मं.	१	०	पि.	२	२०
सं.	२	२०	मं.	०	२०	पिं.	२	०	धा.	४	०
श्रवण, आर्द्रा चित्रा			पुन. स्वा. धनि.			पुष्य, विशा शत.			श्ले. अनु. पू.भा. अश्वि		

भद्रिका ५			उल्का ६			सिद्धा ७			संकटा ८		
मा.	६०	बु.	मा.	७२	श.	मा.	८४	शु.	मा.	९६	के.
भ.	८	१०	उ.	१२	०	सि.	१६	१०	सं.	२१	१०
उ.	१०	०	सि.	१४	०	सं.	१८	२०	मं.	२	२०
सि.	११	२०	सं.	१६	०	मं.	२	१०	पिं.	५	१०
सं.	१३	१०	मं.	२	०	पिं.	४	२०	धा.	८	०
मं.	१	२०	पि.	४	०	धा.	७	०	भ्रा.	१०	२०
पि.	३	१०	धा.	६	०	भ्रा.	९	१०	भ.	१३	१०
धा.	५	०	भ्रा.	८	०	भ.	११	२०	उ.	१६	०
भ्रा.	६	२०	भ.	१०	०	उ.	१४	०	सि.	१८	२०
मघा. ज्ये. उ.भा. भर.			पू.फा. मूल रेव, कृति			उ.फा. पू.षा. रोह			हस्त उ.षा. मृग		

योगिनी दशा विचार–योगिनी दशा कुल ३६ वर्ष की होती है। प्रत्येक ३६ वर्षों के पश्चात् पुनः उसी दशा की पुनरावृत्ति होती है। योगनी दशाओं में क्रमशः मंगला, पिंगला, धान्या, भ्रामरी, भद्रिका, उल्का, सिद्धा और संकटा–ये आठ नाम हैं। इनकी वर्ष संख्या भी क्रमानुसार 1+2+3+4+5+6+7+8=36 वर्ष होते हैं। मंगला, पिंगला आदि योगिनी दशाएँ अपने नामानुसार ही शुभाशुभ फल प्रदान करती हैं।

योगिनी दशा की विधि–अश्विनी नक्षत्र से आरम्भ करके अपने जन्म नक्षत्र तक की संख्या में ३ जोड़कर ८ द्वारा भाग देने पर शेष १ बचे तो मंगला, २ बचें तो पिंगला, ३ बचे तो धान्या एवं च शेष ८ या ० बचे तो संकटा की दशा होगी। उदाहरणार्थ–यदि जन्म नक्षत्र अनुराधा हो, तो अश्विनी से अनुराधा तक गिनने पर १७ की संख्या हुई। इनमें ३ जमा करने पर कुल योग २० मिला। इसको ८ द्वारा भाग देने पर २ लब्धि तथा शेष ४ बचे। पूर्वोक्त क्रमानुसार मंगला से गिनने पर चौथी दशा–अर्थात् भ्रामरी की दशा (जन्मकाल से) प्रारम्भ होगी। योगिनी की भुक्त-भोग्य दशा अन्तरदशा जानने के लिए ज्योतिष तत्त्व पढ़ें।

अन्तर्दशामासादि शुभ दशा–मंगला, धा. भ. सि., **नेष्टदशा**–पिंगला, भ्रामरी, उल्का, संकटा।

अन्तर्दशा निकालने की विधि–जब किसी ग्रह की अन्तरदशा निकालनी हो तो उस ग्रह के वर्षों को पृथक २ हर एक ग्रह की दशा के वर्षों से गुणा कर महादशा के वर्षों से भाग दें (विंशोत्तरी १२०) (अष्टोत्तरी १०८) (योगिनी ३६) भाग देने से जो अंक आवे अन्तरदशा के वर्ष, मासादि आवेंगे।

ग्रहों की अन्तरदशा से प्रत्यन्तर दशा ज्ञात करना

भारतीय ज्योतिष में फलित कथन के लिए विभिन्न प्रकार की दशाओं का वर्णन मिलता है। परन्तु वर्तमान काल में केवल तीन प्रकार की दशाओं का प्रचलन मिलता है। **विंशोत्तरी दशा, योगिनी दशा** और **अष्टोत्तरी** दशा। अष्टोत्तरी दशा की अवधि 108 वर्ष की होती है। योगिनी दशा की एक आवृत्ति 36 वर्ष की ओर विंशोत्तरी दशा का कुल मान **120 वर्षों** का होता है। अष्टोत्तरी दशा दक्षिण भारत, महाराष्ट्र आदि में, **योगिनी दशाओं** का प्रचलन उत्तर भारत–विशेष रूप से हिमाचल प्रदेश में अधिक पाया जाता है, जबकि **विंशोतरी दशा** पद्धति का प्रचलन समस्त भारत वर्ष में पाया जाता है। प्रस्तुत चक्रों में विंशोतरी में प्रत्येक ग्रह की अन्तर–दशा में प्रत्यन्तर दशाएँ निकालने की प्रक्रिया बतलाई गई है। किसी ग्रह की प्रत्यन्तर दशा निकल आने से फलादेश में और अधिक सूक्ष्मता आ जाती है। दशाऽन्तरदशाओं के फलादेश का वर्णन आप हमारी पुस्तक **ज्योतिष तत्त्व फलित खण्ड भाग (दो)** में पढ़ सकते हैं। विंशोतरी दशा पद्धति के अन्तर्गत ग्रहों की महादशा एवं अन्तर्दशाओं के चक्र गत पृष्ठों में लिख चुके हैं। यहाँ पर पुनरावलोकन कर सकते हैं–

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंग.	राहु	गुरू	शनि	बुध	केतु	शुक्र
वर्ष	6	10	7	18	16	19	17	7	20

सूर्यान्तर दशा चक्र–6 वर्ष

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
वर्ष	0	0	0	0	0	0	0	0	1
मास	3	6	4	10	9	11	10	4	0
दिन	18	0	6	24	18	12	6	6	0

सूर्य मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	5	9	6	16	14	17	15	6	18
घंटे	9	0	7	4	9	2	7	7	00
मिन्ट	36	0	12	48	36	24	12	12	00

सूर्य मध्ये चन्द्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	0	0	0	0	0	0	0	1	0
दिन	15	10	27	24	28	25	10	0	9
घंटे	0	12	0	0	12	12	12	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

सूर्य मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	7	18	16	19	17	7	21	6	10
घंटे	8	21	19	22	20	8	0	7	12
मिन्ट	24	36	12	48	24	24	0	12	0

सूर्य मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	1	1	1	1	0	1	0	0	0
दिन	18	13	21	15	18	24	16	27	18
घंटे	14	4	7	21	21	0	4	0	21
मिन्ट	24	48	12	36	36	0	48	0	36

सूर्य मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	1	1	1	0	1	0	0	0	1
दिन	8	15	10	16	18	14	24	16	13
घंटे	9	14	19	19	0	9	0	19	4
मिन्ट	36	24	12	12	0	36	0	12	48

सूर्य मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	1	1	0	1	0	0	0	1	1
दिन	24	18	19	27	17	28	19	21	15
घंटे	3	10	22	0	2	12	22	7	14
मिन्ट	36	48	48	0	24	0	48	12	24

सूर्य मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	1	0	1	0	0	0	1	1	1
दिन	13	17	21	15	25	17	15	10	18
घंटे	8	20	0	7	12	20	21	19	10
मिन्ट	24	24	0	12	0	24	36	12	48

सूर्य मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	7	21	6	10	7	18	16	19	17
घंटे	8	0	7	12	8	21	19	22	20
मिन्ट	24	0	12	0	24	36	12	48	24

सूर्य मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	2	0	1	0	1	1	1	1	0
दिन	0	18	0	21	24	18	27	21	21
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र की अन्तर्दशाएँ (10 वर्ष)

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
वर्ष	०	०	१	१	१	१	०	१	०
मास	१०	७	६	४	७	५	७	८	६
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चंद्र मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	0	0	1	1	1	1	0	1	0
दिन	25	17	15	10	17	12	17	20	15
घंटे	0	12	0	0	12	12	12	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	0	1	0	0	1	0	0
दिन	12	1	28	3	29	12	5	10	17
घंटे	6	12	0	6	18	6	0	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	2	2	2	2	1	3	0	1	1
दिन	21	12	25	16	1	0	27	15	1
घंटे	0	0	12	12	12	0	0	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	2	2	2	0	2	0	1	0	2
दिन	4	16	8	28	20	24	10	28	12
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	3	2	1	3	0	1	1	2	2
दिन	0	20	3	5	28	17	3	25	16
घंटे	6	18	6	0	12	12	6	12	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	2	0	2	0	1	0	2	2	2
दिन	12	29	25	25	12	29	16	8	20
घंटे	6	18	0	12	12	18	12	0	18
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	1	0	0	0	1	0	1	0
दिन	12	5	10	17	12	1	28	3	29
घंटे	6	0	12	12	6	12	0	6	18
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	3	1	1	1	3	2	3	2	1
दिन	10	0	20	5	0	20	5	25	5
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	1
दिन	9	15	10	27	24	28	25	10	0
घंटे	0	0	12	0	0	12	12	12	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

मंगल की अन्तर्दशाएँ (7 वर्ष)

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
वर्ष	०	१	०	१	०	०	१	०	०
मास	४	०	११	१	११	४	२	४	७
दिन	२७	१८	६	९	२७	२७	०	६	०

मंगल मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	8	22	19	23	20	8	24	7	12
घंटे	13	1	14	36	19	13	12	8	6
मिन्ट	48	12	24	36	48	48	0	24	0

मंगल मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	1	1	1	1	0	2	0	1	0
दिन	26	20	29	23	22	3	18	1	22
घंटे	16	9	20	13	1	0	21	12	1
मिन्ट	48	36	24	12	12	0	36	0	12

मंगल मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	1	1	1	0	1	0	0	0	1
दिन	14	23	17	19	26	16	28	19	20
घंटे	19	4	14	14	0	19	0	14	9
मिन्ट	12	48	24	24	0	12	0	24	36

मंगल मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	2	1	0	2	0	1	0	1	1
दिन	3	26	23	6	19	3	23	29	23
घंटे	4	12	6	12	22	6	6	20	4
मिन्ट	12	36	36	00	48	0	36	24	48

मंगल मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	1	1	1	0	0	0	1	1	1
दिन	20	20	29	17	29	20	23	17	26
घंटे	13	19	12	20	18	19	13	14	12
मिन्ट	48	48	0	24	00	48	12	24	36

मंगल मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	8	24	7	12	8	22	19	23	20
घंटे	13	12	8	.6	13	1	14	6	19
मिन्ट	48	00	24	0	48	12	24	36	48

मंगल मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	2	0	1	0	2	1	2	1	0
दिन	10	21	5	24	3	26	6	29	24
घंटे	0	0	0	12	0	0	12	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

मंगल मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	6	10	7	18	16	19	17	7	21
घंटे	7	12	8	21	19	22	20	8	0
मिन्ट	12	0	24	36	12	48	24	24	0

मंगल मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	0	0	1	0	1	0	0	1	0
दिन	17	12	1	28	3	29	12	5	10
घंटे	12	6	12	0	6	18	6	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

राहु की अन्तर्दशाएँ (18 वर्ष)

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
वर्ष	२	२	२	२	१	३	०	१	१
मास	८	४	१०	६	०	०	१०	६	०
दिन	१२	२४	६	१८	१८	०	२४	०	१८

राहु मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	4	4	5	4	1	5	1	2	1
दिन	25	9	3	17	26	12	18	21	26
घंटे	19	14	21	16	16	0	14	0	16
मिन्ट	12	24	36	48	48	0	24	0	48

राहु मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	3	4	4	1	4	1	2	1	4
दिन	25	16	2	20	24	13	12	20	9
घंटे	4	19	9	9	0	4	0	9	14
मिन्ट	48	12	36	36	0	48	0	36	24

राहु मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	5	4	1	5	1	2	1	5	4
दिन	12	25	29	21	21	25	29	3	16
घंटे	10	8	20	0	7	12	20	21	19
मिन्ट	48	24	24	0	12	0	24	36	12

राहु मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	4	1	5	1	2	1	4	4	4
दिन	10	23	3	15	16	23	17	2	25
घंटे	1	13	0	21	12	13	16	9	8
मिन्ट	12	12	0	36	0	12	48	36	24

राहु मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	2	0	1	0	1	1	1	1
दिन	22	3	18	1	22	26	20	29	23
घंटे	1	0	21	12	1	16	9	20	13
मिन्ट	12	0	36	00	12	48	36	24	12

राहु मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	6	1	3	2	5	4	5	5	2
दिन	0	24	0	3	12	24	21	3	3
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

राहु मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	1	1	1	1	0	1
दिन	16	27	18	18	13	21	15	18	24
घंटे	4	0	21	14	4	7	21	21	0
मिन्ट	48	0	36	24	48	12	36	36	0

राहु मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	1	2	2	2	2	1	3	0
दिन	15	1	21	12	25	16	1	0	27
घंटे	0	12	0	0	12	12	12	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

राहु मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	1	1	1	0	2	0	1
दिन	22	26	20	29	23	22	3	18	1
घंटे	1	16	9	20	13	1	0	21	12
मिन्ट	12	48	36	24	12	12	0	36	0

गुरू की अन्तर्दशाएँ (16 वर्ष)

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
वर्ष	2	2	2	0	2	0	1	0	2
मास	1	6	3	11	8	9	4	11	4
दिन	18	12	6	6	0	18	0	6	24

गुरू मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	3	4	3	1	4	1	2	1	3
दिन	12	1	18	14	8	8	4	14	25
घंटे	9	14	19	19	0	9	0	19	4
मिन्ट	36	24	12	12	0	36	0	12	48

गुरू मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	4	4	1	5	1	2	1	4	4
दिन	24	9	23	2	15	16	23	16	1
घंटे	9	4	4	0	14	0	4	19	14
मिन्ट	36	48	48	0	24	0	48	12	24

गुरू मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	3	1	4	1	2	1	4	3	4
दिन	25	17	16	10	8	17	2	18	9
घंटे	14	14	0	19	0	14	9	19	4
मिन्ट	24	24	0	12	0	24	36	12	48

गुरू मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	1	0	0	0	1	1	1	1
दिन	19	26	16	28	19	20	14	23	17
घंटे	14	0	19	0	14	9	19	4	14
मिन्ट	24	0	12	0	24	36	12	48	24

गुरू मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	5	1	2	1	4	4	5	4	1
दिन	10	18	20	26	24	8	2	16	26
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

गुरू मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	1	1	1	1	0	1
दिन	14	24	16	13	8	15	10	16	18
घंटे	9	0	19	4	9	14	19	19	0
मिन्ट	36	0	12	48	36	24	12	12	0

गुरू मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	0	2	2	2	2	0	2	0
दिन	10	28	12	4	16	8	28	20	24
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

गुरू मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	1	1	1	0	1	0	0
दिन	16	20	14	23	17	19	26	16	28
घंटे	14	9	19	4	14	14	0	19	0
मिन्ट	24	36	12	48	24	24	0	12	0

गुरू मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	4	3	4	4	1	4	1	2	1
दिन	9	25	16	2	20	24	13	12	20
घंटे	14	4	19	9	9	0	4	0	9
मिन्ट	24	48	12	36	36	0	48	0	36

शनि की अन्तर्दशाएँ (19 वर्ष)

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
वर्ष	३	२	१	३	०	१	१	२	२
मास	०	८	१	२	११	७	१	१०	६
दिन	३	९	९	०	१२	०	९	६	१२

शनि मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	5	5	2	6	1	3	2	5	4
दिन	21	3	3	0	24	0	3	12	24
घंटे	11	10	4	12	3	6	4	10	9
मिन्ट	24	12	12	0	36	0	12	48	36

शनि मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	4	1	5	1	2	1	4	4	5
दिन	17	26	11	18	20	26	25	9	3
घंटे	6	12	12	10	18	12	8	4	10
मिन्ट	36	36	0	48	0	36	24	48	12

शनि मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	2	0	1	0	1	1	2	1
दिन	23	6	19	3	23	29	23	3	26
घंटे	6	12	22	6	6	20	4	4	12
मिन्ट	36	0	48	0	36	24	48	12	36

शनि मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	6	1	3	2	5	5	6	5	2
दिन	10	27	5	6	21	2	0	11	6
घंटे	0	0	0	12	0	0	12	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शनि मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	1	1	1	1	0	1
दिन	17	28	19	21	15	24	18	19	27
घंटे	2	12	22	7	14	3	10	22	0
मिन्ट	24	0	48	12	24	36	48	48	0

शनि मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	1	2	2	3	2	1	3	0
दिन	17	3	25	16	0	20	3	5	28
घंटे	12	6	12	0	6	18	6	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शनि मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	1	2	1	0	2	0	1
दिन	23	29	23	3	26	23	6	19	3
घंटे	6	20	4	4	12	6	12	22	6
मिन्ट	36	24	48	12	36	36	0	48	0

शनि मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	5	4	5	4	1	5	1	2	1
दिन	3	16	12	25	29	21	21	25	29
घंटे	21	19	10	8	20	0	7	12	20
मिन्ट	36	12	48	24	24	0	12	0	24

शनि मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	4	4	4	1	5	1	2	1	4
दिन	1	24	9	23	2	15	16	23	16
घंटे	14	9	4	4	0	14	0	4	19
मिन्ट	24	36	48	48	0	24	0	48	12

बुध की अन्तर्दशाएँ (17 वर्ष)

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
वर्ष	२	०	२	०	१	०	२	२	२
मास	४	११	१०	१०	५	११	६	३	८
दिन	२७	२७	०	६	०	२७	१८	६	९

बुध मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	4	1	4	1	2	1	4	3	4
दिन	2	20	24	13	12	20	10	25	17
घंटे	19	13	12	8	6	13	1	14	6
मिन्ट	48	48	0	24	0	48	12	24	36

बुध मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	1	0	0	0	1	1	1	1
दिन	20	29	17	29	20	23	17	26	20
घंटे	19	12	20	18	19	13	14	12	13
मिन्ट	48	0	24	0	48	12	24	36	48

बुध मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	5	1	2	1	5	4	5	4	1
दिन	20	21	25	29	3	16	11	24	29
घंटे	0	0	0	12	0	0	12	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

बुध मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	1	1	1	1	0	1
दिन	15	25	17	15	10	18	13	17	21
घंटे	7	12	20	21	19	10	8	20	0
मिन्ट	12	0	24	36	12	48	24	24	0

बुध मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	0	2	2	2	2	0	2	0
दिन	12	29	16	8	20	12	29	25	25
घंटे	12	18	12	0	18	6	18	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

बुध मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	1	1	1	0	1	0	0
दिन	20	23	17	26	20	20	29	17	29
घंटे	19	13	14	12	13	19	12	20	18
मिन्ट	48	12	24	36	48	48	0	24	0

बुध मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	4	4	4	4	1	5	1	2	1
दिन	17	2	25	10	23	3	15	16	23
घंटे	16	9	8	01	13	0	21	12	13
मिन्ट	48	36	24	12	12	0	36	0	12

बुध मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	3	4	3	1	4	1	2	1	4
दिन	18	9	25	17	16	10	8	17	2
घंटे	19	4	14	14	0	19	0	14	9
मिन्ट	12	48	24	24	0	12	0	24	36

बुध मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	5	4	1	5	1	2	1	4	4
दिन	3	17	26	11	18	20	26	25	9
घंटे	10	6	12	12	10	18	12	8	4
मिन्ट	12	36	36	0	48	0	24	36	48

केतु की अन्तर्दशाएँ (7 वर्ष)

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
वर्ष	0	1	0	0	0	1	0	1	0
मास	4	2	4	7	4	0	11	1	11
दिन	27	0	6	0	27	18	6	9	27

केतु मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	8	24	7	12	8	22	19	23	20
घंटे	13	12	8	6	13	1	14	6	19
मिन्ट	48	0	24	0	48	12	24	36	48

केतु मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	2	0	1	0	2	1	2	1	0
दिन	10	21	5	24	3	26	6	29	24
घंटे	0	0	0	12	0	0	12	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

केतु मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	6	10	7	18	16	19	17	7	21
घंटे	7	12	8	21	48	22	20	8	0
मिन्ट	12	0	24	36	0	48	24	24	0

केतु मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	0	0	1	0	1	0	0	1	0
दिन	17	12	1	28	3	29	12	5	10
घंटे	12	6	12	0	6	18	6	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

केतु मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	8	22	19	23	20	8	24	7	12
घंटे	13	1	14	6	19	13	12	8	6
मिन्ट	48	12	24	36	48	48	0	24	0

केतु मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	1	1	1	1	0	2	0	1	0
दिन	26	20	29	23	22	3	18	1	22
घंटे	16	9	20	13	1	0	21	12	1
मिन्ट	48	36	24	12	12	0	36	0	12

केतु मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	1	1	1	0	1	0	0	0	1
दिन	14	23	17	19	26	16	28	19	20
घंटे	19	4	14	14	0	19	0	14	9
मिन्ट	12	48	24	24	0	12	0	24	36

केतु मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	2	1	0	2	0	1	0	1	1
दिन	3	6	23	6	19	3	23	29	23
घंटे	4	12	6	12	22	6	6	20	4
मिन्ट	12	36	36	0	48	0	36	24	48

केतु मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	1	0	1	0	0	0	1	1	1
दिन	20	20	29	17	29	20	23	17	26
घंटे	13	19	12	20	18	19	13	14	12
मिन्ट	48	48	0	24	0	48	12	24	36

शुक्र की अन्तर्दशाएँ (20 वर्ष)

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
वर्ष	३	१	१	१	३	२	३	२	१
मास	४	०	८	२	०	८	२	१०	२
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	6	2	3	2	6	5	6	5	2
दिन	20	0	10	10	0	10	10	20	10
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	1	0	1	1	1	1	0	2
दिन	18	0	21	24	18	27	21	21	0
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	1	3	2	3	2	1	3	1
दिन	20	5	0	20	5	25	5	10	0
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	2	1	2	1	0	2	0	1
दिन	24	3	26	6	29	24	10	21	5
घंटे	12	0	0	12	12	12	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	5	4	5	5	2	6	1	3	2
दिन	12	24	21	3	3	0	24	0	3
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	4	5	4	1	5	1	2	1	4
दिन	8	2	16	26	10	18	20	26	24
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	6	5	2	6	1	3	2	5	5
दिन	0	11	6	10	27	5	6	21	2
घंटे	12	12	12	0	0	0	12	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	4	1	5	1	2	1	5	4	5
दिन	24	29	20	21	25	29	3	16	11
घंटे	12	12	0	0	0	12	0	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	2	0	1	0	2	1	2	1
दिन	24	10	21	5	24	3	26	6	29
घंटे	12	0	0	0	12	0	0	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

स्वप्न-शकुन का शुभाशुभ फल विचार

दैनिक जीवन में मनुष्य की जो वासनाएँ अतृप्त अथवा अपूर्ण रहती हैं, वही स्वप्न रूप में येन-केन प्रकारेण पूर्ति का आभास कराती हैं। सूर्योदय के कुछ पूर्व अथवा ब्रह्म मुहूर्त्त में देखे गए स्वप्न का फल दस दिनों में, रात्रि के प्रथम प्रहर में देखे गए स्वप्न का फल एक वर्ष के पश्चात्, रात्रि के दूसरे प्रहर में देखे गए का फल छः मास में, तृतीय प्रहर में देखे गए स्वप्न का फल तीन मास के बाद, रात्रि के अन्तिम प्रहर में देखे गए स्वप्न का फल एक मास में प्रकट होता है, जबकि दिन में देखे गए स्वप्न विश्वसनीय नहीं होते। शुभ सांकेतिक स्वप्न देखने के पश्चात् सोना नहीं चाहिए, शेष रात्रि भजन, चिंतन में बितानी चाहिए तथा किसी को अपना स्वप्न बताना भी नहीं चाहिए। इसके विपरीत अशुभ स्वप्न देखने के बाद फिर सो जाएं तथा प्रातःकाल यदि उस अशुभ स्वप्न की स्मृति ताजी रहे तो गुरुजनों को उसे बतला दें। अशुभ निवारण के लिए गायत्री पाठ, स्नानदानादि, अनुष्ठानादि कार्यों का सम्पादन करें। अधिक जानकारी हेतु हमारे कार्यालय से स्वप्न ज्योतिष विज्ञान सम्बन्धी पुस्तक मंगवाएँ।

स्वप्न	फल	स्वप्न	फल	स्वप्न	फल	स्वप्न	फल	स्वप्न	फल
अंगूठी पहनना	धन लाभ व प्रसन्नता	कुत्ता देखना	उत्तम मित्र प्राप्त हो	छाता देखना	चिन्ताओं से छुटकारा	तर्पण करते देखना	मृत्यु की सूचना	धुआं देखना	कार्य में विघ्न
आम का वृक्ष देखना	सन्तान सुख	कढ़ाई करते देखना	प्रेम या व्यापार में सफलता	छंटनी देखना	पदोन्नति	तारे देखना	मनोरथ सिद्धि	धूप देखना	पदोन्नति, लाभ हो
अतिथि देखना	आकस्मिक विपत्ति	कबाब खाना	अपयश/विवाद	जख्म देखना	परेशानियां	तूफान देखना	परेशानी बढ़े	नदी में गिरना	फिक्र, चिन्ता
आकाश से गिरना	मान हानि, चिन्ता	कब्रिस्तान देखना	प्रतिष्ठा वृद्धि	जादूगर देखना	अशुभ लक्षण	तीर्थ देखना	धार्मिक खींच	नंगा देखना	कष्ट प्राप्ति
अर्थी देखना	रोग मुक्त	खून करना	संकट आना	जहाज देखना	परेशानी दूर हो	तोता देखना	धन लाभ	नदी का पानी पीना	राज्य से लाभ
अग्नि देखना	पित्त सम्बन्धी रोग	खिलौना देखना	सुख शान्ति	जिन्दा जलना	धन की प्राप्ति	तलाक होते देखना	दाम्पत्य सुख में बाधा	न्यायालय देखना	झगड़े में सफलता
अपने को मृत देखना	आयु वृद्धि	खेत देखना	संकट पूर्ण	जल देखना	मान सम्मान	तरक्की होते देखना	योजनाओं में सफलता	नदी देखना	आकांक्षा पूर्ति
आग जलाकर पकड़ना	व्यर्थ व्यय हो	खरगोश देखना	स्त्री से मिलाप	ज्वर पीड़ित	स्वास्थ्य ठीक	तराजू देखना	व्यापार लाभ	नवयौवना देखना	प्रेम सम्बन्ध
आत्महत्या करना	दीर्घायु	गुरु देखना	कार्य सफलता	जुआ खेलना	धन हानि	ताश खेलना	व्यापार लाभ	नाखून काटना	रोग से मुक्ति
आपरेशन देखना	रोग के चिन्ह	गोबर देखना	पशु लाभ हो	जेब काटना	धन हानि	ताला बन्द देखना	कार्यों में रुकावट	नाव में बैठना	झूठा आरोप लगे
अस्त्र-शस्त्र देखना	दुःखों से निपटारा हो	गंगा देखना	शेष जीवन सुखी	जनाजा दखना	धन लाभ/तरक्की	तरबूज देखना	परेशानी	नाग देखना	सुख प्राप्ति
इन्द्रिय देखना	सन्तान सुख	ग्रहण देखना	रोग व चिन्ता	झगड़ा देखना	प्रसन्नता मिले	थूक देना	परेशानी बढ़े	नृत्य देखना	धन प्राप्ति
इम्तहान में फेल होना	शुभ फल प्राप्ति	गोली चलते देखना	विपत्ति निवारण	झाड़ू देखना	नुकसान हो	थप्पड़ मारना	कलह क्लेश	प्यासा होना	कार्य बाधा
ईमारत बनाना	धन लाभ, तरक्की	गुलाब देखना	मनोकामना पूर्ण हो	झण्डा देखना	सुयश/धन लाभ	थप्पड़ खाना	शुभ	पुल देखना	शुभ यात्रा हो
ईंजन देखना	योजनाएं असफल	गरीबी देखना	सुख समृद्धि	झांकी देखना	अशुभ	दूध पीना	खुशी प्राप्ति	परछाई देखना	अशुभ होना
ईमली खाना	पुत्र प्राप्ति	गर्भपात	गम्भीर रोग	झोंपड़ी देखना	सुरक्षा सूचक	दरवाजा बन्द देखना	परेशानियां हो	पशु देखना	व्यापार में लाभ
इन्द्रधनुष देखना	जीवन में परिवर्तन	घोड़े से गिरना	परेशानी, चिन्ता	झरना देखना	दुःख दूर हो	दान करना	शुभ	पहाड़ देखना	उन्नति का सूचक
उल्लू देखना	रोग अथवा शोक हो	घाट पर नहाना	तीर्थ यात्रा	टाट देखना	सम्मानजनक स्थिति	दर्जी देखना	काम बिगड़ना	पान खाना	प्रिय से मिलाप
उल्टा लटके देखना	अपमान मिले	घायल देखना	संकट से मुक्त होना	टेलीफोन करना	शुभ समाचार	दांत गिरते देखना	दुःख एवं झंझट	परीक्षा देते देखना	असफलता
ऊँट देखना	अंग घात	घर बनाना	प्रसिद्धि प्राप्त हो	टापू देखना	संकट लक्षण	दलदल देखना	व्यर्थ चिन्ता बढ़े	पहलवान देखना	स्वास्थ्य लाभ
ऊँचाई पर चढ़ना	तरक्की व मान	घड़ी देखना	यात्रा का संकेत	टोपी देखना	प्रगति हो	दवाई पीना	रोग नाश	पपीता देखना	धन लाभ
ऐनक देखना (काली)	निराशा	घोड़े पर बैठना	सफलता का सूचक	ठग मिलना	धन हानि	दुकान (भरी) देखना	धन लाभ	पुजारी देखना	उन्नति का संकेत
कैंची चलाना	व्यर्थ विवाद	चोट लगना	स्वास्थ्य लाभ	ठिठुरना	उज्ज्वल भविष्य	दुकान (खाली) देखना	धन हानि	पूर्वज देखना	शुभ फल प्राप्ति
कौआ बोलते देखना	बुरा समाचार मिले	चावल खाना	शुभ समाचार	डॉक्टर देखना	रोग उत्पत्ति	देवी देवता देखना	खुशी प्राप्ति	पखाना करना	कष्ट मिले
कंघी करना	इच्छा पूर्ण हो	चोर देखना	धन प्राप्ति	डूबते देखना	कठिनाईयों का सामना	दरिया में नहाना	रोग नाश	पानी बरसते देखना	शुभ कारक
काला नाग	राज्य सम्मान	चांदी के जेवर	सम्बन्ध विच्छेद	डोली देखना	कोई परेशानी हो	दीवार गिरना	धन हानि	पिंजरे में पक्षी देखना	सुख प्राप्ति
किला देखना	तरक्की पाना	चौकीदार देखना	धनागमन का संकेत	डाकिया देखना	समाचार प्राप्त हो	दाह संस्कार देखना	दीर्घायु	पगड़ी देखना	प्रतिष्ठा प्राप्ति
कोढ़ी देखना	रोग सूचक	चीखें मारना	परेशानी व कष्ट	डाकू देखना	धन हानि	धन देखना	धन की प्राप्ति	प्रणय सबन्ध देखना	दाम्पत्य सुख प्रतीक
कन्या देखना	तीर्थ यात्रा	चुनरी देखना	सौभाग्य प्रतीक	ढोलक बजाना	किसी व्यक्ति से भेंट	धूल देखना	यात्रा पड़े	प्रेत देखना	सौभाग्य वर्द्धक
कोयला देखना	व्यर्थ का झगड़ा	छुरी मारना	परिवार से वाद विवाद	तलवार चलाना	शत्रु पर विजय	धमकी देना	शत्रु पर विजय	फुलवाड़ी देखना	खुशी मिले
कीचड़ में फंसना	कष्ट हो, व्यय हो	छिपकली देखना	अचानक धन लाभ	तपस्वी देखना	आत्म उन्नति	धार्मिक कार्य करना	पारिवारिक सुख	फव्वारा देखना	चिन्ता दूर हो
कटा सिर देखना	चिन्ता परेशानी	छींकना	कार्य बाधा	तैरते देखना	आयु में वृद्धि	धोबी देखना	सफलता हो	फेल होना	सफलता का सूचक

स्वप्न	फल
फकीर देखना	शुभ फलदायक
बहन देखना	सौभाग्य वृद्धि
बकरी देखना	शुभ यात्रा लाभ
बूढ़ी स्त्री देखना	दुःख प्राप्ति
बाग देखना	सुख मिले
बाढ़ देखना	धन की हानि
बिच्छू देखना	चिन्ताकारक
बारिश देखना	रोग व कलह
बन्दूक देखना	संकट आवे
बिल्ली देखना	लड़ाई के चिन्ह
बाजार देखना	दरिद्रता दूर हो
बर्फ देखना	प्रिया से मिलाप
बारात देखना	चिन्ता व परेशानी
भूकम्प देखना	सन्तान कष्ट
भाषण देना/सुनना	वाद विवाद
भूखा देखना (स्वयं को)	यात्रा लाभ
भिखारी देखना	यात्रा पड़े
मिठाई खाना	मान व तरक्की
मुर्दे के साथ खाना	दुःख दूर हो
मुर्दे से बात करना	मुराद पुरी हो
मछली देखना	धन व स्त्री प्राप्ति
मोर देखना	खुशी प्राप्ति
महल देखना	कष्ट से छुटकारा
माली देखना	खुशी मिले
मुर्दे हंसते देखना	फिक्र व चिन्ता
मृत्यु देखना	भाग्योदय
मुण्डन कराना	सुखी गृहस्थी
मन्दिर देखना	इच्छा पूर्ण हो
मंगनी देखना	विवाह में देरी
महात्मा देखना	धन प्राप्ति
यात्रा करना	यात्रा द्वारा धन लाभ
यज्ञ देखना	सौभाग्यसूचक
युद्ध देखना	सफलता के संकेत
यम देखना	आयु वृद्धि
रोटी खाना	इच्छा पूर्ण हो
रोते हुए देखना	प्रसन्नता का प्रतीक
रोगी देखना	दुःख निवृत्ति
रसोईघर देखना	धन धान्य का प्रतीक
रेल देखना	कष्टकारी यात्रा

स्वप्न	फल
राख देखना	सफलता की प्राप्ति
रेत पर चलना	शत्रु से हानि
रिश्वत लेना	अपमान हो
राक्षस देखना	कष्ट से छुटकारा
रखैल देखना	सन्तान कष्ट
लकड़ी उठाना/देखना	अकारण वाद-विवाद
लोहा देखना	स्वास्थ्य हानि
लाटरी का टिकट	सौभाग्य पद
लंगर देखना	धन सम्पदा वृद्धि
विष खाना	परेशानी बढ़े
वृक्ष काटना	धन हानि
विदाई देखना	धन वृद्धि
वध दिखाई देना	आकस्मिक विपत्ति
विवाह देखना	दुर्भाग्य सूचक
विधवा देखना	हानि
विदेश यात्रा देखना	परिवारिक विवाद
वर्षगांठ मनाना	आयु में कमी
वर्षा देखना	मान-सम्मान
विमान देखना	सौभाग्य सूचक
शेर देखना	शत्रु नाश
शीशा देखना	रोग नाश
शत्रु देखना	सफलता हो
शव देखना	शुभ फल
श्राद्ध करना	पितरों की प्रसन्नता
शिकार करना	पारिवारिक कष्ट
शिशु देखना	सुखी दाम्पत्य जीवन
शोक समूह देखना	आनन्द का प्रतीक
शमशान घाट	दीर्घायु
शराब पीना	वाद विवाद
साँप देखना/पकड़ना	शत्रु पर विजय
सागर देखना	धन वृद्धि
सुन्दरी देखना	धन लाभ
स्टेशन देखना	यात्रा शुभ होगी
सेहरा देखना	गृह क्लेश
सुन्दर वस्त्र देखना	बीमार होना
स्नान करते देखना	व्यवसाय में लाभ
हवालात देखना	मान सम्मान
हंसते हुए देखना	खुशी का प्रतीक
हड्डियाँ देखना	डूबे धन की प्राप्ति
हत्या देखना	परेशानी
हरी फुलवारी देखना	धन-जन वृद्धि
हाथी देखना	व्यवसाय वृद्धि

अंगों पर छिपकली गिरने का फल

अंग फल पल्ली (किरली) पतन पर आवश्यक कर्त्तव्य

शरीर पर छिपकली गिरते समय, उस समय जो भी वस्त्र पहने हों, उन्हें पहिने हुए ही स्नान करना चाहिए। तत्पश्चात् तिल, उड़द, घृत में छाया-पात्र का दान एवं यथाशक्ति धन का दान करके **''महामृत्युञ्जय मन्त्र''** का पाठ करना चाहिए।

अंग	फल
मस्तक (सिर)	**राज्य लाभ**
कपाल	**ऐश्वर्य प्राप्ति**
नाक	**सौभाग्य वृद्धि**
दाहिना कान	**आयु वृद्धि**
बायां कान	**भूषण लाभ**
दाईं भुजा	**मान-सम्मान**
बाईं भुजा	**धन-हानि, राज भय**
कण्ठ	**शत्रु नाश**
पीठ के मध्य	**क्लह-क्लेश**
बाईं पीठ	**रोग भय**
दायीं पीठ	**सुख लाभ**
दायें कन्धे	**विजय, सफलता**
बायें कन्धे	**दुश्मनों से भय**
कमर	**रोग भय**
दाईं जाँघ	**धन हानि**
बाईं जाँघ	**पुत्र से लाभ**
दायें हाथ	**धन लाभ**

अंग	फल
बायें हाथ	**धन हानि**
नाभि	**पुत्र प्राप्ति**
हृदय	**सुख-यश प्राप्ति**
गुदा	**रोग भय**
गुप्तांग	**मित्र से भेंट**
दायें पाँव	**यात्रा (भ्रमण)**
बायें पाँव	**रोग-क्लेश**
पावों की उंगलियों	**यात्रा**
गर्दन	**यश, लाभ**

अंगस्फुरण फल

अंग	फल
सिर	पृथ्वी लाभ
माथा	स्थान लाभ
वामभुज	प्रिय प्राप्ति
नेत्र	प्रियदर्शन
भृकुटियां	लक्ष्मी दर्शन
कपोल	स्त्री सुख
नासा	गन्ध सुख
ऊपर का होंठ	स्त्री चुम्बन
कण्ठ	भूषण प्राप्ति
ग्रीवा	शत्रु भय
पीठ	पराजय
कन्धा	मित्र समागम
बाहुप्रदेश	प्रिय प्राप्ति

अंग	फल
बाहुमध्य	धनागमः
कर (हाथ)	धन प्राप्ति
छाती	विजय
पार्श्व	उत्तम प्रीति
नाभि	यात्रा से लाभ
उदर पेट	कोष प्राप्तिः
वृष्ण	पुत्र लाभ
जानु (घुटना)	रिपु (शत्रु) सन्धि
जंघा	हानिप्रद
चरण के ऊपर	स्थान प्राप्ति
चरण के नीचे	लाभप्रदः
दक्षिण कर्ण	दीर्घायु
कण्ठे	शत्रुनाश

शरीर में तिल और उनके शुभाशुभ फल

अंग	फल
माथे पर तिल	धनवान होवे
माथे के दाहिने ओर	मान प्रतिष्ठा में वृद्धि
दोनों भौंह के मध्य में	यात्रा कारक है
बायीं आंख पर	औरत से कलह
दाहिनी आँख पर	औरत से विशेष प्यार रहे
ठोडी पर तिल हो	औरत से प्यार कम हो
बायें गाल पर	धन का अपव्यय
दाहिने गाल पर	धन की बढ़ोतरी हो
ऊपर के होंठ पर	विषयवासना में रत रहे
नीचे के होंठ पर	धन की कमी रहे
कान पर तिल हो	आयु मध्यम रहे
गर्दन पर तिल हो	आराम प्राप्त हो
दाहिनी भुजा पर हो	मान-प्रतिष्ठा प्राप्त हो
नाक पर तिल हो	यात्रा कारक है
बायीं भुजा पर हो	झगड़ा होवे
बायीं छाती पर हो	औरत से झगड़ा हो
दाहिनी छाती पर हो	औरत से प्यार रहे
दोनों छातियों के मध्य	जीवन सुखमय रहे
हृदय पर हो	बुद्धिमान हो
पसली पर तिल हो	डरपोक स्वभाव हो
पीठ पर तिल हो	यात्रा में रहा करे
पेट पर तिल हो	श्रेष्ठ भोजन की इच्छा रहे
बगल में तिल हो	दूसरों को हानि पहुंचावे
कमर पर तिल हो	मन अशान्त रहे
बायें हाथ की पीठ पर	व्यय अधिक हो
दाहिनी हथेली पर	धनवान् हो
बायीं हथेली पर	व्यय कारक है
दाहिने पैर में तिल हो	यात्रा कारक है
बायें पैर पर	अपव्यय कारक
पाँव के तलुवे में	यात्रा अधिक

॥ अथ नक्षत्रकष्टावलीय ॥

नक्षत्र चरण	चरण १	चरण २	चरण ३	चरण ४	कष्ट लक्षणानि	देवता	दानद्रव्याणि	जप संख्या	जपार्थ नक्षत्र मन्त्राणि	बलिदान
	रोग दिन संख्या									
अश्विनी १	०९	११	१०	२०	अर्ध गात्र पीड़ा वातज्वर निद्राभंग	अश्विनी देवता	घृत कुंभ सुवर्ण ब्राह्मण भोजन	५ हजार	ॐ अश्विनौ तेजसाचक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्य्यम् वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम्॥ ॐ अश्विनीकुमाराभ्यो नमः।	कुमकुम, श्वेत चंदन, चम्पक पुष्प तंदुल मोदक नैवेद्य गुड़, क्षीर, कमल पुष्प, धूप तिल दीपः
भरणी २	दि ००	दि ८०	दि ४०	दि ११	छर्दरोग तीव्रज्वर तंद्रा अनेक रोग	यम देवता	शर्करा घृत अजा गौ महिषी, छायापात्र	१० हजार	ॐ यमायत्वा मखायत्वा सूर्य्यस्यत्वा तपसे देवस्यत्वा सवितामध्वा नकु पृथिव्या स Ω स्पृशस्पाहिअर्चिरसि शोचिरसि तपोसि ॥२॥	अगर गन्ध करवीरपुष्प गुग्गुल धूप गुड़ोदन नैवेद्य धूप दीप क्षेत्रपाल पूजा
कृतिका ३	दि ००	दि ११	दि १६	दि २८	रक्तनेत्र उरु शूल नेत्र पीड़ा अतिदाह	अग्नि देवता	सुवर्ण गौदान ग्रह शांति	१० हजार	ॐ अयमग्नि सहस्रिणो वाजस्य शांति Ω वनस्पतिः मूर्द्धा कबोरयीणाम् ॥ ३ ॥ अग्नये नमः॥	चन्दन गंध पुष्प नैवेद्य गुग्गुलधूपघृत दीप तिलमाष गुड़ोदन पायस नैवेद्य, दशांग
रोहिणी ४	दि ०७	दि ०९	दि १८	दि ३०	शिर दर्द ज्वर पीड़ा कुक्षिशूल प्रलाप	प्रजापति देवता	सप्तधान्य सुवर्ण कृष्ण गौदुग्धखड	५ हजार	ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सूरुचोवेन आवः सबुध्न्या उपमा अस्यविष्टाः सतश्चयोनिमसतश्चविधः ॥४॥ ॐ ब्रह्मणे नमः॥	चन्दन गन्ध पुष्प नैवेद्य अष्टगन्ध दूध मोदक धूप घृत क्षीर नैवेद्य, दीप, दशांग
मृगशिर ५	दि ०९	दि ०५	दि ०७	दि १०	अर्ध शरीर पीड़ा महाघोर कष्ट	सोम देवता	दधितडुलगोवत्सा दान ब्राह्मण भोजन	१० हजार	ॐ सोमोधनु Ω सोमाअवन्तुमाशु Ω सोमोवीरः कर्मणयन्ददाति यदत्यविदध्य Ω सभेयम्पितृ श्रवणयोम ॐ चन्द्रमसे नमः ॥५॥	चन्दन गंध सौरभ पुष्प गुग्गुल धूप पायस नैवेद्य मधु घृतदुग्धदध्योदन बलि, दशांग
आर्द्रा ६	दि ००	दि १८	दि ००	दि ००	ज्वर सर्वांगपीड़ा निद्रानाश त्रिदोष	रुद्र देवता	कृष्ण वृषभादि दान कृष्ण वस्त्रादि	१० हजार	ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽउतोत इषवे नमः बाहुभ्यां मुतते नमः ॥६॥ ॐ रुद्राय नमः॥	हरिद्रा कुमकुम गन्ध सवन्तिका पुष्प अष्ट गंधतिलपिष्ट धूप नैवेद्य घृत मिष्ठान्न दशांग
पुनर्वसु ७	दि ०७	दि १४	दि ०२	दि २१	अर्ध शरीर पीड़ा शिर पीड़ा ज्वर	अदिति देवता	सुवर्ण कमलदान ५ कन्याभोजनवस्त्र	१० हजार	ॐ अदितिद्यौरदितिरन्तरिक्षमदिति र्माताः स पिता स पुत्रः विश्वेदेवा अदितिः पंचजना अदितिजातम अदितिरर्जनित्वम् ॥७॥ ॐ आदित्याय नमः॥	कुंमकुम गंध वारिज पुष्प गुग्गुल धूप घृत पायस नैवेद्य मोदक गुड़बलि पीत वर्णान्नि
पुष्य ८	दि ०७	दि ०७	दि १०	दि २१	ज्वर पीड़ा शूल अतिकठिन रोग	बृहस्पति देवता	पीत वस्त्र सुवर्ण गौदान पक्वान्नदान	१० हजार	ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यदी दयच्छ वसऋतप्रजातदस्मासुद्रविणं धेहि चित्रम् ॥ ॐ गुरवे नमः ॥	कुमकुम अगर गंध अगस्त पुष्पघृतगुग्गुल धूपक्षीर नैवेद्यदध्योदन, शक्कर बलिदानम्
आश्लेषा ९	दि ००	दि ००	दि ११	दि ००	सर्व गात्र पीड़ा मृत्युतुल्य कष्ट	सर्प देवता	कुलमातृ योगिनी पूजा गोशय्यादान	१० हजार	ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्योये के च पृथिवीमनुः। ये अन्तरिक्षे यो दिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥९॥ ॐ सर्पेभ्यो नमः	चन्दन गन्धचम्पक पुष्प गुग्गुल घृतधूप क्षीर मिष्टान्नहविनैवेद्य तिल घृत दुग्धबलि कुंकुम,
मघा १०	दि १५	दि ०७	दि १७	दि २०	अर्धगात्र पीड़ा शीत जन्यरोगभय शिर पीड़ा	पितर देवता	तिल तंडुलमाष वस्त्रदान	१० हजार	ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वाधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः। प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः अक्षन्न पितरोऽमीमदन्तः पितरोतितृपन्त पितरःशुन्धध्वम् ॥१०॥ ॐ पितरेभ्ये नमः॥	चन्दन गन्ध चम्पक पुष्प गुग्गुल धूप घृत मिष्ठान्नहविनैवेद्य तिल घृत दुग्धबलि, दीप, नैवेद्य, दीपादि
पूर्वाफाल गुणी ११	दि ००	दि १५	दि ००	दि ३०	सर्वगात्रे पीड़ा ज्वर अर्धशिररोग	भग देवता	पित्तल पात्र यव माष गोस्वर्णदान	१० हजार	ॐ भगप्रणेतर्भगसत्यराधो भगे मां धियमुदवाददन्नः। भगप्रजननाय गोभिरश्वैर्भगप्रणेतृभिर्नुवन्तः स्यामः ॥११॥ ॐ भगाय नमः॥	चन्दन गंध चम्पक पुष्पगुग्गुलघृतधूप शर्करामोदक पूपोदन घृत पायसनैवेद्य बिल्व
उत्तरा फाल्गु. १२	दि ००	दि १४	दि ०७	दि ६०	शिर रोग महाज्वर कुक्षिशूलरोग	अर्यमा देवता	सुवर्णरजत अन्न गो वस्त्र दान	५ हजार	ॐ दैव्या वद्धर्व्यू च आगत Ω रथेन सूर्य्यत्वचा। मध्वायज्ञ Ω समञ्जायेतं प्रत्नया यं वेनश्चित्रं देवानाम् ॥१२॥ ॐ अर्यमणे नमः॥	कपूरकुंकुमगंध अर्कपुष्पघृत गुग्गुल धूप घृतपायसनैवेद्य घृतान्नहोम केशर गंध
हस्त १३	दि १५	दि १७	दि १५	दि ००	सर्वाङ्ग पीड़ा उदर शूल प्रस्वेद अफारा	सविता देवता	गोदानछाया पात्र रक्तवस्त्र सुवर्ण	५ हजार	ॐ विभ्राडवृहन्पिवतु सोम्यं मध्वार्य्युदधज्ञ पत्त व विहुतम् वातजूतोयो अभि रक्षतित्मना प्रजा पुपोषः पुरुधाविराजति ॥ ॐ सावित्रे नमः॥	कुकुमरक्तचन्दन गंध कमल पुष्पसुगन्ध गुग्गुलधूपः घृत पायसनैवेद्य दीप, केशर
चित्रा १४	दि ११	दि ०९	दि ०९	दि १६	विविधरोग भय महादारुण कष्ट	त्वष्टा देवता	विचित्रवृषभ गुड़ तिल छाया पात्र	५ हजार	ॐ त्वष्टातुरीयो अद्भुत इन्द्राग्नी पुष्टिवर्द्धनम्। द्विपदापदायाः च्छन्द इन्द्रियमुक्षा गौत्र वयोदधुः ॥१४॥ त्वष्ट्रेनमः ॥ ॐ विश्व कर्मणे नमः॥	कुंकुम दीप अगरगन्ध विचित्र पुष्पगुग्गुल धूपमोदक घृत विचित्रान्नहविनैवेद्य, केशर

नक्षत्र चरण	चरण १	२	३	४	कष्ट लक्षणानि	देवता	दानद्रव्याणि	जप संख्या	जपार्थ नक्षत्र मन्त्राणि	बलिदान
	रोग दिन संख्या									
स्वाती १५	६०	१७	३०	००	अनेक तरह के रोग ज्वर, कष्ट	वायु देवता	लाल गो सुवर्ण पक्वान्न दान	५ हजार	ॐ वायरन्नरदि बुधः सुमेध श्वेतः सिषीक्तिनो युतामभि श्री तं वायवे सुमनसा वितस्थुर्विश्वेनरः स्वपत्थ्या निचक्रुः ॥१५॥ ॐ वायवे नमः॥	चन्दनगंध कमल पुष्प अगर गुग्गुल धूप, दीप पायस शर्करा घृत नैवेद्य।
विशाखा १६	दि १५	दि ००	दि ०४	दि १३	कुक्षिशूल रोग सर्व गात्र पीड़ा	इन्द्राग्नी देवता	रक्त पीत वस्त्र कृष्णवृषभ दान	१० हजार	ॐ इन्द्राग्नी आगत Ω सुतं गार्भिर्नमो वरेण्यम्। अस्य पातं धियोषिता ॥१६॥ ॐ इन्द्राग्नीभ्यां नमः॥	श्री खण्ड चन्दन गंध कमल पुष्प देवदारु धूपधृत पायस नैवेद्य, दीपक केशर।
अनुराधा १७	दि ६०	दि १२	दि ३६	दि ३०	तीव्र ज्वर महारोग शिर पीड़ा	मित्र देवता	अन्न सुवर्ण गो दान छायापात्र	१० हजार	ॐ नमो मित्रस्यवरुणस्य चक्षसे महो देवाय तदृत Ω सपर्यत दूरंदृशे देव जाताय केतवे दिवस्पुत्राय सूर्योयश Ω सत ॥१८॥ ॐ मित्राय नमः॥	कुंकुमगंध कमल पुष्प चन्दन धूपः पायस घृत पुष्प मोदक नैवेद्य, केशर, गंध।
ज्येष्ठा १८	दि ५९	दि ०९	दि ०६	दि ०४	पित्तरोग शरीर कांपना व्याकुलता	इन्द्र देवता	सुवर्ण नील वस्त्र तैल छायापात्रदान	५ हजार	ॐ त्रातारभिंद्रमबितारमिंद्र Ω हवे हवेसुहव Ω शूरमिंद्रम् वहयामि शक्रं पुरुहूतभिंद्र Ω स्वास्ति नो मधवा धात्विन्द्रः। ॐ इन्द्राय नमः॥	चन्दन गंध सुगंध पुष्प कपूर धूप विचित्रान्न नैवेद्य, चम्पा पुष्प पायस, नारियल।
मूला १९	दि ००	दि ०९	दि १५	दि ०६	ज्वरशूलसन्निपात महाकठिन रोग	निर्ऋति देवता	सप्तधान्य सुवर्ण कृष्णगोछायापात्र	५ हजार	ॐ मातेवपुत्रं पृथिवी पुरीष्यमग्निं Ω स्वयोनावभारुषा तां विश्वेदैवऋतुभिः संविदानः प्रजापति विश्वकर्मा विमुञ्चत। ॐ निर्ऋतये नमः॥	कृष्ण अगर गंध नील पद्म पुष्प कृष्ण अगर धूप मिष्ठान्नहवि माष नैवेद्य।
पूर्वाषाढ़ा २०	दि ००	दि १५	दि २४	दि १०	शरीरपीड़ा कंपरोग शिररोग महाकष्ट	जल देवता	श्वेतवस्त्रतंडुलसु–वर्णजलकुंभ	५ हजार	ॐअपाघ मम कील्वषम पकृल्यामपोरपः अपामार्गत्वमस्मद यदुः स्वपन्य–सुवः ॥२०॥ ॐ अद्भ्यो नमः॥	चन्दनगन्ध पद्म पुष्प गुग्गुल धूप घृत पायस नैवेद्य।
उत्तराषाढ़ा २१	दि ३०	दि २४	दि २६	दि १६	कटिपीड़ा प्रलाप उदर शूलरोग युक्त	विश्वेदेवा देवता	ब्राह्मण भोजन अन्न सुवर्ण दान	१० हजार	ॐ विश्वे अद्य मरुत विश्वऽउतो विश्वे भवत्यग्रयः संमिद्धाः विश्वेनोदेवा अवसागमन्तु विश्वेमस्तु द्रविणं बाजो अस्मै॥२१॥	चन्दन गंध मालती गुग्गुल पुष्प पायस नैवेद्य।
श्रवण २२	दि ६०	दि २४	दि ०६	दि ०९	वातापित्तकफरोग अतिसारसर्वगात्रपी	गोविन्द देवता	सुवर्गगेदानब्राह्मणभोजनछायापात्र	१० हजार	ॐ विष्णोरराटमसि विष्णो श्नपत्रेस्थो विष्णो स्युरसिविष्णो ध्रुवोसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा ॥२२॥ ॐ विष्णवे नमः॥	चन्दन गंध मालतीपुष्प कपूर गुग्गुल धूप ओदन पायस षडरम नैवेद्य।
धनिष्ठा २३	दि १५	दि २	दि २०	दि २१	मूत्रकृच्छ ज्वर रक्त अतिसार कंपरोग	वसु देवता	छत्री जूता सुवर्ण गोछायापात्रदान	१० हजार	ॐ वसोःपवित्र मसि शतधारंवसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वासविता पुनातुवसोः पवित्रेणशतधारेण सुप्वाकामधुक्षः। ॐ वसुभ्यो नमः॥	अगर गंध कमल पुष्प अगर धूप घृत पायस नैवेद्य, दीपक, ताम्र बर्तन।
शतभिषा २४	दि ००	दि ४५	दि ०३	दि २२	वायु रोग से भय सन्निपातज्वरपीड़ा	वरुण देवता	तिलसुवर्ण घृत तैल अजागोदान	१० हजार	ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसिवरुणस्यस्कुं मसर्जनी स्थोवरुणस्य ऋत सदन्य सि वरुण स्यऋतमदन ससि वरुणस्यऋतसदनमसि। ॐ वरूणाय नमः॥	कुकम अगर गन्ध कमल पुष्प अगर धूप घृत धूप नैवेद्य।
पूर्वाभाद्र–पद २५	दि ००	दि १२	दि २१	दि १९	सर्वगात्रपीड़ाछर्दी चिन्ताव्याकुलता	ऽजेकपाद देवता	सुवर्ण रजतश्वेत वस्त्र धृत दुग्ध	५ हजार	ॐ उतनाऽहिर्वुध्न्यः शृणोत्वज एकपापृथिवी समुद्रःविश्वे देवा ऋता वृधो हुवाना स्तुतामंत्राः कविशस्ता अवन्तु॥ ॐ अजैकपदे नमः॥	कंकुम चन्दनगन्धश्वेतार्क पुष्प सर्वोषधी मिश्र धूप दधि पायस नैवेद्य।
उत्तराभा–द्रपद २६	दि १०	दि २०	दि ०९	दि १५	कामलारोगअतिसा ज्वरवायुशूलभ्रम	अहिर्बुध्न देवता	रजत कृष्ण वस्त्र तिल सुवर्ण दान	१ हजार	ॐ शिवोनामासिस्वधितिस्तो पिता नमस्तेऽस्तुमामाहिं Ω सो निवर्त्तयाम्यायुषेऽत्राद्याय प्रजननायर रायम्पोषाय (सुप्रजास्वाय ॥२६॥) ॐ अहिबुर्धाय नमः॥	कपूरचन्दनगन्ध पद्म पुष्प विल्व गुग्गुल धूप दधि पायस नैवेद्य।
रेवती २७	दि १८	दि १०	दि ०९	दि २०	वातपित्तज्वर भ्रम उरू शूलपीडा	पूषा देवता	पित्तल पात्र रक्त वृषभवस्त्रछायापात्र	१० हजार	ॐ पूषन् तव व्रते वय नरिष्येभ कदाचन। स्तोतारस्तेइहस्मसि ॥२७॥ ॐ पूष्णेनमः॥	रक्त चन्दन गन्ध चम्पक पुष्प घृत गुग्गल धूप घृत पायस नैवेद्य।

रोग-त्रिनाड़ी चक्र

आर्द्रा	पू.फा.	उ.फा.	अनु	ज्ये०	धनि	शत०	भरणी	कृत्ति
पुर्न	मघा	हस्त	विशा	मूल	श्रव०	पू.भा.	अश्वि.	रोहि
पुष्य	आश्ले.	चित्रा	स्वाती	पू.षा.	उ.षा.	उ.भा.	रेवती	मृग.

मंगलवार १।६।११ तिथि कृत्तिका नक्षत्र। बुधवार २।७।१२ तिथि आश्लेषा नक्षत्र। गुरुवार ३।८।१३ तिथि मघाहस्तनक्षत्र। शुक्रवार ४।९।१४ तिथि–आर्द्रा धनिष्टा नक्षत्र। शनिवार ५।१०।१५ तिथि–भरणीनक्षत्र। इन तीन योगों में रोग का प्रारम्भ हो तो मृत्यु या मृत्युतुल्य कष्ट जानना। (रोग के दिन नक्षत्र से नाम का नक्षत्र ५।१४।२३ संख्या पर काल का मुंह होता है और १०, १८वें नक्षत्र काल की दंष्ट्र (दाढ़) होती हैं, मुख वा दंष्ट्रा में जिस दिन नक्षत्र प्राप्त हो उस दिन अत्यंत रोगग्रसित पुरुष की मृत्यु तुल्य कष्ट जानना। सूर्य जिस नक्षत्र में हो, वह नक्षत्र, चन्द्र नक्षत्र और नाम का नक्षत्र जिस दिन एक नाड़ी में हो उसी दिन असाध्य रोगी की मृत्यु जानना।

॥ अथ बालकष्टावली पूतना विधान ॥

मंत्र को २१ बार पढ़कर सात बार रूग्ण बालक के सिर पर घुमाकर चौरस्ते (चौराहे) पर मौन होकर रख आवे॥

जन्म से			पूतना नाम	ग्रसित लक्षण	मूर्तिद्रव्य	बलि द्रव्य तथा समय	धूप	मन्त्र
दि ०१	मा १	व ०१	१ योगिनी २ मातृका ३ नंदिनी	ज्वर गात्रशोष अनाहार वमन मूर्छा कांपना हीन ज्वर उदर पीड़ा	नदी का मिट्टी का पुतला ३ दिन विधान	उबले चावल सफेद चंदन का लेप सफेदफूल ध्वजा ५ चिलिड़ियां (पूड़े) ५ दीपक ५ प्रात: समय पूर्व दिशा में तीन दिन बलि देवे।	सरसों बालछड़ आक बिल्वपत्र तिल्ली और मनुष्य के केश नीम घी का धूप	ॐ नमो भक्तवत्सले मोचिनी स्वाहा
दि ०२	मा ०२	व ०२	१ सुनंदिनी २ योगिनी ३ स्तनदा	ज्वर हाथ पांव संकोचदांतो का पीसना आँखें मीचना ज्वरादि रोदन आँखें दुखना	सेर चावल की पीठी का पुतला ३ दिन दिन विधान	उबले चावल सेर पर आटे के पूड़े मच्छी और बकरे का मांस ध्वजा १३ दीपक १३ पश्चिम दिशा में सन्ध्या समय ३ दिन बलि देवे।	पूर्ववत् सब वस्तुओं का धूप देना	ॐ नमो भगवती स्वाहा
दि ०३	मा ०३	व ०३	१ पूतना	ज्वर कम्प न प्रलाप अरुचि आँखें मीचना वमन रोमांच	पूर्ववत मूर्ति	लाल चावल लाल ध्वजा लाल चन्दन लालफूल सायंकाल उत्तर दिशा में ३ दिन बलि देवे।	गोश्रृङ्ग और सांप को कांचली का धूप देना	ॐनमो भगवती स्वाहा
दि ०४	मा ०४	व ०४	१ मुखमंडिका २ आकाशयोगिनी	ज्वर गात्र भग आंखमीचना शिर झुकाना श्वास श्याम ता अरुचि नींद न आना	चावल के चूर्ण का पुतला विल्ब के कांटे से रेखा	सफेद चंदन का लेप सफेद फूल सफेद ध्वजा सेर भर आटे के पूड़े तीनों सन्ध्या सगय पश्चिम दिशा में बलि ३ दिन देवें।	लहसन नीम के पत्ते मनुष्य के और बिल्ली के बाल गो घृत धूप देना।	ॐ नमो पूतने मातवीर्लि भक्ष सुशोभने बालंकमुचंसुयोगेन बलिदाने नहर्षयेत्
दि ०५	मा ०५	व ०५	विद्यालिका	ज्वर हिक्का श्वास शूल गात्र संकोच अरुचि उदर पीड़ा	सेर भरचावलों की पीठी का पुतला	उबले चावल ध्वजा ५ दीपक ५ सफेद चन्दन सफेद फूल अपरान्ह के समय वृक्ष के मूल में पश्चिम दिशा में ३ दिन बलि देवे।	पूर्ववत धूप देना	ॐ सुभगे सुभलेदेवि सर्व शत्रु निवारिणी। कुरु शांति शिशो: स्वस्थं जीव दानेन राक्षसि
दि ०६	मा ०६	व ०६	शकुनी	ज्वर गात्र संकोच अरुचि श्वास लेने में कठिनाई उदर पीड़ा	सेर चावलों की पीठी का पुतला बनाना	कृष्णोदन ध्वजा ५ दीपक ५ काले फूल मच्छी का मांस बकरे का मांस पायस दूध आधसेर आटे को पूड़े अपरान्ह पश्चिमदिशा में तीन दिन बलि देवे	कूठ गुग्गुल सफेद चन्दन सरसों हाथी का दांत गो घृत धूप देना।	ॐ राक्षसि त्व महाभागे बालमुंच शुभानने। क्षेम कुरु जगत्य स्मिन् शोभावान वरं कुरु
दि ०७	मा ०७	व ०७	शुष्करेवती	ज्वर देह संकोच अरुचि कांपना रोदन करना	पूर्ववत मूर्ति	सफेद ध्वजा ७ दीपक ७ सफेद फूल सफेद चंदन सायंकाल पश्चिम दिशा में ३ दिन बलि देवे।	गोश्रृङ्ग और लहसन से पूर्ववत धूप देना।	ॐ नमो पद्मपत्राक्षि विशालाक्षि बन शिव। सगृहाँ बलि माषञ्च बाले मुँच सुशोभने।
दि ०८	मा ०८	व ०८	विडालिका	ज्वर गात्र संकोच आँखें मीचना रोना जिव्हाशोष शिर पीड़ा अरुचि	पूर्ववत मूर्ति	पायस (खीर) दूध घी लाजा मध्यान्ह व पूर्व संध्या समय दक्षिण दिशा में ३ दिन बलि देवे	गुग्गुल में घृत मिलाकर उपरोक्त धूप देना।	ॐ नमो सर्व भूतेशि शोभने त्वं पिशाचिनी। बलिचैवा सुरी कृत्य त्वरितं मुंच बालकम्
दि ०९	मा ०९	व ०९	मनोन्मत्ता	ज्वर वमन तृष्णा श्वास अफारा देह संकोच उदर शूल	पूर्ववत मूर्ति	उबले चावल मच्छी का मांस पापड़ गन्ना संध्या समय उत्तर दिशा में ३ दिन बलि देवे।	गोश्रृङ्ग को घृत में घिसकर पूर्ववत धूप देना	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय हुं फट स्वाहा।
दि १०	मा १०	व १०	रेवती	ज्वर वमनाकास श्वास पीड़ा	पूर्ववत मूर्ति	गुड़ उबले चावल घी ध्वजा २५ पूड़े २५ लालफूल २५ सफेद फूल ४४ संध्यासमय दक्षिण में ३ दिन बलिदेवे	गोश्रृङ्ग लहसन को घृत में मिलाकर धूप देना।	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय फट स्वाहा।
दि ११	मा ११	व ११	सुदर्शना	ज्वर अरुचि मुखशोष गात्र पीड़ा रोदन	माष उड़द की पीठी	उबले चावल सफेद चंदन लेपन सफेद फूल ध्वजा २५ दीपक २५ पूड़े २५ बलि संध्या समय दक्षिण दिशा में बलि देवे।	पूर्ववत धूप देना	ॐ नमो भगवते रावणाय चंद्रहास वज्रहस्ताय ॐ हुं फट स्वाहा।
दि १२	मा १२	व १२	अद्‌भुता	ज्वर रोदन पसीना आँखें दुखना सन्ताप रोमांच शरीर पीड़ा	सेर चावल की पीठी का पुतला	ध्वजा १३ पूड़े मच्छी का मांस बकरे का मांस पापड़ संध्या समय दक्षिण में ३ दिन बलि देवे	गोश्रृङ्ग को घृत में घिस कर पूर्ववत धूप देना।	ॐनमो नारायणाय प्रज्वल २ ताप हर २ शोषय २ मर्दय २ हन दुष्टान् हुं फट स्वाहा

वर्षफल बनाने की सारिणी (सूर्य सिद्धान्तीय)

वर्ष	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५
वार	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	००	०१	०२	०४	०५	०६	००	०२	०३
घड़ी	१५	३१	४६	०२	१७	३३	४८	०४	१९	३५	५०	०६	२१	३७	५२	०८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८
पल	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	०१	३३	०४	३६	०७
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०

वर्ष	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०
वार	०४	०५	००	०१	०२	०४	०५	०६	००	०२	०३	०४	०५	००	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६
घड़ी	४३	५९	१४	३०	४५	०१	१६	३२	४७	०३	१८	३४	४९	०५	२१	३६	५२	०७	२३	३८	५४	०९	२५	४०	५६
पल	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	००	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१३	४३	१५
विपल	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००

वर्ष	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५
वार	०१	०२	०३	०४	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	००	०१	०२	०४	०५	०६	००	०२	०३
घड़ी	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	००	१५	३१	४७	०२	१८	३३	४९	०४	२०	३५	५१	०६	२२	३७	५३	०८	२४
पल	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	०१	३३	०४	३६	०७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०

वर्ष	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
वार	०४	०५	००	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	००	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६
घड़ी	३९	५५	१०	२६	४२	५७	१३	२८	४४	५९	१५	३०	४६	४३	१७	३२	४८	०३	१९	३४	५०	०५	२१	३६	५२
पल	५४	२५	५७	२८	००	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	३०	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००

वर्ष फल साधन

जिस संवत् या वर्ष का वर्ष लग्न निकालना हो, उस संवत् में से जातक के जन्म का सम्वत् घटाने से जो वर्ष शेष बचेंगे वह **गतवर्ष** होंगे फिर वर्षफल सारणी में गत वर्षों के नीचे लिखे वार, घड़ी पलादि के ध्रुवांक को जातक के जन्म, वार, घड़ी, पलादि में जमा कर लेने पर आगामी वर्ष का वार एवं वर्षेष्ट काल निकल आएगा। अब इस वर्षेष्ट को स्थानिक लग्न सारणी की सहायता से जन्म लग्न की भान्ति ही वर्ष लग्न ज्ञात कर सकते हैं। फिर वर्ष प्रवेश के वर्षेष्ट अनुसार ही ग्रहस्थापना कर लेंवे। उदाहरण सहित इसका स्पष्टीकरण हमारी प्रकाशित **वर्षफल चन्द्रिका** में पढ़ें।

मुन्था–जन्म लग्न राशि की संख्या में से गतवर्ष की संख्या को जोड़कर जो योगफल आए, उसे १२ से भाग देकर जो संख्या शेष रहे, उसी राशि अंक पर मुंथा स्थापित करनी चाहिए। **मुन्था जन्म** लग्न से प्रति वर्ष एक राशि आगे चलती है।

त्रिपताकी चक्र–त्रिपताकी का **चन्द्रमा** निकालने के लिए वर्ष प्रवेश की संख्या को ९ द्वारा भाग दें। जो शेष बचे जन्मकुण्डली में जिस राशि में चन्द्रमा स्थित है, उससे आगे उतने भाव गिनकर प्राप्त राशि अंक पर चन्द्रमा लगावें। शेष ग्रहों के लिए वर्ष प्रवेश संख्या में ४ द्वारा भाग दें। शेष को जन्मस्थान के ग्रहों से जहां वे स्थित हैं, उतना आगे गिनकर चक्र में लिखें।

मुद्दा दशा निकालना–गत वर्ष में जन्म नक्षत्र जोड़कर उसमें से दो घटावें, ९ द्वारा भाग देने से जो शेष बचे तदनुसार दशा जाननी चाहिए। यदि १ बचे तो **सूर्य** की, २ बचें तो **चन्द्रमा**, ३ बचें तो **मंगल**, ४ से राहु, ५ बचें तो गुरु, ६ बचें तो **शनि**, ७ से **बुध**, ८ से केतु, ९ अथवा ० बचे तो **शुक्र** की दशा जाननी चाहिएं।

मुद्दा दशा के दिनादि–सूर्य के १८ दिन, **चन्द्रमा** के ३०, **मंगल** के २१ दिन, **राहु** के ५४ दिन, **गुरु** के ४८ दिन, **शनि** के ५७ दिन, **बुध** के ५१ दिन, **केतु** के २१ दिन तथा **शुक्र** के ६० दिन **मुद्दा दशा में होते हैं।**

स्थानबल–सूर्य वर्ष लग्न से ९वें, चन्द्रमा ३रे, मंगल ६ठे, बुध १, गुरु ११वें, शुक्र ५, शनि १२वें स्थान में हो तो ५ हर्ष बल देते हैं।

स्वभोच्चबल–सूर्य १।५, चन्द्रमा २।४, मंगल १।८।१०, बुध ३।६, बृहस्पति १२।४, शुक्र २।७।१२, शनि १०।११।७–इन राशियों में ५ बल देते हैं।

पुरुष-स्त्री ग्रहः–स्त्री ग्रह लग्न से १।२।३।७।८।९, घरों में ५ बल देते हैं और पुरुषग्रह लग्न से ४।५।६।१०।११।१२ घरों में ५ बल देते हैं। दिन के समय पुरुष ग्रह तथा रात्रि के इष्ट में स्त्री ग्रह ५ बल देते हैं।

त्रिराशिपति चक्र

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशि
सू.	शु.	श.	शु.	बृ.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	बृ.	चं.	दिनपति
बृ.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	बृ.	चं.	रात्रिपति

वर्ष लग्न की जो राशि हो उसकी ऊपर की पंक्ति में राशि के सामने देखो और उसके नीचे यदि इष्ट दिन का हो तो दिनपति के सामने रात्रि का हो तो रात्रिपति के सामने और वर्ष लग्न की राशि के नीचे जो ग्रह हैं वही त्रिराशिपति होगा।

वर्ष कुण्डली में दृष्टि चक्र

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
प्रत्यक्ष मित्र	५–९	५–९	५–९	५–९	५–९	५–९	५–९
गुप्त मित्र	३–११	३–११	३–११	३–११	३–११	३–११	३–११
प्रत्यक्ष शत्रु	१–७	१–७	१–७	१–७	१–७	१–७	१–७
गुप्त शत्रु	४–१०	४–१०	४–१०	४–१०	४–१०	४–१०	४–१०

वर्ष कुण्डली में जो ग्रह जिस भाव में पड़ा हो वह उस भाव से पांचवें और ९वें भाव को प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से देखता है। तीसरे ग्यारहवें गुप्तमित्र दृष्टि से, पहले सातवें प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि से और ४-१० गुप्त शत्रु दृष्टि से देखते हैं।

(१) प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि शुभ और बलवान् होती है। (२) गुप्त मित्र दृष्टि सम है। (३) गुप्त शत्रु दृष्टि अशुभ है। (४) शत्रु दृष्टि अशुभ है।

दृष्टि फल

प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि–इस का फल कार्य में शीघ्र सफलता, सम्बन्धियों से सुख-प्रेम और लाभ इत्यादि इस से जिन मनुष्यों के साथ पहिले शत्रुता होती है उन से प्रेम उत्पन्न होता है तथा नए सम्बन्ध स्थापित होते हैं।

गुप्त शत्रु दृष्टि–यह प्रत्यक्ष दृष्टि से कुछ कम फलदायक है। अर्थात् कार्य बड़ी कठिनता से सफलता को प्राप्त होता है, यह प्रत्यक्ष रूप में सहायता करने वाली होती है, परन्तु गुप्त रूप से शत्रुता करने वाली होती है।

गुप्त मित्र दृष्टि–इसका फल प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से कम होता है। यह भी कार्य में सफलता व लाभदायक है, परन्तु प्रत्यक्ष भाव से नहीं, गुप्त भाव से सफलता व कार्य सिद्ध होता है।

प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि–इसका फल शत्रुता उत्पन्न करना, बनता कार्य बिगाड़ना, मित्र से वैर, धन हानि, मानसिक परेशानी, निकट बंधुओं से मन–मुटाव इत्यादि हैं।

वेध-सिद्ध नवीन मतानुसार वर्ष प्रवेश

वेध-सिद्ध नवीन मतानुसार वर्ष प्रवेश सारिणी

एक सौर वर्ष में सूर्य द्वारा उसी राशि, अंश, कला, विकला पर घूमकर पुन: जितना समय लगता है, उसकी अवधि (Duration) के सम्बन्ध भिन्न-भिन्न मत पाए जाते रहे हैं। ''सूर्य सिद्धान्तानुसार'' उक्त समय ३६५ दिन, १५ घड़ी, ३१ पल ३० विपल है, जबकि आधुनिक वेधशालाओं द्वारा प्रमाणित यह समयावधि ३६५ दिन, १५ घड़ी २२ पल और साढ़े ५३ विपल होते हैं। इस प्रकार दोनों मतों में लगभग ८।३० पल अथवा ३ मिन्ट २७ सेकिण्ड का अन्तर पाया जाता है। प्रत्येक शताब्दि (वर्ष) यह अन्तर बढ़ता जाता है। फलस्वरूप वर्ष प्रवेश इष्ट एवं कभी-कभी एक-दो लग्नों का भी अन्तर पड़ जाता है। गत पृष्ठों में हमने सूर्य सिद्धान्तानुसार वर्ष सारिणी पहिले की भान्ति ही दी हुई है। अब आजकल कुछ विद्वान नवीन वेधसिद्ध वर्ष सारिणी का प्रयोग करने लगे हैं। इससे फलादेश में भी अधिक सूक्ष्मता आ जाती है। अधिक जानकारी हेतु हमारे ज्योतिष कार्यालय से '**वर्षफल चन्द्रिका**' लेखक पण्डित पन्ना लाल गणितकर्त्ता (संशोधित संस्करण) मंगवा कर पढ़ें। यद्यपि परम्परानुगामी सूर्य-सिद्धान्तीय वर्ष सारिणी का ही प्रयोग कर रहे हैं।

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४
घटी	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	३	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०
पल	२२	४५	८	३१	५४	१७	४०	३	२५	४८	११	३४	५७	२०	४३
विपल	५३	४६	३९	३२	२५	१८	११	०४	५७	५०	४३	३६	२९	२२	१५

गताब्द	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
वार	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	६	२१	३६	५२	७	२३	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१
पल	६	२९	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५४	१७	४०	३	२६
विपल	८	०१	५४	४७	४०	३३	२६	१९	१२	०५	५८	५१	४४	३७	३०

गताब्द	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
वार	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	५	६	०
घटी	५६	१२	२७	४२	५८	१३	२९	४४	५९	१५	३०	४६	१	१६	३२
पल	४९	१२	३५	५८	२०	४३	६	२९	५२	१५	३८	१	२३	४६	९
विपल	२३	१६	९	२	५५	४८	४१	३४	२७	२०	१३	६	५९	५२	४५

गताब्द	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५
घटी	४७	२	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	५	२१	३६	५२	७	२२
पल	३२	५५	१८	४१	४	२७	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३
विपल	३८	३१	२४	१७	१०	०३	५६	४९	४२	३५	२८	२१	१४	७	०

गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५
वार	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	२	३
घटी	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२५	४१	५६	१२	२७	४२	५८	१३
पल	१५	३८	१	२४	४७	१०	३३	५६	१८	४१	४	२७	५०	१३	३६
विपल	५३	५६	३९	३२	२५	१८	११	४	५७	५०	४३	३६	२९	२२	१५

गताब्द	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
वार	४	५	६	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१
घटी	२८	४४	५९	१५	३०	४५	०१	१६	३२	४७	०२	१८	३३	४८	०४
पल	५९	२२	४४	७	३०	५३	१६	३९	२	२५	४७	१०	३३	५६	१९
विपल	८	१	५४	४७	४०	३३	२६	१९	१२	०५	५८	५१	४४	३७	३०

वर्ष कुण्डली में मुंथा का महत्त्व

वर्ष कुण्डली में नवग्रहों के समान मुंथा की भी स्थापना की जाती है। मुंथा यद्यपि कोई ग्रह नहीं है, तो भी इसका फल ग्रह के समान ही महत्त्वपूर्ण है। मुंथा जन्म लग्न से प्रति वर्ष एक-एक राशि आगे चलती है। वर्ष कुण्डली में ४, ६, ७, ८ एवं १२वें भाव में स्थित मुंथा अशुभ फलदायक होती है। यदि ४, ६, ७, ८, १२वें भाव में शुभ ग्रह युक्त हो तो इतनी अधिक अनिष्टकारी नहीं होती। लग्नादि द्वादश भावों में मुंथा का फल इस प्रकार होगा—(१) **लग्न भाव में मुंथा** स्थित हो तो उस वर्ष शत्रुओं का नाश, भाग्य में वृद्धि, सवारी का सुख, यदि चर राशि में हो तो स्थान परिवर्तन के भी योग बनते हैं। (२) **द्वितीय भावस्थ मुंथा** हो तो कठिन परिश्रम द्वारा धन लाभ एवं धन प्राप्ति के साधन बनते हैं। मनोरंजन एवं सुख साधनों पर व्यय भी बढ़ता है। (३) **तृतीय भावस्थ मुंथा** होने से शत्रुओं का नाश, भाइयों, मित्रों या उच्च पद प्राप्त महानुभावों का सहयोग प्राप्त होता है। (४) **चतुर्थ भावस्थ मुंथा** शरीर कष्ट, वायु विकार, अपने-परायों से विरोध, गुप्त चिन्ताएँ, नौकरी और व्यवसाय में अनेक प्रकार के विघ्न, स्थान परिवर्तन आदि अशुभ फल घटित होते हैं। (५) **पंचमस्थ मुंथा** अत्यन्त शुभ फल देने वाली होती है। सर्विस अथवा व्यापार में लाभ, धन, पुत्र एवं विद्या का लाभ, नए उद्योग से सफलता मिले। (६) **षष्ठस्थ मुंथा** हो तो शरीर कष्ट, शत्रुओं का भय, चित्त में अशान्ति, नानके पक्ष की हानि, स्वभाव में चिड़चिड़ापन रहता है। (७) **सप्तमस्थ मुंथा** अशुभ रहती है। स्त्री अथवा निकट बन्धुओं की ओर से कलह-क्लेश, परिवारिक सदस्यों को कष्ट, बने बनाए कार्य बिगड़ना आदि अशुभ फल घटित होते हैं। (८) **अष्टमस्थ मुंथा** होने से आशाओं में निराशा, पेट तथा अन्य गुप्त रोगों का भय, स्थान परिवर्तन, अनावश्यक यात्राओं तथा स्वास्थ्य पर भी अपव्यय होता है। (९) **नवमस्थ मुंथा** उत्तम फल देती है। नौकरी में पदोन्नति अथवा व्यवसाय में लाभ-वृद्धि, परिवारिक सुख एवं भाग्योन्नति होती है। (१०) **दशमस्थ मुंथा** होने से आर्थिक लाभ, सरकारी क्षेत्र में यदि कोई कार्य रुका होगा तो पूरा होगा (अर्थात् लाभ होगा) तथा सोचे हुए कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। (११) **ग्यारवें भाव में मुंथा** होने से धन लाभ सुख-प्राप्ति, व्यापार और क्रय-विक्रय के कार्यों से लाभ होगा। (१२) **द्वादशस्थ मुंथा** आने से नया व्यापार तथा यात्रा करने से हानि, स्थान परिवर्तन के योग बनेंगे। (विस्तृत फलादेश के लिए देखें हमारी पुस्तक '**वर्षफल चंद्रिका**') मूल्य 110/- रु. मात्र

वेध सिद्ध शुद्ध वर्ष प्रवेश सारिणी (घण्टा–मिनटों में)

सूर्य सिद्धान्तानुसार 365 दिन, 15 घटी, 31 पल, 30 विपलों में–**अर्थात्** 365 दिन, 6 घण्टे, 12 मिनट एवं 36 सैकिंडों में सूर्य पुन: उसी स्थान या बिन्दु पर आ जाता है। जबकि नवीन एवं आधुनिक अनुसंधानों से यह सिद्ध हो चुका है कि सूर्य (पृथ्वी) को पुन: उसी बिन्दु पर आने में 365 दिन, 6 घण्टे, 9 मिनट एवं 9 सैकिंड लगते हैं। इस प्रकार दोनों मतों में लगभग साढ़े तीन मिनटों अर्थात् 3 मिनट 27 सैकिंड (प्रतिवर्ष) का अन्तर पड़ता है तथा वर्षमान सारिणी में यह अन्तर प्रतिवर्ष बढ़ता जाता है। 40 वर्षों के अंतराल में यह अन्तर 2 घण्टे 18 मिनट का हो जाएगा। जिससे प्राचीन सूर्य सिद्धान्तीय सारणी से एक/दो लग्नों का अंतर हो जाना स्वाभाविक है।

आजकल अधिकांश ज्योतिषी वेध सिद्ध सूक्ष्म वर्ष प्रवेश सारिणी का प्रयोग करने लगे हैं। आधुनिक कम्प्यूटर प्रणाली द्वारा भी नवीन वर्ष प्रवेश सारिणी का ही अनुमोदन किया जाता है। गत वर्षों से पंचांग दिवाकर में नवीन सूक्ष्म वर्ष प्रवेश सारिणी घड़ी/पलात्मक में दे चुके हैं। आगे वेद्ध सिद्ध सूक्ष्म वर्ष-प्रवेश सारिणी घण्टा/मिनटों में दे रहे हैं। **वर्ष-लग्न** निकालने के लिए इसका प्रयोग **और भी अधिक सरल** है।

	वार	घंटे	मिनट
जन्म वार समयादि	4	5	30
सारिणी से प्राप्त संख्या	+ 0	12	42
	4	18	12
अर्थात् (बुधवार)	4 वार	18	12

प्रस्तुत सारिणी की प्रयोग विधि–आपको जिस साल का वर्ष प्रवेश ज्ञात करना हो, उस वर्ष में से जन्म वर्ष निकाल देने से हम **गताब्द** अर्थात् गतवर्ष मिलेंगे। गतवर्ष के सामने के वार एवं घंटा/मिंट को अपने जन्म वार एवं जन्म समय (स्टैं. टा.) में जमा कर देने से हमें नववर्ष प्रवेश कालीन वार एवं घण्टा–मिनट भा. स्टैं. टाईम में मिल जाएगा। नववर्ष प्रवेश स्टैं. घंटा/मिंट को दैनिक लग्न में देखने से हमें लग्न ज्ञात हो जाएगा। **ध्यान रहे,** सारिणी में जमा करने से जोड़ यदि 24 घं. से अधिक आ जाए, तो उसमें से 24 घटा दें, तथा 1 वार जमा कर लेवें। वार की गणना रविवार से की जाती है।

उदाहरण–मान लो किसी जातक का जन्म 2 अक्तूबर, 1974 ई० में, बुधवार को प्रात: साढ़े पाँच (5/30) बजे हुआ। यदि हमने उस जातक का सन् 2019 ई. की वर्ष कुण्डली तैयार करनी है, तो 2019 ई. में से जन्म वर्ष घटा देने पर हमें 45 गतवर्ष प्राप्त हुए। आगे दी गई वर्ष प्रवेश सारिणी में गतवर्ष 45 के सामने हमें 0 वार, 12 घण्टे एवं 42 मिनट मिले। इनको जातक के जन्मवार एवं जन्म समय (5/30) में जमा कर देने से हमें 4 वार, 18 घण्टे, 12 मिनट प्राप्त हुए। हमें 4 वार अर्थात् बुधवार की सायं 6 बजकर, 12 मिनट प्राप्त हुए।

जन्त्री/पंचाँग में दी गई है. लग्न सारिणी से देखने पर 2 अक्तू., बुधवार की सायं 6 बजकर 12 मिनट पर हमें '**मीन**' **वर्ष लग्न** प्राप्त हुआ। वर्ष लग्न मीन में सं. २०७६ की पंचांग से 2 अक्तूबर, 2019 ई. सायं 18/12 स्टै. टा. के ग्रह स्थापन करके हमें नववर्ष प्रवेश की कुण्डली प्राप्त होगी। मुंथा लगाने के लिए जातक के जन्म लग्न राशि में गतवर्ष जमा करके प्राप्त संख्या को 12 से भाग देने जो संख्या शेष बचे उसी राशि पर **मुंथा** स्थापित की जाती है।

वर्ष लग्न के अंश, कला, विकला जानने के लिए हमें वर्षेष्ट, सूर्य स्पष्ट तथा (जातक द्वारा वर्तमान में स्थायी तौर पर रह रहे) नगर की लग्न सारिणी का प्रयोग करना होगा। अधिक जानकारी एवं फलादेश के लिए हमारी प्रकाशित '**वर्षफल चन्द्रिका**' पुस्तक का अध्ययन करें। मूल्य केवल 110 रु.।

गत वर्ष	वार	घंटे	मिंट	गत वर्ष	वार	घंटे	मिंट	गत वर्ष	वार	घंटे	मिंट	गत वर्ष	वार	घंटे	मिंट
1	1	6	9	26	4	15	58	51	1	01	47	76	4	11	36
2	2	12	18	27	5	22	07	52	2	07	57	77	5	17	46
3	3	18	27	28	0	04	17	53	3	14	06	78	6	23	55
4	5	00	37	29	1	10	26	54	4	20	15	79	1	06	04
5	6	6	46	30	2	16	35	55	6	02	24	80	2	12	13
6	0	12	55	31	3	22	44	56	0	08	33	81	3	18	22
7	1	19	04	32	5	04	53	57	1	14	42	82	5	00	31
8	3	01	13	33	6	11	02	58	2	20	51	83	6	06	41
9	4	07	23	34	0	17	32	59	4	03	01	84	0	12	50
10	5	13	32	35	1	23	21	60	5	09	10	85	1	18	59
11	6	19	41	36	3	05	30	61	6	15	19	86	3	01	08
12	1	01	50	37	4	11	39	62	0	21	28	87	4	07	17
13	2	07	59	38	5	17	48	63	2	03	37	88	5	13	26
14	3	14	08	39	6	23	57	64	3	06	43	89	6	19	36
15	4	20	17	40	1	06	07	65	4	15	56	90	1	01	45
16	6	02	27	41	2	12	16	66	5	22	05	91	2	07	54
17	0	08	36	42	3	18	25	67	0	04	14	92	3	14	03
18	1	14	45	43	5	00	34	68	1	10	23	93	4	20	12
19	2	20	54	44	6	06	43	69	2	16	32	94	6	02	21
20	4	03	03	45	0	12	42	70	3	22	41	95	0	08	30
21	5	9	12	46	1	19	02	71	5	04	51	96	1	14	40
22	6	15	22	47	3	01	11	72	6	11	00	97	2	20	49
23	0	21	31	48	4	07	20	73	0	17	09	98	4	20	58
24	2	03	40	49	5	13	29	74	1	23	18	99	5	09	07
25	3	09	49	50	6	19	38	75	3	05	27	100	6	15	16

जनवरी — दैनिक लग्न सारणी — भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली — DELHI

ता.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	8 10	9 53	11 21	12 45	14 21	16 16	18 30	20 50	23 09	1 25	3 43	6 02
2	8 06	9 49	11 17	12 41	14 17	16 12	18 26	20 47	23 05	1 21	3 39	5 58
3	8 02	9 45	11 13	12 37	14 13	16 08	18 22	20 43	23 01	1 17	3 35	5 54
4	7 58	9 41	11 09	12 33	14 09	16 04	18 18	20 39	22 57	1 13	3 31	5 50
5	7 54	9 37	11 05	12 29	14 05	16 00	18 14	20 35	22 53	1 09	3 27	5 46
6	7 50	9 33	11 01	12 25	14 01	15 56	18 10	20 31	22 49	1 05	3 23	5 42
7	7 46	9 29	10 57	12 21	13 57	15 52	18 06	20 27	22 45	1 01	3 19	5 38
8	7 42	9 25	10 53	12 17	13 53	15 48	18 02	20 23	22 41	0 57	3 15	5 34
9	7 38	9 21	10 49	12 13	13 49	15 44	17 58	20 18	22 37	0 53	3 11	5 30
10	7 34	9 17	10 45	12 09	13 45	15 40	17 54	20 15	22 33	0 49	3 07	5 26
11	7 30	9 13	10 41	12 05	13 41	15 36	17 50	20 11	22 29	0 45	3 03	5 22
12	7 26	9 09	10 37	12 01	13 37	15 32	17 46	20 07	22 25	0 41	2 59	5 18
13	7 22	9 05	10 33	11 57	13 33	15 28	17 42	20 04	22 22	0 37	2 55	5 14
14	7 18	9 01	10 29	11 53	13 29	15 24	17 38	20 00	22 18	0 33	2 51	5 10
15	7 14	8 57	10 25	11 49	13 25	15 20	17 34	19 56	22 14	0 29	2 47	5 6
16	7 10	8 54	10 22	11 46	13 22	15 17	17 31	19 52	22 10	0 26	2 43	5 2
17	7 06	8 50	10 18	11 42	13 18	15 13	17 27	19 48	22 06	0 22	2 39	4 58
18	7 02	8 46	10 14	11 38	13 14	15 09	17 23	19 44	22 02	0 18	2 35	4 54
19	6 58	8 42	10 10	11 34	13 10	15 05	17 19	19 40	21 58	0 14	2 31	4 51
20	6 54	8 38	10 06	11 30	13 06	15 01	17 15	19 36	21 54	0 10	2 27	4 47
21	6 50	8 34	10 02	11 26	13 02	14 57	17 11	19 32	21 50	0 6	2 23	4 43
22	6 47	8 30	9 58	11 22	12 58	14 53	17 07	19 28	21 46	0 2	2 19	4 39
23	6 43	8 26	9 54	11 18	12 54	14 49	17 03	19 24	21 42	23 58	2 15	4 35
24	6 39	8 22	9 50	11 14	12 50	14 45	16 59	19 20	21 38	23 54	2 12	4 31
25	6 35	8 18	9 46	11 10	12 46	14 41	16 55	19 16	21 34	23 50	2 08	4 27
26	6 31	8 15	9 43	11 07	12 43	14 38	16 52	19 13	21 31	23 47	2 04	4 23
27	6 27	8 11	9 39	11 03	12 39	14 34	16 48	19 09	21 27	23 43	2 00	4 19
28	6 23	8 07	9 35	10 59	12 35	14 30	16 44	19 05	21 23	23 39	1 56	4 16
29	6 19	8 03	9 31	10 55	12 31	14 26	16 40	19 01	21 19	23 35	1 52	4 12
30	6 15	7 59	9 27	10 51	12 27	14 22	16 36	18 57	21 15	23 31	1 48	4 08
31	6 12	7 55	9 23	10 47	12 23	14 18	16 32	18 53	21 11	23 27	1 44	4 04
फर	6 08	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

फरवरी — दैनिक लग्न सारणी — भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली — DELHI

ता.	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	7 51	9 19	10 43	12 19	14 14	16 28	18 49	21 07	23 23	1 40	4 00	6 04
2	7 47	9 15	10 39	12 15	14 10	16 24	18 45	21 03	23 19	1 36	3 56	6 00
3	7 43	9 11	10 35	12 11	14 06	16 20	18 41	20 59	23 15	1 32	3 52	5 56
4	7 39	9 07	10 31	12 07	14 02	16 16	18 37	20 55	23 11	1 28	3 48	5 52
5	7 35	9 03	10 27	12 03	13 58	16 12	18 33	20 52	23 07	1 24	3 44	5 48
6	7 31	8 59	10 23	11 59	13 54	16 08	18 29	20 48	23 03	1 21	3 40	5 44
7	7 27	8 55	10 19	11 55	13 50	16 04	18 25	20 44	22 59	1 17	3 36	5 40
8	7 23	8 51	10 15	11 51	13 46	16 00	18 21	20 40	22 55	1 13	3 32	5 36
9	7 19	8 47	10 11	11 47	13 42	15 56	18 18	20 36	22 51	1 09	3 28	5 32
10	7 15	8 43	10 07	11 43	13 38	15 52	18 14	20 32	22 47	1 05	3 24	5 28
11	7 11	8 39	10 03	11 39	13 34	15 48	18 10	20 28	22 43	1 01	3 20	5 24
12	7 07	8 35	9 59	11 35	13 30	15 44	18 06	20 24	22 39	24 57	3 16	5 20
13	7 04	8 31	9 55	11 31	13 26	15 40	18 02	20 20	22 35	24 53	3 12	5 16
14	7 00	8 27	9 51	11 27	13 22	15 36	17 58	20 16	22 31	24 49	3 08	5 12
15	6 56	8 23	9 47	11 23	13 18	15 32	17 54	20 12	22 27	24 45	3 04	5 08
16	6 52	8 19	9 43	11 19	13 14	15 28	17 50	20 08	22 23	24 41	3 00	5 04
17	6 48	8 15	9 39	11 15	13 10	15 24	17 46	20 04	22 19	24 37	2 56	5 01
18	6 44	8 11	9 35	11 11	13 06	15 20	17 42	20 00	22 15	24 33	2 52	4 57
19	6 40	8 07	9 31	11 07	13 02	15 16	17 38	19 56	22 11	24 29	2 48	4 53
20	6 36	8 04	9 28	11 04	12 58	15 13	17 34	19 52	22 07	24 25	2 44	4 49
21	6 32	8 00	9 24	11 00	12 55	15 09	17 30	19 48	22 03	24 21	2 41	4 45
22	6 28	7 56	9 20	10 56	12 51	15 05	17 26	19 44	21 59	24 17	2 37	4 41
23	6 24	7 52	9 16	10 52	12 47	15 01	17 22	19 40	21 55	24 14	2 33	4 37
24	6 21	7 49	9 13	10 49	12 44	14 58	17 19	19 37	21 52	24 11	2 30	4 34
25	6 18	7 46	9 10	10 46	12 41	14 55	17 16	19 34	21 49	24 08	2 27	4 31
26	6 14	7 42	9 06	10 42	12 37	14 51	17 12	19 30	21 45	24 04	2 23	4 27
27	6 11	7 39	9 03	10 39	12 34	14 48	17 09	19 27	21 42	24 01	2 20	4 24
28	6 08	7 36	9 00	10 36	12 31	14 45	17 06	19 24	21 39	23 58	2 17	4 21
29	6 04	7 32	8 56	10 32	12 27	14 41	17 02	19 20	21 35	23 54	2 13	4 17
मार्च	6 00	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी मार्च भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

मार्च	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर
ता.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
1	7 28	8 53	10 28	12 23	14 37	16 58	19 16	21 31	23 50	2 09	4 13	5 57
2	7 24	8 49	10 24	12 19	14 33	16 54	19 12	21 27	23 46	2 05	4 09	5 53
3	7 21	8 45	10 21	12 16	14 30	16 50	19 08	21 23	23 42	2 01	4 05	5 49
4	7 17	8 41	10 17	12 12	14 26	16 46	19 04	21 19	23 38	1 57	4 01	5 45
5	7 13	8 37	10 13	12 08	14 22	16 42	19 00	21 15	23 35	1 53	3 58	5 41
6	7 09	8 33	10 09	12 04	14 18	16 38	18 56	21 11	23 31	1 49	3 54	5 37
7	7 05	8 29	10 05	12 00	14 14	16 34	18 52	21 08	23 27	1 45	3 50	5 33
8	7 01	8 25	10 01	11 56	14 10	16 30	18 48	21 04	23 23	1 41	3 46	5 29
9	6 57	8 21	9 57	11 52	14 06	16 27	18 45	21 00	23 19	1 38	3 42	5 25
10	6 53	8 17	9 53	11 48	14 02	16 23	18 41	20 56	23 15	1 34	3 38	5 21
11	6 49	8 13	9 49	11 44	13 58	16 19	18 37	20 52	23 11	1 30	3 34	5 17
12	6 45	8 09	9 45	11 40	13 54	16 15	18 33	20 48	23 08	1 26	3 30	5 14
13	6 41	8 05	9 41	11 36	13 50	16 11	18 29	20 44	23 04	1 23	3 27	5 10
14	6 37	8 01	9 37	11 32	13 46	16 07	18 25	20 40	23 00	1 19	3 23	5 06
15	6 33	7 57	9 33	11 28	13 42	16 03	18 21	20 36	22 56	1 15	3 19	5 02
16	6 29	7 53	9 29	11 24	13 38	15 59	18 17	20 32	22 52	1 11	3 15	4 58
17	6 25	7 49	9 25	11 20	13 34	15 55	18 13	20 28	22 48	1 07	3 11	4 54
18	6 21	7 45	9 21	11 16	13 30	15 51	18 09	20 24	22 44	1 03	3 07	4 50
19	6 17	7 41	9 17	11 12	13 26	15 47	18 05	20 20	22 40	0 59	3 03	4 46
20	6 13	7 37	9 13	11 08	13 23	15 43	18 01	20 16	22 36	0 55	2 59	4 42
21	6 09	7 33	9 09	11 04	13 19	15 39	17 57	20 12	22 32	0 51	2 55	4 38
22	6 05	7 29	9 05	11 00	13 15	15 35	17 53	20 08	22 28	0 47	2 51	4 34
23	6 01	7 26	9 01	10 56	13 11	15 31	17 49	20 04	22 24	0 43	2 47	4 30
24	5 57	7 22	8 57	10 53	13 07	15 27	17 45	20 00	22 20	0 39	2 43	4 27
25	5 53	7 18	8 53	10 49	13 03	15 23	17 41	19 56	22 16	0 35	2 39	4 23
26	5 49	7 14	8 49	10 45	12 59	15 19	17 37	19 53	22 12	0 31	2 35	4 19
27	5 45	7 10	8 46	10 41	12 55	15 15	17 33	19 49	22 08	0 27	2 31	4 15
28	5 41	7 06	8 42	10 37	12 51	15 11	17 29	19 45	22 04	0 23	2 28	4 11
29	5 37	7 02	8 38	10 33	12 47	15 07	17 25	19 41	22 00	0 19	2 24	4 07
30	5 34	6 58	8 34	10 29	12 44	15 03	17 21	19 37	21 56	0 15	2 20	4 03
31	5 30	6 54	8 30	10 25	12 40	14 59	17 17	19 33	21 52	0 11	2 16	3 59
अप्रै	5 26	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी अप्रैल भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

अप्रैल	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
ता.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
1	6 50	8 26	10 21	12 36	14 55	17 13	19 29	21 48	0 07	2 12	3 55	5 22
2	6 46	8 22	10 17	12 32	14 51	17 09	19 25	21 44	0 03	2 08	3 51	5 18
3	6 42	8 18	10 13	12 28	14 47	17 05	19 21	21 40	23 59	2 04	3 47	5 14
4	6 38	8 14	10 09	12 24	14 43	17 01	19 18	21 36	23 55	2 00	3 43	5 10
5	6 34	8 10	10 05	12 20	14 39	16 57	19 14	21 33	23 52	1 56	3 39	5 06
6	6 31	8 07	10 01	12 16	14 35	16 53	19 10	21 29	23 48	1 52	3 35	5 02
7	6 27	8 03	9 58	12 12	14 31	16 49	19 06	21 25	23 44	1 48	3 31	4 58
8	6 23	7 59	9 54	12 08	14 27	16 46	19 02	21 21	23 40	1 44	3 27	4 54
9	6 19	7 55	9 50	12 04	14 23	16 42	18 58	21 17	23 36	1 40	3 23	4 51
10	6 15	7 51	9 46	12 00	14 20	16 38	18 54	21 13	23 32	1 36	3 19	4 47
11	6 11	7 47	9 42	11 56	14 16	16 34	18 50	21 09	23 28	1 32	3 15	4 43
12	6 07	7 43	9 38	11 52	14 12	16 30	18 46	21 05	23 24	1 28	3 11	4 39
13	6 03	7 39	9 34	11 48	14 08	16 26	18 42	21 01	23 20	1 24	3 07	4 35
14	5 59	7 35	9 30	11 44	14 04	16 22	18 38	20 57	23 16	1 20	3 03	4 31
15	5 55	7 31	9 26	11 41	14 00	16 18	18 34	20 53	23 12	1 16	2 59	4 27
16	5 51	7 27	9 22	11 37	13 56	16 14	18 30	20 49	23 08	1 12	2 55	4 23
17	5 47	7 23	9 18	11 33	13 52	16 10	18 26	20 45	23 04	1 08	2 51	4 19
18	5 43	7 19	9 15	11 29	13 49	16 06	18 23	20 41	23 00	1 04	2 47	4 15
19	5 39	7 15	9 11	11 25	13 45	16 02	18 19	20 37	22 56	1 00	2 43	4 11
20	5 35	7 11	9 07	11 21	13 41	15 58	18 15	20 33	22 52	00 56	2 39	4 07
21	5 31	7 07	9 03	11 17	13 37	15 54	18 11	20 29	22 49	00 52	2 35	4 03
22	5 27	7 03	8 59	11 13	13 33	15 50	18 07	20 25	22 45	00 48	2 31	3 59
23	5 23	6 59	8 55	11 09	13 29	15 46	18 03	20 22	22 41	00 44	2 27	3 55
24	5 19	6 55	8 51	11 05	13 25	15 42	17 59	20 18	22 37	00 40	2 23	3 51
25	5 15	6 51	8 47	11 01	13 21	15 38	17 55	20 14	22 33	00 36	2 19	3 47
26	5 11	6 47	8 43	10 57	13 17	15 34	17 51	20 10	22 29	00 32	2 15	3 43
27	5 07	6 44	8 39	10 53	13 13	15 30	17 47	20 06	22 25	00 28	2 11	3 39
28	5 03	6 40	8 35	10 49	13 10	15 26	17 43	20 02	22 21	00 24	2 07	3 35
29	4 59	6 36	8 31	10 45	13 06	15 22	17 39	19 58	22 17	00 20	2 03	3 31
30	4 55	6 32	8 27	10 41	13 02	15 19	17 35	19 54	22 13	00 17	1 59	3 27
मई	4 51	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी मई भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली

दैनिक लग्न सारणी जून भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

दैनिक लग्न सारणी मई भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

ता.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.
1	6 28	8 23	10 37	12 58	15 15	17 31	19 50	22 09	00 13	1 56	3 23	4 47
2	6 24	8 19	10 33	12 54	15 11	17 27	19 46	22 05	00 09	1 52	3 19	4 44
3	6 20	8 15	10 29	12 50	15 7	17 24	19 42	22 01	00 05	1 48	3 16	4 40
4	6 16	8 11	10 25	12 46	15 3	17 20	19 38	21 57	00 01	1 44	3 12	4 36
5	6 12	8 07	10 21	12 42	14 59	17 16	19 34	21 53	23 57	1 40	3 08	4 32
6	6 08	8 03	10 17	12 38	14 55	17 12	19 30	21 49	23 53	1 36	3 04	4 28
7	6 04	7 59	10 13	12 34	14 51	17 08	19 26	21 45	23 49	1 32	3 00	4 24
8	6 00	7 55	10 09	12 30	14 47	17 04	19 22	21 41	23 45	1 28	2 56	4 20
9	5 56	7 51	10 05	12 26	14 43	17 00	19 18	21 37	23 41	1 24	2 52	4 16
10	5 52	7 47	10 01	12 22	14 39	16 56	19 14	21 33	23 37	1 20	2 48	4 12
11	5 48	7 44	9 57	12 18	14 35	16 52	19 10	21 29	23 33	1 16	2 44	4 08
12	5 44	7 40	9 53	12 14	14 31	16 48	19 06	21 25	23 29	1 12	2 40	4 04
13	5 40	7 36	9 49	12 10	14 28	16 44	19 02	21 21	23 25	1 08	2 36	4 00
14	5 36	7 32	9 45	12 06	14 24	16 40	18 58	21 17	23 21	1 04	2 32	3 56
15	5 32	7 28	9 41	12 02	14 20	16 36	18 54	21 13	23 17	1 00	2 28	3 52
16	5 28	7 24	9 37	11 58	14 16	16 32	18 50	21 09	23 13	24 56	2 24	3 48
17	5 24	7 20	9 33	11 54	14 12	16 28	18 46	21 05	23 09	24 52	2 20	3 44
18	5 20	7 16	9 29	11 50	14 08	16 24	18 42	21 01	23 05	24 48	2 16	3 40
19	5 16	7 12	9 25	11 46	14 04	16 20	18 38	20 57	23 01	24 44	2 12	3 36
20	5 12	7 08	9 21	11 42	14 00	16 16	18 34	20 53	22 57	24 40	2 09	3 32
21	5 08	7 04	9 17	11 38	13 56	16 12	18 30	20 49	22 53	24 36	2 05	3 28
22	5 04	7 00	9 13	11 34	13 52	16 08	18 26	20 45	22 49	24 32	2 01	3 24
23	5 00	6 56	9 09	11 30	13 48	16 04	18 22	20 41	22 45	24 28	1 57	3 20
24	4 56	6 52	9 05	11 26	13 44	16 01	18 19	20 38	22 42	24 25	1 53	3 16
25	4 52	6 48	9 01	11 22	13 40	15 57	18 15	20 34	22 38	24 21	1 49	3 12
26	4 48	6 44	8 58	11 18	13 36	15 53	18 11	20 30	22 34	24 17	1 45	3 08
27	4 44	6 40	8 54	11 14	13 32	15 49	18 07	20 26	22 30	24 13	1 41	3 04
28	4 40	6 36	8 50	11 10	13 28	15 45	18 03	20 22	22 26	24 09	1 37	3 01
29	4 36	6 32	8 46	11 06	13 24	15 41	17 59	20 18	22 22	24 05	1 33	2 57
30	4 33	6 28	8 42	11 02	13 20	15 37	17 55	20 14	22 18	24 01	1 29	2 53
31	4 29	6 24	8 38	10 58	13 16	15 33	17 51	20 10	22 14	23 57	1 25	2 49
जून	4 25	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी जून भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

ता.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.
1	6 20	8 35	10 54	13 12	15 29	17 47	20 06	22 10	23 53	1 21	2 45	4 21
2	6 16	8 31	10 50	13 08	15 25	17 43	20 02	22 06	23 49	1 17	2 41	4 17
3	6 12	8 27	10 46	13 04	15 21	17 39	19 58	22 02	23 45	1 13	2 37	4 13
4	6 08	8 23	10 42	13 00	15 17	17 35	19 54	21 58	23 41	1 09	2 33	4 09
5	6 04	8 19	10 38	12 56	15 13	17 31	19 50	21 54	23 37	1 05	2 29	4 05
6	6 00	8 15	10 34	12 52	15 09	17 27	19 46	21 50	23 33	1 01	2 25	4 01
7	5 57	8 11	10 31	12 48	15 05	17 23	19 42	21 46	23 29	24 57	2 21	3 58
8	5 53	8 07	10 27	12 44	15 01	17 19	19 39	21 43	23 26	24 53	2 17	3 54
9	5 49	8 03	10 23	12 40	14 58	17 16	19 35	21 39	23 22	24 49	2 13	3 50
10	5 45	7 59	10 19	12 37	14 54	17 12	19 31	21 35	23 18	24 46	2 09	3 46
11	5 41	7 55	10 15	12 33	14 50	17 08	19 27	21 31	23 14	24 42	2 05	3 42
12	5 37	7 51	10 11	12 29	14 46	17 04	19 23	21 27	23 10	24 38	2 02	3 38
13	5 33	7 47	10 07	12 25	14 42	17 00	19 19	21 23	23 06	24 34	1 58	3 34
14	5 29	7 43	10 03	12 21	14 38	16 56	19 15	21 19	23 02	24 30	1 54	3 30
15	5 25	7 39	9 59	12 17	14 34	16 52	19 11	21 15	22 58	24 26	1 50	3 26
16	5 21	7 35	9 55	12 13	14 30	16 48	19 07	21 11	22 54	24 22	1 46	3 22
17	5 17	7 31	9 51	12 09	14 26	16 44	19 03	21 07	22 50	24 18	1 42	3 18
18	5 13	7 27	9 47	12 05	14 22	16 40	18 59	21 03	22 46	24 14	1 38	3 14
19	5 09	7 23	9 43	12 02	14 18	16 36	18 55	20 59	22 42	24 10	1 34	3 10
20	5 05	7 19	9 39	11 58	14 14	16 32	18 51	20 55	22 38	24 06	1 30	3 06
21	5 01	7 15	9 36	11 54	14 10	16 28	18 47	20 51	22 34	24 02	1 26	3 02
22	4 57	7 11	9 32	11 50	14 06	16 24	18 43	20 47	22 30	23 58	1 22	2 58
23	4 53	7 07	9 28	11 46	14 02	16 20	18 39	20 43	22 26	23 54	1 18	2 54
24	4 49	7 03	9 24	11 42	13 58	16 16	18 36	20 39	22 22	23 51	1 15	2 50
25	4 46	6 59	9 20	11 38	13 54	16 13	18 32	20 35	22 18	23 47	1 11	2 46
26	4 42	6 55	9 16	11 34	13 50	16 09	18 28	20 31	22 14	23 43	1 07	2 43
27	4 38	6 51	9 12	11 30	13 46	16 05	18 24	20 27	22 10	23 39	1 03	2 39
28	4 34	6 47	9 09	11 26	13 43	16 01	18 20	20 23	22 06	23 35	24 59	2 35
29	4 30	6 43	9 05	11 23	13 39	15 57	18 16	20 20	22 02	23 31	24 55	2 31
30	4 26	6 39	9 01	11 19	13 35	15 54	18 13	20 16	21 59	23 28	24 52	2 28
जुला	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी जुलाई भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

ता.	मिथुन घं. मिं.	कर्क घं. मिं.	सिंह घं. मिं.	कन्या घं. मिं.	तुला घं. मिं.	वृश्चिक घं. मिं.	धनु घं. मिं.	मकर घं. मिं.	कुम्भ घं. मिं.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.
1	6 35	8 57	11 15	13 31	15 50	18 09	20 13	21 56	23 24	24 48	2 24	4 18
2	6 31	8 53	11 11	13 27	15 46	18 05	20 9	21 52	23 20	24 44	2 20	4 14
3	6 27	8 49	11 07	13 23	15 42	18 01	20 5	21 48	23 16	24 40	2 16	4 10
4	6 24	8 46	11 04	13 19	15 38	17 57	20 01	21 44	23 12	24 36	2 12	4 06
5	6 20	8 42	11 00	13 15	15 34	17 53	19 57	21 40	23 08	24 32	2 08	4 02
6	6 16	8 38	10 56	13 11	15 30	17 49	19 53	21 36	23 04	24 28	2 04	3 58
7	6 12	8 34	10 52	13 07	15 26	17 46	19 49	21 32	23 00	24 24	2 00	3 55
8	6 09	8 30	10 48	13 04	15 22	17 42	19 46	21 28	22 56	24 21	1 56	3 51
9	6 05	8 26	10 44	13 00	15 18	17 38	19 42	21 24	22 53	24 17	1 53	3 47
10	6 01	8 22	10 40	12 56	15 15	17 34	19 38	21 21	22 49	24 13	1 49	3 43
11	5 57	8 18	10 36	12 52	15 11	17 30	19 34	21 17	22 45	24 09	1 45	3 39
12	5 53	8 14	10 32	12 48	15 07	17 26	19 30	21 13	22 41	24 05	1 41	3 36
13	5 49	8 10	10 28	12 45	15 03	17 22	19 26	21 09	22 37	24 01	1 37	3 32
14	5 45	8 06	10 25	12 41	14 59	17 18	19 22	21 05	22 34	23 57	1 33	3 28
15	5 41	8 03	10 21	12 37	14 55	17 14	19 19	21 02	22 30	23 54	1 30	3 24
16	5 37	7 59	10 17	12 33	14 51	17 10	19 15	20 58	22 26	23 50	1 26	3 20
17	5 34	7 55	10 13	12 29	14 47	17 06	19 11	20 54	22 22	23 46	1 22	3 16
18	5 30	7 51	10 09	12 25	14 43	17 02	19 07	20 50	22 18	23 42	1 18	3 12
19	5 26	7 47	10 05	12 21	14 40	16 58	19 03	20 46	22 14	23 38	1 14	3 08
20	5 22	7 43	10 02	12 17	14 36	16 54	18 59	20 42	22 10	23 34	1 10	3 04
21	5 18	7 39	9 58	12 13	14 32	16 51	18 55	20 38	22 06	23 30	1 06	3 00
22	5 15	7 35	9 54	12 09	14 28	16 47	18 51	20 34	22 02	23 26	1 02	2 56
23	5 11	7 32	9 50	12 05	14 24	16 43	18 47	20 30	21 58	23 22	2458	2 53
24	5 07	7 28	9 46	12 01	14 20	16 39	18 43	20 26	21 55	23 18	2454	2 49
25	5 03	7 24	9 42	11 58	14 16	16 35	18 40	20 23	21 51	23 14	2450	2 45
26	5 00	7 20	9 38	11 54	14 12	16 31	18 36	20 19	21 47	23 10	2446	2 41
27	4 56	7 16	9 34	11 50	14 08	16 27	18 32	20 15	21 43	23 06	2442	2 37
28	4 52	7 12	9 30	11 46	14 04	16 23	18 28	20 11	21 39	23 02	2438	2 34
29	4 48	7 08	9 27	11 42	14 00	16 19	18 24	20 07	21 35	22 58	2435	2 30
30	4 44	7 04	9 23	11 38	13 56	16 15	18 20	20 03	21 31	22 54	2431	2 26
31	4 40	7 00	9 19	11 34	13 53	1612	18 16	19 59	21 27	22 50	2427	2 22
अग	4 36											

दैनिक लग्न सारणी अगस्त भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

ता.	कर्क घं. मिं.	सिंह घं. मिं.	कन्या घं. मिं.	तुला घं. मिं.	वृश्चिक घं. मिं.	धनु घं. मिं.	मकर घं. मिं.	कुम्भ घं. मिं.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.	मिथुन घं. मिं.
1	6 56	9 15	11 31	13 49	16 08	18 12	19 55	21 23	22 47	24 23	2 18	4 32
2	6 52	9 11	11 27	13 45	16 05	18 09	19 51	21 19	22 43	24 19	2 14	4 28
3	6 48	9 07	11 23	13 42	16 01	18 05	19 47	21 15	22 39	24 15	2 10	4 24
4	6 44	9 03	11 19	13 38	15 57	18 01	19 44	21 11	22 35	24 11	2 06	4 20
5	6 40	9 00	11 15	13 34	15 53	17 57	19 40	21 08	22 31	24 08	2 02	4 16
6	6 36	8 56	11 12	13 30	15 49	17 53	19 36	21 04	22 28	24 04	1 58	4 13
7	6 32	8 52	11 08	13 26	15 45	17 49	19 32	21 00	22 24	24 00	1 54	4 09
8	6 29	8 48	11 04	13 22	15 41	17 45	19 28	20 56	22 20	23 56	1 50	4 05
9	6 25	8 44	11 00	13 18	15 37	17 42	19 24	20 52	22 16	23 52	1 46	4 01
10	6 21	8 41	10 56	13 14	15 33	17 38	19 21	20 48	22 12	23 48	1 43	3 57
11	6 17	8 37	10 53	13 10	15 29	17 34	19 17	20 44	22 08	23 44	1 39	3 54
12	6 13	8 33	10 49	13 06	15 25	17 30	19 13	20 40	22 04	23 40	1 35	3 50
13	6 09	8 29	10 45	13 02	15 21	17 26	19 09	20 36	22 00	23 36	1 32	3 46
14	6 05	8 25	10 41	12 59	15 17	17 22	19 05	20 33	21 56	23 32	1 28	3 42
15	6 01	8 21	10 37	12 55	15 14	17 18	19 01	20 29	21 53	23 29	1 24	3 38
16	5 57	8 17	10 33	12 51	15 10	17 14	18 57	20 25	21 49	23 25	1 20	3 34
17	5 54	8 13	10 29	12 47	15 06	17 10	18 53	20 21	21 45	23 21	1 16	3 30
18	5 50	8 09	10 25	12 43	15 02	17 06	18 49	20 17	21 41	23 17	1 12	3 26
19	5 46	8 05	10 21	12 39	14 58	17 02	18 45	2013	21 37	23 13	1 08	3 22
20	5 42	8 02	10 17	12 35	14 54	16 58	18 41	20 09	21 33	23 09	1 04	3 18
21	5 39	7 58	10 13	12 31	14 50	16 54	18 37	20 05	21 29	23 05	1 00	3 14
22	5 35	7 54	10 09	12 27	14 46	16 50	18 33	20 01	21 25	23 01	0 56	3 10
23	5 31	7 50	10 05	12 23	14 42	16 46	18 21	19 57	21 21	22 57	0 52	3 06
24	5 27	7 46	10 02	12 19	14 38	16 42	18 25	19 53	21 17	22 53	0 48	3 02
25	5 23	7 42	9 58	12 15	14 34	16 38	18 21	19 49	21 13	22 49	0 44	2 58
26	5 19	7 38	9 45	12 11	14 30	16 34	18 17	19 45	21 09	22 45	0 41	2 54
27	5 15	7 34	9 50	12 08	14 27	16 31	18 14	19 42	21 06	22 42	0 37	2 50
28	5 11	7 30	9 46	12 04	14 23	16 27	18 10	19 38	21 02	22 38	0 33	2 46
29	5 07	7 26	9 42	12 00	14 19	16 23	18 06	19 34	20 58	22 34	0 29	2 42
30	5 03	7 22	9 38	11 56	14 15	16 19	18 02	19 30	20 54	22 30	0 25	2 38
31	4 59	7 18	9 34	11 52	14 11	16 15	17 58	19 26	20 50	22 26	0 21	2 34
सितं	4 55											

दैनिक लग्न सारणी **सितंबर** भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

दिनांक	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	7 14	9 30	11 48	14 07	16 11	17 54	19 22	20 46	22 22	0 17	2 31	4 52
2	7 10	9 26	11 44	14 03	16 07	17 50	19 18	20 42	22 18	0 13	2 27	4 48
3	7 06	9 22	11 40	13 59	16 03	17 46	19 14	20 38	22 14	0 09	2 23	4 44
4	7 02	9 18	11 36	13 55	15 59	17 42	19 10	20 34	22 10	0 05	2 19	4 40
5	6 58	9 14	11 32	13 51	15 55	17 38	19 06	20 30	22 06	0 01	2 15	4 36
6	6 54	9 10	11 28	13 47	15 51	17 34	19 02	20 26	22 02	23 57	2 11	4 32
7	6 50	9 06	11 24	13 43	15 47	17 30	18 58	20 22	21 58	23 53	2 07	4 28
8	6 46	9 02	11 20	13 39	15 43	17 26	18 54	20 18	21 54	23 49	2 03	4 24
9	6 42	8 58	11 16	13 35	15 39	17 22	18 50	20 14	21 50	23 45	1 59	4 20
10	6 38	8 54	11 12	13 31	15 35	17 18	18 46	20 10	21 46	23 41	1 55	4 16
11	6 34	8 50	11 08	13 27	15 31	17 14	18 42	20 06	21 42	23 37	1 51	4 12
12	6 30	8 46	11 04	13 23	15 27	17 10	18 38	20 02	21 38	23 33	1 47	4 08
13	6 26	8 42	11 00	13 19	15 23	17 06	18 34	19 58	21 34	23 29	1 43	4 04
14	6 22	8 38	10 56	13 15	15 19	17 02	18 30	19 54	21 30	23 25	1 39	4 00
15	6 18	8 34	10 52	13 11	15 15	16 58	18 26	19 50	21 26	23 21	1 35	3 56
16	6 14	8 30	10 48	13 07	15 11	16 54	18 22	19 46	21 22	23 17	1 31	3 52
17	6 10	8 26	10 44	13 03	15 07	16 50	18 18	19 42	21 18	23 13	1 27	3 48
18	6 06	8 22	10 40	12 59	15 03	16 46	18 14	19 38	21 14	23 09	1 23	3 44
19	6 02	8 18	10 36	12 55	14 59	16 42	18 10	19 34	21 10	23 05	1 19	3 40
20	5 58	8 14	10 32	12 51	14 55	16 38	18 06	19 30	21 06	23 01	1 15	3 36
21	5 54	8 10	10 28	12 47	14 51	16 34	18 02	19 26	21 02	22 57	1 11	3 32
22	5 50	8 06	10 24	12 43	14 47	16 30	17 58	19 22	20 58	22 53	1 07	3 28
23	5 46	8 02	10 20	12 39	14 43	16 26	17 54	19 18	20 54	22 49	1 03	3 24
24	5 42	7 58	10 16	12 35	14 39	16 22	17 50	19 14	20 50	22 45	0 59	3 20
25	5 38	7 54	10 12	12 31	14 35	16 18	17 46	19 10	20 46	22 41	0 55	3 16
26	5 34	7 50	10 08	12 27	14 31	16 14	17 42	19 06	20 42	22 37	0 51	3 12
27	5 30	7 46	10 04	12 23	14 27	16 10	17 38	19 02	20 38	22 33	0 47	3 08
28	5 26	7 42	10 00	12 19	14 23	16 06	17 34	18 58	20 34	22 29	0 43	3 04
29	5 22	7 38	9 56	12 15	14 19	16 02	17 30	18 54	20 30	22 25	0 39	3 00
30	5 18	7 34	9 53	12 12	14 16	15 59	17 27	18 51	20 27	22 22	0 36	2 57
अक्टू.	5 15	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी **अक्टूबर** भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

दिनांक	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	7 30	9 49	12 08	14 12	15 55	17 23	18 47	20 23	22 18	0 32	2 53	5 11
2	7 26	9 45	12 04	14 08	15 51	17 19	18 43	20 19	22 14	0 28	2 49	5 07
3	7 23	9 42	12 00	14 04	15 47	17 15	18 39	20 15	22 10	0 24	2 45	5 03
4	7 19	9 38	11 56	14 00	15 43	17 11	18 35	20 11	22 06	0 20	2 41	4 59
5	7 15	9 34	11 52	13 56	15 39	17 07	18 31	20 07	22 02	0 16	2 37	4 55
6	7 11	9 30	11 48	13 52	15 35	17 03	18 27	20 03	21 58	0 12	2 33	4 51
7	7 07	9 26	11 44	13 48	15 31	16 59	18 23	19 59	21 54	0 08	2 29	4 47
8	7 03	9 22	11 40	13 44	15 27	16 55	18 19	19 55	21 50	0 04	2 25	4 43
9	6 59	9 18	11 36	13 40	15 23	16 51	18 15	19 51	21 46	24 00	2 21	4 39
10	6 55	9 14	11 32	13 36	15 19	16 47	18 11	19 47	21 42	23 56	2 17	4 35
11	6 51	9 10	11 28	13 32	15 15	16 43	18 07	19 43	21 38	23 52	2 13	4 31
12	6 47	9 06	11 24	13 28	15 11	16 39	18 03	19 39	21 34	23 48	2 09	4 27
13	6 43	9 02	11 20	13 24	15 07	16 35	17 59	19 35	21 30	23 44	2 05	4 23
14	6 39	8 58	11 16	13 20	15 03	16 31	17 55	19 31	21 26	23 40	2 01	4 19
15	6 35	8 54	11 12	13 16	14 59	16 27	17 51	19 27	21 22	23 36	1 57	4 15
16	6 31	8 50	11 08	13 12	14 55	16 23	17 47	19 23	21 18	23 32	1 53	4 11
17	6 27	8 46	11 04	13 08	14 51	16 19	17 43	19 19	21 14	23 28	1 49	4 07
18	6 23	8 42	11 00	13 04	14 47	16 15	17 39	19 15	21 10	23 24	1 45	4 03
19	6 19	8 38	10 56	13 00	14 43	16 11	17 35	19 11	21 06	23 20	1 41	3 59
20	6 15	8 34	10 52	12 56	14 39	16 07	17 31	19 07	21 02	23 16	1 37	3 55
21	6 11	8 30	10 48	12 52	14 35	16 03	17 27	19 03	20 58	23 12	1 33	3 51
22	6 07	8 26	10 44	12 48	14 31	15 59	17 23	18 59	20 54	23 08	1 29	3 47
23	6 03	8 22	10 40	12 44	14 27	15 55	17 19	18 55	20 50	23 04	1 25	3 43
24	5 59	8 18	10 36	12 40	14 23	15 51	17 15	18 51	20 46	23 00	1 21	3 39
25	5 56	8 15	10 33	12 37	14 20	15 48	17 12	18 48	20 43	22 57	1 17	3 36
26	5 52	8 11	10 29	12 33	14 16	15 44	17 08	18 44	20 39	22 53	1 13	3 32
27	5 48	8 07	10 25	12 29	14 12	15 40	17 04	18 40	20 35	22 49	1 09	3 28
28	5 44	8 03	10 21	12 25	14 08	15 36	17 00	18 36	20 31	22 45	1 06	3 24
29	5 40	7 59	10 17	12 21	14 04	15 32	16 56	18 32	20 27	22 41	1 02	3 20
30	5 36	7 55	10 13	12 17	14 00	15 28	16 52	18 28	20 23	22 37	24 58	3 16
31	5 33	7 51	10 09	12 13	13 56	15 24	16 48	18 24	20 19	22 33	24 54	3 12
नवं.	5 29	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी नवंबर भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

नवंबर	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.
1	7 47	10 6	12 10	13 53	15 21	16 44	18 20	20 15	22 29	0 50	3 08	5 25
2	7 43	10 2	12 06	13 49	15 17	16 40	18 16	20 11	22 25	0 46	3 04	5 21
3	7 39	9 58	12 02	13 45	15 13	16 37	18 13	20 08	22 22	0 43	3 00	5 17
4	7 35	9 54	11 58	13 41	15 09	16 33	18 09	20 04	22 18	0 39	2 56	5 13
5	7 31	9 50	11 54	13 37	15 05	16 29	18 05	20 00	22 15	0 35	2 52	5 09
6	7 27	9 46	11 50	13 33	15 01	16 25	18 01	19 56	22 10	0 31	2 48	5 05
7	7 24	9 42	11 46	13 29	14 57	16 21	17 57	19 52	22 06	0 27	2 45	5 01
8	7 20	9 38	11 42	13 25	14 53	16 17	17 53	19 48	22 02	0 23	2 41	4 57
9	7 16	9 34	11 38	13 21	14 49	16 13	17 49	19 44	21 58	0 19	2 37	4 53
10	7 12	9 30	11 34	13 17	14 45	16 09	17 45	19 40	21 54	0 15	2 33	4 49
11	7 08	9 26	11 30	13 13	14 41	16 05	17 41	19 36	21 50	0 11	2 29	4 45
12	7 04	9 22	11 26	13 09	14 37	16 01	17 37	19 32	21 46	0 07	2 25	4 41
13	7 00	9 18	11 22	13 05	14 33	15 57	17 33	19 28	21 42	0 03	2 21	4 37
14	6 56	9 14	11 28	13 01	14 29	15 53	17 29	19 24	21 38	23 59	2 17	4 33
15	6 52	9 10	11 14	12 57	14 25	15 49	17 25	19 20	21 34	23 55	2 13	4 29
16	6 48	9 06	11 10	12 53	14 21	15 45	17 21	19 16	21 30	23 51	2 09	4 25
17	6 43	9 02	11 06	12 49	14 17	15 41	17 17	19 12	21 26	23 47	2 05	4 21
18	6 39	8 58	11 02	12 45	14 13	15 37	17 23	19 08	21 22	23 43	2 01	4 17
19	6 35	8 54	10 58	12 41	14 09	15 33	17 09	19 04	21 18	23 39	1 57	4 13
20	6 31	8 50	10 54	12 37	14 05	15 29	17 05	19 00	21 14	23 35	1 53	4 09
21	6 27	8 46	10 50	12 33	14 01	15 25	17 01	18 56	21 10	23 31	1 49	4 05
22	6 23	8 43	10 47	12 30	13 58	15 22	16 58	18 53	21 07	23 28	1 46	4 02
23	6 20	8 39	10 43	12 26	13 54	15 18	16 54	18 49	21 03	23 24	1 42	3 58
24	6 16	8 35	10 39	12 22	13 50	15 14	16 50	18 45	20 59	23 20	1 38	3 54
25	6 12	8 31	10 35	12 18	13 46	15 10	16 46	18 41	20 55	23 16	1 34	3 50
26	6 08	8 28	10 31	12 14	13 42	15 06	16 42	18 37	20 51	23 12	1 30	3 46
27	6 04	8 23	10 27	12 10	13 38	15 02	16 38	18 33	20 47	23 08	1 26	3 42
28	6 00	8 19	10 23	12 06	13 34	14 58	16 34	18 29	20 43	23 04	1 22	3 38
29	5 56	8 16	10 20	12 03	13 31	14 55	16 31	18 26	20 40	23 01	1 19	3 35
30	5 53	8 12	10 16	11 59	13 27	14 51	16 27	18 22	20 36	22 57	1 15	3 31
दिसं.	5 49											

दैनिक लग्न सारणी दिसंबर भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

दिसंबर	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.
1	8 08	10 12	11 55	13 23	14 47	16 23	18 18	20 32	22 53	1 11	3 27	5 45
2	8 04	10 08	11 51	13 19	14 43	16 19	18 14	20 28	22 49	1 07	3 23	5 41
3	8 00	10 04	11 47	13 15	14 39	16 15	18 10	20 24	22 45	1 03	3 19	5 37
4	7 56	10 00	11 43	13 11	14 35	16 11	18 06	20 20	22 41	0 59	3 15	5 33
5	7 52	9 56	11 39	13 07	14 31	16 07	18 02	20 16	22 37	0 55	3 11	5 29
6	7 48	9 52	11 35	13 03	14 27	16 03	17 58	20 12	22 33	0 51	3 07	5 25
7	7 44	9 48	11 31	12 59	14 23	15 59	17 54	20 08	22 29	0 47	3 03	5 21
8	7 40	9 44	11 27	12 55	14 19	15 55	17 50	20 04	22 25	0 43	2 59	5 17
9	7 36	9 40	11 23	12 51	14 15	15 51	17 46	20 00	22 21	0 39	2 55	5 13
10	7 33	9 37	11 20	12 48	14 12	15 48	17 43	19 57	22 18	0 36	2 52	5 10
11	7 29	9 33	11 16	12 44	14 08	15 44	17 39	19 53	22 14	0 32	2 48	5 06
12	7 25	9 29	11 12	12 40	14 04	15 40	17 35	19 49	22 10	0 28	2 44	5 02
13	7 21	9 25	11 08	12 36	14 01	15 36	17 31	19 45	22 06	0 24	2 40	4 58
14	7 17	9 21	11 04	12 32	13 56	15 32	17 27	19 41	22 02	0 20	2 36	4 54
15	7 13	9 17	11 00	12 28	13 52	15 28	17 23	19 37	21 58	0 16	2 32	4 50
16	7 09	9 13	10 56	12 24	13 48	15 24	17 19	19 33	21 54	0 12	2 28	4 46
17	7 05	9 09	10 52	12 21	13 44	15 20	17 15	19 29	21 50	0 08	2 24	4 42
18	7 11	9 05	10 49	12 17	13 41	15 16	17 11	19 25	21 46	0 04	2 20	4 38
19	6 58	9 01	10 45	12 13	13 36	15 12	17 07	19 21	21 42	0 00	2 16	4 34
20	6 53	8 57	10 41	12 09	13 32	15 08	17 03	19 17	21 38	23 56	2 12	4 30
21	6 49	8 53	10 37	12 05	13 28	15 04	16 59	19 13	21 34	23 52	2 09	4 26
22	6 45	8 49	10 33	12 01	13 24	15 00	16 55	19 10	21 30	23 49	2 05	4 22
23	6 41	8 45	10 29	11 57	13 20	14 56	16 51	19 06	21 26	23 45	2 01	4 18
24	6 37	8 42	10 25	11 53	13 16	14 52	16 48	19 02	21 23	23 41	1 57	4 14
25	6 33	8 38	10 21	11 49	13 12	14 48	16 44	18 58	21 19	23 37	1 53	4 10
26	6 30	8 34	10 17	11 45	13 09	14 44	16 40	18 54	21 15	23 33	1 49	4 06
27	6 26	8 30	10 13	11 41	13 05	14 41	16 36	18 50	21 11	23 29	1 45	4 03
28	6 22	8 26	10 09	11 37	13 01	14 37	16 32	18 46	21 07	23 25	1 41	3 59
29	6 18	8 22	10 05	11 33	12 57	14 33	16 28	18 42	21 03	23 21	1 37	3 55
30	6 14	8 18	10 01	11 29	12 53	14 29	16 24	18 38	20 59	23 17	1 33	3 51
31	6 10	8 14	9 57	11 25	12 49	14 25	16 20	18 34	20 55	23 13	1 29	3 47
जन.	6 06											

अनुकूल कार्य सिद्धि के लिए होरा ज्ञान चक्र (मुहूर्त्त) और फल ज्ञान

सर्वकार्य सिद्धि के लिए होरा मुहूर्त्त श्रेयस्कर है। होरा मुहूर्त्त के अनुसार कार्यारम्भ करके प्रत्येक मनुष्य अशुभ समय में से होरा के अनुसार अपना कार्य सिद्ध कर सकता है। सात ग्रहों के सात होरे हैं। **सूर्य की होरा**-टेंडर देने व नौकरी व राजकार्य के चार्ज लेने-देने के लिए अच्छी होती है। **चंद्रमा की होरा**–सब कार्यों के लिए अच्छी होती है। **मंगल की होरा**-युद्ध, यात्रा, कर्ज देने, सभा-सोसाईटी में आना-जाना और मुकदमा के कार्यों में अच्छी होती है। **बुध की होरा**–में विद्यारम्भ, कोष संग्रह करना, नवीन व्यापार, नवीन लेख, पुस्तक प्रकाशन, प्रार्थना पत्र प्रस्तुत करने के लिए अच्छी होती है। **गुरु की होरा**–विवाह सम्बन्धी कार्यक्रम, बड़ों से मिलना, कोषसंग्रह, नवीन काव्य लेखन आदि के लिए शुभ है। **शुक्र की होरा**–यात्रा, भूषण, नवीन वस्त्र धारण, प्रवास, सौभाग्यवर्धक कार्य के लिए शुभ है। **शनि की होरा**–भूमि, मकान की नींव, नूतन गृहारम्भ, मशीनरी, मिल्स कार्यारम्भ समस्त स्थिर कार्य शुभ होते हैं।

प्रत्येक होरा १ घण्टे का होता है। जिस दिन जो 'वार' होता है, उस वार के आरम्भ (अर्थात् सूर्योदय के समय) से १ घण्टा तक उसी वार को होरा रहता है। इसके बाद १ घण्टे का दूसरा होरा उस वार से छठे वार का होता है। इसी प्रकार दूसरे होरे के वार से छठे वार का होरा तीसरे घण्टे तक रहता है। इस क्रम से २४ घण्टे में २४ होरे बीतने पर अगले वार के सूर्योदय समय उसी (अगले) वार का होरा आ जाता है। जिस कार्य की सिद्धि के लिए ऊपर जो होरा उपयुक्त लिखी है, उसके अनुसार ही उस होरा में (१ घण्टे) में वह कार्य करेंगे तो अवश्य सफलता मिलेगी। ऋषियों ने होरा को 'क्षणवार' कहा है। वार से भी क्षण वार में प्रधानता मानी गई है। इसलिए यदि वार और 'क्षणवार' दोनों अनुकूल हों, तभी किसी कार्य को करना चाहिए। आवश्यकता में, यदि वार अनुकूल नहीं हो तो 'क्षणवार' अर्थात् होरा की अनुकूलता के अनुसार कार्य करना चाहिए। **जैसे**–पश्चिम की यात्रा रविवार में करने की आवश्यकता हो तो वार के अनुसार दिक्शूल पड़ेगा। इसलिए जिस समय सोम की होरा (क्षणवार) हो उस समय रविवार में पश्चिम की यात्रा की जा सकती है। नीचे चक्र के अनुसार रविवार को सोम की होरा सूर्योदय समय से ४, ११, १८ घण्टे बाद के एक-एक घण्टे तक आप सोम की होरा में जा सकते हैं। इसी प्रकार अन्य दिनों के होराओं के विषय में भी समझ लें।

वार	होरा १	होरा २	होरा ३	होरा ४	होरा ५	होरा ६	होरा ७	होरा ८	होरा ९	होरा १०	होरा ११	होरा १२	होरा १३	होरा १४	होरा १५	होरा १६	होरा १७	होरा १८	होरा १९	होरा २०	होरा २१	होरा २२	होरा २३	होरा २४
रवि.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध
सोम.	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु
मंगल	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र
बुध	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि
गुरु	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि
शुक्र	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम
शनि	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल

॥ चौघड़ियां मुहूर्त ॥

दिन की चौघड़ियां

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि	समय
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	६.००
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	७.३०
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	९.००
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	१०.३०
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	१२.००
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	१३.३०
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	१५.००
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	१६.३०

॥चौघड़ियां मुहूर्त ॥

रात्रि की चौघड़ियां

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि	समय
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	१८.००
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	१९.३०
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	२१.००
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	२२.३०
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	२४.००
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	२५.३०
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	२७.००
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	२८.३०

शीघ्रता में कोई मुहूर्त न मिलता हो तो, तथा अचानक यात्रा करनी पड़ी तो, उस समय चौघड़ियां मुहूर्त का उपयोग करना श्रेयस्कर रहता है। दिन और रात्रि के आठ-आठ बराबर भाग करने से एक-एक चौघड़ियां मुहूर्त होता है। जब दिन और रात्रि बराबर अर्थात् १२ घण्टे का दिन तथा १२ घण्टे की रात्रि हो, तब एक चौघड़ियां मुहूर्त १½ घण्टे अर्थात् पौने चार घटी का होगा। इसलिए इसका नाम चौघड़ियां मुहूर्त पड़ा। रविवार, चंद्रवार आदि वार सूर्योदय से प्रारम्भ होकर अगले दिन सूर्योदय तक रहता है। प्रत्येक वार के सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय उस वार का दिनमान तथा सूर्यास्त से अग्रिम सूर्योदय तक का समय 'रात्रिमान' होता है। दिनमान और रात्रिमान में सू. उ. तथा सू. अ. के अन्तर आने के कारण घटते-बढ़ते रहते है। परन्तु 'वार सदैव' २४ घण्टा अर्थात् ६० घटी का होता है। रात्रिमान जानने के लिए पंचांगदिवाकर में दिए गए दिनमान को ६० घटी में घटा दें। जिस दिन यात्रा करनी हो उस दिन के दिनमान के अष्टष्मांश घटी पल का घण्टा मिन्ट बनाकर उस दिन के सूर्योदय समय में जोड़ते जाएँ तो क्रमशः उस दिन की आठों चौघड़ियों का समय ज्ञात हो जाएगा। इसी प्रकार जिस दिन रात्रि में यात्रा करनी हो तो उस दिन के रात्रिमान के अष्टमांश घटी-पल का घण्टा मिन्ट बनाकर सूर्यास्त समय में जोड़ते जाने से क्रमाशः रात्रि की प्रत्येक चौघड़ियों का समय ज्ञात हो जाएगा तथा शुभाशुभ जानने के लिए प्रत्येक वार के नीचे तथा चौघड़ियां के सामने तालिका में देखें। **टिप्पणी**–सदैव चर, लाभ, अमृत एवं शुभ चौघड़ियों में ही शुभ कार्य का आरम्भ करना श्रेष्ठ रहता है।

किसी ग्रह के अंश कलादि स्पष्ट के द्वारा नक्षत्र-पाद (चरण) आरम्भ ज्ञात करना (प्रारम्भ काल)

सूर्य चन्द्रादि ग्रह अश्विनी आदि २७ नक्षत्रों के क्रांतिवृत्त (Zodiac = 360°) को पूरा परिभ्रमण करने में अलग-अलग समय लेते हैं। ३६० अंश को२७ द्वारा भाग देने से प्रति नक्षत्र का मध्यम मान १३ अंश २० कला बनता है तथा एक नक्षत्र के चार चरण (पाद) होने से प्रत्येक नक्षत्र पाद को भोग्य मान ३°-२०' (अंश कला) होगा (१३°-२०') ÷ 4 = 3°-20' शून्य से प्रारम्भ होकर प्रत्येक ग्रह इसी भान्ति क्रमानुसार नक्षत्र चरण राशि आदि परिवर्तन करता है। अधिक व्याख्या हेतु देखें ज्योतिष तत्त्व।

रा. अं. क.	नक्षत्रपाद राशि	रा. अं. क.	नक्षत्रपाद राशि	रा. अं. क.	नक्षत्रपाद राशि
०-००-००	अश्विनी (१) मेषे	४-००-००	मघा (१) सिंहे	८-००-००	मूल (१) धनु
०-०३-२०	.. (२) ..	४-०३-२०	.. (२) ..	८-०३-२०	.. (२) ..
०-०६-४०	.. (३) ..	४-०६-४०	.. (३) ..	८-०६-४०	.. (३) ..
०-१०-००	.. (४) ..	४-१०-००	.. (४) ..	८-१०-००	.. (४) ..
०-१३-२०	भरणी (१) ..	४-१३-२०	पू.फा. (१) ..	८-१३-२०	पू.षा. (१) ..
०-१६-४०	.. (२) ..	४-१६-४०	.. (२) ..	८-१६-४०	.. (२) ..
०-२०-००	.. (३) ..	४-२०-००	.. (३) ..	८-२०-००	.. (३) ..
०-२३-२०	.. (४) ..	४-२३-२०	.. (४) ..	८-२३-२०	.. (४) ..
०-२६-४०	कृतिका (१) मेषें	४-२६-४०	उ.फा. (१) ..	८-२६-४०	उ.षा. (१) ..
१-००-००	.. (२) वृषे	५-००-००	.. (२) कन्या	९-००-००	उषा (२) मक
१-०३-२०	.. (३) ..	५-०३-२०	.. (३) ..	९-०३-२०	.. (३) ..
१-०६-४०	.. (४) ..	५-०६-४०	.. (४) ..	९-०६-४०	.. (४) ..
१-१०-००	रोहिणी (१) ..	५-१०-००	हस्ते (१) ..	९-१०-००	श्रव (१) ..
१-१३-२०	.. (२) ..	५-१३-२०	.. (२) ..	९-१३-२०	.. (२) ..
१-१६-४०	.. (३) ..	५-१६-४०	.. (३) ..	९-१६-४०	.. (३) ..
१-२०-००	.. (४) ..	५-२०-००	.. (४) ..	९-२०-००	.. (४) ..
१-२३-२०	मृगशिर (१) ..	५-२३-२०	चित्रा (१) ..	९-२३-२०	धनि (१) ..
१-२६-४०	.. (२) ..	५-२६-४०	.. (२) ..	९-२६-४०	.. (२) ..
२-००-००	.. (३) मिथुन	६-००-००	चित्रा (३) तुला	१०-००-००	.. (३) कुंभे
२-०३-२०	.. (४) ..	६-०३-२०	.. (४) ..	१०-०३-२०	.. (४) ..
२-०६-४०	आर्द्रा (१) ..	६-०६-४०	स्वाती (१) ..	१०-०६-४०	शतभिषा (१)..
२-१०-००	.. (२) ..	६-१०-००	.. (२) ..	१०-१०-००	.. (२) ..
२-१३-२०	.. (३) ..	६-१३-२०	.. (३) ..	१०-१३-२०	.. (३) ..
२-१६-४०	.. (४) ..	६-१६-४०	.. (४) ..	१०-१६-४०	.. (४) ..
२-२०-००	पुनर्वसु (१) ..	६-२०-००	विशाखा (१) ..	१०-२०-००	पूभा (१) ..
२-२३-२०	.. (२) ..	६-२३-२०	.. (२) ..	१०-२३-२०	.. (२) ..
२-२६-४०	.. (३) ..	६-२६-४०	.. (३) ..	१०-२६-४०	.. (३) ..
३-००-००	पुनर्वसु (४) कर्के	७-००-००	.. (४) वृश्चिके	११-००-००	पूभा (४) मीने
३-०३-२०	पुष्ये (१) ..	७-०३-२०	अनुराधा (१) ..	११-०३-२०	उ.भा. (१) ..
३-०६-४०	.. (२) ..	७-०६-४०	.. (२) ..	११-०६-४०	.. (२) ..
३-१०-००	.. (३) ..	७-१०-००	.. (३) ..	११-१०-००	.. (३) ..
३-१३-२०	.. (४) ..	७-१३-२०	.. (४) ..	११-१३-२०	उ.भा. (४) ..
३-१६-४०	आश्ले (१) ..	७-१६-४०	ज्ये. (१) ..	११-१६-४०	रेवती (१) ..
३-२०-००	.. (२) ..	७-२०-००	.. (२) ..	११-२०-००	.. (२) ..
३-२३-२०	.. (३) ..	७-२३-२०	.. (३) ..	११-२३-२०	.. (३) ..
३-२६-४०	.. (४) ..	७-२६-४०	.. (४) ..	११-२६-४०	रेवती (४) ..
				००-००-००	अश्वि (१) मेष

दैनिक लग्न सारणी में वार्षिक संस्कार

आगामी पृष्ठों में दी गई दैनिक लग्न सारणी 31°-19′ अक्षांश जालन्धर, एवं 24°-00′ अयनांश पर आधारित है। इसमें प्रत्येक लग्न का समाप्तिकाल अंग्रेज़ी तारीखों के मुताबक, भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में लिखा गया है। सूर्योदयास्त एवं लग्नों के प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल का आधार मुख्यत: अंग्रेज़ी तारीखें ली गई हैं। चूंकि पृथ्वी की अयनगति में प्रतिवर्ष परिवर्तन होता है, इसके अतिरिक्त तीन वर्षो के पश्चात् हर चौथे वर्ष **लीप वर्ष** (अर्थात् **फरवरी मास** के दिन 28 की अपेक्षा 29 होते हैं) होने के कारण लग्नों के मान में प्रति वर्ष कुछ स्थूलता आ जाती है। इसको सूक्ष्म बनाने के लिए वार्षिक संस्कार सारणी दी जा रही है। यह वार्षिक संस्कार (+ या –) करने से अभीष्ट सन् एवं तारीख (Desired date and Year) का सूक्ष्मतम लग्न समाप्तिकाल प्राप्त होगा। वार्षिक संस्कार सारणी में लीप वर्ष (Leap Year) दो बार लिखा गया है। जिस सन् ईसवी के साथ (A) का निशान दिया गया है, उस संस्कार तालिका को जनवरी की 1 तारीख से 28 फरवरी तक के लिए जाने तथा जिस सन् के साथ (B) का निशान है, उस संस्कार तालिका का प्रयोग **1 मार्च से 31 दिसंबर** तक की अवधि के लिए करें।

29 फरवरी के लग्न मान के लिए 28 फरवरी के प्रत्येक लग्न (कुम्भ से मकर तक) समा. काल में से २/२ मिनट हीन (कम) कर देवे। लीप रहित जिस सन् के आगे कोई निशान नहीं दिया गया उस **संस्कार** तालिका का प्रयोग **१ जनवरी** से ३१ दिसंबर तक के महीनों के लिए करें। **उदाहरणार्थ**-ता. 16 अप्रैल, 2016 को मेष लग्न समाप्ति देखना है तो सारिणी में ता. 16 अप्रैल को 7/29 पर मेष लग्न समाप्त हुआ। अब इसमें वार्षिक संस्कार तालिका से हमें -1 मिनट प्राप्त हुए। अत: सन् 2016 में **मेष लग्न** 7/28 पर समाप्त होगा।

दैनिक लग्न सारिणी में वार्षिक संस्कार तालिका

सन् ई.	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
२००३	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
२००४A	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
२००४B	-१	-१	०	०	०	०	०	०	०	-१	-१	-१
२००५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२००६	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
२००७	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
२००८A	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
२००८B	-१	-१	०	०	०	०	०	०	०	-१	-१	-१
२००९	+०	+०	+०	+०	+०	+०	+०	+०	+०	+०	+०	+०
२०१०	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
२०११	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
२०१२A	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
२०१२B	-१	-१	०	०	०	०	०	०	०	+०	-१	-१
२०१३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२०१४	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
२०१५	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
२०१६A	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
२०१६B	-१	-१	०	०	०	०	०	०	०	-१	-१	-१
२०१७	+०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२०१८	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
२०१९	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
२०२०A	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
२०२०B	-१	-१	०	०	०	०	०	०	०	-१	-१	-१

दैनिक लग्न सारणी अप्रैल-मई (वैशाख) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

अप्रैल	वैशाख	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	७ ३७	९ ३१	११ ४५	१४ ०८	१६ २८	१८ ४६	२१ ०८	२३ २८	१ ३३	३ १४	४ ३९	६ ००
15	२	७ ३३	९ २७	११ ४२	१४ ०४	१६ २४	१८ ४२	२१ ०४	२३ २४	१ २९	३ १०	४ ३५	५ ५६
16	३	७ २९	९ २३	११ ३८	१४ ००	१६ २०	१८ ३८	२१ ००	२३ २०	१ २५	३ ०६	४ ३१	५ ५२
17	४	७ २५	९ १९	११ ३४	१३ ५७	१६ १७	१८ ३४	२० ५६	२३ १६	१ २१	३ ०२	४ २७	५ ४८
18	५	७ २१	९ १६	११ ३०	१३ ५३	१६ १३	१८ ३१	२० ५२	२३ १२	१ १७	२ ५८	४ २३	५ ४४
19	६	७ १७	९ १२	११ २६	१३ ४९	१६ ०९	१८ २७	२० ४८	२३ ०८	१ १३	२ ५४	४ १९	५ ४०
20	७	७ १३	९ ०८	११ २२	१३ ४५	१६ ०५	१८ २३	२० ४४	२३ ०४	१ ०९	२ ५०	४ १५	५ ३६
21	८	७ ०९	९ ०४	११ १८	१३ ४१	१६ ०१	१८ १९	२० ४०	२३ ०१	१ ०५	२ ४६	४ ११	५ ३२
22	९	७ ०५	९ ००	११ १५	१३ ३७	१५ ५७	१८ १५	२० ३६	२२ ५७	१ ०१	२ ४२	४ ०७	५ २८
23	१०	७ ०१	८ ५६	११ ११	१३ ३३	१५ ५३	१८ ११	२० ३३	२२ ५३	०० ५७	२ ३८	४ ०३	५ २४
24	११	६ ५७	८ ५२	११ ०७	१३ २९	१५ ५०	१८ ०७	२० २९	२२ ४९	०० ५३	२ ३४	३ ५९	५ २१
25	१२	६ ५३	८ ४८	११ ०३	१३ २५	१५ ४६	१८ ०३	२० २५	२२ ४५	०० ४९	२ ३०	३ ५५	५ १७
26	१३	६ ४९	८ ४४	१० ५९	१३ २१	१५ ४२	१७ ५९	२० २१	२२ ४१	०० ४५	२ २७	३ ५१	५ १३
27	१४	६ ४६	८ ४०	१० ५५	१३ १७	१५ ३८	१७ ५५	२० १७	२२ ३७	०० ४१	२ २३	३ ४७	५ ०९
28	१५	६ ४२	८ ३६	१० ५१	१३ १४	१५ ३५	१७ ५१	२० १३	२२ ३३	०० ३७	२ १९	३ ४३	५ ०५
29	१६	६ ३८	८ ३२	१० ४७	१३ १०	१५ ३१	१७ ४७	२० ०९	२२ २९	०० ३३	२ १५	३ ३९	५ ०१
30	१७	६ ३४	८ २८	१० ४३	१३ ०६	१५ २७	१७ ४४	२० ०५	२२ २५	०० २९	२ ११	३ ३५	४ ५७
मई	१८	६ ३०	८ २४	१० ३९	१३ ०२	१५ २३	१७ ४०	२० ०१	२२ २१	०० २५	२ ०७	३ ३२	४ ५३
2	१९	६ २६	८ २०	१० ३५	१२ ५८	१५ १९	१७ ३६	१९ ५७	२२ १७	०० २१	२ ०३	३ २८	४ ५०
3	२०	६ २२	८ १६	१० ३१	१२ ५४	१५ १५	१७ ३२	१९ ५३	२२ १३	०० १८	१ ५९	३ २४	४ ४६
4	२१	६ १८	८ १२	१० २७	१२ ५०	१५ ११	१७ २८	१९ ४९	२२ ०९	०० १४	१ ५५	३ २०	४ ४२
5	२२	६ १४	८ ०८	१० २३	१२ ४६	१५ ०७	१७ २४	१९ ४५	२२ ०५	०० १०	१ ५१	३ १६	४ ३८
6	२३	६ १०	८ ०४	१० १९	१२ ४२	१५ ०३	१७ २०	१९ ४१	२२ ०१	०० ०६	१ ४७	३ १२	४ ३४
7	२४	६ ६	८ ००	१० १५	१२ ३८	१४ ५९	१७ १६	१९ ३७	२१ ५७	०० ०२	१ ४३	३ ०८	४ ३०
8	२५	६ २	७ ५६	१० ११	१२ ३४	१४ ५५	१७ १२	१९ ३३	२१ ५३	२३ ५८	१ ३९	३ ०४	४ २६
9	२६	५ ५८	७ ५२	१० ०७	१२ ३०	१४ ५१	१७ ०८	१९ २९	२१ ४९	२३ ५४	१ ३५	३ ००	४ २२
10	२७	५ ५४	७ ४८	१० ०३	१२ २६	१४ ४७	१७ ०४	१९ २५	२१ ४५	२३ ५०	१ ३१	२ ५६	४ १८
11	२८	५ ५०	७ ४५	९ ५९	१२ २२	१४ ४३	१७ ००	१९ २१	२१ ४१	२३ ४६	१ २७	२ ५२	४ १४
12	२९	५ ४६	७ ४१	९ ५५	१२ १८	१४ ३९	१६ ५६	१९ १७	२१ ३७	२३ ४२	१ २३	२ ४८	४ १०
13	३०	५ ४२	७ ३७	९ ५१	१२ १४	१४ ३५	१६ ५२	१९ १३	२१ ३३	२३ ३८	१ १९	२ ४४	४ ०६
14	३१	५ ३९	७ ३३	९ ४७	१२ ११	१४ ३१	१६ ४८	१९ ०९	२१ २९	२३ ३४	१ १५	२ ४०	४ ०२
15	ज्ये	५ ३५	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी मई-जून (ज्येष्ठ) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

मई	ज्येष्ठ	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
15	१	७ २९	९ ४४	१२ ०७	१४ २७	१६ ४५	१९ ०६	२१ २६	२३ ३०	०१ ११	२ ३६	३ ५८	५ ३१
16	२	७ २५	९ ४०	१२ ०३	१४ २३	१६ ४१	१९ ०२	२१ २२	२३ २६	०१ ०७	२ ३२	३ ५४	५ २७
17	३	७ २२	९ ३६	११ ५९	१४ १९	१६ ३७	१८ ५८	२१ १८	२३ २२	०१ ०३	२ २८	३ ५०	५ २३
18	४	७ १८	९ ३२	११ ५५	१४ १५	१६ ३३	१८ ५४	२१ १४	२३ १८	०० ५९	२ २४	३ ४६	५ १९
19	५	७ १४	९ २८	११ ५१	१४ ११	१६ २९	१८ ५०	२१ १०	२३ १५	०० ५६	२ २०	३ ४२	५ १५
20	६	७ १०	९ २४	११ ४७	१४ ०७	१६ २५	१८ ४६	२१ ०६	२३ ११	०० ५२	२ १७	३ ३८	५ ११
21	७	७ ०६	९ २०	११ ४३	१४ ०३	१६ २१	१८ ४२	२१ ०२	२३ ०७	०० ४८	२ १३	३ ३४	५ ०७
22	८	७ ०२	९ १६	११ ३९	१३ ५९	१६ १७	१८ ३८	२० ५८	२३ ०३	०० ४४	२ ०९	३ ३०	५ ०३
23	९	६ ५९	९ १३	११ ३६	१३ ५६	१६ १४	१८ ३५	२० ५५	२३ ००	०० ४१	२ ०५	३ २७	५ ००
24	१०	६ ५५	९ ०९	११ ३२	१३ ५२	१६ १०	१८ ३१	२० ५१	२२ ५६	०० ३७	२ ०२	३ २३	४ ५६
25	११	६ ५१	९ ०५	११ २८	१३ ४८	१६ ०६	१८ २७	२० ४७	२२ ५२	०० ३३	१ ५८	३ १९	४ ५२
26	१२	६ ४७	९ ०१	११ २४	१३ ४४	१६ ०२	१८ २३	२० ४३	२२ ४८	०० २९	१ ५४	३ १५	४ ४८
27	१३	६ ४३	८ ५७	११ २०	१३ ४०	१५ ५८	१८ १९	२० ३९	२२ ४४	०० २५	१ ५०	३ ११	४ ४४
28	१४	६ ३९	८ ५३	११ १६	१३ ३६	१५ ५४	१८ १५	२० ३५	२२ ४०	०० २१	१ ४६	३ ०७	४ ४०
29	१५	६ ३५	८ ४९	११ १२	१३ ३२	१५ ५०	१८ ११	२० ३१	२२ ३६	०० १७	१ ४२	३ ०३	४ ३६
30	१६	६ ३१	८ ४५	११ ०८	१३ २८	१५ ४६	१८ ०७	२० २७	२२ ३२	०० १३	१ ३८	२ ५९	४ ३२
31	१७	६ २७	८ ४१	११ ०४	१३ २४	१५ ४२	१८ ०३	२० २३	२२ २८	०० ०९	१ ३४	२ ५५	४ २८
जून	१८	६ २३	८ ३७	११ ००	१३ २०	१५ ३८	१७ ५९	२० १९	२२ २४	०० ०५	१ ३०	२ ५१	४ २४
2	१९	६ १९	८ ३३	१० ५६	१३ १६	१५ ३४	१७ ५५	२० १५	२२ २०	०० ०१	१ २६	२ ४७	४ २०
3	२०	६ १५	८ २९	१० ५२	१३ १२	१५ ३०	१७ ५१	२० ११	२२ १६	२३ ५७	१ २२	२ ४३	४ १६
4	२१	६ ११	८ २५	१० ४८	१३ ०८	१५ २६	१७ ४७	२० ०७	२२ १२	२३ ५३	१ १८	२ ३९	४ १२
5	२२	६ ०७	८ २१	१० ४४	१३ ०४	१५ २२	१७ ४३	२० ०३	२२ ०८	२३ ४९	१ १४	२ ३५	४ ०८
6	२३	६ ०३	८ १८	१० ४१	१३ ०१	१५ १९	१७ ४०	२० ००	२२ ०५	२३ ४६	१ १०	२ ३२	४ ०४
7	२४	५ ५९	८ १४	१० ३७	१२ ५७	१५ १५	१७ ३६	१९ ५६	२२ ०१	२३ ४२	१ ०६	२ २८	४ ०१
8	२५	५ ५५	८ १०	१० ३३	१२ ५३	१५ ११	१७ ३२	१९ ५२	२१ ५७	२३ ३८	१ ०२	२ २४	३ ५७
9	२६	५ ५१	८ ०६	१० २९	१२ ४९	१५ ०७	१७ २८	१९ ४८	२१ ५३	२३ ३४	०० ५८	२ २०	३ ५३
10	२७	५ ४७	८ ०२	१० २५	१२ ४५	१५ ०३	१७ २४	१९ ४४	२१ ४९	२३ ३०	०० ५४	२ १६	३ ४९
11	२८	५ ४३	७ ५८	१० २१	१२ ४१	१४ ५९	१७ २०	१९ ४०	२१ ४५	२३ २६	०० ५०	२ १२	३ ४५
12	२९	५ ३९	७ ५४	१० १७	१२ ३७	१४ ५५	१७ १६	१९ ३६	२१ ४१	२३ २२	०० ४६	२ ०८	३ ४१
13	३०	५ ३५	७ ५०	१० १३	१२ ३३	१४ ५१	१७ १२	१९ ३२	२१ ३७	२३ १८	०० ४२	२ ०४	३ ३७
14	३१	५ ३१	७ ४६	१० ०९	१२ २९	१४ ४७	१७ ०८	१९ २८	२१ ३३	२३ १४	०० ३८	२ ००	३ ३३
15	आ.	५ २७	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी जून-जुलाई (आषाढ़) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

जून	आषाढ़	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
		घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.
15	१	७ ४२	१० ०५	१२ २५	१४ ४३	१७ ०४	१९ २४	२१ २९	२३ १०	०० ३५	१ ५६	३ २९	५ २४
16	२	७ ३८	१० ०१	१२ २१	१४ ३९	१७ ००	१९ २०	२१ २५	२३ ०६	०० ३१	१ ५२	३ २५	५ २०
17	३	७ ३४	९ ५७	१२ १७	१४ ३५	१६ ५६	१९ १६	२१ २१	२३ ०२	०० २७	१ ४८	३ २१	५ १६
18	४	७ ३०	९ ५३	१२ १३	१४ ३१	१६ ५२	१९ १२	२१ १७	२२ ५८	०० २३	१ ४४	३ १७	५ १२
19	५	७ २६	९ ४९	१२ ०९	१४ २७	१६ ४८	१९ ०८	२१ १३	२२ ५४	०० १९	१ ४०	३ १३	५ ०८
20	६	७ २२	९ ४५	१२ ०५	१४ २३	१६ ४४	१९ ०४	२१ ०९	२२ ५०	०० १५	१ ३६	३ ०९	५ ०४
21	७	७ १८	९ ४१	१२ ०१	१४ १९	१६ ४०	१९ ००	२१ ०५	२२ ४६	०० ११	१ ३२	३ ०५	५ ००
22	८	७ १५	९ ३७	११ ५७	१४ १५	१६ ३६	१८ ५६	२१ ०१	२२ ४२	०० ०७	१ २८	३ ०१	४ ५६
23	९	७ ११	९ ३३	११ ५३	१४ ११	१६ ३२	१८ ५२	२० ५७	२२ ३८	०० ०३	१ २४	२ ५७	४ ५२
24	१०	७ ०७	९ २९	११ ४९	१४ ०७	१६ २८	१८ ४८	२० ५३	२२ ३४	२३ ५९	१ २०	२ ५३	४ ४८
25	११	७ ०३	९ २५	११ ४५	१४ ०३	१६ २४	१८ ४४	२० ४९	२२ ३०	२३ ५५	१ १६	२ ४९	४ ४४
26	१२	६ ५९	९ २१	११ ४१	१३ ५९	१६ २०	१८ ४०	२० ४५	२२ २६	२३ ५१	१ १२	२ ४५	४ ४०
27	१३	६ ५५	९ १८	११ ३८	१३ ५६	१६ १७	१८ ३७	२० ४२	२२ २३	२३ ४८	१ ०९	२ ४२	४ ३७
28	१४	६ ५१	९ १४	११ ३४	१३ ५२	१६ १३	१८ ३३	२० ३८	२२ १९	२३ ४४	१ ०५	२ ३८	४ ३३
29	१५	६ ४७	९ १०	११ ३०	१३ ४८	१६ ०९	१८ २९	२० ३४	२२ १५	२३ ४०	१ ०१	२ ३४	४ २९
30	१६	६ ४३	९ ०६	११ २६	१३ ४४	१६ ०५	१८ २५	२० ३०	२२ ११	२३ ३६	०० ५७	२ ३०	४ २५
जुला.	१७	६ ३९	९ ०२	११ २२	१३ ४०	१६ ०१	१८ २१	२० २६	२२ ०७	२३ ३२	०० ५३	२ २६	४ २१
2	१८	६ ३५	८ ५८	११ १८	१३ ३६	१५ ५७	१८ १७	२० २२	२२ ०३	२३ २८	०० ४९	२ २२	४ १७
3	१९	६ ३१	८ ५४	११ १४	१३ ३२	१५ ५३	१८ १३	२० १८	२१ ५९	२३ २४	०० ४५	२ १८	४ १३
4	२०	६ २७	८ ५०	११ १०	१३ २८	१५ ४९	१८ ०९	२० १४	२१ ५५	२३ २०	०० ४१	२ १४	४ ०९
5	२१	६ २३	८ ४६	११ ०६	१३ २४	१५ ४५	१८ ०५	२० १०	२१ ५१	२३ १६	०० ३८	२ ११	४ ०५
6	२२	६ १९	८ ४२	११ ०२	१३ २०	१५ ४१	१८ ०१	२० ०६	२१ ४७	२३ १२	०० ३४	२ ०७	४ ०१
7	२३	६ १६	८ ३९	१० ५९	१३ १७	१५ ३८	१७ ५८	२० ०३	२१ ४४	२३ ०९	०० ३१	२ ०४	३ ५८
8	२४	६ १२	८ ३५	१० ५५	१३ १३	१५ ३४	१७ ५४	१९ ५९	२१ ४०	२३ ०५	०० २७	२ ००	३ ५४
9	२५	६ ०८	८ ३१	१० ५१	१३ ०९	१५ ३०	१७ ५०	१९ ५५	२१ ३६	२३ ०१	०० २३	१ ५६	३ ५०
10	२६	६ ०४	८ २७	१० ४७	१३ ०५	१५ २६	१७ ४६	१९ ५१	२१ ३२	२२ ५७	०० १९	१ ५२	३ ४६
11	२७	६ ००	८ २३	१० ४३	१३ ०१	१५ २२	१७ ४२	१९ ४७	२१ २८	२२ ५३	०० १५	१ ४८	३ ४२
12	२८	५ ५६	८ १९	१० ३९	१२ ५७	१५ १८	१७ ३८	१९ ४३	२१ २४	२२ ४९	०० ११	१ ४४	३ ३८
13	२९	५ ५२	८ १५	१० ३५	१२ ५३	१५ १४	१७ ३४	१९ ३९	२१ २०	२२ ४५	०० ०७	१ ४०	३ ३४
14	३०	५ ४८	८ ११	१० ३१	१२ ४९	१५ १०	१७ ३०	१९ ३५	२१ १६	२२ ४१	०० ०३	१ ३६	३ ३०
15	३१	५ ४४	८ ०७	१० २७	१२ ४५	१५ ०६	१७ २६	१९ ३१	२१ १२	२२ ३७	२३ ५९	१ ३२	३ २६
16	श्रा.	५ ४०	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी जुला.-अग. (श्रावण) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

जुलाई	श्रावण	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
		घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.
16	१	८ ०३	१० २३	१२ ४१	१५ ०२	१७ २२	१९ २७	२१ ०८	२२ ३३	२३ ५५	१ २८	३ २२	५ ३६
17	२	७ ५९	१० १९	१२ ३७	१४ ५८	१७ १८	१९ २३	२१ ०४	२२ २९	२३ ५१	१ २४	३ १८	५ ३२
18	३	७ ५५	१० १५	१२ ३३	१४ ५४	१७ १४	१९ १९	२१ ००	२२ २५	२३ ४७	१ २०	३ १४	५ २८
19	४	७ ५२	१० १२	१२ ३०	१४ ५१	१७ ११	१९ १६	२० ५६	२२ २१	२३ ४३	१ १७	३ १०	५ २४
20	५	७ ४८	१० ०८	१२ २६	१४ ४७	१७ ०७	१९ १२	२० ५२	२२ १८	२३ ४०	१ १३	३ ६	५ २०
21	६	७ ४४	१० ०४	१२ २२	१४ ४३	१७ ०३	१९ ८	२० ४८	२२ १४	२३ ३६	१ ०९	३ ०२	५ १६
22	७	७ ४०	१० ००	१२ १८	१४ ३९	१६ ५९	१९ ०४	२० ४४	२२ १०	२३ ३२	१ ०५	२ ५८	५ १२
23	८	७ ३६	९ ५६	१२ १४	१४ ३५	१६ ५५	१९ ००	२० ४०	२२ ०६	२३ २८	१ ०१	२ ५४	५ ०८
24	९	७ ३२	९ ५२	१२ १०	१४ ३१	१६ ५१	१८ ५६	२० ३६	२२ ०२	२३ २४	० ५७	२ ५०	५ ०४
25	१०	७ २८	९ ४८	१२ ६	१४ २७	१६ ४७	१८ ५२	२० ३२	२१ ५८	२३ २०	० ५३	२ ४६	५ ००
26	११	७ २४	९ ४४	१२ ०२	१४ २४	१६ ४४	१८ ४८	२० २९	२१ ५४	२३ १६	० ४९	२ ४२	४ ५६
27	१२	७ २०	९ ४०	११ ५८	१४ २०	१६ ४०	१८ ४४	२० २५	२१ ५०	२३ १२	० ४५	२ ३८	४ ५२
28	१३	७ १६	९ ३६	११ ५५	१४ १६	१६ ३६	१८ ४०	२० २१	२१ ४६	२३ ०८	० ४१	२ ३४	४ ४९
29	१४	७ १२	९ ३२	११ ५१	१४ १२	१६ ३२	१८ ३६	२० १७	२१ ४२	२३ ०४	० ३७	२ ३०	४ ४५
30	१५	७ ०८	९ २८	११ ४७	१४ ८	१६ २८	१८ ३२	२० १३	२१ ३८	२३ ००	० ३३	२ २७	४ ४१
31	१६	७ ०४	९ २४	११ ४३	१४ ०४	१६ २५	१८ २८	२० ९	२१ ३४	२२ ५६	० २९	२ २३	४ ३७
अग.	१७	७ ००	९ २०	११ ३९	१४ ००	१६ २१	१८ २४	२० ०५	२१ ३०	२२ ५२	० २५	२ १९	४ ३३
2	१८	६ ५६	९ १६	११ ३५	१३ ५६	१६ १७	१८ २०	२० ०१	२१ २६	२२ ४८	० २१	२ १५	४ २९
3	१९	६ ५२	९ १२	११ ३१	१३ ५२	१६ १३	१८ १६	१९ ५७	२१ २२	२२ ४४	० १७	२ ११	४ २५
4	२०	६ ४८	९ ०९	११ २७	१३ ४८	१६ ९	१८ १२	१९ ५३	२१ १८	२२ ४१	० १३	२ ०७	४ २१
5	२१	६ ४४	९ ०५	११ २४	१३ ४५	१६ ५	१८ ९	१९ ५०	२१ १४	२२ ३८	० १०	२ ०४	४ १७
6	२२	६ ४०	९ ०१	११ २०	१३ ४१	१६ ०१	१८ ५	१९ ४६	२१ ११	२२ ३४	० ०६	२ ००	४ १४
7	२३	६ ३७	८ ५७	११ १६	१३ ३७	१५ ५७	१८ ०१	१९ ४२	२१ ७	२२ ३०	० ०२	१ ५६	४ १०
8	२४	६ ३३	८ ५३	११ १२	१३ ३३	१५ ५४	१७ ५७	१९ ३९	२१ ०३	२२ २६	२३ ५८	१ ५२	४ ०६
9	२५	६ २९	८ ४९	११ ८	१३ २९	१५ ५०	१७ ५३	१९ ३५	२० ५९	२२ २२	२३ ५४	१ ४८	४ ०२
10	२६	६ २५	८ ४५	११ ४	१३ २५	१५ ४६	१७ ४९	१९ ३१	२० ५५	२२ १८	२३ ५०	१ ४४	३ ५८
11	२७	६ २१	८ ४१	११ ००	१३ २१	१५ ४२	१७ ४५	१९ २७	२० ५१	२२ १४	२३ ४६	१ ४०	३ ५४
12	२८	६ १७	८ ३७	१० ५६	१३ १७	१५ ३८	१७ ४१	१९ २३	२० ४८	२२ १०	२३ ४२	१ ३७	३ ५०
13	२९	६ १३	८ ३३	१० ५२	१३ १३	१५ ३४	१७ ३७	१९ १९	२० ४४	२२ ०६	२३ ३८	१ ३३	३ ४७
14	३०	६ ०९	८ २९	१० ४८	१३ ०९	१५ ३०	१७ ३३	१९ १५	२० ४०	२२ ०२	२३ ३४	१ २९	३ ४३
15	३१	६ ०५	८ २५	१० ४४	१३ ०५	१५ २६	१७ २९	१९ ११	२० ३६	२१ ५८	२३ ३०	१ २५	३ ३९
16	३२	६ ०१	८ २१	१० ४०	१३ ०१	१५ २२	१७ २५	१९ ०७	२० ३२	२१ ५४	२३ ३६	१ २१	३ ३५
17	भाद्र	५ ५७	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी अग.-सितं. (भाद्रपद) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

अगस्त	भाद्रपद	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
		घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.
17	१	८ १७	१० ३६	१२ ५७	१५ १८	१७ २१	१९ ०३	२० २८	२१ ५०	२३ २२	१ १७	३ ३१	५ ५३
18	२	८ १३	१० ३३	१२ ५३	१५ १४	१७ १७	१८ ५९	२० २४	२१ ४६	२३ १८	१ १३	३ २७	५ ४९
19	३	८ ९	१० २९	१२ ४९	१५ १०	१७ १३	१८ ५५	२० २०	२१ ४२	२३ १४	१ ०९	३ २३	५ ४५
20	४	८ ६	१० २५	१२ ४६	१५ ०६	१७ ०९	१८ ५१	२० १६	२१ ३८	२३ १०	१ ०५	३ १९	५ ४१
21	५	८ ०२	१० २१	१२ ४२	१५ ०२	१७ ०६	१८ ४७	२० १२	२१ ३४	२३ ०७	१ ०१	३ १५	५ ३७
22	६	७ ५८	१० १७	१२ ३८	१४ ५८	१७ ०२	१८ ४४	२० ८	२१ ३०	२३ ०३	० ५७	३ ११	५ ३३
23	७	७ ५४	१० १३	१२ ३४	१४ ५४	१६ ५८	१८ ४०	२० ४	२१ २६	२२ ५९	० ५३	३ ०७	५ २९
24	८	७ ५०	१० ०९	१२ ३०	१४ ५०	१६ ५४	१८ ३६	२० ०१	२१ २२	२२ ५५	० ५०	३ ०३	५ २५
25	९	७ ४६	१० ५	१२ २६	१४ ४६	१६ ५०	१८ ३२	१९ ५७	२१ १९	२२ ५१	० ४६	३ ००	५ २२
26	१०	७ ४२	१० ०१	१२ २३	१४ ४३	१६ ४६	१८ २८	१९ ५३	२१ १५	२२ ४७	० ४२	२ ५६	५ १८
27	११	७ ३८	९ ५७	१२ १९	१४ ३९	१६ ४३	१८ २४	१९ ४९	२१ ११	२२ ४३	० ३८	२ ५२	५ १४
28	१२	७ ३४	९ ५३	१२ १५	१४ ३५	१६ ३९	१८ २०	१९ ४५	२१ ७	२२ ३९	० ३४	२ ४८	५ १०
29	१३	७ ३०	९ ४९	१२ ११	१४ ३१	१६ ३५	१८ १६	१९ ४१	२१ ०३	२२ ३५	० ३०	२ ४४	५ ६
30	१४	७ २६	९ ४५	१२ ०७	१४ २७	१६ ३१	१८ १२	१९ ३७	२० ५९	२२ ३१	० २६	२ ४०	५ ०२
31	१५	७ २२	९ ४१	१२ ०३	१४ २३	१६ २७	१८ ०८	१९ ३३	२० ५५	२२ २७	० २२	२ ३६	४ ५८
सितं.	१६	७ १८	९ ३७	११ ५९	१४ १९	१६ २३	१८ ०४	१९ २९	२० ५१	२२ २३	० १८	२ ३२	४ ५४
2	१७	७ १४	९ ३४	११ ५५	१४ १५	१६ १९	१८ ००	१९ २५	२० ४७	२२ १९	० १४	२ २८	४ ५०
3	१८	७ १०	९ ३०	११ ५१	१४ ११	१६ १५	१७ ५६	१९ २१	२० ४३	२२ १६	० १०	२ २४	४ ४६
4	१९	७ ०६	९ २६	११ ४७	१४ ०७	१६ ११	१७ ५२	१९ १७	२० ३९	२२ १२	० ६	२ २०	४ ४२
5	२०	७ ०२	९ २२	११ ४३	१४ ०३	१६ ०७	१७ ४८	१९ १३	२० ३५	२२ ८	० ०२	२ १६	४ ३८
6	२१	६ ५९	९ १८	११ ३९	१३ ५९	१६ ०३	१७ ४४	१९ ९	२० ३१	२२ ०४	२३ ५८	२ १२	४ ३४
7	२२	६ ५५	९ १४	११ ३५	१३ ५५	१५ ५९	१७ ४०	१९ ५	२० २७	२२ ००	२३ ५४	२ ०८	४ ३०
8	२३	६ ५१	९ १०	११ ३१	१३ ५१	१५ ५५	१७ ३६	१९ ०१	२० २३	२१ ५६	२३ ५०	२ ०४	४ २६
9	२४	६ ४७	९ ०६	११ २७	१३ ४७	१५ ५१	१७ ३२	१८ ५७	२० १९	२१ ५२	२३ ४६	२ ००	४ २२
10	२५	६ ४३	९ ०२	११ २३	१३ ४३	१५ ४७	१७ २८	१८ ५३	२० १५	२१ ४८	२३ ४२	१ ५६	४ १८
11	२६	६ ३९	८ ५८	११ १९	१३ ३९	१५ ४३	१७ २४	१८ ४९	२० ११	२१ ४४	२३ ३८	१ ५२	४ १४
12	२७	६ ३५	८ ५४	११ १५	१३ ३५	१५ ३९	१७ २०	१८ ४५	२० ७	२१ ४०	२३ ३४	१ ४८	४ १०
13	२८	६ ३१	८ ५०	११ ११	१३ ३१	१५ ३५	१७ १६	१८ ४१	२० ०३	२१ ३६	२३ ३०	१ ४४	४ ६
14	२९	६ २७	८ ४६	११ ७	१३ २७	१५ ३१	१७ १२	१८ ३७	१९ ५९	२१ ३२	२३ २६	१ ४०	४ ०२
15	३०	६ २३	८ ४२	११ ०३	१३ २३	१५ २७	१७ ०८	१८ ३३	१९ ५५	२१ २८	२३ २२	१ ३६	३ ५८
16	३१	६ १९	८ ३८	१० ५९	१३ १९	१५ २३	१७ ०४	१८ २९	१९ ५१	२१ २४	२३ १८	१ ३२	३ ५४

दैनिक लग्न सारणी सितं.-अक्तू. (आश्विन) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

सितम्बर	आश्विन	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
		घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.
17	१	८ ३४	१० ५५	१३ १५	१५ १९	१७ ००	१८ २५	१९ ४७	२१ २०	२३ १४	१ २८	३ ५१	६ ११
18	२	८ ३०	१० ५१	१३ ११	१५ १५	१६ ५६	१८ २१	१९ ४३	२१ १६	२३ १०	१ २४	३ ४७	६ ०७
19	३	८ २६	१० ४७	१३ ०७	१५ ११	१६ ५२	१८ १७	१९ ३९	२१ १२	२३ ०६	१ २०	३ ४३	६ ०३
20	४	८ २२	१० ४३	१३ ०३	१५ ०७	१६ ४८	१८ १३	१९ ३५	२१ ०८	२३ ०२	१ १६	३ ३९	५ ५९
21	५	८ १८	१० ३९	१२ ५९	१५ ०३	१६ ४४	१८ ०९	१९ ३१	२१ ०४	२२ ५८	१ १२	३ ३५	५ ५५
22	६	८ १४	१० ३५	१२ ५५	१४ ५९	१६ ४०	१८ ०५	१९ २७	२१ ००	२२ ५४	१ ०८	३ ३१	५ ५१
23	७	८ १०	१० ३१	१२ ५१	१४ ५५	१६ ३६	१८ ०१	१९ २३	२० ५६	२२ ५०	१ ०४	३ २७	५ ४७
24	८	८ ६	१० २७	१२ ४७	१४ ५१	१६ ३२	१७ ५७	१९ १९	२० ५२	२२ ४६	१ ००	३ २३	५ ४३
25	९	८ ०२	१० २३	१२ ४३	१४ ४७	१६ २८	१७ ५३	१९ १५	२० ४८	२२ ४२	०० ५७	३ १९	५ ३९
26	१०	७ ५८	१० २०	१२ ४०	१४ ४४	१६ २५	१७ ५०	१९ १२	२० ४४	२२ ३८	०० ५३	३ १५	५ ३५
27	११	७ ५४	१० १६	१२ ३६	१४ ४०	१६ २१	१७ ४६	१९ ८	२० ४०	२२ ३५	०० ४९	३ ११	५ ३१
28	१२	७ ५०	१० १२	१२ ३२	१४ ३६	१६ १७	१७ ४२	१९ ०४	२० ३६	२२ ३१	०० ४५	३ ०७	५ २७
29	१३	७ ४६	१० ०८	१२ २८	१४ ३२	१६ १३	१७ ३८	१९ ००	२० ३२	२२ २७	०० ४१	३ ०३	५ २३
30	१४	७ ४२	१० ०४	१२ २४	१४ २८	१६ ०९	१७ ३४	१८ ५६	२० २८	२२ २३	०० ३७	२ ५९	५ १९
अक्तू.	१५	७ ३८	१० ०	१२ २०	१४ २४	१६ ०५	१७ ३०	१८ ५२	२० २४	२२ १९	०० ३३	२ ५५	५ १५
2	१६	७ ३४	९ ५६	१२ १६	१४ २०	१६ ०१	१७ २६	१८ ४८	२० २१	२२ १५	०० २९	२ ५२	५ ११
3	१७	७ ३०	९ ५२	१२ १२	१४ १६	१५ ५७	१७ २२	१८ ४४	२० १७	२२ ११	०० २५	२ ४८	५ ०७
4	१८	७ २६	९ ४८	१२ ०८	१४ १२	१५ ५३	१७ १८	१८ ४०	२० १३	२२ ०७	०० २१	२ ४४	५ ०३
5	१९	७ २२	९ ४४	१२ ०४	१४ ८	१५ ४९	१७ १४	१८ ३६	२० ०९	२२ ०३	०० १७	२ ४०	५ ००
6	२०	७ १८	९ ४०	१२ ००	१४ ४	१५ ४५	१७ १०	१८ ३२	२० ०५	२१ ५९	०० १३	२ ३६	४ ५६
7	२१	७ १४	९ ३६	११ ५६	१४ ००	१५ ४१	१७ ०६	१८ २८	२० ०१	२१ ५५	०० ०९	२ ३३	४ ५२
8	२२	७ १०	९ ३२	११ ५२	१३ ५६	१५ ३७	१७ ०२	१८ २४	१९ ५७	२१ ५१	०० ०५	२ २९	४ ४८
9	२३	७ ०६	९ २८	११ ४८	१३ ५२	१५ ३३	१६ ५८	१८ २०	१९ ५३	२१ ४७	०० ०१	२ २५	४ ४४
10	२४	७ ०३	९ २५	११ ४५	१३ ४९	१५ ३०	१६ ५५	१८ १७	१९ ४९	२१ ४४	२३ ५८	२ २१	४ ४१
11	२५	६ ५९	९ २१	११ ४१	१३ ४५	१५ २६	१६ ५१	१८ १३	१९ ४५	२१ ४०	२३ ५४	२ १७	४ ३७
12	२६	६ ५५	९ १७	११ ३७	१३ ४१	१५ २२	१६ ४७	१८ ९	१९ ४१	२१ ३६	२३ ५०	२ १३	४ ३३
13	२७	६ ५१	९ १३	११ ३३	१३ ३७	१५ १८	१६ ४३	१८ ०५	१९ ३७	२१ ३२	२३ ४६	२ ०९	४ २९
14	२८	६ ४७	९ ०९	११ २९	१३ ३३	१५ १४	१६ ३९	१८ ०१	१९ ३३	२१ २८	२३ ४२	२ ०५	४ २५
15	२९	६ ४३	९ ०५	११ २५	१३ २९	१५ १०	१६ ३५	१७ ५७	१९ २९	२१ २४	२३ ३८	२ ०१	४ २१
16	३०	६ ३९	९ ०१	११ २१	१३ २५	१५ ०६	१६ ३१	१७ ५३	१९ २५	२१ २०	२३ ३४	१ ५७	४ १७
17	का.	६ ३५	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी अक्टू.-नवं. (कार्तिक) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

अक्टूबर	कार्तिक	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
		घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.
17	१	८ ५७	११ १७	१३ २१	१५ ०२	१६ २७	१७ ४९	१९ २१	२१ १६	२३ ३०	१ ५३	४ १३	६ ३१
18	२	८ ५३	११ १३	१३ १७	१४ ५८	१६ २३	१७ ४५	१९ १७	२१ १२	२३ २६	१ ४९	४ ०९	६ २७
19	३	८ ४९	११ ०९	१३ १३	१४ ५४	१६ १९	१७ ४१	१९ १३	२१ ०८	२३ २२	१ ४५	४ ०५	६ २३
20	४	८ ४५	११ ०५	१३ ०९	१४ ५०	१६ १५	१७ ३७	१९ ०९	२१ ०४	२३ १८	१ ४१	४ ०१	६ १९
21	५	८ ४१	११ ०१	१३ ०५	१४ ४६	१६ ११	१७ ३३	१९ ०५	२१ ००	२३ १४	१ ३७	३ ५७	६ १५
22	६	८ ३७	१० ५७	१३ ०१	१४ ४२	१६ ०७	१७ २९	१९ ०१	२० ५६	२३ १०	१ ३३	३ ५३	६ ११
23	७	८ ३३	१० ५३	१२ ५७	१४ ३८	१६ ०३	१७ २५	१८ ५७	२० ५२	२३ ०७	१ २९	३ ५०	६ ७
24	८	८ २९	१० ४९	१२ ५३	१४ ३४	१५ ५९	१७ २१	१८ ५३	२० ४८	२३ ०३	१ २५	३ ४६	६ ४
25	९	८ २६	१० ४६	१२ ५०	१४ ३०	१५ ५५	१७ १८	१८ ५०	२० ४४	२२ ५९	१ २२	३ ४२	६ ००
26	१०	८ २२	१० ४२	१२ ४६	१४ २७	१५ ५२	१७ १४	१८ ४६	२० ४१	२२ ५५	१ १८	३ ३९	५ ५६
27	११	८ १८	१० ३८	१२ ४२	१४ २३	१५ ४८	१७ १०	१८ ४२	२० ३७	२२ ५१	१ १४	३ ३५	५ ५२
28	१२	८ १४	१० ३४	१२ ३८	१४ १९	१५ ४४	१७ ०६	१८ ३८	२० ३३	२२ ४७	१ १०	३ ३१	५ ४८
29	१३	८ १०	१० ३०	१२ ३४	१४ १५	१५ ४०	१७ ०२	१८ ३४	२० २९	२२ ४३	१ ०६	३ २७	५ ४४
30	१४	८ ०६	१० २६	१२ ३०	१४ ११	१५.३६	१६ ५८	१८ ३०	२० २५	२२ ३९	१ ०२	३ २३	५ ४१
31	१५	८.०२	१० २२	१२ २६	१४ ०७	१५ ३२	१६ ५४	१८ २६	२० २१	२२ ३५	० ५८	३ १९	५ ३७
नवं.	१६	७ ५८	१० १८	१२ २२	१४ ०३	१५ २८	१६ ५०	१८ २२	२० १७	२२ ३१	० ५४	३ १५	५ ३३
2	१७	७ ५४	१० १४	१२ १८	१३ ५९	१५ २४	१६ ४६	१८ १८	२० १३	२२ २७	० ५०	३ ११	५ २९
3	१८	७ ५०	१० १०	१२ १४	१३ ५५	१५ २०	१६ ४२	१८ १५	२० ०९	२२ २३	० ४६	३ ०७	५ २५
4	१९	७ ४६	१० ०६	१२ १०	१३ ५१	१५ १६	१६ ३८	१८ ११	२० ०५	२२ १९	० ४२	३ ०३	५ २१
5	२०	७ ४२	१० ०२	१२ ०६	१३ ४७	१५ १२	१६ ३४	१८ ०७	२० ०१	२२ १५	० ३८	२ ५९	५ १७
6	२१	७ ३८	९ ५८	१२ ०२	१३ ४३	१५ ०८	१६ ३०	१८ ०३	१९ ५७	२२ ११	० ३४	२ ५५	५ १३
7	२२	७ ३५	९ ५४	११ ५८	१३ ३९	१५ ०४	१६ २६	१७ ५९	१९ ५३	२२ ०७	० ३०	२ ५१	५ ९
8	२३	७ ३१	९ ५०	११ ५४	१३ ३५	१५ ००	१६ २२	१७ ५५	१९ ४९	२२ ०३	० २६	२ ४७	५ ५
9	२४	७ २७	९ ४६	११ ५०	१३ ३१	१४ ५६	१६ १८	१७ ५१	१९ ४५	२१ ५९	० २२	२ ४३	५ ०१
10	२५	७ २३	९ ४२	११ ४६	१३ २७	१४ ५२	१६ १४	१७ ४७	१९ ४२	२१ ५६	० १८	२ ३९	४ ५७
11	२६	७ १९	९ ३८	११ ४२	१३ २४	१४ ४९	१६ ११	१७ ४३	१९ ३८	२१ ५२	० १४	२ ३५	४ ५३
12	२७	७ १५	९ ३४	११ ३९	१३ २०	१४ ४५	१६ ०७	१७ ३९	१९ ३४	२१ ४८	० ११	२ ३१	४ ४९
13	२८	७ ११	९ ३१	११ ३५	१३ १६	१४ ४१	१६ ०३	१७ ३५	१९ ३०	२१ ४४	० ०७	२ २७	४ ४५
14	२९	७ ०७	९ २७	११ ३१	१३ १२	१४ ३७	१५ ५९	१७ ३१	१९ २६	२१ ४०	० ०३	२ २३	४ ४१
15	३०	७ ०३	९ २३	११ २७	१३ ०८	१४ ३३	१५ ५५	१७ २७	१९ २२	२१ ३६	२३ ५९	२ १९	४ ३७
16	मा.	६ ५९	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी नवं.-दिसं. (मार्गशीर्ष) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

नवम्बर	मार्ग.	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
		घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.
16	१	९ १९	११ २३	१३ ०४	१४ २९	१५ ५१	१७ २३	१९ १८	२१ ३२	२३ ५५	२ १५	४ ३३	६ ५५
17	२	९ १५	११ १९	१३ ००	१४ २५	१५ ४७	१७ १९	१९ १४	२१ २८	२३ ५१	२ ११	४ २९	६ ५१
18	३	९ ११	११ १५	१२ ५६	१४ २१	१५ ४३	१७ १५	१९ १०	२१ २४	२३ ४७	२ ०७	४ २५	६ ४७
19	४	९ ०७	११ ११	१२ ५२	१४ १७	१५ ३९	१७ ११	१९ ०६	२१ २०	२३ ४३	२ ०३	४ २१	६ ४३
20	५	९ ०३	११ ०७	१२ ४८	१४ १३	१५ ३५	१७ ०७	१९ ०२	२१ १६	२३ ३९	१ ५९	४ १७	६ ३९
21	६	८ ५९	११ ०३	१२ ४४	१४ ०९	१५ ३१	१७ ०३	१८ ५८	२१ १२	२३ ३५	१ ५५	४ १३	६ ३५
22	७	८ ५५	१० ५९	१२ ४०	१४ ०५	१५ २७	१७ ००	१८ ५५	२१ ०९	२३ ३१	१ ५२	४ १०	६ ३२
23	८	८ ५१	१० ५५	१२ ३६	१४ ०१	१५ २३	१६ ५६	१८ ५१	२१ ०५	२३ २७	१ ४८	४ ६	६ २८
24	९	८ ४७	१० ५१	१२ ३२	१३ ५७	१५ १९	१६ ५२	१८ ४७	२१ ०१	२३ २३	१ ४४	४ ०२	६ २४
25	१०	८ ४४	१० ४८	१२ २९	१३ ५४	१५ १६	१६ ४८	१८ ४३	२० ५७	२३ १९	१ ४०	३ ५८	६ २०
26	११	८ ४०	१० ४४	१२ २५	१३ ५०	१५ १२	१६ ४४	१८ ३९	२० ५३	२३ १६	१ ३६	३ ५४	६ १६
27	१२	८ ३६	१० ४०	१२ २१	१३ ४६	१५ ०८	१६ ४०	१८ ३५	२० ४९	२३ १२	१ ३२	३ ५०	६ १२
28	१३	८ ३२	१० ३६	१२ १७	१३ ४२	१५ ०४	१६ ३६	१८ ३१	२० ४५	२३ ०८	१ २८	३ ४६	६ ०८
29	१४	८ २८	१० ३२	१२ १३	१३ ३८	१५ ००	१६ ३३	१८ २७	२० ४१	२३ ०५	१ २५	३ ४३	६ ०४
30	१५	८ २४	१० २८	१२ ०९	१३ ३४	१४ ५६	१६ २९	१८ २३	२० ३७	२३ ०१	१ २१	३ ३९	६ ००
दिसं	१६	८ २०	१० २४	१२ ०५	१३ ३०	१४ ५२	१६ २५	१८ १९	२० ३३	२२ ५७	१ १७	३ ३५	५ ५६
2	१७	८ १६	१० २०	१२ ०१	१३ २६	१४ ४८	१६ २१	१८ १५	२० २९	२२ ५३	१ १३	३ ३१	५ ५२
3	१८	८ १२	१० १६	११ ५७	१३ २२	१४ ४४	१६ १७	१८ ११	२० २५	२२ ४९	१ ०९	३ २७	५ ४८
4	१९	८ ०८	१० १२	११ ५३	१३ १८	१४ ४०	१६ १३	१८ ०७	२० २१	२२ ४५	१ ०५	३ २३	५ ४४
5	२०	८ ०४	१० ०८	११ ४९	१३ १४	१४ ३६	१६ ०९	१८ ०३	२० १७	२२ ४१	१ ०१	३ १९	५ ४०
6	२१	८ ००	१० ०४	११ ४५	१३ १०	१४ ३२	१६ ०५	१७ ५९	२० १३	२२ ३७	०० ५७	३ १५	५ ३६
7	२२	७ ५६	१० ००	११ ४१	१३ ०६	१४ २८	१६ ०१	१७ ५५	२० ०९	२२ ३३	०० ५३	३ ११	५ ३२
8	२३	७ ५२	९ ५६	११ ३७	१३ ०२	१४ २४	१५ ५७	१७ ५१	२० ०५	२२ २९	०० ४९	३ ७	५ २८
9	२४	७ ४८	९ ५२	११ ३३	१२ ५८	१४ २०	१५ ५३	१७ ४७	२० ०१	२२ २५	०० ४५	३ ०३	५ २४
10	२५	७ ४५	९ ४९	११ ३०	१२ ५५	१४ १७	१५ ५०	१७ ४४	१९ ५८	२२ २२	०० ४२	३ ००	५ २१
11	२६	७ ४१	९ ४५	११ २६	१२ ५१	१४ १३	१५ ४६	१७ ४०	१९ ५४	२२ १८	०० ३८	२ ५६	५ १७
12	२७	७ ३७	९ ४१	११ २२	१२ ४७	१४ ०९	१५ ४२	१७ ३६	१९ ५०	२२ १४	०० ३४	२ ५२	५ १३
13	२८	७ ३३	९ ३७	११ १८	१२ ४३	१४ ०५	१५ ३८	१७ ३२	१९ ४६	२२ १०	०० ३०	२ ४८	५ ९
14	२९	७ २९	९ ३३	११ १४	१२ ३९	१४ ०१	१५ ३४	१७ २८	१९ ४२	२२ ०६	०० २६	२ ४४	५ ०५
15	३०	७ २५	९ २९	११ १०	१२ ३५	१३ ५७	१५ ३०	१७ २४	१९ ३८	२२ ०२	०० २२	२ ४०	५ ०१
16	पौ.	७ २१	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी दिसं.-जन. (पौष) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

दिसम्बर	पौष	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
		घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.
16	१	९ २५	११ ०६	१२ ३१	१३ ५३	१५ २६	१७ २०	१९ ३४	२१ ५८	०० १८	२ ३६	४ ५७	७ १७
17	२	९ २१	११ २	१२ २८	१३ ४९	१५ २२	१७ १६	१९ ३०	२१ ५४	०० १४	२ ३२	४ ५३	७ १३
18	३	९ १७	१० ५९	१२ २४	१३ ४५	१५ १८	१७ १२	१९ २६	२१ ५०	०० १०	२ २८	४ ४९	७ ९
19	४	९ १३	१० ५५	१२ २०	१३ ४१	१५ १४	१७ ८	१९ २२	२१ ४६	०० ०६	२ २४	४ ४५	७ ५
20	५	९ ९	१० ५१	१२ १६	१३ ३७	१५ १०	१७ ४	१९ १८	२१ ४२	०० ०२	२ २०	४ ४१	७ १
21	६	९ ५	१० ४७	१२ १२	१३ ३३	१५ ६	१७ ००	१९ १४	२१ ३८	२३ ५८	२ १७	४ ३७	६ ५७
22	७	९ ०१	१० ४३	१२ ८	१३ २९	१५ २	१६ ५६	१९ ११	२१ ३४	२३ ५४	२ १३	४ ३३	६ ५३
23	८	८ ५७	१० ३९	१२ ४	१३ २५	१४ ५८	१६ ५२	१९ ०७	२१ ३०	२३ ५०	२ ९	४ २९	६ ४९
24	९	८ ५४	१० ३५	१२ ००	१३ २१	१४ ५४	१६ ४९	१९ ३	२१ २६	२३ ४६	२ ५	४ २५	६ ४५
25	१०	८ ५०	१० ३१	११ ५६	१३ १७	१४ ५०	१६ ४५	१८ ५९	२१ २२	२३ ४२	२ १	४ २१	६ ४२
26	११	८ ४६	१० २७	११ ५२	१३ १४	१४ ४६	१६ ४१	१८ ५५	२१ १८	२३ ३८	१ ५७	४ १७	६ ३८
27	१२	८ ४२	१० २३	११ ४८	१३ १०	१४ ४३	१६ ३७	१८ ५१	२१ १४	२३ ३४	१ ५३	४ १४	६ ३४
28	१३	८ ३८	१० १९	११ ४४	१३ ६	१४ ३९	१६ ३३	१८ ४७	२१ १०	२३ ३०	१ ४९	४ १०	६ ३०
29	१४	८ ३४	१० १५	११ ४०	१३ २	१४ ३५	१६ २९	१८ ४३	२१ ०६	२३ २६	१ ४५	४ ६	६ २६
30	१५	८ ३०	१० ११	११ ३६	१२ ५८	१४ ३१	१६ २५	१८ ३९	२१ ० २	२३ २२	१ ४१	४ २	६ २२
31	१६	८ २६	१० ०७	११ ३२	१२ ५४	१४ २७	१६ २१	१८ ३५	२० ५८	२३ १८	१ ३७	३ ५८	६ १८
जन.	१७	८ २२	१० ०३	११ २८	१२ ५०	१४ २३	१६ १७	१८ ३१	२० ५४	२३ १४	१ ३३	३ ५४	६ १४
2	१८	८ १८	९ ५९	११ २४	१२ ४६	१४ १९	१६ १३	१८ २७	२० ५०	२३ १०	१ २९	३ ५०	६ १०
3	१९	८ १४	९ ५५	११ २०	१२ ४२	१४ १५	१६ ९	१८ २३	२० ४६	२३ ०६	१ २५	३ ४६	६ ६
4	२०	८ १०	९ ५१	११ १६	१२ ३८	१४ ११	१६ ५	१८ १९	२० ४२	२३ ०२	१ २१	३ ४२	६ २
5	२१	८ ६	९ ४७	११ १२	१२ ३४	१४ ०७	१६ १	१८ १५	२० ३८	२२ ५८	१ १७	३ ३८	५ ५८
6	२२	८ ०२	९ ४३	११ ८	१२ ३०	१४ ०३	१५ ५७	१८ ११	२० ३४	२२ ५४	१ १३	३ ३४	५ ५४
7	२३	७ ५८	९ ३९	११ ४	१२ २६	१३ ५९	१५ ५३	१८ ७	२० ३०	२२ ५०	१ ९	३ ३०	५ ५०
8	२४	७ ५४	९ ३५	११ ००	१२ २२	१३ ५५	१५ ४९	१८ ३	२० २६	२२ ४६	१ ५	३ २६	५ ४६
9	२५	७ ५०	९ ३१	१० ५६	१२ १८	१३ ५१	१५ ४५	१७ ५९	२० २२	२२ ४२	१ ०१	३ २२	५ ४२
10	२६	७ ४६	९ २७	१० ५२	१२ १४	१३ ४७	१५ ४१	१७ ५५	२० १८	२२ ३८	०० ५७	३ १८	५ ३८
11	२७	७ ४२	९ २३	१० ४८	१२ १०	१३ ४३	१५ ३७	१७ ५१	२० १४	२२ ३४	०० ५३	३ १४	५ ३४
12	२८	७ ३८	९ १९	१० ४४	१२ ०६	१३ ३९	१५ ३३	१७ ४७	२० १०	२२ ३०	०० ४९	३ १०	५ ३०
13	२९	७ ३४	९ १५	१० ४०	१२ ०२	१३ ३५	१५ २९	१७ ४३	२० ०६	२२ २६	०० ४५	३ ०६	५ २६
14	मा.	७ ३०	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--

दैनिक लग्न सारणी जन.-फर. (माघ) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

जनवरी	माघ	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
		घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.
14	१	९ ११	१० ३६	११ ५८	१३ ३१	१५ २५	१७ ३९	२० ०२	२२ २२	०० ४१	३ ०२	५ २२	७ २६
15	२	९ ०७	१० ३२	११ ५४	१३ २७	१५ २१	१७ ३५	१९ ५८	२२ १८	०० ३७	२ ५८	५ १८	७ २२
16	३	९ ०४	१० २९	११ ५१	१३ २४	१५ १८	१७ ३२	१९ ५५	२२ १५	०० ३४	२ ५४	५ १४	७ १८
17	४	९ ००	१० २५	११ ४७	१३ २०	१५ १४	१७ २८	१९ ५१	२२ ११	०० ३०	२ ५०	५ १०	७ १४
18	५	८ ५६	१० २१	११ ४३	१३ १६	१५ १०	१७ २४	१९ ४७	२२ ०७	०० २६	२ ४६	५ ०६	७ १०
19	६	८ ५२	१० १७	११ ३९	१३ १२	१५ ६	१७ २०	१९ ४३	२२ ०३	०० २२	२ ४२	५ ०३	७ ०६
20	७	८ ४८	१० १३	११ ३५	१३ ८	१५ २	१७ १६	१९ ३९	२१ ५९	०० १८	२ ३८	४ ५९	७ ०२
21	८	८ ४४	१० ९	११ ३१	१३ ४	१४ ५८	१७ १२	१९ ३५	२१ ५५	०० १४	२ ३४	४ ५५	६ ५९
22	९	८ ४०	१० ०५	११ २७	१३ ००	१४ ५४	१७ ०८	१९ ३१	२१ ५१	०० १०	२ ३०	४ ५१	६ ५५
23	१०	८ ३६	१० ०१	११ २३	१२ ५६	१४ ५०	१७ ४	१९ २७	२१ ४७	०० ०६	२ २६	४ ४७	६ ५१
24	११	८ ३२	९ ५७	११ १९	१२ ५२	१४ ४६	१७ ००	१९ २४	२१ ४३	०० ०२	२ २३	४ ४३	६ ४७
25	१२	८ २८	९ ५३	११ १५	१२ ४८	१४ ४२	१६ ५६	१९ २०	२१ ३९	२३ ५८	२ १९	४ ३९	६ ४३
26	१३	८ २५	९ ५०	११ १२	१२ ४५	१४ ३९	१६ ५३	१९ १६	२१ ३६	२३ ५५	२ १५	४ ३५	६ ३९
27	१४	८ २१	९ ४६	११ ०८	१२ ४१	१४ ३५	१६ ४९	१९ १२	२१ ३२	२३ ५१	२ ११	४ ३१	६ ३५
28	१५	८ १७	९ ४२	११ ०४	१२ ३७	१४ ३१	१६ ४५	१९ ०८	२१ २८	२३ ४७	२ ०७	४ २७	६ ३१
29	१६	८ १३	९ ३८	११ ००	१२ ३३	१४ २७	१६ ४१	१९ ०४	२१ २४	२३ ४३	२ ०३	४ २३	६ २७
30	१७	८ ०९	९ ३४	१० ५६	१२ २९	१४ २३	१६ ३७	१९ ००	२१ २०	२३ ३९	१ ५९	४ २०	६ २४
31	१८	८ ५	९ ३०	१० ५२	१२ २५	१४ १९	१६ ३३	१८ ५६	२१ १६	२३ ३५	१ ५५	४ १६	६ २०
फर.	१९	८ १	९ २६	१० ४८	१२ २१	१४ १५	१६ २९	१८ ५२	२१ १२	२३ ३१	१ ५१	४ १२	६ १६
2	२०	७ ५७	९ २२	१० ४४	१२ १७	१४ ११	१६ २५	१८ ४८	२१ ०८	२३ २७	१ ४७	४ ०८	६ १२
3	२१	७ ५३	९ १८	१० ४०	१२ १३	१४ ०७	१६ २१	१८ ४४	२१ ०४	२३ २३	१ ४३	४ ०४	६ ८
4	२२	७ ४९	९ १४	१० ३६	१२ ०९	१४ ०३	१६ १७	१८ ४०	२१ ००	२३ १९	१ ३९	४ ००	६ ०४
5	२३	७ ४५	९ १०	१० ३२	१२ ०५	१३ ५९	१६ १३	१८ ३६	२० ५७	२३ १५	१ ३५	३ ५६	६ ००
6	२४	७ ४१	९ ०६	१० २८	१२ ०१	१३ ५५	१६ ०९	१८ ३२	२० ५३	२३ ११	१ ३२	३ ५२	५ ५६
7	२५	७ ३७	९ ०२	१० २४	११ ५७	१३ ५१	१६ ०५	१८ २८	२० ४९	२३ ७	१ २८	३ ४८	५ ५२
8	२६	७ ३३	८ ५८	१० २०	११ ५३	१३ ४७	१६ ०१	१८ २४	२० ४५	२३ ०३	१ २४	३ ४४	५ ४८
9	२७	७ २९	८ ५४	१० १६	११ ४९	१३ ४३	१५ ५७	१८ २१	२० ४१	२२ ५९	१ २०	३ ४०	५ ४४
10	२८	७ २५	८ ५०	१० १२	११ ४५	१३ ३९	१५ ५३	१८ १७	२० ३७	२२ ५५	१ १६	३ ३६	५ ४०
11	२९	७ २१	८ ४६	१० ०८	११ ४१	१३ ३५	१५ ४९	१८ १३	२० ३३	२२ ५१	१ १२	३ ३२	५ ३६
12	३०	७ १७	८ ४२	१० ०४	११ ३७	१३ ३१	१५ ४५	१८ ०९	२० २९	२२ ४७	१ ०८	३ २८	५ ३२
13	फा.	७ १४	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--

सूर्य संक्रान्तियों में प्रतिवर्ष परिवर्तन के कारण देशी प्रविष्टे एवं अंग्रेज़ी तारीखों में कई बार परस्पर एक दिन का अन्तर पड़ जाता है। सूक्ष्मता के लिए सारिणी का प्रयोग अंग्रेज़ी तारीखानुसार करें।

दैनिक लग्न सारणी फर.-मार्च (फाल्गुन) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

फरवरी	फाल्गुन	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
13	१	८ ३८	१० ००	११ ३३	१३ २७	१५ ४१	१८ ०५	२० २५	२२ ४३	१ ०४	३ २४	५ २८	७ १०
14	२	८ ३४	९ ५६	११ २९	१३ २३	१५ ३७	१८ ०१	२० २१	२२ ३९	१ ००	३ २०	५ २४	७ ०६
15	३	८ ३०	९ ५२	११ २५	१३ १९	१५ ३३	१७ ५७	२० १७	२२ ३५	० ५६	३ १६	५ २०	७ ०२
16	४	८ २६	९ ४८	११ २१	१३ १५	१५ २९	१७ ५३	२० १३	२२ ३१	० ५२	३ १२	५ १६	६ ५८
17	५	८ २२	९ ४४	११ १७	१३ ११	१५ २५	१७ ४९	२० ०९	२२ २७	० ४८	३ ०८	५ १३	६ ५४
18	६	८ १८	९ ४०	११ १३	१३ ०७	१५ २१	१७ ४५	२० ०५	२२ २३	० ४४	३ ०४	५ ०९	६ ५०
19	७	८ १४	९ ३६	११ ०९	१३ ०३	१५ १७	१७ ४१	२० ०१	२२ १९	० ४०	३ ००	५ ०५	६ ४६
20	८	८ ११	९ ३३	११ ०६	१२ ५९	१५ १४	१७ ३७	१९ ५७	२२ १५	० ३६	२ ५६	५ ०१	६ ४२
21	९	८ ०७	९ २९	११ ०२	१२ ५६	१५ १०	१७ ३३	१९ ५३	२२ ११	० ३२	२ ५३	४ ५७	६ ३८
22	१०	८ ०३	९ २५	१० ५८	१२ ५२	१५ ०६	१७ २९	१९ ४९	२२ ०७	० २८	२ ४९	४ ५३	६ ३४
23	११	७ ५९	९ २१	१० ५४	१२ ४८	१५ ०२	१७ २५	१९ ४५	२२ ०३	० २५	२ ४५	४ ४९	६ ३०
24	१२	७ ५५	९ १७	१० ५०	१२ ४४	१४ ५८	१७ २१	१९ ४१	२१ ५९	० २१	२ ४१	४ ४५	६ २६
25	१३	७ ५२	९ १४	१० ४७	१२ ४१	१४ ५५	१७ १८	१९ ३८	२१ ५६	० १८	२ ३८	४ ४२	६ २३
26	१४	७ ४९	९ ११	१० ४४	१२ ३८	१४ ५२	१७ १५	१९ ३५	२१ ५३	० १५	२ ३५	४ ३९	६ २०
27	१५	७ ४६	९ ०८	१० ४१	१२ ३५	१४ ४९	१७ १२	१९ ३२	२१ ५०	० १२	२ ३२	४ ३६	६ १७
28	१६	७ ४३	९ ०५	१० ३८	१२ ३२	१४ ४६	१७ ०९	१९ २९	२१ ४७	० ०९	२ २९	४ ३३	६ १४
29	१७	७ ३९	९ ०१	१० ३४	१२ २८	१४ ४२	१७ ०५	१९ २५	२१ ४३	० ०५	२ २५	४ २९	६ ११
मार्च	१८	७ ३५	८ ५७	१० ३०	१२ २४	१४ ३८	१७ ०१	१९ २१	२१ ३९	० ०१	२ २१	४ २५	६ ०७
2	१९	७ ३१	८ ५३	१० २६	१२ २०	१४ ३४	१६ ५७	१९ १७	२१ ३५	२३ ५७	२ १७	४ २१	६ ०३
3	२०	७ २८	८ ५०	१० २३	१२ १७	१४ ३१	१६ ५३	१९ १३	२१ ३१	२३ ५३	२ १३	४ १७	५ ५९
4	२१	७ २४	८ ४६	१० १९	१२ १३	१४ २७	१६ ४९	१९ ०९	२१ २७	२३ ४९	२ ०९	४ १३	५ ५५
5	२२	७ २०	८ ४२	१० १५	१२ ०९	१४ २३	१६ ४५	१९ ०५	२१ २३	२३ ४६	२ ०५	४ १०	५ ५१
6	२३	७ १६	८ ३८	१० ११	१२ ०५	१४ १९	१६ ४१	१९ ०१	२१ १९	२३ ४२	२ ०१	४ ६	५ ४७
7	२४	७ १२	८ ३४	१० ०७	१२ ०१	१४ १५	१६ ३७	१८ ५७	२१ १६	२३ ३८	१ ५७	४ ०२	५ ४३
8	२५	७ ०८	८ ३०	१० ०३	११ ५७	१४ ११	१६ ३३	१८ ५३	२१ १२	२३ ३४	१ ५३	३ ५८	५ ३९
9	२६	७ ०४	८ २६	९ ५९	११ ५३	१४ ०७	१६ ३०	१८ ५०	२१ ०८	२३ ३०	१ ५०	३ ५४	५ ३५
10	२७	७ ००	८ २२	९ ५५	११ ४९	१४ ०३	१६ २६	१८ ४६	२१ ०४	२३ २६	१ ४६	३ ५०	५ ३१
11	२८	६ ५६	८ १८	९ ५१	११ ४५	१३ ५९	१६ २३	१८ ४२	२१ ००	२३ २२	१ ४२	३ ४६	५ २७
12	२९	६ ५२	८ १४	९ ४७	११ ४१	१३ ५५	१६ १९	१८ ३९	२० ५६	२३ १९	१ ३८	३ ४२	५ २४
13	३०	६ ४८	८ १०	९ ४३	११ ३७	१३ ५१	१६ १५	१८ ३५	२० ५२	२३ १५	१ ३५	३ ३९	५ २०
14	चैत्र	६ ४४	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी मार्च-अप्रैल (चैत्र) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

मार्च	चैत्र	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	८ ०६	९ ३९	११ ३३	१३ ४७	१६ ११	१८ ३१	२० ४८	२३ ११	१ ३१	३ ३५	५ १६	६ ४०
15	२	८ ०२	९ ३५	११ २९	१३ ४३	१६ ०७	१८ २७	२० ४४	२३ ०७	१ २७	३ ३१	५ १२	६ ३६
16	३	७ ५८	९ ३१	११ २५	१३ ३९	१६ ०३	१८ २३	२० ४०	२३ ०३	१ २३	३ २७	५ ०८	६ ३२
17	४	७ ५४	९ २७	११ २१	१३ ३५	१५ ५९	१८ १९	२० ३६	२२ ५९	१ १९	३ २३	५ ०४	६ २८
18	५	७ ५०	९ २३	११ १७	१३ ३१	१५ ५५	१८ १५	२० ३२	२२ ५५	१ १५	३ १९	५ ००	६ २४
19	६	७ ४६	९ १९	११ १३	१३ २७	१५ ५१	१८ ११	२० २८	२२ ५१	१ ११	३ १५	४ ५६	६ २०
20	७	७ ४२	९ १५	११ ०९	१३ २४	१५ ४७	१८ ०७	२० २४	२२ ४७	१ ०७	३ ११	४ ५२	६ १६
21	८	७ ३८	९ ११	११ ०५	१३ २०	१५ ४३	१८ ०३	२० २०	२२ ४३	१ ०३	३ ०७	४ ४८	६ १२
22	९	७ ३४	९ ०७	११ ०१	१३ १६	१५ ३९	१७ ५९	२० १६	२२ ३९	०० ५९	३ ०३	४ ४४	६ ०८
23	१०	७ ३१	९ ०३	१० ५८	१३ १२	१५ ३५	१७ ५५	२० १२	२२ ३५	०० ५५	२ ५९	४ ४०	६ ४
24	११	७ २७	८ ५९	१० ५४	१३ ८	१५ ३१	१७ ५१	२० ०८	२२ ३१	०० ५१	२ ५५	४ ३७	६ ००
25	१२	७ २३	८ ५५	१० ५०	१३ ४	१५ २७	१७ ४७	२० ०४	२२ २७	०० ४७	२ ५१	४ ३३	५ ५६
26	१३	७ १९	८ ५१	१० ४६	१३ ०	१५ २३	१७ ४३	२० ०१	२२ २३	०० ४३	२ ४७	४ २९	५ ५२
27	१४	७ १५	८ ४८	१० ४२	१२ ५६	१५ १९	१७ ३९	१९ ५७	२२ १९	०० ३९	२ ४३	४ २५	५ ४८
28	१५	७ ११	८ ४४	१० ३८	१२ ५२	१५ १५	१७ ३५	१९ ५३	२२ १५	०० ३५	२ ४०	४ २१	५ ४४
29	१६	७ ०७	८ ४०	१० ३४	१२ ४८	१५ ११	१७ ३१	१९ ४९	२२ ११	०० ३१	२ ३६	४ १७	५ ४१
30	१७	७ ०३	८ ३६	१० ३०	१२ ४५	१५ ०७	१७ २७	१९ ४५	२२ ७	०० २७	२ ३२	४ १३	५ ३७
31	१८	६ ५९	८ ३२	१० २६	१२ ४१	१५ ०३	१७ २३	१९ ४१	२२ ०३	०० २३	२ २८	४ ०९	५ ३३
अप्रै.	१९	६ ५५	८ २८	१० २२	१२ ३७	१४ ५९	१७ १९	१९ ३७	२१ ५९	०० १९	२ २४	४ ०५	५ २९
2	२०	६ ५१	८ २४	१० १८	१२ ३३	१४ ५५	१७ १५	१९ ३३	२१ ५५	०० १५	२ २०	४ ०१	५ २५
3	२१	६ ४७	८ २०	१० १४	१२ २९	१४ ५१	१७ ११	१९ २९	२१ ५१	०० ११	२ १६	३ ५७	५ २१
4	२२	६ ४३	८ १६	१० १०	१२ २५	१४ ४७	१७ ०७	१९ २६	२१ ४७	०० ०७	२ १२	३ ५३	५ १७
5	२३	६ ३९	८ १२	१० ०६	१२ २१	१४ ४३	१७ ०३	१९ २२	२१ ४४	०० ०४	२ ०८	३ ४९	५ १३
6	२४	६ ३६	८ ०९	१० ०२	१२ १७	१४ ३९	१६ ५९	१९ १८	२१ ४०	२४ ००	२ ०४	३ ४५	५ ०९
7	२५	६ ३२	८ ०५	९ ५९	१२ १३	१४ ३५	१६ ५६	१९ १४	२१ ३६	२३ ५६	२ ००	३ ४१	५ ०५
8	२६	६ २८	८ ०१	९ ५५	१२ ०९	१४ ३१	१६ ५२	१९ १०	२१ ३२	२३ ५२	१ ५६	३ ३७	५ ०१
9	२७	६ २४	७ ५७	९ ५१	१२ ०५	१४ २७	१६ ४८	१९ ०६	२१ २८	२३ ४८	१ ५२	३ ३३	४ ५८
10	२८	६ २०	७ ५३	९ ४७	१२ ०१	१४ २४	१६ ४४	१९ ०२	२१ २४	२३ ४४	१ ४८	३ २९	४ ५४
11	२९	६ १६	७ ४९	९ ४३	११ ५७	१४ २०	१६ ४०	१८ ५८	२१ २०	२३ ४०	१ ४४	३ २५	४ ५०
12	३०	६ १२	७ ४५	९ ३९	११ ५३	१४ १६	१६ ३६	१८ ५४	२१ १६	२३ ३६	१ ४१	३ २१	४ ४६
13	वै.	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

भारत के प्रमुख नगरों में लग्नों का प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल जानना

इस पंचांग के गत पृष्ठों में जो दैनिक लग्नसारणी दी गई है, वह जालन्धर के अक्षांश ३१।१९ पर आधारित है। भारत के किसी अन्य नगर में लग्नारम्भ अथवा समाप्तिकाल जानने के लिए नीचे दी गई तालिका में मेष, वृषादि राशियों के नीचे लिखे संस्कार अनुसार जालन्धर सारणी में जमा (+) करने अथवा (–) देने से आपको अभीष्ट तारीख एवं नगर में लग्नों का समाप्तिकाल भा. स्टै. टाईम में ज्ञात हो जाएगा। **उदाहरणस्वरूप**–मान लो आपने 16 जुलाई, 2019 ई. को दिल्ली में कन्या लग्न का समाप्तिकाल जानना है, तो सर्व प्रथम जालन्धर की दैनिक लग्न सारणी में देखने पर हमें 16 जुलाई को कन्या लग्न १२।४१ पर समाप्ति काल लिखा मिला है। तदनन्तर आगे सारणी में **दिल्ली** के आगे कन्या लग्न के नीचे देखने पर हमें –८ मिनट मिले। इन्हें जालन्धर में कन्या ल. समा., १२।४१ (घं. मिं.) में से और घटाने पर हमें **१२।३३ (घं. मिं.)** पर **कन्या लग्न** समाप्ति काल प्राप्त हुआ। **कन्या लग्न** का समाप्ति काल ही **तुला लग्न** का **प्रारम्भकाल** होगा। **नोट**–नीचे **लग्न संस्कार तालिका** में यदि किसी अभीष्ट नगर का नाम न मिले, तो आप अपने निकटस्थ नगर का संस्कार ग्रहण कर सकते हैं। पं. विवेक शर्मा.

नाम शहर	मेष मिन्ट	वृष मिन्ट	मिथु. मिन्ट	कर्क मिन्ट	सिंह मिन्ट	कन्या मिन्ट	तुला मिन्ट	वृश्चि. मिन्ट	धनु मिन्ट	मकर मिन्ट	कुम्भ मिन्ट	मीन मिन्ट
अमृतसर	+२	+२	+२	+२	+३	+२	+३	+३	+३	+३	+२	+२
अम्बाला	–५	–५	–५	–३	–३	–६	–५	–५	–४	–५	–५	–५
अजमेर	+१२	+१२	+१३	+१०	+६	+४	–१	–३	–४	–१	+६	+१०
अबोहर	+५	+५	+५	+६	+५	+५	+६	+६	+६	+६	+५	+५
अहमदाबाद	+२६	+३०	+३०	+२५	+१७	+७	–१	–५	–४	+२	+११	+१८
अलाहाबाद	–१५	–१२	–१३	–१५	–२१	–२९	–३४	–३७	–३६	–३२	–२६	–२०
अलीगढ़	–४	–३	–४	–६	–१०	–१४	–१७	–१८	–१८	–१५	–१२	–७
अयोध्यां	–१८	–१८	–१५	–१९	–२१	–२५	–२८	–३०	–२८	–२७	–२४	–१६
अलवर	+२	+३	+३	+०	+१	–४	–६	–७	–७	–४	+१	+४
अल्मोड़ा (उ.ख.)	–१५	–१५	–१५	–१६	–१७	–१७	–१९	–१९	–१९	–१८	–१८	–१६
आगरा	–४	–२	–३	–६	–१०	–१४	–१७	–१९	–१९	–१५	–१२	–७
अगरतला	–५०	–४७	–४६	–५३	–६०	–६७	–७५	–७८	–७६	–७३	–६४	–५३
अल्मोड़ा	–१५	–१५	–१५	–१६	–१७	–१७	–१९	–१९	–१९	–१८	–१८	–१६
इन्दौर	+१३	+१७	+१५	+१०	–१	–९	–१६	–२१	–१९	–१२	–३	+५
ऊना (हि. प्र.)	–३	–३	–३	–३	–२	–२	–२	–२	–२	–२	–२	–३
उधमपुर	–२	–२	–२	+११	+३	+४	+७	+७	+७	+६	+५	+२
उज्जैन	+१७	+१६	+१४	+८	+०	–७	–१४	–१९	–१७	–१०	–२	+६
उदयपुर	+१९	+२१	+२०	+१५	+७	+२	–४	–८	–६	–१	+६	+१३
उत्तरकाशी	–११	–११	–११	–११	–१२	–१२	–१२	–१२	–१२	–१२	–१२	–११
करनाल	–५	–५	–५	–५	–५	–६	–६	–७	–७	–५	–४	–३
कालका	–५	–५	–५	–४	–४	–५	–६	–६	–७	–७	–४	–३
कुरुक्षेत्र	–४	–३	–३	–४	–५	–६	–६	–७	–७	–५	–३	–३
करतारपुर	+१	+१	+०	+०	–१	–१	+१	–०	–०	–०	–०	–१
कोटखाई	–७	–७	–७	–७	–७	–८	–७	–७	–७	–६	–६	–७
कोटा (राज.)	+९	+११	+१०	+५	–१	–६	–११	–१४	–१३	–८	–२	+४
कपूरथला	+१	+१	+०	–०	–०	–१	+०	–०	–०	–०	–०	–१
काठमण्डू	–३२	–३१	–३१	–३०	–३३	–३८	–४०	–४२	–४२	–४०	–३६	–३३
कोलकत्ता	–३७	–३२	–३५	–४०	–४९	–५८	–६४	–६९	–६८	–६१	–५३	–४४
कानपुर	–११	–१०	–१०	–१४	–१८	–२२	–२८	–३०	–२९	–२५	–२१	–१६
कांगड़ा	–५	–५	–५	–५	–५	–५	–५	–५	–४	–४	–४	–४

नाम शहर	मेष मिन्ट	वृष मिन्ट	मिथु. मिन्ट	कर्क मिन्ट	सिंह मिन्ट	कन्या मिन्ट	तुला मिन्ट	वृश्चि. मिन्ट	धनु मिन्ट	मकर मिन्ट	कुम्भ मिन्ट	मीन मिन्ट
कुल्लू	–७	–७	–७	–६	–६	–६	–५	–४	–४	–४	–५	–५
कठुआ	–२	–२	–२	–१	–०	+१	+२	+२	+२	+२	+२	+१
कटड़ा	+३	+३	+२	+४	+६	+७	+७	+७	+७	+६	+६	+३
किश्तवाड़	–१	–१	–१	–०	+१	+१	+१	+२	+२	+२	+१	+१
खन्ना (पंजा.)	–२	–३	–३	–२	–२	–३	–३	–३	–३	–२	–२	–३
ग्वालियर	–२	+१	–१	–५	–१०	–१५	–१९	–२२	–२१	–१७	–१२	–७
गुरदासपुर	–१	–१	–१	+०	+१	+०	+१	+१	+१	+१	+१	+०
गोरखपुर	–२३	–२१	–२२	–२४	–२७	–३२	–३५	–३७	–३६	–३२	–२७	–२४
गुड़गांव	–१	–१	–१	–३	–३	–७	–१०	–११	–११	–९	–६	–४
गुवाहाटी	–५५	–४८	–५३	–५५	–६१	–६८	–७२	–७५	–७३	–६९	–६४	–६०
गाज़ियाबाद	–२	–२	–३	–५	–८	–१०	–१२	–१३	–१३	–११	–०९	–६
गंगानगर	+६	+६	+६	+७	+७	+६	+६	+६	+६	+७	+७	+६
गया (बिहार)	–२६	–१८	–२३	–२७	–३३	–४२	–४७	–५१	–४१	–४४	–३७	–३२
चण्डीगढ़	–५	–५	–५	–५	–६	–६	–६	–६	–६	–६	–६	–५
चिन्तपूर्णी	–२	–१	–२	–२	–३	–३	–३	–२	–२	–२	–२	–१
चम्बा	–६	–६	–६	–५	–४	–२	+१	+२	+१	+०	+३	–४
जयपुर	+७	+८	+७	+३	+२	–३	–७	–९	–९	–७	–२	+३
ज्वालामुखी	–५	–५	–६	–५	–५	–५	–५	–५	–४	–४	–४	–४
जम्मू	–१	–२	–१	–१	+१	+४	+६	+७	+६	+५	+२	+१
जोधपुर	+१९	+२१	+२०	+१५	+१०	+५	+१	–२	–१	+४	+९	+१३
जीन्द	+०	+२	+१	–१	–३	–५	–६	–७	–७	–५	–४	–१
जैसलमेर	+२६	+२८	+२७	+२३	+१८	+१४	+१०	+९	+१०	+१३	+१७	+२२
झाँसी	–२	+१	+०	–६	–११	–१७	–२२	–२५	–२३	–१८	–१३	–७
जगन्नाथपुरी	–२२	–१६	–१३	–२६	–३७	–४९	–५९	–६४	–६३	–५५	–४४	–३२
दिल्ली	–२	–१	–१	–४	–४	–८	–११	–१२	–१२	–१०	–७	–५
दुर्ग (छ्त्तीसगढ़)	–६	–०	–२	–१०	–१९	–२७	–३७	–४२	–४२	–३१	–२१	–१४
देहरादून	–१०	–१०	–९	–१०	–११	–११	–१२	–१२	–१२	–११	–११	–१०
धर्मशाला	–५	–५	–६	–५	–५	–५	–५	–५	–४	–४	–४	–४

नाम शहर	मेष मिन्ट	वृष मिन्ट	मिथु. मिन्ट	कर्क मिन्ट	सिंह मिन्ट	कन्या मिन्ट	तुला मिन्ट	वृश्चि. मिन्ट	धनु मिन्ट	मकर मिन्ट	कुम्भ मिन्ट	मीन मिन्ट
नाहन(हि.प्र.)	-६	-६	-६	-५	-५	-६	-६	-७	-७	-५	-५	-६
नंगल (पंजा.)	-३	-३	-३	-४	-४	-४	-४	-४	-३	-३	-३	-३
नैनीताल	-१३	-१२	-१३	-१४	-१६	-१७	-१८	-२०	-१९	-१७	-१७	-१४
नवलगढ़	+७	+९	+९	+८	+६	+३	+१	+२	-२	-१	+४	+४
नवांशहर	-२	-२	-२	-२	-३	-३	-२	-२	-३	-३	-२	-२
नागपुर	+३	+७	+५	+४	-१४	-२३	-३२	-३५	-३३	-२७	-७	-६
नदौन(हि.प्र.)	-३	-३	-३	-४	-४	-४	-४	-३	-३	-३	-३	-३
नाभा (पंजा.)	-२	-२	-२	-२	-२	-२	-३	-३	-२	-२	-२	-२
पटियाला	-३	-३	-३	-४	-३	-३	-५	-५	-४	-३	-३	-३
पानीपत	-६	-६	-६	-६	-६	-७	-७	-७	-६	-६	-६	-५
पठानकोट	-४	-३	-३	-२	-२	-२	-२	-२	-१	-१	-१	-१
पुंछ	-१	-२	-१	+१	+४	+८	+१२	+१४	+१२	+९	+६	+३
प्रयाग	-१६	-१४	-१५	-२०	-२४	-३०	-३५	-३७	-३७	-३१	-२७	-२१
पूना (महा.)	+२८	+३५	+३७	+२४	+११	-२	-१३	-१९	-१७	-९	+३	+१७
पंचकूला	-५	-५	-५	-४	-४	-६	-६	-६	-५	-५	-५	-५
पटना	-२९	-२६	-२३	-३०	-३५	-४२	-४७	-४९	-४९	-४६	-४०	-३३
पालमपुर	-६	-६	-६	-५	-५	-५	-६	-६	-५	-५	-५	-५
फरीदकोट	+३	+४	+४	+३	+३	+२	+४	+३	+३	+३	+२	+२
फगवाड़ा	-१	-१	-१	-१	-२	-२	-२	-१	-१	-१	-१	-१
फाजिल्का	+५	+५	+६	+६	+५	+५	+६	+६	+६	+६	+५	+५
फिरोज़पुर	+४	+४	+५	+४	+३	+३	+४	+४	+४	+४	+३	+३
फरीदाबाद	-३	-३	-२	-५	-८	-९	-१२	-१३	-१३	-११	-१०	-६
बटाला	+१	+१	+१	+२	+१	+१	+२	+२	+२	+२	+१	+१
वाराणसी	-२०	-१८	-१९	-२३	-३०	-३४	-३९	-४२	-४१	-३७	-३१	-२५
बिलासपुर	-५	-५	-५	-४	-४	-५	-४	-४	-४	-३	-३	-४
बंगलौर	+२१	+२९	+२७	+१३	-१	-२१	-३६	-४४	-४१	-२८	-११	+६
बरेली	-११	-११	-११	-१३	-१६	-१८	-२०	-२१	-२१	-१९	-१८	-१४
बीकानेर	+१३	+१५	+१५	+१४	+१३	+९	+८	+६	+६	+८	+११	+१४
बड़ौदा	+२६	+३०	+२९	+२३	+१६	+७	+२	-५	-५	+१	+११	+११
बुलन्दशहर	-५	-५	-५	-७	-९	-१२	-१४	-१५	-१५	-१३	-१२	-८
बरनाला	-१	-१	-२	-१	-१	-१	-१	-१	-०	-०	-०	-०
विशाखापटनम	-९	-१	+१	-१३	-२६	-४०	-५२	-५८	-५६	-४७	-३४	-२०
भटिण्डा	+३	+३	+३	+३	+३	+२	+४	+३	+३	+३	+२	+२
भुवनेश्वर	-२३	-१८	-२०	-२८	-३६	-४९	-५८	-६३	-६२	-५४	-४३	-३२
भरतपुर	-२	+०	+०	-५	-८	-१२	-१५	-१७	-१७	-१२	-१०	-५
भोपाल	+६	+१०	+७	+१	-६	-१३	-२०	-२६	-२४	-१७	-९	-१
मेरठ(उ.प्र.)	-६	-५	-६	-७	-९	-११	-१२	-१२	-१२	-१०	-९	-७

नाम शहर	मेष मिन्ट	वृष मिन्ट	मिथु. मिन्ट	कर्क मिन्ट	सिंह मिन्ट	कन्या मिन्ट	तुला मिन्ट	वृश्चि. मिन्ट	धनु मिन्ट	मकर मिन्ट	कुम्भ मिन्ट	मीन मिन्ट
मुज़फ्फरनगर	-६	-५	-६	-७	-९	-११	-१२	-१३	-१३	-११	-१०	-७
मुरादाबाद	-१०	-९	-१०	-११	-१४	-१५	-१६	-१८	-१८	-१६	-१३	-१२
मण्डी(हि.प्र.)	-७	-७	-७	-७	-७	-६	-४	-४	-४	-६	-६	-६
मोगा	+१	+१	+१	+२	+१	+१	+२	+२	+२	+२	+१	+१
मथुरा	-२	-१	-२	-४	-८	-१२	-१५	-१६	-१६	-१३	-१०	-५
मद्रास	+१०	+१८	+१६	+१	-१३	-३१	-४६	-५५	-५२	-४०	-२३	-०५
मैसूर	+२६	+३६	+३७	+१९	+२	-१७	-३३	-४१	-३९	-२६	-९	+१०
मुक्तसर	+४	+४	+३	+४	+४	+३	+५	+४	+४	+४	+३	+३
मलेरकोटला	-१	-१	-१	-१	-१	-२	+०	-१	-१	-१	-२	-२
मुम्बई	+३१	+३७	+३५	+२५	+१७	+३	-८	-१४	-१२	-३	+९	+२१
रोपड़	-४	-३	-३	-४	-३	-४	-४	-४	-४	-४	-४	-३
राँची	-२५	-२१	-२३	-२८	-३६	-४५	-५१	-५७	-५५	-४८	-३९	-३१
रायपुर (छत्ती.)	-८	-२	-४	-१२	-२१	-२९	-३९	-४४	-४४	-३४	-२३	-१६
रोहतक	-१	+१	+१	-२	-२	-६	-९	-१०	-१०	-८	-५	-३
रूड़की	-७	-७	-७	-८	-९	-१०	-११	-११	-११	-१०	-१०	-८
लुधियाना	-२	-२	-१	-२	-१	-२	-२	-२	-२	-१	-१	-२
लखनऊ	-१४	-१२	-१४	-१६	-२१	-२४	-२९	-३०	-३०	-२६	-२३	-१८
शिलांग	-५५	-४९	-५२	-५५	-६१	-६९	-७४	-७६	-७५	-७१	-६५	-६१
श्रीनगर	-३	-३	-३	-१	+२	+८	+११	+१२	+११	+७	+४	+१
शिमला	-६	-६	-६	-६	-७	-७	-७	-७	-७	-७	-७	-६
सोलन	-६	-५	-६	-६	-६	-६	-५	-५	-६	-६	-६	-६
सोनीपत	-२	-२	-२	-२	-३	-७	-१०	-११	-११	-९	-७	-५
सहारनपुर	-६	-६	-५	-७	-८	-९	-१०	-१०	-१०	-९	-९	-७
सागर(म.प्र.)	-१	-२	+०	-५	-१३	-१८	-२५	-२९	-२८	-२२	-१५	-७
सुन्दरनगर	-६	-६	-६	-५	-४	-४	-४	-४	-४	-४	-४	-५
सूरत	+२८	+३३	+३१	+२४	+१५	+४	-४	-९	-८	+१	+१२	+२१
शहडोल(म.प्र.)	-१०	-७	-९	-१५	-२३	-३०	-३७	-४२	-४०	-३२	-२५	-१६
शाहपुर	-४	-४	-५	-५	-४	-४	-४	-४	-३	-३	-३	-३
हरिद्वार	-८	-८	-८	-९	-९	-१२	-१३	-१३	-१३	-१२	-१२	-१०
हैदराबाद	+११	+१८	+१५	+४	-७	-२१	-३३	-३९	-३७	-२८	-१५	-१
होशियारपुर	-३	-४	-३	-३	-२	-२	-१	-१	-१	-१	-२	-३
हमीरपुर(हि.प्र.)	-५	-५	-४	-४	-३	-३	-२	-२	-२	-२	-२	-४
हाँसी	+२	+२	+३	+२	+०	-४	-५	-७	-५	-४	-१	+२
हिसार	+२	+३	+२	+१	+०	-२	-३	-४	-४	-२	-२	+१

अनिष्ट ग्रहों की शान्ति के लिए उपयोगी रत्न (नग) एवं उपरत्न

लेखक–पं. विवेक शर्मा ज्योतिषी (M.A., LLB.)

शुभ ग्रहों के प्रभाव में वृद्धि और अनिष्ट ग्रहों के कुप्रभाव के निवारण हेतु उपयुक्त ग्रह रत्न (नग) धारण करना अत्यन्त लाभदायक सिद्ध होते हैं। अपनी जन्म कुण्डली में स्थित ग्रहों की स्थिति एवं अपनी राशि के अनुसार ही उपयुक्त रत्न (नग) का चयन करना चाहिए, **अन्यथा कई बार लाभ की अपेक्षा गलत नग धारण करने से हानि की सम्भावना हो जाती है।** उनका परिचय से पूर्व यदि सुयोग्य ज्योतिषी से परामर्श कर लिया जावे तो लाभप्रद होगा। धारण करने की विधि, उपयोगादि का **संक्षिप्त विवरण** लिख रहे हैं–

सूर्य रत्न माणक (RUBY)

संस्कृत में इसे माणिक्य, पद्मराग, हिन्दी में माणक, **मानिक, अंग्रेज़ी** में रूबी कहते हैं। सूर्य रत्न होने से इस ग्रह रत्न का अधिष्ठाता सूर्यदेव है।

पहचान विधि–(1) असली माणिक्य लाल सुर्ख वर्ण का पारदर्शी, स्निग्ध-कान्तियुक्त और कुछ भारीपन वज़न लिए होते हैं। अर्थात् हथेली में रखने से हल्की ऊष्णता एवं सामान्य से कुछ अधिक वज़न का अनुभव होता है। (2) **कांच के पात्र** में रखने से इसकी हल्की लाल किरणें चारों ओर से निकलती दिखाई देंगी। (3) **गाय के दूध में** असली माणिक्य रखा जाये तो दूध का रंग गुलाबी दिखलाई देगा।

धारण विधि–माणिक्य रत्न रविवार को सूर्य की होरा में, कृतिका, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा नक्षत्रों, **रविपुष्य योग में सोने अथवा ताँबे की अंगूठी में जड़वा कर तथा सूर्य के बीजमन्त्रों द्वारा अंगूठी अभिमन्त्रित करके अनामिका अंगुली में धारण करना चाहिए। इसका वजन ३, ५ ७ अथवा ९ रत्ति के क्रम से होना चाहिए।**

सूर्य बीज मन्त्र–ॐ ह्रां, ह्रीं, ह्रौं सः सूर्याय नमः

धारण करने के पश्चात् गायत्री मन्त्र की ३ माला का पाठ, हवन एवं **सूर्य भगवान को** विधिपूर्वक अर्घ्य प्रदान करना तथा ताम्र बर्तन, कनक, नारियल, मानक, गुड़, लाल वस्त्रादि सूर्य से सम्बन्धित वस्तुओं का दान करना चाहिए।

विधिपूर्वक माणिक्य धारण करने से राजकीय क्षेत्रों में प्रतिष्ठा, भाग्योन्नति, पुत्र संतान लाभ, तेजबल में वृद्धिकारक तथा हृदय रोग, चक्षुरोग, रक्त विकार, शरीर दौर्बल्यादि में लाभकारी होता है।

मेष, कर्क, सिंह तुला, वृश्चिक एवं धनु राशि अथवा इसी लग्न वालों को मानक धारण करना शुभ लाभप्रद रहता है अथवा जिनकी चन्द्र कुण्डली में सूर्य योगकारक होता हुआ भी प्रभावी न हो रहा हो, उन्हें भी माणिक्य धारण शुभ रहता है।

चन्द्र-रत्न मोती (PEARL)

चन्द्र-रत्न मोती को संस्कृत में मौक्तिक, चन्द्रमणि इत्यादि, हिन्दी-पंजाबी में मोती एवं अंग्रेज़ी में पर्ल **(Pearl) कहा जाता है। मोती या मुक्ता रत्न का स्वामी चन्द्रमा है।**

पहचान–शुद्ध एवं श्रेष्ठ मोती गोल, श्वेत, उज्ज्वल, चिकना, चन्द्रमा के समान कान्तियुक्त, निर्मल एवं हल्कापन लिए होता है।

परीक्षा–(1) गोमूत्र को किसी मिट्टी के बर्तन में डालकर उसमें मोती रात भर रखें, यदि वह अखण्डित रहे तो मोती को शुद्ध (सुच्चा) समझें। (2) पानी से भरे शीशे के गिलास में मोती डाल दें यदि पानी से किरणें सी निकलती दिखलाई पड़ें, तो मोती असली जानें। सुच्चा मोती के अभाव में **चन्द्रकान्त मणि** अथवा **सफेद पुखराज** धारण किया जा सकता है।

असली शुद्ध मोती धारण करने से **मानसिक शक्ति का विकास, शारीरिक सौन्दर्य की वृद्धि, स्त्री एवं धनादि सुखों की प्राप्ति होती है। इसका प्रयोग स्मरण शक्ति में भी वृद्धिकारक होता है।**

रोग शान्ति–चिकित्सा शास्त्र में भी मोती या मुक्ता भस्म का उपयोग मानसिक रोगों, मूर्छा-मिरगी, उन्माद, रक्तचाप, उदर-विकार, पत्थरी, दन्तरोगादि में।

धारण विधि–मोती चाँदी की अंगूठी में शुक्ल पक्ष के सोमवार को पूर्णिमा के दिन, चन्द्रमा की होरा में गंगा जल, कच्चा दूध व पाण्डुलादि में डूबोते हुए **'ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः'** के बीजमन्त्र का पाठ ११००० की संख्या में करने के पश्चात् धारण करना चाहिए। तदुपरान्त चावल, चीनी, क्षीर, श्वेत फल एवं वस्त्रादि का दान करना शुभ होगा।

मोती २, ४, ६ अथवा ११ रत्ति का कनिष्ठका अंगुली में **हस्त, रोहिणी अथवा श्रवण** नक्षत्र में सुयोग्य ज्योतिषी द्वारा बताए गए मुहूर्त में धारण करना चाहिए। **मेष, वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, वृश्चिक, मीन राशि/लग्न वालों को मोती शुभ रहता है।**

चन्द्रमा का उपरत्न–चन्द्रकान्त मणि (Moon Light Stone)–यह उपरत्न चाँदनी जैसे चमक लिए हुए चन्द्रमा का 'उपरत्न' (मोती का पूरक) माना जाता है। इसको हिलाने से, इस पर एक दुधिया जैसी प्रकाश रेखा चमकती है। यह रत्न भी मानसिक शान्ति, प्रेरणा, स्मरण शक्ति में वृद्धि तथा प्रेम में सफलता प्रदान करता है। लाभ की दृष्टि से चन्द्रकान्त मणि मलाई के रंग का (सफेद और पीले के बीच का) उत्तम माना जाता है। **इसे चाँदी में ही धारण करना चाहिए।**

मंगल-रत्न मूंगा (CORAL)

इसे **संस्कृत** में अंगारकमणि तथा **अंग्रेज़ी** में **कोरल** (Coral) कहते हैं।

गोल, चिकना, चमकदार एवं औसत से अधिक वज़नी, सिन्धूरी से मिलते-जुलते रंग का मूंगा श्रेष्ठ माना जाता है। इसका स्वामी ग्रह **मंगल** है।

परीक्षा–(१) **असली मूंगे को** खून में डाल दिया जाये तो उसके चारों ओर गाढ़ा रक्त जमा होने लगता है। (२) **असली मूंगा यदि** गौ के दूध में डाल दिया जाए तो उसमें लाल रंग की झाई सी दीखने लगती है।

श्रेष्ठ जाति का मूंगा धारण करने से **भूमि, पुत्र एवं भ्रातृ सुख, नीरोगता** आदि की प्राप्ति होती है। इसके **अतिरिक्त रक्त-विकार, भूत-प्रेत बाधा, दुर्बलता, मन्दाग्नि, हृदय-रोग, वायु-कफादि विकार, पेट विकारादि में मूंगे की भस्म अथवा मिट्टी** का प्रयोग किया जाता है। **मेष, कर्क, सिंह, तुला, वृश्चिक, मकर, कुम्भ व मीन राशि एवं लग्न वालों** को सुयोग्य ज्योतिषी के परामर्शानुसार धारण करना लाभप्रद होगा।

धारण विधि–शुक्ल पक्ष के मंगलवार को प्रातः मंगल की होरा में मृगशिर, चित्रा या धनिष्ठा

नक्षत्र में सोने या तांबे के अंगूठी में जड़वा कर, बीज मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित करके अनामिका अंगुली में ६.८,१० या १२ रत्ति के वजन में धारण करना कल्याणकर होता है। धारणोपरान्त मंगल स्तोत्र एवं मंगल ग्रह का दान करना शुभ होता है।

भौम बीज मन्त्र–ॐ क्रां, क्रीं, क्रौं सः भौमाय नमः

शारीरिक स्वास्थ्य एवं कुं. में मंगल नीच राशिस्थ हो तो सफेद मूँगा भी धारण किया जाता है।

बुध रत्न पन्ना (EMERALD)

''पन्ना'' बुध ग्रह का मुख्य रत्न है। **संस्कृत** में मरकतमणि, फारसी में जमरूद व अंग्रेज़ी में इमराल्ड (Emerald) । पन्ना रत्न हरे रंग, स्वच्छ, पारदर्शी कोमल, चिकना व चमकदार होता है।

परीक्षा–(1) शीशे के गिलास में साफ पानी और पन्ना डाल दिया जाए तो हरी किरणें निकलती दिखाई देंगी। (2) शुद्ध पन्ने को हाथ में लेने पर वह हल्का, कोमल व आँखों को शीतलता प्रदान करता है।

गुण–'पन्ना' धारण करने से **बुद्धि तीव्र एवं स्मरण शक्ति बढ़ती है। विद्या, बुद्धि, धन एवं व्यापार में वृद्धि के लिए लाभप्रद** माना जाता है। पन्ना सुख एवं **आरोग्यकारक** भी है। **यह रत्न जादू-टोने, रक्त विकार, पथरी, बहुमूत्र, नेत्र रोग, दमा, गुर्दे के विकार, पाण्डु, मानसिक विकलतादि रोगों में लाभकारी माना जाता है।**

धारण विधि–यह नग शुक्ल पक्ष के बुधवार को अश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती, पू.फा. अथवा पुष्य नक्षत्रों में अथवा बुध की होरा में सोने की अंगूठी में दाएं हाथ की कनिष्ठिका (छोटी) अंगुली में बुधग्रह के बीजमन्त्र से अभिमंत्रित करते हुए धारण करना चाहिए। इसका वजन ३, ६, ७ रत्ति होना चाहिए।

बुध बीज मन्त्र–ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः

वृष, मिथुन, सिंह, कन्या, मकर व मीन राशि वालों को विशेष लाभप्रद रहता है।

गुरु-रत्न पुखराज (TOPAZ)

पुखराज गुरु (बृहस्पति) ग्रह का मुख्य रत्न है। **संस्कृत में** इसे पुष्प राजा, **हिन्दी में पुखराज**, व अंग्रेज़ी में टोपाज (Topaz) कहते हैं।

पहचान विधि–जो पुखराज स्पर्श में चिकना, हाथ में लेने पर कुछ भारी लगे, पारदर्शी, प्राकृतिक चमक से युक्त हो वह उत्तम कोटि का माना जाता है।

परीक्षा–(i) जहां किसी विषैले कीड़े ने काटा हो, वहां पर असली पुखराज घिस कर लगाने से विष उतर जाता है। (ii) चौबीस घण्टे कच्चे दूध में रखने के बाद यदि चमक में अन्तर न पड़े तो पुखराज असली होगा। इत्यादि।

गुण–पुखराज धारण करने से **बल, बुद्धि, स्वास्थ्य एवं आयु** की वृद्धि होती है। **वैवाहिक सुख, पुत्र सन्तान कारक एवं धर्म-कर्म** में प्रेरक होता है। प्रेत-बाधा का निवारण एवं स्त्री के **विवाहसुख की बाधा को दूर करने में** सहायक होता है।

औषधी प्रयोग–इसको वैद्य के परामर्शानुसार केवड़ा एवं शहदादि के साथ देने से **पीलिया, तिल्ली, पाण्डु रोग, खांसी, दन्त रोग, मुख की दुर्गन्ध, बवासीर, मन्दाग्नि, पित्त-ज्वरादि** में लाभदायक होता है।

धारण विधि–पुखराज रत्न ३,५,७,९ या १२ रत्ति के वजन का सोने की अंगूठी में जड़वा कर तर्जनी अंगुली में धारण करें, सुवर्ण या ताम्र बर्तन में कच्चा दूध, गंगाजल, पीले पुष्पों से एवं **''ॐ ऐं क्लीं बृहस्पतये नमः''** के बीज मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित करके धारण करना चाहिए। मन्त्र संख्या १९ हजार।

यह नग शुक्ल पक्ष के गुरुवार की होरा में, अथवा गुरुपुष्य योग में या पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में धारण करना चाहिए।

पुखराज धनु, मीन राशि के अतिरिक्त मेष, कर्क, वृश्चिक राशि वालों को लाभप्रद रहता है। धारण करने के पश्चात् गुरू से सम्बन्धित वस्तुओं का दान करना शुभ होता है।

गुरु का उपरत्न–सुनैला– इसे पुखराज का उपरत्न माना जाता है। पुखराज मूल्यवान होने के कारण सुनैला को उसके पूरक के रूप में धारण किया जा सकता है। श्रेष्ठ सुनैला हल्के पीले रंग (सरसों के जैसा पीलापन) का होता है। कई बार पुखराज से अधिक पीलापन लिए होता है तथा आंशिक मात्रा में पुखराज के समान ही उपयोगी होता है। धारण विधि पुखराज के समान ही होगी।

शुक्र-रत्न 'हीरा' (DIAMOND)

शुक्र ग्रह का मुख्य प्रतिनिधित्व **'हीरा'** है।

संस्कृत में इसे वज्रमणि, हिन्दी में हीरा तथा अंग्रेज़ी में डायमण्ड (Diamond) कहते हैं।

हीरा अत्यन्त चमकदार प्रायः श्वेत वर्ण का होता है।

पहचान–अत्यन्त चमकदार, चिकना, कठोर, पारदर्शी एवं किरणों से युक्त हीरा असली होता है।

परीक्षा–(i) धूप में यदि हीरा रख दिया जाये तो उसमें से इन्द्रधनुष जैसी किरणें दिखाई देती हैं। (ii) तोतले बच्चे के मुंह में रखने से बच्चा ठीक से बोलने लगता है। (iii) अन्धेरे में जुगनू की भान्ति चमकता है।

गुण–हीरे में **वशीकरण करने की विशेष शक्ति होती है।** इसके पहनने से **वंश-वृद्धि, धन-लक्ष्मी व सम्पत्ति की वृद्धि, स्त्री एवं सन्तान सुख की प्राप्ति व स्वास्थ्य** में लाभ होता है। **वैवाहिक सुख** में भी वृद्धिकारक माना जाता है।

औषधीय गुण–हीरे की भस्म शहद-मलाई आदि के साथ ग्रहण करने से अनेक रोगों में लाभ होता है जैसे–दौर्बल्यता, नपुंसकता, वायु प्रकोप, मन्दाग्नि, वीर्य विकार, प्रमेह दोष, हृदय रोग, श्वेत प्रदर, विषैला व्रण, बच्चों में सूखा रोग, मानसिक कमजोरी इत्यादि।

धारण विधि–शुक्ल पक्ष के शुक्रवार वाले दिन, शुक्र की होरा में, **भरणी, पुष्य, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र**, एक रत्ति या इससे अधिक वजन का हीरा सोने की अंगूठी में जड़वा कर शुक्र के बीज मन्त्र (**ॐ द्रां, द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः**) का 16 हजार की संख्या में जाप करके शुभ मुहूर्त में धारण करना चाहिए। हीरा मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए। धारण करने के दिन शुक्र ग्रह से सम्बन्धित वस्तुएं जैसे दूध, चाँदी, दही, मिश्री, चावल, श्वेत वस्त्र, चन्दनादि का दान यथाशक्ति करना चाहिए।

हीरा (धारण करने की तिथि से) सात वर्ष पर्यन्त प्रभावकारी बना रहता है। **हीरा वृष, मिथुन, कन्या, तुला, मकर, कुम्भ राशि वालों को लाभदायक रहता है।**

शुक्र के उपरत्न–(i) फिरोज़ा– नीले आकाशीय रंग जैसा यह नग शुक्र का उपरत्न माना गया है। यह रत्न भूत, प्रेत, दैवी आपदा तथा आने वाले कष्टों से धारक की रक्षा करता है। यदि इस रत्न को कोई भेंटस्वरूप प्राप्त करके पहनेगा तो अधिक प्रभावशाली रहेगा। हल्के-प्रखर चमकदार रंग वाला रत्न उत्तम होता है। कोई भी कष्ट या रोग आने से पहले यह रत्न अपना रंग बदल लेता है। नेत्र रोग, सौन्दर्य, सिर दर्द, विषादि रोगों में विशेष लाभकारी रहता है।

(ii) ओपल (Opel)–यह भी शुक्र का अन्य उपरत्न है, इसको धारण करने से सदाचार, सदचिन्तन तथा धार्मिक कार्यों की ओर रुचि रहती है। अधिक लोकप्रिय नहीं है। इसके अतिरिक्त शुक्र के अन्य भी बहुत से उपरत्न प्रचलित हैं।

शनि रत्न नीलम (SAPHIRE)

नीलम शनिग्रह का मुख्य रत्न है। हिन्दी में नीलम तथा अंग्रेज़ी में सैफायर (Saphire) कहते हैं।

पहचान–असली नीलम चमकीला, चिकना, मोरपंख के समान वर्ण जैसा, नीली किरणों से युक्त एवं पारदर्शी होगा।

परीक्षा–(i) असली नीलम को गाय के दूध में डाल दिया जाए तो दूध का रंग नीला लगता है। (ii) पानी से भरे कांच के गिलास में डाला जाए नीली किरणें दिखाई देंगी। (iii) सूर्य की धूप में रखने से नीले रंग की किरणें दिखाई देंगी।

गुण–नीलम धारण करने से **धन-धान्य, यश-कीर्ति, बुद्धि चातुर्य, सर्विस एवं व्यवसाय तथा वंश में वृद्धि होती है। स्वास्थ्य सुख का लाभ होता है।**

ध्यान रहे, बहुधा नीलम चौबीस घण्टे के भीतर ही प्रभाव करना शुरू कर देता है। यदि नीलम अनुकूलन न बैठे तो भारी नुक्सान की आशंका हो जाती है। अतएव परीक्षा के तौर पर कम से कम ३ दिन तक पास रखने पर यदि बुरे स्वप्न आएं, रोग-उत्पन्न हो या चेहरे की बनावट में अन्तर आ जाए तो नीलम मत पहनें।

रोग शान्ति–नीलम धारण करने या औषधि रूप में ग्रहण करने से दमा, क्षय, कुष्ट रोग, हृदय रोग, अजीर्ण, मूत्राशय सम्बन्धी रोगों में लाभकारी है।

धारण विधि–नीलम ५, ७, ९, १२ अथवा अधिक रत्ति के वजन का, पंचधातु, लोहे अथवा सोने की अंगूठी में शनिवार को शनि की होरा में एवं **पुष्य, उ.भा., चित्रा, स्वा, धनि या शतभिषा नक्षत्रों** में शनि के **बीज मन्त्र ॐ प्रां. प्रीं. प्रौं. सः शनये नमः** मन्त्र से २३००० की संख्या में अभिमन्त्रित करके धारण करें। तत्पश्चात् शनि की वस्तुओं का दान दक्षिणा सहित करना कल्याणकारी होगा।

राहु रत्न–गोमेद (ZIRCON)

राहु रत्न गोमेद को संस्कृत में गोमेदक, अंग्रेज़ी झिरकन (Zircon) कहते हैं। गोमेद का रंग गोमूत्र के समान हल्के पीले रंग का, कुछ लालिमा तथा श्यामवर्ण होता है। स्वच्छ, भारी, चिकना गोमेद उत्तम होता है तथा उसमें शहद के रंग की झांई भी दिखाई देती है।

पहचान विधि–सामान्यतः गोमेद उल्लू अथवा बाज की आँख के समान होता है तथा गोमूत्र के समान, दल रहित अर्थात् जो परतदार न हों, ऐसे गोमेद उत्तम होंगे। (१) शुद्ध गोमेद को २४ घण्टे तक गोमूत्र में रखने से गोमूत्र का रंग बदल जाएगा।

धारण विधि–गोमेद रत्न शनिवार को शनि की होरा में, स्वाती, शतभिषा, आर्द्रा अथवा रविपुष्य योग में पंचधातु अथवा लोहे की अंगूठी में जड़वाकर तथा राहु के बीज मन्त्र द्वारा अंगूठी अभिमन्त्रित करके दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए। इसका वजन ५, ७, ९ रत्ती का होना चाहिए।

राहु बीज मन्त्र–"ॐ भ्रां भ्रीं, भ्रौं सः राहवे नमः"

धारण करने के पश्चात् बीजमन्त्र का पाठ हवन एवं सूर्य भगवान को अर्घ्य प्रदान कर नीले रंग का वस्त्र, कम्बल, तिल, बाजरा आदि दक्षिणा सहित दान करें।

विधिपूर्वक गोमेद धारण करने से अनेक प्रकार की बीमारियां नष्ट होती हैं, धन-सम्पत्ति-सुख, सन्तान वृद्धि, वकालत व राजपक्ष आदि की उन्नति के लिए अत्यन्त लाभकारी है। शत्रु-नाश हेतु भी इसका प्रयोग प्रभावी रहता है।

जिनकी जन्म कुण्डली में राहु १, ४, ७, ९, १० वें भाव में हो, उन्हें गोमेद रत्न पहनना चाहिए। मकर लग्न वालों के लिए गोमेद शुभ होता है।

केतु रत्न लहसनिया (CAT'S EYE STONE)

केतु-रत्न लहसनिया को संस्कृत में वैदूर्य, हिन्दी में लहसनिया, अंग्रेज़ी में Cat's eye Stone कहते हैं। यह नग अन्धेरे में बिल्ली की आंखों के समान चमकता है। लहसनिया चार रंगों में पाया जाता है। काली तथा श्वेत आभा युक्त लहसनिया जिस पर यज्ञोपवीत के समान तीन धारियां खिंची हों, वह वैदूर्य ही उत्तम होता है।

पहचान–(१) असली लहसनिया को यदि हड्डी के ऊपर रख दिया जाए तो वह २४ घण्टे के भीतर हड्डी के आर-पार छेद कर देता है। (२) असली वैदूर्य में ढाई या तीन सफेद सूत्र होते हैं, जो बीच में इधर-उधर घूमते हिलते रहते हैं।

धारण विधि–लहसनिया रत्न बुधवार के दिन अश्विनी, मघा, मूला नक्षत्रों में, रविपुष्य योग में पंचधातु की अंगूठी में कनिष्ठका अंगुली में धारण करें। धारण करने से पूर्व केतु के बीज मन्त्र द्वारा अंगूठी अभिमन्त्रित करें। ५ रत्ती से कम वज़न का नहीं होना चाहिए। प्रत्येक ३ वर्ष पश्चात् नई अंगूठी में लहसनिया जड़वाकर उसे अभिमन्त्रित कर धारण करना चाहिए।

केतु बीज मन्त्र–"ॐ स्त्रां स्त्रीं, स्त्रौं, सः केतवे नमः"

रत्न धारण करने के पश्चात् बुधवार को ही किसी श्रेष्ठ ब्राह्मण को तिल, तेल, कम्बल, धूर्मवर्ण का वस्त्र, सप्तधान्य (अलग-अलग रूप में) यथाशक्ति दक्षिणा सहित दान करें।

विधिपूर्वक लहसनिया धारण करने से भूत प्रेतादि की बाधा नहीं रहती है। सन्तान सुख, धन की वृद्धि एवं शत्रु व रोग नाश में सहायता प्रदान करता है।

अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारे यहाँ 'आपका भाग्यारत्न' पुस्तक 80 रु० भेजकर मंगवा सकते हैं। **बृहदरत्न शास्त्र, मूल्य 150 रुपये, जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर।**

द्वादश लग्नों एवं राशियों का फल [ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड) से उद्धृत]

मेष लग्न—मेष लग्न (राशि) का स्वामी **मंगल** है। जातक का मध्यम कद, मुख का वर्ण लाल अथवा गेहुँआ होगा। राशिपति मंगल की स्थिति शुभ होने से रक्तवर्ण नेत्रों वाला, चंचल एवं उग्र स्वभाव, अत्यन्त साहसी, सतर्क एवं महत्वाकांक्षी होगा। जातक उद्यमी, तीव्र बुद्धि, स्वतन्त्र विचारों वाला, अस्थिर किन्तु तेज़ स्मरण शक्ति वाला, अत्यधिक उत्साही, स्पष्टवादी एवं भ्रमणप्रिय व्यक्ति होगा। प्रायः अपने परिश्रम के बल पर आय एवं धन के साधन जुटा लेगा। सगे सम्बन्धियों की ओर से सहायता व सुख कम होगा। यह राशि चर और अग्नि तत्त्व प्रधान होने के कारण मेष राशि (लग्न) का जातक परिवर्तनशील प्रकृति, अस्थिर स्वभाव तथा शीघ्र क्रोधित हो जाने वाला एवं शीघ्र ही मान जावे। व्यवसाय में अनेक कठिनाईयों के बावजूद उन्नति के लिए प्रयास करता रहता है। जायदाद एवं व्यवसाय में कई प्रकार के झंझट (उलझनें) आती हैं और इन्हीं कामों के द्वारा लाभ भी होता रहता है। पित्त, कफ, सिर दर्द, रक्त विकार, नेत्र विकार, त्वचा आदि रोगों का भय रहता है। मंगल शुभ होने पर जातक को खेल-कूद व संगीतादि में भी विशेष शौक रहता है। सामान्यतः **मूंगा** मेष लग्न वालों के लिए शुभ रहता है, परन्तु योग्य ज्योतिषी से परामर्श के बाद धारण करना चाहिए। **भाग्योदयकारक** वर्ष १६, २२, २८, ३२, ३६वें होंगे।

वृष लग्न—वृष लग्न का **स्वामी शुक्र** है। यदि शुक्र शुभ हो तो जातक सुन्दर, सुगठित शरीर व मध्यम कद वाला होगा। गोल, बड़ी व चमकदार आँखें, सुन्दर वर्ण एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाला होगा। जातक परिश्रमी, हँसमुख एवं सौम्य प्रकृति वाला, धीर, शान्त एवं दृढ़ स्वभाव का होता है। जातक उदारहृदय, प्रसन्नहृदय और प्रभावशाली व्यक्ति होगा। स्वावलम्बी, उच्चाभिलाषी तथा भौतिक सुखों के लिए कठोर परिश्रम से भी पीछे नहीं हटेगा। जातक मधुरभाषी, सौन्दर्य प्रेमी, संगीत कला-साहित्यादि कार्यों में विशेष रुचि रखने वाला होगा। घर-दफ्तर आदि स्थानों पर सजावट रखेगा तथा ऐश्वर्य साधनों में निरन्तर वृद्धि करते रहने का प्रयास करेगा। जातक प्रायः अपनी इच्छानुसार ही कार्य करने वाला, ऐश्वर्ययुक्त जीवनयापन का इच्छुक, विपरीत योनि वालों के साथ मैत्री करने का आकांक्षी, व्यवहार कुशल तथा कठिन परिस्थितियों में भी अपना कार्य निकालने में कुशल होगा। जातक प्रायः चन्द्र-बुध की स्थिति शुभ होने पर कामर्स, गणित, बैंकिंग, एक्टिंग, वस्त्र उद्योग, क्रय-विक्रय (Trading) आदि में सफलता प्राप्त कर लेता है। **शुभ नग हीरा** है। भाग्योदायकारक वर्ष २८, ३६, ४२ एवं ४८वें होंगे।

मिथुन लग्न—मिथुन लग्न (राशि) का स्वामी बुध है। मिथुन लग्न वाला जातक, गौरवर्ण, चंचल आँखों वाला, सामान्य एवं ऊँचे कद वाला होगा। जातक अस्थिर किन्तु मौलिक विचारों से युक्त, तीव्र बुद्धि, परिवर्तनशील प्रकृति, मित्रों को हर प्रकार से सहायक तथा नीति के अनुसार आचरण करने वाला, तर्क-वितर्क करने में कुशल, दूर-दूर के स्थानों की यात्राएँ करने का सौभाग्य प्राप्त करेगा। जातक में बुद्धि तत्त्व एवं भाव तत्त्व दोनों प्रबल होने के कारण पठन-पाठन, कानूनी कार्य, व्यापार सम्बन्धी और लेखन सम्बन्धी कार्यों को बड़ी गम्भीरता से करेगा, मज़बूत हृदय वाला परन्तु नर्म स्वभाव होने के कारण कमज़ोर समझा जाता है। द्विस्वभाव होने से एक ही समय पर एक से अधिक कार्य शुरू करने की प्रवृत्ति रहेगी, अपने कार्य-क्षेत्र (व्यवसाय) में प्रायः परिवर्तन करता रहता है तथा प्रायः अपने परिश्रम, बुद्धि एवं चातुर्य के बल पर जीवन में सफलता प्राप्त कर लेगा। नए-नए मित्र बनाने में कुशल, बातचीत करने की कला में निपुण होगा। क्रय-विक्रय, पुस्तक-लेखन, लेखाकार (Accounts), बैंक, वकालत, अध्यापन, इंजीनियरिंग, कल-पुर्जों के कार्य-व्यवसाय में सफलता प्राप्त हो सकती है। **शुभ नग पन्ना है, स्त्रियों के लिए पुखराज** भी अच्छा होगा। भाग्योदयकारक वर्ष २२, ३२, ३५, ३६, ४२ वें होंगे।

कर्क लग्न—कर्क लग्न (राशि) का स्वामी चन्द्रमा है। जल तत्त्व प्रधान एवं चर राशि होने से जातक सुन्दर एवं आकर्षक मुखाकृति, गोल चेहरा और मध्यम कद होगा। **चन्द्र-मंगल** शुभ हो तो जातक बुद्धिमान, संवेदनशील, भावुकहृदय, नयायप्रिय व दयालु स्वभाव वाला होगा। सामान्यतः परिवर्तनशील स्वभाव, चंचल, जलीय वस्तुओं (Liquids) का प्रिय, उच्च कल्पनाशील, समयानुकूल काम निकालने में कुशल, मिलनसार प्रकृति होगी। यदि चन्द्रमा अशुभ हो तो चिड़चिड़ा स्वभाव, वातावरण से शीघ्र प्रभावित होने वाला होगा। प्राकृतिक सौन्दर्य, कला-संगीत व साहित्य में विशेष रुचि रखे तथा सौन्दर्यानुभूति भी विशेष रूप से रहे। ऐसा जातक परिस्थितिनुसार ढल जाने वाला, प्यार सम्बन्धों में सच्चा, ईमानदार और सहृदय दयालु प्रकृति का होगा। ऐसा जातक दिल से जिस काम को करना चाहे कर ही लेता है। कल्पना (विचार) शक्ति प्रबल होती है, अन्य पुरुष के भावों को शीघ्र समझ लेने की विशेष क्षमता होती है। कर्क राशि वालों को मकर, बृश्चिक, मीन राशि वालों के साथ मित्रता शुभ रहती है। **शुभ नग सुच्चा मोती** तथा **सफेद पुखराज** है। भाग्योदयकारक वर्ष २४, २५, २८, ३२, ३६, ४० होंगे।

सिंह लग्न—सिंह लग्न (राशि) का स्वामी सूर्य है। इस लग्न (राशि) में जन्म लेने वाला जातक सुन्दर-पुष्ट शरीर वाला, चौड़ा मस्तक, सुगठित, आकर्षक एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला होगा। जातक बुद्धिमान, उद्यमी, कर्मठ, निडर, स्वतन्त्र विचारों वाला, पराक्रमी, व्यवहार कुशल, नीति के अनुसार आचरण करने वाला, उच्चाकांक्षी, खानपान का शौकीन, देश-विदेश में भ्रमण करने वाला, शीघ्र क्रुद्ध हो जाने की प्रकृति होने पर भी अपने बुद्धि-चातुर्य से स्थिति को सम्भाल लेने वाला होगा। छोटी-छोटी एवं मामूली बातों को उपेक्षा की दृष्टि से देखने वाला होगा तथा बड़े-बड़े कामों को भी अपने उद्यम द्वारा पूरा करने से तत्पर हो जाएगा। भाई-बन्धु होने पर भी उनका सुख कम रहता है। उच्चाभिलाषी होने के कारण प्रत्येक कार्य-व्यवसाय को बड़े पैमाने एवं उच्चस्तर पर करना पसन्द करेगा। उच्चस्तरीय, वैभवशाली एवं रईसी जीवन-यापन करने की प्रबल इच्छा रखेंगे जिसके कारण अपनी सीमा से बढ़कर भी खर्च कर डालते हैं। इस लग्न वाले जातक का बाह्य रूप में आकर्षक रूप एवं अच्छा स्वास्थ्य रहता है। **शुभ नग माणिक्य है। सिंह लग्न (राशि) वालों को सूर्य उपासना** करनी चाहिए। भाग्योन्नति वर्ष १६, २२, २४, २६, २८, ३२ होते हैं।

कन्या लग्न—कन्या लग्न (राशि) वाले जातक का मध्यम कद, कोमल शरीर, सुन्दर व आकर्षक आँखें, लम्बी नाक, वाणी तेज़ और बारीक होगी। जातक प्रियभाषी, हर कार्य में सहायक, लज्जाशील प्रकृति, नर्म स्वभाव और नीति के अनुकूल काम करने वाला होगा। कल्पनाशील, सूक्ष्मदर्शी, एवं संवेदनशील (Senstivie) स्वभाव होगा। शान्तचित्त एवं एकान्तप्रिय प्रवृत्ति होगी। परन्तु कठिन एवं विपरीत परिस्थितियों में भी स्वयं को ढालने का सामर्थ्य होगा। एक ही समय पर अनेक यात्राएँ एवं विषयों में पारंगत होने की चेष्टा करेगा। संगीत, कला एवं साहित्य की ओर विशेष दिलचस्पी रखेगा। द्विस्वभाव एवं परिवर्तनशील प्रकृति होने के कारण एक विषय पर चिरकाल तक स्थिर नहीं हो पाता। **बुध-शुक्र** का शुभ योग होने से लेखा-गणित, (Account), संगीत, कला, अध्यापन, लेखन, क्रय-विक्रय आदि की ओर विशेष झुकाव रहेगा तथा सफलता भी होगी। धन की अपेक्षा बौद्धिक कार्यों में विशेष रुचि रहती है। बुद्धिमान, तीव्र स्मरणशक्ति एवं अध्ययनशील प्रकृति होगी। **शुभ नग पन्ना** है। भाग्योन्नतिकारक वर्ष २५, ३२ तथा ३५, ३६, ४२ वें वर्ष होते हैं।

तुला लग्न—तुला लग्न (राशि) का स्वामी शुक्र है। तुला लग्न (राशि) में उत्पन्न जातक श्वेत व सुन्दर वर्ण, मध्यम अथवा लम्बा कद, सौम्य एवं हंसमुख प्रकृति होगी। जातक/जातिका न्यायप्रिय, हंसमुख, व्यवहारशील एवं नीति के अनुसार कार्य करने में कुशल होगा। ईमानदार, मिलनसार, नए-नए मित्र बनाने में कुशल होगा। सौंदर्यानुभूति विशेष होगी, संगीत, कला, नाट्य की ओर विशेष झुकाव होगा। रहन-सहन का ढंग रईसी एवं प्रभावपूर्ण होगा। जातक पर संगीत का प्रभाव जल्दी होगा। **चन्द्र-शुक्र** शुभ हों, तो मानसिक एवं कल्पनाशक्ति प्रबल होगी, परन्तु मन की केन्द्रीय शक्ति बहुत देर तक नहीं रहती। जब तक किसी कार्य में लगा रहे तब तक दिलोजान और मज़बूत दिल से करे, परन्तु अपने विचार व योजना में परिवर्तन करने में भी शीघ्र तैयार हो जाएगा। जातक को देश-विदेशों में अनेक स्थानों पर भ्रमण करने के अवसर प्राप्त होते हैं। बुद्धिमान्, तर्कशील, सावधान एवं सतर्क रहने वाला, मध्यस्थता एवं न्याय करने में कुशल, विपरीत योनि (Sex) के प्रति विशेष झुकाव रखे। इनको **हीरा (Diamond)** अथवा **श्वेत मोती शुभ नग** है जोकि किसी सुयोग्य ज्योतिषी के परामर्शानुसार धारण करने चाहिएं। जीवन के २५, २७, ३२, ३३, ३५ एवं ४७वें वर्ष भाग्य वृद्धिकारक होंगे।

वृश्चिक लग्न—वृश्चिक लग्न (राशि) का स्वामी मंगल है। इस लग्न (राशि) में उत्पन्न जातक सुन्दर मुख वाला, परिश्रमी, अपने सामर्थ्य पर ही भरोसा करने वाला, धार्मिक प्रवृत्ति होगी। **मंगल** शुभ हो तो उत्साही, उदार, परिश्रमी, साहसी, ईमानदार, स्पष्टवादी, परोपकारी, व्यवहार-कुशल, कर्त्तव्यनिष्ठ, दृढ़ संकल्प शक्ति वाला होगा। भाई बहनों अथवा सम्बन्धियों की सहायता कम मिलती है, निजी पुरुषार्थ द्वारा ही निर्वाह योग्य आय के संसाधन जुटा पाते हैं। तनिक विरुद्ध बात हो जाने पर शीघ्र उत्तेजित हो जाएंगे, परन्तु सच्चाई अथवा सुपात्रता की दृष्टि से सुयोग्य जन की सहायता करने में अपने स्वार्थ की भी बलि देने से पीछे नहीं हटेंगे। जातक जिस कार्य को करने का निश्चय कर लेता है, उसे दृढ़तापूर्वक पालन करने का प्रयास करता है। कैमिस्ट, इंजीनियर, वकील, पुलिस, सेना विभाग, अध्यापन, ज्योतिष, अनुसंधानकर्ता के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करेंगे। **शुभ नग मूँगा** है। शुभ रंग लाल, संतरी, पीला, हल्का गुलाबी (Pink) है। अपनी आयु के २४, २८, ३२, ३६, ४४वें वर्ष विशेष भाग्योन्नति कारक होंगे।

धनु लग्न—धनु लग्न (राशि) का स्वामी गुरु है। इस लग्न (राशि) में उत्पन्न जातक का ऊँचा मस्तक, कान बड़े, लग्न भाव में क्रूर ग्रह होने की स्थिति में सिर मध्य अल्पबाल अथवा गंजा हो सकता है। **गुरु-बुध** की स्थिति शुभ हो तो सौम्य एवं शान्त, सरल स्वभाव, धार्मिक प्रकृत्ति, उदार हृदय, परोपकारी, संवेदनशील, करुणा-दया आदि भावनाओं से युक्त होगा। दूसरों के मनोभावों को जान लेने की विशेष क्षमता होगी, इस लग्न (राशि) प्रभावित व्यक्ति में बौद्धिक एवं मानसिक शक्ति की प्रबलता के साथ-साथ अश्व जैसी तीव्रता, उत्साह एवं उत्तेजना से कार्य करने की क्षमता होगी। द्विस्वभाव राशि के कारण शीघ्र कोई निर्णय नहीं ले पाएं और इनको क्रोध जल्दी नहीं आता, परन्तु जब आता है तो देर तक क्रोधित रहते हैं। अग्नि तत्त्व प्रधान होने के कारण कठिन से कठिन समस्याओं को अपने सब, साहस एवं परिश्रम के द्वारा सुलझा लेंगे तथा निजी पुरुषार्थ द्वारा जीवन के हर क्षेत्र में उन्नति करने वाला, धन, सम्पदा, भूमि-जायदाद व सवारी आदि सुखों को प्राप्त करने में सफल होगा। **मंगल-गुरु** शुभ हो तो उच्च व्यवसायिक विद्या के योग है। शिक्षक, धर्म-प्रचारक, राजनीतिक, वैद्य-डॉक्टर, वकील, पुस्तक व्यवसाय आदि के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी। **शुभ नग पुखराज** है। अपनी आयु के २३, २७, ३२, ३६वें वर्ष विशेष भाग्योन्नति कारक होंगे।

मकर लग्न—मकर लग्न (राशि) का स्वामी शनि है। इस लग्न (राशि) में जन्म लेने वाले जातक का मध्यम कद, नयन नक्श तीखे, सुन्दर मुखाकृति, काले घने बाल एवं पतली कमर वाला होगा। जातक गम्भीर, भावुक, हृदय, संवेदनशील, उच्चाभिलाषी, सेवाधर्मी, मननशील एवं धार्मिक प्रवृत्ति वाला होगा। **बुध व शुक्र** शुभ होने पर व्यवहार-कुशल, गहन विचार एवं सूक्ष्म विश्लेषण के पश्चात् ही मननपूर्ण निर्णय लेते हैं। क्षमाशील प्रायः कम होते हैं तथा इन्हें बदले एवं शत्रुता की भावना भुला पाना अत्यन्त कठिन होता है। चर राशि एवं लग्न होने से जातक की मानसिक एवं आत्मिक शक्ति प्रबल होगी। **गुरु-शनि** शुभ हो तो, जातक नर्म स्वभाव (विनम्र), विनयशील, व्यवहार-कुशल, नीति के अनुकूल आचरण करने वाला, तर्कशील, भली-बुरी बात की पहचान करने में कुशल, विश्वसनीय, मित्रता स्थापित करने में अत्यन्त सावधान (Selective) तथा ईमानदार होंगे। तर्क-वितर्क करने में कुशल, अपने विरुद्ध बात को हृदय से भुला पाना कठिन होता है। खांसी तथा वायु रोग से सावधानी बरतें। **शुभ नग नीलम** है। भाग्योन्नति वर्ष २२, २४, २८ एवं ३२, ४६ होते हैं।

कुम्भ लग्न—लग्नेश (राशिपति) शनि शुभ अवस्था में हो तो जातक मध्यम अथवा ऊँचे कद वाला, सुन्दर प्रभावशाली व्यक्तित्त्व होगा। बुद्धिमान, साधन सम्पन्न, तीव्र स्मरण शक्ति एवं गम्भीर प्रकृति वाला होगा। दूसरों के प्रति दयाभाव रखने वाला, परोपकारी मित्रों एवं सगे-सम्बन्धियों के लिए हर प्रकार से सहायक होगा। व्यावहार कुशल, मिलनसार, स्पष्टवादी एवं निस्वार्थ भाव से सेवा करने में तत्पर होगा। जातक स्वाभिमानी, स्वतन्त्रताप्रिय एवं नए-नए मित्र बनाने में भी पीछे नहीं हटेगा। उद्योगी, उद्यमी, परिश्रमी प्रकृति एवं प्रबन्धात्मक योग्यता विशेष होगी एवं उपयुक्त साधन उपलब्ध होने पर देश-विदेशों में जाने के सुअवसर प्राप्त होंगे। महत्त्वकांक्षी होते हुए भी क्रियात्मक दृष्टिकोण रखेंगे तथा अनेक विघ्न-बाधाओं व कठिनाइयों के होने पर भी जीवन में उच्च स्थिति, धन पदादि प्राप्त करने में सफल होंगे। कुम्भ लग्न मे यदि गुरु मित्र क्षेत्री या शुभ में हो तो जातक उच्चाधिकारी, उच्चपदासीन, क्रय-विक्रय, प्रोफेसर, जज-वकील अथवा उच्च एवं धनी-व्यापारी होगा, प्रारम्भिक जीवन में आर्थिक क्षेत्र में विशेष संघर्ष होगा। आर्थिक क्षेत्र में विशेष संघर्ष व कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। **शुभ नग नीलम** है। **स्त्रियों के लिए पुखराज नग शुभ** होगा।

मीन लग्न—मीन लग्न (राशि) का स्वामी गुरु है। मीन लग्न (राशि) में उत्पन्न जातक बुद्धिमान, गम्भीर एवं सौम्य प्रकृति, परोपकारी कार्य करने में तत्पर, ईमानदार, सत्यप्रिय, धार्मिक, धर्म-कर्म एवं फिलास्फी, साहित्य एवं गूढ़ विद्याओं की ओर विशेष अभिरुचि रखेगा। उच्चाभिलाषी, उच्चाकांक्षी एवं स्वाभिमानी प्रकृति, अपनी मान-मर्यादा एवं प्रतिष्ठा का विशेष ध्यान रखें। सेवाभाव रखने वाला, तीव्र बुद्धि, परिश्रमी, उद्यमी, दूरदर्शी, व्यवहार कुशल एवं नीति के अनुसार आचरण करने वाला, विश्वसनीय, ईमानदार तथा हर प्रकार से मित्रों एवं सगे-सम्बन्धियों के लिए सहायक होगा। परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को ढाल लेने की अपूर्व क्षमता होगी। देव तुल्य प्रकृति होती है। दूसरों पर न तो अन्याय करेंगे न ही किसी भान्ति अन्याय को सहन करेंगे। जातक कलाकार, चल-चित्र, व्यवसाय, खाने-पीने की वस्तुओं से सम्बन्धित, समाज सुधारक, अध्यापन सम्बन्धी कार्यों में सफल होते हैं। **शुभ नग पुखराज** है। शुभ वैवाहिक जीवन के लिए **पन्ना रत्न** धारण करें। भाग्योन्नतिकारक वर्ष २४, २८, ३३, ३८, ४५ वर्ष होते हैं।

ज्योतिष सम्बन्धी प्रामाणिक पुस्तकें वी० पी० द्वारा मंगवाएँ

पं० देवी दयालु ज्यो०, जालन्धर द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

पुस्तक	मूल्य
श्री अर्द्धशताब्दी पंचांग	900 रु.
श्रीदशवर्षीय पंचांग (1994-04 ई.)	250 रु.
दशवर्षीय पंचांग (2004-14 ई.)	400 रु.
मुफीद आलम जन्त्री (हिन्दी-उर्दू-पंजाबी)	85 रु.
वर्षफल चन्द्रिका	110 रु.
ज्योतिष तत्त्व (गणित खंड)	125 रु.
ज्यो. तत्व (फलित खण्ड-I)	300 रु.
ज्यो. तत्व (फलित खण्ड-II)	300 रु.
सुतभाव (सन्तान) प्रकाश	135 रु.
शिव मन्त्रावली	**180 रु.**
अनिष्ट ग्रहों के चमत्कारी उपाय-टोटके	200 रु.
विवाह पद्धति	85 रु.
दुर्गा सप्तशती (हिन्दी-भाषा)	100 रु.
श्री दुर्गासप्तशती (भा.टी.)	85 रु.
गण्डमूल शान्ति प्रयोग	**75 रु.**
कार्तिक स्त्री प्रसूता शान्ति	30 रु.
नवग्रह पूजा विधान	40 रु.
जन्मदिन पूजा पद्धति	40 रु.
श्री सूक्तम्-कनकधारा स्तोत्र भा.टी.	25 रु.
कार्तिक माहात्म्य (भाषा)	40 रु.
55 चालीसा आरती संग्रह (जिल्द)	70 रु.
लघु पंचांग दिवाकर	35 रु.
शिवरात्रि व्रत कथा-भा.टी.	25 रु.
षड्वर्गीय जन्मपत्रिका (28 पृ.)	14 रु.
जन्माङ्ग पत्रिका (16 पृ.)	10 रु.
जन्माङ्ग पत्रिका (12 पृ.)	10 रु.
टेवा फार्म छपा/प्लेन	180 रु. सैंकड़ा
ज्यो० ज्ञान शास्त्र (पंजाबी)	100 रु.
लाल किताब (पंजाबी)	120 रु.
फलित ज्योतिष (पंजाबी)	400 रु.
राशिफल सन् 2019 ई.	**60 रु.**

(पृष्ठ 287 भी देखें।)

अन्य प्रकाशनों की ज्योतिष सम्बन्धी प्रामाणिक पुस्तकें

पुस्तक	मूल्य
योग-पारिजात (धन योग)	400 रु.
योग-पारिजात (भाग्य योग)	450 रु.
योग-पारिजात (राज-योग)	450 रु.
योग-पारिजात (अनुपम योग)	450 रु.
गणेश होरा शास्त्रम्	500 रु.
राशिफल विचार	160 रु.
परमायु दशा	150 रु.
आयु आकलन	500 रु.
आयु निर्णय	120 रु.
शनि-साढ़ेसति से छुटकारा	50 रु.
मंगलीक योग-भ्रान्ति निदान	135 रु.
पुत्रेष्टि अनुष्ठान	495 रु.
ज्यो. और रोग (2 भाग)	300 रु.
षड्वर्ग फलम्	200 रु.
भारतीय ज्यो.-नेमिचंद शास्त्री	400 रु.
भृगु संहिता	360 रु.
बुद्धि विद्या विचार	400 रु.
भावफल विचार (2 भाग)	300 रु.
षड्बल रहस्य	120 रु.
आजीविका विचार (2 भाग)	500 रु.
जैमिनी ज्योतिष	150 रु.
राहु-केतु	180 रु.
ज्योतिष और दाम्पत्य जीवन	200 रु.
उत्तर-कालामृत	300 रु.
फलित सूत्रम्	250 रु.
प्रश्न दर्पण	120 रु.
प्रश्न रहस्य	120 रु.
नक्षत्रफल	250 रु.
अष्टकवर्ग सिद्धान्त-प्रयोग	120 रु.
ज्यो. में नवांश का महत्त्व	300 रु.
भावार्थ रत्नाकर	180 रु.
सत्यजातकम्	180 रु.
ग्रह-युति फल दर्पण	280 रु.
गोचर फल विचार	130 रु.
गोचर फल दर्पण	175 रु.
शनि संहिता	400 रु.
दीपावली एवं महालक्ष्मी पूजन	120 रु.
विवाह एवं सन्तान	350 रु.
वैवाहिक सुख में शनि प्रमुख	400 रु.
जातक सारावली (प्रथम भाव)	400 रु.
जातक सारावली (द्वितीय भाव)	400 रु.
जातक सारावली (सप्तम भाव)	400 रु.
जातक सारावली (दशम भाव)	400 रु.
परिणय निर्णय (वैवाहिक)	400 रु.
परिणय निर्णय (मुहूर्त मीमांसा)	400 रु.
परिणय निर्णय (मंगली दोष)	400 रु.
परिणय निर्णय (विवाह समय)	400 रु.
शिशु चिन्तन	450 रु.
कुण्डली मिलान	125 रु.
नक्षत्र विचार	250 रु.
मृत्युंजय मन्त्र संकलन	400 रु.
शनि दशा दिग्दर्शन	180 रु.
मन्त्र मधुबन	350 रु.
मानसागरी	**200 रु.**
मुहूर्त-चिन्तामणि	100 रु.
मुहूर्त-मार्त्तण्ड	235 रु.
शक्ति-कुंज	350 रु.
सत्य जातकम्	180 रु.
होरा-रत्नम (2 भाग)	800 रु.
व्याधि-विभावरी	400 रु.
व्याधि-वीथिका	400 रु.
भाव, भावेश फलविचार	60 रु.
लग्नचन्द्र प्रकाश	495 रु.
सारावली	275 रु.
बृहज्जातकम्	255 रु.
वृद्ध यवनजातकम् (2 भाग)	600 रु.
ग्रहयोग-संक्षेपिका	400 रु.
ज्योतिर्विदाभरणम्	345 रु.
जातक, जीवन और ज्यो.	100 रु.
ज्यो. द्वारा कामना सिद्धि	80 रु.
समृद्धि सुधा	500 रु.
समृद्धि सूत्र (2 भाग)	925 रु.
चमत्कार चिन्तामणि:	295 रु.
जातक पारिजात (2 भाग)	620 रु.
ज्योतिष रत्नाकर	325 रु.
फलदीपिका	245 रु.
मुहूर्त चिन्तामणी (पीयूषधारा)	295 रु.
शनि शमन (दो भाग)	600 रु.
शत्रुशमन	195 रु.
कालसर्प योग कारणनिवारण	300 रु.
ज्योतिष सर्वस्व	300 रु.
केवल ज्ञान प्रश्न चूड़ामणि	100 रु.
काली किताब	650 रु.
काली किताब	300 रु.
लाल किताब (वृहद्)	2500 रु.
लाल किताब (बड़ी)	800 रु.
लाल किताब टोटके व उपाय	150 रु.
रावण संहिता (वृहद्)	2500 रु.
रावण संहिता (बड़ी)	800 रु.
पितृदोष कारण-निवारण	150 रु.
मंगलीदोष कारण-निवारण	150 रु.
जातक निर्णय (दो भाग)	490 रु.
गोचर विचार	80 रु.
जातकालंकार	100 रु.
प्रश्न मार्ग (दो-खण्ड)	300 रु.
वृहद् पाराशर होरा शास्त्रम्	600 रु.
दशाफल विचार	200 रु.
विंशोत्तरी दशा तरंगिणी	200 रु.
नक्षत्र जातकम्	150 रु.
मेदिनी ज्योतिषी	300 रु.
वैदिक उपचारीय ज्यो.	160 रु.
वित्त विचार	350 रु.
मन्त्र मन्दाकिनी	380 रु.
वित्त वृद्धि	300 रु.
व्यावसायिका	450 रु.
व्यवसाय रत्नाकर	450 रु.
व्यवसाय विमर्श	450 रु.
रत्न ज्योतिष	80 रु.
रत्न पहने भाग्य बदलें	100 रु.
रत्न प्रदीप	120 रु.
सम्पूर्ण रत्न विज्ञान	150 रु.
रत्न रुद्राक्ष और भाग्य	250 रु.
रत्नों का रहस्यमय संसार	200 रु.
आपका भाग्यरत्न	80 रु.
अंक विद्या रहस्य	80 रु.
अंकों में छिपा भविष्य	80 रु.
अंकों का अद्भुत संसार	150 रु०
अंक ज्योतिष (कीरो)	100 रु.

वास्तुशास्त्र विज्ञान पर

पुस्तक	मूल्य
सम्पूर्ण वास्तुशास्त्र	150 रु.
वास्तुशास्त्रानुसार भवन निर्माण	150 रु.
बिना तोड़-फोड़ वास्तुशास्त्र	125 रु.
रेमिडियल वास्तुशास्त्र	150 रु.
व्यावहारिक वास्तुशास्त्र	100 रु.
वास्तुकला और भवन निर्माण	150 रु.
वास्तुशास्त्र रहस्य	400 रु.
वास्तुशास्त्र रहस्य (2 भाग)	450 रु.
फेंगशुई 151 स्वर्णिम सूत्र	120 रु.
इंटीरियर डिजाइनिंग वास्तुशास्त्र	250 रु.

ज्योतिष की दुर्लभ

"लाल किताब"

(उर्दू भाषा में फोटोस्टेट) असली अब उपलब्ध है। मूल्य 2100 रु.
(डाक व्यय सहित)

पुस्तकें मंगवाने का पता :

अग्रिम राशि मनीआर्डर द्वारा भेजना अनिवार्य है।

जनरल बुक डिपो,
अड्डा होशियारपुर चौंक,
जालन्धर शहर (पंजाब)
फोन-0181-2457959

स्थापित सन् 1875 ई०

सर्वप्राचीन प्रतिष्ठित मशहूर आलम पण्डित देवी दयालु ज्योतिष संस्थान

गौरवमयी वर्ष प्रवेश 144 वाँ

पंचाँगदिवाकर ज्योतिष कार्यालय के नियम

परम पिता परमात्मा की असीम कृपा से उत्तरी भारत में सर्वप्राचीन एवं सुप्रतिष्ठित मशहूर पण्डित देवी दयालु ज्योतिष संस्थान [illegible] दिवाकर व मुफीद-आलम जन्त्री, उर्दू, हिन्दी, पंजाबी एवं अन्य ज्योतिष व धार्मिक प्रकाशनों को, पंचाँग प्रवर्त्तक पं० देवी दयाल (लाहौर) [illegible] राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जो ख्याति प्राप्त हुई है, वह हमारे सुविज्ञ पाठकों से छिपी नहीं।

हमारे ज्योतिष कार्यालय में प्रामाणिक जन्मपत्री एवं वर्षफल आदि शुद्ध गणित द्वारा तैयार किए जाते हैं जिससे आप घर बैठे ही अपना भविष्य जान सकते हैं। **ध्यान रहे,** सही फलादेश का आधार वैज्ञानिक ढंग से बनी शुद्ध जन्मपत्री है। जीवन के महत्त्वपूर्ण पक्षों जैसे विद्या में सफलता, व्यवसाय एवं कैरियर सम्बन्धी प्रश्न, भाग्योदय, विवाह-सन्तानादि, पारिवारिक सुख, विदेश गमन योग इत्यादि प्रश्नों के उत्तर जन्मपत्री एवं ग्रहों के आधार पर अनुशीलन करके भेजे जाते हैं। यदि ग्रहों सम्बन्धी कोई विघ्न बाधाएं हों, तो अनिष्ट ग्रहों के उपाय भी शास्त्रोक्त विधि पर आधारित बतलाए जाते हैं।

मध्यम जन्मपत्री–संक्षिप्त रूप से अपना भविष्य जानने के लिए जन्म तारीख, जन्म समय, जन्म स्थान, पिता का नाम, दादा का नाम, गोत्र आदि लिखें। जिसकी फीस 801/- रु. होगी। विदेश में उत्पन्न जातक की जन्मपत्री के लिए 1600/- रु.

वृहद् जन्मपत्री– आपके जीवन के महत्त्वपूर्ण पक्ष जैसे-नौकरी, व्यवसाय, शिक्षा, विवाहादि के सम्बन्ध में विशेष रूप से विवरण तथा हस्तलिखित उपाये दिए जाते हैं। बड़ी हस्तलिखित जन्मपत्री बनवाने के लिए जन्म समय, जन्म स्थान, जन्म तारीख, गोत्र, प्रसिद्ध नाम, पिता तथा माता का नाम, दादा का नाम, वर्तमान व्यवसाय आदि लिख भेजें। **वृहद् जन्मपत्री की फीस 1500/- रु. होगी।** विदेश में उत्पन्न जातक के लिए फीस 2500/- रु. अथवा 31 पौंड होगी। डाक व्यय अलग। वृहद् सप्तवर्गी (40 पृष्ठ) जन्मपत्री की फीस 2200/- रु. होगी जिसमें कैरियर सम्बंधी विशेष मार्गदर्शन एवं विशिष्ट उपायों का विवरण होगा।

कम्प्यूटर (Computerized) शुद्ध / वैज्ञानिक जन्मपत्री– लेटैस्ट प्रामाणिक सौफ्टवेयर से तैयार कम्प्यूटर जन्मपत्री फलादेश एवं हस्तलिखित उपायों सहित 1100/- रु.

वर्षफल–आपके लिए आगामी वर्ष कैसा रहेगा? इसके लिए जन्म कुण्डली की फोटो कापी अवश्य साथ भेजें। यदि जन्मपत्री नहीं है, तो जन्म समय, तारीख, सन् ई०, व्यवसाय अंग्रेज़ी तारीख, स्थान तथा अपनी पारिवारिक व कारोबारी समस्या स्पष्ट लिखते हुए मनपसन्द फूल का नाम लिखें। फलादेश के लिए फीस 750/-रुपए अग्रिम भेजनी होगी। कृपया पूर्ण राशि अग्रिम भेजें। विदेश के लिए 21 पौंड होगी। डाक व्यय अलग।

वायदा एवं शेयर व्यापारियों को विशेष सूचना

वायदा व हाज़िर व्यापारियों के लिए रुई, सोना, चाँदी, कापर, बिनौले, खल, सरसों, गुड़, चने आदि के लिए दैनिक चाँस की एडवांस (Advance) रूप में अर्थात् आने वाले महीने की खास मासिक रिपोर्ट तैयार की जाती है। **एक मास की प्रति (एक) जिन्स की फीस 751/-रु. होगी।** जोकि मनीआर्डर या ड्राफ्ट आने पर लिखित रूप में एक महीने की एडवांस रिपोर्ट भेजी जाएगी।

जो सज्जन/व्यापारी प्रतिदिन रिपोर्ट के अतिरिक्त फोन पर भी बातचीत कर किसी जिन्स या शेयर बाज़ार का रूख जानना चाहते हैं, उनके लिए फीस 2500/-रु. मासिक होगी। फीस (Advance) आने पर ही आगामी मास की रिपोर्ट भेजी जाएगी।

शेयर-बाज़ार–शेयर बाज़ार के उतार-चढ़ाव तथा प्रमुख शेयरों में तेज़ी के चाँस के लिए शेयर बाज़ार की दैनिक अर्थात् एडवांस मासिक रिपोर्ट की फीस 751/-रु.। विस्तृत विज्ञापन '**व्यापारिक वस्तुओं व शेयरों में मन्दा-तेज़ी**' लेख के प्रारम्भ में देखें। प्रतिदिन फोन पर रुख जानने के लिए फीस 2500/-रु. मासिक होगी।

नोट : गुरुवार और रविवार को अवकाश रहता है। अतः दूर से आने वाले सज्जन फोन द्वारा पहले सम्पर्क करके समय निश्चित कर लें।

M.O./ ड्राफ्ट भेजने के लिए पता : पं. विवेक शर्मा (गणितकर्त्ता) सुपुत्र स्व. पं. पन्ना लाल ज्योतिषी
पंचांगदिवाकर ज्योतिष कार्यालय (पं. देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज़), चौंक अड्डा होशियारपुर, जालन्धर (पंजाब)-पिन 144008, फोन-0181-2457959